मय तर्जुमा व तफ्सीर 4395 से 5244 हिन्दी
सहीह
बुख़ारी
(6)
लेखक
हज़रत मुहम्मद बिन इस्माईल बुखारी (रह.)
अनुवादक
हज़रत मौलाना दाऊद राज़ (रह.) उर्दू
सलीम ख़िलजी हिन्दी
प्रकाशक
शोबा नशरो इशाअ़त
जमीअत अहले हदीस जोधपुर राजस्थान
Salfibooks.blogspot.com
http://salfibooks.blogspot.com

vol - 6 हदीस नं. 4395 से 5244

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सहीह बुख़ारी

मय तर्जुमा व तफ़्सीर

जिल्द : छह

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़ सैयदुल फ़ुक़्हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी

प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअत

जमीअत अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

नाम किताब : सहीह बुख़ारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुरत्तिब (अरबी) : अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह : अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-ष़ानी : सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking) : जमशेद आलम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग एवं लेज़र टाइपसेटिंग : ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग : मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन : मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव : फ़ैसल मोदी

ता'दाद पेज (जिल्द-6) : 684 पेज
प्रकाशन (प्रथम संस्करण) :
ता'दाद (प्रथम संस्करण) : 2400
क़ीमत (जिल्द-6) : 500/-
प्रिण्टिंग : अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक : जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (राज.)

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़
तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1
(फ़ोन) : 99296-77000, 92521-83249,
93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशल
जामिया नगर, नई दिल्ली-25
(फ़ोन) : 011-6986973
93125-08762

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.

19

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

तक़रीज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन व आक़िबतुल मुत्तक़ीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला नबिय्यिना मुहम्मद वअ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन, अम्मा बअ़द!

अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद में ये वाज़ेह ऐलान फ़र्माया है कि उसने रसूलों को इसलिए दुनिया में भेजा है ताकि लोग उनकी इताअ़त करे **वमा अर्सल्ना मिर्रसूलिल्यताअ़ बिइज़्निल्लाह** क्योंकि अल्लाह ने उन्हें अपने और बन्दों के दर्मियान राब्ते का ज़रिया बनाया है, उन्हीं के वास्ते से वो अपनी बातें अपने अपने बन्दों तक पहुँचाता है और उन्हें अपनी वह्य के ज़रिये अपनी ता'लीमात से आगाह करता रहता है और रसूल उसके बन्दों तक वही बातें पहुँचाते रहे हैं जो उन्हें अल्लाह तआ़ला की जानिब से बज़रिये वह्य मिला करती थीं। ख़ुद रसूल को अपनी जानिब से शरीअ़त बनाने का कोई हक़ नहीं दिया गया था। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने नबी आख़िरुज्जमाँ जनाबे मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) के बारे में इर्शाद फ़र्माया, **'ये अपनी ख़्वाहिशात से कुछ नहीं कहते हैं, ये जो कुछ भी इर्शाद फ़र्माते हैं, वो उनकी तरफ़ भेजी हुई वह्य होती है।'** इसलिये अंबिया-ए-किराम अपनी उम्मत को जो भी रहनुमाई फ़र्माते हैं वो हक़ और सच होती है। चुनाँचे एक मर्तबा जब अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने आपकी हदीषों को लिखना तर्क कर दिया तो आपने उनसे सबब पूछा तो उन्होंने लोगों के हवाले से आपकी बशरियत का इश्काल पेश किया। तो आपने फ़र्माया, लिखते रहो क़सम उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है, इस (मुँह) से हक़ से सिवा कुछ नहीं निकलता। इसलिए उम्मत जब तक अपने नबी की ता'लीमात पर अ़मल करती रहती है उस वक़्त तक कामयाबियाँ उसके साथ-साथ चलती हैं और जब कोई उम्मत उस रास्ते से हट जाती है जो उसके नबी की जानिब से उसे मिला होता है, तो वो अव्वलन तो गुमराह होती है फिर मुसलसल नाकामियों से दो-चार होती है और क़दम-क़दम पर ठोकरें खाती है, ज़िल्लतो-रुस्वाई उसका मुक़द्दर बन जाती है।

चुनाँचे नबी (ﷺ) ख़ातिमुल-अंबिया है और उन्हें अ़ता की गई ता'लीमात क़ुर्आन व हदीष़ की शक्ल में आख़िरी आसमानी ता'लीमात है, इसलिए उनकी हिफ़ाज़त का ऐसा मज़बूत बन्दोबस्त किया गया है कि वो पूरे आब व ताब के साथ तरोताज़ा मौजूद है। क़ुर्आन मजीद तो मुतवातिर है और मुसाहिफ़ के सिवा लाखों सीनों में नस्ल दर नस्ल महफ़ूज़ चला आता है। मगर अहादीषे मुबारका जो क़ुर्आन करीम की तफ़्सीर और उसका बयान है, उसकी हिफ़ाज़त का भी कुछ कम एहतिमाम नहीं किया गया है। इसलिए हर दौर में ऐसे अबक़री हुफ़्फ़ाज़े हदीष़ और माहिरे फ़न असातिज़ा किबार का सिलसिला क़ायम हुआ जो हर ए'तिबार से मुबारक षाबित हुआ और उनकी काविशों से अहादीषे नबविय्या का ज़ख़ीरा हर तरह की तहरीफ़ और तब्दीली से महफ़ूज होकर हमारे लिए रोशनी और रहनुमाई का सामान बना हुआ है। उन्हीं यक्ता-ए-रोज़गार मुहद्दिषीन में एक नामेनामी अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़ इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.) का

है, जिनके इल्म व फ़ज़्ल और महारते फ़न का शौहरा हर तरफ़ फैला है। उनकी किताब अस्सहीहुल बुख़ारी के किताबुल्लाह के बाद सबसे सहीह किताब होने पर उलमा-ए-उम्मत का इज्माअ है। मज़ीद बराँ इमाम बुख़ारी की हदीष दानी के साथ उनकी हदीष फ़हमी भी फ़ुक़हा-ए-मुहद्दिषीन के दरम्यान इम्तियाज़ी शान रखती है। जिसका मुज़ाहिरा उन्होंने अपनी किताब के तर्जुमतुल-अब्वाब (अब्वाब के शुरू के अनावीन) में किया है। ये किताब अपने अन्दर नबी (ﷺ) की ता'लीमात का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा रखती है जिनकी सिहत पर कोई कलाम नहीं। इसलिए अवामो-ख़वास हर एक के लिए यक्साँ मुफ़ीद है और ज़िन्दगी के नशीबो-फ़राज़ में बेहतरीन रहनुमा षाबित होती है। अल्लाह तआला जज़ा-ए-ख़ैर दे हिन्दुस्तान के उलमा-ए-हदीष को कि उन्होंने हर पहलू से इल्मे-हदीष की बेशबहा ख़िदमात अंजाम दी। इसी सिलसिले में एक अहम कड़ी कुतुबे हदीष का तर्जुमा व तशरीह भी है। जिसकी वजह से नबी (ﷺ) की ता'लीमात तक आम इन्सानों की रसाई मुम्किन हुई। **फ़जज़ाहुमुल अह्सनुल जज़ाअ!**

बुख़ारी शरीफ़ की सबसे गिराँक़द्र और अहम शरह **हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.)** की **फ़त्हुल बारी** है। जिसको सामने रखते हुए हिन्दुस्तान के मशहूरो-मारूफ़ वाइज़े खुश-बयान और खुश तहरीर साहिबे क़लम **मौलाना दाऊद राज़ साहब (रह.)** की तर्जुमानी व तशरीह का फ़रीज़ा बड़ी उम्दगी के साथ अंजाम दिया और उर्दूदाँ तबक़े को मुस्तफ़ीद और मम्नून फ़र्माया। **गफ़रल्लाहु लहू व नूरु मरक़दुहु व अदख़िलुहु फ़सीहु जन्नतहु।**

इधर कुछ सालों से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान वग़ैरह में बड़ी तेज़ी के साथ हिन्दी का चलन हुआ और हिन्दी ने उर्दू की जगह ले ली कि हैरत होती है। वक़्त का तक़ाज़ा था कि हालात की रफ़्तार के मुताबिक़ जल्द अज़ जल्द दीनी, षक़ाफ़ती, तर्बियती किताबों को हिन्दी ज़बान में मुन्तक़िल कर दिया जाता कि नई नस्ल का इस ज़िम्न में किसी महरूमी का सामना न करना पड़े और नतीजे में वो हमारे हाथ से निकल जाएँ। यक़ीनन जिन बुज़ुर्गों ने इस जानिब अपनी तवज्जह मब्ज़ूल फ़र्माई है और इस सिलसिले में कोई काम किया है वो हक़ीक़ी मुबारकबाद के क़ाबिल हैं। इस ए'तिबार से जनाब **सलीम ख़िलजी साहब** मिल्लत के शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं कि उन्होंने अपने रुफ़क़ा-ए-इल्म के साथ मिलकर **मौलाना दाऊद राज़ साहब (रह.)** के इस वक़ीअ तर्जुमा व तशरीह को आसान और आमफ़हम हिन्दी का जामा पहनाया और अपनी अर्क़रेज़ी व जाँफ़िशानी से हिन्दी क़ारेईन तक इस की रसाई मुम्किन बनाई। इस ज़िम्न में **जमीअत अहले हदीष जोधपुर-राजस्थान** का शोबा नश्रो-इशाअत भी कम शुक्रिया का मुस्तहिक़ नहीं है, जिसने ज़रे कषीर सर्फ़ करके इसे ज़ेवरे तबअ से आरास्ता फ़र्माया है। अल्लाह तआला इस किताब के मुअल्लिफ़ से लेकर जुम्ला मुता'ल्लिक़ीन तक सभी को जज़ा और अज्रे अज़ीम से नवाज़े, आमीन!

मुहम्मद मुक़ीम फ़ैज़ी

सद्र शो'बा अरबी व इस्लामियात, इक़रा इण्टरनेशनल स्कूल, मुम्बई

तक़रीज़

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन अस्सलातु वस्सलामु अला नबिय्यिना मुहम्मद व अला आलिही वस्हाबिही अज्मईन, अम्मः बअद

जामेअ सहीह बुख़ारी शरीफ़ सय्यिदुल मुहद्दीष़ीन व मुहद्दिषे कबीर हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.) की जमा व तालीफ़ है। जिनका नामे-नामी व इस्मे गिरामी पूरी दुनिया में रोशन है। इमामे कबीर ने अज़ीमुश्शान को ऐसी मुहब्बत व लगन, अमानदारी व दयानतदारी से मुरत्तब व मुदव्वन किया है कि पूरी उम्मत ने इसके सहीह तरीन किताब होने पर इज्माअ व इत्तिफ़ाक़ किया है।

उस दौर के मुहद्दिष़ीन व अइम्म-ए-किराम और ख़ुसूसन इमाम मुस्लिम (रह.) ने इमाम बुख़ारी (रह.) को **'अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़'** का लक़ब अता किया है। नीज़ एक मौक़े पर इमाम मुस्लिम (रह.) ने अपने उस्ताज़ इमाम बुख़ारी (रह.) से इन अल्फ़ाज़ में ख़िताब किया, **'दअनी अन अक़्बल रजुलैक या अमीरल मूमिनीन फ़िल हदीष़।'**

जामेअ सहीह बुख़ारी शरीफ़ अपने उसूल व शराइत की बुनियाद पर दूसरी तमाम कुतुबे हदीष़ से फ़ाइक़ व मुमताज़ है और इसी वजह से इस किताब को मुहद्दिष़ीन की तरफ़ से **'अस्सहीह किताब बअद किताबुल्लाह अस्सहीहुल बुख़ारी'** का लक़ब दिया गया। अल्लाह तआला ने सहीह बुख़ारी को ऐसी मक़बूलियत इनायत फ़र्माई कि कुर्आने करीम के बाद हर मक्तब-ए-फ़िक्र के मदारिसे इस्लामिया में पढ़ने-पढ़ाने के साथ-साथ दर्स दिया जाता है और कई ज़बानों में इसकी शरहें भी लिखी गईं।

जामेअ सहीह बुख़ारी शरीफ़ का उर्दू ज़बान में तर्जुमा व तशरीह बहुत पहले **जनाब मौलाना वहीदुज्जमाँ साहब कीरानवी (रह.)** ने किया था। लेकिन वो सलीस उर्दू ज़बान में तर्जुमा व तशरीह नहीं था। इसके बाद सहीह बुख़ारी शरीफ़ का उर्दू ज़बान में उम्दा तर्जुमा व तशरीह और मुअतरज़ीन के ए'तिराज़ात की तन्क़ीह व तौज़ीह जनाब **मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ साहब** ने की। जामेअ सहीह बुख़ारी शरीफ़ की अरबी ज़बान में अइम्मा-ए-किराम ने शरहें लिखी हैं।

इस वक़्त ख़ास व आम को फ़ायदा पहुँचाने की ग़र्ज़ से सहीह बुख़ारी शरीफ़ का सलीस हिन्दी ज़मान में तर्जुमा **शहरी जमइय्यत अहले हदीष़, जोधपुर (राज.)** की जानिब से शाए की जा रही है। अल्लाह तआला से दुआ है कि शहरी व सूबाई जमओय्यत अहले हदीष़, जोधपुर-राजस्थान के ज़िम्मेदारान व मेम्बरान व मुता'ल्लिक़ीन व मुआविनीन को सआदते दारैन अता फ़र्माए और कुर्आने करीम व अहादीष़ की मज़ीद तराजिम कराने की तौफ़ीक़ अता करे और इस किताब को मक़बूलियत से फ़ैज़याब फ़र्माए, आमीन!

अब्दुल हफ़ीज़ राँदड़ (मकराना)

नाज़िमे-आला सूबाई जमइय्यत अहले हदीष़ राजस्थान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अठारहवां पारा

बाब 78 : हज्जतुल वदाअ़ का बयान

٧٨- باب حَجَّةِ الْوَدَاعِ

तश्रीह : लफ़्ज़े वदाअ़ के मा'नी रुख़्सत करने के हैं । रसूले करीम (ﷺ) ने 10 हिजरी में ये हज्ज किया और उस मौक़े पर आपने उम्मत से साफ़ लफ़्ज़ों में फ़र्मा दिया कि अब आइन्दा साल शायद मेरी मुलाक़ात तुमसे न हो सकेगी मैं दुनिया से रुख़्सत हो जाऊँगा। इस लिहाज़ से इस हज्ज को हज्जतुल वदाअ़ कहा गया। उसमें आप (ﷺ) उम्मत से रुख़्सत हो गये। इस मौक़े पर आपने उम्मत को बहुत क़ीमती नसीहतें कीं, जिनका ज़िक्र सीरत की किताबों में तफ़्सील के साथ मौजूद है। यहाँ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने इस हज्ज के मुख़्तलिफ़ वाक़ियात का ज़िक्र फ़र्माया है, जैसा कि बग़ौर मुतालअ़ा करने वालों पर ज़ाहिर होगा। इस हज्ज के लिये आप 26 ज़ीक़अ़दा 10 हिजरी में बाद नमाज़े ज़ुहर मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन एक लाख 24 हज़ार मुसलमानों के साथ निकले और नौ दिन का सफ़र करने के बाद 4 ज़िलहिज्ज बरोज़ इतवार सुबह के वक़्त आप मक्का शरीफ़ पहुँचे। इस हज्ज के तीन माह बाद आपकी वफ़ात हो गई। (ﷺ) इस साल ग़ुर्रह ज़िलहिज्ज जुमेरात के दिन था और वक़ूफ़े अ़र्फ़ा जुम्आ के दिन वाक़ेअ़ हुआ था।

4395. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर हम रसूले करीम (ﷺ) के साथ रवाना हुए। हमने उ़मरह का एहराम बाँधा था, फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसके साथ हदी हो वो उ़मरह के साथ हज्ज का भी एहराम बाँध ले और जब तक दोनों के अरकान न अदा कर ले एहराम न खोले, फिर मैं आप (ﷺ) के साथ जब मक्का आई तो मुझको हैज़ आ गया। इसलिये न बैतुल्लाह का तवाफ़ कर सकी और न सफ़ा व मर्वा की सई कर सकी। मैंने उसकी शिकायत आप (ﷺ) से की तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि सर खोल ले और कंघा कर ले। उसके बाद हज्ज का एहराम बाँध लो और उ़मरह छोड़ दो। मैंने ऐसा ही किया। फिर जब हम हज्ज अदा कर चुके तो आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे (मेरे भाई) अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) के साथ तन्ईम से

٤٣٩٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَأَهْلَلْنَا بِعُمْرَةٍ ثُمَّ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ كَانَ عِنْدَهُ هَدْيٌ فَلْيُهِلَّ بِالْحَجِّ مَعَ الْعُمْرَةِ ثُمَّ لاَ يَحِلُّ حَتَّى يَحِلَّ مِنْهُمَا جَمِيعًا)) فَقَدِمْتُ مَعَهُ مَكَّةَ وَأَنَا حَائِضٌ، وَلَمْ أَطُفْ بِالْبَيْتِ وَلاَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ فَشَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ ((انْقُضِي رَأْسَكِ وَامْتَشِطِي وَأَهِلِّي بِالْحَجِّ وَدَعِي الْعُمْرَةَ)) فَفَعَلْتُ فَلَمَّا قَضَيْنَا الْحَجَّ أَرْسَلَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي

بَكرِ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِلَى التَّنعِيمِ فَاعْتَمَرْتُ فَقَالَ : ((هَذِهِ مَكَانُ عُمْرَتِكِ)) قَالَتْ: فَطَافَ الَّذِينَ أَهَلُّوا بِالْعُمْرَةِ بِالْبَيْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ حَلُّوا ثُمَّ طَافُوا طَوَافًا آخَرَ بَعْدَ أَنْ رَجَعُوا مِنْ مِنًى وَأَمَّا الَّذِينَ جَمَعُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ فَإِنَّمَا طَافُوا طَوَافًا وَاحِدًا.

[راجع: ٢٩٤]

(उमरह की) निय्यत करने के लिये भेजा और मैंने उ़मरह किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तुम्हारे इस छूटे हुए उमरह की क़ज़ा है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिन लोगों ने सिर्फ़ उमरह का एहराम बाँधा था। उन्होंने बैतुल्लाह के तवाफ़ और सफ़ा और मर्वा की सई के बाद एहराम खोल दिया। फिर मिना से वापसी के बाद उन्होंने दूसरा तवाफ़ (हज्ज का) किया, लेकिन जिन लोगों ने हज्ज और उमरह दोनों का एहराम एक साथ बाँधा था, उन्होंने एक ही तवाफ़ किया। (राजेअ़ : 294)

क्योंकि उमरह के अरकान, हज्ज में शरीक हो गये। अलैहदा (अलग से) अदा करने की ज़रूरत नहीं रही। इसमें हन्फ़िया का इख़्तिलाफ़ है। ये हदीष़ किताबुल हज्ज में गुज़र चुकी है लेकिन यहाँ सिर्फ़ इसलिये लाए कि उसमें हज्जतुल वदाअ़ का ज़िक्र है।

٤٣٩٦ - حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ إِذَا طَافَ بِالْبَيْتِ فَقَدْ حَلَّ فَقُلْتُ مِنْ أَيْنَ؟ قَالَ : هَذَا ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ : مِنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ﴾ وَمِنْ أَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ أَصْحَابَهُ أَنْ يَحِلُّوا فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقُلْتُ: إِنَّمَا كَانَ ذَلِكَ بَعْدَ الْمُعَرَّفِ قَالَ كَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَرَاهُ قَبْلَ وَبَعْدُ.

4396. मुझसे अ़म्र बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ता बिन रिबाह ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि (उमरह करने वाला) सिर्फ़ बैतुल्लाह के तवाफ़ से हलाल हो सकता है। (इब्ने जुरैज ने कहा) मैंने अ़ता से पूछा कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ये मसला कहाँ से निकाला? उन्होंने बताया कि अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, 'षुम्मा महिल्लुहा इलल बैतिल अ़तीक़' (सूरह हज्ज) से और नबी करीम (ﷺ) के इस हुक्म की वजह से जो आपने अपने अस्हाब को हज्जतुल वदाअ़ में एहराम खोल देने के लिये दिया था। मैंने कहा कि ये हुक्म तो अ़रफ़ात में ठहरने के बाद के लिये है। उन्होंने कहा लेकिन इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का ये मज़हब था कि अ़रफ़ात में ठहरने से पहले और बाद हर हाल में जब तवाफ़ कर ले तो एहराम खोल डालना दुरुस्त है।

आयत का तर्जुमा ये है कि फिर उनका हलाल होना पुराने घर या'नी ख़ाना का'बा के पास है।

٤٣٩٧ - حَدَّثَنِي بَيَانٌ حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَيْسٍ قَالَ سَمِعْتُ طَارِقًا عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِالْبَطْحَاءِ فَقَالَ: ((أَحَجَجْتَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ:

4397. मुझसे बयान बिन अ़म्र ने बयान किया, कहा हमसे नज़र बिन शमील ने बयान किया, उन्हें शुअ़बा ने ख़बर दी, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने तारिक़ बिन शिहाब से सुना और उनसे हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त आप (ﷺ) वादी-ए-बत़्हाअ (पथरीली ज़मीन) में क़याम किये हुए थे। आपने पूछा तुमने हज्ज का

((كَيْفَ أَهْلَلْتَ؟)) قُلْتُ: لَبَّيْكَ بِإِهْلَالٍ كَإِهْلَالِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((طُفْ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، ثُمَّ حِلَّ)) فَطُفْتُ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَأَتَيْتُ امْرَأَةً مِنْ قَيْسٍ فَفَلَتْ رَأْسِي. [راجع: ١٥٥٧]

एहराम बाँध लिया? मैंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। दरयाफ़्त फ़र्माया, एहराम किस तरह बाँधा है? अ़र्ज़ किया (इस तरह) कि मैं भी इसी तरह एहराम बाँधता हूँ जिस तरह नबी करीम (ﷺ) ने बाँधा है। आपने फ़र्माया, पहले (उ़मरह करने के लिये) बैतुल्लाह का त़वाफ़ कर, फिर स़फ़ा और मर्वा की सई कर, फिर हलाल हो जा। चुनाँचे मैं बैतुल्लाह का त़वाफ़ और स़फ़ा और मर्वा की सई करके क़बील-ए-क़ैस की एक औ़रत के घर आया और उन्होंने मेरे सर से जूएँ निकालीं। (राजेअ़ : 1557)

इसी क़िस्म के एहराम को हज्जे तमत्तोअ़ का एहराम कहा जाता है। आपका एहराम हज्जे क़िरान का था मगर उनके लियेआपने हज्जे तमत्तोअ़ ही को आसान ख़्याल फ़र्माया। अब भी हज्जे तमत्तोअ़ ही बेहतर है क्योंकि उसमें हाजी को आसानी हो जाती है। कुछ लोगों ने हज्जे-बदल वालों के लिये हज्जे क़िरान की शर्त लगाई है जिसकी दलील नहीं मिली, **वल्लाहु आलमु बिस़्स़वाब।**

٤٣٩٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، أَخْبَرَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّ حَفْصَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يَحْلِلْنَ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقَالَتْ حَفْصَةُ: فَمَا يَمْنَعُكَ؟ فَقَالَ: لَبَّدْتُ رَأْسِي وَقَلَّدْتُ هَدْيِي فَلَسْتُ أَحِلُّ حَتَّى أَنْحَرَ هَدْيِي. [راجع: ١٥٦٦]

4398. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमको अनस बिन अ़याज़ ने ख़बर दी, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हफ़्स़ा (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर अपनी बीवियों को हुक्म दिया कि (उ़मरह करने के बाद) हलाल हो जाएँ (या'नी एहराम खोल दें) हफ़्स़ा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया (या रसूलल्लाह!) फिर आप क्यूँ नहीं हलाल होते? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तो अपने बालों को जमा लिया है और अपनी क़ुर्बानी को हार पहना दिया है, इसलिये मैं जब तक क़ुर्बानी न कर लूँ उस वक़्त तक एहराम नहीं खोल सकता। (राजेअ़ : 1566)

गोंद लगाकर आप (ﷺ) ने सरे मुबारक के बिखरे हुए बालों को जमा लिया था, उसको लफ़्ज़े तल्बीद से ता'बीर किया गया है। आप (ﷺ) का एहराम हज्जे क़िरान का था। इसीलिये आपने एहराम नहीं खोला मगर स़हाबा (रज़ि.) को आपने हज्जे तमत्तोअ़ ही के एहराम की ताकीद फ़र्माई थी।

٤٣٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، قَالَ حَدَّثَنِي شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ: حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ امْرَأَةً مِنْ خَثْعَمَ اسْتَفْتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ

4399. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे शुऐ़ब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, (दूसरी सनद) (और इमाम बुख़ारी रह ने कहा) और मुझसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें सुलैमान बिन यसार ने और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि क़बीला ख़ष्अम की एक औ़रत ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर रसूले

الْوَدَاعِ، وَالْفَضْلُ بْنُ عَبَّاسٍ رَدِيفُ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ فَرِيضَةَ اللهِ عَلَى عِبَادِهِ أَدْرَكَتْ أَبِي شَيْخًا كَبِيرًا لاَ يَسْتَطِيعُ أَنْ يَسْتَوِيَ عَلَى الرَّاحِلَةِ فَهَلْ يَقْضِي أَنْ أَحُجَّ عَنْهُ؟ قَالَ : ((نَعَمْ)).

[راجع: ١٥١٣]

करीम (ﷺ) से एक मसला पूछा, फ़ज़ल बिन अ़ब्बास (रज़ि.) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ही की सवारी पर आपके पीछे बैठे हुए थे। उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह! अल्लाह का जो फ़रीज़ा उसके बन्दों पर है (या'नी ह़ज्ज) मेरे वालिद पर भी फ़र्ज़ हो चुका है लेकिन बुढ़ापे की वजह से उनकी ह़ालत ये है कि वो सवारी पर नहीं बैठ सकते। तो क्या मैं उनकी त़रफ़ से ह़ज्ज अदा कर सकती हूँ? आपने फ़र्माया कि हाँ! कर सकती हो। (राजेअ़ : 1513)

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से ह़ज्जे बदल करना ष़ाबित हुआ मगर ये ह़ज्ज करना उसी के लिये जाइज़ है जो पहले अपना ह़ज्ज अदा कर चुका हो। जैसा कि ह़दीष़े शुब्रमा में वज़ाहत मौजूद है। रिवायत में ह़ज्जतुल वदाअ़ का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत है।

٤٤٠٠ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا سُرَيْجُ بْنُ النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَقْبَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَامَ الْفَتْحِ وَهُوَ مُرْدِفٌ أُسَامَةَ عَلَى الْقَصْوَاءِ وَمَعَهُ بِلاَلٌ وَعُثْمَانُ بْنُ طَلْحَةَ، حَتَّى أَنَاخَ عِنْدَ الْبَيْتِ ثُمَّ قَالَ لِعُثْمَانَ: ((ائْتِنَا بِالْمِفْتَاحِ)) فَجَاءَهُ بِالْمِفْتَاحِ فَفَتَحَ لَهُ الْبَابَ فَدَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ وَأُسَامَةُ وَبِلاَلٌ وَعُثْمَانُ ثُمَّ أَغْلَقُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَمَكَثَ نَهَارًا طَوِيلاً ثُمَّ خَرَجَ وَابْتَدَرَ النَّاسُ الدُّخُولَ فَسَبَقْتُهُمْ فَوَجَدْتُ بِلاَلاً قَائِمًا مِنْ وَرَاءِ الْبَابِ فَقُلْتُ لَهُ : أَيْنَ صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ؟ فَقَالَ: صَلَّى بَيْنَ ذَيْنِكَ الْعَمُودَيْنِ الْمُقَدَّمَيْنِ، وَكَانَ الْبَيْتُ عَلَى سِتَّةِ أَعْمِدَةٍ سَطْرَيْنِ صَلَّى بَيْنَ الْعَمُودَيْنِ مِنَ السَّطْرِ الْمُقَدَّمِ، وَجَعَلَ بَابَ الْبَيْتِ خَلْفَ ظَهْرِهِ، وَاسْتَقْبَلَ بِوَجْهِهِ الَّذِي يَسْتَقْبِلُكَ حِينَ تَلِجُ الْبَيْتَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجِدَارِ، قَالَ: وَنَسِيتُ أَنْ أَسْأَلَهُ كَمْ

4400. मुझसे मुहम्मद बिन राफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुरैज बिन नोअ़मान ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तह़ मक्का के दिन नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए, आप (ﷺ) की क़स्वा ऊँटनी पर पीछे ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) बैठे हुए थे और आपके साथ बिलाल (रज़ि.) और उ़ष़्मान बिन त़ल्हा (रज़ि.) भी थे। आप (ﷺ) ने का'बा के पास अपनी ऊँटनी बिठा दी और उ़ष़्मान (रज़ि.) से फ़र्माया कि का'बा की चाबी लाओ, वो चाबी लाए और दरवाज़ा खोला। हुज़ूर अंदर दाख़िल हुए तो आप (ﷺ) के साथ उसामा, बिलाल और उ़ष़्मान (रज़ि.) भी अंदर गये, फिर दरवाज़ा अंदर से बन्द कर लिया और देर तक अंदर (नमाज़ और दुआओं में मशग़ूल) रहे। जब आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए तो लोग अंदर जाने के लिये एक—दूसरे से आगे बढ़ने लगे और मैं सबसे आगे बढ़ गया। मैंने देखा कि बिलाल (रज़ि.) दरवाज़े के पीछे खड़े हुए हैं। मैंने उनसे पूछा कि नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़ कहाँ पढ़ी थी? उन्होंने बताया कि ख़ाना का'बा में छः सतून थे। दो क़तारों में और हुज़ूर (ﷺ) ने आगे की क़तार के दो सतूनों के बीच नमाज़ पढ़ी थी। का'बा का दरवाज़ा आप (ﷺ) की पीठ की त़रफ़ था और चेहरा मुबारक इस त़रफ़ था, जिधर दरवाज़े से अंदर जाते हुए चेहरा करना पड़ता है। आपके और दीवार के दरम्यान (तीन हाथ का फ़ासला था) इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि ये पूछना मैं भूल गया कि

صَلَّى؟ وَعِنْدَ الْمَكَانِ الَّذِي صَلَّى فِيهِ مَرْمَرَةٌ حَمْرَاءُ. [راجع: ٣٩٧]

आँहज़रत (ﷺ) ने कितनी रकअत नमाज़ पढ़ी थी। जिस जगह आपने नमाज़ पढ़ी थी वहाँ सुर्ख़ संगे मरमर बिछा हुआ था। (राजेअ : 397)

तश्रीह : इस हदीष़ की मुनासबत बाब से मा'लूम नहीं होती। फ़तहे मक्का 8 हिजरी में हुआ और हज्जतुल वदाअ़ 10 हिजरी में वक़ूअ़ में आया। शायद यही फ़र्क़ बतलाना मक़्सूद हो कि हज्जतुल वदाअ़, फ़तहे मक्का के बाद वक़ूअ़ में आया है।

٤٤٠١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، وَأَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ، أَخْبَرَتْهُمَا أَنَّ صَفِيَّةَ بِنْتَ حُيَيٍّ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ حَاضَتْ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((أَحَابِسَتُنَا هِيَ؟)) فَقُلْتُ: إِنَّهَا قَدْ أَفَاضَتْ يَا رَسُولَ اللهِ وَطَافَتْ بِالْبَيْتِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَلْتَنْفِرْ)). [راجع: ٢٩٤]

4401. हमसे अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हुज़ूर (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत सफ़िया (रज़ि.) हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ा पर हाइज़ा हो गई थीं। हुज़ूर (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया, क्या अभी हमें उनकी वजह से रुकना पड़ेगा? मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ये तो मक्का लौटकर तवाफ़े ज़ियारत कर चुकी हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उसे चलना चाहिये। (तवाफ़े वदाअ़ की ज़रूरत नहीं)

(राजेअ़ : 294)

٤٤٠٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ. أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ : حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا نَتَحَدَّثُ بِحَجَّةِ الْوَدَاعِ وَالنَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَظْهُرِنَا وَلاَ نَدْرِي مَا حَجَّةُ الْوَدَاعِ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ ذَكَرَ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ فَأَطْنَبَ فِي ذِكْرِهِ وَقَالَ : ((مَا بَعَثَ اللهُ مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ أَنْذَرَ أُمَّتَهُ أَنْذَرَهُ نُوحٌ، وَالنَّبِيُّونَ مِنْ بَعْدِهِ وَإِنَّهُ يَخْرُجُ فِيكُمْ فَمَا خَفِيَ عَلَيْكُمْ مِنْ شَأْنِهِ، فَلَيْسَ يَخْفَى عَلَيْكُمْ أَنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ عَلَى مَا يَخْفَى عَلَيْكُمْ ثَلاَثًا، إِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ، وَإِنَّهُ أَعْوَرُ عَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّ عَيْنَهُ

4402. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे उ़मर बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि हम हज्जतुल वदाअ़ कहा करते थे, जबकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मौजूद थे और हम नहीं समझते थे कि हज्जतुल वदाअ़ का मफ़्हूम क्या है। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अल्लाह की हम्द और उसकी ष़ना बयान की फिर मसीह दज्जाल का ज़िक्र तफ़्सील के साथ किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जितने भी अंबिया अल्लाह ने भेजे हैं, सबने दज्जाल से अपनी उम्मत को डराया है। हज़रत नूह (अ़लैहि.) ने अपनी उम्मत को इससे डराया और दूसरे बाद में आने वाले अंबिया ने भी और वो तुम ही में से निकलेगा। पस याद रखना कि तुमको उसके झूठे होने की और कोई दलील न मा'लूम हो तो यही दलील काफ़ी है कि वो मर्दूद काना होगा और तुम्हारा रब काना नहीं है। उसकी आँख ऐसी मा'लूम होगी जैसे अंगूर का दाना!

عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ)). [راجع: ٣٠٥٧]

4403. ख़ूब सुन लो कि अल्लाह तआला ने तुम पर तुम्हारे आपस के ख़ून और माल उसी तरह हराम किये हैं जैसे इस दिन की हुर्मत इस शहर और इस महीने में है। हाँ बोलो! क्या मैंने पहुँचा दिया? सहाबा (रज़ि.) बोले कि आपने पहुँचा दिया। फ़र्माया, ऐ अल्लाह! तू गवाह रह, तीन मर्तबा आपने ये जुम्ला दोहराया। अफ़सोस! (आपने वयलकुम फ़र्माया वयहकुम, रावी को शक है) देखो, मेरे बाद काफ़िर न बन जाना कि एक-दूसरे (मुसलमान) की गर्दन मारने लग जाओ।

(राजेअ: 1892)

٤٤٠٣- ((أَلاَ إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَيْكُمْ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) قَالُوا : نَعَمْ. قَالَ : ((اللَّهُمَّ اشْهَدْ ثَلاَثًا، وَيْلَكُمْ أَوْ وَيْحَكُمْ انْظُرُوا، لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

तश्रीह: इस तौर पर कि काफ़िरों को छोड़कर आपस ही में लड़ने लगो। ज़ाहिर हदीष़ से निकलता है कि मुसलमान का बिला वजह शरई ख़ून करना कुफ़्र है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का यही क़ौल है लेकिन दूसरे उ़लमा ने तावील की है। मतलब ये है कि काफ़िरों जैसा फ़अ़ल न करो। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) वदाअ़ के बारे शक में रहे कि आँहज़रत (ﷺ) का वदाअ़ मुराद है या मक्का का वदाअ़ मुराद है। मगर बाद में मा'लूम हुआ कि ख़ुद आप (ﷺ) का वदाअ़ मुराद था। आप (ﷺ) फिर चन्द दिनों बाद ही इंतिक़ाल फ़र्मा गये। आँहज़रत (ﷺ) का ये ख़ुत्बा भी हज्जतुल वदाअ़ का ख़ुत्बा है।

4404. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआ़विया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ सबीई ने बयान किया, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्नीस ग़ज़्वे किये और हिजरत के बाद सिर्फ़ एक हज्ज किया। इस हज्ज के बाद फ़िर आप (ﷺ) ने कोई हज्ज नहीं किया। ये हज्ज, हज्जतुल वदाअ़ था। अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि दूसरा हज्ज आपने (हिजरत से पहले) मक्का में किया था। (राजेअ: 3949)

٤٤٠٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، قَالَ : حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَزَا تِسْعَ عَشْرَةَ غَزْوَةً، وَأَنَّهُ حَجَّ بَعْدَمَا هَاجَرَ حَجَّةً وَاحِدَةً لَمْ يَحُجَّ بَعْدَهَا حَجَّةَ الْوَدَاعِ، قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ: وَبِمَكَّةَ أُخْرَى. [راجع: ٣٩٤٩]

ये अबू इस्हाक़ का ख़्याल है। सहीह ये है कि आपने मक्का में रहते वक़्त बहुत हज्ज किये थे। आप हर साल हज्ज करते थे। (वहीदी)

4405. हमसे हफ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे अ़ली बिन मुदरक ने बयान किया, उनसे अबू ज़रआ़ हरम बिन अ़म्र बिन जरीर ने बयान किया और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर जरीर (रज़ि.) से फ़र्माया था, लोगों को ख़ामोश कर दो, फिर फ़र्माया,, मेरे बाद काफ़िर न बन जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (राजेअ: 121)

٤٤٠٥- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُدْرِكٍ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ جَرِيرٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ لِجَرِيرٍ: ((اسْتَنْصِتِ النَّاسَ)) فَقَالَ : ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا، يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٢١]

मत़लब ये है कि मेरे बाद फिर अ़हदे जाहिलियत जैसे काम न करने लग जाना, आपस का झगड़ा-फ़साद, क़त्लो-ग़ारत ये भी अ़हदे कुफ़्र के काम हैं। अब मुसलमान होने के बाद फिर जाहिलियत की तारीख़ न दोहराने लग जाना, मगर ये किस क़दर अफ़सोस की बात है कि अ़हदे नुबुव्वत के बाद मुसलमानों में ख़ानाजंगियों (गृहयुद्धों) का एक ख़तरनाक सिलसिला शुरू हो गया जो आज तक भी जारी है। अहले इस्लाम ने हिदायते नबवी को फ़रामोश कर दिया। इन्नालिल्लाह।

४४०٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((الزَّمَانُ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللهُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ، السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا، مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ، ثَلاَثَةٌ مُتَوَالِيَاتٌ. ذُو الْقَعْدَةِ، وَذُوا الْحِجَّةِ، وَالْمُحَرَّمُ، وَرَجَبُ مُضَرَ الَّذِي بَيْنَ جُمَادى وَشَعْبَانَ. أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟)) قُلْنَا : اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ : ((أَلَيْسَ ذُو الْحِجَّةِ؟)) قُلْنَا : بَلَى، قَالَ : ((فَأَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟)) قُلْنَا : اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ : ((أَلَيْسَ الْبَلْدَةَ؟)) قُلْنَا : بَلَى قَالَ : ((فَأَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟)) قُلْنَا : اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ: ((أَلَيْسَ يَوْمَ النَّحْرِ؟)) قُلْنَا بَلَى، قَالَ: ((فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ)) قَالَ مُحَمَّدٌ وَأَحْسِبُهُ قَالَ: ((وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا، وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ فَيَسْأَلُكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ أَلاَ فَلاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي ضُلاَّلاً

4406. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़माना अपनी अ़सल हालत पर घूमकर आ गया है। उस दिन की त़रह जब अल्लाह ने ज़मीन व आसमान को पैदा किया था। देखो! साल के बारह महीने होते हैं। चार उन में हुर्मत वाले महीने हैं। तीन लगातार हैं, ज़ीक़अ़दा, ज़िलहिज्ज और मुहर्रम (और चौथा) रजबे मुज़र जो जमादिल उख़रा और शाबान के बीच में पड़ता है। (फिर आपने पूछा) ये कौनसा महीना है? हमने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को बेहतर इल्म है। इस पर आप (ﷺ) ख़ामोश हो गये। हमने समझा शायद आप मशहूर नाम के सिवा उसका कोई और नाम रखेंगे। लेकिन आपने फ़र्माया, क्या ये ज़िलहिज्ज नहीं है? फिर आपने पूछा ये शहर कौनसा है? हमने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को बेहतर इल्म है। इस पर आप (ﷺ) ख़ामोश हो गये। हमने समझा शायद आप मशहूर नाम के सिवा उसका कोई और नाम रखेंगे। लेकिन आपने फ़र्माया, क्या ये मक्का नहीं है? हम बोले कि क्यूँ नहीं (ये मक्का ही है) फिर आपने दरयाफ़्त फ़र्माया और ये दिन कौनसा है? हम बोले कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को ज़्यादा बेहतर इल्म है, फिर आप ख़ामोश हो गये और हमने समझा शायद उसका आप उसके मशहूर नाम के सिवा कोई और नाम रखें गे, लेकिन आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये यौमुन् नह़र (क़ुर्बानी का दिन) नहीं है? हम बोले कि क्यूँ नहीं। उसके बाद आपने फ़र्माया। पस तुम्हारा ख़ून और तुम्हारा माल। मुहम्मद ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि अबूबक्र (रज़ि.) ने ये भी कहा, और तुम्हारी इ़ज़्ज़त तुम पर इसी त़रह ह़राम है जिस त़रह ये दिन; तुम्हारे इस शहर इस महीने में और तुम बहुत जल्द अपने रब से मिलोगे और वो तुमसे तुम्हारे आ़माल के बार

में सवाल करेगा। हाँ, पस मेरे बाद तुम गुमराह न हो जाना कि एक-दूसरे की गर्दन मारने लगो। हाँ! और जो यहाँ मौजूद हैं वो उन लोगों को पहुँचा दें जो मौजूद नहीं हैं, हो सकता है कि जिसे वो पहुँचाए उनमें से कोई ऐसा भी हो जो यहाँ कुछ सुनने वालों से ज़्यादा इस (ह़दीष़) को याद रख सकता हो। मुह़म्मद बिन सीरीन जब इस ह़दीष़ का ज़िक्र करते तो फ़र्माते कि मुह़म्मद (ﷺ) ने सच फ़र्माया। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तो क्या मैंने पहुँचा दिया। आप (ﷺ) ने दो मर्तबा ये जुम्ला फ़र्माया।

يضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ أَلاَ لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ فَلَعَلَّ بَعْضَ مَنْ يُبَلِّغُهُ أَنْ يَكُونَ أَوْعَى لَهُ مِنْ بَعْضِ مَنْ سَمِعَهُ)) فَكَانَ مُحَمَّدٌ إِذَا ذَكَرَهُ يَقُولُ: صَدَقَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: ((أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) مَرَّتَيْنِ.

तशरीह : हुआ ये था कि मुश्रिक कम्बख़्त ह़राम महीनों को अपने मत़लब से पीछे डाल देते। मुह़र्रम में लड़ना ह़राम था मगर उनको अगर इस माह में लड़ना होता तो मुह़र्रम को स़फ़र बना देते और स़फ़र को मुह़र्रम क़रार दे देते। इसी त़रह़ मुद्दतों से वो अपने स्वार्थ के तह़त महीनों को उलटफेर करते चले आ रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से जिस साल आपने ह़ज्जतुल वदाअ़ किया तो ज़िलह़िज्ज का ठीक महीना पड़ा जो वाक़ई ह़िसाब से होना चाहिये था। उस वक़्त आपने ये ह़दीष़ फ़र्माई। मत़लब आपका ये था कि अब आइन्दा ग़लत़ ह़िसाब न होना चाहिये और महीनों का शुमार बिलकुल ठीक गिनती के मुवाफ़िक़ होना चाहिये। माह रजब को क़बील-ए-मुज़र की त़रफ़ इसलिये मन्सूब किया कि क़बीला मुज़र वाले और अ़रबों से ज़्यादा माहे रजब की ता'ज़ीम करते, उसमें लड़ाई भिड़ाई के लिये हर्गिज़ तैयार न होते। इस ह़दीष़ में आँह़ज़रत (ﷺ) ने बहुत से उसूली अह़काम को बयान फ़र्माया और मुसलमानों को आपस में लड़ने झगड़ने से ख़ास़ त़ौर पर मना किया, मगर स़द अफ़सोस! कि उम्मत में इख़्तिलाफ़ फिर इंशिक़ाक़ व इफ़्तिराक़ का जो मंज़र देखा जा रहा है। इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मुसलमानों ने अपने रसूल (ﷺ) की आख़िरी वस़िय्यत पर कहाँ तक अमल-दरामद किया है। स़द अफ़सोस!

इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

रिवायत में ह़ज्जतुल वदाअ़ का ज़िक्र है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। ह़ज़रत मुह़म्मद बिन सीरीन ताबेअ़ीन में बड़े ज़बरदस्त आ़लिम, फ़क़ीह मुह़द्दिष़, मुत्तक़ी, अल्लाह वाले बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। इतने नेक थे कि उनको देखने से अल्लाह याद आ जाता है। मौत को बकष़रत याद फ़र्माते थे। ख़्वाब की ता'बीर में भी इमामे फ़न थे। 77 साल की उ़म्र पाकर 110 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। रह़िमहुल्लाह तआ़ला।

4407. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने कि चन्द यहूदियों ने कहा कि अगर ये आयत हमारे यहाँ नाज़िल हुई होती तो हम उस दिन ईद मनाया करते। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, कौनसी आयत? उन्होंने कहा, 'अल्यौम अक्मल्तु लकुम दीनकुम व अत्मम्तु अ़लैकुम निअ़मती' (आज मैंने तुम पर अपने दीन को कामिल किया और अपनी नेअ़मत तुम पर पूरी कर दी)। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मुझे ख़ूब मा'लूम है कि ये

٤٤٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، أَنَّ أُنَاسًا مِنَ الْيَهُودِ قَالُوا : لَوْ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِينَا لاَتَّخَذْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ عِيدًا فَقَالَ عُمَرُ : أَيَّةُ آيَةٍ؟ فَقَالُوا ﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي﴾ [المائدة : ٣].

فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي لأَعْلَمُ أَيَّ مَكَانٍ أُنْزِلَتْ، أُنْزِلَتْ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاقِفٌ بِعَرَفَةَ.

[راجع: ٤٥، ٦٧]

आयत कहाँ नाज़िल हुई थी। जब ये आयत नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मैदाने अरफ़ात में खड़े हुए थे। (या'नी हज्जतुल वदाअ में) (राजेअ : 45, 67)

तिर्मिज़ी की रिवायत में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यूँ मरवी है कि उस दिन तो दोहरी ईद थी। एक तो जुम्आ का दिन था जो इस्लाम की हफ़्तावारी ईद है। दूसरे यौमे अरफ़ात था जो ईद से भी बढ़कर फ़ज़ीलत रखता है। हज्जतुल वदाअ का ज़िक्र ही बाब से वजहे मुनासबत है।

٤٤٠٨ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجَّةٍ، وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجٍّ وَعُمْرَةٍ، وَأَهَلَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْحَجِّ فَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ فَلَمْ يَحِلُّوا حَتَّى يَوْمِ النَّحْرِ.

4408. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन नौफ़िल ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ (हज्ज के लिये) निकले तो कुछ लोग हममें से उमरह का एहराम बाँधे हुए थे, कुछ हज्ज का और कुछ उमरह और हज्ज दोना का। आँहज़रत (ﷺ) ने भी हज्ज का एहराम बाँधा था। जो लोग हज्ज का एहराम बाँधे हुए थे या जिन्होंने हज्ज और उमरह दोनों का एहराम बाँधा था, वो क़ुर्बानी के दिन हलाल हुए थे।

सफ़रे हज्ज में मीक़ात पर पहुँचने के बाद हाजी को इख़्तियार है कि वो तीन क़िस्म की निय्यत में से चाहे जिस निय्यत के साथ एहराम बाँधे। (1) हज्जे तमत्तोअ (2) हज्जे क़िरान (3) हज्जे इफ़राद। हज्जे तमत्तोअ की निय्यत से एहराम बाँधना बेहतर है। जिसमें हाजी मक्का शरीफ़ पहुँचकर फ़ौरन ही उमरह करके एहराम खोल देता है और फिर आठवीं ज़िलहिज्ज को नये सिरे से हज्ज का एहराम बाँधकर मिना का सफ़र शुरू करता है। इस एहराम में हाजी के लिये हर क़िस्म की सहूलतें हैं। हज्जे क़िरान जिसमें उमरह फिर हज्ज एक ही एहराम से किया जाता है और ख़ाली हज्ज ही की निय्यत करना हज्जे इफ़राद कहलाता है।

.... - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ وَقَالَ: مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ. حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ مِثْلَهُ. [راجع: ٢٩٤]

हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, फिर यही हदीष़ बयान की। उसमें यूँ है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हज्जतुल वदाअ (के लिये हम निकले) हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, इसी तरह जो पहले मज़्कूर हुआ। (राजेअ : 294)

٤٤٠٩ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ هُوَ ابْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: عَادَنِي النَّبِيُّ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ مِنْ وَجَعٍ، أَشْفَيْتُ مِنْهُ عَلَى الْمَوْتِ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ

4409. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने, उनसे आमिर बिन सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने और उनसे उनके वालिद सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) मेरी अयादत के लिए तशरीफ़ लाए। बीमारी ने मुझे मौत के मुँह में ला डाला था। मैंने

अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! जैसा कि आप मुलाहिज़ा फ़र्मा रहे हैं, मेरा मर्ज़ इस हद को पहुँच गया है और मेरे पास माल है, जिसकी वारिष़ स़िर्फ़ मेरी एक लड़की है, तो क्या मैं अपना दो तिहाई माल ख़ैरात कर दूँ? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने अ़र्ज़ किया, आधा कर दूँ। फ़र्माया कि नहीं। मैंने फ़र्माया क्या फिर तिहाई कर दूँ। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तिहाई भी बहुत है। तुम अपने वारिष़ों को मालदार छोड़कर जाओ तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें मुहताज छोड़ो और वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें और तुम जो कुछ भी खर्च करोगे, अगर इससे अल्लाह की रज़ा मक़्सूद रही तो तुम्हें उस पर ष़वाब मिलेगा। यहाँ तक कि उस लुक़्मे पर भी तुम्हें ष़वाब मिलेगा जो तुम अपनी बीवी के मुँह में रखोगे। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! (बीमारी की वजह से) क्या मैं अपने साथियों के साथ (मदीना) नहीं जा सकूँगा? फ़र्माया अगर तुम नहीं जा सके तब भी अगर तुम अल्लाह की रज़ाजोई के लिये कोई अ़मल करोगे तो तुम्हारा दर्जा अल्लाह के यहाँ और बुलन्द होगा और उम्मीद है कि तुम अभी ज़िन्दा रहोगे और तुमसे कुछ लोगों (मुसलमानों) को नफ़ा पहुँचेगा और कुछ लोगों (इस्लाम के दुश्मनों) को नुक़्सान पहुँचेगा। ऐ अल्लाह! मेरे साथियों की हिजरत को कामिल फ़र्मा और उन्हें पीछे न हटा लेकिन नुक़्सान में तो सअ़द बिन ख़ौला रहे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनके मक्का में वफ़ात पा जाने की वजह से ज़ाहिर फ़र्माया।

الله بَلَغَ بِي مِنَ الْوَجَعِ مَا تَرَى وَأَنَا ذُو مَالٍ وَلاَ يَرِثُنِي إِلاَّ ابْنَةٌ لِي وَاحِدَةٌ فَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثَيْ مَالِي؟ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ أَفَأَتَصَدَّقُ بِشَطْرِهِ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ فَالثُّلُثُ قَالَ: ((الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ. إِنَّكَ أَنْ تَذَرَ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ، وَلَسْتَ تُنْفِقُ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللهِ إِلاَّ أُجِرْتَ بِهَا حَتَّى اللُّقْمَةَ تَجْعَلُهَا فِي فِي امْرَأَتِكَ)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أُخَلَّفُ بَعْدَ أَصْحَابِي قَالَ: ((إِنَّكَ لَنْ تُخَلَّفَ فَتَعْمَلَ عَمَلاً تَبْتَغِي بِهِ وَجْهَ اللهِ إِلاَّ ازْدَدْتَ بِهِ دَرَجَةً وَرِفْعَةً، وَلَعَلَّكَ تُخَلَّفُ حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُونَ، اللَّهُمَّ أَمْضِ لأَصْحَابِي هِجْرَتَهُمْ وَلاَ تَرُدَّهُمْ عَلَى أَعْقَابِهِمْ)) لَكِنِ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ رَثَى لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ تُوُفِّيَ بِمَكَّةَ.

ह़ज्जतुल वदाअ़ के ज़िक्र की वजह से ह़दीष़ को यहाँ लाया गया।

4410. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ज़म्रह अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज्जतुल वदाअ़ में अपना सर मुँडवाया था। (राजेअ़ : 1726)

٤٤١٠- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَلَقَ رَأْسَهُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ. [راجع: ١٧٢٦]

4411. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन सई़द ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बक्र ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) और

٤٤١١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ أَخْبَرَهُ

आप (ﷺ) के साथ आपके कुछ अस्हाब ने हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर सर मुँडवाया था और कुछ दूसरे सहाबा (रज़ि.) ने सिर्फ़ तरशवा लिया था। (राजेअ : 1726)

ابْنُ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَلَقَ رَأْسَهُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ وَأُنَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ وَقَصَّرَ بَعْضُهُمْ. [راجع: ١٧٢٦]

4412. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया (दूसरी सनद) और लैष़ बिन सअद ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि वो एक गधे पर सवार होकर आए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मिना में खड़े लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। ये हज्जतुल वदाअ का मौक़ा था। उनका गधा सफ़ के कुछ हिस्से से गुज़रा, फिर वो उतरकर लोगों के साथ में खड़े हो गये। (राजेअ : 1726)

٤٤١٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ أَقْبَلَ يَسِيرُ عَلَى حِمَارٍ وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ قَائِمٌ بِمِنًى فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ يُصَلِّي بِالنَّاسِ فَسَارَ الْحِمَارُ بَيْنَ يَدَيْ بَعْضِ الصَّفِّ ثُمَّ نَزَلَ عَنْهُ فَصَفَّ مَعَ النَّاسِ. [راجع: ١٧٢٦]

4413. हमसे मुसद्दद बिन मुसरहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया कि मुझसे मेरे वालिद उर्वा ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि उसामा (रज़ि.) से हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर नबी करीम (ﷺ) की (सफ़र में) रफ़्तार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि बीच की चाल चलते थे और जब कुशादा जगह मिलती तो उससे तेज़ चलते थे। (1666)

٤٤١٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: سُئِلَ أُسَامَةُ وَأَنَا شَاهِدٌ عَنْ سَيْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّتِهِ فَقَالَ : الْعَنَقَ فَإِذَا وَجَدَ فَجْوَةً نَصَّ. [راجع: ١٦٦٦]

4414. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे अदी बिन षाबित ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ख़त्मी ने और उन्हें अबू अय्यूब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) के साथ हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर मग़रिब और इशा मिलाकर एक साथ पढ़ी थीं। (राजेअ : 1674)

٤٤١٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ يَزِيدَ الْخَطْمِيِّ، أَنَّ أَبَا أَيُّوبَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ الْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ جَمِيعًا. [راجع: ١٦٧٤]

तश्रीह : तमाम अहादीषे़ मज़्कूरा में किसी न किसी तरह से हज्जतुल वदाअ का ज़िक्र आया है। इसलिये हज़रत इमाम (रह.) ने इन अहादीष़ को यहाँ नक़ल फ़र्माया जो उनके कमाले इज्तिहाद की दलील है। वैसे हर एक हदीष़ से बहुत से मसाइल का इष्बात होता है। इसीलिये उनमें अकष़र अहादीष़ कई बाबों के तहत मज़्कूर हुई हैं जैसा कि बग़ौर मुतालआ करने वाले हज़रात पर ख़ुद रोशन हो सकेगा।

बाब 79 : ग़ज़्व-ए-तबूक़ का बयान, उसका दूसरा नाम ग़ज़्व-ए-उ़स्रः या'नी (तंगी का ग़ज्वा) भी है

٧٩- باب غَزْوَةِ تَبُوكَ وَهْيَ غَزْوَةُ الْعُسْرَةِ

तशरीह : उ़स्रः के मा'नी तंगी और तकलीफ़ के हैं। इस जंग में स़हाब-ए-किराम (रज़ि.) के लिये सवारी, राशन, कपड़े हर चीज़ की इंतिहाई क़िल्लत थी। ये माहे रजब 9 हिजरी का वाक़िया है। इस जंग का ज़िक्र सूरह तौबा में तफ़्सील के साथ मज़्कूर हुआ है। सख़्ततरीन गर्मी का मौसम था। खजूरों की फ़सल बिल्कुल तैयार थी। इन ह़ालात में स़हाबा (रज़ि.) का तैयार होना बड़े ही अ़ज़्म व ईमान का षुबूत पेश करना था। मुनाफ़िक़ीन ने खुलकर इंकार कर दिया और बहुत से ह़ीले ह़वाले पेश करने लगे। आयात **यअतज़िरून इलैकुम इज़ा रजअ़तुम इलैहिम** (अत् तौबा: 94) में उन ही मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है।

٤٤١٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَرْسَلَنِي أَصْحَابِي إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَسْأَلُهُ الْحُمْلاَنَ لَهُمْ إِذْ هُمْ مَعَهُ فِي جَيْشِ الْعُسْرَةِ، وَهْيَ غَزْوَةُ تَبُوكَ فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ إِنَّ أَصْحَابِي أَرْسَلُونِي إِلَيْكَ لِتَحْمِلَهُمْ، فَقَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ عَلَى شَيْءٍ)) وَوَافَقْتُهُ وَهُوَ غَضْبَانُ وَلاَ أَشْعُرُ وَرَجَعْتُ حَزِينًا مِنْ مَنْعِ النَّبِيِّ ﷺ وَمِنْ مَخَافَةِ أَنْ يَكُونَ النَّبِيُّ ﷺ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ عَلَيَّ فَرَجَعْتُ إِلَى أَصْحَابِي فَأَخْبَرْتُهُمُ الَّذِي قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ أَلْبَثْ إِلاَّ سُوَيْعَةً إِذْ سَمِعْتُ بِلاَلاً يُنَادِي أَيْ عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ فَأَجَبْتُهُ فَقَالَ: أَجِبْ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَدْعُوكَ، فَلَمَّا أَتَيْتُهُ قَالَ: ((خُذْ هَذَيْنِ الْقَرِينَيْنِ وَهَذَيْنِ الْقَرِينَيْنِ لِسِتَّةِ أَبْعِرَةٍ ابْتَاعَهُنَّ حِينَئِذٍ مِنْ سَعْدٍ فَانْطَلِقْ بِهِنَّ إِلَى أَصْحَابِكَ فَقُلْ: إِنَّ

4415. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़लाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे मेरे साथियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा कि मैं आप (ﷺ) से उनके लिये सवारी के जानवरों की दरख़्वास्त करूँ। वो लोग आपके साथ जेशे उ़स्रः (या'नी ग़ज़्व-ए-तबूक़) में शरीक होना चाहते थे। मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे साथियों ने मुझे आपकी ख़िदमत में भेजा है ताकि आप उनके लिये सवारी के जानवरों का इंतिज़ाम करा दें। आपने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मैं तुमको सवारी के जानवर नहीं दे सकता। मैं जब आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ था तो आप ग़ुस्से में थे और मैं उसे मा'लूम न कर सका था आप (ﷺ) के इंकार से मैं बहुत ग़मगीन वापस हुआ। ये डर भी था कि कहीं आप सवारी मांगने की वजह से ख़फ़ा न हो गये हों। मैं अपने साथियों के पास आया और उन्हें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के इर्शाद की ख़बर दी, लेकिन अभी कुछ ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि मैंने बिलाल (रज़ि.) की आवाज़ सुनी, वो पुकार रहे थे, ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! मैंने जवाब दिया तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तुम्हें बुला रहे हैं। मैं आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ तो आपने फ़र्माया कि ये दो जोड़े और ये दो जोड़े ऊँट के ले जाओ। आपने छः ऊँट इनायत फ़र्माए। उन ऊँटों को आपने उसी वक़्त सअ़द (रज़ि.) से ख़रीदा था और फ़र्माया कि उन्हें अपने साथियों को दे दो और उन्हें बताओ कि अल्लाह तआ़ला ने या आपने फ़र्माया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हारी सवारी के लिये इन्हें दिया है, उन पर सवार हो जाओ। मैं उन ऊँटों को लेकर अपने साथियों के

اللهِ - أَوْ قَالَ - إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَحْمِلُكُمْ عَلَى هَؤُلاَءِ فَارْكَبُوهُنَّ)) فَانْطَلَقْتُ إِلَيْهِمْ بِهِنَّ فَقُلْتُ : إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ يَحْمِلُكُمْ عَلَى هَؤُلاَءِ، وَلَكِنِّي وَاللهِ لاَ أَدَعُكُمْ حَتَّى يَنْطَلِقَ مَعِي بَعْضُكُمْ إِلَى مَنْ سَمِعَ مَقَالَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، لاَ تَظُنُّوا أَنِّي حَدَّثْتُكُمْ شَيْئًا لَمْ يَقُلْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقَالُوا لِي : إِنَّكَ عِنْدَنَا لَمُصَدَّقٌ، وَلَنَفْعَلَنَّ مَا أَحْبَبْتَ فَانْطَلَقَ أَبُو مُوسَى بِنَفَرٍ مِنْهُمْ حَتَّى أَتَوُا الَّذِينَ سَمِعُوا قَوْلَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْعَهُ إِيَّاهُمْ ثُمَّ إِعْطَاءَهُمْ بَعْدُ فَحَدَّثُوهُمْ بِمِثْلِ مَا حَدَّثَهُمْ بِهِ أَبُو مُوسَى.

[راجع: ٣١٣٣]

पास गया और उनसे मैंने कहा कि आँहुज़ूर (ﷺ) ने तुम्हारी सवारी के लिये ये इनायत किया हैं लेकिन अल्लाह की क़सम! कि अब तुम्हें उन स़हाबा (रज़ि.) के पास चलना पड़ेगा, जिन्होंने हुज़ूर अकरम (ﷺ) का इंकार फ़र्माना सुना था, कहीं तुम ये ख़्याल न कर बैठो कि मैंने तुमसे आँहुज़ूर (ﷺ) के इर्शाद के बारे में ग़लत़ बात कह दी थी। उन्होंने कहा कि तुम्हारी सच्चाई में हमें कोई शुब्हा नहीं है लेकिन अगर आपका इस़रार है तो हम ऐसा भी कर लेंगे। अबू मूसा (रज़ि.) उनमें से चन्द लोगों को लेकर उन स़हाबा (रज़ि.) के पास आए जिन्होंने आँहुज़ूर (ﷺ) का वो इर्शाद सुना था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने पहले तो देने से इंकार किया था लेकिन फिर इनायत फ़र्माया। उन स़हाबा (रज़ि.) ने भी उसी त़रह ह़दीष़ बयान की जिस त़रह अबू मूसा (रज़ि.) ने उनसे बयान की थी। (राजेअ़ : 3133)

तश्रीह़ : रिवायत में ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) का रसूले करीम (ﷺ) से सवारियाँ मांगने का ज़िक्र है। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त सवारियाँ मौजूद न थीं। लिहाज़ा आँह़ज़रत (ﷺ) ने इंकार फ़र्मा दिया। थोड़ी देर बाद सवारियाँ मुहैया हो गईं और रसूले पाक (ﷺ) ने अबू मूसा (रज़ि.) को वापस बुलवाकर पाँच छ : ऊँट उनको दिलवा दिये। अब अबू मूसा (रज़ि.) को ये डर हुआ कि मेरे साथी मुझको झूठा न समझ बैठें कि अभी तो उसने ये कहा कि था कि आँह़ज़रत (ﷺ) सवारी नहीं दे रहे हैं और अभी सवारियाँ लेकर आ गया। इसलिये ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने उनसे ये कहा कि मेरे साथ चलकर मेरी बात की तस्दीक़ आँह़ज़रत (ﷺ) से कर लो ताकि मेरी बात का तुमको यक़ीन हो जाए। चुनाँचे अबू मूसा (रज़ि.) के इस़रारे शदीद पर छः आदमी ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुए और उन्होंने अबू मूसा (रज़ि.) के बयान की तस्दीक़ की। ह़ज़रत अबू मूसा अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अशअ़री (रज़ि.) मशहूर मुहाजिर स़ह़ाबी हैं। जिन्होंने ह़ब्शा की त़रफ़ भी हिजरत की थी और ये अहले सफ़ीना के साथ मदीना आए थे जबकि रसूले करीम (ﷺ) ख़ैबर में थे। ह़ज़रत फ़ारूक़े आ़ज़म (रज़ि.) ने 20 हिजरी में उनको बस़रा का ह़ाकिम मुक़र्रर किया और ख़िलाफ़ते उ़ष्मान में उनको कूफ़ा का ह़ाकिम मुक़र्रर किया गया जब ही ये मक्का आ गये थे। 52 हिजरी में मक्का ही में उनका इंतिक़ाल हुआ, **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु।**

٤٤١٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنِ الْحَكَمِ عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ إِلَى تَبُوكَ وَاسْتَخْلَفَ عَلِيًّا فَقَالَ: أَتُخَلِّفُنِي فِي الصِّبْيَانِ وَالنِّسَاءِ؟ قَالَ: ((أَلاَ تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ

4416. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन समीर क़फ़्फ़ान ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे ह़कम बिन उ़त्बा ने, उनसे मुस्अ़ब बिन सअ़द ने और उनसे उनके वालिद ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक़ के लिये तशरीफ़ ले गये तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को मदीना में अपना नाइब बनाया। अ़ली (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि आप मुझे बच्चों और औ़रतों में छोड़े जा रहे हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इस

पर ख़ुश नहीं हो कि मेरे लिये तुम ऐसे हो जैसे मूसा (अलैहि.) के लिये हारून (अलैहि.) थे। लेकिन फ़र्क़ ये है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा। और अबू दाऊद तियालिसी ने इस हदीष़ को यूँ बयान किया कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे हकम बिन उ़त्बा ने और उन्होंने कहा मैंने मुस्अ़ब से सुना। (राजेअ़ : 3706)

هَارُونُ مِنْ مُوسَى، إِلاَّ أَنَّهُ لَيْسَ نَبِيٌّ بَعْدِي)). وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ سَمِعْتُ مُصْعَبًا.

[راجع: ٣٧٠٦]

तश्रीह : ग़ज़्व-ए-तबूक़ की वजह ये हुई कि रसूले करीम (ﷺ) को ये ख़बर पहुँची थी कि रोम के नसारा, मुसलमानों से लड़ने की तैयारी कर रहे हैं और अरब के भी कई क़बाइल लख़म, जुज़ाम वग़ैरह को वो अपने साथ मिला रहे हैं। ये ख़बर सुनकर आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद पेशक़दमी करने का फ़ैसला किया ताकि नसारा को मुसलमानों की तैयारियों का इल्म हो जाए और वो ख़ुद लड़ाई का ख़्याल छोड़ दें और जंग न होने पाए। इस जंग मे हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) ने दो सौ ऊँट सामान के साथ मुसलमानों के लिये पेश फ़र्माये थे। जिस पर आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुश होकर फ़र्माया कि अब उ़ष्मान (रज़ि.) जैसे भी अ़मल करें उनके लिये रज़ा-ए-इलाही वाजिब हो चुकी है। रिवायत में हज़रत अ़ली (रज़ि.) की फ़ज़ीलत का भी ज़िक्र है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको अपने लिये ऐसा ही मुआविन क़रार दिया जैसे हज़रत हारून (अलैहि.) हज़रत मूसा (अलैहि.) के मुआविन थे। इससे हज़रत अ़ली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त अफ़्ज़लियत की बिना पर दलील पकड़ना ग़लत है। क्योंकि हज़रत हारून (अलैहि.) को मूसवी ख़िलाफ़त नहीं मिली। वो हज़रत मूसा (अलैहि.) से पहले ही इंतिक़ाल कर चुके थे। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने सिर्फ़ तूर पर जाते वक़्त हज़रत हारून (अलैहि.) को अपना जानशीन बनाया था। ऐसा ही आँहज़रत (ﷺ) ने जंगे तबूक़ में जाते वक़्त हज़रत अ़ली (रज़ि.) को मदीना में अपना जानशीन बनाया। बस इस मुमाष़िलत का ता'ल्लुक़ सिर्फ़ इसी हद तक है। इस इर्शादे नबवी का मफ़्हूम ख़ुद हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने भी ये नहीं समझा था जो शिया हज़रात ने समझा है। अगर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ऐसा समझते तो ख़ुद क्योंकर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के दस्ते हक़ पर बेअ़त करके उनको ख़लीफ़-ए-बरहक़ समझते। इस हदीष़ से ये भी ष़ाबित हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) आख़िरी नबी हैं। आपके बाद रिसालत व नुबुव्वत का सिलसिला क़यामत तक के लिये बन्द हो चुका है। अब जो भी किसी भी क़िस्म की नुबुव्वत का दा'वा करे वो झूठा दज्जाल है, ख़्वाह वो कैसी ही इस्लाम दोस्ती की बात करे, वो ग़द्दार है, मक्कार है। तख़्ते नुबुव्वत का बाग़ी है। हर कलिमा पढ़ने वाले मुसलमान का फ़र्ज़ है कि ऐसे मुद्दई का मुँह तोड़ मुक़ाबला करके नामूसे रिसालत के तहफ़्फ़ुज़ के लिये अपनी पूरी जद्दोजहद करे। इस दौरे आख़िर में क़ादियानी फ़िर्क़ा एक ऐसा ही बातिलपरस्त फ़िर्क़ा है जो पंजाब के क़स्बा क़ादियान के एक शख़्स मिर्ज़ा गुलाम अहमद के लिये नुबुव्वत व रिसालत का मुद्दई है और जिसने दजल व मकर फैलाने में हूबहू दज्जाल की नक़ल है।

4417. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बक्र ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अ़ता से सुना, उन्होंने ख़बर देते हुए कहा कि मुझे स़फ़्वान बिन यअ़ला बिन उमय्या ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-उ़स्र: में शरीक था। बयान किया कि यअ़ला (रज़ि.) कहा करते थे कि मुझे अपने तमाम अ़मलों में इसी पर सबसे ज़्यादा भरोसा है। अ़ता ने बयान किया, उनसे स़फ़्वान ने बयान किया कि यअ़ला (रज़ि.) ने कहा, मैंने एक मज़दूर भी अपने साथ ले लिया था। वो एक शख़्स से लड़ पड़ा और एक ने दूसरे का हाथ दांत से काटा। अ़ता ने बयान किया कि मुझे स़फ़्वान ने ख़बर दी कि उन

٤٤١٧- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَطَاءً يُخْبِرُ قَالَ: أَخْبَرَنِي صَفْوَانُ بْنُ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعُسْرَةَ قَالَ: كَانَ يَعْلَى يَقُولُ: تِلْكَ الْغَزْوَةُ أَوْثَقُ أَعْمَالِي عِنْدِي قَالَ عَطَاءٌ: فَقَالَ صَفْوَانُ: قَالَ يَعْلَى: فَكَانَ لِي أَجِيرٌ فَقَاتَلَ إِنْسَانًا فَعَضَّ أَحَدُهُمَا يَدَ الآخَرِ قَالَ عَطَاءٌ: فَلَقَدْ

दोनों में से किसने अपने मुक़ाबिल का हाथ काटा था, ये मुझे याद नहीं है। बहरहाल जिसका हाथ काटा गया था उसने अपना हाथ काटने वाले के मुँह से जो खींचा तो काटने वाले के आगे का एक दांत भी साथ चला आया। वो दोनों हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर (ﷺ) ने दांत के टूटने पर कोई क़िसास़ नहीं दिलवाया। अ़ता ने बयान किया मेरा ख़्याल है कि उन्होंने ये भी बयान किया कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर क्या वो तेरे मुँह में अपना हाथ रहने देता ताकि तू उसे ऊँट की तरह चबा जाता। (राजेअ़ : 1837)

أَخْبَرَنِي صَفْوَانُ أَيُّهُمَا عَضَّ الآخَرَ، فَنَسِيتُهُ قَالَ : فَانْتَزَعَ الْمَعْضُوضُ يَدَهُ مِنْ فِي الْعَاضِّ فَانْتَزَعَ إِحْدَى ثَنِيَّتَيْهِ. فَأَتَيَا النَّبِيَّ ﷺ فَأَهْدَرَ ثَنِيَّتَهُ قَالَ عَطَاءٌ: وَحَسِبْتُ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((أَفَيَدَعُ يَدَهُ فِي فِيكَ تَقْضَمُهَا كَأَنَّهَا فِي فِي فَحْلٍ يَقْضَمُهَا)). [راجع: ١٨٤٧]

ये वाक़िया भी जंगे तबूक़ में पेश आया था। इसीलिये इस ह़दीष़ को यहाँ ज़िक्र किया गया।

बाब 80 : ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) के वाक़िया का बयान

٨٠- باب حَدِيثُ كَعْبِ بْنِ مَالِك وَقَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَعَلَى الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا﴾ [التوبة : ١١٨].

या'नी अल्लाह ने उन तीन शख़्सों का भी क़सूर मुआ़फ़ कर दिया जो इस जंग में न जा सके थे। ये तीन शख़्स कअ़ब बिन मालिक और मुरारह बिन रबीअ़ और हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) थे। नीचे लिखी ह़दीष़ में बड़ी तफ़्सील के साथ ये वाक़िया ख़ुद ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने बयान फ़र्माया है, जिसे पढ़कर जी चाहता है कि मैं आज इस वाक़िये पर चौदह सौ बरस गुज़रने के बावजूद ह़ज़रत कअ़ब (रज़ि.) की ख़िदमत में आ़लमे रूहानियत में मुबारकबाद पेश करूँ क्योंकि जिस पामर्दी और सच्चाई का आपने इस नाज़ुक मौक़े पर षुबूत दिया, उसकी मिष़ालें मिलनी मुश्किल हैं। (वस्सलाम, ख़ादिम, मुहम्मद दाऊद राज 3 रबीउ़ष्ष़ानी 1339 हिजरी)

4418. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन कअ़ब बिन मालिक ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने, (जब कअ़ब रज़ि. नाबीना हो गये तो उनके लड़कों में वो ही कअ़ब रज़ि. को रास्ते में पकड़कर चलाया करते थे)। उन्होंने बयान किया कि मैंने कअ़ब (रज़ि.) से उनके ग़ज़्व-ए-तबूक़ मे शरीक न हो सकने का वाक़िया सुना। उन्होंने बताया कि ग़ज़्व-ए-तबूक़ के सिवा और किसी ग़ज़्वा में ऐसा नहीं हुआ था कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ शरीक न हुआ हों। अल्बत्ता ग़ज़्व-ए-बद्र मे भी शरीक नहीं हुआ था लेकिन जो लोग ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक नहीं हो सके थे, उनके बारे में आँह़ज़रत (ﷺ) ने किसी क़िस्म की

٤٤١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيهِ حِينَ عَمِيَ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ قِصَّةِ تَبُوكَ، قَالَ كَعْبٌ: لَمْ أَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا إِلاَّ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ، غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ تَخَلَّفْتُ فِي غَزْوَةِ

بدْرٍ وَلَمْ يُعَاتِبْ أحَدًا تَخلَّفَ عَنْهَا، إنَّمَا خَرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُرِيدُ عِيرَ قُرَيْشٍ، حَتَّى جَمَعَ اللهُ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ عَدُوِّهِمْ عَلَى غَيْرِ مِيعَادٍ وَلَقَدْ شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الْعَقَبَةِ حِينَ تَوَاثَقْنَا عَلَى الإسْلَامِ وَمَا أُحِبُّ أنَّ لِي بِهَا مَشْهَدَ بَدْرٍ، وَإنْ كَانَتْ بَدْرٌ أذْكَرَ فِي النَّاسِ مِنْهَا، كَانَ مِنْ خَبَرِي أنِّي لَمْ أكُنْ قَطُّ أقْوَى وَلاَ أيْسَرَ حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْهُ فِي تِلْكَ الْغَزَاةِ، وَاللهِ مَا اجْتَمَعَتْ عِنْدِي قَبْلَهُ رَاحِلَتَانِ قَطُّ حَتَّى جَمَعْتُهُمَا فِي تِلْكَ الْغَزْوَةِ، وَلَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُرِيدُ غَزْوَةً إلاَّ وَرَّى بِغَيْرِهَا حَتَّى كَانَتْ تِلْكَ الغَزْوَةُ غَزَاهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي حَرٍّ شَدِيدٍ، وَاسْتَقْبَلَ سَفَرًا بَعِيدًا وَمَفَازًا وَعَدُوًّا كَثِيرًا فَجَلَّى لِلْمُسْلِمِينَ أمْرَهُمْ لِيَتَأهَّبُوا أُهْبَةَ غَزْوِهِمْ فَأَخْبَرَهُمْ بِوَجْهِهِ الَّذِي يُرِيدُ وَالْمُسْلِمُونَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَثِيرٌ، وَلاَ يَجْمَعُهُمْ كِتَابٌ حَافِظٌ يُرِيدُ الدِّيوَانَ قَالَ كَعْبٌ : فَمَا رَجُلٌ يُرِيدُ أنْ يَتَغَيَّبَ إلاَّ ظَنَّ أنْ سَيَخْفَى لَهُ مَا لَمْ يَنْزِلْ فِيهِ وَحْيُ اللهِ، وَغَزَا رَسُولُ اللهِ ﷺ تِلْكَ الغَزْوَةَ حِينَ طَابَتِ الثِّمَارُ وَالظِّلَالُ وَتَجَهَّزَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَالْمُسْلِمُونَ مَعَهُ فَطَفِقْتُ أغْدُو لِكَيْ أتَجَهَّزَ مَعَهُمْ فَأَرْجِعُ وَلَمْ أقْضِ شَيْئًا فَأَقُولُ

ख़फ़्गी का इज़्हार नहीं फ़र्माया था क्योंकि आप (ﷺ) उस मौक़े पर सिर्फ़ कुरैश के क़ाफ़िले की तलाश में निकले थे, लेकिन अल्लाह तआला के हुक्म से किसी पहली तैयारी के बग़ैर, आपकी दुश्मनों से टक्कर हो गई और मैं लैलतुल अक़बा में आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ था। ये वही रात है जिसमें हमने (मक्का में) इस्लाम के लिये अहद किया था और मुझे तो ये ग़ज़्व-ए-बद्र से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ है। अगरचे बद्र का लोगों की ज़ुबानों पर चर्चा ज़्यादा है। मेरा वाक़िया ये है कि मैं अपनी ज़िन्दगी में कभी इतना क़वी और इतना स़ाह़बे माल नहीं हुआ था जितना उस मौक़े पर था। जबकि मैं आँहज़रत (ﷺ) के साथ तबूक़ के ग़ज़्वे में शरीक नहीं हो सका था। अल्लाह की क़सम! इससे पहले कभी मेरे पास दो ऊँट जमा नहीं हुए थे लेकिन उस मौक़े पर मेरे पास दो ऊँट मौजूद थे। आँहज़रत (ﷺ) जब कभी किसी ग़ज़्वे के लिये तशरीफ़ ले जाते तो आप उसके लिये ज़ू मानी अल्फ़ाज़ इस्ते'माल किया करते थे लेकिन उस ग़ज़्वे का जब मौक़ा आया तो गर्मी बड़ी सख़्त थी, सफ़र भी बहुत लम्बा था, बयाबानी रास्ता और दुश्मन की फ़ौज की बड़ी ता'दाद! तमाम मुश्किलात सामने थीं। इसलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों से इस ग़ज़्वे के बारे में बहुत तफ़्सील के साथ बता दिया था ताकि उसके मुताबिक़ पूरी तरह से तैयारी कर लें। चुनाँचे आप (ﷺ) ने उस दिशा की भी निशानदेही कर दी जिधर से आपका जाने का इरादा था। मुसलमान भी आप (ﷺ) के साथ बहुत थे। इतने कि किसी रजिस्टर में सबके नामों का लिखना भी मुश्किल था। कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया कि कोई भी शख़्स अगर इस ग़ज़्वे में शरीक न होना चाहता तो वो ये ख़्याल कर सकता था कि उसकी ग़ैरहाज़िरी का किसी को पता नहीं चलेगा। सिवा उसके कि उसके बारे में वह्य नाज़िल हो। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जब उस ग़ज़्वे के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे तो फल पकने का ज़माना था और साये में बैठकर लोग आराम करते थे। आँहज़रत (ﷺ) भी तैयारियों में मस़रूफ़ थे और आपके साथ मुसलमान भी। लेकिन मैं रोज़ाना

فِي نَفْسِي أَنَا قَادِرٌ عَلَيْهِ، فَلَمْ يَزَلْ يَتَمَادَى بِي حَتَّى اشْتَدَّ بِالنَّاسِ الْجِدُّ، فَأَصْبَحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَالْمُسْلِمُونَ مَعَهُ، وَلَمْ أَقْضِ مِنْ جِهَازِي شَيْئًا فَقُلْتُ: أَتَجَهَّزُ بَعْدَهُ بِيَوْمٍ أَوْ يَوْمَيْنِ؟ ثُمَّ أَلْحَقُهُمْ فَغَدَوْتُ بَعْدَ أَنْ فَصَلُوا لأَتَجَهَّزَ، فَرَجَعْتُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا ثُمَّ غَدَوْتُ ثُمَّ رَجَعْتُ وَلَمْ أَقْضِ شَيْئًا فَلَمْ يَزَلْ بِي حَتَّى أَسْرَعُوا وَتَفَارَطَ الْغَزْوُ، وَهَمَمْتُ أَنْ أَرْتَحِلَ فَأُدْرِكَهُمْ، وَلَيْتَنِي فَعَلْتُ فَلَمْ يُقَدَّرْ لِي ذَلِكَ، فَكُنْتُ إِذَا خَرَجْتُ فِي النَّاسِ بَعْدَ خُرُوجِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَطُفْتُ فِيهِمْ أَحْزَنَنِي أَنِّي لاَ أَرَى رَجُلاً مَغْمُوصًا فِيهِ النِّفَاقُ - أَوْ رَجُلاً مِمَّنْ عَذَرَ اللهُ مِنَ الضُّعَفَاءِ- وَلَمْ يَذْكُرْنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى بَلَغَ تَبُوكَ فَقَالَ وَهُوَ جَالِسٌ فِي الْقَوْمِ بِتَبُوكَ : ((مَا فَعَلَ كَعْبٌ)).

فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ يَا رَسُولَ اللهِ حَبَسَهُ بُرْدَاهُ وَنَظَرُهُ فِي عِطْفَيْهِ، فَقَالَ: مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ: بِئْسَمَا قُلْتَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا، فَسَكَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ: فَلَمَّا بَلَغَنِي أَنَّهُ تَوَجَّهَ قَافِلاً حَضَرَنِي هَمِّي، فَطَفِقْتُ أَتَذَكَّرُ الْكَذِبَ وَأَقُولُ بِمَاذَا أَخْرُجُ مِنْ سَخَطِهِ غَدًا، وَاسْتَعَنْتُ عَلَى ذَلِكَ بِكُلِّ ذِي رَأْيٍ مِنْ أَهْلِي، فَلَمَّا قِيلَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ

सोचा करता था कि कल से मैं भी तैयारी करूँगा और इस तरह हर रोज़ उसे टालता रहा। मुझे इसका यक़ीन था कि मैं तैयारी कर लूँगा। मुझे आसानियाँ मयस्सर हैं, यूँ ही वक़्त गुज़रता गया और आख़िर लोगों ने अपनी तैयारियाँ पूरी भी कर लीं और आँहज़रत (ﷺ) मुसलमानों को साथ लेकर रवाना भी हो गये। उस वक़्त तक मैंने कोई तैयारी नहीं की थी। उस मौक़े पर मैंने अपने दिल को यही कहकर समझा लिया कि कल या परसों तक तैयारी कर लूँगा और फिर लश्कर से जा मिलूँगा। कूच के बाद दूसरे दिन मैंने तैयारी के लिये सोचा लेकिन उस दिन भी कोई तैयारी नहीं की। फिर तीसरे दिन के लिये सोचा और उस दिन भी कोई तैयारी नहीं की। यूँ ही वक़्त गुज़र गया और इस्लामी लश्कर बहुत आगे बढ़ गया। ग़ज़्वा में शिर्कत मेरे लिये बहुत दूर की बात हो गई और मैं यही इरादा करता रहा कि यहाँ से चलकर उन्हें पा लूँगा। काश! मैंने ऐसा कर लिया होता लेकिन ये मेरे नसीब में नहीं था। आँहज़रत (ﷺ) के तशरीफ ले जाने के बाद जब मैं बाहर निकलता तो मुझे बड़ा रंज होता क्योंकि या तो वो लोग नज़र आते जिनके चेहरों से निफ़ाक़ टपकता था या फिर वो लोग जिन्हें अल्लाह तआला ने मा'ज़ूर और ज़ईफ़ क़रार दे दिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने मेरे बारे में किसी से कुछ नहीं पूछा था लेकिन जब आप तबूक पहुँच गये तो वहीं एक मज्लिस में आपने दरयाफ़्त किया कि कअब (रज़ि.) ने क्या किया? बनू सलमा के एक साहब ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसके ग़ुरूर ने उसे आने नहीं दिया। (वो हुस्नो-जमाल या लिबास पर इतराकर रह गया) इस पर मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) बोले तुमने बुरी बात कही है। या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की क़सम! हमें उनके बारे में ख़ैर के सिवा और कुछ मा'लूम नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ नहीं फ़र्माया। कअब बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मुझे मा'लूम हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) वापस तशरीफ़ ला रहे हैं तो अब मुझ पर फ़िक्र सवार हुआ और मेरा ज़हन कोई ऐसा झूठा बहाना तलाश करने लगा जिससे मैं कल आँहज़रत (ﷺ) की

नाराज़गी से बच सकूँ। अपने घर के हर अक़्लमन्द से उसके बारे में मैंने मश्विरा किया लेकिन जब मुझे मा'लूम हुआ कि आँहज़रत (ﷺ) मदीना से बिलकुल क़रीब आ चुके हैं तो ग़लत ख़यालात मेरे ज़हन से निकल गये और मुझे यक़ीन हो गया कि इस मामले में झूठ बोलकर मैं अपने को किसी तरह महफ़ूज़ नहीं कर सकता। चुनाँचे मैंने सच्ची बात कहने का पुख़्ता इरादा कर लिया। सुबह के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए। जब आप किसी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो ये आपकी आदत थी कि पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते, फिर लोगों के साथ मज्लिस में बैठते। जब आप इस अ़मल से फ़ारिग़ हो चुके तो आपकी ख़िदमत में लोग आने लगे जो ग़ज़्वा में शरीक नहीं हो सके थे और क़सम खा खाकर अपने बहाने बयान करने लगे। ऐसे लोगों की ता'दाद अस्सी के क़रीब थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके ज़ाहिर को क़ुबूल कर लिया, उनसे अ़हद लिया। उनके लिये मग़फ़िरत की दुआ फ़र्माई और उनके बातिन को अल्लाह के सुपुर्द किया। उसके बाद मैं हाज़िर हुआ। मैंने सलाम किया तो आप मुस्कुराए आपकी मुस्कुराहट में नाराज़गी थी। आपने फ़र्माया आओ, मैं चन्द क़दम चलकर आपके सामने बैठ गया। आपने मुझसे दरयाफ़्त किया कि तुम ग़ज़्वा में क्यूँ शरीक नहीं हुए? क्या तुमने कोई सवारी नहीं ख़रीदी थी? मैंने अ़र्ज़ किया, मेरे पास सवारी मौजूद थी, अल्लाह की क़सम! अगर मैं आपके सिवा किसी दुनियादार शख़्स के सामने आज बैठा होता तो कोई न कोई बहाना गढ़कर उसकी नाराज़गी से बच सकता था, मुझे ख़ूबसूरती के साथ बातचीत का सलीक़ा मा'लूम है। लेकिन अल्लाह की क़सम! मुझे यक़ीन है कि अगर आज मैं आपके सामने झूठा बहाना बयान करके आपको राज़ी कर लूँ तो बहुत जल्द अल्लाह तआ़ला आपको मुझसे नाराज़ कर देगा। इसके बजाय अगर मैं आपसे सच्ची बात बयान कर दूँ तो यक़ीनन आपको मेरी तरफ़ से नाराज़गी होगी लेकिन अल्लाह से मुझे माफ़ी की पूरी उम्मीद है। नहीं, अल्लाह की क़सम! मुझे कोई उ़ज़्र नहीं था,

أَظَلَّ قَادِمًا زَاحَ عَنِّي الْبَاطِلُ وَعَرَفْتُ أَنِّي لَنْ أَخْرُجَ مِنْهُ أَبَدًا بِشَيْءٍ فِيهِ كَذِبٌ فَأَجْمَعْتُ صِدْقَهُ وَأَصْبَحَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَادِمًا وَكَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ بَدَأَ بِالْمَسْجِدِ فَيَرْكَعُ فِيهِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ جَلَسَ لِلنَّاسِ فَلَمَّا فَعَلَ ذَلِكَ جَاءَهُ الْمُخَلَّفُونَ، فَطَفِقُوا يَعْتَذِرُونَ إِلَيْهِ وَيَحْلِفُونَ لَهُ وَكَانُوا بِضْعَةً وَثَمَانِينَ رَجُلاً فَقَبِلَ مِنْهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلاَنِيَتَهُمْ وَبَايَعَهُمْ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمْ وَوَكَلَ سَرَائِرَهُمْ إِلَى اللهِ. فَجِئْتُهُ فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَيْهِ تَبَسَّمَ تَبَسُّمَ الْمُغْضَبِ ثُمَّ قَالَ: ((تَعَالَ)) فَجِئْتُ أَمْشِي حَتَّى جَلَسْتُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ لِي: ((مَا خَلَّفَكَ أَلَمْ تَكُنْ قَدِ ابْتَعْتَ ظَهْرَكَ؟)) فَقُلْتُ: بَلَى، إِنِّي وَاللهِ لَوْ جَلَسْتُ عِنْدَ غَيْرِكَ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا لَرَأَيْتُ أَنْ سَأَخْرُجُ مِنْ سَخَطِهِ بِعُذْرٍ وَلَقَدْ أُعْطِيتُ جَدَلاً، وَلَكِنِّي وَاللهِ لَقَدْ عَلِمْتُ لَئِنْ حَدَّثْتُكَ الْيَوْمَ حَدِيثَ كَذِبٍ تَرْضَى بِهِ عَنِّي لَيُوشِكَنَّ اللهُ أَنْ يُسْخِطَكَ عَلَيَّ وَلَئِنْ حَدَّثْتُكَ حَدِيثَ صِدْقٍ تَجِدُ عَلَيَّ فِيهِ، إِنِّي لأَرْجُو فِيهِ عَفْوَ اللهِ لاَ وَاللهِ مَا كَانَ لِي مِنْ عُذْرٍ. وَاللهِ مَا كُنْتُ قَطُّ أَقْوَى وَلاَ أَيْسَرَ مِنِّي حِينَ تَخَلَّفْتُ عَنْكَ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَّا هَذَا فَقَدْ صَدَقَ. فَقُمْ حَتَّى يَقْضِيَ اللهُ فِيكَ)) فَقُمْتُ وَثَارَ رِجَالٌ مِنْ بَنِي سَلِمَةَ فَاتَّبَعُونِي فَقَالُوا لِي: وَاللهِ مَا عَلِمْنَاكَ كُنْتَ أَذْنَبْتَ

अल्लाह की क़सम! इस वक़्त से पहले कभी मैं इतना फ़ारिग़ुल बाल नहीं था और फिर भी मैं आपके साथ शरीक नहीं हो सका। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्होंने सच्ची बात बता दी, अच्छा अब जाओ, यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे बारे में ख़ुद फ़ैसला कर दे। मैं उठ गया और मेरे पीछे बनू सलमा के कुछ लोग भी दौड़े हुए आए और मुझसे कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमें तुम्हारे बारे में ये मा'लूम नहीं था कि इससे पहले तुमने कोई गुनाह किया है और तुमने बड़ी कोताही की, आँहज़रत (ﷺ) के सामने वैसा ही कोई ड़ज़्र नहीं बयान किया जैसा दूसरे न शरीक होने वालों ने बयान कर दिया था। तुम्हारे गुनाह के लिये आँहज़रत (ﷺ) का इस्तिग़फ़ार ही काफ़ी हो जाता। अल्लाह की क़सम! उन लोगों ने मुझे इस पर इतनी मलामत की कि मुझे ख़्याल आया कि वापस जाकर आँहज़रत (ﷺ) से कोई झूठा ड़ज़्र कर आऊँ, फिर मैंने उनसे पूछा क्या मेरे अलावा किसी और ने भी मुझ जैसा बहाना बयान किया है? उन्होंने बताया कि हाँ दो हज़रात ने इसी तरह मअ़ज़रत की जिस तरह तुमने की है और उन्हें जवाब भी वही मिला है जो तुम्हें मिला। मैंने पूछा कि उनके नाम क्या हैं? उन्होंने बताया कि मुरारह बिन रबीआ उमरी और हिलाल बिन उमय्या वाक़फ़ी (रज़ि.)। उन दो ऐसे सहाबा का नाम उन्होंने ले लिया था जो सालेह थे और बद्र की जंग में शरीक हुए थे। उनका तर्ज़े अमल मेरे लिये नमूना बन गया। चुनाँचे उन्होंने जब उन बुज़ुर्गों का नाम लिया तो मैं अपने घर चला आया और आँहज़रत (ﷺ) ने लोगों को हमसे बातचीत करने के लिये मना कर दिया, बहुत से लोग जो ग़ज़्वे में शरीक नहीं हुए थे, उनमें से सिर्फ़ हम तीन थे। लोग हमसे अलग रहने लगे और सब लोग बदल गये। ऐसा नज़र आता था कि हमसे सारी दुनिया बदल गई है। हमारा इससे कोई वास्ता ही नहीं है। पचास दिन तक हम इसी तरह रहे, मेरे दो साथियों ने तो अपने घरों से निकलना ही छोड़ दिया, बस रोते रहते थे लेकिन मेरे अंदर हिम्मत थी कि मैं बाहर निकलता था, मुसलमानों के साथ नमाज़ में शरीक होता था और बाज़ारों में

ذَنْبًا قَبْلَ هَذَا، وَلَقَدْ عَجَزْتَ أَنْ لاَ تَكُونَ اعْتَذَرْتَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ بِمَا اعْتَذَرَ إِلَيْهِ الْمُتَخَلِّفُونَ قَدْ كَانَ كَافِيَكَ ذَنْبَكَ اسْتِغْفَارُ رَسُولِ اللهِ ﷺ لَكَ، فَوَاللهِ مَا زَالُوا يُؤَنِّبُونِي حَتَّى أَرَدْتُ أَنْ أَرْجِعَ فَأُكَذِّبَ نَفْسِي، ثُمَّ قُلْتُ لَهُمْ: هَلْ لَقِيَ هَذَا مَعِيَ أَحَدٌ؟ قَالُوا: نَعَمْ رَجُلاَنِ قَالاَ مِثْلَ مَا قُلْتَ فَقِيلَ لَهُمَا مِثْلُ مَا قِيلَ لَكَ، فَقُلْتُ مَنْ هُمَا؟ قَالُوا: مُرَارَةُ بْنُ الرَّبِيعِ الْعَمْرِيُّ، وَهِلاَلُ بْنُ أُمَيَّةَ الْوَاقِفِيُّ، فَذَكَرُوا لِي رَجُلَيْنِ صَالِحَيْنِ قَدْ شَهِدَا بَدْرًا فِيهِمَا أُسْوَةٌ فَمَضَيْتُ حِينَ ذَكَرُوهُمَا لِي وَنَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمُسْلِمِينَ عَنْ كَلاَمِنَا أَيُّهَا الثَّلاَثَةُ مِنْ بَيْنِ مَنْ تَخَلَّفَ عَنْهُ، فَاجْتَنَبَنَا النَّاسُ وَتَغَيَّرُوا لَنَا حَتَّى تَنَكَّرَتْ فِي نَفْسِي الأَرْضُ فَمَا هِيَ الَّتِي أَعْرِفُ، فَلَبِثْنَا عَلَى ذَلِكَ خَمْسِينَ لَيْلَةً فَأَمَّا صَاحِبَايَ فَاسْتَكَانَا وَقَعَدَا فِي بُيُوتِهِمَا يَبْكِيَانِ، وَأَمَّا أَنَا فَكُنْتُ أَشَبَّ الْقَوْمِ وَأَجْلَدَهُمْ، فَكُنْتُ أَخْرُجُ فَأَشْهَدُ الصَّلاَةَ مَعَ الْمُسْلِمِينَ وَأَطُوفُ فِي الأَسْوَاقِ، وَلاَ يُكَلِّمُنِي أَحَدٌ وَآتِي رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأُسَلِّمُ عَلَيْهِ، وَهُوَ فِي مَجْلِسِهِ بَعْدَ الصَّلاَةِ فَأَقُولُ فِي نَفْسِي هَلْ حَرَّكَ شَفَتَيْهِ بِرَدِّ السَّلاَمِ عَلَيَّ أَمْ لاَ؟ ثُمَّ أُصَلِّي قَرِيبًا مِنْهُ فَأُسَارِقُهُ النَّظَرَ، فَإِذَا أَقْبَلْتُ عَلَى صَلاَتِي أَقْبَلَ إِلَيَّ، وَإِذَا الْتَفَتُّ نَحْوَهُ أَعْرَضَ عَنِّي حَتَّى إِذَا

घूमा करता था लेकिन मुझसे बोलता कोई न था। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में भी हाज़िर होता था, आपको सलाम करता, जब आप नमाज़ के बाद मज्लिस में बैठते, मैं उसकी जुस्तजू में लगा रहता था कि देखूँ सलाम के जवाब में आँहज़रत (ﷺ) के मुबारक होंठ हिले या नहीं, फिर आपके क़रीब ही नमाज़ पढ़ने लग जाता और आपको कनखियों से देखता रहता। जब मैं अपनी नमाज़ में मशग़ूल हो जाता तो आँहज़रत (ﷺ) मेरी त़रफ़ देखते लेकिन ज्योंही मैं आपकी त़रफ़ देखता आप रुख़ मुबारक फेर लेते। आख़िर जब इस त़रह लोगों की बेरुख़ी बढ़ती ही गई तो मैं (एक दिन) अबू क़तादा (रज़ि.) के बाग़ की दीवार पर चढ़ गया, वो मेरे चचाज़ाद भाई थे और मुझे उनसे बहुत गहरा ता'ल्लुक़ था, मैंने उन्हें सलाम किया, लेकिन अल्लाह की क़सम! उन्होंने भी मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया। मैंने कहा, अबू क़तादा! तुम्हें अल्लाह की क़सम! क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से मुझे कितनी मुहब्बत है। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं दोबारा उनसे यही सवाल किया अल्लाह की क़सम देकर, लेकिन अब भी वो ख़ामोश थे, फिर मैंने अल्लाह का वास्ता देकर उनसे यही सवाल किया। इस बार उन्होंने सिर्फ़ इतना कहा कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। इस पर मेरे आंसू फूट पड़े। मैं वापस चला आया और दीवार पर चढ़कर (नीचे, बाहर उतर आया)। उन्होंने बयान किया कि एक दिन मैं मदीना के बाज़ार में जा रहा था कि शाम का एक किसान जो अनाज बेचने मदीना आया था, पूछ रहा थ कि कअ़ब बिन मालिक कहाँ रहते हैं? लोगों ने मेरी त़रफ़ इशारा किया तो वो मेरे पास आया और मुल्के ग़स्सान का एक ख़त़ मुझे दिया, उस ख़त़ में ये तहरीर था।

अम्माबअ़द! मुझे मा'लूम हुआ है कि तुम्हारे स़ाहिब (या'नी नबी करीम (ﷺ) तुम्हारे साथ ज़्यादती करने लगे हैं। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें कोई ज़लील नहीं पैदा किया है कि तुम्हारा ह़क़ ज़ाया किया जाए, तुम हमारे पास आ जाओ, हम तुम्हारे साथ

طَالَ عَلَيَّ ذَلِكَ مِنْ جَفْوَةِ النَّاسِ مَشَيْتُ حَتَّى تَسَوَّرْتُ جِدَارَ حَائِطِ أَبِي قَتَادَةَ وَهُوَ ابْنُ عَمِّي، وَأَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَوَ اللهِ مَا رَدَّ عَلَيَّ السَّلاَمَ فَقُلْتُ: يَا أَبَا قَتَادَةَ أَنْشُدُكَ بِاللهِ هَلْ تَعْلَمُنِي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ؟ فَسَكَتَ فَعُدْتُ لَهُ فَنَشَدْتُهُ فَسَكَتَ، فَعُدْتُ لَهُ فَنَشَدْتُهُ فَقَالَ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَفَاضَتْ عَيْنَايَ وَتَوَلَّيْتُ حَتَّى تَسَوَّرْتُ الْجِدَارَ، قَالَ فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي بِسُوقِ الْمَدِينَةِ إِذَا نَبَطِيٌّ مِنْ أَنْبَاطِ أَهْلِ الشَّأْمِ مِمَّنْ قَدِمَ بِالطَّعَامِ يَبِيعُهُ بِالْمَدِينَةِ يَقُولُ: مَنْ يَدُلُّ عَلَى كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ فَطَفِقَ النَّاسُ يُشِيرُونَ لَهُ حَتَّى إِذَا جَاءَنِي دَفَعَ إِلَيَّ كِتَابًا مِنْ مَلِكِ غَسَّانَ فَإِذَا فِيهِ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ قَدْ بَلَغَنِي أَنَّ صَاحِبَكَ قَدْ جَفَاكَ، وَلَمْ يَجْعَلْكَ اللهُ بِدَارِ هَوَانٍ وَلاَ مَضْيَعَةٍ، فَالْحَقْ بِنَا نُوَاسِكَ. فَقُلْتُ: لَمَّا قَرَأْتُهَا؟ وَهَذَا أَيْضًا مِنَ الْبَلاَءِ، فَتَيَمَّمْتُ بِهَا التَّنُّورَ فَسَجَرْتُهُ بِهَا حَتَّى إِذَا مَضَتْ أَرْبَعُونَ لَيْلَةً مِنَ الْخَمْسِينَ إِذَا رَسُولُ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَأْتِينِي فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَأْمُرُكَ أَنْ تَعْتَزِلَ امْرَأَتَكَ فَقُلْتُ: أُطَلِّقُهَا أَمْ مَاذَا أَفْعَلُ؟ قَالَ: لاَ، بَلِ اعْتَزِلْهَا وَلاَ تَقْرَبْهَا، وَأَرْسَلَ إِلَى صَاحِبَيَّ مِثْلَ ذَلِكَ، فَقُلْتُ لاِمْرَأَتِي: الْحَقِي بِأَهْلِكِ فَتَكُونِي عِنْدَهُمْ حَتَّى يَقْضِيَ اللهُ فِي هَذَا الأَمْرِ، قَالَ كَعْبٌ: فَجَاءَتِ امْرَأَةُ هِلاَلِ

بْنِ أُمَيَّةَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ شَيْخٌ ضَائِعٌ لَيْسَ لَهُ خَادِمٌ فَهَلْ تَكْرَهُ أنْ أَخْدُمَهُ؟ قَالَ : ((لاَ، وَلَكِنْ لاَ يَقْرَبْكِ)) قَالَتْ : إِنَّهُ وَاللهِ مَا بِهِ حَرَكَةٌ إِلَى شَيْءٍ، وَاللهِ مَا زَالَ يَبْكِي مُنْذُ كَانَ مِنْ أَمْرِهِ مَا كَانَ إِلَى يَوْمِهِ هَذَا، فَقَالَ لِي بَعْضُ أَهْلِي لَوِ اسْتَأْذَنْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي امْرَأَتِكَ كَمَا أَذِنَ لاِمْرَأَةِ هِلاَلِ بْنِ أُمَيَّةَ أَنْ تَخْدُمَهُ، فَقُلْتُ : وَاللهِ لاَ أَسْتَأْذِنُ فِيهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَا يُدْرِينِي مَا يَقُولُ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا اسْتَأْذَنْتُهُ فِيهَا وَأَنَا رَجُلٌ شَابٌّ فَلَبِثْتُ بَعْدَ ذَلِكَ عَشْرَ لَيَالٍ، حَتَّى كَمَلَتْ لَنَا خَمْسُونَ لَيْلَةً مِنْ حِينَ نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ كَلاَمِنَا، فَلَمَّا صَلَّيْتُ صَلاَةَ الْفَجْرِ صُبْحَ خَمْسِينَ لَيْلَةً وَأَنَا عَلَى ظَهْرِ بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِنَا فَبَيْنَا أَنَا جَالِسٌ عَلَى الْحَالِ الَّتِي ذَكَرَ اللهُ قَدْ ضَاقَتْ عَلَيَّ نَفْسِي وَضَاقَتْ عَلَيَّ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ، سَمِعْتُ صَوْتَ صَارِخٍ أَوْفَى عَلَى جَبَلِ سَلْعٍ بِأَعْلَى صَوْتِهِ، يَا كَعْبُ بْنَ مَالِكٍ أَبْشِرْ قَالَ: فَخَرَرْتُ سَاجِدًا وَعَرَفْتُ أَنْ قَدْ جَاءَ فَرَجٌ وَآذَنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِتَوْبَةِ اللهِ عَلَيْنَا حِينَ صَلَّى صَلاَةَ الْفَجْرِ، فَذَهَبَ النَّاسُ يُبَشِّرُونَنَا وَذَهَبَ قِبَلَ صَاحِبَيَّ مُبَشِّرُونَ وَرَكَضَ إِلَيَّ رَجُلٌ فَرَسًا وَسَعَى سَاعٍ مِنْ أَسْلَمَ فَأَوْفَى عَلَى الْجَبَلِ، وَكَانَ الصَّوْتُ أَسْرَعَ مِنَ الْفَرَسِ.

बेहतर से बेहतर सुलूक़ करेंगे।

जब मैंने ये ख़त पढ़ा तो मैंने कहा कि ये एक और इम्तिहान आ गया। मैंने उस ख़त को आग में जला दिया। उन पचास दिनों में से जब चालीस दिन गुज़र चुके तो रसूले करीम (ﷺ) के ऐलची मेरे पास आए और कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें हुक्म दिया है कि अपनी बीवी के भी क़रीब न जाओ। मैंने पूछा मैं उसे तलाक़ दे दूँ या फिर मुझे क्या करना चाहिये? उन्होंने बताया कि नहीं सिर्फ़ उनसे अलग रहो, उनके क़रीब न जाओ, मेरे दोनों साथियों को (जिन्होंने मेरी तरह मअज़रत की थी) भी यही हुक्म आपने भेजा था। मैंने अपनी बीवी से कहा कि अब अपने मायके चली जाओ और उस वक़्त तक वहीं रहो जब तक अल्लाह तआला इस मामले का कोई फ़ैसला न कर दे। कअब (रज़ि.) ने बयान किया कि हिलाल बिन उमय्या (जिनका मुक़ातआ हुआ था) की बीवी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया की या रसूलल्लाह! हिलाल बिन उमय्या बहुत ही बूढ़े और कमज़ोर हैं, उनके पास कोई ख़ादिम भी नहीं है, क्या अगर मैं उनकी ख़िदमत कर दिया करूँ तो आप नापसन्द फ़र्माएँगे? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सिर्फ़ वो तुमसे सुह्बत न करें। उन्होंने अर्ज़ की। अल्लाह की क़सम! वो तो किसी चीज़ के लिये हरकत भी नहीं कर सकते। जबसे ये नाराज़गी उन पर हुई है वो दिन है और आज का दिन है उनके आंसू थमने में नहीं आते। मेरे घर के कुछ लोगों ने कहा कि जिस तरह हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) की बीवी को उनकी ख़िदमत करते रहने की इजाज़त आँहज़रत (ﷺ) ने दे दी है, आप भी इसी तरह की इजाज़त हुज़ूर (ﷺ) से ले लीजिए। मैंने कहा नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं इसके लिये आँहज़रत (ﷺ) से इजाज़त नहीं लूँगा, मैं जवान हूँ, मा'लूम नहीं जब इजाज़त लेने जाऊँ तो आँहज़रत (ﷺ) क्या फ़र्माएँ। इस तरह दस दिन और गुज़र गए और जब से आँहज़रत (ﷺ) ने हमसे बातचीत करने की मुमानअत फ़र्माई थी उसके पचास दिन पूरे हो गये। पचासवीं रात की सुबह को जब मैं फ़ज्र की नमाज़ पढ़ चुका और अपने घर की छत पर बैठ हुआ था, उस तरह जैसा कि अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है, मेरा दम घुटा जा रहा था और ज़मीन अपनी तमाम वुस्अतों के बावजूद मेरे लिये तंग होती जा रही थी कि मैंने एक पुकारने वाले की आवाज़ सुनी, जबले

فَلَمَّا جَاءَنِي الَّذِي سَمِعْتُ صَوْتَهُ يُبَشِّرُنِي
نَزَعْتُ لَهُ ثَوْبَيَّ فَكَسَوْتُهُ إِيَّاهُمَا بِبُشْرَاهُ،
وَاللهِ مَا أَمْلِكُ غَيْرَهُمَا يَوْمَئِذٍ وَاسْتَعَرْتُ
ثَوْبَيْنِ فَلَبِسْتُهُمَا وَانْطَلَقْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ
ﷺ فَيَتَلَقَّانِي النَّاسُ فَوْجًا فَوْجًا يُهَنُّونِي
بِالتَّوْبَةِ، يَقُولُونَ : لِتَهْنِكَ تَوْبَةُ اللهِ عَلَيْكَ
قَالَ كَعْبٌ : حَتَّى دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ فَإِذَا
رَسُولُ اللهِ ﷺ جَالِسٌ حَوْلَهُ النَّاسُ فَقَامَ
إِلَيَّ طَلْحَةُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ يُهَرْوِلُ حَتَّى
صَافَحَنِي وَهَنَّانِي وَاللهِ مَا قَامَ إِلَيَّ رَجُلٌ
مِنَ الْمُهَاجِرِينَ غَيْرُهُ، وَلاَ أَنْسَاهَا لِطَلْحَةَ
قَالَ كَعْبٌ : فَلَمَّا سَلَّمْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ
ﷺ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ يَبْرُقُ وَجْهُهُ
مِنَ السُّرُورِ: ((أَبْشِرْ بِخَيْرِ يَوْمٍ مَرَّ عَلَيْكَ
مُنْذُ وَلَدَتْكَ أُمُّكَ)) قَالَ: قُلْتُ أَمِنْ عِنْدِكَ
يَا رَسُولَ اللهِ أَمْ مِنْ عِنْدِ اللهِ؟ قَالَ: ((لاَ،
بَلْ مِنْ عِنْدِ اللهِ)) وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ
إِذَا سُرَّ اسْتَنَارَ وَجْهُهُ حَتَّى كَأَنَّهُ قِطْعَةُ
قَمَرٍ، وَكُنَّا نَعْرِفُ ذَلِكَ مِنْهُ فَلَمَّا جَلَسْتُ
بَيْنَ يَدَيْهِ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ: إِنَّ مِنْ
تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللهِ،
وَإِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، قَالَ رَسُولُ اللهِ
ﷺ: ((أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ
خَيْرٌ لَكَ)) قُلْتُ فَإِنِّي أُمْسِكُ سَهْمِي
الَّذِي بِخَيْبَرَ، فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ
اللهَ إِنَّمَا نَجَّانِي بِالصِّدْقِ وَإِنَّ مِنْ تَوْبَتِي
أَنْ لاَ أُحَدِّثَ إِلاَّ صِدْقًا مَا بَقِيتُ، فَوَاللهِ

सिल्आ पर चढ़कर कोई बुलन्द आवाज़ से कह रहा था, ऐ कअ़ब बिन मालिक! तुम्हें बशारत हो। उन्होंने बयान किया कि ये सुनते ही मैं सज्दे में गिर पड़ा और मुझे यक़ीन हो गया कि अब फ़राख़ी हो जाएगी। फ़ज्र की नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अल्लाह की बारगाह में हमारी तौबा की क़ुबूलियत का ऐलान कर दिया था। लोग मेरे यहाँ बशारत देने के लिये आने लगे और मेरे दो साथियों को भी बशारत दी। एक स़ाहब (ज़ुबैर बिन अ़वाम रज़ि.) अपना घोड़ा दौड़ाए आ रहे थे, इधर क़बीला असलम के एक स़हाबी ने पहाड़ी पर चढ़कर (आवाज़ दी) और आवाज़ घोड़े से ज़्यादा तेज़ थी। जिन स़हाबी ने (सल्आ पहाड़ी पर से) आवाज़ दी थी, जब वो मेरे पास बशारत देने आए तो अपने दोनों कपड़े उतारकर उस बशारत की ख़ुशी में, मैंने उन्हें दे दिये। अल्लाह की क़सम! कि उस वक़्त उन दो कपड़ों के सिवा (देने के लायक़) और मेरे पास कोई चीज़ नहीं थी। फिर मैंने (अबू क़तादा रज़ि. से) दो कपड़े मांगकर पहने और आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, जूक़ दर ज़ूक़ लोग मुझसे मुलाक़ात करते जाते थे और मुझे तौबा की क़ुबूलियत पर बशारत देते जाते थे, कहते थे अल्लाह की बारगाह में तौबा की क़ुबूलियत मुबारक हो। कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया, आख़िर मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ रखते थे। चारों त़रफ़ स़हाबा का मज्मआ था। त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह (रज़ि.) दौड़कर मेरी त़रफ़ बढ़े और मुझसे मुसाफ़ा किया और मुबारकबाद दी। अल्लाह की क़सम! (वहाँ मौजूद) मुहाजिरीन में से कोई भी उनके सिवा, मेरे आने पर खड़ा नहीं हुआ। त़ल्हा (रज़ि.) का ये एहसान मैं कभी नहीं भूलूँगा। कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मैंने आँहज़रत (ﷺ) को सलाम किया तो आपने फ़र्माया, (चेहरा मुबारक ख़ुशी और मुसर्रत से दमक उठा था) इस मुबारक दिन के लिये तुम्हें बशारत हो जो तुम्हारी उ़म्र का सबसे मुबारक दिन है। उन्होंने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! ये बशारत आपकी त़रफ़ से है या अल्लाह की त़रफ़ से? फ़र्माया नहीं, बल्कि अल्लाह की त़रफ़ से है। आँहज़रत (ﷺ) जब किसी बात पर ख़ुश होते तो चेह्रा मुबारक रोशन हो जाता था, ऐसा जैसे चाँद का टुकड़ा हो। आपकी मुसर्रत हम चेह्र-ए-मुबारक से समझ जाते थे। फिर जब मैं आपके सामने बैठ गया तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अपनी तौबा की क़ुबूलियत की ख़ुशी

में, मैं अपना माल अल्लाह और उसके रसूल की राह में सदक़ा कर दूँ? आपने फ़र्माया लेकिन कुछ माल अपने पास भी रख लो, ये ज़्यादा बेहतर है। मैंने अ़र्ज़ किया फिर मैं ख़ैबर का हिस्सा अपने पास रख लूँगा। फिर मैंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने मुझे सच बोलने की वजह से नजात दी। अब मैं अपनी तौबा की क़ुबूलियत की खुशी में ये अ़हद करता हूँ कि जब तक ज़िन्दा रहूँगा सच के सिवा और कोई बात ज़ुबान पर न लाऊँगा। पस अल्लाह की क़सम! जबसे मैंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने ये अ़हद किया, मैं किसी ऐसे मुसलमान को नहीं जानता जिसे अल्लाह तआ़ला ने सच बोलने की वजह से इतना नवाज़ा हो, जितनी नवाज़िशात उसकी मुझ पर सच बोलने की वजह से हैं। जबसे मैंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने ये अ़हद किया, फिर आज तक कभी झूठ का इरादा भी नहीं किया और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला बाक़ी ज़िन्दगी में भी मुझे इससे महफ़ूज़ रखेगा और अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर आयत (हमारे बारे में) नाज़िल की थी। यक़ीनन अल्लाह तआ़ला ने नबी, मुहाजिरीन और अंसार की तौबा क़ुबूल की, उसके इर्शाद 'वकूनू मअस्सादिक़ीन' तक। अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इस्लाम के लिये हिदायत के बाद, मेरी नज़र में आँहज़रत (ﷺ) के सामने इस सच बोलने की वजह से बढ़कर अल्लाह का मुझ पर और कोई इन्आम नहीं हुआ कि मैंने झूठ नहीं बोला और इस तरह अपने को हलाक नहीं किया। जैसा कि झूठ बोलने वाले हलाक हो गये थे। नुज़ूले वह्य के ज़माने में झूठ बोलने वालों पर अल्लाह तआ़ला ने इतनी शदीद वईद फ़र्माई जितनी शदीद वईद किसी दूसरे के लिये नहीं फ़र्माई गई। फ़र्माया है, 'सयह्लिफ़ूना बिल्लाहि लकुम इज़न् क़लब्तुम' इर्शाद, 'फ़इन्नल्लाह ला यरज़ा अ़निल क़ौमिल् फ़ासिक़ीन' तक। कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया। चुनाँचे हम तीन, उन लोगों के मामले से जुदा रहे जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने क़सम खा ली थी और आपने उनकी बात मान भी ली थी, उनसे बेअ़त भी ली थी और उनके लिये मग़्फ़िरत तलब भी फ़र्माई थी। हमारा मामला आँहज़रत (ﷺ) ने छोड़ दिया था और अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद उसका फ़ैसला फ़र्माया था। अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, 'व अलष्षलाषतिल्लज़ीन खुल्लिफ़ू' से यही मुराद है कि हमारा मुक़द्दमा मुल्तवी रखा गया और हम ढील में डाल दिये गये। ये

مَا أَعْلَمُ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ أَبْلاَهُ اللهُ فِي صِدْقِ الْحَدِيثِ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ أَحْسَنَ مِمَّا أَبْلاَنِي مَا تَعَمَّدْتُ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى يَوْمِي هَذَا كَذِبًا وَإِنِّي لأَرْجُو أَنْ يَحْفَظَنِي اللهُ فِيمَا بَقِيتُ وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى عَلَى رَسُولِهِ ﷺ: ﴿لَقَدْ تَابَ اللهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ﴾ [التوبة: ١١٧] إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾ [التوبة: ١١٩] فَوَ اللهِ مَا أَنْعَمَ اللهُ عَلَيَّ مِنْ نِعْمَةٍ قَطُّ بَعْدَ أَنْ هَدَانِي لِلإِسْلاَمِ أَعْظَمَ فِي نَفْسِي مِنْ صِدْقِي لِرَسُولِ اللهِ ﷺ أَنْ لاَ أَكُونَ كَذَبْتُهُ فَأَهْلِكَ كَمَا هَلَكَ الَّذِينَ كَذَبُوا فَإِنَّ اللهَ تَعَالَى قَالَ لِلَّذِينَ كَذَبُوا حِينَ أَنْزَلَ الْوَحْيَ شَرَّ مَا قَالَ لأَحَدٍ، فَقَالَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: ﴿سَيَحْلِفُونَ بِاللهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ - إِلَى قَوْلِهِ - فَإِنَّ اللهَ لاَ يَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ﴾ [التوبة: ٩٥-٩٦] قَالَ كَعْبٌ: وَكُنَّا تَخَلَّفْنَا أَيُّهَا الثَّلاَثَةُ عَنْ أَمْرِ أُولَئِكَ الَّذِينَ قَبِلَ مِنْهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ حَلَفُوا لَهُ، فَبَايَعَهُمْ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمْ وَأَرْجَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَمْرَنَا حَتَّى قَضَى اللهُ فِيهِ فَبِذَلِكَ قَالَ اللهُ: ﴿وَعَلَى الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا﴾ [التوبة: ١١٨] وَلَيْسَ الَّذِي ذَكَرَ اللهُ مِمَّا خُلِّفْنَا عَنِ الْغَزْوِ وَإِنَّمَا هُوَ تَخْلِيفُهُ إِيَّانَا وَإِرْجَاؤُهُ أَمْرَنَا عَمَّنْ حَلَفَ لَهُ

नहीं मुराद है कि जिहाद से पीछे रह गये बल्कि मतलब ये है कि उन लोगों के पीछे रहे जिन्होंने क़समें खाकर अपने उज़्र बयान किये और आँहज़रत (ﷺ) ने उनके उज़्र कुबूल कर लिये। (राजेअ : 2757)

وَاعْتَذَرَ إِلَيْهِ فَقَبِلَ مِنْهُ. [راجع: ٢٧٥٧]

तशरीह : इस तवील (लम्बी) हदीष में अगरचे मज़्कूरा तीन बुज़ुर्गों का जंगे तबूक से पीछे रह जाने और उनकी तौबा कुबूल होने का तफ़्सीली ज़िक्र है मगर उससे हज़रत हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह) ने बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात फ़र्माया है। जिसकी तफ़्सील के लिये अहले इल्म फ़त्हुल बारी का मुतालआ फ़र्माएँ। इस वाक़िया के ज़ेल अल्लामा हसन बसरी (रह.) का ये इर्शादे गिरामी याद रखने के क़ाबिल है, **या सुब्हानल्लाहि मा अकल हाउलाइष्षलाषतु मालन हरामन व ला सफकू दमन हरामन व ला अफ़्सदू फ़िल्अर्ज़ि असाबहुम मा समिअतुम व ज़ाक़त अलैहिमुल्अर्ज़ु बिमा रहुबत फकैफ़ बिमय्युंवाक़िउल्वाहिश वल्कबाइर** (फ़त्हुल्बारी)। या'नी सुब्हानल्लाह उन तीनों बुज़ुर्गों ने न कोई हराम माल खाया था न कोई ख़ून बहाया था और न ज़मीन में फ़साद बरपा किया था, फिर भी उनको ये सज़ा दी गई जिसका ज़िक्र तुमने सुना है। उनके लिये ज़मीन अपनी फ़राख़ी के बावजूद तंग हो गई पस उन लोगों का क्या हाल होगा जो बेहयाई और हर बड़े गुनाहों में मुलव्विष होते रहते हैं। उन पर अल्लाह और रसूल (ﷺ) का किस क़दर गुस्सा होना चाहिये। इससे आप अंदाज़ा कर सकते हैं कि गुनाहों का इर्तिकाब किस क़दर ख़तरनाक हैं। उन पर अल्लाह और रसूल (ﷺ) का किस क़दर गुस्सा होना चाहिये। हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) अंसारी ख़ज़रजी हैं। बेअ़ते अक़बा षानिया में शरीक हुए। 50 हिजरी में 77 साल की उम्रे तवील पाकर इंतिक़ाल फ़र्माया। **रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु**

बाब 81 : हिज्र बस्ती से आँहज़रत (ﷺ) का गुज़रना

٨١- باب نزول الحجر

4419. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मुक़ामे हिज्र से गुज़रे तो आपने फ़र्माया, उन लोगों की बस्तियों से जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था, जब गुज़रना हो तो रोते हुए ही गुज़रो, ऐसा न हो कि तुम पर भी वही अ़ज़ाब आ जाए जो उन पर आया था। फिर आपने सरे मुबारक पर चादर डाल ली और बड़ी तेज़ी के साथ चलने लगे, यहाँ तक कि उस वादी से निकल आए। (राजेअ : 433)

٤٤١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا مَرَّ النَّبِيُّ ﷺ بِالْحِجْرِ قَالَ : ((لاَ تَدْخُلُوا مَسَاكِنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ مَا أَصَابَهُمْ إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ)) ثُمَّ قَنَّعَ رَأْسَهُ وَأَسْرَعَ السَّيْرَ حَتَّى أَجَازَ الْوَادِي.[راجع: ٤٣٣]

तशरीह : रिवायत में मज़्कूर मुक़ामे हिज्र हज़रत सालेह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम षमूद की बस्ती का नाम है। ये वही क़ौम है जिस पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब ज़लज़ला (भूकम्प), शदीद धमाकों और बिजली की कड़क की सूरत में नाज़िल हुआ था। जब आँहज़रत (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक़ के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे तो ये मुक़ाम रास्ते में पड़ा था। हिज्र, शाम और मदीना के बीच एक बस्ती है।

4420. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान

٤٤٢٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا، مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ

الله ﷺ لأَصْحَابِ الْحِجْرِ: ((لاَ تَدْخُلُوا عَلَى هَؤُلاَءِ الْمُعَذَّبِينَ، إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَهُمْ)). [راجع: ٤٣٣]

किया रसूलल्लाह (ﷺ) ने अस्हाबे हिजर के बारे में फ़र्माया, उस अ़ज़ाबयाफ़्ता क़ौम की बस्ती से जब तुम्हें गुज़रना ही है तो तुम रोते हुए गुज़रो, कहीं तुम पर भी वो अ़ज़ाब न आ जाए जो उन पर आया था।

٨٢- باب

बाब 82 :

٤٤٢١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، عَنِ اللَّيْثِ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ نَافِعِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ عَنْ أَبِيهِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ، قَالَ: ذَهَبَ النَّبِيُّ ﷺ لِبَعْضِ حَاجَتِهِ فَقُمْتُ أَسْكُبُ عَلَيْهِ الْمَاءَ لاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ قَالَ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ فَغَسَلَ وَجْهَهُ، وَذَهَبَ يَغْسِلُ ذِرَاعَيْهِ فَضَاقَ عَلَيْهِ كُمُّ الْجُبَّةِ فَأَخْرَجَهُمَا مِنْ تَحْتِ جُبَّتِهِ فَغَسَلَهُمَا ثُمَّ مَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ. [راجع: ١٨٢]

4421. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने, उनसे उ़र्वा बिन मुग़ीरह ने और उनसे उनके वालिद मुग़ीरह बिन शुअ़बा ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़ज़ाए हाजत के लिये तशरीफ़ ले गये थे, फिर (जब आप ﷺ फ़ारिग़ होकर वापस आए तो) आप (ﷺ) के वुज़ू के लिये मैं पानी लेकर ह़ाज़िर हुआ, जहाँ तक मुझे यक़ीन है उन्होंने यही बयान किया कि ये वाक़िया ग़ज़्व-ए-तबूक़ का है, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने चेहरा-ए-मुबारक धोया और जब कोहनियों तक धोने का इरादा किया जुब्बे की आस्तीन तंग निकली। चुनाँचे आपने हाथ जुब्बे के नीचे से निकाल लिये और उन्हें धोया, फिर मौज़ों पर मसह किया। (राजेअ़ : 182)

٤٤٢٢- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ يَحْيَى، عَنْ عَبَّاسِ بْنِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ قَالَ: أَقْبَلْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ حَتَّى إِذَا أَشْرَفْنَا عَلَى الْمَدِينَةِ قَالَ: ((هَذِهِ طَابَةُ، وَهَذَا أُحُدٌ جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ)). [راجع: ١٤٨١]

4422. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसेसुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़म्र बिन यह्या ने बयान किया, उनसे अ़ब्बास बिन सअ़द (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुमैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हम ग़ज़्व-ए-तबूक़ से वापस आ रहे थे। जब आप मदीना के क़रीब पहुँचे तो (मदीना की त़रफ़ इशारा करके) फ़र्माया कि ये त़ाबा है और ये उहुद पहाड़ है, ये हमसे मुहब्बत रखता है और हम उससे मुहब्बत रखते हैं। (राजेअ़ : 1481)

٤٤٢٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا حُمَيْدٌ الطَّوِيلُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَجَعَ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ فَدَنَا مِنَ

4423. हमसे अहमद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको हुमैद त़वील ने ख़बर दी और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ग़ज़्व-ए-तबूक़ से वापस हुए और मदीना के क़रीब पहुँचे तो आपने फ़र्माया, मदीना में बहुत से ऐसे लोग हैं

कि जहाँ भी तुम चले और जिस वादी को भी तुमने क़तअ किया वो (अपने दिल से) तुम्हारे साथ साथ थे। सहाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगरचे उनका क़याम उस वक़्त भी मदीना में ही रहा हो? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ वो मदीना मे रहते हुए भी (अपने दिल से तुम्हारे साथ थे) वो किसी उ़ज़्र की वजह से रुक गये थे। (राजेअ : 2838)

الْمَدِينَةِ، فَقَالَ : ((إِنَّ فِي الْمَدِينَةِ أَقْوَامًا مَا سِرْتُمْ مَسِيرًا وَلاَ قَطَعْتُمْ وَادِيًا إِلاَّ كَانُوا مَعَكُمْ))، قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ وَهُمْ بِالْمَدِينَةِ قَالَ : ((وَهُمْ بِالْمَدِينَةِ حَبَسَهُمُ الْعُذْرُ)). [راجع: ٢٨٣٨]

तश्रीह : इन तमाम अहादीषे मरवियात में किसी न किसी तरह से सफ़रे तबूक का ज़िक्र आया है। बाब और अहादीष में यही मुताबक़त की वजह है।

बाब 83 : किसरा (शाहे-ईरान) और क़ैसर (शाहे-रोम) को रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़ुतूत लिखना

٨٣- باب كِتَاب النَّبِيِّ ﷺ إِلَى كِسْرَى وَقَيْصَرَ

इमाम बुख़ारी (रह) का इशारा उस बात की तरफ़ है कि शाहाने आलम को जो ख़ुतूत आँहज़रत (ﷺ) ने लिखवाए, ये सब ग़ज़्व-ए-तबूक ही के साल के वाक़ियात हैं।

4424. हमसे इस्हाक़ बिन रिबाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (इब्राहीम बिन सअद) ने बयान किया, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (शाहे फ़ारस) किसरा के पास अपना ख़त अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी (रज़ि.) को देकर भेजा और उन्हें हुक्म दिया कि ये ख़त बहरीन के गवर्नर को दे दें (जो किसरा का आमिल था) किसरा ने जब आपका ख़त मुबारक पढ़ा तो उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। मेरा ख़्याल है कि इब्ने मुसय्यिब ने बयान किया कि फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनके लिये बददुआ की कि वो भी टुकड़े टुकड़े हो जाएँ। (राजेअ : 64)

٤٤٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ بِكِتَابِهِ إِلَى كِسْرَى مَعَ عَبْدِ اللهِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ، فَأَمَرَهُ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ الْبَحْرَيْنِ، فَدَفَعَهُ عَظِيمُ الْبَحْرَيْنِ إِلَى كِسْرَى، فَلَمَّا قَرَأَهُ مَزَّقَهُ فَحَسِبْتُ أَنَّ ابْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ : فَدَعَا عَلَيْهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُمَزَّقُوا كُلَّ مُمَزَّقٍ. [راجع: ٦٤]

तश्रीह : किसरा ने सिर्फ़ यही गुस्ताख़ी नहीं की बल्कि अपने गवर्नर बाज़ान को लिखा कि वो मदीना जाकर उस नबी से मिलें अगर वो दा'व-ए-नुबुव्वत से तौबा करे तो बेहतर है वरना उसका सर उतारकर मेरे पास हाज़िर करें। चुनाँचे बाज़ान मदीना आया और उसने किसरा का ये फ़र्मान सुनाया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमको मा'लूम होना चाहिये कि आज रात को मेरे रब तआला ने उसे उसके बेटे शीरविया के हाथ से क़त्ल करा दिया है और अब तुम्हारी हुकूमत पारा पारा होने वाली है। ये वाक़िया 7 हिजरी में माहे जमादिल अव्वल में हुआ। छः माह तक शीरविया फ़ारस का बादशाह रहा। एक दिन ख़ज़ाने में उसको एक दवा की शीशी मिली जिस पर कुव्वते बाह (शह्वत की दवा) की दवा लिखा हुआ था। उसने उसे खाया और हलाक हो गया। **उसके बाद किसरा की पोती पूरान तामी क़ौमी हाकिम हुई जो शीरविया की बेटी थी जिसके लिये आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो क़ौम कैसे फ़लाह पा सकती है जिस पर औरत हाकिम हो।**

4425. हमसे उ़ष्मान बिन हैष़म ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ अअ़राबी ने बयान किया, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे जमल के मौक़े पर वो कलाम मेरे काम आ गया जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैं इरादा कर चुका था कि अस्ह़ाबे जमल ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और आपके लश्कर के साथ शरीक होकर (ह़ज़रत अ़ली रज़ि. की) फ़ौज से लड़ूँ। उन्होंने बयान किया कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि अहले फ़ारस ने किसरा की लड़की को वारिषे तख़्त व ताज बनाया है तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कभी फ़लाह़ नहीं पा सकती जिसने अपना हुक्मरान किसी औ़रत को बनाया हो। (तशरीह़ पीछे हो चुकी है) (दीगर मक़ाम : 7099)

٤٤٢٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي اللهُ بِكَلِمَةٍ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَيَّامَ الْجَمَلِ بَعْدَ مَا كِدْتُ أَنْ أَلْحَقَ بِأَصْحَابِ الْجَمَلِ فَأُقَاتِلَ مَعَهُمْ، قَالَ: فَلَمَّا بَلَغَ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنَّ أَهْلَ فَارِسَ قَدْ مَلَّكُوا عَلَيْهِمْ بِنْتَ كِسْرَى، قَالَ: ((لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمْ امْرَأَةً)).

[طرفه في : ٧٠٩٩].

4426. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे याद है जब मैं बच्चों के साथ ष़निय्यतुल वदाअ़ की त़रफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) का इस्तिक़्बाल करने गया था। सुफ़यान ने एक बार (मअ़ल ग़िल्मान के बजाय) मअ़स्सिब्यान बयान किया।

٤٤٢٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ يَقُولُ: أَذْكُرُ أَنِّي خَرَجْتُ مَعَ الْغِلْمَانِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ نَتَلَقَّى رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَقَالَ سُفْيَانُ: مَرَّةً مَعَ الصِّبْيَانِ. [راجع: ٣٠٨٣]

4427. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने और उनसे साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने कि मुझे याद है, जब मैं बच्चों के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इस्तिक़बाल करने गया था। आप ग़ज़्व-ए-तबूक़ से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। (राजेअ़ : 3073)

٤٤٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ السَّائِبِ أَذْكُرُ أَنِّي خَرَجْتُ مَعَ الصِّبْيَانِ نَتَلَقَّى النَّبِيَّ ﷺ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ مَقْدَمَهُ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ. [راجع: ٣٠٨٣]

ऊपर वाली ह़दीष़ में ष़निय्यतुल वदाअ़ तक इस्तिक़बाल के लिये जाना मज़्कूर है। ये ग़ज़्व-ए-तबूक़ ही की वापसी पर हुआ है।

बाब 84 : नबी करीम (ﷺ) की बीमारी और आप (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٤- باب مَرَضِ النَّبِيِّ ﷺ وَوَفَاتِهِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ، ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ﴾

और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, आपको भी मरना है और उन्हें भी मरना है फिर तुम सब क़यामत के दिन अपने रब के हुज़ूर में झगड़ा करोगे।

4428. और यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने

٤٤٢٨- وَقَالَ يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ

बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़े वफ़ात में फ़र्माते थे कि ख़ैबर में (ज़हर आलूद) लुक़्मा जो मैंने अपने मुँह में रख लिया था, उसकी तकलीफ़ आज भी मैं महसूस करता हूँ। ऐसा मा'लूम होता है कि मेरी शहे-रग उस ज़हर की तकलीफ़ से कट जाएगी।

عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ ((يَا عَائِشَةُ مَا أَزَالُ أَجِدُ أَلَمَ الطَّعَامِ الَّذِي أَكَلْتُ بِخَيْبَرَ فَهَذَا أَوَانُ وَجَدْتُ انْقِطَاعَ أَبْهَرِي مِنْ ذَلِكَ السُّمِّ)).

4429. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने और उनसे उम्मे फ़ज़ल बिन्ते हारिष (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) मग़रिब की नमाज़ में वल मुर्सलाति उर्फ़ा की क़िरात कर रहे थे, उसके बाद फिर आपने हमें कभी नमाज़ नहीं पढ़ाई, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली।

(राजेअ: 763)

٤٤٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالْمُرْسَلاَتِ عُرْفًا ثُمَّ مَا صَلَّى لَنَا بَعْدَهَا حَتَّى قَبَضَهُ اللهُ.

[راجع: ٧٦٣]

4430. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) आपको (मजलिस में) अपने क़रीब बिठाते थे। इस पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने ए'तिराज़ किया कि इस जैसे तो हमारे बच्चे हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने ये तर्ज़े अमल जिस वजह से इख़्तियार किया, वो आपको मा'लूम भी है? फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत (या'नी) इज़ा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह के बारे में पूछा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात थी, आपको अल्लाह तआला ने (आयत में) उसी की ख़बर दी है। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जो तुमने बताया वही मैं भी इस आयत के बारे में जानता हूँ। (राजेअ: 3627)

٤٤٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُدْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: إِنَّ لَنَا أَبْنَاءً مِثْلَهُ، فَقَالَ: إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ تَعْلَمُ. فَسَأَلَ عُمَرُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَقَالَ: أَجَلُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَعْلَمَهُ إِيَّاهُ فَقَالَ: مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَعْلَمُ.

[راجع: ٣٦٢٧]

4431. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अह्वल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि इब्ने अब्बास

٤٤٣١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الأَحْوَلِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَوْمُ الْخَمِيسِ وَمَا يَوْمُ

الْخَمِيسِ اشْتَدَّ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَعُهُ، فَقَالَ : ((ائْتُونِي أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ أَبَدًا)) فَتَنَازَعُوا وَلاَ يَنْبَغِي عِنْدَ نَبِيٍّ تَنَازُعٌ فَقَالُوا : مَا شَأْنُهُ أَهَجَرَ اسْتَفْهِمُوهُ؟ فَذَهَبُوا يَرُدُّونَ عَلَيْهِ فَقَالَ : ((دَعُونِي فَالَّذِي أَنَا فِيهِ خَيْرٌ مِمَّا تَدْعُونِي إِلَيْهِ)) وَأَوْصَاهُمْ بِثَلاَثٍ قَالَ: ((أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ، وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيزُهُمْ)) وَسَكَتَ عَنِ الثَّالِثَةِ، أَوْ قَالَ فَنَسِيتُهَا.

[راجع: ١١٤]

(रज़ि.) ने जुमेरात के दिन का ज़िक्र किया और फ़र्माया, मा'लूम भी है जुमेरात के दिन क्या हुआ था। रसूलुल्लाह (ﷺ) के मर्ज़ में तेज़ी पैदा हुई थी। उस वक़्त आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि लाओ, मैं तुम्हारे लिये वसिय्यतनामा लिख दूँ कि तुम इस पर चलोगे तोउसके बाद फिर तुम कभी सहीह रास्ते को न छोड़ोगे लेकिन ये सुनकर वहाँ इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, हालाँकि नबी (ﷺ) के सामने नज़ाअ न होना चाहिये। कुछ लोगों ने कहा कि क्या आप (ﷺ) शिद्दते मर्ज की वजह से बेमा'नी कलाम फ़र्मा रहे हैं? (जो आपकी शाने अक़्दस से दूर है) फिर आपसे बात समझने की कोशिश करो। पस आपसे सहाबा पूछने लगे। आपने फ़र्माया जाओ (यहाँ शोरो गुल न करो) मैं जिस काम में मशग़ूल हूँ, वो इससे बेहतर है जिसके लिये तुम कह रहे हो। उसके बाद आपने सहाबा को तीन चीज़ों की वसिय्यत की, फ़र्माया कि मुश्रिकीन को जज़ीर-ए-अरब से निकाल दो। ऐलची (जो क़बाइल के तुम्हारे पास आएँ) उनकी इस तरह ख़ातिर किया करना जिस तरह मैं करता आया हूँ और तीसरी बात इब्ने अब्बास ने या सईद ने बयान नहीं की या सईद बिन जुबैर ने या सुलैमान ने कहा मैं तीसरी बात भूल गया।
(राजेअ : 114)

कहते हैं तीसरी बात ये थी कि मेरी क़ब्र को बुत न बना लेना। उसे मौता में इमाम मालिक ने रिवायत किया है।

٤٤٣٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ عُتْبَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا حُضِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَفِي الْبَيْتِ رِجَالٌ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَلُمُّوا أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لاَ تَضِلُّوا بَعْدَهُ)) فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ غَلَبَهُ الْوَجَعُ وَعِنْدَكُمُ الْقُرْآنُ حَسْبُنَا كِتَابُ اللهِ فَاخْتَلَفَ أَهْلُ الْبَيْتِ وَاخْتَصَمُوا فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ: قَرِّبُوا يَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لاَ تَضِلُّوا بَعْدَهُ، وَمِنْهُمْ

4432. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने बयान किया, उन्हें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो घर में बहुत से सहाबा (रज़ि.) मौजूद थे। आँहज़रत (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया कि लाओ, मैं तुम्हारे लिये एक दस्तावेज़ लिख दूँ, अगर तुम उस पर चलते रहे तो फिर तुम गुमराह न हो सकोगे। इस पर (हज़रत उमर रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) पर बीमारी की सख़्ती हो रही है, तुम्हारे पास क़ुर्आन मौजूद है। हमारे लिये तो अल्लाह की किताब बस काफ़ी है। फिर घरवालों में झगड़ा होने लगा, कुछ ने तो ये कहा कि आँहज़रत (ﷺ) को कोई चीज़ लिखने की दे दो कि उस पर आप हिदायत लिखवा दें और तुम उसके बाद गुमराह न हो

सको। कुछ लोगों ने उसके ख़िलाफ़ दूसरी राय पर इस़रार किया। जब शोरो–ग़ुल और झगड़ा ज़्यादा हुआ तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ से जाओ। उ़बैदुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते थे कि मुसीबत सबसे बड़ी ये थी कि लोगों ने इख़्तिलाफ़ और शोर करके आँह़ज़रत (ﷺ) को वो हिदायत नहीं लिखने दी।

(राजेअ़ : 114)

مَنْ يَقُولُ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغْوَ وَالاخْتِلاَفَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُومُوا)). قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: فَكَانَ يَقُولُ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُلَّ الرَّزِيَّةِ مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ لاخْتِلاَفِهِمْ وَلَغَطِهِمْ.

[راجع: ١١٤]

तश्रीह : ये रह़लत से चार दिन पहले की बात है। जब मर्ज़ ने शिद्दत इख़्तियार की तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, लाओ तुम्हें कुछ लिख दूँ ताकि तुम मेरे बाद गुमराह न हो। कुछ ने कहा कि आप पर शिद्दते दर्द ग़ालिब है, क़ुर्आन हमारे पास मौजूद है और हमको काफ़ी है। इस पर आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ। कोई कहता था सामाने किताबत ले आओ कि ऐसा नविश्ता लिखा जाए कोई कुछ और कहता था ये शोरो-शग़फ़ बढ़ा तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सब उठ जाओ। ये जुम्अ़ेरात का वाक़िया है। उसी रोज़ आपने तीन वसिय्यतें फ़र्माईं। यहूद को अ़रब से निकाल दिया जाए। वफ़ूद की इ़ज़्ज़त हमेशा उसी त़रह़ की जाए जैसा मैं करता रहा हूँ। क़ुर्आन मजीद को हर काम में मा'मूल बनाया जाए। कुछ रिवायात के मुत़ाबिक़ किताबुल्लाह और सुन्नत पर तमस्सुक का हुक्म फ़र्माया। आज मग़्रिब तक की तमाम नमाज़ें हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद पढ़ाई थीं मगर इ़शा में न जा सके और ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) को फ़र्माया कि वो नमाज़ पढ़ाएँ। जिसके तह़त ह़ज़रत स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने ह़याते नबवी में सत्रह नमाज़ों की इमामत फ़र्माई। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु आमीन।

4433, 4434. हमसे बुस्रा बिन स़फ़्वान बिन जमील लख़मी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ात़िमा (रज़ि.) को बुलाया और आहिस्ता से कोई बात उनसे कही जिस पर वो रोने लगीं, फिर दोबारा आहिस्ता से कोई बात कही जिस पर वो हंसने लगीं। फिर हमने उनसे उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि आपकी वफ़ात उसी मर्ज़ में हो जाएगी, मैं ये सुनकर रोने लगी। दूसरी बार आप (ﷺ) ने मुझसे जब सरगोशी की तो ये फ़र्माया कि आपके घर के आदमियों में सबसे पहले मैं आपसे जा मिलूँगी तो मैं हंसी थी।

(राजेअ़ : 3623, 3624)

٤٤٣٣، ٤٤٣٤ - حَدَّثَنَا بُسْرَةُ بْنُ صَفْوَانَ بْنِ جَمِيلٍ اللَّخْمِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ ثُمَّ دَعَاهَا فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَضَحِكَتْ، فَسَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ فَقَالَتْ: سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِهِ يَتْبَعُهُ فَضَحِكْتُ. [راجع: ٣٦٢٣، ٣٦٢٤]

4435. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे

٤٤٣٥ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ عُرْوَةَ

سعد ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सुनती आई थी कि हर नबी को वफ़ात से पहले दुनिया और आख़िरत के रहने में इख़्तियार दिया जाता है, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से भी सुना, आप अपने मर्ज़ुल मौत में फ़र्मा रहे थे, आपकी आवाज़ भारी हो चुकी थी। आप आयत 'मअ़ल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अ़लैहिम अल्ख़' की तिलावत फ़र्मा रहे थे (या'नी उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है) मुझे यक़ीन हो गया कि आपको भी इख़्तियार दे दिया गया है। (दीगर मक़ाम: 4436, 4437, 4586, 6337, 6509)

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : كُنْتُ أَسْمَعُ أَنَّهُ لاَ يَمُوتُ نَبِيٌّ حَتَّى يُخَيَّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَأَخَذَتْهُ بُحَّةٌ يَقُولُ: ﴿مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ﴾ الآيَةَ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [أطرافه في : ٤٤٣٦، ٤٤٣٧، ٤٥٨٦، ٦٣٣٨، ٦٥٠٩].

तश्रीह: या'नी आपने आख़िरत को इख़्तियार किया। वाक़दी ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुनिया में आने पर सबसे पहले जो कलिमा ज़ुबान से निकाला वो अल्लाहु अकबर था और आख़िरी कलिमा जो वफ़ात के वक़्त फ़र्माया, वो अर्रफ़ीक़ुल्आ़ला था। (वह़ीदी)

4436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में बार बार फ़र्माते थे। (अल्लाहुम्म) अर्रफ़ीक़ुल आ़ला, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे रुफ़्क़ाअ (अंबिया और सिद्दीक़ीन) में पहुँचा दे (जो आ़ला इल्लियीन में रहते हैं) (राजेअ़: 4435)

٤٤٣٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدٍ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَمَّا مَرِضَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَرَضَ الَّذِي مَاتَ فِيهِ جَعَلَ يَقُولُ : ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)).
[راجع: ٤٤٣٥]

4437. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया तन्दरुस्ती के ज़माने में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि जब भी किसी नबी की रूह क़ब्ज़ की गई तो पहले जन्नत में उसकी क़यामगाह उसे ज़रूर दिखा दी गई, फिर उसे इख़्तियार दिया गया (रावी को शक था कि लफ़्ज़ यह़्या है या युख़य्यिरु, दोनों का मफ़्हूम एक ही है) फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) बीमार पड़े और वक़्त क़रीब आ गया तो सरे मुबारक आ़इशा (रज़ि.) की रान पर था और आप पर ग़शी त़ारी हो गई थी, जब कुछ होश हुआ तो आपकी आँखे घर की छत की त़रफ़ उठ गईं और आपने फ़र्माया। अल्लाहुम्म फ़िर्रफ़ीक़िल आ़ला। मैं समझ गई कि अब ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमें (या'नी दुनियवी ज़िन्दगी को) पसन्द नहीं फ़र्माएँगे। मुझे वो ह़दीष़ याद आ गई जो आपने तन्दुरुस्ती के ज़माने में फ़र्माई थी। (राजेअ़: 4435)

٤٤٣٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ إِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ صَحِيحٌ يَقُولُ ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُحَيَّا أَوْ يُخَيَّرَ)) فَلَمَّا اشْتَكَى وَحَضَرَهُ الْقَبْضُ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِ عَائِشَةَ غُشِيَ عَلَيْهِ فَلَمَّا أَفَاقَ شَخَصَ بَصَرُهُ نَحْوَ سَقْفِ الْبَيْتِ ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذًا لاَ يُجَاوِرُنَا فَعَرَفْتُ أَنَّهُ حَدِيثُهُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا وَهُوَ صَحِيحٌ. [راجع: ٤٤٣٥]

4438. हमसे मुह़म्मद बिन यह़्या ज़ह्ली ने बयान किया, कहा

٤٤٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَفَّانُ عَنْ

हमसे अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे सख़र बिन जुवैरिया ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद (क़ासिम बिन मुहम्मद) ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि (उनके भाई) अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर हुए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। अब्दुर्रहमान (रज़ि.) के हाथ में एक ताज़ा मिस्वाक इस्ते'माल के लिये थी आप (ﷺ) इस मिस्वाक की तरफ़ देखते रहे। चुनाँचे मैं ने उनसे मिस्वाक ले ली और उसे अपने दांतों से चबाकर अच्छी तरह झाड़ने और साफ़ करने के बाद हुज़ूर (ﷺ) को दे दी। आपने वो मिस्वाक इस्ते'माल की जितने उम्दा तरीक़ा से हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त मिस्वाक कर रहे थे, मैंने आपको इतनी अच्छी तरह मिस्वाक करते कभी नहीं देखा। मिस्वाक से फ़ारिग़ होने के बाद आपने अपना हाथ या अपनी उँगली उठाई और फ़र्माया। फ़िर्रफ़ीक़िल आला तीन बार और आपका इंतिक़ाल हो गया। हज़रत आइशा(रज़ि.) कहा करती थीं कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो सरे मुबारक मेरी हंसली और ठोडी के बीच में था। (राजेअ : 890)

صَخْرِ بْنِ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا مُسْنِدَتُهُ إِلَى صَدْرِي وَمَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سِوَاكٌ رَطْبٌ يَسْتَنُّ بِهِ فَأَبَدَّهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَصَرَهُ فَأَخَذْتُ السِّوَاكَ فَقَصَمْتُهُ وَنَفَضْتُهُ وَطَيَّبْتُهُ، ثُمَّ دَفَعْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاسْتَنَّ بِهِ، فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتَنَّ اسْتِنَانًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ، فَمَا عَدَا أَنْ فَرَغَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَفَعَ يَدَهُ أَوْ إِصْبَعَهُ ثُمَّ قَالَ : ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) ثَلاَثًا ثُمَّ قَضَى وَكَانَتْ تَقُولُ : مَاتَ وَرَأْسُهُ بَيْنَ حَاقِنَتِي وَذَاقِنَتِي.

[راجع: ٨٩٠]

तश्रीह : इसमें ये इशारा था कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और आँहज़रत (ﷺ) दुनिया और आख़िरत दोनों में एक जगह रहेंगे। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह जानता है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) दुनिया और आख़िरत में आपकी बीवी हैं। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ षानी (रह) फ़र्माते हैं कि मैं खाना तैयार करके ईसाले षवाब के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) और हस्नैन (रज़ि.) के षवाब की निय्यत किया करता था। एक शब ख़्वाब में आँहज़रत (ﷺ) को मैंने देखा कि आप ग़ुस्से की नज़र से मुझको देख रहे हैं। मैंने सबब पूछा इर्शाद हुआ ये अम्र सबको मा'लूम है कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में खाना खाया करता हूँ। (लिहाज़ा तुमको भी ईसाले षवाब में हज़रत आइशा रज़ि. को भी शामिल करना चाहिये)। हज़रत मुजद्दिद कहते हैं मैंने उस रोज़ से आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात ख़ुसूसन हज़रत आइशा (रज़ि.) को भी ईसाले षवाब में शरीक करना शुरू कर दिया। **खाना खिलाने के लिये मुत्लक़न ऐसा ईसाले षवाब जो किसी क़ैद या रस्म के बग़ैर हो और ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिये किसी ग़रीब मिस्कीन यतीम को खिलाया जाए और उसका षवाब बुज़ुर्गों को बख़्शा जाए, उसके जवाज़ में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है।**

4439. मुझसे हिब्बान बिन मूसा मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बीमार पड़ते तो अपने ऊपर मुअव्वज़तैन (सूरह फ़लक़ और सूरह नास) पढ़कर दम कर लिया करते थे और

٤٤٣٩- حَدَّثَنِي حِبَّانُ : أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا اشْتَكَى نَفَثَ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ عَنْهُ بِيَدِهِ

فلمّا اشتكى وَجَعَهُ الّذي تُوُفِّيَ فِيهِ طَفِقْتُ أَنْفِثُ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ الَّتِي كَانَ يَنْفِثُ وَامْسَحُ بِيَدِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْهُ.

[أطرافه في: ٥٠١٦، ٥٧٣٥، ٥٧٥١].

अपने जिस्म पर अपने हाथ फेर लिया करते थे, फिर जब वो मर्ज़ आपको लाहिक़ हुआ जिसमें आपकी वफ़ात हुई तो मैं मुअव्वज़तैन पढ़कर आप पर दम किया करती थी और हाथ पर दम करके हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ज़िस्म पर फेरा करती थी।
(दीगर मक़ाम : 5016, 5735, 5751)

٤٤٤٠- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ ﷺ وَأَصْغَتْ إِلَيْهِ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ وَهُوَ مُسْنِدٌ إِلَيَّ ظَهْرَهُ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ)).

[طرفه في : ٥٦٤٧].

4440. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे अब्बाद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) से सुना, वफ़ात से कुछ पहले आँहज़रत (ﷺ) पुश्त से उनका सहारा लिए हुए थे। आपने कान लगाकर सुना कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) दुआ कर रहे हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा, मुझ पर रहम कर और मेरे रफ़ीक़ों से मुझे मिला।
(दीगर मक़ाम : 5647)

٤٤٤١- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلاَلٍ الْوَزَّانِ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ : ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)) قَالَتْ عَائِشَةُ : لَوْلاَ ذَلِكَ الأُبْرِزَ قَبْرُهُ خَشِيَ أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا. [راجع: ٤٣٥]

4441. हमसे सल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना वज़्ज़ाह यश्करी ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी हुमैद वज़ान ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़ुल वफ़ात में फ़र्माया, अल्लाह तआला ने यहूदियों को अपनी रहमत से दूर कर दिया कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ये बात न होती तो आपकी क़ब्र भी खुली रखी जाती लेकिन आपको ये ख़तरा था कि कहीं आपकी क़ब्र को भी सज्दा न किया जाने लगे। (राजेअ : 435)

ग़ालिबन आपकी इस मुबारक दुआ की बरकत थी कि क़ब्रे मुबारक को अब बिलकुल मुसक़्क़फ़ करके बन्द कर दिया गया है। ये कितना बड़ा मोअजजा है कि आज सारी दुनिया में सिर्फ़ एक ही सच्चे आख़िरी रसूल (ﷺ) की क़ब्र महफ़ूज़ है और वो भी इस हालत में कि वहाँ कोई किसी भी क़िस्म की पूजा-पाठ नहीं। (ﷺ)

٤٤٤٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ

4442. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कि मुझसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसऊद ने ख़बर दी और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये उठना बैठना दुश्वार हो गया और आपके मर्ज़ ने

النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَمَّا ثَقُلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ اسْتَأْذَنَ أَزْوَاجَهُ أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِي فَأَذِنَّ لَهُ، فَخَرَجَ وَهُوَ بَيْنَ الرَّجُلَيْنِ تَخُطُّ رِجْلاَهُ فِي الأَرْضِ بَيْنَ عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَبَيْنَ رَجُلٍ آخَرَ قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: فَأَخْبَرْتُ عَبْدَ اللهِ بِالَّذِي قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقَالَ لِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبَّاسٍ: هَلْ تَدْرِي مِنَ الرَّجُلِ الآخَرِ الَّذِي لَمْ تُسَمِّ عَائِشَةُ؟ قَالَ: قُلْتُ لاَ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هُوَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ وَكَانَتْ عَائِشَةُ زَوْجُ النَّبِيِّ ﷺ تُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا دَخَلَ بَيْتِي وَاشْتَدَّ بِهِ وَجَعُهُ قَالَ ((هَرِيقُوا عَلَيَّ مِنْ سَبْعِ قِرَبٍ لَمْ تُحْلَلْ أَوْكِيَتُهُنَّ لَعَلِّي أَعْهَدُ إِلَى النَّاسِ)) فَأَجْلَسْنَاهُ فِي مِخْضَبٍ لِحَفْصَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ طَفِقْنَا نَصُبُّ عَلَيْهِ مِنْ تِلْكَ الْقِرَبِ. حَتَّى طَفِقَ يُشِيرُ إِلَيْنَا بِيَدِهِ أَنْ قَدْ فَعَلْتُنَّ. قَالَتْ: ثُمَّ خَرَجَ إِلَى النَّاسِ فَصَلَّى لَهُمْ وَخَطَبَهُمْ. [راجع: ١٩٨]

शिद्दत इख़्तियार कर ली तो तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात (रज़ि.) से आपने मेरे घर में अय्यामे मर्ज़ गुज़ारने के लिये इजाज़त मांगी। सबने जब इजाज़त दे दी तो आप मैमूना (रज़ि.) के घर से निकले, आप दो आदमियों का सहारा लिये हुए थे और आपके पैर ज़मीन से घिसट रहे थे। जिन दो स़हाबा का आप (ﷺ) सहारा लिये हुए थे, उनमें एक अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) थे और एक और साह़ब। उ़बैदुल्लाह ने बयान किया कि फिर मैंने आ़इशा (रज़ि.) की इस रिवायत की ख़बर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को दी तो उन्होंने बतलाया, मा'लूम है वो दूसरे स़ाह़ब जिनका नाम आ़इशा (रज़ि.) ने नहीं लिया, कौन हैं? बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया मुझे तो नहीं मा'लूम है। उन्होंने बतलाया कि वो अ़ली (रज़ि.) थे और नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा आ़इशा (रज़ि.) बयान करती थीं कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) जब मेरे घर में आ गये और तकलीफ़ बहुत बढ़ गई तो आपने फ़र्माया कि सात मशकीज़े पानी के भर लाओ और मुझ पर डाल दो, मुम्किन है इस त़रह मैं लोगों को कुछ नस़ीह़त करने के क़ाबिल हो जाऊँ। चुनाँचे हमने आपको आपकी ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के एक लगन में बिठाया और उन्हीं मशकीज़ों से आप पर पानी धारने लगे। आख़िर हुज़ूर (ﷺ) ने अपने हाथ के इशारे से रोका कि बस हो चुका, बयान किया कि फिर आप लोगों के मज्मओ़ में गये और नमाज़ पढ़ाई और लोगों को ख़ित़ाब किया। (राजेअ़ : 198)

٤٤٤٤.٤٤٤٣ - وَأَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالاَ: لَمَّا نَزَلَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ طَفِقَ يَطْرَحُ خَمِيصَةً عَلَى وَجْهِهِ، فَإِذَا اغْتَمَّ كَشَفَهَا عَنْ وَجْهِهِ، فَقَالَ وَهُوَ كَذَلِكَ، يَقُولُ: ((لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)) يُحَذِّرُ مَا صَنَعُوا.

4443,4444. और मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उनसे आ़इशा (रज़ि.) और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि शिद्दते मर्ज़ के दिनों में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपनी चादर खींचकर बार-बार अपने चेहरे पर डालते थे, फिर जब दम घुटने लगता तो चेहरे से हटा देते। आप इसी शिद्दत के आ़लम में फ़र्माते थे, यहूद व नस़ारा अल्लाह की रहमत से दूर हुए क्योंकि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था। इस त़रह आप (अपनी उम्मत को) उनका अ़मल इख़्तियार करने से बचते रहने की ताकीद फ़र्मा रहे थे।

(राजेअ : 435, 436)

[راجع: ٤٣٥، ٤٣٦]

4445. मुझे उबैदुल्लाह ने ख़बर दी कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा, मैंने इस मामला (या'नी अय्यामे मर्ज़ में हज़रत अबूबक्र रज़ि. को इमाम बनाने) के सिलसिले में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से बार बार पूछा, मैं बार बार आपसे सिर्फ़ इसलिये पूछ रही थी कि मुझे यक़ीन था कि जो शख़्स (हुज़ूरे अकरम ﷺ की ज़िन्दगी में) आपकी जगह पर खड़ा होगा, लोग उससे कभी मुहब्बत नहीं रख सकते बल्कि मेरा ख़्याल था कि लोग इससे बदफ़ाली लेंगे, इसलिये मैं चाहती थी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को इसका हुक्म न दें, इसकी रिवायत इब्ने उमर, अबू मूसा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से की है। (राजेअ : 198)

٤٤٤٥- أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ. أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَقَدْ رَاجَعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي ذَلِكَ. وَمَا حَمَلَنِي عَلَى كَثْرَةِ مُرَاجَعَتِهِ إِلاَّ أَنَّهُ لَمْ يَقَعْ فِي قَلْبِي أَنْ يُحِبَّ النَّاسُ بَعْدَهُ رَجُلاً. قَامَ مَقَامَهُ أَبَدًا وَلاَ كُنْتُ أُرَى أَنَّهُ لَنْ يَقُومَ أَحَدٌ مَقَامَهُ إِلاَّ تَشَاءَمَ النَّاسُ بِهِ. فَأَرَدْتُ أَنْ يَعْدِلَ ذَلِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ أَبِي بَكْرٍ. رَوَاهُ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُو مُوسَى وَابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ١٩٨]

4446. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे यज़ीद बिन अल्हाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप मेरी हंसली और ठोढ़ी के बीच (सर रखे हुए) थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) (की शिद्दत सकरात) देखने के बाद अब मैं किसी के लिये भी नज़अ की शिद्दत को बुरा नहीं समझती। (राजेअ : 890)

٤٤٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَاتَ النَّبِيُّ ﷺ وَإِنَّهُ لَبَيْنَ حَاقِنَتِي وَذَاقِنَتِي فَلاَ أَكْرَهُ شِدَّةَ الْمَوْتِ لأَحَدٍ أَبَدًا بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٨٩٠]

4447. मुझसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको बिश्र बिन शुऐब बिन अबी हम्ज़ा ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक अंसारी ने ख़बर दी और कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) उन तीन अस्हाब में से एक थे जिनकी (ग़ज़्व-ए-तबूक़ में शिर्कत न करने की) तौबा क़ुबूल हुई थी। उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से बाहर आए। ये उस मर्ज़ का वाक़िया है जिसमें आप (ﷺ) ने वफ़ात पाई थी। स़हाबा (रज़ि.) ने आपसे पूछा, अबुल हसन! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का आज मिजाज़ क्या है? सुबह उन्होंने

٤٤٤٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا بِشْرُ بْنُ شُعَيْبِ بْنِ أَبِي حَمْزَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ الأَنْصَارِيُّ، وَكَانَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ أَحَدَ الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ تِيبَ عَلَيْهِمْ: أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ خَرَجَ مِنْ عِنْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ. فَقَالَ النَّاسُ. يَا أَبَا الْحَسَنِ كَيْفَ أَصْبَحَ

बताया कि अल्हम्दु लिल्लाह अब आपको इफ़ाक़ा है। फिर अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने अ़ली (रज़ि.) का हाथ पकड़ के कहा कि तुम, अल्लाह की क़सम! तीन दिन के बाद ज़िन्दगी गुज़ारने पर तुम मजबूर हो जाओगे। अल्लाह की क़सम! मुझे तो ऐसे आषार नज़र आ रहे हैं कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) इस मर्ज़ से सेहत नहीं पा सकेंगे। मौत के वक़्त बनू अ़ब्दुल मुत्तलिब के चेहरों की मुझे ख़ूब पहचान है। अब हमें आपके पास चलना चाहिये और आपसे पूछना चाहिये कि हमारे बाद ख़िलाफ़त किसे मिलेगी। अगर हम इसके मुस्तहिक़ हैं तो हमें मा'लूम हो जाएगा और अगर कोई दूसरा मुस्तहिक़ होगा तो वो भी मा'लूम हो जाएगा और हुज़ूर (ﷺ) हमारे बारे में अपने ख़लीफ़ा को मुम्किन है कुछ वसिय्यतें कर दें। लेकिन ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! अगर हमने इस वक़्त आपसे उसके बारे में कुछ पूछा और आपने इंकार कर दिया तो फिर लोग हमें हमेशा के लिये इससे महरूम कर देंगे। मैं तो हर्गिज़ हुज़ूर (ﷺ) से इसके बारे मे कुछ नहीं पूछूँगा।

رَسُولُ اللهِ؟ فَقَالَ: أَصْبَحَ بِحَمْدِ اللهِ بَارِئًا، فَأَخَذَ بِيَدِهِ عَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَقَالَ لَهُ: أَنْتَ وَاللهِ بَعْدَ ثَلاَثٍ، عَبْدُ الْعَصَا وَإِنِّي وَاللهِ لأَرَى رَسُولَ اللهِ ﷺ سَوْفَ يُتَوَفَّى مِنْ وَجَعِهِ هَذَا، إِنِّي لأَعْرِفُ وُجُوهَ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ عِنْدَ الْمَوْتِ، اذْهَبْ بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلْنَسْأَلْهُ فِيمَنْ هَذَا الأَمْرُ إِنْ كَانَ فِينَا عَلِمْنَا ذَلِكَ، وَإِنْ كَانَ فِي غَيْرِنَا عَلِمْنَاهُ، فَأَوْصَى بِنَا فَقَالَ عَلِيٌّ: إِنَّا وَاللهِ لَئِنْ سَأَلْنَاهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَمَنَعَنَاهَا لاَ يُعْطِينَاهَا النَّاسُ بَعْدَهُ، وَإِنِّي وَاللهِ لاَ أَسْأَلُهَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की कमाल दानाई (दूरदर्शिता) थी जो उन्होंने ये ख़्याल ज़ाहिर फ़र्माया जिससे कई फ़ित्नों का दरवाज़ा बन्द हो गया, (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)।

4448. हमसे सई़द बिन उ़फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि पीर के दिन मुसलमान फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे और अबूबक्र (रज़ि.) नमाज़ पढ़ा रहे थे कि अचानक हुज़ूरे अकरम (ﷺ) नज़र आए। आप उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे का पर्दा उठाकर स़हाबा (रज़ि.) को देख रहे थे, स़हाबा (रज़ि.) नमाज़ में सफ़ बाँधे खड़े हुए थे हुज़ूर अकरम (ﷺ) देखकर हंस पड़े। अबूबक्र (रज़ि.) पीछे हटने लगे ताकि स़फ़ में आ जाएँ। आपने समझा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाना चाहते हैं। अनस (रज़ि.) ने बयान किया, क़रीब था कि मुसलमान इस ख़ुशी की वजह से जो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को देखकर उन्हें हुई थी कि वो अपनी नमाज़ तोड़ने ही को थे लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ने अपने

٤٤٤٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ الْمُسْلِمِينَ بَيْنَا هُمْ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ مِنْ يَوْمِ الاثْنَيْنِ وَأَبُو بَكْرٍ يُصَلِّي لَهُمْ لَمْ يَفْجَأْهُمْ إِلاَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَدْ كَشَفَ سِتْرَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ فَنَظَرَ إِلَيْهِم وَهُمْ فِي صُفُوفِ الصَّلاَةِ ثُمَّ تَبَسَّمَ يَضْحَكُ، فَنَكَصَ أَبُو بَكْرٍ عَلَى عَقِبَيْهِ لِيَصِلَ الصَّفَّ وَظَنَّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُرِيدُ أَنْ يَخْرُجَ إِلَى الصَّلاَةِ فَقَالَ أَنَسٌ: وَهَمَّ الْمُسْلِمُونَ أَنْ يَفْتَتِنُوا فِي صَلاَتِهِمْ فَرَحًا بِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَشَارَ

हाथ से इशारा किया कि नमाज़ पूरी कर लो, फिर आप हुज्रे के अंदर तशरीफ़ ले गये और पर्दा डाल लिया। (राजेअ : 680)

إِلَيْهِمْ بِيَدِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ أَتِمُّوا صَلاَتَكُمْ، ثُمَّ دَخَلَ الْحُجْرَةَ وَأَرْخَى السِّتْرَ. [راجع: ٦٨٠]

तशरीह : ये ह़याते मुबारका के आख़िरी दिन सोमवार की फ़ज्र की नमाज़ थी, थोड़ी देर तक आप इस नमाज़ बा जमाअ़त के पाक मुज़ाहिरे को मुलाहिज़ा फ़र्माते रहे, जिससे रुख़े अनवर पर बशाशत और होंठों पर मुस्कुराहट थी। उस वक़्त वजहे मुबारक वरक़े क़ुर्आन मा'लूम हो रहा था। इसके बाद हुज़ूर (ﷺ) पर दुनिया में किसी दूसरी नमाज़ का वक़्त नहीं आया। इसी मौक़े पर आपने ह़ाज़िरीन को बार-बार ताकीद फ़र्माई थी अस्सलात, अस्सलात वमा मलकत अयमानुकुम यही आपकी आख़िरी वसिय्यत थी जिसे आपने कई बार दोहराया, फिर नज़अ़ का आलम त़ारी हो गया। (ﷺ)

4449. मुझसे मुहम्मद बिन उ़बैद ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन सईद ने, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने ख़बर दी और उन्हें आ़इशा (रज़ि.) के गुलाम अबू अ़म्र ज़क्वान ने कि आ़इशा (रज़ि.) फ़र्माया करती थीं, अल्लाह की बहुत सी नेअ़मतों में एक नेअ़मत मुझ पर ये भी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात मेरे घर में और मेरी बारी के दिन हुई। आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे और ये कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर (ﷺ) की वफ़ात के वक़्त मेरे और आपके थूक को एक साथ जमा किया था कि अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि.) घर में आए तो उनके हाथ में एक मिस्वाक थी। हुज़ूर (ﷺ) मुझ पर टेक लगाए हुए थे, मैंने देखा कि आप (ﷺ) उस मिस्वाक को देख रहे हैं। मैं समझ गई कि आप मिस्वाक करना चाहते हैं, इसलिये मैंने आपसे पूछा ये मिस्वाक आपके लिये ले लूँ? आपने सर के इशारे से इ़ष्बात (हाँ) में जवाब दिया, मैंने वो मिस्वाक उनसे ले ली। हुज़ूर (ﷺ) उसे चबा न सके, मैंने पूछा आपके लिये मैं उसे नरम कर दूँ? आपने सर के इशारे से अ़ष्बात में जवाब दिया। मैंने मिस्वाक नरम कर दी। आपके सामने एक बड़ा प्याला था, चमड़े का या लकड़ी का (ह़दीष़ के रावी) उ़मर को इस सिलसिले में शक था, उसके अंदर पानी था, आँह़ज़रत (ﷺ) बार बार अपने हाथ उसके अंदर दाख़िल करते और फिर उन्हें अपने चेहरे पर फेरते और फ़र्माते ला इलाहा इल्लल्लाह। मौत के वक़्त शिद्दत होती है फिर आप अपना हाथ उठाकर कहने लगे फ़िर्रफ़ीक़िल अअ़ला। यहाँ तक कि आप रह़लत

٤٤٤٩ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ أَبَا عَمْرٍو ذَكْوَانَ مَوْلَى عَائِشَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ كَانَتْ تَقُولُ: إِنَّ مِنْ نِعَمِ اللهِ عَلَيَّ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تُوُفِّيَ فِي بَيْتِي وَفِي يَوْمِي وَبَيْنَ سَحْرِي وَنَحْرِي، وَأَنَّ اللهَ جَمَعَ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ عِنْدَ مَوْتِهِ، دَخَلَ عَلَيَّ عَبْدُ الرَّحْمَنِ وَبِيَدِهِ السِّوَاكُ، وَأَنَا مُسْنِدَةٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَرَأَيْتُهُ يَنْظُرُ إِلَيْهِ وَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ السِّوَاكَ، فَقُلْتُ: آخُذُهُ لَكَ؟ فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ. فَتَنَاوَلْتُهُ فَاشْتَدَّ عَلَيْهِ، وَقُلْتُ أُلَيِّنُهُ لَكَ، فَأَشَارَ بِرَأْسِهِ أَنْ نَعَمْ فَلَيَّنْتُهُ وَبَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ أَوْ عُلْبَةٌ يَشُكُّ عُمَرُ فِيهَا مَاءٌ، فَجَعَلَ يُدْخِلُ يَدَيْهِ فِي الْمَاءِ فَيَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ)) ثُمَّ نَصَبَ يَدَهُ فَجَعَلَ يَقُولُ: ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) حَتَّى قُبِضَ وَمَالَتْ يَدُهُ. [راجع: ٨٩٠]

फ़र्मा गये और आपका हाथ झुक गया। (राजेअ : 890)

4450. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन ड़र्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) पूछते रहते थे कि कल मेरा क़याम कहाँ होगा, कल मेरा क़याम कहाँ होगा? आप आइशा (रज़ि.) की बारी के मुंतज़िर थे, फिर अज़्वाजे मुतह्हरात (रज़ि.) ने आइशा (रज़ि.) के घर क़याम की इजाज़त दे दी और आपकी वफ़ात उन्हीं के घर में हुई। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपकी वफ़ात उसी दिन हुई जिस दिन क़ायदे के मुताबिक़ मेरे यहाँ आपके क़याम की बारी थी। रहलत के वक़्त सरे मुबारक मेरे सीने पर था और मेरा थूक आपके थूक के साथ मिला था। उन्होंने बयान किया कि अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) दाख़िल हुए और उनके हाथ में इस्ते'माल के क़ाबिल मिस्वाक थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा तो मैंने कहा कि अब्दुर्रहमान! ये मिस्वाक मुझे दे दो। उन्होंने मिस्वाक मुझे दे दी। मैंने उसे अच्छी तरह चबाया और झाड़कर हुज़ूर (ﷺ) को दी, फिर आपने वो मिस्वाक की, उस वक़्त आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे।
(राजेअ : 890)

٤٤٥٠- حدَّثنا إسْماعيلُ. قال: حدّثني سُلَيْمانُ بْنُ بِلاَلٍ. حدّثنا هشامُ بْنُ عُرْوةَ. أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عائشة رضي الله عنها أنّ رسُولَ الله ﷺ كان يسْألُ في مرضه الّذي ماتَ فِيهِ يقُولُ: ((أيْنَ أنا غدًا؟)) يُرِيدُ يوْمَ عائِشة فأذِنَ لهُ أزْواجُهُ يكُونُ حَيْثُ شاءَ فكَانَ في بيْتِ عائشةَ حتّى ماتَ عِنْدها. قالتْ عائشة : فمات في الْيَوْمِ الّذِي كَانَ يدُورُ عليّ فيه في بَيْتِي فقبضهُ الله، وإنّ رأسهُ لبيْنَ نحْرِي وَسَحْرِي وَخَالَطَ رِيقُهُ رِيقي. ثُمّ قَالتْ: دخل عبْدُ الرّحْمنِ بن أبي بكر ومعه سواكٌ يسْتنُّ به. فنظرَ إِلَيْه رَسُولُ الله ﷺ فقُلْتُ لهُ: أعْطِني هذا السّواكَ يا عبْد الرّحْمنِ فأعْطانيه. فقضِمْتُهُ ثُمّ مضغْتُهُ فَأَعْطَيْتُهُ رسُولَ الله ﷺ فاسْتنّ بهِ وهُوَ مُسْتنِدٌ إِلَى صدْرِي. [راجع: ٨٩٠]

4451. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात मेरे घर में, मेरी बारी के दिन हुई। आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। जब आप बीमार पड़े तो हम आपकी सेहत के लिये दुआएँ किया करते थे। उस बीमारी में भी मैं आपके लिये दुआ करने लगी लेकिन आप फ़र्मा रहे थे और आप (ﷺ) का सर आसमान की तरफ़ उठा हुआ था फ़िर्रफ़ीक़िल आला फ़िर्रफ़ीक़िल आला और अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) आए तो उनके हाथ में एक ताज़ा टहनी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा तो मैं समझ गई कि आप (ﷺ) मिस्वाक करना चाहते हैं। चुनाँचे वो

٤٤٥١- حدّثنا سُلَيْمانُ بْنُ حَرْبٍ، حدّثنا حَمّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوب عن ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا قَالتْ : تُوُفِّيَ النّبيُّ ﷺ فِي بَيْتِي وفِي يَوْمِي وبيْن سَحْرِي وَنَحْرِي، وَكَانَتْ إِحْدَانا تُعَوِّذُهُ بدُعاء إذا مرِض. فذهَبْتُ أُعَوِّذُهُ فرفَعَ رأْسهُ إلى السّماء وَقَالَ وقال: ((فِي الرّفِيقِ الأعْلَى. في الرّفِيقِ الأعْلى)) ومرّ عبْدُ الرّحْمنِ بْنُ أبي بكْرٍ وَفِي يَدِهِ جرِيدَةٌ رَطْبَةٌ فَنظَرَ إِلَيْهِ النّبيُّ

टहनी मैंने उनसे ले ली। पहले मैंने उसे चबाया, फिर साफ़ करके आपको दे दी। हुजूर (ﷺ) ने उससे मिस्वाक की, जिस तरह पहले आप मिस्वाक किया करते थे, उससे भी अच्छी तरह से, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने वो मिस्वाक मुझे इनायत की और आपका हाथ झुक गया, या (रावी ने ये बयान किया कि) मिस्वाक आपके हाथ से छूट गई। इस तरह अल्लाह तआला ने मेरे और हुज़ूर (ﷺ) के थूक को उस दिन जमा कर दिया जो आपकी दुनिया की ज़िन्दगी का सबसे आख़िरी और आख़िरत की ज़िन्दगी का सबसे पहला दिन था। (राजेअ : 890)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَظَنَنْتُ أَنَّ لَهُ بِهَا حَاجَةً. فَأَخَذْتُهَا فَمَضَغْتُ رَأْسَهَا وَنَفَضْتُهَا، فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهِ فَاسْتَنَّ بِهَا كَأَحْسَنِ مَا كَانَ مُسْتَنًّا، ثُمَّ نَاوَلَنِيهَا فَسَقَطَتْ يَدُهُ أَوْ سَقَطَتْ مِنْ يَدِهِ فَجَمَعَ اللهُ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ، فِي آخِرِ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ الآخِرَةِ.
[راجع: ٨٩٠]

4452,4453. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपनी क़यामगाह, मस्ख़ से घोड़े पर आए और आकर उतरे, फिर मस्जिद के अंदर गये। किसी से आपने कोई बात नहीं की। उसके बाद आप आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में आए और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तरफ़ गये, नअशे मुबारक एक यमनी चादर से ढंकी हुई थी। आपने चेहरा खोला और झुककर चेहर-ए-मुबारक को बोसा दिया और रोने लगे, फिर कहा मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला आप पर दो मर्तबा मौत तारी नहीं करेगा। जो एक मौत आपके मुक़द्दर में थी, वो आप पर तारी हो चुकी है। (राजेअ: 1241, 1242)

٤٤٥٢، ٤٤٥٣– حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَقْبَلَ عَلَى فَرَسٍ مِنْ مَسْكَنِهِ بِالسُّنْحِ حَتَّى نَزَلَ فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلَمْ يُكَلِّمِ النَّاسَ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَتَيَمَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُغَشًّى بِثَوْبِ حِبَرَةٍ، فَكَشَفَ عَنْ وَجْهِهِ ثُمَّ أَكَبَّ عَلَيْهِ فَقَبَّلَهُ وَبَكَى، ثُمَّ قَالَ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، وَاللهِ لاَ يَجْمَعُ اللهُ عَلَيْكَ مَوْتَتَيْنِ، أَمَّا الْمَوْتَةُ الَّتِي كُتِبَتْ عَلَيْكَ فَقَدْ مُتَّهَا.[راجع: ١٢٤١، ١٢٤٢]

4454. ज़ुहरी ने बयान किया और उनसे अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए तो हज़रत उमर (रज़ि.) लोगों से कुछ कह रहे थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, उमर! बैठ जाओ, लेकिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने बैठने से इंकार कर दिया। इतने में लोग हज़रत उमर (रज़ि.) को छोड़कर अबूबक्र (रज़ि.) के पास आ गये और आपने ख़ुत्बा मस्नूना के बाद फ़र्माया, अम्माबअद! तुममें जो भी मुहम्मद (ﷺ) की इबादत करता था तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि आपकी वफ़ात हो चुकी है और जो

٤٤٥٤– قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ. أَنَّ أَبَا بَكْرٍ خَرَجَ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُكَلِّمُ النَّاسَ، فَقَالَ: اجْلِسْ يَا عُمَرُ فَأَبَى عُمَرُ أَنْ يَجْلِسَ، فَأَقْبَلَ النَّاسُ إِلَيْهِ وَتَرَكُوا عُمَرَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَّا بَعْدُ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا ﷺ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ،

अल्लाह तआ़ला की इबादत करता था तो (उसका मा'बूद) अल्लाह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है और उसको कभी मौत नहीं आएगी। अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़र्माया है कि, मुहम्मद (ﷺ) स़िर्फ़ रसूल हैं, उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं, इर्शाद अश्शाकिरीन तक। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, अल्लाह की क़सम! ऐसा महसूस हुआ कि जैसे पहले से लोगों को मा'लूम ही नहीं था कि अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की है और जब ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने इसकी तिलावत की तो सबने उनसे ये आयत सीखी। अब ये ह़ाल था कि जो भी सुनता था वही इसकी तिलावत करने लग जाता था। (ज़ुह्री ने बयान किया कि) फिर मुझे सईद बिन मुसय्यिब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उ़मर (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे उस वक़्त होश आया, जब मैंने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को इस आयत की तिलावत करते सुना, जिस वक़्त मैंने उन्हें तिलावत करते सुना कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात हो गई है तो मैं सकते में आ गया और ऐसा महसूस हुआ कि मेरे पैर मेरा बोझ नहीं उठा पाएँगे और मैं ज़मीन पर गिर जाऊँगा। (राजेअ़ : 1242)

وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللهَ، فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ. قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ - إِلَى قَوْلِهِ - الشَّاكِرِينَ﴾ [آل عمران: ١٤٤] وَقَالَ: وَاللهِ لَكَأَنَّ النَّاسَ لَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللهَ أَنْزَلَ هَذِهِ الآيَةَ حَتَّى تَلاَهَا أَبُو بَكْرٍ فَتَلَقَّاهَا النَّاسُ مِنْهُ كُلُّهُمْ، فَمَا أَسْمَعُ بَشَرًا مِنَ النَّاسِ إِلاَّ يَتْلُوهَا، فَأَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ عُمَرَ قَالَ: وَاللهِ مَا هُوَ إِلاَّ أَنْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرٍ تَلاَهَا، فَعَقِرْتُ حَتَّى مَا تُقِلُّنِي رِجْلاَيَ وَحَتَّى أَهْوَيْتُ إِلَى الأَرْضِ حِينَ سَمِعْتُهُ تَلاَهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَدْ مَاتَ.

[راجع: ١٢٤٢]

तशरीह़ : ऐसे नाज़ुक वक़्त में उम्मत को सम्भालना ये ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ही का मुक़ाम था। इसीलिये रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी वफ़ात से पहले ही उनको अपना ख़लीफ़ा बनाकर इमामे नमाज़ बना दिया था जो उनकी ख़िलाफ़ते ह़क़्क़ा की रोशन दलील है।

ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने ये कहकर कि अल्लाह आप पर दो मौत त़ारी नहीं करेगा, उन स़ह़ाबा (रज़ि.) का रद्द किया जो ये समझते थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) फिर ज़िन्दा होंगे और मुनाफ़िक़ों के हाथ पैर काटेंगे क्योंकि अगर ऐसा हो तो फिर वफ़ात होगी गोया दो बार मौत हो जाएगी। कुछ ने कहा दो बार मौत न होने से ये मत़लब है कि फिर क़ब्र में आपको मौत न होगी बल्कि आप ज़िन्दा रहेंगे। इमाम अह़मद की रिवायत में यूँ है कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) कहती हैं कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई, मैंने आपको एक कपड़े से ढांक दिया। इसके बाद उ़मर (रज़ि.) और मुग़ीरह (रज़ि.) आए। दोनों ने अंदर आने की इजाज़त मांगी। मैंने इजाज़त दे दी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने नअ़श को देखकर कहा हाय आप बेहोश हो गये हैं। मुग़ीरह (रज़ि.) ने कहा कि आप इंतिक़ाल फ़र्मा चुके हैं। इस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मुग़ीरह (रज़ि.) को डांटते हुए कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त तक मरने वाले नहीं हैं जब तक सारे मुनाफ़िक़ीन का काम तमाम न कर दें। एक रिवायत में यूँ है, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) यूँ कह रहे थे ख़बरदार! जो कोई ये कहेगा कि आँह़ज़रत (ﷺ) मर गये हैं, मैं तलवार से उसका सर उड़ा दूँगा। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को वाक़ई ये यक़ीन था कि आँह़ज़रत (ﷺ) मरे नहीं हैं या उनका ये फ़र्माना बड़ी मस्लिह़त और सियासत पर मबनी होगा। उन्होंने ये चाहा कि पहले ख़िलाफ़त का इंतिज़ाम हो जाए बाद में आपकी वफ़ात को ज़ाहिर किया जाए, ऐसा न हो आपकी वफ़ात का ह़ाल सुनकर दीन में कोई ख़राबी पैदा हो जाए।

4455,56,57. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान

٤٤٥٥، ٤٤٥٦، ٤٤٥٧- حدَّثني عَبْدُ

किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे मूसा बिन अबी आ़इशा ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के बाद अबूबक्र (रज़ि.) ने आपको बोसा दिया था। (दीगर मक़ाम : 5709)

(राजेअ : 1241, 1242)

اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَبَّلَ النَّبِيَّ ﷺ بَعْدَ مَوْتِهِ. [طرفه في : ٥٧٠٩].

[راجع: ١٢٤١، ١٢٤٢]

4458. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा की ह़दीष़ की त़रह़, लेकिन उन्होंने अपनी इस रिवायत में ये इज़ाफ़ा किया कि आ़इशा (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) के मर्ज़ में हम आपके चेहरे में दवा देने लगे तो आपने इशारा से दवा देने से मना किया। हमने समझा कि मरीज़ को दवा पीने से (कुछ औक़ात) जो नागवारी होती है ये भी उसी का नतीजा है (इसलिये हमने इस़रार किया) तो आपने फ़र्माया कि घर में जितने आदमी हैं सबके चेहरे में मेरे सामने दवा डाली जाए। सिर्फ़ अ़ब्बास (रज़ि.) इससे अलग हैं कि वो तुम्हारे साथ उस काम में शरीक नहीं थे। इसकी रिवायत इब्ने अबुज़्ज़िनाद ने भी की, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के ह़वाले से। (दीगर मक़ाम : 5712, 6866, 6898)

٤٤٥٨- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا يَحْيَى، وَزَادَ قَالَتْ عَائِشَةُ : لَدَدْنَاهُ فِي مَرَضِهِ، فَجَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا أَنْ ((لاَ تَلُدُّونِي)) فَقُلْنَا كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ، فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: ((أَلَمْ أَنْهَكُمْ أَنْ تَلُدُّونِي)) قُلْنَا كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ فَقَالَ : ((لاَ يَبْقَى أَحَدٌ فِي الْبَيْتِ إِلاَّ لُدَّ)) وَأَنَا أَنْظُرُ إِلاَّ الْعَبَّاسَ فَإِنَّهُ لَمْ يَشْهَدْكُمْ. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[أطرافه في: ٥٧١٢، ٦٨٦٦، ٦٨٩٧].

4459. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया कहा हमको अज़्हर बिन सअ़द सिमान ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने ख़बर दी, उन्हें इब्राहीम नख़्ई ने और उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के सामने इसका ज़िक्र आया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को कोई (ख़ास़) वस़िय्यत की थी? तो उन्होंने बतलाया ये कौन कहता है, मैं ख़ुद नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर थी, आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे, आपने त़श्त मंगवाया, फिर आप एक त़रफ़ झुक गये और आपकी वफ़ात हो गई। उस वक़्त मुझे भी कुछ मा'लूम नहीं हुआ, फिर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.)

٤٤٥٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ أَخْبَرَنَا أَزْهَرُ، قَالَ: أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ، قَالَ: ذُكِرَ عِنْدَ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَوْصَى إِلَى عَلِيٍّ فَقَالَتْ : مَنْ قَالَهُ؟ لَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَإِنِّي لَمُسْنِدَتُهُ إِلَى صَدْرِي فَدَعَا بِالطَّسْتِ فَانْخَنَثَ فَمَاتَ فَمَا شَعَرْتُ فَكَيْفَ أَوْصَى إِلَى عَلِيٍّ.

को आपने कब वसी बना दिया। (राजेअ : 2741)

[راجع: ٢٧٤١]

4460. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़्वल ने बयान किया, उनसे त़लहा बिन मुस़रिफ़ ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने किसी को वसी बनाया था। उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने पूछा कि लोगों पर वसिय्यत करना कैसे फ़र्ज़ है या वसिय्यत करने का कैसे हुक्म है? उन्होंने बताया कि आपने किताबुल्लाह के मुताबिक़ अमल करते रहने की वसिय्यत की थी। (राजेअ : 2740)

٤٤٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ : سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَوْصَى النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: لاَ، فَقُلْتُ كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوْ أُمِرُوا بِهَا قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللهِ. [راجع: ٢٧٤٠]

4461. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अह़वस़ (सलाम बिन ह़कीम) ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने न दिरहम छोड़े थे, न दीनार, न कोई ग़ुलाम न बांदी, सिवा अपने सफ़ेद ख़च्चर के जिस पर आप सवार हुआ करते थे और आपका हथियार और कुछ वो ज़मीन जो आप (ﷺ) ने अपनी ज़िन्दगी में मुजाहिदों और मुसाफ़िरों के लिये वक़्फ़ कर रखी थी। (राजेअ : 2739)

٤٤٦١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا، وَلاَ عَبْدًا وَلاَ أَمَةً إِلاَّ بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ الَّتِي كَانَ يَرْكَبُهَا وَسِلاَحَهُ، وَأَرْضًا جَعَلَهَا لاِبْنِ السَّبِيلِ صَدَقَةً. [راجع: ٢٧٣٩]

4462. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि शिद्दते मर्ज़ के ज़माने में नबी करीम (ﷺ) की बेचैनी बहुत बढ़ गई थी। ह़ज़रत फ़ात़िमतुज़्ज़हरा (रज़ि.) ने कहा, आह अब्बाजान को कितनी बेचैनी है। ह़ुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, आज के बाद तुम्हारे अब्बाजान की बेचैनी नहीं रहेगी। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो फ़ात़िमा (रज़ि.) कहती थीं, हाय अब्बाजान! आप अपने रब के बुलावे पर चले गये, हाए अब्बाजान! आप जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुक़ाम पर चले गये। हम ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) को आपकी वफ़ात की ख़बर सुनाते हैं। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) दफ़न कर दिये गये तो आप (रज़ि.) ने अनस (रज़ि.) से कहा, अनस! तुम्हारे दिल रसूलुल्लाह (ﷺ) की नअ़श पर मिट्टी डालने के लिये किस त़रह आमादा हो गये थे।

٤٤٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَتَغَشَّاهُ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: وَاكَرْبَ أَبَاهُ فَقَالَ لَهَا: ((لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ الْيَوْمِ)). فَلَمَّا مَاتَ قَالَتْ: يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ فَلَمَّا دُفِنَ قَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ : يَا أَنَسُ أَطَابَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّرَابَ.

बाब 85 : नबी करीम (ﷺ) का आख़िरी कलिमा जो ज़ुबाने मुबारक से निकला

٨٥- باب آخِرِ مَا تَكَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ

٤٤٦٣- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ يُونُسُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ، أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ: ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُخَيَّرُ)) فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ. ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى سَقْفِ الْبَيْتِ، ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذًا لاَ يَخْتَارُنَا وَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ. قَالَتْ: فَكَانَ آخِرَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)).

[راجع: ٤٤٣٥]

हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने कई अहले इल्म की मौजूदगी में ख़बर दी और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ह़ालते स़ेहत में फ़र्माया करते थे कि हर नबी की रूह क़ब्ज़ करने से पहले उन्हें जन्नत में उनकी क़यामगाह दिखाई गई, फिर इख़्तियार दिया गया, फिर जब आप (ﷺ) बीमार हुए और आपका सरे मुबारक मेरी रान पर था। उस वक़्त आप पर ग़शी त़ारी हो गई। जब होश मे आए तो आपने अपनी नज़र घर की छत की त़रफ़ उठा ली और फ़र्माया, अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आ़ला (ऐ अल्लाह! मुझे अपनी बारगाह में अंबिया और स़िद्दीक़ीन से मिला दे) मैं उसी वक़्त समझ गई कि अब आप हमें पसन्द नहीं कर सकते और मुझे वो ह़दीष़ याद आ गई जो आप ह़ालते स़ेहत में हमसे बयान किया करते थे। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आख़िरी कलिमा जो ज़ुबान मुबारक से निकला वो यही था कि अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़ुल आ़ला। (राजेअ़ : 4435)

तश्रीह : नज़्आ की ह़ालत में ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) आप (ﷺ) को सहारा दिये हुए पसे पुश्त बैठी हुई थीं। पानी का प्याला ह़ुज़ूर (ﷺ) के सिराहने रखा हुआ था। आप प्याला में हाथ डालते और चेहरा पर फेर लेते थे। चेह्रा मुबारक कभी सुर्ख़ होता कभी ज़र्द पड़ जाता, ज़ुबाने मुबारक से फ़र्मा रहे थे **ला इलाह इल्लल्लाहु अन्न लिल्मौति सकरात** इतने में अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) हाथ में ताज़ा मिस्वाक लिये हुए आ गये। आप (ﷺ) ने मिस्वाक पर नज़र डाली तो ह़ज़रत स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने मिस्वाक को अपने दांतों से नरम करके पेश कर दिया। ह़ुज़ूर (ﷺ) ने मिस्वाक की फिर हाथ को बुलन्द फ़र्माया और ज़ुबाने अक़्दस से फ़र्माया **अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़िल्आ़ला** उस वक़्त हाथ लटक गया और पुतली ऊपर को उठ गई। **इन्न लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

बाब 86 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٦- باب وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

٤٤٦٤. ٤٤٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَبِثَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا.

4464,65. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (बेअ़ष़त के बाद) मक्का में दस साल तक क़याम किया जिसमें आप (ﷺ) पर वह़्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी

दस साल तक आपका क़याम रहा। (दीगर मक़ाम : 4978)

[طرفه في: ٤٩٧٨].

4466. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी उ़म्र 63 साल थी। इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने भी उसी तरह ख़बर दी थी। (राजेअ़ : 3536)

٤٤٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٥٣٦]

तश्रीह : 13 रबीउ़ल अव्वल 11 हिजरी यौमे सोमवार वक़्त चाश्त था कि जिस्मे अत़्हर से रूहे अनवर ने परवाज़ किया, उस वक़्त उ़म्रे मुबारक 63 साल क़मरी पर चार दिन थी। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 87 :

٨٧- باب

4467. हमसे क़ुबैस़ा बिन उ़त्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी ज़िरह एक यहूदी के यहाँ तीस स़ाअ़ जौ के बदले में गिरवी रखी हुई थी। (राजेअ़ : 2067)

٤٤٦٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِثَلاَثِينَ يَعْنِي صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ.

[راجع: ٢٠٦٨]

तश्रीह : ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उस यहूदी का क़र्ज़ अदा करके आपकी ज़िरह छुड़ा ली। उन ह़ालात में अगर ज़रा सी भी अ़क़्ल वाला आदमी ग़ौर करेगा तो स़ाफ़ समझ लेगा कि आप सच्चे पैग़म्बर थे। दुनिया के बादशाहों की तरह एक बादशाह न थे। अगर आप दुनिया के बादशाहों की तरह होते तो लाखों करोड़ों रुपये की जायदाद अपने बच्चों और बीवियों के लिये छोड़ देते।

बाब : नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को मर्ज़ुल मौत में एक मुहिम पर रवाना करना

٨٨- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي مَرَضِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ

4468. हमसे अबू आ़स़िम ज़िह्हाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को एक लश्कर का अमीर

٤٤٦٨- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنِ الْفُضَيْلِ بْنِ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ، اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ ﷺ أُسَامَةَ فَقَالُوا فِيهِ: فَقَالَ

النَّبِيُّ ﷺ: ((قَدْ بَلَغَنِي أَنَّكُمْ قُلْتُمْ فِي أُسَامَةَ وَإِنَّهُ أَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ)).

[راجع: ٣٧٣٠]

बनाया तो कुछ स़हाबा (रज़ि.) ने उनकी इमारत पर ए'तिराज़ किया। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे मा'लूम हुआ है कि तुम उसामा (रज़ि.) पर ए'तिराज़ कर रहे हो ह़ालाँकि वो मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ है। (राजेअ़ : 3730)

٤٤٦٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ بَعْثًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ، فَطَعَنَ النَّاسُ فِي إِمَارَتِهِ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((إِنْ تَطْعَنُوا فِي إِمَارَتِهِ، فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعَنُونَ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ، وَايْمُ اللهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمَارَةِ، وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ)). [راجع: ٣٧٣٠]

4469. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक लश्कर रवाना फ़र्माया और उसका अमीर उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बनाया। कुछ लोगों ने उनकी इमारत पर ए'तिराज़ किया। इस पर नबी करीम (ﷺ) ने स़हाबा (रज़ि.) को ख़िताब किया और फ़र्माया, अगर आज तुम उसकी इमारत पर ए'तिराज़ करते हो तो तुम उससे पहले उसके वालिद की इमारत पर इसी त़रह़ ए'तिराज़ कर चुके हो और अल्लाह की क़सम! उसके वालिद (ज़ैद रज़ि.) इमारत के बहुत लायक़ थे और मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ थे और ये (या'नी उसामा रज़ि.) भी उनके बाद मुझ सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ है। (राजेअ़ : 3730)

तश्रीह़ : बावजूद इस लश्कर में बड़े बड़े मुहाजिरीन जैसे अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) शरीक थे, मगर आपने उसामा (रज़ि.) को सरदारे लश्कर बनाया। इससे ये ग़र्ज़ थी कि उनकी दिलजोई हो और वो अपने वालिद ज़ैद बिन ह़ारिष़ा (रज़ि.) के क़ातिलों से ख़ूब दिल खोलकर लड़ें। इस लश्कर की तैयारी का आँह़ज़रत (ﷺ) को बड़ा ख़्याल था। मर्ज़ुल मौत में भी कई बार फ़र्माया कि उसामा (रज़ि.) का लश्कर रवाना करो मगर उसामा (रज़ि.) शहर से बाहर निकले ही थे कि आपकी वफ़ात हो गई और उसामा (रज़ि.) लश्कर के साथ वापस आ गये। बाद में ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त मे इस लश्कर को रवाना किया और उसामा (रज़ि.) गये। उन्होंने अपने बाप के क़ातिल को क़त्ल किया।

٨٩- باب

बाब 89 :

٤٤٧٠- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنِ ابْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنِ الصُّنَابِحِيِّ، أَنَّهُ قَالَ لَهُ : مَتَى هَاجَرْتَ؟ قَالَ : خَرَجْنَا مِنَ الْيَمَنِ مُهَاجِرِينَ فَقَدِمْنَا الْجُحْفَةَ فَأَقْبَلَ رَاكِبٌ فَقُلْتُ لَهُ: الْخَبَرَ؟ فَقَالَ: دَفَنَّا النَّبِيَّ ﷺ مُنْذُ خَمْسٍ، فَقُلْتُ : هَلْ سَمِعْتَ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ شَيْئًا؟ قَالَ: نَعَمْ، أَخْبَرَنِي بِلاَلٌ

4470. हमसे अस्बग़ बिन फ़ुर्ज ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़सैला स़नाबिह़ी से, जनाब अबुल ख़ैर ने उनसे पूछा था कि तुमने कब हिजरत की थी? उन्होंने बयान किया कि हम हिजरत के इरादे से यमन से चले, अभी हम मुक़ामे जुह़फ़ा में पहुँचे थे कि एक सवार से हमारी मुलाक़ात हुई। हमने उनसे मदीना की ख़बर पूछी तो उन्होंने बताया कि नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात को पाँच दिन हो चुके हैं मैंने पूछा तुमने लैलतुल क़द्र

के बारे में कोई हदीष़ सुनी है? उन्होंने फ़र्माया कि हाँ, हुज़ूर अकरम (ﷺ) के मोअज़्ज़िन बिलाल (रज़ि.) ने मुझे ख़बर दी है कि लैलतुल क़द्र रमज़ान के आख़िरी अ़शरे के सात दिनों में (एक ताक़ रात) होती है।

مُؤَذِّنُ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ فِي السَّبْعِ فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ.

या'नी इक्कीस तारीख़ से सत्ताईसवीं तक की ताक़ रातों मे से वे एक रात है या ये कि वो ग़ालिबन सत्ताईसवीं रात होती है।

बाब 90 : रसूले करीम (ﷺ) ने कुल कितने ग़ज़्वे किये हैं?

٩٠- باب كَمْ غَزَا النَّبِيُّ ﷺ

4471. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से पूछा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ तुमने कितने ग़ज़्वे किये थे? उन्होंने बताया कि सत्रह! मैंने पूछा और आँहज़रत (ﷺ) ने कितने ग़ज़्वे किये थे? फ़र्माया कि उन्नीस। (राजेअ :3949)

٤٤٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَأَلْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ كَمْ غَزَوْتَ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ قَالَ: سَبْعَ عَشْرَةَ. قُلْتُ كَمْ غَزَا النَّبِيُّ ﷺ؟ قَالَ: تِسْعَ عَشْرَةَ. [راجع: ٣٩٤٩]

तश्रीह : या'नी उन जिहादों में आँहज़रत (ﷺ) ब-नफ़्से नफ़ीस तशरीफ़ ले गये। जंग हो या न हो। अबू यअ़ला की रिवायत में इक्कीस जिहाद ऐसे मन्क़ूल हैं जिनमें आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ ले गये हैं। कुछ ने कहा आप सत्ताईस जिहादों में ख़ुद तशरीफ़ ले गये हैं और 47 लश्कर ऐसे रवाना किये हैं जिनमें ख़ुद शरीक नहीं हुए जिन जिहादों में जंग हुई वो नौ हैं। बद्र, उहुद, मरीसीअ़, ख़ंदक़, बनी क़ुरैज़ा, ख़ैबर, फ़तहे मक्का, हुनैन और ताइफ़।

4472. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उन्होंने उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा हमसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ पन्द्रह ग़ज़्वों में शरीक रहा हूँ।

٤٤٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا الْبَرَاءُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ خَمْسَ عَشْرَةَ.

4473. मुझसे अहमद बिन हसन ने बयान किया, कहा हमसे अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल बिन हिलाल ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे कहमस ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने और उनसे उनके वालिद (बुरैदा बिन हसीब रज़ि.) ने बयान किया कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ सोलह ग़ज़्वों में शरीक थे।

٤٤٧٣- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ الْحَسَنِ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ حَنْبَلِ بْنِ هِلاَلٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنْ كَهْمَسٍ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: غَزَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ سِتَّ عَشْرَةَ غَزْوَةً.

63. किताबुत्तफ़्सीर

क़ुर्आन पाक की तफ़्सीर के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ اسْمَانِ مِنَ الرَّحْمَةِ، الرَّحِيمُ وَالرَّاحِمُ بِمَعْنًى وَاحِدٍ كَالْعَلِيمِ وَالْعَالِمِ.

अल्फ़ाज़ अर्रहमान अर्रहीम (अल्लाह तआला की) ये दो सिफ़तें हैं जो लफ़्ज़ अर् रहमत से निकले हैं। अर् रहीम और अर् राहिम दोनों के एक ही मा'नी हैं, जैसे अल अलीम और अल आलिम जानने वाला दोनों का एक ही मा'नी है।

तश्रीह : कुछ ने कहा है रहमान में मुबालग़ा है और इसीलिये कहते हैं, **रहमानुद्दुनिया व रहीमुल्आख़िरति** क्योंकि दुनिया में इसकी रहमत सब पर आम है और आख़िरत में ख़ास मोमिनों पर होगी मगर सहीह रिवायत में है। **रहमानुद्दुनिया वल्आख़िरति व रहीमुहुमा** कुछ ने कहा रहम में मुबालग़ा। हाफ़िज़ ने कहा दोनों में एक एक वजह से मुबालग़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक (रह) ने कहा रहमान वो है जो मांगे पर दे, रहीम वो है जिससे न मांगें तो वो नाख़ुश हो। ये अल्लाह की बड़ी भारी मेहरबानी है कि वो मांगने से ख़ुश होता है और न मांगने पर नाराज़। आयते शरीफ़ा, **उदऊनी अस्तजिब लकुम इन्नल्लज़ीन यस्तक्बिरून अन इबादती सयदख़ुलून जहन्नम दाख़िरीन** (मूमिन : 60) का यही मतलब है, अल्लाह तआला हमारी दुआओं को क़ुबूल करे और हमें तौफ़ीक़ दे कि हम हर वक़्त उसके सामने अपने हाथ फैलाते ही रहा करें।

[١] سُورَةُ الْفَاتِحَةِ

सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर

١ - باب مَا جَاءَ فِي فَاتِحَةِ الْكِتَابِ

बाब 1 : सूरह फ़ातिहा का बयान

وَسُمِّيَتْ أُمَّ الْكِتَابِ أَنَّهُ يُبْدَأُ بِكِتَابَتِهَا فِي الْمَصَاحِفِ وَيُبْدَأُ بِقِرَاءَتِهَا فِي الصَّلاَةِ، وَالدِّينُ الْجَزَاءُ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ كَمَا تَدِينُ تُدَانُ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: بِالدِّينِ بِالْحِسَابِ مَدِينِينَ مُحَاسَبِينَ.

उम्म, माँ को कहते हैं। उम्मुल किताब इस सूरत का नाम इसलिये रखा गया है कि क़ुर्आन मजीद में इसी से किताबत की इब्तिदा होती है। (इसीलिये इसे फ़ातिहतुल किताब भी कहा गया है) और नमाज़ में भी क़िरात इसी से शुरू की जाती है और अद्दीन बदला के मा'नी में है। ख़्वाह अच्छाई में हो या बुराई में जैसा कि (बोलते हैं) कमा तदीनु तुदानु (जैसा करोगे वैसा भरोगे) मुजाहिद ने कहा कि अद्दीन हिसाब के मा'नी में है। जबकि मदीनीन बमा'नी मुहासबीन है। या'नी हिसाब किये गये।

٤٤٧٤ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ

4474. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान

الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى، قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ، فَدَعَانِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمْ أُجِبْهُ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي فَقَالَ : ((أَلَمْ يَقُلِ اللهُ اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ؟)) ثُمَّ قَالَ لِي: ((لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ السُّوَرِ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ تَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ قُلْتُ لَهُ : أَلَمْ تَقُلْ لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ؟ قَالَ : ﴿الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي، وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ)).

[أطرافه في: ٤٦٤٧، ٤٧٠٣، ٥٠٠٦].

किया कि मुझसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम ने और उनसे अबू सईद बिन मुअ़ल्ला (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे इसी ह़ालत में बुलाया, मैंने कोई जवाब नहीं दिया (फिर बाद में, मैंने ह़ाज़िर होकर) अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नमाज़ पढ़ रहा था। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या अल्लाह तआ़ला ने तुमसे नहीं फ़र्माया है 'इस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआ़कुम' (अल्लाह और उसके रसूल जब तुम्हें बुलाएँ तो हाँ मे जवाब दो) फिर हुज़ूर (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि आज मैं तुम्हें मस्जिद से निकलने से पहले एक ऐसी सूरत की ता'लीम दूँगा जो क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत है। फिर आपने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और जब आप बाहर निकलने लगे तो मैंने याद दिलाया कि हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत बताने का वा'दा किया था। आपने फ़र्माया अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्आलमीन यही वो सब्अ़े मष़ानी और क़ुर्आने अ़ज़ीम है जो मुझे अ़ता किया गया है। (दीगर मक़ाम : 4647, 4703, 5006)

सब्अ़े मष़ानी वो सात आयात जो बार बार पढ़ी जाती हैं। जिनको नमाज़ की हर रकअ़त में इमाम और मुक़्तदी सबके लिये पढ़ना ज़रूरी है जिसके पढ़े बग़ैर किसी की नमाज़ नहीं होती। यही क़ुर्आने अ़ज़ीम है। **सदक़ल्लाहु तबारक व तआ़ला।**

٢- باب ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾

बाब 02 : आयत ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन की तफ़्सीर

मग़ज़ूबि अ़लैहिम से यहूद और ज़ाल्लीन से नस़ारा मुराद हैं या'नी या अल्लाह! तू हमको उन लोगों की राह पर न चलाइयो जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और वो यहूद हैं और न गुमराहों की राह पर जो नस़ारा हैं।

٤٤٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾ فَقُولُوا : آمِينَ، فَمَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). [راجع: ٧٨٢]

4475. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सुमय ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब इमाम 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन' कहे तो तुम आमीन कहो क्योंकि जिसका ये कहना मलाइका के कहने के साथ हो जाए उसकी तमाम पिछली ख़त़ाएँ मुआ़फ़ हो जाती हैं।

(राजेअ़ : 782)

तश्रीह : ज़ाहिर है कि मुक़्तदी को जब ही इल्म हो सकेगा जब इमाम लफ़्ज़ **गैरिल्मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन** फिर लफ़्ज़ आमीन को बआवाज़े बुलन्द अदा करेगा और मुक़्तदी भी बिल जहर उसकी आमीन की आवाज़ के साथ आमीन की आवाज़ मिलाएँगे। तब ही वो आमीन कहना मलाइका के साथ होगा। इससे आमीन बिल जहर का इष्बात होता है। जो लोग आमीन बिल जहर के इंकारी हैं वो सरासर ग़लती पर हैं। आमीन बिल जहर बिला शक व शुब्हा सुन्नते नबवी है। मुहब्बते रसूल (ﷺ) के दावेदारों का फ़र्ज़ है कि वो इस हक़ीक़त पर ठण्डे दिल से ग़ौर करें।

सूरह बक़र: की तफ़्सीर

[٢] سُورَةُ الْبَقَرَةِ

बाब 1 : अल्लाह तआला के इर्शाद 'व अल्लमा आदमल् अस्माअ कुल्लहा' का बयान

١ - باب الآية ﴿وَعَلَّمَ آدَمَ الأَسْمَاءَ كُلَّهَا﴾

या'नी अल्लाह तआला ने आदम को तमाम चीज़ों के नाम सिखला दिये। चुनाँचे यही फ़रज़न्दे आदम है जो दुनिया की हज़ारों ज़ुबानों को जानता है और उनमें कलाम करता है। मतलब ये है कि हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) में अल्लाह तआला ने ऐसी कुव्वत पैदा कर दी है कि वो दुनिया के सारे उलूम व फ़ुनून को हासिल कर लेने की ताक़त रखता है।

4476. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मोनिनीन क़यामत के दिन परेशान होकर जमा होंगे और (आपस में) कहेंगे बेहतर ये था कि अपने रब के हुज़ूर में आज किसी को हम अपना सिफ़ारिशी बनाते। चुनाँचे सब लोग हज़रत आदम (अलैहि.) की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अर्ज़ करेंगे कि आप इंसानों के बाप हैं। अल्लाह तआला ने आपको अपने हाथ से बनाया। आपके लिये फ़रिश्तों को सज्दे का हुक्म दिया और आपको हर चीज़ के नाम सिखाए। आप हमारे लिये अपने रब के हुज़ूर में सिफ़ारिश कर दें ताकि आज की इस मुसीबत से हमें नजात मिले। आदम (अलैहि.) कहेंगे, मैं इसके लायक़ नहीं हूँ, वो अपनी लग़्ज़िश को याद करेंगे और उनको परवर दिगार के हुज़ूर में जाने से शर्म आएगी। कहेंगे कि तुम लोग नूह (अलैहि.) के पास जाओ। वो सबसे पहले नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने (मेरे बाद) ज़मीन वालों की तरफ़ मब्ऊष किया था

٤٤٧٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ح.
وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ : حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَجْتَمِعُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيَقُولُونَ: لَوِ اسْتَشْفَعْنَا إِلَى رَبِّنَا فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ أَبُو النَّاسِ خَلَقَكَ اللهُ بِيَدِهِ وَأَسْجَدَ لَكَ مَلاَئِكَتَهُ، وَعَلَّمَكَ أَسْمَاءَ كُلِّ شَيْءٍ فَاشْفَعْ لَنَا عِنْدَ رَبِّكَ حَتَّى يُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا هَذَا فَيَقُولُ لَسْتُ هُنَاكُمْ، وَيَذْكُرُ ذَنْبَهُ فَيَسْتَحِي، ائْتُوا نُوحًا فَإِنَّهُ أَوَّلُ رَسُولٍ بَعَثَهُ اللهُ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ، فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ

لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ سُؤَالَهُ رَبَّهُ مَا لَيْسَ لَهُ بِهِ عِلْمٌ، فَيَسْتَحْيِي فَيَقُولُ : ائْتُوا خَلِيلَ الرَّحْمَنِ، فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ ائْتُوا مُوسَى عَبْدًا كَلَّمَهُ اللهُ وَأَعْطَاهُ التَّوْرَاةَ، فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ، وَيَذْكُرُ قَتْلَ النَّفْسِ بِغَيْرِ نَفْسٍ فَيَسْتَحْيِي مِنْ رَبِّهِ فَيَقُولُ: ائْتُوا عِيسَى عَبْدَ اللهِ وَرَسُولَهُ، وَكَلِمَةَ اللهِ وَرُوحَهُ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ، ائْتُوا مُحَمَّدًا عَبْدًا غَفَرَ اللهُ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ، فَيَأْتُونِي فَأَنْطَلِقُ حَتَّى أَسْتَأْذِنَ عَلَى رَبِّي فَيُؤْذَنُ فَإِذَا رَأَيْتُ رَبِّي وَقَعْتُ سَاجِدًا، فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ ثُمَّ يُقَالُ : ارْفَعْ رَأْسَكَ وَسَلْ تُعْطَهْ، وَقُلْ : يُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأَحْمَدُهُ بِتَحْمِيدٍ يُعَلِّمُنِيهِ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا، فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَعُودُ إِلَيْهِ، فَإِذَا رَأَيْتُ رَبِّي مِثْلَهُ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ، ثُمَّ أَعُودُ الرَّابِعَةَ، فَأَقُولُ : مَا بَقِيَ فِي النَّارِ إِلاَّ مَنْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ وَوَجَبَ عَلَيْهِ الْخُلُودُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ إِلاَّ مَنْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ يَعْنِي قَوْلَ اللهِ تَعَالَى : ﴿خَالِدِينَ فِيهَا﴾.

[راجع: ٤٤]

सब लोग नूह़ (अ़लैहि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे। वो भी कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं और वो अपने रब से अपने सवाल को याद करेंगे जिसके बारे में उन्हें कोई इल्म नहीं था। उनको भी शर्म आएगी और कहेंगे कि अल्लाह के ख़लील के पास जाओ। लोग उनकी ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे लेकिन वो भी यही कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं, मूसा (अ़लैहि.) के पास जाओ, उनसे अल्लाह तआ़ला ने कलाम फ़र्माया था और तौरात दी थी। लोग उनके पास आएँगे लेकिन वो भी उ़ज़्र कर देंगे कि मुझ में इसकी जुर्अत (हिम्मत) नहीं। उनको बग़ैर किसी ह़क़ के एक शख़्स को क़त्ल करना याद आ जाएगा और अपने रब के हु़ज़ूर में जाते हुए शर्म दामनगीर होगी। कहेंगे तुम ईसा (अ़लैहि.) के पास जाओ, वो अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल, उसका कलिमा और उसकी रूह़ हैं लेकिन ईसा (अ़लैहि.) भी यही कहेंगे कि मुझ में इसकी हिम्मत नहीं, तुम ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) के पास जाओ, वो अल्लाह के मक़्बूल बन्दे हैं और अल्लाह ने उनके तमाम अगले और पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये हैं। चुनाँचे लोग मेरे पास आएँगे, मैं उनके साथ जाऊँगा और अपने रब से इजाज़त चाहूँगा। मुझे इजाज़त मिल जाएगी, फिर मैं अपने रब को देखते ही सज्दे में गिर पड़ूँगा और जब तक अल्लाह चाहेगा मैं सज्दे में रहूँगा, फिर मुझसे कहा जाएगा कि अपना सर उठाओ और जो चाहो मांगो, तुम्हें दिया जाएगा, जो चाहो कहो तुम्हारी बात सुनी जाएगी। शफ़ाअ़त करो, तुम्हारी शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी। मैं अपना सर उठाऊँगा और अल्लाह की वो ह़म्द बयान करूँगा जो मुझे उसकी त़रफ़ से सिखाई गई होगी। मैं उन्हें जन्नत में दाख़िल कराऊँगा और फिर जब वापस आऊँगा तो अपने रब को पहले की त़रह़ देखूँगा और शफ़ाअ़त करूँगा, इस मर्तबा फिर मेरे लिये ह़द मुक़र्रर कर दी जाएगी। जिन्हें मैं जन्नत में दाख़िल कराऊँगा। चौथी बार जब मैं वापस आऊँगा तो अ़र्ज़ करूँगा कि जहन्नम में उन लोगों के सिवा और कोई अब बाक़ी नहीं रहा जिन्हें क़ुर्आन ने हमेशा के लिये जहन्नम में रहना ज़रूरी क़रार दे दिया है। अबू अ़ब्दुल्लाह

इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि क़ुर्आन की रू से दोज़ख़ में क़ैद रहने से मुराद वो लोग हैं जिनके लिये ख़ालिदीना फ़ीहा कहा गया है। कि वो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (राजेअ : 44)

तश्रीह : बाब की ह़दीष़ में मोमिनीन का आदम (अलैहिस्सलाम) से ये कहना मज़्कूर है, **व अल्लमक अस्माअ कुल्लि शैइन** इसी मुनासबत से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी(रह) ने इस ह़दीष़ को यहाँ ज़िक्र फ़र्माया। आदम (अलैहिस्सलाम) को सब चीज़ों के नाम सिखाए और उनकी औलाद के अंदर ऐसी क़ुव्वत पैदा कर दी कि वो दुनिया में हर ज़ुबान को सीख सकें और सारे नामों को जान सकें।

बाब 2 : आयत 'वइज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम' की तफ़्सीर

٢- باب

या'नी जब वो मुनाफ़िक़ अपने मुश्रिक मुनाफ़िक़ दोस्तों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे ही साथ हैं। महज़ मज़ाक़ के तौर पर हम मुसलमान हो गये हैं।

قَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿إِلَى شَيَاطِينِهِمْ﴾ أَصْحَابِهِمْ مِنَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُشْرِكِينَ ﴿مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ﴾ اللهُ جَامِعُهُمْ صِبْغَةٌ دِينٌ ﴿عَلَى الْخَاشِعِينَ﴾ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَقًّا، قَالَ مُجَاهِدٌ ﴿بِقُوَّةٍ﴾ يَعْمَلُ بِمَا فِيهِ، وَقَالَ أَبُو الْعَالِيَةِ : ﴿مَرَضٌ﴾ شَكٌّ ﴿وَمَا خَلْفَهَا﴾ عِبْرَةٌ لِمَنْ بَقِيَ ﴿لاَشِيَةَ﴾ لاَ بَيَاضَ وَقَالَ غَيْرُهُ : ﴿يَسُومُونَكُمْ﴾ يُولُونَكُمْ ﴿الْوَلاَيَةُ﴾ مَفْتُوحَةٌ مَصْدَرُ الْوَلاَءِ وَهِيَ الرُّبُوبِيَّةُ، وَإِذَا كُسِرَتِ الْوَاوُ فَهِيَ الإِمَارَةُ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ : الْحُبُوبُ الَّتِي تُؤْكَلُ كُلُّهَا ﴿فُومٌ﴾ ﴿فَادَّارَأْتُمْ﴾ اختلفتم وَقَالَ قَتَادَةُ: ﴿فَبَاؤُوا﴾ فَانْقَلَبُوا، وَقَالَ غَيْرُهُ : ﴿يَسْتَفْتِحُونَ﴾ يَسْتَنْصِرُونَ ﴿شَرَوْا﴾ بَاعُوا ﴿رَاعِنَا﴾ مِنَ الرُّعُونَةِ إِذَا أَرَادُوا أَنْ يُحَمِّقُوا إِنْسَانًا، قَالُوا : رَاعِنًا ﴿لاَ تَجْزِي﴾ لاَ تُغْنِي ابتلى اختبره ﴿خُطُوَاتِ﴾ مِنَ الْخَطْوِ، وَالْمَعْنَى آثَارَهُ.

मुजाहिद ने कहा शयातीन से उनके दोस्त मुनाफ़िक़ और मुश्रिक मुराद हैं मुह़ीतुम बिल क़ाफ़िरीन के मा'नी अल्लाह काफ़िरों को इकट्ठा करने वाला है अलल् ख़ाशिईन में ख़ाशिईन से मुराद पक्के ईमानदार हैं। बिक़ुव्वत या'नी इस पर अमल करके क़ुव्वत से यही मुराद है। अबुल आलिया ने कहा मर्ज़ से शक मुराद है स़िबग़त से दीन मुराद है वमा ख़ल्फ़हा या'नी पिछले लोगों के लिये इबरत जो बाक़ी रही ला शियता फ़ीहा का या'नी उसमें सफ़ेदी नहीं और अबुल आलिया के सिवा ने कहा यसूमूनकुम का मा'नी तुम पर उठाते थे या तुमको हमेशा तकलीफ़ पहुँचाते थे। और (सूरह कहफ़ में जो) अल् विलायत बफ़त्हे वाव है जिसके मा'नी रुबूबियत या'नी ख़ुदाई के हैं और विलायत बकसर वाव उसके मा'नी सरदारी के हैं । कुछ लोगों ने कहा जिन जिन अनाजों को लोग खाते हैं उनको फ़ूम कहते हैं। ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने इसको ष़ौम पढ़ा है या'नी लह्सुन के मा'नी में लिया है। फ़द्दारातुम का मा'नी तुमने आपस में झगड़ा किया। क़तादा ने कहा फ़बाऊ या'नी लौट गये और क़तादा के सिवा दूसरे शख़्स (अबू उबैदह्) ने कहा यस्तफ़्तिहूना का मा'नी मदद मांगते थे शरव के मा'नी बेचा लफ़्ज़ राइना रऊनत से निकला है। अरब लोग जब किसी को अहमक़ बनाते तो उसको लफ़्ज़ राइना से पुकारते ला तजज़ी कुछ काम न आएगी इब्तला के मा'नी आज़माया जांचा ख़ुतुवात लफ़्ज़ ख़त्वुन बमा'नी क़दम की जमा है।

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने सूरह बक़रः की तफ़्सीर के सिलसिले में ये चन्द लफ़्ज़ ज़िक्र फ़र्माकर उनके मतलब की वज़ाहत फ़र्माई है। तमाम अल्फ़ाज़े आयात सूरह बक़रः में अपने अपने मक़ामात पर मुलाहिज़ा किये जा सकते। लफ़्ज़ राइन अह्मक़ को कहते हैं और जुम्हूर ने लफ़्ज़ राइना बग़ैर तन्वीन के पढ़ा है। ये मुराआतु से अम्र का सैग़ा है। अबू नुऐम ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से निकाला कि लफ़्ज़े राइना यहूद की ज़ुबान में एक गाली है। हज़रत सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) मशहूर अंसारी सहाबी ने कई यहूदियों को आँहज़रत (ﷺ) की निस्बत ये लफ़्ज़ कहते सुना तो कहने लगे कि अगर तुममें से फिर कोई ये लफ़्ज़ रसूले करीम (ﷺ) की शाने अक़्दस में ज़ुबान से निकालेगा तो मैं उसकी गर्दन मार दूँगा।

बाब 3 : अल्लाह तआला के इर्शाद 'फ़ला तज़्अलुल्लाह अन्दादंव्व अन्तुम तअलमून' की तफ़्सीर

٣- باب وَقَوْلُهُ تَعَالَى : ﴿فَلاَ تَجْعَلُوا للهِ أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

या'नी ऐ लोगों! तुम अल्लाह के साथ शरीक न ठहराओ हालाँकि तुम जानते हो कि अल्लाह का मख़्लूक़ को शरीक ठहराना बहुत ही बड़ा गुनाह है।

4477. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अम्र बिन शुरहबील ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा, अल्लाह के नज़दीक कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है? फ़र्माया और ये कि तुम अल्लाह के साथ किसी को बराबर ठहराओ हालाँकि अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया है। मैंने अ़र्ज़ किया ये तो वाक़ई सबसे बड़ा गुनाह है, फिर उसके बाद कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है? फ़र्माया ये कि तुम अपनी औलाद को इस डर से मार डालो कि वो तुम्हारे साथ खाएँगे। मैंने पूछा और उसके बाद? फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की औरत से ज़िना करो।

(दीगर मक़ाम : 4761, 6011, 6811, 6861, 7520, 7532)

٤٤٧٧- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ عِنْدَ اللهِ؟ قَالَ: ((أَنْ تَجْعَلَ للهِ نِدًّا، وَهُوَ خَلَقَكَ)) قُلْتُ إِنَّ ذَلِكَ لَعَظِيمٌ قُلْتُ : ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ : ((وَأَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ تَخَافُ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ)) قُلْتُ : ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ : ((أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ)).

[أطرافه في :٤٧٦١، ٦٠١١، ٦٨١١، ٦٨٦١، ٧٥٢٠، ٧٥٣٢].

तश्रीह : निद कहते हैं नज़ीर या'नी जोड़ और बराबर वाले को अंदाद इसकी जमा है। निद से सिर्फ़ यही मुराद नहीं है कि अल्लाह के सिवा और दूसरा कोई और अल्लाह समझे क्योंकि अरब के अकष़र मुश्रिक और दूसरे मुल्कों के मुश्रिकीन भी अल्लाह को एक ही समझते थे जैसा कि फ़र्माया, **व लइन सअल्तहुम मन ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ लयक़ुलुन्नल्लाहु** (लुक़्मान : 25) या'नी अगर तुम उन मुश्रिकों से पूछो कि ज़मीन व आसमान का पैदा करने वाला कौन है? तो फ़ौरन कह देंगे कि सिर्फ़ अल्लाह पाक ही ख़ालिक़ है। इस कहने के बावजूद भी अल्लाह ने उनको मुश्रिक ही क़रार दिया। बात ये है कि अल्लाह की जो सिफ़ात ख़ास हैं जैसे मुहीत, समीअ, अलीम, क़ुदरते कामिला, तसर्रुफ़े कामिल उन सिफ़ात को कोई शख़्स किसी दूसरे के लिये षाबित करे, उसने भी अल्लाह का दिन या'नी बराबर वाला इस दूसरे को ठहराया या मष़लन कोई ये समझे कि फ़लाँ पीर या पैग़म्बर दूर या नज़दीक हर चीज को देख लेते हैं या हर बात उनको मा'लूम हो जाती है या वो जो चाहें सो कर सकते हैं तो वो मुश्रिक हो गया। इसी तरह जो कोई अल्लाह के सिवा और किसी की पूजा पाठ करे, उसके नाम का रोज़ा रखे, उसकी मन्नत माने, उसके नाम पर जानवर काटे, उसकी क़ब्र पर नज़्र व न्याज़ चढ़ाए, उसका नाम उठते बैठते

याद करे, उसके नाम का वज़ीफ़ा पढ़े वो भी मुश्रिक हो जाता है। तौहीद ये है कि अल्लाह के सिवा न किसी और को पुकारे न उसकी पूजा करे बल्कि सबको सिर्फ़ उसी एक अल्लाह का मुहताज समझे और ये ए'तिक़ाद रखे कि नफ़ा व नुक़्सान सिर्फ़ एक अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के हाथ में है। औलाद का देना, बारिश बरसाना, रोज़ी में फ़राख़ी अ़ता करना, मारना, जिलाना सब कुछ सिर्फ़ अल्लाह ही को इख़्तियार में है। अगर कोई ये चीज़ें अल्लाह के सिवा और किसी पीर, पैग़म्बर से मांगे तो वो भी बुतपरस्तों ही की तरह मुश्रिक हो जाता है। अल्ग़र्ज़ तौहीद की दो क़िस्में याद रखने के क़ाबिल हैं। एक तौहीदे रुबूबियत है या'नी रब, ख़ालिक़, मालिक के तौर पर अल्लाह को एक जानना जैसा कि मुश्रिकीने मक्का का क़ौल नक़ल हुआ है। ये तौहीद नजात के लिये काफ़ी नहीं है। दूसरी क़िस्म तौहीदे उलूहियत है या'नी बतौरे इलाह, मा'बूद, मस्जूद सिर्फ़ एक अल्लाह रब्बुल आलमीन को मानना। इबादत बन्दगी की जिस क़दर क़िस्में हैं उन सबको सिर्फ़ एक अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिये बजा लाना इसी को तौहीदे उलूहियत कहते हैं। यही कलिमा तय्यिबा **ला इलाहा इल्लल्लाह** का मतलब है और तमाम अंबिया-ए-कराम की अव्वलीन दा'वत यही तौहीदे उलूहियत रही है, व बिल्लाहित् तौफ़ीक़।

बाब 4 : आयत 'व ज़ल्लल्ना अलैकुमुल ग़माम' अल आयति की तफ़्सीर

या'नी और तुम पर हमने बादल का साया किया, और तुम पर हमने मन्ना व सल्वा उतारा और कहा कि खाओ इन पाकीज़ा चीज़ों को जो हमने तुम्हें अ़ता की हैं, हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया था बल्कि उन्होंने ख़ुद ही अपने नफ़्सों पर ज़ुल्म किया। आयते मज़्कूरा की तफ़्सीर में मुजाहिद ने कहा कि मन्न एक पेड़ का गूंद था और सल्वा परिन्दे थे।

٤- باب وَقَوْلِهِ تَعَالَى:
﴿وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَى، كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ﴾ وَقَالَ مُجَاهِدٌ : الْمَنُّ صَمْغَةٌ، وَالسَّلْوَى الطَّيْرُ.

इसको फ़रयाबी ने वस्ल किया है। अल्लाह ने बनी इस्राईल को जंगल में ये दोनों चीज़ें खाने को दीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा मन्न पेड़ों पर जम जाता वो जितना चाहते उसमे से खाते। सदी ने कहा वो तरंजबीन की तरह का था। वल्लाहु आलम।

4478. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने, उनसे अ़म्र बिन हुरैष ने और उनसे सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कमअतु (या'नी खुंबी) भी मन्न की क़िस्म है और इसका पानी आँख की दवा है।

(दीगर मक़ाम : 4639, 5708)

٤٤٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ، وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ)).[طرفاه في :٤٦٣٩، ٥٧٠٨].

खुम्बी (मशरूम) अपने-आप उगने वाली एक मशहूर बूटी है जो खाई भी जाती है, आँख की बीमारी में इसका पानी बेहतरीन दवा है। हदीष़ में मन्न का ज़िक्र है यही हदीष़ और बाब में मुताबक़त है।

बाब 05 : आयत 'व इज़्कुल्नदख़ुलू हाज़िहिल क़रयता' आयत तक की तफ़्सीर

या'नी और जब मैंने कहा कि इस बस्ती में दाख़िल हो जाओ और पूरी कुशादगी के साथ जहाँ चाहो अपना रिज़्क़ खाओ और दरवाज़े

٥- باب قوله
﴿وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا: حِطَّةٌ نَغْفِرْلَكُمْ خَطَايَاكُمْ وَسَنَزِيدُ

से झुकते हुए दाख़िल होना, यूँ कहते हुए कि ऐ अल्लाह! हमारे गुनाह मुआफ़ कर दे तो हम तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देंगे और ख़ुलूस के साथ अमल करने वालों के षवाब में मैं ज़्यादती करूंगा। लफ़्ज़े रग़दा के मा'नी वासिआ कषीर के हैं या'नी बहुत फ़राख़।

الْمُحْسِنِينَ﴾
رَغَدًا : وَاسِعٌ كَثِيرٌ.

4479. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा कि हमसे अब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उनसे मअमर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल को ये हुक्म हुआ था कि शहर के दरवाज़े में झुकते हुए दाख़िल हों और हित्ततुन कहते हुए (या'नी ऐ अल्लाह! हमारे गुनाह मुआफ़ कर दे) लेकिन वो उलटे कूल्हों के बल घिसटते हुए दाख़िल हुए और कलिमा (हित्ततुन) को भी बदल दिया और कहा कि हब्बतुन फ़ी शअरतिन या'नी दिल लगी क तौर पर कहने लगे कि दाना बाल के अंदर होना चाहिये। (राजेअ : 3403)

٤٤٧٩ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قِيلَ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا، وَقُولُوا حِطَّةٌ﴾ فَدَخَلُوا يَزْحَفُونَ عَلَى أَسْتَاهِهِمْ، فَبَدَّلُوا وَقَالُوا: حِطَّةٌ حَبَّةٌ فِي شَعَرَةٍ)). [راجع: ٣٤٠٣]

तश्रीह : ख़ुलासा ये कि बनी इस्राईल ने अल्लाह के हुक्म को बदल दिया और उल्टा हुक्मे इलाही का मज़ाक़ उड़ाने लगे नतीजा ये हुआ कि अज़ाब में गिरफ़्तार हुए। ऐसे गुस्ताख़ों की यही सज़ा है।

बाब 06 : अल्लाह तआला के इर्शाद 'मन काना अदुव्वल लि जिब्रइल' की तफ़्सीर में

٦- باب قَوْلِهِ : ﴿مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ﴾

तश्रीह : मरदूद यहूदी हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) को अपना दुश्मन समझते क्योंकि उन्होंने कई बार अज़ाब उतारा। कुछ ने कहा इस वजह से कि उन्होंने नुबुव्वत बनी इस्राईल में से निकालकर अरब लोगों को दे दी। कुछ ने कहा कि ये यहूदियों के राज़ पैग़म्बरों को बतला देते। ग़र्ज़ यहूदी अजब बेवक़ूफ़ लोग थे। भला हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) की क्या मजाल कि वो जो चाहें अज़्ख़ुद कर दिखलाएँ। वो तो अल्लाह के फ़र्मांबरदार फ़रिश्ते हैं। वो अल्लाह के हुक्म के ताबेअ हैं। उनसे दुश्मनी रखना ख़ुद अल्लाह तआला ही से दुश्मनी रखने के मा'नी में है।

इक्रिमा ने कहा जिब्र व मीक सराफि तीनों के मा'नी बन्दा के हैं और लफ़्ज़े ईल इबरानी ज़ुबान में अल्लाह के मा'नी में है।

وَقَالَ عِكْرِمَةُ: جَبْرَ وَمِيكَ وَسَرَافِ عَبْدُ ايلَ اللهُ.

4480. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन बक्र से सुना, उसने कहा कि मुझसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की (मदीना) तशरीफ़ लाने की ख़बर सुनी तो वो अपने बाग़ में फल तोड़ रहे थे। वो उसी वक़्त नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैं आपसे ऐसी तीन चीज़ों के बारे में पूछता

٤٤٨٠ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ بَكْرٍ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: سَمِعَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ بِقُدُومِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي أَرْضٍ يَخْتَرِفُ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ

هُूँ, जिन्होंने नबी के सिवा और कोई नहीं जानता। बतलाइये! क़यामत की निशानियों में सबसे पहली निशानी क्या है? अहले जन्नत की दा'वत के लिये सबसे पहले क्या चीज़ पेश की जाएगी? बच्चा कब अपने बाप की सूरत में होगा और कब अपनी माँ की सूरत पर? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे अभी जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आकर उनके बारे में बताया है। अब्दुल्लाह बिन सलाम बोले, जिब्रईल! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि वो तो यहूदियों के दुश्मन हैं। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने ये आयत तिलावत की 'मन कान अदुव्वल लिजिब्रईल फ़इन्नहू नज़्ज़लहु अला क़ल्बिक' और उनके सवालात के जवाब में फ़र्माया, क़यामत की सबसे पहली निशानी एक आग होगी जो इंसानों को मश्रिक़ से मग़्रिब की तरफ़ जमा कर लाएगी। अहले जन्नत की दा'वत में जो खाना सबसे पहले पेश किया जाएगा वो मछली के जिगर का बढ़ा हुआ हिस्सा होगा और जब मर्द का पानी औरत के पानी पर ग़लबा कर जाता है तो बच्चा बाप की शक्ल पर होता है और जब औरत का पानी मर्द के पानी पर ग़लबा कर जाता है तो बच्चा माँ की शक्ल पर होता है। अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बोल उठे, मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। (फिर अर्ज़ किया) या रसूलल्लाह (ﷺ)! यहूदी बड़ी बोह्तान लगाने वाली क़ौम है, अगर इससे पहले कि आप मेरे बारे मे उनसे कुछ पूछें, उन्हें मेरे इस्लाम का पता चल गया तो मुझ पर बोह्तान तराशियाँ शुरू कर देंगे। बाद में जब यहूदी आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे दरयाफ़्त फ़र्माया, अब्दुल्लाह तुम्हारे यहाँ कैसे आदमी समझे जाते हैं? वो कहने लगे, हममें सबसे बेहतर और हममें सबसे बेहतर के बेटे! हमारे सरदार और हमारे सरदार के बेटे हैं। आपने फ़र्माया, अगर वो इस्लाम ले आएँ फिर तुम्हारा क्या ख़याल होगा? कहने लगे, अल्लाह तआला इससे उन्हें पनाह में रखे। इतने मे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने ज़ाहिर होकर कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। अब वही यहूदी उनके बारे में कहने लगे कि ये हममें सबसे बदतर हैं और सबसे बदतर शख़्स का बेटा है और उनकी तौहीन शुरू कर

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنِّي سَائِلُكَ عَنْ ثَلاَثٍ لاَ يَعْلَمُهُنَّ إِلاَّ نَبِيٌّ فَمَا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ وَمَا أَوَّلُ طَعَامِ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَا يَنْزِعُ الْوَلَدَ إِلَى أَبِيهِ أَوْ إِلَى أُمِّهِ؟ قَالَ: ((أَخْبَرَنِي بِهِنَّ جِبْرِيلُ آنِفًا)) قَالَ: جِبْرِيلُ؟ قَالَ : ((نَعَمْ)). قَالَ : ذَاكَ عَدُوُّ الْيَهُودِ مِنَ الْمَلاَئِكَةِ، فَقَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ ﴿مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ﴾ أَمَّا أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ فَنَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ، وَأَمَّا أَوَّلُ طَعَامِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَزِيَادَةُ كَبِدِ حُوتٍ، وَإِذَا سَبَقَ مَاءُ الرَّجُلِ مَاءَ الْمَرْأَةِ نَزَعَ الْوَلَدَ وَإِذَا سَبَقَ مَاءُ الْمَرْأَةِ نَزَعَتْ)). قَالَ : أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللهِ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ الْيَهُودَ قَوْمٌ بُهُتٌ .وَإِنَّهُمْ إِنْ يَعْلَمُوا بِإِسْلاَمِي قَبْلَ أَنْ تَسْأَلَهُمْ يَبْهَتُونِي، فَجَاءَتِ الْيَهُودُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَيُّ رَجُلٍ عَبْدُ اللهِ فِيكُمْ)) قَالُوا : خَيْرُنَا وَابْنُ خَيْرِنَا، وَسَيِّدُنَا وَابْنُ سَيِّدِنَا، قَالَ: ((أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَسْلَمَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ)) فَقَالُوا : أَعَاذَهُ اللهُ مِنْ ذَلِكَ فَخَرَجَ عَبْدُ اللهِ فَقَالَ : أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ فَقَالُوا: شَرُّنَا وَابْنُ شَرِّنَا، وَانْتَقَصُوهُ قَالَ : فَهَذَا الَّذِي كُنْتُ أَخَافُ يَا رَسُولَ اللهِ.

[راجع: ٣٣٢٩]

दी। अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यही वो चीज़ थी जिससे मैं डरता था। (राजेअ : 3329)

वाक़िया में ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र आया है। यही ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त है। यहूदियों की ह़िमाक़त थी कि वो जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) फ़रिश्ते को अपना दुश्मन कहते थे। ह़ालाँकि फ़रिश्ते अल्लाह के हुक्म के ताबेअ़ हैं जो कुछ हुक्मे इलाही होता है वो बजा लाते हैं।

बाब 7 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद 'मा नन्सख़ मिन आयतिन औ नन्साहा नाति' आयत तक की तफ़्सीर

٧- باب قَوْلِهِ : ﴿مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نَنْسَأْهَا﴾

या'नी मैं जब भी किसी आयत को मन्सूख़ कर देता हूँ या उसे भुला देता हूँ तो उससे बेहतर आयत लाता हूँ।

4481. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ह़बीब ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, हममें सबसे बेहतर क़ारी-ए-क़ुर्आन उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) हैं और हम में सबसे ज़्यादा अ़ली (रज़ि.) में क़ज़ा या'नी फ़ैसले करने की स़लाह़ियत है। इसके बावजूद हम उबय (रज़ि.) की इस बात को तस्लीम नहीं कर सकते जो उबय (रज़ि.) कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से जिन आयात की भी तिलावत सुनी है, मैं उन्हें नहीं छोड़ सकता। ह़ालाँकि अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़र्माया है कि 'मानन्सख़ मिन आयतिन औ नन्साहा' अल्ख़ हमने जो आयत भी मन्सूख़ की या उसे भुलाया तो फिर इससे अच्छी आयत लाए। (दीगर मक़ाम : 5005)

٤٤٨١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَقْرَؤُنَا أُبَيٌّ، وَأَقْضَانَا عَلِيٌّ، وَإِنَّا لَنَدَعُ مِنْ قَوْلِ أُبَيٍّ وَذَاكَ أَنَّ أُبَيًّا يَقُولُ : لاَ أَدَعُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنْسِأْهَا﴾ نأت بخير منها.

[طرفه في : ٥٠٠٥].

तश्रीह : ह़ज़रत उमर (रज़ि.) के क़ौल का मत़लब ये है कि गो उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) हम सबसे ज़्यादा क़ुर्आन मजीद के क़ारी हैं मगर कुछ आयतें वो ऐसी भी पढ़ते हैं जिनकी तिलावत मन्सूख़ हो गई है क्योंकि उनको नस्ख़ की ख़बर नहीं पहुँची। ह़ज़रत उमर (रज़ि.) के इस क़ौल से स़ाफ़ ष़ाबित होता है कि कोई कैसा ही बड़ा आ़लिम हो मगर उसकी सब बातें मानने के क़ाबिल नहीं होतीं। ख़त़ा और लग़्ज़िश हर एक आ़लिम से मुम्किन है। बड़ा हो या छोटा, मा'सूम अ़निल ख़त़ा सिर्फ़ अल्लाह के नबी और रसूल होते हैं जो बराहेरास्त अल्लाह से हमकलामी का शर्फ़ पाते हैं, बाक़ी कोई नहीं है। मुक़ल्लिदीने अइम्म-ए-अरबआ़ को इससे सबक़ लेना चाहिये। जिनकी तक़्लीद पर जमूद (जड़ता) ने मज़ाहिबे अरबआ़ को एक मुस्तक़िल चार दीनों की ह़ैषियत दे रखी है। हर ह़नफ़ी, शाफ़िई को बनज़रे ह़िक़ारत देखता है और हर शाफ़िई, ह़नफ़ी को देखकर चिराग़ पा हो जाता है, इल्ला माशाअल्लाह। ये किस क़दर अफ़सोसनाक बात है। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा और ह़ज़रत इमाम शाफ़िई (रह) हर्गिज़ ऐसा तस़व्वुर नहीं रखते थे कि उनके नामों पर फ़िक़्ही मसलक को एक मुस्तक़िल दीन की ह़ैषियत देकर उम्मत टुकड़े टुकड़े हो जाए। कहने वाले ने सच कहा है,

दीने ह़क़ रा चार मज़हब साख़्तन्द रख़ना दर दीने नबी अंदाख़्तन्द

हर इमाम बुज़ुर्ग का यही आख़िरी क़ौल है कि असल दीन क़ुर्आन व ह़दीष़ हैं जो उनकी बात क़ुर्आन व ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ हो, सर आँखों से क़ुबूल की जाएँ, जो बात उनकी क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ हो उसे छोड़ दिया जाए और यही अ़क़ीदा रखा जाए कि ग़लती का इम्कान हर किसी से है सिर्फ़ अंबिया व रसूल ही मा'सूम अ़निल ख़ता होते हैं।

बाब 8 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद 'व क़ालुत्तख़ज़ल्लाहु वलदन सुब्हानः' की तफ़्सीर में

٨- باب قوله ﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ﴾

और उन ईसाइयों ने कहा कि अल्लाह ने कहा, (ह़ज़रत ईसा को अपना) बेटा बनाया है। ये ईसाइयों का कहना बहुत ही ग़लत़ है और अल्लाह पाक इससे बिलकुल पाक है कि वो किसी को अपना बेटा बनाए।

4482. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उबई हुसैन ने, उनसे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़र्माता है, इब्ने आदम ने मुझे झुठलाया हालाँकि उसके लिये ये मुनासिब न था। उसने मुझे गाली दी, हालाँकि उसके लिये ये मुनासिब न था। उसका मुझे झुठलाना तो ये है कि वो कहता है कि मैं उसे दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं हूँ और उसका मुझे गाली देना ये है कि मेरे लिये औलाद बताता है, मेरी ज़ात इससे पाक है कि मैं अपने लिये बीवी या औलाद बनाऊँ।

٤٤٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، وَشَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، فَأَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ فَزَعَمَ أَنِّي لاَ أَقْدِرُ أَنْ أُعِيدَهُ كَمَا كَانَ، وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ لِي وَلَدٌ فَسُبْحَانِي أَنْ أَتَّخِذَ صَاحِبَةً أَوْ وَلَدًا)).

तश्रीह : नजरान के नसारा ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) को अल्लाह का बेटा और मक्का के मुश्रिक फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बतलाया करते थे। उनकी तर्दीद में अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई बहुत सी मुश्रिक क़ौमों में ऐसे ग़लत़ तस़व्वुरात मुख़्तलिफ़ शक्लों में आज भी मौजूद हैं। मगर ये सब तस़व्वुराते बात़िला हैं। अल्लाह की ज़ात के बारे में स़हीह़तरीन तस़व्वुर वही है जो इस्लाम ने पेश किया है और जिसका ज़िक्र सूरह इख़्लास़ में है।

बाब 9 : अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, 'वत्तख़ज़ू मिम्मक़ामि इब्राहीम मुस़ल्ला' की तफ़्सीर में

٩- باب قوله ﴿وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى﴾

मष़ाबा से यष़ूबून जिसके मा'नी लौटने के हैं।

مَثَابَةً يَثُوبُونَ : يَرْجِعُونَ.

या'नी ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के खड़े होने की जगह को तुम भी अपने लिये जाए नमाज़ बना लो और इस सूरह में मष़ाबा का जो लफ़्ज़ है इसके मा'नी मरज़िआ़ या'नी लौटने की जगह के हैं। इसी से लफ़्ज़े यष़ूबून है जिसके मा'नी भी लौटने के हैं।

4483. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने, उनसे हुमैद त़वील ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.)

٤٤٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ

عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَافَقْتُ اللهَ فِي ثَلاَثٍ أَوْ وَافَقَنِي رَبِّي فِي ثَلاَثٍ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ لَوِ اتَّخَذْتَ مَقَامَ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى؟ وَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ يَدْخُلُ عَلَيْكَ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ فَلَوْ أَمَرْتَ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِالْحِجَابِ؟ فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ الْحِجَابِ، قَالَ: وَبَلَغَنِي مُعَاتَبَةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْضَ نِسَائِهِ فَدَخَلْتُ عَلَيْهِنَّ قُلْتُ: إِنِ انْتَهَيْتُنَّ أَوْ لَيُبَدِّلَنَّ اللهُ رَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرًا مِنْكُنَّ، حَتَّى أَتَيْتُ إِحْدَى نِسَائِهِ قَالَتْ : يَا عُمَرُ أَمَا فِي رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا يَعِظُ نِسَاءَهُ حَتَّى تَعِظَهُنَّ أَنْتَ فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿عَسَى رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ﴾ الآيَةَ. وَقَالَ ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ أَيُّوبَ، حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ سَمِعْتُ أَنَسًا عَنْ عُمَرَ.

[راجع: ٤٠٢]

ने फ़र्माया, तीन मौक़ों पर अल्लाह तआला के नाज़िल होने वाले हुक्म से मेरी राय ने पहले ही मुवाफ़क़त की या मेरे रब ने तीन मौक़ों पर मेरी राय के मुवाफ़िक़ हुक्म नाज़िल किया। मैंने अ़र्ज़ किया था कि या रसूलल्लाह! क्या अच्छा होता कि आप मुक़ामे इब्राहीम को त़वाफ़ के बाद नमाज़ पढ़ने की जगह बनाते तो बाद में यही आयत नाज़िल हुई। और मैंने अ़र्ज़ किया था कि या रसूलल्लाह! आपके घर में अच्छे और बुरे हर त़रह़ के लोग आते हैं। क्या अच्छा होता कि आप उम्महातुल मोमिनीन को पर्दे का हुक्म दे देते। इस पर अल्लाह तआला ने आयते ह़िजाब (पर्दा की आयत) नाज़िल फ़र्माई और उन्होंने बयान किया और मुझे कुछ अज़्वाजे मुत़ह्हरात से नबी करीम (ﷺ) की ख़फ़्गी की ख़बर मिली। मैं उनके यहाँ गया और उनसे कहा कि तुम बाज़ आ जाओ, वरना अल्लाह तआला तुमसे बेहतर बीवियाँ हुज़ूर (ﷺ) के लिये बदल देगा। बाद में अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से एक के यहाँ गया तो वो मुझसे कहने लगीं कि उ़मर! रसूलुल्लाह (ﷺ) तो अपनी अज़्वाज को इतनी नस़ीह़तें नहीं करते जितनी तुम उन्हें करते रहते हो। आख़िर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। कोई तअ़ज्जुब न होना चाहिये अगर इस नबी का रब तुम्हें त़लाक़ दिला दे और दूसरी मुसलमान बीवियाँ तुमसे बेहतर बदल दे, आख़िर आयत तक और इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, उन्हें यह्या बिन अय्यूब ने ख़बर दी, उनसे हुमैद ने बयान किया, और उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने उ़मर (रज़ि.) से नक़ल किया। (राजेअ़: 402)

का'बा में स़िर्फ़ एक ही मुस़ल्ला मुक़ामे इब्राहीम था, मगर स़द अफ़सोस! कि उम्मत ने का'बा को तक़्सीम करके उसमें चार मुस़ल्ले क़ायम कर दिये और उम्मत को चार ह़िस्सों में तक़्सीम करके रख दिया। अल्लाह तआला हुकूमते सऊ़दिया अ़रबिया को हमेशा क़ायम रखे जिसने फिर इस्लाम और का'बा की वह़दत को क़ायम करने के लिये उम्मत को एक ही अस़ल मुक़ाम पर जमा करके फ़ालतू मुस़ल्लों को ख़त्म किया। **खल्लदहल्लाहु तआला आमीन।**

बाब 10 : आयत 'व इज़्यरफ़ऊ इब्राहीमुल क़वाइदा' की तफ़्सीर

١٠- باب قَوْلِهِ تَعَالَى :

﴿وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ وَالْقَوَاعِدُ: أَسَاسُهُ وَاحِدَتُهَا قَاعِدَةٌ. وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ

या'नी और जब इब्राहीम (अलैहि.) और इस्माईल (अलैहि.) बैतुल्लाह की बुनियादें उठा रहे थे (और ये दुआ़ करते जाते थे कि) ऐ हमारे रब! हमारी इस ख़िदमत को क़ुबूल फ़र्मा कि तू ख़ूब सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है। क़वाइदा का वाह़िद क़ायदा आता है और औ़रतों के बारे में जब लफ़्ज़े

क़वाइद बोलते हैं तो उसका वाहिद क़ाइद आता है।

وَاحِدُهَا قَاعِدٌ.

4484. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र ने , उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया देखती नहीं हो कि जब तुम्हारी क़ौम (क़ुरैश) ने का'बा की ता'मीर की तो इब्राहीम (अ़लैहि.) की बुनियादों से उसे कम कर दिया। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर आप इब्राहीम (अ़लैहि.) की बुनियादों के मुत़ाबिक़ फिर से का'बा की ता'मीर क्यूँ नहीं करवा देते। आपने फ़र्माया, अगर तुम्हारी क़ौम अभी नई नई कुफ़्र से निकली न होती (तो मैं ऐसा ही करता) अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा, जबकि आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने ये ह़दीष़ रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है तो मैं समझता हूँ कि हुज़ूर (ﷺ) ने उन दो रुक्नों का जो ह़त़ीम के क़रीब हैं (त़वाफ़ के वक़्त छूना इसीलिये छोड़ा था कि बैतुल्लाह की ता'मीर इब्राहीम (अ़लैहि.) की बुनियाद के मुत़ाबिक़ मुकम्मल नहीं थी। (राजेअ़ : 126)

٤٤٨٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عبدَ اللهِ بْنَ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، أَخْبَرَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((أَلَمْ تَرَيْ أَنَّ قَوْمَكِ بَنَوا الْكَعْبَةَ وَاقْتَصَرُوا عَنْ قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ؟)) فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ تَرُدُّهَا عَلَى قَوَاعِدَ إِبْرَاهِيمَ؟ قَالَ: ((لَوْ لاَ حِدْثَانُ قَوْمِكِ بِالْكُفْرِ)) فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ: لَئِنْ كَانَتْ عَائِشَةُ سَمِعَتْ هَذَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ مَا أُرَى رَسُولَ اللهِ ﷺ تَرَكَ اسْتِلاَمَ الرُّكْنَيْنِ اللَّذَيْنِ يَلِيَانِ الْحِجْرَ، إِلاَّ أَنَّ الْبَيْتَ لَمْ يُتَمَّمْ عَلَى قَوَاعِدِ إِبْرَاهِيمَ.

[راجع: ١٢٦]

ह़दीष़ और बाब में वजहे मुत़ाबक़त ये है कि उसमें इब्राहीमी बुनियादों का ज़िक्र वारिद हुआ है।

बाब 11 : अल्लाह तआ़ला के इर्शाद 'क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि वमा उन्ज़िला इलैना' की तफ़्सीर में

١١- باب قوله ﴿قُولُوا آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا﴾

या'नी और कहो तुम कि हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज़ पर जो हमारी त़रफ़ नाज़िल की गई है या'नी क़ुर्आन मजीद।

4485. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे उ़ष़्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्हें अ़ली बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उन्हें अबू सलमा ने कि उनस ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अहले किताब (यहूदी) तौरात को ख़ुद इबरानी ज़ुबान में पढ़ते हैं लेकिन मुसलमानों के लिये उसकी तफ़्सीर अ़रबी म करते हैं। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम अहले किताब की न तस्दीक़ करो और न तुम तक्ज़ीब करो बल्कि ये कहा करो। आमन्ना बिल्लाह वमा उन्ज़िल इलना, नाज़िल की

٤٤٨٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ : كَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَقْرَؤُونَ التَّوْرَاةَ بِالْعِبْرَانِيَّةِ وَيُفَسِّرُونَهَا بِالْعَرَبِيَّةِ لأَهْلِ الإِسْلاَمِ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُصَدِّقُوا أَهْلَ

الْكِتَابِ، وَلاَ تُكَذِّبُوهُمْ وَقُولُوا ﴿آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا﴾)) الآيَة [البقرة: ١٣٦].[طرفاه في :٧٢٦٢، ٧٥٤٢].

गई है या'नी हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल की गई है। (दीगर मक़ाम : 7262, 7542)

तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है। वमा उन्ज़िला से मुराद क़ुर्आन मजीद है जो पहली सारी किताबों की तस्दीक़ करता है। अहले किताब की जिन बातों का क़ुर्आन में रद्द मौजूद है वो ज़रूर क़ाबिले तक्ज़ीब हैं और जिनके बारे में ख़ामोशी है, उनके बारे मे ये उसूल है जो बयान हुआ। आजकल के अहले किताब बहुत ज़्यादा गुमराही में गिरफ़्तार हैं। लिहाज़ा वो इस ह़दीष़ के मिस्दाक़ बहुत हैं।

١٢- باب ﴿سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلاَّهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ: للهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ﴾.

बाब 12 : आयत 'सयक़ूलुस्सुफ़हाउ मिनन्नास' की तफ़्सीर

या'नी बहुत जल्द बेवक़ूफ़ लोग कहने लगेंगे कि मुसलमानों को उनके पहले क़िब्ला से किस चीज़ ने फेर दिया। आप कह दें कि अल्लाह ही के लिये सब मश्रिक़ व मग़्रिब है और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह की त़रफ़ हिदायत कर देता है।

तश्रीह़ : स़िराते मुस्तक़ीम अक़ीद-ए-तौह़ीद व आमाले स़ालिह़ा व अख़्लाक़े फ़ाज़िला पर मुश्तमिल वो रास्ता है जो अंबिया, स़िद्दीक़ीन, शुह्दा, स़ालिह़ीन का रास्ता है। यहाँ इशारा ख़ान-ए-का'बा की त़रफ़ है जिसको क़िब्ला तस्लीम करना भी ज़िम्नी तौर पर स़िराते मुस्तक़ीम है। तह़वीले क़िब्ला से इस्लामी दुनिया को जो रूहानी व मिल्ली यक्जहती हुई है वो अक़्वामे आ़लम में एक बेनज़ीर ह़क़ीक़त है। तफ़्स़ील के लिये तशरीह़ कुछ अह़ादीष़ के बाद आने वाली ह़दीष़ में मुलाह़िज़ा हो।

٤٤٨٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ سَمِعَ زُهَيْرًا عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى: إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ شَهْرًا - أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا - وَكَانَ يُعْجِبُهُ أَنْ تَكُونَ قِبْلَتُهُ قِبَلَ الْبَيْتِ، وَإِنَّهُ صَلَّى أَوْ صَلاَّهَا صَلاَةَ الْعَصْرِ، وَصَلَّى مَعَهُ قَوْمٌ فَخَرَجَ رَجُلٌ مِمَّنْ كَانَ صَلَّى مَعَهُ فَمَرَّ عَلَى أَهْلِ الْمَسْجِدِ، وَهُمْ رَاكِعُونَ قَالَ: أَشْهَدُ بِاللهِ لَقَدْ صَلَّيْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ قِبَلَ مَكَّةَ، فَدَارُوا كَمَا هُمْ قِبَلَ الْبَيْتِ وَكَانَ الَّذِي مَاتَ عَلَى الْقِبْلَةِ قَبْلَ أَنْ تُحَوَّلَ قِبَلَ الْبَيْتِ

4486. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा मैंने ज़ुहैर से सुना, उन्होंने अबू इस्ह़ाक़ से और उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ रुख़ करके सोलह या सत्रह महीने तक नमाज़ पढ़ी लेकिन आप चाहते थे कि आपका क़िब्ला बैतुल्लाह (का'बा) हो जाए (आख़िर एक दिन अल्लाह के हुक्म से) आपने अ़स्र की नमाज़ (बैतुल्लाह की त़रफ़ रुख़ करके) पढ़ी और आपके साथ बहुत से स़ह़ाबा (रज़ि.) ने भी पढ़ी। जिन स़ह़ाबा ने ये नमाज़ आपके साथ पढ़ी थी, उनमें से एक स़ह़ाबी मदीना की एक मस्जिद के क़रीब से गुज़रे। उस मस्जिद में लोग रुकूअ़ में थे, उन्होंने उस पर कहा कि मैं अल्लाह का नाम लेकर गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मक्का की त़रफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ी है, तमाम नमाज़ी इसी ह़ालत में बैतुल्लाह की त़रफ़ फिर गये। उसके बाद लोगों ने कहा कि जो लोग का'बा के

क़िब्ला होने से पहले इंतिक़ाल कर गये, उनके बारे में हम क्या कहें। (उनकी नमाज़ें क़ुबूल हुईं या नहीं? इस पर ये आयत नाज़िल हुई। अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारी इबादात को ज़ाये करे, बेशक अल्लाह अपने बन्दों पर बहुत बड़ा मेहरबान और बड़ा रहीम है। (राजेअ : 40)

رِجَالٌ قُتِلُوا لَمْ نَدْرِ مَا نَقُولُ فِيهِمْ؟ فَأَنْزَلَ اللهُ : ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللهَ بِالنَّاسِ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ﴾.

[راجع: ٤٠]

तश्रीह : ये ह़दीष़ किताबुस्सलात में गुज़र चुकी है या'नी अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि तुम्हारी नमाज़ो को जो बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ चेहरे करके पढ़ी गई हैं ज़ाये कर दे, उनका ष़वाब न दे। हुआ ये कि जब क़िब्ला बदला तो मुश्रिकीने मक्का कहने लगे कि अब मुह़म्मद (ﷺ) रफ़्ता-रफ़्ता हमारे त़रीक़े पर आ चले हैं। चन्द रोज़ में ये फिर अपना आबाई दीन इख़्तियार कर लेंगे। मुनाफ़िक़ कहने लगे कि अगर पहला क़िब्ला ह़क़ था तो ये दूसरा क़िब्ला बातिल है। अहले किताब कहने लगे अगर ये सच्चे पैग़म्बर होते तो अगले पैग़म्बरों की त़रह अपना क़िब्ला बैतुल मक़्दिस ही को बनाते। इसी क़िस्म की बेहूदा बातें बनाने लगे। उस वक़्त अल्लाह तआला ने आयात, **सयक़ुलुस्सुफहाद मिनन्नासि** (अल बक़र : 142) को नाज़िल फ़र्माया। आयत में लफ़्ज़ इबादत को ईमान कहा गया है जिससे आमाले स़ालिह़ा और ईमान में यक्सानियत ष़ाबित होती है।

बाब 13 : आयते करीमा 'व कज़ालिक जअल्नाकुम उम्मतंव्वस्तल' अल्ख़ की तफ़्सीर

١٣- باب ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾

या'नी और इसी त़रह़ मैंने तुमको उम्मते वस्त़ या'नी (उम्मते आ़दिल) बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाह रहो और रसूल तुम पर गवाह हों।

4487. हमसे यूसुफ़ बिन राशिद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर और अबू उसामा ने बयान किया। (ह़दीष़ के अल्फ़ाज़ जरीर की रिवायत के मुत़ाबिक़ हैं) उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और अबू उसामा ने बयान किया (या'नी आ'मश के वास्त़े से कि) हमसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन नूह़ (अ़लैहि.) को बुलाया जाएगा। वो अ़र्ज़ करेंगे, लब्बैक व सअ़दैक, या रब! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़र्माएगा, क्या तुमने मेरा पैग़ाम पहुँचा दिया था? नूह़ (अ़लैहि.) अ़र्ज़ करेंगे कि मैंने पहुँचा दिया था, फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा, क्या उन्होंने तुम्हें मेरा पैग़ाम पहुँचाया था? वो लोग कहेंगे हमारे यहाँ कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआला फ़र्माएगा (नूह़ अलै. से) कि आपके ह़क़ में कोई गवाही है। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) की उम्मत उनके ह़क़ में गवाही देगी कि उन्होंने पैग़ाम पहुँचा दिया था और रसूल (या'नी हुज़ूर ﷺ) अपनी उम्मत के ह़क़ में गवाही देंगे (कि इन्होंने सच्ची गवाही दी है) यही मुराद है अल्लाह के इर्शाद

٤٤٨٧- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ رَاشِدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ وَأَبُو أُسَامَةَ وَاللَّفْظُ لِجَرِيرٍ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ : حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يُدْعَى نُوحٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُولُ : لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ يَا رَبِّ، فَيَقُولُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. فَيُقَالُ لأُمَّتِهِ: هَلْ بَلَّغَكُمْ: فَيَقُولُونَ: مَا أَتَانَا مِنْ نَذِيرٍ، فَيَقُولُ: مَنْ يَشْهَدُ لَكَ؟ فَيَقُولُ : مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيَشْهَدُونَ أَنَّهُ قَدْ بَلَّغَ، وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا فَذَلِكَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا

شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾، وَالْوَسَطُ: الْعَدْلُ. [البقرة: ١٤٣].
[راجع: ٣٣٣٩]

से कि, और इसी त़रह़ मैंने तुमको उम्मते वस्त़ बनाया ताकि तुम लोगों के लिये गवाही दो और रसूल तुम्हारे लिये गवाही दें। (आयत में लफ़्ज़े वस्त़ के मा'नी आदिल मुंसिफ़ बेहतर के हैं। (राजेअ़: 3339)

तश्रीह़ : ये कलाम ह़दीष़ में दाख़िल है रावी का कलाम नहीं है। वस्त़ के मा'नी बेहतर के हैं। अ़रब लोग कहते हैं **फ़ुलानु वसतुन फ़ी क़ौमिही** या'नी फ़लाँ अपनी क़ौम में सबसे बेहतर आदमी है। अबू मुआ़विया की रिवायत में इतना ज़्यादा है कि परवरदिगार पूछेगा कि तुमको कैसे मा'लूम हुआ, वो अ़र्ज़ करेंगे हमारे रसूले करीम (ﷺ) ने हमको ख़बर दी थी कि अगले पैग़म्बरों ने अपनी अपनी उम्मतों को अल्लाह के हुक्म पहुँचा दिये और उनकी ख़बर सच्ची है। इस ह़दीष़ से ये क़ानून निकला कि अगर सुनी हुई बात का यक़ीन हो जाए तो उसकी गवाही देना दुरुस्त है।

١٤- باب ﴿وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلاَّ لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقِبَيْهِ، وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلاَّ عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللهُ وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللهَ بِالنَّاسِ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ﴾

बाब 14 : आयत 'वमा जअ़ल्ना क़िब्लतल्लती कुन्त अ़लैह' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी

और जिस क़िब्ले पर आप अब तक थे, उसे तो हमने इसीलिये रखा था कि हम जान लें रसूल की इत्तिबाअ़ करने वाले को, उल्टे पाँव वापस चले जाने वालों में से। ये हुक्म बहुत भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जिन्हें अल्लाह ने राह दिखा दी है और अल्लाह ऐसा नहीं कि ज़ाया हो जाने दे, तुम्हारे ईमान (या'नी पहली नमाज़ों) को और अल्लाह तो लोगों पर बड़ा ही मेहरबान है।

٤٤٨٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: بَيْنَا النَّاسُ يُصَلُّونَ الصُّبْحَ فِي مَسْجِدِ قُبَاءٍ إِذْ جَاءَ جَاءٍ فَقَالَ: أَنْزَلَ اللهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ قُرْآنًا أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ فَاسْتَقْبِلُوهَا فَتَوَجَّهُوا إِلَى الْكَعْبَةِ. [راجع: ٤٠٣]

4488. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि लोग मस्जिदे क़ुबा में सुबह़ की नमाज़ पढ़ ही रहे थे कि एक स़ाह़ब आए और उन्होंने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (ﷺ) पर क़ुर्आन नाज़िल किया है कि आप नमाज़ में का'बा की त़रफ़ चेहरा करें, लिहाज़ा आप लोग भी का'बा की त़रफ़ रुख़ कर लें। सब नमाज़ी उसी वक़्त का'बा की त़रफ़ फिर गये। (राजेअ़ : 403)

١٥- باب قوله ﴿قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا﴾

बाब 15 : आयत 'क़द नरा तक़ल्लुब वज्हिक फ़िस्समाइ' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी

बेशक मैंने देख लिया आपके मुँह का बार बार आसमान की त़रफ़ उठना। सो मैं आपको ज़रूर फेर दूंगा उस क़िब्ले की त़रफ़ जिसे आप चाहते हैं। आख़िर आयत अ़म्मा तअ़मलून तक।

٤٤٨٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

4489. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे

मुअ़तमिर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे सिवा, उन सहाबा (रज़ि.) में से जिन्होंने दोनों क़िब्लों की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी थी और कोई अब ज़िन्दा नहीं रहा।

مُعْتَمِرٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: لَمْ يَبْقَ مِمَّنْ صَلَّى الْقِبْلَتَيْنِ غَيْرِي.

इससे मा'लूम हुआ कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) का इंतिक़ाल तमाम सहाबा किराम (रज़ि.) के आख़िर में हुआ है। इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने कहा कि हज़रत अनस (रज़ि.) के बाद कोई सहाबी दुनिया मे ज़िन्दा नहीं रहा था।

बाब 16 : आयत 'वल इन आतयतल्लज़ीन ऊतुल किताब बिकुल्लि' की तफ़्सीर

१٦- باب قوله ﴿وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ، مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ﴾

या'नी और अगर आप उन लोगों के सामने जिन्हें किताब मिल चुकी है, सारी ही दलीलें ले आएँ जब भी ये आपके क़िब्ले की तरफ़ चेहरा न करेंगे. आख़िर आयत इन्नक इज़ल्लमिनज़्ज़ालिमीन तक

4490. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग मस्जिदे क़ुबा में सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक साहब वहाँ आए और कहा कि रात रसूलुल्लाह (ﷺ) पर क़ुर्आन नाज़िल हुआ है कि (नमाज़ में) का'बा की तरफ़ चेहरा करें, पस आप लोग भी अब का'बा की तरफ़ रुख़ कर लें। रावी ने बयान किया कि लोगों का चेहरा उस वक़्त शाम (बैतुल मक़्दिस) की तरफ़ था, उसी वक़्त लोग का'बा की तरफ़ फिर गये। (राजेअ़ : 403)

٤٤٩٠- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: بَيْنَمَا النَّاسُ فِي الصُّبْحِ بِقُبَاءٍ جَاءَهُمْ رَجُلٌ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ قُرْآنٌ، وَ أُمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ أَلاَ فَاسْتَقْبِلُوهَا وَكَانَ وَجْهُ النَّاسِ إِلَى الشَّامِ فَاسْتَدَارُوا بِوُجُوهِهِمْ إِلَى الْكَعْبَةِ.

[راجع: ٤٠٣]

बाब 17 : आयत 'अल्लज़ीना आतयनाहुमुल किताब यअ़रिफ़ूनहू' की तफ़्सीर

١٧- باب قوله ﴿الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ - إِلَى قَوْلِهِ - مِنَ الْمُمْتَرِينَ﴾

या'नी जिन लोगों को मैं किताब दे चुका हूँ वो आपको पहचानते हैं जैसे वो अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उनमें के कुछ लोग अल्बत्ता छुपाते हैं हक़ को. आख़िर आयत मिनल् मुम्तरीन तक

तश्रीह : पहले की किताबों की बिना पर अहले किताब को ख़ूब मा'लूम था कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) वही सच्चे रसूल हैं जिनकी पेशीनगोई उनकी किताबों में मौजूद है। वो अपने बेटों की तरह सदाक़ते मुहम्मदी को जानते थे मगर हसद और बुग़्ज़ व इनाद ने उनको इस्लाम क़ुबूल करने से रोके रखा। आयत में यही मज़्मून बयान हो रहा है।

4491. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा

٤٤٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا

مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: بَيْنَا النَّاسُ بِقُبَاءٍ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ، قَدْ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ قُرْآنٌ وَقَدْ أُمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ فَاسْتَقْبِلُوهَا وَكَانَتْ وُجُوهُهُمْ إِلَى الشَّامِ فَاسْتَدَارُوا إِلَى الْكَعْبَةِ.

कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि लोग मस्जिदे क़ुबा में सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक स़ाहब (मदीना से) आए और कहा कि रात रसूलुल्लाह (ﷺ) पर क़ुर्आन नाज़िल हुआ है और आपको हुक्म हुआ है कि का'बा की त़रफ़ चेहरा कर लें, इसलिये आप लोग भी का'बा की त़रफ़ फिर जाएँ। उस वक़्त उनका चेहरा शाम की त़रफ़ था। चुनाँचे सब नमाज़ी का'बा की त़रफ़ फिर गये।

١٨- باب ﴿وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَمَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللهُ جَمِيعًا إِنَّ اللهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾

बाब 18 : आयत 'व लिकुल्लिव विज्हतुन हुव मुवल्लीहा' की तफ़्सीर

या'नी और हर एक के लिये कोई रुख़ होता है, जिधर वो मुतवज्जह रहता है, सो तुम नेकियों की त़रफ़ बढ़ो, तुम जहाँ कहीं भी होओगे अल्लाह तुम सबको पा लेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है

٤٤٩٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: صَلَّيْنَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ- أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا - ثُمَّ صَرَفَهُ نَحْوَ الْقِبْلَةِ.
[راجع: ٤٠]

4492. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) के साथ सोलह या सत्रह महीने बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ी। फिर अल्लाह तआ़ला ने हमें का'बा की त़रफ़ चेहरा करने का हुक्म दिया। (राजेअ़ : 40)

١٩- باب ﴿وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ﴾
شَطْرَهُ : تِلْقَاءَهُ

बाब 19 : आयत 'वमिन् हैषु ख़रज्ता फ़वल्लि वज्हक शतरल् मस्जिदिल ह़राम' की तफ़्सीर

और आप जिस जगह से भी बाहर निकलें नमाज़ में अपना चेहरा मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ मोड़ लिया करें और ये हुक्म आपके परवरदिगार की त़रफ़ से बिल्कुल ह़क़ है और अल्लाह इससे बेख़बर नहीं, जो तुम कर रहे हो. लफ़्ज़े शत़रह के मा'नी क़िब्ले की त़रफ़ के हैं

٤٤٩٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ

4493. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि लोग क़ुबा में सुबह

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا يَقُولُ: بَيْنَمَا النَّاسُ فِي الصُّبْحِ بِقُبَاءٍ إِذْ جَاءَهُمْ رَجُلٌ فَقَالَ: أُنْزِلَ اللَّيْلَةَ قُرْآنٌ، فَأُمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ، فَاسْتَقْبِلُوهَا فَاسْتَدَارُوا كَهَيْئَتِهِمْ فَتَوَجَّهُوا إِلَى الْكَعْبَةِ، وَكَانَ وَجْهُ النَّاسِ إِلَى الشَّامِ. [راجع: ٤٠٣]

की नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक स़ाहब आए और कहा कि रात क़ुर्आन नाज़िल हुआ है और का'बा की त़रफ़ चेहरा कर लेने का हुक्म हुआ है। इसलिये आप लोग भी का'बा की त़रफ़ चेहरा कर लें और जिस ह़ालत में हैं, उसी त़रह उसकी त़रफ़ मुतवज्जह हो जाएँ (ये सुनते ही) तमाम स़ह़ाबा (रज़ि.) का'बा की त़रफ़ हो गये। उस वक़्त लोगों का चेहरा शाम की त़रफ़ था। (राजेअ़ : 403)

٢٠- باب قوله ﴿وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُمَا كُنْتُمْ﴾

बाब 20 : आयत 'वमिन् ह़ैषु ख़रज्ता फ़वल्लि वज्हका शत़रल् मस्जिदिल ह़राम' की तफ़्सीर

या'नी और आप जिस जगह से भी बाहर निकलें, अपना चेहरा बवक़्ते नमाज़ मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ मोड़ लिया करें और तुम लोग भी जहाँ कहीं हो अपना चेहरा उसकी त़रफ़ मोड़ लिया करो आख़िर आयत लअ़ल्लकुम तहतदून तक।

٤٤٩٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: بَيْنَمَا النَّاسُ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ بِقُبَاءٍ إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ، وَقَدْ أُمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ فَاسْتَقْبِلُوهَا وَكَانَتْ وُجُوهُهُمْ إِلَى الشَّامِ فَاسْتَدَارُوا إِلَى الْقِبْلَةِ. [راجع: ٤٠٣]

4494. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि अभी लोग मस्जिदे क़ुबा में सुबह की नमाज़ पढ़ ही रहे थे कि एक आने वाले स़ाहब आए और कहा कि रात को रसूले करीम (ﷺ) पर क़ुर्आन नाज़िल हुआ है और आपको का'बा की त़रफ़ चेहरा करने का हुक्म हुआ है। इसलिये आप लोग भी उसी त़रफ़ चेहरा फेर लें। वो लोग शाम की त़रफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ रहे थे लेकिन उसी वक़्त का'बा की त़रफ़ फिर गये। (राजेअ़ : 403)

तह़वीले क़िब्ला पर एक तब्स़रा :

नबी करीम (ﷺ) की आ़दते मुबारका थी कि जिस बारे में कोई हुक्मे इलाही मौजूद न होता, उसमें आप अहले किताब से मुवाफ़क़त फ़र्माया करते थे। नमाज़ आग़ाज़े नुबुव्वत ही से फ़र्ज़ हो चुकी थी। मगर क़िब्ला के बारे में कोई हुक्म नाज़िल न हुआ था। इसलिये मक्का की तेरह साला इक़ामत के अ़र्से में नबी (ﷺ) ने बैतुल मक़्दिस ही को क़िब्ला बनाए रखा। मदीना में पहुँचकर भी यही अ़मल रहा, मगर हिजरत के दूसरे साल या 17 माह के बाद अल्लाह ने उस बारे में हुक्म नाज़िल किया। ये हुक्म नबी (ﷺ) की दिली मंशा के मुवाफ़िक़ था क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि मुसलमानों का क़िब्ला वो मस्जिद बनाई जाए जिसके बानी ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) थे। जिसे मकअ़ब शक्ल की इमारत होने की वजह से का'बा और स़िर्फ़ इबादते इलाही के लिये बनाए जाने की वजह से बैतुल्लाह और अ़ज़्मत और हुर्मत की वजह से मस्जिदे ह़राम कहा जाता था। इस हुक्म में जो अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद में नाज़िल किया है। (1) ये भी बताया गया है कि अल्लाह तआ़ला को तमाम जिहात से यक्साँ निस्बत है। **फ़अयनमा तुवल्लु फ़षम्मा वज्हुल्लाह** (अल् बक़रः : 115) और **व लिकुल्लि**

विज्हतुन हुव मुवल्लीहा फस्तबिक़ुल्खैराति अयन मा तकूनू याति बिकुमुल्लाहु जमीअन (अल बक़र : 148)

(2) और ये भी बताया गया है कि इबादत के लिये किसी न किसी तरफ़ का मुक़र्रर कर लेना तब्क़ाते दौम में शाये रहा है। **व लिकुल्लिव विज्हतुन हुव मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल ख़ैरात** (अल् बक़रः : 148)

(3) और ये भी बताया गया है कि किसी तरफ़ चेहरा कर लेना असल इबादत से कुछ ता'ल्लुक़ नहीं रखता, **लैसल्बिर्र अन्तुवल्लू वुजूहकुम क़िबलल्मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि** (अल बक़र : 148)

(4) और ये भी बताया गया है कि तअय्युने क़िब्ला का बड़ा मक़सद ये भी है कि मुतअय्यिन रसूल के लिये एक मुमय्यिज़ आदत क़रार दी जाए। **लिनअलम मंय्यत्तबिउर्रसूल मिम्मय्यंन्क़लिबु अला अक़िबैहि** (अल् बक़रः : 143) यही वजह थी कि जब तक नबी (ﷺ) मक्का में रहे, उस वक़्त तक बैतुल मक़्दिस मुसलमानों का क़िब्ला रहा क्योंकि मुश्रिकीन मक्का बैतुल मक़्दिस के एहतिराम के क़ाइल न थे और का'बा को तो उन्होंने ख़ुद ही अपना बड़ा मअबद बना रखा था। इसलिये शिर्क छोड़ देने और इस्लाम क़ुबूल करने की साफ़ अलामत मक्का में यही रही कि मुसलमान होने वाला बैतुल मक़्दिस की तरफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ा करे। जब नबी करीम (ﷺ) मदीना पहुँचे वहाँ ज़्यादातर यहूदी या ईसाई ही आबाद थे वो मक्का की मस्जिदुल हराम की अज़्मत के क़ाइल न थे और बैतुल मक़्दिस को तो वो बैते ईल या हैकल तस्लीम करते ही थे। इसलिये मदीना में इस्लाम क़ुबूल करने और आबाई मज़हब छोड़कर मुसलमान बनने की अलामत ये क़रार पाई कि मक्का की मस्जिदुल हराम की तरफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ी जाए। हुक्मे इलाही के मुताबिक़ यही मस्जिद हमेशा के लिये मुसलमानों का क़िब्ला क़रार पाई। इस मस्जिद को क़िब्ला क़रार देने की वजह अल्लाह तआला ने ख़ुद ही बयान कर दी है **इन्न अव्वल बैतिव्वुज़िअ लिन्नासिलल्लज़ी बिबक्कत मुबारकव्वं हुदल्लिल्आलमीन** (आले इमरान : 96) ये मस्जिद दुनिया की सबसे पहली इमारत है जो ख़ालिस इबादते इलाही की ग़र्ज़ से बनाई गई है। चूँकि इसे तक़्दीमे ज़मानी और अज़्मते तारीख़ी हासिल है, इसलिये इसको क़िब्ला बनाया जाना मुनासिब है, **व इज़ यर्फ़उ इब्राहीमुल्क़वाइद मिनल्बैति व इस्माईलु** (अल बक़र : 27) दोम ये कि इस मस्जिद के बानी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं और हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ही यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के जद्दे आला हैं। इसलिये इन शानदार क़ौमों के बुज़ुर्गवार वालिद की मस्जिद को क़िब्ला क़रार देना गोया अक़्वामे षलाषा (तीनों क़ौमों) को इत्तिहादे नसबी व जिस्मानी की याद दिलाकर इत्तिहादे रूहानी के लिये दा'वत देना और मुत्तहिदीन बन जाने का पैग़ाम **उद्‌ख़ुलू फ़िस्सिल्मि क़ाफ़्फ़ः** (अल् बक़रः : 208) बना देना था। (अज़ इफ़ादात हज़रत क़ाज़ी सय्यद सुलैमान साहब मंसूरपुरी मरहूम)

बाब 21 : आयात 'इन्नस्सफ़ा वल् मरवता मिन शआइरिल्लाह' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी

٢١- باب قوله

सफ़ा और मर्वा बेशक अल्लाह की निशानियों में से हैं। पस जो कोई बैतुल्लाह का हज्ज करे या उमरह करे उस पर कोई गुनाह नहीं कि उन दोनों के दरम्यान सई करे और जो कोई ख़ुशी से और कोई नेकी ज़्यादा करे सो अल्लाह तो बड़ा क़द्रदान, बड़ा ही इल्म रखने वाला है। शआइर के मा'नी अलामात के हैं। इसका वाहिद शईरतुन है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सफ़्वान ऐसे पत्थर को कहते हैं जिस पर कोई चीज़ न उगती हो। वाहिद सफ़्वानति है। सफ़ा ही के मा'नी में और सफ़ा जमा के लिये आता है।

﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا، وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ﴾ شَعَائِرُ: عَلاَمَاتٌ وَاحِدَتُهَا شَعِيرَةٌ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الصَّفْوَانُ: الْحَجَرُ وَيُقَالُ الْحِجَارَةُ الْمُلْسُ الَّتِي لاَ تُنْبِتُ شَيْئًا وَالْوَاحِدَةُ صَفْوَانَةٌ بِمَعْنَى الصَّفَا، وَالصَّفَا لِلْجَمِيعِ.

4495. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा

٤٤٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا يَوْمَئِذٍ حَدِيثُ السِّنِّ أَرَأَيْتِ قَوْلَ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا﴾ فَمَا أُرَى عَلَى أَحَدٍ شَيْئًا أَنْ لاَ يَطَّوَّفَ بِهِمَا؟ فَقَالَتْ عَائِشَةُ: كَلاَّ. لَوْ كَانَتْ كَمَا تَقُولُ كَانَتْ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لاَ يَطَّوَّفَ بِهِمَا إِنَّمَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِي الأَنْصَارِ كَانُوا يُهِلُّونَ لِمَنَاةَ، وَكَانَتْ مَنَاةُ حَذْوَ قُدَيْدٍ، وَكَانُوا يَتَحَرَّجُونَ أَنْ يَطُوفُوا بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَلَمَّا جَاءَ الإِسْلاَمُ سَأَلُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ ذَلِكَ فَأَنْزَلَ اللهُ : ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا﴾. [راجع: ١٦٤٣]

हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा (उन दिनों में नौ उ़म्र था) कि अल्लाह तबारक व तआ़ला के उस इर्शाद के बारे में आपका क्या ख़्याल है, स़फ़ा और मर्वा बेशक अल्लाह की यादगार चीज़ों में से हैं। पस जो कोई बैतुल्लाह का ह़ज्ज करे या उ़मरह करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं कि उन दोनों के बीच आमद व रफ़्त (या'नी सई) करे। मेरा ख़्याल है कि अगर कोई उनकी सई न करे तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं होना चाहिये। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि हर्गिज़ नहीं, जैसा कि तुम्हारा ख़्याल है, अगर मसला यही होता तो फिर वाक़ई उनके सई न करने में कोई गुनाह न था। लेकिन ये आयत अंस़ार के बारे में नाज़िल हुई थी (इस्लाम से पहले) अंस़ार मनात बुत का नाम से एह़राम बाँधते थे, ये बुत मुक़ामे क़ुदैद में रखा हुआ था और अंस़ार स़फ़ा और मर्वा की सई को अच्छा नहीं समझते थे। जब इस्लाम आया तो उन्होंने सई की बारे में आप (ﷺ) से पूछा, उस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की। स़फ़ा और मर्वा बेशक अल्लाह की निशानियों में से हैं, सो जो कोई बैतुल्लाह का ह़ज्ज करे या उ़मरह करे तो उस पर कोई भी गुनाह नहीं कि उन दोनों के दरम्यान (सई) करे। (राजेअ़ : 1643)

٤٤٩٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَاصِمِ بْنِ سُلَيْمَانَ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ فَقَالَ: كُنَّا نَرَى أَنَّهُمَا مِنْ أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَمَّا كَانَ الإِسْلاَمُ أَمْسَكْنَا عَنْهُمَا فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ إِلَى قَوْلِهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا﴾. [راجع: ١٦٤٨]

4496. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ़स़िम बिन सुलैमान ने बयान किया और उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से स़फ़ा और मर्वा के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि उसे हम जाहिलियत के कामों में से समझते थे। जब इस्लाम आया तो हम उनकी सई से रुक गये, इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, इन्नस़्स़फ़ा वल मर्वता इर्शाद अंय्यत्तव्वफ़ बिहिमा तक। या'नी बेशक स़फ़ा और मर्वा अल्लाह की निशानियों मे से हैं। पस उनको सई करने में ह़ज्ज और उ़मरह के दौरान कोई गुनाह नहीं है। (राजेअ़ : 1648)

٢٢- باب قوله : ﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ

बाब 22 : आयत 'व मिनन्नासि मय्यत्तख़िज़ू' की

तफ़्सीर या'नी और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को भी उसका शरीक बनाए हुए हैं। लफ़्ज़ अन्दादा बमा'नी अज़्दादा जिसका वाह़िद निद है।

يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللهِ أَنْدَادًا﴾ أَضْدَادًا: وَاحِدُهَا نِدٌّ.

4497. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक कलिमा इर्शाद फ़र्माया और मैंने एक और बात कही। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स इस ह़ालत में मर जाए कि वो अल्लाह के सिवा औरों को भी उसका शरीक ठहराता रहा हो तो वो जहन्नम में जाता है और मैंने यूँ कहा कि जो शख़्स इस ह़ालत में मरे कि अल्लाह का किसी को शरीक न ठहराता रहा तो वो जन्नत मे जाता है। (राजेअ़ : 1238)

٤٤٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ كَلِمَةً وَقُلْتُ أُخْرَى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللهِ نِدًّا دَخَلَ النَّارَ)) وَقُلْتُ: أَنَا مَنْ مَاتَ وَهُوَ لاَ يَدْعُو للهِ نِدًّا دَخَلَ الْجَنَّةَ.

[راجع: ١٢٣٨]

मत़लब दोनों बातों का यही है कि तौह़ीद पर मरने वाले ज़रूर जन्नत में दाख़िल होंगे और शिर्क पर मरने वाले हमेशा जहन्नम मे रहेंगे। शिर्क से मुराद क़ब्रों, मज़ारों, ता'ज़ियों को पूजना जिस त़रह़ काफ़िर लोग बुतों को पूजते हैं दोनों क़िस्म के लोग अल्लाह के यहाँ मुश्रिक हैं। शिर्क का एक शाएबा भी इन्दल्लाह बहुत बड़ा गुनाह है। पस शिर्क से बहुत दूर रहने की कोशिश करना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है।

बाब 23 : आयत 'या अय्युहल्लज़ीन आमनू कुतिबा अ़लैकुमुल क़िस़ास़' अल्ख़ की तफ़्सीर

या'नी, ऐ ईमानवालों! तुम पर मक़्तूलों के बारे में बदला लेना फ़र्ज़ कर दिया गया है। आज़ाद के बदले में आज़ाद और ग़ुलाम के बदले में ग़ुलाम, आख़िर आयत अ़ज़ाबुन अलीम तक और उ़फ़िया बमा'नी तुरिका है।

٢٣- باب قوله ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى : الْحُرُّ بِالْحُرِّ - إِلَى قَوْلِهِ - عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾. عُفِيَ : تُرِكَ.

4498. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुजाहिद से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि बनी इस्राईल में क़िस़ास़ या'नी बदला था लेकिन दियत नहीं थी। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत से कहा कि, तुम पर मक़्तूलों के बाब में क़िस़ास़ फ़र्ज़ किया गया। आज़ाद के बदले में आज़ाद और ग़ुलाम के बदले में ग़ुलाम और औ़रत के बदले में औ़रत, हाँ जिस किसी को उसके फ़रीक़ मक़्तूल की त़रफ़ से कुछ मुआफ़ी मिल जाए तो मुआफ़ी से मुराद यही दियत क़ुबूल

٤٤٩٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو قَالَ : سَمِعْتُ مُجَاهِدًا، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: كَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ الْقِصَاصُ، لَمْ تَكُنْ فِيهِمُ الدِّيَةُ. فَقَالَ اللهُ تَعَالَى لِهَذِهِ الأُمَّةِ: ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ، وَالأُنْثَى بِالأُنْثَى، فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ

أَخِيهِ شَيْءٌ﴾ فَالْعَفْوُ أَنْ يَقْبَلَ الدِّيَةَ فِي الْعَمْدِ. ﴿فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ﴾ يَتْبَعُ بِالْمَعْرُوفِ وَيُؤَدِّي بِإِحْسَانٍ ﴿ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ﴾ مِمَّا كُتِبَ عَلَى مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ ﴿فَمَنْ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ قَتَلَ بَعْدَ قَبُولِ الدِّيَةِ.

[طرفه في: ٦٨٨١].

करना है। सो मुतालबा मा'कूल और नरम तरीक़े से हो और मुतालबा को उस फ़रीक़ के पास ख़ूबी से पहुँचाया जाए। ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रियायत और मेहरबानी है। या'नी उसके मुक़ाबले में जो तुमसे पहली उम्मतों पर फ़र्ज़ था। सो जो कोई इसके बाद भी ज़्यादती करेगा, उसके लिये आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (ज़्यादती से मुराद ये है कि) दियत भी ले ली और फिर उसके बाद क़त्ल भी कर दिया। (दीगर मक़ाम : 6881)

तश्रीह : क़िसास से बदला लेना मुराद है जो इस्लामी क़वानीन में बहुत बड़ी अहमियत रखता है। यही वो क़ानून है जिसकी वजह से दुनिया में अमन रह सकता है। अगर ये क़ानून न होता तो किसी ज़ालिम इंसान के लिये किसी ग़रीब का ख़ून करना एक खेल बनकर रह जाता। मक़्तूल के वारिषों की तरफ़ से मुआफ़ी का मिलना भी उस वक़्त तक है, जब तक मुक़द्दमा अ़दालत में न पहुँचे। अ़दालत में जाने के बाद फिर क़ानून का लागू होना ज़रूरी हो जाता है।

٤٤٩٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((كِتَابُ اللهِ الْقِصَاصُ)). [راجع: ٢٧٠٣]

4499. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किताबुल्लाह का हुक्म क़िसास का है। (राजेअ़ : 2703)

٤٥٠٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ بَكْرٍ السَّهْمِيَّ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ الرُّبَيِّعَ عَمَّتَهُ كَسَرَتْ ثَنِيَّةَ جَارِيَةٍ فَطَلَبُوا إِلَيْهَا الْعَفْوَ، فَأَبَوْا فَعَرَضُوا الأَرْشَ فَأَبَوْا فَأَتَوْا رَسُولَ اللهِ ﷺ وَأَبَوْا إِلاَّ الْقِصَاصَ فَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْقِصَاصِ فَقَالَ أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ: يَا رَسُولَ اللهِ أَتُكْسَرُ ثَنِيَّةُ الرُّبَيِّعِ. لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ لاَ تُكْسَرُ ثَنِيَّتُهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا أَنَسُ كِتَابُ اللهِ الْقِصَاصُ)) فَرَضِيَ الْقَوْمُ فَعَفَوْا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ

4500. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन बक्र सह्मी से सुना, उनसे हुमैद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि मेरी फूफी रबीअ़ ने एक लड़की के दांत तोड़ दिये, फिर उस लड़की से लोगों ने मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त की लेकिन उस लड़की के क़बीले वाले मुआ़फ़ कर देने को तैयार नहीं हुए और रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और क़िसास के सिवा और किसी चीज़ पर राज़ी नहीं थे। चुनाँचे आपने क़िसास का हुक्म दे दिया। इस पर अनस बिन नज़्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या रबीअ़ (रज़ि.) के दांत तोड़ दिये जाएँगे, नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको ह़क़ के साथ मब्ऊ़ष फ़र्माया है, उनके दांत न तोड़े जाएँगे। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अनस! किताबुल्लाह का हुक्म क़िसास का यही है। फिर लड़की वाल राज़ी हो गये और उन्होंने

मुआफ़ कर दिया। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, कुछ अल्लाह के बन्दे ऐसे हैं कि अगर वो अल्लाह का नाम लेकर क़सम खा लें तो अल्लाह उनकी क़सम पूरी कर ही देता है। (राजेअ : 2703)

مِنْ عِبَادِ اللهِ مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ)).

[راجع: ٢٧٠٣]

जैसे अनस बिन नज़्र (रज़ि.) ने क़सम खा ली थी कि रबीअ का दांत कभी नहीं तोड़ा जाएगा। बज़ाहिर उसकी उम्मीद न थी लेकिन अल्लाह तआला की क़ुदरत देखिये लड़की के वारिसों का दिल उसने एक दम फेर दिया। उन्होंने क़िसास मुआफ़ कर दिया। अल्लाह वाले ऐसे ही होते हैं, उनका अ़ज़्मे समीम (मज़्बूत इरादा) और तवक्कल अ़लल्लाह वो काम कर जाता है कि दुनिया देखकर हैरान रह जाती है।

बाब 24 : आयत, 'या अय्युहल्लज़ीन आमनू कुतिब अलैकुमुस्सियाम' की तफ़्सीर, या'नी

٢٤- باب قوله ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾

ऐ ईमानवालों! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये हैं जैसा कि उन लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं , ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ.

4501. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उन्हें नाफ़ेअ ने ख़बर दी और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि आ़शूरा के दिन जाहिलियत में हम रोज़ा रखते थे लेकिन जब रमज़ान के रोज़े नाज़िल हो गये तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसका जी चाहे आ़शूरा का रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। (राजेअ : 1792)

٤٥٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ عَاشُورَاءُ يَصُومُهُ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ، فَلَمَّا نَزَلَ رَمَضَانُ قَالَ : مَنْ شَاءَ صَامَهُ وَمَنْ شَاءَ لَمْ يَصُمْهُ. [راجع: ١٨٩٢]

4502. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि आशूरा का रोज़ा रमज़ान के रोज़ों के हुक्म से पहले रखा जाता था। फिर जब रमज़ान के रोज़ों का हुक्म हो गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसका जी चाहे आ़शूरा का रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। (राजेअ : 1592)

٤٥٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا: كَانَ عَاشُورَاءُ يُصَامُ قَبْلَ رَمَضَانَ، فَلَمَّا نَزَلَ رَمَضَانُ مَنْ شَاءَ صَامَ وَمَنْ شَاءَ أَفْطَرَ.

[راجع: ١٥٩٢]

4503. मुझसे महमूद ने बयान किया, कहा हमको उ़बैदुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें इस्राईल ने, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि अश्अ़ष ने कहा कि आज तो आशूरा का दिन है। इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि इन दिनों में आ़शूरा का रोज़ा रमज़ान के रोज़ों के नाज़िल होने से पहले रखा जाता था लेकिन जब

٤٥٠٣- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: دَخَلَ عَلَيْهِ الأَشْعَثُ وَهُوَ يَطْعَمُ فَقَالَ: الْيَوْمُ عَاشُورَاءُ فَقَالَ : كَانَ يُصَامُ قَبْلَ أَنْ

يُنزَلَ رَمَضَانُ، فَلَمَّا نَزَلَ رَمَضَانُ تُرِكَ فَادْنُ فَكُلْ.

रमज़ान के रोज़े का हुक्म नाज़िल हुआ तो ये रोज़ा छोड़ दिया गया। आओ तुम भी खाने में शरीक हो जाओ।

इन तमाम अह़ादीष़ में रमज़ान के रोज़ों की फ़र्ज़ियत का ज़िक्र है। बाब में और इनमें यही मुत़ाबक़त है।

٤٥٠٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، قَالَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ : كَانَ يَوْمُ عَاشُورَاءَ تَصُومُهُ قُرَيْشٌ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصُومُهُ، فَلَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ صَامَهُ وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ، فَلَمَّا نَزَلَ رَمَضَانُ كَانَ رَمَضَانُ الْفَرِيضَةَ وَتُرِكَ عَاشُورَاءُ، فَكَانَ مَنْ شَاءَ صَامَهُ وَمَنْ شَاءَ لَمْ يَصُمْهُ. [راجع: ١٥٩٢]

4504. मुझसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आ़शूरा के दिन क़ुरैश ज़माने-ए-जाहिलियत में रोज़ा रखते थे और नबी करीम (ﷺ) भी उस दिन रोज़ा रखते थे। जब आप मदीना तशरीफ़ लाए तो यहाँ भी आपने उस दिन रोज़ा रखा और स़हाबा (रज़ि.) को भी उसको रखने का हुक्म दिया, लेकिन जब रमज़ान के रोज़ों का हुक्म नाज़िल हुआ तो रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हो गये और आ़शूरा के रोज़ा (की फ़र्ज़ियत) बाक़ी न रही। अब जिसका जी चाहे उस दिन भी रोज़ा रखे और जिसका जी चाहे न रखे। (राजेअ़ : 1592)

यौमे आ़शूरा के रोज़ा की फ़ज़ीलत और इस्तिह़बाब अब भी बाक़ी है। पहले इसका वुजूब था जो रमज़ान के रोज़ो की फ़र्ज़ियत की वजह से मन्सूख़ हो गया।

बाब 25 : आयत 'अय्यामम्मअ़दूदात फ़मन काना'

٢٥- باب قَوْلِهِ :

﴿أَيَّامًا مَعْدُودَاتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ وَقَالَ عَطَاءٌ يُفْطِرُ مِنَ الْمَرَضِ كُلِّهِ كَمَا قَالَ اللهُ تَعَالَى وَقَالَ الْحَسَنُ وَإِبْرَاهِيمُ فِي الْمُرْضِعِ وَالْحَامِلِ إِذَا خَافَتَا عَلَى أَنْفُسِهِمَا أَوْ وَلَدِهِمَا تُفْطِرَانِ ثُمَّ تَقْضِيَانِ وَأَمَّا الشَّيْخُ الْكَبِيرُ إِذَا لَمْ يُطِقِ الصِّيَامَ فَقَدْ أَطْعَمَ أَنَسٌ بَعْدَمَا كَبِرَ عَامًا أَوْ عَامَيْنِ كُلَّ يَوْمٍ

अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी, ये रोज़े गिनती के चन्द दिनों में रखने हैं, फिर तुममें से जो शख़्स़ बीमार हो या सफ़र में हो उस पर दूसरे दिनों का गिन रखना है और जो लोग उसे मुश्किल से बर्दाश्त कर सकें उनके ज़िम्मे फ़िद्या है जो एक मिस्कीन का खाना है और जो कोई ख़ुशी ख़ुशी नेकी करे उसके ह़क़ में बेहतर है और अगर तुम इल्म रखते हो तो बेहतर तुम्हारे ह़क़ में यही है कि तुम रोज़े रखो। अ़ता बिन अबी रिबाह़ ने कहा कि हर बीमारी में रोज़ा न रखना दुरुस्त है। जैसा कि आ़म त़ौर पर अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद इर्शाद फ़र्माया है और इमाम ह़सन बस़री (रह) और इब्राहीम नख़ई (रह) ने कहा कि दूध पिलाने वाली या ह़ामला को अगर अपनी या अपने बेटे की जान का डर हो तो वो इफ़्त़ार कर लें और फिर उसकी क़ज़ा कर लें लेकिन बूढ़ा ज़ईफ़ शख़्स़ जब रोज़ा न रख सके तो वो फ़िद्या दे। ह़ज़रत

अनस बिन मालिक (रज़ि.) भी जब बूढ़े हो गये थे तो वो एक साल या दो साल रमज़ान में रोज़ाना एक मिस्कीन को रोटी और गोश्त दिया करते थे और रोज़ा छोड़ दिया था। अकषर लोगों ने इस आयत में युतीक़ुनहू पढ़ा है (जो अताक़ युतीक़ु से है)

مِسْكِينًا خُبْزًا وَلَحْمًا وَأَفْطَرَ. قِرَاءَةُ الْعَامَّةِ يُطِيقُونَهُ وَهُوَ أَكْثَرُ.

जिसके मा'नी ये हैं जो लोग रोज़े की ताक़त नहीं रखते जैसे बूढ़ा ज़ईफ़। कुछ ने कहा कि लफ़्ज़ ला यहाँ मुक़द्दर है। अता के अषर को अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया है। कहते हैं हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने एक सौ तीन या एक सौ दस बरस की उम्र पाई थी।

4505. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको रौह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अता ने और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुना, वो यूँ क़िरात कर रहे थे। व अलल्लज़ीन युतीक़ूनहू (तफ़्ईल से) फ़िदयतुन तआमु मिस्कीन। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ये आयत मन्सूख़ नहीं है। इससे मुराद बहुत बूढ़ा मर्द या बहुत बूढ़ी औरत है। जो रोज़े की ताक़त न रखती हो, उन्हें चाहिये कि हर रोज़े के बदले में एक मिस्कीन को खाना खिला दें।

٤٥٠٥– حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، عَنْ عَطَاءٍ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ، يَقْرَأُ وَعَلَى الَّذِينَ يُطَوَّقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَيْسَتْ بِمَنْسُوخَةٍ هُوَ الشَّيْخُ الْكَبِيرُ وَالْمَرْأَةُ الْكَبِيرَةُ، لاَ يَسْتَطِيعَانِ أَنْ يَصُومَا فَلْيُطْعِمَانِ مَكَانَ كُلِّ يَوْمٍ مِسْكِينًا ﴿فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ﴾.

तश्रीह : ये इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है और अकषर उलमा कहते हैं कि ये आयत मन्सूख़ हो गई है और इब्तिदा-ए-इस्लाम में यही हुक्म हुआ था कि जिसका जी चाहे रोज़ा रखे जिसका जी चाहे फ़िद्या दे। फिर बाद में आयत, **फ़मन शहिद मिन्कुमुश्शहर फ़ल्यसुम्हु** (अल बक़र : 185) नाज़िल हुई और उससे वो पिछली आयत मन्सूख़ हो गईं। अल्बत्ता जो शख़्स इतना बूढ़ा हो जाए कि रोज़ा न रख सके उसके लिये इफ़्तार करना और फ़िद्या देना जाइज़ है।

बाब 26 : आयत 'फ़मन शहिदा मिन्कुमुश्शह्र फ़ल्यसुम्हु' की तफ़्सीर में

٢٦– باب قوله فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ

या'नी पस तुममें से जो कोई इस महीने को पाये उसे चाहिये कि वो महीने भर रोज़े रखे।

4506. हमसे अयाश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल आला ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने यूँ क़िरात की फ़िदयतु बग़ैर तन्वीन तआमिम्मिस्कीन बतलाया कि ये आयत मन्सूख़ है।
(राजेअ : 1949)

٤٥٠٦– حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَرَأَ ﴿فِدْيَةُ طَعَامِ مَسَاكِينَ﴾ قَالَ هِيَ مَنْسُوخَةٌ.
[راجع: ١٩٤٩]

यही क़ौल राजेह है क्योंकि अगर **व अलल्लज़ीन युतीक़ुनहू** (अल बक़र : 184) से वो लोग मुराद होते जिनको रोज़े की ताक़त नहीं तो आगे ये इर्शाद क्यूँ होता **व अन्तसूमू ख़ैरुल्लकुम** (अल बक़र : 184) (वहीदी)

४५٠٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ مُضَرَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ يَزِيدَ مَوْلَى سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ، عَنْ سَلَمَةَ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ ﴿وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ﴾ كَانَ مَنْ أَرَادَ أَنْ يُفْطِرَ وَيَفْتَدِي حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ الَّتِي بَعْدَهَا فَنَسَخَتْهَا. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ مَاتَ بُكَيْرٌ قَبْلَ يَزِيدَ.

4507. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे बक्र बिन बिन मुज़र ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने, उनसे बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे सलमा बिन अक़्वा के मौला यज़ीद बिन अबी ड़बैद ने और उनसे सलमा बिन उकूअ़ (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई। व अलल्लज़ीन यूतीक़ुनहू फ़िदयतु तआमुम्मिस्कीन तो जिसका जी चाहता रोज़ा छोड़ देता था और उसके बदले में फ़िदया दे देता था। यहाँ तक कि उसके बाद वाली आयत नाज़िल हुई और उसने पहली आयत को मन्सूख़ कर दिया। अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) ने कहा कि बुकैर का इंतिक़ाल यज़ीद से पहले हो गया था। बुकैर जो यज़ीद के शागिर्द थे यज़ीद से पहले 120 हिजरी में मर गये थे।

और यज़ीद बिन अबी ड़बैद ज़िन्दा रहे 146 हिजरी या 147 हिजरी में उनका इंतिक़ाल हुआ और यही सबब था कि मक्की बिन इब्राहीम इमाम बुख़ारी (रह) के शैख़ ने यज़ीद बिन अबी ड़बैद को पाया। इमाम बुख़ारी (रह) की अकष़र ष़लाष़ी अहादीष़ इसी तरीक़ से मरवी हैं।

٢٧- باب قوله ﴿أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ عَلِمَ اللهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللهُ لَكُمْ﴾

बाब 27 : आयत 'उह़िल्ल लकुम लैलतस़्सियाम' की तफ़्सीर

या'नी जाइज़ कर दिया गया है तुम्हारे लिये रोज़ों की रात में अपनी बीवियों से मशग़ूल होना। वो तुम्हारे लिये लिबास हैं और तुम उनके लिये लिबास हो, अल्लाह को ख़बर हो गई कि तुम अपने को ख़यानत में मुब्तला करते रहते थे। पस उसने तुम पर रह़मत से तवज्जह फ़र्माई और तुमसे मुआ़फ़ कर दिया, सो अब तुम उनसे मिलो मिलाओ और उसे तलाश करो, जो अल्लाह तुम्हारे लिये लिख दिया है।

इससे औलाद मुराद है जो जिमाअ़ का अव्वलीन मक़्सद है न कि सिर्फ़ लज़्ज़ते नफ़्सानी।

٤٥٠٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ، قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ أَبِيهِ عن أبي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ لَمَّا نَزَلَ صَوْمُ رَمَضَانَ كَانُوا لاَ يَقْرَبُونَ النِّسَاءَ رَمَضَانَ كُلَّهُ، وَكَانَ رِجَالٌ يَخُونُونَ أَنْفُسَهُمْ

4508. हमसे ड़बैदुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और हमसे अह़मद बिन ड़ष़्मान ने बयान किया, उनसे शुरैह़ बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना कि जब रमज़ान के रोज़े का हुक्म नाज़िल हुआ तो मुसलमान पूरे रमज़ान में अपनी बीवियों के क़रीब नहीं जाते थे और कुछ लोगों ने अपने को

ख़यानत में मुब्तला कर लिया था। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई। अल्लाह ने जान लिया कि तुम अपने को ख़यानत में मुब्तला करते रहते थे। पस उसने तुम पर रहमत से तवज्जह फ़र्माई और तुमसे मुआफ़ कर दिया। (राजेअ: 1915)

فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى : ﴿عَلِمَ اللهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ﴾. [راجع: ١٩١٥]

ख़यानत से मुराद रात में बीवियों से मिलाप कर लेना है। बाद में उसकी खुलेआम रात को इजाज़त दे दी गई।

बाब 28 : आयत 'व कुलू वश्रबू हत्ता यतबय्यन लकुम' की तफ़्सीर

२٨- باب قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ وَلاَ تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ - إِلَى قَوْلِهِ - يَتَّقُونَ﴾. الْعَاكِفُ : الْمُقِيمُ

या'नी, खाओ और पीयो जब तक कि तुम पर सुबह की सफ़ेद धारी रात की स्याह धारी से मुम्ताज़ न हो जाए, फिर रोज़े को रात (होने) तक पूरा करो और बीवियों से इस हाल में सुहबत न करो जब तुम एअतिकाफ़ किये हो मस्जिदों में। आख़िर आयत यत्तक़ून तक। आकिफ़ु बि मा'नी मुक़ीम।

4509. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे आमिर शअबी ने अदी बिन हातिम (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि उन्होंने एक सफ़ेद धागा और एक काला धागा लिया (और सोते हुए अपने साथ रख लिया) जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र गया तो उन्होंने उसे देखा, वो दोनों में तमीज़ नहीं हुई। जब सुबह हुई तो अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैंने अपने तकिये के नीचे (सफ़ेद व काले धागे रखे थे और कुछ नहीं हुआ) तो हुज़ूर (ﷺ) ने इस पर बतौरे मज़ाक़ के फ़र्माया, फिर तो तुम्हारा तकिया बहुत लम्बा चौड़ा होगा कि सुबह का सफ़ेद ख़त और स्याह ख़त उसके नीचे आ गया था। (राजेअ: 1916)

٤٥٠٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَدِيٍّ قَالَ: أَخَذَ عَدِيٌّ عِقَالاً أَبْيَضَ، وَعِقَالاً أَسْوَدَ حَتَّى كَانَ بَعْضُ اللَّيْلِ نَظَرَ فَلَمْ يَسْتَبِينَا فَلَمَّا أَصْبَحَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ جَعَلْتُ تَحْتَ وِسَادَتِي قَالَ: ((إِنَّ وِسَادَكَ إِذًا لَعَرِيضٌ إِنْ كَانَ الْخَيْطُ الأَبْيَضُ وَالأَسْوَدُ تَحْتَ وِسَادَتِكَ)). [راجع: ١٩١٦]

तश्रीह: अदी बिन हातिम (रज़ि.) आयत का मतलब ये समझे कि ख़ैते अब्यज़ और ख़ैते अस्वद से हक़ीक़त में काले और सफ़ेद डोरे मुराद हैं हालाँकि आयत मे काली और सफ़ेद धारी से रात की तारीकी और सुबह की रोशनी मक़्सूद है। सफ़ेद धारी जब खड़ी हुई नज़र आए तो ये सुबहे काज़िब है और ज़मीन में फैल जाए तो ये सुबहे सादिक़ है।

4510. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मुत्रफ़ ने बयान किया, उनसे शअबी ने बयान किया और उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! (आयत में) अल ख़यतुल् अब्यज़ु मिनल् ख़यतिल अस्वदि से

٤٥١٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُطَرِّفٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ مَا الْخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ

क्या मुराद है, क्या उनसे मुराद दो धागे हैं? हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारी खोपड़ी फिर तो बड़ी लम्बी चौड़ी होगी, अगर तुमने रात को दो धागे देखे हैं। फिर फ़र्माया कि उनसे मुराद रात की स्याही और सुबह की सफ़ेदी है। (राजेअ : 1916)

الْخَيْطِ الأَسْوَدِ أَهُمَا الْخَيْطَانِ؟ قَالَ: ((إِنَّكَ لَعَرِيضُ الْقَفَا إِنْ أَبْصَرْتَ الْخَيْطَيْنِ))، ثُمَّ قَالَ : ((لاَ بَلْ هو سَوَادُ اللَّيْلِ وَبَيَاضُ النَّهَارِ)).[راجع: ١٩١٦]

लफ़्ज़ी तर्जुमा यूँ है तेरा सर पीछे की तरफ़ से बहुत चौड़ा है या'नी गुद्दी बहुत चौड़ी है अकषर ऐसा आदमी बेवक़ूफ़ होता है।

4511. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन मुत्रफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, उनसे हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई कि कुलू वशरबू हत्ता यतबय्यन लकुमुल्खैतुल्अब्यज़ु मिनल्खैतिल्अस्वदि और मिनल फ़ज्रि के अल्फ़ाज़ अभी नाज़िल नहीं हुए थे तो कई लोग जब रोज़ा रखने का इरादा करते तो अपने दोनों पैर में सफ़ेद और स्याह धागा बाँध लेते और फिर जब तक वो दोनों धागे साफ़ दिखाई देने न लग जाते बराबर खाते पीते रहते, फिर अल्लाह तआला ने मिनल फ़ज्रि के अल्फ़ाज़ उतारे तब उनको मा'लूम हुआ कि काले धागे से रात और सफ़ेद धागे से दिन मुराद है।

٤٥١١- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ، حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: وَأُنْزِلَتْ ﴿وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الأَسْوَدِ﴾ وَلَمْ يُنْزَلْ ﴿مِنَ الْفَجْرِ﴾ وَكَانَ رِجَالٌ إِذَا أَرَادُوا الصَّوْمَ رَبَطَ أَحَدُهُمْ فِي رِجْلَيْهِ الْخَيْطَ الأَبْيَضَ وَالْخَيْطَ الأَسْوَدَ وَلاَ يَزَالُ يَأْكُلُ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَهُ رُؤْيَتُهُمَا فَأَنْزَلَ اللهُ بَعْدَهُ ﴿مِنَ الْفَجْرِ﴾ فَعَلِمُوا أَنَّمَا يَعْنِي اللَّيْلُ مِنَ النَّهارِ.

बाब 29 : आयत 'व लैसल्बिर्रू बिअन तातुल्बुयूत' की तफ़्सीर

٢٩- باب قوله ﴿وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾

या'नी और ये तो कोई भी नेकी नहीं कि तुम घरों में उनकी पिछली दीवार की तरफ़ से आओ। अल्बत्ता नेकी ये है कि कोई शख़्स तक़्वा इख़्तियार करे और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम फ़लाह पा जाओ।

4512. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब लोग जाहिलियत में एहराम बाँध लेते तो घरों में पीछे की तरफ़ से छत पर चढ़कर दाख़िल होते। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि, और ये कोई नेकी नहीं है कि तुम घरों में उनके पीछे की तरफ़ से आओ, अल्बत्ता नेकी ये है कि कोई शख़्स तक़्वा इख़्तियार

٤٥١٢- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ: كَانُوا إِذَا أَحْرَمُوا فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَتَوُا الْبَيْتَ مِنْ ظَهْرِهِ، فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا، وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا﴾.

करे और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ। (राजेअ़ : 1803)

[راجع: ١٨٠٣]

अ़हदे जाहिलियत में एह़राम के बाद अगर वापसी की ज़रूरत होती तो लोग दरवाज़ों से न दाख़िल होते, बल्कि पीछे दीवार की त़रफ़ से आते, इस पर ये आयत नाज़िल हुई।

बाब 30 : आयत 'व क़ातिलूहूम हत्ता ला तकून फ़ित्ना' अल्ख़

٣٠- باب قوله ﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ للهِ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلاَ عُدْوَانَ إِلاَّ عَلَى الظَّالِمِينَ﴾

या'नी और उन काफ़िरों से लड़ो, यहाँ तक कि फ़ित्ना (शिर्क) बाक़ी न रह जाए और दीन अल्लाह ही के लिये रह जाए, सिवाय इसके अगर वो बाज़ आ जाएँ तो सख़्ती किसी पर भी नहीं बजुज़ (अपने ह़क़ में) ज़ुल्म करने वालों के।

4513. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे उ़बदुल्लाह उ़मरी ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से कि उनके पास इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) के फ़ित्ने के ज़माने में (जब उन पर ह़ज्जाज ज़ालिम ने ह़मला किया और मक्का का घेराव किया) दो आदमी (अ़ला बिन अ़रार और ह़ब्बान सल्मी) आए और कहा कि लोग आपस में लड़कर तबाह हो रहे हैं। आप उ़मर (रज़ि.) के स़ाह़बज़ादे और रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबी हैं फिर आप क्यूँ ख़ामोश हैं? इस फ़साद को दूर क्यूँ नहीं करते? इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मेरी ख़ामोशी की वजह स़िर्फ़ ये है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरे किसी भी भाई मुसलमान का ख़ून मुझ पर ह़राम क़रार दिया है। इस पर उन्होंने कहा, क्या अल्लाह तआ़ला ने ये इर्शाद नहीं फ़र्माया है कि, और उनसे लड़ो यहाँ तक कि फ़साद बाक़ी न रहे। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, हम (क़ुर्आन के हुक्म के मुत़ाबिक़) लड़े हैं, यहाँ तक कि फ़ित्ना या'नी शिर्क व कुफ़्र बाक़ी नहीं रहा और दीन ख़ालिस़ अल्लाह के लिये हो गया, लेकिन तुम लोग चाहते हो कि तुम इसलिये लड़ो कि फ़ित्ना व फ़साद पैदा हो और दीन इस्लाम ज़ईफ़ हो, काफ़िरों को जीत हो और अल्लाह के ख़िलाफ़ दूसरों का हुक्म सुना जाए। (राजेअ़ : 3130)

٤٥١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَتَاهُ رَجُلاَنِ فِي فِتْنَةِ ابْنِ الزُّبَيْرِ فَقَالاَ: إِنَّ النَّاسَ صَنَعُوا وَأَنْتَ ابْنُ عُمَرَ وَصَاحِبُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَخْرُجَ؟ فَقَالَ: يَمْنَعُنِي أَنَّ اللهَ حَرَّمَ دَمَ أَخِي فَقَالاَ : أَلَمْ يَقُلِ اللهُ ﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ﴾ فَقَالَ : قَاتَلْنَا حَتَّى لَمْ تَكُنْ فِتْنَةٌ، وَكَانَ الدِّينُ للهِ وَأَنْتُمْ تُرِيدُونَ أَنْ تُقَاتِلُوا حَتَّى تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِغَيْرِ اللهِ.

[راجع: ٣١٣٠]

4514. और उ़स्मान बिन स़ालेह ने ज़्यादा बयान किया कि उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्हें फ़लाँ शख़्स़ अ़ब्दुल्लाह बिन रबीआ़ और हैवा बिन शुरैह ने ख़बर दी, उन्हें बक्र बिन अ़म्र मआ़फ़िरी ने, उनसे बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि एक शख़्स़ (ह़कीम) इब्ने उ़मर (रज़ि.) की

٤٥١٤- وَزَادَ عُثْمَانُ بْنُ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي فُلاَنٌ وَحَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو الْمَعَافِرِيِّ أَنَّ بُكَيْرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَهُ عَنْ نَافِعٍ، أَنَّ

ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! तुमको क्या हो गया है कि तुम एक साल हज्ज करते हो और एक साल उमरह और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के रास्ते में जिहाद में शरीक नहीं होते। आपको ख़ुद मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला ने जिहाद की तरफ़ कितनी रग़बत दिलाई है। हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरे भतीजे! इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है। अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना, पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना, ज़कात देना और हज्ज करना। उन्होंने कहा, ऐ अब् अ़ब्दुर्रहमान! किताबुल्लाह में जो अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़र्माया क्या आपको वो मा'लूम नहीं है कि, मुसलमाना की दो जमाअ़त अगर आपस में जंग करें तो उनमें सुलह कराओ। अल्लाह तआ़ला के इर्शाद इला अम्रिल्लाह तक (और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि उनसे जंग करो) यहाँ तक कि फ़साद बाक़ी न रहे। हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) बोले कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के अहद में हम ये फ़र्ज़ अंजाम दे चुके हैं, उस वक़्त मुसलमान बहुत थोड़े थे, काफ़िरों का हुजूम था तो काफ़िर लोग मुसलमानों का दीन ख़राब करते थे, कहीं मुसलमानों को मार डालते, कहीं तकलीफ़ देते यहाँ तक कि मुसलमान बहुत हो गये फ़ित्ना जाता रहा। (राजेअ़ : 3130)

رَجُلاً أَتَى ابْنَ عُمَرَ فَقَالَ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ مَا حَمَلَكَ عَلَى أَنْ تَحُجَّ عَامًا وَتَعْتَمِرَ عَامًا وَتَتْرُكَ الْجِهَادَ فِي سَبِيلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَدْ عَلِمْتَ مَا رَغَّبَ اللهُ فِيهِ؟ قَالَ: يَا ابْنَ أَخِي بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ: إِيمَانٍ بِاللهِ وَرَسُولِهِ، وَالصَّلَوَاتِ الْخَمْسِ، وَصِيَامِ رَمَضَانَ، وَأَدَاءِ الزَّكَاةِ، وَحَجِّ الْبَيْتِ، قَالَ : يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَلاَ تَسْمَعُ مَا ذَكَرَ اللهُ فِي كِتَابِهِ ﴿وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا -إِلَى- أَمْرِ اللهِ﴾ ﴿قَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ﴾ قَالَ : فَعَلْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَكَانَ الإِسْلاَمُ قَلِيلاً فَكَانَ الرَّجُلُ يُفْتَنُ فِي دِينِهِ إِمَّا قَتَلُوهُ وَإِمَّا يُعَذِّبُوهُ حَتَّى كَثُرَ الإِسْلاَمُ فَلَمْ تَكُنْ فِتْنَةٌ.

[راجع: ٣١٣٠]

4515. फिर उस शख़्स ने पूछा अच्छा ये तो कहो कि उ़ष्मान और अ़ली (रज़ि.) के बाद में तुम्हारा क्या ए'तिक़ाद है। उन्होंने कहा उ़ष्मान (रज़ि.) का क़ुसूर अल्लाह ने मुआ़फ़ कर दिया लेकिन तुम उस मुआ़फ़ी को अच्छा नहीं समझते हो। अब रहे हज़रत अ़ली (रज़ि.) तो वो आँहज़रत (ﷺ) के चचाज़ाद भाई और आपके दामाद थे और हाथ के इशारे से बतलाया कि ये देखो उनका घर आँहज़रत (ﷺ) के घर से मिला हुआ है। (राजेअ़ : 08)

٤٥١٥– قَالَ فَمَا قَوْلُكَ فِي عَلِيٍّ وَعُثْمَانَ قَالَ: أَمَّا عُثْمَانُ فَكَانَ اللهُ عَفَا عَنْهُ، وَأَمَّا أَنْتُمْ فَكَرِهْتُمْ أَنْ يَعْفُوا عَنْهُ وَأَمَّا عَلِيٌّ فَابْنُ عَمِّ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَخَتَنُهُ وَأَشَارَ بِيَدِهِ فَقَالَ : هَذَا بَيْتُهُ حَيْثُ تَرَوْنَ.

[راجع: ٨]

तश्रीह : ख़ारजी मर्दूद हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) पर बहुत त़ान करते कि वो जंगे उहुद से भाग निकले थे। हज़रत अ़ली (रज़ि.) को भी इस वजह से बुरा जानते कि वो मुसलमानों से लड़े। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अह़सन तरीक़ पर उनका रद्द किया। ए'तिराज़ करने वाला ख़ारजी मर्दूद था और आयाते क़ुर्आनी को बेमह़ल पेश करता था। ऐसे लोग बहुत हैं जो बेमह़ल आयात का इस्ते'माल करके लोगों के लिये गुमराही का सबब बनते हैं। सच है, **युज़िल्लु बिही व यहदी बिही कष़ीरा** (अल बक़र : 26)

बाब 31 : आयत 'व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि

٣١– باب قَوْلِهِ: ﴿وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ

व ला तुल्क़ू बिअयदीकुम'

اللهِ وَلاَ تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ﴾ التَّهْلُكَةُ وَالْهَلاَكُ وَاحِدٌ.

अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी, और अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहो और अपने आपको अपने हाथों से हलाकत में न डालो और अच्छे काम करते रहो। अल्लाह अच्छे काम करने वालों को पसन्द करता है। तहलुका और हलाक के एक ही मा'नी हैं।

٤٥١٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سُلَيْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ ﴿وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللهِ وَلاَ تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ﴾ قَالَ: نَزَلَتْ فِي النَّفَقَةِ.

4516. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको नज़र ने ख़बर दी, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने अबू वाइल से सुना और उनसे हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि और अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहो और अपने को अपने हाथों से हलाकत में न डालो। अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के बारे में नाज़िल हुई थी।

तश्रीह : मतलब ये है कि बख़ीली करके अपने तईं हलाकत में मत डालो। इमाम मुस्लिम वग़ैरह ने अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) से रिवायत किया है कि एक मुसलमान रोम के काफिरों की सफ़ में घुस गया, लोगों ने कहा उसने अपने तईं हलाकत में डाला। अबू अय्यूब (रज़ि.) ने कहा आयत वला तुल्क़ू बिअयदीकुम इलत्तहलुका अल्बकरः (195) का ये मतलब नहीं है ये आयत हम अन्सारियों के बारे में उतरी जब मुसलमान बहुत हो गये तो हमने कहा अब हम घरों में रहकर अपने माल अस्बाब दुरुस्त करेंगे। उस वक़्त अल्लाह ने ये आयत उतारी तो तह्लिकतु से मुराद घरों में रहना और जिहाद छोड़ देना है। तफ़्सीर इब्ने जरीर में है कि एक शख़्स लड़ाई में काफ़िरों पर अकेला हमलावर हो गया और मारा गया, लोग कहने लगे उसने अपनी जान हलाकत में डाली।

٣٢- باب قوله ﴿فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ﴾

बाब 32 : आयत 'फ़मन कान मिन्कुम मरीज़न' की तफ़्सीर में या'नी,

लेकिन अगर तुममें से कोई बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ़ हो, उस पर एक मिस्कीन का खिलाना बतौर फ़िदया ज़रूरी है।

٤٥١٧- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَعْقِلٍ قَالَ: قَعَدْتُ إِلَى كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ الْكُوفَةِ فَسَأَلْتُهُ عَنْ فِدْيَةٍ مِنْ صِيَامٍ، فَقَالَ حُمِلْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَالْقَمْلُ يَتَنَاثَرُ عَلَى وَجْهِي فَقَالَ: ((مَا كُنْتُ أُرَى أَنَّ الْجَهْدَ قَدْ بَلَغَ بِكَ هَذَا أَمَا تَجِدُ شَاةً؟)) قُلْتُ: لاَ، قَالَ: ((صُمْ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ أَوْ أَطْعِمْ سِتَّةَ

4517. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्बहानी ने, कहा मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मअ़क़ल से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं कअ़ब बिन उ़जरह (रज़ि.) की ख़िदमत में इस मस्जिद में हाज़िर हुआ, उनकी मुराद कूफ़ा की मस्जिद से थी और उनसे रोज़े के फ़िदये के बारे में पूछा। उन्होंने बयान किया कि मुझे एहराम में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लोग ले गये और जूएँ (सर से) मेरे चेहरे पर गिर रही थीं, आपने फ़र्माया कि मेरा ख़याल ये नहीं था, कि तुम इस हद तक तकलीफ़ में मुब्तला हो गये हो तुम कोई बकरी नहीं मुहय्या कर सकते? मैंने अ़र्ज़ किया कि नहीं। फ़र्माया, फिर तीन दिन के रोज़े रख लो या छः मिस्कीनों को खाना खिलाओ, हर मिस्कीन को आधा साअ़

خانا खिलाना और अपना सर मुँडवा लो। कअ़ब (रज़ि.) ने कहा तो ये आयत ख़ास़ मेरे बारे में नाज़िल हुई थी और उसका हुक्म तुम सबके लिये आ़म है। (राजेअ़ : 1814)

مَسَاكِينَ، لِكُلِّ مِسْكِينٍ نِصْفُ صَاعٍ مِنْ طَعَامٍ وَاحْلِقْ رَأْسَكَ)) فَنَزَلَتْ فِيَّ خَاصَّةً وَهْيَ لَكُمْ عَامَّةً)). [راجع: ١٨١٤]

बाब 33 : आयत 'फ़मन तमत्तअ़ बिल्उम्रति इलल्हज्जि' की तफ़्सीर या'नी,

٣٣- باب قوله ﴿فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ﴾

तो फिर जो शख़्स़ उ़मरह को ह़ज्ज के साथ मिलाकर फ़ायदा उठाए

4518. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इमरान अबीबक्र ने, उनसे अबू रजाअ ने बयान किया और उनसे इ़मरान बिन हुस़ैन (रज़ि.) ने बयान किया कि (ह़ज्ज में) तमत्तोअ़ का हुक्म क़ुर्आन में नाज़िल हुआ और हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ तमत्तोअ़ के साथ (ह़ज्ज) किया, फिर उसके बाद क़ुर्आन ने उससे नहीं रोका और न उससे हुज़ूर (ﷺ) ने रोका, यहाँ तक कि आपकी वफ़ात हो गई (लिहाज़ा तमत्तोअ़ अब भी जाइज़ है) ये तो एक स़ाह़ब ने अपनी राय से जो चाहा कह दिया है। (राजेअ़ : 1571)

٤٥١٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عِمْرَانَ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: أُنْزِلَتْ آيَةُ الْمُتْعَةِ فِي كِتَابِ اللهِ فَفَعَلْنَاهَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَمْ يُنْزَلْ قُرْآنٌ يُحَرِّمُهُ وَلَمْ يَنْهَ عَنْهَا حَتَّى مَاتَ قَالَ رَجُلٌ بِرَأْيِهِ مَا شَاءَ. قَالَ مُحَمَّدٌ: يُقَالُ إِنَّهُ عُمَرُ. [راجع: ١٥٧١]

तश्रीह : एक साह़ब से मुराद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) हैं, जिनकी राय तमत्तोअ़ के ख़िलाफ़ थी। ह़ज़रत इ़मरान बिन हुस़ैन (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इस ख़्याल को उनकी राय क़रार दिया और क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ उसे तस्लीम नहीं किया। इससे मुक़ल्लिदीन को सबक़ लेना चाहिये। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की राय जो ख़ुल्फ़ा-ए-राशिदीन में से हैं क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ तस्लीम के लायक़ न ठहरी तो दूसरे मुज्तहिदीन किस गिनती व शुमार में हैं। उनकी राय जो ह़दीष़ के ख़िलाफ़ हो तस्लीम के क़ाबिल है। ख़ुद उन्ही ने ऐसी वसिय्यत फ़र्माई है। लफ़्ज़े मुत्आ से ह़ज्जे तमत्तोअ़ मुराद है।

बाब 34 : आयत 'लैस अ़लैकुम जुनाहुन अन तब्तग़ू फ़ज़्लम्मिर्रब्बिकुम' की तफ़्सीर

٣٤- باب قوله ﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلاً مِنْ رَبِّكُمْ﴾

या'नी तुम्हें इस बारे में कोई ह़र्ज नहीं कि तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल या'नी मआ़श को तलाश करो।

4519. मुझसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने उ़ययना ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़काज़, मजन्नह और ज़ुल मजाज़ ज़मान-ए-जाहिलियत के बाज़ार (मेले) थे, इसलिये (इस्लाम के बाद) मौसमे ह़ज्ज में स़ह़ाबा (रज़ि.) ने वहाँ कारोबार को बुरा समझा तो आयत नाज़िल हुई कि, तुम्हें इस बारे में कोई ह़र्ज नहीं कि तुम अपने परवरदिगार के यहाँ से तलाशे मआ़श करो।

٤٥١٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَتْ عُكَاظُ، وَمَجَنَّةُ، وَذُو الْمَجَازِ أَسْوَاقًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَتَأَثَّمُوا أَنْ يَتَّجِرُوا فِي الْمَوَاسِمِ فَنَزَلَتْ : ﴿لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلاً مِنْ

या'नी मौसमे ह़ज्ज में तिजारत के लिये मज़्कूरा मण्डियों में जाओ। (राजेअ़ : 1770)

رَبِّكُمْ﴾ فِي مَوَاسِمِ الْحَجِّ.
[راجع: ١٧٧٠]

तिजारत को बत़ौरे शुग़्ल इख़्तियार करना ला'नत है। वो तिजारत मुराद है जिसमें अल्लाह से ग़ाफ़िल हो जाए और रिज़्क़े ह़लाल को फ़ज़्लुल्लाह क़रार दिया गया है। यहाँ तक कि मौसमे ह़ज्ज में भी उसके लिये हुक्म दिया गया है। जिससे तिजारत की अहमियत बहुत ज़्यादा षाबित होती है।

बाब 35 : आयत 'षुम्म अफ़ीज़ु मिन हैषु अफ़ाजन्नास' की तफ़्सीर

٣٥- باب ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ﴾

फिर तुम भी वहाँ जाकर लौट आओ जहाँ से लोग लौट आते हैं

4520. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मुहम्मद बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने कि क़ुरैश और उनके त़रीक़े की पैरवी करने वाले अ़रब (ह़ज्ज के लिये) मुज़दलिफ़ा में ही वक़ूफ़ किया करते थे, उसका नाम उन्होंने अल ह़िम्स रखा था और बाक़ी अ़रब अ़रफ़ात के मैदान में वक़ूफ़ करते थे। फिर जब इस्लाम आया तो अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) को हुक्म दिया कि आप अ़रफ़ात में आएँ और वहीं वक़ूफ़ करें और फिर वहाँ से मुज़दलिफ़ा आएँ। आयत षुम्मा अफ़ीज़ू मिन ह़यषु अफ़ाज़न्नास से यही मुराद है। (राजेअ़ : 1665)

٤٥٢٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَازِمٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ: كَانَتْ قُرَيْشٌ وَمَنْ دَانَ دِينَهَا يَقِفُونَ بِالْمُزْدَلِفَةِ وَكَانُوا يُسَمَّوْنَ الْحُمْسَ، وَكَانَ سَائِرُ الْعَرَبِ يَقِفُونَ بِعَرَفَاتٍ، فَلَمَّا جَاءَ الإِسْلاَمُ أَمَرَ اللهُ نَبِيَّهُ ﷺ أَنْ يَأْتِيَ عَرَفَاتٍ ثُمَّ يَقِفَ بِهَا ثُمَّ يُفِيضَ مِنْهَا فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ﴾. [راجع: ١٦٦٥]

क़ुरैश को भी अ़रफ़ात में वक़ूफ़ का हुक्म दिया गया। अल ह़िम्स के मा'नी दीन में पक्के और सख़्त के हैं। उन लोगों का ख़्याल ये था कि हम क़ुरैश ह़रम के ख़ादिम हैं। ह़रम की सरह़द से हम बाहर नहीं जाते। अ़रफ़ात ह़ल में है या'नी ह़रम की सरह़द से बाहर है। क़ुरैश के इस ग़लत़ ख़्याल की इस्लाह़ की गई और सबके लिये अ़रफ़ात ही का वक़ूफ़ वाजिब क़रार पाया।

4521. मुझसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको कुरैब ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि (जो कोई तमत्तोअ़ करे उ़मरह करके एह़राम खोल डाले वो) जब तक ह़ज्ज का एह़राम न बाँधे बैतुल्लाह का नफ़्ल त़वाफ़ करता रहे। जब ह़ज्ज का एह़राम बाँधे और अ़रफ़ात जाने को सवार हो तो ह़ज्ज के बाद जो क़ुर्बानी हो सके वो करे, ऊँट हो या गाय या बकरी। उन तीनों मे से जो हो सके अगर क़ुर्बानी मुयस्सर न हो तो तीन रोज़े ह़ज्ज के दिनों में

٤٥٢١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، أَخْبَرَنِي كُرَيْبٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: تَطَوَّفُ الرَّجُلُ بِالْبَيْتِ مَا كَانَ حَلاَلاً حَتَّى يُهِلَّ بِالْحَجِّ فَإِذَا رَكِبَ إِلَى عَرَفَةَ فَمَنْ تَيَسَّرَ لَهُ هَدِيَّةٌ مِنَ الإِبِلِ أَوِ الْبَقَرِ أَوِ الْغَنَمِ مَا تَيَسَّرَ لَهُ مِنْ ذَلِكَ أَيَّ ذَلِكَ شَاءَ غَيْرَ إِنْ لَمْ يَتَيَسَّرْ لَهُ فَعَلَيْهِ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ فِي

الْحَجَّ وَذَٰلِكَ قَبْلَ يَوْمِ عَرَفَةَ، فَإِنْ كَانَ آخِرُ يَوْمٍ مِنَ الأَيَّامِ الثَّلاثَةِ يَوْمَ عَرَفَةَ فَلا جُنَاحَ عَلَيْهِ ثُمَّ لِيَنْطَلِقْ حَتَّى يَقِفَ بِعَرَفَاتٍ مِنْ صَلاةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ يَكُونَ الظَّلامُ، ثُمَّ لِيَدْفَعُوا مِنْ عَرَفَاتٍ إِذَا أَفَاضُوا مِنْهَا حَتَّى يَبْلُغُوا جَمْعًا الَّذِي يَبِيتُونَ بِهِ ثُمَّ لِيَذْكُرِ اللهَ كَثِيرًا، وَأَكْثِرُوا التَّكْبِيرَ وَالتَّهْلِيلَ قَبْلَ أَنْ تُصْبِحُوا، ثُمَّ أَفِيضُوا فَإِنَّ النَّاسَ كَانُوا يُفِيضُونَ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللهَ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ حَتَّى تَرْمُوا الْجَمْرَةَ.

रखे। अरफ़ा के दिन से पहले अगर आख़िर रोज़ा अरफ़ा के दिन आ जाए तब भी कोई क़बाहत नहीं शहरे मक्का से चलकर अरफ़ात को जाए वहाँ अस्र की नमाज़ से रात की तारीकी होने तक ठहरे, फिर अरफ़ात से उस वक़्त लौटे जब दूसरे लोग लौटें और सब लोगों के साथ रात मुज़दलिफ़ा में गुज़ारे और अल्लाह की याद और तक्बीर और तह्लील बहुत करता रहे सुबह होने तक। सुबह को लोगों के साथ मुज़दलिफ़ा से मिना को लौटे जैसे अल्लाह ने फ़र्माया, 'षुम्मा अफ़ीज़ू मिन हैषु अफ़ाज़न्नासु' अल आयति या'नी कंकरियाँ मारने तक उसी तरह अल्लाह की याद और तक्बीर व तह्लील करते रहो।

٣٦- باب قوله ﴿وَمِنْهُم مَنْ يَقُولُ: رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

बाब 36 : आयत 'व मिन्हुम मंय्यकूलु रब्बना आतिना फिद्दुनिया' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

और कुछ उनमे ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको दुनिया में बेहतरी दे और आख़िरत में भी बेहतरी दे और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा.

٤٥٢٢- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)). [طرفه في :٦٣٨٥].

4522. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दुआ करते थे, ऐ परवरदिगार! हमारे हमको दुनिया में भी बेहतरी दे और आख़िरत में भी बेहतरी और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (दीगर मक़ाम : 6375)

तश्रीह : ये दुआ बड़ी अहमियत रखती है। जिसे बकषरत पढ़ना दीन और दुनिया में बहुत सी बरकतों का ज़रिया है। कुर्आन मजीद मे इससे पहले कुछ ऐसे लोगों का ज़िक्र है जो हज्ज में ख़ाली दुनियावी मफ़ाद की दुआएँ करते और आख़िरत को बिलकुल भूल जाते थे। मुसलमानों को ये दुआ सिखाई गई कि वो दुनिया के साथ आख़िरत की भी भलाई मांगे। इस आयत का शाने नुज़ूल यही है। अरफ़ात में भी ज़्यादातर इस दुआ की फ़ज़ीलत है।

باب قوله ﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾

وَقَالَ عَطَاءٌ: النَّسْلُ: الْحَيَوَانُ.

बाब 37 : आयत 'व हुव अलद्दुल्ख़िसाम' की तफ़्सीर

या'नी हालाँकि वो बहुत ही सख़्त क़िस्म का झगड़ालू है। अ़ता

ने कहा कि अल्लाह तआला का इर्शाद व युहलिकुल्हर्ष वन्नस्ल में नस्ल से मुराद जानवर है।

4523. हमसे क़ुबैसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा शख़्स वो है जो सख़्त झगड़ालू हो। और अ़ब्दुल्लाह (बिन वलीद अ़दनी) ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (वही ह़दीष़ जो ऊपर गुज़री) (राजेअ: 2457)

٤٥٢٣- حدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ تَرْفَعُهُ أَبْغَضُ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الأَلَدُّ الْخَصِمُ. وَقَالَ عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٤٥٧]

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अ़ब्दुल्लाह बिन वलीद की सनद इसलिये बयान की कि उसमें ह़दीष़ के मर्फ़ूअ होने की स़राह़त है। ये सुफ़यान ष़ौरी की जामेअ़ में मौस़ूलन है।

बाब 38 : आयत 'अम हसिब्तुम अन्तदख़ुलुल्जन्नत' अल्ख़ की तफ़्सीर में या'नी

क्या तुम ये गुमान रखते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे। ह़ालाँकि अभी तुमको उन लोगों जैसे ह़ालात पेश नहीं आए जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, उन्हें तंगी और सख़्ती पेश आई, आख़िर आयत तक।

٣٨- باب قوله ﴿أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ - إِلَى - قَرِيبٌ﴾

4524. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना, बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) सूरह यूसुफ़ की आयत इज़्स्तयअसर्रूसुलु व ज़न्नू अन्नहुम क़द कुज़िबू (में कुज़िबू को ज़ाल की) तख़्फ़ीफ़ के साथ क़िरात किया करते थे, आयत का जो मफ़्हूम वो मुराद ले सकते थे लिया, उसके बाद यूँ तिलावत करते। हत्ता यक़ूलर्रूसुलु वल्लज़ीन आमनू मअ़हू मता नस्रूल्लाहि अला इन्न नस्रल्लाहि करीब फिर मेरी मुलाक़ात उ़र्वा बिन ज़ुबैर से हुई, तो मैंने उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर का ज़िक्र किया।

٤٥٢٤- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ يَقُولُ : قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿حَتَّى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا﴾ خَفِيفَةً ذَهَبَ بِهَا هُنَاكَ وَتَلاَ : ﴿حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللهِ أَلاَ إِنَّ نَصْرَ اللهِ قَرِيبٌ﴾. فَلَقِيتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ فَذَكَرْتُ لَهُ ذَلِكَ.

4525. उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) तो कहती थीं अल्लाह की पनाह! पैग़म्बर तो जो वा'दा अल्लाह ने

٤٥٢٥- فَقَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ: مَعَاذَ اللهِ، وَاللهِ مَا وَعَدَ اللهُ رَسُولَهُ مِنْ شَيْءٍ قَطُّ إِلاَّ

उनसे किया है उसको समझते हैं कि वो मरने से पहले ज़रूर पूरा होगा। बात ये है कि पैग़म्बरों की आज़माइश बराबर होती रही है। (मदद आने में इतनी देर हुई) कि पैग़म्बर डर गये। ऐसा न हो उनकी उम्मत के लोग उनको झूठा समझ लें तो हज़रत आइशा रज़ि. इस आयत सूरह यूसुफ़) को यूँ पढ़ती थीं। वज़न्नू अन्नहुम क़द कुज़्ज़िबू। (ज़ाल की तशदीद के साथ) (राजेअ़ : 3389)

عَلِمَ أَنَّهُ كَائِنٌ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ، وَلَكِنْ لَمْ يَزَلِ الْبَلاَءُ بِالرُّسُلِ حَتَّى خَافُوا أَنْ يَكُونَ مَنْ مَعَهُمْ يُكَذِّبُونَهُمْ، فَكَانَتْ تَقْرَؤُهَا ﴿وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا﴾ مُثَقَّلَةً.

[راجع: ٣٣٨٩]

तश्रीह : तो मत़लब ये होगा कि नबियों को ये डर हुआ कि उनकी उम्मत के लोग उनको झूठा कहेंगे। मशहूर क़िरात तख़्फ़ीफ़ के साथ है। इस सूरत में कुछ ने यूँ मा'नी किये हैं कि उनकी क़ौम के लोग ये समझे कि पैग़म्बरों से जो वा'दा किया था वो ग़लत़ था ह़ालाँकि पैग़म्बरों को अल्लाह के वा'दा में शक व शुब्हा नहीं हुआ करता वो बहुत पुख़्ता ईमान और यक़ीन वाले होते हैं।

बाब 39 : आयत 'निसाउकुम हर्षुल्लकुम फातू हर्षकुम अन्ना शिअतुम' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

٣٩- باب قوله تعالى ﴿نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ وَقَدِّمُوا لأَنْفُسِكُمْ﴾ الآيَةَ.

तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारी खेती हैं, सो तुम अपने खेत में आओ जिस त़रह से चाहो, और अपने ह़क़ में आख़िरत के लिये कुछ नेकियाँ करते रहो।

4526. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको नज़र बिन शुमैल ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह इब्ने औ़न ने ख़बर दी, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि जब इब्ने उ़मर (रज़ि.) क़ुर्आन पढ़ते तो और कोई लफ़्ज़ ज़ुबान पर नहीं लाते यहाँ तक कि तिलावत से फ़ारिग़ हो जाते। एक दिन मैं (क़ुर्आन मजीद लेकर) उनके सामने बैठ गया और उन्होंने सूरह बक़र: की तिलावत शुरू की, जब इस आयत निसाउकुम ह़रषुल लकुम अल्ख़ पर पहुँचे तो फ़र्माया, मा'लूम है ये आयत किसके बारे में नाज़िल हुई थी? मैंने अ़र्ज़ किया कि नहीं, फ़र्माया कि फ़लाँ फ़लाँ चीज़ (या'नी औ़रत से पीछे की त़रफ़ से जिमाअ़ करने के बारे में) नाज़िल हुई थी और फ़िर तिलावत करने लगे। (दीगर मक़ाम : 4527)

٤٥٢٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ بْنُ شُمَيْلٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِذَا قَرَأَ الْقُرْآنَ لَمْ يَتَكَلَّمْ حَتَّى يَفْرُغَ مِنْهُ فَأَخَذْتُ عَلَيْهِ يَوْمًا، فَقَرَأَ سُورَةَ الْبَقَرَةِ حَتَّى انْتَهَى إِلَى مَكَانٍ قَالَ : تَدْرِي فِيمَا أُنْزِلَتْ؟ قُلْتُ : لاَ. قَالَ : أُنْزِلَتْ فِي كَذَا وَكَذَا ثُمَّ مَضَى.

[طرفه في :٤٥٢٧].

4527. और अ़ब्दुस् स़मद बिन अ़ब्दुल वारिष़ से रिवायत है, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि आयत, सो तुम अपने खेत में आओ जिस त़रह चाहो। के बारे में फ़र्माया कि (पीछे से भी) आ सकता है। और इस ह़दीष़ को मुह़म्मद बिन यह्या बिन सईद बिन क़त़्त़ान ने भी अपने वालिद

٤٥٢٧- وَعَنْ عَبْدِ الصَّمَدِ حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنِي أَيُّوبُ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ ﴿فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ﴾ قَالَ: يَأْتِيهَا فِي. رَوَاهُ مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ

से, उन्होंने उबैदुल्लाह से, उन्होंने नाफ़ेअ से और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 4526)

عُمَرَ.
[راجع: ٤٥٢٦]

तश्रीह़ : आयते मज़्कूरा में **अन्ना शिअतुम** से मुराद ये है कि जिस त़रह़ चाहो लिटाकर, बिठाकर, खड़ा करके अपनी औरत से जिमाअ़ कर सकते हो। लफ़्ज़े ह़रषकुम (खेती) बतला रहा है कि उससे वत़ी फ़िद् दुबुर मुराद नहीं है क्योंकि दुबुर खेती नहीं है। ये आयत यहूदियों की तर्दीद में नाज़िल हुई जो कहा करते थे कि औरत से अगर शर्मगाह में पीछे से जिमाअ़ किया जाए तो लड़का भेंगा पैदा होता है जिन लोगों ने इस आयत से वत़ी फ़िद् दुबुर का जवाज़ निकाला है उनका ये इस्तिदलाल स़ह़ीह़ नहीं है। दुबुर में जिमाअ़ करने वालों पर अल्लाह की ला'नत होती है। तिर्मिज़ी ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला है कि अल्लाह उस शख़्स की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं करेगा जो किसी मर्द या औरत से दुबुर मे ज़िमाअ़ करे। ये फ़ेअ़ल बहुत गंदा और ख़िलाफ़े इंसानियत भी है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसे बुरे काम से बचाए, आमीन।

٤٥٢٨- حدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ، سَمِعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتِ الْيَهُودُ تَقُولُ إِذَا جَامَعَهَا مِنْ وَرَائِهَا جَاءَ الْوَلَدُ أَحْوَلَ، فَنَزَلَتْ: ﴿نِسَاءُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُمْ﴾.

4528. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने और उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि यहूदी कहते थे कि अगर औरत से हमबिस्तरी के लिये कोई पीछे से आएगा तो बच्चा भेंगा पैदा होगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि, तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारी खेती हैं, सो अपने खेत में आओ जिधर से चाहो।

मुराद ये है कि लेटे, खड़े जिस त़रह़ चाहो अपनी बीवियो से जिमाअ़ कर सकते हो। दुबुर में जिमाअ़ करना शरअ़न क़त़अ़न ह़राम है और ख़िलाफ़े इंसानियत। ये ऐसा काम है जिसकी मज़म्मत में बहुत सी अह़ादीष़ वारिद हैं। क़ौमे लूत़ का ये फ़ेअ़ल था कि वो लड़कों से बद फ़ेअ़ली करते थे। अल्लाह तआ़ला ने उन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल किया कि उनकी बस्तियों को बर्बाद कर दिया और ऐसे बदकारों के लिये उनको इ़बरत बना दिया। आज भी बहुत से लोग ऐसी ख़बीष़िया आ़दत में मुब्तला होकर अल्लाह की ला'नत के मुस्तह़िक़ हो रहे हैं।

٤٠- باب قوله ﴿وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ﴾

बाब 40 : 'व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसाअ फबलगन अजलहुन्न' अल आयत की तफ़्सीर या'नी,

और जब तुम औरतों को त़लाक़ दे चुको और फिर वो अपनी मुद्दत को पहुँच चुकें तो तुम उन्हें उससे मत रोको कि वो अपने पहले शौहर से फिर निकाह़ कर लें। इस आयत की शाने नुज़ूल ह़दीष़े ज़ेल में मज़्कूर है।

٤٥٢٩- حدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ رَاشِدٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَعْقِلُ بْنُ يَسَارٍ قَالَ : كَانَتْ لِي أُخْتٌ تُخْطَبُ إِلَيَّ. وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ عَنْ يُونُسَ، عَنِ الْحَسَنِ حَدَّثَنِي مَعْقِلُ بْنُ يَسَارٍ ح.

4529. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर अ़क़्दी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्बाद बिन राशिद ने बयान किया, कहा हमसे ह़सन ने बयान किया, कहा कि मुझसे मअ़क़िल बिन यसार (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मेरी एक बहन थीं। उनको उनके अगले शौहर ने निकाह़ का पैग़ाम दिया (दूसरी सनद) और इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने और

حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ، أَنَّ أُخْتَ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ طَلَّقَهَا زَوْجُهَا فَتَرَكَهَا حَتَّى انْقَضَتْ عِدَّتُهَا فَخَطَبَهَا فَأَبَى مَعْقِلٌ فَنَزَلَتْ ﴿فَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ﴾.

[أطرافه في: ٥١٣٠، ٥٣٣٠، ٥٣٣١].

उनसे मअ़क़िल बिन यसार (रज़ि.) ने बयान किया (तीसरी सनद) और इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिस़ ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया और उनसे इमाम हसन बस़री (रह) ने कि मअ़क़िल बिन यसार (रज़ि.) की बहन को उनके शौहर ने त़लाक़ दे दी थी लेकिन जब इद्दत पूरी हो गई और त़लाक़ बाइन हो गई तो उन्होंने फिर उनके लिये पैग़ामे निकाह भेजा। मअ़क़िल (रज़ि.) ने उस पर इंकार किया, मगर औरत चाहती थी तो ये आयत नाज़िल हुई कि, तुम उन्हें उससे मत रोको कि वो अपने पहले शौहर से दोबारा निकाह करें। (दीगर मक़ाम : 5130, 5330, 5331)

तश्रीह : या'नी औरतें अगर अपने अगले शौहरों से निकाह करना चाहें तो उनको मत रोको। आयत में मुख़ात़ब औरतों के औलिया हैं। इब्राहीम बिन त़हमान की रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह) ने किताबुन् निकाह में वस़्ल किया है। वहीं मअ़क़िल (रज़ि.) की बहन और उसके शौहर का नाम भी मज़्कूर है। हुक्मे मज़्कूरा त़लाक़े रजई के लिये है और त़लाक़े बाइन के लिये भी जबकि शरई हलाला के बाद औरत पहले शौहर से निकाह करना चाहे तो उसे रोकना न चाहिये, अज़्ख़ुद हलाला करने कराने वालों पर अल्लाह की ला'नत होती है।

٤١- باب قوله

﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا -إِلَى- بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ﴾. يَعْفُونَ: يَهَبْنَ.

बाब 41 : 'वल्लज़ीन यतवफ्फौन मिन्कुम व यज़रून अज़्वाजा' अल आयत की तफ़्सीर,

और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ तो वो बीवियाँ अपने आपको चार महीने और दस दिन तक रोके रखें। आख़िर आयत बिमा तअ़मलून ख़बीर तक। यअ़फ़ूना बमा'नी यहिब्ना (या'नी हिबा कर दें बख़्श दें)

तश्रीह : पहले शुरू इस्लाम में ये हुक्म हुआ कि लोग मरते वक़्त अपनी बीवियों के लिये एक साल घर में रखने और उनको नान नफ़्क़ा देने की वसिय्यत कर जाएँ, फिर उसके बाद दूसरी आयत चार महीने दस दिन इद्दत की उतरी और पहला हुक्म नासिख़ हो गया।

٤٥٣٠- حَدَّثَنِي أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ حَبِيبٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ: قُلْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ: ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا﴾ قَالَ: قَدْ نَسَخَتْهَا الآيَةُ الأُخْرَى، فَلِمَ تَكْتُبُهَا أَوْ تَدَعُهَا قَالَ يَا ابْنَ أَخِي: لاَ أُغَيِّرُ شَيْئًا مِنْهُ مِنْ مَكَانِهِ.

[طرفه في: ٤٥٣٦].

4530. हमसे उमय्या बिन बिस्ताम ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरेअ़ ने, उनसे हबीब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आयत वल्लज़ीन यतूफ़ूना मिन्कुम या'नी और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाते हैं और बीवियाँ छोड़ जाते हैं, के बारे में उ़स़्मान (रज़ि.) से अ़र्ज़ किया कि इस आयत को दूसरी आयत ने मन्सूख़ कर दिया है। इसलिये आप इसे (मुस़्हफ़ में) न लिखें या (ये कहा कि) न रहने दें। इस पर उ़स़्मान (रज़ि.) ने कहा कि बेटे! मैं (क़ुर्आन का) कोई हर्फ़ उसकी जगह से नहीं हटा सकता। (दीगर मक़ाम : 4536)

तश्रीह : मन्सूख़ होने की तफ़्सील ये है कि कुछ आयात हुक्म और तिलावत दोनों त़रह़ से मन्सूख़ हो गई हैं। उनको क़ुर्आन शरीफ़ में दर्ज नहीं किया गया और कुछ आयात ऐसी हैं कि उनका हुक्म बाक़ी है और तिलावत मन्सूख़ है, कुछ ऐसी हैं जिनका हुक्म मन्सूख़ है और तिलावत बाक़ी है। ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की मुराद उन ही आयात से थी जिनको तिलावत के लिये बाक़ी रखा गया और हुक्म के लिह़ाज़ से वो मन्सूख़ हो चुकी हैं ।

٤٥٣١- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا شِبْلٌ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ: ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا﴾ قَالَ: كَانَتْ هَذِهِ الْعِدَّةُ تَعْتَدُّ عِنْدَ أَهْلِ زَوْجِهَا وَاجِبٌ، فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَعْرُوفٍ﴾ قَالَ: جَعَلَ اللهُ لَهَا تَمَامَ السَّنَةِ سَبْعَةَ أَشْهُرٍ وَعِشْرِينَ لَيْلَةً وَصِيَّةً إِنْ شَاءَتْ سَكَنَتْ فِي وَصِيَّتِهَا وَإِنْ شَاءَتْ خَرَجَتْ وَهُوَ قَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿غَيْرَ إِخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ﴾ فَالْعِدَّةُ كَمَا هِيَ وَاجِبٌ عَلَيْهَا زَعَمَ ذَلِكَ عَنْ مُجَاهِدٍ وَقَالَ عَطَاءٌ : قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ نَسَخَتْ هَذِهِ الآيَةُ عِدَّتَهَا عِنْدَ أَهْلِهَا فَتَعْتَدُّ حَيْثُ شَاءَتْ وَهُوَ قَوْلُ اللهِ تَعَالَى : ﴿غَيْرَ إِخْرَاجٍ﴾ قَالَ عَطَاءٌ : إِنْ شَاءَتِ اعْتَدَّتْ عِنْدَ أَهْلِهِ وَسَكَنَتْ فِي وَصِيَّتِهَا وَإِنْ شَاءَتْ خَرَجَتْ لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ﴾ قَالَ عَطَاءٌ : ثُمَّ جَاءَ الْمِيرَاثُ فَنَسَخَ السُّكْنَى فَتَعْتَدُّ حَيْثُ شَاءَتْ وَلاَ

4531. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ बिन उ़बादा ने बयान किया, कहा हमसे शिब्ल बिन अ़ब्बाद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुजैह़ ने और उनसे मुजाहिद ने आयत, और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाते हैं और बीवियाँ छोड़ जाते हैं के बारे में (ज़मान-ए-जाहिलियत की त़रह़) कहा कि इ़द्दत (या'नी चार महीने दस दिन की) थी जो शौहर के घर औ़रत को गुज़ारनी ज़रूरी थी। फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, और जो लोग तुममें से वफ़ात पा जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ उनको चाहिये कि अपनी बीवियों के ह़क़ में नफ़ा उठाने की वस़िय्यत (कर जाएँ) कि वो एक साल तक घर से न निकाली जाएँ, लेकिन अगर वो (ख़ुद) निकल जाएँ तो कोई गुनाह तुम पर नहीं। अगर वो दस्तूर के मुवाफ़िक़ अपने लिये कोई काम करे। फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने औ़रत के लिये सात महीने और बीस दिन वस़िय्यत के क़रार दिये कि अगर वो इस मुद्दत में चाहे तो अपने लिये वस़िय्यत के मुत़ाबिक़ (शौहर के घर में ही) ठहरे और अगर चाहे तो कहीं और चली जाए कि अगर ऐसी औ़रत कहीं और चली जाए तो तुम्हारे ह़क़ में कोई गुनाह नहीं। पस इ़द्दत के अय्याम तो वही हैं जिन्हें गुज़ारना उस पर ज़रूरी है (या'नी चार महीने दस दिन) शिब्ल ने कहा इब्ने अबी नुजैह़ ने मुजाहिद से ऐसा ही नक़ल किया है और अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने कहा कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, इस आयत ने इस रस्म को मन्सूख़ कर दिया कि औ़रत अपने शौहर के घर वालों के पास इ़द्दत गुज़ारे। इस आयत की रू से औ़रत को इख़्तियार मिला जहाँ चाहे वहाँ इ़द्दत गुज़ारे और अल्लाह पाक के क़ौल ग़ैर इख़राज का यही मत़लब है। अ़त़ा ने कहा, औ़रत अगर चाहे तो अपने शौहर के घर वालों में इ़द्दत गुज़ारे और शौहर की वस़िय्यत के मुवाफ़िक़ उसी के घर में रहे और अगर चाहे तो वहाँ से निकल जाए क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया अगर वो निकल जाएँ तो दस्तूर के मुवाफ़िक़ अपने ह़क़ में जो बात करें उसमें कोई गुनाह तुम पर नहीं होगा। अ़त़ा ने कहा कि फिर मीराष़ का हुक्म

سُكْنَى لَهَا، وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ يُوسُفَ حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنِ ابْنِ نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ بِهَذَا. وَعَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : نَسَخَتْ هَذِهِ الآيَةُ عِدَّتَهَا فِي أَهْلِهَا فَتَعْتَدُّ حَيْثُ شَاءَتْ لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿غَيْرَ إِخْرَاجٍ﴾ نَحْوَهُ.

[طرفه في : ٥٣٤٤].

नाज़िल हुआ जो सूरह निसा में है और उसने (औरत के लिये) घर में रखने के हुक्म को मन्सूख़ क़रार दे दिया। अब औरत जहाँ चाहे इद्दत गुज़ार सकती है। उसे मकान का ख़र्चा देना ज़रूरी नहीं और मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने रिवायत किया, उनसे वरक़ा बिन अम्र ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने और उनसे मुजाहिद ने, यही क़ौल बयान किया और फ़रज़न्दाने इब्ने अबी नुजैह से नक़ल किया, उनसे अता बिन अबी रिबाह ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि इस आयत ने सिर्फ़ शौहर के घर में इद्दत के हुक्म को मन्सूख़ क़रार दिया है। अब वो जहाँ चाहे इद्दत गुज़ार सकती है। जैसा कि अल्लाह तआला के इर्शाद ग़ैरा इख़राज वग़ैरह से षाबित है। (दीगर मुक़ाम : 5344)

٤٥٣٢- حَدَّثَنَا حِبَّانُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى مَجْلِسٍ فِيهِ عُظْمٌ مِنَ الأَنْصَارِ وَفِيهِمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي لَيْلَى فَذَكَرْتُ حَدِيثَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ فِي شَأْنِ سُبَيْعَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ : وَلَكِنْ عَمُّهُ كَانَ لاَ يَقُولُ ذَلِكَ فَقُلْتُ إِنِّي لَجَرِيءٌ إِنْ كَذَبْتُ عَلَى رَجُلٍ فِي جَانِبِ الْكُوفَةِ وَرَفَعَ صَوْتَهُ، قَالَ : ثُمَّ خَرَجْتُ فَلَقِيتُ مَالِكَ بْنَ عَامِرٍ أَوْ مَالِكَ بْنَ عَوْفٍ قُلْتُ: كَيْفَ كَانَ قَوْلُ ابْنِ مَسْعُودٍ فِي الْمُتَوَفَّى عَنْهَا زَوْجُهَا وَهِيَ حَامِلٌ؟ فَقَالَ : قَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ أَتَجْعَلُونَ عَلَيْهَا التَّغْلِيظَ وَلاَ تَجْعَلُونَ لَهَا الرُّخْصَةَ؟ لَنَزَلَتْ سُورَةُ النِّسَاءِ الْقُصْرَى بَعْدَ الطُّولَى

4532. हमसे हिब्बान बिन मूसा मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, कहा कि हमको अब्दुल्लाह बिन औन ने ख़बर दी, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि मैं अंसार की एक मज्लिस में हाज़िर हुआ। बड़े बड़े अंसारी वहाँ मौजूद थे और अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला भी मौजूद थे। मैंने वहाँ सुबैआ बिन्ते हारिष के बाब के बारे में अब्दुल्लाह बिन उत्बा की हदीष का ज़िक्र किया। अब्दुर्रहमान ने कहा लेकिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा के चचा (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) ऐसा नहीं कहते थे। (मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा के बारे में झूठ बोलने में दिलेरी की है कि जो कूफ़ा में अभी ज़िन्दा मौजूद हैं। मेरी आवाज़ बुलन्द हो गई थी। इब्ने सीरीन ने कहा कि फिर जब मैं बाहर निकला तो रास्ते में मालिक बिन आमिर या मालिक बिन औफ़ से मेरी मुलाक़ात हो गई। (रावी को शक है ये इब्ने मसऊद रज़ि. के रफ़ीक़ों में से थे) मैंने उनसे पूछा कि जिस औरत के शौहर का इंतिक़ाल हो जाए और वो हमल से हो तो इब्ने मसऊद (रज़ि.) उसकी इद्दत के बारे में क्या फ़त्वा देते थे? उन्होंने कहा कि इब्ने मसऊद (रज़ि.) कहते थे कि तुम लोग उस हामला पर सख़्ती के बारे में क्यूँ सोचते हो उस पर आसानी नहीं करते (उसको लम्बी) इद्दत का हुक्म देते

हो। सूरह निसा छोटी (सूरह त़लाक़) लम्बी सूरह निसा के बाद नाज़िल हुई है और अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने कि मैं अबू अ़तिया मालिक बिन आ़मिर से मिला। (दीगर मक़ाम : 4910)

وَقَالَ أَيُّوبُ: عَنْ مُحَمَّدٍ لَقِيتُ أَبَا عَطِيَّةَ مَالِكَ بْنَ عَامِرٍ.

[طرفه في : ٤٩١٠].

तश्रीह : सूरह त़लाक़ को छोटी सूरह निसा कहा गया है और सूरह निसा को बड़ी सूरह निसा क़रार दिया गया है। सूरह त़लाक़ में अल्लाह ने ये फ़र्माया है। **व ऊलातुल अह़मालि अजलहुन्ना अंय्यज़अ़ना ह़म्लहुन्ना** (अत् त़लाक़ : 4) तो ह़ामला औ़रतें सूरह निसा की आयत से ख़ास़ कर ली गईं। इससे ये निकला कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) का मज़हब भी ह़ामला औ़रत की इ़द्दत में यही था कि वज़ए ह़मल से उसकी इ़द्दत पूरी हो जाती है और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला का क़ौल ग़लत़ निकला। अय्यूब सुख़्तियानी (रह) की रिवायत में शक नहीं है। जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न की रिवायत में है कि मालिक बिन आ़मिर या मालिक बिन औ़फ़ से मिला। इस रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह) ने तफ़्सीर सूरह त़लाक़ मे वस्ल किया है। रिवायत में मज़्कूरा सुबैआ़ का क़िस्सा ये है कि सुबैआ़ का शौहर सअ़द बिन ख़ौला मक्का में मर गया उस वक़्त सुबैआ़ ह़ामला थीं। शौहर के इंतिक़ाल के चन्द दिन बाद उसने बच्चे को जन्म दिया और अबू अंसाबिल ने उससे निकाह़ करना चाहा। उसने आँह़ज़रत (ﷺ) से मसला पूछा तो आपने उसको निकाह़ की इजाज़त दे दी। मा'लूम हुआ कि ह़ामला की इ़द्दत वज़ए ह़मल से गुज़र जाती है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) का क़ौल ये था कि ह़ामला भी इ़द्दत पूरी करेगी अगर वज़ए ह़मल में चार महीने दस दिन बाक़ी हों तो उस मुद्दत तक अगर ज़्यादा अ़र्सा बाक़ी हो तो वजए ह़मल तक इंतिज़ार करे।

बाब 42 : आयत 'हाफ़िज़ु अलस़्स़लवाति वस़्स़लातिल्वुस्त़ा' की तफ़्सीर या'नी,

सभी नमाज़ों की ह़िफ़ाज़त रखो और दरम्यानी नमाज़ की पाबन्दी ख़ास़ तौर पर लाज़िम पकड़ो।

٤٢- باب قوله ﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى﴾.

4533. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ह़स्सान ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने, उनसे उ़बैदह ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया।

٤٥٣٣- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ بْنُ عَبِيدَةَ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ح.

(दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन बिश्र बिन ह़कम ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ह़स्सान ने, कहा कि मुझसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे उ़बैदह बिन अ़म्र ने और उनसे अ़ली (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर फ़र्माया था, उन कुफ़्फ़ार ने हमें दरम्यानी नमाज़ नहीं पढ़ने दी, यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो

....- حدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ هِشَامٌ حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ : ((حَبَسُونَا عَنْ صَلاَةِ الْوُسْطَى حَتَّى غَابَتِ الشَّمْسُ

مَلأَ اللهُ قُبُورَهُمْ وَبُيُوتَهُمْ أَوْ أَجْوَافَهُمْ)) شَكَّ يَحْيَى ((نَارًا)).
[راجع: ٢٩٣١]

गया, अल्लाह उनकी क़ब्रों और घरों को या उनके पेटों को आग से भर दे। क़ब्रों और घरों और पेटों के लफ़्ज़ों में शक यह्या बिन सईद रावी की तरफ़ से है। (राजेअ : 2931)

तश्रीह : इस हदीष से षाबित हुआ कि सलातुल वुस्ता से अ़स्र की नमाज़ मुराद है। कुछ लोगों ने कुछ दूसरी नमाज़ों को भी मुराद लिया है। मगर क़ौले राजेह यही है। इस बारे में शारेह ने एक रिसाला लिखा है। जिसका नाम कश्फुल्ख़त्ता अन सलातिल्वुस्ता है।

٤٣- باب قوله ﴿وَقُومُوا لله قَانِتِينَ﴾ أي مطيعين

बाब 43 : आयत 'व क़ुमू लिल्लाहि क़ानितीन' की तफ़्सीर क़ानितीना बमा'नी मुतीईना या'नी फ़र्माँबरदार

या'नी और अल्लाह के सामने फ़र्माँबरदार की तरह ख़ामोश खड़े हुआ करो। ख़ामोशी से दुनिया की बात न करना मुराद है।

٤٥٣٤- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الْحَارِثِ بْنِ شُبَيْلٍ، عَنْ أَبِي عَمْرٍو الشَّيْبَانِيِّ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: كُنَّا نَتَكَلَّمُ فِي الصَّلاَةِ يُكَلِّمُ أَحَدُنَا أَخَاهُ فِي حَاجَتِهِ حَتَّى نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ : ﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلاَةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لله قَانِتِينَ﴾ فَأُمِرْنَا بِالسُّكُوتِ.
[راجع: ١٢٠٠]

4534. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे हारिष़ बिन शबैल ने, उनसे अबू अम्र बिन शैबानी ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि पहले हम नमाज़ पढ़ते हुए बात भी कर लिया करते थे, कोई भी शख़्स अपने दूसरे भाई से अपनी किसी ज़रूरत के लिये बात कर लेता था। यहाँ तक कि ये आयत नाज़िल हुई। सब ही नमाज़ों की पाबन्दी रखो और ख़ास तौर पर बीच वाली नमाज़ की और अल्लाह के सामने फ़र्माँबरदारों की तरह खड़े हुआ करो। इस आयत के ज़रिये हमें नमाज़ में चुप रहने का हुक्म दिया गया। (राजेअ : 1200)

तश्रीह : लफ़्ज़ क़ानितीन से खामोश रहने वाले फ़र्माँबरदार मुराद हैं। मुजाहिद ने कहा क़ुनूत ये है कि ख़ुशूअ तूले क़याम के साथ अदब से नमाज़ पढ़े। निगाह नीची रखे, नमाज़ दरबारे इलाही में आजिज़ाना तौर पर ज़ाहिर व बातिन को झुका देने का नाम है। आयत में कुनूत से नमाज़ में ख़ामोश रहना मुराद है। (फ़त्हुल बारी) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) की कुन्नियत अबू अम्र है। ये अंसारी ख़ज़रजी हैं। कूफ़ा में सकूनत इख़्तियार की थी। 66 हिजरी में वफ़ात पाई, रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

٤٤- باب قول الله عزوجل ﴿فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالاً أَوْ رُكْبَانًا فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ﴾.

बाब 44 : आयत 'व इन ख़िफ़्तुम फ़रिजालन व रुक्बानन' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी

अगर तुम्हें डर हो तो तुम नमाज़ पैदल ही (पढ़ लिया करो) या सवारी पर पढ़ लो। फिर जब तुम अमन में आ जाओ तो अल्लाह को याद करो जिस तरह उसने तुम्हें सिखाया है जिसको तुम जानते भी न थे।

हालते जंग में जब हर तरफ़ से डर तारी हो तो नमाज़ पैदल या सवार जिस सूरत में भी अदा की जा सके। उसके बारे में ये आयत नाज़िल हुई। हालते जंग की कैफ़ियत इत्तिफ़ाक़ी अम्र है वरना सफ़र में क़स्र बहर-सूरत जाइज़ है।

وَقَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ كُرْسِيُّهُ : عِلْمُهُ، يُقَالُ: بَسْطَةً : زِيَادَةً وَفَضْلاً، أَفْرِغْ : أَنْزِلْ، وَلاَ يَؤُودُهُ: لاَ يُثْقِلُهُ، آدَنِي أَثْقَلَنِي وَالآدُ وَالأَيْدُ : الْقُوَّةُ، السِّنَةُ : نُعَاسٌ، يَتَسَنَّهْ: يَتَغَيَّرْ، فَبُهِتَ : ذَهَبَتْ حُجَّتُهُ، خَاوِيَةٌ : لاَ أَنِيسَ فِيهَا، عُرُوشُهَا : أَبْنِيَتُهَا، السِّنَةُ : نُعَاسٌ : نُنْشِزُهَا : نُخْرِجُهَا، إِعْصَارٌ رِيحٌ عَاصِفٌ تَهُبُّ مِنَ الأَرْضِ إِلَى السَّمَاءِ كَعَمُودٍ، فِيهِ نَارٌ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: صَلْدًا لَيْسَ عَلَيْهِ شَيْءٌ، وَقَالَ عِكْرِمَةُ : وَابِلٌ : مَطَرٌ شَدِيدٌ، الطَّلُّ : النَّدَى وَهَذَا مَثَلُ عَمَلِ الْمُؤْمِنِ. يَتَسَنَّهْ : يَتَغَيَّرْ.

सईद बिन जुबैर ने कहा वुसिअ कुर्सिय्युहू में कुर्सी से मुराद परवरदिगार का इल्म है। (ये तावीली मफ़्हूम है एहतियात उसी में है कि ज़ाहिर मा'नों में तस्लीम करके हक़ीक़त को इल्मे इलाही के हवाले कर दिया जाए) बस्ततन से मुराद ज़्यादती और फ़ज़ीलत है। अफ़ज़िग़ का मतलब अंज़िल है या'नी हम पर सब्र नाज़िल फ़र्मा लफ़्ज़ वला यउदुहू का मतलब ये कि इस पर बार नहीं है। इसी से लफ़्ज़ आदनी है या'नी मुझको उसने बोझल बना दिया और लफ़्ज़ आद और अयदन क़ुव्वत को कहते हैं लफ़्ज़े अस्सिनतु ऊँघ के मा'नी में है। लम यतसन्नह का मा'नी नहीं बिगड़ा लफ़्ज़ फ़बुहिता का मा'नी यअनी दलील से हारेगा लफ़्ज़ ख़ावी या'नी ख़ाली जहाँ कोई रफ़ीक़ न हो। लफ़्ज़ उरूशुहा से मुराद उसकी इमारतें हैं, नुंशिज़ुहा के मा'नी हम निकालते हैं। लफ़्ज़े इअसार के मा'नी तुन्द हवा जो ज़मीन से उठकर आसमान की तरफ़ एक सतून की तरह हो जाती है। उसमें आग होती है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा लफ़्ज़े सलदन या'नी चिकना साफ़ जिस पर कुछ भी न रहे और इक्रिमा ने कहा लफ़्ज़े वाबिलुन ज़ोर के बारिश पर बोला जाता है और लफ़्ज़ तल्लुन के मा'नी शबनम ओस के हैं। ये मोमिन के नेक अमल की मिषाल है कि वो ज़ाये नहीं जाता। यतसन्नह के मा'नी बदल जाए, बिगड़ जाए।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अपनी रविश के मुताबिक़ सूरह बक़रः के ये मुख़्तलिफ़ मुश्किल अल्फ़ाज़ मुंतख़ब फ़र्माकर उनके हल करने की कोशिश की है। पूरे मआनी व मतालिब उन ही मुक़ामात के बारे में हैं जहाँ जहाँ ये अल्फ़ाज़ वारिद हुए हैं।

٤٥٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا كَانَ إِذَا سُئِلَ عَنْ صَلاَةِ الْخَوْفِ قَالَ : يَتَقَدَّمُ الإِمَامُ وَطَائِفَةٌ مِنَ النَّاسِ فَيُصَلِّي بِهِمُ الإِمَامُ رَكْعَةً، وَتَكُونُ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْعَدُوِّ لَمْ يُصَلُّوا فَإِذَا صَلَّوُا الَّذِينَ مَعَهُ رَكْعَةً اسْتَأْخَرُوا مَكَانَ الَّذِينَ لَمْ يُصَلُّوا، وَلاَ يُسَلِّمُونَ وَيَتَقَدَّمُ الَّذِينَ لَمْ

4535. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से नमाज़े ख़ौफ़ के बारे में पूछा जाता तो वो फ़र्माते कि इमाम मुसलमानों की एक जमाअ़त को लेकर ख़ुद आगे बढ़े और उन्हें एक रकअ़त नमाज़ पढ़ाए। उस दौरान में मुसलमानों की दूसरी जमाअ़त उनके और दुश्मन के दरम्यान में रहे। ये लोग नमाज़ में अभी शरीक न हों, फिर जब इमाम उन लोगों को एक रकअ़त पढ़ा चुके जो पहले उसके साथ थे तो अब ये लोग पीछे हट जाएँ और उनकी जगह ले लें, जिन्होंने अब तक नमाज़ नहीं पढ़ी है, लेकिन ये लोग सलाम न फेरें। अब वो लोग आगे बढ़ें जिन्होंने नमाज़ नहीं पढ़ी

يُصَلُّوا فَيُصَلُّونَ مَعَهُ رَكْعَةً، ثُمَّ يَنْصَرِفُ الإِمَامُ وَقَدْ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ فَيَقُومُ كُلُّ وَاحِدٍ مِنَ الطَّائِفَتَيْنِ، فَيُصَلُّونَ لأَنْفُسِهِمْ رَكْعَةً بَعْدَ أَنْ يَنْصَرِفَ الإِمَامُ فَيَكُونُ كُلُّ وَاحِدٍ مِنَ الطَّائِفَتَيْنِ قَدْ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ فَإِنْ كَانَ خَوْفٌ هُوَ أَشَدُّ مِنْ ذَلِكَ صَلُّوا رِجَالاً قِيَامًا عَلَى أَقْدَامِهِمْ أَوْ رُكْبَانًا مُسْتَقْبِلِي الْقِبْلَةِ، أَوْ غَيْرَ مُسْتَقْبِلِيهَا. قَالَ مَالِكٌ : قَالَ نَافِعٌ : لاَ أُرَى عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ ذَكَرَ ذَلِكَ إِلاَّ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ.
[راجع: ٩٤٢]

है और इमाम उन्हें भी एक रकअ़त नमाज़ पढ़ाए। अब इमाम दो रकअ़त पढ़ चुकने के बाद नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुका। फिर दोनों जमाअ़तें (जिन्होंने अलग-अलग इमाम के साथ एक एक रकअ़त नमाज़ पढ़ी थी) अपनी बाक़ी एक-एक रकअ़त अदा कर लें। जबकि इमाम अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुका है। इस तरह दोनों जमाअ़तों की दो दो रकअ़त पूरी हो जाएँगी। लेकिन अगर ख़ौफ़ इससे भी ज़्यादा है तो हर शख़्स तंहा नमाज़ पढ़ ले, पैदल हो या सवार, क़िब्ला की तरफ़ रुख़ हो या न हो। इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने कि मुझको यक़ीन है कि ह़ज़रत अ़ब्दुलाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ये बातें रसूले करीम (ﷺ) से सुनकर ही बयान की हैं। (राजेअ़ : 942)

तश्रीह़ : नमाज़े ख़ौफ़ एक मुस्तक़िल नमाज़ है जो जंग की ह़ालत में पढ़ी जाती है और ये एक रकअ़त तक भी जाइज़ है। बेहतर तो यही सूरत है जो मज़्कूर हुई। ख़ौफ़ ज़्यादा हो तो फिर ये एक रकअ़त जिस त़ौर भी अदा हो सके दुरुस्त है। मगर क़स्र अपनी जगह पर है जो ह़ालते अमन व ख़ौफ़ हर जगह बेहतर है, अफ़ज़ल है।

٤٥- باب قوله ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا﴾

बाब 45 : आयत 'वल्लज़ीन यतवफ़्फ़ौन मिन्कुम व यज़रून अज़्वाजा' की तफ़्सीर

या'नी जो लोग तुममें से वफ़ात पा जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ तो शौहरों को चाहिये कि वो अपनी बीवियों के लिये मकान की और ख़र्चा की एक साल तक के लिये वसिय्यत कर जाएँ। फिर वो औरतें उस मुद्दत तक निकाली न जाएँ। ये हुक्म बाद में मन्सूख़ हो गया।

٤٥٣٦- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ الأَسْوَدِ، وَيَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، قَالاَ: حَدَّثَنَا حَبِيبُ بْنُ الشَّهِيدِ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ : قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ قُلْتُ لِعُثْمَانَ هَذِهِ الآيَةُ الَّتِي فِي الْبَقَرَةِ : ﴿وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿غَيْرَ إِخْرَاجٍ﴾ قَدْ نَسَخَتْهَا الآيَةُ الأُخْرَى فَلِمَ تَكْتُبُهَا قَالَ : تَدَعُهَا يَا ابْنَ أَخِي لاَ أُغَيِّرُ شَيْئًا مِنْهُ مِنْ مَكَانِهِ قَالَ

4536. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद बिन अस्वद और यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे ह़बीब बिन शहीद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैयका ने बयान किया कि ह़ज़रत इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने ह़ज़रत उ़म्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से कहा कि सूरह बक़र: की आयत या'नी, जो लोग तुममें से वफ़ात पा जाएँ और बीवियाँ छोड़ जाएँ, अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान ग़ैर इख़राज तक को दूसरी आयत ने मन्सूख़ कर दिया है। उसको आपने मुस्ह़फ़ में क्यूँ लिखवाया, छोड़ क्यूँ नहीं दिया? उन्होंने कहा, मेरे भतीजे मैं किसी आयत को उसके ठिकाने से बदलने वाला नहीं। ये हुमैद ने कहा या कुछ ऐसा ही जवाब दिया। (इस

पर तफ़्सीली नोट पीछे लिखा जा चुका है) (राजेअ : 4530)

حُمَيْدٌ : أَوْ نَحْوَ هَذَا. [راجع: ٤٥٣٠]

बाब 46 : 'व इज़ क़ाल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कैफ़ तुहयिल्मौता' की तफ़्सीर

٤٦- باب قوله ﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى﴾.

या'नी उस वक़्त को याद करो जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया, कि ऐ मेरे रब! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा।

4537. हमसे अहमद बिन सालेह ने बयान किया, उनसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू सलमा बिन सईद ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, शक करने का हमें इब्राहीम (अलैहि.) से ज़्यादा हक़ है, जब उन्होंने अर्ज़ किया था कि ऐ मेरे रब! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा, अल्लाह की तरफ़ से इर्शाद हुआ, क्या तुझको यक़ीन नहीं है? अर्ज़ किया कि यक़ीन ज़रूर है, लेकिन मैंने ये दरख़्वास्त इसलिये की है कि मेरे दिल को और इत्मीनान हासिल हो जाए। (राजेअ : 3372)

٤٥٣٧- حدَّثَنَا أحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَسَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((نَحْنُ أَحَقُّ بِالشَّكِّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ: ﴿رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى، قَالَ: أَوَلَمْ تُؤْمِنْ قَالَ: بَلَى، وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾)).
[راجع: ٣٣٧٢]

अल्लाह ने फिर उनसे फ़र्माया कि तुम चार परिन्दों को पकड़ो और उनका गोश्त ख़लत मलत करके चार पहाड़ों पर रख दो, फिर उनको बुलाओ। अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा होकर दौड़े चले आएँगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ जैसा कि अपनी जगह पर ये वाक़िया तफ़्सील से मौजूद है।

बाब 47 : आयत 'अ यवद्दु अहदुकुम अन तकून लहू जन्नतुन' की तफ़्सीर या'नी,

٤٧- باب قَوْلِهِ : ﴿أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ إِلَى قَوْلِهِ تَعَالَى تَتَفَكَّرُونَ﴾

क्या तुममें से कोई ये पसन्द करता है कि उसका एक बाग़ हो, आख़िर आयत ततफ़क्करून तक।

4538. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैयका से सुना, वो अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से बयान करते थे, इब्ने जुरैज ने कहा और मैंने इब्ने अबी मुलैका के भाई अबूबक्र बिन अबी मुलैका से भी सुना, वो उ़बैद बिन उ़मैर से रिवायत करते थे कि एक दिन हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के अस्हाब से दरयाफ़्त किया कि आप लोग जानते हो ये आयत किस सिलसिले में नाज़िल हुई है। क्या तुममें से कोई ये पसन्द करता है कि उसका एक बाग़ हो। सबने

٤٥٣٨- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ سَمِعْتُ: عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ يُحَدِّثُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: وَسَمِعْتُ أَخَاهُ أَبَا بَكْرِ بْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ يُحَدِّثُ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ، قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ يَوْمًا لأَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَ تَرَوْنَ هَذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ ﴿أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ﴾؟ قَالُوا:

اللہ أَعْلَمُ، فَغَضِبَ عُمَرُ فَقَالَ: قُولُوا: نَعْلَمُ أَوْ لاَ نَعْلَمُ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فِي نَفْسِي مِنْهَا شَيْءٌ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ قَالَ عُمَرُ: يَا ابْنَ أَخِي قُلْ: وَلاَ تَحْقِرْ نَفْسَكَ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ضُرِبَتْ مَثَلاً لِعَمَلٍ قَالَ عُمَرُ : أَيُّ عَمَلٍ؟ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : لِعَمَلٍ قَالَ عُمَرُ: لِرَجُلٍ غَنِيٍّ يَعْمَلُ بِطَاعَةِ اللہ عَزَّ وَجَلَّ ثُمَّ بَعَثَ اللہ لَهُ الشَّيْطَانَ فَعَمِلَ بِالْمَعَاصِي حَتَّى أَغْرَقَ أَعْمَالَهُ.

कहा कि अल्लाह ज़्यादा जानने वाला है। ये सुनकर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) बहुत ख़फ़ा हो गये और कहा, स़ाफ़ जवाब दें कि आप लोगों को इस सिलसिले में कुछ मा'लूम है या नहीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन! मेरे दिल में एक बात आती है। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया, बेटे! तुम्हीं कहो और अपने को ह़क़ीर न समझो। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि उसमें अ़मल की मिस़ाल बयान की गई है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने पूछा, कैसे अ़मल की? ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि अ़मल की। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि ये एक मालदार शख़्स़ की मिस़ाल है जो अल्लाह की इत़ाअ़त में नेक अ़मल करता रहता है। फिर अल्लाह शैत़ान को उस पर ग़ालिब कर देता है, वो गुनाहों में मस़रूफ़ हो जाता है और उसके अगले नेक आ़माल सब ग़ारत हो जाते हैं।

दूसरी रिवायत में यूँ है कि सारी उ़म्र तो नेक अ़मल करता रहता है जब आख़िर उ़म्र होती है और नेक अ़मलों की ज़रूरत ज़्यादा होती है, उस वक़्त बुरे काम करने लगता है और उसकी सारी अगली नेकियाँ बर्बाद हो जाती हैं। (फ़त्हुल बारी)

٤٨- باب قوله ﴿لاَ يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا﴾ يُقَالُ : أَلْحَفَ عَلَيَّ، وَأَلَحَّ عَلَيَّ وَأَحْفَانِي بِالْمَسْأَلَةِ فَيُحْفِكُمْ : يُجْهِدُكُمْ.

बाब 48 : आयत 'ला यस्अलूनन्नास इल्हाफ़न' की तफ़्सीर

या'नी, वो लोगों से चिमटकर नहीं मांगते। अ़रब लोग अल्ह़फ़ और अल्ह़ा और अह़फ़ा बिल मसअलति जब कहते हैं कि कोई गिड़गिड़ाकर पीछे लगकर सवाल करे। फ़युह़फ़िकुम के मा'नी तुम्हें मुशक़्क़त में डाल दे, न थका दे।

ये अस़्ह़ाबे सुफ़्फ़ा का ज़िक्र है जो ह़ाजतमन्द होने के बावजूद किसी से सवाल नहीं करते थे। जाहिल लोग उनको ग़नी जानते ह़ालाँकि अस़ली ह़क़दार वही लोग थे।

٤٥٣٩- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مريم، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ : حَدَّثَنِي شَرِيكُ بْنُ أَبِي نَمِرٍ، أَنَّ عَطَاءَ بْنَ يَسَارٍ، وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي عَمْرَةَ الأَنْصَارِيَّ قَالاَ: سَمِعْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللہ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ الْمِسْكِينُ الَّذِي تَرُدُّهُ التَّمْرَةُ وَالتَّمْرَتَانِ وَلاَ اللُّقْمَةُ وَلاَ اللُّقْمَتَانِ، إِنَّمَا الْمِسْكِينُ الَّذِي يَتَعَفَّفُ

4539. हमसे सईद इब्ने अबी मरयम ने बयान किया उन्होंने कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्हाने कहा कि मुझसे शुरैक बिन अबी नम्र ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़म्र अंस़ारी ने बयान किया और उन्होंने कहा हमने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मिस्कीन वो नहीं है जिसे एक या दो खजूर, एक या दो लुक़्मे दर बदर लिये फिरें, बल्कि मिस्कीन वो है जो मांगने से बचता रहे और अगर तुम दलील चाहो तो (क़ुर्आन

से) इस आयत को पढ़ लो कि, वो लोगों से चिमटकर नहीं मांगते। (राजेअ : 1476)

وَاقْرَأُوا إِنْ شِئْتُمْ يَعْنِي قَوْلَهُ تَعَالَى: ((﴿لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا﴾)).
[راجع: ١٤٧٦]

तश्रीह : अल्लाह की मख़्लूक़ से सवाल न करे, ख़ालिक़ से मांगे, यही मुराद इस ह़दीष़ में है **अल्लाहुम्म अहीनी मिस्कीनन** कुछ ने कहा सवाल करना मिस्कीन होने के ख़िलाफ़ नहीं है लेकिन सवाल में इल्हाह़ न करे या'नी पीछे न पड़ जाए। एक बार अपनी ह़ाजत बयान कर दे अगर कोई दे तो ले ले वरना चला जाए, भरोसा स़िर्फ़ अल्लाह पर रखे।

बाब 49 : आयत 'व अहल्लल्लाहुल्बैयअ व हर्रमर्रिबा' की तफ़्सीर अल मस्स या'नी जुनून

٤٩- باب قول الله ﴿وَأَحَلَّ اللهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا﴾ الْمَسُّ : الْجُنُونُ

या'नी ह़ालाँकि अल्लाह ने तिजारत को ह़लाल किया और सूद को ह़राम किया है। लफ़्ज़ अलमस्स के मा'नी जुनून के हैं जिसे दीवानगी भी कहते हैं। फ़राअ ने यही तफ़्सीर की है। मस्स का मा'नी जिन्नों का छूना, ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं सूदख़ोर आख़िरत में मज्नून उठेगा।

4540. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, हमसे आ'मश ने बयान किया, हमसे मुस्लिम ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा(रज़ि.) ने बयान किया कि जब सूद के सिलसिले में सूरह बक़र: की आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं तो रसूले अकरम (ﷺ) ने उन्हें पढ़कर लोगों को सुनाया और उसके बाद शराब की तिजारत भी ह़राम क़रार पाई। (राजेअ : 459)

٤٥٤٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : لَمَّا نَزَلَتِ الآيَاتُ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فِي الرِّبَا قَرَأَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى النَّاسِ ثُمَّ حَرَّمَ التِّجَارَةَ فِي الْخَمْرِ. [راجع: ٤٥٩]

तश्रीह : ये आयत उन लोगों की तर्दीद में नाज़िल हुई जिन्होंने कहा कि सूद भी एक त़रह़ की तिजारत है फिर ये ह़राम क्यूँ क़रार दिया गया। उस पर अल्लाह ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई और बतलाया कि तिजारती नफ़ा ह़लाल है और सूदी नफ़ा ह़राम है। सूदख़ोर का ह़ाल ये होगा कि वो मह़शर में दीवानों की त़रह़ से खड़े होंगे और ख़ून की नहर में उनको ग़ोते दिये जाएँगे।

बाब 50 : आयत 'यम्ह़क़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्सदक़ाति' अल्ख़ की तफ़्सीर

٥٠- باب قوله ﴿يَمْحَقُ اللهُ الرِّبَا﴾ يُذْهِبُهُ

या'नी अल्लाह सूद को मिटाता है और स़दक़ात को बढ़ाता है। लफ़्ज़े यम्ह़क़ु बमा'नी यज़्हबु के है या'नी मिटा देता है और दूर कर देता है।

4541. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमको मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें सुलैमान आ'मश ने, उन्होंने कहा कि मैंने अबुज़्ज़ुह़ा से सुना, वो मसरूक़ से रिवायत करते थे कि उनसे ह़ज़रत आ़इशा

٤٥٤١- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ سَمِعْتُ: أَبَا الضُّحَى يُحَدِّثُ عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: لَمَّا

(रज़ि.) ने बयान किया, जब सूरह बक़रः की आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और मस्जिद में उन्हें पढ़कर सुनाया उसके बाद शराब की तिजारत हराम हो गई। (राजेअ : 459)

أُنْزِلَتِ الآيَاتُ الأَوَاخِرُ مِنْ سُورَةِ الْبَقَرَةِ خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَلاَهُنَّ فِي الْمَسْجِدِ فَحَرَّمَ التِّجَارَةَ فِي الْخَمْرِ.
[راجع: ٤٥٩]

तश्रीह : सूदी माल बज़ाहिर बढ़ता नज़र आता है मगर अंजाम के लिहाज़ से वो एक दिन तल्फ़ हो जाता है। हाँ सदक़ा ख़ैरात षवाब के लिहाज़ से बढ़ने वाली चीज़ें हैं। सूदख़ोर क़ौमों को बज़ाहिर ङरूज मिलता है मगर अंजाम के लिहाज़ से उनकी नस्लें तरक़्क़ी नहीं करती हैं। सूद ब्याज इस्लाम में बदतरीन जुर्म क़रार दिया गया है। उसके मुक़ाबले पर क़र्ज़े हसना है, जिसके बहुत से फ़ज़ाइल हैं ।

बाब 51 : आयत 'फ़अज़नू बिहर्बिम्मिनल्लाहि व रसूलिही' की तफ़्सीर लफ़्ज़ फ़ज़नू बमा'नी फ़अलमू है, या'नी जान लो, आगाह हो जाओ

٥١- باب قوله ﴿فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللهِ وَرَسُولِهِ﴾ فَاعْلَمُوا

या'नी अगर ये सुनकर भी सूद से बाज़ नहीं आए हो तो ख़बरदार! अल्लाह और उसके रसूल के साथ जंग के लिये तैयार हो जाओ। ये उस वक़्त है जब फ़ाज़नू की ज़ाल पर फ़त्हा पढ़ा जाए। कुछ ने ज़ाल का कसरा भी पढ़ा है। उस वक़्त ये मा'नी होंगे कि लोगों को आगाह कर दो।

4542. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबुज़ ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब सूरह बक़रः की आख़िरी आयतें नाज़िल हुईं तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें मस्जिद में पढ़कर सुनाया और शराब की तिजारत हराम क़रार दी गई।

٤٥٤٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ. حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا أُنْزِلَتِ الآيَاتُ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ قَرَأَهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ وَحَرَّمَ التِّجَارَةَ فِي الْخَمْرِ.

तश्रीह : सूदख़ोरों को तम्बीह की गई कि या तो वो उससे बाज़ आ जाएँ वरना अल्लाह और रसूल (ﷺ) से जंग का ऐलान है। उनको अपने अंजाम से डरना चाहिये।

बाब 52 : आयत 'व इन कान ज़ू उस्रतिन फनज़िरतुन इला मयसरतिन' अल्ख़

की तफ़्सीर या'नी, अगर मक़रूज़ तंगदस्त है तो उसके लिये आसानी मुहय्या होने तक मुह्लत देना बेहतर है और अगर तुम उसका क़र्ज़ मुआफ़ कर दो तो तुम्हारे हक़ में ये और बेहतर है। अगर तुम इल्म रखते हो।

٥٢- باب قوله ﴿وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَى مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

क़र्ज़ख़्वाहों को हिदायत की गई कि वो मक़रूज़ के हाल के मुताबिक़ मामला करें तो ये उनके लिये बेहतर है। पहले ज़माने का एक शख़्स महज़ उस नेकी की वजह से बख़्शा गया कि वो अपने मक़रूज़ लोगों पर सख़्ती नहीं करता था बल्कि मुआफ़ भी कर दिया करता था। अल्लाह तआला ने उसको भी मुआफ़ कर दिया। मगर आज के माद्दी (भौतिकतावादी) दौर में ऐसी मिषालें मुहाल (दुर्लभ) हैं जबकि अकषरियत ने दौलत ही को अपना अल्लाह समझ लिया है। आज अकषर दौलतमन्दों का ये हाल है कि वो किसी ग़रीब के साथ एक पैसे की रिआयत के लिये तैयार नहीं होते। इल्ला माशाअल्लाह!

4543. और हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे मंसूर और आ'मश ने, उनसे अबुज़ ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब सूरह बक़रः की आख़िरी आयात नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हुए और हमें पढ़कर सुनाया फिर शराब की तिजारत हराम कर दी। (राजेअ : 459)

٤٥٤٣- وَقَالَ لَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَنْصُورٍ وَالأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَمَّا أُنْزِلَتِ الآيَاتُ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَرَأَهُنَّ عَلَيْنَا ثُمَّ حَرَّمَ التِّجَارَةَ فِي الْخَمْرِ. [راجع: ٤٥٩]

बाब 53 : आयत 'वत्तक़ु यौमन तुर्जऊन फ़ीहि इलल्लाहि' की तफ़्सीर या'नी,

٥٣- باب قوله ﴿واتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللهِ﴾

और उस दिन से डरते रहो जिस दिन तुम सबको अल्लाह की तरफ़ वापस जाना है।

4544. हमसे क़ुबैस़ा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ़स़िम बिन सुलैमान ने, उनसे शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आख़िरी आयत जो नबी करीम (ﷺ) पर नाज़िल हुई वो सूद की आयत थी।

٤٥٤٤- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ بْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : آخِرُ آيَةٍ نَزَلَتْ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ آيَةُ الرِّبَا.

तश्रीह़ : दूसरी रिवायत में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से उसकी स़राहत है किआख़िरी आयत जो नाज़िल हुई वो आयत वत्तक़ू यौमा तुरजऊना फ़ीहि इलल्लाह (अल बक़रः : 281) थी। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने ये रिवायत लाकर इस तरफ़ इशारा किया कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की मुराद आयते रिबा से यही आयत है। इस तरह़ बाब की मुताबक़त भी ह़ासिल हो गई।

बाब 54 : आयत व इन तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम औ तुख़्फ़ूहु की तफ़्सीर या'नी,

٥٤- باب قوله ﴿وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللهُ، فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾

और जो ख़्याल तुम्हारे दिलों के अंदर छुपा हुआ है अगर तुम उसको ज़ाहिर कर दो या उसे छुपाए रखो हर ह़ाल में अल्लाह उसका हिसाब तुमसे लेगा, फिर जिसे चाहे बख़्श देगा और जिसे चाहे अ़ज़ाब करेगा और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

4545. हमसे मुहम्मद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद नफ़ीली ने बयान किया, कहा हमसे मिस्कीन बिन बुकैर हुर्रानी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे मर्वान अस़्फ़र ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) के एक स़ह़ाबी या'नी ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि आयत, और जो कुछ तुम्हारे नफ़्सों के अंदर है अगर तुम उनको ज़ाहिर करो या छुपाए रखो, आख़िर तक मन्सूख़ हो गई थी। (दीगर मक़ाम : 4546)

٤٥٤٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا النُّفَيْلِيُّ، حَدَّثَنَا مِسْكِينٌ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ عَنْ مَرْوَانَ الأَصْفَرِ، عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ ابْنُ عُمَرَ أَنَّهَا قَدْ نُسِخَتْ ﴿وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ﴾ الآيَةَ. [طرفه في :٤٥٤٦].

तश्रीह : इमाम अह़मद ने मुजाहिद से निकाला कि मैं इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास गया। ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने ये आयत **व इन तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम** पढ़ी और रोने लगे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि जब ये आयत उतरी तो स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) को बहुत रंज हुआ और कहने लगे या रसूलल्लाह (ﷺ) हम तो तबाह हो गये क्योंकि दिल हमारे हाथ में नहीं हैं और दिलों में त़रह़ त़रह़ के ख़्याल आते ही रहते हैं। आपने फ़र्माया कहो, **समिअ़ना व अतअ़ना** फिर आयत **ला युकल्लिफ़ुल्लाहु** (अल बक़रः 286) ने उसको मन्सूख़ कर दिया।

बाब 55 आयत 'आमनर्रसूलु बिमा उन्ज़िल इलैहि मिर्रब्बिही' अल्ख़ की तफ़्सीर

٥٥- باب قوله ﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ﴾

या'नी पैग़म्बर ईमान लाए उसपर जो उन पर अल्लाह की त़रफ़ से नाज़िल हुआ। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि इस्रा अ़हद वा'दा के मा'नी में है और बोलते हैं ग़ुफ़्रानका या'नी हम तेरी मग़्फ़िरत मांगते हैं, तो हमें मुआ़फ़ कर दे।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ إِصْرًا : عَهْدًا، وَيُقَالُ غُفْرَانَكَ مَغْفِرَتَكَ فَاغْفِرْ لَنَا.

यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) की ईमानी कैफ़ियत का वो बयान है कि वो हुक्म **व इन तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम** अल्ख़ पर ईमान ले आए और समिअ़ना व अत़अ़ना कहने लगे। बाद में अल्लाह ने उनके ह़ाल पर रह़म करके आयत **ला युकल्लिफ़ुल्लाह** से इस हुक्म को मन्सूख़ क़रार दे दिया।

4546. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्हें रौह़ बिन उ़बादा ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने, उन्हें मर्वान अस़्फ़र ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) के एक स़ह़ाबी ने, कहा कि वो ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) हैं। उन्होंने आयत, व इन तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम औ तुख़्फ़ूहु के बारे में बतलाया कि इस आयत को उसके बाद की आयत ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अहा ने मन्सूख़ कर दिया है। (राजेअ़ : 4546)

٤٥٤٦- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا رَوْحٌ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ خَالِدٍ الْحَذَّاءِ، عَنْ مَرْوَانَ الأَصْفَرِ عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: أَحْسِبُهُ ابْنَ عُمَرَ ﴿وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ﴾ قَالَ : نَسَخَتْهَا الآيَةُ الَّتِي بَعْدَهَا.

[طرفه في: ٤٥٤٦].

पहली आयत का मफ़्हूम ये था कि तुम्हारे नफ़्सों के वस्वसों पर भी मुवाख़ज़ा होगा। ये मामला स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) पर बहुत शाक़ गुज़रा और वाक़ई शाक़ भी था कि नफ़्सानी वस्वसे दिलों में पैदा होते रहते हैं। आयत, **ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन इल्ला वुस्अहा** ने इस आयत को मन्सूख़ कर दिया और मह़ज़ वसाविसे नफ़्सानी पर गिरफ़्त न होने का ऐलान किया गया जब तक उनके मुत़ाबिक़ अ़मल न हो।

सूरह आले इमरान की तफ़्सीर

[٣] سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ

अल्फ़ाज़ तुक़ात व तक़िय्यतु दोनों का मा'नी एक है, या'नी बचाव करना। स़िर्र का मा'नी बरद या'नी सर्द ठण्डक शफ़ा हुफ़रतुन का मा'नी गढ़े का किनारा जैसे कच्चे कुँए का किनारा होता है। तुबव्वी या'नी तू लश्कर के मुक़ामात पड़ाव तज्वीज़ करता था। मोर्चे बनाना मुराद हैं। मुसव्विमीन मुसव्विम उसको कहते हैं जिस पर कोई निशानी हो मष़लन पशम या और

تُقَاةٌ ﴿وَتَقِيَّةٌ﴾ وَاحِدَةٌ، صِرٌّ: بَرْدٌ شَفَا حُفْرَةٍ مِثْلُ شَفَا الرَّكِيَّةِ وَهْوَ حَرْفُهَا: تُبَوِّىءُ: تَتَّخِذُ مُعَسْكَرًا. الْمُسَوَّمُ الَّذِي لَهُ سِيمَاءٌ بِعَلاَمَةٍ، أَوْ بِصُوفَةٍ، أَوْ بِمَا كَانَ رِبِّيُّونَ الْجَمِيعُ، وَالْوَاحِدُ رِبِّيٌّ تَحُسُّونَهُمْ

कोई निशानी। रिब्बियून जमा है उसका वाहिद रिब्बी है या'नी अल्लाह वाला। तहुस्सूनहुम उनको क़त्ल करके जड़ पेड़ से उखाड़ते हो ग़ज़ा लफ़्ज़ ग़ाज़ी की जमा है या'नी जिहाद करने वाला। सनक्तुबु का मा'नी हमको याद रहेगा। नुज़ुलन का मा'नी ष़वाब के हैं और ये भी हो सकता है कि लफ़्ज़े नुज़ुलन है अन्ज़ल्तुहू मैंने उसको उतारा। मुजाहिद ने कहा वल ख़ैलल मुसव्वमतु का मा'नी मोटे मोटे अच्छे अच्छे घोड़े और सईद बिन जुबैर ने कहा हसूरन उस शख़्स को कहते हैं जो औरतों की तरफ़ मुत्लक़न माइल न हो। इक्रिमा ने कहा, मिन फ़ौज़िहिम का मा'नी बद्र के दिन ग़ुस्से और जोश से। मुजाहिद ने कहा युख़्रिजुल हय्या मिनल् मय्यति या'नी नुत्फ़ा बेजान होता है उससे जानदार पैदा होता है इब्कार सुबह सवेरे। अशिय्य के मा'नी सूरज ढल से डूबने तक जो वक़्त होता है उसे अशिय्य कहते हैं।

تَسْتَأْصِلُونَهُمْ قَتْلاً. غُزًا: وَاحِدُهَا غَازٍ. سَنَكْتُبُ: سَنَحْفَظُ نُزُلاً. ثَوَابًا وَيَجُوزُ وَمُنْزَلٌ مِنْ عِنْدِ اللهِ كَقَوْلِكَ أَنْزَلْتُهُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: وَالْخَيْلُ الْمُسَوَّمَةُ: الْمُطَهَّمَةُ الْحِسَانُ. وَقَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ: وَحَصُورًا لاَ يَأْتِي النِّسَاءَ، وَقَالَ عِكْرِمَةُ: مِنْ فَوْرِهِمْ مِنْ غَضَبِهِمْ، يَوْمَ بَدْرٍ وَقَالَ مُجَاهِدٌ: يُخْرِجُ الْحَيَّ النُّطْفَةُ تَخْرُجُ مَيِّتَةً وَيَخْرُجُ مِنْهَا الْحَيُّ الإِبْكَارُ أَوَّلُ الْفَجْرِ وَالْعَشِيُّ: مَيْلُ الشَّمْسِ، أُرَاهُ إِلَى أَنْ تَغْرُبَ.

ये अल्फ़ाज़ सूरह आले इम्रान के कई जगहों से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। यहाँ उनको लफ़्ज़ी तौर पर हल किया गया है। पूरे मआ़नी के लिये वो मुक़ामात देखने ज़रूरी हैं जहाँ जहाँ ये अल्फ़ाज़ वारिद हुए हैं।

बाब 1 : मिन्हु 'आयातुम्मुहकमातुन' की तफ़्सीर

١ - باب

कुछ उसमें मुहकम आयतें हैं और कुछ मुतशाबेह हैं। मुजाहिद ने कहा, मुहकमात से हलाल व हराम की आयतें मुराद हैं। व उख़रु मुतशाबिहात का मतलब है कि दूसरी आयतें जो एक-दूसरी से मिलती-जुलती हैं। एक की एक तस्दीक़ करती है। जैसी ये आयात हैं। वमा युज़िल्लु बिही इल्लल् फ़ासिक़ीन और व यज्अलुर रिज्सा अलल्लज़ीन ला यअ़क़िलून और वल लज़ीनह्तदौ ज़ादहुम हुदा, इन तीनों आयतों में किसी हलाल व हराम का बयान नहीं है तो मुताशाबिह ठहरीं। ज़यग़न का मा'नी शक, इब्तिग़ाउल फ़ित्नति में फ़ित्ना से मुराद मुतशाबिहात की पैरवी करना, उनके मतलब की खोज करना है। वर्रासिख़ून या'नी जो लोग पुख़्ता इल्म वाले हैं वो कहते हैं कि हम उस पर ईमान ले आए। ये सब हमारे रब की तरफ़ से हैं।

﴿مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ﴾ وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْحَلاَلُ، وَالْحَرَامُ ﴿وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ﴾ يُصَدِّقُ بَعْضُهُ بَعْضًا كَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلاَّ الْفَاسِقِينَ﴾ وَكَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لاَ يَعْقِلُونَ﴾ وَكَقَوْلِهِ ﴿وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى﴾ ﴿زَيْغٌ﴾ شَكٌّ. ﴿ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ﴾ الْمُشْتَبِهَاتِ ﴿وَالرَّاسِخُونَ﴾ يَعْلَمُونَ. ﴿يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ﴾.

4547. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, हमसे यज़ीद बिन इब्राहीम तस्तरी ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस आयत की

٤٥٤٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ التُّسْتَرِيُّ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ

تِلاوَت की हुवल्लज़ी अन्ज़ल अलैकल्किताब या'नी वो वही अल्लाह है जिसने तुझ पर किताब उतारी है, उसमें मुहकम आयतें हैं और वही किताब का अस्ल दारोमदार हैं और दूसरी आयतें मुताशाबेह हैं। सो वो लोग जिनके दिलों में चिढ़-पना है। वो उसके उसी हिस्से के पीछे लग जाते हैं जो मुतशाबेह हैं, फ़ित्ने की तलाश में और उसकी ग़लत तावील की तलाश में, आख़िर आयत उलुल अल्बाब तक। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मुतशाबिह आयतों के पीछे पड़े हुए हों तो याद रखो कि ये वही लोग हैं जिनका अल्लाह तआला ने (आयते बाला में) ज़िक्र फ़र्माया है, इसलिये उनसे बचते रहो।

عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. قَالَتْ: تَلاَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هَذِهِ الآيَةَ ﴿هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ إِلَى قَوْلِهِ أُولُوا الأَلْبَابِ﴾ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ سَمَّى اللهُ فَاحْذَرُوهُمْ)).

तश्रीह: पहले यहूदी लोग मुतशाबेह आयतों के पीछे पड़े, उन्होंने और कुल सूरतों के हुरूफ़ों से इस आयत की मुद्दत निकाली फिर ख़ारजी लोग पैदा हुए। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन लोगों से ख़ारज़ियों को मुराद लिया है और कहा कि पहली बिदअ़त जो इस्लाम में पैदा हुई वो फ़ित्न-ए-ख़्वारिज है। सिफ़ाते बारी के बारे में भी जिस क़दर आयात हैं उनको उनके ज़ाहिरी मआनी पर महमूल करना और तावील न करना उनकी हक़ीक़त अल्लाह के हवाला कर देना यही सलफ़ सालेह का तरीक़ा है और उनकी तावीलात के पीछे पड़ना अहले ज़ेग़ का तरीक़ा है। अल्लाह तआला सलफ़े सालेहीन के रास्ते पर चलाए, आमीन। कुछ सूरतों के शुरू में जो अल्फ़ाज़ मुक़त्तआत हैं उनको भी मुतशाबिहात में शुमार किया गया है।

बाब 2 : आयत 'व इन्नी उईज़ुहा बिक व ज़ुर्रियतहा' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله ﴿وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ﴾

या'नी हज़रत मरयम (अ़लैहि.) की माँ ने कहा ऐ रब! मैं उस (मरयम) को और उसकी औलाद को शैतान मर्दूद से तेरी पनाह में देती हूँ।

4548. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर बच्चा जब पैदा होता है तो शैतान उसे पैदा होते ही छूता है, जिससे वो बच्चा चिल्लाता है, सिवा मरयम और उनके बेटे (ईसा अ़लैहि.) के। फिर हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो। इन्नी उईज़ुहा बिक व ज़ुर्रिय्यतिहा मिनश्शैतानिर्रजीम (तर्जुमा वही है जो ऊपर गुज़र चुका) ये कलिमा हज़रत मरयम (अ़लैहि.) की माँ ने कहा था, अल्लाह ने उनकी दुआ़ क़ुबूल की और मरयम और ईसा (अ़लैहि.) को

٤٥٤٨- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ. حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ يُولَدُ إِلاَّ وَالشَّيْطَانُ يَمَسُّهُ حِينَ يُولَدُ فَيَسْتَهِلُّ صَارِخًا مِنْ مَسِّ الشَّيْطَانِ إِيَّاهُ إِلاَّ مَرْيَمَ وَابْنَهَا)) ثُمَّ يَقُولُ أَبُوهُرَيْرَةَ : وَاقْرَأُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ

शैतान के हाथ लगाने से बचा लिया। (राजेअ : 3286)

الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ﴾. [راجع: ٣٢٨٦]

बाब 3 : आयत 'इनल्लज़ीन यश्तरून बिअहदिल्लाहि व अयमानिहुम' अल्ख़

٣- باب قوله ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً أُولَئِكَ لاَ خَلاَقَ لَهُمْ﴾ لاَ خَيْرَ ﴿أَلِيمٌ﴾ مُؤْلِمٌ مُوجِعٌ مِنَ الأَلَمِ وَهُوَ فِي مَوْضِعِ مُفْعِلٍ

तफ़्सीर या'नी, बेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत पर बेच डालते हैं, ये वही लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कोई भलाई नहीं है और उनको दुख देने वाला अज़ाब होगा। अलीम के मा'नी दुख देने वाला जैसे मूलिम है अलीम बर वज़न फ़ईल बमा'नी मुफ़इल है (जो कलामे अरब में कम आया है)

4549,4550. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स ने इसलिये क़सम खाई कि किसी मुसलमान का माल (झूठ बोलकर वो) मार ले तो जब वो अल्लाह से मिलेगा, अल्लाह तआला उस पर निहायत ही ग़ुस्सा होगा, फिर अल्लाह तआला ने आपके इस फ़र्मान की तस्दीक़ में ये आयत नाज़िल की। बेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं, ये वही लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कोई भलाई नहीं है। आख़िर आयत तक। अबू वाइल ने बयान किया कि हज़रत अश्अष़ बिन क़ैस कुन्दी (रज़ि.) तशरीफ़ लाए और पूछा, अबू अब्दुर्रहमान (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि.) ने आप लोगों से कोई हदीष़ बयान की है? हमने बताया कि हाँ, इस इस तरह से हदीष़ बयान की है। अश्अष़ (रज़ि.) ने उस पर कहा कि ये आयत तो मेरे ही बारे में नाज़िल हुई थी। मेरे एक चचा के बेटे की ज़मीन में मेरा एक कुआँ था (हम दोनों का इसके बारे में झगड़ा हुआ और मुक़द्दमा आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में पेश हुआ तो) आपने मुझसे फ़र्माया कि तू गवाह पेश कर या फिर उसकी क़सम पर फ़ैसला होगा। मैंने कहा फिर तो या रसूलल्लाह! वो (झूठी) क़सम खा लेगा। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स झूठी क़सम इसलिये खाए कि उसके ज़रिये किसी मुसलमान का माल ले ले और उसकी निय्यत बुरी हो तो वो अल्लाह तआला से इस हालत में मिलेगा

٤٥٤٩، ٤٥٥٠- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ حَلَفَ يَمِينَ صَبْرٍ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)) فَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيقَ ذَلِكَ ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً أُولَئِكَ لاَ خَلاَقَ لَهُم فِي الآخِرَةِ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ. قَالَ: فَدَخَلَ الأَشْعَثُ بْنُ قَيْسٍ وَقَالَ: مَا يُحَدِّثُكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ قُلْنَا: كَذَا وَكَذَا قَالَ فِيَّ أُنْزِلَتْ كَانَتْ لِي بِئْرٌ فِي أَرْضِ ابْنِ عَمٍّ لِي قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((بَيِّنَتَكَ أَوْ يَمِينَهُ)) فَقُلْتُ إِذًا يَحْلِف يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينِ صَبْرٍ يَقْتَطِعُ بِهَا مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)).

कि अल्लाह इस पर निहायत ही ग़ज़बनाक होगा। (राजेअ़ : 2306, 2307)

[راجع: ٢٣٥٦، ٢٣٥٧]

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है कि अश्अ़ष (रज़ि.) और एक यहूदी में ज़मीन की तकरार थी। अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कहा ये आयत उस शख़्स के बारे में उतरी, जिसने बाज़ार में एक माल रखकर झूठी क़सम खाकर ये बयान किया कि उस माल का उसको इतना दाम मिलता था, लेकिन उसने नहीं दिया। आयत आ़म है, अब भी उसका हुक्म बाक़ी है। कितने लोग झूठी क़समें खा-खाकर नाजाइज़ पैसा ह़ासिल करते हैं। कितने लोग झूठे मुक़द्दमात में कामयाबी ह़ासिल कर लेते हैं। ये सब इस आयत के मिस्दाक़ हैं।

4551. हमसे अ़ली बिन हाशिम ने बयान किया, उन्होंने हुशैम से सुना, उन्होंने कहा हमको अ़वाम बिन हुवैशिब ने ख़बर दी, उन्हें इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने बाज़ार में सामान बेचते हुए क़सम खाई कि फ़लाँ शख़्स उस सामान का इतना रुपया दे रहा था, ह़ालाँकि किसी ने इतनी क़ीमत नहीं लगाई थी बल्कि उसका मक़्सद ये था कि इस त़रह किसी मुसलमान को वो धोखा देकर उसे ठग न ले तो उस पर ये आयत नाज़िल हुई कि बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत पर बेचते हैं, आख़िर आयत तक। (राजेअ़ : 2088)

٤٥٥١- حدَّثَنَا عَلِيٌّ هُوَ ابْنُ أَبِي هَاشِمٍ سمعَ هُشَيْمًا أَخْبَرَنَا الْعَوَّامُ بْنُ حَوْشَبٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا، أَنَّ رَجُلاً أَقَامَ سِلْعَةً فِي السُّوقِ فَحَلَفَ فِيهَا لَقَدْ أَعْطَى بِهَا مَا لَمْ يُعْطِهِ لِيُوقِعَ فِيهَا رَجُلاً مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَنَزَلَتْ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ. [راجع: ٢٠٨٨]

आयत में बतलाया गया है कि मामलादारी में झूठी क़समें खाना और इस त़रह किसी को नुक़्सान पहुँचाना किसी मर्द मोमिन का काम नहीं है। मुसलमानों को इस आ़दत से बचना चाहिये।

4552. हमसे नस्र बिन अ़ली बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि दो औ़रतें किसी घर या हुज्रा में बैठकर मोज़े बनाया करती थीं। उनमे से एक औ़रत बाहर निकली उसके हाथ में मोज़े सीने का सुइया चुभो दिया गया था, उसने दूसरी औ़रत पर दा'वा किया। ये मुक़द्दमा ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास आया तो उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर सिर्फ़ दा'वा की वजह से लोगों का मुतालबा मान लिया जाने लगे तो बहुत सों का ख़ून और माल बर्बाद हो जाएगा। जब गवाह नहीं है तो दूसरी औ़रत को जिस पर ये इल्ज़ाम है, अल्लाह से डराओ और उसके सामने ये आयत पढ़ो, इन्नल्लज़ीन यश्तरूना बिअ़हदिल्लाह व अयमानिहिम. चुनाँचे जब लोगों ने उसे अल्लाह से डराया तो उसने इक़रार कर लिया। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा

٤٥٥٢- حدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيِّ بْنِ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، أَنَّ امْرَأَتَيْنِ كَانَتَا تَخْرُزَانِ فِي بَيْتٍ أَوْ فِي الْحُجْرَةِ، فَخَرَجَتْ إِحْدَاهُمَا وَقَدْ أُنْفِذَ بِإِشْفًى فِي كَفِّهَا فَادَّعَتْ عَلَى الأُخْرَى فَرُفِعَ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ يُعْطَى النَّاسُ بِدَعْوَاهُمْ لَذَهَبَ دِمَاءُ قَوْمٍ وَأَمْوَالُهُمْ)) ذَكِّرُوهَا بِاللهِ وَاقْرَؤُوا عَلَيْهَا ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ

اللهﷺ فَذَكَرُوهَا فَاعْتَرَفَتْ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْيَمِينُ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ)).

[راجع: ٢٥١٤]

कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया है, क़सम मुद्दई अलैह पर है। अगर वो झूठी क़सम खाकर किसी का माल हड़प करेगा तो उसको इस वईद का मिस्दाक़ क़रार दिया जाएगा जो आयत में बयान की गई है। (राजेअ : 2514)

٤- باب ﴿قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنْ لاَ نَعْبُدَ إِلاَّ اللهَ﴾ سَوَاءٍ: قَصْدٍ.

बाब 4 : 'क़ुल या अहलल्किताबि तआलौ इला कलिमतिन' की तफ़्सीर

या'नी आप कह दें कि ऐ किताबवालों! ऐसे क़ौल की त़रफ़ आ जाओ जो हममें तुममें बराबर है। वो ये कि हम अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत न करें। सवाउन के मा'नी ऐसी बात है जिसे हम और तुम दोनों तस्लीम करते हैं जो हमारे और तुम्हारे दरम्यान मुश्तरक (एक सी) है।

٤٥٥٣- حدثني إبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، عَنْ هِشَامٍ عَنْ مَعْمَرٍ ح وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ عُتْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ، حَدَّثَنِي أَبُوسُفْيَانَ مِنْ فِيهِ إِلَى فِيَّ قَالَ: انْطَلَقْتُ فِي الْمُدَّةِ الَّتِي كَانَتْ بَيْنِي وَبَيْنَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَبَيْنَا أَنَا بِالشَّامِ إِذْ جِيءَ بِكِتَابٍ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى هِرَقْلَ قَالَ: وَكَانَ دِحْيَةُ الْكَلْبِيُّ جَاءَ بِهِ فَدَفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ بُصْرَى فَدَفَعَهُ عَظِيمُ بُصْرَى إِلَى هِرَقْلَ قَالَ: فَقَالَ هِرَقْلُ هَلْ هَهُنَا أَحَدٌ مِنْ قَوْمِ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ فَقَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: فَدُعِيتُ فِي نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ، فَدَخَلْنَا عَلَى هِرَقْلَ فَأَجْلَسْنَا بَيْنَ يَدَيْهِ فَقَالَ: أَيُّكُمْ أَقْرَبُ نَسَبًا مِنْ هَذَا

4553. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने, उनसे मअ़मर ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि और मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे इमाम ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने मुँह दर मुँह बयान किया, उन्होंने बतलाया कि जिस मुद्दत में मेरे और रसूले करीम (ﷺ) के बीच सुलह़ (हुदैबिया के मुआहिदे के मुत़ाबिक़) थी, मैं (सफ़रे तिजारत पर शाम में) गया हुआ था कि आँहुज़ूर (ﷺ) का ख़त़ हिरक़्ल के पास पहुँचा। उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत दह़िया कल्बी (रज़ि.) वो ख़त़ लाए थे और अ़ज़ीमे बुस्रा के ह़वाले कर दिया था और हिरक़्ल ने पूछा क्या हमारे ह़ुदूदे सल्त़नत में उस शख़्स की क़ौम के भी कुछ लोग हैं जो नबी होने का दावेदार है? दरबारियों ने बताया कि जी हाँ मौजूद हैं। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मुझे क़ुरैश के चन्द दूसरे आदमियों के साथ बुलाया गया। हम हिरक़्ल के दरबार में दाख़िल हुए और उसके सामने हमें बिठा दिया गया। उसने पूछा, तुम लोगों में उस शख़्स से ज़्यादा क़रीबी कौन है जो नबी होने का दा'वा करता है? अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा कि मैं ज़्यादा क़रीब हूँ। अब दरबारियों ने मुझ

الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ: فَقُلْتُ: أَنَا. فَأَجْلَسُونِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَجْلَسُوا أَصْحَابِي خَلْفِي ثُمَّ دَعَا بِتَرْجُمَانِهِ فَقَالَ : قُلْ لَهُمْ إِنِّي سَائِلٌ هَذَا عَنْ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ فَإِنْ كَذَبَنِي فَكَذِّبُوهُ قَالَ أَبُو سُفْيَانَ : وَايْمُ اللهِ لَوْ لاَ أَنْ يُؤْثِرُوا عَلَيَّ الْكَذِبَ لَكَذَبْتُ ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ : سَلْهُ كَيْفَ حَسَبُهُ فِيكُمْ؟ قَالَ : قُلْتُ هُوَ فِينَا ذُو حَسَبٍ، قَالَ : فَهَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مَلِكٌ؟ قَالَ : قُلْتُ : لاَ، قَالَ فَهَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ قُلْتُ لا قَالَ أَيَتْبَعُهُ أَشْرَافُ النَّاسِ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ قَالَ قُلْتُ بَلْ ضُعَفَاؤُهُمْ قَالَ يَزِيدُونَ أَوْ يَنْقُصُونَ قَالَ : قُلْتُ لاَ، بَلْ يَزِيدُونَ قَالَ : هَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ مِنْهُمْ عَنْ دِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ سُخْطَةً لَهُ؟ قَالَ قُلْتُ : لاَ، قَالَ: فَهَلْ قَاتَلْتُمُوهُ؟ قَالَ : قُلْتُ نَعَمْ، قَالَ: فَكَيْفَ كَانَ قِتَالُكُمْ إِيَّاهُ؟ قَالَ : قُلْتُ تَكُونُ الْحَرْبُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ سِجَالاً يُصِيبُ مِنَّا وَنُصِيبُ مِنْهُ، قَالَ : فَهَلْ يَغْدِرُ؟ قَالَ : قُلْتُ : لاَ، وَنَحْنُ مِنْهُ فِي هَذِهِ الْمُدَّةِ، لاَ نَدْرِي مَا هُوَ صَانِعٌ فِيهَا؟ قَالَ : وَاللهِ مَا أَمْكَنَنِي مِنْ كَلِمَةٍ أُدْخِلُ فِيهَا شَيْئًا غَيْرَ هَذِهِ، قَالَ: فَهَلْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ قَبْلَهُ؟ قَالَ: قُلْتُ : لاَ، ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ : قُلْ لَهُ إِنِّي سَأَلْتُكَ عَنْ حَسَبِهِ فِيكُمْ

बादशाह के बिल्कुल क़रीब बिठा दिया और मेरे दूसरे साथियों को मेरे पीछे बिठा दिया। उसके बाद तर्जुमान को बुलाया और हिरक़्ल ने कहा कि इन्हें बताओ कि मैं उस शख़्स के बारे में तुमसे कुछ सवालात करूँगा, जो नबी होने का दावेदार है, अगर ये (या'नी अबू सुफ़यान रज़ि.) झूठ बोले तो तुम उसके झूठ को ज़ाहिर कर देना। अबू सुफ़यान (रज़ि.) का बयान था कि अल्लाह की क़सम! अगर मुझे इसका डर न होता कि मेरे साथी कहीं मेरे बारे में झूठ बोलना नक़ल न कर दें तो मैं (आँहज़रत ﷺ के बारे में) ज़रूर झूठ बोलता। फिर हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान से कहा कि इससे पूछो कि जिसने नबी होने का दा'वा किया है वो अपने नसब में कैसे हैं? अबू सुफ़यान ने बतलाया कि उनका नसब हममें बहुत ही इज़्ज़त वाला है। उसने पूछा क्या उनके बाप दादा में कोई बादशाह भी हुआ है? बयान किया कि मैंने कहा, नहीं। उसने पूछा, तुमने दा'वा-ए-नुबुव्वत से पहले कभी उन पर झूठ की तोह्मत लगाई थी? मैंने कहा नहीं! पूछा उनकी पैरवी मुअ़ज़्ज़ज़ लोग ज़्यादा करते हैं या कमज़ोर? मैंने कहा कि क़ौम के कमज़ोर लोग ज़्यादा हैं। उसने पूछा, उनके मानने वालो में ज़्यादती होती रही है या कमी? मैंने कहा कि नहीं बल्कि ज़्यादती हो रही है। पूछा कभी ऐसा भी कोई वाक़िया पेश आया है कि कोई शख़्स उनके दीन को क़ुबूल करने के बाद फिर उनसे बदगुमान होकर उनसे फिर गया हो? मैंने कहा ऐसा कभी नहीं हुआ। उसने पूछा, तुमने कभी उनसे जंग भी की है? मैंने कहा कि हाँ। उसने पूछा, तुम्हारी उनके साथ जंग का क्या नतीजा रहा? मैंने कहा कि हमारी जंग की मिषाल एक डोल की है कि कभी उनके हाथ में और कभी हमारे हाथ में। उसने पूछा, कभी उन्होंने तुम्हारे साथ कोई धोखा भी किया? मैंने कहा कि अब तक तो नहीं किया, लेकिन आजकल भी हमारा उनसे एक मुआहिदा चल रहा है, नहीं कहा जा सकता कि उसमें उनका तर्ज़े अ़मल क्या रहेगा? अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने बयान किया, कि अल्लाह की क़सम! इस बात के सिवा और कोई बात में उस पूरी बातचीत में अपनी तरफ़ से नहीं मिला सका, फिर उसने पूछा इससे पहले भी ये दा'वा तुम्हारे यहाँ किसी ने किया था, मैंने कहा कि नहीं। उसके बाद हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान से कहा, इससे कहो कि

فَزَعَمْتَ انَّهُ فِيكُمْ ذُو حَسَبٍ، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْعَثُ فِي احْسَابِ قَوْمِهَا، وَسَأَلْتُكَ هَلْ كَانَ فِي آبَائِهِ مَلِكٌ فَزَعَمْتَ، انْ لاَ، فَقُلْتُ لَوْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مَلِكٌ قُلْتُ: رَجُلٌ يَطْلُبُ مُلْكَ آبَائِهِ، وَسَأَلْتُكَ عَنْ أَتْبَاعِهِ اضْعَفَاؤُهُمْ امْ أَشْرَافُهُمْ؟ فَقُلْتَ: بَلْ ضُعَفَاؤُهُمْ وَهُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ، وَسَأَلْتُكَ هَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ؟ قَبْلَ انْ يَقُولَ مَا قَالَ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، فَعَرَفْتُ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ لِيَدَعَ الْكَذِبَ عَلَى النَّاسِ ثُمَّ يَذْهَبَ فَيَكْذِبَ عَلَى اللهِ وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ مِنْهُمْ عَنْ دِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ سُخْطَةً لَهُ؟ فَزَعَمْتَ أَنْ لاَ، وَكَذَلِكَ الإِيمَانُ إِذَا خَالَطَ بَشَاشَةَ الْقُلُوبِ، وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّهُمْ يَزِيدُونَ، وَكَذَلِكَ الإِيمَانُ حَتَّى يَتِمَّ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَاتَلْتُمُوهُ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّكُمْ قَاتَلْتُمُوهُ فَتَكُونُ الْحَرْبُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ سِجَالاً يَنَالُ مِنْكُمْ وَتَنَالُونَ مِنْهُ، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْتَلَى ثُمَّ تَكُونُ لَهُمُ الْعَاقِبَةُ، وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَغْدِرُ؟ فَزَعَمْتَ أَنَّهُ لاَ يَغْدِرُ وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ لاَ تَغْدِرُ، وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَالَ أَحَدٌ هَذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ؟ فَزَعَمْتَ انْ لاَ، فَقُلْتُ: لَوْ كَانَ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ أَحَدٌ قَبْلَهُ، قُلْتُ رَجُلٌ ائْتَمَّ بِقَوْلٍ، قِيلَ قَبْلَهُ قَالَ: ثُمَّ قَالَ: بِمَ يَأْمُرُكُمْ؟ قَالَ: قُلْتُ يَأْمُرُنَا بِالصَّلاَةِ،

मैंने तुमसे नबी के नसब के बारे में पूछा तो तुमने बताया कि वो तुम लोगों मे बाइ़ज़्ज़त और ऊँचे नसब के समझे जाते हैं, अंबिया का भी यही ह़ाल है। उनकी बिअ़षत हमेशा क़ौम के स़ाहि़बे ह़सब और नसब ख़ानदान में होती है और मैंने तुमसे पूछा था कि क्या कोई उनके बाप-दादाओं में बादशाह गुज़रा है, तो तुमने उसका इंकार किया। मैं उससे इस फ़ैस़ला पर पहुँचा कि अगर उनके बाप दादाओं में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मुम्किन था कि वो अपनी ख़ानदानी सल्तनत को इस त़रह़ वापस लेना चाहते हों और मैंने तुमसे उनकी इत्तिबाअ़ करने वालों के बारे में पूछा कि आया वो क़ौम के कमज़ोर लोग हैं या अशराफ़, तो तुमने बताया कि कमज़ोर लोग उनकी पैरवी करने वालों में (ज़्यादा) हैं। यही त़ब्क़ा हमेशा से अंबिया की इत्तिबाअ़ करता रहा है और मैंने तुमसे पूछा था कि क्या तुमने दा'व-ए-नुबुव्वत से पहले उन पर झूठ का कभी शुब्हा किया था, तो तुमने उसका भी इंकार किया। मैंने उससे ये समझा कि जिस शख़्स़ ने लोगों के मामले में कभी झूठ न बोला, हो, वो अल्लाह के मामले में किस त़रह़ झूठ बोल देगा और मैंने तुमसे पूछा था कि उनके दीन को क़ुबूल करने के बाद फिर उनसे बदगुमान होकर कोई शख़्स़ उनके दीन से कभी फिरा भी है, तो तुमने उसका भी इंकार किया। ईमान का यही अष़र होता है जब वो दिल की गहराइयों में उतर जाए। मैंने तुमसे पूछा था कि उनके मानने वालों की ता'दाद बढ़ती रहती है या कम होती है, तो तुमने बताया कि उनमें इज़ाफ़ा ही होता है, ईमान का यही मामला है, यहाँ तक कि वो कमाल को पहुँच जाए। मैंने तुमसे पूछा था कि क्या तुमने कभी उनसे जंग भी की है? तो तुमने बताया कि जंग की है और तुम्हारे दरम्यान लड़ाई का नतीजा ऐसा रहा है कि कभी तुम्हारे ह़क़ में और कभी उनके ह़क़ में। अंबिया का भी यही मामला है, उन्हें आज़माइश में डाला जाता है और आख़िर अंजाम उन्हीं के ह़क़ में होता है और मैंने तुमसे पूछा था कि उसने तुम्हारे साथ कभी ख़िलाफ़े अ़हद भी मामला किया है तो तुमने उससे भी इंकार किया। अंबिया कभी अ़हद के ख़िलाफ़ नहीं करते और मैंने तुमसे पूछा था कि क्या तुम्हारे यहाँ इस त़रह़ का दा'वा पहले भी किसी ने किया था तो तुमने कहा कि पहले किसी ने इस त़रह़ का दा'वा नहीं किया, मैं उससे इस फ़ैस़ले पर पहुँचा कि अगर किसी ने तुम्हारे यहाँ उससे पहले इस

وَالزَّكَاةِ، وَالصِّلَةِ، وَالْعَفَافِ. قَالَ: إِنْ يَكُ مَا تَقُولُ فِيهِ حَقًّا فَإِنَّهُ نَبِيٌّ، وَقَدْ كُنْتُ أَعْلَمُ أَنَّهُ خَارِجٌ، وَلَمْ أَكُ أَظُنُّهُ مِنْكُمْ، وَلَوْ أَنِّي أَعْلَمُ أَنِّي أَخْلُصُ إِلَيْهِ لأَحْبَبْتُ لِقَاءَهُ، وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهُ لَغَسَلْتُ عَنْ قَدَمَيْهِ وَلَيَبْلُغَنَّ مُلْكُهُ مَا تَحْتَ قَدَمَيَّ قَالَ ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَهُ فَإِذَا فِيهِ.

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مِنْ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللهِ إِلَى هِرَقْلَ عَظِيمِ الرُّومِ، سَلاَمٌ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَدْعُوكَ بِدِعَايَةِ الإِسْلاَمِ أَسْلِمْ تَسْلَمْ، وَأَسْلِمْ يُؤْتِكَ اللهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ، فَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَإِنَّ عَلَيْكَ إِثْمَ الأَرِيسِيِّينَ ﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنْ لاَ نَعْبُدَ إِلاَّ اللهَ -إِلَى قَوْلِهِ- اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ﴾ فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ قِرَاءَةِ الْكِتَابِ ارْتَفَعَتِ الأَصْوَاتُ عِنْدَهُ وَكَثُرَ اللَّغَطُ وَأُمِرَ بِنَا فَأُخْرِجْنَا قَالَ: فَقُلْتُ لأَصْحَابِي حِينَ خَرَجْنَا لَقَدْ أَمِرَ أَمْرُ ابْنِ أَبِي كَبْشَةَ إِنَّهُ لَيَخَافُهُ مَلِكُ بَنِي الأَصْفَرِ فَمَا زِلْتُ مُوقِنًا بِأَمْرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ سَيَظْهَرُ حَتَّى أَدْخَلَ اللهُ عَلَيَّ الإِسْلاَمَ، قَالَ الزُّهْرِيُّ: فَدَعَا هِرَقْلُ عُظَمَاءَ الرُّومِ فَجَمَعَهُمْ فِي دَارٍ لَهُ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الرُّومِ هَلْ لَكُمْ فِي الْفَلاَحِ وَالرَّشَدِ آخِرَ الأَبَدِ وَأَنْ يَثْبُتَ

तरह का दा'वा किया होता तो ये कहा जा सकता था कि ये भी उसी की नक़ल कर रहे हैं। बयान किया कि फिर हिरक़्ल ने पूछा वो तुम्हें किन चीज़ों का हुक्म देते हैं? मैंने कहा नमाज़, ज़कात, स़िलारहमी और पाकदामनी का। आख़िर उसने कहा कि जो कुछ तुमने बताया है अगर वो स़ह़ीह़ है तो यक़ीनन वो नबी हैं उसका इल्म तो मुझे भी था कि उनकी नुबुव्वत का ज़माना क़रीब है लेकिन ये ख़्याल न था कि वो तुम्हारी क़ौम में होंगे। अगर मुझे उन तक पहुँच सकने का यक़ीन होता तो उनके क़दमों को धोता और उनकी हुकूमत मेरे इन दो क़दमों तक पहुँच कर रहेगी। अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) का ख़त़ मंगवाया और उसे पढ़ा, उसमें ये लिखा हुआ था,

अल्लाह, रह़मान और रह़ीम के नाम से शुरू करता हूँ। अल्लाह के रसूल (ﷺ) की त़रफ़ से अ़ज़ीमे रोम हिरक़्ल की त़रफ़, सलामती हो उस पर जो हिदायत की इत्तिबाअ़ करे। अम्मा बअ़द! मैं तुम्हें इस्लाम की त़रफ़ बुलाता हूँ, इस्लाम लाओ तो सलामती पाओगे और इस्लाम लाओ तो अल्लाह तुम्हें दोहरा अज्र देगा। लेकिन तुमने अगर मुँह मोड़ा तो तुम्हारी रिआ़या (के कुफ्र का भार भी सब) तुम पर होगा और, ऐ किताबवालों! एक ऐसी बात की त़रफ़ आ जाओ जो हममें और तुममें बराबर है, वो ये कि हम सिवाय अल्लाह के और किसी की इबादत नहीं करें, अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, अश्हदु बिअन्ना मुस्लिमून तक जब हिरक़्ल ख़त़ पढ़ चुका तो दरबार में बड़ा शोर बर्पा हो गया और फिर हमें दरबार से बाहर कर दिया गया। बाहर आकर मैंने अपने साथियों से कहा कि इब्ने अबी कब्शा का मामला तो अब इस ह़द तक पहुँच चुका है कि मलिक बनी अस़फ़र (हिरक़्ल) भी उनसे डरने लगा। इस वाक़िया के बाद मुझे यक़ीन हो गया कि आँहुज़ूर (ﷺ) ग़ालिब आकर रहेंगे और आख़िर अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम की रोशनी मेरे दिल में भी डाल ही दी। ज़ुह्री ने कहा कि फिर हिरक़्ल ने रोम के सरदारों को बुलाकर एक ख़ास़ कमरे में जमा किया, फिर उनसे कहा ऐ रोमियो! क्या तुम हमेशा के लिये अपनी फ़लाह़ व भलाई चाहते हो और ये कि तुम्हारा मुल्क तुम्हारे ही हाथ में रहे (अगर तुम ऐसा चाहते हो तो इस्लाम क़ुबूल कर लो) रावी ने बयान

لَكُمْ مُلْكُكُمْ قَالَ: فَحَاصُوا حَيْصَةَ حُمُرِ الْوَحْشِ إِلَى الأَبْوَابِ فَوَجَدُوهَا قَدْ غُلِّقَتْ فَقَالَ: عَلَيَّ بِهِمْ فَدَعَا بِهِمْ فَقَالَ: إِنِّي إِنَّمَا اخْتَبَرْتُ شِدَّتَكُمْ عَلَى دِينِكُمْ، فَقَدْ رَأَيْتُ مِنْكُمُ الَّذِي أَحْبَبْتُ فَسَجَدُوا لَهُ وَرَضُوا عَنْهُ.

[راجع: ٧]

किया कि ये सुनते ही वो सब वह्शी जानवरों की तरह दरवाज़े की तरफ़ भागे, देखा तो दरवाज़ा बन्द था, फिर हिरक़्ल ने सबको अपने पास बुलाया कि उन्हें मेरे पास लाओ और उनसे कहा कि मैंने तो तुम्हें आज़माया था कि तुम अपने दीन में कितने पुख़्ता हो, अब मैंने उस चीज़ का मुशाहिदा कर लिया जो मुझे पसन्द थी। चुनाँचे सब दरबारियों ने उसे सज्दा किया और उससे राज़ी हो गये। (राजेअ : 07)

तश्रीह : ये तवील ह़दीष़ यहाँ सिर्फ़ इसलिये लाई गई है कि इसमें आप (ﷺ) के नामा-ए-मुबारक का ज़िक्र है जिसमें आप (ﷺ) ने अहले किताब को आयत, **या अहलल् किताबि तआलव इला कलिमतिन** (आले इमरान : 64) के ज़रिये दा'वते इस्लाम पेश की थी। मगर अफ़सोस कि हिरक़्ल ह़क़ीक़त जानकर भी इस्लाम न ला सका और क़ौमी आर पर उसने नारे जहन्नम को इख़्तियार किया। बेशतर दुनियादारों का यही ह़ाल रहा है कि वो दुनियावी आर की वजह से ह़क़ से दूर रहे हैं या बावजूद ये कि दिल से ह़क़ को ह़क़ जानते हैं। इस तवील ह़दीष़ से बहुत से मसाइल का इस्तिख़राज होता है, जिसके लिये फ़त्हुल बारी का मुतालआ ज़रूरी है। अबू कब्शा आप (ﷺ) की अना ह़लीमा दाई के शौहर का नाम था। इसलिये क़ुरैश आप (ﷺ) को अबू कब्शा से निस्बत देने लगे थे कि वो आप (ﷺ) का रज़ाई बाप था। इससे ये ष़ाबित हुआ कि हिरक़्ल मुसलमान नहीं हुआ था। गो दिल से तस्दीक़ करता था मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद फ़र्माया कि वो नस़रानी है, इस्लाम क़ुबूल करने के लिये ज़ाहिर व बातिन दोनों तरह से मुसलमान होना ज़रूरी है। कलिमति सवाउम् के बारे में ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **अन्नल्मुराद बिल्कलिमति ला इलाह इल्लल्लाह व अला ज़ालिक यदुल्लु सियाक़ुल्आयति अल्लज़ी तज़म्मनहू क़ौलुहू अल्ला नअबुद इल्लल्लाह व ला नुश्रिक बिही शैअन व ला यत्तख़िज़ बअज़ुना बअज़न अर्बाबम मिन दुनिल्लाह फइन्न जमीअ ज़ालिक दाख़िलुन तहत कलिमतिन व हिया ला इलाह इल्लल्लाह वल्कलिमतु अला हाज़ा बिमअनल्कलामि व ज़ालिक साइगुन फ़िल्लुग़ति फतुत्लक़ुल्कलिमतु अलल्कलिमात लिअन्न बअज़हा मर्बूततुन बिबअज़िन फस़ारत फ़ी क़ुव्वतिल्कलिमतिल्वाहिदति बिखिलाफ़ि इस्तिलाहिन्नुहाति फ़ी तफ़्रीकिहिम बैनल्कलिमति वल्कलाम** (फ़त्हुल्बारी) ख़ुलास़ा यही है कि कलिमति सवाउम् से मुराद ला इलाहा इल्लल्लाह है।

٥- باب قوله ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ- إِلَى- بِهِ عَلِيمٌ﴾

बाब 5 : आयत 'लन तनालुल्बिर्र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ मुसलमानों ! जब तक अल्लाह की राह में तुम अपनी मह़बूब चीज़ों को ख़र्च न करोगे, नेकी को न पहुँच सकोगे। आख़िर आयत अलीम तक।

4554. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मदीना में ह़ज़रत अबू त़लहा (रज़ि.) के पास अंसार में सबसे ज़्यादा खजूरों के पेड़ थे और बीरे-हाअ का बाग़ अपनी तमाम जायदाद में उन्हें सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ था। ये बाग़ मस्जिदे नबवी के सामने ही था और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) भी उसमे तशरीफ़ ले जाते और उसके मीठे और उ़म्दा पानी को पीते, फिर जब आयत, 'जब तक तुम अपनी अ़ज़ीज़तरीन चीज़ों को न खर्च करोगे नेकी के मर्तबे तक न पहुँच सकोगे'; नाज़िल हुई तो ह़ज़रत अबू त़लहा (रज़ि.) उठे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि जब तक तुम अपनी अ़ज़ीज़ चीजों को खर्च न करोगे नेकी के मर्तबे को न पहुँच सकोगे और मेरा सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ माल बीरेहाअ है और ये अल्लाह की राह में स़दक़ा है। अल्लाह ही से मैं उसके स़वाब व अज्र की तवक़्क़ुअ रखता हूँ, पस या रसूलल्लाह! जहाँ आप मुनासिब समझें उसे इस्ते'माल करें। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़ूब ये फ़ानी ही दौलत थी, ये फ़ानी ही दौलत थी। जो कुछ तुमने कहा है वो मैंने सुन लिया और मेरा ख़याल है कि तुम अपने अ़ज़ीज़ व अक़्रबा को उसे दे दो। ह़ज़रत अबू त़लहा (रज़ि.) ने कहा कि मैं ऐसा ही करूँगा, या रसूलल्लाह! चुनाँचे उन्होंने वो बाग़ अपने अ़ज़ीज़ों और अपने नाते वालों में बांट दिया। अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और रौह बिन उ़बादा ने, ज़ालिका मालुन राबिहुन (रिबह से) बयान किया है। या'नी ये माल बहुत नफ़ा देने वाला है।

मुझसे यह्या बिन यह्या ने बयान किया, कहा कि मैंने इमाम मालिक के सामने माल रायह (रवाह से) पढ़ा था। (राजेअ: 1461)

٤٥٥٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ أَكْثَرَ أَنْصَارِيٍّ بِالْمَدِينَةِ نَخْلاً، وَكَانَ أَحَبُّ أَمْوَالِهِ إِلَيْهِ بِيْرُحَاءَ، وَكَانَتْ مُسْتَقْبِلَةَ الْمَسْجِدِ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْخُلُهَا وَيَشْرَبُ مِنْ مَاءٍ فِيهَا طَيِّبٍ، فَلَمَّا أُنْزِلَتْ ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ قَامَ أَبُو طَلْحَةَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ اللهَ يَقُولُ: ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ﴾ وَإِنَّ أَحَبَّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بِيْرُحَاءَ، وَإِنَّهَا صَدَقَةٌ لِلهِ أَرْجُو بِرَّهَا وَذُخْرَهَا عِنْدَ اللهِ فَضَعْهَا يَا رَسُولَ اللهِ حَيْثُ أَرَاكَ اللهُ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَخْ ذَلِكَ مَالٌ رَايِحٌ، ذَلِكَ مَالٌ رَايِحٌ)) وَقَدْ سَمِعْتُ مَا قُلْتَ: وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَجْعَلَهَا فِي الأَقْرَبِينَ قَالَ أَبُو طَلْحَةَ: أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَسَمَهَا أَبُو طَلْحَةَ فِي أَقَارِبِهِ وَبَنِي عَمِّهِ. قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ: وَرَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ ذَلِكَ مَالٌ رَابِحٌ.

.... - حدثني يحيى بن يحيى قال قرأت على مالكٍ مَالٌ رَايِحٌ. [راجع: ١٤٦١]

तशरीह़ : तूने अच्छा किया जो ख़ैरात करके उसको क़ायम कर दिया, अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ की रिवायत को ख़ुद इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है। कुछ स़ह़ाबा (रज़ि.) नाक़िस़ खजूर अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को देते, इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई। अच्छा माल मौजूद होते हुए अल्लाह की राह में नाक़िस़ माल देना अच्छा नहीं है जैसा माल हो वैसा ही देना चाहिये।

4555. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे

٤٥٥٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ

الأنصاريُّ، حدَّثني أبي عن ثُمامة، عن أنس رضي الله عنه قال: فجعلها لحسان وأبي وأنا أقرب إليه ولم يجعل لي منها شيئا. [راجع: ١٤٦١]

अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे ष़ुमामा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने वो बाग़ ह़स्सान और उबई (रज़ि.) को दे दिया था। मैं उन दोनों से उनका ज़्यादा क़रीबी था लेकिन मुझे नहीं दिया। (राजेअ़ : 1461)

उसकी वजह ये थी कि अनस (रज़ि.) की माँ अबू त़लह़ा (रज़ि.) के निकाह़ में थीं, अबू त़लह़ा (रज़ि.) अनस (रज़ि.) को अपने बेटे की त़रह़ रखते थे और ग़ैर नहीं समझते थे।

٦- باب قوله ﴿قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾

बाब 6 : आयत 'क़ुल फ़ातू बित्तौराति फ़त्लूहा इन्कुन्तुम स़ादिक़ीन'

या'नी तो आप कह दें कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। यहूद से एक ख़ास़ काम पर ये मुत़ालबा किया गया था जैसा कि नीचे लिखी ह़दीष़ में वारिद है।

٤٥٥٦- حدَّثني إبراهيم بن المنذر، حدَّثنا أبو ضمرة، حدَّثنا موسى بن عقبة، عن نافع عن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما، أن اليهود جاؤوا إلى النبي ﷺ برجل منهم وامرأة قد زنيا فقال لهم: ((كيف تفعلون بمن زنى منكم)) قالوا: نحممهما ونضربهما فقال: ((ألا تجدون في التوراة الرجم)) فقالوا: لا نجد فيها شيئا فقال لهم عبد الله بن سلام: كذبتم ﴿فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم صادقين﴾ فوضع مدراسها الذي يدرسها منهم كفه على آية الرجم، فطفق يقرأ ما دون يده وما وراءها ولا يقرأ آية الرجم فنزع يده عن آية الرجم فقال: ((ما هذه؟)) فلما رأوا ذلك قالوا: هي آية الرجم فأمر بهما فرجما قريبا من حيث موضع الجنائز عند المسجد قال: فرأيت صاحبها يجنأ عليها يقيها الحجارة.

4556. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अबू ज़म्रह ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि कुछ यहूदी नबी करीम (ﷺ) के पास अपने क़बील के एक मर्द और एक औ़रत को लेकर आए, जिन्होंने ज़िना किया था। आप (ﷺ) ने उनसे पूछा अगर तुममें से कोई ज़िना करे तो तुम उसको क्या सज़ा देते हो? उन्होंने कहा कि हम उसका मुँह काला करके उसे मारते पीटते हैं। आपने फ़र्माया क्या तौरात में रजम का हुक्म नहीं है? उन्होंने कहा कि हमने तौरात में रजम का हुक्म नहीं देखा। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) बोले कि तुम झूठ बोल रहे हो, तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो। (जब तौरात लाई गई) तो उनके एक बहुत बड़े मुदर्रिस ने जो उन्हें तौरात का दर्स दिया करता था, आयते रजम पर अपनी हथेली रख ली और उससे पहले और उसके बाद की इबारत पढ़ने लगा और आयते रजम नहीं पढ़ता था। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने उसके हाथ को हटा दिया और उससे पूछा कि ये क्या है? जब यहूदियों ने देखा तो कहने लगे कि ये आयते रजम है, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया और उन दोनों को मस्जिदे नबवी के क़रीब ही जहाँ जनाज़े लाकर रखे जाते थे, रजम कर दिया गया। मैंने देखा कि उस औ़रत का साथी औ़रत को पत्थर से

बचाने के लिये उस पर झुक-झुक पड़ता था। (राजेअ़ : 1329)

[راجع: ١٣٢٩]

तश्रीह : उ़लमा-ए-यहूद की बद-दयानती थी कि वो मनमानी कार्रवाई करते और तौरात के अह़काम में रद्दोबदल कर दिया करते थे। जिसकी एक मिष़ाल मज़्कूरा रिवायत में है। फ़ुक़हा-ए-इस्लाम में से भी कुछ का रवैया ऐसा रहा है कि उन्होंने शरई अह़काम की रद्दोबदल के लिये किताबुल ह़ियल लिख डाली, जिसमें इस क़िस्म के बहुत से ह़ीले सिखलाए गये हैं। ख़ास़ तौर पर अहले बिदअ़त ने मुख़्तलिफ़ ह़ीलों ह़वालों से तमाम ही मनहियात को जाइज़ बना रखा है। नाचना, गाना–बजाना, ग़ैरुल्लाह को पुकारना, उनके नामों का वज़ीफ़ा पढ़ना कौनसा ऐसा बुरा काम है जो अहले बिदअ़त ने जाइज़ न कर रखा हो। यही लोग हैं जिनको ईसाइयों और यहूदियों का चर्बा कहना मुनासिब है। रजम का मा'नी पत्थरों से कुचलकर मार देना। हुकूमते सऊ़दिया अ़रबिया ख़ल्लदल्लाह में आज भी क़ुर्आनी क़वानीन जारी हैं। अय्यदल्लाहु।

बाब 7 : आयत 'कुन्तुम ख़ैर उम्मतिन'

٧- باب قوله ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾

अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी, तुम लोग बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिये पैदा की गई हो तुम नेक कामों का हुक्म करते हो, बुरे कामों से रोकते हो।

4557. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा उनसे सुफ़यान ने, उनसे मैसरा ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आयत, तुम लोग लोगों के लिये सब लोगों से बेहतर हो, और कहा उनको गर्दनों में ज़ंजीरें डालकर (लड़ाई में गिरफ़्तार करके) लाते हो फिर वो इस्लाम में दाख़िल हो जाते हो। (राजेअ़ : 3010)

٤٥٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مَيْسَرَةَ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾ قَالَ: خَيْرَ النَّاسِ لِلنَّاسِ تَأْتُونَ بِهِمْ فِي السَّلاَسِلِ، فِي أَعْنَاقِهِمْ حَتَّى يَدْخُلُوا فِي الإِسْلاَمِ.

[راجع: ٣٠١٠]

तश्रीह : ये गिरफ़्तारी उनके ह़क़ में नेअ़मते उ़ज़्मा हो जाती है। वो मुसलमान होकर ष़वाबे अबदी और सआ़दते सरमदी ह़ासिल करते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम लोग उम्मतों का सत्तरवाँ अ़दद पूरा करने वाले हो, तुमसे पहले 69 उम्मतें गुज़र चुकी हैं। उन सब उम्मतों में अल्लाह के नज़दीक तुम बेहतरीन उम्मत हो, उन उम्मतों में तारीख़े इंसानी की सारी क़ौमें दाख़िल हैं, वो हिन्दी हो या सिंधी हो या अ़रबी या अंग्रेज़ी सब ही उसमें दाख़िल हैं।

बाब 8 : आयत 'इज़ हम्मत ताइफ़तानि मिन्कुम'

٨- باب قوله ﴿إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلاَ﴾

अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी, जब तुममें से दो जमाअ़तें इसका ख़याल कर बैठी थीं कि वो बुज़दिल होकर हिम्मत हार बैठें।

4558. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा अ़म्र बिन दीनार ने कहा, उन्होंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रह) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमारे ही बारे में ये आयत नाज़िल हुई थी, जब हमसे दो जमाअ़तें इसका ख़याल

٤٥٥٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : قَالَ عَمْرٌو سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : فِينَا نَزَلَتْ: ﴿إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ

تفشلاَ واللهُ وَلِيُّهُمَا﴾ قَالَ: نَحْنُ الطَّائِفَتَانِ بَنُو حَارِثَةَ، وَبَنُو سَلِمَةَ، وَمَا نُحِبُّ وَقَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً: وَمَا يَسُرُّنِي أَنَّهَا لَمْ تَنْزِلْ لِقَوْلِ اللهِ: ﴿وَاللهُ وَلِيُّهُمَا﴾.

[راجع: ٥٠٥١]

कर बैठी थीं कि हिम्मत हार दें, जबकि ह़ाल ये कि अल्लाह दोनों का मददगार था। सुफ़यान ने बयान किया कि हम दो जमाअ़तें बनू ह़ारिष़ और बनू सलाम थे। हालाँकि इस आयत में हमारे बोदेपन का ज़िक्र है, मगर हमको ये पसन्द नहीं कि ये आयत न उतरती क्योंकि उसमें ये मज़्कूर है कि अल्लाह उन दोनों गिरोहों का मददगार (सरपरस्त) है। (राजेअ़ : 5051)

इससे बढ़कर और फ़ज़ीलत क्या होगी कि विलायते इलाही हमको ह़ासिल हो गई। हमारे बोदेपन का जो ज़िक्र है वो स़ह़ीह़ है। इस फ़ज़ीलत के सामने हमको इस ऐ़ब के फ़ाश होने का बिलकुल मलाल नहीं।

٩- باب قوله ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

बाब 9 : आयत 'लैस लक मिनल्अम्रि शैउन'

की तफ़्सीर या'नी, आपको इस अम्र में कोई दख़ल नहीं कि ये हिदायत क्यूँ नहीं क़ुबूल करते अल्लाह जिसे चाहे उसे हिदायत मिलती है।

٤٥٥٩- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ إِذَا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ فِي الرَّكْعَةِ الآخِرَةِ مِنَ الْفَجْرِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا وَفُلاَنًا)) بَعْدَ مَا يَقُولُ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ)) فَأَنْزَلَ اللهُ لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ إِلَى قَوْلِهِ ﴿فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾. رَوَاهُ إِسْحَاقُ بْنُ رَاشِدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[راجع: ٤٠٦٩]

4559. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे सालिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़ज्र की दूसरी रकअ़त के रुकूअ़ से सर उठाकर ये बद्दुआ की, 'ऐ अल्लाह! फ़लाँ फ़लाँ और फ़लाँ काफ़िर पर ला'नत कर', ये बद्दुआ आपने समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदह् और रब्बना लकल ह़म्द के बाद की थी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी, 'आपको उसमें कोई दख़ल नहीं' आख़िर आयत फ़इन्नहुम ज़ालिमून तक। इस रिवायत को इस्ह़ाक़ बिन राशिद ने ज़ुह्री से नक़ल किया है। (राजेअ़ : 4069)

तश्रीह़ : इस्ह़ाक़ बिन राशिद की रिवायत को त़बरानी ने मुअ़जमे कबीर में वस्ल किया है। आपने चार शख़्सों का नाम लेकर बद्दुआ की थी। स़फ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन उ़मैर, ह़ारिष़ बिन हिशाम और अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) और बाद में ये चारों मुसलमान हो गये। अल्लाह को उनका मुस्तक़्बिल मा'लूम था, इसीलिये अल्लाह ने उन पर ला'नत करने से मना किया।

٤٥٦٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ. حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي

4560. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलाम बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.)

ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब किसी पर बद्दुआ करना चाहते या किसी के लिये दुआ करना चाहते तो रुकूअ के बाद करते। समिअल्लाहु लिमन हमिदह अल्लाहुम्म रब्बना व लकल हम्द के बाद कुछ औक़ात आपने ये दुआ भी की, 'ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद, सलाम बिन हिशाम और अयाश बिन अबी रबीआ को नजात दे, ऐ अल्लाह! मुज़र वालों को सख़्ती के साथ पकड़ ले और उनमें ऐसी क़हतसाली ला, जैसी यूसुफ़ (अलैहि.) के ज़माने में हुई थी।' आप (ﷺ) बुलन्द आवाज़ से दुआ करते और आप नमाज़े फ़ज्र की कुछ रकअत में ये दुआ करते, 'ऐ अल्लाह! फ़लाँ फ़लाँ और फ़लाँ को अपनी रहमत से दूर कर दे।' अरब के चन्द ख़ास क़बीलों के हक़ में आप (ये बद्दुआ करते थे) यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल की कि, आपको इस अम्र में कोई दख़ल नहीं। (राजेअ : 797)

سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَدْعُوَ عَلَى أَحَدٍ أَوْ يَدْعُوَ لأَحَدٍ قَنَتَ بَعْدَ الرُّكُوعِ فَرُبَّمَا قَالَ إِذَا قَالَ: ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ اللَّهُمَّ، أَنْجِ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ وَسَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ، وَعَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ، اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ وَاجْعَلْهَا سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ)) يَجْهَرُ بِذَلِكَ وَكَانَ يَقُولُ فِي بَعْضِ صَلاَتِهِ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا وَفُلاَنًا)) لأَحْيَاءٍ مِنَ الْعَرَبِ حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾ الآيَةَ. [راجع: ٧٩٧]

बाद में वो क़बीले मुसलमान हो गये। इसीलिये अल्लाह तआला ने उन पर बद्दुआ करने से आप (ﷺ) को मना फ़र्माया था, बड़ों के इशारे भी बड़ी गहराइयाँ रखते हैं।

बाब 10 : आयत 'वर्रसूलु यदऊकुम फ़ी उख़राकुम' की तफ़्सीर या'नी,

और रसूल तुमको पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से, उख़राकुम आख़रकुम की तानीष़ है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा दो सआदतों में से एक फ़तह और दूसरी शहादत है।

١٠- باب قَوْلِهِ ﴿وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ﴾ وَهُوَ تَأْنِيثُ آخِرِكُمْ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ﴾ فَتْحًا أَوْ شَهَادَةً.

4561. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि उहुद की लड़ाई में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (तीरंदाज़ों के) पैदल दस्ते पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) को अफ़सर मुक़र्रर किया था, फिर बहुत से मुसलमानों ने पीठ फेर ली, ''आयत'' और रसूल तुमको पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे से, में उसी की तरफ़ इशारा है, उस वक़्त रसूले करीम (ﷺ) के साथ बारह सहाबियों के सिवा और कोई मौजूद न था। (राजेअ : 3039)

٤٥٦١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ بْنَ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الرَّجَّالَةِ يَوْمَ أُحُدٍ عَبْدَ اللهِ بْنَ جُبَيْرٍ، وَأَقْبَلُوا مُنْهَزِمِينَ فَذَاكَ ﴿إِذْ يَدْعُوهُمُ الرَّسُولُ فِي أُخْرَاهُمْ﴾ وَلَمْ يَبْقَ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ غَيْرُ اثْنَيْ عَشَرَ رَجُلاً. [راجع: ٣٠٣٩]

तश्रीह : ये जंगे उहुद का वाक़िया है। उन तीरंदाज़ों की नाफ़र्मानी के नतीजे में सारे मुसलमानों को नुक़्साने अ़ज़ीम उठाना पड़ा कि सत्तर स़हाबा (रज़ि.) शहीद हुए। उन तीरंदाज़ों ने नस़ के मुक़ाबले मे राये क़यास से काम लिया था, इसलिये कुर्आन व ह़दीष़ के होते हुए राये क़यास पर चलना अल्लाह व रसूल (ﷺ) के साथ ग़द्दारी करना है।

बाब 11 : आयत 'अमनतन नुआ़सन' की तफ़्सीर

١١- باب قَوْلِهِ ﴿أَمَنَةً نُعَاسًا﴾

या'नी तुम्हारे ऊपर गुनूदगी (नींद) की शक्ल में राहत नाज़िल की

4562. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान अबू यअ़क़ूब बग़दादी ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने कहा, उहुद की लड़ाई में जब हम स़फ़ बाँधे खड़े थे तो हम पर गुनूदगी त़ारी हो गई थी। अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि कैफ़ियत ये हो गई थी कि नींद से मेरी तलवार हाथ से बार बार गिरती और मैं उसे उठाता। (राजेअ़ : 4067)

٤٥٦٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَبُو يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا أَنَسٌ أَنَّ أَبَا طَلْحَةَ قَالَ: غَشِيَنَا النُّعَاسُ وَنَحْنُ فِي مَصَافِّنَا يَوْمَ أُحُدٍ قَالَ : فَجَعَلَ سَيْفِي يَسْقُطُ مِنْ يَدِي وَآخُذُهُ وَيَسْقُطُ وَآخُذُهُ. [راجع: ٤٠٦٨]

गुनूदगी से सुस्ती दूर होकर जिस्म में ताज़गी आ जाती है। जंगे उहुद में यही हुआ जिसका ज़िक्र रिवायते हाज़ा मे किया गया है।

बाब 12 : आयत 'अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि' की तफ़्सीर या'नी,

जिन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की दा'वत को क़ुबूल कर लिया बाद उसके कि उन्हें ज़ख़्म पहुँच चुका था, उनमें से जो नेक और मुत्तक़ी हैं उनके लिये बहुत बड़ा ष़वाब है। अल क़रह़ या'नी अल जरह़ (ज़ख़्म) इस्तजाबू या'नी इजाबू उन्होंने क़ुबूल किया। यस्तजीबू अयं युजीबु वो क़ुबूल करते हैं।

١٢- باب قوله ﴿الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لله وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوا أَجْرٌ عَظِيمٌ﴾ الْقَرْحُ : الْجِرَاحُ. اسْتَجَابُوا : أَجَابُوا يَسْتَجِيبُ : يُجِيبُ.

बाब 13 : आयत ' इन्नन्नास क़द जमऊ लकुम' की तफ़्सीर या'नी,

١٣- باب ﴿إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ﴾ الآيَةَ.

मुसलमानों से कहा गया कि बेशक लोगों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ बहुत सामाने जंग जमा किया है। पस उनसे डरो तो मुसलमानों ने जवाब में ह़स्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील कहा।

4563. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, मैं समझता हूँ कि उन्होंने ये कहा कि हमसे अबूबक्र शुअ़बा बिन अ़याश ने बयान किया, उनसे अबू हुस़ैन उ़ष्मान बिन आ़स़िम ने और उनसे अबुज़् ज़ुहा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि कलिमा ह़स्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील इब्राहीम (अ़लैहि.) ने

٤٥٦٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ أُرَاهُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ قَالَهَا : إِبْرَاهِيمُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ

कहा था, उस वक़्त जब उनको आग में डाला गया था और यही कलिमा ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) ने उस वक़्त कहा था जब लोगों ने मुसलमानों को डराने के लिये कहा था कि लोगों (या'नी क़ुरैश) ने तुम्हारे ख़िलाफ़ बड़ा सामाने जंग इकट्ठा कर रख है, उनसे डरो लेकिन इस बात ने उन मुसलमानों का (जोश) ईमान और बढ़ा दिया और ये मुसलमान बोले कि हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है और वही बेहतरीन काम बनाने वाला है। (दीगर मक़ाम : 4564)

حِينَ أُلْقِيَ فِي النَّارِ، وَقَالَهَا مُحَمَّدٌ ﷺ حِينَ قَالُوا : إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا: حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ.

[طرفه في: ٤٥٦٤].

4564. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू हुस़ैन ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब इब्राहीम (अ़लैहि.) को आग में डाला गया तो आख़िरी कलिमा जो आपकी ज़ुबाने मुबारक से निकला, ह़स्बियल्लाहु व निअ़मल वकील था या'नी मेरी मदद के लिये अल्लाह काफ़ी है और वही बेहतरीन कारसाज है। (राजेअ़ : 4563)

٤٥٦٤- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ. حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي الضُّحَى. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : كَانَ آخِرَ قَوْلِ إِبْرَاهِيمَ حِينَ أُلْقِيَ فِي النَّارِ : حَسْبِيَ اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ.

[راجع: ٤٥٦٣]

तश्रीह : इस मुबारक कलिमा में तौह़ीद का भरपूर इज़्हार है। इसीलिये ये एक बेहतरीन कलिमा है। जिससे मुस़ीबतों के वक़्त अ़ज़्म व ह़ौसला में इस्तिह़काम पैदा हो सकता है। बत़ौरे वज़ीफ़ा उसे रोज़ाना पढ़ने से नुस़रते इलाही ह़ासिल होती है और इसकी बरकत से हर मुश्किल आसान हो जाती है। क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआ़ला ने उसे अपने रसूल को ख़ुद तल्क़ीन फ़र्माया है जैसा कि आयत **फ़इन तवल्लौ फ़क़ुल ह़स्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव तवक्कल्तु** (अत् त़ौबा : 129) में मज़्कूर है।

बाब 14 : आयत 'व ला यहसबन्नल्लज़ीन यफ़्रहून बिमा अतौ' की तफ़्सीर या'नी,

इस आयत में जो सयुतव्वक़ून का लफ़्ज़ है वो त़व्वक़्तुहू बि त़व्क़िन से है या'नी त़ौक़ पहनाए जाएँगे।

١٤- باب قوله

﴿وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهِ﴾ الآيَة. سَيُطَوَّقُونَ. كَقَوْلِكَ طَوَّقْتُهُ بِطَوْقٍ.

या'नी, और जो लोग कि इस माल में बुख़्ल करते रहते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दे रखा है, वो हर्गिज़ ये न समझे कि ये माल उनके ह़क़ में अच्छा है, नहीं, बल्कि उनके ह़क़ में बहुत बुरा है। यक़ीनन क़यामत के दिन उन्हें उसका माल त़ौक़ बनाकर पहनाया जाएगा। जिसमें उन्होंने बुख़्ल (कंजूसी) किया था और आसमानों और ज़मीन का अल्लाह ही मालिक है और जो तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है।

4565. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुनीर ने बयान किया, उन्होंने अबुन् नज़्र हाशिम बिन क़ासिम से सुना, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया

٤٥٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُنِيرٍ سَمِعَ أَبَا النَّضْرِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ

الله ﷺ: ((مَنْ آتاهُ الله مالاً فَلَمْ يُؤَدِّ زَكاتَهُ مُثِّلَ لَهُ مالُهُ شُجاعًا أقْرَعَ لَهُ زَبِيبتان، يُطَوَّقُهُ يَوْمَ القِيامَةِ يأخُذ بلِهْزِمَتِهِ - يَعْنِي بِشِدْقَيْهِ - يَقُولُ أنا مالُكَ أنا كَنْزُكَ)) ثُمَّ تلا هذه الآيَة: ((﴿وَلاَ يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِما آتاهُمُ الله مِنْ فَضْلِهِ﴾)) إلى آخِرِ الآيَة.

[راجع: ١٤٠٣]

जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया और फिर उसने उसकी ज़कात नहीं अदा की तो (आख़िरत में) उसका माल निहायत ज़हरीले सांप बनकर जिसकी आँखों के ऊपर दो नुक़्ते होंगे। उसकी गर्दन में तौक़ की तरह पहना दिया जाएगा। फिर वो सांप उसके दोनों जबड़ों को पकड़कर कहेगा कि मैं ही तेरा माल हूँ, मैं ही तेरा ख़ज़ाना हूँ, फिर आपने इस आयत की तिलावत की, 'और जो लोग कि उस माल में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से दे रखा है, वो ये न समझे कि ये माल उनके हक़ में बेहतर है', आख़िर तक। (राजेअ : 1403)

तश्रीह : आयत में उन मालदारों का बयान है जो ज़कात नहीं अदा करते बल्कि सोने चाँदी को बतौरे ख़ज़ाना जमा करके रखते हैं। उनका हाल क़यामत के दिन ये होगा कि उनका वो ख़ज़ाना ज़हरीला सांप बनकर उनकी गर्दनों का हार बनेगा और उनके जबड़ों को चीरेगा। ये वो दौलत के पुजारी लोग होंगे जिन्होंने दुनिया में ख़ज़ाना गाड़-गाड़कर रखा और उसकी ज़कात तक अदा नहीं की।

١٥- باب قوله ﴿وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا﴾

बाब 15 : आयत 'वल तस्मउना मिनल्लज़ीन ऊतुल किताब' की तफ़्सीर या'नी,

और यक़ीनन तुम लोग बहुत सी दिल दुखाने वाली बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी सुनोग जो मुश्रिक हैं।

या'नी यहूद व नसारा व बुतपरस्त क़ौमें हमेशा तकलीफ़ देने पर आमादा रहेंगी मगर तुमको सब्र व इस्तिक़ामत के साथ ये सारे मसाइब बर्दाश्त करने होंगे।

٤٥٦٦- حدَّثَنا أبو اليمان أخْبَرَنا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَوْله أخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أنَّ أُسامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ الله عَنْهُما أخْبَرَهُ أنَّ رسول الله ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمارٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ وَأرْدَفَ أُسامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبادَةَ فِي بَنِي الْحارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ. قالَ : حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أنْ يُسْلِمَ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ فَإذَا فِي الْمَجْلِسِ أخْلاطٌ

4566. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे की पुश्त पर फ़िदक की बनी हुई एक मोटी चादर रखने के बाद सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे बिठाया। आप (ﷺ) बनू हारिष़ बिन ख़ज़रज में सअद बिन उबादा (रज़ि.) की मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। रास्ते में एक मजलिस से आप गुज़रे जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) भी मौजूद था, ये अब्दुल्लाह बिन उबई के ज़ाहिरी इस्लाम लाने से भी पहले का क़िस्सा है। मज्लिस में मुसलमान और मुश्रिकीन या'नी बुतपरस्त और यहूदी सब ही

तरह के लोग थे, उन्हीं में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) भी थे। सवारी की (टापों से गर्द उड़ी और) मज्लिस वालों पर पड़ी तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने चादर से अपनी नाक बन्द कर ली और बतौरे तहक़ीर कहने लगा कि हम पर गर्द न उड़ाओ, इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी क़रीब पहुँच गये और उन्हें सलाम किया, फिर आप सवारी से उतर गये और मज्लिस वालों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और क़ुर्आन की आयतें पढ़कर सुनाईं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल कहने लगा, जो कलाम आपने पढ़कर सुनाया है, उससे उ़म्दह कोई कलाम नहीं हो सकता। अगरचे ये कलाम बहुत अच्छा है, फिर भी हमारी मज्लिसों में आ आकर आप हमें तकलीफ़ न दिया करें, अपने घर बैठें, अगर कोई आपके पास जाए तो उसे अपनी बातें सुनाया करें। (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने कहा, ज़रूर या रसूलल्लाह! आप हमारी मज्लिसों में तशरीफ़ लाया करें, हम उसी को पसन्द करते हैं। उसके बाद मुसलमान, मुश्रिकीन और यहूदी आपस में एक–दूसरे को बुरा–भला कहने लगे और क़रीब था कि फ़साद और लड़ाई तक नौबत पहुँच जाती लेकिन आपने उन्हें ख़ामोश और ठण्डा कर दिया और आख़िर सब लोग ख़ामोश हो गये, फिर आप (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार होकर वहाँ से चले आए और सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर (ﷺ) ने सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) से भी इसका ज़िक्र किया कि सअ़द! तुमने नहीं सुना, अबू हुबाब! आपकी मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल से थी, क्या कह रहा था? उसने इस तरह की बातें की हैं। सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप उसे मुआ़फ़ फ़र्मा दें और उससे दरगुज़र करें। उस ज़ात की क़सम! जिसने आप पर किताब नाज़िल की है अल्लाह आप (ﷺ) के ज़रिये वो हक़ भेजा है जो उसने आप पर नाज़िल किया है, इस शहर (मदीना) के लोग (पहले) इस पर मुत्तफ़िक़ हो चुके थे कि इस (अ़ब्दुल्लाह बिन उबई) को ताज पहना दें और (शाही) अ़मामा उसके सर पर बाँध दें लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने उस हक़ के ज़रिये जो आपको उसने अ़ता किया है, उस बातिल को रोक दिया तो अब वो चिढ़ गया है और इस वजह से वो मामला उसने आपके साथ किया जो आपने

مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ قَوْلِهِ عبدةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَالْمُسْلِمِينَ وَفِي الْمجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِينَا بِهِ فِي مَجْلِسِنَا ارْجِعْ إِلَى رَحْلِكَ فَمَنْ جَاءَكَ فَاقْصُصْ عَلَيْهِ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ : بَلَى، يَا رَسُولَ اللهِ فَاغْشَنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا فَإِنَّا نُحِبُّ. ذَلِكَ فَاسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ، حَتَّى كَادُوا يَتَثَاوَرُونَ فَلَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَنُوا ثُمَّ رَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ دَابَّةً فَسَارَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا سَعْدُ أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ - يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ - قَالَ كَذَا وَكَذَا)) قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ : يَا رَسُولَ اللهِ اعْفُ عَنْهُ وَاصْفَحْ عَنْهُ فَوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَقَدْ جَاءَ اللهُ بِالْحَقِّ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ لَقَدِ اصْطَلَحَ أَهْلُ هَذِهِ الْبُحَيْرَةِ عَلَى أَنْ يُتَوِّجُوهُ فَيُعَصِّبُونَهُ بِالْعِصَابَةِ، فَلَمَّا أَبَى اللهُ ذَلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ اللهُ شَرِقَ بِذَلِكَ

فذلك فعل به ما رأيت فعفا عنه رسول الله ﷺ وكان النبي ﷺ وأصحابه يعفون عن المشركين وأهل الكتاب كما أمرهم الله، ويصبرون على الأذى قال الله تعالى: ﴿ولتسمعن من الذين أوتوا الكتاب من قبلكم ومن الذين أشركوا أذى كثيرا﴾ الآية وقال الله: ﴿ود كثير من أهل الكتاب لو يردونكم من بعد إيمانكم كفارا حسدا من عند أنفسهم﴾ إلى آخر الآية وكان النبي ﷺ يتأول العفو ما أمره الله به حتى أذن الله فيهم. فلما غزا رسول الله ﷺ بدرا فقتل الله به صناديد كفار قريش قال ابن أبي ابن سلول ومن معه من المشركين وعبدة الأوثان هذا أمر قد توجه فبايعوا الرسول على الإسلام فأسلموا. [راجع: ٢٩٨٧]

मुलाहिज़ा फ़र्माया है। आपने उसे मुआफ़ कर दिया। आँहुज़ूर (ﷺ) और सहाबा (रज़ि.) मुश्रिकीन और अहले किताब से दरगुज़र किया करते थे और उनकी अज़िय्यतों पर सब्र किया करते थे। उसी के बारे में ये आयत नाज़िल हुई, और यक़ीनन तुम बहुत सी दिल आज़ारी की बातें उनसे भी सुनोगे, जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी जो मुश्रिक हैं और अगर तुम सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो तो ये बड़े अ़ज़्म व हौसले की बात है, और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, बहुत से अहले किताब तो दिल ही से चाहते हैं कि तुम्हें ईमान (ले आने) के बाद फिर से हसद की राह से जो उनके दिलों में है। आख़िर आयत तक।

जैसा कि अल्लाह तआ़ला का हुक्म था, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमेशा कुफ़्फ़ार को मुआफ़ कर दिया करते थे। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने आपको उनके साथ जंग की इजाज़त दे दी और जब आपने ग़ज़्व-ए-बद्र किया तो अल्लाह तआ़ला की मंशा के मुताबिक़ क़ुरैश के काफिर सरदार उसमें मारे गये तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल और उसके दूसरे मुश्रिक और बुतपरस्त साथियों ने आपस में मश्वरा करके उन सबने भी हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से इस्लाम पर बेअ़त कर ली और ज़ाहिरन (दिखावटी तौर पर) इस्लाम में दाख़िल हो गये। (राजेअ़ : 2987)

तश्रीह : आयत में मुसलमानों को आगाह किया गया है कि अहले किताब और मुश्रिकीन से तुमको होशियार रहना होगा वो हमेशा तुमको सताते ही रहेंगे और कभी बाज़ नहीं आएँगे, हाथ से ज़ुबान से ईज़ाएँ देते रहेंगे। तुम्हारे लिये ज़रूरी है कि उनसे होशियार रहो उनकी चिकनी चुपड़ी बातों से धोखा न खाओ बल्कि सब्र व इस्तिक़्लाल के साथ हालात का मुक़ाबला करते रहो, आख़िर में कामयाबी तुम्हारे ही लिये मुक़द्दर है।

١٦ - باب قوله ﴿لا تحسبن الذين يفرحون بما أتوا﴾

बाब 16 : आयत 'ला तहसबन्नल्लज़ीन यफ़रहूना बिमा अतौ' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

या'नी तो लोग अपने करतूतों पर ख़ुश होते हैं और चाहते हैं कि जो नेक काम उन्होंने नहीं किये ख़्वाह मख़्वाह उन पर भी उनकी ता'रीफ़ की जाए, सो ऐसे लोगों के लिये हर्गिज़ ख़्याल न करो कि वो अ़ज़ाब से बच सकेंगे।

٤٥٦٧ - حدثنا سعيد بن أبي مريم أخبرنا محمد بن جعفر، قال: حدثني زيد بن أسلم، عن عطاء بن يسار، عن أبي

4567. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया

سَعِيدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رِجَالاً مِنَ الْمُنَافِقِينَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى الْغَزْوِ تَخَلَّفُوا عَنْهُ وَفَرِحُوا بِمَقْعَدِهِمْ خِلاَفَ رَسُولِ اللهِ فَإِذَا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ اعْتَذَرُوا إِلَيْهِ وَحَلَفُوا وَأَحَبُّوا أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَنَزَلَتْ: ﴿لاَ تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ﴾.

कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माना में चन्द मुनाफ़िक़ीन ऐसे थे कि जब रसूले अकरम (ﷺ) जिहाद के लिये तशरीफ़ ले जाते तो ये मदीना में पीछे रह जाते और पीछे रह जाने पर बहुत ख़ुश हुआ करते थे लेकिन जब हुज़ूर (ﷺ) वापस आते तो उ़ज़्र बयान करते और क़समें खा लेते बल्कि उनको ऐसे काम पर ता'रीफ़ होना पसन्द आता जिसको उन्होंने न किया होता और बाद में चिकनी चुपड़ी बातों से अपनी बात बनाना चाहते। अल्लाह तआ़ला ने उसी पर ये आयत, 'ला तह़सबन्नल् लज़ीना यफ़रह़ूना' आख़िर आयत तक उतारी।

ये चंद मुनाफ़िक़ीन थे जो जिहाद से जी चुराते, उनके मक्र व फ़रेब का जाल बिखेर दिया। ऐसे कितने लोग आज भी मौजूद हैं कितने बेनमाज़ी हैं जो अपनी ह़रकत पर शर्मिन्दा होने की बजाय उलट नमाज़ियों से अपने को बेहतर ष़ाबित करना चाहते हैं। कितने बिदअ़ती मुश्रिक हैं जो अहले तौह़ीद पर अपनी बरतरी के दावेदार हैं। ये सब लोग इस आयत के मिस्दाक़ हैं।

٤٥٦٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى. أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ. أَخْبَرَهُمْ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ عَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ مَرْوَانَ قَالَ لِبَوَّابِهِ: اذْهَبْ يَا رَافِعُ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقُلْ: لَئِنْ كَانَ كُلُّ امْرِىءٍ فَرِحَ بِمَا أُوتِيَ وَأَحَبَّ أَنْ يُحْمَدَ بِمَا لَمْ يَفْعَلْ مُعَذَّبًا لَنُعَذَّبَنَّ أَجْمَعُونَ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَمَالَكُمْ وَلِهَذِهِ؟ إِنَّمَا دَعَا النَّبِيُّ ﷺ يَهُودَ فَسَأَلَهُمْ عَنْ شَيْءٍ فَكَتَمُوهُ إِيَّاهُ وَأَخْبَرُوهُ بِغَيْرِهِ فَأَرَوْهُ أَنْ قَدِ اسْتَحْمَدُوا إِلَيْهِ بِمَا أَخْبَرُوهُ عَنْهُ فِيمَا سَأَلَهُمْ وَفَرِحُوا بِمَا أُوتُوا مِنْ كِتْمَانِهِمْ ثُمَّ قَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿وَإِذْ أَخَذَ اللهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ﴾ كَذَلِكَ حَتَّى قَوْلِهِ ﴿يَفْرَحُونَ بِمَا أُوتُوا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا﴾. تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنِ

4568. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैयका ने और उन्हें अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ ने ख़बर दी कि मर्वान बिन ह़कम ने (जब वो मदीना के अमीर थे) अपने दरबान से कहा कि राफ़ेअ़! इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के यहाँ जाओ और उनसे पूछो कि आयत 'व ला तह़सबन्नल्लज़ीन' की रू से तो हम सबको अ़ज़ाब होना चाहिये क्योंकि हर एक आदमी उन नेअ़मतों पर जो उसको मिली हैं, ख़ुश है और ये चाहता है कि जो काम उसने किया नहीं उस पर भी उसकी ता'रीफ़ हो। अबू राफ़ेअ़ ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से जाकर पूछा, तो ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, तुम मुसलमानों से इस आयत का क्या रिश्ता! ये तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यहूदियों को बुलाया था और उनसे एक दीन की बात पूछी थी। (जो उनकी आसमानी किताब में मौजूद थी) उन्होंने अस़ल बात को तो छुपाया और दूसरी ग़लत़ बात बयान कर दी, फिर भी इस बात के ख़्वाहिशमंद रहे कि हुज़ूर (ﷺ) के सवाल के जवाब में जो कुछ उन्होंने बताया है उस पर उनकी ता'रीफ़ की जाए और इधर अस़ल ह़क़ीक़त को छुपाकर भी बड़े ख़ुश थे। फिर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने इस आयत की तिलावत की, 'और वो वक़्त याद करो जब अल्लाह तआ़ला ने अहले किताब से अ़हद लिया था कि किताब को पूरी त़रह ज़ाहिर कर देना लोगों पर,

ابْنِ جُرَيْجٍ.

٠٠٠٠- حَدَّثَنَا ابْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا الْحَجَّاجُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ مَرْوَانَ بِهَذَا.

आयत, जो लोग अपने करतूतों पर ख़ुश होते हैं और चाहते हैं कि जो काम नहीं किये हैं, उन पर भी उनकी ता'रीफ़ की जाए' तक। हिशाम बिन यूसुफ़ के साथ इस हदीष़ को अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने भी इब्ने जुरैज से रिवायत किया। हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको हज्जाज बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, उन्होंने इब्ने जुरैज से कहा, मुझको इब्ने अबी मुलैका ने ख़ बर दी, उनको हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने कि मर्वान ने अपने दरबान राफ़ेअ़ से कहा, फिर यही हदीष़ बयान की।

١٧- باب قَوْلِهِ : ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ﴾

बाब 17 : आयत 'इन्न फ़ी खल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ' की तफ़्सीर या'नी,

बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के इख़्तिलाफ़ करने में अ़क़्लमन्दों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं

इख़्तिलाफ़ से रात व दिन का घटना बढ़ना मुराद है, जो मौसमी अष़रात से होता रहता है, ये सब क़ुदरते इलाही के नमूने हैं।

٤٥٦٩- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ عِنْدَ خَالَتِي مَيْمُونَةَ فَتَحَدَّثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَ أَهْلِهِ سَاعَةً ثُمَّ رَقَدَ فَلَمَّا كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ قَعَدَ فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: ((إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ وَاخْتِلاَفِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لآيَاتٍ لأُولِي الأَلْبَابِ﴾)) ثُمَّ قَامَ فَتَوَضَّأَ وَاسْتَنَّ فَصَلَّى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، ثُمَّ أَذَّنَ بِلاَلٌ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى الصُّبْحَ.
[راجع: ١١٧]

4569. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा कि मुझे शुरैक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने ख़बर दी, उन्हें कुरैब ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं एक रात अपनी ख़ाला (उम्मुल मोमिनीन) हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर रह गया। पहले रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवी (मैमूना रज़ि.) के साथ थोड़ी देर तक बातचीत की, फिर सो गये। जब रात का तीसरा हिस्सा बाक़ी रहा तो आप उठकर बैठ गये और आसमान की त़रफ़ नज़र की और ये आयत तिलावत की, बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और दिन रात के मुख़्तलिफ़ होने में अ़क़्लमन्दों के लिये (बड़ी) निशानियाँ हैं। उसके बाद आप (ﷺ) खड़े हुए और वुज़ू किया और मिस्वाक की, फिर ग्यारह रकअ़तें तहज्जुद और वित्र पढ़ीं। जब हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने (फ़ज्र की) अज़ान दी तो आपने दो रकअ़त (फ़ज्र की सुन्नत) पढ़ी और बाहर मस्जिद में तशरीफ़ लाए और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 117)

तशरीह: यही ग्यारह रकअ़तें रमज़ान में लफ़्ज़े तरावीह़ के साथ मौसूम हुईं। पस तरावीह़ की यही ग्यारह रकअ़तें सुन्नते नबवी हैं।

١٨- باب قوله ﴿الَّذِينَ يَذْكُرُونَ

बाब 18 : आयत 'अल्लज़ीन यज़्कुरूनल्लाह

क़ियामव्वं क़ुऊदन' की तफ़्सीर या'नी,

اللہ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَى جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ﴾

वो अक़्लमन्द जिनका ज़िक्र ऊपर की आयत में हुआ है, ऐसे हैं कि जो अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर हर हालत में याद करते रहते हैं और आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश में ग़ौर करते रहते हैं और कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने इस कायनात को बेकार पैदा नहीं किया। आख़िर आयत तक।

٤٥٧٠ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنسٍ، عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: بِتُّ عِنْدَ خَالَتِي مَيْمُونَةَ فَقُلْتُ لأَنْظُرَنَّ إِلَى صَلاَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَطُرِحَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ وِسَادَةٌ فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي طُولِهَا فَجَعَلَ يَمْسَحُ النَّوْمَ عَنْ وَجْهِهِ ثُمَّ قَرَأَ الآيَاتِ الْعَشْرَ الأَوَاخِرَ مِنْ آلِ عِمْرَانَ حَتَّى خَتَمَ ثُمَّ أَتَى شَنًّا مُعَلَّقًا فَأَخَذَهُ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي فَقُمْتُ فَصَنَعْتُ مِثْلَ مَا صَنَعَ ثُمَّ جِئْتُ فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ، فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى رَأْسِي ثُمَّ أَخَذَ بِأُذُنِي فَجَعَلَ يَفْتِلُهَا ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ أَوْتَرَ.
[راجع: ١١٧]

4570. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस ने, उनसे मख़्रमा बिन सुलैमान ने, उनसे कुरैब ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं एक रात अपनी ख़ाला ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) के यहाँ सो गया, इरादा ये था कि आज रसूलुल्लाह (ﷺ) की नमाज़ देखूँगा। मेरी ख़ाला ने आपके लिये गद्दा बिछा दिया और आप (ﷺ) उसके तूल (लम्बाई) में लेट गये फिर (जब आख़िरी रात में बेदार हुए तो) चेहर-ए-मुबारक पर हाथ फेरकर नींद के आष़ार दूर किये। फिर सूरह आले इमरान की आख़िरी दस आयात पढ़ीं, उसके बाद आप एक मश्कीज़े के पास आये और उससे पानी लेकर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हो गये। मैं भी खड़ा हो गया और जो कुछ आपने किया था वही सब कुछ मैं ने भी किया और आपके पास आकर आप (ﷺ) के बाज़ू में मैं भी खड़ा हो गया। आप (ﷺ) ने मेरे सर पर अपना दायाँ हाथ रखा और मेरे कान को (शफ़क़त से) पकड़कर मलने लगे। फिर आप (ﷺ) ने दो रकअ़त तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी फिर वित्र की नमाज़ पढ़ी।

(राजेअ़ : 117)

बाब 19 : आयत 'रब्बना इन्नक मन तुदख़िलिन्नार फ़क़द अख़्ज़ैतहू' की तफ़्सीर या'नी,

١٩ - باب قوله ﴿رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ﴾

ऐ हमारे रब! तूने जिसे दोज़ख़ में दाख़िल कर दिया, उसे तूने

वाक़ई ज़लील व रुस्वा कर दिया और ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं है।

4571. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअन बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मख़रमा बिन सुलैमान ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम कुरैब ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक रात वो नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर में रह गये जो उनकी ख़ाला थीं। उन्होंने कहा कि मैं बिस्तर के अर्ज़ में लेटा और आँहज़रत (ﷺ) और आपकी बीवी तूल में लेटे, फिर आप सो गये और आधी रात में या उससे थोड़ी देर पहले या बाद में आप बेदार हुए और चेहरा पर हाथ फेरकर नींद को दूर किया, फिर सूरह आले इमरान की आख़िरी दस आयतों की तिलावत की। उसके बाद आप उठकर मशकीज़े के क़रीब गये जो लटका हुआ था। उसके पानी से आपने वुज़ू बहुत ही अच्छी तरह से पूरे आदाब के साथ किया और नमाज़ पढ़ने के लिये खड़े हो गये। मैंने भी आप (ﷺ) ही की तरह (वुज़ू वग़ैरह) किया और नमाज़ के लिये आप (ﷺ) के बाज़ू में जाकर खड़ा हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने अपना दाहिना हाथ मेरे सर पर रखा और उसी हाथ से (बतौरे शफ़क़त) मेरा कान पकड़कर मलने लगे, फिर आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअत पढ़ी, फिर दो रकअत पढ़ी, फिर दो रकअत पढ़ी, फिर दो रकअत पढ़ी और आख़िर में वित्र की नमाज़ पढ़ी। उससे फ़ारिग़ होकर आप लेट गये, फिर जब मुअज़्ज़िन आया तो आप उठे और दो हल्की (फ़ज्र की सुन्नत) रकअतें पढ़ीं और नमाज़े फ़र्ज़ के लिये बाहर तशरीफ़ (मस्जिद में) ले गये और सुबह की नमाज़ पढ़ाई।

(राजेअ : 117)

٤٥٧١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَاتَ عِنْدَ مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ وَهْيَ خَالَتُهُ قَالَ: فَاضْطَجَعْتُ فِي عَرْضِ الْوِسَادَةِ وَاضْطَجَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَهْلُهُ فِي طُولِهَا فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى انْتَصَفَ اللَّيْلُ أَوْ قَبْلَهُ بِقَلِيلٍ أَوْ بَعْدَهُ بِقَلِيلٍ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَجَعَلَ يَمْسَحُ النَّوْمَ عَنْ وَجْهِهِ بِيَدِهِ ثُمَّ قَرَأَ الْعَشْرَ الآيَاتِ الْخَوَاتِمَ مِنْ سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ ثُمَّ قَامَ إِلَى شَنٍّ مُعَلَّقَةٍ فَتَوَضَّأَ مِنْهَا فَأَحْسَنَ وُضُوءَهُ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي. فَصَنَعْتُ مِثْلَ مَا صَنَعَ ثُمَّ ذَهَبْتُ فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ فَوَضَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى رَأْسِي وَأَخَذَ بِأُذُنِي الْيُمْنَى يَفْتِلُهَا فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ. ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ. ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ. ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ. ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ. ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ. ثُمَّ أَوْتَرَ، ثُمَّ اضْطَجَعَ حَتَّى جَاءَهُ الْمُؤَذِّنُ فَقَامَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى الصُّبْحَ. [راجع: ١١٧]

तश्रीह : रिवायत में आँहज़रत (ﷺ) का तहज्जुद के लिये उठना और आयाते मज़्कूरा का बतौरे दुआ तिलावत करना मज़्कूर है। हदीष़ और बाब में यही वजहे मुताबक़त है।

बाब 20 : आयत 'रब्बना इन्नना समिअना मुनादियंय्युनादी' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

٢٠- باب قوله ﴿رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلإِيمَانِ﴾ الآيَة.

ऐ हमारे रब! हमने एक पुकारने वाले की पुकार को सुना जो

ईमान के लिये पुकार रहा था। पस हम उस पर ईमान लाए। आख़िर आयत तक।

पुकारने वाले से हज़रत रसूले करीम (ﷺ) मुराद हैं।

4572. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे मख़रमा बिन सुलैमान ने, उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम कुरैब ने, और उन्हें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आप (ﷺ) एक मर्तबा नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत मैमूना (रज़ि.) के घर रह गये। हज़रत मैमूना (रज़ि.) उनकी ख़ाला थीं। उन्होंने बयान किया कि मैं बिस्तर के अ़र्ज़ (चौड़ाई) में लैट गया और आँहज़रत (ﷺ) और आपकी बीवी तूल में लैटे, फिर आप सो गये और आधी रात में या उससे थोड़ी देर पहले या थोड़ी देर बाद आप जागे और बैठकर चेहरे पर नींद के आष़ार दूर करने के लिये हाथ फेरने लगे और सूरह आले इमरान की आख़िरी दस आयात पढ़ीं। उसके बाद आप मशकीज़े के पास गये जो लटका हुआ था, उससे तमाम आदाब के साथ आपने वुज़ू किया, फिर नमाज़ के लिये खड़े हुए। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं भी उठा और मैंने भी आप (ﷺ) की तरह वुज़ू वग़ैरह किया और जाकर आप (ﷺ) के बाज़ू में खड़ा हो गया, तो आँहज़रत (ﷺ) ने अपना दाहिना हाथ मेरे सर पर रखा और (शफ़क़त से) मेरे दाहिने कान को पकड़कर मलने लगे, फिर आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और फिर दो रकअ़तें नमाज़ पढ़ी और आख़िरी में उन्हें वित्र बनाया, फिर आप लेट गये और जब मुअज़्ज़िन आपके पास आया तो आप उठे और दो हल्की रकअ़तें पढ़कर बाहर मस्जिद में तशरीफ़ ले गये और सुबह की नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 117)

٤٥٧٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ مَخْرَمَةَ بْنِ سُلَيْمَانَ، عَنْ كُرَيْبٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَاتَ عِنْدَ مَيْمُونَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ وَهِيَ خَالَتُهُ قَالَ: فَاضْطَجَعْتُ فِي عَرْضِ الْوِسَادَةِ وَاضْطَجَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَهْلُهُ فِي طُولِهَا فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى إِذَا انْتَصَفَ اللَّيْلُ أَوْ قَبْلَهُ بِقَلِيلٍ، أَوْ بَعْدَهُ بِقَلِيلٍ اسْتَيْقَظَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَجَلَسَ يَمْسَحُ النَّوْمَ عَنْ وَجْهِهِ بِيَدِهِ، ثُمَّ قَرَأَ الْعَشْرَ الآيَاتِ الْخَوَاتِمَ مِنْ سُورَةِ آلِ عِمْرَانَ ثُمَّ قَامَ إِلَى شَنٍّ مُعَلَّقَةٍ فَتَوَضَّأَ مِنْهَا فَأَحْسَنَ وُضُوءَهُ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَقُمْتُ فَصَنَعْتُ مِثْلَ مَا صَنَعَ ثُمَّ ذَهَبْتُ فَقُمْتُ إِلَى جَنْبِهِ فَوَضَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَهُ الْيُمْنَى عَلَى رَأْسِي وَأَخَذَ بِأُذُنِي الْيُمْنَى يَفْتِلُهَا فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ رَكْعَتَيْنِ، ثُمَّ أَوْتَرَ ثُمَّ اضْطَجَعَ حَتَّى جَاءَهُ الْمُؤَذِّنُ فَقَامَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ خَفِيفَتَيْنِ ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى الصُّبْحَ.

[راجع: ١١٧]

तश्रीह : आयाते मज़्कूरा को आप तहज्जुद के वक़्त उठने के बाद अकष़र पढ़ा करते। यहाँ बयान करने का यही मक़्सद है। इन दुआइया आयात के रुमूज़ व निकात वही हज़रात जान सकते हैं जिनको सहर के वक़्त उठना और मुनाजात में मशग़ूल होने की लज़्ज़त से शनासाई हो। **वज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहि यूतीही मंय्यशाउ।**

सूरह निसा की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَسْتَنْكِفُ: يَسْتَكْبِرُ، قِوَامًا، قِوَامُكُمْ مِنْ مَعَايِشِكُمْ لَهُنَّ سَبِيلاً يَعْنِي الرَّجْمَ لِلثَّيِّبِ، وَالْجَلْدَ لِلْبِكْرِ، وَقَالَ غَيْرُهُ : مَثْنَى وَثُلاَثَ وَرُبَاعَ يَعْنِي اثْنَتَيْنِ وَثَلاَثًا وَأَرْبَعًا وَلاَ تُجَاوِزُ الْعَرَبُ رُبَاعَ.

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (क़ुर्आन मजीद की आयत) यस्तन्किफ़ु, यस्तकबिरु के मा'नी में है। क़वामन (क़यामा) या'नी जिस पर तुम्हारे गुज़रान की बुनियाद क़ायम है। लहुन्ना सबीला या'नी शादीशुदा के रजम और कुँवारे के लिये कोड़े की सज़ा है (जब वो ज़िना करें) और दूसरे लोगों ने कहा (आयत में) मष्ना व षुलाष व रुबाअ़ से मुराद दो-दो, तीन-तीन और चार-चार हैं। अहले अ़रब रुबाअ़ से आगे इस वज़न से तजावुज़ नहीं करते।

١- باب قوله ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى﴾

बाब 1 : आयत 'व इन खिफ़्तुम अल्ला तुक़्सितू फिल्यतामा' की तफ़्सीर

या'नी और अगर तुम्हे अंदेशा हो कि तुम यतीमों के बारे में इंसाफ़ न कर सकोगे।

٤٥٧٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَجُلاً كَانَتْ لَهُ يَتِيمَةٌ فَنَكَحَهَا وَكَانَ لَهَا عَذْقٌ وَكَانَ يُمْسِكُهَا عَلَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ لَهَا مِنْ نَفْسِهِ شَيْءٌ فَنَزَلَتْ فِيهِ: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى﴾ أَحْسِبُهُ قَالَ: كَانَتْ شَرِيكَتَهُ فِي ذَلِكَ الْعَذْقِ وَفِي مَالِهِ.

[راجع: ٢٤٩٤]

4573. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने कहा, कहा मुझको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक आदमी की परवरिश में एक यतीम लड़की थी, फिर उसने उससे निकाह कर लिया, उस यतीम लड़की की मिल्कियत में खजूर का एक बाग़ था। उसी बाग़ की वजह से ये शख़्स उसे परवरिश करता रहा हालाँकि दिल में उससे कोई ख़ास़ लगाव न था। इस सिलसिले में ये आयत उतरी कि, अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों के हक़ में इंसाफ़ न कर सकोगे। हिशाम बिन यूसुफ़ ने कहा कि मैं समझता हूँ, इब्ने जुरैज ने यूँ कहा कि ये लड़की उस पेड़ और दूसरे माल अस्बाब में उस मर्द की हिस्सेदार थी। (राजेअ़ : 2494)

٤٥٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا

4574. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्होंने कहा मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्होंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से आयत, 'व इन ख़िफ़्तुम अल्ला तुक़्सितू फ़िल यतामा' का मत़लब पूछा। उन्होंने कहा मेरे भांजे इसका

في الْيَتَامَى﴾ فَقَالَتْ يَا ابْنَ أُخْتِي هَذِهِ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا تَشْرَكُهُ فِي مَالِهِ وَيُعْجِبُهُ مَالُهَا وَجَمَالُهَا فَيُرِيدُ وَلِيُّهَا أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِغَيْرِ أَنْ يُقْسِطَ فِي صَدَاقِهَا، فَيُعْطِيَهَا مِثْلَ مَا يُعْطِيهَا غَيْرُهُ فَنُهُوا عَنْ أَنْ يَنْكِحُوهُنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ وَيَبْلُغُوا لَهُنَّ أَعْلَى سُنَّتِهِنَّ فِي الصَّدَاقِ فَأُمِرُوا أَنْ يَنْكِحُوا مَا طَابَ لَهُمْ مِنَ النِّسَاءِ سِوَاهُنَّ، قَالَ عُرْوَةُ : قَالَتْ عَائِشَةُ: وَإِنَّ النَّاسَ اسْتَفْتَوْا رَسُولَ اللَّهِ ﷺ بَعْدَ هَذِهِ الآيَةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ﴾ قَالَتْ عَائِشَةُ: وَقَوْلُ اللَّهِ تَعَالَى فِي آيَةٍ أُخْرَى: ﴿وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ﴾ رَغْبَةُ أَحَدِكُمْ عَنْ يَتِيمَتِهِ حِينَ تَكُونُ قَلِيلَةَ الْمَالِ وَالْجَمَالِ قَالَتْ: فَنُهُوا أَنْ يَنْكِحُوا عَمَّنْ رَغِبُوا فِي مَالِهِ وَجَمَالِهِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ، إِلاَّ بِالْقِسْطِ مِنْ أَجْلِ رَغْبَتِهِمْ عَنْهُنَّ إِذَا كُنَّ قَلِيلاَتِ الْمَالِ وَالْجَمَالِ.

[راجع: ٢٤٩٤]

मत़लब ये है कि एक यतीम लड़की अपने वली की परवरिश में हो और उसकी जायदाद की हिस्सेदार हो (तर्के की रू से उसका हिस्सा हो) अब उस वली को उसकी मालदारी ख़ूबसूरती पसन्द आए। उससे निकाह़ करना चाहे पर इंसाफ़ के साथ पूरा मह्र जितना मह्र उसको दूसरे लोग दें, न देना चाहे, तो अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में लोगों को ऐसी यतीम लड़कियों के साथ जब तक उनका पूरा मह्र इंसाफ़ के साथ न दें, निकाह़ करने से मना किया और उनको ये हुक्म दिया कि तुम दूसरी औरतों से जो तुमको भली लगें निकाह कर लो। (यतीम लड़की का नुक़्सान न करो)। उ़र्वा ने कहा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) कहती थीं, इस आयत के उतरने के बाद लोगों ने फिर आँह़ज़रत (ﷺ) से इस बारे में मसला पूछा, उस वक़्त अल्लाह ने ये आयत व यस्तफतूनक फ़िन् निसाइ उतारी। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा दूसरी आयत में ये जो फ़र्माया व तरग़बूना अन तन्किह़ूहुन्ना या'नी वो यतीम लड़कियाँ जिनका माल व जमाल कम हो और तुम उनके साथ निकाह़ करने से नफ़रत करो। उसका मत़लब ये है कि जब तुम उन यतीम लड़कियों से जिनका माल व जमाल कम हो निकाह़ करना नहीं चाहते तो माल और जमाल वाली यतीम लड़कियों से भी जिनसे तुमको निकाह़ करने की रग़बत है निकाह़ न करो, मगर जब इंसाफ़ के साथ उनका मह्र पूरा अदा करो।

(राजेअ़ : 2494)

बाब 2 : आयत 'व मन कान फक़ीरन फल्याकुल बिल्मअरूफ़' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قَوْلِهِ ﴿وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ. فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ﴾ الآيَةَ وَبِدَارًا مُبَادَرَةً. أَعْتَدْنَا أَعْدَدْنَا أَفْعَلْنَا مِنَ الْعَتَادِ.

और जो शख़्स नादार हो वो मुनासिब मिक़्दार में खा ले और जब अमानत उन यतीम बच्चों के ह़वाले करने लगो तो उन पर गवाह भी कर लिया करो, आख़िर आयत तक बदारा बमा'नी मुबादरतन जल्दी करना अअ़तदना बमा'नी अअ़ददना, इताद से अफ़अ़ल्ना के वज़न पर जिसके मा'नी हमने तैयार किया।

٤٥٧٥- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ

4575. हमसे इस्ह़ाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन नुमैर ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने

बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, बल्कि जो शख़्स ख़ुशहाल हो वो अपने को बिल्कुल रोके रखे। अल्बत्ता जो शख़्स नादार हो वो वाजिबी त़ौर खा सकता है, के बारे में फ़र्माया कि ये आयत यतीम के बारे में उतरी है कि अगर वली नादार हो तो यतीम की परवरिश और देखभाल की उज्रत में वो वाजिबी त़ौर पर (यतीम के माल में से कुछ) खा सकता है। (बशर्ते कि निय्यत में फ़साद न हो)

عائشة رضي الله تعالى عنها في قوله تعالى: ﴿ومن كان غنيا فليستعفف ومن كان فقيرا فليأكل بالمعروف﴾ أنها نزلت في مال اليتيم إذا كان فقيرا أنه يأكل منه مكان قيامه عليه بمعروف.

[راجع: ٢٢١٢]

बाब 3 : आयत 'व इज़ा ह़ज़रल्क़िस्मतु उलुल्क़ुर्बा'

की तफ़्सीर या'नी, और जब तक़्सीमे वरषा के वक़्त कुछ अ़ज़ीज़ क़राबदार और बच्चे और यतीम और मिस्कीन लोग मौजूद हों तो उनको भी कुछ दे दिया करो, आख़िर आयत तक

٣- باب قوله ﴿وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين﴾ فارزقوهم منه.

4576. हमसे अह़मद बिन ह़ुमैद ने बयान किया, हमको उ़बैदुल्लाह अश्जई ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान षौरी ने, उन्हें अबू इस्ह़ाक़ शैबानी ने, उन्हें इक्रिमा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत, और जब तक़्सीम के वक़्त अ़ज़ीज़ व अक़ारिब और यतीम और मिस्कीन मौजूद हों, के बारे में फ़र्माया कि ये मुह़कम है, मन्सूख़ नहीं है। इक्रिमा के साथ इस ह़दीष को सईद बिन जुबैर ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 2759)

٤٥٧٦- حدثنا أحمد بن حميد. أخبرنا عبيد الله الأشجعي. عن سفيان عن الشيباني، عن عكرمة عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما ﴿وإذا حضر القسمة أولوا القربى واليتامى والمساكين﴾ قال: هي محكمة وليست بمنسوخة. تابعه سعيد عن ابن عباس.

[راجع: ٢٧٥٩]

बाब 4 : आयत 'यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम' अल्ख़ की तफ़्सीर

या'नी, अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद (की मीराष) के बारे में वसिय्यत करता है।

٤- باب قوله ﴿يوصيكم الله في أولادكم﴾

4577. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया कि उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, बयान किया कि मुझे इब्ने मुंकदिर ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) क़बीला बनू सलमा तक पैदल चलकर मेरी अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए। आपने

٤٥٧٧- حدثنا إبراهيم بن موسى. حدثنا هشام أن ابن جريج أخبرهم. قال أخبرني ابن منكدر عن جابر رضي الله تعالى عنه قال: عادني النبي ﷺ وأبو بكر في بني سلمة ماشيين فوجدني النبي ﷺ

मुलाहिज़ा फ़र्माया कि मुझ पर बेहोशी तारी है, इसलिये आपने पानी मंगवाया और वुज़ू करके उसका पानी मुझ पर छिड़का, मैं होश में आ गया, फिर मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपका क्या हुक्म है, मैं अपने माल का क्या करूँ? इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि, अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद (की मीराष़) के बारे में हुक्म देता है। (राजेअ़ : 194)

لا أعْقِلُ، فَدَعَا بِمَاءٍ فَتَوَضَّأَ مِنْهُ ثُمَّ رَشَّ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ : مَا تَأْمُرُنِي أَنْ أَصْنَعَ فِي مَالِي يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَنَزَلَتْ ﴿يُوصِيكُمُ اللهُ فِي أَوْلاَدِكُمْ﴾.

[راجع: ١٩٤]

बाब 5 : आयत 'व लकुम निस़्फ़ु मा तरक अज़्वाजुकुम' की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب ﴿وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ﴾.

और तुम्हारे लिये उस माल का आधा हिस़्सा है जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़े जाएँ जबकि उनके औलाद न हो।

4578. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे वरक़ा बिन उ़मर यश्करी ने, उनसे इब्ने अबी नुजैह ने, उनसे अ़ता ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्तिद-ए-इस्लाम में मय्यत का सारा माल औलाद को मिलता था, अल्बत्ता वालिदैन को वो मिलता जो मय्यत उनके लिये वस़िय्यत कर जाए, फिर अल्लाह तआ़ला ने जैसा मुनासिब समझा उसमे नस्ख़ (ख़त्म) कर दिया। चुनाँचे अब मर्द का हिस़्सा दो औ़रतों के हिस़्से के बराबर है और मय्यत के वालिदैन या'नी उन दोनों में हर एक के लिये उस माल का छठा हिस़्सा है। बशर्ते कि मय्यत के कोई औलाद न हो, लेकिन अगर उसके कोई औलाद न हो, बल्कि उसके वालिदैन ही उसके वारिष़ हों तो उसकी माँ का एक तिहाई हिस़्सा होगा और बीवी का आठवाँ हिस़्सा होगा, जबकि औलाद न हो लेकिन अगर औलाद हो तो चौथाई होगा। (राजेअ़ : 2747)

٤٥٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ وَرْقَاءَ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَ الْمَالُ لِلْوَلَدِ وَكَانَتِ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ فَنَسَخَ اللهُ مِنْ ذَلِكَ مَا أَحَبَّ فَجَعَلَ لِلذَّكَرِ مِثْلَ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ وَجَعَلَ لِلأَبَوَيْنِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسَ وَالثُّلُثَ وَجَعَلَ لِلْمَرْأَةِ الثُّمُنَ وَالرُّبُعَ وَلِلزَّوْجِ الشَّطْرَ وَالرُّبُعَ.

[راجع: ٢٧٤٧]

बाब 6 : आयत 'ला यहिल्लु लकुम अन्तरिषुन्निसाअ कर्हन ' की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب قوله

تुम्हारे लिये जाइज़ नहीं कि तुम बेवा औ़रतों के ज़बरदस्ती मालिक बन जाओ, आख़िर आयत तक। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि (आयत में) ला तअ़ज़िलूहुन्ना के मा'नी ये हैं कि उन पर जबर व क़हर न करो, हवबा या'नी गुनाह तऊ़लू या'नी तमीलू झुका तुम लफ़्ज़ नह्लति मह्र के लिये आया है।

﴿لاَ يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا﴾ الآيَةَ وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ لاَ تَعْضُلُوهُنَّ لاَ تَقْهَرُوهُنَّ. حُوبًا: إِثْمًا تَعُولُوا : تَمِيلُوا. نِحْلَةً : النِّحْلَةُ الْمَهْرُ.

4579. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा

٤٥٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، حَدَّثَنَا

हमसे अस्बात़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ शैबानी ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और शैबानी ने कहा कि ये ह़दीष़ अबुल ह़सन अ़त़ा सवाई ने भी बयान की है और जहाँ तक मुझे यक़ीन है इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ही से बयान किया है कि आयत, ऐ ईमानवालो! तुम्हारे लिये जाइज़ नहीं कि तुम औ़रतों के ज़बरदस्ती मालिक हो जाओ और न उन्हें इस ग़र्ज़ से क़ैद रखो कि तुमने उन्हें जो कुछ दे रखा है, उसका कुछ ह़िस्सा वसूल कर लो, उन्होंने बयान किया कि जाहिलियत में किसी औ़रत का शौहर मर जाता तो शौहर के रिश्तेदार उस औ़रत के ज़्यादा मुस्तह़िक़ समझे जाते। अगर उन्हों में से कोई चाहता तो उससे शादी कर लेता, या फिर वो जिससे चाहते उसी से उसकी शादी करते और चाहते तो न भी करते, इस त़रह़ औ़रत के घर वालों के मुक़ाबले में भी शौहर के रिश्तेदार उसके ज़्यादा मुस्तह़िक़ समझे जाते, इसी पर ये आयत, 'या अय्युहल् लज़ीना आमनू ला यह़िल्लु लकुम अन तुरिषुन् निसाअ करहन' नाज़िल हुई। (दीगर मक़ाम : 6948)

أَسْبَاطُ بْنُ مُحَمَّدٍ. حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ الشَّيْبَانِيُّ، وَذَكَرَهُ أَبُو الْحَسَنِ السُّوَائِيُّ وَلاَ أَظُنُّهُ ذَكَرَهُ إِلاَّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا وَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ﴾ قَالَ: كَانُوا إِذَا مَاتَ الرَّجُلُ كَانَ أَوْلِيَاؤُهُ أَحَقَّ بِامْرَأَتِهِ إِنْ شَاءَ بَعْضُهُمْ تَزَوَّجَهَا وَإِنْ شَاؤُوا زَوَّجُوهَا وَإِنْ شَاؤُوا لَمْ يُزَوِّجُوهَا فَهُمْ أَحَقُّ بِهَا مِنْ أَهْلِهَا فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِي ذَلِكَ.

[طرفه في : ٦٩٤٨].

तश्रीह़ : अब कहाँ हैं वो पादरी लोग जो इस्लाम पर त़ाना मारते हैं कि इस्लाम ने औ़रतों को लौण्डी बना दिया। इस्लाम की बरकत से तो औ़रतें इन्सान हुईं, वरना अ़रब के लोगों ने तो गाय बैल की त़रह़ उनको माल अस्बाब समझ लिया था। औ़रत को तर्का न मिलता, इस्लाम ने तर्का दिलाया। औ़रत को जितनी चाहते बेगिनती त़लाक़ दिये जाते, इ़द्दत न गुज़ारने पाती कि एक और त़लाक़ दे देते, उसकी जान ग़ज़ब मे रहती। इस्लाम ने तीन त़लाक़ों की ह़द बाँध दी। शौहर के मरने के बाद औ़रत उसके वारिष़ों के हाथ में कठपुतली की त़रह़ रहती है। इस्लाम ने औ़रत को पूरा इख़्तियार दिया चाहे दूसरा निकाह़ पढ़ ले। (वह़ीदी)

बाब 7 : आयत 'व लिकुल्लिन जअ़ल्ना मवालिय मिम्मा तरकल्वालिदानि'

٧- باب قوله

की तफ़्सीर या'नी, और जो माल वालिदैन और क़राबदार छोड़ जाएँ उसके लिये हमने वारिष़ ठहरा दिये हैं, मअ़मर ने कहा कि मवालिया से मुराद उसके औलिया और वारिष़ हैं। वल्लज़ीन अ़ाक़त्ता अयमानकुम से वो लोग मुराद हैं जिनको क़सम खाकर अपना वारिष़ बनाते थे या'नी ह़लीफ़ और मौला के कई मआ़नी आए हैं। चचा का बेटा, गुलाम, लौण्डी का मालिक, जो इस पर एह़सान करे, उसको आज़ाद करे, ख़ुद ग़ुलाम, जो आज़ाद किया जाए, मालिक दीन का पेशवा।

﴿وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالأَقْرَبُونَ﴾ الآيَةَ. مَوَالِيَ أَوْلِيَاءَ وَرَثَةً. ﴿عَاقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ هُوَ مَوْلَى الْيَمِينِ وَهْوَ الْحَلِيفُ. وَالْمَوْلَى أَيْضًا ابْنُ الْعَمِّ، وَالْمَوْلَى الْمُنْعِمُ الْمُعْتِقُ وَالْمَوْلَى الْمُعْتَقُ وَالْمَوْلَى الْمَلِيكُ. وَالْمَوْلَى مَوْلًى فِي الدِّينِ.

4580. हमसे स़ल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा

٤٥٨٠- حَدَّثَنِي الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ.

हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे इदरीस ने, उनसे त़लह़ा बिन मुस़र्रफ़ ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि (आयत में) लिकुल्लि जअ़ल्ना मवालिया से मुराद वारिष़ हैं और वल्लज़ीन आ़कदत अयमानुकुम की तफ़्सीर ये है कि शुरू में जब मुहाजिरीन मदीना आए तो क़राबतदारों के अ़लावा अंस़ार के वारिष़ मुहाजिरीन भी होते थे। उस भाईचारे की वजह से जो नबी करीम (ﷺ) ने मुहाजिरीन और अंस़ार के बीच कराया था, फिर जब ये आयत नाज़िल हुई कि लिकुल्लि जअ़ल्ना मवालिया तो पहला त़रीक़ा मन्सूख़ हो गया। फिर बयान किया वल्लज़ीन आ़क़द् ता अयमानकुम से वो लोग मुराद हैं, जिनसे दोस्ती और मदद और ख़ैरख़्वाही की क़सम खाकर अ़हद किया जाए। लेकिन अब उनके लिये मीराष़ का हुक्म मंसूख़ हो गया। मगर वस़िय्यत का हुक्म रह गया। इस इस्नाद में अबू उसामा ने इदरीस से और इदरीस ने त़लह़ा बिन मुस़र्रफ़ से सुना है। (राजेअ़ : 2292)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ إِدْرِيسَ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ مُصَرِّفٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ﴿وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ﴾ قَالَ: وَرَثَةً ﴿وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ كَانَ الْمُهَاجِرُونَ لَمَّا قَدِمُوا الْمَدِينَةَ يَرِثُ الْمُهَاجِرُ الأَنْصَارِيَّ دُونَ ذَوِي رَحِمِهِ لِلأُخُوَّةِ الَّتِي آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُمْ فَلَمَّا نَزَلَتْ ﴿وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ﴾ نُسِخَتْ ثُمَّ قَالَ: ﴿وَالَّذِينَ عَاقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ مِنَ النَّصْرِ وَالرِّفَادَةِ وَالنَّصِيحَةِ وَقَدْ ذَهَبَ الْمِيرَاثُ وَيُوصِي لَهُ سَمِعَ أَبُو أُسَامَةَ إِدْرِيسَ وَسَمِعَ إِدْرِيسُ طَلْحَةَ. [راجع: ٢٢٩٢]

तश्रीह : मुहाजिरीन जब मदीना आए तो अंस़ार ने उनको मुँह बोला भाई बना लिया था। यहाँ तक कि उनको अपने तर्का में ह़िस़्सेदार बना लिया, बाद में बतलाया गया कि तर्का के वारिष़ स़िर्फ़ औलाद और मुत़ा'ल्लिक़ीन ही हो सकते हैं। हाँ तिहाई माल की वस़िय्यत करने का ह़क़ दिया गया। अगर मरने वाला चाहे तो ये वस़िय्यत अपने मुँह बोले भाइयों के लिये भी कर सकता है।

बाब 8 : आयत 'इन्नल्लाह ला यज़्लिमु मिष़्क़ाल ज़र्रतिन' अल्ख़ की तफ़्सीर

٨- باب قوله ﴿إِنَّ اللهَ لاَ يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ﴾ يَعْنِي زِنَةَ ذَرَّةٍ

या'नी, बेशक अल्लाह एक ज़र्रा बराबर भी किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा, मिष़्क़ाला ज़र्रह से ज़र्रह बराबर मुराद है।

4581. मुझसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उ़मर ह़फ़्स़ बिन मैसरह ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ स़ह़ाबा (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) के ज़माना में आप (ﷺ) से पूछा या रसूलल्लाह! क्या क़यामत के दिन हम अपने रब को देख सकेंगे? आपने फ़र्माया कि हाँ, क्या सूरज को दोपहर के वक़्त देखने में तुम्हें कोई दुश्वारी होती है, जबकि उस पर बादल भी न हो? स़ह़ाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि नहीं। फिर आपने

٤٥٨١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا أَبُو عُمَرَ حَفْصُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ أُنَاسًا فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((نَعَمْ هَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ بِالظَّهِيرَةِ ضَوْءٌ

फ़र्माया और क्या चौदहवीं रात के चाँद को देखने में तुम्हें कुछ दुश्वारी पेश आती है जबकि उस पर बादल न हो? सहाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि नहीं । फिर आपने फ़र्माया कि बस इसी त़रह तुम बिला दिक़्क़त और रुकावट के अल्लाह को देखोगे। क़यामत के दिन एक मुनादी आवाज़ देगा कि हर उम्मत अपने (झूठे) मअ़बूदों के साथ हाज़िर हो जाए। उस वक़्त अल्लाह के सिवा जितने भी बुतों और पत्थरों की पूजा होती थी, सबको जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। फिर जब वही लोग बाक़ी रह जाएँगे जो स़िर्फ़ अल्लाह की पूजा करते थे ख़्वाह नेक हों या गुनहगार और अहले किताब के कुछ लोग तो पहले यहूद को बुलाया जाएगा और पूछा जाएगा कि तुम (अल्लाह के सिवा) किसकी पूजा करते थे? वो अ़र्ज़ करेंगे कि उ़ज़ैर इब्नुल्लाह की, अल्लाह तआ़ला उनसे फ़र्माएगा लेकिन तुम झूठे थे, अल्लाह ने न किसी को अपनी बीवी बनाया और न बेटा, अब तुम क्या चाहते हो? वो कहेंगे, हमारे रब! हम प्यासे हैं, हमें पानी पिला दे । उन्हें इशारा किया जाएगा कि क्या उधर नहीं चलते। चुनाँचे सबको जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाएगा। वहाँ चमकती रेत पानी की त़रह नज़र आएगी। कुछ कुछ के टुकड़े किये दे रही होगी। फिर सबको आग में डाल दिया जाएगा। फिर नस़ारा को बुलाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा कि तुम किस की इबादत करते थे? वो कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे मसीह की इबादत करते थे। उनसे भी कहा जाएगा कि तुम झूठे थे। अल्लाह ने किसी को बीवी और बेटा नहीं बनाया, फिर उनसे पूछा जाएगा कि क्या चाहते हो? और उनके साथ यहूदियों की त़रह बर्ताव किया जाएगा। यहाँ तक कि जब उन लोगों के सिवा और कोई बाक़ी न रहेगा जो स़िर्फ़ अल्लाह की इबादत करते थे, ख़्वाह वो नेक हों या गुनाहगार, तो उनके पास उनका रब एक स़ूरत में जलवागर होगा, जो पहली स़ूरत से जिसको वो देख चुके होंगे, मिलती जुलती होगी (ये वो स़ूरत न होगी) अब उनसे कहा जाएगा। अब तुम्हें किसका इंतिज़ार है? हर उम्मत अपने मा'बूदों को साथ लेकर जा चुकी, वो जवाब देंगे कि हम दुनिया में जब लोगों से (जिन्होंने कुफ़्र किया था) जुदा हुए तो हम उनमे

لَيسَ فِيهَا سَحَابٌ؟)) قَالُوا: لاَ. قَالَ: ((وَهَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ ضَوءٌ لَيس فيها سحابٌ؟)) قَالُوا: لاَ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلاَّ كَمَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ أَحدِهِما إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ تَتْبَعُ كُلُّ أُمَّةٍ مَا كَانَتْ تَعْبُدُ، فَلاَ يَبْقَى مَنْ كَانَ يَعْبُدُ غَيْرَ اللهِ مِن الأَصْنَامِ وَالأَنْصَابِ إِلاَّ يَتَسَاقَطُونَ فِي النَّارِ. حَتَّى إِذَا لَمْ يَبْقَ إِلاَّ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ بَرٌّ أَوْ فَاجِرٌ وَغُبَّرَاتُ أَهْلِ الْكِتَابِ فَيُدْعَى الْيَهُودُ فَيُقَالُ لَهُمْ: مَنْ كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ قَالُوا: كُنَّا نَعْبُدُ عُزَيْرَ ابْنَ اللهِ، فَيُقَالُ لَهُم كَذَبْتُمْ، مَا اتَّخَذَ اللهُ مِنْ صَاحِبَةٍ وَلاَ وَلَدٍ فَمَاذَا تَبْغُونَ؟ فَقَالُوا : عَطِشْنَا رَبَّنَا فَاسْقِنَا فَيُشَارُ أَلاَ تَرِدُونَ فَيُحْشَرُونَ إِلَى النَّارِ كَأَنَّهَا سَرَابٌ. يَحْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا فَيَتَسَاقَطُونَ فِي النَّارِ ثُمَّ يُدْعَى النَّصَارَى فَيُقَالُ لَهُمْ: مَنْ كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ قَالُوا: كُنَّا نَعْبُدُ الْمَسِيحَ ابْنَ اللهِ فَيُقَالُ لَهُمْ : كَذَبْتُمْ مَا اتَّخَذَ اللهُ مِنْ صَاحِبَةٍ وَلاَ وَلَدٍ فَيُقَالُ لَهُمْ: مَاذَا تَبْغُونَ؟ فَكَذَلِكَ مِثْلَ الأَوَّلِ حَتَّى إِذَا لَمْ يَبْقَ إِلاَّ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ مِنْ بَرٍّ أَوْ فَاجِرٍ أَتَاهُمْ رَبُّ الْعَالَمِينَ فِي أَدْنَى صُورَةٍ مِن الَّتِي رَأَوْهُ فِيهَا. فَيُقَالُ : مَاذَا تَنْتَظِرُونَ؟ تَتْبَعُ كُلُّ أُمَّةٍ مَا كَانَتْ تَعْبُدُ، قَالُوا: فَارَقْنَا النَّاسَ فِي الدُّنْيَا عَلَى

सबसे ज़्यादा मुह़ताज थे, फिर भी हमने उनका साथ नहीं दिया और अब हमें अपने सच्चे रब का इंतिज़ार है जिसकी हम दुनिया में इबादत करते रहे। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि तुम्हारा रब मैं ही हूँ। इस पर तमाम मुसलमान बोल उठेंगे कि हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते, दो या तीन बार यूँ कहेंगे हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने वाले नहीं हैं। (राजेअ :

أفقر ما كُنّا إِلَيْهِمْ، لَمْ نُصَاحِبْهُمْ وَنَحْنُ نَنْتَظِرُ رَبَّنَا الَّذِي كُنَّا نَعْبُدُ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ، فَيَقُولُونَ لاَ نُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا)) مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا.

[راجع: ٢٢]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से परवरदिगार के लिये सूरत ष़ाबित हुई। अगर सूरत न हो फिर उसका दीदार क्यूँ कर होगा। सूरत की ह़क़ीक़त ख़ुद अल्लाह ही को मा'लूम है। अहले ह़दीष़ सिफ़ाते बारी की तावील नहीं करते। सलफ़े-स़ालेह़ का यही त़रीक़ा रहा है। मुस्लिम की रिवायत में यूँ है। मुसलमान पहले अपने रब को न पहचान सकेंगे, क्योंकि वो दूसरी सूरत में जलवागर होगा और जब वो फ़र्माएगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ तो मुसलमान कहेंगे हम तुझसे अल्लाह की पनाह चाहते हैं फिर परवरदिगार अपनी पहली सूरत में ज़ाहिर होगा जिस सूरत में मुसलमान उसको देख चुके होंगे। उस वक़्त सब मुसलमान सज्दे में गिर पड़ेंगे और कहेंगे तू बेशक हमारा परवरदिगार है।

बाब 9 : आयत 'फकैफ़ इज़ा जिअना मिन कुल्लि उम्मतिन' की तफ़्सीर या'नी,

٩- باب قوله

सो उस वक़्त क्या ह़ाल होगा जब हम हर उम्मत से एक एक गवाह ह़ाज़िर करेंगे और उन लोगों पर तुझको बत़ौर गवाह पेश करेंगे। अल मुख़्ताल और ख़िताल का मा'नी एक है या'नी ग़ुरूर करने और अकड़ने वाला, नत़्मिसु वुजुहहुम का मत़लब ये है कि हम उनके चेहरों मो मेटकर गधे की त़रह़ सपाट कर देंगे। ये त़मसल किताब से निकला है या'नी लिखा हुआ मिटा दिया। लफ़्ज़े सईरा बमा'नी ईंधन के है।

﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلاَءِ شَهِيدًا﴾. الْمُخْتَالُ: وَالْخَتَّالُ وَاحِدٌ. نَطْمِسَ وُجُوهًا نُسَوِّيَهَا حَتَّى تَعُودَ كَأَقْفَائِهِمْ طَمَسَ الْكِتَابَ مَحَاهُ، سَعِيرًا : وُقُودًا.

4582. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन सईद क़त्तान ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ष़ौरी ने, उन्हें सुलैमान ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें उ़बैदह ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने, यह्या ने बयान किया कि ह़दीष़ का कुछ हिस्सा अ़म्र बिन मुर्रह से है (बवास्ता इब्राहीम) कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे क़ुर्आन पढ़कर सुनाओ। मैंने अ़र्ज़ किया, ह़ुज़ूर (ﷺ) को मैं पढ़कर सुनाऊँ? वो तो आप (ﷺ) पर ही नाज़िल होता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं दूसरे से सुनना चाहता हूँ। चुनाँचे मैंने आपको सूरह निसा सुनानी शुरू की, जब मैं फ़कयफ़ा इज़ा जिअना मिन कुल्लि उम्मतिन बिशहीदिन व जिअना बिका अ़ला हाउलाइ शहीदा पर पहुँचा

٤٥٨٢- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: يَحْيَى بَعْضُ الْحَدِيثِ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ : قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ ((اقْرَأْ عَلَيَّ)) قُلْتُ أَقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ قَالَ: ((فَإِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي)) فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ سُورَةَ النِّسَاءِ حَتَّى بَلَغْتُ ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلاَءِ شَهِيدًا﴾ قَالَ: ((أَمْسِكْ)) فَإِذَا عَيْنَاهُ

तो आपने फ़र्माया कि ठहर जाओ। मैंने देखा तो आप (ﷺ) की आँखों से आंसू बह रहे थे। (दीगर मक़ाम : 5049, 5050, 5055, 5056)

تذرفان. [أطرافه في : ٥٠٤٩، ٥٠٥٠، ٥٠٥٥، ٥٠٥٦].

आप इस वजह से रो रहे थे कि कि उम्मत ने जो कुछ किया है उस पर गवाही देनी होगी। कुछ ने कहा आपका ये रोना ख़ुशी का रोना था चूँकि आप तमाम पैग़म्बरों के गवाह बनेंगे। आयत का तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

बाब 10 : आयत 'इनकुन्तुम मर्ज़ा औ अला सफ़रिन'

١٠- باب قوله

की तफ़्सीर या'नी, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाजत से आया हो और पानी न हो तो पाक मिट्टी पर तयम्मुम करे। स़ईदा ज़मीन की ज़ाहिर सतह को कहते हैं। जाबिर ने कहा कि, त़ाग़ूत बड़े ज़ालिम मुश्रिक क़िस्म के सरदार लोग जिनके यहाँ जाहिलियत में लोग मुक़द्दमात ले जाते थे। एक ऐसा सरदार क़बीला जुहैना में था, एक क़बीला असलम में था और हर क़बीले में ही एक ऐसा त़ाग़ूत होता था। ये वही काहिन थे जिनके पास शैत़ान (ग़ैब की ख़बरें लेकर) आया करते थे। ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्त़ाब (रज़ि.) ने कहा कि, अल् जिब्तु से मुराद जादू है और अत् त़ाग़ूत से मुराद शैत़ान है और इक्रिमा ने कहा कि अल् जिब्तु ह़ब्शी ज़ुबान में शैत़ान को कहते हैं और अत् त़ाग़ूत बमा'नी काहिन के आता है।

قَوْلِهِ: ﴿وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ صَعِيدًا: وَجْهَ الأَرْضِ. وَقَالَ جَابِرٌ كَانَتِ الطَّوَاغِيتُ الَّتِي يَتَحَاكَمُونَ إِلَيْهَا فِي جُهَيْنَةَ وَاحِدٌ وَفِي أَسْلَمَ وَاحِدٌ وَفِي كُلِّ حَيٍّ وَاحِدٌ كُهَّانٌ، يَنْزِلُ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ وَقَالَ عُمَرُ: الْجِبْتُ: السِّحْرُ، وَالطَّاغُوتُ : الشَّيْطَانُ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: الْجِبْتُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ شَيْطَانٌ. وَالطَّاغُوتُ : الْكَاهِنُ.

4583. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (मुझसे) ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) का एक हार गुम हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द स़ह़ाबा (रज़ि.) को उसे तलाश करने के लिये भेजा। इधर नमाज़ का वक़्त हो गया, न लोग वुज़ू से थे और न पानी मौजूद था। इसलिये वुज़ू के बग़ैर नमाज़ पढ़ी गई इस पर अल्लाह तआ़ला ने तयम्मुम की आयत नाज़िल की।

٤٥٨٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: هَلَكَتْ قِلاَدَةٌ لأَسْمَاءَ فَبَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ فِي طَلَبِهَا رِجَالاً فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ، وَلَيْسُوا عَلَى وُضُوءٍ وَلَمْ يَجِدُوا مَاءً فَصَلَّوْا وَهُمْ عَلَى غَيْرِ وُضُوءٍ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى يَعْنِي آيَةَ التَّيَمُّمِ.[راجع: ٣٣٤]

तशरीह : तयम्मुम का मा'नी क़स्द करना, इस्तिलाह़ में पानी न होने पर पाकी ह़ासिल करने के लिये पाक मिट्टी का क़स्द करना जिसकी तफ़्सीलात मज़्कूर हो चुकी है।

बाब 11 : आयत 'व उलिल्अम्रि मिन्कुम'

١١- باب قوله ﴿وأولي الأمر منكم﴾ ذوي الأمر

की तफ़्सीर ऊलुल अम्र से बाइख़्तियार ह़ाकिम लोग मुराद हैं।

या'नी, ऐ ईमानवालों! अल्लाह की इत़ाअ़त करो और रसूल की और अपने में से उलिल अम्र की, आगे आयत यूँ है, फ़इन

तनाज़अतुम फ़ी शैइन फरुद्दूहू इलल्लाहि वर्रसूलि इन्कुन्तुम तूमिनून बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ज़ालिक ख़ैरुव्व अहसनु तावीला (अन् निसा : 59) या'नी अगर तुममें आपस में कोई इख़्तिलाफ़ पैदा हो तो इस मसले को अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ लौटा दो, अगर अल्लाह और पिछले दिन पर तुम ईमान रखते हो, उसी में ख़ैर है और फ़ैसले के लिह़ाज़ से यही त़रीक़ा बेहतर है। इस आयत से मुक़ल्लिदीन ने तक़्लीदे शख़्सी का वुजूब षाबित किया है लेकिन दरह़क़ीक़त उसमें तक़्लीदे शख़्सी की तर्दीद है जबकि इख़्तिलाफ़ के वक़्त अल्लाह व रसूल की त़रफ़ रुजूअ करने का हुक्म दिया गया है। अल्लाह की त़रफ़ से मुराद क़ुर्आन मजीद है और रसूल की त़रफ़ रुजूअ से मुराद ह़दीष शरीफ़ है। किसी भी इख़्तिलाफ़ के वक़्त क़ुर्आन व ह़दीष से फ़ैसला होगा जिसके आगे न किसी ह़ाकिम की बात चलेगी न किसी इमाम की। सिर्फ़ क़ुर्आन व ह़दीष को ह़ाकिमे मुत्लक़ माना जाएगा। अइम्म-ए-मुज्तहिदीन की भी यही हिदायत है अल्लाह तआला जामिद मुक़ल्लिदों को नेक समझ अ़ता करे, आमीन।

4584. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ज्जाज बिन मुहम्मद ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने जुरैज ने, उन्हें यअ़ला बिन मुस्लिम ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, अल्लाह की इत़ाअ़त करो और रसूल (ﷺ) की और अपने में से ह़ाकिमों की। अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा बिन क़ैस बिन अ़दी (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें एक मुहिम पर बत़ौरे अफ़सर रवाना किया था।

٤٥٨٤- حدَّثنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ يَعْلَى بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ قَالَ: نَزَلَتْ فِي عَبْدِ اللهِ بْنِ حُذَافَةَ بْنِ قَيْسِ بْنِ عَدِيٍّ، إِذْ بَعَثَهُ النَّبِيُّ ﷺ فِي سَرِيَّةٍ.

तश्रीह : रास्ते में उनको किसी बात पर गुस़्स़ा आ गया, उन्होंने अपने लोगों से कहा आग सुलगाओ, जब आग रोशन हुई तो कहा उसमें कूद जाओ। कुछ ने कहा उनकी इत़ाअ़त करनी चाहिये, कुछ ने कहा कि उनका ये हुक्म शरीअ़त के ख़िलाफ़ है। इसका मानना ज़रूरी नहीं। आख़िर ये आयत, **फ़इन तनाज़अतुम फ़ी शैइन** (अन् निसा : 59) नाज़िल हुई। ह़ाफ़िज़ ने कहा मत़लब ये है कि जब किसी मसले में इख़्तिलाफ़ हो तो किताबुल्लाह व ह़दीषे रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ रुजूअ करो इससे तक़्लीदे शख़्सी की जड़ कट गई।

बाब 12 : आयत 'फला व रब्बिक ला यूमिनून हत्ता युहक्किमूक' की तफ़्सीर या'नी,

١٢- باب قوله ﴿فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾

तेरे रब की क़सम! ये लोग हर्गिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक ये लो उस झगड़े में जो उनके आपस में हों, तुझको अपना ह़ाकिम न बना लें, फिर तेरे फ़ैस़ले को ब रज़ा व रग़बत के साथ तस्लीम कर लें।

4585. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) का एक अंसारी (षाबित बिन क़ैस रज़ि.) स़ह़ाबी से मुक़ामे ह़र्रह की एक नाली के बारे में झगड़ा हो गया (कि उससे कौन अपने बाग़ को पहले सींचने का ह़क़ रखता

٤٥٨٥- حدَّثنا عليُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ. حدَّثنا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ. أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: خَاصَمَ الزُّبَيْرُ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ فِي شَرِيجٍ مِنَ الْحَرَّةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اسْقِ

، زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ احْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ. ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) وَاسْتَوْعَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيحِ الْحُكْمِ حِينَ أَحْفَظَهُ الأَنْصَارِيُّ وَكَانَ أَشَارَ عَلَيْهِمَا بِأَمْرٍ لَهُمَا فِيهِ سَعَةٌ قَالَ الزُّبَيْرُ: فَمَا أَحْسِبُ هَذِهِ الآيَاتِ إِلاَّ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ ﴿فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾.

[راجع: ٢٣٦٠]

है) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ुबैर (रज़ि.) पहले तुम अपना बाग़ सींच लो फिर अपने पड़ौसी को जल्द पानी दे देना। इस पर उस अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! इसलिये कि ये आपके फूफीज़ाद भाई हैं? ये सुनकर आँहुज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुबैर! अपने बाग़ को सींचो और पानी उस वक़्त तक रोके रखो कि मुँडेर भर जाए, फिर अपने पड़ौसी के लिये उसे छोड़ो। (पहले हुज़ूर ﷺ ने अंसारी के साथ अपने फ़ैसले में रिआयत रखी थी) लेकिन इस बार आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को साफ़ तौर पर उनका पूरा हक़ दे दिया क्योंकि अंसारी ने ऐसी बात कही थी कि जिससे आपका ग़ुस्सा होना क़ुदरती था। हज़रत (ﷺ) ने अपने पहले फ़ैसले में दोनों के लिये रिआयत रखी थी। ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरा ख़याल है, ये आयात इसी सिलसिले में नाज़िल हुई थीं। तेरे परवरदिगार की क़सम! कि ये लोग तब तक ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि ये उस झगड़े में जो इनके आपस में हों आपको हाकिम न बना लें और आपके फ़ैसले को खुले दिल के साथ ब रज़ा व रग़बत तस्लीम करने के लिये तैयार न हों। (राजेअ : 2360)

तश्रीह : इस आयत में अल्लाह तआला अपनी ज़ात की क़सम खाकर इर्शाद फ़र्माता है कि उन लोगों का ईमान कभी पूरा नहीं होने वाला जब तक ये अपने आपस के झगड़ों में आपको अपना हाकिम न बना लें फिर आपके फ़ैसले को सुनकर ख़ुशी ख़ुशी तस्लीम न कर लें । मोमिन की यही निशानी है कि जिस मसले मे अगर सहीह हदीष़ मिल जाए बस ख़ुशी ख़ुशी उस पर अमल शुरू कर दे। अगर तमाम जहाँ के मौलवी व मुज्तहिद मिलकर उसके ख़िलाफ़ बयान करें तो करते रहें, ज़रा भी दिल में ये ख़याल न लाए कि मुज्तहिदों का मज़हब जो हम छोड़ते हैं अच्छी बात नहीं है, बल्कि दिल में बहुत ख़ुशी और सुरूर पैदा हो कि हक़ तआला ने हदीष़ शरीफ़ की पैरवी की तौफ़ीक़ दी और कैदानी और क़हिस्तानी के फंदे से नजात दिलवाई। (वहीदी)

١٣- باب قوله ﴿فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ﴾

बाब 13 : आयत 'फउलाइक मअल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अलैहिम' की तफ़्सीर या'नी,

तश्रीह : तो ऐसे लोग जिन पर अल्लाह तआला ने (अपना ख़ास) इन्आम किया है। जैसे नबियों और सिद्दीक़ीन और शुह्दा और सालिहीन, उनके साथ उनका हश्र होगा। ये आयत उस वक़्त उतरी जब एक शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझको आपसे बेहद मुहब्बत है। घर में रहूँ तो चैन नहीं आता। जब आप (ﷺ) की सूरत आकर देख लेता हूँ तो तसल्ली होती है। अब मुझको ये फ़िक्र है कि आख़िरत में आप तो आला दर्जे पर होंगे मैं अल्लाह जाने कहाँ होऊँगा। आपका जमाले मुबारक वहाँ कैसे देख सकूँगा? उसकी तसल्ली के लिये ये आयत नाज़िल हुई। हुक्म आम है और हर मुहिब्बे रसूल (ﷺ) मुसलमान इस बशारत का मिस्दाक़ है। **जअल्नल्लाहु मिन्कुम**

4586. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो नबी मर्ज़ुल मौत में बीमार होता है तो उसे दुनिया और आख़िरत का इख़्तियार दिया जाता है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) की मर्ज़ुल वफ़ात में जब आवाज़ गले में फंसने लगी तो मैंने सुना कि आप फ़र्मा रहे थे। उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है या'नी अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेहीन के साथ, इसलिये मैं समझ गई कि आपको भी इख़्तियार दिया गया है (और आपने अल्लाहुम्म बिर्रफ़ीक़िल आला) कहकर आख़िरत को पसन्द फ़र्माया (ﷺ). (राजेअ़ : 4435)

٤٥٨٦- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَا مِنْ نَبِيٍّ يَمْرَضُ إِلاَّ خُيِّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ))، وَكَانَ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ أَخَذَتْهُ بُحَّةٌ شَدِيدَةٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ)) فَعَلِمْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [راجع: ٤٤٣٥]

बाब 14 : आयत 'वमा लकुम ला तुक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाह' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

١٤- باب قَوْلِهِ : ﴿وَمَالَكُمْ لاَ تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ إِلَى الظَّالِمِينَ أَهْلُهَا﴾ الآيَةَ.

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद नहीं करते और उन लोगों की मदद के लिये नहीं लड़ते जो कमज़ोर हैं, मर्दों में से और औरतों और बच्चों में से,

तश्रीह : मक्का में जो कमज़ोर लोग क़ैद में रह गये थे उनको आज़ाद कराने की तर्ग़ीब में ये आयत नाज़िल हुई।

4587. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं और मेरी वालिदा मुस्तज़्अफ़ीन (कमज़ोरों) में से थे। (राजेअ़ : 1357)

٤٥٨٧- حدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ : كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِنَ الْمُسْتَضْعَفِينَ. [راجع: ١٣٥٧]

उनकी वालिदा का नाम लुबाबा बिन्ते ह़ारिष़ (रज़ि.) था जो ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन थीं। ये दोनों दिल से मुसलमान हो गये थे मगर मक्का में काफ़िरों के हाथों में फंसे हुए थे, हिजरत नहीं कर सकते थे, उनके बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

4588. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैयका ने कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत 'इल्लल्मुस्तज़्अफ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसाइ वल्वालिदानि' की तिलावत की और फ़र्माया कि मैं और मेरी वालिदा भी उन लोगों में से थीं, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने मा'ज़ूर रखा था। और ह़ज़रत

٤٥٨٨- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ. أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ تَلاَ ﴿إِلاَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ﴾ قَالَ : كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِمَّنْ عَذَرَ اللهُ. وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حَصِرَتْ

ضاقت. تلووا ألسنتكم بالشهادة. وقال غيره المراغم: المهاجر. راغمت: هاجرت قومي. موقوتا: موقتا وقته عليهم. [راجع: ١٣٥٧]

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि ह़स्रत मा'नी में ज़ाक़त के हैं तल्वू या'नी तुम्हारी ज़बानों से गवाही अदा होगी। और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के सिवा दूसरे शख़्स (अबू उ़बैदह रज़ि.) ने कहा मराग़मन का मा'नी हिजरत का मुक़ाम। अ़रब लोग कहते हैं राग़म्ता क़ौमी या'नी मैंने अपनी क़ौम वालों को जमा कर दिया। मवक़ूता के मा'नी एक वक़्त मुक़र्रर पर या'नी जो वक़्त उनके लिये मुक़र्रर हो। (राजेअ़ : 1357)

١٥- قوله باب ﴿فما لكم في المنافقين فئتين والله أركسهم بما كسبوا﴾ قال ابن عباس : بددهم. فئة : جماعة.

बाब 15 : आयत 'फमा लकुम फिल्मुनाफ़िक़ीन फिअतैनि'

की तफ़्सीर या'नी, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो गिरोह हो गये हो ह़ालाँकि अल्लाह ने उनके करतूतों के बाइ़ष़ उन्हें उल्टा फेर दिया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि, अर् कसहुम बमा'नी बद्ददहुम है फ़िअति या'नी जमाअ़त

٤٥٨٩- حدثني محمد بن بشار. حدثنا غندر وعبد الرحمن، قالا : حدثنا شعبة، عن عدي، عن عبد الله بن يزيد، عن زيد بن ثابت رضي الله تعالى عنه ﴿فما لكم في المنافقين فئتين﴾ رجع ناس من أصحاب النبي ﷺ من أحد وكان الناس فيهم فرقتين، فريق يقول : اقتلهم، وفريق يقول: لا. فنزلت: ﴿فما لكم في المنافقين فئتين﴾ وقال : إنها طيبة، تنفي الخبث كما تنفي النار خبث الفضة.

[راجع: ١٨٨٤]

4589. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुनदर और अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़दी ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने आयत, और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो फ़रीक़ हो गये हो; के बारे में फ़र्माया कि कुछ लोग मुनाफ़िक़ीन जो (ऊपर से) नबी करीम (ﷺ) के साथ थे, जंगे उहुद में (आपको छोड़कर) वापस चले आए तो उनके बारे में मुसलमानों की दो जमाअ़तें हो गईं। एक जमाअ़त तो ये कहती थी कि (या रसूलल्लाह ﷺ) इन (मुनाफ़िक़ीन) से क़िताल कीजिए और एक जमाअ़त ये कहती थी कि उनसे क़िताल न कीजिए। इस पर ये आयत उतरी कि, तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो गिरोह हो गये हो और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मदीना त़य्यिबा है। ये ख़बाष़त को इस त़रह़ दूर कर देता है जैसे आग चांदी के मेल कुचैल को दूर कर देती है। (राजेअ़ : 1884)

जंगे उहुद का मामला भी ऐसा ही हुआ कि उसने सच्चे मुसलमानों और झूठे मुसलमानों को अलग अलग ज़ाहिर कर दिया। मुनाफ़िक़ीन खुलकर सामने आ गये, जैसा कि बाद के वाक़ियात ने बतलाया। ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के कातिब हैं उनका शुमार जलीलुल क़द्र स़ह़ाबियों में होता है। तदवीने क़ुर्आन में उनका बहुत बड़ा ह़िस्सा है। ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में उन्होंने क़ुर्आने करीम की किताबत भी की है और क़ुर्आने पाक को मुस्ह़फ़ से ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ज़माने में उन्होंने नक़ल किया है। मदीना त़य्यिबा में 45 हिजरी में वफ़ात पाई, कुल 56 बरस की उम्र हुई। (रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु)

बाब : आयत 'व इज़ा जाअहुम अम्रुम्मिनल्अम्नि अविल्ख़ौफ़ि' की तफ़्सीर या'नी,

●●●● باب قوله

﴿وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ﴾ أَفْشَوْهُ. يَسْتَنْبِطُونَهُ: يَسْتَخْرِجُونَهُ. حَسِيبًا: كَافِيًا. إِلاَّ إِنَاثًا: الْمَوَاتَ حَجَرًا أَوْ مَدَرًا وَمَا أَشْبَهَهُ. مَرِيدًا مُتَمَرِّدًا. فَلَيُبَتِّكُنَّ: بَتَّكَهُ قَطَعَهُ. قِيلاً، وَقَوْلاً وَاحِدٌ. طُبِعَ: خُتِمَ.

और उन्हें जब कोई बात अमन या ख़ौफ़ की पहुँचती है तो ये उसे फैला देते हैं, अज़ाऊ का मा'नी मशहूर कर देते हैं, यस्तम्बितूनहू का मा'नी निकाल लेते हैं हसीबन का मा'नी काफ़ी है। इल्ला इनाष़न से बेजान चीज़ें मुराद हैं पत्थर मिट्टी वग़ैरह। मरीदा का मा'नी शरीर। फ़ल्युबत्तिकुन्ना बतकतु से निकला है या'नी उसको काट डालो। क़ीला और क़ौला दोनों के एक ही मा'नी हैं। तुबिअ़ का मा'नी मुहर कर दी।

बाब 16 : आयत 'व मय्यक़्तुल मूमिनन मुतअम्मिदन फजज़ाउहू जहन्नमु' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

١٦ - باب قوله ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ﴾

और जो कोई किसी मुसलमान को जान–बूझकर क़त्ल कर दे तो उसकी सज़ा जहन्नम है।

4590. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने बयान किया, कहा मैंने सईद बिन जुबैर से सुना, उन्होंने बयान किया कि उलम-ए-कूफ़ा का इस आयत के बारे में इख़्तिलाफ़ हो गया था। चुनाँचे मैं इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में उसके लिये सफ़र करके गया और उनसे उसके बारे में पूछा। उन्होंने फ़र्माया कि ये आयत, और जो कोई मुसलमान को जान–बूझकर क़त्ल करे उसकी सज़ा दोज़ख़ है। नाज़िल हुई और इस बाब की ये सबसे आख़िरी आयत है उसे किसी दूसरी आयत ने मन्सूख़ नहीं किया है। (राजेअ़ : 3855)

٤٥٩٠ - حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُغِيرَةُ بْنُ النُّعْمَانِ. قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ قَالَ: آيَةٌ اخْتَلَفَ فِيهَا أَهْلُ الْكُوفَةِ، فَرَحَلْتُ فِيهَا إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَسَأَلْتُهُ عَنْهَا، فَقَالَ: نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ﴾ هِيَ آخِرُ مَا نَزَلَ وَمَا نَسَخَهَا شَيْءٌ. [راجع: ٣٨٥٥]

तश्रीह : बिला वजह हर इंसान का ख़ूने नाहक़ बहुत बड़ा गुनाह है। क़ुर्आन मजीद ने ऐसे ख़ूनी इंसानों को पूरी नोओ़ इंसानी का क़ातिल क़रार दिया है और उसे बहुत बड़ा फ़सादी मुजरिम बतलाया है फिर अगर ये ख़ून नाहक़ किसी मोमिन मुसलमान का है तो उस क़ातिल को क़ुर्आन मजीद ने हमेशा का दोज़ख़ी क़रार दिया है जो क़ुर्आनी इस्तिलाह में एक संगीनतरीन और आख़री सज़ा है। इसी आयत के मुताबिक़ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) क़ातिले मोमिन की तौबा क़ुबूल न होने के क़ाइल थे। मगर सूरह फ़ुरक़ान में **इल्ला मन ताब व आमन व अमिल अ़मलन स़ालिहन** (अल फ़ुर्क़ान : 70) के तहत जुम्हूर उसकी तौबा के क़ाइल हैं। वल्लाहु आ़लम बिस्स़वाब। रिवायत में मज़्कूरा बुज़ुर्गतरीन ताबेई हज़रत सईद बिन जुबैर के इबरतअंगेज़ हालात ये हैं।

ये सईद बिन जुबैर असदी कूफ़ी हैं, जलीलुल क़द्र ताबेईन में से एक ये भी हैं। उन्होंने अबू मसऊ़द, इब्ने अ़ब्बास, इब्ने उ़मर, इब्ने ज़ुबैर और अनस (रज़ि.) से इल्म हासिल किया और उनसे बहुत लोगों ने। माहे शाबान 95 हिजरी में जबकि उनकी उ़म्र उन्चास (49) साल की थी हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उनको क़त्ल कराया और ख़ुद हज्जाज रमज़ान में मरा और कुछ के नज़दीक उसी साल शव्वाल में और यूँ भी कहते हैं कि उनकी शहादत के छः माह बाद मरा। उनके बाद हज्जाज किसी के क़त्ल पर क़ादिर नहीं हुआ क्योंकि सईद ने उसके लिये दुआ़ की थी। जबकि हज्जाज उनसे मुख़ातिब होकर बोला कि तुमको

किस तरह क़त्ल किया जाए, मैं तुमको उसी तरह क़त्ल करूँगा। ज़ुबैर बोले कि ऐ हज्जाज! तू अपना क़त्ल होना जिस तरह चाहे वो बतला इसलिये कि अल्लाह की क़सम! जिस तरह तू मुझको क़त्ल करेगा उसी तरह आख़िरत में मैं तुझको क़त्ल करूँगा। हज्जाज बोला कि क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमको मुआफ़ कर दूँ? बोले कि अगर अफ़्व वाक़ेअ हुआ तो वो अल्लाह की तरफ़ से होगा और रहा तू तो उसमें तेरे लिये कोई बराअत व उ़ज़्र नहीं। हज्जाज ये सुनकर बोला कि इनको ले जाओ और क़त्ल कर डालो। पस जब उनको दरवाज़े से बाहर निकाला तो ये हंस पड़े। इसकी इत्तिला हज्जाज को पहुँचाई गई तो हुक्म दिया कि उनको वापस लाओ, लिहाज़ा वापस लाया गया तो उसने पूछा कि अब हंसने का क्या सबब था? बोले कि मुझको अल्लाह के मुक़ाबले में तेरी बेबाकी और अल्लाह तआ़ला की तेरे मुक़ाबिल में हिल्म व बुर्दबारी पर तअ़ज्जुब होता है। हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि खाल बिछाई जाए तो बिछाई गई। फिर हुक्म दिया कि इनको क़त्ल कर दिया जाए। इसके बाद सईद बिन ज़ुबैर ने फ़र्माया कि **वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल्अर्ज़ हनीफ़व्वं मा अना मिनल्मुश्रिकीन** (अल अन्आ़म : 79) या'नी, मैंने अपना रुख़ सबसे मोड़कर उस अल्लाह की तरफ़ कर लिया है कि जो ख़ालिक़े आसमान व ज़मीन है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं। हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया कि इनको क़िब्ला की मुख़ालिफ़ सिम्त करके मज़्बूत बाँध दिया जाए। सईद ने फ़र्माया, **फ़अयनमा तुवल्लू फष़म्म वज्हुल्लाहि** (अल बक़र : 115) जिस तरफ़ को भी तुम रुख़ करोगे उसी तरफ़ अल्लाह है। अब हज्जाज ने हुक्म दिया कि सर के बल औंधा कर दिया जाए। सईद ने फ़र्माया, **मिन्हा ख़लक्नाकुम व फ़ीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा** (ताहा : 55) हज्जाज ने ये सुनकर हुक्म दिया इसको ज़िब्ह कर दो। सईद ने फ़र्माया कि मैं शहादत देता हूँ और हुज्जत पेश करता हूँ इस बात की कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं, वो एक है उसका कोई शरीक नहीं और इस बात की कि मुहम्मद (ﷺ) उसके बन्दे और रसूल हैं। ये (हुज्जते ईमानी) मेरी तरफ़ से सम्भाल यहाँ तक कि तू मुझसे क़यामत के दिन मिले। फिर सईद ने दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! हज्जाज को मेरे बाद किसी के क़त्ल पर क़ादिर न कर। उसके बाद खाल पर उनको ज़िब्ह कर दिया गया। कहते हैं कि हज्जाज उनके क़त्ल के बाद पन्द्रह रातें और जिया उसके बाद हज्जाज के पेट में कीड़ों की बीमारी पैदा हो गई। हज्जाज ने हकीम को बुलवाया ताकि मुआयना करे। हकीम ने गोश्त का एक सड़ा हुआ टुकड़ा मंगवाया और उसको धागे में पिरोकर इसके गले से उतारा और कुछ देर तक छोड़ रखा। उसके बाद हकीम ने उसको निकाला तो देखा कि ख़ून से भरा हुआ है। हकीम समझ गया कि अब ये बचने वाला नहीं है। हज्जाज अपनी बक़िया ज़िन्दगी में चीख़ता रहता था कि मुझे और सईद को क्या हो गया कि जब मैं सोता हूँ तो मेरा पैर पकड़कर हिला देता है। सईद बिन ज़ुबैर इराक़ की खुली आबादी में दफ़न किये गये। रहिमहुल्लाहु रहमतन वसिअ़तन!

बाब 17 : आयत 'व ला तक़ूलु लिमन अल्क़ा इलैकुमुस्सलाम' की तफ़्सीर या'नी,

और जो तुम्हें सलाम करे उसे ये न कह दिया करो कि तू तो मुसलमान ही नहीं। अस्सल्मु और अस्सलम और अस्सलाम सबका एक ही मा'नी है।

١٧- باب قوله ﴿وَلاَ تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلاَمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا﴾
السَّلْمُ وَالسَّلَمُ وَالسَّلاَمُ وَاحِدٌ.

4591. मुझसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़ता ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत और जो तुम्हें सलाम करता हो उसे ये मत कह दिया करो कि तू तो मोमिन ही नहीं है, के बारे में फ़र्माया कि एक साहब (मिरदास नामी) अपनी बकरियाँ चरा रहे थे, एक मुहिम पर जाते हुए कुछ मुसलमान उन्हें मिले तो उन्होंने कहा, अस्

٤٥٩١- حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿وَلاَ تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلاَمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا﴾ قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَانَ رَجُلٌ فِي غُنَيْمَةٍ لَهُ فَلَحِقَهُ الْمُسْلِمُونَ فَقَالَ: السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ فَقَتَلُوهُ. وَأَخَذُوا غُنَيْمَتَهُ فَأَنْزَلَ اللهُ

فِي ذَٰلِكَ إِلَى قَوْلِهِ ﴿عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا﴾ تِلْكَ الْغَنِيمَةُ قَالَ : قَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ السَّلَامَ.

सलाम अलैयकुम लेकिन मुसलमानों ने बहानेबाज़ जानकर उन्हें क़त्ल कर दिया और उनकी बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की थी आख़िर आयत, अर्ज़ुल ह़यातुद्दुन्या, इससे इशारा उन्हीं बकरियों की तरफ़ था। बयान किया कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, अस्सलाम क़िरात की है। मशहूर क़िरात भी यही है।

तश्रीह : रिवायत में मज़्कूर सुफ़यान ष़ौरी ह़दीष़ के बहुत बड़े आलिम और ज़ाहिद व आबिद व षिक़ह थे। अइम्म-ए-ह़दीष़ और मर्जउल-उ़लूम थे, उनका शुमार भी अइम्म-ए-मुज्तहिदीन में है। क़ुतुबे इस्लाम उनको कहा गया है। 99 हिजरी में पैदा हुए और 161 हिजरी में बसरा में वफ़ात पाई।

١٨- باب قوله ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ ﴿وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾

बाब 18 : आयत 'ला यस्तविल्क़ाइदून मिनल्मूमिनीन' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी, ईमानवालों में से (बिला उ़ज़्र घरों में) बैठ रहने वाले और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते

दोनों में बहुत बड़ा फ़र्क़ है, जितना आसमान और ज़मीन में है।

٤٥٩٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : حَدَّثَنِي سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ السَّاعِدِيُّ أَنَّهُ رَأَى مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ فِي الْمَسْجِدِ، فَأَقْبَلْتُ حَتَّى جَلَسْتُ إِلَى جَنْبِهِ، فَأَخْبَرَنَا أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ أَخْبَرَهُ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَمْلَى عَلَيْهِ ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ ﴿وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾ فَجَاءَهُ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ وَهُوَ يُمِلُّهَا عَلَيَّ قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ وَاللهِ لَوْ أَسْتَطِيعُ الْجِهَادَ لَجَاهَدْتُ وَكَانَ أَعْمَى فَأَنْزَلَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ وَفَخِذُهُ عَلَى فَخِذِي فَثَقُلَتْ عَلَيَّ حَتَّى خِفْتُ أَنْ تَرُضَّ فَخِذِي ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾. [راجع: ٢٨٣٢]

4592. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे ह़ज़रत सहल बिन सअ़द साअ़दी (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने मर्वान बिन ह़कम बिन आस़ को मस्जिद में देखा (बयान किया कि) फिर मैं उनके पास आया और उनके पहलू में बैठ गया, उन्होंने मुझे ख़बर दी और उन्हें ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने ख़बर दी थी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे ये आयत लिखवाई, मुसलमानों में से (घर) बैठ रहने वाले और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अभी आप ये आयत लिखवा ही रहे थे कि ह़ज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) आ गये और अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम! या रसूलल्लाह! अगर मैं जिहाद में शिर्कत कर सकता तो यक़ीनन जिहाद करता। वो अंधे थे। उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल पर वह्य उतारी। आपकी रान मेरी रान पर थी (शिद्दते वह्य की वजह से) उसका मुझ पर इतना बोझ पड़ा कि मुझे अपनी रान के फट जाने का अंदेशा हो गया। आख़िर ये कैफ़ियत ख़त्म हुई और अल्लाह तआला ने ग़ैरा उलिज़्ज़रर के अल्फ़ाज़ और नाज़िल किये। (राजेअ : 2832)

या'नी जो लोग मा'ज़ूर हैं वो इस हुक्म से मुस्तष्ना हैं। इन लफ़्ज़ों के उतरने से अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) को और दूसरे मा'ज़ूर लोगों को तसल्ली हो गई कि उनका मर्तबा मुजाहिदीन से कम नहीं है। अल्बत्ता जो लोग क़ुदरत रखकर जिहाद न करें वो मुजाहिदीन का दर्जा नहीं पा सकते।

4593. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने और उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि जब आयत ला यस्तविल क़ाइदून मिनल् मोमिनीन नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) को किताबत के लिये बुलाया और उन्होंने वो आयत लिख दी। फिर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) ह़ाज़िर हुए और अपने नाबीना होने का उ़ज़्र पेश किया, तो अल्लाह तआ़ला ने ग़ैरा उलिज़् ज़रर के अल्फ़ाज़ और नाज़िल किये। (राजेअ़ : 2831)

٤٥٩٣- حَدَّثَنِي حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ دَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ زَيْدًا فَكَتَبَهَا فَجَاءَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ فَشَكَا ضَرَارَتَهُ فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾. [راجع: ٢٨٣١]

जिससे मा'ज़ूर का इस्तिष्ना हो गया। आयत में मुजाहिदीन और बैठ रहने वालों का ज़िक्र था कि वो बराबर नहीं हो सकते जो लोग मा'ज़ूर हैं वो क़ाबिले मुआ़फ़ी हैं।

4594. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत ला यस्तविल क़ाइदून मिन मोमिनीन नाज़िल हुई तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़लाँ (या'नी ज़ैद बिन ष़ाबित रज़ि.) को बुलाओ। वो अपने साथ दवात और तख़्ती या शाना की हड्डी लेकर ह़ाज़िर हुए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लिखो, ला यस्तविल् क़ाइदून मिनल् मोमिनीन वल मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाह, इब्ने मक्तूम (रज़ि.) ने जो ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पीछे मौजूद थे, अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नाबीना हूँ। चुनाँचे वहीं इस त़रह़ आयत नाज़िल हुई, ला यस्तविल् क़ाइदून मिनल् मोमिनीन ग़ैरा उलिज़् ज़रर वल् मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाह। (राजेअ़ : 2831)

٤٥٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ، قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ادْعُوا فُلاَنًا)) فَجَاءَهُ وَمَعَهُ الدَّوَاةُ وَاللَّوْحُ أَوِ الْكَتِفُ فَقَالَ: ((اكْتُبْ: ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ ﴿وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾ وَخَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنَا ضَرِيرٌ فَنَزَلَتْ مَكَانَهَا ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾. ٢٨٣١

आयत का तर्जुमा यही है कि सिवाय मा'ज़ूर लोगों के जिहाद से बैठ रहने वाले और जिहाद में शिर्कत करने वाले मोमिनीन बराबर नहीं हो सकते। मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह का दर्जा बहुत बुलन्द है।

4595. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और मुझसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने

٤٥٩٥- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَهُمْ ح

बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल करीम जुरज़ी ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन हारिष़ के ग़ुलाम मुक़्सिम ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ला यस्तविल् क़ाइदूना मिनल् मोमिनीना से इशारा है उन लोगों की त़रफ़ जो बद्र में शरीक थे और जिन्होंने बिला किसी उ़ज़्र के बद्र की लड़ाई में शिर्कत नहीं की थी, वो दोनों बराबर नहीं हो सकते। (राजेअ़ : 3954)

وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ. أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الْكَرِيمِ. أَنَّ مِقْسَمًا مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ عَنْ بَدْرٍ وَالْخَارِجُونَ إِلَى بَدْرٍ.
[راجع: ٣٩٥٤]

ये शाने नुज़ूल के ए'तिबार से है। वरना हुक्म आ़म है जो हमेशा के लिये है।

बाब 19 : आयत 'इन्नल्लज़ीन तवफ़्फ़ाहुमुल्मलाइकतु' की तफ़्सीर या'नी,

١٩ - باب

बेशक उन लोगों की जान जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म कर रखा है (जब) फ़रिश्ते क़ब्ज़ करते हैं तो उनसे कहते हैं कि तुम किस काम में थे? वो बोलेंगे हम इस मुल्क में बेबस कमज़ोर थे। फ़रिश्ते कहेंगे, कि क्या अल्लाह की सरज़मीन फ़राख़ न थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते।

﴿إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلاَئِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ؟ قَالُوا: كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الأَرْضِ قَالُوا : أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا﴾ الآيَةَ.

बावजूद त़ाक़त के जिन लोगों ने मक्का से हिजरत न की उनके बारे में ये आयत नाज़िल हुई, आगे कमज़ोरों को उससे मुस्तष़्ना कर दिया गया।

4596. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद अल मुक़री ने बयान किया, कहा हमसे हैवा बिन शुरैह वग़ैरह (इब्ने लुह्य) ने बयान किया, कहा कि हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान अबुल अस्वद ने बयान किया, कहा कि अहले मदीना को (जब मक्का में इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त का दौर था) शाम वालों के ख़िलाफ़ एक फ़ौज निकालने का हुक्म दिया गया। उस फ़ौज में मेरा नाम भी लिखा गया तो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के ग़ुलाम इक्रिमा से मैं मिला और उन्हें इस सूरतेहाल की ख़बर दी। उन्होंने बड़ी सख़्ती के साथ इससे मना किया और फ़र्माया, कि मुझे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी थी कि कुछ मुसलमान मुश्रिकीन के साथ रहते थे और इस त़रह रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़िलाफ़ उनकी ज़्यादती का सबब बनते, फिर तीर आता और वो सामने पड़ जाते तो उन्हें लग जाता और इस त़रह उनकी जान जाती या तलवार से (ग़लती में) उन्हे क़त्ल कर दिया जाता। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई, बेशक उन लोगों की जान जिन्होंने

٤٥٩٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِيءُ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ وَغَيْرُهُ قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمنِ أَبُو الأَسْوَدِ. قَالَ قُطِعَ عَلَى أَهْلِ الْمَدِينَةِ بَعْثٌ فَاكْتُتِبْتُ فِيهِ فَلَقِيتُ عِكْرِمَةَ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَأَخْبَرْتُهُ فَنَهَانِي عَنْ ذَلِكَ أَشَدَّ النَّهْيِ ثُمَّ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ أَنَّ نَاسًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ كَانُوا مَعَ الْمُشْرِكِينَ يُكَثِّرُونَ سَوَادَ الْمُشْرِكِينَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ يَأْتِي السَّهْمُ فَيُرْمَى بِهِ فَيُصِيبُ أَحَدَهُمْ فَيَقْتُلُهُ أَوْ يُضْرَبُ فَيُقْتَلُ فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿إِنَّ الَّذِينَ

अपने ऊपर ज़ुल्म कर रखा है, (जब) फ़रिश्ते क़ब्ज़ करते हैं, आख़िर आयत तक। इस रिवायत को लैष़ बिन सअ़द ने भी अबुल अस्वद से नक़्ल किया है। (दीगर मक़ाम : 7085)

تَوَفَّاهُمُ الْمَلاَئِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ﴾ الآيَةَ. رَوَاهُ اللَّيْثُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ.

[طرفه في : ٧٠٨٥].

इससे मा'लूम होता है कि इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी मुसलमान के लिये दुश्मनों की फ़ौज में भर्ती होना जाइज़ नहीं है।

बाब 20 : आयत 'इल्लल्मुस्तज़्अफ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसाइ' की तफ़्सीर या'नी,

सिवाय उन लोगों के जो मर्दों और औरतों और बच्चों में से कमज़ोर है कि न कोई तदबीर ही कर सकते हैं और न कोई राह पाते हैं कि हिजरत कर सकें।

٢٠- باب

﴿إِلاَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لاَ يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلاَ يَهْتَدُونَ سَبِيلاً﴾

4597. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने इल्लल मुस्तज़्अफ़ीन के बारे में फ़र्माया कि मेरी माँ भी उन ही लोगों में से थीं जिन्हें अल्लाह ने मा'ज़ूर रखा था। (राजेअ़ : 1357)

٤٥٩٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿إِلاَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ﴾ قَالَ: كَانَتْ أُمِّي مِمَّنْ عذر الله. [راجع: ١٣٥٧]

शुरू इस्लाम में मक्का से हिजरत करके मदीना पहुँचना ज़रूरी क़रार दिया गया था। कुछ कमज़ोर लोग हिजरत न कर सके और मक्का ही में मुसीबतों की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे।

बाब 21 : आयत 'फ़अ़सल्लाहु अंय्यअ़फुव अ़न्हुम'

अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी, तो ये लोग ऐसे हैं कि अल्लाह इन्हें मुआ़फ़ कर देगा और अल्लाह तो बड़ा ही मुआ़फ़ करने वाला और बख़्श देने वाला हैं।

٢١- باب قَوْلِهِ : ﴿فَأُولَئِكَ عَسَى اللهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ وَكَانَ اللهُ عَفُوًّا غَفُورًا﴾ الآيَةَ.

आयत का ता'ल्लुक़ पीछे वाले मज़्मून ही से है।

4598. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शैबान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने इशा की नमाज़ में (रूकूअ़ से उठते हुए) समिअ़ल्लाहुलिमन हमिदा कहा और फिर सज्दे में जाने से पहले ये दुआ़ की। ऐ अल्लाह! अयाश बिन अबी रबीआ़ को नजात दे। ऐ अल्लाह! सलमा बिन हिशाम को नजात दे। ऐ अल्लाह! वलीद बिन वलीद को नजात दे। ऐ अल्लाह! कमज़ोर मोमिनों को नजात द। ऐ अल्लाह! कुफ़्फ़ारे मज़र को सख़्त सज़ा दे। ऐ अल्लाह! उन्हें

٤٥٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى. عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله تعالى عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي الْعِشَاءَ إِذْ قَالَ: ((سمع الله لمن حمدهُ)) ثُمَّ قَالَ قَبْلَ أَنْ يَسْجُدَ : ((اللَّهُمَّ نَجِّ عَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ. اللَّهُمَّ نَجِّ سَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ. اللَّهُمَّ نَجِّ الْوَلِيدَ بْنَ الْوَلِيدِ. اللَّهُمَّ نَجِّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ.

ऐसी क़हतसाली में मुब्तला कर जैसी हज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) के ज़माने में क़हतसाली आई थी। (राजेअ : 797)

اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ، اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ)) [راجع: ٧٩٧]

आँहज़रत (ﷺ) की दुआ कमज़ोर मुसलमानों के लिये थी जो मक्का में फंसे रह गये थे। मुज़र क़बीला के लिये बद्दुआ इस वास्ते की कि उन्होंने मुसलमानों को ख़ास तौर पर सख़्त नुक़्सान पहुँचाया था। इससे मा'लूम हुआ कि जो काफ़िर मुसलमानों को सताएँ इन पर क़हत और बीमारी की बद्दुआ करना दुरुस्त है।

बाब 22 : आयत 'व ला जुनाह अलैकुम इन कान बिकुम अज़न' अल्ख़

٢٢- باب قوله

या'नी, और तुम्हारे लिये उसमें कोई हर्ज नहीं कि अगर तुम्हें बारिश से तकलीफ़ हो रही हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतारकर रख दो।

﴿وَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ﴾

4599. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हज्जाज बिन मुहम्मद अअ़वर ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्हें यअ़ला बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने आयत, इन् कान बिकुम अज़न मिम् मतर औ कुन्तुम मरज़ा के सिलसिले में बतलाया कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ज़ख़्मी हो गये थे, उनके बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

٤٥٩٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا حَجَّاجٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي يَعْلَى عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: ﴿إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَى﴾ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ كَانَ جَرِيحًا.

तश्रीह : आयत में मुजाहिदीन को ताकीद की गई है कि वो किसी वक़्त भी ग़फ़लतज़दा न हों। हर वक़्त हथियारबन्द होकर रहें हाँ किसी वक़्त कोई तकलीफ़ लाहक़ हो जाए तो उस हालत में हथियारों को उतारकर रख देना जाइज़ है। ये सिर्फ़ क़ुर्आनी हिदायत ही नहीं बल्कि अक़्वामे आलम की फ़ौजों का एक बेहद ज़रूरी ज़ाब्ता है।

बाब 23 : आयत 'व यस्तफ़्तूनक फ़िन्निसाइ' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

٢٣- باب قَوْلِهِ :

लोग आपसे औरतों के बारे में मसला मा'लूम करते हैं, आप कह दें कि अल्लाह तुम्हें औरतों की बाबत हुक्म देता है और वो हुक्म वही है जो तुमको क़ुर्आन मजीद में उन यतीम लड़कियों के हक़ में सुनाया जाता है जिनको तुम पूरा हक़ नहीं देते।

﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ﴾

4600. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा बिन हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने

٤٦٠٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالَ : حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ

عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ﴾ قَالَتْ عَائِشَةُ: هُوَ الرَّجُلُ تَكُونُ عِنْدَهُ الْيَتِيمَةُ هُوَ وَلِيُّهَا وَوَارِثُهَا فَأَشْرَكَتْهُ فِي مَالِهِ حَتَّى فِي الْعَذْقِ فَيَرْغَبُ أَنْ يَنْكِحَهَا وَيَكْرَهُ أَنْ يُزَوِّجَهَا رَجُلاً فَيَشْرَكُهُ فِي مَالِهِ بِمَا شَرِكَتْهُ. فَيَعْضُلُهَا. فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ.

[راجع: ٢٤٩٤]

और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने आयत, लोग आपसे औरतों के बारे में फ़त्वा मांगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह तुम्हें उनके बारे में (वही) फ़त्वा देता है। आयत, व तरग़बूना अन तन्किहुहुन्ना तक। उन्होंने बयान किया कि ये आयत ऐसे शख़्स के बारे में नाज़िल हुई कि अगर उसकी परवरिश में कोई यतीम लड़की हो और वो उसका वली और वारिष़ भी हो और लड़की उसके माल में भी ह़िस्सेदार हो। यहाँ तक कि खजूर के पेड़ में भी। अब वो शख़्स ख़ुद उस लड़की से निकाह़ करना चाहे, क्योंकि उसे ये पसन्द नहीं कि किसी दूसरे से उसका निकाह़ कर दे कि वोउसके इस माल में ह़िस्सेदार बन जाए, जिसमें लड़की ह़िस्सेदार थी, इस वजह से उस लड़की का किसी दूसरे शख़्स से वो निकाह़ न होने दे तो ऐसे शख़्स के बारे में ये आयत नाज़िल हुई थी। (राजेअ : 2494)

तश्रीह : वो शख़्स ख़ुद भी वाजिबी मह्र पर उस लड़की से निकाह़ न करे बल्कि मह्र कम देना चाहे तो ऐसे निकाह़ से अल्लाह ने मना फ़र्माया और ये हुक्म दिया कि अगर तुम पूरे पूरे मह्र पर इससे निकाह़ करना न चाहो तो दूसरे शख़्स से उसे निकाह़ करने से मना न करो। कहते हैं कि ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) की एक चचेरी बहन थी, बदसूरत। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ख़ुद उससे निकाह़ करना नहीं चाहते थे और माल अस्बाब के ख़्याल से ये भी नहीं चाहते थे कि कोई दूसरा शख़्स उससे निकाह़ करे क्योंकि वो उसके माल का दा'वा करेगा। उस वक़्त ये आयत नाज़िल हुई। आयत से साफ़ ज़ाहिर है कि सिन्फ़े नाज़ुक का किसी भी क़िस्म का नुक़्सान शरीअ़त में सख़्त नापसंद है।

٢٤- باب قوله: ﴿وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا﴾

बाब 24 : आयत 'व इन इम्रातुन ख़ाफ़त मिम्बअ़लिहा' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ شِقَاقٌ: تَفَاسُدٌ. ﴿وَأُحْضِرَتِ الأَنْفُسُ الشُّحَّ﴾ هَوَاهُ فِي الشَّيْءِ يَحْرِصُ عَلَيْهِ. ﴿كَالْمُعَلَّقَةِ﴾ لاَ هِيَ أَيِّمٌ وَلاَ ذَاتُ زَوْجٍ ﴿نُشُوزًا﴾: بُغْضًا.

और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से ज़ुल्म ज़्यादती या बेरग़बती का डर हो तो उनको बाहमी सुलह़ कर लेने में कोई गुनाह नहीं क्योंकि सुलह़ बेहतर है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा (आयत में) शिक़ाक़ के मा'नी फ़साद और झगड़ा है। वउह़्ज़िरतिल अन्फ़ुसुश्शुह़्ह हर नफ़्स को अपने फ़ायदे का लालच होता है। कल् मुअ़ल्लक़ति या'नी न तो वो बेवा रहे और न शौहर वाली हो। नुशूज़ा बुग़्ज़ अ़दावत के मा'नी में है।

٤٦٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ﴿وَإِنِ

4601. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने आयत, और किसी औरत को अपने

امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا﴾ قَالَتْ: الرَّجُلُ تَكُونُ عِنْدَهُ الْمَرْأَةُ لَيْسَ بِمُسْتَكْثِرٍ مِنْهَا يُرِيدُ أَنْ يُفَارِقَهَا فَتَقُولُ: أَجْعَلُكَ مِنْ شَأْنِي فِي حِلٍّ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ فِي ذَلِكَ.

[راجع: ٢٤٥٠]

शौहर की त़रफ़ से ज़्यादती या बेरग़बती का डर हो, के बारे में कहा कि ऐसा मर्द जिसके साथ उसकी बीवी रहती है, लेकिन शौहर को उसकी त़रफ़ कोई ख़ास़ तवज्जह नहीं, बल्कि वो उसे जुदा कर देना चाहता है। उस पर औरत कहती हैं कि मैं अपनी बारी और अपना (नान व नफ़्क़ा) मुआफ़ कर देती हूँ (तुम मुझे त़लाक़ न दो) तो ऐसी स़ूरत के बारे में ये आयत इसी बाब में उतरी। (राजेअ: 2450)

मियाँ बीवी अगर सुलह़ करके कोई बात ठहरा लें तो उसमें कोई क़बाह़त नहीं है। मष़लन बीवी अपनी बारी मुआफ़ कर दे या और कोई बात पड़ जाए।

٢٥- باب قوله ﴿إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الأَسْفَلِ﴾

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : أَسْفَلِ النَّارِ. نَفَقًا : سَرَبًا.

बाब 25 : आयत 'इन्नल्मुनाफ़िक़ीन फ़िद्दर्किल्अस्फ़लि' की तफ़्सीर या'नी,

बिला शक मुनाफ़िक़ीन दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अद् दरकल अस्फ़ल से मुराद जहन्नम का सबसे निचला दर्जा है और सूरह अन्आम में नफ़क़ा बमा'नी सरबा या'नी सुरंग मुराद है।

तश्रीह़ : इसको इब्ने अबी ह़ातिम (रज़ि.) ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से वस्ल किया है। इस तफ़्सीर को इमाम बुख़ारी (रह.) यहाँ इसलिये लाए कि मुनाफ़िक़ और नफ़्क़ का माद्दा एक ही है। दोज़ख़ के सात त़ब्के हैं जहन्नम, वैल, हु़त्मा, सई़र, सक़र, जह़ीम और हाविया। पस मुनाफ़िक़ दरके अस्फ़ल या'नी हाविया में होंगे। वो दोज़ख़ की तह में आगे के संदूक़ों में होंगे जो उन पर दहकते होंगे। (इब्ने जरीर)

٤٦٠٢- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ : كُنَّا فِي حَلْقَةِ عَبْدِ اللهِ، فَجَاءَ حُذَيْفَةُ حَتَّى قَامَ عَلَيْنَا فَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ : لَقَدْ أُنْزِلَ النِّفَاقُ عَلَى قَوْمٍ خَيْرٍ مِنْكُمْ، قَالَ الأَسْوَدُ : سُبْحَانَ اللهِ إِنَّ اللهَ يَقُولُ ﴿إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ﴾ فَتَبَسَّمَ عَبْدُ اللهِ وَجَلَسَ حُذَيْفَةُ فِي نَاحِيَةِ الْمَسْجِدِ فَقَامَ عَبْدُ اللهِ فَتَفَرَّقَ أَصْحَابُهُ فَرَمَانِي بِالْحَصَا

4602. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा उनसे उनके बाप ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अस्वद ने बयान किया कि हम ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के ह़ल्क़-ए-दर्स में बैठे हुए थे कि ह़ज़रत हु़ज़ैफ़ा (रज़ि.) तशरीफ़ लाए और हमारे पास खड़े होकर सलाम किया। फिर कहा निफ़ाक़ में वो जमाअ़त मुब्तला हो गई जो तुमसे बेहतर थी। उस पर अस्वद बोले, सुब्ह़ानल्लाह, अल्लाह तआ़ला तो फ़र्माता है कि, मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे निचले दर्जे में होंगे। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) मुस्कुराने लगे और हु़ज़ैफ़ह (रज़ि.) मस्जिद के कोने में जाकर बैठ गये। उसके बाद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) उठ गये और आपके शागिर्द भी इधर उधर चले गये, फिर हु़ज़ैफ़ा (रज़ि.) ने मुझ पर कंकरी फेंकी (या'नी मुझको बुलाया) मैं ह़ाज़िर हो गया तो

فَاتَيْتُهُ فَقَالَ حُذَيْفَةُ : عَجِبْتُ مِنْ ضِحْكِهِ، وَقَدْ عَرَفَ مَا قُلْتُ لَقَدْ أُنْزِلَ النِّفَاقُ عَلَى قَوْمٍ كَانُوا خَيْرًا مِنْكُمْ ثُمَّ تَابُوا فَتَابَ اللهُ عَلَيْهِمْ.

कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की हंसी पर हैरत हुई हालाँकि जो कुछ मैंने कहा था उसे वो ख़ूब समझते थे। यक़ीनन निफ़ाक़ में एक जमाअ़त को मुब्तला किया गया था जो तुमसे बेहतर थी, इसलिये कि फिर उन्होंने तौबा कर ली और अल्लाह ने भी उनकी तौबा क़ुबूल कर ली।

अस्वद को ये तअ़ज्जुब हुआ कि भला मुनाफ़िक़ लोग हम मुसलमानों से क्यूँकर बेहतर हो सकते हैं। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) का मत़लब ये था कि वो लोग तुमसे बेहतर थे या'नी स़ह़ाबा (रज़ि.) के क़र्न में थे। तुम ताबेईन के क़र्न में हो। वो निफ़ाक़ की वजह से ख़राब हो गये, दीन से फिर गये, मगर वो लोग जिन्होंने तौबा की वो अल्लाह के नज़दीक मक़बूल हो गये।

٢٦- باب قَوْلُهُ

﴿إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ إِلَى قَوْلِهِ - وَيُونُس وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ﴾.

बाब 26 : आयत 'इन्ना औहैना इलैक' अल् अख़् की तफ़्सीर या'नी,

यक़ीनन मैंने आपकी त़रफ़ वह़्य भेजी ऐसी ही वह़्य जैसी मैंने ह़ज़रत नूह़ और उनके बाद वाले नबियों की त़रफ़ भेजी थी और यूनुस और हारून और सुलैमान पर, आख़िर आयत तक।

٤٦٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى)). [راجع: ٣٤١٢]

4603. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी के लिये मुनासिब नहीं कि मुझे यूनुस बिन मत्ता से बेहतर कहे। (राजेअ़ :3412)

आयत के मुत़ाबिक़ ह़दीष़ में भी ह़ज़रत यूनुस का ज़िक्र है यही वजहे मुत़ाबक़त है।

٤٦٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ، حَدَّثَنَا هِلاَلٌ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى فَقَدْ كَذَبَ)). [راجع: ٢٤١٥]

4604. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुलेह़ ने बयान किया, उनसे हिलाल ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स ये कहता है कि मैं ह़ज़रत यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ उसने झूठ कहा। (राजेअ़ : 2415)

ये आपकी कमाले तवाज़ुअ़ और कस्रे नफ़्सी और अख़्लाक़ की बात है वरना अल्लाह ने आपको सब अंबिया पर फ़ौक़ियत अ़ता फ़र्माई। ला शक फ़ीहि.

٢٧- باب

﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلاَلَةِ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ

बाब 27 : आयत 'यस्तफ़्तूनक क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम फ़िल्कलालति' अल् अख़् की तफ़्सीर या'नी,

लोग आपसे कलाला के बारे में फ़त्वा पूछते हैं, आप कह दें कि

فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ﴾ وَالْكَلَالَةُ : مَنْ لَمْ يَرِثْهُ أَبٌ أَوِ ابْنٌ وَهُوَ مَصْدَرٌ مِنْ تَكَلَّلَهُ النَّسَبُ.

अल्लाह तुम्हें ख़ुद कलाला के बारे में हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा शख़्स मर जाए कि उसके कोई औलाद न हो और उसके एक बहन हो तो उससे बहन को उसके तर्के का आधा मिलेगा और वो मर्द वारिष़ होगा उस (बहन के कुल तर्का) का अगर उस बहन के कोई औलाद न हो।

फिर अगर दो बहनें हों तो उनको दो तिहाई तर्का से मिलेंगे और अगर इस कलाला की कई बहन भाई मर्द औरत वारिष़ हों तो मर्द को औरत से दोगुना हिस्सा मिलेगा और कलाला उसे कहते हैं जिसके वारिष़ों में न बाप हो न बेटा। ये लफ़्ज़ मस़दर है और तकल्लाहुन नसब से निकला है। या'नी नसब ने उसे कलाला (ला वारिष़) बना दिया।

٤٦٠٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ : آخِرُ سُورَةٍ نَزَلَتْ بَرَاءَةٌ وَآخِرُ آيَةٍ نَزَلَتْ: ﴿يَسْتَفْتُونَكَ﴾ قل الله يفتيكم في الكلالة

[راجع: ٤٣٦٤]

4605. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने और उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि सबसे आख़िर में जो सूरत नाज़िल हुई वो सूरह बरात है और (अह़कामे मीराष़ के सिलसिले में) सबसे आख़िर में जो आयत नाज़िल हुई वो, यस्तफ़्तुनका क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम फ़िल् कलालति है।

(राजेअ: 4364)

तशरीह : मत़लब ये कि मसाइले मीराष़ के बारे में ये आख़िरी आयत है। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं कि मैं बीमार था, रसूले करीम (ﷺ) मेरे पास तशरीफ़ लाए, मुझे बेहोश पाया। आपने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ पर डाला तो मैं होश में आ गया। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं कलाला हूँ (जिसके न माँ बाप हों न बेटा बेटी) मेरा तर्का क्यूँ कर तक़्सीम होगा। उस वक़्त ये आयत उतरी (कलाला के मा'नी हारा ज़ईफ़) यहाँ फ़र्माया उसको जिसके वारिष़ों में बाप और बेटा नहीं कि अस़ल वारिष़ वही थे तो उस वक़्त सगे भाई बहन को बेटा बेटी का हुक्म है। सगे न हों तो यही हुक्म सौतेले का है। सिर्फ़ एक बहन को आधा और दो को दो तिहाई और भाई बहन मिले हों तो मर्द को दोहरा हिस्सा मिलेगा औरत को इकहरा, जो सिर्फ़ भाई हों तो उनको फ़र्माया कि वो बहन के वारिष़ होंगे या'नी हिस्सा मुअय्यन नहीं वो अ़स़बा हैं।

सूरह माइदह की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

﴿حُرُمٌ﴾ وَاحِدُهَا حَرَامٌ ﴿فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ﴾ بِنَقْضِهِمْ ﴿الَّتِي كَتَبَ اللهُ﴾ جَعَلَ اللهُ ﴿تَبُوءَ﴾ تَحْمِلَ ﴿دَائِرَةٌ﴾ دَوْلَةٌ وَقَالَ غَيْرُهُ: الإِغْرَاءُ : التَّسْلِيطُ. أُجُورَهُنَّ مُهُورَهُنَّ. الْمُهَيْمِنُ: الأَمِينُ الْقُرْآنُ أَمِينٌ عَلَى كُلِّ كِتَابٍ قَبْلَهُ، قَالَ سُفْيَانُ : مَا فِي الْقُرْآنِ آيَةٌ أَشَدُّ عَلَيَّ مِنْ ﴿لَسْتُمْ عَلَى

हुरूमन ह़रामा की जमा है (या'नी अह़राम बाँधे हुए हो) फ़बिमा नक़्ज़िहिम मीष़ाक़हुम से ये मुराद है कि अल्लाह ने जो हुक्म उनको दिया था कि बैतुल मक़्दिस में दाख़िल हो जाओ वो नहीं बजा लाए। तबूआ बिइष्मी या'नी तू मेरा गुनाह उठा लेगा। दाइरा के मा'नी ज़माना की गर्दिश और दूसरे लोगों ने कहा अग़्रा का मा'नी मुसल्लत़ करना, डाल देना। उजूरहुन्ना या'नी उनके मह्र अल् मुहैमिन का मा'नी अमानतदार (निगाहबान) क़ुर्आन गोया अगली आसमानी किताबों का मुह़ाफ़िज़ है। सुफ़यान ष़ौरी ने कहा सारे क़ुर्आन में इससे ज़्यादा कोई आयत मुझ पर

सख़्त नहीं है वो आयत ये है, लस्तुम अ़ला शैइन हत्ता तुक़ीमुत्तौरात वल्इन्ज़ील (क्योंकि इस आयत में ये है कि जब तक कोई अल्लाह की किताब के मुवाफ़िक़ सब हुक्मों पर मज़बूती से अ़मल न करे, उस वक़्त तक दीन व ईमान लायक़े ए'तिबार नहीं है) मख़्मसति के मा'नी भूख। मन अह़्याहा या'नी जिसने नाहक़ आदमी का ख़ून करना ह़राम समझा गोया सब आदमी उसकी वजह से ज़िन्दा रहे। शिर्अतन व मिन्हाजा से रास्ता और त़रीक़ा मुराद है।

شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَاةَ وَالإِنْجِيلَ﴾ مَخْمَصَةٌ : مَجَاعَةٌ، مَنْ أَحْيَاهَا: عُثِرَ ظَهَرَ، الأَوْلَيَانِ: وَاحِدُهُمَا أَوْلَى.

बाब 2 : आयत 'अल्यौम अक्मल्तु लकुम दीनकुम' अल् अख़् की तफ़्सीर,

या'नी आज मैंने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मख़्मसति से भूख मुराद है।

٢- باب قوله ﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ مَخْمَصَةٌ : مَجَاعَةٌ.

तश्रीह़ : इस आयत ने दीने कामिल की जो तस्वीर पेश की है और जिस वक़्त की है उस वक़्त मुसलमानों में फ़िर्क़ा बन्दी नहीं थी, न ये तक़्लीदी मज़ाहिब थे। न चार मुसल्लों और चार इमामों पर उम्मत की तक़्सीम हुई थी। ये दीन कामिल था मगर बाद में तक़्लीदे जामिद की बीमारी ने मुसलमानों को टुकड़े-टुकड़े करके दीने कामिल को मस्ख़ करके रख दिया और आज जो ह़ाल है वो ज़ाहिर है कि इमामों और मुज्तहिदों के नामों पर उम्मत की तक़्सीम किस ख़तरनाक ह़द तक पहुँच चुकी है। ज़रूरत है कि बेदार मग़्ज़ मुसलमान खड़े हों और तक़्लीदी दीवारों को तोड़कर उम्मत की शीराज़ा बन्दी करें। फ़लाह़े दारैन का सिर्फ़ यही एक रास्ता है, सच कहा है,

फहरब अनित्तक़्लीदि फइन्नहू ज़लालतुन — इन्नल्मुक़ल्लिद फ़ी सबीलिल्हलाकि

4606. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन असलम ने और उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने कि यहूदियों ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा कि आप लोग एक ऐसी आयत की तिलावत करते हैं कि अगर हमारे यहाँ वो नाज़िल हुई होती तो हम (जिस दिन वो नाज़िल हुई होती) उस दिन ईद मनाया करते। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा, मैं ख़ूब अच्छी त़रह जानता हूँ कि ये आयत अल्यौमा अक्मल्तु लकुम दीनकुम कहाँ और कब नाज़िल हुई थी और जब अ़रफ़ात के दिन नाज़िल हुई तो हुज़ूर (ﷺ) कहाँ तशरीफ़ रखते थे। अल्लाह की क़सम! हम उस वक़्त मैदाने अ़रफ़ात में थे। सुफ़यान ष़ौरी ने कहा कि मुझे शक है कि वो जुम्आ का दिन था या और कोई दूसरा दिन। (राजेअ़ : 45)

٤٦٠٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، قَالَتِ الْيَهُودُ: لِعُمَرَ إِنَّكُمْ تَقْرَؤُونَ آيَةً لَوْ نَزَلَتْ فِينَا لاتَّخَذْنَاهَا عِيدًا فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي لأَعْلَمُ حَيْثُ أُنْزِلَتْ وَأَيْنَ أُنْزِلَتْ وَأَيْنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أُنْزِلَتْ يَوْمَ عَرَفَةَ وَإِنَّا وَاللهِ بِعَرَفَةَ، قَالَ سُفْيَانُ : وَأَشُكُّ كَانَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَمْ لاَ ﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ﴾.[راجع: ٤٥]

तशरीह : क़ैस बिन मुस्लिम की दूसरी रिवायत में बिल यक़ीन मज़्कूर है कि वो जुम्आ ही का दिन था। ये आयत हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर नाज़िल हुई थी जो पैग़म्बर (ﷺ) का आख़िरी हज्ज था जिसके तीन माह बाद आप (ﷺ) दुनिया से तशरीफ़ ले गये। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ये आयत अरफ़ा की शाम को जुम्अे के रोज़ उतरी थी। उसके बाद हलाल हराम का कोई हुक्म नहीं उतरा। आप (ﷺ) की वफ़ात से नौ रात पहले आख़िरी आयत **वत्तक़ू यौमन तुरजऊना फ़ीही इलल्लाह** नाज़िल हुई जिस दिन ये आयत उतरी उस दिन पाँच ईदें जमा थीं। जुम्अे का दिन, अरफ़ा का दिन, यहूद की ईद, नसारा की ईद, मजूस की ईद। इस आयत से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो राय और क़यास पर चलते हैं और नस को छोड़ते हैं गोया उनके नज़दीक दीन कामिल नहीं हुआ। नऊज़ुबिल्लाह।

बाब 3 : आयत 'फलम् तजिदू माअन फतयम्ममू सइदन तय्यिबा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قَوْلِهِ :

﴿فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا﴾ تَيَمَّمُوا تَعَمَّدُوا. آمِّينَ عَامِدِينَ أَمَّمْتُ وَتَيَمَّمْتُ وَاحِدٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَسْتُمْ وَتَمَسُّوهُنَّ وَاللاَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ، وَالإِفْضَاءُ : النِّكَاحُ.

फिर अगर तुमको पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो, तयम्ममू या'नी तअम्मदु इसीलिये आता है या'नी क़स्द करो आमीन या'नी आमिदीन क़स्द करने वाले अम्ममतु और तयम्ममतु एक ही मा'नी में है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि लमस्तुम, तम्सूहुन्ना, वल्लाती दख़लतुम बिहिन्ना और वल् इफ़्ज़ाऊ सबके मा'नी औरत से हमबिस्तरी करने के हैं।

٤٦٠٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِي فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَأَتَى النَّاسُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَجَاءَ أَبُوبَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي قَدْ نَامَ فَقَالَ : حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ

4607. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र मे हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम मुक़ामे बैदा या ज़ातुल जैश तक पहुँचे तो मेरा हार गुम हो गया। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे तलाश करवाने के लिये वहीं क़याम किया और सहाबा (रज़ि.) ने भी आप (ﷺ) के साथ क़याम किया। वहाँ कहीं पानी नहीं था और सहाबा (रज़ि.) के साथ भी पानी नहीं था। लोग अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आए और कहने लगे कि, मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या कर रखा है और हुज़ूर (ﷺ) को यहीं ठहरा लिया और हमें भी, हालाँकि यहाँ कहीं पानी नहीं है और न किसी के पास पानी है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) (मेरे यहाँ) आए। हुज़ूर (ﷺ) सरे मुबारक मेरी रान पर रखकर सो गये थे और कहने लगे तुमने आँहज़रत (ﷺ) को और सबको रोक लिया, हालाँकि यहाँ कहीं पानी नहीं है। और न ही किसी के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि

مَاءٌ قَالَتْ عَائِشَةُ : فَعَاتَبَنِي أَبُو بَكْرٍ، وَقَالَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ: وَجَعَلَ يَطْعَنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي وَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِي فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ قَالَتْ: فَبَعَثْنَا الْبَعِيرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ فَإِذَا الْعِقْدُ تَحْتَهُ. [راجع: ٣٣٤]

अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) मुझ पर बहुत ख़फ़ा हुए और जो अल्लाह को मंज़ूर था मुझे कहा सुना और हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाए। मैंने सिर्फ़ इस ख़्याल से कोई हरकत नहीं की कि आँहज़रत (ﷺ) मेरी रान पर अपना सर रखे हुए थे, फिर हुज़ूर (ﷺ) उठे और सुबह तक कहीं पानी का नाम व निशान नहीं था, फिर अल्लाह तआला ने तयम्मुम की आयत उतारी तो उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि आले अबीबक्र! ये तुम्हारी कोई पहली बरकत नहीं है। बयान किया कि फिर हमने वो ऊँट उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे मिल गया। (राजेअ : 334)

तश्रीह : हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) का मतलब ये था कि तुम्हारी वजह से बहुत सी आयात व अहकाम का नज़ूल हुआ है जैसा कि ये आयते तयम्मुम मौजूद है जो तुम्हारी मौजूदा परेशानी की बरकत में नाज़िल हुई, इससे हज़रत आइशा (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत षाबित होती है। तयम्मुम का राजेह तरीक़ यही है कि पाक मिट्टी पर दोनों हाथों को मारकर उनको चेहरे और हथेलियों पर फेर लिया जाए। उसके लिये एक ही दफ़ा हाथ मार लेना काफ़ी है। बुख़ारी शरीफ़ में ऐसा ही है।

٤٦٠٨ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا سَقَطَتْ قِلاَدَةٌ لِي بِالْبَيْدَاءِ، وَنَحْنُ دَاخِلُونَ الْمَدِينَةَ، فَأَنَاخَ النَّبِيُّ ﷺ وَنَزَلَ فَثَنَى رَأْسَهُ فِي حِجْرِي رَاقِدًا أَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ فَلَكَزَنِي لَكْزَةً شَدِيدَةً وَقَالَ: حَبَسْتِ النَّاسَ فِي قِلاَدَةٍ فَبِي الْمَوْتُ لِمَكَانِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَقَدْ أَوْجَعَنِي ثُمَّ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ اسْتَيْقَظَ وَحَضَرَتِ الصُّبْحُ فَالْتُمِسَ الْمَاءُ فَلَمْ يُوجَدْ فَنَزَلَتْ : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلاَةِ﴾ الآيَةَ. فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ لَقَدْ بَارَكَ اللهُ لِلنَّاسِ فِيكُمْ يَا آلَ

4608. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़म्र बिन हारिष़ ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद क़ासिम ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि मेरा हार मुक़ामे बैदा में गुम हो गया था। हम मदीना वापस आ रहे थे, नबी करीम (ﷺ) ने वहीं अपनी सवारी रोक दी और उतर गये, फिर हुज़ूर (ﷺ) सरे मुबारक मेरी गोद में रखकर सो रहे थे कि अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आ गये और मेरे सीने पर ज़ोर से हाथ मारकर फ़र्माया कि एक हार के लिये तुमने हुज़ूर (ﷺ) को रोक लिया लेकिन हुज़ूर (ﷺ) के आराम के ख़्याल से मैं बेहिस व हरकत बैठी रही हालाँकि मुझे तकलीफ़ हुई थी, फिर हुज़ूर (ﷺ) बेदार हुए और सुबह का वक़्त हुआ और पानी की तलाश हुई लेकिन कहीं पानी का नामोनिशान न था। उसी वक़्त ये आयत नाज़िल हुई, या अय्युहल्लज़ीन आमनू इज़ा क़ुम्तुम इलस्सलाति अल् अख़्। उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा, ऐ आले अबीबक्र! तुम्हें अल्लाह तआला ने लोगों के लिये बाइषे बरकत बनाया है। यक़ीनन तुम लोगों के लिये बाइषे बरकत हो। तुम्हारा हार गुम हुआ

أَبِي بَكْرٍ مَا أَنْتُمْ إِلاَّ بَرَكَةٌ لَهُمْ.
[راجع: ٣٣٤]

अल्लाह ने उसकी वजह से तयम्मुम की आयत नाज़िल कर दी जो क़यामत तक मुसलमानों के लिये आसानी और बकरत है। अ़ला हाज़ल् क़यास। (राजेअ़ : 334)

٤- باب قَوْلِهِ : ﴿فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلاَ إِنَّا هَهُنَا قَاعِدُونَ﴾

बाब 4 : आयत 'फ़ज्हब अन्त व रब्बुक फक़ातिला' अल् अख़ की तफ़्सीर या'नी,

सो आप ख़ु द और आपका रब जिहाद करने चले जाओ और आप दोनों ही लड़ो–भिड़ो। हम तो इस जगह बैठे रहेंगे।

ये यहूदियों ने ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से उस वक़्त कहा था, जब ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने उनको अर्ज़े मौऊ़दा में दुश्मनों से लड़ने का हुक्म दिया। उन्होंने जवाब में ये कहा जो आयात में मज़्कूर है। तौरात में है कि बनी इस्राईल जंग की दहशत से इस क़दर बे-ताक़त हो गये थे कि वो रोकर कहने लगे या अल्लाह! तू ने हमको मिस्र की सरज़मीन से क्यूँ निकाला था। इस पर हुक्म हुआ किये लोग चालीस साल तक जज़ीरानुमा सीना ही के स़ह्रा (रेगिस्तान) में पड़े रहेंगे।

٤٦٠٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ مُخَارِقٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْتُ مِنَ الْمِقْدَادِ ح وَحَدَّثَنِي حَمْدَانُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا الأَشْجَعِيُّ، عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُخَارِقٍ، عَنْ طَارِقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ الْمِقْدَادُ يَوْمَ بَدْرٍ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا لاَ نَقُولُ لَكَ كَمَا قَالَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ لِمُوسَى فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلاَ إِنَّا هَهُنَا قَاعِدُونَ وَلَكِنِ امْضِ وَنَحْنُ مَعَكَ فَكَأَنَّهُ سُرِّيَ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَرَوَاهُ وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ مُخَارِقٍ، عَنْ طَارِقٍ، أَنَّ الْمِقْدَادَ قَالَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.
[راجع: ٣٩٥٢]

4609. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे मुख़ारिक़ ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने और उन्होंने ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं ह़ज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) के क़रीब मौजूद था (दूसरी सनद) और तुझसे ह़म्दान बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अबुन् नज़्र (ह़ाशिम बिन क़ासिम) ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान अश्जई ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे मुख़ारिक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे बद्र के मौक़े पर मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) ने कहा था, या रसूलल्लाह! हम आपसे वो बात नहीं कहेंगे जो बनी इस्राईल ने मूसा (अ़लैहि.) से कही थी कि, आप ख़ुद और आपके अल्लाह चले जाएँ और आप दोनों लड़ भिड़ लें। हम तो यहाँ से टलने के नहीं। नहीं आप चलिये, हम आपके साथ जान देने को ह़ाज़िर हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) को उनकी इस बात से ख़ुशी हुई। इस ह़दीष़ को वकीअ़ ने भी सुफ़यान ष़ौरी से, उन्होंने मुख़ारिक़ से, उन्होंने त़ारिक़ से रिवायत किया है कि मिक़्दाद (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये अ़र्ज़ किया (जो ऊपर बयान हुआ) (राजेअ़ : 3952)

٥- باب قوله ﴿إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي

बाब 5 : आयत 'इन्नमा जज़ाउल्लज़ीन युहारिबूनल्लाह व रसूलहू' अल् अख़् की तफ़्सीर

الأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا - إِلَى قَوْلِهِ - أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الأَرْضِ﴾. الْمُحَارَبَةُ للهِ : الْكُفْرُ بِهِ.

या'नी जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई करते हैं और मुल्क में फ़साद फैलाने में लगे रहते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि वो क़त्ल कर दिये जाएँ या सूली दिये जाएँ, आख़िर आयत, औ युन्फ़व् मिनल अरज़ि तक या'नी या वो जलावतन कर दिये जाएँ। युहारिबूनल्लाह व रसूलहू से कुफ़्र करना मुराद है।

तश्रीह : ये आयते करीमा उन डाकुओं के बारे में उतरी थी जो फ़रेब से मुसलमान हो गये थे और जलन्दर के मरीज़ थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको इलाज के लिये सदक़े के ऊँटों में भेज दिया ताकि वहाँ कुशादगी से ऊँटों का दूध पियें। चुनाँचे वो तन्दुरुस्त हो गये और ग़द्दारी करके इस्लामी चरवाहे को पछाड़कर क़त्ल कर दिया। उसकी आँखों में बबूल के काँटे गाड़ दिये आख़िर गिरफ़्तार हुए और उनसे क़िसास के बारे में ये अह़काम नाज़िल हुए।

٤٦١٠ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَلْمَانُ أَبُو رَجَاءٍ مَوْلَى أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ أَنَّهُ كَانَ جَالِسًا خَلْفَ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَذَكَرُوا وَذَكَرُوا فَقَالُوا: وَقَالُوا قَدْ أَقَادَتْ بِهَا الْخُلَفَاءُ. فَالْتَفَتَ إِلَى أَبِي قِلاَبَةَ وَهُوَ خَلْفَ ظَهْرِهِ فَقَالَ : مَا تَقُولُ يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ زَيْدٍ - أَوْ قَالَ مَا تَقُولُ يَا أَبَا قِلاَبَةَ -؟ قُلْتُ: مَا عَلِمْتُ نَفْسًا حَلَّ قَتْلُهَا فِي الإِسْلاَمِ إِلاَّ رَجُلٌ زَنَى بَعْدَ إِحْصَانٍ، أَوْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ، أَوْ حَارَبَ اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ عَنْبَسَةُ: حَدَّثَنَا أَنَسٌ بِكَذَا وَكَذَا، قُلْتُ إِيَّايَ حَدَّثَ أَنَسٌ قَالَ: قَدِمَ قَوْمٌ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَلَّمُوهُ فَقَالُوا: قَدِ اسْتَوْخَمْنَا هَذِهِ الأَرْضَ فَقَالَ: ((هَذِهِ نَعَمٌ، لَنَا تَخْرُجُ فَاخْرُجُوا فِيهَا فَاشْرَبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا)) فَخَرَجُوا

4610. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन औन ने बयान किया, कहा कि मुझसे सलमान अबू रजाअ, अबू क़लाबा के गुलाम ने बयान किया और उनसे अबू क़लाबा ने कि वो (अमीरुल मोमिनीन) उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह) ख़लीफ़ा के पीछे बैठे हुए थे (मज्लिस में क़सामत का ज़िक्र आ गया) लोगों ने कहा कि क़सामत में क़िसास लाज़िम होगा। आपसे पहले ख़ुलफ़-ए-राशिदीन ने भी उसमें क़िसास लिया है। फिर उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह) अबू क़लाबा की तरफ़ मुतवज्जह हुए वो पीछे बैठे हुए थे और पूछा, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद! तुम्हारी क्या राय है? या यूँ कहा कि अबू क़लाबा! आपकी क्या राय है? मैंने कहा कि मुझे तो कोई ऐसी सूरत मा'लूम नहीं है कि इस्लाम में किसी शख़्स का क़त्ल जाइज़ हो, सिवा उसके कि किसी ने शादी शुदा होने के बावजूद ज़िना किया हो, या नाहक़ किसी को क़त्ल किया हो, या अल्लाह और उसके रसूल से लड़ा हो। (मुर्तद हो गया हो) इस पर अ़म्बसा ने कहा कि हमसे अनस (रज़ि.) ने इस तरह हदीष बयान की थी। अबू क़लाबा बोले कि मुझसे भी उन्होंने ये हदीष बयान की थी। बयान किया कि कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और इस्लाम पर बैअ़त करने के बाद आँहज़रत (ﷺ) से कहा कि हमें इस शहर मदीना की आबो-हवा मुवाफ़िक़ नहीं आई। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि हमारे ये ऊँट चरने जा रहे हैं तुम भी उनके साथ चले जाओ और उनका दूध और पेशाब पियो (क्योंकि उनके मर्ज़ का यही इलाज था)। चुनाँचे वो लोग उन ऊँटों के

साथ चले गये और उनका दूध और पेशाब पिया। जिससे उन्हें सेहत हासिल हो गई। उसके बाद उन्होंने (हुज़ूर ﷺ) के चरवाहे) को पकड़कर क़त्ल करदिया और ऊँट लेकर भागे। अब ऐसे लोगों से बदला लेने में क्या ताम्मुल हो सकता था। उन्होंने एक शख़्स को क़त्ल किया और अल्लाह और उसके रसूल से लड़े और हुज़ूर (ﷺ) को ख़ौफ़ज़दा करना चाहा। अम्बसा ने इस पर कहा, सुब्हानल्लाह! मैंने कहा, क्या तुम मुझे झुठलाना चाहते हो? उन्होंने कहा कि (नहीं) यही हदीष़ अनस (रज़ि.) ने मुझसे भी बयान की थी। मैंने इस पर तअ़ज्जुब किया कि तुमको हदीष़ ख़ूब याद रहती है। अबू क़लाबा ने बयान किया कि अम्बसा ने कहा, ऐ शाम वालो! जब तक तुम्हारे यहाँ अबू क़लाबा या उन जैसे आ़लिम मौजूद रहेंगे, तुम हमेशा अच्छे रहोगे। (राजेअ़ : 233)

فِيهَا فَشَرِبُوا مِنْ أَبْوَالِهَا وَأَلْبَانِهَا وَاسْتَصَحُّوا وَمَالُوا عَلَى الرَّاعِي فَقَتَلُوهُ، وَاطَّرَدُوا النَّعَمَ فَمَا يُسْتَبْطَأُ مِنْ هَؤُلاَءِ قَتَلُوا النَّفْسَ وَحَارَبُوا اللهَ وَرَسُولَهُ، وَخَوَّفُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((سُبْحَانَ اللهِ)) فَقُلْتُ: تَتَّهِمُنِي قَالَ: حَدَّثَنَا بِهَذَا أَنَسٌ قَالَ: وَقَالَ يَا أَهْلَ كَذَا إِنَّكُمْ لَنْ تَزَالُوا بِخَيْرٍ مَا أُبْقِيَ هَذَا فِيكُمْ وَمِثْلُ هَذَا.

[راجع: ۲۳۳]

तशरीह : दूसरी रिवायत में यूँ है कि अबू क़लाबा ने कहा, अमीरुल मोमिनीन आपके पास इतनी बड़ी फ़ौज के सरदार और अ़रब के अशराफ़ लोग हैं। भला अगर उनमें से पचास आदमी एक ऐसे शादीशुदा मर्द पर गवाही दें जो दमिश्क़ के क़िले में हो कि उसने ज़िना किया है मगर उन लोगों ने आँख से न देखा हो तो क्या आप उसको संगसार करेंगे? उन्होंने कहा, नहीं मैंने कहा अगर उनमें से पचास आदमी एक शख़्स पर जो ह़िम्स में हो, उन्होंने उसको न देखा हो ये गवाही दें कि उसने चोरी की है तो क्या आप उसका हाथ कटवा देंगे? उन्होंने कहा कि नहीं। मतलब अबू क़लाबा का ये था कि क़सामत में क़िसास़ नहीं लिया जाएगा बल्कि दियत दिलाई जाएगी, किसी ने नामा'लूम क़त्ल पर उस मोहल्ले के पचास आदमी ह़लफ़ उठाएँ कि वो इससे बरी हैं इसे क़सामत कहते हैं।

बाब 6 : आयत 'वल्जुरूह क़िसास़ुन' की तफ़्सीर या'नी और ज़ख़्मों में क़िसास़ है

٦- باب قَوْلِهِ : ﴿وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ﴾

4611. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मर्वान बिन मुआविया फ़ुज़ारी ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद तवील ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रबीआ़ ने जो अनस (रज़ि.) की फूफी थीं, अंसार की एक लड़की के आगे के दांत तोड़ दिये। लड़की वालों ने क़िसास़ चाहा और नबी करीम (ﷺ) ने भी क़िसास़ का हुक्म दिया। ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) के चचा अनस बिन नज़्र (रज़ि.) ने कहा नहीं अल्लाह की क़सम! उनका दांत न तोड़ा जाएगा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, अनस! लेकिन किताबुल्लाह का हुक्म क़िसास़ ही का है। फिर लड़की

٤٦١١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا الْفَزَارِيُّ عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: كَسَرَتِ الرُّبَيِّعُ وَهِيَ عَمَّةُ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ثَنِيَّةَ جَارِيَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَطَلَبَ الْقَوْمُ الْقِصَاصَ فَأَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْقِصَاصِ. فَقَالَ أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ عَمُّ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ: لاَ وَاللهِ لاَ تُكْسَرُ سِنُّهَا يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ رَسُولُ

ا لله ﷺ: ((يَا أَنَسُ كِتَابُ ا لله الْقِصَاصُ)) فَرَضِيَ الْقَوْمُ وَقَبِلُوا الأَرْشَ فَقَالَ رَسُولُ ا لله ﷺ: ((إِنَّ مِنْ عِبَادِ ا لله مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى ا لله لأَبَرَّهُ)). [راجع: ٢٧٠٣]

वाले मुआफ़ी पर राज़ी हो गये और दियत लेना मंज़ूर कर लिया। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के बहुत से बन्दे ऐसे हैं कि अगर वो अल्लाह का नाम लेकर क़सम खा लें तो अल्लाह उनकी क़सम सच्ची कर देता है। (राजेअ : 2703)

यही लोग हैं जिनको क़ुर्आन मजीद ने लफ़्ज़े औलिया अल्लाह से ता'बीर किया है। जिनको ला ख़ौफ़ा की बशारत दी गई है, जअ़ल्नल्लाहु मिन्हुम। हदीषे क़ुदसी **अना इन्द ज़न्नि अ़ब्दी** से भी इस हदीष़ की ताइद होती है।

٧- باب قوله ﴿يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ﴾

बाब 7 : आयत 'याअय्युहर्रसूलु बल्लिग मा उन्ज़िल इलैक' अल् अख़ की तफ़्सीर

तश्रीह : जानिषार सहाबा (रज़ि.) रात को आपके मकान पर पहरा दिया करते थे। जब ये आयत उतरी तो आपने पहरा उठा दिया। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने हदीषे ज़ैल में मज़ीद तफ़्सीर कर दी है। अल्लाह ने जो कुछ अपने हबीब (ﷺ) की हिफ़ाज़त फ़र्माई वो तारीख़े इस्लाम की एक-एक लाइन से ज़ाहिर है।

٤٦١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ا لله عَنْهَا قَالَتْ: مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا كَتَمَ شَيْئًا مِمَّا أُنْزِلَ عَلَيْهِ فَقَدْ كَذَبَ وَا لله يَقُولُ: ﴿يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ﴾ الآيَةَ. [راجع: ٣٢٣٤]

4612. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे शअ़बी ने, उनसे मसरूक़ ने कि उनसे आइशा (रज़ि.) ने कहा, जो शख़्स भी तुमसे ये कहता है कि अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) पर जो कुछ नाज़िल किया था, उसमे से आपने कुछ छुपा लिया था, तो वो झूठा है। अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़र्माया है कि, ऐ पैग़म्बर! जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, ये (सब) आप (लोगों तक) पहुँचा दें।

चुनाँचे आपने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर मुसलमानों से इस बारे में तस्दीक़ चाही थी और मुसलमानों ने बिल इत्तिफ़ाक़ (एक आवाज़ होकर) कहा था कि बेशक आपने अपने तब्लीग़ी फ़र्ज़ को पूरे तौर पर अदा फ़र्मा दिया। (ﷺ)

٨- باب قوله ﴿لاَ يُؤَاخِذُكُمُ ا لله بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ﴾

बाब 8 : आयत 'ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि' अल् अख़् की तफ़्सीर

या'नी अल्लाह तुमसे तुम्हारी फ़िज़ूल क़समों पर पकड़ नहीं करता।

٤٦١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ سُعَيْدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ ا لله عَنْهَا أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿لاَ يُؤَاخِذُكُمُ ا لله بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ﴾ فِي قَوْلِ الرَّجُلِ: لاَ وَا لله، وَبَلَى وَا لله.

4613. हमसे अ़ली बिन सलमा ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि आयत, अल्लाह तुमसे तुम्हारी फ़िज़ूल क़समों पर पकड़ नहीं करता। किसी के इस तरह क़सम खाने के बारे में नाज़िल हुई कि नहीं, अल्लाह की क़सम, हाँ अल्लाह की

क़सम! (दीगर मक़ाम : 6663) [طرفه في : ٦٦٦٣].

जो क़सम बिला किसी इरादा के ज़ुबान पर आ जाती है। इमाम शाफ़िई और अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) ने कहा एक बात का गुमान ग़ालिब हो और फिर उस पर कोई क़सम खा ले तो ये क़सम लग़्व है। कुछ ने कहा लग़्व क़सम वो है जो ग़ुस्से में या भूलकर खा ली जाए। कुछ ने कहा खाने पीने लिबास वग़ैरह के तर्क पर जो क़सम खाई जाए वो मुराद है।

٤٦١٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاء، حَدَّثَنَا النَّضْرُ، عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ أَبَاهَا كَانَ لاَ يَحْنَثُ فِي يَمِينٍ حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ كَفَّارَةَ الْيَمِينِ قَالَ أَبُو بَكْرٍ: لاَ أَرَى يَمِينًا أُرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ قَبِلْتُ رُخْصَةَ اللهِ وَفَعَلْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ. [طرفه في: ٦٦٢١].

4614. हमसे अह़मद बिन अबी रिजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र बिन शमैल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके वालिद अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) अपनी क़सम के ख़िलाफ़ कभी नहीं किया करते थे। लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने क़सम के कफ़्फ़ारा का हुक्म नाज़िल कर दिया तो अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि अब अगर उसके (या'नी जिसके लिये क़सम खा रखी थी) सिवा दूसरी चीज़ मुझे इससे बेहतर मा'लूम होती है तो मैं अल्लाह तआ़ला की दी हुई रुख़्स़त पर अ़मल करता हूँ और वही काम करता हूँ जो बेहतर होता है। (दीगर मक़ाम : 6621)

तशरीह : ष़अल्बी ने कहा कि आयत, **ला युआख़िज़ूकुमुल्लाह बिल लग़्वि** (अल् माइदह : 89) ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ह़क़ में नाज़िल हुई। जब उन्होंने ग़ुस्सा होकर ये क़सम खाई थी कि अब से मिस्तह़ बिन अष़ाष़ा (रज़ि.) के साथ में कोई (हुस्ने) सुलूक़ नहीं करूँगा। ये मिस्तह़ (रज़ि.) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) पर तोह्मत लगाने में शरीक हो गये थे।

बाब 9 : आयत 'ला तुहर्रिमू तय्यिबाति मा अहल्लल्लाहु' अल् अख़् की तफ़्सीर या'नी,

٩- باب قوله : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكُمْ﴾

ऐ ईमानवालों! अपने ऊपर उन पाक चीज़ों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये ह़लाल की हैं अज़्ख़ुद ह़राम न कर लो।

ये एक उसूल है जो आयत में बयान किया गया है। ये उसूले इस्लाम में क़ानूनी हैषियत रखता है। मगर जो ह़लाल चीज़ शरीअ़त ही ने बाद में ह़राम कर दी है इससे अलग है। मुतआ भी इसमें दाख़िल है, जो बाद में क़यामत तक के लिये ह़रामे मुत्लक़ क़रार दे दिया गया।

٤٦١٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَلَيْسَ مَعَنَا نِسَاءٌ فَقُلْنَا: أَلاَ نَخْتَصِي؟ فَنَهَانَا عَنْ ذَلِكَ فَرَخَّصَ لَنَا بَعْدَ ذَلِكَ أَنْ نَتَزَوَّجَ الْمَرْأَةَ بِالثَّوْبِ، ثُمَّ قَرَأَ : مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَلْمَانُ أَبُو رَجَاءٍ

4615. हमसे अ़म्र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह त़िहान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि हम रसूलुल्लाह के साथ होकर जिहाद किया करते थे और हमारे साथ हमारी बीवियाँ नहीं होती थीं। इस पर हमने अ़र्ज़ किया कि हम अपने को ख़स़्सी क्यूँ न कर लें। लेकिन आँह़ज़रत ने हमें इससे रोक दिया और उसके बाद हमें उसकी इजाज़त दी कि हम किसी औ़रत से कपड़े (या किसी भी चीज़) के बदले में निकाह कर सकते हैं, फिर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने ये आयत

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكُمْ﴾.[طرفه في: ٥٠٧١، ٥٠٧٥]

पढ़ी, ऐ ईमानवालों! अपने ऊपर उन पाकीज़ा चीज़ों को हराम न करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये जाइज़ की हैं। (दीगर मक़ाम : 5071, 5075)

तश्रीह : शुरू इस्लाम में मुतआ जाइज़ था उसके बारे में ये आयत उतरी। बाद में मुतआ क़यामत तक के लिये हराम हो गया। मुतआ उस आरज़ी निकाह को कहते थे जो वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिये किसी मुक़र्रर चीज़ के बदले किया जाता था। अब मुतआ क़यामत तक बिलकुल हराम है, जिसकी हुर्मत पर अहले सुन्नत का पूरा इत्तिफ़ाक़ है।

١٠- باب

قوله: ﴿إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالأَنْصَابُ وَالأَزْلاَمُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الأَزْلاَمُ: الْقِدَاحُ يَقْتَسِمُونَ بِهَا فِي الأُمُورِ، وَالنُّصُبُ: أَنْصَابٌ يَذْبَحُونَ عَلَيْهَا. وَقَالَ غَيْرُهُ: الزَّلَمُ الْقِدْحُ لاَ رِيشَ لَهُ وَهُوَ وَاحِدُ الأَزْلاَمِ، وَالاِسْتِقْسَامُ : أَنْ يُجِيلَ الْقِدَاحَ فَإِنْ نَهَتْهُ انْتَهَى وَإِنْ أَمَرَتْهُ فَعَلَ مَا تَأْمُرُهُ. وَقَدْ أَعْلَمُوا الْقِدَاحَ أَعْلاَمًا بِضُرُوبٍ يَسْتَقْسِمُونَ بِهَا، وَفَعَلْتُ مِنْهُ قَسَمْتُ وَالْقُسُومُ الْمَصْدَرُ.

बाब 10 : आयत 'इन्नमल्ख़म्रू वल्मयसिर वल्अन्साबु' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

शराब और जुआ और बुत और पांसे ये सब गन्दी चीज़ें हैं बल्कि ये सब शैतानी काम हैं। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल् अज़्लाम से मुराद वो तीर हैं जिनसे वो अपने कामों में फ़ाल निकालते थे। काफ़िर उनसे अपनी क़िस्मत का हाल दरयाफ़्त किया करते थे। नसब (बैतुल्लाह के चारों तरफ़ बुत 360 की ता'दाद में खड़े किये हुए थे जिन पर वो क़ुर्बानी किया करते थे) दूसरे लोगों ने कहा है कि लफ़्ज़े ज़लम वो तीर जिनके पर नहीं हुआ करते, अज़्लाम का वाहिद है। इस्तिक़्साम या'नी पांसा फेंकना कि उसमें नहीं आ जाए तो रुक जाएँ और अगर हुक्म आ जाए तो हुक्म के मुताबिक़ अमल करें। तीरों पर उन्होंने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के निशानात बना रखे थे और उनसे क़िस्मत का हाल निकाला करते थे। इस्तिक़्साम से (लाज़िम) फ़अल्तु के वज़न पर क़सम्तु है और क़ुसूम मसदर है।

٤٦١٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَإِنَّ فِي الْمَدِينَةِ يَوْمَئِذٍ لَخَمْسَةَ أَشْرِبَةٍ مَا فِيهَا شَرَابُ الْعِنَبِ.

[طرفه في : ٥٥٧٩].

4616. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन बिश्र ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब शराब की हुर्मत नाज़िल हुई तो मदीना में उस वक़्त पाँच क़िस्म की शराब इस्ते'माल होती थी। लेकिन अंगूरी शराब का इस्ते'माल नहीं होता था। (बहरहाल वो भी हराम क़रार पाई) (दीगर मक़ाम : 5579)

٤٦١٧- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ

4617. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़लय्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन

सुहैब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, हम लोग तुम्हारी फ़ुज़ैह (खजूर से बनाई हुई शराब) के सिवा और कोई शराब इस्ते'माल नहीं करते थे, यही जिसका नाम तुमने फ़ज़ीख़ रख रखा है, मैं खड़ा अबू तलहा (रज़ि.) को पिला रहा था और फ़लाँ और फ़लाँ को, कि एक साहब आए और कहा, तुम्हें कुछ ख़बर भी है? लोगों ने पूछा क्या बात है? उन्होंने बताया कि शराब हराम क़रार दी जा चुकी है। फ़ौरन ही उन लोगों ने कहा, अनस (रज़ि.) अब इन शराब के मटकों को बहा दो। उन्होंने बयान किया कि उनकी ख़बर के बाद फिर उन लोगों ने उसमें से एक क़तरा भी न मांगा और न फिर उसका इस्ते'माल किया। (राजेअ : 2464)

صُهَيْبٍ، قَالَ: قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ: مَا كَانَ لَنَا خَمْرٌ غَيْرُ فَضِيخِكُمْ هَذَا الَّذِي تُسَمُّونَهُ الْفَضِيخَ، فَإِنِّي لَقَائِمٌ أَسْقِي أَبَا طَلْحَةَ وَفُلاَنًا إِذْ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ : وَهَلْ بَلَغَكُمُ الْخَبَرُ؟ فَقَالُوا: وَمَا ذَاكَ؟ قَالَ: حُرِّمَتِ الْخَمْرُ، قَالُوا: اهْرِقْ هَذِهِ الْقِلاَلَ يَا أَنَسُ، قَالَ: فَمَا سَأَلُوا عَنْهَا وَلاَ رَاجَعُوهَا بَعْدَ خَبَرِ الرَّجُلِ. [راجع: ٢٤٦٤]

सहाब-ए-किराम (रज़ि.) की ये इताअत शिआरी (आज्ञाकारी) और तक़्वा था कि अल्लाह का हुक्म सुनते ही हमेशा के लिये तौबा करने वाले हो गये। यही हुकूमते इलाही है जिसका अष़र दिलों पर होता है।

4618. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उयय़ना ने ख़बर दी, उन्हें अम्र ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहुद में बहुत से सहाबा (रज़ि.) ने सुबह सुबह शराब पी थी और उसी दिन वो सब शहीद कर दिये गये थे। उस वक़्त शराब हराम नहीं हुई थी। (इसलिये वो गुनाहगार नहीं ठहरे) (राजेअ : 2815)

٤٦١٨- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: صَبَّحَ أُنَاسٌ غَدَاةَ أُحُدٍ الْخَمْرَ فَقُتِلُوا مِنْ يَوْمِهِمْ جَمِيعًا شُهَدَاءَ وَذَلِكَ قَبْلَ تَحْرِيمِهَا. [راجع: ٢٨١٥]

4619. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ईसा और इब्ने इदरीस ने ख़बर दी, उन्हे अबू हय्यान ने, उन्हें शअबी ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने उमर (रज़ि.) से सुना, वो नबी करीम (ﷺ) के मिम्बर पर खड़े फ़र्मा रहे थे। अम्माबअद!

ऐ लोगों! जब शराब की हुर्मत नाज़िल हुई तो वो पाँच चीज़ों से तैयार की जाती थी। अंगूर, खजूर, शहद, गेहूं और जौ से और शराब हर वो पीने की चीज़ है जो अक़्ल को ज़ाइल कर दे।

(दीगर मक़ाम : 5581, 5588, 5589, 7337)

٤٦١٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا عِيسَى وَابْنُ إِدْرِيسَ عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى مِنْبَرِ النَّبِيِّ ﷺ يَقُولُ: أَمَّا بَعْدُ أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ. وَهْيَ مِنْ خَمْسَةٍ مِنَ الْعِنَبِ، وَالتَّمْرِ، وَالْعَسَلِ، وَالْحِنْطَةِ، وَالشَّعِيرِ، وَالْخَمْرُ مَا خَامَرَ الْعَقْلَ.

[أطرافه في : ٥٥٨١، ٥٥٨٨، ٥٥٨٩، ٧٣٣٧].

आख़िरी फ़र्मान उमूम के साथ है कि जो भी मशरूब (पेय पदार्थ) अक़्ल को ज़ाइल (ख़त्म) करने वाला हो, वो किसी भी चीज़ से तैयार किया गया है बहरहाल वो ख़म्र है और ख़म्र का पीना हराम क़रार दे दिया गया है। खाने की चीज़ जो नशा लाने

वाली हैं, वो सब चीज़ें इस हुक्म में दाख़िल हैं। जैसे अफ़्यून (अफ़ीम), चंडू वग़ैरह।

बाब 11 : आयत 'लैस अलल्लज़ीन आमनू' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

١١- باب قوله

﴿لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا - إِلَى قَوْلِهِ -وَا اللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ﴾

जो लोग ईमान रखते हैं और नेक काम करते रहते हैं उन पर उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिसको उन्होंने पहले खा लिया है। आख़िर आयत, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन तक। या'नी शराब की हुर्मत नाज़िल होने से पहले पहले जिन लोगों ने शराब पी है और अब वो ताइब हो गये, उन पर कोई गुनाह नहीं है।

4620. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे षाबित ने, उनसे अनस बिन मालिक ने कि (हुर्मत नाज़िल होने के बाद) जो शराब बहाई गई थी वो फ़ज़ीख़ की थी। इमाम बुख़ारी (रह) ने बयान किया कि मुझसे मुहम्मद ने अबुन नोअ़मान से इस ज़्यादती के साथ बयान किया कि अनस (रज़ि.) ने कहा, मैं सहाबा की एक जमाअ़त को अबू तलहा (रज़ि.) के घर शराब पिला रहा था कि शराब की हुर्मत नाज़िल हुई। आँहज़रत (ﷺ) ने मुनादी को हुक्म दिया और उन्होंने ऐलान करना शुरू किया। अबू तलहा (रज़ि.) ने कहा, बाहर जा के देखो ये आवाज़ कैसी है। बयान किया कि मैं बाहर आया और कहा कि एक मुनादी ऐलान कर रहा है कि, ख़बरदार हो जाओ! शराब हराम हो गई है। ये सुनते ही उन्होंने मुझसे कहा कि जाओ और शराब बहा दो। रावी ने बयान किया कि उन दिनों फ़ज़ीख़ शराब इस्ते'माल होती थी। कुछ लोगों ने शराब को जो इस तरह बहते देखा तो कहने लगे मा'लूम होता है कि कुछ लोगों ने शराब से अपना पेट भर रखा था और उसी हालत में उन्हें क़त्ल कर दिया गया है। बयान किया कि फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की। जो लोग ईमान रखते हैं और नेक काम करते रहते हैं, उन पर उस चीज़ का कोई गुनाह नहीं जिसको उन्होंने खा लिया। (राजेअ़ : 2464)

٤٦٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ الْخَمْرَ الَّتِي أُهْرِيقَتْ الْفَضِيخُ. وَزَادَنِي مُحَمَّدٌ عَنْ أَبِي النُّعْمَانِ قَالَ: كُنْتُ سَاقِيَ الْقَوْمِ فِي مَنْزِلِ أَبِي طَلْحَةَ فَنَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ فَأَمَرَ مُنَادِيًا فَنَادَى فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ : اخْرُجْ فَانْظُرْ مَا هَذَا الصَّوْتُ قَالَ: فَخَرَجْتُ فَقُلْتُ: هَذَا مُنَادٍ يُنَادِي أَلاَ إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ، فَقَالَ لِي: اذْهَبْ فَأَهْرِقْهَا، قَالَ: فَجَرَتْ فِي سِكَكِ الْمَدِينَةِ، قَالَ: وَكَانَتْ خَمْرُهُمْ يَوْمَئِذٍ الْفَضِيخَ، فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: قُتِلَ قَوْمٌ وَهِيَ فِي بُطُونِهِمْ قَالَ: فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا﴾.

[راجع: ٢٤٦٤]

इससे वो लोग मुराद है, जिन्होंने हुरमत का हुक्म नाज़िल होने से पहले शराब पी थी बाद में ताइब (तौबा करने वाले) हो गए, जैसा कि बयान गुज़रा है।

बाब 12 : आयत 'ला तस्अलु अन अश्याअ' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी, ऐ लोगों! ऐसी बातें नबी से मत पूछो

١٢- باب قَوْلِهِ : ﴿لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾

कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हें वो बातें नागवार गुज़रें

4621. हमसे मुन्ज़िर बिन वलीद बिन अ़ब्दुर्रह़मान जारूदी ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अनस ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसा ख़ुत्बा दिया कि मैंने वैसा ख़ुत्बा कभी नहीं सुना था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया जो कुछ मैं जानता हूँ अगर तुम्हें भी मा'लूम होता तो तुम हंसते कम और रोते ज़्यादा। बयान किया कि फिर हुज़ूर (ﷺ) के स़ह़ाबा (रज़ि.) ने अपने चेहरे छुपा लिये, बावजूद ज़ब्त के उनके रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक स़ह़ाबी ने उस मौक़े पर पूछा, मेरे वालिद कौन हैं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फ़लाँ इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि, ऐसी बातें मत पूछो कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हें नागवार गुज़रें। इसकी रिवायत नज़्र और रौह़ बिन इ़बादा ने शुअ़बा से की है। (राजेअ़ : 93)

٤٦٢١ - حَدَّثَنَا مُنْذِرُ بْنُ الْوَلِيدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْجَارُودِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مُوسَى بْنِ أَنَسٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ خُطْبَةً مَا سَمِعْتُ مِثْلَهَا قَطُّ قَالَ: ((لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا)) قَالَ: فَغَطَّى أَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ ﷺ وُجُوهَهُمْ لَهُمْ خَنِينٌ فَقَالَ رَجُلٌ مَنْ أَبِي؟ قَالَ: فُلاَنٌ. فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾. رَوَاهُ النَّضْرُ وَرَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ عَنْ شُعْبَةَ. [راجع: ٩٣]

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये वाज़ मौत व आख़िरत के बारे में था। स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) पर इसका ऐसा अ़षर हुआ कि बेतह़ाशा रोने लगे क्योंकि उनको कामिल यक़ीन ह़ासिल था। बेजा सवाल करने वालों को इस आयत में रोका गया कि अगर जवाब में उसकी ह़क़ीक़त खुली जिसको वो नागवारी महसूस करें तो फिर अच्छा नहीं होगा लिहाज़ा बेजा सवालात करना ही मुनासिब नहीं हैं। फ़ुक़हा-ए-किराम ने ऐसे बेजा मफ़्रूज़ात गढ़–गढ़कर अपनी फ़ुक़ाहत के ऐसे नमूने पेश किये हैं, जिनको देखकर ह़ैरत होती है। तफ़्स़ीलात के लिये किताब ह़क़ीक़तुल फ़िक़्ह का मुत़ालआ़ किया जाए।

फ़क़ीहाँ त़रीक़े जदल साख़्तंद　　　　लम ला नुसल्लिम दर अंदाख़्तन्द

4622. हमसे फ़ज़ल बिन सहल ने बयान किया, कहा हमसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू ख़ैषमा ने बयान किया, उनसे अबू जुवैरिया ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) से मज़ाक़न (मज़ाक़ के तौर पर) सवालात किया करते थे। कोई शख़्स़ यूँ पूछता कि मेरा बाप कौन है? किसी की अगर ऊँटनी गुम हो जाती तो वो ये पूछते कि मेरी ऊँटनी कहाँ होगी? ऐसे ही लोगों के लिये अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की कि, ईमानवालों! ऐसी बातें मत पूछो कि अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँ तो तुम्हें नागवार गुज़रे। यहाँ तक कि पूरी आयत

٤٦٢٢ - حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ سَهْلٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا أَبُو خَيْثَمَةَ حَدَّثَنَا أَبُو الْجُوَيْرِيَةِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ قَوْمٌ يَسْأَلُونَ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتِهْزَاءً فَيَقُولُ الرَّجُلُ مَنْ أَبِي؟ وَيَقُولُ الرَّجُلُ تَضِلُّ نَاقَتُهُ أَيْنَ نَاقَتِي؟ فَأَنْزَلَ اللهُ فِيهِمْ هَذِهِ الآيَةَ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ

पढ़कर सुनाई।

لَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾ حَتَّى فَرَغَ مِنَ الآيَةِ كُلِّهَا.

बाब 13 : आयत 'मा जअलल्लाहु मिम्बहीरा' की तफ़्सीर

١٣– باب قوله

या'नी अल्लाह ने बह़ीरह़ को मुक़र्रर किया है, न साइबा को और न वस़ीला को और न ह़ाम को। व इज़्क़ालल्लाह (में क़ाल) मा'नी में यक़ूलु के है और इज़ यहाँ ज़ाइद है। अल माइदह़ अस़ल मे मफ़्ऊला (मेमूदह़) के मा'नी में है।

गो स़ैग़ा फ़ाइल का है, जैसे ईशतुर्राज़िया और तत्लीक़तु बाइना में है तो माइदह़ का मा'नी मुमीदह़ या'नी ख़ैर और भलाई जो किसी को दी गई है। इसी से मादनी यमीदिनी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, मुतवफ़्फ़ीका के मा'नी में तुझको वफ़ात देने वाला हूँ। ह़ज़रत ईसा (रज़ि.) को आख़िरी ज़माने में अपने वक़्ते मुक़र्रर पर जो मौत आएगी वो मुराद हो सकती है।

﴿مَا جَعَلَ اللهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلاَ سَائِبَةٍ وَلاَ وَصِيلَةٍ وَلاَ حَامٍ﴾ ﴿وَإِذْ قَالَ اللهُ﴾ يَقُولُ قَالَ اللهُ ﴿وَإِذْ﴾ هـا صِلَةٌ ﴿الْمَائِدَةُ﴾ أَصْلُهَا مَفْعُولَةٌ: كَعِيشَةٍ رَاضِيَةٍ وَتَطْلِيقَةٍ بَائِنَةٍ وَالْمَعْنَى مِيدَ بِهَا صَاحِبُهَا مِن خَير يُقَالُ: مَادَنِي يَمِيدُنِي، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مُتَوَفِّيكَ مُمِيتُكَ.

4623. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया कि, बह़ीरह़ उस ऊँटनी को कहते थे जिसका दूध बुतों के लिये रोक दिया जाता है और कोई शख़्स़ उसके दूध को दूहने का मजाज़ न समझा जाता और सायबा उस ऊँटनी को कहते थे जिसे वो अपने देवताओं के नाम पर आज़ाद छोड़ देते और उसके बाद भार ढोने व सवारी वग़ैरह का काम न लेते। सईद रावी ने बयान किया कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने अ़म्र बिन आ़मिर ख़ुज़ाई को देखा कि वो अपनी आंतों को जहन्नम में घसीट रहा था, उसने सबसे पहले सांड छोड़ने की रस्म निकाली थी। और वस़ीला उस जवान ऊँटनी को कहते थे जो पहली बार मादा बच्चा जनती और फिर दूसरी बार भी मादा बच्चा जनती, उसे भी वो बुतों के नाम पर छोड़ देते थे लेकिन उसी स़ूरत में जबकि वो बराबर दो बार मादा बच्चा जनती और उस दरम्यान में कोई नर बच्चा न होता। और ह़ाम वो नर ऊँट जो मादा पर शुमार से कई दफ़ा चढ़ता (उसके नुत़्फ़े से दस बच्चे पैदा हो जाते) जब वो इतनी स़ुह़बतें कर चुकता तो उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ देते और बोझ लादने से मुआ़फ़ कर देते (न सवारी करते) उसका नाम ह़ाम रखते और अबुल यमान (ह़कम बिन

٤٦٢٣– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، قَالَ: الْبَحِيرَةُ الَّتِي يُمْنَعُ دَرُّهَا لِلطَّوَاغِيتِ فَلاَ يَحْلُبُهَا أَحَدٌ مِنَ النَّاسِ وَالسَّائِبَةُ كَانُوا يُسَيِّبُونَهَا لآلِهَتِهِمْ لاَ يُحْمَلُ عَلَيْهَا شَيْءٌ قَالَ : وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((رَأَيْتُ عَمْرَو بْنَ عَامِرٍ الْخُزَاعِيَّ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ كَانَ أَوَّلَ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ)) وَالْوَصِيلَةُ : النَّاقَةُ الْبِكْرُ تُبَكِّرُ فِي أَوَّلِ نِتَاجِ الإِبِلِ ثُمَّ تُثَنِّي بَعْدُ بِأُنْثَى وَكَانُوا يُسَيِّبُونَهُمْ لِطَوَاغِيتِهِمْ إِنْ وَصَلَتْ إِحْدَاهُمَا بِالأُخْرَى لَيْسَ بَيْنَهُمَا ذَكَرٌ وَالْحَامُ فَحْلُ الإِبِلِ يَضْرِبُ الضِّرَابَ الْمَعْدُودَ فَإِذَا قَضَى ضِرَابَهُ وَدَعُوهُ لِلطَّوَاغِيتِ وَأَعْفَوْهُ مِنَ

नाफ़ेअ) ने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने ज़ुह्री से सुना, कहा मैंने सईद बिन मुसय्यिब से यही ह़दीष़ सुनी जो ऊपर गुज़री। सईद ने कहा अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना (वही अ़म्र बिन आ़मिर ख़ुज़ाई का क़िस्सा जो ऊपर गुज़रा) और यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हाद ने भी इस ह़दीष़ को इब्ने शिहाब से रिवायत किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, कहा मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना। (राजेअ : 3521)

الْحَمْلِ فَلَمْ يُحْمَلْ عَلَيْهِ شَيْءٌ وَسَمَّوْهُ الْحَامِيَ. قَالَ أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، سَمِعْتُ سَعِيدًا قَالَ: يُخْبِرُهُ بِهَذَا قَالَ: وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ نَحْوَهُ. وَرَوَاهُ ابْنُ الْهَادِ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ.

[راجع: ٣٥٢١]

4624. मुझसे मुह़म्मद बिन अबी यअ़क़ूब अबू अ़ब्दुल्लाह किरमानी ने बयान किया, कहा हमसे ह़स्सान बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने जहन्नम को देखा कि उसके कुछ ह़िस्से कुछ दूसरे ह़िस्सों को खाए जा रहे हैं और मैंने अ़म्र बिन आ़मिर ख़ुज़ाई को देखा कि वो अपनी आंतें उसमें घसीटता फिर रहा था। यही वो शख़्स है जिसने सबसे पहले सांड को छोड़ने की रस्म ईजाद की थी। (राजेअ : 1044)

٤٦٢٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ أَبُو عَبْدِ اللهِ الْكِرْمَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((رَأَيْتُ جَهَنَّمَ يَحْطِمُ بَعْضُهَا بَعْضًا، وَرَأَيْتُ عَمْرًا يَجُرُّ قُصْبَهُ وَهُوَ أَوَّلُ مَنْ سَيَّبَ السَّوَائِبَ)). [راجع: ١٠٤٤]

बाब 14 : आयत 'व कुन्तु अ़लैहिम शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

١٤- باب قوله ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ، فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾

और मैं उन पर गवाह रहा जब तक मैं उनके बीच मौजूद रहा, फिर जब तू ने मुझे उठा लिया (जबसे) तू ही उन पर निगराँ है और तू तो हर चीज़ पर गवाह है।

क़यामत के दिन ह़ज़रत ईसा इन लफ़्ज़ों में अपनी सफ़ाई पेश करेंगे।

4625. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमको मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया, ऐ लोगों! तुम अल्लाह के पास जमा किये जाओगे, नंगे पैर, नंगे जिस्म और बग़ैर ख़त्ना के, फिर आपने ये आयत पढ़ी। जिस त़रह मैंने

٤٦٢٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ النُّعْمَانِ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ إِلَى اللهِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً)).

अव्वल बार पैदा करने के वक़्त इब्तिदा की थी, उसी त़रह उसे दोबारा ज़िन्दा कर दूंगा, मेरे ज़िम्मे वा'दा है, मैं ज़रूर उसे करके ही रहूंगा, आख़िर आयत तक। फिर फ़र्माया क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ में सबसे पहले ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहि.) को कपड़ा पहनाया जाएगा। हाँ और मेरी उम्मत के कुछ लोगों को लाया जाएगा और उन्हें जहन्नम के बाएँ त़रफ़ ले जाया जाएगा। मैं अर्ज़ करूँगा, मेरे रब! ये तो मेरे उम्मती हैं? मुझसे कहा जाएगा आपको नहीं मा'लूम है कि उन्होंने आपके बाद नई-नई बातें शरीअत में निकाली थीं। उस वक़्त भी वही कहूँगा जो अब्दुस्सालेह ह़ज़रत ईसा (अलैहि.) ने कहा होगा कि, मैं उनका हाल देखता रहा जब तक मैं उनके बीच रहा, फिर जब तू ने मुझे उठा लिया (जबसे) तू ही उन पर निगराँ है, मुझे बताया जाएगा कि आपकी जुदाई के बाद ये लोग दीन से फिर गये थे। (राजेअ : 3349)

ثُمَّ قَالَ: ((﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ﴾)) إِلَى آخِرِ الآيَةِ. ثُمَّ قَالَ: ((أَلاَ وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلاَئِقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ، أَلاَ وَإِنَّهُ يُجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أُصَيْحَابِي فَيُقَالُ: إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، فَأَقُولُ: كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ : ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾ فَيُقَالُ: إِنَّ هَؤُلاَءِ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ)).

[راجع: ٣٣٤٩]

क़स्त़लानी (रह) ने कहा, मुराद वो गंवार लोग हैं जो ख़ाली दुनिया की रग़बत से मुसलमान हुए थे और आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद वो इस्लाम से फिर गये थे और वो तमाम अहले बिदअत मुराद हैं जिनका ओढ़ना बिछौना बिदआत बनी हुई हैं।

बाब 15 : आयत 'इन तुअज़्ज़िब्हुम फ़इन्नहुम इबादुक'

١٥- باب قَوْلِهِ : ﴿إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾.

अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी, तू अगर उन्हें अज़ाब दे तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो भी तू ज़बरदस्त ह़िक्मत वाला है।

मग़्फ़िरत का मामला मशीयते इलाही के ह़वाले है। इसमें किसी को चूँ चरा की गुंजाइश नहीं। हाँ जिनके लिये ख़ुलूद वाजिब कर दी गई है वो बहरहाल मग़्फ़िरत से मह़रूम ही रहेंगे।

4626. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुग़ीरह बिन नोअमान ने बयान किया, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें क़यामत के दिन जमा किया जाएगा और कुछ लोगों को जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाएगा। उस वक़्त मैं भी वही कहूँगा जो नेक बन्दे ने कहा होगा। मैं उनका ह़ाल देखता रहा जब तक मैं उनके बीच रहा, आख़िर आयत अल् अज़ीज़ुल हकीम तक। (राजेअ :

٤٦٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ النُّعْمَانِ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ، وَإِنَّ نَاسًا يُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ- إِلَى قَوْلِهِ - الْعَزِيزُ

الْحَكِيمُ﴾. [راجع: ٣٣٤٩]

3349)

सूरह अन्आम

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ी

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ مَعْذِرَتُهُمْ مَعْرُوشَاتٍ: مَا يُعْرَشُ مِنَ الْكَرْمِ وَغَيْرِ ذَلِكَ، حَمُولَةً: مَا يُحْمَلُ عَلَيْهَا، وَلَلَبَسْنَا: لَشَبَّهْنَا، وَيَنْأَوْنَ، يَتَبَاعَدُونَ، تُبْسَلَ: تُفْضَحَ، أُبْسِلُوا: أُفْضِحُوا، بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ: الْبَسْطُ الضَّرْبُ، اسْتَكْثَرْتُمْ: أَضْلَلْتُمْ كَثِيرًا. ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ : جَعَلُوا لله مِنْ ثَمَرَاتِهِمْ وَمَا لِهُمْ نَصِيبًا وَلِلشَّيْطَانِ وَالأَوْثَانِ نَصِيبًا. أَكِنَّةً وَاحِدُهَا : كِنَانٌ، أَمَّا اشْتَمَلَتْ يَعْنِي هَلْ تَشْتَمِلُ إِلاَّ عَلَى ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَى؟ فَلِمَ تُحَرِّمُونَ بَعْضًا وَتُحِلُّونَ بَعْضًا. مَسْفُوحًا: مُهْرَاقًا، صَدَفَ: أَعْرَضَ. أُبْلِسُوا: أُويِسُوا. أُبْسِلُوا: أُسْلِمُوا. سَرْمَدًا: دَائِمًا. اسْتَهْوَتْهُ أَضَلَّتْهُ. تَمْتَرُونَ: تَشُكُّونَ، وَقْرًا: صَمَمٌ، وَأَمَّا الْوِقْرُ فَإِنَّهُ الْحِمْلُ. أَسَاطِيرُ : وَاحِدُهَا أُسْطُورَةٌ وَإِسْطَارَةٌ وَهِيَ التُّرَّهَاتُ، أَلْبَأْسَاءُ مِنَ الْبَأْسِ وَيَكُونُ مِنَ الْبُؤْسِ. جَهْرَةً: مُعَايَنَةً، الصُّوَرِ: جَمَاعَةُ صُورَةٍ كَقَوْلِهِ: سُورَةٌ وَسُوَرٌ، مَلَكُوتٌ: مُلْكٌ مِثْلَ رَهَبُوتٍ خَيْرٌ مِنْ رَحَمُوتٍ وَيَقُولُ تُرْهَبُ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تُرْحَمَ، جَنَّ: أَظْلَمَ، يُقَالُ: عَلَى الله حُسْبَانُهُ أَيْ حِسَابُهُ، وَيُقَالُ

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा षुम्मा लम् तकुन् फ़ितम्तहुम का मा'नी फिर उनका और कोई बहाना न होगा। मअ़रूशात का मा'नी टट्टियों पर चढ़ाए हुए जैसे अंगूर वग़ैरह (जिनकी बेल होती हैं) ह़मूलत का मा'नी लद्दू या'नी बोझ लादने के जानवर वलल् बस्ना का मा'नी हम शुब्हा डाल देंगे। व यन्औना का मा'नी दूर हो जाते हैं। तुब्सलु का मा'नी रुस्वा किया जाए। उब्सिलु रुस्वा किये गये। बासितू अयदीहिम में बस्तु के मा'नी मारना। अस्तक्षरतुम या'नी तुमने बहुतों को गुमराह किया (व जअ़लुल्लाह मिम्मा ज़राआ मिनल् ह़रषि वल् अन्आम नसीबा) या'नी उन्होंने अपने फलों और मालों में अल्लाह का एक ह़िस्सा और शैतान और बुतों का एक ह़िस्सा ठहराया अकिन्नतन किनान की जमा है या'नी पर्दा (अम्मश् तमलत अ़लैहा अरह़ामुल् उन्षययन) या'नी क्या मादों की पेट में नर मादा नहीं होते फिर तुम एक को ह़राम एक को ह़लाल क्यूँ बनाते हो और दमम मस्फ़ूह़ा या'नी बहाया गया ख़ून। व स़दफ़ा का मा'नी चेहरा फेरा। उब्सिलू का मा'नी नाउम्मीद हुए। फ़इज़ाहुम मुब्लिसून में और उब्सिलू बिमा कसबू में ये मा'नी है कि हलाकत के लिये सुपुर्द किये गये सरमदन का मा'नी हमेशा इस्तहवतहू का मा'नी गुमराह किया तम्तरूना का मा'नी शक करते हो। वक़्र का मा'नी बोझ (जिससे कान बहरा हो) और विक़्र ब कसरा वाव बोझ जो जानवर पर लादा जाए असात़ीरु उस्तुरतुन और इस्त़ारतुन की जमा है या'नी वाहियात और लग़्व बातें अल बासाइ बासन से निकला है या'नी सख़्त मायूस से या'नी तकलीफ़ और मुह़्ताजी नेज़बुअसि से भी आता है और मुह़ताज, जहरतन खुल्लम खुल्ला स़ूर (यौमा युन्फ़ख़ु फ़िस़् स़ूर) में स़ूरत की जमा है जैसे सूर सूरत की जमा, मलकूतु से मुल्क या'नी सल्त़नत मुराद है। जैसे रहबूत और ह़मूत मिष्ल है रहबूत (या'नी डर) रह़मूत (मेहरबानी) से बेहतर है और कहते हैं तेरा डराया जाना बच्चे पर मेहरबानी करने से बेहतर है। जन्ना अ़लैहिल्लैलि रात की अंधेरी उस पर छा गई। हुस्बान का मा'नी

हिसाब के हैं अल्लाह पर उसका हुस्बान या'नी हिसाब है और कुछ ने कहा हुस्बान से मुराद तीर और शैतान पर फेंकने के हर्बे मुस्तक़र बाप की पुश्त मुस्तवदउ मा का पेट क़िन्व (ख़ौशा) कुछ उसका तस्निया क़िन्वान और जमा भी क़िन्वान जैसे सिन्व व सिन्वान। (या'नी जड़ मिले हुए पेड़)

حُسْبَانًا: مَرَامِيَ وَرُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ. مُسْتَقَرٌّ: فِي الصُّلْبِ، وَمُسْتَوْدَعٌ: فِي الرَّحِمِ. الْقِنْوُ الْعِذْقُ وَالاثْنَانِ قِنْوَانِ وَالْجَمَاعَةُ أَيْضًا قِنْوَانٌ مِثْلُ صِنْوٍ وَصِنْوَانٍ.

बाब 1 : आयत 'व इन्दहू मफ़ातिहुल्गैबि' अल्अख़

١- باب قوله ﴿وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ هُوَ﴾

की तफ़्सीर या'नी, और उसी के पास हैं ग़ैब के ख़ज़ाने, उन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता।

4627. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ैब के ख़ज़ाने पाँच हैं। जैसा कि इर्शादे बारी है। बेशक अल्लाह ही को क़यामत की ख़बर है और वही जानता है कि रहमों में क्या है और कोई भी नहीं जान सकता कि वो कल क्या अ़मल करेगा और न कोई ये जान सकता है कि वो किस ज़मीन पर मरेगा, बेशक अल्लाह ही इल्म वाला है, ख़बर रखने वाला है। (राजेअ़ : 1039)

٤٦٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ ﴿إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ﴾)). [راجع: ١٠٣٩]

इन पाँच चीज़ों की ख़बर अल्लाह के सिवा किसी को नहीं है। यहाँ तक कि कोई नबी, रसूल, बुज़ुर्ग उन्हें नहीं जानता न आजकल के साइंसदाँ, कोई हत्मी (यक़ीनी) ख़बर इनके बारे में दे सकते हैं जो लोग ऐसा दा'वा करें वो झूठे हैं।

बाब 2 : आयत 'क़ुल हुवल्क़ादिरू अ़ला अंय्यब्अ़ष' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قَوْلِهِ: ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ الآيَة. يَلْبِسَكُمْ يَخْلِطَكُمْ مِنَ الالْتِبَاسِ. يَلْبِسُوا : يَخْلِطُوا. شِيَعًا : فِرَقًا.

आप कह दें कि अल्लाह इस पर क़ादिर है कि तुम्हारे ऊपर से कोई अ़ज़ाब भेज दे। आख़िर आयत तक। यल्बिसकुम का मा'नी मिला दे ख़लत़–मलत़ कर दे। ये इल्तिबास से निकला है। शियअ़न फ़िरक़ा गिरोह गिरोह फ़िर्क़े फ़िर्क़े।

4628. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत, क़ुल हुवल्क़ादिरु अ़ला अंय्यब्अ़ष अ़लैकुम

٤٦٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ

الآيةُ ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ)) ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ﴾ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((هَذَا أَهْوَنُ أَوْ هَذَا أَيْسَرُ)).

[طرفاه في : ٧٣١٣، ٧٤٠٦].

अज़ाबन मिन फौक़िकुम नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कहा, ऐ अल्लाह! मैं तेरे चेहरे की पनाह मांगता हूँ, फिर ये उतरा। औ मिन तहति अर्जुलिकुम आपने फ़र्माया, या अल्लाह! मैं तेरे चेहरे की पनाह मांगता हूँ। फिर ये उतरा। औ यल्बिसकुम शियअनव्वं युज़ीक बअज़कुम बास बअज़िन उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये पहले अज़ाबों से हल्का या आसान है। (दीगर मक़ाम : 7313, 7406)

तश्रीह : क्योंकि पहले अज़ाब तो आम अज़ाब थे, जिससे कोई न बचता, इसमें तो कुछ बचे रहते हैं, कुछ मारे जाते हैं। दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह ने मेरी उम्मत पर से रजम या'नी आसमान से पत्थर बरसने का अज़ाब और ख़स्फ़ या'नी ज़मीन में धंसने का अज़ाब मौक़ूफ़ रखा पर ये अज़ाब या'नी आपस की फूट और नाइत्तिफ़ाक़ी का अज़ाब बाक़ी रखा। कुछ ने कहा मौक़ूफ़ रखने का मतलब ये है कि सहाबा (रज़ि.) के ज़माने में ये अज़ाब मौक़ूफ़ रखा। आइन्दा इस उम्मत में ख़स्फ़ और क़ज़्फ़ और मस्ख़ होगा, जैसे दूसरी हदीष़ में है।

٣- باب قوله ﴿وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾

बाब 3 : आयत 'व लम यल्बिसू ईमानहुम बिज़ुल्म'

अल्अऩ्ख़ की तफ़्सीर या'नी, जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान को ज़ुल्म से ख़लत़ मलत़ नहीं किया। यहाँ ज़ुल्म से मुराद शिर्क है।

٤٦٢٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ ﴿وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ قَالَ أَصْحَابُهُ: وَأَيُّنَا لَمْ يَظْلِمْ فَنَزَلَتْ : ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾. [راجع: ٣٢]

4629. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अदी ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे सुलैमान ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने औरउनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, व लम् यल्बिसू ईमानहुम बिज़ुल्मिन नाज़िल हुई तो सहाबा (रज़ि.) ने कहा, हममें कौन होगा जिसका दामन ज़ुल्म से पाक हो। इस पर ये आयत उतरी, **बेशक शिर्क ज़ुल्मे अज़ीम है।** (राजेअ : 32)

तश्रीह : सहाबा किराम (रज़ि.) ने पहले लफ़्ज़ ज़ुल्म को आम मआनी में समझा जिस पर अल्लाह ने बतलाया कि यहाँ ज़ुल्म से मुराद शिर्क है। अगर शिर्क ज़र्रा बराबर भी ईमान में दाख़िल हुआ तो वो सारा ही ईमान ग़ारत हो जाता है।

٤- باب قَوْلِهِ : ﴿وَيُونُسَ وَلُوطًا وَكُلاًّ فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ﴾

बाब 4 : आयत 'व यूनुस व लूतव्वं कुल्लन फ़ज़्ज़लना'

अल्अऩ्ख़ की तफ़्सीर या'नी, और हज़रत यूनुस और हज़रत लूत़ (अ़लैहि.) को और उनमें से सबको मैंने जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी थी।

٤٦٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا

4630. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमसे इब्ने मह्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आ़लिया ने बयान किया कि मुझसे तुम्हारे नबी के चचाज़ाद भाई या'नी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी के लिये मुनासिब नहीं कि मुझे यूनुस बिन मत्ता (अ़लैहि.)से बेहतर बताए। (राजेअ़ : 3395)

ابْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، قَالَ : حَدَّثَنِي ابْنُ عَمِّ نَبِيِّكُمْ يَعْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى)).

[راجع: ٣٣٩٥]

4631. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको सअ़द बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, उन्होने कहा कि मैंने हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.)से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी शख़्स के लिये जाइज़ नहीं कि मुझे यूनुस बिन मत्ता (अ़लैहि.) से बेहतर बताए। (राजेअ़ : 3415) (इस पर नोट पहले गुज़र चुका है।)

٤٦٣١- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا سَعْدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ : سَمِعْتُ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى)).

[راجع: ٣٤١٥]

बाब 5 : आयत 'उलाइकल्लज़ीन हदल्लाहू' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

या'नी, यही वो लोग हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने हिदायत की थी, सो आप भी उनकी हिदायत की पैरवी करें।

٥- باب قَوْلِهِ : ﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾

4632. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे सुलैमान अह्वल ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने ख़बर दी कि उन्होंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा क्या सूरह स़ॉद में सज्दा है? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बतलाया, हाँ। फिर आपने आयत, ववहब्ना से फबिहुदाहुमुक़्तहिद तक पढ़ी और कहा कि दाऊद (अ़लैहि.) भी उन अंबिया में शामिल हैं। (जिनका ज़िक्र आयत में हुआ है) यज़ीद बिन हारून, मुहम्मद बिन उ़बैद और सहल बिन यूसुफ़ ने अ़वाम बिन ह़ौशब से, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा, तो उन्होंने कहा तुम्हारे नबी भी उनमें से हैं जिन्हें अगले अंबिया की इक़्तिदा का हुक्म दिया गया है।

٤٦٣٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ، قَالَ أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ الأَحْوَلُ أَنَّ مُجَاهِدًا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَأَلَ ابْنَ عَبَّاسٍ أَفِي (ص) سَجْدَةٌ؟ فَقَالَ : نَعَمْ، ثُمَّ تَلاَ. ﴿وَوَهَبْنَا - إِلَى قَوْلِهِ - فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾ ثُمَّ قَالَ: هُوَ مِنْهُمْ. زَادَ يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ، وَسَهْلُ بْنُ يُوسُفَ، عَنِ الْعَوَّامِ عَنْ مُجَاهِدٍ، قُلْتُ لابْنِ عَبَّاسٍ: فَقَالَ نَبِيُّكُمْ ﷺ مِمَّنْ أُمِرَ أَنْ يَقْتَدِيَ بِهِمْ.

(राजेअ़ : 3421)

[راجع: ٣٤٢١]

बाब 6 : आयत 'व अलल्लज़ीन हादूहर्रम्ना' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب

قَوْلِهِ: ﴿وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا﴾ الآيَةَ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : كُلَّ ذِي ظُفُرٍ الْبَعِيرُ وَالنَّعَامَةُ. الْحَوَايَا: الْمَبْعَرُ، وَقَالَ غَيْرُهُ: هَادُوا صَارُوا يَهُودًا، وَأَمَّا قَوْلُهُ هُدْنَا: تُبْنَا. هَائِدٌ: تَائِبٌ.

और जो लोग कि यहूदी हुए उन पर नाख़ून वाले सारे जानवर मैंने हराम कर दिये थे और गाय और बकरी में से मैंने उन पर उन दोनों की चर्बियाँ हराम कर दी थीं, आख़िर आयत तक। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि कुल्ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन से मुराद ऊँट और शुतुरमुर्ग़ हैं। लफ़्ज़ अल हवाया बमा'नी ओझड़ी के हैं और उनके सिवा एक और ने कहा कि हादू के मा'नी हैं कि वो यहूदी हो गये। लेकिन सूरह आराफ़ में लफ़्ज़ हदना का मा'नी ये है कि हमने तौबा की इसी से लफ़्ज़ हाइद कहते हैं तौबा करने वाले को।

٤٦٣٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، قَالَ عَطَاءٌ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((قَاتَلَ اللهُ الْيَهُودَ لَمَّا حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِمْ شُحُومَهَا جَمَلُوهُ ثُمَّ بَاعُوهُ فَأَكَلُوهَا)) وَقَالَ أَبُو عَاصِمٍ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ كَتَبَ إِلَيَّ عَطَاءٌ سَمِعْتُ جَابِرًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٢٣٦]

4633. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने कि अ़ता ने बयान किया कि उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह यहूदियों को ग़ारत करे, जब अल्लाह तआ़ला ने उन पर मुर्दा जानवरों की चर्बी हराम कर दी तो उसका तेल निकाल कर उसे बेचने और खाने लगे। और अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने बयान किया, उन्हें अ़ता ने लिखा था कि मैंने जाबिर (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 2236)

मा'लूम होता है कि यहूदी फ़ुक़हा में मुख़्तलिफ़ हीलों से हराम को हलाल बना लेने का आ़म दस्तूर था, जिसकी एक मिष़ाल यहाँ मज़्कूर है। फ़ुक़हा-ए-इस्लाम के लिये भी ये डर का मुक़ाम है।

बाब 7 : आयत 'व ला तक़रबुल्फ़वाहिश मा ज़हर मिन्हा' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٧- باب قَوْلِهِ : ﴿وَلاَ تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ﴾

और बेहयाइयों के नज़दीक भी न जाओ (ख़्वाह) वो ज़ाहिर हों और (ख़्वाह) पोशीदा हों। हर क़िस्म की बेहयाई से बचो।

4634. हमसे हफ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह से ज़्यादा और कोई

٤٦٣٤- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ

ग़ैरतमन्द नहीं, यही वजह है कि उसने बेहयाइयों को हराम क़रार दिया है। ख़्वाह वो ज़ाहिर हों ख़्वाह पोशीदा और अल्लाह को अपनी ता'रीफ़ से ज़्यादा और कोई चीज़ पसंद नहीं, यही वजह है कि उसने अपनी ख़ुद मदह की है। (अम्र बिन मुर्रह ने बयान किया कि) मैंने पूछा आपने ये हदीष ख़ुद अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से सुनी थी? उन्होंने बयान किया कि हाँ, मैंने पूछा और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के हवाले से हदीष से बयान की थी? कहा कि हाँ। (दीगर मक़ाम : 4637, 5220, 7403)

الله رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ : ((لاَ أَحَدَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ وَلِذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ، مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلاَ شَيْءٍ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللهِ وَلِذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ)). قُلْتُ سَمِعْتَهُ مِنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ وَرَفَعَهُ قَالَ : نَعَمْ.

[أطرافه في : ٤٦٣٧، ٥٢٢٠، ٧٤٠٣].

बाब : 8

٨ - باب

वकील के मा'नी निगाहबान घेर लेने वाला। क़ुबुलन क़बील की जमा है या'नी अज़ाब की क़िस्में क़बील एक एक क़िस्म ज़ुख़रुफ़ लग़्व और बेकार चीज़ (या बात) जिसको ज़ाहिर में आरास्ता पैरास्ता करें (ज़ुख़रुफ़ुल् क़ौल, चिकनी चुपड़ी बातें) हर्षुन हिज्रुन या'नी रोकी गई, हिज्र कहते हैं हराम और मम्नूअ को इसी से है। हिज्र महजूर और हजर इमारत को भी कहते हैं और मादा घोड़ियों को भी और अक़्ल को भी हजर और हज्जी कहते हैं और अस्हाबुल हिज्र में षमूद की बस्ती वाले मुराद हैं और जिस ज़मीन को तू रोक दे उसमें कोई आने और जानवर चराने न पाये उसको भी हिज्र कहते हैं। उसी से ख़ान-ए-का'बा के हतीम को हिज्र कहते हैं। हतीम महतूम के मा'नों में है जैसे क़तील मक़्तूल के मा'नी में अब रहा यमाज का हिज्र तो वो एक मुक़ाम का नाम है।

وَكِيلٌ حَفِيظٌ وَمُحِيطٌ بِهِ. قُبُلاً جَمْعُ قَبِيلٍ. وَالْمَعْنَى أَنَّهُ ضُرُوبٌ لِلْعَذَابِ، كُلُّ ضَرْبٍ مِنْهَا قَبِيلٌ، زُخْرُفَ الْقَوْلِ كُلُّ شَيْءٍ حَسَّنْتَهُ وَوَشَّيْتَهُ، وَهُوَ بَاطِلٌ فَهُوَ زُخْرُفٌ، وَحَرْثٌ حِجْرٌ حَرَامٌ وَكُلُّ مَمْنُوعٍ فَهُوَ حِجْرٌ مَحْجُورٌ وَالْحِجْرُ كُلُّ بِنَاءٍ بَنَيْتَهُ وَيُقَالُ لِلأُنْثَى مِنَ الْخَيْلِ حِجْرٌ وَيُقَالُ لِلْعَقْلِ: حِجْرٌ وَحِجًى وَأَمَّا الْحِجْرُ فَمَوْضِعُ ثَمُودَ، وَمَا حَجَّرْتَ عَلَيْهِ مِنَ الأَرْضِ فَهُوَ حِجْرٌ وَمِنْهُ سُمِّيَ حَطِيمُ الْبَيْتِ حِجْرًا، كَأَنَّهُ مُشْتَقٌّ مِنْ مَحْطُومٍ مِثْلُ قَتِيلٍ مِنْ مَقْتُولٍ وَأَمَّا حَجْرُ الْيَمَامَةِ فَهُوَ مَنْزِلٌ.

बाब 9 : आयत 'हलुम्म शुहदाअकुम' अल्अय़ की

٩- باب قَوْلِهِ : ﴿هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمْ﴾

तफ़्सीर या'नी, आप कहिए कि अपने गवाहों को लाओ। हलुम्मा अहले हिजाज़ की बोली में वाहिद, तष्निया, और जमा सबके लिये बोला जाता है।

لُغَةُ أَهْلِ الْحِجَازِ هَلُمَّ لِلْوَاحِدِ وَالاثْنَيْنِ وَالْجَمْعِ ﴿لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا﴾

4635. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे

٤٦٣٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ. حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ. حَدَّثَنَا عُمَارَةُ حَدَّثَنَا

अम्मारा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ज़ुरआ ने बयान किया, कहा हमसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस वक़्त तक क़यामत क़ायम न होगी, जब तक सूरज मग़्रिब से तुलूअ न हो ले। जब लोग उसे देखेंगे तो ईमान लाएँगे लेकिन ये वो वक़्त होगा जब किसी ऐसे शख़्स को उसका ईमान कोई नफ़ा न देगा जो पहले से ईमान न रखता हो। (राजेअ : 85)

أَبُو زُرْعَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا، فَإِذَا رَآهَا النَّاسُ آمَنَ مَنْ عَلَيْهَا فَذَاكَ حِينَ لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ)). [راجع: ٨٥]

ये क़यामत क़ायम होने की आख़िरी अलामत (निशानी) है जो अपने वक़्त पर ज़रूर ज़ाहिर होकर रहेगी मगर उसका वक़्त अल्लाह ही को मा'लूम है।

4636. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक सूरज मग़्रिब से न तुलूअ हो ले। जब मग़्रिब से सूरज तुलूअ होगा और लोग देख लेंगे तो सब ईमान लाएँगे लेकिन ये वक़्त होगा जब किसी को उसका ईमान नफ़ा न देगा, फिर आप (ﷺ) ने उस आयत की तिलावत की।

٤٦٣٦- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا فَإِذَا طَلَعَتْ وَرَآهَا النَّاسُ آمَنُوا أَجْمَعُونَ وَذَلِكَ حِينَ لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا)) ثُمَّ قَرَأَ الآيَةَ.

सूरह आराफ़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, युवारी सवआतिकुम व रियाशा में रियाशन से माल अस्बाब मुराद है ला युहिब्बुल् मुअ़तदीन में मुअ़तदीन से दुआ में हद से बढ़ जाने वाले मुराद हैं। अफ़्वा का मा'नी बहुत हो गये उनके माल ज़्यादा हो गये। फ़त्ताह कहते हैं, फ़ैसला करने वाले को इफ़्तह बैनना हमारा फ़ैसला कर, नतक़्ना उठाया, अम्बजसत फूट निकले, मुतब्बर तबाही नुक़्सान, आसा ग़म खाओ फ़ला तास ग़म न खा। औरों ने कहा मम्मनअक अल्ला तस्जुद में ला ज़ाइद है। या'नी तुझे सज्दा करने से किस बात ने रोका यख़्सिफ़ानि मिव् वरक़िल जन्नत उन्होंने बहिश्त के पत्तों का दोना बना लिया या'नी बहिश्त के पत्ते अपने ऊपर जोड़ लिये (ताकि सतर नज़र

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : وَرِيَاشًا: الْمَالُ ﴿إِنَّهُ لاَ يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ﴾ فِي الدُّعَاءِ وَفِي غَيْرِهِ، عَفَوْا: كَثُرُوا أَمْوَالُهُمْ. الْفَتَّاحُ: الْقَاضِي، افْتَحْ بَيْنَنَا : اقْضِ بَيْنَنَا، نَتَقْنَا: رَفَعْنَا. انْبَجَسَتْ : انْفَجَرَتْ، مُتَبَّرٌ : خُسْرَانٌ : آسَى : أَحْزَنُ تَأْسَ : تَحْزَنْ. وَقَالَ غَيْرُهُ : مَا مَنَعَكَ أَلاَّ تَسْجُدَ يُقَالُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ؟ يَخْصِفَانِ: أَخَذَا الْخِصَافَ مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ يُؤَلِّفَانِ الْوَرَقَ : يَخْصِفَانِ الْوَرَقَ بَعْضَهُ إِلَى بَعْضٍ، سَوْءَاتِهِمَا: كِنَايَةٌ

عَنْ فَرْجَيْهِمَا، وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ: هَهُنَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَالْحِينُ عِنْدَ الْعَرَبِ مِنْ سَاعَةٍ إِلَى مَا لاَ يُحْصَى عَدَدُهَا. الرِّيَاشُ وَالرِّيشُ: وَاحِدٌ وَهُوَ مَا ظَهَرَ مِنَ اللِّبَاسِ، قَبِيلُهُ : جِيلُهُ الَّذِي هُوَ مِنْهُمْ، ادَّارَكُوا: اجْتَمَعُوا، وَمَشَاقُّ الإِنْسَانِ وَالدَّابَّةِ كُلُّهُمْ يُسَمَّى سُمُومًا وَاحِدُهَا سَمٌّ وَهْيَ عَيْنَاهُ وَمَنْخِرَاهُ وَفَمُهُ وَأُذُنَاهُ وَدُبُرُهُ وَإِحْلِيلُهُ : غَوَاشٍ: مَا غُشُوا بِهِ، نُشُرًا : مُتَفَرِّقَةً، نَكِدًا: قَلِيلاً، يَغْنَوْا: يَعِيشُوا، حَقِيقٌ : حَقٌّ، اسْتَرْهَبُوهُمْ : مِنَ الرَّهْبَةِ. تَلَقَّفُ : تَلَقَّمُ، طَائِرُهُمْ : حَظُّهُمْ، طُوفَانٌ : مِنَ السَّيْلِ وَيُقَالُ لِلْمَوْتِ الْكَثِيرِ الطُّوفَانُ. الْقُمَّلُ : الْحَمْنَانُ يُشْبِهُ صِغَارَ الْحَلَمِ. عُرُوشٌ وَعَرِيشٌ : بِنَاءٌ، سُقِطَ كُلُّ مَنْ نَدِمَ. فَقَدْ سُقِطَ فِي يَدِهِ. الأَسْبَاطُ قَبَائِلُ بَنِي إِسْرَائِيلَ، يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ يَتَعَدَّوْنَ لَهُ يُجَاوِزُونَ تَعْدُ تُجَاوِزْ. شُرَّعًا: شَوَارِعَ، بَئِيسٍ: شَدِيدٍ، أَخْلَدَ: قَعَدَ وَتَقَاعَسَ، سَنَسْتَدْرِجُهُمْ : أَيْ نَأْتِيهِمْ مِنْ مَأْمَنِهِمْ. كَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَأَتَاهُمُ اللهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا﴾ مِنْ جِنَّةٍ: مِنْ جُنُونٍ، فَمَرَّتْ بِهِ اسْتَمَرَّ بِهَا الْحَمْلُ فَأَتَمَّتْهُ. يَنْزَغَنَّكَ: يَسْتَخِفَّنَّكَ، طَيْفٌ : مُلِمٌّ بِهِ لَمَمٌ. وَيُقَالُ طَائِفٌ وَهُوَ وَاحِدٌ، يَمُدُّونَهُمْ: يُزَيِّنُونَ، وَخِيفَةً: خَوْفًا، وَخُفْيَةً : مِنَ الإِخْفَاءِ. وَالآصَالُ: وَاحِدُهَا أَصِيلٌ وَهُوَ مَا بَيْنَ الْعَصْرِ إِلَى الْمَغْرِبِ كَقَوْلِكَ: بُكْرَةً، وَأَصِيلاً.

न आए) सवआतिहिमा से शर्मगाह मुराद है। मताउन् इला ह़ीन में ह़ीन से क़यामत मुराद है। अ़रब के मुहावरे में ह़ीन एक साअ़त से लेकर बेइंतिहा मुद्दत को कह सकते हैं। रियाश और रैश के मा'नी एक हैं या'नी ज़ाहिरी लिबास, क़बीलुहू उसकी ज़ात वाले शैत़ान जिनमें से वो ख़ुद भी है। अद्दारकू इकट्ठा हो जाएँगे आदमी और जानवर सबके सूराख़ (या मसासों) को समूम कहते हैं उसका मुफ़रद सम्म है या'नी आँख के सूराख़ नथुने चेहरे, कान, पाख़ाना का मुक़ाम पेशाब का मुक़ाम ग़वाश ग़िलाफ़ जिससे ढाँपे जाएँगे नशरा मुतफ़र्रिक़ नकिदा थोड़ा यग़्नू जिये या बसे, ह़क़ीक़ ह़क़ वाजिब इस्तरहबूहुम रह्बत से निकला है या'नी डराया तुल्क़िफ़ लुक़्मा करने लगा (निगलने लगा) त़ाइरुहुम उनका नस़ीबा ह़िस़्सा तूफ़ान सैलाब, कभी मौत की कष़रत को भी तूफ़ान कहते हैं। क़मल चीचड़ियाँ छोटी जूओं की त़रह़ उ़रूश और उ़रैश इमारत, सुक़ित़ जब कोई शर्मिन्दा होता है तो कहते हैं सुक़ित़ फ़ी यदिही। अस्बात़ बनी इस्राईल के ख़ानदान क़बीले यअ़दून फ़िस्सब्ति हफ़्ता के दिन ह़द से बढ़ जाते थे उसी से है तअ़द या'नी ह़द से बढ़ जाए, शरअ़न पानी के ऊपर तैरते हुए बईस सख़्त अख़्लद बैठ रहा, पीछे हट गया। सनस्तद रिजुहुम या'नी जहाँ से उनको डर न होगा उधर से हम आएँगे जैसे इस आयत में है (फ़आताहुमुल्लाह मिन हैषु लम् यह़्तषिबू) या'नी अल्लाह का अ़ज़ाब उधर से आ पहुँचा जिधर से गुमान न था मिन जिन्नतिन या'नी जुनून दीवानगी फ़मर्रत बिही बराबर पेट रहा, उसने पेट की मुद्दत पूरी की यन्ज़ग़न्नका गुदगुदाए फुसलाए त़ैफ़ा और त़ाइफ़ शैत़ान की त़रफ़ से जो उतरे या'नी वस्वसा आए। दोनों का मा'नी एक है यमुद्दुनहुम उनको अच्छा कर दिखलाते हैं ख़ीफ़ति का मा'नी ख़ौफ़ डर ख़फ़्या इख़्फ़ाअ से है या'नी चुपके चुपके आस़ाल अस़ील की जमा है वो वक़्त जो अ़स्र से मग़्रिब तक होता है जैसे इस आयत में है बुकरतवं व अस़ीला।

बाब 1 : आयत 'क़ुल इन्नमा हर्रम रब्बियल्फ़वाहिश'

١- باب قوله عزوجل ﴿قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ﴾

अल्अऱ्ख की तफ़्सीर या'नी, आप कह दें कि मेरे परवरदिगार ने बेह़याई के कामों को ह़राम किया है। उनमें से जो ज़ाहिर हों (उनको भी) और जो छुपे हुए हों। (उनको भी)

4637. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने (अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया कि) मैंने (अबू वाइल से) पूछा, क्या तुमने ये हदीष़ इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से ख़ुद सुनी है? उन्होंने कहा कि हाँ और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बयान किया, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह से ज़्यादा और कोई ग़ैरतमन्द नहीं है। इसीलिये उसने बेह़याइयों को ह़राम किया ख़्वाह ज़ाहिर में हों या पोशीदा और अल्लाह से ज़्यादा अपनी मदह़ को पसन्द करने वाला और कोई नहीं, इसीलिये उसने अपने नफ़्स की ख़ुद ता'रीफ़ की है। (राजेअ़ :4634)

٤٦٣٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قُلْتُ أَنْتَ سَمِعْتَ هَذَا مِنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : نَعَمْ، وَرَفَعَهُ قَالَ : لاَ أَحَدَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ فَلِذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلاَ أَحَدَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمِدْحَةُ مِنَ اللهِ فَلِذَلِكَ مَدَحَ نَفْسَهُ.

[راجع: ٤٦٣٤]

तश्रीह : अहले ह़दीष़ ने सिफ़ाते इलाहिया जैसे ग़ज़ब, ज़ह़क, तअ़ज्जुब, फ़रह़ की त़रह ग़ैरत की भी तावील नहीं की है और उनको उनके ज़ाहिरी मआ़नी पर रखा है। जो परवरदिगार की शान के लायक़ है और सलफ़े स़ालिह़ीन का यही त़रीक़ा है। व नह़नु अ़ला ज़ालिका मिनश शाहिदीन।

बाब 2 : आयत 'व लम्मा जाअ मूसा लिमीक़ातिना व कल्लमहू रब्बुहू' अल्अऱ्ख की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله

﴿وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ: رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ قَالَ لَنْ تَرَانِي وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ﴾ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَرِنِي أَعْطِنِي.

और जब मूसा मेरे मुक़र्रर कर्दा वक़्त पर (कोहे तूर) पर आ गये और उनसे उनके रब ने कलाम किया। मूसा बोले, ऐ मेरे रब! मुझे तू अपना दीदार करा दे (कि) मैं तुझको एक नज़र देख लूँ (अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया) तुम मुझे हर्गिज़ नहीं देख सकते, अल्बत्ता तुम (इस) पहाड़ की त़रफ़ देखो, सो अगर ये अपनी जगह पर क़ायम रहा तो तुम (मुझको भी देख सकोगे, फिर जब उनके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली डाली तो (तजल्ली ने) पहाड़ को टुकड़े टुकड़े कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब उन्हें होश आया तो बोले ऐ मेरे रब तू पाक है, मैं तुझसे मआ़फ़ी त़लब करता हूँ और मैं सबसे पहला ईमान लाने वाला हूं। ह़ज़रत इब्ने

अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, अरानी, अअ़तनी के मा'नी में है कि दे तू मुझको या'नी अपना दीदार अ़ता कर।

4638. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन यह्या माज़िनी ने, उनसे उनके वालिद यह्या माज़िनी ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उसके चेहरे पर किसी ने तमाचा मारा था। उसने कहा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आपके अंसारी सहाबा में से एक शख़्स ने मुझे तमाचा मारा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उन्हें बुलाओ। लोगों ने उन्हें बुलाया, फिर आप (ﷺ) ने उनसे पूछा, कि तुमने इसे तमाचा क्यूँ मारा? उसने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं यहूदियों की तरफ़ से गुज़रा तो मैंने सुना कि ये कह रहा था, उस ज़ात की क़सम! जिसने मूसा (अ़लैहि.) को तमाम इंसानों पर फ़ज़ीलत दी, मैंने कहा और मुहम्मद (ﷺ) पर भी। मुझे उसकी बात पर ग़ुस्सा आ गया और मैंने इसे तमाचा मार दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, मुझे अंबिया पर फ़ज़ीलत न दिया करो। क़यामत के दिन तमाम लोग बेहोश कर दिये जाएँगे। सबसे पहले मैं होश में आऊँगा लेकिन मैं मूसा (अ़लैहि.) को देखूँगा कि वो अ़र्श का एक पाया पकड़े हुए खड़े होंगे। अब मुझे नहीं मा'लूम कि वो मुझसे पहले होश में आ गये या तूर की बेहोशी का उन्हें बदला दिया गया। (राजेअ़ : 2412)

٤٦٣٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ قَدْ لُطِمَ وَجْهُهُ وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِكَ مِنَ الأَنْصَارِ لَطَمَ فِي وَجْهِي قَالَ : ((ادْعُوهُ)) فَدَعَوْهُ قَالَ: ((لِمَ لَطَمْتَ وَجْهَهُ؟)) قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي مَرَرْتُ بِالْيَهُودِ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْبَشَرِ. فَقُلْتُ: وَعَلَى مُحَمَّدٍ؟! وَأَخَذَتْنِي غَضْبَةٌ فَلَطَمْتُهُ قَالَ : ((لاَ تُخَيِّرُونِي مِنْ بَيْنِ الأَنْبِيَاءِ فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي أَفَاقَ قَبْلِي أَمْ جُزِيَ بِصَعْقَةِ الطُّورِ)).

[راجع: ٢٤١٢]

आयत में तूर पर हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और अल्लाह तआला की हमकलामी का बयान है जिसमें हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का तजल्ली के अष़र से बेहोश होना भी मज़्कूर है। आयत और ह़दीष़ में यही मुताबक़त है।

आयत 'अल्मन्न वस्सल्वा' की तफ़्सीर या'नी,

الْمَنَّ وَالسَّلْوَى.

मैंने तुम्हारे खाने के लिये मन्ना और सल्वा उतारा।

4639. हमसे मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने, उनसे अ़म्र बिन हुरैष़ ने और उनसे सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने

٤٦٣٩- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ حُرَيْثٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((الْكَمْأَةُ

फ़र्माया, खुम्बी मन्न मे से है और उसका पानी आँखों के लिये शिफ़ा है। (राजेअ : 4478)

مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءُ الْعَيْنِ)).

[راجع: ٤٤٧٨]

बाब 3 : आयत 'याअय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قوله

ऐ नबी! आप कह दें कि ऐ इंसानों! बेशक मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूँ, तुम सबकी तरफ़ उसी अल्लाह का जिसकी हुकूमत आसमानों में और ज़मीन में है। उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं वही जिलाता है और वही मारता है, सो ईमान लाओ अल्लाह और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ख़ुद ईमान रखता है अल्लाह और उसकी बातों पर और उसकी पैरवी करते रहो ताकि तुम हिदायत पा जाओ।

﴿قُلْ يَاأَيُّهَا النَّاسُ: إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ فَآمِنُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ﴾.

4640. हमसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन अ़ब्दुर्रहमान और मूसा बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़लाअ बिन ज़ुबैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे बुस्र बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू इदरीस ख़ौलानी ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू दर्दा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) और इ़मर (रज़ि.) के बीच कुछ बहष़ हो गई थी। ह़ज़रत इ़मर (रज़ि.) ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) पर गुस्सा हो गये और उनके पास से आने लगे। अबूबक्र (रज़ि.) भी उनके पीछे-पीछे हो गये, मुआफ़ी मांगते हुए इ़मर (रज़ि.) ने उन्हें मुआफ़ नहीं किया और (घर पहुँचकर) अंदर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। अब अबूबक्र (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम लोग उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे ये साहब (या'नी अबूबक्र रज़ि) लड़ आए हैं। रावी ने बयान किया कि इ़मर (रज़ि.) भी अपने तर्ज़े अ़मल पर नादिम हुए और हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ चले और सलाम करके आप (ﷺ) के क़रीब बैठ गये। फिर हुज़ूर (ﷺ) से सारा वाक़िया बयान किया। अबू दर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि आप (ﷺ) बहुत नाराज़ हुए। इधर अबूबक्र (रज़ि.) बार बार ये अ़र्ज़ करते कि या रसूलल्लाह! वाक़ई मेरी ही ज़्यादती थी।

٤٦٤٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَمُوسَى بْنُ هَارُونَ، قَالاَ : حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْعَلاَءِ بْنِ زَبْرٍ قَالَ : حَدَّثَنِي بُسْرُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الدَّرْدَاءِ يَقُولُ: كَانَتْ بَيْنَ أَبِي بَكْرٍ، وَعُمَرَ مُحَاوَرَةٌ فَأَغْضَبَ أَبُو بَكْرٍ عُمَرَ فَانْصَرَفَ عَنْهُ عُمَرُ مُغْضَبًا فَاتَّبَعَهُ أَبُو بَكْرٍ يَسْأَلُهُ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لَهُ فَلَمْ يَفْعَلْ حَتَّى أَغْلَقَ بَابَهُ فِي وَجْهِهِ فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: أَبُو الدَّرْدَاءِ وَنَحْنُ عِنْدَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((أَمَّا صَاحِبُكُمْ هَذَا فَقَدْ غَامَرَ)) قَالَ وَنَدِمَ عُمَرُ عَلَى مَا كَانَ مِنْهُ فَأَقْبَلَ حَتَّى سَلَّمَ وَجَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَقَصَّ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الْخَبَرَ قَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ: وَغَضِبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَجَعَلَ أَبُو بَكْرٍ

फिर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम लोग मुझे मेरे साथी से जुदा करना चाहते हो, क्या तुम लोग मेरे साथी को मुझसे जुदा करना चाहते हो, जब मैंने कहा था कि ऐ इंसानों! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ, तुम सबकी तरफ़, तो तुम लोगों ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो, उस वक़्त अबूबक्र (रज़ि) ने कहा था कि आप सच्चे हैं। अबू उ़बैदह (रज़ि.) ने कहा ग़ामर के मा'नी ह़दीष़ में ये है कि अबूबक्र (रज़ि.) ने भलाई में सबक़त की है। (राजेअ : 3661)

يَقُولُ : وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ لأَنَا كُنْتُ أَظْلَمَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلْ أَنْتُمْ تَارِكُو لِي صَاحِبِي هَلْ أَنْتُمْ تَارِكُولِي صَاحِبِي إِنِّي قُلْتُ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعاً فَقُلْتُمْ : كَذَبْتَ وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ : صَدَقْتَ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : غَامَرَ سَبَقَ بِالْخَيْرِ. [راجع: ٣٦٦١]

तश्रीह : मत़लब ये है कि अबूबक्र (रज़ि.) सबसे पहले ईमान लाए तो उनकी क़दामत इस्लाम और मेरी रिफ़ाक़त का ख़्याल रखो, उनको रंजीदा न करो। इस ह़दीष़ से ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बड़ी फ़ज़ीलत निकली। फ़िल वाक़ेअ़ इस्लाम में उनका बहुत ही बड़ा मुक़ाम है। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु।

बाब 4 : आयत 'व क़ूलू हित्ततुन' की तफ़्सीर

٤- باب قَوْلِهِ وقولوا﴿حِطَّةٌ﴾

या'नी, और कहते जाओ कि या अल्लाह! गुनाहों से हमारी तौबा है।

4641. हमसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, बनी इस्राईल से कहा गया था कि दरवाज़े में (आजिज़ी से) झुकते हुए दाख़िल हो और कहते जाओ कि तौबा है तो मैं तुम्हारी ख़त़ाएँ मुआ़फ़ कर दूंगा, लेकिन उन्होंने हुक्म बदल डाला। कूल्हों के बल घिसटते हुए दाख़िल हुए और ये कहा कि, हब्बतुन फ़ी शअ़रति या'नी हमको बालियों में दाना चाहिये। (राजेअ़ : 2403)

٤٦٤١- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قِيلَ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا : حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطَايَاكُمْ﴾ فَبَدَّلُوا فَدَخَلُوا يَزْحَفُونَ عَلَى أَسْتَاهِهِمْ وَقَالُوا : حَبَّةٌ فِي شَعَرَةٍ)). [راجع: ٣٤٠٣]

बनी इस्राईल की एक ह़रकत का बयान है कि किस ... ाह के हुक्म को बदल डाला और अल्लाह की ला'नत में गिरफ़्तार हुए।

बाब 5 : आयत 'ख़ुज़िल्अफ़्व वामुर बिल्उर्फ़ि वअरिज़' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قوله ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾ الْعُرْفُ : الْمَعْرُوفُ.

ऐ नबी! मुआ़फ़ी इख़्तियार करो और नेक कामों का हुक्म देते रहो और जाहिलों से चेहरा मोड़ियो। अल्उरफ़ मअ़रूफ़ के मा'नी में है जिसके मा'नी नेक कामों के हैं।

4642. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन

٤٦٤٢- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قوله أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ

اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ عُيَيْنَةُ بْنُ حِصْنِ بْنِ حُذَيْفَةَ فَنَزَلَ عَلَى ابْنِ أَخِيهِ الْحُرِّ بْنِ قَيْسٍ وَكَانَ مِنَ النَّفَرِ الَّذِينَ يُدْنِيهِمْ عُمَرُ، وَكَانَ الْقُرَّاءُ أَصْحَابَ مَجَالِسِ عُمَرَ وَمُشَاوَرَتِهِ كُهُولاً كَانُوا أَوْ شُبَّانًا فَقَالَ عُيَيْنَةُ لابْنِ أَخِيهِ : يَا ابْنَ أَخِي لَكَ وَجْهٌ عِنْدَ هَذَا الأَمِيرِ فَاسْتَأْذِنْ لِي عَلَيْهِ قَالَ : سَأَسْتَأْذِنُ لَكَ عَلَيْهِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَاسْتَأْذَنَ الْحُرُّ لِعُيَيْنَةَ فَأَذِنَ لَهُ عُمَرُ فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيْهِ قَالَ: هِيَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ فَوَ اللهِ مَا تُعْطِينَا الْجَزْلَ وَلاَ تَحْكُمُ بَيْنَنَا بِالْعَدْلِ فَغَضِبَ عُمَرُ حَتَّى هَمَّ بِهِ فَقَالَ لَهُ الْحُرُّ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ اللهَ تَعَالَى قَالَ لِنَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾ وَإِنَّ هَذَا مِنَ الْجَاهِلِينَ وَاللهِ مَا جَاوَزَهَا عُمَرُ حِينَ تَلاَهَا عَلَيْهِ وَكَانَ وَقَّافًا عِنْدَ كِتَابِ اللهِ.

[طرفه في : ٧٢٨٦].

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़ययना बिन ह़िस्न बिन हुज़ैफ़ा ने अपने भतीजे हुर्र बिन क़ैस के यहाँ आकर क़याम किया। हुर्र, उन चन्द ख़ास़ लोगों से थे जिन्हें ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) अपने बहुत क़रीब रखते थे जो लोग क़ुर्आन मजीद के ज़्यादा आ़लिम और क़ारी होते। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की मज्लिस में उन्हीं को ज़्यादा नज़दीकी ह़ासिल होती थी और ऐसे लोग आपके मुशीर होते। उसकी कोई क़ैद नहीं थी कि वो उ़म्र रसीदा हों या नौजवान। उ़ययना ने अपने भतीजे से कहा कि तुम्हें इस अमीर की मज्लिस में बहुत नज़दीकी ह़ासिल है। मेरे लिये भी मज्लिस में ह़ाज़िरी की इजाज़त ला दो। हुर्र बिन क़ैस ने कहा कि मैं आपके लिये भी इजाज़त माँगूगा। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया। चुनाँचे उन्होंने उ़ययना के लिये भी इजाज़त मांगी और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें मज्लिस में आने की इजाज़त दे दी। मज्लिस में जब वो पहुँचे तो कहने लगे, ऐ ख़त़्ताब के बेटे! अल्लाह की क़सम! न तो तुम हमें माल ही देते हो और न अ़द्ल व इंस़ाफ़ के साथ फ़ैस़ला करते हो। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को उनकी इस बात पर बड़ा ग़ुस़्स़ा आया और आगे बढ़ ही रहे थे कि हुर्र बिन क़ैस ने अ़र्ज़ किया या अमीरल मोमिनीन! अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी से ख़ित़ाब करके फ़र्माया है, मुआ़फ़ी इख़्तियार करो और नेक काम का हुक्म दो और जाहिलों से किनाराकश हो जाया कीजिए, और ये भी जाहिलों में से हैं। अल्लाह की क़सम! कि जब हुर्र ने क़ुर्आन मजीद की तिलावत की तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) बिल्कुल ठण्डे पड़ गये और किताबुल्लाह के हुक्म के सामने आपकी यही ह़ालत होती थी। (दीगर मक़ाम : 7282)

तश्रीह : इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बिलकुल नौजवान थे लेकिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास बैठते। दूसरे बूढ़े बूढ़े लोगों पर उनका मर्तबा ज़्यादा रहता। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) इ़ल्म और उ़लमा के क़द्रदान थे और हर एक बादशाहे इस्लाम को ऐसा ही करना चाहिये। हमेशा आ़लिमों की क़द्र व मंज़िलत और ता'ज़ीम और तक्रीम लाज़िम है वरना फिर कोई उनके मुल्क में इ़ल्म न पढ़ेगा और मुल्क क्या होगा जाहिलों का डरबा। ऐसा मुल्क बहुत जल्द तबाह और बर्बाद होगा। अफ़सोस! हमारे ज़माने में इ़ल्म और उ़लमा की क़द्र व मंज़िलत तो क्या जाहिलों के बराबर भी नहीं रखा जाता बल्कि जाहिलों को जो अ़हदे और मंस़ब अ़त़ा किये जाते हैं आ़लिम उनके मुस्तह़िक़ और सज़ावार नहीं समझे जाते। ख़ुद मुझ पर ये वाक़िया गुज़र चुका है। चन्द रोज़ मैं क़ज़ा की आफ़त में गिरफ़्तार किया गया था मगर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल हुआ। इ़ल्म व फ़ज़्ल की नाक़द्रदानी ने मुझको जल्द सुबुकदोश कर दिया वरना मा'लूम नहीं कब तक इस आफ़त में गिरफ़्तार रहता। मैं दिल से क़ज़ा को मकरूह जानता था ख़ैर मैं तो हटा दिया गया और दूसरे लोग जो इ़ल्म व फ़ज़्ल से आ़री और उनकी

क़ाबिलियत ऐसी थी कि बरसों मैं उनको ता'लीम दे सकता था वो अपनी ख़िदमात पर बदस्तूर क़ायम रहे। गो मैं इस इंक़िलाब से जहाँ तक मेरी ज़ात के बारे में था ख़ुश हुआ और सज्द-ए-शुक्र बजा लाया मगर मुल्क और क़ौम पर रोना आया। या अल्लाह! हमारे बादशाहों को समझ दे, आमीन या रब्बल आलमीन।

अल्लाह अल्लाह! उ़यैना की बेअदबी और गुस्ताख़ी और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का स़ब्र और तह़म्मुल, अगर और कोई दुनियादार बादशाह होता तो ऐसी ज़ुबान दराज़ी और बेअदबी पर कैसी सज़ा देता। उ़यैना ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को भी दुनियादार बादशाहों की त़रह़ समझते कि जाहिल मुस़ाह़िबों (साथियों) और वाही रफ़ीक़ों पर बादशाही ख़ज़ाना जो रिआ़या का माल है लुटाते रहें। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) अपने बेटे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को तो एक अदना सिपाही की त़रह़ तनख़्वाह दिया करते वो भला उनसे वाही लोगों को कब देने वाले थे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ईमान और इख़्लास़ समझने के लिये इंस़ाफ़ वाले आदमी के लिये यही क़िस्स़ा काफ़ी है। क़ुर्आन मजीद की आयत पढ़ते ही ग़ुस्स़ा जाता रहा स़ब्र और तह़म्मुल पर अ़मल किया सुब्ह़ानल्लाह, रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (वह़ीदी)

4644. हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, मुआ़फ़ी इख़्तियार कीजिए और नेक काम का हुक्म देते रहिये लोगों के अख़्लाक़ की इस़्लाह़ के लिये ही नाज़िल हुई है। (दीगर मक़ाम : 4644)

٤٦٤٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، : خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ قَالَ: مَا أَنْزَلَ اللهُ إِلاَّ فِي أَخْلاَقِ النَّاسِ.

[طرفه في : ٤٦٤٤].

4644. और अ़ब्दुल्लाह बिन बर्राद ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) को हुक्म दिया है कि लोगों के अख़्लाक़ ठीक करने के लिये दरगुज़र इख़्तियार करें या कुछ ऐसा ही कहा। (राजेअ़ : 4643)

٤٦٤٤- وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ بَرَّادٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ قَالَ أَمَرَ اللهُ نَبِيَّهُ ﷺ أَنْ يَأْخُذَ الْعَفْوَ مِنْ أَخْلاَقِ النَّاسِ أَوْ كَمَا قَالَ. [راجع: ٤٦٤٣]

तशरीह़ : ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह) की ये है कि अ़फ़्व से इस आयत मे क़ुस़ूर की मुआ़फ़ी करना, ख़त़ा से दरगुज़र करना मुराद है और ये आयत ह़ुस्ने अख़्लाक़ के बारे में है। इमाम जा'फ़र स़ादिक़ (रह.) से मन्क़ूल है कि क़ुर्आन पाक में कोई आयत इस आयत की त़रह़ जामेअ़ अख़्लाक़ नहीं है लेकिन कुछ ने इस आयत की यूँ तफ़्सीर की है कि ख़ुज़िलअ़फ़्व से ये मुराद है कि जो कुछ माल उनके ज़रूरी अख़राजात से बच रहे वो ले ले और ये हुक्म ज़कात की फ़र्ज़ियत से पहले का है। त़बरी और इब्ने मर्दवै ने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से और इब्ने जरीर और इब्ने अबी ह़ातिम ने उसी से निकाला। जब ये आयत उतरी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से इसका मत़लब पूछा, उन्होंने कहा मैं जाकर परवरदिगार से पूछता हूँ, फिर लौटकर आए और कहने लगे कि तुम्हारा परवरदिगार तुमको ये हुक्म देता है कि जो कोई तुमसे नाता काटे तुम उससे जोड़ो और जो कोई तुमको मह़रूम करे तुम उसको दो और जो कोई तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसको मुआ़फ़ कर दो। (वह़ीदी)

सूरह अन्फ़ाल की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

बाब 1 : आयत 'यस्अलूनक अ़निल्अन्फ़ाल'

١- بَاب

अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

قَوْلُهُ: ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ الأَنْفَالِ قُلِ: الأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ. فَاتَّقُوا اللهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ﴾ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الأَنْفَالُ الْمَغَانِمُ، قَالَ قَتَادَةُ: رِيحُكُمْ: الْحَرْبُ. يُقَالُ : نَافِلَةٌ : عَطِيَّةٌ.

ये लोग आपसे ग़नीमतों के बारे में सवाल करते हैं। आप कह दें कि ग़नीमतें अल्लाह की मिल्क हैं फिर रसूल की। पस अल्लाह से डरते रहो और अपने आपस की इस्लाह करो। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल्अन्फ़ाल के मा'नी ग़नीमतें हैं। क़तादा ने कहा कि लफ़्ज़े रीहुकुम से लड़ाई मुराद है (या'नी अगर तुम आपस में नज़ाअ़ करोगे तो लड़ाई में तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी) लफ़्ज़े नाफ़िलतुन अ़तिया के मा'नी में बोला जाता है।

तश्रीह : हज़रत उ़बादा बिन स़ामित (रज़ि.) कहते हैं कि हम लोग बद्र में शामिल थे जब काफ़िर शिकस्त खाकर भागे तो लश्करे इस्लाम से कुछ लोग तो भागने वालों के पीछे दौड़े, कुछ ने माले ग़नीमत को जमा करना शुरू कर दिया, कुछ लोग सिर्फ़ आँहज़रत (ﷺ) की हिफ़ाज़त में रहे। जब रात को सब जमा हुए तो ग़नीमत जमा करने वालों ने कहा कि ये माल सिर्फ़ हमारा है, हमने जमा किया है। दूसरे लोगों ने अपने हुक़ूक़ जतला के जब इख़्तिलाफ़ बढ़ाया तो सूरह अन्फ़ाल का नुज़ूल हुआ।

٤٦٤٥ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قُلْتُ لابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سُورَةُ الأَنْفَالِ قَالَ : نَزَلَتْ فِي بَدْرٍ، الشَّوْكَةُ: الْحَدُّ، مُرْدِفِينَ، فَوْجًا بَعْدَ فَوْجٍ، رَدِفَنِي وَأَرْدَفَنِي جَاءَ بَعْدِي. ذُوقُوا: بَاشِرُوا وَلَيْسَ هَذَا مِنْ ذَوْقِ الْفَمِ. فَيَرْكُمَهُ: يَجْمَعَهُ. شَرِّدْ : فَرِّقْ، وَإِنْ جَنَحُوا: طَلَبُوا، يُثْخِنَ : يَغْلِبَ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ مُكَاءً إِدْخَالُ أَصَابِعِهِمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ، وَتَصْدِيَةً: الصَّفِيرُ، لِيُثْبِتُوكَ : لِيَحْبِسُوكَ.

[راجع: ٤٠٢٩]

4645. मुझसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हुशैम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको अबू बिश्र ने ख़बर दी, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सूरह अन्फ़ाल के बारे में पूछा। उन्होंने बतलाया कि ग़ज़्व-ए-बद्र में नाज़िल हुई थी। अश्शौकतु का मा'नी धार, नोक; मुरदफ़ीन के मा'नी फ़ौज दर फ़ौज कहते हैं रदफ़नी व अरदफ़नी या'नी मेरे बाद आया ज़ालिकुम फ़ज़ूक़ू ज़ूक़ूहु का मा'नी ये है कि ये अ़ज़ाब उठाओ उसका तजुर्बा करो, चेहरे से चखना मुराद नहीं है। फ़यर्कुमहु का मा'नी उसको जमा करे शर्दिन का मा'नी जुदा कर दे (या सख़्त सज़ा दे) जनहू के मा'नी त़लब करें यस़्ख़नु का मा'नी ग़ालिब हुआ और मुजाहिद ने कहा मुकाअ का मा'नी उँगलियाँ चेहरे पर रखना तस़्दियतन् सीटी बजाना लियुस़्बितूक ताकि तुझको क़ैद कर लें। (राजेअ़ : 4029)

बाब 2 : आयत 'इन्न शर्रद्दवाब्बि' अल्अख़ की तफ़्सीर

٢ - باب

﴿إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لاَ يَعْقِلُونَ﴾

या'नी, बदतरीन हैवानात अल्लाह के नज़दीक वो बहरे गूँगे लोग हैं जो ज़रा भी अ़क़्ल नहीं रखते।

٤٦٤٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ،

4646. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे

वरक़ा बिन उमर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नजीह ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि आयत, बदतरीन हैवानात अल्लाह के नज़दीक वो बहरे गूँगे हैं जो अक़्ल से ज़रा काम नहीं लेते, बनू अब्दुद्दार के कुछ लोगों के बारे में उतरी थी।

حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: ﴿إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لاَ يَعْقِلُونَ﴾ قَالَ : هُمْ نَفَرٌ مِنْ بَنِي عَبْدِ الدَّارِ.

तश्रीह : कुरैश के काफ़िरों में से बनू अब्दुद्दार क़बीला के कुछ लोग जंगे उहुद में कुफ़्र का झण्डा उठाए हुए थे। अल्लाह तआला ने उनको बहरे गूँगे हैवानात क़रार दिया कि ये अंजाम से ग़ाफ़िल हैं । चुनाँचे बाद के हालात ने तस्दीक़ की कि फ़िल्वाक़ेअ ऐसे लोग जानवरों से भी बदतर थे क्योंकि अपने अंजाम का उन्होंने फ़िक्र नहीं किया।

बाब 3 : आयत 'या अय्युहल्लज़ीन आमनुस्तजीबू लिल्लाहि' अल्अख़ की तफ़्सीर

٣- باب قوله

या'नी, ऐ ईमानवालों! अल्लाह और रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहो जबकि वो रसूल तुमको तुम्हारी ज़िन्दगी बख्शने वाली चीज़ की तरफ़ बुलाएँ और जान लो कि अल्लाह हाइल हो जाता है इंसान और उसके दिल के बीच और ये कि तुम सबको उसी के पास इकट्ठा होना है। इस्तजीबू अय अजीबू यानी क़ुबूल करो, जवाब दो लम्मा युहयियकुम अय लिमा युस्लिहकुम उस चीज़ के लिये जो तुम्हारी इस्लाह करती है तुमको दुरुस्त करती है। जिसके ज़रिये तुमको दाइमी ज़िन्दगी मिलेगी।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ﴾ اسْتَجِيبُوا. أَجِيبُوا لِمَا يُحْيِيكُمْ : يُصْلِحُكُمْ.

4647. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको रौह बिन उबादह ने ख़बर दी, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब बिन अब्दुर्रहमान ने, उन्होंने हफ़्स बिन आसिम से सुना और उनसे अबू सईद बिन मुअल्ला (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे पुकारा। मैं आप (ﷺ) की ख़िदमत में न पहुँच सका बल्कि नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद हाज़िर हुआ। आप (ﷺ) ने पूछा कि आने में देर क्यूँ हुई? क्या अल्लाह तआला ने तुम्हें हुक्म नहीं दिया है कि, ऐ ईमानवालों! अल्लाह और उसके रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहो, जबकि वो (या'नी रसूल) तुमको बुलाएँ, फिर आपने फ़र्माया, मस्जिद से निकलने से पहले मैं तुम्हें क़ुर्आन की अज़ीमतरीन सूरह सिखाऊँगा। थोड़ी देर बाद आप बाहर तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैंने आपको याद दिलाया और मुआज़ बिन मुआज़ अम्बरी ने इस हदीष को यूँ रिवायत किया कि हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब ने, उन्होंने

٤٦٤٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ قَالَ: أَخْبَرَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، سَمِعْتُ حَفْصَ بْنَ عَاصِمٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي فَمَرَّ بِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فَدَعَانِي فَلَمْ آتِهِ حَتَّى صَلَّيْتُ، ثُمَّ أَتَيْتُهُ قَالَ : ((مَا مَنَعَكَ أَنْ تَأْتِيَ؟ أَلَمْ يَقُلِ اللهُ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ﴾)) ثُمَّ قَالَ: ((لأُعَلِّمَنَّكَ أَعْظَمَ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ أَخْرُجَ)) فَذَهَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِيَخْرُجَ فَذَكَرْتُ لَهُ وَقَالَ مُعَاذٌ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ

हफ़्स से सुना और उन्होंने अबू सईद बिन मुअल्ला (रज़ि.) से जो नबी करीम (ﷺ) के सहाबी थे, सुना और उन्होंने बयान किया वो सूरह अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन है जिसमें सात आयतें हैं जो हर नमाज़ में मुकर्रर पढ़ी जाती हैं। (राजेअ : 4474)

خُبَيْبٍ سَمِعَ حَفْصًا سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا، وَقَالَ: ((هِيَ الْحَمْدُ لله رَبِّ الْعَالَمِينَ السَّبْعُ الْمَثَانِي)). [راجع: ٤٤٧٤]

तश्रीह : क़ुर्आन मजीद की पूरी आयत यूँ है, **व लक़द आतयनाक सब्अम्मिनल्मष़ानी वल्क़ुर्आनल्अज़ीम** (अल् हिज्र : 97) ऐ नबी! मैंने आपको क़ुर्आन मजीद में सात आयात ऐसी दी हैं जो बार बार पढ़ी जाती रहती हैं और जो क़ुर्आन मजीद की बहुत ही बड़ी अ़ज़्मत वाली आयात हैं गोया ये आयात क़ुर्आने अ़ज़ीम कहलाने की मुस्तहिक़ हैं। मुफ़स्सिरीन का इत्तिफ़ाक़ है कि इस आयत में जिन आयतों का ज़िक्र हुआ है, उससे सूरह फ़ातिहा मुराद है। ह़दीष़ में जिसे उम्मुल किताब या'नी क़ुर्आन मजीद की जड़ बुनियाद कहा गया है, यही वो सूरह है जिसे हर नमाज़ी अपनी नमाज़ में बार-बार पढ़ता है। नमाज़े नफ़िल हो या सुन्नत या फ़र्ज़ हर रकअ़त में ये सूरह पढ़ी जाती है। सारे क़ुर्आन में और कोई सूरह शरीफ़ा ऐसी नहीं है जो इसका बदल हो सके। इस सूरह के बहुत से नाम हैं , इसको स़लात से भी ता'बीर किया गया है जैसा कि ह़दीष़े अबू हुरैरह (रज़ि.) में ह़दीष़े क़ुदसी में नक़ल हुआ है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, **क़स्सम्तुस़्स़लात बैनी व बैन अ़ब्दी निस्फ़ैनि** मैंने स़लात को अपने और अपने बन्दे के बीच आधा-आधा तक़्सीम कर दिया है। चुनाँचे सूरह फ़ातिहा का आधा ह़िस्सा ता'रीफ़ व ह़म्द व तक़्दीसे इलाही पर मुश्तमिल है और आगे दुआ़ओं और उनके आदाब व क़वानीन का बयान है। इसलिये ह़दीष़ में स़ाफ़ वारिद हुआ है कि **ला स़लात लिमल्लम यक़्रः बिफ़ातिहतिल्किताब** या'नी जिसने नमाज़ में सूरह फ़ातिहा न पढ़ी हो उसकी नमाज़ कुछ नहीं है। इसीलिये अकष़र स़ह़ाब-ए-किराम व ताबेईन व अइम्म-ए-मुज्तहदीन हर नमाज़ में सूरह फ़ातिहा की फ़र्ज़ियत के क़ाइल हैं और उसी को राजेह़ और क़वी मज़हब क़रार दिया है। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह.) और आपके अकष़र अस्ह़ाब रह़िमहुमुल्लाह भी सिर्री नमाज़ों में सूरह फ़ातिहा के इस्तिह़बाब के क़ाइल हैं। बहरह़ाल सूरह फ़ातिहा बड़ी शान व अ़ज़्मत वाली सूरह है। उसकी हर एक आयत मअ़रिफ़त व तौह़ीदे इलाही का एक अ़ज़ीम दफ़्तर है। अ़क़ाइद व आ़माल का ख़ज़ाना है। हर इंसाफ़पसंद नमाज़ी का फ़र्ज़ है वो इमाम हो या मुक़्तदी, मगर इस सूरह शरीफ़ा को ज़रूर पढ़े ताकि नमाज़ में कोई नुक़्स बाक़ी न रहे। हर नमाज़ में सूरह फ़ातिहा की फ़र्ज़ियत के दलाइल बहुत हैं जो पीछे किताबुस़्स़लात में मुफ़स्सल (विस्तारपूर्वक) बयान हो चुके हैं वहाँ उनका मुत़ालआ़ ज़रूरी है।

बाब 4 : आयत 'व इज़ क़ालुल्लाहुम्म इन कान हाज़ हुवल्ह़क़्क़ु' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

ऐ नबी! उनको वो वक़्त भी याद दिलाओ जब उन काफ़िरों ने कहा था कि ऐ अल्लाह! अगर ये (कलाम) तेरी त़रफ़ से वाक़ई बरहक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या फिर (कोई और ही) अ़ज़ाब दर्दनाक ले आ। इब्ने उ़ययना ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने लफ़्ज़े मत़र (बारिश) का इस्ते'माल क़ुर्आन में अ़ज़ाब ही के लिये किया है, अरब उसे ग़ैष़ कहते हैं जैसा कि अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान युनज़्ज़िलुल्ग़ैष़ मिम्बअ़दि मा क़नतू में है।

٤- بَابٌ

قَوْلِهِ: ﴿وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾ قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: مَا سَمَّى الله تَعَالَى مَطَرًا فِي الْقُرْآنِ إِلاَّ عَذَابًا، وَتُسَمِّيهِ الْعَرَبُ الْغَيْثَ وَهُوَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا﴾.

क़ुर्आन मजीद ने बाराने रह़मत के लिये लफ़्ज़ ग़ैष़ इस्ते'माल किया है। मत़र का लफ़्ज़ आसमान से अ़ज़ाब नाज़िल करने के मौक़े पर बोला गया है। इस क़िस्म की कई आयात क़ुर्आन मजीद में मौजूद हैं।

4648. मुझसे अहमद बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे स़ाहिबुज़्ज़यादी अ़ब्दुल ह़मीद ने जो कुरदीद के स़ाहबज़ादे थे, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि अबू जहल ने कहा था कि, ऐ अल्लाह! अगर ये कलाम तेरी त़रफ़ से वाक़ई ह़क़ है तो, हम पर आसमानों से पत्थर बरसा दे या फिर कोई और ही अ़ज़ाबे दर्दनाक ले आ! तो उस पर, आयत हालाँकि अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब दे इस ह़ाल में कि आप उनमें मौजूद हों, और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब लाएगा इस ह़ाल में कि, वो इस्तिग़्फ़ार कर रहे हों। उन लोगों के लिये क्या वजह कि अल्लाह उन पर अ़ज़ाब (ही सिरे से) न लाए। ह़ाल ये है कि वो मस्जिदे ह़राम से रोकते हैं। आख़िर आयत तक।

(दीगर मक़ाम : 4649)

٤٦٤٨- حدثني أحمد حدثنا عبيد الله بن معاذ، حدثنا أبي حدثنا شعبة، عن عبد الحميد هو بن كرديد صاحب الزيادي سمع أنس بن مالك رضي الله عنه قال أبو جهل: ﴿اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم﴾ فنزلت: ﴿وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون وما لهم أن لا يعذبهم الله وهم يصدون عن المسجد الحرام﴾. الآية.

[طرفه في : ٤٦٤٩].

अबू जहल की दुआ़ क़ुबूल हुई और बद्र में वो ज़िल्लत की मौत मरा। आयत और ह़दीष़ में यही मज़्कूर हुआ है अगर वो लोग तौबा इस्तिग़्फ़ार करते तो अल्लाह तआ़ला भी ज़रूर उन पर रह़म करता मगर उनकी क़िस्मत में इस्लाम न था। **व ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ** इससे इस्तिग़्फ़ार की भी बड़ी फ़ज़ीलत स़ाबित हुई।

बाब 5 : आयत 'व मा कानल्लाहु लियुअ़ज़्ज़िबहुम'

٥- باب قوله : ﴿وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم وما كان الله معذبهم وهم يستغفرون﴾.

अल्अ़ख़ की तफ़्सीर या'नी, और अल्लाह ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब करे इस ह़ाल में कि ऐ नबी! आप उनमें मौजूद हों और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब लाएगा इस ह़ालत में कि वो इस्तिग़्फ़ार कर रहे हों।

4649. हमसे मुह़म्मद बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे स़ाहिबुज़्ज़ियादी अ़ब्दुल ह़मीद ने और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू जहल ने कहा था कि ऐ अल्लाह! अगर ये कलाम तेरी त़रफ़ से वाक़ई ह़क़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या फिर कोई और ही अ़ज़ाब ले आ। उस पर ये आयत नाज़िल हुई, हालाँकि अल्लाह ने ऐसा नहीं करेगा कि उन्हें अ़ज़ाब दे इस ह़ाल में कि आप उनमें मौजूद हों और न अल्लाह उन पर अ़ज़ाब

٤٦٤٩- حدثنا محمد بن النضر، حدثنا عبيد الله بن معاذ، حدثنا أبي، حدثنا شعبة عن عبد الحميد صاحب الزيادي، سمع أنس بن مالك قال: قال أبو جهل: ﴿اللهم إن كان هذا هو الحق من عندك فأمطر علينا حجارة من السماء أو ائتنا بعذاب أليم﴾ فنزلت: ﴿وما كان الله ليعذبهم وأنت فيهم وما كان الله معذبهم

लाएगा, इस हाल में कि वो इस्तिग़फ़ार कर रहे हों। उन लोगों को अल्लाह क्यूँ न अ़ज़ाब करे जिनका हाल ये है कि वो मस्जिदे हराम से रोकते हैं। आख़िर आयत तक। (राजेअ : 4648)

وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ وَمَا لَهُمْ أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمُ اللهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾. الآيَةَ. [راجع: ٤٦٤٨]

बाब 6 : आयत 'व कातिलूहुम हत्ता ला तकून फ़ित्ना' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب قوله

और उनसे लड़ो, यहाँ तक कि फ़ित्ना बाक़ी न रह जाए।

﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ للهِ﴾

4650. हमसे हसन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यह्या ने, कहा हमसे हैवा बिन शुरैह ने, उन्होंने बक्र बिन अ़म्र से, उन्होंने बुकैर से, उन्होंने नाफ़ेअ से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि एक शख़्स (हब्बान या अ़लाअ बिन अ़रार नामी) ने पूछा अबू अ़ब्दुर्रहमान! आपने क़ुर्आन की ये आयत नहीं सुनी कि जब मुसलमानों की दो जमाअ़तें लड़ने लगें अल्अख़, इस आयत के ब-मौजिब तुम (हज़रत अ़ली और मुआविया रज़ि दोनों से) क्यूँ नहीं लड़ते जैसे अल्लाह ने फ़र्माया फक़ातिलुल्लती तब्गी। उन्होंने कहा मेरे भतीजे अगर मैं इस आयत की तावील करके मुसलमानों से न लड़ूं तो ये मुझको अच्छा मा'लूम होता है बनिस्बत उसके कि मैं इस आयत व मंय्यक़्तुल मूमिनन मुतअ़म्मिदन की तावील करूं, वो शख़्स कहने लगा अच्छा उस आयत का क्या करोगे जिसमें मज़्कूर है कि उनसे लड़ो ताकि फ़ित्ना बाक़ी न रहे और सारा दीन अल्लाह का हो जाए। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा (वाह वाह) ये लड़ाई तो हम आँहज़रत (ﷺ) के अहद में कर चुके, उस वक़्त मुसलमान बहुत थोड़े थे और मुसलमान को इस्लाम इख़्तियार करने पर तकलीफ़ दी जाती। क़त्ल करते, क़ैद करते यहाँ तक कि इस्लाम फैल गया। मुसलमान बहुत हो गये अब फ़ित्ना जो उस आयत में मज़्कूर है वो कहाँ रहा, जब उस शख़्स ने देखा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) किसी तरह लड़ाई पर उसके मुवाफ़िक़ नहीं होते तो कहने लगा अच्छा बतलाओ अ़ली (रज़ि.) और उ़स्मान (रज़ि.) के बारे में तुम्हारा क्या ए'तिक़ाद है? उन्होंने कहा हाँ ये कहा तो सुनो, अ़ली (रज़ि.) और उ़स्मान (रज़ि.) के बारे में अपना ए'तिक़ाद बयान करता हूँ। उ़स्मान (रज़ि.) का जो क़ुसूर तुम बयान करते

٤٦٥٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ عَنْ بَكْرِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ بُكَيْرٍ عَنْ نَافِعٍ. عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلاً جَاءَهُ فَقَالَ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَلاَ تَسْمَعُ مَا ذَكَرَ اللهُ فِي كِتَابِهِ ﴿وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ، فَمَا يَمْنَعُكَ أَنْ لاَ تُقَاتِلَ كَمَا ذَكَرَ اللهُ فِي كِتَابِهِ؟ فَقَالَ: يَا ابْنَ أَخِي أَغْتَرُّ بِهَذِهِ الآيَةِ وَلاَ أُقَاتِلُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَغْتَرَّ بِهَذِهِ الآيَةَ الَّتِي يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا﴾ إِلَى آخِرِهَا قَالَ: فَإِنَّ اللهَ يَقُولُ: ﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ﴾ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: قَدْ فَعَلْنَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ كَانَ الإِسْلاَمُ قَلِيلاً، فَكَانَ الرَّجُلُ يُفْتَنُ فِي دِينِهِ إِمَّا يَقْتُلُوهُ، وَإِمَّا يُوثِقُوهُ، حَتَّى كَثُرَ الإِسْلاَمُ فَلَمْ تَكُنْ فِتْنَةٌ فَلَمَّا رَأَى أَنَّهُ لاَ يُوَافِقُهُ فِيمَا يُرِيدُ قَالَ: فَمَا قَوْلُكَ فِي عَلِيٍّ وَ عُثْمَانَ؟ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: مَا قَوْلِي فِي

عَلِيٌّ وَ عُثْمَانُ أَمَّا عُثْمَانُ فَكَانَ اللهُ قَدْ عَفَا عَنْهُ فَكَرِهْتُمْ أَنْ يَعْفُوا عَنْهُ، وَأَمَّا عَلِيٌّ فَابْنُ عَمِّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَخَتَنُهُ، وَأَشَارَ بِيَدِهِ وَهَذِهِ ابْنَتُهُ أَوْ بِنْتُهُ حَيْثُ تَرَوْنَ.

[راجع: ٣١٣٠]

हो (कि वो जंगे उहुद में भाग निकले) तो अल्लाह ने उनका ये क़ुसूर मुआफ़ कर दिया मगर तुमको ये मुआफ़ी पसंद नहीं (जब तो अब तक उन पर क़ुसूर लगाते जाते हो) और अ़ली मुर्तज़ा तो (सुब्हानल्लाह) आँहज़रत (ﷺ) के चचाज़ाद भाई और आपके दामाद भी थे और हाथ से इशारा करके बतलाया ये उनका घर है जहाँ तुम देख रहे हो। (राजेअ़ : 3130)

तशरीह : या'नी हज़रत अ़ली (रज़ि.) का तक़र्रुब और आला मर्तबा तो उनके घर को देखने से मा'लूम होता है। आँहज़रत (ﷺ) के घर से उनका घर मिला हुआ है और क़राबते क़रीब ये कि वो आँहज़रत (ﷺ) के चचाज़ाद भाई और आपके दामाद भी थे। ऐसे साहिबे फ़ज़ीलत की निस्बत बद ए'तिक़ादी करना कमबख़्ती की निशानी है। शायद ये शख़्स ख़्वारिज में से होगा जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) और हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) दोनों की तक्फ़ीर करते हैं। (वहीदी)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि) का मत़लब ये था कि मौजूदा जंग ख़ाँगी (अन्दरूनी) है। रसूले करीम (ﷺ) के ज़माने में काफ़िरों से हमारी जंग दुनिया की हुकूमत या सरदारी के लिये नहीं बल्कि ख़ालिस़ दीन के लिये थी ताकि काफ़िरों का गुरूर टूट जाए और मुसलमान उनकी ईज़ा से महफ़ूज़ रहें तुम तो दुनिया की सल्तनत और हुकूमत और ख़िलाफ़त हासिल करने के लिये लड़ रहे हो और दलील इस आयत से लेते हो जिसका मत़लब दूसरा है। क़ुर्आन मजीद की आयात को बेमहल इस्ते'माल करने वालों ने इसी त़रह उम्मत में फ़ित्ने और फ़साद पैदा किये और मिल्लत के शीराज़े को मुंतशिर कर दिया है। आजकल भी बहुत से नामो–निहाद आलिम बेमहल आयात व अहादीष़ को इस्ते'माल करने वाले बकष़रत मौजूद हैं जो हर वक़्त मुसलमानों को लड़ाते रहते हैं। **हदाहुमुल्लाहु इला स़िरातिम्मुस्तक़ीम।** हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के इस तर्ज़े अ़मल में बहुत से सबक़ छुपे हुए हैं, काश! हम ग़ौर कर सकें।

٤٦٥١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا بَيَانٌ، أَنَّ وَبَرَةَ حَدَّثَهُ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا أَوْ إِلَيْنَا ابْنُ عُمَرَ فَقَالَ رَجُلٌ: كَيْفَ تَرَى فِي قِتَالِ الْفِتْنَةِ؟ فَقَالَ: وَهَلْ تَدْرِي مَا الْفِتْنَةُ؟ كَانَ مُحَمَّدٌ ﷺ يُقَاتِلُ الْمُشْرِكِينَ وَكَانَ الدُّخُولُ عَلَيْهِمْ فِتْنَةً، وَلَيْسَ كَقِتَالِكُمْ عَلَى الْمُلْكِ. [راجع: ٣١٣٠]

4651. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे बयान ने बयान किया, उनसे वब्रह ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया, कहा कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) हमारे पास तशरीफ़ लाए, तो एक स़ाहब ने उनसे पूछा कि (मुसलमानों के बाहमी) फ़ित्ना और जंग के बारे में आपकी क्या राय है? इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने उनसे पूछा तुम्हें मा'लूम भी है, फ़ित्ना क्या चीज़ है। मुहम्मद (ﷺ) मुश्रिकीन से जंग करते थे और उनमें ठहर जाना ही फ़ित्ना था। आँहज़रत (ﷺ) की जंग तुम्हारी मुल्क व सल्तनत की ख़ातिर जंग की त़रह नहीं थी। (राजेअ़: 3130)

٧- باب قوله تعالى

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى

बाब 7 :

आयत 'या अय्युहन्नबिय्यु हर्रिज़िल्मूमिनीन'

الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ﴾.

अल्आख़ की तफ़्सीर या'नी, ऐ नबी! मोमिनों को क़िताल पर आमादा कीजिए। अगर तुममें से बीस आदमी भी स़ब्र करने वाले होंगे तो वो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे और अगर तुममें से सौ होंगे तो एक हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब आ जाएँगे इसलिये कि ये ऐसे लोग हैं जो कुछ नहीं समझते।

٤٦٥٢ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا لَمَّا نَزَلَتْ : ﴿إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ﴾ فَكُتِبَ عَلَيْهِمْ أَنْ لَا يَفِرَّ وَاحِدٌ مِنْ عَشَرَةٍ فَقَالَ سُفْيَانُ : غَيْرَ مَرَّةٍ أَنْ لَا يَفِرَّ عِشْرُونَ مِنْ مِائَتَيْنِ ثُمَّ نَزَلَتْ: ﴿الآنَ خَفَّفَ اللهُ عَنْكُمْ﴾ الآيَةَ، فَكَتَبَ أَنْ لَا يَفِرَّ مِائَةٌ مِنْ مِائَتَيْنِ، زَادَ سُفْيَانُ مَرَّةً نَزَلَتْ ﴿حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ﴾ قَالَ سُفْيَانُ : وَقَالَ ابْنُ شُبْرُمَةَ وَأُرَى الأَمْرَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيَ عَنِ الْمُنْكَرِ مِثْلَ هَذَا.

[طرفه في : ٤٦٥٣].

हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई कि, अगर तुममें से बीस आदमी भी स़ब्र करने वाले हों तो वो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे, तो मुसलमानों के लिये फ़र्ज़ क़रार दे दिया गया कि एक मुसलमान दस काफ़िरों के मुक़ाबले से न भागे और कई मर्तबा सुफ़यान स़ौरी ने ये भी कहा कि बीस दो सौ के मुक़ाबले से न भागें , फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी। अब अल्लाह ने तुम पर तख़्फ़ीफ़ कर दी, उसके बाद ये फ़र्ज़ क़रार दिया कि एक सौ, दो सौ के मुक़ाबले से न भागें । सुफ़यान स़ौरी ने एक मर्तबा उस ज़्यादती के साथ रिवायत बयान की कि आयत नाज़िल हुई, ऐ नबी! मोमिनों को क़िताल पर आमादा करो। अगर तुममें से बीस आदमी स़ब्र करने वाले होंगे, सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने शुबरमा (कूफ़ा के क़ाज़ी) ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है अम्र बिल मअ़रूफ़ और नही अ़निल मुंकर में भी यही हुक्म है। (दीगर मक़ाम : 4653)

तश्रीह : या'नी अगर मुख़ालिफ़ीन की जमाअ़त बराबर या दोगुनी हो जब भी कलिम-ए-ह़क़ कहने में दरेग़ न करे वरना गुनाहगार होगा। अच्छी बात का हुक्म करे। बुरी बात से मना कर दे। अगर मुख़ालिफ़ीन दोगुने से भी ज़्यादा हों और जान जाने का डर हो उस वक़्त सुकूत करना जाइज़ है लेकिन दिल से उनको बुरा समझे उनकी जमाअ़त से अलग रहे।

٨- باب قوله ﴿الآنَ خَفَّفَ اللهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا إِلَى قَوْلِهِ وَاللهُ مَعَ الصَّابِرِينَ﴾ الآيَةَ.

बाब 8 : आयत 'अल्आन ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अन्कुम'

अल्आख़ की तफ़्सीर या'नी, अब अल्लाह ने तुम पर तख़्फ़ीफ़ कर दी और मा'लूम कर लिया कि तुममें कमज़ोरी आ गई है, अल्लाह तआ़ला के इर्शाद वल्लाहु मअ़स्साबिरीन तक

٤٦٥٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللهِ السُّلَمِيُّ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ، أَخْبَرَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي

4653. हमसे यह्या बिन अ़ब्दुल्लाह सुलमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको जरीर बिन ह़ाज़िम ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझे

ज़ुबैर इब्ने ख़िरींत ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, कि जब ये आयत उतरी, अगर तुममें से बीस आदमी भी स़ब्र करने वाले होंगे तो वो दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे, तो मुसलमानों पर सख़्त गुज़रा, क्योंकि इस आयत पर उनमें ये फ़र्ज़ क़रार दिया गया था कि एक मुसलमान दस काफ़िरों के मुक़ाबले से न भागे। इसलिये उसके बाद तख़्फ़ीफ़ की गई। और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, अब अल्लाह ने तुमसे तख़्फ़ीफ़ कर दी, और मा'लूम कर लिया कि तुममें जोश की कमी है। सो अब अगर तुममें सौ स़ब्र करने वाले होंगे तो वह दो सौ पर ग़ालिब आ जाएँगे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ता'दाद की इस कमी से उतनी ही मुसलमानों में स़ब्र में कमी होगी। (राजेअ़ : 4652)

الزُّبَيْرُ بْنُ خِرِّيتٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ ﴿إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ حِينَ فُرِضَ عَلَيْهِمْ أَنْ لاَ يَفِرَّ وَاحِدٌ مِنْ عَشَرَةٍ، فَجَاءَ التَّخْفِيفُ فَقَالَ: ﴿الآنَ خَفَّفَ اللهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ﴾ قَالَ: فَلَمَّا خَفَّفَ اللهُ عَنْهُمْ مِنَ الْعِدَّةِ نَقَصَ مِنَ الصَّبْرِ بِقَدْرِ مَا خُفِّفَ عَنْهُمْ.

[راجع: ٤٦٥٢]

तशरीह : ईमान और अ़ज़्म व हौसला की बात है कि जब मुसलमानों मे ये चीज़ें ख़ूब तरक़्क़ी पर थी, उनका एक एक फ़र्द दस दस पर ग़ालिब आता था, और जब इनमें कमी हो गई तो मुसलमानों की क़ुव्वत में भी फ़र्क़ आ गया।

ख़ात्मा

अल्लाह तआ़ला का बहुत बड़ा फ़ज़्ल व करम है कि आज पारा नम्बर 18 की तस्वीद से फ़राग़त ह़ासिल कर रहा हूँ। इस साल ख़ुसूसियत से बहुत से अफ़्कार व हुमूम का शिकार रहा। स़ेह़त ने बहुत काफ़ी ह़द तक मायूसी के दर्जे पर पहुँचा दिया। माली व जानी नुक़्सानात ने कमरे-हिम्मत को तोड़कर रख दिया। फिर भी दिल में यही लगन रही कि ह़ालात कुछ भी हों। बहरह़ाल व बहरसूरत ख़िदमते बुख़ारी शरीफ़ को अंजाम देना है। कातिबे बुख़ारी मौलाना मुह़म्मद ह़सन लद्दाख़ी मरहूम की वफ़ाते ह़सरत आयात से बहुत कम उम्मीद थी कि ये नेक सिलसिले ह़स्बे मंशा चल सकेगा। मगर अल्लाह पाक ने मुख़्लिस़ीन की दुआओं को क़ुबूल किया और मरहूम मौलाना लद्दाख़ी की जगह मेरे पुराने दोस्त भाई मौलाना अ़ब्दुल ख़ालिक़ स़ाह़ब ख़लीक़ बस्तवी कातिब दिल व जान से इस ख़िदमत के लिये तैयार हो गये। अल्ह़म्दुलिल्लाह ये पारा ह़ज़रत मौलाना मौसूफ़ ही की क़लम का लिखा हुआ है। मेरी दुआ है कि अल्लाह पाक मुझको और मेरे सारे कातिब ह़ज़रात को तन्दुरुस्ती के साथ ये ख़िदमत मुकम्मल करने की सआ़दत अ़ता करे। ये पारा ज़्यादातर किताबुत् तफ़्सीर पर मुश्तमिल है। इमाम बुख़ारी (रह) ने इसमें मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और आयात का इंतिख़ाब फ़र्माकर उनके मआ़नी व मत़ालिब और शाने नुज़ूल वग़ैरह सलफ़ी तर्ज़ पर बयान फ़र्माए हैं। जिनसे हम जैसे क़ुर्आने मुक़द्दस के त़ालिबे इल्मों को बहुत सी क़ीमती मा'लूमात ह़ासिल हो सकती हैं। ख़ादिम ने तर्जुमा व तशरीह़ात में इख़्तिस़ार को मल्ह़ूज़े नज़र रखा है। फिर भी इस पारे की ज़ख़ामत काफ़ी हो गई है। इस होश रूबा गिरानी के ज़माने में मुसलसल इस ख़िदमत को अंजाम देना कोई आसान काम नहीं है। दिमाग़ी व ज़हनी कद्दो काविश मुत़ालआ़ कुतुबे तराजिम व शुरूह़ फिर कातिबों और मुत़ाबेअ़ के चक्कर काटने और मौजूदा गिरानी का मुक़ाबले करना ये सारे ह़ालात बहुत ही हिम्मत तोड़ने वाले काम हैं। मगर मुख़्लिस़ीन की दुआओं का सहारा है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने करमे ख़ास़ से यहाँ तक पहुँचा दिया। भूलवश कुछ न कुछ ग़लतियाँ ज़रूर मिलेंगी। इसलिये मैं अपने क़द्रदानों से मुआ़फ़ी मांगने के साथ मुअ़ज़्ज़ उ़लमा-ए-किराम से बाअदब दरख़्वास्त करूँगा कि इस्लाह़ फ़र्माकर मुझको तहेदिल से

शुक्र अदा करने का मौक़ा दें और मुझ नाचीज़ को दुआओं में शामिल रखें कि मैं बक़ाया ख़िदमत बअह्सन तरीक़ अंजाम दे सकूँ जिसके लिये अभी काफ़ी वक़्त और सरमाया की ज़रूरत है।

या अल्लाह! महज़ तेरी रज़ा हासिल करने के लिये तेरे हबीब रसूले करीम (ﷺ) के फ़रामीने आलिया की ये क़लमी ख़िदमत अंजाम दे रहा हूँ तू इस हक़ीर ख़िदमत को कुबूल करके मेरे लिये और मेरे तमाम हमदर्दाने किराम के लिये ज़रिय-ए-सआदते दारैन बनाइयो और मेरे बाद भी इस तब्लीग़ी सिलसिले को जारी रखवाकर इस सदक़-ए-जारिया को दवाम बख़्श दीजियो, आमीन। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल्अलीम व सल्लल्लाहु अला रसूलिहिल्करीम वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन।**

राक़िम नाचीज़

मुहम्मद दाऊद राज़ अस् सलफ़ी

मौज़अ रहपुवा डाकख़ाना पुंगवाँ, ज़िला गुड़गाँव हरियाणा

यकुम जमादिष्षानी 1393 हिजरी मुताबिक़ जुलाई 1973 ईस्वी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

उन्नीसवां पारा

सूरह बराअत की तफ़्सीर
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मदनी है। इसमें 129 आयात और 16 रुकूअ हैं।

ऐ अल्लाह! तेरे पाक नाम की बरकत से ये पारा 19 शुरू कर रहा हूँ। इसको पूरा कराना तेरा काम है। बेशक तू बहुत बख़्शिश करने वाला मेहरबान है।

﴿وَلِيجَةً﴾ كُلُّ شَيْءٍ أَدْخَلْتَهُ فِي شَيْءٍ، ﴿الشُّقَّةُ﴾: السَّفَرُ، الْخَبَالُ: الْفَسَادُ، وَالْخَبَالُ: الْمَوْتُ، وَلاَ تَفْتِنِّي: لاَ تُوَبِّخْنِي، كَرْهًا وَكُرْهًا وَاحِدٌ، مُدَّخَلاً: يَدْخُلُونَ فِيهِ. يَجْمَحُونَ: يُسْرِعُونَ، وَالْمُؤْتَفِكَاتُ ائْتَفَكَتْ: انْقَلَبَتْ بِهَا الأَرْضُ، أَهْوَى: أَلْقَاهُ فِي هُوَّةٍ، عَدْنٍ خُلْدٍ عَدَنْتُ بِأَرْضٍ أَيْ أَقَمْتُ، وَمِنْهُ مَعْدِنٌ وَيُقَالُ فِي مَعْدِنِ صِدْقٍ فِي مَنْبَتِ صِدْقٍ، ﴿الْخَوَالِفُ﴾: الْخَالِفُ الَّذِي خَلَفَنِي فَقَعَدَ بَعْدِي، وَمِنْهُ يَخْلُفُهُ فِي الْغَابِرِينَ وَيَجُوزُ أَنْ يَكُونَ النِّسَاءُ مِنَ الْخَالِفَةِ، وَإِنْ كَانَ جَمْعَ الذُّكُورِ فَإِنَّهُ لَمْ يُوجَدْ عَلَى تَقْدِيرِ جَمْعِهِ إِلاَّ حَرْفَانِ، فَارِسٌ، وَفَوَارِسُ

वलीजता वह चीज़ जो किसी दूसरी चीज़ के अन्दर दाख़िल की जाए (यहाँ मुराद भेदी है) अश्शुक़्क़ा सफ़र या दूर दराज़ रास्ता ख़बाल के मा'नी फ़साद और ख़बाल मौत को भी कहते है। वला तफ़तिन्नी या'नी मुझ को मत झिड़क, मुझ पर ख़फा मत हो। करहन् व कुरहन् दोनों का मा'नी एक है या'नी ज़बरदस्ती नाख़ुशी से मुद्दख़लन घुस बैठने का मक़ाम (मसलन सुरंग वग़ैरह) यजमहून दौड़ते जाए। मुअ्तफ़िक़ात ये इतफ़कत बिहिल अर्ज़ से निकला है या'नी उसकी ज़मीन उलट दी गई। अह्वा या'नी उसको एक गढ़े में धकेल दिया जन्नाति अद्न का मा'नी हमेशगी के हैं अरब लोग बोलते हैं अदन्तु बिअर्ज़िन या'नी मैं इस सरज़मीन में रह गया इससे मअ्दन का लफ़्ज़ निकला है (जिसका मा'नी सोने या चाँदी या किसी और धातु की कान के हैं) मअ्दिने सिदक़ या'नी इस सरज़मीन में जहाँ सच्चाई उगती है। अल ख़वालिफ़ा ख़ालिफ़ की जमा है। ख़ालिफ़ वो जो मुझको छोड़कर पीछे बैठ रहा। इसी से है ये हदीष वख़्लुफ़्हू फ़ी उ़क़्बिही फ़िल् ग़ाबिरीन या'नी जो लोग मय्यत के बाद बाक़ी रह गये तो उनमें इसका क़ायम मुक़ाम बन (या'नी उनका मुहाफ़िज़ और निगाहबान हो) और ख़वालिफ़ से औरतें मुराद हैं इस सूरत में ये ख़ालिफ़त की जमा होगी (जैसे

وَهَالِكٌ وَهَوَالِكُ: الْخَيْرَاتُ وَاحِدُهَا خَيْرَةٌ، وَهِيَ الْفَوَاضِلُ. مُرْجَوْنَ: مُؤَخَّرُونَ، الشَّفَا شَفِيرٌ وَهُوَ حَدُّهُ، وَالْجُرُفُ: مَا تَجَرَّفَ مِنَ السُّيُولِ وَالأَوْدِيَةِ. هَارٍ: هَائِرٍ، يُقَالُ: تَهَوَّرَتِ الْبِئْرُ إِذَا انْهَدَمَتْ وَانْهَارَ مِثْلُهُ. لأَوَّاهُ شَفَقًا وَفَرَقًا وَقَالَ الشَّاعِرُ:

إِذَا مَا قُمْتُ أَرْحَلُهَا بِلَيْلٍ
تَأَوَّهُ آهَةَ الرَّجُلِ الْحَزِينِ

फ़ाइलतुन की जमा फ़वाइल आती है) अगर ख़ालिफ़ मुज़क्कर की जमा हो तो ये शाज होगी ऐसे मुज़क्कर की ज़ुबाने अ़रब में दो ही जम्अ़ें आती हैं जैसे फ़ारस और फ़वारिस और हालिकुन और हवालिकुन। अल ख़ैरात ख़ैरतुन की जमा है। या'नी नेकियाँ भलाइयाँ। मरजूना ढील में दिये गये (ज़ेरे दरयाफ़्त है) अश्शफ़ा कहते हैं शफ़ीर को या'नी किनारा अल जरफ़ि ज़मीन जो नदी नालों के बहाव से खुद जाती है। हार गिरने वाली उसी से है। तहव्वरतिल बीरू या'नी कुआँ गिर गया। अवाह या'नी अल्लाह के डर से और डर से आह व ज़ारी करने वला जैसे शायर (मुष़क़्क़ब अ़ब्दी) कहता है,

रात को उठकर कसूं जब ऊँटनी
ग़म ज़दा मर्दों की सी करती है आह

तश्रीह : सूरह बराअत ही का दूसरा नाम सूरह तौबा है इसमें ये मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर वारिद हुए हैं। तफ़्सीली मत़ालिब के लिये उनको उन्हीं मुक़ामात पर मुत़ालआ़ करना ज़रूरी है। यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने लग़्वि और इस्तिलाह़ी मआ़नी पर इशारात फ़र्माए हैं। अल्फ़ाज़ **व अख़्लिफ़हु फ़ी अक़्बिही फिल्गाबिरीन** के बारे में इमाम मुस्लिम ने उम्मे सलमा से निकाला कि जब अबू सलमा मर गये तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये दुआ की, **अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिअबीसल्मत वर्फ़अ दर्जतहू फिल्महदिय्यिन वख्लिफ़्हु फ़ी अकिबिही फिल्गाबिरीन.** ह़ालिका की जमा हवालिका ये अबू उ़बैदह का क़ौल है। लेकिन इब्ने मालिक ने कहा कि उनके सिवा और भी ज़म्अ़ें मुज़क्कर की आती हैं। इसी वज़न पर जैसे शाहिक़ से शवाहिक़ और नाकिस से नवाकिस और दाजिन से दवाजिन। इस शे'र को लाकर इमाम बुख़ारी (रह) ने ये ष़ाबित किया है कि अवाह बर वज़न फ़अ़ाल मुबालग़ा का स़ैग़ा है जो तावहू से निकला है। सूरह बराअत के सूरह अन्फ़ाल और सूरह तौबा अलग अलग हैं या एक ही हैं उसके जवाब में दोनों सूरतों में स़िर्फ़ एक सत़र (लाइन) का फ़ास़ला छोड़ दिया गया जिसमे कुछ लिखा न था। यहाँ बिस्मिल्लाह भी नहीं लिखी गई। ये ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है और यही क़ौल मुअतमिद है। (फ़तहुल बारी) उसके शुरू में रसूलुल्लाह (ﷺ) से बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम नहीं सुनी गई इसलिये लिखी भी नहीं गई।

١ - باب قَوْلِهِ :

बाब 1 : आयत 'बरातुम्मिनल्लाहि व रसूलिही' की तफ़्सीर

﴿بَرَاءَةٌ مِنَ اللهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أُذُنٌ يُصَدِّقُ، تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَنَحْوُهَا كَثِيرٌ، وَالزَّكَاةُ : الطَّاعَةُ وَالإِخْلاَصُ. لاَ يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ: لاَ يَشْهَدُونَ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ : يُضَاهُونَ:

या'नी ऐलान बेज़ारी है अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ से उन मुश्रिकीन से जिनसे तुमने अ़हद कर रखा है (और अब अ़हद को उन्होंने तोड़ दिया है) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि उज़्न उस शख़्स़ को कहते हैं जो हर बात सुन ले उस पर यक़ीन कर ले, तत़हिहरुहुम और तजक्क़ीहिम बिहा के एक मा'नी हैं। क़ुर्आन मजीद में ऐसे मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ बहुत हैं। अज़्ज़कात के मा'नी बंदगी और इख़्लास़ के हैं। ला यअतुनज़् ज़कात के मा'नी ये कि

कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही नहीं देते। युज़ाहिऊन अय युशब्बिहूना। या'नी अगले काफ़िरा की सी बात करते हैं।

يُشَبِّهُونَ.

तश्रीह : ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से आयत, **वैलुल्लिल्मुश्रिकीनल्लज़ीन ला यूतुनज़्ज़कात** (हाम्मीम अस्सज्द: 6-7) की तफ़्सीर में मरवी है कि वो मुश्रिक कलिम-ए-तय्यिबा ला इलाहा इल्लल्लाह ही पढ़ने से इंकार करते हैं ह़ालाँकि वो ये पढ़ लेते तो अल्लाह के नज़दीक शिर्क व कुफ़्र से पाक हो जाते। जिन लोगों ने इस आयत से ज़काते माली मुराद लेकर मुश्रिकीन को भी अह़कामे शरअ़ का मुकल्लिफ़ क़रार दिया है इमाम बुख़ारी (रह) को उनकी तर्दीद करना मक़्सूद है। (फ़त्हुल बारी)

4654. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने कि मैंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना। उन्होंने कहा कि सबसे आख़िर में ये आयत नाज़िल हुई थी। यस्तफ़्तूनका क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम फ़िल् कलालति और सबसे आख़िर में सूरह बराअत नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 4364)

٤٦٥٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: آخِرُ آيَةٍ نَزَلَتْ: ﴿يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلاَلَةِ﴾ وَآخِرُ سُورَةٍ نَزَلَتْ بَرَاءَةٌ.

[راجع: ٤٣٦٤]

तश्रीह : कुफ़्फ़ारे मक्का ने सुलहे हुदैबिया में जो-जो अ़हद किये थे, थोड़े ही दिनों बाद वो अ़हद उन्होंने तोड़ डाले और मुसलमानों के ह़लीफ़ (समर्थक) क़बीला बनू ख़ुज़ाआ़ को उन्होंने बुरी त़रह़ क़त्ल किया। उनकी फ़रियाद पर रसूले करीम (ﷺ) को भी क़दम उठाना पड़ा और उसी मौक़े पर सूरह बराअत की ये इब्तिदाई आयात नाज़िल हुईं। आख़िरी सूरह का मत़लब ये कि अकषर आयात उसकी आख़िर में उतरी हैं। आख़िरी आयत **वत्तक़ू यौमन तुर्जऊ़न फ़ीहि इलल्लाहि** (अल बक़र : 281) है जिसके चन्द दिन बाद आपका इंतिक़ाल हो गया।

बाब 2 : आयत 'फसीहू फिल्अर्ज़ि अर्बअ़त अशहुर' की तफ़्सीर या'नी,

٢- بَابُ قَوْلِهِ:

(ऐ मुश्रिकों!) ज़मीन में चार माह चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ नहीं कर सकते, बल्कि अल्लाह ही काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। सीह़ू या'नी सीरू या'नी चलो फिरो।

﴿فَسِيحُوا فِي الأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللهِ وَأَنَّ اللهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ﴾ سِيحُوا: سِيرُوا.

ये बद अ़हद मुश्रिकीन मक्का के लिये अल्टीमेटम था जो ह़ालात के पेशेनज़र बहुत ज़रूरी था।

4655. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने (कहा) और मुझे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि) ने ख़बर दी कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने उस हज्ज के मौक़े पर (जिसका आँह़ज़रत ﷺ ने उन्हें अमीर बनाया था) मुझे भी उन ऐलान करने वालों में रखा था, जिन्हें आँह़ज़रत (ﷺ) ने यौमे नह़र में इसलिये भेजा था कि ऐलान कर दें कि आइन्दा

٤٦٥٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ : قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ : وَأَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بَعَثَنِي أَبُوبَكْرٍ فِي تِلْكَ الْحَجَّةِ فِي مُؤَذِّنِينَ بَعَثَهُمْ يَوْمَ النَّحْرِ يُؤَذِّنُونَ بِمِنًى أَنْ لاَ يَحُجَّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ وَلاَ يَطُوفَ

साल से कोई मुश्रिक हज्ज करने न आए और कोई शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगे होकर न करे। हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने कहा फिर उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को पीछे से भेजा और उन्हें सूरह बराअत के अहकाम के ऐलान करने का हुक्म दिया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा, चुनाँचे हमारे साथ हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने भी यौमे नहर में सूरह बराअत का ऐलान किया और इसका कि आइन्दा साल से कोई मुश्रिक हज्ज न करे और न कोई नंगे होकर तवाफ़ करे। (राजेअ़ : 369)

بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ قَالَ حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: ثُمَّ أَرْدَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِعَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَأَمَرَهُ أَنْ يُؤَذِّنَ بِبَرَاءَةٍ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : فَأَذَّنَ مَعَنَا عَلِيٌّ يَوْمَ النَّحْرِ فِي أَهْلِ مِنًى بِبَرَاءَةٍ، وَأَنْ لاَ يَحُجَّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ وَلاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ.

[راجع: ٣٦٩]

तश्रीह : इस सरकारी अहम ऐलान के लिये पहले हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को मामूर किया गया है। बाद में आपको बज़रिये वह्य बतलाया गया कि आईने अ़रब के मुताबिक़ ऐसे अहम ऐलान के लिये (ख़ुद आँहज़रत ﷺ का होना ज़रूरी है वरना आप (ﷺ) के अहले बैत से किसी को होना चाहिये इसलिये बाद में हज़रत अ़ली (रज़ि.) को रवाना किया गया। हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को हज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ बतौरे मुनादी के मुक़र्रर कर दिया था। (फ़त्हुल बारी)

हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने जिन उमूर का ऐलान किया वो ये थे, **ला यदखुलुल्जन्नत इल्ला नफ़्सुन मूमिनतुन व ला यतूफ़ु बिल्बयति उ़र्यानन व ला यज्तमिउ़ मुस्लिमुन मअ़ मुश्रिकीन फिल्हज्जि बअ़द आ़मिहिम हाज़ा व मन कान लहू अ़हदुन फ़अहदुहू इला मुद्दतिही व मल्लम यकुल्लहू अ़हदुन फअर्बअ़त अशहुर** (फ़त्हुल बारी) या'नी जन्नत में सिर्फ़ ईमान वाले ही दाख़िल होंगे और अब से कोई आदमी नंगा होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ न कर सकेगा और न आइन्दा से हज्ज के लिये कोई मुश्रिक मुसलमानों के साथ जमा हो सकेगा और जिसके लिये इस्लाम की तरफ़ से कोई अ़हद है और जिस मुद्दत के लिये है वो बरक़रार रहेगा और जिसके लिये कोई अ़हदनामा नहीं है उसकी मुद्दत सिर्फ़ चार माह मुक़र्रर की जा रही है। इस अ़र्सा में वो मुसलमानों के ख़िलाफ़ अपनी साज़िशों को ख़त्म करके ज़िम्मी बन जाएँ वरना बाद में उनके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग होगा। हुकूमते इस्लामी के क़याम के बाद इस्लाहात के सिलसिले में ये कलीदी ऐलानात थे जो हर ख़ास़ व आ़म तक पहुँचाए गये।

बाब 3 : आयत 'व अज़ानुम्मिनल्लाहि व रसूलिही' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قَوْلِهِ :

और ऐलान (किया जाता है) अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से लोगों के सामने बड़े हज्ज के दिन कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों से बेज़ार हैं, फिर भी अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे हक़ मे बेहतर है और अगर तुम चेहरे फेरते ही रहे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं हो और काफ़िरों को अ़ज़ाबे दर्दनाक की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए। आज़नहुम अय आ़लमहुम या'नी उनको आगाह किया।

﴿وَأَذَانٌ مِنَ اللهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الأَكْبَرِ أَنَّ اللهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ، فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ، وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللهِ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾ آذَنَهُمْ : أَعْلَمَهُمْ.

4656. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने

٤٦٥٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : فَأَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ

الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ : بَعَثَنِي أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِي تِلْكَ الْحَجَّةِ فِي الْمُؤَذِّنِينَ بَعَثَهُمْ يَوْمَ النَّحْرِ يُؤَذِّنُونَ بِمِنًى أَنْ لاَ يَحُجَّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ قَالَ حُمَيْدٌ : ثُمَّ أَرْدَفَ النَّبِيُّ ﷺ بِعَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ فَأَمَرَهُ أَنْ يُؤَذِّنَ بِبَرَاءَةَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَأَذَّنَ مَعَنَا عَلِيٌّ فِي أَهْلِ مِنًى يَوْمَ النَّحْرِ بِبَرَاءَةَ وَأَنْ لاَ يَحُجَّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. [راجع: ٣٦٩]

कहा, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हज्ज के मौक़ा पर (जिसका आँहज़रत ﷺ ने उन्हें अमीर बनाया था) मुझको उन ऐलान करने वालों में रखा था जिन्हें आपने यौमे नहर में भेजा था मिना में ये ऐलान करने के लिये कि इस साल के बाद कोई मुश्रिक हज्ज करने न आए और न कोई शख़्स बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगा होकर करे। हुमैद ने कहा कि पीछे से नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को भेजा और उन्हें हुक्म दिया कि सूरह बराअत का ऐलान कर दें। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि फिर हज़रत अली (रज़ि.) ने हमारे साथ मिना के मैदान में दसवीं तारीख़ में सूरह बराअत का ऐलान किया और ये कि कोई मुश्रिक आइन्दा साल से हज्ज करने न आए और न कोई बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगा होकर करे। (राजेअ : 369)

तश्रीह : मुश्रिकीने अरब में एक तसव्वुर ये भी था कि उनके कपड़े बहरहाल गन्दे हैं। लिहाज़ा वो हज्ज और तवाफ़ के लिये या तो क़ुरैशे मक्का का लिबास आरियतन हासिल करें अगर ये न मिल सके तो फिर तवाफ़ बिलकुल नंगे होकर किया जाए। इसी रस्मे बद के ख़िलाफ़ ये ऐलान किया गया।

बाब 4 : आयत 'इल्लल लज़ीन आहत्तुम मिनल्मुश्रिकीन' की तफ़्सीर या'नी,

٤-باب قوله إِلاَّ الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

मगर हाँ वो मुश्रिकीन उससे अलग हैं जिनसे तुमने अहद लिया (और वो अहद पर क़ायम हैं जिनको ज़िम्मी कहा गया है)

٤٦٥٧ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بَعَثَهُ فِي الْحَجَّةِ الَّتِي أَمَّرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهَا قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ فِي رَهْطٍ يُؤَذِّنُ فِي النَّاسِ أَنْ لاَ يَحُجَّنَّ بَعْدَ الْعَامِ مُشْرِكٌ، وَلاَ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ عُرْيَانٌ. فَكَانَ حُمَيْدٌ يَقُولُ يَوْمُ النَّحْرِ: يَوْمُ الْحَجِّ الأَكْبَرِ مِنْ أَجْلِ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ. [راجع: ٣٦٩]

4657. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद (इब्राहीम बिन सअ़द) ने बयान किया, उनसे सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने इस हज्ज के मौक़े पर जिसका उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अमीर बनाया था। हज्जतुल वदाअ़ से (एक साल) पहले 9 हिजरी में उन्हें भी उन ऐलान करने वालों में रखा था जिन्हें लोगों में आपने ये ऐलान करने के लिये भेजा था कि आइन्दा साल से कोई मुश्रिक हज्ज करने न आए और न कोई बैतुल्लाह का तवाफ़ नंगा होकर करे। हुमैद ने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की इस हदीष से मा'लूम होता है कि यौमे नहर बड़े हज्ज का दिन है। (राजेअ़ :369)

लोगों में मशहूर है कि जुम्आ के दिन हज्ज हो तो वो हज्जे अकबर है ये सह़ीह़ नहीं है। इस हदीष की रू से यौमे नहर का दिन हज्जे अकबर का दिन है। यौमे नहर में हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने ख़ुत्बा दिया और हज़रत अली (रज़ि.) ने सूरह बराअत

को पढ़कर सुनाया था। ये ऐलान 9 हिजरी में किया गया था। (फ़त्ह)

बाब 5 : आयत 'फ़क़ातिलू अइम्मतल्कुफ़्रि' की तफ़्सीर या'नी, कुफ़्र के सरदारों से जिहाद करो अहद तोड़ देने की सूरत में अब उनकी क़समें बातिल हो चुकी हैं।

٥- باب قوله ﴿فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لاَ أَيْمَانَ لَهُمْ﴾

4658. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया कि हम हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान की ख़िदमत में हाज़िर थे उन्होंने कहा ये आयत जिन लोगों के बारे मे उतरी उनमें से अब सिर्फ़ तीन शख़्स बाक़ी हैं, उसी तरह मुनाफ़िक़ों मे से भी अब चार शख़्स बाक़ी हैं, इतने में एक देहाती कहने लगा आप तो आँहज़रत (ﷺ) के सहाबी हैं, हमें उन लोगों के बारे में बताइये कि उनका क्या हश्र होगा जो हमारे घरों मे छेद करके अच्छी चीज़ें चुराकर ले जाते हैं? उन्होंने कहा कि ये लोग फ़ासिक़ बदकार हैं। हाँ उन मुनाफ़िक़ों में चार के सिवा और कोई बाक़ी नहीं रहा है और एक तो इतना बूढ़ा हो चुका है कि अगर ठण्डा पानी पीता है तो उसकी ठण्ड का भी उसे पता नहीं चलता।

٤٦٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَهْبٍ، قَالَ: كُنَّا عِنْدَ حُذَيْفَةَ فَقَالَ: مَا بَقِيَ مِنْ أَصْحَابِ هَذِهِ الآيَةِ إِلاَّ ثَلاَثَةٌ وَلاَ مِنَ الْمُنَافِقِينَ إِلاَّ أَرْبَعَةٌ، فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: إِنَّكُمْ أَصْحَابَ مُحَمَّدٍ ﷺ تُخْبِرُونَا فَلاَ نَدْرِي فَمَا بَالُ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ يَبْقُرُونَ بُيُوتَنَا وَيَسْرِقُونَ أَعْلاَقَنَا؟ قَالَ : أُولَئِكَ الْفُسَّاقُ أَجَلْ لَمْ يَبْقَ مِنْهُمْ إِلاَّ أَرْبَعَةٌ أَحَدُهُمْ شَيْخٌ كَبِيرٌ لَوْ شَرِبَ الْمَاءَ الْبَارِدَ لَمَا وَجَدَ بَرْدَهُ.

तशरीह : आयत में अइम्मतुल कुफ़्र से अबू सुफ़यान और अबू जहल और उत्बा और सुहैल बिन अम्र वग़ैरह मुराद हैं। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) का मतलब ये है कि ये सब लोग मारे गये या मर गये सिर्फ़ तीन अश्ख़ास उनमें से ज़िन्दा हैं। या'नी अबू सुफ़यान और सुहैल और एक कोई शख़्स। गो उस वक़्त अबू सुफ़यान और सुहैल मुसलमान हो गये थे। मगर आयत के उतरते वक़्त ये लोग अइम्मतुल कुफ़्र थे जिससे अफ़्वाजे कुफ़्फ़ार के सरकर्दा मुराद हैं। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के राज़दार थे। उनको मा'लूम होगा हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं कि मज़्कूरा चार मुनाफ़िक़ीन के नाम मुझको मा'लूम नहीं हुए। (फ़त्हुल बारी)

बाब 6 : आयत 'वल्लज़ीन यक्निज़ूनज़्ज़हब वल्फ़िज़्ज़त' की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب قوله ﴿وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلاَ يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾

ऐ नबी! और जो लोग कि सोना और चाँदी ज़मीन में गाड़कर रखते हैं और उसको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, आप उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दें।

4659. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया,

٤٦٥٩- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، أَنَّ عَبْدَ

الرَّحْمَنِ الأَعْرَجَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَكُونُ كَنْزُ أَحَدِكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُجَاعًا أَقْرَعَ)). [راجع: ١٤٠٣]

उनसे अ़ब्दुर्रहमान अअ़रज ने बयान किया और उन्होंने कहा कि मुझसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आप फ़र्मा रहे थे कि तुम्हारा ख़ज़ाना जिसमें से ज़कात न दी गई हो क़यामत के दिन गंजे सांप की शक्ल इख़्तियार करेगा। (राजेअ़ : 1403)

٤٦٦٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، قَالَ: مَرَرْتُ عَلَى أَبِي ذَرٍّ بِالرَّبَذَةِ فَقُلْتُ: مَا أَنْزَلَكَ بِهَذِهِ الأَرْضِ قَالَ: كُنَّا بِالشَّامِ فَقَرَأْتُ: ﴿وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلاَ يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾ قَالَ مُعَاوِيَةُ : مَا هَذِهِ فِينَا مَا هَذِهِ إِلاَّ فِي أَهْلِ الْكِتَابِ، قَالَ: قُلْتُ إِنَّهَا لَفِينَا وَفِيهِمْ. [راجع: ١٤٠٦]

4660. हमसे क़ुतैबा बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे हुसैन ने, उनसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया कि मैं मक़ामे रब्ज़ा में अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि इस जंगल में आपने क्यूँ क़याम को पसन्द किया? फ़र्माया कि हम शाम में थे। (मुझमें और वहाँ के ह़ाकिम मुआ़विया (रज़ि.) में इख़्तिलाफ़ हो गया) मैंने ये आयत पढ़ी और जो लोग सोना और चाँदी जमा करके रखते हैं और उसको ख़र्च नहीं करते अल्लाह की राह में, आप उन्हें एक दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें तो मुआ़विया (रज़ि.) कहने लगे कि ये आयत हम मुसलमानों के बारे में नहीं है (जब वो ज़कात देते रहें) बल्कि अहले किताब के बारे में है, फ़र्माया कि मैंने इस पर कहा कि ये हमारे बारे में भी है और अहले किताब के बारे में भी है। (राजेअ़ : 1406)

तशरीह़ : बस इस मसले पर मुझसे अमीर मुआ़विया की तकरार हो गई। मुआ़विया ने मेरी शिकायत ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) को लिखी। उन्होंने मुझको शाम से यहाँ बुला लिया। मैं मदीना आ गया वहाँ भी बहुत लोग मेरे पास इकट्ठे हो गये। मैंने ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) से उसका ज़िक्र किया उन्होंने कहा कि तुम चाहो तो यहीं अलग जाकर रहो इस वजह से मैं यहाँ जंगल में आकर रह गया हूँ। ह़ज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी (रज़ि.) बहुत बड़े ज़ाहिद तारिकुद्दुनिया (दुनियादारी से परे) बुज़ुर्ग थे इसलिये उनकी दूसरे लोगों से कमबख़्ती थी। आख़िर वो ख़ल्वत-पसंद हो गये और उसी ख़ल्वत में उनकी वफ़ात हो गई।

٧- باب قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿يَوْمَ يُحْمَى عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَذَا مَا كَنَزْتُمْ لأَنْفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ﴾.

बाब 7 : आयत 'यौम युहमा अ़लैहा फी नारि जहन्नम' की तफ़्सीर या'नी,

उस दिन को याद करो जिस दिन (सोने चाँदी) को दोज़ख़ की आग में तपाया जाएगा। फिर उससे (जिन्होंने उस ख़ज़ाने की ज़कात नहीं अदा की) उनकी पेशानियों को और उनके पहलूओं को और उनकी पुश्तों को दाग़ा जाएगा। (और उनसे कहा जाएगा) यही है वो माल जिसे तुमने अपने वास्ते जमा कर रखा था सो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो।

٤٦٦١- وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ شَبِيبِ بْنِ

4661. अहमद बिन शबीब बिन सईद ने कहा कि हमसे मेरे

वालिद (शबीब बिन सईद) ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे ख़ालिद बिन असलम ने कि हम अ़ब्दुल्लाह बिनउ़मर (रज़ि.) के साथ निकले तो उन्होंने कहा कि ये (मज़्कूरा बाला आयत) ज़कात के हुक्म से पहले नाज़िल हुई थी। फिर जब ज़कात का हुक्म हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने ज़कात से मालों को पाक कर दिया। (राजेअ़ : 1404)

سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ أَسْلَمَ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ فَقَالَ: هَذَا قَبْلَ أَنْ تُنزَلَ الزَّكَاةُ فَلَمَّا أُنزِلَتْ جَعَلَهَا اللهُ طُهْرًا لِلأَمْوَالِ. [راجع: ١٤٠٤]

तश्रीह : वो सरमायादार दौलत के पुजारी जो दिन–रात तिजोरियों को भरने में रहते हैं और वो फ़ी सबीलिल्लाह का नाम भी नहीं जानते क़यामत के दिन उनकी दौलत का नतीजा ये होगा जो आयत और ह़दीष़ में ज़िक्र हो रहा है।

बाब 8 : आयत 'इन्न इद्दतश्शुहूरि इन्दल्लाहि इष़्ना अशर शहरन' की तफ़्सीर या'नी,

٨- باب قَوْلِهِ : ﴿إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ﴾ الْقَيِّمُ : هُوَ الْقَائِمُ.

बेशक महीनों का शुमार अल्लाह के नज़दीक किताबे इलाही में बारह महीने हैं। जिस रोज़ से कि उसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उनमें से चार महीने हुर्मत वाले हैं। क़य्यिम बमा'नी अल क़ाइम जिसके मा'नी दुरुस्त और सीधे के हैं।

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **अय अन्नल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला इब्तदअ खल्क़स्समावाति वल्अर्ज़ि जअ़लस्सनत इष़्ना अशर शहरन** (फ़तह़) या'नी अल्लाह ने जब ज़मीन आसमान को पैदा किया उसी वक़्त बारह महीने का साल मुक़र्रर फ़र्माया। पस कुफ़्फ़ारे अ़रब का 13–14 माह तक का अपनी मंशा के मुताबिक़ साल बना लेना ग़लत क़रार दिया गया। सने अ़रबी हिलाली सिर्फ़ बारह महीनों पर मुश्तमिल होता है। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं कि जिस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये ख़ुत्बा दिया सूरज बुर्जे ह़मल में था जबकि रात और दिन दोनों बराबर हो जाते हैं। (फ़तह़)

4662. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र ने , उनसे उनके वालिद अबूबक्र नफ़ीअ़ बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (हज्जतुल विदाअ़ के ख़ुत्बे में) फ़र्माया देखो ज़माना फिर अपनी पहली उसी हैयत (शक्ल) पर आ गया है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया था। साल बारह महीने का होता है, उनमें से चार हुर्मत वाले महीने हैं। तीन तो लगातार या'नी ज़ी क़अ़दा, ज़ुल् हिज्ज और मुहर्रम और चौथा रजब मुज़र जो जमादिल उख़्रा और शाबान के दरम्यान में पड़ता है। (राजेअ़ : 67)

٤٦٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ الزَّمَانَ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللهُ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ثَلاَثٌ مُتَوَالِيَاتٌ ذُو الْقَعْدَةِ، وَذُو الْحَجَّةِ، وَالْمُحَرَّمُ، وَرَجَبُ مُضَرَ الَّذِي بَيْنَ جُمَادَي وَشَعْبَانَ)). [راجع: ٦٧]

बाब 9 : आयत 'ष़ानिष्नैनि इज़ हुमा फिल्गारि' की तफ़्सीर या'नी, जब कि दो में से एक वो थे दोनों ग़ार में (मौजूद)

٩- باب قَوْلِهِ : ﴿ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ﴾

مَعَنا: نَاصِرُنَا السَّكِينَةُ : فَعِيلَةٌ مِنَ السُّكُونِ.

थे। जब वो रसूल (ﷺ) अपने साथी से कह रहा था कि फ़िक्र न कर अल्लाह पाक हमारे साथ है। मा'ना या'नी हमारा मुहाफ़िज़ और मददगार है। सकीनत फ़ईलतुन के वज़न पर सकून से निकला है।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) और तमाम अहले हदीष़ ने अल्लाह पाक की मइय्यत (साथ होने) से यही मुराद ली है कि उसका इल्म सबके साथ है और उसकी मदद मोमिनों के साथ है। (बेहतर ये था कि अल्लाह तआ़ला की किसी भी सिफ़त की किसी तरह की भी तावील न की जाए। उसको उसकी हालत पर छोड़ दिया जाए। मइय्यत भी अल्लाह की सिफ़त है जैसी उसकी शान के लायक़ है वैसी ही हम भी मानेंगे। (महमूदुल हसन असद)

٤٦٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا ثَابِتٌ، حَدَّثَنَا أَنَسٌ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَارِ فَرَأَيْتُ آثَارَ الْمُشْرِكِينَ قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ رَفَعَ قَدَمَهُ رَآنَا قَالَ ((مَا ظَنُّكَ بِاثْنَيْنِ اللهُ ثَالِثُهُمَا؟)).

[راجع: ٣٦٥٣]

4663. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे हब्बान बिन हिलाल बाहली ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे ष़ाबित ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैं ग़ारे ष़ौर में नबी करीम (ﷺ) के साथ था। मैंने काफ़िरों के पैर देखे (जो हमारे सर पर खड़े हुए थे) सिद्दीक़ (रज़ि.) घबरा गये और बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर इनमे से किसी ने ज़रा भी क़दम उठाए तो वो हमको देख लेगा। आपने फ़र्माया तू क्या समझता है उन दो आदमियों को (कोई नुक़्सान पहुँचा सकेगा) जिनके साथ तीसरा अल्लाह तआ़ला हो। (राजेअ़ : 3653)

٤٦٦٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ حِينَ وَقَعَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ ابْنِ الزُّبَيْرِ قُلْتُ: أَبُوهُ الزُّبَيْرُ، وَأُمُّهُ أَسْمَاءُ، وَخَالَتُهُ عَائِشَةُ، وَجَدُّهُ أَبُو بَكْرٍ وَجَدَّتُهُ صَفِيَّةُ فَقُلْتُ لِسُفْيَانَ : إِسْنَادُهُ فَقَالَ: حَدَّثَنَا فَشَغَلَهُ إِنْسَانٌ وَلَمْ يَقُلْ ابْنُ جُرَيْجٍ.

[طرفاه في: ٤٦٦٥، ٤٦٦٦].

4664. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मेरा अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से इख़्तिलाफ़ हो गया था तो मैंने कहा कि उनके वालिद ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) थे, उनकी वालिदा अस्मा बिन्ते अबूबक्र थीं , उनकी ख़ाला आइशा (रज़ि.) थीं। उनके नाना अबूबक्र (रज़ि.) थे और उनकी दादी (हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की फूफी) स़फ़िया (रज़ि.) थीं (अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया कि) मैंने सुफ़यान (इब्ने उ़ययना) से पूछा कि इस रिवायत की सनद क्या है? तो उन्होंने कहना शुरू किया हद्दष़ना (हमसे हदीष़ बयान की) लेकिन अभी इतना ही कहने पाये थे कि उन्हें एक दूसरे शख़्स ने दूसरी बातों में लगा दिया और (रावी का नाम) इब्ने जुरैज वो न बयान कर सके। (दीगर मक़ाम : 4665, 4666)

इस सूरत में ये अन्देशा रह गया था कि शायद सुफ़यान ने ये हदीष़ ख़ुद इब्ने जुरैज से बिला वास्ता न सुनी हो। इसीलिये हज़रत

इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष़ को दूसरे त़रीक़ से भी इब्ने जुरैज से निकाला।

4665. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या इब्ने मईन ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज्जाज बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि ह़ब्ने अ़ब्बास और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) के बीच बअ़त का झगड़ा पैदा हो गया था, मैं सुबह को इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया आप अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से जंग करना चाहते हैं, उसके बावजूद कि अल्लाह के ह़रम की बेहुर्मती होगी? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया मआ़ज़ अल्लाह! ये तो अल्लाह तआ़ला ने इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) और बनू उमय्या ही के मुक़द्दर में लिख दिया है कि वो ह़रम की बेहुर्मती करें। अल्लाह की क़सम! मैं किसी सूरत में भी इस बेहुर्मती के लिये तैयार नहीं हूँ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि लोगों ने मुझसे कहा था कि इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) से बेअ़त कर लो। मैंने उनसे कहा कि मुझे उनकी ख़िलाफ़त को तस्लीम करने में क्या ताम्मुल हो सकता है, उनके वालिद आह़ज़रत (ﷺ) के ह़वारी थे, आपकी मुराद ज़ुबैर बिन अ़वाम (रज़ि.) से थी। उनके नाना स़ाह़िबेग़ार थे, इशारा अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) की त़रफ़ था। उनकी वालिदा स़ाह़िबे नत़ाक़ेन थीं या'नी ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.)। उनकी ख़ाला उम्मुल मोमिनीन थीं, मुराद ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से थी। उनकी फूफी नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा थीं, मुराद ख़दीजा (रज़ि.) से थी। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की मुराद इन बातों से ये थी कि वो बहुत सी ख़ूबियों के मालिक हैं और ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की फूफी उनकी दादी हैं, इशारा स़फ़िया (रज़ि.) की त़रफ़ था। उसके अ़लावा वो ख़ुद इस्लाम में हमेशा स़ाफ़ किरदार और पाकदामन रहे और क़ुर्आन के आ़लिम हैं और अल्लाह की क़सम! अगर वो मुझसे अच्छा बर्ताव करें तो उनको करना ही चाहिये वो मेरे बहुत क़रीब के रिश्तेदार हैं और अगर वो मुझ पर हुकूमत करें तो ख़ैर हुकूमत करें वो हमारे बराबर के इ़ज़्ज़त वाले हैं लेकिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने तो तुवैत, उसामा और हुमैद के लोगों को हम पर तरजीह दी है। उनकी मुराद मुख़्तलिफ़ क़बाइल या'नी बनू असद, बनू तुवैत, बनू उसामा और बनू असद से थी। उधर इब्ने अबी अल् आ़स़ बड़ी उम्दगी से चल रहा है या'नी अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान मुसलसल पेशक़दमी कर

٤٦٦٥- حدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: قَالَ ابْنُ أبي مُلَيْكَةَ : وَكَانَ بَيْنَهُمَا شَيْءٌ فَغَدَوْتُ عَلَى ابْنَ عَبَّاسٍ فَقُلْتُ : أَتُرِيدُ أَنْ تُقَاتِلَ ابْنَ الزُّبَيْرِ فَتُحِلَّ حَرَمَ اللهِ؟ فَقَالَ : مَعَاذَ اللهِ إِنَّ اللهَ كَتَبَ ابْنَ الزُّبَيْرِ وَبَنِي أُمَيَّةَ مُحِلِّينَ وَإِنِّي وَاللهِ لاَ أُحِلُّهُ أَبَدًا قَالَ : قَالَ النَّاسُ بَايِعْ لابْنِ الزُّبَيْرِ فَقُلْتُ : وَأَيْنَ بِهَذَا الأَمْرِ عَنْهُ أَمَّا أَبُوهُ فَحَوَارِيُّ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يُرِيدُ الزُّبَيْرَ. وَأَمَّا جَدُّهُ فَصَاحِبُ الْغَارِ، يُرِيدُ أَبَا بَكْرٍ. وَأَمَّا أُمُّهُ فَذَاتُ النِّطَاقِ يُرِيدُ أَسْمَاءَ وَأَمَّا خَالَتُهُ فَأُمُّ الْمُؤْمِنِينَ يُرِيدُ عَائِشَةَ، وَأَمَّا عَمَّتُهُ فَزَوْجُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُرِيدُ خَدِيجَةَ، وَأَمَّا عَمَّةُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَدَّتُهُ، يُرِيدُ صَفِيَّةَ، ثُمَّ عَفِيفٌ فِي الإِسْلاَمِ قَارِئٌ لِلْقُرْآنِ وَاللهِ إِنْ وَصَلُونِي وَصَلُونِي مِنْ قَرِيبٍ وَإِنْ رَبُّونِي رَبُّونِي أَكْفَاءٌ كِرَامٌ فَآثَرَ التُّوَيْتَاتِ وَالأُسَامَاتِ وَالْحُمَيْدَاتِ يُرِيدُ أَبْطُنًا مِنْ أَسَدٍ بَنِي تُوَيْتٍ وَبَنِي أُسَامَةَ وَبَنِي أَسَدٍ إِنَّ ابْنَ أَبِي الْعَاصِ بَرَزَ يَمْشِي الْقُدَمِيَّةَ يَعْنِي عَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ مَرْوَانَ وَإِنَّهُ لَوَّى ذَنَبَهُ يَعْنِي ابْنَ الزُّبَيْرِ.

[راجع: ٤٦٦٤]

रहा है और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने तो उसके सामने दुम दबा ली है। (राजेअ : 4664)

अब्दुल मलिक ने ख़लीफ़ा होते ही अर्ज़ का मुल्क इब्ने ज़ुबैर से छीन लिया उनके भाई मुस़अब को मार डाला फिर मक्का भी फ़तह कर लिया। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) शहीद हो गये जैसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा था वैसा ही हुआ। क़बीला तुवैत की निस्बत तुवैत बिन असद की तरफ़ है और उसामात की निस्बत बनी उसामा बिन असद बिन अब्दुल उ़ज़्ज़ा की तरफ़ है और हुमैदात की निस्बत भी हुमैद बिन ज़ुहैर बिन हारिष़ की तरफ़ है। ये सारे ख़ानदान इब्ने ज़ुबैर के दादा ख़ुवैलिद बिन असद पर जमा हो जाते हैं। (फ़त्ह)

4666. हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद बिन मैमून ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने, उनसे उ़मर बिन सईद ने, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने ख़बर दी कि हम इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने कहा कि इब्ने ज़ुबैर पर तुम्हें हैरत नहीं होती। वो अब ख़िलाफ़त के लिये खड़े हो गये हैं तो मैंने इरादा कर लिया कि उनके लिये मेहनत मशक़्क़त करूँगा कि ऐसी मेहनत और मशक़्क़त मैंने अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) के लिये भी नहीं की। हालाँकि वो दोनों उनसे हर हैषियत से बेहतर थे। मैंने लोगों से कहा कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी की औलाद में से हैं। ज़ुबैर के बेटे और अबूबक्र के नवासे, ख़दीजा (रज़ि.) के भाई के बेटे, आइशा (रज़ि.) की बहन के बेटे। लेकिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने क्या किया वो मुझसे ग़ुरूर करने लगे। उन्होंने नहीं चाहा कि मैं उनके ख़ास़ मुस़ाहिबों में रहूँ (अपने दिल में कहा) मुझको हर्गिज़ ये गुमान न था कि मैं तो उनसे ऐसी आजिज़ी करूँगा और वो इस पर भी मुझसे राज़ी न होंगे। ख़ैर अब मुझे उम्मीद नहीं कि वो मेरे साथ भलाई करेंगे जो होना था वो हुआ अब बनी उमय्या जो मेरे चचाज़ाद भाई हैं अगर मुझ पर हुकूमत करें तो ये मुझको औरों के हुकूमत करने से ज़्यादा पसंद है। (राजेअ :3664)

٤٦٦٦– حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ مَيْمُون، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي ابن أَبِي مُلَيْكَةَ دَخَلْنَا عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقَالَ: أَلاَ تَعْجَبُونَ لابْنِ الزُّبَيْرِ قَامَ فِي أَمْرِهِ هَذَا ؟ فَقُلْتُ : لأُحَاسِبَنَّ نَفْسِي لَهُ مَا حَاسَبْتُهَا لأَبِي بَكْرٍ وَلاَ لِعُمَرَ وَلَهُمَا كَانَا أَوْلَى بِكُلِّ خَيْرٍ مِنْهُ وَقُلْتُ ابْنُ عَمَّةِ النَّبِيِّ ﷺ، وَابْنُ الزُّبَيْرِ، وَابْنُ أَبِي بَكْرٍ، وَابْنُ أَخِي خَدِيجَةَ، وَابْنُ أُخْتِ عَائِشَةَ فَإِذَا هُوَ يَتَعَلَّى عَنِّي وَلاَ يُرِيدُ ذَلِكَ فَقُلْتُ: مَا كُنْتُ أَظُنُّ أَنِّي أَعْرِضُ هَذَا مِنْ نَفْسِي فَيَدَعُهُ وَمَا أُرَاهُ يُرِيدُ خَيْرًا وَإِنْ كَانَ لاَ بُدَّ لأَنْ يَرُبَّنِي بَنُو عَمِّي أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَرُبَّنِي غَيْرُهُمْ.

[راجع: ٣٦٦٤]

तश्रीह : इन तमाम रिवायात में किसी न किसी तरह से हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर हुआ है। इस आयत के तहत उन अहादीष़ को लाने का यही मक़्सद है। स़हाब-ए-किराम के ऐसे बाहमी मुज़ाकिरात जो नक़्ल हुए हैं वो इस बिना पर क़ाबिले मुआफ़ी हैं कि वो भी सब इंसान ही थे। मा'सूम अनिल ख़ता नहीं थे। हमको उन सबके लिये दुआ-ए-ख़ैर का हुक्म दिया गया है। **रब्बनग़्फ़िरलना वलि इख़्वानिनल्लज़ीन सबक़ूना बिल ईमान वला तज्अल फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्ला लिल्लज़ीन आमनू रब्बना इन्नका रऊफ़ुर्रहीम** (आमीन)

बाब 10 : आयत 'वल्मुअल्लफ़ति क़ुलूबुहुम' की तफ़्सीर या'नी, नेज़ उन (नौ मुस्लिमों का भी हक़ है) जिनकी

١٠– باب قَوْلِهِ : ﴿وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ﴾ قَالَ مُجَاهِدٌ : يَتَأَلَّفُهُمْ

بِالْعَطِيَّةِ

दिलजोई मंज़ूर है। मुजाहिद ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) उन नौ मुस्लिम लोगों को कुछ दे दिलाकर उनकी दिलजोई फ़र्माया करते थे।

٤٦٦٧ - حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بُعِثَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَيْءٍ فَقَسَمَهُ بَيْنَ أَرْبَعَةٍ وَقَالَ أَتَأَلَّفُهُمْ فَقَالَ رَجُلٌ: مَا عَدَلْتَ فَقَالَ: ((يَخْرُجُ مِنْ ضِئْضِيءِ هَذَا قَوْمٌ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ)).
[راجع: ٣٣٤٤]

4667. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद सईद बिन मसरूक़ ने, उन्हें इब्ने अबी नअम ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास कुछ माल आया तो आपने चार आदमियों में उसे तक़्सीम कर दिया। (जो नौ मुस्लिम थे) और फ़र्माया कि मैं ये माल देकर उनकी दिलजोई करना चाहता हूँ इस पर (बनू तमीम का) एक शख़्स बोला कि आपने इंसाफ़ नहीं किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस शख़्स की नस्ल से ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन से बाहर जाएँगे। (राजेअ: 3344)

वह चार आदमी ज़ुरआ और उ़ययना और ज़ैद और अ़ल्क़मा थे। ये माल ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने सोने के डले की शक्ल में भेजा थे।

١١ - باب قَوْلِهِ : ﴿الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ﴾ يَلْمِزُونَ : يَعِيبُونَ وَجُهْدَهُمْ وَجَهْدَهُمْ : طَاقَتَهُمْ

बाब 11 : आयत 'अल्लज़ीन यल्मिज़ूनल्मुतव्विईन'

की तफ़्सीर यल्मिज़ून का मा'नी ऐ़ब लगाते हैं, त़ाना मारते हैं। जुहदहुम (जीम के ज़म्मा) और जह्दहुम जीम के नस़ब के साथ दोनों क़िरात हैं। या'नी मेहनत मज़दूरी करके मक़दूर के मुवाफ़िक़ देते हैं।

या'नी ये ऐसे बदज़बान हैं जो स़दक़ात के बारे में नफ़िल स़दक़ा देने वाले मुसलमानों पर त़ान करते हैं।

٤٦٦٨ - حدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ أَبُو مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ قَالَ : لَمَّا أُمِرْنَا بِالصَّدَقَةِ، كُنَّا نَتَحَامَلُ فَجَاءَ أَبُو عَقِيلٍ بِنِصْفِ صَاعٍ وَجَاءَ إِنْسَانٌ بِأَكْثَرَ مِنْهُ، فَقَالَ الْمُنَافِقُونَ : إِنَّ اللهَ لَغَنِيٌّ عَنْ صَدَقَةِ هَذَا وَمَا فَعَلَ هَذَا الآخَرُ إِلاَّ رِيَاءً فَنَزَلَتْ : ﴿الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لاَ يَجِدُونَ إِلاَّ جُهْدَهُمْ﴾. الآيَةَ.
[راجع: ١٤١٥]

4668. मुझसे अबू मुहम्मद बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें सुलैमान आ'मश ने, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे अबू मसऊ़द अंस़ारी (रज़ि) ने बयान किया कि जब हमें ख़ैरात करने का हुक्म हुआ तो हम मज़दूरी पर बोझ उठाते (और उसकी मज़दूरी स़दक़ा में दे देते) चुनाँचे अबू अ़क़ील उसी मज़दूरी से आधा स़ाअ ख़ैरात लेकर आए और एक दूसरे अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ उससे ज़्यादा लाए। उस पर मुनाफ़िक़ों ने कहा कि अल्लाह को उस (या'नी अ़क़ील रज़ि.) के स़दक़ा की कोई ज़रूरत नहीं थी और उस दूसरे (अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़) ने तो महज़ दिखावे के लिये इतना बहुत सा स़दक़ा दिया है। चुनाँचे ये आयत नाज़िल हुई कि, ये ऐसे लोग हैं जो स़दक़ात के बारे में नफ़िल स़दक़ा देने वाले मुसलमानों पर त़ान करते हैं

और ख़ुसूसन उन लोगों पर जिन्हें बजुज़ उनकी मेहनत मज़दूरी के कुछ नहीं मिलता। आख़िर आयत तक। (राजेअ : 1415)

4669. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू उसामा (हम्माद बिन उसामा) से पूछा, आप हज़रात से ज़ायदा बिन क़ुदामा ने बयान किया था कि उनसे सुलैमान ने, उनसे शक़ीक़ ने, और उनसे अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) सदक़ा की तरग़ीब देते थे तो आपके कुछ सहाबा मज़दूरी करके लाते और (बड़ी मुश्किल से) एक मुद्द का सदक़ा कर सकते लेकिन आज उन्हीं में कुछ ऐसे हैं जिनके पास लाखों दिरहम हैं। ग़ालिबन उनका इशारा ख़ुद अपनी तरफ़ था (हम्माद ने कहा हाँ सच है) (राजेअ : 1415)

٤٦٦٩- حدَّثني إسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ : قُلْتُ لأَبِي أُسَامَةَ أَحَدَّثَكُمْ زَائِدَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ شَقِيقٍ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ بِالصَّدَقَةِ فَيَحْتَالُ أَحَدُنَا حَتَّى يَجِيءَ بِالْمُدِّ وَإِنَّ لأَحَدِهِمُ الْيَوْمَ مِائَةَ أَلْفٍ كَأَنَّهُ يُعَرِّضُ بِنَفْسِهِ.

[راجع: ١٤١٥]

बाब 12 : आयत 'इस्तग़्फ़िर लहुम औ ला तस्तग़्फ़िर लहुम' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ नबी! आप उनके लिये इस्तिग़्फ़ार करें या न करें। अगर आप उनके लिये सत्तर मर्तबा भी इस्तिग़्फ़ार करेंगे (जब भी अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा)

١٢- باب قَوْلِهِ : ﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً﴾

इन मुनाफ़िक़ीन के बारे में ये आयत नाज़िल हुई जो अहदे रिसालत में ऊपर से इस्लाम का दम भरते और दिल से हर वक़्त मुसलमानों की घात मे लगे रहते। जिनका सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल था। यहाँ पर मज़्कूर आयात का ता'ल्लुक़ उन्हीं मुनाफ़िक़ीन से है।

4670. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने, उनसे उबैदुल्लाह उमरी ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबई (मुनाफ़िक) का इंतिक़ाल हुआ तो उसके लड़के अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह (जो पुख़्ता मुसलमान थे) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि आप (ﷺ) अपनी क़मीस़ उनके वालिद के कफ़न के लिये इनायत फ़र्मा दें । आँहज़रत (ﷺ) ने क़मीस़ इनायत फ़र्माई। फिर उन्होंने अ़र्ज़ किया कि आप (ﷺ) नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ा दें। आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने के लिये भी आगे बढ़ गये। इतने में हज़रत उमर (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का दामन पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ) इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने जा रहे हैं, जबकि अल्लाह तआ़ला ने आप (ﷺ) को इससे मना भी फ़र्मा दिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने मुझे इख़्तियार दिया है फ़र्माया है कि,

٤٦٧٠- حدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ جَاءَ ابْنُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ أَنْ يُعْطِيَهُ قَمِيصَهُ يُكَفِّنُ فِيهِ أَبَاهُ فَأَعْطَاهُ ثُمَّ سَأَلَهُ أَنْ يُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُصَلِّيَ، فَقَامَ عُمَرُ فَأَخَذَ بِثَوْبِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ تُصَلِّي عَلَيْهِ وَقَدْ نَهَاكَ رَبُّكَ أَنْ تُصَلِّيَ

عَلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّمَا خَيَّرَنِي اللهُ فَقَالَ: اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْلَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً وَسَأَزِيدُهُ عَلَى السَّبْعِينَ)) قَالَ: إِنَّهُ مُنَافِقٌ. قَالَ : فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى : ﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ﴾

आप (ﷺ) उनके लिये इस्तिग़्फ़ार करें ख़्वाह न करें। अगर आप (ﷺ) उनके लिये सत्तर बार भी इस्तिग़्फ़ार करेंगे (तब भी अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा) इसलिये मैं सत्तर बार से भी ज़्यादा इस्तिग़्फ़ार करूँगा (मुम्किन है कि अल्लाह तआला ज़्यादा इस्तिग़्फ़ार करने से मुआफ़ कर दे) ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) बोले लेकिन ये शख़्स तो मुनाफ़िक़ है। ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि आख़िर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। उसके बाद अल्लाह तआला ने ये हुक्म नाज़िल फ़र्माया कि, और उनसे जो कोई मर जाए उस पर कभी भी नमाज़ न पढ़िए और न उसकी क़ब्र पर खड़ा हो।

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरा कुर्ता उसके कुछ काम आने वाला नहीं है लेकिन मुझे उम्मीद है कि मेरे इस अ़मल से उसकी क़ौम के हज़ार आदमी मुसलमान हो जाएँगे। ऐसा ही हुआ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई की क़ौम के बहुत से लोग मुसलमान हो गये। आपके अख़्लाक़ का उन पर बहुत बड़ा अष़र हुआ। एक रिवायत में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई अभी ज़िन्दा था कि उसने आँह़ज़रत (ﷺ) को बुलवाया और आपसे कुर्ता मांगा और दुआ की दरख़्वास्त की। ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब नक़ल करते हैं **लम्मा मरिज़ अ़ब्दुल्लाहि ब्नि उबय जाअहून्नबिय्यु (ﷺ) फकल्लमहू फक़ाल क़द अलिम्तु मा तक़ूलु फम्नुन अ़लय्य फकफ़्फ़िनी फी क़मीस़िक व सल्लि अलय्य फफ़अ़ल व कान अब्दुल्लाह बिन उबय अराद बिज़ालिक दफ़्अल्असारि अ़न वलदिही अशीरतिही बअ़द मौतिही फातिरूर्रश्बा फ़ी स़लातिन्नबिय्यि (ﷺ) व वक़अ़ त इजाबतुहू अ़ला सुवालिही बिहसबि मा ज़हर मिन हालिही आला मिन कश्फ़िल्लाहिल्गत़ाअ अन ज़ालिक कमा सयाती व हाज़ा मिन अहसनिल्अज्विबा फीमा यतअ़ल्लकु बिहाज़िहिल्क़िस़्स़ति** (फ़त्हुल्बारी)

अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने आँह़ज़रत (ﷺ) से जनाज़ा और कुर्ता के लिये ख़ुद दरख़्वास्त की थी ताकि बाद में उसकी औलाद और ख़ानदान पर आ़र न हो। रसूले करीम (ﷺ) पर उसकी मस़्लिह़तों का कश्फ़ हो गया था, इसलिये आप (ﷺ) ने उसकी दरख़्वास्त को क़ुबूल फ़र्माया, इस इ़बारत का यही ख़ुलास़ा है। मस़्लिह़तों का ज़िक्र अभी पीछे हो चुका है।

٤٦٧١ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ وَقَالَ غَيْرُهُ : حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ : لَمَّا مَاتَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ بْنُ سَلُولَ دُعِيَ لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهِ فَلَمَّا قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَثَبْتُ إِلَيْهِ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ أَتُصَلِّي عَلَى ابْنِ

4671. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने और उनके अ़लावा (अबू स़ालेह अ़ब्दुल्लाह बिन स़ालेह) ने बयान किया कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उनसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल की मौत हुई तो रसूले करीम (ﷺ) से उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये कहा गया। जब आप नमाज़ पढ़ाने के लिये खड़े हुए तो मैं जल्दी से ख़िदमते नबवी में पहुँचा और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप इब्ने उबई (मुनाफ़िक़) की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने लगे हालाँकि उसने फ़लाँ फ़लाँ दिन

أَبِيٌّ وَقَدْ قَالَ يَوْمَ كَذَا كَذَا وَكَذَا؟ قَالَ: ((أَعَدِّدُ عَلَيْهِ قَوْلَهُ)) فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: ((أَخِّرْ عَنِّي يَا عُمَرُ)) فَلَمَّا أَكْثَرْتُ عَلَيْهِ قَالَ: ((إِنِّي خُيِّرْتُ فَاخْتَرْتُ لَوْ أَعْلَمُ أَنِّي إِنْ زِدْتُ عَلَى السَّبْعِينَ يُغْفَرْ لَهُ لَزِدْتُ عَلَيْهَا)) قَالَ: فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ انْصَرَفَ فَلَمْ يَمْكُثْ إِلاَّ يَسِيرًا، حَتَّى نَزَلَتِ الآيَتَانِ مِنْ بَرَاءَةَ ﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا﴾ إِلَى قَوْلِهِ : ﴿وَهُمْ فَاسِقُونَ﴾ قَالَ: فَعَجِبْتُ بَعْدُ مِنْ جُرْأَتِي عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللهُ وَ رَسُولُهُ أَعْلَمُ.[راجع:١٣٦٦]

इस इस तरह की बातें (इस्लाम के ख़िलाफ़) की थीं? हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उसकी कही हुई बातें एक एक करके पेश करने लगा। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने तबस्सुम करके फ़र्माया, उमर! मेरे पास से हट जाओ (और सफ़ में जाकर खड़े हो जाओ) मैंने इसरार किया तो आपने फ़र्माया कि मुझे इख़्तियार दिया गया है। इसलिये मैंने (उनके लिये इस्तिग़फ़ार करने और उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने ही को) पसंद किया, अगर मुझे ये मा'लूम हो जाए कि सत्तर बार से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करने से इसकी मग़्फ़िरत हो जाएगी तो मैं सत्तर बार से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ाई और वापस तशरीफ़ लाए, थोड़ी देर अभी हुई थी कि सूरह बराअत की दो आयतें नाज़िल हुईं कि, उनमें से जो कोई मर जाए उस पर कभी भी नमाज़ न पढ़िए, आख़िर आयत वहुम फ़ासिक़ून तक। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि बाद में मुझे आँहज़रत (ﷺ) के सामने अपनी इस दर्जा जुर्अत पर ख़ुद भी हैरत हुई और अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानने वाले हैं। (राजेअ : 1366)

अल्लाह ने हज़रत उमर (रज़ि.) की राय के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया। क्या कहना है हज़रत उमर (रज़ि.) अजीब साइबुर्राय थे। इंतिज़ामी उमूर और सियासत-दानी में अपना नज़ीर नहीं रखते थे। आँहज़रत (ﷺ) के पेशेनज़र एक मस्लिहत थी जिसका बयान पीछे हो चुका है। बाद में सरीह मुमानअत नाज़िल होने के बाद आपने किसी मुनाफ़िक़ का जनाज़ा नहीं पढ़ाया।

١٣- باب قَوْلِهِ : ﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ﴾

बाब 13 : आयत 'व ला तुसल्लि अला अहदिम्मिन्हुम' की

तफ़्सीर या'नी ऐ नबी! अगर उनमें से कोई मर जाए तो आप उस पर कभी भी नमाज़े जनाज़ा न पढ़िये और न उसकी (दुआ-ए-मग़्फ़िरत के लिये) क़ब्र पर खड़े होना। बेशक उन्होंने अल्लाह और रसूल के साथ कुफ़्र किया है और वो फ़ासिक़ मरे हैं।

٤٦٧٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ : لَمَّا تُوُفِّيَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ جَاءَ ابْنُهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ

4672. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि हमसे अनस बिन अयाज़ ने, उनसे उबैदुल्लाह ने और उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान कि जब अब्दुल्लाह बिन उबई का इंतिक़ाल हुआ तो उसके बेटे अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आए। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें अपना कुर्ता इनायत फ़र्माया और

फ़र्माया कि उस कुर्ते से उसे कफ़न दिया जाए फिर आप उस पर नमाज़ पढ़ाने के लिये खड़े हुए तो उ़मर (रज़ि.) ने आपका दामन पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया आप उस पर नमाज़ पढ़ाने के लिये तैयार हो गये ह़ालाँकि ये मुनाफ़िक़ है, अल्लाह तआ़ला भी आपको उनके लिये इस्तिग़फ़ार से मना कर चुका है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे इख़्तियार दिया है, या रावी ने ख़य्यरनी की जगह अख़बरनी नक़ल किया है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि, आप उनके लिये इस्तिग़फ़ार करें ख़्वाह न करें। अगर आप उनके लिये सत्तर बार भी इस्तिग़फ़ार करेंगे जब भी अल्लाह उन्हें नहीं बख़्शेगा, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं सत्तर बार से भी ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करूँगा। उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आप (ﷺ) ने उस पर नमाज़ पढ़ी और हमने भी उसके साथ पढ़ी। उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी और उनमें से जो कोई मर जाए, आप उस पर कभी भी जनाज़ा न पढ़ें और न उसकी क़ब्र पर खड़े हों। बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है और वो इस ह़ाल में मरे हैं कि वो नाफ़र्मान थे।

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْطَاهُ قَمِيصَهُ وَأَمَرَهُ أَنْ يُكَفِّنَهُ فِيهِ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي عَلَيْهِ فَأَخَذَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ بِثَوْبِهِ فَقَالَ: تُصَلِّي عَلَيْهِ وَهُوَ مُنَافِقٌ وَقَدْ نَهَاكَ اللهُ أَنْ تَسْتَغْفِرَ لَهُمْ؟ قَالَ: ((إِنَّمَا خَيَّرَنِي اللهُ - أَوْ أَخْبَرَنِي اللهُ - فَقَالَ: ﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لاَ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْلَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَهُمْ﴾ فَقَالَ: سَأَزِيدُهُ عَلَى سَبْعِينَ)) قَالَ: فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَلَّيْنَا مَعَهُ ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ عَلَيْهِ ﴿وَلاَ تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلاَ تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ﴾.

बाब 14 : आयत 'सयहलिफ़ून बिल्लाहि लकुम'

١٤- باب : ﴿سَيَحْلِفُونَ بِاللهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رِجْسٌ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ﴾

की तफ़्सीर या'नी, अ़न्क़रीब ये लोग तुम्हारे सामने जब तुम उनके पास वापस लौटोगे अल्लाह की क़सम खाएँगे ताकि तुम उनको उनकी ह़ालत पर छोड़े रहो, सो तुम उनको उनकी ह़ालत पर छोड़े रहो बेशक ये गन्दे हैं और इनका ठिकाना दोज़ख़ है, बदले में उन अफ़्आ़ल के जो वो करते रहे हैं।

4673. हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने बयान किया कि उन्होंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि) से उनके ग़ज़्व-ए-तबूक़ में शरीक न हो सकने का वाक़िया सुना। उन्होंने बतलाया, अल्लाह की क़सम! हिदायत के बाद अल्लाह ने मुझ पर इतना बड़ा और कोई इन्आ़म नहीं किया जितना रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने सच बोलने के बाद ज़ाहिर हुआ था कि उसने मुझे झूठ बोलने से बचाया,

٤٦٧٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبَ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ تَبُوكَ وَاللهِ مَا أَنْعَمَ اللهُ عَلَيَّ مِنْ نِعْمَةٍ بَعْدَ إِذْ هَدَانِي أَعْظَمَ مِنْ صِدْقِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ أَنْ لاَ أَكُونَ كَذَبْتُهُ فَأَهْلِكَ كَمَا هَلَكَ الَّذِينَ كَذَبُوا حِينَ أَنْزَلَ الْوَحْيَ ﴿سَيَحْلِفُونَ بِاللهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ -إِلَى - الْفَاسِقِينَ﴾.

[راجع: ٢٧٥٧]

वरना मैं भी इसी त़रह़ हलाक हो जाता जिस त़रह़ दूसरे लोग झूठी मअ़ज़रतें बयान करने वाले हलाक हुए थे और अल्लाह तआ़ला ने उनके बारे मे वह्य नाज़िल की थी कि, अ़न्क़रीब ये लोग तुम्हारे सामने, जब तुम उनके पास वापस जाओगे। अल्लाह की क़सम खा जाएँगे। आख़िर आयत अल् फ़ासिक़ीन तक। (राजेअ़ : 2757)

तश्रीह : पहले कअ़ब के दिल में त़रह़ त़रह़ के ख़्याल शैत़ान ने डाले थे कि कोई झूठा बहाना कर देना। लेकिन अल्लाह ने उनको बचा लिया। उन्होंने सच सच अपने क़ुसूर का इक़रार कर लिया और यही अल्लाह का फ़ज़ल था जिसे वो मुद्दतुल उम्र शानदार लफ़्ज़ों में ज़िक्र फ़र्माते रहे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को सच ही बोलने की सआ़दत बख़्शे (आमीन)

١٥- باب ﴿وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلاً صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾

बाब 15 : आयत 'व आख़रूनअ़ तरफ़ू' की तफ़्सीर

या'नी, और कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया उन्होंने मिले जुले अ़मल किये (कुछ भले और कुछ बुरे) क़रीब है कि अल्लाह उन पर नज़रे रह़मत फ़र्माए, बेशक अल्लाह बहुत ही बड़ा बख़्शिश करने वाला और बहुत ही बड़ा मेहरबान है।

٤٦٧٤- حَدَّثَنَا مُؤَمَّلٌ، هُوَ ابْنُ هِشَامٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ حَدَّثَنَا سَمُرَةُ بْنُ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَنَا: ((أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ فَابْتَعَثَانِي فَانْتَهَيْنَا إِلَى مَدِينَةٍ مَبْنِيَّةٍ بِلَبِنِ ذَهَبٍ وَلَبِنِ فِضَّةٍ، فَتَلَقَّانَا رِجَالٌ شَطْرٌ مِنْ خَلْقِهِمْ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ، وَشَطْرٌ كَأَقْبَحِ مَا أَنْتَ رَاءٍ، قَالاَ لَهُمْ : اذْهَبُوا فَقَعُوا فِي ذَلِكَ النَّهْرِ فَوَقَعُوا فِيهِ، ثُمَّ رَجَعُوا إِلَيْنَا قَدْ ذَهَبَ ذَلِكَ السُّوءُ عَنْهُمْ، فَصَارُوا فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ قَالاَ لِي: هَذِهِ جَنَّةُ عَدْنٍ وَهَذَاكَ مَنْزِلُكَ قَالاَ : أَمَّا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَانُوا شَطْرٌ مِنْهُمْ حَسَنٌ وَشَطْرٌ

4674. हमसे मुअम्मल बिन हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ौफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबू रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे समुरह़ बिन जुन्दुब ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया, रात (ख़्वाब में) मेरे पास दो फ़रिश्ते आए और मुझे उठाकर एक शहर में ले गये जो सोने और चाँदी की ईंटों से बनाया गया था। वहाँ हमे ऐसे लोग मिले जिनका आधा बदन निहायत ख़ूबसूरत, इतना कि किसी देखने वाले ने ऐसा हुस्न न देखा होगा और बदन का दूसरा आधा हिस़्सा निहायत ही बदसूरत था, इतना कि किसी ने भी ऐसी बदसूरती नहीं देखी होगी, दोनों फ़रिश्तों ने उन लोगों से कहा जाओ और इस नहर में ग़ौत़ा लगाओ। वो गये और नहर में ग़ौत़ा लगा आए। जब वो हमारे पास आए तो उनकी बदसूरती जाती रही और अब वो निहायत ख़ूबसूरत नज़र आते थे फिर फ़रिश्तों ने मुझसे कहा कि, ये जन्नते अ़द्न है और आपका मकान यहीं है। जिन लोगों को अभी आपने देखा कि जिस्म का आधा ह़िस़्सा ख़ूबसूरत था और आधा बदसूरत, तो ये वो लोग थे जिन्होंने दुनिया में

अच्छे और बुरे काम किये थे और अल्लाह तआला ने उन्हें मुआफ़ कर दिया था। (राजेअ़ : 746)

مِنْهُمْ قَبِيحٌ فَإِنَّهُمْ خَلَطُوا عَمَلاً صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا تَجَاوَزَ اللهُ عَنْهُمْ)).

[راجع: ٨٤٦]

तश्रीह : हुक्म के लिहाज़ से आयते शरीफ़ा क़यामत तक हर उस मुसलमान को शामिल है जिसके आमाल नेक व बद ऐसे हैं। ऐसे लोगों को अल्लाह पाक अपने फ़ज़्ल से बख़्श देगा। उसके वादे **इन्न रहमती सबक़त अ़ला ग़ज़बी** का तक़ाज़ा है।

बाब 16 : आयत 'मा कान लिन्नबिय्यि वल्लज़ीन आमनू' की तफ़्सीर या'नी,

١٦- باب قَوْلِهِ : ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ﴾

नबी और जो लोग ईमान लाए, उनके लिये इजाज़त नहीं कि वो मुश्रिकों के लिये बख़्शिश की दुआ करें अगरचे वो उनकी क़राबतदार हों जबकि उन पर ज़ाहिर हो जाए कि वो दोज़ख़ी हैं।

4675. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे उनके वालिद मुसय्यिब बिन हज़्न ने कि जब अबू तालिब के इंतिक़ाल का वक़्त हुआ तो नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ ले गये, उस वक़्त वहाँ अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बैठे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया (आप एक बार ज़ुबान से कलिमा) ला इलाहा इल्लल्लाह कह दीजिए। मैं उसी को (आपकी नजात के लिये वसीला बनाकर) अल्लाह की बारगाह में पेश कर लूँगा। इस पर अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या कहने लगे अबू तालिब! क्या आप अ़ब्दुल मुत्तलिब के दीन से फिर जाएँगे? आप (ﷺ) ने कहा कि अब मैं आपके लिये बराबर मग़्फ़िरत की दुआ मांगता रहूँगा जब तक मुझे इससे रोक न दिया जाए, तो ये आयत नाज़िल हुई, नबी और ईमान वालों के लिये जाइज़ नहीं कि वो मुश्रिकों के लिये बख़्शिश की दुआ करें अगरचे वो (मुश्रिकीन) रिश्तेदार ही क्यूँ न हों। जब उन पर ये ज़ाहिर हो चुके कि वो (यक़ीनन) अहले दोज़ख़ हैं।

٤٦٧٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ : لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبٍ الْوَفَاةُ دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ وَعِنْدَهُ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَيْ عَمِّ قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ أُحَاجُّ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)) فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ أَتَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ مَا لَمْ أُنْهَ عَنْكَ)) فَنَزَلَتْ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ﴾.

आयत का शाने नुज़ूल बतलाया गया है। ये हुक्म क़यामत तक के लिये है।

बाब 17 : आयत 'लक़द ताबल्लाहु अलन्नबिय्यि वल्मुहाजिरीन' की तफ़्सीर या'नी,

١٧- باب قَوْلِهِ : ﴿لَقَدْ تَابَ اللهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ

बेशक अल्लाह ने नबी और मुहाजिरीन व अंसार पर रहमत

بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ﴾

फ़र्माई। वो लोग जिन्होंने नबी का साथ तंगी के वक़्त (जंगे तबूक़) में दिया, बाद इसके कि उनमें से एक गिरोह के दिलों में कुछ तज़लज़ुल पैदा हो गया था। फिर (अल्लाह ने) उन लोगों पर रहमत के साथ तवज्जह फ़र्मा दी, बेशक वह उनके हक़ में बड़ा ही शफ़ीक़ बड़ा ही रहम करने वाला है।

٤٦٧٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي يُونُسُ. قَالَ أَحْمَدُ : وَحَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ، حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ كَعْبٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ كَعْبٍ، وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيهِ حِينَ عَمِيَ قَالَ : سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ فِي حَدِيثِهِ وَعَلَى الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا قَالَ فِي آخِرِ حَدِيثِهِ : إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَمْسِكْ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ)). [راجع: ٢٧٥٧]

3676. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी (दूसरी सनद) अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया हमसे अ़म्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको अ़ब्दुर्रह़मान बिन कअ़ब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब ने ख़बर दी कि (उनके वालिद) ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) जब नाबीना हो गये तो उनके बेटों में यही उनको रास्ते में साथ लेकर चलते हैं। उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से उनके इस वाक़िये के सिलसिले में सुना जिसके बारे में आयत व अ़लष़्ष़लाष़तिल्लज़ीन ख़ुल्लिफ़ू नाज़िल हुई थी। आपने आख़िर में (आँह़ज़रत ﷺ से अ़र्ज़ किया था कि अपनी तौबा के क़ुबूल होने की ख़ुशी में अपना तमाम माल अल्लाह और उसके रसूल के रास्ते में ख़ैरात करता हूँ लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नही अपना कुछ थोड़ा माल अपने पास ही रहने दो। ये तुम्हारे ह़क़ में भी बेहतर है। (राजेअ़ : 2757)

मा'लूम हुआ कि ख़ैरात भी वही बेहतर है जो त़ाक़त के मुवाफ़िक़ की जाए। अगर कोई मह़ज़ ख़ैरात के नतीजे में ख़ुद भूखा नंगा रह जाए तो वो ख़ैरात अल्लाह के नज़दीक बेहतर नहीं है।

١٨- باب قوله

बाब 18 : आयत 'व अलष़्ष़लाष़तिल्लज़ीन ख़ुल्लिफ़ू' की तफ़्सीर या'नी,

﴿وَعَلَى الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لاَ مَلْجَأَ مِنَ اللهِ إِلاَّ إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ﴾.

और इन तीनों पर भी अल्लाह ने (तवज्जह फ़र्माई) जिनका मुक़द्दमा पीछे को डाल दिया गया था। यहाँ तक कि जब ज़मीन उन पर बावजूद अपनी फ़राख़ी के तंग होने लगी और वो ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गये और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कहीं पनाह नहीं मिल सकती बजुज़ उसी की त़रफ़ के, फिर उसने उन पर रहमत से तवज्जह फ़र्माई ताकि वो भी तौबा करके रुजूअ करें। बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला बड़ा ही मेहरबान है।

तश्रीह : आयत **व अलष़्ष़लाष़तिल्लज़ीन ख़ुल्लिफ़ू** का ये मा'नी नहीं है कि उन तीनों पर जो जिहाद से पीछे रह गये थे बल्कि मत्लब ये है कि जिनका मुक़द्दमा ज़ेरे तज्वीज़ रखा गया था और जिनके बारे में कोई हुक्म नहीं दिया गया था। इस वाक़िये में उन बिदअ़तों का भी रद्द है जो आँहज़रत (ﷺ) को ग़ैब-दाँ कहते हैं। अगर आप ग़ैब-दाँ होते तो उन तीनों बुज़ुर्गों का हक़ीक़ी हाल ख़ुद मा'लूम फ़र्मा लेते मगर वह्ये इलाही के लिये आपको उनके बारे में काफ़ी इंतिज़ार करना पड़ा। पस अहले बिदअ़त इस ख़्याले बातिल में बिलकुल झूठे हैं, ग़ैब दाँ सिर्फ़ ज़ाते बारी है। सुब्हानहू व तआ़ला।

४٦٧٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي شُعَيْبٍ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَعْيَنَ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ رَاشِدٍ، أَنَّ الزُّهْرِيَّ حَدَّثَهُ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ وَهُوَ أَحَدُ الثَّلاَثَةِ الَّذِينَ تِيبَ عَلَيْهِمْ أَنَّهُ لَمْ يَتَخَلَّفْ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا قَطُّ غَيْرَ غَزْوَتَيْنِ: غَزْوَةِ الْعُسْرَةِ، وَغَزْوَةِ بَدْرٍ، قَالَ: فَأَجْمَعْتُ صِدْقَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضُحىً وَكَانَ قَلَّمَا يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ سَافَرَهُ إِلاَّ ضُحىً، وَكَانَ يَبْدَأُ بِالْمَسْجِدِ فَيَرْكَعُ رَكْعَتَيْنِ وَنَهَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كَلاَمِي وَكَلاَمِ صَاحِبَيَّ، وَلَمْ يَنْهَ عَنْ كَلاَمِ أَحَدٍ مِنَ الْمُتَخَلِّفِينَ غَيْرِنَا فَاجْتَنَبَ النَّاسُ كَلاَمَنَا فَلَبِثْتُ كَذَلِكَ حَتَّى طَالَ عَلَيَّ الأَمْرُ وَمَا مِنْ شَيْءٍ أَهَمَّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَمُوتَ فَلاَ يُصَلِّي عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ أَوْ يَمُوتَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكُونَ مِنَ النَّاسِ بِتِلْكَ الْمَنْزِلَةِ فَلاَ يُكَلِّمُنِي أَحَدٌ مِنْهُمْ وَلاَ يُصَلِّي عَلَيَّ فَأَنْزَلَ اللهُ تَوْبَتَنَا

4677. मुझसे मुहम्मद बिन नज़्र निशापुरी ने बयान किया, कहा हमसे अहमद बिन अबी शुऐब ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन अअ़युन ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन राशिद ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद कअ़ब बिन मालिक (रज़ि) से सुना। वो उन तीन सहाबा में से थे जिनकी तौबा क़ुबूल की गई थी। उन्होंने बयान किया कि दो ग़ज़्वों, ग़ज़्वा उ़स्रा (या'नी ग़ज़्व-ए-तबूक़) और ग़ज़्व-ए-बद्र के सिवा और किसी ग़ज़्वे में कभी मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जाने से नहीं रुका था। उन्होंने बयान किया चाश्त के वक़्त जब रसूलुल्लाह (ﷺ) (ग़ज़्वे से वापस तशरीफ़ लाए) तो मैंने सच बोलने का पुख़्ता इरादा कर लिया और आपका सफ़र से वापस आने में मा'मूल ये था कि चाश्त के वक़्त ही आप (मदीना) पहुँचते थे और सबसे पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ते (बहरहाल) आप (ﷺ) ने मुझसे और मेरी तरह उ़ज़्र बयान करने वाले दो और सहाबा से दूसरे सहाबा को बातचीत करने से मना कर दिया। हमारे अ़लावा और भी बहुत से लोग (जो ज़ाहिर में मुसलमान थे) इस ग़ज़्वे में शरीक नहीं हुए लेकिन आपने उनमें किसी से भी बातचीत की मुमानअ़त नहीं की थी। चुनाँचे लोगों ने हमसे बातचीत करना छोड़ दिया। मैं इसी हालत में ठहरा रहा मामला बहुत तूल पकड़ता जा रहा था। इधर मेरी नज़र में सबसे अहम मामला ये था कि अगर कहीं (इस अ़र्से में) मैं मर गया तो आप (ﷺ) मुझपर नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाएँगे या आप (ﷺ) की वफ़ात हो जाए तो अफ़सोस लोगों का यही तर्ज़े अ़मल मेरे साथ फिर हमेशा के लिये बाक़ी रह जाएगा, न मुझसे कोई बातचीत करेगा और न मुझ पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ेगा। आख़िर अल्लाह तआ़ला ने हमारी तौबा की बशारत आप (ﷺ) पर उस वक़्त नाज़िल की जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह

गया था। आप (ﷺ) उस वक़्त ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के घर में तशरीफ़ रखते थे। ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) का मुझ पर बड़ा एहसान व करम था और वो मेरी मदद किया करती थीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उम्मे सलमा! कअ़ब (रज़ि.) की तौबा क़ुबूल हो गई। उन्होंने अ़र्ज़ किया। फिर मैं उनके यहाँ किसी को भेजकर ये ख़ुशख़बरी न पहुँचवा दूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ये ख़बर सुनते ही लोग जमा हो जाएँगे और सारी रात तुम्हें सोने नहीं देंगे। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने के बाद बताया कि अल्लाह ने हमारी तौबा क़ुबूल कर ली है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने जब ये ख़ुशख़बरी सुनाई तो आपका चेहरा मुबारक मुनव्वर हो गया जैसे चाँद का टुकड़ा हो और (ग़ज़्वा में न शरीक होने वाले दूसरे लोगों से) जिन्होंने मअ़ज़रत की थी और उनकी मअ़ज़रत क़ुबूल भी हो गई थी, हम तीन स़हाबा का मामला बिलकुल मुख़्तलिफ़ था कि अल्लाह तआ़ला ने हमारी तौबा क़ुबूल होने के बारे में वह्य नाज़िल की, लेकिन जब उन दूसरे ग़ज़्वा में शरीक न होने वाले लोगों का ज़िक्र किया, जिन्होंने आप (ﷺ) के सामने झूठ बोला था और झूठी मअ़ज़रत की थी तो इस दर्जे बुराई के साथ किया कि किसी का भी इतनी बुराई के साथ ज़िक्र न किया होगा। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया ये लोग तुम सबके सामने उ़ज़्र पेश करेंगे, जब तुम उनके पास वापस जाओगे तो आप कह दें कि बहाने न बनाओ हम हर्गिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे! बेशक हमको अल्लाह तुम्हारी ख़बर दे चुका है और अ़न्क़रीब अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारा अ़मल देख लेंगे। आख़िर आयत तक।

(राजेअ़ : 3057)

عَلَى نَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ بَقِيَ الثُّلُثُ الآخِرُ مِنَ اللَّيْلِ، وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ أُمِّ سَلَمَةَ وَكَانَتْ أُمُّ سَلَمَةَ مُحْسِنَةً فِي شَأْنِي مَعْنِيَّةً فِي أَمْرِي فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا أُمَّ سَلَمَةَ تِيبَ عَلَى كَعْبٍ)) قَالَتْ : أَفَلاَ أُرْسِلُ إِلَيْهِ فَأُبَشِّرُهُ؟ قَالَ : ((إِذًا يَحْطِمُكُمُ النَّاسُ فَيَمْنَعُونَكُمُ النَّوْمَ سَائِرَ اللَّيْلَةِ)) حَتَّى إِذَا صَلَّى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلاَةَ الْفَجْرِ آذَنَ بِتَوْبَةِ اللهِ عَلَيْنَا وَكَانَ إِذَا اسْتَبْشَرَ اسْتَنَارَ وَجْهُهُ حَتَّى كَأَنَّهُ قِطْعَةٌ مِنَ الْقَمَرِ وَكُنَّا أَيُّهَا الثَّلاَثَةُ الَّذِينَ خُلِّفُوا عَنِ الأَمْرِ الَّذِي قُبِلَ مِنْ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ اعْتَذَرُوا حِينَ أَنْزَلَ اللهُ لَنَا التَّوْبَةَ، فَلَمَّا ذُكِرَ الَّذِينَ كَذَبُوا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْمُتَخَلِّفِينَ وَاعْتَذَرُوا بِالْبَاطِلِ ذُكِرُوا بِشَرِّ مَا ذُكِرَ بِهِ أَحَدٌ قَالَ اللهُ سُبْحَانَهُ: ﴿يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ : لاَ تَعْتَذِرُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ﴾ الآيَةَ.

[راجع: ٣٠٥٧]

बाब 19 : आयत 'या अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ ईमानवालों ! अल्लाह से डरते रहो और सच्चे लोगों के साथ रहा करो।

١٩- باب قوله ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾.

4678. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि

٤٦٧٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا

हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने, वो ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) को साथ लेकर चलते थे। (जब वो नाबीना हो गये थे) अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रम कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो ग़ज़्व-ए-तबूक़ में अपनी ग़ैर ह़ाज़िरी का क़िस़्सा बयान कर रहे थे, कहा कि अल्लाह की क़सम! सच बोलने का जितना उ़म्दह फल अल्लाह तआ़ला ने मुझे दिया, किसी को न दिया होगा। जबसे रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने मैं ने उस बारे मे सच्ची बात कही थी, उस वक़्त से आज तक कभी झूठ का इरादा भी नहीं किया और अल्लाह ने अपने रसूल (ﷺ) पर ये आयत नाज़िल की थी कि, बेशक अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अंस़ार पर रह़मत के साथ तवज्जह फ़र्माई। आख़िर आयत मअ़स़् स़ादिक़ीन तक।

اللَّيْثُ، عَنْ عَقِيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ وَكَانَ قَائِدَ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ يُحَدِّثُ حِينَ تَخَلَّفَ عَنْ قِصَّةِ تَبُوكَ فَوَ اللهِ مَا أَعْلَمُ أَحَدًا أَبْلاَهُ اللهُ فِي صِدْقِ الْحَدِيثِ أَحْسَنَ مِمَّا أَبْلاَنِي مَا تَعَمَّدْتُ مُنْذُ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى يَوْمِي هَذَا كَذِبًا وَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ: ﴿لَقَدْ تَابَ اللهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ - إِلَى قَوْلِهِ - وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾.

बाब 20 : आयत 'लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फुसिकुम' की तफ़्सीर या'नी,

٢٠- باب قَوْلِهِ : ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ﴾ مِنَ الرَّأْفَةِ.

बेशक तुम्हारे पास एक रसूल आए हैं जो तुम्हारी ही जिंस में से हैं, जो चीज़ तुम्हें नुक़्स़ान पहुँचाती है वो उन्हें बहुत गिराँ गुज़रती है, वो तुम्हारी (भलाई) के इंतिहाई ह़रीस़ हैं और ईमानवालों के ह़क़ में तो बड़े शफ़ीक़ और मेहरबान हैं। रऊफ़ु राफ़त से निकला है।

4679. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझे उ़बैदुल्लाह बिन सब्बाक़ ने ख़बर दी और उनसे ज़ैद बिन ष़ाबित अंस़ारी (रज़ि.) ने जो कातिबे वह्य थे, बयान किया कि जब (11 हिजरी) में यमामा की लड़ाई में (जो मुसैलमा कज़्ज़ाब से हुई थी) बहुत से स़ह़ाबा मारे गये तो ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने मुझे बुलाया, उनके पास ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) भी मौजूद थे, उन्होंने मुझसे कहा, उ़मर (रज़ि.) मेरे पास आए और कहा कि जंगे यमामा में बहुत ज़्यादा मुसलमान शहीद हो गये हैं और मुझे ख़त़रा है कि (कुफ़्फ़ार के साथ) लड़ाइयों में यूँ ही क़ुर्आन के उ़लमा और क़ारी शहीद होंगे और इस त़रह बहुत सा

٤٦٧٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ السَّبَّاقِ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَكَانَ مِمَّنْ يَكْتُبُ الْوَحْيَ قَالَ: أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ مَقْتَلَ أَهْلِ الْيَمَامَةِ وَعِنْدَهُ عُمَرُ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ : إِنَّ عُمَرَ أَتَانِي فَقَالَ : إِنَّ الْقَتْلَ قَدِ اسْتَحَرَّ يَوْمَ الْيَمَامَةِ بِالنَّاسِ، وَإِنِّي أَخْشَى أَنْ يَسْتَحِرَّ الْقَتْلُ بِالْقُرَّاءِ فِي الْمَوَاطِنِ فَيَذْهَبُ كَثِيرٌ

مِنَ الْقُرْآنِ إِلاَّ أَنْ تَجْمَعُوهُ، وَإِنِّي لأَرَى أَنْ تَجْمَعَ الْقُرْآنَ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ : قُلْتُ لِعُمَرَ : كَيْفَ أَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ عُمَرُ : هُوَ وَاللهِ خَيْرٌ فَلَمْ يَزَلْ عُمَرُ يُرَاجِعُنِي فِيهِ حَتَّى شَرَحَ اللهُ لِذَلِكَ صَدْرِي وَرَأَيْتُ الَّذِي رَأَى عُمَرُ قَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ: وَعُمَرُ عِنْدَهُ جَالِسٌ لاَ يَتَكَلَّمُ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّكَ رَجُلٌ شَابٌّ عَاقِلٌ، وَلاَ نَتَّهِمُكَ كُنْتَ تَكْتُبُ الْوَحْيَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَتَبَّعِ الْقُرْآنَ فَاجْمَعْهُ فَوَ اللهِ لَوْ كَلَّفَنِي نَقْلَ جَبَلٍ مِنَ الْجِبَالِ مَا كَانَ أَثْقَلَ عَلَيَّ مِمَّا أَمَرَنِي بِهِ مِنْ جَمْعِ الْقُرْآنِ قُلْتُ : كَيْفَ تَفْعَلاَنِ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: هُوَ وَاللهِ خَيْرٌ فَلَمْ أَزَلْ أُرَاجِعُهُ حَتَّى شَرَحَ اللهُ صَدْرِي لِلَّذِي شَرَحَ اللهُ لَهُ صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ، فَقُمْتُ فَتَتَبَّعْتُ الْقُرْآنَ أَجْمَعُهُ مِنَ الرِّقَاعِ وَالأَكْتَافِ وَالْعُسُبِ وَصُدُورِ الرِّجَالِ حَتَّى وَجَدْتُ مِنْ سُورَةِ التَّوْبَةِ آيَتَيْنِ مَعَ خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ لَمْ أَجِدْهُمَا مَعَ أَحَدٍ غَيْرِهِ ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ﴾ إِلَى آخِرِهِمَا. وَكَانَتِ الصُّحُفُ الَّتِي جُمِعَ فِيهَا الْقُرْآنُ عِنْدَ أَبِي بَكْرٍ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ ثُمَّ عِنْدَ عُمَرَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ ثُمَّ عِنْدَ حَفْصَةَ بِنْتِ عُمَرَ: تَابَعَهُ

कुर्आन ज़ाया हो जाएगा, अब तो एक ही सूरत है कि आप कुर्आन को एक जगह जमा करा दें और मेरी राय तो ये है कि आप ज़रूर कुर्आन को जमा करा दें । ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि इस पर मैंने ड़मर (रज़ि.) से कहा, ऐसा काम मैं किस त़रह़ कर सकता हूँ जो ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं किया था। ह़ज़रत ड़मर (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! ये तो मह़ज़ एक नेक काम है। इसके बाद ड़मर (रज़ि.) मुझसे इस मामले पर बात करते रहे और आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने इस ख़िदमत के लिये मेरा भी सीना खोल दिया और मेरी भी राय वही हो गई जो ड़मर (रज़ि.) की थी। ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने बयान किया कि ड़मर (रज़ि.) ख़ामोश बैठे हुए थे। फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, तुम जवान और समझदार हो हमे तुम पर किसी क़िस्म का शुब्हा भी नहीं और तुम आँह़ज़रत (ﷺ) की वह्य लिखा भी करते थे, इसलिये तुम ही कुर्आन मजीद को जाबजा से तलाश करके उसे जमा कर दो। अल्लाह की क़सम! कि अगर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मुझसे कोई पहाड़ उठाकर ले जाने के लिये कहते तो ये मेरे लिये इतना भारी नहीं था जितना कुर्आन की तर्तीब का हुक्म। मैंने अ़र्ज़ किया आप लोग एक ऐसे काम के करने पर किस त़रह़ आमादा हो गये, जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं किया था। तो अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! ये एक नेक काम है। फिर मैं उनसे इस मसले पर बातचीत करता रहा, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने इस ख़िदमत के लिये मेरा भी सीना खोल दिया। जिस त़रह़ अबूबक्र व ड़मर (रज़ि.) का सीना खोला था। चुनाँचे मैं उठा और मैंने खाल, हड्डी और खजूर की शाख़ों से (जिन पर कुर्आन मजीद लिखा हुआ था, उस दौर के रिवाज के मुत़ाबिक़) कुर्आन मजीद को जमा करना शुरू कर दिया और लोगों के (जो कुर्आन के ह़ाफ़िज़ थे) ह़ाफ़ज़ा से भी मदद ली और सूरह तौबा की दो आयतें ख़ुज़ैमा अंसारी के पास मुझे मिलीं। उनके अ़लावा किसी के पास मुझे नहीं मिली थी। (वो आयतें ये थीं) लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन् अन्फुसिकुम अ़ज़ीज़ुन अ़लैहि मा अ़नित्तुम ह़रीसुन अ़लैकुम आख़िर तक। फिर मुस़्ह़फ़ जिसमें कुर्आन मजीद जमा किया गया था, अबूबक्र (रज़ि.) के पास रहा, आपकी वफ़ात के बाद ड़मर

عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، وَاللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. وَقَالَ اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ وَقَالَ : مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ. وَقَالَ مُوسَى، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ، وَتَابَعَهُ يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ. وَقَالَ أَبُو ثَابِتٍ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ وَقَالَ مَعَ خُزَيْمَةَ أَوْ أَبِي خُزَيْمَةَ.

[راجع: ٢٨٠٧]

(रज़ि) के पास महफ़ूज़ रहा, फिर आपकी वफ़ात के बाद आपकी साहबज़ादी (उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा रज़ि.) के पास महफ़ूज़ रहा) शुऐब के साथ इस हदीष़ को उ़ष्मान बिन उ़मर और लैष़ बिन सअ़द ने भी यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया, और लैष़ ने कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया उसमें ख़ुज़ैमा के बदले अबू ख़ुज़ैमा अंसारी है और मूसा ने इब्राहीम से रिवायत की, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, इस रिवायत में भी अबू ख़ुज़ैमा है। मूसा बिन इस्माईल के साथ इस हदीष़ को यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने भी अपने वालिद इब्राहीम बिन सअ़द से रिवायत किया और अबू ष़ाबित मुहम्मद बिन उ़बैदुल्लाह मदनी ने, कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, इस रिवायत में शक के साथ ख़ुज़ैमा या अबू ख़ुज़ैमा मज़्कूर है। (राजेअ़ : 2807)

सूरह यूनुस की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्का में नाज़िल हुई। इसमे एक सौ नौ आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं।

﴿فَاخْتَلَطَ﴾ فَنَبَتَ بِالْمَاءِ مِنْ كُلِّ لَوْنٍ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ :

और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि फ़ख़्तलत़ा का मा'नी ये है कि पानी बरसने की वजह से ज़मीन से हर क़िस्म का सब्ज़ा उगा।

١- باب

बाब 1 : आयत 'क़ालुत्तखज़ल्लाहू वलदा' की तफ़्सीर

﴿وَقَالُوا: اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ هُوَ الْغَنِيُّ﴾ وَقَالَ زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ: ﴿أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ﴾ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ مُجَاهِدٌ خَيْرٌ. يُقَالُ: ﴿تِلْكَ آيَاتُ﴾ يَعْنِي هَذِهِ أَعْلاَمُ الْقُرْآنِ، وَمِثْلُهُ ﴿حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ﴾ الْمَعْنَي بِكُمْ ﴿دَعْوَاهُمْ﴾ دُعَاؤُهُمْ ﴿أُحِيطَ بِهِمْ﴾ دَنَوْا مِنَ الْهَلَكَةِ ﴿أَحَاطَتْ

या'नी ईसाई कहते हैं कि अल्लाह ने एक बेटा बना रखा है। सुब्हानल्लाह! वो बेनियाज़ है और ज़ैद बिन असलम ने कहा कि, अन्न लहुम क़दम स़िदक़िन से हज़रत मुहम्मद (ﷺ) मुराद हैं। और मुजाहिद ने बयान किया उससे भलाई मुराद है। तिल्का आयात में तिल्का जो ह़ाज़िर के लिये है मुराद इससे ग़ायब है। या'नी ये क़ुर्आन की निशानियाँ हैं, इसी त़रह़ इस आयत। हत्ता इज़ा कुन्तुम फ़िल्फुल्कि व जरयना बिहिम में बिहिम से बिकुम मुराद है या'नी ग़ायब से ह़ाज़िर मुराद है दअ़वाहुम अय दआअहुम उनकी दुआ उह़ीत़ा बिहिम या'नी हलाकत व बर्बादी के क़रीब आ गये, जैसे अह़ात़त बिही ख़त़ीअतुहु या'नी गुनाहों

بِهِ خَطِيئَتُهُ﴾ فَاتَّبَعَهُمْ وَأَتْبَعَهُمْ وَاحِدٌ. ﴿عَدْوًا﴾ مِنَ الْعُدْوَانِ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿ يُعَجِّلُ اللهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ﴾ قَوْلُ الإِنْسَانِ لِوَلَدِهِ وَمَالِهِ إِذَا غَضِبَ اللَّهُمَّ لاَ تُبَارِكْ فِيهِ وَالْعَنْهُ ﴿لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ﴾ لأُهْلِكَ مَنْ دُعِيَ عَلَيْهِ وَلأَمَاتَهُ. ﴿لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى﴾ مِثْلُهَا حُسْنَى ﴿وَزِيَادَةٌ﴾ مَغْفِرَةٌ، وَقَالَ غَيْرُهُ النَّظَرُ إِلَى وَجْهِهِ. ﴿الْكِبْرِيَاءُ﴾ الْمُلْكُ.

ने उसको सब तरफ़ से घेर लिया। फ़त्तबअहुम के एक मा'नी हैं, अदुव्वं उदवान से निकला है। आयत युअज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश्शर्र इस्तिअजालहुम बिल्ख़ैरि के बारे में मुजाहिद ने कहा कि इससे मुराद गुस्से के वक़्त आदमी का अपनी औलाद और अपने माल के बारे में ये कहना कि ऐ अल्लाह! इसमें बरकत न फ़र्मा और इसको अपनी रहमत से दूर कर दे तू (कुछ औक़ात उनकी ये बद् दुआ नहीं लगती) क्योंकि उनकी तक़्दीर का फ़ैसला पहले ही हो चुका होता है और (कुछ औक़ात) जिस पर बद् दुआ की जाती है, वो हलाक व बर्बाद हो जाते हैं। लिल्लज़ीन अहसनुल्हुस्ना व ज़ियादतुन में मुजाहिद ने कहा ज़ियादत से मग़्फ़िरत और अल्लाह की रज़ामन्दी मुराद है दूसरे लोगों ने कहा व ज़ियादत से अल्लाह का दीदार मुराद है। अल् किब्रियाउ से सल्तनत और बादशाही मुराद है।

व ज़ियादत की तफ़्सीर में रसूलुल्लाह (ﷺ) की ये हदीष हाफ़िज़ साहब ने नक़ल की है **इज़ा दख़ल अहलुल्जन्नतिल जन्नत नूदू अन्न लकुम इन्दल्लाहि अहदन फयकूलून अलम यब्यज़ वुजूहुना व युज़हज़िहना अनिन्नार व युदखिल्नल्जन्नत क़ाल फयुक्शफुल्हिजाबु फ़यन्ज़ुरून इलैहि फवल्लाहि मा आताहुम शैअन हुव अहब्बु इलैहिम मिन्हु षुम्म क़रअ लिल्लज़ीन अहसनुल्हुस्ना ज़ियादतुन** या'नी दुख़ूले जन्नत के बाद अहले जन्नत को बुलाया जाएगा कि आज दरबारे इलाही में तुम्हारे लिये कुछ वा'दा है वो कहेंगे कि क्या उसने हमारे चेहरे रोशन नहीं कर दिये और क्या हमको दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में दाख़िल नहीं कर दिया, अब और कौनसा वा'दा बाक़ी रह गया है। पस पर्दा उठा दिया जाएगा और जन्नती अल्लाह पाक का दीदार करेंगे और ये नेअमत सबसे बढ़कर उनको महबूब होगी। आयत में लफ़्ज़ ज़ियादत से यही मुराद है। या'नी दीदारे इलाही।

अल्लाह पाक मुझ नाचीज़ ख़ादिम को और बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने वाले सब मर्दों औरऔरतों को अपना दीदार अता करे और उन मुआविनीने किराम को भी जिनकी कोशिशों से इस गिरानी व गुमराही के दौर मे ये ख़िदमते हदीष अंजाम दी जा रही है। आमीन।

٢- باب قوله

बाब 2 : आयत 'व जावज़्ना बि बनी इस्राइलल्बहर'

﴿وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا حَتَّى إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ : آمَنْتُ أَنَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾, [يونس : ٩٠]. ﴿نُنَجِّيكَ﴾ : نُلْقِيكَ عَلَى نَجْوَةٍ مِنَ الأَرْضِ وَهُوَ النَّشَزُ الْمَكَانُ الْمُرْتَفِعُ.

की तफ़्सीर या'नी, और हमने बनी इस्राईल को समुन्दर के पार कर दिया। फिर फ़िरऔन और उसके लश्कर ने ज़ुल्म करने के (इरादे) से उनका पीछा किया। (वो सब समुन्दर में डूब गये और फ़िरऔन भी डूबने लगा तो वो बोला) मैं ईमान लाता हूँ कि कोई अल्लाह नहीं सिवाय उसके जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं भी मुसलमान होता हूँ, नुनज्जीक अयनुल्क़ी अला नज्वतिम मिनल अर्ज़ि नज्वतुन बमा'नी अन् नश्ज़ुवल मकानुल् मुरतफ़अ या'नी मैं तेरी लाश को नज्वह (ऊँची जगह) पर डाल दूंगा जिसको सब देखें और इबरत हासिल करें।

4680. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो यहूद आ़शूरा का रोज़ा रखते थे। उन्होंने बताया कि उसी दिन मूसा (अ़लैहि.) को फ़िरऔ़न पर फ़तह मिली थी। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने स़ह़ाबा से फ़र्माया कि मूसा (अ़लैहि.) के हम उनसे भी ज़्यादा मुस्तह़िक़ हैं, इसलिये तुम भी रोज़ा रखो। (राजेअ़ : 2004)

٤٦٨٠- حدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ وَالْيَهُودُ تَصُومُ عَاشُورَاءَ فَقَالُوا: هَذَا يَوْمٌ ظَهَرَ فِيهِ مُوسَى عَلَى فِرْعَوْنَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَصْحَابِهِ: ((أَنْتُمْ أَحَقُّ بِمُوسَى مِنْهُمْ فَصُومُوا)). [راجع: ٢٠٠٤]

बाद में यहूद की मुशाबिहत से बचने के लिये उसके साथ एक रोज़ा और रखने का हुक्म फ़र्माया या'नी नवीं और दसवीं या दसवीं और ग्यारहवीं तारीख़ का रोज़ा और मिलाया जाए।

सूरह हूद की तफ़्सीर

[١١] سُورَةُ هُودٍ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ)

अबू मैसरह (अ़म्र बिन शुरह़बील) ने कहा अव्वाह ह़ब्शी ज़ुबान में मेहरबान, रह़मदिल को कहते हैं और इब्ने अ़ब्बास ने कहा बादियुर राय का मा'नी जो हमको ज़ाहिर हुआ। और मुजाहिद ने कहा जूदी एक पहाड़ है उस जज़ीरे में जो दजला और फ़रात के बीच में मौस़िल के क़रीब है और इमाम ह़सन बस़री ने कहा। 'इन्नकल् अन्तल् ह़लीमुर्रशीद' ये काफ़िरों ने ह़ज़रत शुऐ़ब (रज़ि.) को ठट्ठे की राह से कहा था। और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा अल्क़िई के मा'नी थम जा, अ़सीबुन के मा'नी सख़्त। ला जरम का मा'नी क्यूँ नहीं (या'नी ज़रूरी है) व फ़ारुत् तन्नूर का मा'नी पानी फूट निकला। इक्रिमा ने कहा तन्नूर सत़्हे ज़मीन को कहते हैं।

(وَقَالَ أَبُو مَيْسَرَةَ الأَوَّاهُ الرَّحِيمُ بِالْحَبَشِيَّةِ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : بَادِىءَ الرَّأْيِ مَا ظَهَرَ لَنَا، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْجُودِيُّ : جَبَلٌ بِالْجَزِيرَةِ، وَقَالَ الْحَسَنُ: إِنَّكَ لأَنْتَ الْحَلِيمُ يَسْتَهْزِؤُونَ بِهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : أَقْلِعِي : أَمْسِكِي، عَصِيبٌ، شَدِيدٌ، لاَ جَرَمَ : بَلَى، وَفَارَ التَّنُّورُ : نَبَعَ الْمَاءُ، وَقَالَ عِكْرِمَةُ : وَجْهُ الأَرْضِ).

तश्रीह : या'नी ज़मीन से पानी फूटकर ऊपर आ गया। अकष़र मुफ़स्सिरीन का ये क़ौल है कि ये तन्नूर ह़ज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) का था मुल्के शाम में, फिर औलाद दर औलाद ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहिस्सलाम) तक पहुँचा और उसमें पानी उबलने को तूफ़ान का पेश ख़ैमा क़रार दिया गया।

बाब 1 : आयत 'अला इन्नहुम यष़्नून सुदूरहुम'

١- باب

की तफ़्सीर या'नी, ख़बरदार हो! वो लोग जो अपने सीनों को दोहरा किये देते हैं, ताकि अपनी बातें अल्लाह से छुपा सकें वो ग़लती पर हैं, अल्लाह सीने के भेदों से वाक़िफ़ है। ख़बरदार रहो! वो लोग जिस वक़्त छुपने के लिये अपने कपड़े लपेटते हैं

﴿أَلاَ إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ أَلاَ حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ﴾

وَقَالَ غَيْرُهُ : وَحَاقَ: نَزَلَ، يَحِيقُ : يَنْزِلُ يَئُوسٌ : فَعُولٌ مِنْ يَئِسْتُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ تَبْتَئِسْ : تَحْزَنْ ، يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ: شَكٌّ وَامْتِرَاءٌ فِي الْحَقِّ، لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ، مِنَ اللهِ إِنِ اسْتَطَاعُوا.

(उस वक़्त भी) वो जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ वो ज़ाहिर करते हैं , बेशक वो (उनके) दिलों के अंदर (की बातों) से ख़ूब ख़बरदार है। इक्रिमा के सिवा और लोगों ने कहा कि, हाक़ा का मा'नी उतर पड़ा उसी से है यहीक़ु या'नी उतरता है इन्नहू यऊसुन कफ़ूर मे यउस का मा'नी नाउम्मीद होना जो बरवज़न फ़ऊलुन है। ये यइसत से निकला है और मुजाहिद ने कहा ला तयअस का मा'नी ग़म न खा यस्नूना सुदूरहुम का मतलब ये है कि हक़ बात में शक व शुब्हा करते हैं। लियस्तख़्फ़ू मिन्हु या'नी अगर हो सके तो अल्लाह से छुपा लें।

तशरीह : सूरह हूद मक्का में नाज़िल हुई इसमें 123 आयात और दस रुकूअ हैं। आयत **अला इन्नहुम यस्नूना सुदूरहुम** (हूद : 5) या'नी, ये लोग कुर्आन सुनने से अपने सीने फेरते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह से छुप जाएँ। इस आयत का शाने नुज़ूल कुछ ने इस तरह बयान किया है कि काफ़िर लोग घरों में बैठकर मुख़ालफ़त की बातें करते। जब कुर्आन मजीद उनके बारे में नाज़िल होता तो समझते कि कोई दीवार के पीछे छुपकर हमारी बातें सुन जाता और हज़रत मुहम्मद (ﷺ) से कह देता है। फिर वो कपड़े ओढ़कर और छुप छुपकर मुख़ालिफ़ाना बातें करने लगे। आयत में उन्हीं का ज़िक्र है।

٤٦٨١- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، قَالَ: قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادِ بْنِ جَعْفَرٍ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقْرَأُ : ﴿أَلاَ إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ﴾ قَالَ : سَأَلْتُهُ عَنْهَا فَقَالَ أُنَاسٌ كَانُوا يَسْتَحْيُونَ أَنْ يَتَخَلَّوْا فَيُفْضُوا إِلَى السَّمَاءِ وَأَنْ يُجَامِعُوا نِسَاءَهُمْ فَيُفْضُوا إِلَى السَّمَاءِ فَنَزَلَ ذَلِكَ فِيهِمْ.

[طرفاه في : ٤٦٨٢، ٤٦٨٣].

4681. हमसे हसन बिन मुहम्मद बिन सबाह ने बयान किया, कहा हमसे हज्जाज बिन मुहम्मद अअ्वर ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझको मुहम्मद बिन अ़ब्बाद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी और उन्होंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना कि आप आयत की क़िरात इस तरह करते थे। अला इन्नहुम यस्नून सुदूरहुम मैंने उनसे आयत के बारे में पूछा। उन्होंने कहा कि कुछ लोग उसमें हया करते थे कि खुली हुई जगह में हाजत के लिये बैठने में, आसमान की तरफ़ सतर खोलने में, इस तरह सुहबत करते वक़्त आसमान की तरफ़ खोलने में परवरदिगार से शर्माते।

(दीगर मक़ाम : 4672, 4673)

शर्म के मारे झुके जाते थे, दोहरे हुए जाते थे इसी बाब में ये आयत नाज़िल हुई।

٤٦٨٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، وَأَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادِ ابْنُ جَعْفَرٍ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ قَرَأَ ﴿أَلاَ إِنَّهُمْ يَثْنَوْنِي صُدُورُهُمْ﴾ قُلْتُ :

4682. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें मुहम्मद बिन अ़ब्बाद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इस तरह क़िरात करते थे। अला इन्नहुम यस्नूनी सुदूरहुम मुहम्मद बिन अ़ब्बाद ने पूछा, ऐ अबुल अ़ब्बास! यस्नूनी सुदूरहुम का क्या मतलब है? बतलाया कि कुछ लोग

يَا أَبَا الْعَبَّاسِ مَا يَثْنُونِي صُدُورُهُمْ؟ قَالَ : كَانَ الرَّجُلُ يُجَامِعُ امْرَأَتَهُ فَيَسْتَحِي أَوْ يَتَخَلَّى فَيَسْتَحِي، فَنَزَلَتْ: ﴿أَلاَ إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ﴾.

अपनी बीवी से हमबिस्तरी करने में ह़या करते और ख़ुला के लिये बैठते हुए भी ह़या करते थे। उन्हीं के बारे में ये आयत नाज़ि ल हुई कि, अ़ला इन्नहुम यष़्नून स़ुदूरहुम आख़िर आयत तक।

तश्रीह़ : यष़्नूनी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की क़िरात है जो अष़्नूनी यष़्नूनी से बरवज़न अफ़ऊनी है। मशहूर क़िरात यूँ है, **अ़ला इन्नहुम यष़्नून स़ुदूरहुमअ़ला इन्नहुम यष़्नून स़ुदूरहुम** (हूद : 5) या'नी वो अपने सीने दोहरे करते हैं अल्लाह से छुपाना चाहते हैं। वो तो कपड़ों के अंदर भी सब देखता और जानता है, उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं है।

٤٦٨٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو، قَالَ قَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿أَلاَ إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ أَلاَ حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ﴾ وَقَالَ غَيْرُهُ: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْتَغْشُونَ: يُغَطُّونَ رُؤُوسَهُمْ، سِيءَ بِهِمْ: سَاءَ ظَنُّهُ بِقَوْمِهِ، وَضَاقَ بِهِمْ : بِأَضْيَافِهِ. بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ: بِسَوَادٍ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ أُنِيبُ: أَرْجِعُ.

4683. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ह़ुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि इब्ने अ़ ब्बास (रज़ि.) ने आयत की क़िरात इस त़रह़ की थी, अ़ला इन्नहुम यष़्नून स़ुदूरहुम लियस्तख़्फ़ू मिन्हू अ़ला हीन यसतग़्शौन ष़ियाबहुम और अ़म्र बिन दीनार के अ़लावा ओरों ने बयान किया ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कि यसतग़्शौन या'नी अपने सर छुपा लेते हैं सीआ बिहिम या'नी अपनी क़ौम से वो बदगुमान हुआ। वज़ाक़ा बिहिम या'नी अपने मेहमानों को देखकर वो बदगुमान हुआ कि उनकी क़ौम उन्हें भी परेशान करेगी, बिक़ित़्इम्मिनल्लैलि या'नी रात की स्याही में और मुजाहिद ने कहा उनीबु के मा'नी मे रुजूअ़ करता हूँ (मुतवज्जह होता हूँ)।

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ﴾

बाब 2 : आयत 'व कान अर्शुहू अ़लल्माइ' की तफ़्सीर या'नी अल्लाह का अ़र्श पानी पर था।

٤٦٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنْفِقْ أُنْفِقْ عَلَيْكَ)) وَقَالَ : ((يَدُ اللهِ مَلأَى لاَ تَغِيضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارَ)). وَقَالَ ((أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَاءَ وَالأَرْضَ فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ وَكَانَ

4684. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया। उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि बन्दो! (मेरी राह में) ख़र्च करो तो मैं भी तुम पर ख़र्च करूँगा और फ़र्माया, अल्लाह का हाथ भरा हुआ है। रात और दिन के मुसलसल ख़र्च से भी उसमें कम नहीं होता और फ़र्माया तुमने देखा नहीं जब से अल्लाह ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया है, मुसलसल ख़र्च किये जा रहा है लेकिन उसके हाथ में कोई कमी नहीं हुई, उसका अ़र्श पानी पर था और उसके हाथ में

عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ وَبِيَدِهِ الْمِيزَانُ يَخْفِضُ وَيَرْفَعُ)). اعْتَرَاكَ: افْتَعَلْتَ مِنْ عَرَوْتُهُ أَيْ أَصَبْتُهُ. وَمِنْهُ يَعْرُوهُ، وَاعْتَرَانِي. آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا: أَيْ فِي مُلْكِهِ وَسُلْطَانِهِ. عَنِيدٌ وَعَنُودٌ وَعَانِدٌ وَاحِدٌ. هُوَ تَأْكِيدُ التَّجَبُّرِ. اسْتَعْمَرَكُمْ: جَعَلَكُمْ عُمَّارًا أَعْمَرْتُهُ الدَّارَ فَهِيَ عُمْرَى جَعَلْتُهَا لَهُ، نَكِرَهُمْ وَأَنْكَرَهُمْ وَاسْتَنْكَرَهُمْ وَاحِدٌ. حَمِيدٌ مَجِيدٌ كَأَنَّهُ فَعِيلٌ مِنْ مَاجِدٍ. مَحْمُودٌ: مِنْ حَمِدَ سِجِّيلٌ: الشَّدِيدُ الْكَبِيرُ، سِجِّيلٌ وَسِجِّينٌ وَاللاَّمُ وَالنُّونُ أُخْتَانِ وَقَالَ تَمِيمُ بْنُ مُقْبِلٍ

وَرَجْلَةٍ يَضْرِبُونَ الْبَيْضَ ضَاحِيَةً
ضَرْبًا تَوَاصَى بِهِ الأَبْطَالُ سِجِّينَا

﴿وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا﴾ أَيْ إِلَى أَهْلِ مَدْيَنَ لأَنَّ مَدْيَنَ بَلَدٌ وَمِثْلُهُ ﴿وَاسْأَلِ الْقَرْيَةَ﴾ ﴿وَاسْأَلِ الْعِيرَ﴾ يَعْنِي أَهْلَ الْقَرْيَةِ وَالْعِيرِ ﴿وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا﴾ يَقُولُ: لَمْ تَلْتَفِتُوا إِلَيْهِ. وَيُقَالُ إِذَا لَمْ يَقْضِ الرَّجُلُ حَاجَتَهُ ظَهَرْتَ بِحَاجَتِي وَجَعَلْتَنِي ظِهْرِيًّا وَالظِّهْرِيُّ هَهُنَا أَنْ تَأْخُذَ مَعَكَ دَابَّةً أَوْ وِعَاءً تَسْتَظْهِرُ بِهِ، أَرَاذِلُنَا: سُقَاطُنَا، إِجْرَامِي: هُوَ مَصْدَرٌ مِنْ أَجْرَمْتُ وَبَعْضُهُمْ يَقُولُ: جَرَمْتُ. الْفُلْكُ وَالْفَلَكُ: وَاحِدٌ وَهِيَ السَّفِينَةُ، وَالسُّفُنُ. مُجْرَاهَا: مَدْفَعُهَا وَهُوَ مَصْدَرُ أَجْرَيْتُ، وَأَرْسَيْتُ حَبَسْتُ وَيُقْرَأُ مَرْسَاهَا مِنْ رَسَتْ هِيَ وَمَجْرَاهَا مِنْ جَرَتْ هِيَ وَمُجْرِيهَا

मीज़ाने अदल है जिसे वो झुकाता और उठाता रहता है। इअतिराक बाब इफ़्तिआल से है अरवतुहू से या'नी मैंने उसको पकड़ पाया उसी से है। यअरूहु मुजारेअ का सैग़ा और इअतिरानी अखज़ बिनासियातिहा या'नी उसकी हुकूमत और क़ब्ज़-ए-क़ुदरत में हैं अनीद और उनूद और आनिद सबके मा'नी एक ही हैं या'नी सरकश मुख़ालिफ़ और ये जब्बार की ताकीद है। इस्तअमरकुम तुमको बसाया आबाद किया। अरब लोग कहते हैं। अअमरतुहुद् दारा फ़हिया उम्री। या'नी ये घर मैंने उसको उम्र भर के लिये दे डाला नकरहुम और अन्करहुम और वस्तन्करहुम सबके एक ही मा'नी हैं। या'नी उनको परदेसी समझा। हमीद फ़ईल के वज़न पर है ब मा'नी महमूद में सराहा गया और मजीद माजिद के मा'नी मे है। (या'नी करम करने वाला) सिजील और सिज्जीन दोनों के मा'नी सख़्त और बड़ा के हैं। लाम और नून बहनें हैं (एक दूसरे से बदली जाती हैं) तमीम बिन मुक़बिल शायर कहता है। कुछ पैदल दिन दहाड़े ख़ुद पर ज़र्ब लगाते हैं ऐसी ज़र्ब जिसकी सख़्ती के लिये बड़े बड़े पहलवान अपने शागिर्दों को वसिय्यत किया करते हैं। व इला मदयना या'नी मदयन वालों की तरफ़ क्योंकि मदयन एक शहर का नाम है जिसे दूसरी जगह फ़र्माया वस्अलिलक़र्यत या'नी गाँव वालों से पूछ वस्अलिल ईरि या'नी क़ाफ़िला वालों से पूछ वराहकुम ज़िहरिया या'नी पसे पुश्त डाल दिया उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात न किया। जब कोई किसी का मक़्सद पूरा न करे तो अरब लोग कहते हैं ज़हरत बिहाजती और जअल्तनी ज़िहरिय्या उस जगह ज़ह्री का मा'नी वो जानवर या बर्तन है जिसको तू अपने काम के लिए साथ रखे। अराज़िलुना हमारे में से कमीने लोग इज्राम अज्रम्तु का मस़दर है या जरम्तु स़लास़ी मुजर्रद फ़ुल्क और फ़लक जमा और मुफ़रद दोनों के लिये आता है। एक कश्ती और कई कश्तियों को भी कहते हैं। मुजराहा कश्ती का चलना ये अज्रयतु का मस़दर है। इसी तरह मुरसाहा अरसयतु का मस़दर है या'नी मैंने कश्ती थमा ली (लंगर कर दिया) कुछ ने मुरसाहा ब फ़तह मीम पढ़ा है, रसत् से इसी तरह मुज्रीहा भी जरत् से है। कुछ ने मुज्रीहा मुर्सीहा या'नी अल्लाह उसको चलाने वाला है और वही उसका थमाने वाला है ये

وَمُرْسِيهَا مِنْ فُعِلَ بِهَا الرَّاسِيَاتُ ثَابِتَاتٌ.
[أطرافه في : ٥٣٥٢، ٧٤١١، ٧٤١٩، ٧٤٩٦].

मा'नों मे मफ़्ऊल के हैं । अर् रासियात के मा'नी जमी हुई के हैं। (दीगर मक़ाम : 5352, 7411, 7419, 7496)

٤- باب قَوْلِهِ :

﴿وَيَقُولُ الأَشْهَادُ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى رَبِّهِمْ أَلاَ لَعْنَةُ اللهِ عَلَى الظَّالِمِينَ﴾ وَاحِدُ الأَشْهَادِ شَاهِدٌ مِثْلُ صَاحِبٍ وَأَصْحَابٍ.

बाब 4 : आयत 'व यक़ूलुल्अशहादु हाउलाइल्लज़ीन' की तफ़्सीर या'नी,

और गवाह कहेंगे कि यही लोग हैं जिन्होने अपने परवरदिगार पर झूठ बाँधा था, ख़बरदार रहो कि अल्लाह की ला'नत है ज़ालिमों पर। अश्हाद शाहिद की जमा है। जैसे साहिब की जमा अस्हाब है।

٤٦٨٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، وَهِشَامٌ قَالاَ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ قَالَ : بَيْنَا ابْنُ عُمَرَ يَطُوفُ إِذْ عَرَضَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَوْ قَالَ يَا ابْنُ عُمَرَ هَلْ سَمِعْتَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّجْوَى ؟ فَقَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((يُدْنَى الْمُؤْمِنُ مِنْ رَبِّهِ)) وَقَالَ هِشَامٌ : ((يَدْنُو الْمُؤْمِنُ حَتَّى يَضَعَ عَلَيْهِ كَنَفَهُ فَيُقَرِّرُهُ بِذُنُوبِهِ، تَعْرِفُ ذَنْبَ كَذَا يَقُولُ أَعْرِفُ رَبِّ يَقُولُ: أَعْرِفُ مَرَّتَيْنِ، فَيَقُولُ: سَتَرْتُهَا فِي الدُّنْيَا وَأَغْفِرُهَا لَكَ الْيَوْمَ، ثُمَّ تُطْوَى صَحِيفَةُ حَسَنَاتِهِ وَأَمَّا الآخَرُونَ أَوِ الْكُفَّارُ فَيُنَادَى عَلَى رُؤُوسِ الأَشْهَادِ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى رَبِّهِمْ)). وَقَالَ شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا صَفْوَانُ.
[راجع: ٢٤٤١]

4685. हमसे मुसदद्द ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अ़रूबा और हिशाम बिन अबी अ़ब्दुल्लाह दस्तवाई ने बयान किया, कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे स़फ़्वान बिन मुह़रिज़ ने कि ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) त़वाफ़ कर रहे थे कि एक शख़्स नाम ना मा'लूम आपके सामने आया और पूछा, ऐ अबू अ़ब्दुर् रहमान! या ये कहा कि ऐ इब्ने उ़मर! क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सरगोशी के बारे में कुछ सुना है (जो अल्लाह तआ़ला मोमिनीन से क़यामत के दिन करेगा।) उन्होंने बयान किया कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि मोमिन अपने रब के क़रीब लाया जाएगा। और हिशाम ने यदनुल मुअमिनीन (बजाय युदनिल मुअमिन कहा) मत़लब एक ही है। यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपना एक जानिब उस पर रखेगा और उसके गुनाहों का इक़रार करायेगा कि फ़लाँ गुनाह तुझे याद है? बन्दा अ़र्ज़ करेगा, याद है, मेरे रब! मुझे याद है, दो मर्तबा इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि मैंने दुनिया मैं तुम्हारे गुनाहों को छुपाए रखा और आज भी तुम्हारी मग़्फ़िरत करूँगा। फिर उसकी नेकियों का दफ़्तर लपेट दिया जाएगा। लेकिन दूसरे लोग या (ये कहा कि) कुफ़्फ़ार तो उनके बारे में महशर में ऐलान किया जाएगा कि यही वो लोग हैं जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बाँधा था। और शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि हमसे सफ़्वान ने बयान किया। (राजेअ़ : 2441)

बाब 5 : आयत 'व कज़ालिक अख़्ज़ु रब्बिक' अल् आयत की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قَوْلِهِ :

﴿وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ﴾ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ : الْعَوْنُ الْمُعِينُ، رَفَدْتُهُ : أَعَنْتُهُ، تَرْكَنُوا: تَمِيلُوا، فَلَوْ لاَ كَانَ : فَهَلاَّ كَانَ، أُتْرِفُوا: أُهْلِكُوا، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ شَدِيدٌ وَصَوْتٌ ضَعِيفٌ.

और तेरे परवरदिगार की पकड़ इसी त़रह़ है जब वो बस्ती वालों को पकड़ता है जो (अपने ऊपर) ज़ुल्म करते रहते हैं। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दुख देने वाली और बड़ी ही सख़्त है। अर्रिफ़दुल मरफ़ूद मदद जो दी जाए (इन्आम जो मरह़मत हो) अ़रब लोग कहते हैं रफ़त्तुह या'नी मैंने उसकी मदद की, तर्कनू का मा'नी झुको माइल हो। फ़लो कान या'नी क्यूँ न हुए। उत्रिफ़ू हलाक किये गये। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ज़फ़ीर ज़ोर की आवाज़ को और शहीक़ पस्त आवाज़ को कहते हैं।

٤٦٨٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ)) قَالَ ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ﴾)).

4686. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उनसे बुरैद बिन अबी बुर्दा ने बयान किया, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ज़ालिम को चन्द रोज़ दुनिया में मुह्लत देता रहता है लेकिन जब पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता। रावी ने बयान किया कि फिर आपने इस आयत की तिलावत की। और तेरे परवरदिगार की पकड़ इसी त़रह़ है, जब वो बस्ती वालों को पकड़ता है। जो (अपने ऊपर) ज़ुल्म करते रहते हैं, बेशक उसकी पकड़ बड़ी तकलीफ़ देने वाली और बड़ी ही सख़्त है।

बाब 6 : आयत 'व अक़ीमिस्सलात तरफइन्नहारि' की तफ़्सीर या'नी

٦- باب قَوْلِهِ :

﴿وَأَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ﴾ وَزُلَفًا سَاعَاتٍ: بَعْدَ سَاعَاتٍ، وَمِنْهُ سُمِّيَتِ الْمُزْدَلِفَةُ. الزُّلَفُ مَنْزِلَةٌ : بَعْدَ مَنْزِلَةٍ وَأَمَّا زُلْفَى فَمَصْدَرٌ مِنَ الْقُرْبَى، ازْدَلَفُوا: اجْتَمَعُوا أَزْلَفْنَا: جَمَعْنَا.

और तुम नमाज़ क़ायम करो। दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ ह़िस्सों में, बेशक नेकियाँ मिटा देती हैं बदियों को, ये एक नस़ीह़त है नस़ीह़त मानने वालों के लिये। ज़ुलुफ़न या'नी घड़ी घड़ी उसी से मुज़दलिफ़ा है। क्योंकि लोग वहाँ वक़्फ़ा वक़्फ़ा से आते रहते हैं और ज़ुलफ़ु मंज़िलों को भी कहते हैं। ज़ुलफ़ा का लफ़्ज़ जो सूरह स़ाद मे है जैसे क़ुरबा या'नी नज़दीकी इज़्दलफ़ू का मा'नी जमा हो गये। अज़्लफ़्ना मुतअ़दी है। या'नी हमने जमा किया। एक शख़्स़ किसी ग़ैर औरत को हाथ से छूने या स़िर्फ़ बोसा दे देने का मुर्तकिब हो गया था उसके बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

हमलल्जुम्हूरू हाज़ल्मुत्लक़ अलल्मुक़य्यदि फ़िल्हदीषिस्सहीहि अन्नस्सलात कफ़्फ़ारतुन लिमा बैनहुमा मा उज्निबतिल्कबाइरू फ़क़ाल ताइफ़तुन इन उज्निबतल्बकाइरू कानतिल्हसनातु कफ्फारतुन लिमा अदल्कबाइरि मिनज़्ज़ुनूबि व इल्लम युज्तनिबिल्कबाइरू लम तुहितिल्हसनातु शैआ (फ़त्हुल बारी) फ़ तब्बदरू या उलिल अल्बाब (राज़)

٤٦٨٧ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ هُوَ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ ابْنِ عُثْمَانَ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً أَصَابَ مِنْ امْرَأَةٍ قُبْلَةً فَأَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَأُنْزِلَتْ عَلَيْهِ ﴿وَأَقِمِ الصَّلاَةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ﴾ قَالَ الرَّجُلُ: أَلِي هَذِهِ؟ قَالَ: ((لِمَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ أُمَّتِي)). [راجع: ٥٢٦]

4687. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उनसे अबू उ़ष्मान ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने किसी ग़ैर औरत को बोसा दे दिया और फिर वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपसे अपना गुनाह बयान किया। इस पर ये आयत नाज़िल हुई, और तुम नमाज़ की पाबन्दी करो दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ ह़िस्सों में बेशक नेकियाँ मिटा देती हैं बदियों को, ये एक नसीहत है नसीहत मानने वालों के लिये। उन साहब ने अ़र्ज़ किया ये आयत सिर्फ़ मेरे ही लिये है (कि नेकियाँ बदियों को मिटा देती हैं)? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत के हर इंसान के लिये है जो इस पर अ़मल करे। (राजेअ: 526)

या'नी गुनाह करके नादिम हो। सच्चे दिल से तौबा करे और नमाज़ पढ़े तो अल्लाह उसके गुनाह बख़्श देगा। दोनों सिरों से फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ें और रात से इशा की नमाज़ मुराद है। ज़ुह्र और अ़स्र की नमाज़ों का ज़िक्र दूसरी आयतों में मौजूद है जो मुंकिरीने ह़दीष़ सिर्फ़ तीन नमाज़ों के क़ाइल हैं वो क़ुर्आन पाक से भी वाक़िफ़ नहीं हैं। अल्लाह उनको नेक समझ अ़ता करे। आमीन।

[١٢] سُورَةُ يُوسُفَ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ

सूरह यूसुफ़ की तफ़्सीर

(بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तश्रीह़ : ये सूरत मक्का में नाज़िल हुई इसमें 111 आयात और 12 रुकूअ हैं। यहूद ने आप (ﷺ) से ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) का क़िस्सा पूछा था इस पर ये सूरत नाज़िल हुई। ह़ज़रत यअ़क़ूब (अ़लैहि.) के बेटे ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) उनकी बीवी राहिल के बत़न से थे। ह़ज़रत यअ़क़ूब उनसे बहुत मुह़ब्बत करते थे। यही मुह़ब्बत भाइयों के ह़सद का सबब बनी।

وَقَالَ فُضَيْلٌ عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ مُتَّكَأً الأُتْرُجُّ، قَالَ فُضَيْلٌ: الأُتْرُجُّ بِالْحَبَشِيَّةِ: مُتْكًا، وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ رَجُلٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ مُتَّكَأً كُلُّ شَيْءٍ قُطِعَ بِالسِّكِّينِ، وَقَالَ قَتَادَةُ لَذُو عِلْمٍ عَامِلٌ بِمَا عَلِمَ، وَقَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ صُوَاعَ

और फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ (ज़ाहिद मशहूर) ने हुसैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान से रिवायत किया, उन्होंने मुजाहिद से उन्होंने कहा मुत्का का मा'नी उत्रुज और ख़ुद फ़ुज़ैल ने भी कहा कि मुत्का ह़ब्शी ज़ुबान में उत्रुजु को कहते हैं और सुफ़यान बिन उ़ययना ने एक शख़्स (नाम ना मा'लूम) से रिवायत की उसने मुजाहिद से उन्होंने कहा। मुत्का वो चीज़ जो छुरी से काटी जाए (मेवा हो या तरकारी) और क़तादा ने कहा ज़ू इल्म का मा'नी अपने इल्म पर अ़मल करने वाला और सईद बिन जुबैर ने कहा

सवाइन एक माप है जिसको मकूक फ़ारसी भी कहते हैं ये एक गिलास की तरह का होता है जिसके दोनों किनारे मिल जाते हैं। अजम के लोग उसमें पानी पिया करते हैं और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा। लौला अन् तुफ़न्निदून अगर तुम मुझको जाहिल न कहो। दूसरे लोगों ने कहा ग़याबत वो चीज़ जो दूसरी चीज़ को छुपा दे ग़ायब कर दे और जब कच्चा कुआँ जिसकी बन्दिश न हुई हो। वमा अन्ता बिमुअमिन लना या'नी तू हमारी बात सच मानने वाला नहीं । अशुद्दहू वह उम जो ज़माना इन्हितात से पहले ही (तीस से चालीस बरस तक अरब बोला करते हैं) बलग़ अशुद्दहुम या'नी अपनी जवानी की उम्र को पहुँचाया पहुँचे। कुछ ने कहा अशद्दु शद्दुन की जमा है मुत्काअ मस्नद तकिया जिस पर तू पीने खाने या बातें करने के लिये टेका दे और जिसने ये कहा कि मुत्काअ तरंज को कहते हैं उसने ग़लत कहा। अरबी ज़ुबान में मुत्काअ के मा'नी तरंज के बिलकुल नहीं आए हैं जब उस शख़्स से जो मुत्काअ के मा'नी तरंज कहता है अस़ल बयान की गई कि मुत्काअ मस्नद या तकिया को कहते हैं तो वो उससे भी बद तर एक बात कहने लगा कि ये लफ़्ज़ मुत्क ब सकून ताअ है। ह़ालाँकि मुत्क अरबी ज़ुबान में औरत की शर्मगाह को कहते हैं। जहाँ औरत का ख़त्ना करते हैं और यही वजह है कि औरत को अरबी ज़ुबान में मुत्काअ (मुत्क वाली) कहते हैं और आदमी को मुत्का का पेट कहते हैं। अगर बिल् फ़र्ज़ ज़ुलैख़ा ने तरंज भी मंगवाकर औरतों को दिया होगा तो मस्नद तकिया के बाद दिया होगा। शग़फ़हा या'नी उसके दिल के शिग़ाफ़ (ग़िलाफ़) में उसकी मुहब्बत समा गई है। कुछ ने शग़फ़हा ऐन मह्मला से पढ़ा है वो मशग़ूफ़ से निकला है। अस़ब का मा'नी माइल हो जाऊँगा झुक पड़ूंगा। अज़्ग़ाषे अहलाम परेशान ख़्वाब जिसकी कुछ ता'बीर न दी जा सके अस़ल में अज़्ग़ाष ज़ग़ष की जमा है या'नी एक मुट्ठी भर घास तिनके वग़ैरह उससे है (सूरह स़ाद में) ख़ुज़् बियदिका ज़ग़ष के ये मा'नी मुराद नहीं हैं। बल्कि परेशान ख़्वाब मुराद है। नमीर मिनल मीरत से निकला है उसके मा'नी खाने के हैं । व नज़्दादु कैला बईरिन या'नी एक ऊँट का बोझ और ज़्यादा लाएँगे आवा इलैयहि अपने से मिला लिया। अपने पास बैठा लिया। सक़ायत एक माप था (जिससे अनाज मापते थे) तफ़्ताअ हमेशा रहोगे। फ़लम्मा इस्तयअसू जब ना उम्मीद

مَكُوكُ الْفَارِسِيُّ الَّذِي يَلْتَقِي طَرَفَاهُ، كَانَتْ تَشْرَبُ بِهِ الأَعَاجِمُ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : تُفَنِّدُونِ : تُجَهِّلُونِ، وَقَالَ غَيْرُهُ : غَيَابَةٌ كُلُّ شَيْءٍ غَيَّبَ عَنْكَ شَيْئًا فَهُوَ غَيَابَةٌ، وَالْجُبُّ : الرَّكِيَّةُ الَّتِي لَمْ تُطْوَ، بِمُؤْمِنٍ لَنَا: بِمُصَدِّقٍ، أَشُدَّهُ قَبْلَ أَنْ يَأْخُذَ فِي النُّقْصَانِ يُقَالُ : بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغُوا أَشُدَّهُمْ وَقَالَ بَعْضُهُمْ : وَاحِدُهَا شَدٌّ. وَالْمُتَّكَأُ مَا اتَّكَأْتَ عَلَيْهِ لِشَرَابٍ أَوْ لِحَدِيثٍ أَوْ لِطَعَامٍ وَأَبْطَلَ الَّذِي قَالَ الأُتْرُجُّ : وَلَيْسَ فِي كَلاَمِ الْعَرَبِ الأُتْرُجُّ فَلَمَّا احْتُجَّ عَلَيْهِمْ بِأَنَّهُ الْمُتَّكَأُ مِنْ نُمَارِقٍ فَرُّوا إِلَى شَرٍّ مِنْهُ فَقَالُوا : إِنَّمَا هُوَ الْمُتْكُ سَاكِنَةَ التَّاءِ وَإِنَّمَا الْمُتْكُ طَرَفُ الْبَظْرِ وَمِنْ ذَلِكَ قِيلَ لَهَا : مَتْكَاءُ وَابْنُ الْمَتْكَاءِ فَإِنْ كَانَ ثَمَّ أُتْرُجٌّ فَإِنَّهُ بَعْدَ الْمُتَّكَإِ، شَغَفَهَا يُقَالُ : بَلَغَ شِغَافَهَا وَهُوَ غِلاَفُ قَلْبِهَا وَأَمَّا شَعَفَهَا : فَمِنَ الْمَشْعُوفِ، أَصْبُ : أَمِيلُ، أَضْغَاثُ أَحْلاَمٍ : مَا لاَ تَأْوِيلَ لَهُ، وَالضِّغْثُ : مِلْءُ الْيَدِ مِنْ حَشِيشٍ وَمَا أَشْبَهَهُ وَمِنْهُ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا لاَ مِنْ قَوْلِهِ أَضْغَاثُ أَحْلاَمٍ وَاحِدُهَا ضِغْثٌ، نَمِيرُ، مِنَ الْمِيرَةِ. وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ مَا يَحْمِلُ بَعِيرٌ، آوَى إِلَيْهِ: ضَمَّ إِلَيْهِ. السِّقَايَةُ: مِكْيَالٌ: تَفْتَأُ: لاَ تَزَالُ اسْتَيْأَسُوا : يَئِسُوا. وَلاَ تَيْأَسُوا مِنْ رَوْحِ

الله: مَعْنَاهُ الرَّجَاءُ، خَلَصُوا نَجِيًّا: اعْتَزَلُوا نَجِيًّا وَالْجَمْعُ أَنْجِيَةٌ يَتَنَاجَوْنَ الْوَاحِدُ نَجِيٌّ وَالاثْنَانِ وَالْجَمْعُ نَجِيٌّ وَأَنْجِيَةٌ. حَرَضًا مُحْرَضًا: يُذِيبُكَ الْهَمُّ، تَحَسَّسُوا: تَخَبَّرُوا: مُزْجَاةٍ: قَلِيلَةٍ، غَاشِيَةٌ مِنْ عَذَابِ الله عَامَّةٌ مُجَلِّلَةٌ.

हो गये वला तयअसू मिर्रूहुल्लाहि अल्लाह से उम्मीद रखो उसकी रहमत से नाउम्मीद न हो। ख़लसू नजिय्या अलग जाकर मश्विरा करने लगे नज्जी का मा'नी मश्विरा करने वाला। उसकी जमा अन्जियतुन भी आई है उससे बना है यतनाजौन या'नी मश्विरा कर रहे हैं । नज्जी मुफ़रद का सैग़ा है और तस्निया और जमा में नज्जी और अन्जियतुन दोनों मुस्तअ़मिल हैं। हरज़ा या'नी रंज व ग़म तुझको गला डालेगा। फ़तहस्ससू या'नी ख़बर लो, लो लगाओ, तलाश करो। मिनज़ात थोड़ी पूँजी। ग़ाशिया मिन अ़ज़ाबिल्लाह। अल्लाह का आम अ़ज़ाब जो सबको घेर ले।

١- باب قَوْلِهِ: ﴿وَيُتِمُّ نِعْمَتَه عَلَيْكَ وَعَلَى آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَى أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ﴾

बाब 1 : आयत 'व युतिम्मु निअ़मतहू अ़लैक' की तफ़्सीर या'नी,

और अपना इन्आ़म तुम्हारे ऊपर और औलादे यअ़क़ूब पर पूरा करेगा जैसा कि वो उसे उससे पहले पूरा कर चुका है। तुम्हारे बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ पर।

٤٦٨٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الله بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ الله بْنِ دِينَارٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ الله بْنُ عُمَرَ رَضِيَ الله عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْكَرِيمُ ابْنُ الْكَرِيمِ ابْنِ الْكَرِيمِ ابْنِ الْكَرِيمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنُ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ)). [راجع: ٣٣٨٢].

4688. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम थे। अ़लैहिमुस्सलातु वस्सलाम। (राजेअ़ : 3382)

٢- باب قَوْلِهِ: ﴿لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِلسَّائِلِينَ﴾

बाब 2 : आयत 'लक़द कान फ़ी युसुफ़ व इख़्वतिही' की तफ़्सीर या'नी,

या'नी बिलाशक यूसुफ़ और उनके भाईयों (के क़िस्से) में पूछने वालों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

इब्ने जरीर वग़ैरह ने हज़रत यूसुफ़ के भाइयों के नाम इस तरह नक़ल किये हैं (1) रूबैल (2) शम्ऊ़न (3) लावी (4) यहूदा (5) रियालून (6) यश्जर (7) दान (8) नियाल (9) जाद (10) अश्रद (11) बिन्यामीन, उनमें सबसे बड़ा रूबैल था। (फ़त्हुल बारी)

٤٦٨٩- حدثني مُحَمَّدٌ أخبرنا، عَبْدَةُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ، سُئِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَيُّ النَّاسِ أَكْرَمُ. قَالَ: ((أَكْرَمُهُمْ عِنْدَ اللهِ أَتْقَاهُمْ)) قَالُوا : لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ؟ قَالَ: ((فَأَكْرَمُ النَّاسِ يُوسُفُ نَبِيُّ اللهِ ابْنُ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ نَبِيِّ اللهِ ابْنِ خَلِيلِ اللهِ)) قَالُوا: لَيْسَ عَنْ هَذَا نَسْأَلُكَ؟ قَالَ: ((فَعَنْ مَعَادِنِ الْعَرَبِ تَسْأَلُونِي؟)) قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: ((فَخِيَارُكُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُكُمْ فِي الإِسْلاَمِ إِذَا فَقِهُوا)). تَابَعَهُ أَبُو أُسَامَةَ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ.

[راجع: ٣٣٥٣]

4689. मुझसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह ने ख़बर दी, उन्हें उ़बैदुल्लाह ने, उन्हें सईद बिन अबी सईद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से किसी ने सवाल किया कि इंसानों में कौन सबसे ज़्यादा शरीफ़ है तो आपने फ़र्माया कि सबसे ज़्यादा शरीफ़ वो है जो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी हो। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि हमारे सवाल का मक़्स़द ये नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर सबसे ज़्यादा शरीफ़ ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) हैं। नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह बिन नबी अल्लाह बिन ख़लीलुल्लाह। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि हमारे सवाल का ये भी मक़्स़द नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा, अ़रब के ख़ानदानों के बारे में तुम मा'लूम करना चाहते हो? स़ह़ाबा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जाहिलियत में जो लोग शरीफ़ हैं, जबकि दीन की समझ भी उन्हें ह़ासिल हो जाए। इस रिवायत की मुताबअ़त अबू उसामा ने उ़बैदुल्लाह से की है। (राजेअ़: 3353)

ह़दीषे हाज़ा की रू से शराफ़त की बुनियाद दीनदारी और दीन की समझ है, उसके बग़ैर शराफ़त का दा'वा ग़लत़ है ख़्वाह कोई सय्यद ही क्यूँ न हो। दीनी फ़ुक़ाहत शराफ़त की अव्वलीन बुनियाद है। मह़ज़ इल्म कोई चीज़ नहीं जब तक उसको स़ह़ीह़ त़ौर पर समझा न जाए उसी का नाम फ़ुक़ाहत है। नामो निहाद फ़ुक़हाअ मुराद नहीं हैं जिन्होंने बिला वजह ज़मीन व आसमान के क़लाबे मिलाए हैं। जैसा कि कुतुबे फ़ुक़हा से ज़ाहिर है, इल्ला माशा अल्लाह। तफ़्सील के लिये किताब ह़क़ीक़तुल्फ़िक़्ह, मुलाह़िज़ा हो।

٣- باب قَوْلِهِ : ﴿قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا﴾ سَوَّلَتْ : زَيَّنَتْ.

बाब 3 : आयत 'बल सव्वलत लकुम अन्फ़ुसुकुम अम्रा 'की तफ़्सीर या'नी,

ह़ज़रत यअ़क़ूब ने कहा। तुमने अपने दिल से ख़ुद एक झूठी बात घढ़ ली है। सवल्लत का मा'नी तुम्हारे दिलों ने एक मन घड़त बात को अपने लिये अच्छा समझ लिया है।

٤٦٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. ح قَالَ: وَحَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ الأَيْلِيُّ قَالَ : سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ، وَسَعِيدَ

4690. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नुमैरी ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने बयान किया, कहा कि मैं ने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अ़ल्क़मा

بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنُ وَقَّاصٍ، وَعُبَيْدُ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ، عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَبَرَّأَهَا اللهُ كُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ كُنْتِ بَرِيئَةً فَسَيُبَرِّئُكِ اللهُ وَإِنْ كُنْتِ أَلْمَمْتِ بِذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرِي اللهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ)) قُلْتُ : إِنِّي وَاللهِ لاَ أَجِدُ مَثَلاً إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ. وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ، وَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ﴾ الْعَشْرَ الآيَاتِ.

[راجع: ٢٥٩٣]

बिन वक़्क़ास़ और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह से नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आ़इशा (रज़ि.) के उस वाक़िये के बारे में सुना, जिसमें तोह्मत लगाने वालों ने उन पर तोह्मत लगाई थी और फिर अल्लाह तआ़ला ने उनकी पाकी नाज़िल की। उन तमाम लोगों ने मुझसे इस क़िस़्से का कुछ कुछ टुकड़ा बयान किया। नबी करीम (ﷺ) ने (आयशा रज़ि. से) फ़र्माया कि अगर तुम बुरी हो तो अ़न्क़रीब अल्लाह तुम्हारी पाकी नाज़िल कर देगा लेकिन अगर तू आलूदा हो गई है तो अल्लाह से मग़्फ़िरत त़लब कर और उसके हुज़ूर में तौबा कर (आ़इशा रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने उस पर कहा अल्लाह की क़सम! मेरी और तुम्हारी मिष़ाल यूसुफ़ (अ़लैहि.) के वालिद जैसी है (और उन्हीं की कही हुई बात मैं भी दोहराती हूँ कि) सो स़ब्र करना (ही) अच्छा है और तुम जो कुछ बयान करते हो उस पर अल्लाह ही मदद करेगा। उसके बाद अल्लाह तआ़ला ने आ़इशा (रज़ि.) की पाकी में सूरह नूर की इन्नल्लज़ीन जाऊ बिल्इफ़्कि से आख़िर तक दस आयात उतारीं। (राजेअ़ : 2593)

तश्रीह : इस ह़दीष़ को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) इस बाब में इसलिये लाए कि उसमें ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) के वालिद का क़िस़्सा मज़्कूर है। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) को रंज और स़दमे में ह़ज़रत यअ़क़ूब (अ़लैहि.) का नाम याद न रहा तो उन्होंने यूँ कह दिया कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) के वालिद। ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

٤٦٩١- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَسْرُوقُ بْنُ الأَجْدَعِ، قَالَ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ رُومَانَ وَهِيَ أُمُّ عَائِشَةَ قَالَتْ: بَيْنَا أَنَا وَعَائِشَةُ أَخَذَتْهَا الْحُمَّى فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَعَلَّ فِي حَدِيثٍ تُحُدِّثَ)) قَالَتْ: نَعَمْ، وَقَعَدَتْ عَائِشَةُ قَالَتْ: مَثَلِي وَمَثَلُكُمْ كَيَعْقُوبَ وَبَنِيهِ ﴿بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾. [راجع: ٣٣٨٨]

4691. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे हु़सैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा ने, कहा कि मुझसे मसरूक़ बिन अज्दअ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे उम्मे रूमान (रज़ि.) ने बयान किया, वो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की वालिदा हैं, उन्होंने बयान किया कि मैं और आ़इशा (रज़ि) बैठे हुए थे कि आ़इशा(रज़ि.) को बुख़ार चढ़ गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ग़ालिबन ये इन बातों की वजह से हुआ होगा जिनका चर्चा हो रहा है। ह़ज़रत उम्मे रूमान (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। उसके बाद ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) बैठ गईं और कहा कि मेरी और आप लोगों की मिष़ाल यअ़क़ूब (अ़लैहि.) और उनके बेटों जैसी है और तुम लोग जो कुछ बयान करते हो उस पर अल्लाह ही मदद करे। (राजेअ़ : 3377)

तश्रीह : उम्मे रूमान आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहीं। जब ही तो मसरूक़ ने उनसे सुना जो ताबेई हैं और ये रिवायत स़ह़ीह़ नहीं है कि उम्मे रूमान आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़यात में मर गई थीं और आप उनकी क़ब्र में उतरे थे।

बाब 4 : आयत 'व रावदत्हुल्लती हुव फ़ी बैतिहा' की तफ़्सीर या'नी,

٤- باب قَوْلِهِ : ﴿وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الأَبْوَابَ وَقَالَتْ : هَيْتَ لَكَ﴾وَقَالَ عِكْرِمَةُ : هَيْتَ لَكَ بِالْحَوْرَانِيَّةِ هَلُمَّ، وَقَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ : تَعَالَهْ.

और जिस औरत के घर में वो थे वो अपना मतलब निकालने को उन्हें फुसलाने लगी और दरवाज़े बन्द कर लिये और बोली कि बस आ जा। और इक्रिमा ने कहा, हयता लका ह़वरानी ज़ुबान का लफ़्ज़ है जिसके मा'नी आ जा है। सईद बिन जुबैर ने भी यही कहा है।

ह़वरानी ह़वरान की त़रफ़ मन्सूब है जो मुल्के शाम में एक शहर या एक पहाड़ था।

٤٦٩٢- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ: قَالَتْ هَيْتَ لَكَ، قَالَ: وَإِنَّمَا نَقْرَؤُهَا كَمَا عُلِّمْنَاهَا، مَثْوَاهُ: مَقَامُهُ، وَأَلْفَيَا: وَجَدَا. أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ: أَلْفَيْنَا، وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ ﴿بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ﴾.

4692. मुझसे अह़मद बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे अबू वाइल ने कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ह़यता लका पढ़ा और कहा कि जिस त़रह़ हमें ये लफ़्ज़ सिखाया गया है। इसी त़रह़ हम पढ़ते हैं। मष्वाह या'नी उसका ठिकाना दर्जा। अल्फ़या पाया, उसी से है। अल्फ़वा आबाअहुम और अल्फ़या (दूसरी आयतों में) और इब्ने मसऊ़द से (सूरह वस्साफ़्फ़ात) में बल् अजिब्तु व यस्ख़रूना मन्क़ूल है।

तश्रीह : मशहूर क़िरात बल अ़जब्तु ये सैग़ा ख़ित़ाब है। इस क़िरात के यहाँ ज़िक्र करने की ग़र्ज़ ये है कि इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने जैसे अजिब्तु बिल् फ़त्ह़ा को हयता बिज़् ज़म्मा पढ़ा है। इसी त़रह़ हयता बिल फ़त्ह़ा को हयता बिज़् ज़म्मा भी पढ़ा है। जैसे इब्ने मर्दवैह़ ने सुलैमान तैमी के त़रीक़ से इब्ने मसऊ़द से नक़ल किया। (तरजीह़ क़िरात मरव्वजा ही को है)

٤٦٩٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ قُرَيْشًا لَمَّا أَبْطَؤُوا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالإِسْلاَمِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ اكْفِنِيهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ)) فَأَصَابَتْهُمْ سَنَةٌ حَصَّتْ كُلَّ شَيْءٍ حَتَّى أَكَلُوا الْعِظَامَ حَتَّى جَعَلَ الرَّجُلُ يَنْظُرُ إِلَى السَّمَاءِ فَيَرَى بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا مِثْلَ الدُّخَانِ قَالَ اللهُ : ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ﴾ قَالَ اللهُ: ﴿إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلاً

4693. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुस्लिम ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि क़ुरैश ने जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ईमान लाने में ताख़ीर की तो आपने उनके ह़क़ में बद् दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! उन पर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) के ज़माने का सा क़ह़त नाज़िल फ़र्मा। चुनाँचे ऐसा क़ह़त पड़ा कि कोई चीज़ नहीं मिलती थी और वो हड्डियों के खाने पर मजबूर हो गये थे। लोगों की उस वक़्त ये कैफ़ियत थी कि आसमान की त़रफ़ नज़र उठा के देखते थे तो भूख प्यास की शिद्दत से धुआँ सा नज़र आता था। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, तो आप इंतिज़ार कीजिए उस रोज़ का जब आसमान की त़रफ़ एक नज़र आने वाला धुआँ पैदा हो, और फ़र्माया,

إِنَّكُمْ عَائِدُونَ أَفَيُكْشَفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾ وَقَدْ مَضَى الدُّخَانُ وَمَضَتِ الْبَطْشَةُ. [راجع: ١٠٠٧]

बेशक मैं उस अ़ज़ाब को हटा लूंगा और तुम भी (अपनी पहली ह़ालत पर) लौट आओगे। ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि अ़ज़ाब से यही क़ह़त का अ़ज़ाब मुराद है क्योंकि आख़िरत का अ़ज़ाब काफ़िरों से टलने वाला नहीं है। (राजेअ़ : 1007)

ह़ासिल ये कि दुख़ान और बत़्शा जिनका ज़िक्र सूरह दुख़ान में है गुज़र चुका है।

तश्रीह : इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब के तर्जुमा से यूँ है कि इसमें ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) का ज़िक्र है क़स्तलानी ने कहा इस ह़दीष़ की दूसरी रिवायत में यूँ है कि जब क़ुरैश पर क़ह़त की सख़्ती हुई तो अबू सुफ़यान आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया कहने लगा आप कुंबा परवरी का हुक्म देते हैं और आपकी क़ौम के लोग भूखे मर रहे हैं उनके लिये दुआ फ़र्माइए। आपने दुआ की और क़ुरैश का क़ुसूर मुआ़फ़ कर दिया जैसे ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) ने भाइयों का क़ुसूर मुआ़फ़ कर दिया था। (वह़ीदी)

बाब 5 : आयत 'फलम्मा जाअहुर्रसूलु कालर्जिअ़' की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قوله

﴿فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ اللاَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ، قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاشَا لِلَّهِ﴾ وَحَاشَ وَحَاشَا تَنْزِيهٌ وَاسْتِثْنَاءٌ. حَصْحَصَ : وَضَحَ.

फिर जब क़ासिद उनके पास पहुँचा तो ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) ने कहा कि अपने आक़ा के पास वापस जा और उससे पूछ कि उन औ़रतों का क्या ह़ाल है जिन्होंने अपने हाथ छुरी से ज़ख़्मी कर लिये थे बेशक मेरा रब उन औ़रतों के फ़रेब से ख़ूब वाक़िफ़ है (बादशाह ने) कहा (ऐ औ़रतों!) तुम्हारा क्या वाक़िया है जब तुमने यूसुफ़ (अ़लैहि.) से अपना मत़लब निकालने की ख़्वाहिश की थी। वो बोलीं ह़ाशाअल्लाह! हमने यूसुफ़ में कोई ऐ़ब नहीं देखा। ह़ाश ह़ाशा (अलिफ़ के साथ) उसका मा'नी पाकी बयान करना और इस्तिष़्ना करना, ह़स्ह़स़ा का मा'नी खुल गया।

٤٦٩٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلِيدٍ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْقَاسِمِ، عَنْ بَكْرِ بْنِ مُضَرَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَرْحَمُ اللهُ لُوطًا لَقَدْ كَانَ لَكُمْ يَأْوِي إِلَى رُكْنٍ شَدِيدٍ وَلَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ مَا لَبِثَ يُوسُفُ لأَجَبْتُ الدَّاعِيَ وَنَحْنُ أَحَقُّ مِنْ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لَهُ

4694. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे बक्र बिन मुज़र ने, उनसे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह लूत़ (अ़लैहि.) पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़र्माए कि उन्होंने एक ज़बरदस्त सहारे की पनाह लेने के लिये कहा था और अगर मैं क़ैदख़ाने में इतने दिनों तक रह चुका होता जितने दिन यूसुफ़ (अ़लैहि.) रहे थे तो बुलाने वाले की बात रद्द न करता और हमको तो इब्राहीम (अ़लैहि.) के बनिस्बत शक होना ज़्यादा सज़ावार है, जब अल्लाह पाक ने उनसे फ़र्माया क्या

तुझको यक़ीन नहीं? उन्होंने कहा क्यूँ नहीं यक़ीन तो है पर मैं चाहता हूँ कि और इत्मीनान हो जाए। (राजेअ : 3372)

﴿أَوَ لَمْ تُؤْمِنْ قَالَ : بَلَى وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قَلْبِي﴾)). [راجع: ٣٣٧٢]

बाब 6 : आयत 'हत्ता इजस्तयअसर्रूसुलु' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

यहाँ तक कि जब पैग़म्बर मायूस हो गये कि अफ़सोस हम लोगों की निगाहों में झूठे हुए, आख़िर तक।

٦- باب قَوْلِهِ : ﴿حَتَّى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ﴾

4695. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें ड़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आइशा(रज़ि.) ने बयान किया। ड़र्वा ने उनसे आयत ह़त्ता इज़स्तयअसर्रुसुल के बारे में पूछा था। ड़र्वा ने बयान किया कि मैंने पूछा था (आयत में) कुज़िबू (तख़्फ़ीफ़ के साथ) या कुज़्ज़िबू (तशदीद के साथ) उस पर ह़ज़रत आइशा(रज़ि.) ने कहा कि कुज़्ज़िबू (तशदीद के साथ) इस पर मैंने उनसे कहा कि अंबिया तो यक़ीन के साथ जानते थे कि उनकी क़ौम उन्हें झुठला रही है। फिर ज़न्न से क्या मुराद है, उन्होंने कहा अपनी ज़िन्दगी की क़सम बेशक पैग़म्बरों को उसका यक़ीन था। मैंने कहा कज़िबू तख़्फ़ीफ़े ज़ाल के साथ पढ़ें तो क्या क़बाहत है। उन्होंने कहा मआ़ज़ल्लाह कहीं पैग़म्बर अपने परवरदिगार की निस्बत ऐसा गुमान कर सकते हैं। मैंने कहा अच्छा इस आयत का मतलब क्या है? उन्होंने कहा मतलब ये है कि पैग़म्बरों को जिन लोगों ने माना उनकी तस्दीक़ की जब उन पर एक मुद्दते दराज़ तक आफ़त और मुसीबत आती रही और अल्लाह की मदद आने में देर हुई और पैग़म्बर उनके ईमान लाने से नाउम्मीद हो गये जिन्होंने उनको झुठलाया था और ये गुमान करने लगे कि जो लोग ईमान लाए हैं अब वो भी हमको झूठा समझने लगेंगे, उस वक़्त अल्लाह की मदद आन पहुँची। (राजेअ : 3389)

٤٦٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ لَهُ وَهُوَ يَسْأَلُهَا عَنْ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿حَتَّى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ﴾ قَالَ: قُلْتُ أَكُذِبُوا أَمْ كُذِّبُوا؟ قَالَتْ عَائِشَةُ: كُذِّبُوا، قُلْتُ : فَقَدِ اسْتَيْقَنُوا أَنَّ قَوْمَهُمْ كَذَّبُوهُمْ، فَمَا هُوَ بِالظَّنِّ قَالَتْ : أَجَلْ لَعَمْرِي لَقَدْ اسْتَيْقَنُوا بِذَلِكَ فَقُلْتُ لَهَا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوا، قَالَتْ : مَعَاذَ اللهِ لَمْ تَكُنِ الرُّسُلُ تَظُنُّ ذَلِكَ بِرَبِّهَا قُلْتُ: فَمَا هَذِهِ الآيَةُ قَالَتْ : هُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ الَّذِينَ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَصَدَّقُوهُمْ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْبَلاَءُ وَاسْتَأْخَرَ عَنْهُمُ النَّصْرُ حَتَّى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ مِمَّنْ كَذَّبَهُمْ مِنْ قَوْمِهِمْ وَظَنَّتِ الرُّسُلُ أَنَّ أَتْبَاعَهُمْ قَدْ كَذَّبُوهُمْ جَاءَهُمْ نَصْرُ اللهِ عِنْدَ ذَلِكَ. [راجع: ٣٣٨٩]

4696. हमसे अबुल यमान ह़कम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब बिन अबी ह़म्ज़ा ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझको ड़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से कहा हो सकता है ये कज़िबू

٤٦٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ: فَقُلْتُ: لَعَلَّهَا كُذِبُوا مُخَفَّفَةً قَالَتْ

तख़्फ़ीफ़े ज़ाल के साथ हो तो उन्होंने फ़र्माया, मआ़ज़ल्लाह! फिर वही हदीष़ बयान की जो ऊपर गुज़री। (राजेअ़ : 3389)

مَعَاذَ اللهِ نَحْوَهُ.

[راجع: ٣٣٨٩]

तश्रीह : कज़िबू तख़्फ़ीफ़े ज़ाल के साथ पढ़ने से ग़ालिबन मत़लब ये होगा कि पैग़म्बरों को ये गुमान हुआ कि अल्लाह ने उनसे जो वादे किये थे वो सब झूठ थे। ह़ालाँकि मशहूर क़िरात तख़्फ़ीफ़ के साथ है। लेकिन उसका मत़लब ये है कि काफ़िरों को ये गुमान हुआ कि पैग़म्बरों से जो वादे फ़तह़ व नुस़रत के किये हुए थे वो सब झूठ थे या काफ़िरों को ये गुमान हुआ कि पैग़म्बरों ने जो उनसे वादे किये थे वो सब झूठ थे **व क़द इख़्तारत्तबरी क़िरातुत्तख़्फ़ीफ़ि व क़ाल इन्नमा इख़्तर्तु हाज़ा लिअन्नल्आयत वक़अत अक़बु क़ौलिही तआ़ला फयन्ज़ुरू कैफ़ कान आक़िबतुल्लज़ीन मिन क़ब्लिहिम फकान फ़ी ज़ालिक इशारतुन इल अंय्यासरूसुलु कान मिन ईमानि क़ौलिहिम अल्लज़ी कज़्ज़बूहुम फहलकू** (फ़त्ह़ुल बारी) ख़ुलास़ा इस इबारत का वही है जो ऊपर मज़्कूर है। **व तदब्बरु फ़ीहा या ऊलिल अल्बाबि लअ़ल्लकुम तअ़क़िलून।**

सूरह रअ़द की तफ़्सीर

[١٣] سُورَةُ الرَّعْدِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तश्रीह : ये सूरत मक्की है उसमें 43 आयात और छः रुकूअ़ हैं । आयत **अल्लाहुल्लज़ी रफ़अ़स्समावाति बिग़ैरि अ़मदिन तरौनहा** से आसमान का वजूद ष़ाबित होता है जो लोग आसमान को मह़ज़ बुलन्दी कहते हैं उनका क़ौल बात़िल है।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कबासित़ि कफ़्फ़ैहि ये मुश्रिक की मिष़ाल है जो अल्लाह के सिवा दूसरों की पूजा करता है जैसे प्यासा आदमी पानी की त़रफ़ हाथ बढ़ाए और उसको न ले सके। दूसरे लोगों ने कहा सख़्ख़रा के मा'नी ताबेदार किया मुसख़्ख़र किया। मुतजाविरात एक दूसरे से मिले हुए क़रीब क़रीब अल मषुलातु) मुष़्लतुन की जमा है या'नी जोड़ा और मुशाबेह और दूसरी आयत में है इल्ला मिष़्ला अय्यामिल् लज़ीना ख़लव मगर मुशाबेह दिनों उन लोगों के जो पहले गुज़र गये) बमिक़्दार या'नी अंदाज़े से जोड़ से। मुअ़क़्क़िबात निगाहबान फ़रिश्ते जो एक—दूसरे के बाद बारी बारी आते रहते हैं । उसी से अ़क़ीब का लफ़्ज़ निकला है। अ़रब लोग कहते हैं अ़क़ब्तु फ़ी अष़रिही या'नी में उसके निशाने क़दम पर पीछे पीछे गया। अल मह़ाल अ़ज़ाब कबासित़ि कफ़्फ़यहि इलल् माइ जो दोनों हाथ बढ़ाकर पानी लेना चाहे राबिया रबा यरबू से निकला है या'नी बढ़ने वाला या ऊपर तैरने वाला। अल् मताअ़ जिस चीज़ से तू फ़ायदा उठाए उसको काम में लाए। जुफ़ा अज्फातिल्किद्र से निकला है। या'नी हाँडी ने जोश मारा झाग ऊपर आ गया फिर जब हाँडी ठण्डी होती है तो फैन झाग बेकार सूखकर फ़ना हो जाता है।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ﴾ : مَثَلُ الْمُشْرِكِ الَّذِي عَبَدَ مَعَ اللهِ إِلَهًا غَيْرَهُ. كَمَثَلِ الْعَطْشَانِ الَّذِي يَنْظُرُ إِلَى خَيَالِهِ فِي الْمَاءِ مِنْ بَعِيدٍ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَتَنَاوَلَهُ وَلاَ يَقْدِرُ، وَقَالَ غَيْرُهُ: سَخَّرَ: ذَلَّلَ، ﴿مُتَجَاوِرَاتٌ﴾ مُتَدَانِيَاتٌ ﴿الْمَثُلاَتُ﴾: وَاحِدُهَا مَثُلَةٌ، وَهِيَ الأَشْبَاهُ وَالأَمْثَالُ. وَقَالَ : ﴿إِلاَّ مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا﴾ بِمِقْدَارٍ: بِقَدَرٍ ﴿مُعَقِّبَاتٌ﴾: مَلاَئِكَةٌ حَفَظَةٌ تُعَقِّبُ الأُولَى مِنْهَا الأُخْرَى وَمِنْهُ قِيلَ الْعَقِيبُ يُقَالُ: عَقَّبْتُ فِي أَثَرِهِ. ﴿الْمِحَالُ﴾: الْعُقُوبَةُ. ﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ﴾: لِيَقْبِضَ عَلَى الْمَاءِ. ﴿رَابِيًا﴾: مِنْ رَبَا يَرْبُو. ﴿أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ﴾: مِثْلُهُ الْمَتَاعُ، مَا تَمَتَّعْتَ بِهِ. ﴿جُفَاءً﴾:

أجفَأَتِ الْقِدْرُ: إِذَا غَلَتْ فَعَلاَهَا الزَّبَدُ ثُمَّ تَسْكُنُ فَيَذْهَبُ الزَّبَدُ بِلاَ مَنْفَعَةٍ فَكَذَلِكَ يُمَيِّزُ الْحَقُّ مِنَ الْبَاطِلِ. ﴿الْمِهَادُ﴾ الْفِرَاشُ ﴿يَدْرَؤُونَ﴾: يَدْفَعُونَ دَرَأْتُهُ عَنِّي دَفَعْتُهُ. ﴿سَلاَمٌ عَلَيْكُمْ﴾ : أَيْ يَقُولُونَ : سَلاَمٌ عَلَيْكُمْ. ﴿وَإِلَيْهِ مَتَابِ﴾ تَوْبَتِي. ﴿أَفَلَمْ يَيْأَسْ﴾: لَمْ يَتَبَيَّنْ. ﴿قَارِعَةٌ﴾ : دَاهِيَةٌ. ﴿فَأَمْلَيْتُ﴾ : أَطَلْتُ مِنَ الْمَلِيِّ وَالْمِلاَوَةِ وَمِنْهُ. ﴿مَلِيًّا﴾: وَيُقَالُ لِلْوَاسِعِ الطَّوِيلِ مِنَ الأَرْضِ مَلًى مِنَ الأَرْضِ. ﴿أَشَقُّ﴾ : أَشَدُّ مِنَ الْمَشَقَّةِ. ﴿مُعَقِّبَ﴾: مُغَيِّرٌ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مُتَجَاوِرَاتٌ﴾ : طَيِّبُهَا وَخَبِيثُهَا السِّبَاخُ. ﴿صِنْوَانٌ﴾ : النَّخْلَتَانِ : أَوْ أَكْثَرُ فِي أَصْلٍ وَاحِدٍ. ﴿وَغَيْرُ صِنْوَانٍ﴾ : وَحْدَهَا. ﴿بِمَاءٍ وَاحِدٍ﴾ : كَصَالِحِ بَنِي آدَمَ وَخَبِيثِهِمْ أَبُوهُمْ وَاحِدٌ. ﴿السَّحَابَ الثِّقَالَ﴾ : الَّذِي فِيهِ الْمَاءُ. ﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ﴾ : يَدْعُو الْمَاءَ بِلِسَانِهِ وَيُشِيرُ إِلَيْهِ بِيَدِهِ فَلاَ يَأْتِيهِ أَبَدًا. ﴿سَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا﴾ تَمْلأُ بَطْنَ وَادٍ. ﴿زَبَدًا رَابِيًا﴾: زَبَدُ السَّيْلِ: خَبَثُ الْحَدِيدِ وَالْحِلْيَةِ.

हक़ बातिल से इसी तरह जुदा हो जाता है अल्मिदाह बिछौना। यदरून धकेलते हैं दूर करते हैं ये दरातुहू से निकला है या'नी मैंने उसको दूर किया दफ़ा कर दिया। सलाम अ़लैकुम या'नी फ़रिश्ते मुसलमानों को कहते जाएँगे तुम सलामत रहो। व इलैहि मताब में उसी की दरगाह में तौबा करता हूँ। अ फ़लम यब्अस किया उन्होंने नहीं जाना। क़ारिअ़त आफ़त मुसीबत। फ़अम्लयता मैंने ढीला छोड़ा मुह्लत दी ये लफ़्ज़ मल्ली और मिलावत से निकला है। उसी से निकला है जो जिब्रईल की हदीष़ में है। फ़लबिस्तु मलिय्या (या क़ुर्आन में है) वहजुर्नी मलिय्या और कुशादा लम्बी ज़मीन को मल्ली कहते हैं। अशुक्कु अफ़्अलुल तफ़्ज़ील का सैग़ा है मुशक़्क़त से या'नी बहुत सख़्त। मुअक़्क़ब ला मुअक़्क़ब लिहुक्मिही में या'नी नहीं बदलने वाला और मुजाहिद ने कहा। मुतजाविरात का मा'नी ये है कि कुछ क़ित्अ़े उ़म्दह क़ाबिले ज़राअ़त हैं कुछ ख़राब शुर खारे हैं। स़िन्वान वो खजूर के पेड़ जिनकी जड़ मिली हुई हो (एक ही जड़ पर खड़े हों) ग़ैरा स़िन्वान अलग अलग जड़ पर सब एक ही पानी से उगते हैं (एक ही हवा से एक ही ज़मीन में आदमियों की भी यहो मिष़ाल है कोई अच्छा कोई बुरा हालाँकि सब एक बाप आदम (अ़लैहि.) की औलाद हैं। अस्सिहाबुल ष़िक़ाल वो बादल जिनमें पानी भरा हुआ हो और वो पानी के बोझ से भारी–भरकम हों। कबासिति कफ़्फ़ैहि या'नी उस शख़्स की तरह जो दूर से हाथ फैलाकर पानी को ज़ुबान से बुलाए हाथ से उसकी तरफ़ इशारा करे इस सूरत में पानी कभी उसकी तरफ़ नहीं आएगा। सालत औदियतुन बिकदरिहा या'नी नाले अपने अंदाज़ से बहते हैं। या'नी पानी भरकर ज़ब्दा राबिया से मुराद बहते पानी का फैन झाग ज़बद मिष़्लुहू से लोहे, ज़ेवरात वग़ैरह का फैन झाग मुराद है। लफ़्ज़े मुअक़्क़िबात से मुराद ये है कि रात के फ़रिश्ते अलग और दिन के अलग हैं।

जैसे दूसरी हदीष़ में है कि रात दिन के फ़रिश्ते अ़स्र और सुबह की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। तबरी ने निकाला कि हज़रत उ़ष़्मान ने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा आदमी पर कितने फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। आपने फ़र्माया कि हर आदमी पर दस फ़रिश्ते सुबह को और दस रात को मुतअ़य्यन रहते हैं।

١ - باب قَوْلِهِ : ﴿اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيضُ

बाब 1 : आयत 'अल्लाहु यअलमु मा तहमिलु' की तफ़्सीर या'नी,

अल्लाह को इल्म है उसका जो कुछ किसी मादा के हमल

में होता है और जो कुछ उनके रहम में कमी-बेशी होती रहती है। ग़ीज़ अय नुक़िस कम किया गया।

الْأَرْحَامُ﴾ غِيضَ : نُقِصَ

4697. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि औ़रतों के रहम में क्या कमी बेशी होती रहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि बारिश कब बरसेगी, कोई शख़्स नहीं जानता कि उसकी मौत कहाँ होगी और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी। (राजेअ़ : 1039)

٤٦٩٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ، لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ. وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)). [راجع: ١٠٣٩]

तश्रीह : इस आयत से षा़बित हुआ कि इल्मे ग़ैब ख़ास़ अल्लाह के लिये है जो किसी ग़ैर के लिये इल्मे ग़ैब का अक़ीदा रखता है वो झूठा है। पैग़म्बरों को भी इल्मे ग़ैब ह़ासिल नहीं उनको जो कुछ अल्लाह चाहता है वह्य के ज़रिये मा'लूम करा देता है। इसे ग़ैब दानी नहीं कहा जा सकता। ह़मल की कमी बेशी का मत़लब ये है कि पेट में एक बच्चा है या दो बच्चे या तीन या चार।

सूरह इब्राहीम की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

[١٤] سُورَةُ إِبْرَا...َ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ (بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ).

तश्रीह : सूरह इब्राहीम मक्की है जिसमें बावन (52) आयात सात (7) रुकूअ़ और 831 कलिमात और 3434 हुरूफ़ हैं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) दुनिया के अ़ज़ीमतरीन तारीख़ी इंसान हैं जिनसे दो बड़े ख़ानदान ज़ुहूर पज़ीर हुए जिनको बनी इस्राईल और बनी इस्माईल से याद किया जाता है। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) को आदमे षा़लिष़ भी कहा गया है। यहूद और नस़ारा और मुसलमान तीनों इनको अपना जद्दे अमजद (पूर्वज) तस़व्वुर करते हैं।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ह़ाद का मा'नी बुलाने वाला, हिदायत करने वाला (नबी व रसूल मुराद हैं) और मुजाहिद ने कहा स़दीद का मा'नी पीप और लहू और सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा उज़्कुरू निअ़मतल्लाहि अ़लैकुम का मा'नी ये है कि अल्लाह की जो नेअ़मतें तुम्हारे पास हैं उनको याद करो और जो जो अगले वाक़ियात उसकी क़ुदरत के हुए हैं और मुजाहिद ने कहा मिन कुल्लि मा सअल्तुमूहु का मा'नी ये है कि जिन जिन चीज़ों की तुमने रग़बत की यब्ग़ूनहा इ़वजा इसमें कजी पैदा करने की तलाश करते रहते हैं वइज़ तअज़्ज़ना

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هَادٍ : دَاعٍ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ صَدِيدٌ : قَيْحٌ وَدَمٌ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ أَيَادِيَ اللهِ عِنْدَكُمْ وَأَيَّامَهُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ رَغِبْتُمْ إِلَيْهِ فِيهِ، يَبْغُونَهَا عِوَجًا : يَلْتَمِسُونَ لَهَا عِوَجًا. وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ : أَعْلَمَكُمْ آذَنَكُمْ. رَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي

أَفْوَاهِهِمْ هَذَا مَثَلٌ كَفُّوا عَمَّا أُمِرُوا بِهِ. مَقَامِي حَيْثُ يُقِيمُهُ اللهُ بَيْنَ يَدَيْهِ. مِنْ وَرَائِهِ: قُدَّامِهِ. لَكُمْ تَبَعًا وَاحِدُهَا تَابِعٌ مِثْلُ غَيَبٍ وَغَائِبٍ. بِمُصْرِخِكُمْ: اسْتَصْرَخَنِي اسْتَغَاثَنِي يَسْتَصْرِخُهُ مِنَ الصُّرَاخِ. وَلاَ خِلاَلَ مَصْدَرُ خَالَلْتُهُ خِلاَلاً وَيَجُوزُ أَيْضًا جَمْعُ خُلَّةٍ وَخِلاَلٍ. اجْتُثَّتْ: اسْتُؤْصِلَتْ.

रब्बुकुम जब तुम्हारे मालिक ने तुमको ख़बरदार कर दिया जतला दिया, रद्दू अयदियहुम फ़ी अफ़्वाहिहिम ये अरब की ज़ुबान में एक मषल है। इसका मतलब ये है कि अल्लाह का जो हुक्म हुआ था उससे बाज़ रहे बजा न लाए। मक़ामी वो जगह जहाँ अल्लाह पाक उसको अपने सामने खड़ा करेगा। मिंव् वराइही सामने से लकुम तबआ तबअन ताबिइन की जमा है जैसे ग़ैबा ग़ाइब की। बिमुस्रिखिकुम अरब लोग कहते हैं इस्तस्रख़नी या'नी उसने मेरी फ़रियाद सुन ली यस्तस्रिख़हू उसकी फ़रियाद सुनता है दोनों स्रिराख़ से निकले हैं (स्रिराख़ का मा'नी फ़रियाद) व ला खिलाल खालल्तुहू खिलानन का मस्रदर है और खुल्लतुन की जमा भी हो सकता है (या'नी उस दिन दोस्ती न होगी या दोस्तियाँ न होंगी) इज्तुष्षत जड़ से उखाड़ लिया गया।

शुरू में लफ़्जे हाद ये सूरह रअद की इस आयत में है, **इन्नमा अन्त मुन्ज़िरून व लिकुल्लि कौमिन हाद** इसलिये इस तफ़्सीर को सूरह रअद की तफ़्सीर में ज़िक्र करना था शायद नासिख़ीन की ग़लती है कि इस इबारत को इस सूरत के ज़ेल में लिख दिया गया, सह्व व निस्यान हर इंसान से मुम्किन है। ग़फ़रल्लाहु लहुम अज्मईन।

बाब 1 : आयत 'कशजरतिन तय्यिबतिन अस्लुहा षाबितुन' की तफ़्सीर

١- باب قَوْلِهِ : ﴿كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ﴾

या'नी क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने कैसी अच्छी मिषाल कलिमा तय्यिबा की बयान (फ़र्माई कि) वो एक पाकीज़ा दरख़्त के मुशाबेह है जिसकी जड़ (ख़ूब) मज़बूत है और उसकी शाख़ें (ख़ूब) ऊँचाई में जा रही हैं। वो अपना फल हर फ़स्रल में (अपने परवरदिगार के हुक्म से) देता रहता है।

٤٦٩٨- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ أَبِي أُسَامَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَخْبِرُونِي بِشَجَرَةٍ تُشْبِهُ أَوْ كَالرَّجُلِ الْمُسْلِمِ لاَ يَتَحَاتُّ وَرَقُهَا وَلاَ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ)) قَالَ ابْنُ عُمَرَ : فَوَقَعَ فِي نَفْسِي أَنَّهَا النَّخْلَةُ وَرَأَيْتُ أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ لاَ يَتَكَلَّمَانِ فَكَرِهْتُ أَنْ أَتَكَلَّمَ فَلَمَّا لَمْ يَقُولُوا شَيْئًا

4698. मुझसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, उनसे उबैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयानन किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे, आपने पूछा अच्छा मुझको बतलाओ तो वो कौनसा पेड़ है जो मुसलमान की तरह है जिसके पत्ते नहीं गिरते, हर वक़्त मेवा दे जाता है। इब्ने उमर (रज़ि.) कहते हैं मेरे दिल में आया वो खजूर का पेड़ है मगर मैंने देखा कि हज़रत अबूबक्र और उमर (रज़ि.) बैठे हुए हैं उन्होंने जवाब नहीं दिया तो मुझको उन बुज़ुर्गों के सामने कलाम करना अच्छा मा'लूम नहीं हुआ। जब उन लोगों ने कुछ जवाब नहीं दिया तो आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद ही फ़र्माया वो खजूर का पेड़ है। जब हम

उस मजलिस से खड़े हुए तो मैंने अपने वालिद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से अ़र्ज़ किया। बाबा! अल्लाह की क़सम! मेरे दिल में आया था कि मैं कह दूँ वो खजूर का पेड़ है। उन्होंने कहा फिर तू ने कह क्यूँ न दिया। मैंने कहा कि आप लोगों ने कोई बात नहीं की मैंने आगे बढ़कर बात करना मुनासिब न जाना। उन्होंने कहा अगर तू उस वक़्त कह देता तो मुझको इतने इतने (लाल लाल ऊँट का) माल मिलने से भी ज़्यादा ख़ुशी होती। (राजेअ़ : 61)

قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هِيَ النَّخْلَةُ)) فَلَمَّا قُمْنَا قُلْتُ لِعُمَرَ : يَا أَبَتَاهُ وَاللهِ لَقَدْ كَانَ وَقَعَ فِي نَفْسِي أَنَّهَا النَّخْلَةُ. فَقَالَ: مَا مَنَعَكَ أَنْ تَكَلَّمَ؟ قَالَ: لَمْ أَرَكُمْ تَكَلَّمُونَ فَكَرِهْتُ أَنْ أَتَكَلَّمَ أَوْ أَقُولَ شَيْئًا. قَالَ عُمَرُ: لأَنْ تَكُونَ قُلْتَهَا أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ كَذَا وَكَذَا. [راجع: ٦١]

तशरीह़ : आँह़ज़रत ने उस पेड़ की तीन सिफ़तें इशारों में बयान फ़र्माईं जो ये थीं कि उसका मेवा कभी ख़त्म नहीं होता, उसका साया कभी नहीं मिटता, उसका फ़ायदा किसी भी ह़ालत में मअ़दूम नहीं होता। इस ह़दीष़ के इस बाब मे लाने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) की ये ग़र्ज़ है कि इस आयत में शजर-ए-तय्यिबा से खजूर का पेड़ मुराद है। नापाक पेड़ से उंदराइन का पेड़ मुराद है। नापाक का मत़लब ये है कि वो कड़वा कसैला है। नापाक के मा'नी यहाँ गंदा नजिस नहीं है। वैसे उंदराइन का फल बहुत से रोगों के लिये इक्सीर है, **हुवल्लज़ी ख़लक़ लकुम मा फ़िल् अर्ज़ि जमीअ़ा** (अल् बक़र: 29)

बाब 2 : आयत 'युष़ब्बितुल्लाहुल्लज़ीन आमनू' की तफ़्सीर या'नी, अल्लाह ईमानवालों को उसकी पक्की बात की बरकत से मज़बूत़ रखता है। दुनिया में भी और आख़िरत में भी

٢- باب قوله ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ﴾

आख़िरत से मुराद क़ब्र है जो आख़िरत की पहली मंज़िल है।

469. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़ल्क़मा बिन मुर्ष़द ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मैंने सअ़द बिन उ़बैदह से सुना और उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान से जब क़ब्र में सवाल होगा तो वो गवाही देगा कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये कि मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं। अल्लाह तआ़ला के इर्शाद .. अल्लाह ईमानवालों को उस पक्की बात (की बरकत) से मज़बूत़ रखता है, दुनयवी ज़िन्दगी में (भी) और आख़िरत में (भी...) का यही मत़लब है। (राजेअ़ : 1369)

٤٦٩٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْمُسْلِمُ إِذَا سُئِلَ فِي الْقَبْرِ يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ)) فَذَلِكَ قَوْلُهُ: ﴿يُثَبِّتُ اللهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الآخِرَةِ﴾. [راجع: ١٣٦٩]

या'नी अल्लाह ईमानदारों को पक्की बात या'नी तौह़ीद और रिसालत की शहादत पर दुनिया और आख़िरत दोनों जगह मज़बूत़ रखेगा तो ये आयत क़ब्र के सवाल और जवाब के बारे में नाज़िल हुई है। या अल्लाह! तू मुझ नाचीज़ को और मेरे तमाम हमदर्दाने किराम को क़ब्र के सवालात मे ष़ाबितक़दमी अ़ता फ़र्माइयो। उम्मीद है कि इस जगह का मुत़ालआ़ करने वाले ज़रूर मुझ गुनाहगार की नजाते उख़्रवी व क़ब्र की ष़ाबितक़दमी के लिये दुआ़ करेंगे। सनद में मज़्कूर ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब अबू अ़म्मारा अंसारी ह़ारष़ी हैं। बाद मे कूफ़ा में आ बसे थे। 24 हिजरी में उन्होंने रै नामी मुक़ाम को फ़तह़ किया।

जंगे जमल वग़ैरह में हज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ रहे। हज़रत मुस़अब बिन ज़ुबैर के ज़माना में कूफ़ा में इंतिक़ाल फ़र्माया। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन

बाब 3 : आयत 'अलम तरा इलल्लज़ीन बद्दलू निअ़मतल्लाहि' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قوله

आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मत के बदले कुफ़्र किया। अलम तरा का मा'नी अलम तअ़लम या'नी क्या तूने नहीं जाना। जैसे अलम तरा क़ैफ़ा, अलम तरा इलल्लज़ीन ख़रजू में है। अल बवार, अय अल्हलाक। बवार का मा'नी हलाकत है जो बारा यबूर का मस़दर है। क़ौमम्बूरा के मा'नी हलाक होने वाली क़ौम के हैं।

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللهِ كُفْرًا﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ كَقَوْلِهِ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا﴾ ﴿الْبَوَارُ﴾: الْهَلاَكُ بَارَ يَبُورُ بَوْرًا. ﴿قَوْمًا بُورًا﴾: هَالِكِينَ.

4700. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह ने और उन्होंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना कि आयत अलम तरा इलल्लज़ीन बद्दलू निअ़मतल्लाहि कुफ़्रा में कुफ़्फ़ार से अहले मक्का मुराद हैं। (राजेअ़ : 3977)

٤٧٠٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ ﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللهِ كُفْرًا﴾ قَالَ: هُمْ كُفَّارُ أَهْلِ مَكَّةَ.
[راجع: ٣٩٧٧]

जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मत इस्लाम की क़द्र न की और दौलते ईमान से महरूम रह गये और अपनी क़ौम को हलाकत में डाल दिया। बद्र में तबाह हुए। अगर इस्लाम क़ुबूल कर लेते तो ये नौबत न आती सनद में मज़्कूर हज़रत अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र के बेटे इब्नुल मदीनी के नाम से मशहूर हैं। ह़ाफ़िज़े ह़दीष़ हैं। उनके उस्ताद इब्नुल मह्दी ने फ़र्माया कि इब्नुल मदीनी अह़ादीष़े नबवी को सबसे ज़्यादा जानते और पहचानते हैं। इमाम नसाई (रह़) ने फ़र्माया कि उनकी पैदाइश ही इस ख़िदमत के लिये हुई थी। ज़ीक़अ़दा 234 हिजरी में बउ़म्र 73 साल इंतिक़ाल फ़र्माया। रह़िमहुल्लाहु तआ़ला। मज़ीद तफ़्स़ील आइन्दा स़फ़्ह़ात पर मुलाह़िज़ा हो।

सूरह अल हिज्र की तफ़्सीर

[١٥] سُورَةُ الْحِجْرِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

بسم الله الرحمن الرحيم

मुजाहिद ने कहा स़िरात़न अ़ला मुस्तक़ीम का मा'नी सच्चा रास्ता जो अल्लाह तक पहुँचता है। अल्लाह की त़रफ़ जाता है लबि इमामिम्मुबीन या'नी खुले रास्ते पर और ह़ज़रात इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा लअ़म्रूक का मा'नी या'नी तेरी ज़िन्दगी की क़सम। क़ौमुम मुंकिरून लूत़ ने उनको अजनबी परदेसी समझा। दूसरे लोगों ने कहा किताब मा'लूम का मा'नी मुअ़य्यन मीआ़द। लवमा तातीना क्यूँ हमारे पास नहीं लाता। शीयअ़ उम्मतें और कभी दोस्तों को भी शीयअ़ कहते हैं और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास ने कहा युहरऊन का मा'नी दौड़ते जल्दी

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ الْحَقُّ يَرْجِعُ إِلَى اللهِ وَعَلَيْهِ طَرِيقُهُ. لَبِإِمَامٍ مُبِينٍ عَلَى الطَّرِيقِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : لَعَمْرُكَ: لَعَيْشُكَ، قَوْمٌ مُنْكَرُونَ أَنْكَرَهُمْ لُوطٌ. وَقَالَ غَيْرُهُ: كِتَابٌ مَعْلُومٌ : أَجَلٌ. لَوْ مَا تَأْتِينَا: هَلاَّ تَأْتِينَا. شِيَعٌ : أُمَمٌ. وَلِلأَوْلِيَاءِ أَيْضًا شِيَعٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : يُهْرَعُونَ:

करते। लिल् मुतवस्सिमीन देखने वालों के लिये। सुक्किरत ढाँकी गईं। बुरूजन बुरूज या'नी सूरज चाँद की मंज़िलें। लवाक़िह़ा मलाक़िह़ के मा'नी में है जो मुल्ह़क़ति की जमा है या'नी ह़ामिला करने वाली। ह़माअ ह़मात की जमा है बदबूदार कीचड़ मस्नून क़ालिब में ढाली गई। ला तौजल मत डर। दाबिर उख़रा (दुम) लबि इमामिम्मुबीन इमाम वो शख़्स जिसकी तू पैरवी करे उससे राह पाए। अस्सयह़तु हलाकत के मा'नी में है।

مُسْرِعِينَ. لِلْمُتَوَسِّمِينَ: لِلنَّاظِرِينَ. سُكِّرَتْ: غُشِّيَتْ. بُرُوجًا: مَنَازِلَ لِلشَّمْسِ وَالْقَمَرِ. لَوَاقِحَ : مَلاَقِحَ مُلْقِحَةً. حَمَإٍ : جَمَاعَةُ حَمْأَةٍ وَهُوَ الطِّينُ الْمُتَغَيِّرُ. وَالْمَسْنُونُ : الْمَصْبُوبُ. تَوْجَلْ: تَخَفْ. دَابِرَ : آخِرَ. لَبِإِمَامٍ مُبِينٍ : الإِمَامُ كُلُّ مَا ائْتَمَمْتَ وَاهْتَدَيْتَ بِهِ. الصَّيْحَةُ : الْهَلَكَةُ.

तश्रीह: लफ़्ज़ युहरऊन सूरह हिज्र में नहीं है बल्कि ये लफ़्ज़ सूरह हूद में है **व जाअहू क़ौमहू युहरऊन इलैहि** उसको इब्ने अबी ह़ातिम ने वस्ल किया है। यहाँ ग़ालिबन नासिख़ीन के सह्व से दर्ज कर दिया गया है।

सूरे हिज्र बिल इत्तिफ़ाक़ मक्की है जिसमें निन्नानवे आयात और छः रुकूअ हैं। हिज्र नाम की एक बस्ती मदीनतुल मुनव्वरा और शाम के दरम्यान वाक़ेअ थी। इस सूरह में उस बस्ती का ज़िक्र है इसलिये ये उस नाम से मौसूम हुई।

बाब 1 : आयत 'इल्ला मनिस्तर्क़स्सम्अ' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قوله ﴿إِلاَّ مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُبِينٌ﴾

हाँ मगर कोई बात चोरी छुपे सुन कर भागे तो उसके पीछे एक जलता हुआ अंगारा लग जाता है।

4701. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया जब अल्लाह तआ़ला आसमान में कोई फ़ैसला फ़र्माता है तो मलाइका आजिज़ी से अपने पर मारने लगते हैं। जैसा कि अल्लाह तआ़ला के इर्शाद में है कि जैसे किसी साफ़ चिकने पत्थर पर जंजीर के (मारने से आवाज़ पैदा होती है) और अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि सुफ़यान बिन उ़ययना के सिवा और रावियों ने स़फ़्वान के बाद यन्फ़ुज़ुहुम ज़ालिक (जिससे उन पर दहशत त़ारी होती है) के अल्फ़ाज़ कहे हैं। फिर अल्लाह पाक अपना हुक्म फ़रिश्तों तक पहुँचा देता है, जब उनके दिलों पर से डर जाता रहता है तो दूसरे दूर वाले फ़रिश्ते नज़दीक वाले फ़रिश्तों से पूछते हैं परवरदिगार ने क्या हुक्म स़ादिर फ़र्माया। नज़दीक वाले फ़रिश्ते कहते हैं बजा इर्शाद फ़र्माया और वो ऊँचा है बड़ा। फ़रिश्तों की ये बातें चोरी

٤٧٠١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِذَا قَضَى اللهُ الأَمْرَ فِي السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلاَئِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ كَالسِّلْسِلَةِ عَلَى صَفْوَانٍ)) قَالَ عَلِيٌّ: وَقَالَ غَيْرُهُ : صَفْوَانٍ يَنْفُذُهُمْ ذَلِكَ فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا : مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا : لِلَّذِي قَالَ الْحَقَّ : وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ، فَيَسْمَعُهَا مُسْتَرِقُوا السَّمْعِ: وَمُسْتَرِقُو السَّمْعِ هَكَذَا وَاحِدٌ فَوْقَ آخَرَ وَوَصَفَ سُفْيَانُ بِيَدِهِ وَفَرَّجَ بَيْنَ أَصَابِعِ يَدِهِ الْيُمْنَى نَصَبَهَا بَعْضَهَا فَوْقَ

بعض فربما أدرك الشهاب المستمع قبل أن يرمي بها إلى صاحبه، فيحرقه وربما لم يدركه حتى يرمي بها إلى الذي يليه إلى الذي هو أسفل منه حتى يلقوها إلى الأرض وربما قال سفيان : حتى تنتهي إلى الأرض فتلقى على فم الساحر فيكذب معها مائة كذبة فيصدق فيقولون: ألم يخبرنا يوم كذا وكذا، يكون كذا وكذا فوجدناه حقا للكلمة التي سمعت من السماء.

से बात उड़ाने वाले शैतान पा लेते हैं। ये बात उड़ाने वाले शैतान ऊपर तले रहते हैं। (एक पर एक) सुफ़यान ने अपने दाएँ हाथ की उँगलियाँ खोलकर एक पर एक करके बतलाया कि इस तरह शैतान ऊपर तले रहकर वहाँ जाते हैं। फिर कभी ऐसा होता है। फ़रिश्ते ख़बर पाकर आग का शोला फेंकते हैं वो बात सुनने वाले को इससे पहले जला डालता है कि वो अपने पीछे वाले को वो बात पहुँचा दे। कभी ऐसा होता है कि वो शोला उस तक नहीं पहुँचता और वो अपने नीचे वाले शैतान को वो बात पहुँचा देता है, वो उससे नीचे वाले को इस तरह वो बात ज़मीन तक पहुँचा देते हैं। यहाँ तक कि ज़मीन तक आ पहुँचती है (कभी सुफ़यान ने यूँ कहा) फिर वो बात नजूमी के मुँह पर डाली जाती है। वो एक बात मे सौ बातें झूठ अपनी तरफ़ से मिलकर लोगों से बयान करता है। कोई कोई बात उसकी सच निकलती है तो लोग कहने लगते हैं देखो इस नजूमी ने फ़लाँ दिन हमको ये ख़बर दी थी कि आइन्दा ऐसा ऐसा होगा और वैसा ही हुआ। इसकी बात सच निकली। ये वो बात होती है जो आसमान से चुराई गई थी।

तश्रीह : फ़रिश्तों के पर मारने का मतलब ये है कि अपनी इताअत और ताबेदारी ज़ाहिर करते हैं डर जाते हैं। ज़ंजीर जैसी आवाज़ के बारे में इब्ने मर्दवैह की रिवायत में हज़रत अनस (रज़ि.) से इसकी सराहत है कि जब अल्लाह पाक वह्य भेजने के लिये कलाम करता है तो आसमान वाले फ़रिश्ते ऐसी आवाज़ सुनते हैं जैसे ज़ंजीर पत्थर पर चले। जब फ़रिश्तों के दिलों से डर हट जाता है तो आपस में इस इर्शाद का तज़्किरा करते हैं। तबरानी की रिवायत में यूँ है जब अल्लाह वह्य भेजने के लिये कलाम करता है तो आसमान लरज़ जाता है और आसमान वाले उसका कलाम सुनते ही बेहोश हो जाते हैं और सज्दे में गिर पड़ते हैं। सबसे पहले जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) सर उठाते हैं। परवरदिगार जो चाहता है वो उनसे इर्शाद फ़र्माता है। वो हक़ तआला का कलाम सुनकर अपने मुक़ाम पर चलते हैं। जहाँ जाते हैं फ़रिश्ते उनसे पूछते हैं हक़ तआला ने क्या फ़र्माया वो कहते हैं कि **अल्हक़्क़ु व हुवल्अलिय्युल्कबीर** (सबा : 23) इन हदीषों से पिछले मुतकल्लिमीन के तमाम ख़्यालाते बातिला रद्द हो जाते हैं कि अल्लाह का कलाम क़दीम है और वो नफ़्स है और उसके कलाम में आवाज़ नहीं है। मा'लूम नहीं ये ढोंग उन लोगों ने कहाँ से निकाला है। शरीअत से तो साफ़ षाबित है कि अल्लाह पाक जब चाहता है कलाम करता है उसकी आवाज़ आसमान वाले फ़रिश्ते सुनते हैं और उसकी अज़्मत से लरज़कर सज्दे में गिर जाते हैं। सनद में हज़रत अली बिन अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र हाफ़िज़ुल हदीष हैं। उनके उस्ताद इब्नुल मह्दी ने फ़र्माया कि इब्नुल मदीनी रसूले करीम (ﷺ) की हदीष को सबसे ज़्यादा जानते हैं। इमाम नसई ने फ़र्माया कि इब्नुल मह्दी की पैदाइश ही इस ख़िदमत के लिये हुई थी। माह ज़ीक़अदा 234 हिजरी बउम्र 73 साल इंतिक़ाल फ़र्माया। इसी तरह दूसरे बुज़ुर्ग हज़रत सुफ़यान बिन उयय्ना हुज्जत फ़िल् हदीष, ज़ाहिद मुतवर्रेअ थे। 107 हिजरी में कूफ़ा में उनकी विलादत हुई 198 हिजरी में मक्का में उनका इंतिक़ाल हुआ। रहिमहुमुल्लाह अज्मईन।

•••• - حدثنا علي بن عبد الله، حدثنا

हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे

सुफ़यान ने, कहा हमसे अम्र बिन दीनार ने, उन्होंने इक्रिमा से बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि) से यही ह़दीष़ बयान की। उसमे यूँ है कि जब अल्लाह पाक कोई हुक्म देता है और साहिर के बाद इस रिवायत में काहिन का लफ़्ज़ ज़्यादा किया। अ़ली ने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया कि अ़म्र ने कहा मैंने इक्रिमा से सुना, उन्होंने कहा हमसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया जब अल्लाह पाक कोई हुक्म देता है और इस रिवायत मे अ़ल फ़मिस्साहिर का लफ़्ज़ है। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने कहा मैंने सुफ़यान बिन उ़ययना से पूछा कि तुमने अ़म्र बिन दीनार से ख़ुद सुना, वो कहते थे मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा हाँ। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने कहा मैंने सुफ़यान बिन उ़ययना से कहा। एक आदमी (नाम नामा'लूम) ने तो तुमसे यूँ रिवायत की तुमने अ़म्र से, उन्होंने इक्रिमा से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने इस ह़दीष़ को मर्फ़ूअ़ किया और कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ुज़्ज़िअ पढ़ा। सुफ़यान ने कहा मैंने अ़म्र को इस त़रह़ पढ़ते सुना अब मैं नहीं जानता उन्होंने इक्रिमा से सुना या नहीं सुना। सुफ़यान ने कहा हमारी भी क़िरात यही है। (दीगर मक़ाम : 4700, 7481)

سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ إِذَا قَضَى اللهُ الأَمْرَ وَزَادَ وَالْكَاهِنِ، وَحَدَّثَنَا سُفْيَانُ فَقَالَ: قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: إِذَا قَضَى اللهُ الأَمْرَ وَقَالَ عَلَى: فَمِ السَّاحِرِ قُلْتُ لِسُفْيَانَ أَأَنْتَ سَمِعْتَ عَمْرًوا قَالَ سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: نَعَمْ. قُلْتُ لِسُفْيَانَ: إِنَّ إِنْسَانًا رَوَى عَنْكَ عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَيَرْفَعُهُ أَنَّهُ قَرَأَ فُرِّغَ قَالَ سُفْيَانُ: هَكَذَا. قَرَأَ عَمْرٌو فَلاَ أَدْرِي سَمِعَهُ هَكَذَا أَمْ لاَ. قَالَ سُفْيَانُ: وَهِيَ قِرَاءَتُنَا.

[طرفاه في : ٤٨٠٠، ٧٤٨١].

बाब 2 : आयत 'व लक़द कज़्ज़ब अस्ह़ाबुल्हिज्रिल्मुर्सलीन' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قَوْلِهِ : وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ﴾

और यक़ीनन हिज्र वालों ने भी हमारे रसूलों को झुठलाया।

4702. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक (रह़) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अस्ह़ाब हिज्र के बारे में फ़र्माया था कि उस क़ौम की बस्ती से जब गुज़रना ही पड़ गया है तो रोते हुए गुज़रो और अगर रोते हुए नहीं गुज़र सकते तो फिर उसमें न जाओ। कहीं तुम पर भी वही अ़ज़ाब न आए जो उन पर आया था। (राजेअ़ : 433)

٤٧٠٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لأَصْحَابِ الْحِجْرِ: ((لاَ تَدْخُلُوا عَلَى هَؤُلاَءِ الْقَوْمِ إِلاَّ أَنْ تَكُونُوا بَاكِينَ فَإِنْ لَمْ تَكُونُوا بَاكِينَ فَلاَ تَدْخُلُوا عَلَيْهِمْ أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَهُمْ)).

[راجع: ٤٣٣]

बाब 3 : आयत 'व लक़द आतैनाक सब्अ़म्मिनल्मष़ानी' की तफ़्सीर या'नी,

और तह़क़ीक़ मैंने आपको (वो) सात (आयतें) दी हैं (जो) बार बार (पढ़ी जाती हैं) और वो क़ुर्आने अ़ज़ीम है।

٣- باب قَوْلِهِ :
﴿وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ﴾

4703. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम ने और उनसे अबू सईद बिन मुअ़ल्ला (रज़ि) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे पास से गुज़रे। मैं उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलाया। मैं नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। आपने पूछा कि फ़ौरन ही क्यों न आए? अ़र्ज़ किया कि नमाज़ पढ़ रहा था। इस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या अल्लाह ने तुम लोगों को हुक्म नहीं दिया है कि ऐ ईमानवालों! जब अल्लाह और उसके रसूल तुम्हें बुलाएँ तो लब्बैक कहो, फिर आपने फ़र्माया क्यूँ न आज मैं तुम्हें मस्जिद से निकलने से पहले क़ुर्आन की सबसे अ़ज़ीम सूरत बताऊँ। फिर आप (बताने से पहले) मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले जाने के लिये उठे तो मैंने बात याद दिलाई। आपने फ़र्माया कि, सूरत अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन यही सब्अ़े मष़ानी है और यही क़ुर्आने अ़ज़ीम है जो मुझे दिया गया है। (राजेअ़ : 4474)

٤٧٠٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى، قَالَ: مَرَّ بِي النَّبِيُّ وَأَنَا أُصَلِّي فَدَعَانِي فَلَمْ آتِهِ حَتَّى صَلَّيْتُ ثُمَّ أَتَيْتُ فَقَالَ: ((مَا مَنَعَكَ أَنْ تَأْتِيَ؟)) فَقُلْتُ كُنْتُ أُصَلِّي فَقَالَ: ((أَلَمْ يَقُلِ اللهُ تَعَالَى ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ﴾)) ثُمَّ قَالَ: ((أَلاَ أُعَلِّمُكَ أَعْظَمَ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ أَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ؟)) فَذَهَبَ النَّبِيُّ ﷺ لِيَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَذَكَّرْتُهُ فَقَالَ : ((الْحَمْدُ للهِ رب الْعَالَمِينَ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ)). [راجع: ٤٤٧٤]

ह़ज़रत अबू सईद बिन मुअ़ल्ला ये अबू सईद ह़ारिष़ बिन मुअ़ल्ला अंस़ारी हैं। 64 हिजरी में बउ़म्र 64 साल वफ़ात पाई। (रज़ि.)

4704. हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्मुल क़ुर्आन (या'नी सूरह फ़ातिह़ा) ही सब्अ़े मष़ानी और क़ुर्आने अ़ज़ीम है।

٤٧٠٤- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُمُّ الْقُرْآنِ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ)).

तश्रीह : सूरह फ़ातिह़ा की सात आयात हर फ़र्ज़ नमाज़ में बार बार पढ़ी जाती हैं। जिनका पढ़ना हर इमाम और मुक़्तदी के लिये ज़रूरी है जिसके पढ़े बग़ैर नमाज़ नहीं होती। इसीलिये इस सूरत को सब्अ़े मष़ानी और क़ुर्आने अ़ज़ीम कहा गया है। जो लोग इमाम के पीछे सूरह फ़ातिह़ा पढ़नी नाजाइज़ कहते हैं उनका क़ौल ग़लत़ है।

बाब 4 : आयत 'अल्लज़ीन जअलुल्क़ुर्आन इज़ीन' की तफ़्सीर या'नी,

٤- باب قَوْلِهِ :

جिन्होंने क़ुर्आन के टुकड़े टुकड़े कर रखे हैं। अल्मुक़्तसिमीन से वो काफ़िर मुराद हैं जिन्होंने रात को जाकर क़सम खाई थी कि स़ालेह़ पैग़म्बर की ऊँटनी को मार डालेंगे। उसी से ला उक़्सिमु निकला है कि मैं क़सम खाता हूँ। कुछ ने इसे लउक़्सिमु पढ़ा है (लाम ताकीद से) उसी से है, वक़ा समहमा या'नी इब्लीस ने आदम व हव्वा (अलैहि.) के सामने क़सम खाई लेकिन आदम व हव्वा ने क़सम नहीं खाई थी। मुजाहिद ने कहा कि तक़ासिमू बिल्लाहि लिन लनबयतन्नहू तक़ासमू मे तक़ासिमू का मा'नी ये है कि स़ालेह़ पैग़म्बर को रात को जाकर मार डालने की उन्होंने क़सम खाई थी।

﴿الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ﴾ ﴿الْمُقْتَسِمِينَ﴾ الَّذِينَ حَلَفُوا. وَمِنْهُ لاَ أُقْسِمُ أَيْ أُقْسِمُ وَتُقْرَأُ : لأُقْسِمُ، قَاسَمَهُمَا حَلَفَ لَهُمَا وَلَمْ يَحْلِفَا لَهُ وَقَالَ مُجَاهِدٌ تَقَاسَمُوا : تَحَالَفُوا

4705. मुझसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हैशम ने बयान किया, उन्हें अबू बिश्र ने ख़बर दी, उन्हे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया आयत, जिन्होंने क़ुर्आन के टुकड़े कर रखे हैं के बारे में कहा कि इससे मुराद अहले किताब हैं कि उन्होंने क़ुर्आन के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

٤٧٠٥- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: ﴿الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ﴾ قَالَ: هُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ، جَزَّؤُوهُ أَجْزَاءً فَآمَنُوا بِبَعْضِهِ وَكَفَرُوا بِبَعْضِهِ.

जो तौरात के मुवाफ़िक़ था उसे माना और जो ख़िलाफ़ था उसे न माना।

4706. मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू ज़िब्यान हुसैन बिन जुन्दुब ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत कमा अंज़ल्ना अ़लल् मुक़्तसिमीन में से यहूद व नस़ारा मुराद हैं कुछ क़ुर्आन उन्होंने माना कुछ न माना।

٤٧٠٦- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ﴿كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ﴾ قَالَ: آمَنُوا بِبَعْضٍ وَكَفَرُوا بِبَعْضٍ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى.

तश्रीह: ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने लफ़्ज़े मुक़्तसिमीन को क़सम से रखा है। कुछ ने कहा ये क़िस्मत से निकला है जिसके मा'नी बांटने के हैं या'नी जिन लोगों ने क़ुर्आन को तिक्का-बोटी कर लिया था, इसके टुकड़े कर डाले थे। इसके कई मत़लब बयान किये गये हैं एक ये कि पैग़म्बर को कोई जादूगर कहता कोई मजनूँ कोई काहिन। दूसरे ये कि क़ुर्आन से ठठ्ठा करते। मुजाहिद ने कहा यहूद मुराद हैं जो अल्लाह की कुछ किताब पर ईमान लाते थे और कुछ नहीं मानते थे।

बाब 5 : आयत 'वअ़बुद रब्बक हत्ता यातीकल्यक़ीन' की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قَوْلِهِ :

अपने परवरदिगार की इबादत करता रह यहाँ तक कि तुझको

﴿وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ﴾ قَالَ

यक़ीन आ जाए। सालिम ने कहा कि (अम्रे यक़ीन से मुराद) मौत है।

سَالِمٌ الْيَقِينُ : الْمَوْتُ.

तश्रीह : इसको इस्हाक़ बिन इब्राहीम बस्ती और फ़रियाबी और अ़ब्द बिन हुमैद ने वस्ल किया है। मर्फ़ूअ़ ह़दीष़ से भी इसकी ताईद होती है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उ़ष्मान बिन मज़्ऊन की मौत पर फ़र्माया था। अम्मा हुव फ़क़द जाअकल्यक़ीन अब जिन सूफ़ियों ने इस आयत के ये मा'नी किये हैं कि परवरदिगार की इबादत या'नी नमाज़ रोज़ा मुजाहिदा वग़ैरह उस वक़्त तक ज़रूरी है जब तक यक़ीन या'नी फ़नाफ़िल्लाह का मर्तबा पैदा न हो जाए उसके बाद इबादत की हाजत नहीं रहती, उनका ये क़ौल ग़लत है। शैख़ुश शुयूख़ ह़ज़रत शहाबुद्दीन सहरवर्दी अवारिफ़ में लिखते हैं कि जो कोई ऐसा समझता है वो मुल्ह़िद है। इबादात और दीनी फ़राइज़ किसी के ज़िम्मे से मरते दम तक साक़ित नहीं होते बशर्ते कि अ़क़्ल व होश बाक़ी हो और उन सूफ़ियों से भी तअ़ज्जुब है कि पैग़म्बरे इस्लाम और सह़ाब-ए-किराम तो मरते दम तक इबादत और मुजाहदे में मसरूफ़ रहे उनको ये मर्तबा ह़ासिल न हुआ और तुम उनके अदना ग़ुलाम तुमको ये मर्तबा मिल गया। **ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।** ये महज़ शैतानी वस्वसा है जिससे तौबा और इस्तिग़्फ़ार लाज़िम है। सालिम मज़्कूर ह़ज़रत सालिम बिन मअ़क़ल है ह़ज़रत अबू हुज़ैफ़ह बिन उ़त्बा बिन रबीआ़ ने उनको आज़ाद किया था। फ़ारस इस्त़ख़्र के रहने वालों में से थे। आज़ादकर्दा लोगों में बड़े फ़ाज़िल और अफ़ज़ल व अकरम सह़ाबा में से थे। उनका शुमार ख़ास़ क़ारियों में किया जाता था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आन मजीद चार आदमियों से सीखो। इब्ने उम्मे अ़ब्द से, उबई बिन कअ़ब से और सालिम बिन मअ़क़ल और मुआ़ज़ बिन जबल से। ये बद्र में शरीक थे। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु

सूरह नह़ल की तफ़्सीर

[١٦] سُورَةُ النَّحْلِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

بسم الله الرحمن الرحيم

नज़ला बिहिर्रूहुल अमीन से रूहुल क़ुदुस ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) मुराद हैं । फ़ी ज़यक़ि अ़रब लोग कहते हैं अम्र ज़यक़ और ज़यक़ जैसे हय्यिनि व हय्यिनिन और लयन और लय्यिनुन और मैत और मय्यत। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा फ़ी तुक़ल्लिबुहुम का मा'नी उनके इख़्तिलाफ़ में और मुजाहिद ने कहा तमीदा का मा'नी झुक जाए। उलट जाए। मुफ़्रतून का मा'नी भुलाए गए। दूसरे लोगों ने कहा फ़इज़ा क़रअतल् क़ुर्आन फ़स्तइज़् बिल्लाह इस आयत में इबारत आगे पीछे हो गई है। क्योंकि अऊ़ज़ुबिल्लाहि क़िरात से पहले पढ़ना चाहिये। इस्तआ़ज़े के मा'नी अल्लाह से पनाह मांगना। और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा तुसीमूना का मा'नी चुराते हो शाकिलतहू अपने अपने त़रीक़ पर। क़स्दुस्सबील सच्चे रास्ते का बयान करना। अद्दिफ्उ हर वो चीज़ जिससे गर्मी ह़ासिल की जाए, सर्दी दूर हो। तरीह़ूना शाम को लाते हो, तस्रिह़ूना सुबह़ को चराने ले जाते हो। बिशिःक्क तकलीफ़ उठाकर मेहनत मशक़्क़त से। अ़ला तखव्वुफ़िन नुक़्स़ान करके। व अन्ना लकुम फ़िल् अन्आ़म लइब्रतुन में अन्आ़म नअ़म की जमा है मुज़क्कर मुअन्नष़ दोनों को अन्आ़म और नअ़म कहते

رُوحُ الْقُدُسِ: جِبْرِيلُ. نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الأَمِينُ. فِي ضَيْقٍ يُقَالُ : أَمْرٌ ضَيْقٌ، وَضَيِّقٌ مِثْلُ هَيْنٍ وَهَيِّنٍ، وَلَيْنٍ وَلَيِّنٍ، وَمَيْتٍ وَمَيِّتٍ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فِي تَقَلُّبِهِمْ اخْتِلاَفِهِمْ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ تَمِيدُ: تَكَفَّأُ. مُفْرَطُونَ : مَنْسِيُّونَ، وَقَالَ غَيْرُهُ: فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللهِ هَذَا مُقَدَّمٌ وَمُؤَخَّرٌ وَذَلِكَ أَنَّ الاسْتِعَاذَةَ قَبْلَ الْقِرَاءَةِ وَمَعْنَاهَا الاعْتِصَامُ بِاللهِ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ تُسِيمُونَ : تَرْعَوْنَ. شَاكِلَتِهِ: نَاحِيَتِهِ. قَصْدُ السَّبِيلِ : الْبَيَانُ. الدِّفْءُ : مَا اسْتَدْفَأْتَ. تُرِيحُونَ بِالْعَشِيِّ، وَتَسْرَحُونَ بِالْغَدَاةِ. بِشِقِّ: يَعْنِي الْمَشَقَّةَ. عَلَى تَخَوُّفٍ: تَنَقُّصٍ. لأَنْعَامِ لَعِبْرَةً وَهِيَ تُؤَنَّثُ وَتُذَكَّرُ

وَكَذَلِكَ النَّعَمُ لِلأَنْعَامِ : جَمَاعَةُ النَّعَمِ، سَرَابِيلَ : قُمُصٌ، تَقِيكُمُ الْحَرَّ. سَرَابِيلَ تَقِيكُمْ بَأْسَكُمْ. فَإِنَّهَا الدُّرُوعُ، دَخَلاً بَيْنَكُمْ كُلُّ شَيْءٍ لَمْ يصح : فَهُوَ دَخَلٌ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ حَفَدَةً : مِنْ وَلَدِ الرَّجُلِ. السَّكَرُ : مَا حُرِّمَ مِنْ ثَمَرَتِهَا، وَالرِّزْقُ الْحَسَنُ : مَا أَحَلَّ اللهُ، وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ صَدَقَةَ : أَنْكَاثًا هِيَ خَرْقَاءُ كَانَتْ إِذَا أَبْرَمَتْ غَزْلَهَا نَقَضَتْهُ، وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ الأُمَّةُ : مُعَلِّمُ الْخَيْرِ. وَالْقَانِتُ: الْمُطِيعُ.

हैं। सराबील तक़ीकुमुल्हर्र में सराबील से कुरते और सराबील तक़ीकुम बासकुम में सराबील से ज़िरहें मुराद हैं। दख़ला बयतकुम जो नाजाइज़ बात हो उसको दख़ल कहते हैं जैसे (दख़ल या'नी ख़यानत) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हफ़दतन आदमी की औलाद। अस्सकर नशावर मशरूब जो ह़राम है। (रिज़्क़े ह़स्ना जिसको अल्लाह ने ह़लाल किया और सुफ़यान बिन उ़ययना ने स़दक़ा अबुल हुज़ील से नक़ल किया। इन्काषन टुकड़े टुकड़े ये एक औरत का ज़िक्र है उसका नाम ख़रक़ाअ था (जो मक्का में रहती थी) वो दिन भर सूत कातती फिर तोड़ तोड़कर फेंक देती। इब्ने मसऊद ने कहा उम्मह का मा'नी लोगों को अच्छी बातें सिखाने वाला और क़ानित के मा'नी मुत़ीअ़ और फ़र्मांबरदार के हैं ।

तश्रीह : सूरह नह़्ल मक्की है इसमें 128 आयात और सौलह रुकूअ़ हैं। इस सूरह शरीफ़ा में शहद की मक्खी का ज़िक्र है इसलिये इसको इसी नाम से मौसूम किया गया है।

١- باب قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ﴾.

बाब 1 : आयत 'व मिन्कुम मंय्युरद्दु इला अर्ज़ेल्लिउ़मूरि' की तफ़्सीर या'नी,

और तुम में से कुछ को निकम्मी उ़म्र की त़रफ़ लौटा दिया जाता है

٤٧٠٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مُوسَى أَبُو عَبْدِ اللهِ الأَعْوَرُ، عَنْ شُعَيْبٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَدْعُو : ((أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ. وَالْكَسَلِ وَأَرْذَلِ الْعُمُرِ، وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَفِتْنَةِ الدَّجَّالِ، وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ)).

[راجع: ٢٨٢٣]

4707. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हारून बिन मूसा अबू अ़ब्दुल्लाह अ़अ़वर ने बयान किया, उनसे शुऐ़ब ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) दुआ़ किया करते थे, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ बुख़्ल से, सुस्ती से, अरज़ले उ़म्र से, (निकम्मी और ख़राब उ़म्र 80 या 90 साल के बाद) अ़ज़ाबे क़ब्र से, दज्जाल के फ़ित्ने से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से। (राजेअ़ : 2823)

तश्रीह : निकम्मी उ़म्र 90 या 75 साल के बाद होती है। जिसमें आदमी बूढ़ा होकर बिलकुल बेअ़क़्ल हो जाता है, हर आदमी की क़ुव्वत और त़ाक़त पर मुन्ह़स़िर है। कोई ख़ास़ मेयआद मुक़र्रर नहीं की जा सकती। ज़िन्दगी का फ़ित्ना ये है कि दुनिया में ऐसा मशग़ूल हो जाए कि अल्लाह की याद भूल जाए फ़राइज़ और अह़कामे शरीअ़त को अदा न करे, मौत का फ़ित्ना सकरात के वक़्त शुरू होता है। इस वक़्त शैत़ान आदमी का ईमान बिगाड़ना चाहता है। दूसरी ह़दीष़ मे दुआ़ आई है **अऊ़ज़ुबिक मिन अंय्युखिबतनिश्शैतानु इन्दल्मौति**, या'नी ऐ अल्लाह! तेरी पनाह मांगता हूँ उससे कि मौत के वक़्त मुझको शैत़ान गुमराह कर दे।

सूरह बनी इस्राईल की तफ़्सीर

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

[١٧] سُورَةُ بَنِي إِسْرَائِيلَ

बाब 1 :

١ - باب

4708. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्हाक़ अ़म्र बिन उ़बैदुल्लाह सबीई ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से सुना, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, उन्होंने सूरह बनी इस्राईल, सूरह कहफ़ और सूरह मरयम के बारे में कहा कि ये अव्वल दर्जा की उ़म्दह निहायत फ़सीह व बलीग़ सूरतें हैं और मेरी पुरानी याद की हुई (आयत) फ़सयुन्ग़िज़ूना इलैक रुऊसिहिम के बारे में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अपने सर हिलाएँगे और दूसरे लोगो ने कहा कि ये नग़ज़त सिन्नुका से निकला है या'नी तेरा दांत हिल गया। (दीगर मक़ाम : 4739, 4994)

٤٧٠٨ - حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ وَالْكَهْفِ، وَمَرْيَمَ، إِنَّهُنَّ مِنَ الْعِتَاقِ الأُوَلِ وَهُنَّ مِنْ تِلاَدِي قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَسَيُنْغِضُونَ: يَهُزُّونَ. وَقَالَ غَيْرُهُ نَغَضَتْ سِنُّكَ : أَيْ تَحَرَّكَتْ. [طرفاه في : ٤٧٣٩، ٤٩٩٤].

बाब 2 :

٢ - باب

व क़ज़ैना इला बनी इस्राईल या'नी हमने बनी इस्राईल को मुत्तलअ़ कर दिया था कि आइन्दा फ़साद करेंगे और क़ज़ा के कई मा'नी आए हैं। जैसे आयत वक़ज़ा रब्बुका अन् ला तअ़बुदू में ये मा'नी है कि अल्लाह ने हुक्म दिया और फ़ैसला करने के भी मा'नी हैं। जैसे आयत इन्ना रब्बका यक़्ज़ि बैनहुम में है और पैदा करने के भी मा'नी में है जैसे फ़क़ज़ा हुन्ना सब्आ समावाति में है। नफ़ीरा वो लोग जो आदमी के साथ लड़ने को निकलें वलियतब्बरू मा अ़लौ या'नी जिन शहरों से ग़ालिब हों उनको तबाह करें ह़सीरा क़ैदख़ाना जैल ह़क़ वाजिब हुआ। मयसूरा नरम मुलायम ख़ता गुनाह ये इस्म है ख़त्अत से और ख़त्ता बिल फ़त्ह मस़दर है या'नी गुनाह करना। ख़त्अत बि कसरा त़ाअ और अख़्तात दोनों का एक ही मा'नी है। या'नी मैंने क़सूर किया ग़लती की। लन तख़्रिक़ तू ज़मीन को तै नहीं कर सकेगा (क्योंकि ज़मीन बहुत बड़ी है) नज्वा मस़दर है नाजयत से ये उन लोगों की सिफ़त बयान की है। या'नी आपस में मश्विरा करते हैं। रूफ़ाता टूटे हुए रेज़ा रेज़ा। वस्तफ़्ज़िज़ दीवाना कर दे गुमराह कर दे। बिख़ैलिक अपने सवारों से। रज्लु

﴿وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ﴾ أَخْبَرْنَاهُمْ أَنَّهُمْ سَيُفْسِدُونَ وَالْقَضَاءُ عَلَى وُجُوهٍ. وَقَضَى رَبُّكَ أَمَرَ رَبُّكَ، وَمِنْهُ الْحُكْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ. وَمِنْهُ الْخَلْقُ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ. نَفِيرًا: مَنْ يَنْفِرُ مَعَهُ. وَلِيُتَبِّرُوا: يُدَمِّرُوا مَا عَلَوْا، حَصِيرًا: مَحْبِسًا: مَحْصَرًا، حَقَّ: وَجَبَ، مَيْسُورًا: لَيِّنًا، خِطْأً إِثْمًا وَهُوَ اسْمٌ مِنْ خَطِئْتُ وَالْخَطَأُ مَفْتُوحٌ مَصْدَرُهُ مِنَ الإِثْمِ خَطِئْتُ بِمَعْنَى أَخْطَأْتُ. تَخْرِقَ: تَقْطَعَ، وَإِذْ هُمْ نَجْوَى مَصْدَرٌ مِنْ نَاجَيْتُ فَوَصَفَهُمْ بِهَا وَالْمَعْنَى يَتَنَاجَوْنَ. رُفَاتًا: حُطَامًا، وَاسْتَفْزِزْ اسْتَخِفَّ بِخَيْلِكَ الْفُرْسَانِ،

وَالرَّجْلُ الرَّجَّالَةُ وَاحِدُهَا رَاجِلٌ مِثْلُ صَاحِبٍ وَصَحْبٍ وَتَاجِرٍ وَتَجْرٍ: حَاصِبًا : الرِّيحُ الْعَاصِفُ. وَالْحَاصِبُ أَيْضًا : مَا تَرْمِي بِهِ الرِّيحُ وَمِنْهُ حَصَبُ جَهَنَّمَ يُرْمَى بِهِ فِي جَهَنَّمَ وَهُوَ حَصَبُهَا، وَيُقَالُ: حَصَبَ فِي الأَرْضِ ذَهَبَ، وَالْحَصَبُ مُشْتَقٌّ مِنَ الْحَصْبَاءِ الْحِجَارَةَ. تَارَةً: مَرَّةً وَجَمَاعَتُهُ تِيَرَةٌ وَتَارَاتٌ. لأَحْتَنِكَنَّ: لأَسْتَأْصِلَنَّهُمْ يُقَالُ : احْتَنَكَ فُلاَنٌ مَا عِنْدَ فُلاَنٍ مِنْ عِلْمٍ اسْتَقْصَاهُ. طَائِرُهُ: حَظُّهُ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كُلُّ سُلْطَانٍ فِي الْقُرْآنِ فَهُوَ حُجَّةٌ. وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ لَمْ يُحَالِفْ أَحَدًا.

प्यादे इसका मुफ़रद राजिल है जैसे स़ाह़ब की जमा स़ह़ब और ताजिर की जमा तजिर है। ह़ास़िबा आँधी ह़ास़िब उसको भी कहते हैं जो आँधी उड़ा कर लाए। रेत कंकर वग़ैरह) इसी से है ह़स़बु जहन्नम या'नी जो जहन्नम में डाला जाएगा वही जहन्नम का ह़स़ब है। अ़रब लोग कहते हैं ह़स़ब फ़िल् अर्ज़ि ज़मीन में घुस गया ये ह़स़ब ह़स़्बाउ से निकला है। ह़स़्बाअ पत्थरों संगरेज़ों को कहते हैं। तारतुन एक बार उसकी जमा तियरतुन और तारातुन आती है। लअह्तनिकन्ना उनको तबाह कर दूँगा। जड़ से खोद डालूँगा। अ़रब लोग कहते हैं इहतनक फ़ुलानुन मा इन्द फ़ुलानिन या'नी उसको जितनी बातें मा'लूम थीं वो सब उसने मा'लूम कर लिए कोई बात बाक़ी न रही। त़ाइरतु उसका नस़ीबा इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा क़ुर्आन में जहाँ जहाँ सुल्त़ान का लफ़्ज़ आया है उसका मा'नी दलील और हुज्जत है। वली मिनज़् ज़ुल् या'नी उसने किसी से इसलिये दोस्ती नहीं की है कि वो उसको ज़िल्लत से बचाए।

٣- باب ﴿أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ﴾

बाब 3 : आयत 'अस्रा बिअ़ब्दिही लैलम्मिनल् मस्जिदिल्ह़रामि' की तफ़्सीर

٤٧٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ ح وَحَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ أُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ بِإِيلِيَاءَ بِقَدَحَيْنِ مِنْ خَمْرٍ وَلَبَنٍ فَنَظَرَ إِلَيْهِمَا فَأَخَذَ اللَّبَنَ قَالَ جِبْرِيلُ : الْحَمْدُ للهِ الَّذِي هَدَاكَ لِلْفِطْرَةِ لَوْ أَخَذْتَ الْخَمْرَ غَوَتْ أُمَّتُكَ.

[راجع: ٣٣٩٤]

4709. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमको यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी ने कहा और हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कि इब्ने मुसय्यिब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मेअ़राज की रात में नबी करीम (ﷺ) के सामने बैतुल मक़्दिस में दो प्याले पेश किये गये एक शराब का और दूसरा दूध का। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दोनों को देखा फिर दूध का प्याला उठा लिया। इस पर जिब्रईल (ﷺ) ने कहा कि तमाम ह़म्द उस अल्लाह के लिये है जिसने आपको फ़ित़रत (इस्लाम) की हिदायत की। अगर आप शराब का प्याला उठा लेते तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती। (राजेअ़ : 3394)

दूध अल्लाह की बड़ी ज़बरदस्त नेअ़मत है फ़वाइद के लिहाज़ से। ऐसा ही फ़वाइद से भरपूर दीने इस्लाम है। लिहाज़ा दूध से दीने फ़ित्रत की ता'बीर की गई।

4710. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा कि मुझे यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उन्होंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी (रज़ि) से सुना, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जब क़ुरैश ने मुझको वाक़िया मेअ़राज के सिलसिले में झुठलाया तो मैं (का'बा के) मुक़ामे हिज्र में खड़ा हुआ था और मेरे सामने पूरा बैतुल मक़्दिस कर दिया गया था। मैं उसे देख देखकर उसकी एक एक अ़लामत बयान करने लगा। यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने अपनी रिवायत में ये ज़्यादा किया कि हमसे इब्ने शिहाब के भतीजे ने अपने चचा इब्ने शिहाब से बयान किया कि (रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया) जब मुझे क़ुरैश ने बैतुल मक़्दिस के मेअ़राज के सिलसिले में झुठलाया, फिर पहली ह़दीस़ की त़रह़ बयान किया। क़ासिफ़ा वो आँधी जो हर चीज़ को तबाह कर दे। (राजेअ़ : 3886)

٤٧١٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَبُو سَلَمَةَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ، فَجَلَّى اللهُ لِي بَيْتَ الْمَقْدِسِ فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ)). زَادَ يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ حِينَ أُسْرِيَ بِي إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ)) نَحْوَهُ. قَاصِفًا : رِيحٌ تَقْصِفُ كُلَّ شَيْءٍ. [راجع: ٣٨٨٦]

बाब 4 : आयत 'व लक़द कर्रम्ना बनी आदम' की तफ़्सीर

٤- باب

قوله و لقد كرمنا بنى آدم

कर्रम्ना और अक्रम्ना दोनों के एक ही मा'नी हैं। ज़िअ़फ़ुल ह़यात ज़िंदगी का अ़ज़ाब व ज़िअ़फ़ल ममात का अ़ज़ाब ख़िलाफ़क और ख़ल्फ़ुका (दोनों क़िरातें हैं) दोनों के एक मा'नी हैं या'नी तुम्हारे बाद। नअय के मा'नी दूर हुआ। शाकिलतुहू अपने रास्ते पर (या अपनी ज़ीनत पर) ये शक्ल से निकला है या'नी जोड़ा और शबिया। स़र्रफ़्ना सामने लाये बयान किये। क़बीला आँखों के सामने रूबरू कुछ ने कहा कि ये क़ाबिलहु से निकला है जिसके मा'नी दाई, जनाने वाली के हैं क्योंकि वो भी जनते वक़्त औरत के मुक़ाबिल होती है उसका बच्चा क़ुबूल करती है या'नी सम्भालती है। इन्फ़िाक़ के मा'नी मुफ़्लिस हो जाना। कहते हैं अन्फ़क़ुर्रज़ुल जब वो मुफ़्लिस हो जाए और नफ़िक़श्शैउन जब कोई चीज़ तमाम हो जाए। क़तूरा के मा'नी बख़ील। अज़्क़ान ज़कन की जमा है जहाँ दोनों जबड़े मिलते हैं या'नी ठुड्डी। मुजाहिद ने कहा मवफ़ूरा

﴿كَرَّمْنَا﴾ وَأَكْرَمْنَا وَاحِدٌ. ضِعْفَ الْحَيَاةِ عَذَابَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ عَذَابَ الْمَمَاتِ. خِلاَفَكَ وَخَلْفَكَ : سَوَاءٌ وَنَأَى تَبَاعَدَ. شَاكِلَتِهِ : نَاحِيَتِهِ وَهِيَ مِنْ شَكْلِهِ. صَرَّفْنَا: وَجَّهْنَا. قَبِيلاً مُعَايَنَةً وَمُقَابَلَةً وَقِيلَ الْقَابِلَةُ لأَنَّهَا مُقَابِلَتُهَا وَتَقْبَلُ وَلَدَهَا. خَشْيَةَ الإِنْفَاقِ: أَنْفَقَ الرَّجُلُ أَمْلَقَ وَنَفِقَ الشَّيْءُ ذَهَبَ. قَتُورًا : مُقَتِّرًا. لِلأَذْقَانِ مُجْتَمَعُ اللَّحْيَيْنِ، وَالْوَاحِدُ ذَقَنٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: مَوْفُورًا: وَافِرًا. تَبِيعًا : ثَائِرًا، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: نَصِيرًا. خَبَتْ : طَفِئَتْ. وَقَالَ ابْنُ

عَبَّاس: لَا تُبَذِّرْ : لَا تُنْفِقْ فِي الْبَاطِلِ. ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ: رِزْقٍ، مَثْبُورًا: مَلْعُونًا. لَا تَقْفُ لَا تَقُلْ. فَجَاسُوا: تَيَمَّمُوا. يَزْجِي الْفُلْكَ: يُجْرِي الْفُلْكَ. يَخِرُّونَ لِلأَذْقَانِ: لِلْوُجُوهِ.

वाफ़िरा के मा'नी में है (या'नी पूरा) तबीआ बदला लेने वाला। और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ला तुबज़्ज़िरु का मा'नी ये है कि नाजाइज़ कामों में अपना पैसा मत खर्च करा इब्तिग़ाअ रहमत रोज़ी की तलाश में मषबूरा के मा'नी मल्ऊन के हैं। ला तक़्फ़ु मत कह फ़जासू क़स्द किया। युज़जिल् फ़ुल्क के मा'नी चलाते है। यख़्रऊना लिल् अज़्क़ान के मा'नी चेहरे के बल गिर पड़ते हैं (सज्दा करते हैं)

तशरीह : बनी इस्राईल के लफ़्ज़ी मा'नी औलादे यअ़क़ूब के हैं। इस सूरत में इस ख़ानदान के उ़रूज व ज़वाल के बारे में बहुत सी बातें बयान की गई हैं। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) को जो अह़काम दिये गये थे उनकी भी तफ़्सील मौजूद है। उन ही वजूह की बिना पर उसे सूरह बनी इस्राईल से मौसूम किया गया। इस सूरत का आग़ाज़ आँह़ज़रत (ﷺ) के सफ़रे मेअ़राज से किया गया है। जो बैतुल्लाह शरीफ़ से मस्जिदे अक़्सा तक फिर वहाँ से आसमानों बल्कि अर्श तक हुआ है और ये सारे कवाइफ़ जिस्म समेत हुए हैं। इसमें ये भी इशारा है कि अब ज़माना बदल गया है और आज बनी इस्राईल की जगह बनी इस्माईल को मिल चुकी है जो न सिर्फ़ रूए ज़मीन बल्कि आसमानों तक की ख़बरें लेंगे। वल्ह़म्दुलिल्लाह अव्वल ता आख़िर।

सनद में मज़्कूर ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह, क़बीला सलम से तअ़ल्लुक़ रखने वाले मशहूर स़ह़ाबा में से हैं। बद्र और तमाम ग़ज़्वात में शरीक रहे। शाम और मिस्र में तशरीफ़ लाए। आख़िरी उ़म्र में नाबीना हो गये थे 94 साल की उ़म्र में 74 हिजरी में मदीना में वफ़ात पाई। स़ह़ाबा में से आख़िर में वफ़ात पाने वाले आप ही हैं। उनकी वफ़ात अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान की ख़िलाफ़त में हुई। (रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु आमीन)

بَاب قَوْلِهِ : ﴿وَإِذْ أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا﴾ الآيَةَ.

बाब : आयत 'व इज़ अर्दना अन्नुहलिक' की तफ़्सीर या'नी

और जब मैं इरादा कर लेता हूं कि किसी बस्ती को बर्बाद कर दूं तो उस (बस्ती) के सरमायादारों को हुक्म देता हूं, वो उसमें ज़ुल्म व जोर और बदमाशियाँ करते हैं, फिर मेरे क़ानून के तह़त मैं उन पर सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल करके उनको बर्बाद कर देता हूं।

٤٧١١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، أَخْبَرَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : كُنَّا نَقُولُ لِلْحَيِّ إِذَا كَثُرُوا فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَمِرَ بَنُو فُلاَنٍ.

...- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ وَقَالَ : أَمِرَ.

4711. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमको मंसूर ने ख़बर दी, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि जब किसी क़बीला के लोग बढ़ जाते तो ज़माना जाहिलियत में हम उनके बारे में कहा करते थे कि उमरि बनू फ़ला (या'नी फ़लाँ का ख़ानदान बढ़ गया) हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया और इस रिवायत में उन्होंने भी लफ़्ज़ उमरि का ज़िक्र किया।

तशरीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) का मत़लब इस रिवायत के लाने से ये है कि क़ुर्आन शरीफ़ में जो आता है अमरना मुतरफ़ीहा ये बकस्र-ए-मीम है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की यही क़िरात है और मशहूर ब फ़त्ह़े मीम है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की क़िरात पर मा'नी ये होगा जब हम किसी बस्ती को तबाह करना चाहते हैं। तो वहाँ बदकारों की ता'दाद

बढ़ा देते हैं।

बाब 5 : आयत 'जुर्रियतम्मनहमल्ना मअ नूहिन' की तफ़्सीर या'नी,

उन लोगों की नस्ल वालों! जिन्हें मैंने नूह के साथ कश्ती में सवार किया था, वो (नूह) बेशक बड़ा ही शुक्रगुज़ार बन्दा था।

4712. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको अबू हय्यान (यह्या बिन सईद) तैमी ने ख़बर दी। उन्हें अबू ज़ुरआ (हरम) बिर अ़म्र बिन जरीर ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत मे गोश्त लाया गया और दस्त का हिस़्सा आपको पेश किया गया। तो आपने अपने दांतों से उसे एक बार नोचा और आँह़ज़रत (ﷺ) को दस्त का गोश्त बहुत पसंद था। फिर आपने फ़र्माया क़यामत के दिन मैं सब लोगों का सरदार होऊंगा। तुम्हें मा'लूम भी है ये कौनसा दिन होगा? उस दिन दुनिया के शुरू से क़यामत के दिन तक की सारी ख़िल्क़त एक चटियल मैदान में जमा होगी कि एक पुकारने वाले की आवाज़ सबके कानों तक पहुँच सकेगी और एक नज़र सबको देख सकेगी। सूरज बिलकुल क़रीब हो जाएगा और और लोगों की परेशानी और बेक़रारी की कोई ह़द न रहेगी जो बर्दाश्त से बाहर हो जाएगी। लोग आपस में कहेंगे, देखते नहीं कि हमारी क्या ह़ालत हो गई है। क्या ऐसा कोई मक़्बूल बन्दा नहीं है जो अल्लाह पाक की बारगाह में तुम्हारी शफ़ाअ़त करे? कुछ लोग कुछ से कहेंगे कि ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) के पास चलना चाहिये। चुनाँचे सब लोग ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे आप इंसानों के परदादा हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपको अपने हाथ से पैदा किया और अपनी त़रफ़ से ख़ुसूस़ियत के साथ आपमे रूह फूँकी। फ़रिश्तों को हुक्म दिया और उन्होंने आपको सज्दा किया इसलिये आप रब के हुज़ूर में हमारी शफ़ाअ़त कर दें, आप देख रहे हैं कि हम किस ह़ाल को पहुँच चुके हैं। ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) कहेंगे कि मेरा रब आज इंतिहाई ग़ज़बनाक है। इससे पहले इतना ग़ज़बनाक वो कभी नहीं हुआ था और न आज के बाद कभी इतना ग़ज़बनाक होगा

٥- باب قوله ﴿ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا﴾

٤٧١٢- حدَّثنا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا أَبُو حَيَّانَ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ بْنِ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَحْمٍ فَرُفِعَ إِلَيْهِ الذِّرَاعُ وَكَانَتْ تُعْجِبُهُ فَنَهَسَ مِنْهَا نَهْسَةً، ثُمَّ قَالَ: ((أَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَهَلْ تَدْرُونَ مِمَّ ذَلِكَ يُجْمَعُ النَّاسُ الأَوَّلِينَ وَالآخِرِينَ فِي [illegible]دٍ وَاحِدٍ يُسْمِعُهُمُ الدَّاعِي وَيَنْفُذُهُمُ الْبَصَرُ وَتَدْنُو الشَّمْسُ فَيَبْلُغُ النَّاسَ مِنَ الْغَمِّ وَالْكَرْبِ مَا لاَ يُطِيقُونَ وَلاَ يَحْتَمِلُونَ فَيَقُولُ النَّاسُ: أَلاَ تَرَوْنَ مَا قَدْ بَلَغَكُمْ أَلاَ تَنْظُرُونَ مَنْ يَشْفَعُ لَكُمْ إِلَى رَبِّكُمْ؟ فَيَقُولُ بَعْضُ النَّاسِ لِبَعْضٍ عَلَيْكُمْ بِآدَمَ، فَيَأْتُونَ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَيَقُولُونَ لَهُ أَنْتَ أَبُو الْبَشَرِ خَلَقَكَ اللهُ بِيَدِهِ وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ وَأَمَرَ الْمَلاَئِكَةَ فَسَجَدُوا لَكَ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا قَدْ بَلَغَنَا فَيَقُولُ آدَمُ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَمْ يَغْضَبْ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَإِنَّهُ نَهَانِي عَنِ الشَّجَرَةِ فَعَصَيْتُهُ نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي اذْهَبُوا إِلَى

غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى نُوحٍ فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُونَ يَا نُوحُ إِنَّكَ أَنْتَ أَوَّلُ الرُّسُلِ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ وَقَدْ سَمَّاكَ اللهُ عَبْدًا شَكُورًا، إِشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ : إِنَّ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ، وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَإِنَّهُ قَدْ كَانَتْ لِي دَعْوَةٌ دَعَوْتُهَا عَلَى قَوْمِي نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى إِبْرَاهِيمَ فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُونَ : يَا إِبْرَاهِيمُ أَنْتَ نَبِيُّ اللهِ وَخَلِيلُهُ مِنْ أَهْلِ الأَرْضِ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ لَهُمْ: إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنِّي قَدْ كُنْتُ كَذَبْتُ ثَلاَثَ كَذَبَاتٍ)) فَذَكَرَهُنَّ أَبُو حَيَّانَ فِي الْحَدِيثِ ((نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي، اذْهَبُوا إِلَى مُوسَى فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُونَ يَا مُوسَى أَنْتَ رَسُولُ اللهِ فَضَّلَكَ اللهُ بِرِسَالَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ عَلَى النَّاسِ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ : إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ، وَإِنِّي قَدْ قَتَلْتُ نَفْسًا لَمْ أُومَرْ بِقَتْلِهَا نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي اذْهَبُوا إِلَى عِيسَى، فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُونَ: يَا عِيسَى

और रब्बुल इज़्ज़त ने मुझे भी पेड़ से रोका था लेकिन मैंने उसकी नाफ़र्मानी की पस नफ़्सी-नफ़्सी-नफ़्सी मुझको अपनी फ़िक्र है तुम किसी और के पास जाओ। हाँ! ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहि.) के पास जाओ। चुनाँचे सब लोग ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे, ऐ नूह़! आप सबसे पहले पैग़म्बर हैं जो अहले ज़मीन की त़रफ़ भेजे गये थे और आपको अल्लाह ने, शुक्रगुज़ार बन्दा (अ़ब्दे शकूर) का ख़ित़ाब दिया। आप ही हमारे लिये अपने रब के हुज़ूर में शफ़ाअ़त कर दें, आप देख रहे हैं कि हम किस ह़ालत को पहुँच गये हैं। ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहि.) भी कहेंगे कि मेरा रब आज इतना ग़ज़बनाक है कि इससे पहले कभी इतना ग़ज़बनाक नहीं था और न आज के बाद कभी इतना ग़ज़बनाक होगा और मुझे एक दुआ़ की क़ुबूलियत का यक़ीन दिलाया गया था जो मैंने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ कर ली थी। नफ़्सी, नफ़्सी, नफ़्सी आज मुझको अपने ही नफ़्स की फ़िक्र है तुम मेरे सिवा किसी और के पास जाओ, ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) के पास जाओ। सब लोग ह़ज़रत इबाहीम (अ़लैहि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे, ऐ इब्राहीम! आप अल्लाह के नबी और अल्लाह के ख़लील हैं रूए ज़मीन में मुंतख़ब, आप हमारी शफ़ाअ़त कीजिए, आप मुलाहिज़ा फ़र्मा रहे हैं कि हम किस ह़ालत को पहुँच चुके हैं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) भी कहेंगे कि आज मेरा रब बहुत ग़ज़बनाक है। इतना ग़ज़बनाक न वो पहले हुआ था और न आज के बाद होगा और मैंने तीन झूठ बोले थे (रावी) अबू ह़य्यान ने अपनी रिवायत में उन तीनों का ज़िक्र किया है। नफ़्सी नफ़्सी, नफ़्सी मुझको अपने नफ़्स की फ़िक्र है, मेरे सिवा किसी और के पास जाओ। हाँ ह़ज़रत मूसा के पास जाओ। सब लोग ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे ऐ मूसा! आप अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह तआ़ला ने आपको अपनी त़रफ़ से रिसालत और अपने कलाम के ज़रिये फ़ज़ीलत दी। आप हमारी शफ़ाअ़त अपने रब के हुज़ूर में करें। आप मुलाहिज़ा फ़र्मा सकते हैं कि हम किस ह़ाल में पहुँच चुके हैं। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) कहेंगे कि आज अल्लाह तआ़ला बहुत ग़ज़बनाक है, इतना ग़ज़बनाक कि वो न पहले कभी हुआ था और न आज के बाद

أَنتَ رَسُولُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ وَكَلَّمْتَ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا اشْفَعْ لَنَا أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَيَقُولُ عِيسَى : إِنَّ رَبِّي قَدْ غَضِبَ الْيَوْمَ غَضَبًا لَمْ يَغْضَبْ قَبْلَهُ مِثْلَهُ وَلَنْ يَغْضَبَ بَعْدَهُ مِثْلَهُ وَلَمْ يَذْكُرْ ذَنْبًا نَفْسِي نَفْسِي نَفْسِي، اذْهَبُوا إِلَى غَيْرِي اذْهَبُوا إِلَى مُحَمَّدٍ فَيَأْتُونَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَقُولُونَ: يَا مُحَمَّدُ أَنْتَ رَسُولُ اللهِ وَخَاتَمُ الأَنْبِيَاءِ وَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ أَلاَ تَرَى إِلَى مَا نَحْنُ فِيهِ؟ فَأَنْطَلِقُ فَآتِي تَحْتَ الْعَرْشِ فَأَقَعُ سَاجِدًا لِرَبِّي عَزَّ وَجَلَّ ثُمَّ يَفْتَحُ اللهُ عَلَيَّ مِنْ مَحَامِدِهِ وَحُسْنِ الثَّنَاءِ عَلَيْهِ شَيْئًا لَمْ يَفْتَحْهُ عَلَى أَحَدٍ قَبْلِي، ثُمَّ يُقَالُ : يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ سَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأَقُولُ : أُمَّتِي يَا رَبِّ أُمَّتِي يَا رَبِّ، فَيُقَالُ : يَا مُحَمَّدُ أَدْخِلْ مِنْ أُمَّتِكَ مَنْ لاَ حِسَابَ عَلَيْهِمْ مِنَ الْبَابِ الأَيْمَنِ مِنْ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ وَهُمْ شُرَكَاءُ النَّاسِ فِيمَا سِوَى ذَلِكَ مِنَ الأَبْوَابِ، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ مَا بَيْنَ الْمِصْرَاعَيْنِ مِنْ مَصَارِيعِ الْجَنَّةِ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَحِمْيَرَ أَوْ كَمَا بَيْنَ مَكَّةَ وَبُصْرَى)).

[راجع: ٣٣٤٠]

कभी होगा और मैंने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया था, हालाँकि अल्लाह की तरफ़ से मुझे उसका कोई हुक्म नहीं मिला था। नफ़्सी, नफ़्सी, नफ़्सी बस मुझको आज अपनी फ़िक्र है, मेरे सिवा किसी और के पास जाओ। हाँ हज़रत ईसा (अलैहि.) के पास जाओ। सब लोग हज़रत ईसा (अलैहि.) की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अर्ज़ करेंगे। ऐ हज़रत ईसा (अलैहि.)! आप अल्लाह के रसूल और उसका कलिमा हैं जिसे अल्लाह ने मरयम (अलैहि.) पर डाला था और अल्लाह की तरफ़ से रूह हैं, आपने बचपन में माँ की गोद ही में लोगों से बात की थी, हमारी शफ़ाअत कीजिए, आप मुलाहिज़ा फ़र्मा सकते हैं कि हमारी क्या हालत हो चुकी है। हज़रत ईसा (अलैहि.) भी कहेंगे कि मेरा रब आज इस दर्जा ग़ज़बनाक है कि न उससे पहले कभी इतना ग़ज़बनाक हुआ था और न कभी होगा और आप किसी लग़्ज़िश का ज़िक्र नहीं करेंगे (सिर्फ़) इतना कहेंगे, नफ्सी, नफ्सी, नफ़्सी मेरे सिवा किसी और के पास जाओ। हाँ, मुहम्मद (ﷺ) के पास जाओ। सब लोग आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अर्ज़ करेंगे ऐ मुहम्मद(ﷺ)! आप अल्लाह के रसूल और सबसे आख़िरी पैग़म्बर है। और अल्लाह तआला ने आपके तमाम अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये हैं, अपने रब के दरबार में हमारी शफ़ाअत कीजिए। आप ख़ुद मुलाहिज़ा कर सकते हैं कि हम किस हालत को पहुँच चुके हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आख़िर मैं आगे बढ़ूँगा और अर्श तले पहुँचकर अपने रब अज़्ज़ व जल्ल के लिये सज्दा में गिर पड़ूँगा, फिर अल्लाह तआला मुझ पर अपनी हम्द और हुस्ने ष़ना के दरवाज़े खोल देगा कि मुझसे पहले किसी को वो तरीक़े और वो महामिद नहीं बताये थे। फिर कहा जाएगा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अपना सर उठाइये, मांगिये आपको दिया जाएगा। शफ़ाअत कीजिए, आपकी शफ़ाअत क़ुबूल की जाएगी। अब मैं अपना सर उठाऊँगा और अर्ज़ करूँगा। ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत, ऐ मेरे रब! मेरी उम्मत पर करम कर, कहा जाएगा ऐ मुहम्मद! अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन पर कोई हिसाब नहीं है जन्नत के दाहिने दरवाज़े से दाख़िल कीजिए वैसे उन्हें इख़्तियार है, जिस दरवाज़े से चाहें दूसरे लोगों के साथ दाख़िल हो सकते हैं। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की

क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। जन्नत के दरवाज़े के दोनों किनारो में इतना फ़ासला है जितना मक्का और ह़िमयर में है या जितना मक्का और बस़रा में है। (राजेअ : 3340)

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है कि ईसा फ़र्माएँगे ईसाई लोगों ने मुझको दुनिया में अल्लाह का बेटा बना रखा था मैं डरता हूँ परवरदिगार मुझसे कहीं पूछ न ले कि तू अल्लाह या अल्लाह का बेटा था? मुझे आज यही ग़नीमत मा'लूम होता है कि मेरी मग़्फ़िरत हो जाए। ह़िमयर से स़न्आ ख़ैबर यमन का पाया तख़्त मुराद है बस़रा शाम के मुल्क में है। ह़दीष़ में ह़ज़रत नूह़ का ज़िक्र है। यही बाब से मुताबक़त है।

इस ह़दीष़ में शफ़ाअ़ते कुबरा का ज़िक्र है जिसका शर्फ़ सय्यदना व मौलाना ह़ज़रत मुह़म्मदुर् रसुलुल्लाह (ﷺ) को ह़ासिल होगा। बाब और आयत में मुताबक़त ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहि.) के ज़िक्र से है जहाँ **या नूहू इन्नक अव्वलुर्रूसिलि इला अहलिल्अर्ज़ि** अल्फ़ाज़ मज़्कूर हैं। ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) के बाद आम रिसालत का मुक़ाम ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहि.) को ह़ासिल हुआ। आपको आदमे ष़ानी भी कहा गया है क्योंकि तूफ़ाने नूह़ के बाद इन्सानी नस्ल के मुष़िरे आ़ला सिर्फ़ आप ही हैं। आपके चार बेटे हुए जिनमें साम की नस्ल से अ़रब, फ़ारस, हिन्द, सिन्ध वग़ैरह हैं और याफ़िष़ की नस्ल से रूस, तुर्क चीन जापान वग़ैरह हैं और हाम की नस्ल से ह़ब्श और अफ़्ष़र अफ़्रीक़ा वाले और नोश की नस्ल से यूरोप, फ़्रांस जर्मन आस्ट्रेलिया, इटालिया और मिस्र व यूनान वग़ैरह हैं। इसी ह़क़ीक़त के पेशेनज़र आपको अव्वलुर्रुसुल कहा गया है। वरना आपसे पहले और भी कई नबी हो चुके हैं मगर वो आ़म रसूल नहीं थे। रिवायत मे इब्राहीम (अ़लैहि.) से मन्सूब तीन झूठ ये हैं। पहला जबकि बुतपरस्तों के तहवार में अ़दमे शिर्कत के लिये लफ़्ज़ **इन्नी सक़ीम** (अस्‌ स़ाफ़्फ़ात : 89) इस्ते'माल किये और बुतशिकनी का मामला बड़े बुत पर डालते हुए कहा **बल फअलहू कबीरूहुम हाज़ा** (अल्‌ अंबिया : 63) इस्ते'माल किये और बुतशिकनी का माला बड़े बुत पर डालते हैं और सारा को अपनी बहन कहा अगरचे ये ज़ाहिरन झूठ नज़र आते हैं मगर ह़क़ीक़त के लिह़ाज़ से ये झूठ न थे फिर ये ज़ाते बारी ग़नी और स़मद से है वो मा'मूली काम पर भी गिरफ़्त कर सकता है। इसीलिये ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) ने उस मौक़े पर इज़्हारे मअ़ज़रत फ़र्माया। (स़ल्लल्लाहु अ़लैहिम अज्मईन)

इन्नी सक़ीम मैं बीमार हूँ इसलिये मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी तक़रीब में चलने से मा'ज़ूर हूँ। आप बज़ाहिर तन्दरुस्त थे। मगर आपके दिल में उनकी नाज़ेबा हरकतों का सख़्त स़दमा था और मुसलसल स़दमों से इंसान की त़बीअ़त नासाज़ होना दूर नहीं है। लिहाज़ा ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) का ऐसा कहना झूठ न था। बुतशिकनी का मामला बड़े बुत पर बत़ौरे इस्तिहाज़ा डाला था ताकि मुश्किरीन ख़ुद अपनी ह़िमाक़त का एह़सास कर सकें। क़ुर्आन मजीद के बयान का सियाक़ व सिबाक़ बतला रहा है कि ह़ज़रत इब्राहीम का ये कहना सिर्फ़ इसलिये था ताकि मुश्रिकीन ख़ुद अपनी ज़ुबान से अपने मा'बूदाने बातिला की कमज़ोरी का ए'तिराफ़ कर लें चुनाँचे उन्होंने किया। जिस पर ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) ने उनसे कहा कि **उफ़्फ़िल्लकुम व लिमा तअबुदून मिन दूनिल्लाहि** स़द अफ़सोस तुम पर और तुम्हारे मा'बूदाने बातिल पर जिनको तुम कमज़ोर कहते हो, मा'बूद बनाए बैठे हो। बीवी को बहन कहना दीनी लिह़ाज़ से था और उसमें कोई शक नहीं कि दुनिया में वो ही एक औरत ज़ात थी जो ऐसे नज़ुक वक़्त मे ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) के हम मज़हब थीं। बहरह़ाल ये तीनों उमूर बज़ाहिर झूठ नज़र आते हैं मगर ह़क़ीक़त के लिह़ाज़ से झूठ बिल्कुल नहीं हैं और अंबिया किराम की ज़ात इससे बिल्कुल बरी होती है कि उनसे झूठ स़ादिर हो। (स़ल्लल्लाहु अ़लैहिम अज्मईन)

बाब 6 : आयत 'व आतैना दाऊद ज़बूरा' की तफ़्सीर या'नी और मैंने दाऊद को ज़बूर अ़ता की

٦– باب قَوْلِهِ : ﴿وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا﴾

ज़बूर दुआओं का एक पाकीज़ा मज्मूआ था जो बत़ौरे इल्हाम ह़ज़रत दाऊद को दिया गया।

4713. मुझसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया और उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दाऊद (अ़लैहि.) पर ज़बूर की तिलावत आसान कर दी गई थी। आप घोड़े पर ज़ीन कसने का हुक्म देते और उससे पहले कि ज़ीन कसी जा चुके, तिलावत से फ़ारिग़ हो जाते थे। (राजेअ़ :2073)

٤٧١٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خُفِّفَ عَلَى دَاوُدَ الْقِرَاءَةُ فَكَانَ يَأْمُرُ بِدَابَّتِهِ لِتُسْرَجَ فَكَانَ يَقْرَأُ قَبْلَ أَنْ يَفْرُغَ)) يَعْنِي: الْقُرْآنَ.

[راجع: ٢٠٧٣]

ह़ज़रत दाऊद (अ़लैहि.) का ये पढ़ना बतौरे मुअ़जज़ा के था। क़ुर्आन मजीद का तीन दिन से कम में ख़त्म करना जाइज़ नहीं बतौरे करामत के मामला अलग है।

बाब 7 : आयत 'कुलिदउल्लज़ीन जअ़म्तुम मिन दूनिही' की तफ़्सीर या'नी,

٧- باب ﴿قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلاَ يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلاَ تَحْوِيلاً﴾

आप कहिए तुम जिनको अल्लाह के सिवा मा'बूद क़रार दे रहे हो, ज़रा उनको पकारो तो सही, सो न वो तुम्हारी कोई तकलीफ़ ही दूर कर सकते हैं और न वो (उसे) बदल ही सकते हैं।

4714. मुझसे अ़म्र बिन अ़ली बिन फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा मुझसे सुलैमान आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने (आयत) इला रब्बिहिमुल वसीलता का शाने नुज़ूल ये है कि कुछ लोग जिन्नों की इबादत करते थे, लेकिन वो जिन्न बाद में मुसलमान हो गये और ये मुश्रिक (कमबख़्त) उन ही की परस्तिश करते जाहिली शरीअ़त पर क़ायम रहे। उ़बैदुल्लाह अश्जई ने इस ह़दीष़ को सुफ़यान से रिवायत किया और उनसे आ'मश ने बयान किया, उसमें यूँ है कि इस आयत कुलिद् उल्लज़ीना का शाने नुज़ूल ये है आख़िर तक। (दीगर मक़ाम : 4715)

٤٧١٤- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﴿إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ﴾ قَالَ: كَانَ نَاسٌ مِنَ الإِنْسِ يَعْبُدُونَ نَاسًا مِنَ الْجِنِّ فَأَسْلَمَ الْجِنُّ وَتَمَسَّكَ هَؤُلاَءِ بِدِينِهِمْ زَادَ الأَشْجَعِيُّ عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الأَعْمَشِ ﴿قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ﴾.

[طرفه في: ٤٧١٥].

बाब 8 : आयत 'उलाइकल्लज़ीन यदऊ़न यब्तगून' की तफ़्सीर या'नी,

٨- باب قوله ﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ﴾ الآيَةَ.

या'नी ये लोग जिनको ये (मुश्रिकीन) पुकार रहे हैं वो (ख़ुद ही) अपने परवरदिगार का तक़र्रुब तलाश कर रहे हैं।

4715. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें

٤٧١٥- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ

सुलैमान आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम नख़्ई ने, उन्हें अबू मअ़मर ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने आयत अल्लज़ीना यदऊ़ना यब्तग़ूना इला रब्बिहिमुल वसीलता की तफ़्सीर में कहा कि कुछ जिन्न ऐसे थे जिनकी आदमी परस्तिश किया करते थे फिर वो जिन्न मुसलमान हो गये। (राजेअ़ : 1714)

عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فِي هَذِهِ الآيَةِ ﴿الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ﴾ قَالَ نَاسٌ مِنَ الْجِنِّ : يَعْبُدُونَ فَأَسْلَمُوا. [راجع: ٤٧١٤]

ऊपर वाली आयत में वही मुराद हैं। वो बुज़ुर्गाने इस्लाम भी इसी ज़ैल में हैं जो मुवह्हिद, अल्लाहपरस्त, मुत्तबअ़े सुन्नत, दीनदार परहेज़गार थे मगर अब अ़वाम ने उनकी क़ब्रों को क़िब्ल-ए-ह़ाजात बना रखा है। वहाँ नज़्र व न्याज़ चढ़ाते और उनसे मुरादें मांगते हैं। ऐसे नामोनिहाद मुसलमानों ने इस्लाम को बदनाम करके रख दिया है, अल्लाह उनको नेक हिदायत नसीब करे। आमीन।

बाब 9 : आयत 'वमा जअ़ल्नर्रुयल्लती अरैनाक इल्ला फ़ित्नतल लिन्नास की तफ़्सीर या'नी,

(मेअ़राज की रात में) मैंने जो मनाज़िर दिखलाए थे। उनको मैंने उन लोगों की आज़माइश का सबब बना दिया।

٩- باب ﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلاَّ فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾

कितने तस्दीक़ करके मोमिन बन गये और कितने तक्ज़ीब करके काफ़िर हो गये।

4716. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत वमा जअ़ल्नर्रुयल्लती अरयनाका इल्ला फ़ित्नतल् लिन्नास में रुअया से आँख का देखना मुराद है (बेदारी में न कि ख़्वाब में) या'नी वो जो आँह़ज़रत (ﷺ) को शबे मेअ़राज में दिखाया गया और शजरे मल्ऊ़ना से थूहर का पेड़ मुराद है। (राजेअ़ : 3888)

٤٧١٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلاَّ فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾ قَالَ : هِيَ رُؤْيَا عَيْنٍ أُرِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ ﴿وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ﴾ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ. [راجع: ٣٨٨٨]

तश्रीह : अहले सुन्नत का मुत्तफ़क़ा अ़क़ीदा है कि मेअ़राजे नबवी ह़ालते बेदारी में हुआ। मक्का से बैतुल मक़्दिस तक मेअ़राज क़ुर्आन शरीफ़ से षाबित है और वहाँ से आसमानों तक स़ह़ीह़ ह़दीष़ है। अहले ह़दीष़ का दोनों पर ईमान है। **रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना मअ़श्शाहिदीन** (अल् माइदह : 83) ये थूहर का पेड़ दोज़ख़ में उगेगा। मुश्रिकों को इस पर तअ़ज्जुब आता था कि आग में पेड़ क्यूँ कर उगेगा। उन्होंने ह़क़ तआ़ला की क़ुदरत पर ग़ौर नहीं किया। समन्दर एक कीड़ा है जो आग में इस त़रह़ ऐश करता है जैसे आदमी हवा में या मछली पानी में। शुतुरमुर्ग़ आग के अंगारे, गरम लोहे के टुकड़े निगल जाता है, इसको मुत्लक़ तकलीफ़ नहीं होती। (वह़ीदी)

बाब 10 : आयत 'इन्ना क़ुर्आनल् फ़ज्रि कान मशहूदा' की तफ़्सीर या'नी,

बेशक सुबह़ की नमाज़ (फ़रिश्तों की ह़ाज़िरी) का वक़्त है। मुजाहिद ने कहा कि (क़ुर्आने फ़ज्र से मुराद) फ़ज्र की नमाज़ है।

١٠- باب قَوْلِهِ ﴿إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا﴾

قَالَ مُجَاهِدٌ : صَلاَةُ الْفَجْرِ

٤٧١٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَابْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَضْلُ صَلاَةِ الْجَمِيعِ عَلَى صَلاَةِ الْوَاحِدِ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ دَرَجَةً، وَتَجْتَمِعُ مَلاَئِكَةُ اللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةُ النَّهَارِ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ)) يَقُولُ أَبُو هُرَيْرَةَ : اقْرَأُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا﴾. [راجع: ١٧٦]

4717. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तन्हा नमाज़ पढ़ने के मुक़ाबले में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत 25 गुना ज़्यादा है और सुबह की नमाज़ में रात के और दिन के फ़रिश्ते इकट्ठे हो जाते हैं। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ो इन्ना क़ुर्आनल् फ़ज्रि काना मशहूदा या'नी फ़ज्र में क़िराते क़ुर्आन किया करो क्योंकि ये नमाज़ फ़रिश्तों की ह़ाजिरी का वक़्त है। (राजेअ़ : 176)

इसमें रात और दिन के दोनों फ़रिश्ते ह़ाज़िर हुए और फिर अपनी अपनी ड्यूटी बदलते हैं।

١١- باب قَوْلِهِ : ﴿عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا﴾.

बाब 11 : आयत 'अ़सा अय्यंब्अ़षका रब्बुक मक़ामम्महमूदा' की तफ़्सीर या'नी,

या'नी क़रीब है कि आपका परवरदिगार आपको मुक़ामे महमूद में उठाएगा।

٤٧١٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ آدَمَ بْنِ عَلِيٍّ، قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: إِنَّ النَّاسَ يَصِيرُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ جُثًا، كُلُّ أُمَّةٍ تَتْبَعُ نَبِيَّهَا يَقُولُونَ: يَا فُلاَنُ اشْفَعْ حَتَّى تَنْتَهِيَ الشَّفَاعَةُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَذَلِكَ يَوْمَ يَبْعَثُهُ اللهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُودَ. [راجع: ١٤٧٥]

4718. मुझसे इस्माईल बिन अबान ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ (सलाम बिन सुलैम) ने बयान किया, उनसे आदम बिन अ़ली ने बयान किया और उन्होंने ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि क़यामत के दिन उम्मतें गिरोह दर गिरोह चलेंगी। हर उम्मत अपने नबी के पीछे होगी और (अंबिया से) कहेगी कि ऐ फ़लाँ! हमारी शफ़ाअ़त करो (मगर वो सब ही इंकार कर देंगे) आख़िर शफ़ाअ़त के लिये नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे तो यही वो दिन है जब अल्लाह तआ़ला आँह़ज़रत (ﷺ) को मुक़ामे महमूद अ़ता करेगा। (राजेअ़ : 1485)

٤٧١٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَيَّاشٍ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ

4719. हमसे अ़ली बिन अ़याश ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐ़ब बिन अबी ह़म्ज़ा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने अज़ान सुनकर ये दुआ पढ़ी, ऐ

अल्लाह! इस कामिल पुकार के रब! और खड़ी होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद (ﷺ) को क़ुर्ब और फ़ज़ीलत अ़ता फ़र्मा और उन्हें मुक़ामे मह्मूद पर खड़ा कीजियो। जिसका तूने उनसे वा'दा किया है तो उसके लिये क़यामत के दिन शफ़ाअ़त ज़रूर होगी। इस ह़दीष़ को ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह ने भी अपने वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) से रिवायत किया है और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 614)

قَالَ حِينَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلاَةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ)): رَوَاهُ حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٦١٤]

इसको इस्माईली ने वस्ल किया। एक रिवायत में यूँ है कि मुक़ामे मह्मूद से ये मुराद है कि अल्लाह तआ़ला आँह़ज़रत (ﷺ) को अपने पास अ़र्श पर बिठाएगा। ऐसी ह़दीष़ों से जहमियों की जान निकलती है और अहले ह़दीष़ की रूह ताज़ा होती है। (वहीदी) मक़ामे मह्मूद से शफ़ाअ़त का मन्सब और मक़ाम भी मुराद लिया गया है और फ़िरदौस बरीं में आपका वो मह्ल भी मुराद है जो सबसे आ़ला व अरफ़अ़ ख़ास़ तौर पर आपके लिये तैयार किया गया है। अल्ग़र्ज़ मुक़ामे मह्मूद एक जामेअ़ लफ़्ज़ है। आ़लम ज़ाहिर व बात़िन में अल्लाह ने अपने ह़बीब (ﷺ) को बहुत से दर्जाते आ़लिया अ़ता किये हैं। या अल्लाह! मौत के बाद अपने ह़बीब (ﷺ) से मुलाक़ात नस़ीब फ़र्माइयो और क़यामत के दिन आपकी शफ़ाअ़त से न स़िर्फ़ मुझको बल्कि बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने वाले सब मुसलमान मर्दों और औ़रतो को सरफ़राज़ फ़र्माइयो। (आमीन)

बाब 12 : आयत 'वक़ुल जाअल्ह़क़्क़ु व ज़हक़ल बात़िल कान ज़हूक़ा' की तफ़्सीर या'नी,

١٢- باب قوله ﴿وَقُلْ: جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا﴾. يَزْهَقُ : يَهْلِكُ.

और आप कह दें कि ह़क़ (अब तो ग़ालिब) आ ही गया और बात़िल मिट गया, बेशक बात़िल तो मिटने वाला ही था। यज़्हक़ु के मा'नी हलाक हुआ।

4720. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी नुजैह ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब मक्का में (फ़त्ह के बाद) दाख़िल हुए तो का'बा के चारों त़रफ़ तीन सौ साठ बुत थे। आँह़ज़रत (ﷺ) अपने हाथ की लकड़ी से हर एक को टकराते जाते और पढ़ते जाते। जाअल ह़क़्क़ु व ज़हक़ल बात़िल इन्नल बात़िल काना ज़हूक़ा जाअल ह़क़्क़ु वमा युब्दिउल् बात़िल वमा युईदु ह़क़ आया और झूठ नाबूद हुआ बेशक झूठ नाबूद होने वाला ही था। (राजेअ़ : 2478)

٤٧٢٠- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلَ النَّبِيُّ ﷺ مَكَّةَ وَحَوْلَ الْبَيْتِ سِتُّونَ وَثَلاَثُمِائَةِ نُصُبٍ، فَجَعَلَ يَطْعُنُهَا بِعُودٍ فِي يَدِهِ وَيَقُولُ: ((﴿جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا﴾ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ)). [راجع: ٢٤٧٨]

बाब 13 : आयत 'यस्अलूनक अनिर्रूहि' की तफ़्सीर

١٣- باب قوله ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ﴾

या'नी और आपसे ये लोग रूह़ की बाबत पूछते हैं।

4721. हमसे ड़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि मुझसे इब्राहीम नख़्ई ने बयान किया, उनसे अ़ल्क़मा ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक खेत में ह़ाज़िर था। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त खजूर के एक तने पर टेक लगाये हुए थे कि कुछ यहूदी उस त़रफ़ से गुज़रे। किसी यहूदी ने अपने दूसरे साथी से कहा कि इनसे रूह़ के बारे में पूछो। उनमें से किसी ने इस पर कहा कि ऐसा क्यूँ करते हो? दूसरा यहूदी बोला, कहीं वो कोई ऐसी बात न कह दें, जो तुमको नापसंद हो राय इस पर ठहरी कि रूह़ के बारे में पूछना ही चाहिये। चुनाँचे उन्होंने आपसे इसके बारे में सवाल किया। आँह़ज़रत (ﷺ) थोड़ी देर के लिये खामोश हो गये और उनकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि इस वक़्त आप (ﷺ) पर वह्य उतर रही है। इसलिये मैं वहीं खड़ा रहा। जब वह्य ख़त्म हुई तो आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, और ये आपसे रूह़ के बारे में सवाल करते हैं। आप कह दें कि रूह़ मेरे परवरदिगार के हुक्म ही से है और तुम्हें इल्म तो थोड़ा ही दिया गया है। (राजेअ : 125)

٤٧٢١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا أَنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرْثٍ وَهُوَ مُتَكِيءٌ عَلَى عَسِيبٍ، إِذْ مَرَّ الْيَهُودُ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ؟ فَقَالَ: مَا رَابَكُمْ إِلَيهِ؟ وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ يَسْتَقْبِلُكُمْ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَهُ فَقَالُوا سَلُوهُ فَسَأَلُوهُ عَنِ الروحِ فَأَمْسَكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِمْ شَيْئًا فَعَلِمْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ فَقُمتُ مَقَامِي فَلَمَّا نَزَلَ الْوَحْيُ قَالَ: ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾.

[راجع: ١٢٥]

तशरीह : रूह़ को अम्रे रब या'नी परवरदिगार का हुक्म फ़र्माया और उसकी ह़क़ीक़त बयान नहीं की क्योंकि अगले पैग़म्बरों ने भी उसकी ह़क़ीक़त बयान नहीं की और यहूदियों ने बाहम यही कहा कि अगर रूह़ की ह़क़ीक़त बयान न करें तो ये बेशक पैग़म्बर हैं। अगर बयान करें तो हम समझ लेंगे कि ह़कीम हैं पैग़म्बर नहीं। इब्ने कष़ीर ने कहा रूह़ एक माद्दा है लत़ीफ़ हवा की त़रह़ और बदन के हर जुज़ में इस त़रह़ हुलूल किये हुए है जैसे पानी हरी भरी शाख़ों में। ये रूहे ह़ैवानी की ह़क़ीक़त है और रूहे इंसानी या'नी नफ़्से नात़िक़ा वो बदन से मुता'ल्लिक़ है हुक्मे इलाही से जब मौत आती है तो ये ता'ल्लुक़ टूट जाता है। तफ़्सील के लिये ह़ज़रत इमाम इब्ने क़य्यिम (रह़) की किताबुर्रूह़ का मुत़ालआ किया जाए। सनद में मज़्कूर अ़ल्क़मा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के आज़ादकर्दा ग़ुलाम हैं। अनस बिन मालिक (रज़ि.) और अपनी वालिदा से रिवाायत करते हैं। उनसे मालिक बिन अनस (रज़ि.) और सुलैमान बिन हिलाल ने रिवायत की है।

बाब 14 : आयत 'व ला तज्हर बिस़लातिक' की तफ़्सीर या'नी,

और आप नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़ें और न (बिल्कुल) चुपके ही चुपके पढ़ें।

١٤- باب قوله ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾

4722. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम बिन बशीर ने बयान किया, कहा हमसे अबू बिश्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला के इर्शाद और आप नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़िये और न (बिलकुल) चुपके ही चुपके, के बारे में फ़र्माया कि ये आयत उस वक़्त नाज़िल हुई थी जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में (काफ़िरों के डर से) छुपे रहते तो उस ज़माने में जब आप अपने स़ह़ाबा के साथ नमाज़ पढ़ते तो क़ुर्आन मजीद की तिलावत बुलंद आवाज़ से करते, मुश्रिकीन सुनते तो क़ुर्आन को भी गाली देते और उसके नाज़िल करने वाले और उसके लाने वाले को भी। इसीलिये अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) से कहा कि आप नमाज़ न तो बहुत पुकारकर पढ़ें (या'नी क़िरात ख़ूब जहर के साथ न करें) कि मुश्रिकीन सुनकर गालियाँ दें और न बिलकुल चुपके-चुपके कि आपके स़ह़ाबा भी न सुन सकें, बल्कि दरम्यानी आवाज़ में पढ़ा करें। (दीगर मक़ाम : 7490, 7525, 7547)

٤٧٢٢- حدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ قَالَ : نَزَلَتْ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ مُخْتَفٍ بِمَكَّةَ كَانَ إِذَا صَلَّى بِأَصْحَابِهِ رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْقُرْآنِ فَإِذَا سَمِعَ الْمُشْرِكُونَ سَبُّوا الْقُرْآنَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ بِهِ فَقَالَ اللهُ تَعَالَى لِنَبِيِّهِ ﷺ ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ﴾ أَيْ بِقِرَاءَتِكَ فَيَسْمَعَ الْمُشْرِكُونَ فَيَسُبُّوا الْقُرْآنَ ﴿وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ عَنْ أَصْحَابِكَ فَلاَ تُسْمِعُهُمْ ﴿وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلاً﴾.

[أطرافه في: ٧٤٩٠، ٧٥٢٥، ٧٥٤٧].

4723. मुझसे त़ल्क़ बिन ग़नाम ने बयान किया, कहा हमसे ज़ायदा बिन क़ुदामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ये आयत दुआ़ के सिलसिले में नाज़िल हुई है। (दीगर मक़ाम : 6327, 7526)

٤٧٢٣- حدَّثَنِي طَلْقُ بْنُ غَنَّامٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : أُنْزِلَ ذَلِكَ فِي الدُّعَاءِ. [طرفاه في: ٦٣٢٧، ٧٥٢٦].

तश्रीह : त़बरी की रिवायत में है कि तशह्हुद में जो दुआ़ की जाती है आयत का नुज़ूल इस बाब में हुआ है मुमकिन है कि ये आयत दो बार उतरी हो। एक बार क़िरात के बारे में, दोबारा दुआ़ के बारे में। इस त़रह़ दोनों रिवायतों में तत़्बीक़ भी हो जाती है। आयत में नमाज़ियों को ए'तिदाल की हिदायत की गई है जो जहरी नमाज़ों के बारे में है। शाने नुज़ूल पिछली ह़दीष़ में मज़्कूर हो चुका है। सनद में मज़्कूर बुज़ुर्ग हिशाम हैं उ़र्वा इब्ने ज़ुबैर के बेटे कुन्नियत अबू मुंज़िर क़ुरैशी और मदनी मशहूर ताबेई अकाबिर उ़लमा और जलीलुल क़द्र ताबेईन में से हैं। 61 हिजरी में पैदा हुए। ख़लीफ़ा मंसूर के यहाँ बग़दाद में आए। 146 हिजरी में बग़दाद ही में इंतिक़ाल फ़र्माया। रह़िमहुल्लाहु रह़मतव् वासिआ।

सूरह कहफ़ की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

मुजाहिद ने कहा तक़्रिज़ुहुम का मा'नी उनको छोड़ देता था (कतरा जाता था) वकाना लहू ष़मरुन में ष़मर से मुराद सोना रुपया है। दूसरों ने कहा ष़मरुन या'नी फल की जमा है।

[١٨] سُورَةُ الْكَهْفِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿تَقْرِضُهُمْ﴾ تَتْرُكُهُمْ ﴿وَكَانَ لَهُ ثُمُرٌ﴾ ذَهَبٌ وَفِضَّةٌ. وَقَالَ غَيْرُهُ:

جَمَاعَةُ الثَّمَرِ ﴿بَاخِعٌ﴾ مُهْلِكٌ ﴿أَسَفًا﴾ نَدَمًا ﴿الْكَهْفُ﴾ الْفَتْحُ فِي الْجَبَلِ، ﴿وَالرَّقِيمُ﴾ الْكِتَابُ : مَرْقُومٌ مَكْتُوبٌ مِنَ الرَّقْمِ ﴿رَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ﴾ أَلْهَمْنَاهُمْ صَبْرًا. ﴿لَوْ لاَ أَنْ رَبَطْنَا عَلَى قَلْبِهَا﴾: ﴿شَطَطًا﴾ إِفْرَاطًا مِرْفَقًا: كُلُّ شَيْءٍ ارْتَفَقْتَ بِهِ تَزَاوَرُ تَمِيلُ مِنَ الزَّوَرِ وَ الأَزْوَرُ الأَمْيَلُ فَجْوَةٌ مُتَّسَعٌ وَالْجَمْعُ فَجَوَاتٌ وَفِجَاءٌ مِثْلُ زَكْوَةٍ وَ زِكَاءٍ ﴿الْوَصِيدُ﴾ الْفِنَاءُ، جَمْعُهُ وَصَائِدُ وَوُصُدٌ وَيُقَالُ الْوَصِيدُ الْبَابُ، مُؤْصَدَةٌ مُطْبَقَةٌ آصَدَ الْبَابَ وَأَوْصَدَ ﴿بَعَثْنَاهُمْ﴾ أَحْيَيْنَاهُمْ. أَزْكَى: أَكْثَرُ وَيُقَالُ أَحَلُّ وَيُقَالُ: أَكْثَرُ رَيْعًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿أُكُلَهَا. وَلَمْ تَظْلِمْ﴾ لَمْ تَنْقُصْ، وَقَالَ سَعِيدٌ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿الرَّقِيمُ﴾ اللَّوْحُ مِنْ رَصَاصٍ كَتَبَ عَامِلُهُمْ أَسْمَاءَهُمْ ثُمَّ طَرَحَهُ فِي خِزَانَتِهِ فَضَرَبَ اللهُ عَلَى آذَانِهِمْ﴾: فَنَامُوا. وَقَالَ غَيْرُهُ وَأَلَتْ تَئِلُ تَنْجُو وَقَالَ مُجَاهِدٌ : مَوْئِلاً : مَحْرِزًا ﴿لاَ يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا﴾ لاَ يَعْقِلُونَ.

बाख़िइन का मा'नी हलाक करने वाला। आसिफ़ा नदामत और रंज से। कह्फ़ु पहाड़ का खोह या ग़ार। अर् रक़ीम के मा'नी लिखा हुआ बमा'नी मरक़ूम। ये इस्म मफ़ऊल का स़ैग़ा है रक़म से। रबत्ना अ़ला क़ुलूबिहिम हमने उनके दिलों मे स़ब्र डाला जैसे सूरह क़स़स़ में है। लवला अर् रबत्ना अ़ला क़ुलूबिहा (वहाँ भी स़ब्र के मा'नी हैं) शतता हद से बढ़ जाना। मिर्फ़क़ा जिस चीज़ पर तकिया लगाए। तज़ावरू ज़ोर से निकला है या'नी झुक जाता था इसी से अज़वरु है। बहुत झुकने वाला। फ़ज्वता कुशादा जगह इसकी जमा फ़ज्वात और फ़ुजाअ आती है जैसे ज़कात की जमा ज़काअ है। और वस़ीद आंगन, स़ेहन इसकी जमा वस़ादतन और वस़दन है। कुछ ने कहा वस़ीद के मा'नी दरवाज़ा मूस़दतुन के मा'नी बंद की हुई अ़रब लोग कहते हैं आस़दल बाब या'नी उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया। बअ़स़्नाहुम हमने उनको ज़िन्दा किया खड़ा कर दिया। अज़्का तआमन और अवस़दुल बाब या'नी जो बस्ती की अकष़र ख़ुराक है या जो खाना ख़ूब हलाल का हो या ख़ूब पककर बढ़ गया हो। उकुलुहा उसका मेवा, ये इब्ने अ़ब्बास ने कहा है। वलम तज़्लिम मेवा कम नहीं हुआ। और सईद बिन जुबैर ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से नक़ल किया। रक़ीम वो एक तख़्ती है सीसे की उस पर उस वक़्त के ह़ाकिम ने अस्ह़ाबे कहफ़ के नाम लिखकर अपने ख़ज़ाने में डाल दी थी। फ़ज़रबल्लाहु अ़ला आज़ानिहिम अल्लाह ने उनके कान बन्द कर दिये। (उन पर पर्दा डाल दिया) वो सो गये। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के सिवा और लोगों ने कहा। मौइल वाला यअिलु से निकला है। या'नी नजात पाए और मुजाहिद ने कहा मौइल मह़्फ़ूज़ मुक़ाम। ला यस्ततीऊना सम्आ के मा'नी वो अ़क़्ल नहीं रखते।

तश्रीह : सूरह कहफ़ क़ुर्आन मजीद की अहमतरीन सूरह शरीफ़ा है जो मक्का में नाज़िल हुई और जिसमें 110 आयात और 12 रुकूअ़ हैं। इसके फ़ज़ाइल में बहुत सी अह़ादीष़ मरवी हैं ख़ास़ त़ौर पर जुम्आ के दिन इसकी तिलावत करना बड़े ष़वाब का मोजिब है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने अपने तर्ज़ के मुत़ाबिक़ यहाँ इस सूरह शरीफ़ा के मुख़्तलिफ़ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी बयान फ़र्माए हैं। कहफ़ के लफ़्ज़ी मा'नी ग़ार के हैं जिसमें पनाह ली जा सके। अस्ह़ाबे कहफ़ वो चंद नौजवान जिन्होंने अपने दीन व ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये पहाड़ के एक ग़ार में छुपकर पनाह पकड़ी थी। आख़िर वो क़यामत तक के लिये इसी में सो गये। उनको अस्ह़ाबुर्रक़ीम भी कहा गया है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा। रक़ीम उस वादी को कहते हैं जहाँ अस्ह़ाबे कहफ़ रहते थे। सईद ने कहा रक़ीम वो तख़्ता है जिस पर अस्ह़ाबे कहफ़ के नाम लिखे हुए हैं। ये तख़्ता ग़ार के पास लगाया गया था। लफ़्ज़े मवस़दा इस सूरत में नहीं बल्कि सूरह हुमज़ा में है। मगर लफ़्ज़े वस़ीद की मुनासबत से इसको यहाँ बयान कर दिया। आयत **ला यस्ततीऊन सम्आ** (अल् कहफ़ 101) के मा'नी ला

यअ़क़िलून या'नी वो अ़क़्ल नहीं रखते ये तफ़्सीर बिल लाज़िम है क्योंकि अ़क़्ल के यही दो आले हैं समअ़ और बस़र जब आँखों पर पर्दा हो, कान बहरे हों तो अ़क़्ल क्या काम कर सकती है। कुछ ने कहा अअ़युन से अ़क़्ल की आँखें मुराद हैं। सनद में मज़्कूर ह़ज़रत मुजाहिद बिन जबर बनू मख़्ज़ूम से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन साइब के आज़ादकर्दा हैं। मक्का के अहले शुह्रत फ़ुक़हा में से हैं क़िरात और तफ़्सीर के इमाम। 100 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। रह़िमहुल्लाहु रह़्मतवं वासिअ़ा (आमीन)

बाब 1 : आयत 'व कानल्इन्सानु अक्स़र शैइन जदला' की तफ़्सीर या'नी,

और इंसान सब चीज़ से बढ़कर झगड़ालू है।

١ - باب قَوْلِهِ ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾

4724. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझे ह़ज़रत अ़ली बिन हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) रात के वक़्त उनके और ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के घर आए और फ़र्माया। तुम लोग तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ते (आख़िर ह़दीस़ तक) रजमम् बिल ग़ैब यानि सुनी सुनाई और उनको ख़ुद कुछ इल्म नहीं फ़ुरुत़ा नदामत शर्मिन्दगी, सुरादिक़ुहा या'नी क़नातों की त़रह़ सब त़रफ़ से उनको आग घेर लेगी जैसे कोठरी को सब त़रफ़ से ख़ैमे घेर लेते हैं। युह़ाविरुहू मुह़ावरति से निकला है (या'नी बातचीत करना तकरार करना) लाकिन्ना हुवल्लाहु रब्बी अस़्ल में लाकिन्ना अना हुवल्लाहु रब्बी था। इन्ना का हम्ज़ा ह़ज़फ़ कर के नून को नून में इदग़ाम कर दिया लकुन्ना हो गया। ख़िलालहुमा नहर या'नी बयनहुमा उनके बीच मे ज़लक़ा चिकना स़ाफ़ जिस पर पांव फिसले (जमे नहीं) हुनालिकल वलायतु वलायतु वली का मस़दर है। उ़क़ुबा आ़क़िबत इसी त़रह़ उ़क़्बा और उ़क़्बत सबका एक ही मा'नी है। या'नी आख़िरत क़िबला और क़ुबुला और क़बला (तीनों तरह़ पढ़ा है) या'नी सामने आना। लियुदह़िज़ू दह़ज़ा से निकला है या'नी फिसलाना (मत़लब ये है कि ह़क़ बात को नाह़क़ करें) (राजेअ़ : 1127)

٤٧٢٤ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ، أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ، أَخْبَرَهُ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ قَالَ: ((أَلاَ تُصَلِّيَانِ؟)) رَجْمًا بِالْغَيْبِ لَمْ يَسْتَبِنْ فُرُطًا: نَدَمًا. سُرَادِقُهَا مِثْلُ السُّرَادِقِ وَالْحُجْرَةِ الَّتِي تُطِيفُ بِالْفَسَاطِيطِ. يُحَاوِرُهُ مِنَ الْمُحَاوَرَةِ، لَكِنَّا هُوَ اللهُ رَبِّي أَيْ لَكِنْ أَنَا هُوَ اللهُ رَبِّي ثُمَّ حَذَفَ الأَلِفَ وَأَدْغَمَ إِحْدَى النُّونَيْنِ فِي الأُخْرَى، وَفَجَّرْنَا خِلاَلَهُمَا نَهَرًا يَقُولُ : بَيْنَهُمَا: زَلَقًا : لاَ يَثْبُتُ فِيهِ قَدَمٌ، هُنَالِكَ الْوَلاَيَةُ : مَصْدَرُ الْوَلِيِّ عُقُبًا: عَاقِبَةً وَعُقْبَى وَعُقْبَةً وَاحِدٌ وَهِيَ الآخِرَةُ، قِبَلاً وَقُبُلاً وَقَبَلاً اسْتِئْنَافًا. لِيُدْحِضُوا لِيُزِيلُوا الدَّحْضُ الزَّلَقُ.

[راجع: ١١٢٧]

तश्रीह : मज़्कूरा ह़दीस़ बाबुत् तहज्जुद में गुज़र चुकी है। इमाम बुख़ारी (रह़) ने इतना टुकड़ा बयान करके पूरी ह़दीस़ की त़रफ़ इशारा कर दिया और इसका ततिम्मा ये है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारी जानें अल्लाह के इख़्तियार में हैं वो जब हमको जगाना चाहेगा जगा देगा ये सुनकर आप लौट गये कुछ नहीं फ़र्माया बल्कि रान पर हाथ मारकर ये आयत पढ़ते जाते थे। **वकानल इंसानु अकस़रा शैइन जदला** (अल कहफ़ : 54)

बाब 2 : आयत 'व इज़ क़ाल मूसा लिफताहू ला अब्रहु' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب ﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ لاَ أَبْرَحُ حَتَّى أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرِينِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا﴾ زمانًا وجمعه أحقاب

लफ़्ज़ हुक़ुबा के मा'नी ज़माना, इसकी जमा अहक़ाब आती है कुछ ने कहा कि एक हक़ब सत्तर या अस्सी साल का होता है।

या'नी वो वक़्त याद कर जब हज़रत मूसा (अलैहि.) ने अपने ख़ादिम जवान से कहा कि मैं बराबर चलता रहूँगा यहाँ तक कि मैं दो दरियाओं के संगम पर पहुँच जाऊँ, या (यूँ ही) सालों-साल तक चलता रहूँ।

٤٧٢٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ ابْنُ جُبَيْرٍ، قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ إِنَّ نَوْفًا الْبِكَالِيَّ يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى صَاحِبَ الْخَضِرِ لَيْسَ هُوَ مُوسَى صَاحِبَ بَنِي إِسْرَائِيلَ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَذَبَ عَدُوُّ اللهِ حَدَّثَنِي أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((إِنَّ مُوسَى قَامَ خَطِيبًا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ فَسُئِلَ أَيُّ النَّاسِ أَعْلَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا فَعَتَبَ اللهُ عَلَيْهِ إِذْ لَمْ يَرُدَّ الْعِلْمَ إِلَيْهِ فَأَوْحَى اللهُ إِلَيْهِ إِنَّ لِي عَبْدًا بِمَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ قَالَ مُوسَى: يَا رَبِّ فَكَيْفَ لِي بِهِ؟ قَالَ: تَأْخُذُ مَعَكَ حُوتًا فَتَجْعَلُهُ فِي مِكْتَلٍ، فَحَيْثُمَا فَقَدْتَ الْحُوتَ فَهُوَ ثَمَّ فَأَخَذَ حُوتًا فَجَعَلَهُ فِي مِكْتَلٍ ثُمَّ انْطَلَقَ وَانْطَلَقَ مَعَهُ بِفَتَاهُ يُوشَعَ بْنِ نُونٍ. حَتَّى إِذَا أَتَيَا الصَّخْرَةَ وَضَعَا رُؤُوسَهُمَا فَنَامَا وَاضْطَرَبَ الْحُوتُ فِي الْمِكْتَلِ فَخَرَجَ مِنْهُ فَسَقَطَ فِي الْبَحْرِ فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا وَأَمْسَكَ

1836. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझे सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कहा नौफ़ बक्काली कहता है (जो कअ़ब अहबार का रबीब था) कि जिन मूसा (अ़लैहि.) की ख़िज़्र (अ़लैहि.) के साथ मुलाक़ात हुई थी वो बनी इस्राईल के (रसूल) हज़रत मूसा (अ़लैहि.) के अ़लावा दूसरे हैं। (या'नी मूसा बिन मैशा बिन इफ़्राषीम बिन यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा दुश्मने अल्लाह ने ग़लत़ कहा। मुझसे हज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि हज़रत मूसा (अ़लैहि.) बनी इस्राईल को वा'ज़ सुनाने के लिये खड़े हुए तो उनसे पूछा गया कि इंसानों मे सबसे ज़्यादा इल्म किसे है? उन्होंने फ़र्माया कि मुझे। इस पर अल्लाह तआ़ला ने उन पर ग़ुस्सा किया क्योंकि उन्होंने इल्म को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ मंसूब नहीं किया था, अल्लाह तआ़ला ने उन्हें वह्य के ज़रिये बताया कि दो दरियाओं (फ़ारस और रूम) के संगम पर मेरा एक बन्दा है जो तुमसे ज़्यादा इल्म रखता है। हज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने अ़र्ज़ किया ऐ रब! मैं उनसे तक कैसे पहुँच पाऊँगा? अल्लाह तआ़ला ने बताया कि अपने साथ एक मछली ले लो और उसे एक जंबील में रख लो, वो जहाँ गुम हो जाए (ज़िन्दा होकर दरिया मे कूद जाए) बस मेरा वो बन्दा वहीं मिलेगा। चुनाँचे आपने मछली ली और ज़ंबील में रखकर रवाना हुए। आपके साथ आपके ख़ादिम यूशअ़ बिन नून भी थे। जब ये दोनों चट्टान के पास आए तो सर रखकर सो गये, इधर मछली जंबील में तड़पी और उससे निकल गई और उसने दरिया में अपना रास्ता पा लिया। मछली जहाँ गिरी थी

اللہ عَنِ الْحُوتِ جِرْيَةَ الْمَاءِ فَصَارَ عَلَيْهِ مِثْلَ الطَّاقِ فَلَمَّا اسْتَيْقَظَ نَسِيَ صَاحِبُهُ أَنْ يُخْبِرَهُ بِالْحُوتِ فَانْطَلَقَا بَقِيَّةَ يَوْمِهِمَا وَلَيْلَتِهِمَا حَتَّى إِذَا كَانَ مِنَ الْغَدِ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ: آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا، قَالَ : وَلَمْ يَجِدْ مُوسَى النَّصَبَ حَتَّى جَاوَزَ الْمَكَانَ الَّذِي أَمَرَ اللہ بِهِ، فَقَالَ لَهُ فَتَاهُ : أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهُ إِلاَّ الشَّيْطَانُ، أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا قَالَ: فَكَانَ لِلْحُوتِ سَرَبًا وَلِمُوسَى وَلِفَتَاهُ عَجَبًا فَقَالَ مُوسَى: ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا قَالَ : رَجَعَا يَقُصَّانِ آثَارَهُمَا حَتَّى انْتَهَيَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِذَا رَجُلٌ مُسَجًّى ثَوْبًا فَسَلَّمَ عَلَيْهِ مُوسَى، فَقَالَ الْخَضِرُ : وَأَنَّى بِأَرْضِكَ السَّلاَمُ قَالَ : أَنَا مُوسَى قَالَ مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ؟ قَالَ : نَعَمْ. أَتَيْتُكَ لِتُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رَشَدًا قَالَ : إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا يَا مُوسَى إِنِّي عَلَى عِلْمٍ مِنْ

अल्लाह तआला ने वहाँ पानी की रवानी को रोक दिया और पानी एक ताक़ की तरह उस पर बन गया (ये हाल यूशअ अपनी आँखों से देख रहे थे) फिर जब हज़रत मूसा (अलैहि.) बेदार हुए तो यूशअ उनको मछली के बारे में बताना भूल गये। इसलिये दिन और रात का जो हिस्सा बाक़ी था उसमें चलते रहे, दूसरे दिन हज़रत मूसा (अलैहि.) ने अपने ख़ादिम से फ़र्माया कि अब खाना लाओ, हमको सफ़र ने बहुत थका दिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हज़रत मूसा (अलैहि.) उस वक़्त तक नहीं थके जब तक वो उस मुक़ाम से न गुज़र चुके जिसका अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया था। अब उनके ख़ादिम ने कहा आपने नहीं देखा जब हम चट्टान के पास थे तो मछली के बारे मे बताना भूल गया था और सिर्फ़ शैतानों ने याद रहने नहीं दिया। उसने तो अजीब तरीक़े से अपना रास्ता बना लिया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मछली ने तो दरिया में अपना रास्ता लिया और हज़रत मूसा (अलैहि.) और उनके ख़ादिम को (मछली का जो निशान पानी में अब तक मौजूद था) देखकर तअज्जुब हुआ। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया कि ये वही जगह थी जिसकी तलाश में हम थे, चुनाँचे दोनो हज़रात पीछे उसी रास्ते से लौटे। बयान किया कि दोनों हज़रात पीछे अपने नक़्शेक़दम पर चलते चलते आख़िर उस चट्टान तक पहुँच गये वहाँ उन्होंने देखा कि एक साहब (ख़िज़्र अलैहि.) कपड़े में लिपटे हुए वहाँ बैठे हैं। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने उन्हें सलाम किया। हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने कहा, (तुम कौन हो?) तुम्हारे मुल्क में सलाम कहाँ से आ गया? मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया कि मैं मूसा हूँ। पूछा, बनी इस्राईल के मूसा? फ़र्माया कि जी हाँ। आपके पास इस ग़र्ज़ से हाज़िर हुआ हूँ ताकि जो हिदायत का इल्म आपको हासिल है वो मुझे भी सिखा दें। हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया, मूसा! आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से एक ख़ास इल्म मिला है जिसे आप नहीं जानते, इसी तरह आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से जो इल्म मिला है वो मैं नहीं जानता। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया इंशाअल्लाह आप मुझे साबिर पाएँगे और मैं किसी मामले में आपके ख़िलाफ़ नहीं करूँगा। हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया, अच्छा अगर आप मेरे साथ चलें तो किसी चीज़ के बारे में सवाल न करें यहाँ

तक कि मैं ख़ुद आपको उसके बारे में न बता दूँ। अब ये दोनों समुन्दर के किनारे किनारे रवाना हुए इतने में एक कश्ती गुज़री, उन्होंने कश्ती वालों से बात की कि उन्हें भी उस पर सवार कर लें। कश्तीवालों ने ह़ज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) को पहचान लिया और किसी किराये के बग़ैर उन्हें सवार कर लिया। जब ये दोनों कश्ती पर बैठ गये तो ह़ज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने कुल्हाड़े से उस कश्ती का एक तख़्ता निकाल डाला। इस पर ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) ने देखा तो ह़ज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) से कहा कि इन लोगों ने हमें बग़ैर किसी किराये के अपनी कश्ती में सवार कर लिया था और आपने उन्हीं की कश्ती चीर डाली ताकि सारे मुसाफ़िर डूब जाएँ। बिला शुब्हा आपने ये बड़ा नागवार काम किया है। ह़ज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया, क्या मैंने आपसे पहले ही न कहा था कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर सकते। ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया जो बात मैं भूल गया था उस पर आप मुझे मुआफ़ कर दें और मेरे मामले में तंगी न करें। बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ये पहली मर्तबा ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) ने भूलकर उन्हें टोका था। रावी ने बयान किया कि इतने में एक चिड़िया आई और उसने कश्ती के किनारे बैठकर समुन्दर में एक मर्तबा अपनी चोंच मारी तो ख़िज़्र (अलैहि.) ने ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) से कहा कि मेरे और आपके इल्म की हैष़ियत अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में इससे ज़्यादा नहीं है जितना इस चिड़िया ने इस समुन्दर के पानी से कम किया है। फिर ये दोनों कश्ती से उतर गये, अभी वो समुन्दर के किनारे चल ही रहे थे कि ह़ज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने एक बच्चे को देखा जो दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था। आपने उस बच्चे का सर अपने हाथ में दबाया और उसे (गर्दन से) उखाड़ दिया और उसकी जान ले ली। ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) इस पर बोले, आपने एक बेगुनाह की जान बग़ैर किसी जान के बदले के ले ली, ये आपने बड़ा नापसंद काम किया। ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया कि मैं तो पहले ही कह चुका था कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर सकते। सुफ़यान बिन उ़ययना (रावी ह़दीष़) ने कहा और ये काम तो पहले से भी ज़्यादा सख़्त था। ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) ने आख़िर इस मर्तबा भी मअ़ज़रत की कि अगर मैंने इसके बाद फिर आपसे कोई सवाल किया तो आप मुझे साथ न रखिएगा। आप मेरा बार बार उ़ज़्र सुन

عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا فَانْطَلَقَا يَمْشِيَانِ عَلَى سَاحِلِ الْبَحْرِ فَمَرَّتْ سَفِينَةٌ فَكَلَّمُوهُمْ أَنْ يَحْمِلُوهُمْ فَعَرَفُوا الْخَضِرَ فَحَمَلُوهُ بِغَيْرِ نَوْلٍ فَلَمَّا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ لَمْ يَفْجَأْ إِلاَّ وَالْخَضِرُ قَدْ قَلَعَ لَوْحًا مِنْ أَلْوَاحِ السَّفِينَةِ بِالْقَدُومِ فَقَالَ لَهُ مُوسَى قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ عَمَدْتَ إِلَى سَفِينَتِهِمْ فَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا قَالَ : أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ : لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا،)) قَالَ : وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((وَكَانَتِ الأُولَى مِنْ مُوسَى نِسْيَانًا، قَالَ : وَجَاءَ عُصْفُورٌ فَوَقَعَ عَلَى حَرْفِ السَّفِينَةِ فَنَقَرَ فِي الْبَحْرِ نَقْرَةً فقال له الخَضِرُ ما عِلْمِي وعِلْمُكَ من علم الله الاَّ مِثْلُ مَا نَقَصَ هذا الْعُصْفُورُ مِنْ هَذَا الْبَحْرِ ثُمَّ خَرَجَا مِنَ السَّفِينَةِ فَبَيْنَاهُمَا يَمْشِيَانِ عَلَى السَّاحِلِ إِذْ أَبْصَرَ الْخَضِرُ غُلاَمًا يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ فَأَخَذَ الْخَضِرُ رَأْسَهُ بِيَدِهِ فَاقْتَلَعَهُ بِيَدِهِ فَقَتَلَهُ، فَقَالَ لَهُ مُوسَى أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَاكِيَةً؟ بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا قَالَ : أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا؟ قَالَ: وَهَذَا أَشَدُّ

مِنَ الأُولَى قَالَ : إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلاَ تُصَاحِبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ قَالَ مَائِلٌ فَقَامَ الْخَضِرُ فَأَقَامَهُ بِيَدِهِ فَقَالَ مُوسَى : قَوْمٌ أَتَيْنَاهُمْ فَلَمْ يُطْعِمُونَا وَلَمْ يُضَيِّفُونَا لَوْ شِئْتَ لاَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا قَالَ : هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ إِلَى قَوْلِهِ ﴿ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا﴾)) فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((وَدِدْنَا أَنَّ مُوسَى كَانَ صَبَرَ حَتَّى يَقُصَّ اللهُ عَلَيْنَا مِنْ خَبَرِهِمَا)) قَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ : فَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقْرَأُ وَكَانَ أَمَامَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ صَالِحَةٍ غَصْبًا وَكَانَ يَقْرَأُ ﴿وَأَمَّا الْغُلاَمُ فَكَانَ - كَافِرًا وَكَانَ - أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ﴾.[راجع: ٧٤]

चुके हैं (इसके बाद मेरे लिये भी उ़ज़्र का कोई मौक़ा न रहेगा) फिर दोनों रवाना हुए, यहाँ तक कि एक बस्ती में पहुँचे और बस्ती वालों से कहा कि हमें अपना मेह्मान बना लो, लेकिन उन्होंने मेज़बानी से इंकार किया, फिर उन्हें बस्ती में एक दीवार दिखाई दी जो बस गिरने ही वाली थी। बयान किया कि दीवार झुक रही थी। ख़िज़्र (अ़लैहि.) खड़े हो गये और दीवार अपने हाथ से सीधी कर दी। मूसा (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि उन लोगों के यहाँ हम आए और उनसे खाने के लिये कहा, लेकिन उन्होंने हमारी मेज़बानी से इंकार किया, अगर आप चाहते तो दीवार के इस सीधा करने के काम पर उज्रत ले सकते थे। ख़िज़्र (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि बस अब मेरे और आपके दरम्यान जुदाई है, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद ज़ालिका तावीलु मालम तस्तति़अ़ अ़लैहि स़ब्रा तक। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, हम तो चाहते थे कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने स़ब्र किया होता ताकि अल्लाह तआ़ला उनके और वाक़ियात हमसे बयान करता। सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) इस आयत की तिलावत करते थे (जिसमें ख़िज़्र अ़लैहि. ने अपने कामों की वजह बयान की है कि) कश्ती वालों के आगे एक बादशाह था जो हर अच्छी कश्ती को छीन लिया करता था और उसकी भी आप तिलावत करते थे कि और वो बच्चा (जिसकी गर्दन ख़िज़्र अ़लैहि. ने तोड़ दी थी) तो वो (अल्लाह के इ़ल्म में) काफ़िर था और उसके वालिदैन मोमिन थे। (राजेअ़ : 74)

तश्रीह : इस त़वील ह़दीष़ मे ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) और ह़ज़रत ख़िज़्र (अ़) के बारे में बहुत सी बातें की गई हैं जिनकी तफ़्सील के लिये कुतुबे तफ़ासीर का मुत़ालआ़ ज़रूरी है। नोफ़ बक्काली जिसका ज़िक्र शुरू में है वो मुसलमान था मगर ह़दीष़ के ख़िलाफ़ कहने पर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उसे अल्लाह का दुश्मन क़रार दिया। कुछ ने कहा कि तग़्लीज़न कहा और ह़क़ीक़ी मा'नी मुराद नहीं है। ग़र्ज़ ह़दीष़ के ख़िलाफ़ चलने वालों को अल्लाह का दुश्मन कह सकते हैं। इ़ल्म की क़द्र ये है कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने ह़ज़रत ख़िज़्र (अ़लैहि.) के इ़ल्म का ज़िक्र सुनते ही शौक़े मुलाक़ात का इज़्हार फ़र्माया और उनसे मिलने की आरज़ू ज़ाहिर की और हर त़रह़ की तकलीफ़े सफ़र वग़ैरह गवारा की। इ़ल्म ऐसी ही चीज़ है जिसके लिये आदमी मश्रिक़ से मग़रिब तक सफ़र करे तो भी बहुत नहीं है। इ़ल्म ही से दुनिया की तमाम क़ौमें दूसरी क़ौमों की जो बेइ़ल्म थीं सरताज बन गईं। अफ़सोस है कि हमारे ज़माने में जैसी बेक़द्री इ़ल्म और आ़लिमों की मुसलमानों में है वैसी किसी क़ौम में नहीं है। इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये सफ़र करना तो कुजा अगर उनमें कोई आ़लिम किसी मुल्क से आ जाता है तो ये उलटे उसके दुश्मन हो जाते हैं उसके निकालने और मअ़ज़ूल कराने की फ़िक्र में रहते है इल्ला माशाअल्लाह! ह़ज़रत ख़िज़्र (अ़लैहि.) ने ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) से जो कुछ कहा उसका मत़लब ये था कि तुम्हारा त़रीक़ और है मेरा त़रीक़

और है। मैं अल्लाह की तरफ़ से ख़ास बातों पर मामूर हूं। तुम हिदायते आम के लिये भेजे गये हो मैं कहाँ तक तुमको समझाता रहूँगा। कुछ कमफ़हम सूफ़ियों ने इस हदीष की शरह में यूँ कहा है कि हज़रत मूसा (अलैहि.) को सिर्फ़ शरीअत का इल्म था और हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) को हक़ीक़त का और हमारे रसूल (ﷺ) को दोनों इल्म मिले थे। ये तक़रीर सहीह नहीं है। हज़रत मूसा (अलैहि.) उलुल अज़्म नबियों में से थे उनको तो हक़ीक़त का इल्म न हो और अदना नामोनिहाद औलिया अल्लाह को हो जाए ये क्यूँकर हो सकता है। इस तरह हज़रत ख़िज़्र को शरीअत का इल्म बिल्कुल न हो तो हक़ीक़त का इल्म क्यूँकर होगा। हक़ीक़त बग़ैर शरीअत के ज़न्दक़ा और इल्हाद है। शरीअते मुहम्मदी में कोई भी अम्र ऐसा नहीं है जो ज़ाहिरी ख़ूबियों के साथ अपने अंदर बहुत सी बातिनी ख़ूबियाँ भी न रखता हो। इस तरह शरीअते इस्लामी ज़ाहिर व बातिन का बेहतरीन मज्मूआ है।

बाब 3 : आयत 'फलम्मा बलगा मज्मअ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قَوْلِهِ

﴿فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا﴾ مَذْهَبًا: يَسْرُبُ يَسْلُكُ وَمِنْهُ ﴿وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ﴾

और जब वो दोनों दो दरियाओं के मिलाप की जगह पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये, मछली ने दरिया में अपना रास्ता बना लिया सरबा रास्ता सरब (फतहतैन) या'नी मज़हब तरीक़, इसी से है, सारिबुन बिन् नहार या'नी (दिन में रास्ता चलने वाला)

٤٧٢٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَهُمْ قَالَ أَخبرني يعلى بن مُسلمٍ وعمرو بن دِينارٍ عن سعيدِ بن جُبَيْرٍ يزيدُ احدهما عَلَى صَاحِبِهِ وَغَيْرُهُمَا قَدْ سَمِعْتُهُ يُحَدِّثُهُ عَنْ سَعِيدٍ قَالَ: إِنَّا لَعِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي بَيْتِهِ إِذْ قَالَ: سَلُونِي؟ قُلْتُ: أَيْ أَبَا عَبَّاسٍ جَعَلَنِي اللهُ فِدَاكَ بِالْكُوفَةِ رَجُلٌ قَاصٌّ يُقَالُ لَهُ نَوْفٌ يَزْعُمُ أَنَّهُ لَيْسَ بِمُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَمَّا عَمْرٌو فَقَالَ لِي قَالَ: قَدْ كَذَبَ عَدُوُّ اللهِ وَأَمَّا يَعْلَى فَقَالَ لِي قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: حَدَّثَنِي أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ قَالَ: قَالَ رسول اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((مُوسَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ذَكَّرَ النَّاسَ يَوْمًا حَتَّى

4726. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यअला बिन मुस्लिम और अम्र बिन दीनार ने ख़बर दी सईद बिन जुबैर से, दोनों में से एक अपने साथ और दीगर रावी के मुक़ाबले में कुछ अल्फ़ाज़ ज़्यादा कहता है और उनके अलावा एक और साहब ने भी सईद बिन जुबैर से सुनकर बयान किया कि उन्होंने कहा हम इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में उनके घर हाज़िर थे। उन्होंने फ़र्माया कि दीन की बातें मुझसे कुछ पूछो। मैंने अर्ज़ किया ऐ अबू अब्बास! अल्लाह आप पर मुझे क़ुर्बान करे कूफ़ा में एक वाइज़ शख़्स नोफ़ नामी है और वो कहता है कि मूसा (अलैहि.) ख़िज़्र (अलैहि.) से मिलने वाले वो नहीं थे जो बनी इस्राईल के पैग़म्बर मूसा (अलैहि.) हुए हैं (इब्ने जुरैज ने बयान किया कि) अम्र बिन दीनार ने तो रिवायत इस तरह बयान की कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा अल्लाह का दुश्मन झूठी बात कहता है और यअला बिन मुस्लिम ने अपनी रिवायत में इस तरह मुझसे बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मुझसे उबई बिन कअब (रज़ि.) ने बयान किया, कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मूसा अल्लाह के रसूल थे एक दिन आपने लोगों (बनी इस्राईल) को ऐसा वा'ज़ फ़र्माया कि

लोगों की आँखों से आंसू निकल पड़े और दिल पसीज गये तो आप (अलैहि.) वापस जाने के लिये मुड़े। उस वक़्त एक शख़्स ने उनसे पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या दुनिया में आपसे बड़ा कोई आलिम है? उन्होंने कहा कि नहीं, इस पर अल्लाह ने मूसा (अलैहि.) पर इताब नाज़िल किया, क्योंकि उन्होंने इल्म की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं की थी। (उनको यूँ कहना चाहिये था कि अल्लाह ही जानता है)। उनसे कहा गया कि हाँ तुमसे भी बड़ा आलिम है। मूसा ने अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार! वो कहाँ है। अल्लाह ने फ़र्माया जहाँ (फ़ारस और रूम के) दो दरिया मिले हैं। मूसा ने अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! मेरे लिये उनकी कोई निशानी ऐसी बतला दे कि मैं उन तक पहुँच जाऊँ। अब अम्र बिन दीनार ने मुझसे अपनी रिवायत इस तरह बयान की कि अल्लाह तआला ने फ़र्माया, जहाँ तुमसे मछली तुम्हारी जंबील से चल दे (वहीं वो मिलेंगे) और यअला ने हदीष इस तरह बयान की कि एक मुर्दा मछली साथ ले लो, जहाँ उस मछली में जान पड़ जाए (वहीं वो मिलेंगे) मूसा (अलैहि.) ने मछली साथ ले ली और उसे एक जंबील में रख लिया। आपने अपने साथी यूशअ से फ़र्माया कि मैं बस तुम्हें इतनी तकलीफ़ देता हूँ कि जब ये मछली जंबील से निकलकर चल दे तो मुझे बताना। उन्होंने अर्ज़ किया कि ये कौनसी बड़ी तकलीफ़ है। इसी की तरफ़ इशारा है अल्लाह तआला के इर्शाद व इज़्क़ाला मूसा लिफ़ताहु में वो फ़ता (रफ़ीक़े सफ़र) यूशअ बिन नून (रज़ि.) थे। सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने अपनी रिवायत में यूशअ का नाम नहीं लिया। बयान किया कि फिर मूसा (अलैहि.) एक चट्टान के साये में ठहर गये जहाँ नमी और ठण्ड थी। उस वक़्त मछली तड़पी और दरिया में कूद गई। मूसा (अलैहि.) सो रहे थे इसलिये यूशअ ने सोचा कि आपको जगाना न चाहिये। लेकिन जब मूसा बेदार हुए तो वो मछली का हाल कहना भूल गये। इसी अर्से में मछली तड़प कर पानी में चली गई। अल्लाह तआला ने मछली की जगह पानी के बहाव को रोक दिया और मछली का निशान पत्थर पर जिस पर से गई थी बन गया। अम्र बिन दीनार ने मुझे (इब्ने जुरैज) से बयान किया कि इसका निशान पत्थर पे बन गया और दोनों अंगूठों और कलिमे की उँगलियों को मिलाकर एक हल्क़ा की तरह

إِذَا فَاضَتِ الْعُيُونُ وَرَقَّتِ الْقُلُوبُ وَلَّى فَأَدْرَكَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: أَيْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ فِي الأَرْضِ أَحَدٌ أَعْلَمُ مِنْكَ؟ قَالَ : لاَ، فَعَتَبَ عَلَيْهِ إِذْ لَمْ يَرُدَّ الْعِلْمَ إِلَى اللهِ قِيلَ بَلَى، قَالَ : أَيْ رَبِّ فَأَيْنَ؟ قَالَ : بِمَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ، قَالَ : أَيْ رَبِّ اجْعَلْ لِي عَلَمًا أَعْلَمُ ذَلِكَ بِهِ - فَقَالَ لِي عَمْرٌو : - قَالَ : حَيْثُ يُفَارِقُكَ الْحُوتُ - وَقَالَ لِي يَعْلَى : قَالَ: ((خُذْ نُونًا مَيِّتًا حَيْثُ يُنْفَخُ فِيهِ الرُّوحُ فَأَخَذَ حُوتًا فَجَعَلَهُ فِي مِكْتَلٍ فَقَالَ لِفَتَاهُ : لاَ أُكَلِّفُكَ إِلاَّ أَنْ تُخْبِرَنِي بِحَيْثُ يُفَارِقُكَ الْحُوتُ قَالَ : مَا كَلَّفْتَ كَثِيرًا؟ فَذَلِكَ قَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ يُوشَعَ بْنِ نُونٍ)) لَيْسَتْ عَنْ سَعِيدٍ قَالَ : ((- فَبَيْنَمَا هُوَ فِي ظِلِّ صَخْرَةٍ فِي مَكَانٍ ثَرْيَانَ إِذْ تَضَرَّبَ الْحُوتُ وَمُوسَى نَائِمٌ فَقَالَ فَتَاهُ : لاَ أُوقِظُهُ حَتَّى إِذَا اسْتَيْقَظَ فَنَسِيَ أَنْ يُخْبِرَهُ وَتَضَرَّبَ الْحُوتُ حَتَّى دَخَلَ الْبَحْرَ فَأَمْسَكَ اللهُ عَنْهُ جِرْيَةَ الْبَحْرِ حَتَّى كَأَنَّ أَثَرَهُ فِي حَجَرٍ - قَالَ لِي عَمْرٌو هَكَذَا كَأَنَّ أَثَرَهُ فِي حَجَرٍ وَحَلَّقَ بَيْنَ إِبْهَامَيْهِ وَاللَّتَيْنِ تَلِيَانِهِمَا ((لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا. قَالَ : قَدْ قَطَعَ اللهُ عَنْكَ النَّصَبَ)) - لَيْسَتْ هَذِهِ عَنْ سَعِيدٍ

उसको बताया। बेदार होने के बाद हज़रत मूसा (अलैहि.) बाक़ी दिन और बाक़ी रात चलते रहे। आख़िर कहने लगे। हमें अब इस सफ़र में थकन हो रही है। उनके ख़ादिम ने अर्ज़ किया, अल्लाह ने आपकी थकन को दूर कर दिया है (और मछली ज़िन्दा हो गई है)। इब्ने जुरैज ने बयान किया कि ये टुकड़ा सईद बिन जुबैर (रज़ि.) की रिवायत में नहीं है। फिर मूसा (अलैहि.) और यूशअ दोनों वापस लौटे और ख़िज़्र (अलैहि.) से मुलाक़ात हुई (इब्ने जुरैज ने कहा) मुझसे उ़ष्मान बिन अबी सुलैमान ने बयान किया कि ख़िज़्र (अलैहि.) दरिया के बीच में एक छोटे से सब्ज़ ज़ीनपोश पर तशरीफ़ रखते थे। और सईद बिन जुबैर ने यूँ बयान किया कि वो अपने कपड़े से तमाम जिस्म लपेटे हुए थे। कपड़े का एक किनारा उनके पैर के नीचे था और दूसरा सर के तले था। मूसा ने पहुँचकर सलाम किया तो ख़िज़्र (अलैहि.) ने अपना चेहरा खोला और कहा, मेरी इस ज़मीन में सलाम का रिवाज कहाँ से आ गया। आप कौन हैं? मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया कि मैं मूसा हूँ। पूछा, मूसा बनी इस्राईल? फ़र्माया कि हाँ! पूछा, आप क्यूँ आए हैं? फ़र्माया कि मेरे आने का मक़्सद ये है कि जो हिदायत का इल्म आपको अल्लाह ने दिया है वो मुझे भी सिखा दें। इस पर ख़िज़्र ने फ़र्माया मूसा क्या आपके लिये ये काफ़ी नहीं है इसका पूरा सीखना आपके लिये मुनासिब नहीं है। इसी तरह आपको जो इल्म ह़ासिल है उसका पूरा सीखना मेरे लिये मुनासिब नहीं। इस अर्सा में एक चिड़िया ने अपनी चोंच से दरिया का पानी लिया तो ख़िज़्र ने फ़र्माया अल्लाह की क़सम! मेरा और आपका इल्म अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में इससे ज़्यादा नहीं है। जितना इस चिड़िया ने दरिया का पानी अपनी चोंच में लिया है। कश्ती पर चढ़ने के वक़्त उन्होंने छोटी छोटी कश्तियाँ देखीं जो एक किनारे वालों को दूसरे किनारे पर ले जाकर छोड़ आती थीं। कश्ती वालों ने ख़िज़्र (अलैहि.) को पहचान लिया और कहा कि ये अल्लाह के स़ालेह़ बन्दे हैं हम उनसे किराया नहीं लेंगे। लेकिन ख़िज़्र (अलैहि.) ने कश्ती में शिगाफ़ कर दिये और उसमें (तख़्तों की जगह) कीलें गाड़ दीं। मूसा (अलैहि.) ने कहा आपने इसलिये उसे फाड़ डाला कि इसके मुसाफ़िरों को डुबो दें बिला शुब्हा आपने एक बड़ा नागवार काम किया है। मुजाहिद ने आयत में इम्रा का तर्जुमा मुन्करा किया है। ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया मैंने पहले ही न कहा था कि आप मेरे साथ स़ब्र नहीं कर

أَخْبَرَهُ - ((فَرَجَعَا فَوَجَدَا خَضِرًا)) قَالَ لِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي سُلَيْمَانَ عَلَى طِنْفِسَةٍ خَضْرَاءَ عَلَى كَبِدِ الْبَحْرِ - قَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ - ((مُسَجًّى بِثَوْبِهِ قَدْ جَعَلَ طَرَفَهُ تَحْتَ رِجْلَيْهِ وَطَرَفَهُ تَحْتَ رَأْسِهِ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ مُوسَى فَكَشَفَ عَنْ وَجْهِهِ وَقَالَ : هَلْ بِأَرْضِي مِنْ سَلاَمٍ مَنْ أَنْتَ؟ قَالَ : أَنَا مُوسَى، قَالَ مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ قَالَ : نَعَمْ. قَالَ: فَمَا شَأْنُكَ؟ قَالَ جِئْتُ لِتُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رَشَدًا قَالَ : أَمَا يَكْفِيكَ أَنَّ التَّوْرَاةَ بِيَدَيْكَ وَأَنَّ الْوَحْيَ يَأْتِيكَ يَا مُوسَى إِنَّ لِي عِلْمًا لاَ يَنْبَغِي لَكَ أَنْ تَعْلَمَهُ وَإِنَّ لَكَ عِلْمًا لاَ يَنْبَغِي لِي أَنْ أَعْلَمَهُ فَأَخَذَ طَائِرٌ بِمِنْقَارِهِ مِنَ الْبَحْرِ وَقَالَ: وَاللهِ مَا عِلْمِي وَمَا عِلْمُكَ فِي جَنْبِ عِلْمِ اللهِ إِلاَّ كَمَا أَخَذَ هَذَا الطَّائِرُ بِمِنْقَارِهِ مِنَ الْبَحْرِ حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ وَجَدَا مَعَابِرَ صِغَارًا تَحْمِلُ أَهْلَ هَذَا السَّاحِلِ إِلَى أَهْلِ هَذَا السَّاحِلِ الآخَرِ عَرَفُوهُ فَقَالُوا عبدُ الله الصالحُ قال قلنا لِسعيدٍ خَضِرٌ قَالَ : نَعَمْ لاَ نَحْمِلُهُ بِأَجْرٍ فَخَرَقَهَا وَوَتَدَ فِيهَا وَتَدًا قَالَ مُوسَى: ﴿أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا﴾ قَالَ مُجَاهِدٌ : مُنْكَرًا، ﴿قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا﴾ كَانَتِ الأُولَى نِسْيَانًا وَالْوُسْطَى شَرْطًا وَالثَّالِثَةُ عَمْدًا، ﴿قَالَ

لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا لَقِيَا غُلاَمًا فَقَتَلَهُ﴾ قَالَ يَعْلَى قَالَ سَعِيدٌ : - ((وَجَدَ غِلْمَانًا يَلْعَبُونَ فَأَخَذَ غُلاَمًا كَافِرًا ظَرِيفًا فَأَضْجَعَهُ ثُمَّ ذَبَحَهُ بِالسِّكِّينِ قَالَ: ﴿أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ﴾ لَمْ تَعْمَلْ بِالْحِنْثِ؟)) وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَرَأَهَا زَكِيَّةً زَاكِيَةً - مُسْلِمَةً كَقَوْلِكَ غُلاَمًا زَكِيًّا ((﴿فَانْطَلَقَا فَوَجَدَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَأَقَامَهُ﴾)) قَالَ سَعِيدٌ بِيَدِهِ هَكَذَا وَرَفَعَ يَدَهُ فَاسْتَقَامَ قَالَ يَعْلَى : حَسِبْتُ أَنَّ سَعِيدًا قَالَ : ((فَمَسَحَهُ بِيَدِهِ فَاسْتَقَامَ ﴿لَوْ شِئْتَ لاَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا﴾)) قَالَ سَعِيدٌ أَجْرًا نَأْكُلُهُ ﴿وَكَانَ وَرَاءَهُمْ﴾ وَكَانَ أَمَامَهُمْ قَرَأَهَا ابْنُ عَبَّاسٍ أَمَامَهُمْ مَلِكٌ يَزْعُمُونَ عَنْ غَيْرِ سَعِيدٍ أَنَّهُ هُدَدُ بْنُ بُدَدٍ وَ الْغُلاَمُ الْمَقْتُولُ اسْمُهُ يَزْعُمُونَ جَيْسُورُ ﴿مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا فَأَرَدْتُ﴾ إِذَا هِيَ مَرَّتْ بِهِ أَنْ يَدَعَهَا لِعَيْبِهَا فَإِذَا جَاوَزُوا أَصْلَحُوهَا فَانْتَفَعُوا بِهَا وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ : سَدُّوهَا بِقَارُورَةٍ وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ : بِالْقَارِ كَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ وَكَانَ كَافِرًا فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا أَنْ يَحْمِلَهُمَا حُبُّهُ عَلَى أَنْ يُتَابِعَاهُ عَلَى دِينِهِ فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً لِقَوْلِهِ ﴿أَقَتَلْتَ نَفْسًا

सकते। मूसा (अ़लैहि.) का पहला सवाल तो भूलने की वजह से था लेकिन दूसरा बतौरे शर्त था और तीसरा क़स्दन उन्होंने किया था। मूसा (अ़लैहि.) ने उस पहले सवाल पर कहा कि जो मैं भूल गया उस पर मुझसे मुवाख़िज़ा न कीजिए और मेरे मामले में तंगी न कीजिए। फिर उन्हें एक बच्चा मिला तो ख़िज़्र (अ़लैहि.) ने उसे क़त्ल कर दिया। यअ़ला ने बयान किया कि सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि ख़िज़्र (अ़लैहि.) को चंद बच्चे मिले जो खेल रहे थे आपने उनमे से एक बच्चे को पकड़ा जो काफ़िर और चालाक था और उसे लिटाकर छुरी से ज़िब्ह कर दिया। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने फ़र्माया, आपने बिला किसी ख़ून के एक बेगुनाह जान को जिसने कि बुरा काम नहीं किया था, क़त्ल कर डाला। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) आयत में ज़किय्यतुन की जगह ज़ाकिया पढ़ा करते थे। बमअ़नी मुस्लिमतन जैसे गुलामन ज़किय्यन में है। फिर वो दोनों बुज़ुर्ग आगे बढ़े तो एक दीवार पर नज़र पड़ी जो बस गिरने ही वाली थी। ख़िज़्र (अ़लैहि.) ने उसे ठीक कर दिया। सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने अपने हाथ से इशारा करके बताया कि इस त़रह़। यअ़ला बिन मुस्लिम ने बयान किया मेरा ख़्याल है कि सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि खिज़्र (अ़लैहि.) ने दीवार पर हाथ फेरकर उसे ठीक कर दिया। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि अगर आप चाहते तो इस पर उज्रत ले सकते थे। सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने इसकी तशरीह़ की कि उज्रत जिसे हम खा सकते। आयत वकान वराअहुम की ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने क़िरात वकाना अमामहुम की या'नी कश्ती जहाँ जा रही थी उस मुल्क में एक बादशाह था। सईद के सिवा दूसरे रावी से उस बादशाह का नाम हदद बिन बदद नक़ल करते हैं और जिस बच्चे को ह़ज़रत ख़िज़्र (अ़लैहि.) ने क़त्ल किया था उसका नाम लोग जैसूर बयान करते हैं। वो बादशाह हर (नई) कश्ती को ज़बरदस्ती छीन लिया करता था। इसलिये मैंने चाहा कि जब ये कश्ती उसके सामने से गुज़रे तो उसके इस ऐब की वजह से उसे न छीने। जब कश्ती वाले उस बादशाह की सल्तनत से गुज़र जाएँगे तो वो ख़ुद उसे ठीक कर लेंगे और उसे काम में लाते रहेंगे। कुछ लोगों का तो ये ख़्याल है कि उन्होंने कश्ती का भरपूर सीसा लगाकर जोड़ा था और कुछ कहते हैं कि तारकोल से जोड़ा था (और जिस बच्चा को क़त्ल कर दिया था) तो उसके वालिदैन मोमिन थे और वो बच्चा

﴿زَكِيَّةً﴾ وَأَقْرَبَ رُحْمًا هُمَا بِهِ أَرْحَمُ مِنْهُمَا بِالأَوَّلِ الَّذِي قَتَلَ خَضِرٌ وَزَعَمَ غَيْرُ سَعِيدٍ أَنَّهُمَا أُبْدِلاَ جَارِيَةً وَأَمَّا دَاوُدُ بْنُ أَبِي عَاصِمٍ فَقَالَ: عَنْ غَيْرِ وَاحِدٍ إِنَّهَا جَارِيَةٌ.

[راجع: ٧٤]

(अल्लाह की तक़्दीर में) काफ़िर था। इसलिये हमें डर था कि कहीं (बड़ा होकर) वो उन्हें भी कुफ़्र में मुब्तला न कर दे कि अपने लड़के से इंतिहाई मुहब्बत उन्हें उसके दीन की इत्तिबाअ़ पर मजबूर कर दे। इसलिये हमने चाहा कि अल्लाह उसके बदले में उन्हें कोई नेक और इससे बेहतर औलाद दे। व अक़्रबा रुह्मा या'नी उसके वालिदैन उस बच्चे पर जो अब अल्लाह तआ़ला उन्हें देगा पहले से ज़्यादा मेहरबान हों जिसे ख़िज़्र (अ़लैहि.) ने क़त्ल कर दिया है। सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा कि उन वालिदैन को उस बच्चे के बदले एक लड़की दी गई थी। दाऊद बिन अबी आ़सिम (रह़) कई रावियों से नक़ल करते हैं कि वो लड़की ही थी। (राजेअ़ : 74)

इस त़वील ह़दीष़ में मूसा व ख़िज़्र (अ़लैहि.) को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) यहाँ सिर्फ़ इसलिये लाए हैं कि इसमें दो दरियाओं के संगम पर ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) और ह़ज़रत ख़िज़्र (अ़लैहि.) के मिलने का ज़िक्र है। जैसा कि आयते मज़्कूरा में बयान हुआ है।

٤- باب قَوْلِهِ :

﴿فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا﴾ إِلَى قَوْلِهِ ﴿عَجَبًا﴾ صُنْعًا: عَمَلاً، حِوَلاً تَحَوُّلاً قَالَ: ﴿ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا﴾ إِمْرًا وَنُكْرًا دَاهِيَةً، يَنْقَضَّ تَنْقَاضُ كَمَا يَنْقَاضُ السِّنُّ. لَتَخِذْتَ وَاتَّخَذْتَ وَاحِدٌ. رُحْمًا مِنَ الرُّحْمِ وَهِيَ أَشَدُّ مُبَالَغَةً مِنَ الرَّحْمَةِ وَنَظُنُّ أَنَّهُ مِنَ الرَّحِيمِ وَتُدْعَى مَكَّةُ أُمَّ رُحْمٍ أَيِ الرَّحْمَةُ تَنْزِلُ بِهَا.

बाब 4 : आयत 'फलम्मा जावज़ा क़ाल लिफ़ताहू आतिना ग़दाअना' की तफ़्सीर या'नी,

या'नी पस जब वो दोनों उस जगह से आगे बढ़ गये तो ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने अपने साथी से फ़र्माया कि हमारा खाना लाओ सफ़र से हमें अब तो थकन होने लगी है। लफ़्ज़े अ़जबा तक लफ़्ज़े सुन्आ अ़मल के मा'नी में है। ह़िवला बमा'नी फिर जाना। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने फ़र्माया यही तो वो चीज़ थी जो हम चाहते थे। चुनाँचे वो दोनों उल्टे पांव वापस लौटे। इम्रा का मा'नी अ़जीब बात, नुकरा का भी यही मा'नी है यन्क़ज़्ज़ु और यन्क़ाज़ु दोनों का एक ही मा'नी है जैसे कहते हैं तन्क़ाज़ुस सिन्न या'नी दांत गिर रहा है लत्तख़ज़्ता और वत्तख़ज़्ता (दोनों रिवायतें हैं) दोनों का मा'नी एक ही है। रुह्मा, रह्म से निकला है जिसके मा'नी बहुत रह्मत तो ये मुबालग़ा है रह्मत का और हम समझते हैं (या लोग समझते हैं) कि ये रह्म से निकला है। इसीलिये मक्का को उम्मु रह्म कहते हैं क्योंकि वहाँ परवरदिगार की रह्मत उतरती है।

٤٧٢٧- حَدَّثَنِي قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنِي سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ،

4727. मुझसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा उनसे अ़म्र

عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ : إِنَّ نَوْفًا الْبَكَالِيَّ يَزْعُمُ أَنَّ مُوسَى نَبِيَّ إِسْرَائِيلَ لَيْسَ بِمُوسَى الْخَضِرِ فَقَالَ : كَذَبَ عَدُوُّ اللهِ حَدَّثَنَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((قَامَ مُوسَى خَطِيبًا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ فَقِيلَ لَهُ أَيُّ النَّاسِ أَعْلَمُ؟ قَالَ: أَنَا فَعَتَبَ اللهُ عَلَيْهِ إِذْ لَمْ يَرُدَّ الْعِلْمَ إِلَيْهِ وَأَوْحَى إِلَيْهِ بَلَى عَبْدٌ مِنْ عِبَادِي بِمَجْمَعِ الْبَحْرَيْنِ هُوَ أَعْلَمُ مِنْكَ، قَالَ : أَيْ رَبِّ كَيْفَ السَّبِيلُ إِلَيْهِ؟ قَالَ : تَأْخُذُ حُوتًا فِي مِكْتَلٍ فَحَيْثُمَا فَقَدْتَ الْحُوتَ فَاتَّبِعْهُ قَالَ: فَخَرَجَ مُوسَى وَمَعَهُ فَتَاهُ يُوشَعُ بْنُ نُونٍ وَمَعَهُمَا الْحُوتُ حَتَّى انْتَهَيَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَنَزَلاَ عِنْدَهَا قَالَ فَوَضَعَ مُوسَى رَأْسَهُ فَنَامَ)) - قَالَ سُفْيَانُ وَفِي حَدِيثِ غَيْرِ عَمْرٍو قَالَ: ((وَفِي أَصْلِ الصَّخْرَةِ عَيْنٌ يُقَالُ لَهَا الْحَيَاةُ لاَ يُصِيبُ مِنْ مَائِهَا شَيْءٌ إِلاَّ حَيِيَ فَأَصَابَ الْحُوتَ مِنْ مَاءِ تِلْكَ الْعَيْنِ قَالَ - فَتَحَرَّكَ وَانْسَلَّ مِنَ الْمِكْتَلِ فَدَخَلَ الْبَحْرَ فَلَمَّا اسْتَيْقَظَ مُوسَى قَالَ لِفَتَاهُ : ﴿آتِنَا غَدَاءَنَا﴾ الآيَةَ قَالَ : وَلَمْ يَجِدِ النَّصَبَ حَتَّى جَاوَزَ مَا أُمِرَ بِهِ قَالَ لَهُ فَتَاهُ يُوشَعُ بْنُ نُونٍ: ﴿أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ﴾ الآيَةَ قَالَ: فَرَجَعَا يَقُصَّانِ فِي آثَارِهِمَا فَوَجَدَا فِي الْبَحْرِ كَالطَّاقِ مَمَرَّ الْحُوتِ فَكَانَ لِفَتَاهُ عَجَبًا

बिन दीनार ने और उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से अ़र्ज़ किया। नोफ़ बक्काली कहते हैं कि मूसा (अ़लैहि.) जो अल्लाह के नबी थे वो नहीं हैं जिन्होंने ख़िज़्र (अ़लैहि.) से मुलाक़ात की थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह के दुश्मन ने ग़लत बात कही है। हमसे ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मूसा (अ़लैहि.) बनी इस्राईल को वा'ज़ करने के लिये खड़े हुए तो उनसे पूछा गया कि सबसे बड़ा आ़लिम कौन शख़्स है? मूसा (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि मैं हूँ। अल्लाह तआ़ला ने उस पर गुस्सा किया, क्योंकि उन्होंने इल्म की निस्बत अल्लाह की त़रफ़ नहीं की थी और उनके पास वह्य भेजी कि हाँ! मेरे बन्दों में से एक बन्दा दो दरियाओं के मिलने की जगह पर है और वो तुमसे बड़ा आ़लिम है। मूसा (अ़लैहि.) ने अ़र्ज़ किया ऐ परवरदिगार! उन तक पहुँचने का त़रीक़ा क्या होगा? अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि एक मछली ज़ंबील में साथ ले लो। फिर जहाँ वो मछली गुम हो जाए वहीं उन्हें तलाश करो। बयान किया कि मूसा (अ़लैहि.) निकल पड़े और आपके साथ आपके रफ़ीक़े सफ़र यू शअ़ बिन नून (रज़ि.) भी थे। मछली साथ थी। जब चट्टान तक पहुँचे तो वहाँ ठहर गये। मूसा (अ़लैहि.) अपना सर रखकर वहीं सो गये, अ़म्र की रिवायत के सिवा दूसरी रिवायत के ह़वाले से सुफ़यान ने बयान किया कि उस चट्टान की जड़ में एक चश्मा था, जिसे ह़यात कहा जाता था। जिस चीज़ पर भी उसका पानी पड़ जाता वो ज़िन्दा हो जाती थी। उस मछली पर भी उसका पानी पड़ा तो उसके अंदर ह़रकत पैदा हो गई और वो अपनी ज़ंबील से निकलकर दरिया में चली गई। मूसा (अ़लैहि.) जब बेदार हुए तो उन्होंने अपने साथी से फ़र्माया कि हमारा नाश्ता लाओ... अल् आयत... बयान किया कि सफ़र में मूसा (अ़लैहि.) को उस वक़्त तक कोई थकन नहीं हुई जब तक वो मुक़र्ररा जगह से आगे नहीं बढ़ गये। रफ़ीक़े सफ़र यूशअ़ बिन नून ने कहा, आपने देखा जब हम चट्टान के नीचे बैठे हुए थे तो मैं मछली के बारे में कहना भूल गया, अल् आयत। बयान किया कि फिर वो दोनो उल्टे पांव वापस लौटे। देखा कि जहाँ मछली पानी में गिरी थी वहाँ उसके गुज़रने की जगह त़ाक़ की सी सूरत बनी हुई है। मछली तो पानी में चली गई थी लेकिन यूशअ़ बिन नून

(रज़ि.) को इस तरह पानी के रुक जाने पर तअज्जुब था। जब चट्टान पर पहुँचे तो देखा कि एक बुज़ुर्ग कपड़े में लिपटे हुए वहाँ मौजूद हैं। हज़रत मूसा (अलैहि.) ने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने फ़र्माया कि तुम्हारी ज़मीन में सलाम कहाँ से आ गया। आप ने फ़र्माया, मैं मूसा (अलैहि.) हूँ। पूछा बनी इस्राईल के मूसा? फ़र्माया कि जी हाँ! हज़रत मूसा (अलैहि.) ने उनसे कहा क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ ताकि जो हिदायत का इल्म अल्लाह तआला ने आपको दिया है वो आप मुझे भी सिखा दें। हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने जवाब दिया कि आपको अल्लाह की तरफ़ से ऐसा इल्म हासिल है जो मैं नहीं जानता और इसी तरह मुझे अल्लाह की तरफ़ से ऐसा इल्म हासिल है जो आप नहीं जानते। मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया, लेकिन मैं आपके साथ रहूँगा। ख़िज़्र (अलैहि.) ने इस पर कहा कि अगर आपको मेरे साथ रहना ही है तो फिर मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछिएगा, मैं ख़ुद आपको बताऊँगा। चुनाँचे दोनों हज़रात दरिया के किनारे रवाना हुए, उनके क़रीब से एक कश्ती गुज़री तो हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) को कश्ती वालों ने पहचान लिया और अपनी कश्ती में उनको बग़ैर किराये के चढ़ा लिया। दोनों कश्ती मे सवार हो गये। बयान किया कि इसी अ़र्से में एक चिड़िया कश्ती के किनारे आकर बैठी और उसने अपनी चोंच को दरिया में डाला तो ख़िज़्र (अलैहि.) ने मूसा (अलैहि.) से फ़र्माया कि मेरा, आपका और तमाम मख़्लूक़ात का इल्म अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में इससे ज़्यादा नहीं है जितना इस चिड़िया ने अपनी चोंच में दरिया का पानी लिया है। बयान किया कि फिर एकदम जब हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने बसौला उठाया और कश्ती को फाड़ डाला तो हज़रत मूसा (अलैहि.) उस तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़र्माया इन लोगों ने हमें बग़ैर किसी किराये के अपनी कश्ती में सवार कर लिया था और आपने उसका बदला ये दिया है कि उनकी कश्ती ही चीर डाली ताकि उसके मुसाफ़िर डूब मरें। बिला शुब्हा आपने बड़ा ना मुनासिब काम किया है। फिर वो दोनों आगे बढ़े तो देखा कि एक बच्चा जो बहुत से दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था, हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) ने उसका सर पकड़ा और काट डाला। इस पर हज़रत मूसा (अलैहि.) बोल पड़े कि आपने बिला किसी ख़ून व बदला के एक मा'सूम बच्चे की जान ले ली, ये तो बड़ी बुरी

وَلِلْحُوتِ سَرَبًا قَالَ : فَلَمَّا انْتَهَيَا إِلَى الصَّخْرَةِ إِذَا هُمَا بِرَجُلٍ مُسَجًّى بِثَوْبٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ مُوسَى قَالَ: وَأَنَّي بِأَرْضِكَ السَّلاَمُ؟ فَقَالَ: أَنَا مُوسَى. قَالَ: مُوسَى بَنِي إِسْرَائِيلَ؟ قَالَ: نَعَمْ، قَالَ : هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عُلِّمْتَ رَشَدًا؟ قَالَ لَهُ الْخَضِرُ : يَا مُوسَى إِنَّكَ عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللهِ عَلَّمَكَهُ اللهُ لاَ أَعْلَمُهُ وَأَنَا عَلَى عِلْمٍ مِنْ عِلْمِ اللهِ عَلَّمَنِيهِ اللهُ لاَ تَعْلَمُهُ قَالَ : بَلْ أَتَّبِعُكَ قَالَ : فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلاَ تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا فَانْطَلَقَا يَمْشِيَانِ عَلَى السَّاحِلِ فَمَرَّتْ بِهَا سَفِينَةٌ فَعُرِفَ الْخَضِرُ فَحَمَلُوهُمْ فِي سَفِينَتِهِمْ بِغَيْرِ نَوْلٍ)) — يَقُولُ بِغَيْرِ أَجْرٍ — ((فَرَكِبَا فِي السَّفِينَةَ قَالَ : وَوَقَعَ عُصْفُورٌ عَلَى حَرْفِ السَّفِينَةِ فَغَمَسَ مِنْقَارَهُ الْبَحْرَ فَقَالَ الْخَضِرُ: لِمُوسَى مَا عِلْمُكَ وَعِلْمِيْ وَعِلْمُ الْخَلاَئِقِ فِي عِلْمِ اللهِ إِلاَّ مِقْدَارُ مَا غَمَسَ هَذَا الْعُصْفُورُ مِنْقَارَهُ قَالَ : فَلَمْ يَفْجَأْ مُوسَى إِذْ عَمَدَ الْخَضِرُ إِلَى قَدُومٍ فَخَرَقَ السَّفِينَةَ فَقَالَ لَهُ مُوسَى. قَوْمٌ حَمَلُونَا بِغَيْرِ نَوْلٍ عَمَدْتَ إِلَى سَفِينَتِهِم فَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ الآيَةَ فَانْطَلَقَا إِذَا هُمَا بِغُلاَمٍ يَلْعَبُ مَعَ الْغِلْمَانِ فَأَخَذَ الْخَضِرُ بِرَأْسِهِ فَقَطَعَهُ قَالَ لَهُ مُوسَى أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا﴾

बात है। ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया, मैंने आपसे पहले ही नहीं कह दिया थाकि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते, अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, पस उस बस्ती वालों ने उनकी मेज़बानी से इंकार कर दिया, फिर उसी बस्ती में उन्हें एक दीवार दिखाई दी जो बस गिरने ही वाली थी, ख़िज़्र (अलैहि.) ने अपना हाथ यूँ उस पर फेरा और उसे सीधा कर दिया। मूसा (अलैहि.) ने फ़र्माया हम इस बस्ती में आए तो इन्होंने हमारी मेज़बानी से इंकार किया और हमे खाना भी नहीं दिया अगर आप चाहते तो इस पर उज्रत ले सकते थे। ख़िज़्र (अलैहि.) ने फ़र्माया बस यहाँ से अब मेरे और आपके दरम्यान जुदाई है और मैं आपको इन कामों की वजह बताऊँगा जिन पर आप सब्र नहीं कर सके थे। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। काश! मूसा (अलैहि.) ने सब्र किया होता और अल्लाह तआ़ला उनके सिलसिले मे और वाक़ियात हमसे बयान करता। बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वकाना वराअहुम मलिकुयँ की बजाय, वकाना अमामहुम मलिकुय्याखुज़ू कुल्ला सफ़ीनतिन् सालिहृतिन ग़स्बा क़िरात करते थे और वो बच्चा (जिसे क़त्ल किया था) उसके वालिदैन मोमिन थे। और ये बच्चा (मशिय्यते इलाही में) काफ़िर था। (राजेअ़ : 74)

قَالَ : ﴿أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا﴾ إِلَى قَوْلِهِ فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَّ فَقَالَ بِيَدِهِ هَكَذَا فَأَقَامَهُ فَقَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّا دَخَلْنَا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَلَمْ يُضَيِّفُونَا وَلَمْ يُطْعِمُونَا لَوْ شِئْتَ لاَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا قَالَ : ﴿هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا﴾ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((وَدِدْنَا أَنَّ مُوسَى صَبَرَ حَتَّى يُقَصَّ عَلَيْنَا مِنْ أَمْرِهِمَا)). قَالَ : وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقْرَأُ وَكَانَ أَمَامَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ صَالِحَةٍ غَصْبًا وَأَمَّا الْغُلاَمُ فَكَانَ كَافِرًا.

[راجع: ٧٤]

बाब 5 : आयत 'क़ुल हल नुनब्बिउकुम बिल्अख़सरीन आ़माला' की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قَوْلِهِ ﴿قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالأَخْسَرِينَ أَعْمَالاً﴾.

क्या मैं तुमको ख़बरें दूं उन बदबख़्तों के बारे में जो अपने आ'माल के ए'तिबार से सरासर घाटे में हैं।

4728. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे मुस़अ़ब बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि.) से आयत क़ुल हल नुनब्बिउकुम बिल अख़सरीना आ़माला के बारे में सवाल किया कि उनसे कौन लोग मुराद हैं। क्या उनसे ख़वारिज मुराद हैं? उन्होंने कहा कि नहीं, उससे मुराद यहूद व नसारा हैं। यहूद ने तो मुहम्मद (ﷺ) की तक्ज़ीब की और नसारा ने जन्नत का इंकार किया और कहा कि उसमें खाने पीने की कोई चीज़ नहीं मिलेगी और ख़वारिज वो हैं जिन्होंने अल्लाह के अ़हद व

٤٧٢٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ مُصْعَبٍ قَالَ: سَأَلْتُ أَبِي ﴿قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالأَخْسَرِينَ أَعْمَالاً﴾ هُمُ الْحَرُورِيَّةُ قَالَ : لاَ هُمُ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى أَمَّا الْيَهُودُ فَكَذَّبُوا مُحَمَّدًا ﷺ وَأَمَّا النَّصَارَى فَكَفَرُوا بِالْجَنَّةِ، وَقَالُوا: لاَ طَعَامَ فِيهَا وَلاَ شَرَابَ وَالْحَرُورِيَّةُ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَكَانَ

मीष़ाक़ को तोड़ा। ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) उन्हें फ़ासिक़ कहा करते थे।

سَعْدٌ يُسَمِّيهِمُ الْفَاسِقِينَ.

तशरीह़ : हरूरिया फ़िर्क़ा ख़्वारिज ही का नाम है जिन्होंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से मुक़ाबला किया था ये लोग हरूर नाम के एक गांव मे जमा हुए थे जो कूफ़ा के क़रीब था। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने निकाला कि इब्ने कवा जो उन ख़ारज़ियों का रईस था ह़ज़रत अ़ली(रज़ि.) से पूछने लगा कि अल् अख्सरीना आमाला कौन लोग हैं। उन्होंने कहा कि कमबख़्त ये हरूर वाले उन ही में दाख़िल हैं। ईसाई कहते थे कि जन्नत सिर्फ़ रूहानी लज़्ज़तों की जगह है ह़ालाँकि उनका ये क़ौल बिलकुल बातिल है। क़ुर्आन मजीद में दोज़ख़ और जन्नत के ह़ालात को इस अ़क़ीदे के साथ पेश किया गया है कि वहाँ के ऐशो–आराम और अ़ज़ाब दुख तकलीफ़ सब दुनियावी ऐशो–आराम दुख तकलीफ़ की त़रह़ जिस्मानी त़ौर पर होंगे और उनका इंकार करने वाला क़ुर्आन का मुंकिर है।

बाब 6 : आयत 'उलाइकल्लज़ीन कफरू बिआयाति रब्बिहिम ' की तफ़्सीर,

या'नी ये वो लोग हैं जिन्होने अपने परवरदिगार की निशानियों को और उसकी मुलाक़ात को झुठलाया। पस उनके तमाम नेक आमाल उल्टे बर्बाद हो गये।

٦- باب ﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ﴾ الآيَةَ.

4729. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ज़ह्ली ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। बिला शुब्हा क़यामत के दिन एक बहुत भारी भरकम मोटा ताज़ा शख़्स़ आएगा लेकिन वो अल्लाह के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी कोई क़द्र नहीं रखेगा और फ़र्माया कि पढ़ो। फ़ला नुक़ीमु लहुम यौमल क़ियामति वज़्ना (क़यामत के दिन हम उनका कोई वज़न न करेंगे) इस ह़दीष़ को मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने यह़्या बिन बुकैर से, उन्होंने मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान से, उन्होंने अबुज़्ज़िनाद से ऐसा ही रिवायत किया।

٤٧٢٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنِي أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّهُ لَيَأْتِي الرَّجُلُ الْعَظِيمُ السَّمِينُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لاَ يَزِنُ عِنْدَ اللَّهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ)) وَقَالَ: ((اقْرَؤُوا ﴿فَلاَ نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا﴾)). وَعَنْ يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ.

सूरह 19 : काफ हा या ऐन स़ॉद की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

ये सूरत मक्की है, इसमें 98 आयात और छः रुकूअ हैं।

[١٩] سُورَةُ كهيعص

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा अस्मिअ़ बिहिम व अब्स़िर ये अल्लाह फ़र्माता है आज के दिन (या'नी दुनिया में) न तो काफ़िर सुनते हैं न देखते हैं बल्कि खुली हुई गुमराही में हैं। मतलब

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرِ اللَّهُ يَقُولُهُ: وَهُمُ الْيَوْمَ لاَ يَسْمَعُونَ وَلاَ يُبْصِرُونَ فِي ضَلاَلٍ مُبِينٍ يَعْنِي قَوْلَهُ أَسْمِعْ

بِهِمْ وَأَبْصِرِ الْكُفَّارُ يَوْمَئِذٍ أَسْمَعُ شَيْءٍ وَأَبْصَرُهُ، لأَرْجُمَنَّكَ: لأَشْتِمَنَّكَ، وَرِئْيًا: مَنْظَرًا. وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ : عَلِمَتْ مَرْيَمُ أَنَّ التَّقِيَّ ذُو نُهْيَةٍ، حَتَّى قَالَتْ : ﴿إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا﴾ وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : تَؤُزُّهُمْ أَزًّا تُزْعِجُهُمْ إِلَى الْمَعَاصِي إِزْعَاجًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : إِدًّا عِوَجًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : وِرْدًا. عِطَاشًا. أَثَاثًا : مَالاً. إِدًّا قَوْلاً عَظِيمًا، رِكْزًا: صَوْتًا، غَيًّا: خُسْرَانًا، بُكِيًّا : جَمَاعَةُ بَاكٍ. صِلِيًّا: صَلَى يَصْلَى. نَدِيًّا وَالنَّادِي: مَجْلِسًا.

ये है कि अस्मिअ बिहिम व अब्सिर या'नी काफ़िर क़यामत के दिन ख़ूब सुनते और देखते होंगे (मगर उस वक़्त का सुनना देखना कुछ फ़ायदा न देगा) लअर् जुमन्नका मैं तुझ पर गालियों का पथराव करूँगा । लफ़्ज़े रिअया के मा'नी मंज़र (दिखावा) और अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा ने कहा मरयम जानती थीं कि जो परहेज़गार होता है वो साहिबे अ़क़्ल होता है। इसीलिये उन्होंने कहा मैं तुझसे अल्लाह की पनाह चाहती हूँ अगर तू परहेज़गार है। और सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा तो तउज़्ज़ुहुम अज़्ज़ा का मा'नी ये है कि शैत़ान काफ़िरा को गुनाहों की त़रफ़ घसीटते हैं। मुजाहिद ने कहा अदा के मा'नी कज और टेढ़ी ग़लत़ बात (या कज और टेढ़ी बातें) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा विर्दा के मा'नी प्यासे के हैं और अषाषा के मा'नी माल अस्बाब। इद्दा बड़ी बात। रिक्ज़ा हल्की पस्त आवाज़। ग़य्या नुक़्सान टूटा। बुकिय्या बाकी की जमा है या'नी रोने वाले। स़िलिय्या मस़्दर है। स़ला यस़्ला बाब समिअ यस्मअ़ से या'नी जलना, नदिय्या और नादी दोनों के मा'नी मज्लिस के हैं।

काफ़ हा या ऐन स़ाद हुरूफ़े मुक़त़्तआत से हैं, उनके ह़क़ीक़ी मा'नी सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है और यहाँ क्या मुराद है उसका इ़ल्म भी सिर्फ़ अल्लाह ही को है।

बाब 1 : आयत 'व अन्ज़िर्हुम यौमल्ह़स्रति' की तफ़्सीर

١ - باب ﴿وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ﴾

या'नी, ऐ रसूल! इन काफ़िरों को ह़सरतनाक दिन से डराइये।

٤٧٣٠ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يُؤْتَى بِالْمَوْتِ كَهَيْئَةِ كَبْشٍ أَمْلَحَ فَيُنَادِي مُنَادٍ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ فَيَشْرَئِبُّونَ وَيَنْظُرُونَ فَيَقُولُ : هَلْ تَعْرِفُونَ هَذَا ؟ فَيَقُولُونَ : نَعَمْ. هَذَا الْمَوْتُ وَكُلُّهُمْ قَدْ رَآهُ فَيُذْبَحُ، ثُمَّ يَقُولُ : يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ خُلُودٌ فَلاَ مَوْتَ وَيَا أَهْلَ النَّارِ خُلُودٌ فَلاَ مَوْتَ)) ثُمَّ قَرَأَ : ﴿وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الأَمْرُ وَهُمْ فِي

4730. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने, हमसे आ'मश ने, हमसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन मौत एक चितकबरे मेंढे की शक्ल में लाई जाएगी। एक आवाज़ देने वाला फ़रिश्ता आवाज़ देगा कि ऐ जन्नत वालों! तमाम जन्नती गर्दन उठा उठाकर देखेंगे, आवाज़ देने वाला फ़रिश्ता पूछेगा। तुम इस मढे को भी पहचानते हो? वो बोलेंगे कि हाँ! ये मौत है और उनसे हर शख़्स़ उसका ज़ायक़ा चख चुका होगा। फिर उसे ज़िब्ह कर दिया जाएगा और आवाज़ देने वाला जन्नतियों से कहेगा कि अब तुम्हारे लिये हमेशगी है, मौत तुम पर कभी न आएगी और ऐ जहन्नम वालों! तुम्हें भी हमेशा इसी त़रह रहना है, तुम पर भी मौत कभी नहीं आएगी। फिर आपने ये आयत तिलावत की, व अन्ज़िर हुम यौमल हसरति

غَفْلَةٍ﴾ وَهَؤُلاَءِ فِي غَفْلَةٍ أَهْلُ الدُّنْيَا وَهُمْ لاَ يُؤْمِنُونَ)).

अल्अख़ (और इन्हे हसरतनाक दिन से डराओ। जबकि अख़ीर फ़ैसला कर दिया जाएगा और ये लोग ग़फ़लत में पड़े हुए हैं (या'नी दुनियादार लोग) और ईमान नहीं लाते।

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) सअ़द बिन मालिक अंसारी (रज़ि.) हैं, ह़ाफ़िज़े ह़दीष़ थे 74 हिजरी में ब-उ़म्र 84 साल इंतिक़ाल किया और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न हुए। (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व अरज़ाहु)

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ﴾

बाब 2 : आयत 'व मा नतनज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बिक' की तफ़्सीर

या'नी हम फ़रिश्ते नहीं उतरते मगर तेरे रब के हुक्म से।

٤٧٣١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِجِبْرِيلَ: ((مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَزُورَنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا؟)) فَنَزَلَتْ: ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا﴾.
[راجع: ٣٢١٨]

4731. हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन ज़र ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जिब्रईल (अ़लैहि.) से फ़र्माया। जैसा कि अब आप हमारी मुलाक़ात को आया करते हैं, इससे ज़्यादा आप हमसे मिलने के लिये क्यूँ नहीं आया करते? इस पर ये आयत नाज़िल हुई, वमा नतनज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बिक अल्अख़ या'नी हम फ़रिश्ते नाज़िल नहीं होते बजुज़ आपके परवरदिगार के हुक्म के, उसी की मिल्क है जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे हैं। (राजेअ़ : 3218)

या'नी हम फ़रिश्ते परवरदिगार के हुक्म के ताबेअ़ हैं जब हुक्म होता है उस वक़्त उतरते हैं हम ख़ुद मुख़्तार नहीं हैं।

٣- باب قَوْلِهِ : ﴿أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ : لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا﴾

बाब 3 : आयत 'अफ़रअयतल्लज़ी कफ़र बिआयातिना' की तफ़्सीर या'नी,

भला तुमने उस शख़्स को भी देखा जो हमारी आयतों का इंकार करता है।

٤٧٣٢- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: سَمِعْتُ خَبَّابًا قَالَ: جِئْتُ الْعَاصَ بْنَ وَائِلٍ السَّهْمِيَّ أَتَقَاضَاهُ حَقًّا لِي عِنْدَهُ فَقَالَ: لاَ أُعْطِيكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: لاَ. حَتَّى تَمُوتَ ثُمَّ تُبْعَثَ قَالَ : وَإِنِّي لَمَيِّتٌ ثُمَّ مَبْعُوثٌ قُلْتُ : نَعَمْ. قَالَ : إِنَّ لِي هُنَاكَ مَالاً وَوَلَدًا فَأَقْضِيكَهُ فَنَزَلَتْ هَذِهِ

4732. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा (मुस्लिम बिन सबीह़) ने, उनसे मसरूक़ बिन अज्दअ़ ने बयान किया कि मैंने ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं आ़स बिन वाइल सहमी के पास अपना ह़क़ मांगने गया तो वो कहने लगा कि जब तक तुम मुहम्मद (ﷺ) से कुफ़्र नहीं करोगे मैं तुम्हें मज़दूरी नहीं दूँगा। मैंने इस पर कहा कि ये कभी नहीं कर सकता। यहाँ तक कि तुम मरने के बाद फिर ज़िन्दा किये जाओ। इस पर वो बोला, क्या मरने के बाद फिर मुझे ज़िंदा किया जाएगा? मैंने कहा हाँ! ज़रूर। कहने लगा कि फिर

الآيَةَ : ﴿أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ: لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا﴾ رَوَاهُ الثَّوْرِيُّ وَشُعْبَةُ، وَحَفْصٌ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ، وَوَكِيعٌ عَنِ الأَعْمَشِ.

[راجع: ٢٠٩١]

वहाँ भी मेरे पास माल औलाद होगी और मैं वहीं तुम्हारी मज़दूरी भी दे दूँगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि अफ़रअयतल् लज़ी कफ़रा बिआयातिना व क़ाल लउतयन्ना मालव्व वलदा (भला आपने उस शख़्स को भी देखा जो हमारी निशानियों का इंकार करता है और कहता है कि मुझे माल और औलाद मिलकर रहेंगे) इस हदीष़ को सुफ़यान ष़ौरी और शुअ़बा और ह़फ़्स़ और अबू मुआ़विया और वकीअ़ ने भी आ'मश से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 2091)

तश्रीह : ख़ब्बाब (रज़ि.) लोहारी का काम करते थे और आ़स़ बिन वाइल काफ़िर ने उनसे एक तलवार बनवाई थी उसकी मज़दूरी बाक़ी थी वही मांगने गये थे। अम्र बिन आ़स़ मशहूर स़ह़ाबी उस काफिर के लड़के हैं। ये वाक़िया मक्का का है। ऐसे कुफ़्फ़ार ना हन्जार आज भी बकष़रत मौजूद हैं।

٤- باب قَوْلِهِ : ﴿أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا﴾ قال موثقا

बाब 4 : आयत 'अत्तलअ़ल् ग़ैब अमित्तख़ज़ इन्दर्रह्मानि अ़हदा' की तफ़्सीर या'नी,

क्या वो ग़ैब पर आगाह होता है या उसने अल्लाह रह़मान से कोई अ़हदनामा ह़ासिल कर लिया है।

٤٧٣٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ: كُنْتُ قَيْنًا بِمَكَّةَ فَعَمِلْتُ لِلْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ السَّهْمِيِّ سَيْفًا فَجِئْتُ أَتَقَاضَاهُ فَقَالَ: لاَ أُعْطِيكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْتُ: لاَ أَكْفُرُ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يُمِيتَكَ اللهُ ثُمَّ يُحْيِيكَ قَالَ : إِذَا أَمَاتَنِي اللهُ ثُمَّ بَعَثَنِي وَلِيَ مَالٌ وَوَلَدٌ فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا﴾ قَالَ مَوْثِقًا. لَمْ يَقُلِ الأَشْجَعِيُّ عَنْ سُفْيَانَ سَيْفًا وَلاَ مَوْثِقًا.

[راجع: ٢٠٩١]

4733. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबुज़्ज़ुहा ने, उन्हें मसरूक़ ने और उनसे ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मक्का में लोहार था और आ़स़ बिन वाइल सहमी के लिये मैंने एक तलवार बनाई थी। मेरी मज़दूरी बाक़ी थी इसलिये एक दिन मैं उसको मांगने आया तो कहने लगा कि उस वक़्त तक नहीं दूँगा जब तक तुम मुह़म्मद (ﷺ) से फिर नहीं जाओगे। मैंने कहा कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) से हर्गिज़ नहीं फिरूँगा यहाँ तक कि अल्लाह तुझे मार दे और फिर ज़िन्दा कर दे और वो कहने लगा कि जब अल्लाह तआ़ला मुझे मारकर दोबारा ज़िन्दा कर देगा तो मेरे पास उस वक़्त भी माल और औलाद होगी। और उसी वक़्त तुम अपनी मज़दूरी मुझसे ले लेना, इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की। अफ़रअयतल्लज़ी कफ़रा बिआयातिना व क़ाल लउतय्यन्ना मालव्व वलदा अत्तलअल ग़ैब अमित्तख़ज़ा इन्दर्रह्मानि अ़हदा (भला तुमने उस शख़्स को देखा जो मेरी आयतों का इंकार करता है और कहता है कि मुझे तो माल और औलाद मिलकर ही रहेंगे तो क्या ये ग़ैब पर मुत्तलअ़ हो गया है या उसने अल्लाह रह़मान से कोई वा'दा ले लिया है) अ़हद का मा'नी मज़बूत इक़रार। उबैदुल्लाह अशजई ने भी इस ह़दीष़ को

सुफ़यान ष़ौरी से रिवायत किया है लेकिन उसमें तलवार बनाने का ज़िक्र नहीं है न अहद की तफ़्सीर मज़्कूर है। (राजेअ : 2091)

बाब 5 : आयत 'कल्ला सनक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल्अज़ाबि मदा' की तफ़्सीर

٥- باب قوله ﴿كَلاَّ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا﴾

या'नी हर्गिज़ नहीं हम उसका कहा हुआ उसके आमालनामे में लिख लेते हैं और हम उसको अ़ज़ाब में बढ़ाते ही चले जाएँगे।

4743. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उन्होंने अबुज़्ज़ुहा से सुना, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ज़मान-ए-जाहिलियत में लोहारी का काम करता था और आस़ बिन वाइल पर मेरा कुछ क़र्ज़ था। बयान किया कि मैं उसके पास अपना क़र्ज़ मांगने गया तो वो कहने लगा कि जब तक तुम मुहम्मद (ﷺ) का इंकार नहीं करते, तुम्हारी मज़दूरी नहीं मिल सकती। मैंने उस पर जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! मैं हर्गिज़ आँहज़रत (ﷺ) का इंकार नहीं कर सकता, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला तुझे मार दे और फिर तुझे दोबारा ज़िन्दा कर दे। आस़ कहने लगा कि फिर मरने तक मुझसे क़र्ज़ न मांगो। मरने के बाद जब मैं ज़िन्दा होऊँगा तो मुझे माल और औलाद भी मिलेंगे और उस वक़्त तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर दूँगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई। अफ़रअयतल्लज़ी कफ़रा बिआयातिना व क़ाल लउतय्यन्ना मालव्व वलदा अल् अख़। (राजेअ : 2091)

٤٧٣٤- حدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ سَمِعْتُ أَبَا الضُّحَى يُحَدِّثُ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ خَبَّابٍ، قَالَ : كُنْتُ قَيْنًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَكَانَ لِي دَيْنٌ عَلَى الْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ قَالَ : فَأَتَاهُ يَتَقَاضَاهُ، فَقَالَ : لاَ أُعْطِيكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ ﷺ فَقَالَ: وَاللهِ لاَ أَكْفُرُ حَتَّى يُمِيتَكَ اللهُ ثُمَّ تُبْعَثَ قَالَ : فَذَرْنِي حَتَّى أَمُوتَ ثُمَّ أُبْعَثَ فَسَوْفَ أُوتَى مَالاً وَوَلَدًا فَأَقْضِيكَ فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ: لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا﴾.

[راجع: ٢٠٩١]

बाब 6 : आयत 'व नरिषुहू मा यक़ूलु' की तफ़्सीर

٦- باب قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا﴾ وقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿الْجِبَالُ هَدًّا﴾ هَدْمًا

या'नी, और इसकी कही हुई बातों के हम ही वारिष़ हैं और वो हमारे पास जहाँ आएगा। इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) ने कहा कि ये आयत में लफ़्ज़े जिबाल हद्दा का मत़लब ये है कि पहाड़ रेज़ा रेज़ा होकर गिर जाएँगे।

4735. हमसे यह्या बिन मूसा बल्ख़ी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं पहले लोहार था और आस़ बिन वाइल पर मेरा क़र्ज़ चाहिये था। मैं उसके पास तक़ाज़ा करने गया तो कहने लगा कि

٤٧٣٥- حدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ خَبَّابٍ قَالَ: كُنْتُ رَجُلاً قَيْناً وَكَانَ لِي عَلَى الْعَاصِ بْنِ وَائِلٍ دَيْنٌ

فَأَتَيْتُهُ أَتَقَاضَاهُ فَقَالَ لِي : لاَ أَقْضِيكَ حَتَّى تَكْفُرَ بِمُحَمَّدٍ قَالَ : قُلْتُ لَنْ أَكْفُرَ بِهِ حَتَّى تَمُوتَ ثُمَّ تُبْعَثَ قَالَ: وَإِنِّي لَمَبْعُوثٌ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ فَسَوْفَ أَقْضِيكَ إِذَا رَجَعْتُ إِلَى مَالٍ وَوَلَدٍ قَالَ فَنَزَلَتْ ﴿أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لأُوتَيَنَّ مَالاً وَوَلَدًا أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا كَلاَّ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا﴾.

[راجع: ٢٠٩١]

जब तक तुम मुहम्मद (ﷺ) से न फिर जाओगे तुम्हारा क़र्ज़ नहीं दूँगा। मैंने कहा कि मैं आँहज़रत (ﷺ) के दीन से हर्गिज़ नहीं फिरूँगा। यहाँ तक कि अल्लाह तआला तुझे मार दे और फिर ज़िन्दा कर दे। उसने कहा क्या मौत के बाद मैं दोबारा ज़िन्दा किया जाऊँगा फिर तो मुझे माल और औलाद भी मिल जाएँगे और उसी वक़्त तुम्हारा क़र्ज़ भी अदा कर दूँगा। रावी ने बयान किया कि इसके बारे में आयत नाज़िल हुई कि अफरअयतल्लज़ी कफ़र बिआयातिना व काल लउतयन्न मालव्वं वलदा अत्तलअल्गैब अमित्तखज़ इन्दर्रहमानि अहदा कल्ला सनक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल्अज़ाबि मदा व नरिषुहू मा यक़ूलु व यातीना फर्दा (भला तुमने उस शख़्स को भी देखा जो मेरी आयतों का इंकार करता है और कहता है कि मुझे तो माल और औलाद मिलकर रहेंगे, तो क्या ये ग़ैब पर आगाह हो गया है। या इसने अल्लाह रहमान से कोई अहद करलिया है? हर्गिज़ नहीं, अल्बत्ता मैं उसका कहा हुआ भी लिख लेता ह् और उसके लिये अज़ाब बढ़ाते ही चले जाऊंगा और उसकी कही हुई का मैं ही मालिक होउंगा और वो मेरे पास अकेला आएगा। (राजेअ : 2091)

तश्रीह : तर्जुमा आयत : ऐ पैग़म्बर! भला तुमने उस शख़्स को भी देखा है जिसने मेरी आयतों को न माना और लगा कहने कि अगर क़यामत होगी तो वहाँ भी मुझको माल मिलेगा और औलाद मिलेगी क्या उसको ग़ैब की ख़बर लग गई है या उसने अल्लाह पाक से कोई मज़बूत क़ौल व क़रार ले लिया है? हर्गिज़ नहीं जो बातें ये बकता है मैं उनको लिख लूंगा और अज़ाब बढ़ाता जाऊंगा और दुनिया का माल व अस्बाब औलाद ये सब कुछ यहाँ ही छोड़ जाएगा। मैं ही उसका वारिष होऊंगा और क़यामत के दिन हमारे सामने अकेला एक बींनी दो गोश लेकर हाज़िर किया जाएगा। आस़ बिन वाइल काफ़िर ने ठट्ठे की राह से ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि) से ये बातचीत की थी चुनाँचे उसी आस़ बिन वाइल के पैरोकार कुछ मुल्हिद इस ज़माने में मौजूद हैं एक मुल्हिद किसी का बकरा चुराकर काट खा गया और एक शख़्स ने उसको नस़ीहत की कि क़यामत के दिन ये बकरा तुझे देना पड़ेगा वो कहने लगा मैं मुकर जाऊँगा। उसने कहा मुकरेगा कैसे वो बकरा ख़ुद गवाही देगा। मुल्हिद ने कहा फिर झगड़ा ही क्या रहेगा मैं कान पकड़कर उसे उसके मालिक के हवाले कर दूँगा कि ले अपना बकरा पकड़ और मेरा पीछा छोड़। ये एक मुल्हिद की मिषाल है वरना कितने मुल्हिद आज के ज़माने में ऐसी बकवास करने वाले मिलते रहते हैं। हदाहुमुल्लाहु इला स़िरातिम् मुस्तक़ीम।

[٢٠] سُورَةُ طَهَ

सूरह त़ाहा की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है, इसमें 135 आयात और 8 रुकूअ हैं।

قَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ وَالضَّحَّاكُ : بِالنَّبَطِيَّةِ طَهَ يَا رَجُلُ. يُقَالُ كُلَّمَا لَمْ يَنْطِقْ بِحَرْفٍ أَوْ فِيهِ

हज़रत सईद बिन जुबैर और ज़िहाक बिन मज़ाहिम ने कहा हब्शी ज़ुबान में लफ़्ज़ त़ाहा के मा'नी ऐ मर्द के हैं। कहते हैं कि

تَمْتَمَةٌ أَوْ فَأْفَأَةٌ فَهِيَ عُقْدَةٌ. أَزْرِي: ظَهْرِي، فَيُسْحِتَكُمْ: يُهْلِكَكُمْ، الْمُثْلَى: تَأْنِيثُ الأَمْثَلِ يَقُولُ : بِدِينِكُمْ يُقَالُ خُذِ الْمُثْلَى: خُذِ الأَمْثَلَ. ثُمَّ ائْتُوا يُقَالُ هَلْ أَتَيْتَ الصَّفَّ الْيَوْمَ يَعْنِي الْمُصَلَّى الَّذِي يُصَلَّى فِيهِ. فَأَوْجَسَ : أَضْمَرَ خَوْفًا فَذَهَبَتِ الْوَاوُ مِنْ خِيفَةً لِكَسْرَةِ الْخَاءِ، فِي جُذُوعِ أَيْ عَلَى جُذُوعِ. خَطْبُكَ : بَالُكَ، مِسَاسَ: مَصْدَرُ مَاسَّهُ مِسَاسًا، لَنَنْسِفَنَّهُ : لَنُذْرِيَنَّهُ. قَاعًا: يَعْلُوهُ الْمَاءُ. وَالصَّفْصَفُ: الْمُسْتَوِي مِنَ الأَرْضِ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: مِنْ زِينَةِ الْقَوْمِ الْحُلِيِّ الَّذِي اسْتَعَارُوا مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ. فَقَذَفْتُهَا: فَأَلْقَيْتُهَا : أَلْقَى : صَنَعَ. فَنَسِيَ مُوسَى، هُمْ يَقُولُونَهُ أَخْطَأَ الرَّبَّ. لاَ يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلاً : الْعِجْلُ. هَمْسًا: حِسُّ الأَقْدَامِ، حَشَرْتَنِي أَعْمَى عَنْ حُجَّتِي وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا فِي الدُّنْيَا قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ بِقَبَسٍ ضَلُّوا الطَّرِيقَ وَكَانُوا شَاتِيْنَ فَقَالَ: إِنْ لَمْ أَجِدْ عَلَيْهَا مَنْ يَهْدِي الطَّرِيقَ آتِكُمْ بِنَارٍ تُوقِدُونَ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً أَعْدَلُهُمْ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: هَضْمًا لاَ يُظْلَمُ فَيُهْضَمُ مِنْ حَسَنَاتِهِ، عِوَجًا: وَادِيًا، أَمْتًا: رَابِيَةً. سِيرَتَهَا: حَالَتَهَا الأُولَى. النُّهَى: التُّقَى. ضَنْكًا : الشَّقَاءُ، هَوَى : شَقِيَ. الْمُقَدَّسِ الْمُبَارَكِ طُوًى : اسْمُ الْوَادِي، بِمِلْكِنَا: بِأَمْرِنَا، مَكَانًا سُوًى، مَنْصَفٌ

जिसकी ज़ुबान से कोई ह़र्फ़ न निकल सके या रुक रुककर निकले तो उसकी ज़ुबान में अ़क़्दा गिरह है (ह़ज़रत मूसा अ़लैहि.) की दुआ़ वहलुल उक़्दत मिल्लिसानी में यही इर्शाद है, अज़री के मा'नी मेरी पीठ। फ़यस्तहकुम के मा'नी तुमको हलाक कर दे लफ़्ज़े अल् मुष़्ला अम्ष़ला का मुअन्नष़ है या'नी तुम्हारा दीन। अ़रब लोग कहते हैं मुष़्ला अच्छी बात करे। खुज़ल् अम्ष़ला या'नी बेहतर बात को ले। षुम्माअतू स़फ़्फ़ा अ़रब लोग कहते हैं क्या आज तू स़फ़ में गया था? या'नी नमाज़ के मुक़ाम में जहाँ जमा होकर नमाज़ पढ़ते हैं (जैसे ईदगाह वग़ैरह) फ़अवजस दिल में सहम गया। ख़ीफ़ता अस़ल में ख़ौफ़तुन था वाव ब सबब कसरा मा क़ब्ल के याअ हो गया। फ़ी जुज़ूइन नख़्ल खजूर की शाखों पर फ़ी अ़ला के मा'नी में है। ख़त्बुका या'नी तेरा क्या ह़ाल है। तूने ये काम क्यूँ किया। मिसास मस़दर है। मास्सा मिसासा से या'नी छूना। लिनन्सिफ़न्नहू बिखेर डालेंगे या'नी जलाकर राख को दरिया में बहा देंगे। क़ाआ़ वो ज़मीन जिसके ऊपर पानी चढ़ आए (या'नी स़ाफ़ हमवार मैदान) स़फ़स़फ़ा हमवार ज़मीन और मुजाहिद ने कहा ज़ीनतुल् क़ौम से वो ज़ेवर मुराद है जो बनी इस्राईल ने फ़िरऔन की क़ौम से मांगकर लिया था। फ़क़ज़फ़्तुहा मैंने उसको डाल दिया। व कज़ालिका अल्क़स्सामिरी या'नी सामरी ने भी और बनी इस्राईल की त़रह़ अपना ज़ेवर डाला। फ़नसिया मूसा या'नी सामरी और उसके ताबेदार लोग कहने लगे मूसा चूक गया कि अपने परवरदिगार बछड़े को यहाँ छोड़कर कोहे तूर पर चला गया। ला यरजउ इलैयहिम क़ौला या'नी ये नहीं देखते कि बछड़ा उनकी बात का जवाब तक नहीं दे सकता। हम्सा पांव की आहट हशरतनी अअ़मा या'नी मुझको दुनिया में दलील और हुज्जत मा'लूम होती थी यहाँ तूने बिलकुल मुझको अंधा करके क्यूँ उठाया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा अअ़ल्ली अय्युतुकुम बिकब्सिन के बयान में कि मूसा और उनके साथी रास्ता भूल गये थे इधर सर्दी में मुब्तला थे कहने लगे अगर वहाँ कोई रास्ता बताने वाला मिला तो बेहतर वरना मैं थोड़ी सी आग तुम्हारे तापने के लिये ले आऊँगा। सुफ़यान बिन उ़ययना ने (अपनी तफ़्सीर में) कहा अम्ष़लुहुम या'नी उनमे का अफ़ज़ल और समझदार आदमी और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हज़्मा या'नी उस पर ज़ुल्म

न होगा और उसकी नेकियों का ष़वाब कम न किया जावेगा। इवजा नाला खड्डा। अम्ता टीला बुलन्दी। सीरतुहल् ऊला या'नी अगली ह़ालत पर। अन्नुहा परहेज़गारी या अ़क़्ल। ज़न्का बदबख़्ती हवा बदबख़्त हुआ। अल्मुक़द्दस बरकत वाली तुवा उस वादी का नाम था। बिमिल्किना (ब कसरा मीम मशहूर क़िरात ब ज़म्मा मीम हे कुछ ने बज़म्म मीम पढ़ा है) या'नी अपने इख़्तियार अपने हुक्म से। सुवा या'नी हम में और तुममें बराबर के फ़ास़ले पर। यब्सा ख़ुश्क अ़ला क़दरि अपने मुअ़य्यन वक़्त पर जो अल्लाह पाक ने लिख दिया था। ला तनिया ज़ईफ़ मत बनो (या सुस्ती न करो)

بَيْنَهُمْ. يَبَسًا : يَابِسًا. عَلَى قَدَرٍ : مَوْعِدٍ، لاَ تَنِيَا : لاَ تَضْعُفَا.

तश्रीह : लफ़्ज़ उ़क़्दा ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) की दुआ़ में है। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने बचपन मे अंगारे उठाकर ज़ुबान पर रख लिये थे और उनसे आपकी ज़ुबान में लुक्नत पैदा हो गई थी इसके लिये आपने दुआ़ की। व अह़्लुल उ़क़्दत मिल्लिसानी (त़ाहा : 27) ऐ अल्लाह! मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे लफ़्ज़े अज़्री आप ही की दुआ़ का लफ़्ज़ है वश्दुद बिही अज़्री (त़ाहा : 31) या'नी ह़ज़रत हारून (अ़लैहि.) को मेरे साथ भेजकर मेरी पीठ को उनके ज़रिये से मज़बूत कर दे। फ़िल वाक़ेअ़ एक अच्छे शरीफ़ भाई को बड़ी क़ुव्वत मिलती है। इसीलिये भाई को क़ुव्वते बाज़ू कहा गया है। अल्लाह पाक सब भाइयों को ऐसा ही बनाए कि आपस में एक–दूसरे के लिये क़ुव्वते बाज़ू बनकर रहें। अल्लाहुम्म तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्समीउ़ल अ़लीम।

बाब 1 : आयत 'वस्तनअ़तुक लिनफ़्सी' की तफ़्सीर

١ – باب قَوْلِهِ : ﴿وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي﴾

या'नी ऐ मूसा! मैंने तुझको अपने लिये मुंतख़ब किया है।

4736. हमसे स़ल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे मह्दी बिन मैमून ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, (आलमे मिष़ाल में) ह़ज़रत आदम और मूसा (अ़लैहि.) की मुलाक़ात हुई तो मूसा (अ़लैहि.) ने आदम (अ़लैहि.) से कहा कि आप ही ने लोगों को परेशानी में डाला और उन्हें जन्नत से निकलवाया। ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) ने जवाब दिया कि आप वही हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपनी रिसालत के लिये पसंद किया और ख़ुद अपने लिये पसंद किया और आप पर तौरात नाज़िल की। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने कहा कि जी हाँ! इस पर ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि फिर आपने तो देखा ही होगा कि मेरी पैदाइश से पहले ही ये सबकुछ मेरे लिये लिख दिया गया था। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि जी हाँ! मा'लूम है। चुनाँचे आदम (अ़लैहि.) मूसा (अ़लैहि.) पर ग़ालिब आ गये। अल्यम्म के मा'नी दरिया के हैं। (राजेअ़ : 3409)

٤٧٣٦- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْتَقَى آدَمُ وَمُوسَى فَقَالَ مُوسَى لآدَمَ : أَنْتَ الَّذِي أَشْقَيْتَ النَّاسَ وَأَخْرَجْتَهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ قَالَ لَهُ آدَمُ : أَنْتَ الَّذِي اصْطَفَاكَ اللهُ بِرِسَالَتِهِ وَاصْطَفَاكَ لِنَفْسِهِ وَأَنْزَلَ عَلَيْكَ التَّوْرَاةَ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ فَوَجَدْتَهَا كُتِبَ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي؟ قَالَ : نَعَمْ. فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى)). الْيَمُّ: الْبَحْرُ. [راجع: ٣٤٠٩]

बाब 2: आयत 'व लक़द औहैना इला मूसा अन अस्रि बिइबादी' अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

और मैंने हज़रत मूसा के पास वह्य भेजी कि मेरे बन्दों को रातों रात यहाँ से निकालकर ले जा। फिर उनके लिये समुन्दर में (लाठी मारकर) ख़ुश्क रास्ता बना लेना तुमको न पकड़े जाने का डर होगा, वरना तुमको (और कोई) डर होगा। फिर फ़िरऔन ने भी अपने लश्कर समेत उनका पीछा किया तो दरिया जब उन पर आ मिलने को था आ मिला और फ़िरआन ने तो अपनी क़ौम को गुमराह ही किया था और सीधी राह पर न लाया।

٢- باب قوله

﴿وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لاَ تَخَافُ دَرَكًا وَلاَ تَخْشَى فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَى﴾.

4737. मुझसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे रौह़ बिन उ़बादा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अबू बिश्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो यहूदी आशूरा का रोज़ा रखते थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि इस दिन ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने फ़िरऔन पर ग़लबा पाया था। आपने इस पर फ़र्माया कि फिर हम इनके मुक़ाबले में ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) के ज़्यादा ह़क़दार हैं। मुसलमानों! तुम लोग भी इस दिन रोज़ा रखो (फिर आप ﷺ ने यहूद की मुशाबिहत से बचने के लिये उसके साथ एक रोज़ा और मिलाने का हुक्म स़ादिर फ़र्माया जो अब भी मस्नून है। (राजेअ़ : 2004)

٤٧٣٧- حَدَّثَنِي يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ وَالْيَهُودُ تَصُومُ عَاشُورَاءَ فَسَأَلَهُمْ فَقَالُوا: هَذَا الْيَوْمُ ظَهَرَ فِيهِ مُوسَى عَلَى فِرْعَوْنَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((نَحْنُ أَوْلَى بِمُوسَى مِنْهُمْ فَصُومُوهُ)).

[راجع: ٢٠٠٤]

मगर उसके साथ नवीं या ग्यारहवीं का एक रोज़ा मिलाना मुनासिब है।

बाब 3 : आयत 'फ़ला युख़्रिजन्नकुमा मिनल्जन्नति ' की तफ़्सीर या'नी,

(वो शैतान) तुमको जन्नत से न निकलवा दे पस तुम कमनसीब हो जाओ

٣- باب قَوْلِهِ : ﴿فَلاَ يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَى﴾

4738. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अय्यूब बिन नजार ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबीबक्र ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) ने ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) से बहष़

٤٧٣٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ النَّجَّارِ عَنْ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((حَاجَّ مُوسَى آدَمَ فَقَالَ لَهُ : أَنْتَ الَّذِي أَخْرَجْتَ

النَّاسَ مِنَ الْجَنَّةِ بِذَنْبِكَ فَأَشْقَيْتَهُمْ قَالَ: قَالَ آدَمُ يَا مُوسَى أَنْتَ الَّذِي اصْطَفَاكَ اللهُ بِرِسَالاَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ أَتَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ كَتَبَهُ اللهُ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي أَوْ قَدَّرَهُ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي))قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى)).

[راجع: ٣٤٠٩]

की और उनसे कहा कि आप ही ने अपनी ग़लती के नतीजे में इंसानों को जन्नत से निकाला और मशक़्क़त में डाला। हज़रत आदम (अलैहि.) बोले कि ऐ मूसा! आपको अल्लाह ने अपनी रिसालत के लिये पसंद फ़र्माया और हमकलामी का शर्फ़ बख़्शा। क्या आप एक ऐसी बात पर मुझे मलामत करते है जिसे अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से भी पहले मेरे लिये मुक़र्रर कर दिया था। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया चुनाँचे हज़रत आदम (अलैहि.) हज़रत मूसा (अलैहि.) पर बहष में ग़ालिब आ गये। (राजेअ : 3409)

तश्रीह : हज़रत आदम (अलैहि.) तमाम आदमियों के बुज़ुर्गवार हैं। उनसे सिवाय हज़रत मूसा (अलैहि.) के जो अल्लाह पाक के ख़ास़ बरगुज़ीदा नबी थे और कौन ऐसी बातचीत कर सकता था। हज़रत आदम (अलैहि.) मर्तबे में हज़रत मूसा (अलैहि.) से कम थे मगर आख़िर बुज़ुर्ग थे उन्होंने ऐसा जवाब दिया कि हज़रत मूसा (अलैहि.) ख़ामोश हो गये। इससे षाबित हुआ कि तक़्दीर बरहक़ है और जो क़िस्मत में लिख दिया गया वो होकर रहता है। तक़्दीरे इलाही का इंकार करने वाले ईमान से महरूम हैं। हदाहुमुल्लाह।

[٢١] سُورَةُ الأَنْبِيَاءِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सूरह अंबिया की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है, इसमें 112 आयात और सात रुकूअ हैं।

٤٧٣٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ بَنِي إِسْرَائِيلَ، وَالْكَهْفُ وَمَرْيَمَ. وَطَه، وَالأَنْبِيَاءُ هُنَّ مِنَ الْعِتَاقِ الأُوَلِ وَهُنَّ مِنْ تِلاَدِي. وَقَالَ قَتَادَةُ جُذَاذًا : قَطَّعَهُنَّ. وَقَالَ الْحَسَنُ فِي فَلَكٍ: مِثْلِ فَلْكَةِ الْمِغْزَلِ، يَسْبَحُونَ: يَدُورُونَ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ نَفَشَتْ: رَعَتْ، يُصْحَبُونَ: يُمْنَعُونَ. أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً قَالَ: دِينُكُمْ دِينٌ وَاحِدٌ، وَقَالَ غَيْرُهُ احَسُّوا: تَوَقَّعُوهُ مِنْ أَحْسَسْتُ. خَامِدِينَ: هَامِدِينَ، حَصِيدٌ مُسْتَأْصَلٌ يَقَعُ عَلَى الْوَاحِدِ وَالاثْنَيْنِ

4739. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने, कहा हमसे शुअबा ने, उन्होंने अबू इस्हाक़ से सुना, कहा मैंने अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद से सुना, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से वो कहते थे कि सूरह बनी इस्राईल और कहफ़ और मरयम और त़ाहा और अंबिया अगली बहुत फ़सीह सूरतों में से हैं (जो मक्का में उतरी थीं) और मेरी पुरानी याद की हुई हैं। क़तादा ने कहा जुज़ाज़ा का मा'नी टुकड़े टुकड़े और हसन बस़री ने कहा कुल्लु फ़ी फ़लकि या'नी हर एक तारा एक एक आसमान में गोल घूमता है। जैसे सूत कातने का चरख़ा। युसब्बिहूना या'नी गोल घूमता है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा नफ़शत के मा'नी चर गईं। युस़ब्बिहूना के मा'नी रोके जाएँगे। बचाए जाएँगे। उम्मतिकुम उम्मतव्व वाहिदा या'नी तुम्हारा दीन और मज़हब एक ही दीन और मज़हब है और इक्रिमा ने कहा ह़स़ब ह़ब्शी ज़ुबान में जलाने की लकड़ियों ईंधन को कहते हैं और लोगों ने कहा लफ़्ज़े अहस्सू के मा'नी तवक़्क़ुअ पाई ये अहसस्तु से निकला है या'नी आहट पाई। ख़ामिदीन के मा'नी बुझे हुए (या'नी मरे हुए)

وَالْجَمِيعِ، لَا يَسْتَحْسِرُونَ: لَا يُعْيُونَ وَمِنْهُ حَسِيرٌ وَحَسَرْتُ بَعِيرِي، عَمِيقٌ: بَعِيدٌ. نُكِسُوا: رُدُّوا، صَنْعَةَ لَبُوسٍ: الدُّرُوعُ. تَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ: اخْتَلَفُوا، الْحَسِيسُ: وَالْحِسُّ وَالْجَرْسُ وَالْهَمْسُ وَاحِدٌ وَهُوَ مِنَ الصَّوْتِ الْخَفِيِّ. آذَنَّاكَ: أَعْلَمْنَاكَ، آذَنْتُكُمْ إِذَا أَعْلَمْتَهُ فَأَنْتَ وَهُوَ عَلَى سَوَاءٍ لَمْ تَغْدِرْ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ: تُفْهَمُونَ. ارْتَضَى: رَضِيَ. التَّمَاثِيلُ: الأَصْنَامُ، السِّجِلُّ: الصَّحِيفَةُ.

[راجع: ٤٧٠٨]

ह़सीद के मा'नी जड़ से उखाड़ा गया। वाह़िद और तस्निया और जमा सब पर यही लफ़्ज़ बोला जाता है। ला यस्तह़सिरूना के मा'नी नहीं थके उसी से है लफ़्ज़े ह़सीर थका हुआ और ह़सरत बईरी के मा'नी मैं ने अपने ऊँट को थका दिया। अ़मीक़ के मा'नी दूर दराज़। नकुस्सू ये कुफ़्र की त़रफ़ फेरे गये। स़न्अ़त लबूस ज़िरहें बनाना। तक़त्तऊ अम्रहुम या'नी इख़्तिलाफ़ किया जुदा जुदा त़रीक़ा इख़्तियार किया। ला यस्मऊ़ना ह़सीसुहा के मा'नी और लफ़्ज़ ह़िस और जरस और हम्स के मआ़नी एक ही हैं या'नी पस्त आवाज़। आज़नाका हमने तुझको आगाह किया अ़रब लोग कहते हैं आज़न्तुकुम या'नी मैंने तुमको ख़बर दी तुम हम बराबर हो गये। मैंने कोई दग़ा नहीं की जब आप मुख़ात़ब को किसी बात की ख़बर दे चुके तो आप और वो दोनों बराबर हो गये और आपने उससे कोई दग़ा नहीं की और मुजाहिद ने कहा लअ़ल्लकुम तस्अलून के मा'नी ये हैं शायद तुम समझो। इरतज़ा के मा'नी पसंद किया राज़ी हुआ। अत् तमाष़ील के मा'नी मूरतें बुत। अस्सिज्जील के मा'मी ख़त़ों का मज़्मूआ दफ़्तर।
(राजेअ़ : 4708)

तश्रीह़ : अ़मीक़ सूरह ह़ज्ज की आयत, **यातीन मिन कुल्लि फ़ज्जिन अ़मीक़** (अल् ह़ज्ज : 27) का लफ़्ज़ है। शायद कातिब ने ग़लती से उसे सूरह अंबिया के ज़ेल में लिख दिया। कोई मुनासबते मअ़नवी भी मा'लूम नहीं होती किसी अहले इल्म को नज़र आए तो मुत्तलअ़ा करें। ख़ादिम शुक्रगुज़ार होगा (राज़)

١- باب قوله ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ﴾

बाब 1 : आयत 'कमा बदअना अव्वल ख़ल्क़िन' की तफ़्सीर

या'नी मैंने इंसान को शुरू में जैसा पैदा किया था उसी त़रह उसको मैं दोबारा फिर लौटाऊंगा।

٤٧٤٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ شَيْخٍ مِنَ النَّخَعِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَبَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ إِلَى اللهِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ﴾

4740. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने जो नख़ई क़बीले का एक बूढ़ा था, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दिन ख़ुत़बा सुनाया। फ़र्माया तुम क़यामत के दिन अल्लाह के सामने नंगे पैर नंगे बदन बेख़त्ना ह़श्र किये जाओगे जैसा कि इर्शादे बारी तआ़ला है कमा बदअना अव्वल ख़ल्क़िन नुईदुहू वअ़दन अ़लैना इन्ना कुन्ना फ़ाइलीन फिर सबसे पहले क़यामत

ثُمَّ إِنَّ أَوَّلَ مَنْ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ، أَلاَ إِنَّهُ يُجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أُصَيْحَابِي فَيُقَالُ : لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ؟ فَأَقُولُ : كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿شَهِيدٌ﴾ فَيُقَالُ إِنَّ هَؤُلاَءِ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ مُنْذُ فَارَقْتَهُمْ)). [راجع: ٣٣٤٩]

के दिन ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) को कपड़े पहनाए जाएँगे। सुन लो! मेरी उम्मत के कुछ लोग लाए जाएँगे। फ़रिश्ते उनको पकड़कर बाईं त़रफ़ वाले दोज़ख़ियों में ले जाएँगे। मैं अ़र्ज़ करूँगा परवरदिगार! ये तो मेरे साथ वाले हैं। इर्शाद होगा तुम नहीं जानते इन्होंने तुम्हारी वफ़ात के बाद क्या क्या करतूत किये हैं। उस वक़्त मैं वही कहूँगा जो अल्लाह के नेक बन्दे ह़ज़रत ईसा (अ़लैहि.) ने कहा कि मैं जब तक उन लोगों मे रहा इनका ह़ाल देखता रहा आख़िर आयत तक। इर्शाद होगा ये लोग अपनी ऐड़ियों के बल इस्लाम से फिर गये जब तू इनसे जुदा हुआ। (राजेअ़ : 3349)

तश्रीह़ : राफ़ज़ी कमबख़्त इस ह़दीष़ का मत़लब ये निकालते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) के कुल अस्ह़ाब मआ़ज़ल्लाह आपकी वफ़ात के बाद इस्लाम से फिर गये मगर चंद स़ह़ाबा जैसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी, अबू ज़र ग़िफ़ारी, मिक़्दाद बिन अस्वद, सलमान फ़ारसी (रज़ि.) इस्लाम पर क़ायम और अहले बैत की मुह़ब्बत पर मज़बूत रहे। हम कहते हैं कि स़ह़ाबा सबके सब इस्लाम पर क़ायम रहे ख़ुसूसन अ़शरा मुबश्शरह जिनके लिये आप (ﷺ) ने बहिश्त की बशारत दी और पैग़म्बर का वा'दा झूठ नहीं हो सकता। क़ुर्आन शरीफ़ उन बुज़ुर्गों के फ़ज़ाइल से भरा हुआ है और कई ह़दीष़ें उनके मनाक़िब में वारिद हुई हैं अगर मआ़ज़अल्लाह राफ़्ज़ियों का कहना स़ह़ीह़ हो तो आँह़ज़रत (ﷺ) की सुह़बत की बरकात एक दरवेश की सुह़बत से कम क़रार पाती हैं और पैग़म्बर की बड़ी तौहीन और तह़क़ीर होती है। अब कुछ स़ह़ाबा से जो ऐसी बातें मन्क़ूल हैं जिनमें ये शक होता है कि वो अल्लाह व रसूल की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ थीं तो अव्वल तो ये रिवायतें स़ह़ीह़ नहीं हैं। दूसरे अगर स़ह़ीह़ भी हों तो स़ह़ाबा मा'सूम न थे। ख़त़ा इज्तिहादी उनसे मुम्किन है जिस पर मा'ज़ूर समझे जाने के लायक़ हैं और ह़दीष़ से ष़ाबित है कि मुज्तहिद अगर ख़त़ा करे तो उसको एक अज्र मिलेगा। अ़लावा उसके बड़े-बड़े स़ह़ाबा जैसे ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ और उ़मर फ़ारूक़ और उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) वग़ैरह हैं उनसे तो कोई ऐसी बात मन्क़ूल नहीं है जो शरअ़ के ख़िलाफ़ हो (वह़ीदी)।

[٢٢] سُورَةُ الْحَجِّ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सूरह ह़ज्ज की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

(ये सूरत मदनी है इसमें 78 आयात और दस रुकूअ़ हैं)

وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ الْمُخْبِتِينَ : الْمُطْمَئِنِّينَ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فِي ﴿فِي أُمْنِيَّتِهِ﴾ إِذَا حَدَّثَ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي حَدِيثِهِ فَيُبْطِلُ اللهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ وَيُحْكِمُ آيَاتِهِ. وَيُقَالُ: أُمْنِيَّتُهُ: قِرَاءَتُهُ. إِلاَّ أَمَانِيَّ يَقْرَؤُونَ وَلاَ يَكْتُبُونَ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : مَشِيد

सुफ़यान बिन उ़यैना ने कहा अल् मुख़्बितीना का मा'नी अल्लाह पर भरोसा करने वाले (या अल्लाह की बारगाह में आजिज़ी करने वाले) और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत इज़ा तमन्ना अल्क़श्शैत़ाना फ़ी उम्निय्यतिही की तफ़्सीर में कहा जब पैग़म्बर कलाम करता है (अल्लाह के हुक्म सुनाता है) तो शैत़ान उसकी बात में अपनी त़रफ़ से (पैग़म्बर की आवाज़ बनाकर) कुछ मिला देता है। फिर अल्लाह पाक शैत़ान का मिलाया हुआ मिटा देता है और अपनी सच्ची बात को क़ायम

بِالْقِصَّةِ. وَقَالَ غَيْرُهُ يَسْطُونَ : يَفْرُطُونَ مِنَ السَّطْوَةِ، وَيُقَالُ يَسْطُونَ يَبْطِشُونَ ﴿وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : بِسَبَبٍ بِحَبْلٍ إِلَى سَقْفِ الْبَيْتِ. تَذْهَلُ : تُشْغَلُ.

रखता है। कुछ ने कहा उम्नियत्तिही से पैग़म्बर की क़िरात मुराद है इल्ला अमानिय्या जो सूरह बक़र: में है उसका मतलब ये है मगर आरज़ूएँ.. और मुजाहिद ने कहा (तबरी ने इसको वस्ल किया) मशीदा के मा'नी चूना गच किये गए ओरों ने कहा यस्तूना का मा'नी ये है ज़्यादती करते हैं ये लफ़्ज़े सतूत से निकला है। कुछ ने कहा यस्तूना का मा'नी सख़्त पकड़ते हैं। वुहदा इलत्तय्यिबि मिनल् क़ौल या'नी अच्छी बात का उनको इल्हाम किया गया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा बसबब का मा'नी रस्सी जो छत तक लगी हो। तज़्हल का मा'नी ग़ाफ़िल हो जाए।

١ - باب قوله ﴿وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى﴾

बाब 1 : आयत 'व तरन्नास सुकारा' की तफ़्सीर

या'नी और लोग तुझे नशे में दिखाई देंगे हालाँकि वो नशे में न होंगे।

٤٧٤١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَقُولُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَا آدَمُ فَيَقُولُ : لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ فَيُنَادِي بِصَوْتٍ إِنَّ اللهَ يَأْمُرُكَ أَنْ تُخْرِجَ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ بَعْثًا إِلَى النَّارِ قَالَ : يَا رَبِّ وَمَا بَعْثُ النَّارِ؟ قَالَ : مِنْ كُلِّ أَلْفٍ أُرَاهُ قَالَ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ فَحِينَئِذٍ تَضَعُ الْحَامِلُ حَمْلَهَا وَيَشِيبُ الْوَلِيدُ وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى، وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ)) فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَى النَّاسِ حَتَّى تَغَيَّرَتْ وُجُوهُهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مِنْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ وَمِنْكُمْ وَاحِدٌ ثُمَّ أَنْتُمْ فِي

4741. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह पाक क़यामत के दिन ह़ज़रत आदम (अ़लैहि.) से फ़र्माएगा। ऐ आदम! वो अ़र्ज़ करेंगे, मैं ह़ाज़िर हूँ ऐ रब! तेरी फ़र्मांबरदारी के लिये। परवरदिगार आवाज़ से पुकारेगा (या फ़रिश्ता परवरदिगार की त़रफ़ से आवाज़ देगा) अल्लाह हुक्म देता है कि अपनी औलाद में से दोज़ख़ का जत्था निकालो। वो अ़र्ज़ करेंगे ऐ परवरदिगार! दोज़ख़ का जत्था कितना निकालूँ। हुक्म होगा (रावी ने कहा मैं समझता हूँ हर ह़ज़ार आदमियों मे से नो सौ निन्नानवे (गोया ह़ज़ार में एक जन्नती होगा) ये ऐसा सख़्त वक़्त होगा कि पेट वाली का ह़मल गिर जाएगा और बच्चा (फ़िक्र के मारे) बूढ़ा हो जाएगा (या'नी, जो बचपन में मरा हो) और तू क़यामत के दिन लोगों को ऐसा देखेगा जैसे वो नशे में मतवाले हो रहे हैं ह़ालाँकि उनको नशा न होगा बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब ऐसा सख़्त होगा (ये ह़दीष़ जो स़ह़ाबा ह़ाज़िर थे उन पर सख़्त गुज़री। उनके चेहरे (मारे डर के) बदल गये। उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी तसल्ली के लिये फ़र्माया (तुम इतना क्यूँ डरते हो) अगर याजूज माजूज (जो काफ़िर हैं) की नस्ल तुमसे मिलाई जाए तो उनमें से नौ सौ

निन्नानवे के मुक़ाबिल तुममें से एक आदमी पड़ेगा। ग़र्ज़ तुम लोग हश्र के दिन दूसरे लोगों की निस्बत (जो दोज़ख़ी होंगे) ऐसे होंगे जैसे सफ़ेद बैल के जिस्म पर एक बाल काला होता है या जैसे काले बैल के ज़िस्म पर एक दो बाल सफ़ेद होता है और मुझको उम्मीद है तुम लोग सारे जन्नतियों का चौथाई हिस्सा होगे (बाक़ी तीन हिस्सों में और सब उम्मतें होंगी) ये सुनकर हमने अल्लाहु अकबर कहा। फिर आपने फ़र्माया नहीं बल्कि तुम तिहाई होओगे हमने फिर नारा-ए-तक्बीर बुलन्द किया फिर फ़र्माया नहीं बल्कि आधा हिस्सा होओगे (आधे हिस्से में और उम्मतें होंगी) हमने फिर नारा-ए-तक्बीर बुलन्द किया और अबू उसामा ने आ'मश से यूँ रिवायत किया तरन्नास सुकारा वमाहुम बिसुकारा जैसे मशहूर क़िरात है और कहा कि हर हज़ार में से नौ सौ निन्नानवे (तो उनकी रिवायत हफ़्स बिन ग़याष के मुवाफ़िक़ है) और जरीर बिन अ़ब्दुल हमीद और ईसा बिन यूनुस और अबू मुआविया ने यूँ नक़ल किया वतरन्नास सुकारा वमाहुम बिसुकारा (हम्ज़ा और कुसाई की भी यही क़िरात है) (राजेअ: 3348)

النَّاسِ كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ فِي جَنْبِ الثَّوْرِ الأَبْيَضِ - أَوْ كَالشَّعْرَةِ الْبَيْضَاءِ فِي جَنْبِ الثَّوْرِ الأَسْوَدِ - وَإِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)) فَكَبَّرْنَا ثُمَّ قَالَ : ((ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)) فَكَبَّرْنَا ثُمَّ قَالَ : ((شَطْرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)) فَكَبَّرْنَا. وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ تَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى قَالَ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ. وَقَالَ جَرِيرٌ وَعِيسَى بْنُ يُونُسَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ سَكْرَى وَمَا هُمْ بِسَكْرَى.

[راجع: ٣٣٤٨]

तश्रीह: तबरानी की रिवायत में और ज़्यादा है कि तुम दो तिहाई होओगे। तिर्मिज़ी में है कि बहिश्तियों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी। उनमें अस्सी सफ़ें तुम्हारी होंगी तो दो षुलुष मुसलमान हुए एक षुलुष में दूसरी सब उम्मतें होंगी। मालिक तेरा शुक्र हम कहाँ तक अदा करें तूने दुनिया की नेअ़मतें सब हम पर ख़त्म कर दीं। माल दिया औलाद दी इ़ल्म दिया शराफ़त दी। जमाल दिया करामत दी। अब उन नेअ़मतों पर क्या तू आख़िरत में हमें ज़लील करेगा नहीं हमको तेरे फ़ज़्ल व करम से यही उम्मीद है कि तू हमारी आख़िरत भी दुरुस्त कर देगा और जैसे दुनिया में तू ने बाइ़ज़्ज़त व हुर्मत रखा वैसे दूसरे बन्दों के सामने आख़िरत में भी हमको ज़लील नहीं करेगा। हमको तेरा ही आसरा है और तेरे ही फ़ज़्ल व करम के भरोसे पर हम ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। या अल्लाह! दुनिया में हमको हासिदों और दुश्मनों ने बहुत तंग करना चाहा। मगर तूने हदीष शरीफ़ की बरकत से हमको उनके शर से महफ़ूज़ रखा और उन सबसे हमको दौलत और नेअ़मत ज़्यादा इनायत की। ऐसे ही मरते वक़्त भी हमको शैतान के शर से महफ़ूज़ रखियो और हमको ईमान के साथ दुनिया से उठाईयो आमीन या रब्बल आ़लमीन।

बाब 2 : आयत 'व मिनन्नासि मंय्यअबुदुल्लाह अ़ला हर्फ़िन' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله

और इंसानों में से कुछ आदमी ऐसा भी होता है जो अल्लाह की इ़बादत किनारा पर (खड़ा होकर या'नी शक और तरद्दुद के साथ करता है।) फिर अगर उसे कोई नफ़ा पहुँच गया तो वो इस पर जमा रहा और अगर कहीं उस पर कोई आज़माइश आ पड़ी

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُدُ اللهَ عَلَى حَرْفٍ﴾ شَكٍّ ﴿فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَى وَجْهِهِ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةَ - إِلَى قَوْلِهِ - ذَلِكَ هُوَ

الضَّلاَلُ الْبَعِيدُ﴾ أَتْرَفْنَاهُمْ : وَسَّعْنَاهُمْ.

तो वो चेहरा उठाकर वापस चल दिया। या'नी मुर्तद होकर दुनिया व आख़िरत दोनों को खो बैठा। अल्लाह तआला के इर्शाद यही तो है इंतिहाई गुमराही से यही मुराद है। अतरफ़नाहुम के मा'नी मैंने उनकी रोज़ी कुशादा कर दी।

٤٧٤٢- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ﴿وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُدُ اللهَ عَلَى حَرْفٍ﴾ قَالَ : كَانَ الرَّجُلُ يَقْدَمُ الْمَدِينَةَ فَإِنْ وَلَدَتِ امْرَأَتُهُ غُلاَمًا وَنُتِجَتْ خَيْلُهُ قَالَ : هَذَا دِينٌ صَالِحٌ وَإِنْ لَمْ تَلِدِ امْرَأَتُهُ وَلَمْ تُنْتَجْ خَيْلُهُ قَالَ : هَذَا دِينُ سَوْءٍ.

4742. मुझसे इब्राहीम बिन हारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी बुकैर ने, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन ने उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत और इंसानों मे कोई ऐसा भी होता है जो अल्लाह की इबादत किनारा पर (खड़ा होकर) करता है, के बारे में फ़र्माया कि कुछ लोग मदीना आते (और अपने इस्लाम का इज़्हार करते) उसके बाद अगर उसकी बीवी के यहाँ लड़का पैदा होता और घोड़ी भी बच्चा देती तो वो कहते कि ये दीने (इस्लाम) बड़ा अच्छा दीन है, लेकिन अगर उनके यहाँ लड़का न पैदा होता और घोड़ी भी कोई बच्चा न देती तो कहते कि ये तो बुरा दीन है इस पर मज़्कूरा बाला आयत नाज़िल हुई।

٣- باب قَوْلِهِ : ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾

बाब 3 : आयत 'हाज़ानि ख़स्मानि इख़्तसमू' की तफ़्सीर या'नी,

ये दो फ़रीक़ हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार के बारे में झगड़ा किया।

٤٧٤٣- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو هَاشِمٍ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يُقْسِمُ فِيهَا إِنَّ هَذِهِ الآيَةَ : ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾ نَزَلَتْ فِي حَمْزَةَ وَصَاحِبَيْهِ وَعُتْبَةَ وَصَاحِبَيْهِ يَوْمَ بَرَزُوا فِي يَوْمِ بَدْرٍ. رَوَاهُ سُفْيَانُ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ وَقَالَ عُثْمَانُ عَنْ جَرِيرٍ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ، عَنْ أَبِي مِجْلَزٍ قَوْلَهُ. [راجع: ٣٩٦٦]

4743. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको अबू हाशिम ने ख़बर दी, उन्हें अबू मिज्लज़ ने, उन्हे क़ैस बिन अ़ब्बाद ने और उन्हें अबू ज़र (रज़ि.) ने वो क़सम खाकर बयान करते थे कि ये आयत, ये दो फ़रीक़ हैं। जिन्होंने अपने परवरदिगार के बारे में झगड़ा किया। हम्ज़ा और आपके दोनों साथियों (अ़ली बिन अबी त़ालिब और उ़बैदह बिन हारिष़ मुसलमानों की त़रफ़ से) और (मुश्रिकीन की त़रफ़ से) उ़त्बा और उसके दोनों साथियों (शैबा और वलीद बिन उ़त्बा) के बारे में नाज़िल हुई थी, जब उन्होंने बद्र की लड़ाई में मैदान में आकर मुक़ाबला की दा'वत दी थी। इस रिवायत को सुफ़यान ने अबू हाशिम से और उ़ष़्मान ने जरीर से, उन्होंने मंसूर से, उन्होंने अबू हाशिम से और उन्होंने अबू मिज्लज़ से इसी त़रह़ नक़ल किया है। (राजेअ़ : 3966)

٤٧٤٤- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ،

4744. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे

मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने अपने वालिद सुलैमान से सुना, उन्होंने अबू मिज्लज़ से सुनकर कहा कि ये ख़ुद उन (अबू मिज्लज़) का क़ौल है, उनसे क़ैस बिन अब्बाद ने और उनसे हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं पहला शख़्स होऊँगा । जो रहमान के हुज़ूर में क़यामत के दिन अपना दा'वा पेश करने के लिये चारों ज़ानू बैठूँगा। कैस ने कहा कि आप ही जिन्होंने अपने परवरदिगार के बारे में झगड़ा किया, बयान किया कि यही वो लोग हैं जिन्होंने बद्र की लड़ाई में दा'वते मुक़ाबला दी थी। या'नी अली, हम्ज़ा और उबैदह (रज़ि.) ने (मुसलमानों की तरफ़ से) और शैबा बिन रबीआ, उत्बा बिन रबीआ और वलीद बिन उत्बा ने (कुफ़्फ़ार की तरफ़ से) (राजेअ : 3965)

حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبِي قَالَ : حَدَّثَنَا أَبُو مِجْلَزٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ عُبَادٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَنَا أَوَّلُ مَنْ يَجْثُو بَيْنَ يَدَيِ الرَّحْمَنِ لِلْخُصُومَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ قَيْسٌ: وَفِيهِمْ نَزَلَتْ: ﴿هَذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ﴾ قَالَ: هُمُ الَّذِينَ بَارَزُوا يَوْمَ بَدْرٍ عَلِيٌّ وَحَمْزَةُ، وَعُبَيْدَةُ وَشَيْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ، وَعُتْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ، وَالْوَلِيدُ بْنُ عُتْبَةَ.
[راجع: ٣٩٦٥]

सूरह मोमिनून की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है। इसमें 118आयात और छः रुकूअ हैं ।

[٣٢] سُورَةُ الْمُؤْمِنِينَ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सुफ़यान बिन उययना ने कहा सबिआ तराइक़ से सातों आसमान मुराद हैं। लहा साबिक़ून या'नी उनकी क़िस्मत में (रोज़े अज़ल से) सआदत और नेकबख़्ती लिख दी गई। वजिलतुन डरने वाले। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा हयहात हयहात का मा'नी दूर है दूर है। फ़स्अलिलआद्दीन या'नी गिनने वाले फ़रिश्तों से (जो आमाल का हिसाब करते हैं) पूछ लो। लनाकिबूना सीधी राह से मुड़ जाने वाले। कालिहून तुर्शरू, बदशक्ल, मुँह बनाने वाले। औरों ने कहा सुलालत से मुराद बच्चा और नुत्फ़ा है। जिन्नतु और जुनून दोनों का एक ही मा'नी है या'नी दीवानगी बावलापन। गुषाउन फैन और ऐसी चीज़ जो पानी पर तैर आए और काम न आए (बल्कि फेंक दिया जाए) यज्अरून आवाज़ बुलन्द करेंगे जैसे गाय तकलीफ़ के वक़्त आवाज़ निकालती है। अला आक़ाबिकुम अरब लोग बोलते हैं रजअ अला अक़िबयहि या'नी पीठ फेरकर चल दिया। सामिरा समर से निकला है इसकी जमा सिमार है। यहाँ सामिर जमा के मा'नों में है (या'नी रात को गपशप करने वाले) तुस्हरून जादू से अंधे हो रहे हैं।

قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : سَبْعَ طَرَائِقَ : سَبْعَ سَمَوَاتٍ، لَهَا سَابِقُونَ : سَبَقَتْ لَهُمُ السَّعَادَةُ. قُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ : خَائِفِينَ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ : بَعِيدٌ بَعِيدٌ. فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ: الْمَلاَئِكَةَ، لَنَاكِبُونَ : لَعَادِلُونَ، كَالِحُونَ، عَابِسُونَ، وَقَالَ مِنْ سُلاَلَةٍ : الْوَلَدُ، وَالنُّطْفَةُ : السُّلاَلَةُ، وَالْجِنَّةُ : وَالْجُنُونُ وَاحِدٌ، وَالْغُثَاءُ الزَّبَدُ وَمَا ارْتَفَعَ عَنِ الْمَاءِ وَمَا لاَ يُنْتَفَعُ بِهِ. يَجْأَرُونَ: يَرْفَعُونَ أَصْوَاتَهُمْ كَمَا تَجْأَرُ الْبَقَرَةُ، عَلَى أَعْقَابِكُمْ رَجَعَ عَلَى عَقِبَيْهِ. سَامِرًا مِنَ السَّمَرِ وَالْجَمِيعُ السُّمَّارُ وَالسَّامِرُ هَهُنَا فِي مَوْضِعِ الْجَمْعِ. تُسْحَرُونَ : تَعْمُونَ

مِنَ السَّحْرِ.

[٢٤] ﴿سُورَةُ النُّورِ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सूरह नूर की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मदनी है। इसमें 64 आयात और नौ रुकूअ हैं।

﴿مِنْ خِلاَلِهِ﴾ مِنْ بَيْنِ أَضْعَافِ السَّحَابِ ﴿سَنَا بَرْقِهِ﴾ الضِّيَاءُ. مُذْعِنِينَ يُقَالُ لِلْمُسْتَخْذِي مُذْعِنٌ. اشْتَاتًا وَشَتَّى وَشَتَاتٌ وَشَتٌّ وَاحِدٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا﴾ : بَيَّنَّاهَا. وَقَالَ غَيْرُهُ : سُمِّيَ الْقُرْآنُ بِجَمَاعَةِ السُّوَرِ، وَسُمِّيَتِ السُّورَةُ لأَنَّهَا مَقْطُوعَةٌ مِنَ الأُخْرَى، فَلَمَّا قُرِنَ بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ سُمِّيَ قُرْآنًا. وَقَالَ سَعْدُ بْنُ عِيَاضٍ الثُّمَالِيُّ : ﴿الْمِشْكَاةُ﴾ الْكُوَّةُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ. وَقَوْلُهُ تَعَالَى : ﴿إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ﴾ : تَأْلِيفَ بَعْضِهِ إِلَى بَعْضٍ ﴿فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ﴾ : فَإِذَا جَمَعْنَاهُ وَأَلَّفْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ أَيْ مَا جُمِعَ فِيهِ فَاعْمَلْ بِمَا أَمَرَكَ وَانْتَهِ عَمَّا نَهَاكَ اللهُ، وَيُقَالُ لَيْسَ لِشِعْرِهِ قُرْآنٌ أَيْ تَأْلِيفٌ، وَسُمِّيَ الْفُرْقَانُ لأَنَّهُ يُفَرِّقُ بَيْنَ الْحَقِّ وَالْبَاطِلِ، وَيُقَالُ لِلْمَرْأَةِ : مَا قَرَأَتْ بِسَلاً قَطُّ أَيْ لَمْ تَجْمَعْ فِي بَطْنِهَا وَلَدًا. وَقَالَ ﴿فَرَّضْنَاهَا﴾ أَنْزَلْنَا فِيهَا فَرَائِضَ مُخْتَلِفَةً، وَمَنْ قَرَأَ : ﴿فَرَضْنَاهَا﴾ يَقُولُ : فَرَضْنَا عَلَيْكُمْ وَعَلَى مَنْ بَعْدَكُمْ. قَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا﴾ لَمْ يَدْرُوا

मन ख़िलालिही का मा'नी बादल के पर्दों के बीच में से। सना बरक़िहि उसकी बिजली की रोशनी। मुज़इनीना मुज़अन की जमा है या'नी आजिज़ी करने वाला। अश्तातन और शत्ता और शतात और शत सबके एक ही मा'नी हैं (या'नी अलग अलग) और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा सूरह अन्ज़ल्नाहा का मा'नी हमने उसको खोलकर बयान किया कि सूरतों के मज्मूआ की वजह से कुर्आन का नाम पड़ा और सूरह को सूरह इस वजह से कहते हैं कि वो दूसरी सूरह से अलग होती है फिर जब एक सूरत दूसरी के क़रीब कर दी गई तो मज्मूआ को कुर्आन कहने लगे, (तो ये क़र्न से निकला है) और सअ़द बिन अ़याज़ तमाली ने कहा (उसको इब्ने शाहीन ने वस्ल किया) मिश्कात कहते हैं ताक़ को ये ह़ब्शी ज़ुबान का लफ़्ज़ है और ये जो सूरह क़यामह में फ़र्माया हम पर उसका जमा करना और कुर्आन करना है तो कुर्आन से इसका जोड़ना और एक टुकड़े से दूसरा टुकड़ा मिलाना मुराद है। फिर फ़र्माया फ़इज़ा क़रानाहा या'नी जब हम इसको जोड़ दें और मुरत्तब कर दें तो इस मज्मूआ की पैरवी कर या'नी इसमें जिस बात का हुक्म है उसको बजा ला और जिसकी अल्लाह ने मुमानअ़त की है उससे बाज़ रह और अ़रब लोग कहते हैं उसके शेअ़रों का कुर्आन नहीं है या'नी कोई मज्मूआ नहीं है और क़ुर्आन को फ़ुरक़ान भी कहते हैं क्योंकि वो ह़क़ और बातिल को जुदा करता है और औ़रत के ह़क़ में कहते हैं मा क़रअत बिसलन क़त्तु या'नी उसने अपने पेट में बच्चा कभी नहीं रखा और जिसने फ़रज़्नाहा तख़्फ़ीफ़ से पढ़ा है तो मा'नी ये होगा हमने तुम पर और जो लोग क़यामत तक तुम्हारे बाद आएँगे उन पर फ़र्ज़ किया। मुजाहिद ने कहा। अवित्तफ़्लिल्लज़ीन लम यज़्हरू अ़ला औरातिन्निसाइ से वो कमसिन बच्चे मुराद हैं जो कमसिनी की वजह से औ़रतों की शर्मगाह या जिमाअ़ से वाक़िफ़ नहीं हैं और शअ़बी ने कहा

ऊलुल इरबत से वो मर्द मुराद हैं जिनको औरतों की एहतियाज न हो। और ताउस ने कहा (इसको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया) वो अहमक़ मुराद है जिसको औरतों का ख़याल न हो और मुजाहिद ने कहा (इसको तबरी ने वस्ल किया) जिनको अपने पेट की धुन लगी हो उनसे ये डर न हो कि औरतों को हाथ लगाएँगे।

لِمَا بِهِمْ مِنَ الصِّغَرِ. وَقَالَ الشَّعْبِيُّ: ﴿أُولِي الإِرْبَةِ﴾ مَنْ لَيْسَ لَهُ وَقَالَ طَاوُسٌ هُوَ الأَحْمَقُ الَّذِي لاَ حَاجَةَ لَهُ فِي النِّسَاءِ وَقَالَ مُجَاهِدٌ لاَ يُهِمُّهُ إِلاَّ بَطْنُهُ وَلاَ يَخَافُ عَلَى النِّسَاءِ.

बाब 1 : आयत 'वल्लज़ीन यर्मून' की तफ़्सीर

١- باب قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ :

﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلاَّ أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ﴾

या'नी, और जो लोग अपनी बीवियों को तोहमत लगाएँ और उनके पास सिवाए अपने (और) कोई गवाह न हो तो उनकी शहादत ये है कि वो (मर्द) चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि मैं सच्चा हूँ।

4745. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने, कहा कि मुझसे ज़ुहरी ने बयान किया। उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़वैमिर बिन हारिष़ बिन ज़ैद बिन जद बिन उ़ज्लान आ़सिम बिन अ़दी (रज़ि.) के पास आए। आ़सिम बनी उ़ज्लान के सरदार थे। उन्होंने आपसे कहा कि आप लोगों का एक ऐसे शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जो अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को पा लेता है क्या वो उसे क़त्ल कर दे? लेकिन तुम फिर उसे क़िसास़ में क़त्ल कर दोगे! आख़िर ऐसी सूरत में इंसान क्या तरीक़ा इख़्तियार करे? रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसके बारे में पूछ के मुझे बताइये। चुनाँचे आ़सिम (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! (सूरते मज़्कूरा में शौहर क्या करे) आँहज़रत (ﷺ) ने इन मसाइल (में सवाल व जवाब) को नापसंद फ़र्माया। जब उ़वैमिर (रज़ि.) ने उसे पूछा तो उन्होंने बता दिया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इन मसाइल को नापसंद फ़र्माया है। उ़वैमिर (रज़ि.) ने उनसे कहा कि वल्लाह मैं ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से इसे पूछूँगा। चुनाँचे वो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया। या रसूलल्लाह (ﷺ)! एक शख़्स अपनी बीवी के साथ एक ग़ैर मर्द को देखता है क्या वो उसको क़त्ल कर दे? लेकिन फिर

٤٧٤٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ الْفِرْيَابِيُّ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ عُوَيْمِرًا أَتَى عَاصِمَ بْنَ عَدِيٍّ وَكَانَ سَيِّدَ بَنِي عَجْلاَنَ فَقَالَ: كَيْفَ تَقُولُونَ فِي رَجُلٍ وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ أَمْ كَيْفَ يَصْنَعُ؟ سَلْ لِي رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ ذَلِكَ، فَأَتَى عَاصِمٌ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ فَكَرِهَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَسَائِلَ، فَسَأَلَهُ عُوَيْمِرٌ فَقَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَرِهَ الْمَسَائِلَ وَعَابَهَا قَالَ: عُوَيْمِرٌ وَاللهِ لاَ أَنْتَهِي حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنْ ذَلِكَ فَجَاءَ عُوَيْمِرٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، رَجُلٌ وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ أَمْ كَيْفَ يَصْنَعُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ أَنْزَلَ اللهُ الْقُرْآنَ

فِيكَ وَفِي صَاحِبَتِكَ)) فَأَمَرَهُمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ بِالْمُلاَعَنَةِ سَمَّى اللهُ فِي كِتَابِهِ فَلاَعَنَهَا ثُمَّ قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، إِنْ حَبَسْتُهَا فَقَدْ ظَلَمْتُهَا فَطَلَّقَهَا، فَكَانَتْ سُنَّةً لِمَنْ كَانَ بَعْدَهُمَا فِي الْمُتَلاَعِنَيْنِ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((انْظُرُوا فَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَسْحَمَ أَدْعَجَ الْعَيْنَيْنِ عَظِيمَ الأَلْيَتَيْنِ خَدَلَّجَ السَّاقَيْنِ فَلاَ أَحْسِبُ عُوَيْمِرًا إِلاَّ قَدْ صَدَقَ عَلَيْهَا وَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أُحَيْمِرَ كَأَنَّهُ وَحَرَةٌ فَلاَ أَحْسِبُ عُوَيْمِرًا إِلاَّ قَدْ كَذَبَ عَلَيْهَا)). فَجَاءَتْ بِهِ عَلَى النَّعْتِ الَّذِي نَعَتَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ تَصْدِيقِ عُوَيْمِرٍ فَكَانَ بَعْدُ يُنْسَبُ إِلَى أُمِّهِ.[راجع: ٤٢٣]

आप क़िसास़ में उसको क़त्ल करेंगे। ऐसी सूरत में उसको क्या करना चाहिये? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे और तुम्हारी बीवी के बारे में क़ुर्आन की आयत उतारी है। फिर आपने उन्हें क़ुर्आन के बताये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ लिआन का हुक्म दिया। और उ़वैमिर (रज़ि.) ने अपनी बीवी के साथ लिआन किया, फिर उन्होंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर मैं अपनी बीवी को रोके रखूँ तो मैं ज़ालिम होऊँगा। इसलिये उ़वैमिर (रज़ि.) ने उसे त़लाक़ दे दी। उसके बाद लिआन के बाद मियाँ—बीवी में जुदाई का त़रीक़ा जारी हो गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया कि देखते रहो अगर उस औ़रत के काला, बहुत काली पुतलियों वाला, भारी सुरीन और भरी हुई पिण्डलियों वाला बच्चा पैदा हो तो मेरा ख़्याल है कि उ़वैमिर ने इल्ज़ाम ग़लत़ नहीं लगाया है। लेकिन अगर सुर्ख़ सुर्ख़ गिरगिट जैसा पैदा हो तो मेरा ख़्याल है कि उ़वैमिर ने ग़लत़ इल्ज़ाम लगाया है। उसके बाद उन औ़रत के बच्चा पैदा हुआ वो उन्हीं सिफ़ात के मुत़ाबिक़ था जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने बयान की थीं और जिससे उ़वैमिर (रज़ि.) की तस्दीक़ होती थी। चुनाँचे उस लड़के का नसब उसकी माँ की त़रफ़ रखा गया। (राजेअ़ : 423)

तश्रीह : अगर मियाँ बीवी को किसी के साथ ज़िना की ह़ालत में देख ले तो नामुम्किन है कि वो दूसरों को उसे दिखाना पसंद करे। उधर शरीअ़त में ज़िना के अह़काम जितने सख्त हैं, उसकी सज़ा भी उतनी ही सख़्त है जितना षुबूत पहुँचाना दुरुस्त है। ज़िना की शरई सज़ा उस वक़्त दी जा सकती है जब चार आ़दिल गवाह ऐन ह़ालते ज़िना में मर्द व औ़रत को अपनी आँखों से देखने की स़ाफ़ लफ़्ज़ों में गवाही दें। अगर किसी ने किसी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाया और इस्लामी क़ानून के मुत़ाबिक़ वो गवाही न दे सका तो उसकी भी सज़ा बहुत सख़्त है। अब अगर एक ग़ैरतमंद मियाँ, अपनी बीवी को इस बेह़याई में गिरफ़्तार देखता है तो उसके लिये दोह़री मुस़ीबत है। न उसे इतनी मुह्लत मिल सकती है कि चार गवाहों को लाकर दिखाए और न वो ख़ुद उसे गवारा ही कर सकता है। ऐसी सूरत में अगर वो अपनी बीवी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाता है तो इल्ज़ामे ज़िना की ह़द का वो मुस्तह़िक़ ठहरता है और अगर ख़ामोश रहता है तो ये भी उसके लिये बेह़याई है और अगर क़ानून अपने हाथ में लेता है और ख़ुद कोई ह़रकत कर बैठता है तो उसे फिर क़ानून तोड़ने की सज़ा भुगतनी पड़ती है। ऐसी ही एक सूरतेह़ाल आँह़ज़रत (ﷺ) के वक़्त में भी पेश आ गई थी। क़ुर्आन मजीद ने उसका ह़ल ये बताया कि मियाँ को इस्लामी अ़दालत में अपनी बीवी के साथ लिआन करना चाहिये। लिआन ये है कि मियाँ अ़दालत में खड़ा होकर ये कहे कि, मैं अल्लाह की क़सम खाता हूँ कि मैंने अपनी बीवी पर जो ज़िना का इल्ज़ाम लगाया है उसमें मैं सच्चा हूँ। ये अल्फ़ाज़ चार बार वो कहे और पाँचवीं बार कहे कि, मुझ पर अल्लाह की ला'नत हो अगर मैं अपने इस इल्ज़ाम में झूठा हूँ। अब अगर औ़रत अपने मियाँ के इस इल्ज़ाम का इंकार करती है तो उससे भी कहा जाएगा कि चार बार अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि, बिला शुब्हा उसका शौहर ज़िना की इस इल्ज़ामदेही में झूठा है और पाँचवी बार कहे कि, मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर मर्द सच्चा है अगर उसने मियाँ के इल्ज़ाम की इस त़रह़ से तर्दीद की तो उस पर ज़िना की ह़द नहीं लगाई जाएगी। यही वो त़रीक़ा है जो क़ुर्आन मजीद ने बताया है। लिआन के बाद मियाँ बीवी में जुदाई हो जाएगी।

बाब 2 : आयत 'वल्ख़ामिसतु अन्न लअ़नतल्लाहि अ़लैहि' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله ﴿وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَةَ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ﴾

और पाँचवीं बार मर्द ये कहे कि मुझ पर अल्लाह की ला'नत हो अगर मैं झूठा हूँ।

٤٧٤٦- حدَّثني سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ أَبُو الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَجُلاً أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ رَجُلاً رَأَى مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً يَقْتُلُهُ فَتَقْتُلُونَهُ أَمْ كَيْفَ يَفْعَلُ؟ فَأَنْزَلَ اللهُ فِيهِمَا مَا ذُكِرَ فِي الْقُرْآنِ مِنَ التَّلاَعُنِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ قُضِيَ فِيكَ وَفِي امْرَأَتِكَ)) قَالَ فَتَلاَعَنَا وَأَنَا شَاهِدٌ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَفَارَقَهَا فَكَانَتْ سُنَّةً أَنْ يُفَرَّقَ بَيْنَ الْمُتَلاَعِنَيْنِ، وَكَانَتْ حَامِلاً فَأَنْكَرَ حَمْلَهَا وَكَانَ ابْنُهَا يُدْعَى إِلَيْهَا ثُمَّ جَرَتِ السُّنَّةُ فِي الْمِيرَاثِ أَنْ يَرِثَهَا وَتَرِثَ مِنْهُ مَا فَرَضَ اللهُ لَهَا. [راجع: ٤٢٣]

4746. मुझसे अबू रबीअ़ सुलैमान बिन दाऊद ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुलैह़ ने, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे सहल बिन सअ़द ने कि एक स़ाह़ब (या'नी उ़वैमिर रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसे शख़्स़ के बारे में आपका क्या इर्शाद है जिसने अपनी बीवी के साथ एक ग़ैर मर्द को देखा हो क्या वो उसे क़त्ल कर दे? लेकिन फिर आप क़िस़ास़ में क़ातिल को क़त्ल करवा देंगे। फिर उसे क्या करना चाहिये? उन्हीं के बारे में अल्लाह तआ़ला ने दो आयात नाज़िल कीं जिनमें लिआ़न का ज़िक्र है। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारे और तुम्हारी बीवी के बारे में फ़ैसला किया जा चुका है। रावी ने बयान किया कि फिर दोनों मियाँ-बीवी ने लिआ़न किया और मैं उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। फिर आपने दोनों में जुदाई करा दी और दो लिआ़न करने वालों में उसके बाद यही त़रीक़ा क़ायम हो गया कि उनमें जुदाई करा दी जाए। उनकी बीवी ह़ामला थीं, लेकिन उन्होंने उसका भी इंकार कर दिया। चुनाँचे जब बच्चा पैदा हुआ तो उसे माँ ही के नाम से पुकारा जाने लगा। मीराष़ का ये त़रीक़ा हुआ कि बेटा माँ का वारिष़ होता है और माँ अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए ह़िस्से के मुत़ाबिक़ बेटे की वारिष़ होती है। (राजेअ़ : 423)

लिआ़न का बच्चा अपने बाप का तो वारिष़ न होगा क्योंकि बाप ने अपना बेटा होने से इंकार किया है माँ का वारिष़ ज़रूर होगा। इसलिये कि माँ ने उसका वलदुज़्ज़िना होना तस्लीम नहीं किया।

बाब 3 : आयत 'व यदरऊ अ़न्हल्अ़ज़ाब अन्तश्हद' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قوله ﴿وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ﴾

और औ़रत सज़ा से इस त़रह़ बच सकती है कि वो चार दफ़ा अल्लाह की क़सम खाकर कहे कि बेशक वो मर्द झूठा है। पाँचवीं बार कहे कि अगर वो मर्द सच्चा हो तो मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो।

٤٧٤٧- حدَّثني مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا

4747. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा

ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ هِشَامِ بْنِ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ هِلاَلَ بْنَ أُمَيَّةَ قَذَفَ امْرَأَتَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ بِشَرِيكِ بْنِ سَحْمَاءَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْبَيِّنَةَ أَوْ حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ)) فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِذَا رَأَى أَحَدُنَا عَلَى امْرَأَتِهِ رَجُلاً يَنْطَلِقُ يَلْتَمِسُ الْبَيِّنَةَ؟ فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((الْبَيِّنَةَ وَإِلاَّ حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ)). فَقَالَ هِلاَلٌ : وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنِّي لَصَادِقٌ، فَلَيُنْزِلَنَّ اللهُ مَا يُبَرِّئُ ظَهْرِي مِنَ الْحَدِّ. فَنَزَلَ جِبْرِيلُ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ ﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ﴾ فَقَرَأَ حَتَّى بَلَغَ ﴿إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ﴾، فَانْصَرَفَ النَّبِيُّ ﷺ فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا. فَجَاءَ هِلاَلٌ فَشَهِدَ. وَالنَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ، فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ))؟ ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ، فَلَمَّا كَانَتْ عِنْدَ الْخَامِسَةِ وَقَّفُوهَا وَقَالُوا: إِنَّهَا مُوجِبَةٌ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَتَلَكَّأَتْ وَنَكَصَتْ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهَا تَرْجِعُ، ثُمَّ قَالَتْ لاَ أَفْضَحُ قَوْمِي سَائِرَ الْيَوْمِ، فَمَضَتْ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَبْصِرُوهَا فَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَكْحَلَ الْعَيْنَيْنِ سَابِغَ الأَلْيَتَيْنِ خَدَلَّجَ السَّاقَيْنِ فَهُوَ لِشَرِيكِ بْنِ سَحْمَاءَ)) فَجَاءَتْ بِهِ كَذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْلاَ مَا مَضَى مِنْ كِتَابِ اللهِ لَكَانَ لِي وَلَهَا شَأْنٌ)). [راجع: ٢٦٧١]

हमसे इब्ने अबी अदी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन हस्सान ने, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि हिलाल बिन उमय्या (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के सामने अपनी बीवी पर शुरैक बिन सहमाअ के साथ तोहमत लगाई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसके गवाह लाओ वरना तुम्हारी पीठ पर हद लगाई जाएगी। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! एक शख़्स अपनी बीवी के साथ एक ग़ैर को मुब्तला देखता है तो क्या वो ऐसी हालत में गवाह तलाश करने जाएगा? लेकिन हज़रत यही फ़र्माते रहे कि गवाह लाओ, वरना तुम्हारी पीठ पर हद जारी की जाएगी। इस पर हिलाल (रज़ि.) ने अर्ज़ किया। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ नबी बनाकर भेजा है मैं सच्चा हूँ और अल्लाह तआला ख़ुद ही कोई ऐसी आयत नाज़िल फ़र्माएगा। जिसके ज़रिये मेरे ऊपर से हद दूर हो जाएगी। इतने में हज़रत ज़िब्रईल तशरीफ़ लाए और ये आयत नाज़िल हुई। वल्लज़ीना यरमूना अज़्वाजहुम इन कान काना मिनस्सादिक़ीन तक (जिसमें ऐसी सूरत में लिआन का हुक्म है) जब नुज़ूले वह्य का सिलसिला ख़त्म हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने हिलाल (रज़ि.) को आदमी भेजकर बुलवाया वो आए और आयत के मुताबिक़ चार बार क़सम ख़ाई। आँहज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़र्माया कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि तुममें से एक ज़रूर झूठा है तो क्या वो तौबा करने पर तैयार नहीं है। उसके बाद उनकी बीवी खड़ी हुई और उन्होंने भी क़सम खाई, जब वो पाँचवीं पर पहुँची (और चार बार अपनी बराअत की क़सम खाने के बाद, कहने लगीं कि अगर मैं झूठी हूँ तो मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो) तो लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की और कहा कि (अगर तू झूठी हो तो) उससे तुम पर अल्लाह का अज़ाब ज़रूर नाज़िल होगा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया उस पर वो हिचकिचाईं हमने समझा कि अब वो अपना बयान वापस ले लेंगी। लेकिन ये कहते हुए कि ज़िंदगी भर के लिये मैं अपनी क़ौम को रुस्वा नहीं करूँगी। पाँचवीं बार क़सम खाई। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि देखना अगर बच्चा ख़ूब स्याह आँखों वाला, भारी सुरीन और भरी भरी पिण्डलियों वाला पैदा हो तो फिर वो शुरैक बिन सहमाअ ही का होगा। चुनाँचे जब पैदा हुआ तो वो उसी शक्ल व सूरत का था आँहज़रत (ﷺ) ने

फ़र्माया। अगर किताबुल्लाह का हुक्म न आ चुका होता तो मैं उसे रजमी सज़ा देता। (राजेअ : 2671)

तश्रीह : या'नी रजम करता मगर रजम बग़ैर चार आदमियों की गवाही के या इक़रार के नहीं हो सकता। आँहज़रत (ﷺ) की बात और थी। मुम्किन है आपको वह्य से ये मा'लूम हो गया हो कि उस औरत ने ज़िना किया है। अक्षर मुफ़स्सिरीन ने लिआन की आयत का शाने नुज़ूल हिलाल बिन उमय्या के बारे में बतलाया है।

बाब 4 : आयत 'वल्खामिसतु अन्न गज़बल्लाहि अलैहा' की तफ़्सीर या'नी,

٤- باب قَوْلِهِ : ﴿وَالْخَامِسَةُ أَنَّ غَضَبَ اللهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ﴾

और पाँचवीं मर्तबा ये कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हो अगर वो मर्द सच्चा है।

4748. हमसे मुक़द्दम बिन मुहम्मद बिन यह्या ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे चचा क़ासिम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने, क़ासिम ने उबैदुल्लाह से सुना था और उबैदुल्लाह ने नाफ़ेअ से और उन्होंने हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) से कि एक साहब ने अपनी बीवी पर रसूले करीम (ﷺ) के ज़माने मे एक ग़ैर मर्द के साथ तोह्मत लगाई और कहा कि औरत का हमल मेरा नहीं है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) के हुक्म से दोनों मियाँ—बीवी ने अल्लाह के फ़र्मान के मुताबिक़ लिआन किया। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने बच्चे के बारे में फ़ैसला किया कि वो औरत ही का होगा और लिआन करने वाले दोनों मियाँ—बीवी में जुदाई करवा दी। (दीगर मक़ाम : 5306, 5313, 5315, 6748)

٤٧٤٨- حَدَّثَنَا مُقَدَّمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَمِّي الْقَاسِمُ بْنُ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، وَقَدْ سَمِعَ مِنْهُ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَنَّ رَجُلاً رَمَى امْرَأَتَهُ فَانْتَفَى مِنْ وَلَدِهَا فِي زَمَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأَمَرَ بِهِمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَتَلاَعَنَا كَمَا قَالَ اللهُ، ثُمَّ قَضَى بِالْوَلَدِ لِلْمَرْأَةِ وَفَرَّقَ بَيْنَ الْمُتَلاَعِنَيْنِ. [أطرافه في: ٥٣٠٦، ٥٣١٣، ٥٣١٤، ٥٣١٥، ٦٧٤٨].

लिआन के बाद मर्द-औरत में तफ़रीक़ करा दी जाती है या'नी बमुजर्रद उसके कि लिआन से फ़ारिग़ हो औरत पर तलाक़ पड़ जाती है। इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद और अक्षर अहले हदीष का यही क़ौल है और उवमिर ने जो तलाक़ दी उसकी ज़रूरत न थी। वो ये समझे कि लिआन तलाक़ नहीं है। उष्मान ग़नी (रज़ि.) का ये क़ौल है कि लिआन के बाद मर्द जब तक तलाक़ न दे तलाक़ नहीं पड़ती। कुछ ने कहा लिआन से निकाह फ़स्ख़ हो जाता है और ख़ुद ब ख़ुद दोनों में जुदाई हो जाती है (वहीदी)

बाब 5 : आयत 'इन्नल्लज़ीन जाऊ बिल्इफ़्कि उस्बतुम्मिन्कुम' की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قَوْلُهُ : ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لاَ تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِىءٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ أَفَّاكٌ كَذَّابٌ.

बेशक जिन लोगों ने (हज़रत आइशा रज़ि. पर) तोह्मत लगाई है वो तुममें से एक छोटा सा गिरोह है तुम उसे अपने हक़ में बुरा न समझो। बल्कि ये तुम्हारे हक़ में बेहतर ही है, उनमें से हर शख़्स को जिसने जितना जो कुछ किया था गुनाह हुआ और जिसने उनमें से सबसे ज़्यादा बढ़कर हिस्सा लिया था उसके लिये सज़ा भी सबसे

बढ़कर सख़्त है। इफ़्क के मा'नी झूठा है।

तश्रीह : ये शुरू है उन आयतों का जो हज़रत आइशा (रज़ि.) की तोह्मत के बाब मे उतरी हैं बाब **व क़ूलुहू लौ ला इज़ समिअ़तुमूहु** नुस्ख़ा मत्बूआ मिस्र में बाब का तर्जुमा यूँ ही मज़्कूर है लेकिन उसमें ये अश्काल होता है कि ये नज़्मे क़ुर्आनी के मुवाफ़िक़ नहीं है। ये आयत **लौ ला जाऊ अ़लैहि बिअर्बअति शुहदाअ व लौ ला इज़ समिअतुमूहु क़ुल्तुम** से पहले है। मतन क़स्तलानी और दूसरे नुस्ख़ों में बाब का तर्जुमा यूँ मज़्कूर है। बाब **लौ ला इज़ समिअ़तुहू ज़न्नल्मूमिनून वल्मूमिनातु बिअन्फ़ुसिहिम ख़ैरा** आख़िर आयत हुमुल काज़िबून तक यही नुस्ख़ा सहीह मा'लूम होता है (वहीदी)

4749. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया वल्लज़ीना तवल्ला किबरुहू या'नी और जिसने उनमें से सबसे बढ़कर हिस्सा लिया था और मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) है। (राजेअ : 4593)

٤٧٤٩- حدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. ﴿وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ﴾ قَالَتْ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابن سَلُولَ.
[راجع: ٤٥٩٣]

तश्रीह : इस झूठ का बनाने वाला और इसे मुश्तहर करने वाला यही मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई था इस हरकत के सबब वो मल्ऊन ठहरा।

बाब 6 : आयत 'लौ ला इज़ समिअतुमूहु ज़न्नल्मूमिनून' की तफ़्सीर या'नी,

जब तुम लोगों ने ये बुरी ख़बर सुनी थी तो क्यूँ न मुसलमान मर्दों और औरतों ने अपनी माँ के हक़ में नेक गुमान किया और ये क्यूँ न कह दिया कि ये तो सरीह झूठा तूफ़ान लगाना है, अपने क़ौल पर चार गवाह क्यूँ न लाए। सो जब ये लोग गवाह नहीं लाए तो बस ये लोग अल्लाह के नज़दीक सर बसर झूठे ही हैं।

٦- باب ﴿لَوْ لاَ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُبِينٌ لَوْلاَ جَاؤُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذَا لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ﴾

4750. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यिब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) पर तोह्मत लगाने का वाक़िया बयान किया। या'नी जिसमें तोह्मत लगाने वालों ने उनके बारे में अफ़वाह उड़ाई थी और फिर अल्लाह तआ़ला ने उनको उससे बरी क़रार दे दिया था। उन तमाम रावियों ने पूरी हदीष़ का एक एक टुकड़ा बयान किया और उन रावियों मे से कुछ का बयान कुछ दूसरे के बयान की तस्दीक़ करता है, ये अलग बात है कि उनमें से कुछ रावी को

٤٧٥٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا، فَبَرَّأَهَا اللهُ مِمَّا قَالُوا، وَكُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ، وَبَعْضُ

कुछ दूसरे के मुक़ाबले में हदीष़ ज़्यादा बेहतर त़रीक़ा पर महफ़ूज़ याद थी मुझसे ये हदीष़ उ़र्वा (रज़ि.) ने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से इस त़रह़ बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) सफ़र का इरादा करते तो अपनी बीवियों में से किसी को अपने साथ ले जाने के लिये क़ुर्आ डालते जिनका नाम निकल जाता उन्हें अपने साथ ले जाते। उन्होंने बयान किया कि एक ग़ज़्वे के मौक़े पर इसी त़रह़ आपने क़ुर्आ डाला और मेरा नाम निकला। मैं आपके साथ रवाना हुई। ये वाक़िया पर्दा के हुक्म नाज़िल होने के बाद का है। मुझे होदज समेत ऊँट पर चढ़ा दिया जाता और इसी त़रह़ उतार लिया जाता था। यूँ हमारा सफ़र जारी रहा। फिर जब आप उस ग़ज़्वे से फ़ारिग़ होकर वापस लौटे और हम मदीना के क़रीब पहुँच गये तो एक रात जब कूच का हुक्म हुआ। मैं (क़ज़ा-ए-ह़ाजत के लिये) पड़ाव से कुछ दूर गई और क़ज़ाए ह़ाजत के बाद अपने कजावे के पास वापस आ गई। उस वक़्त मुझे ख़्याल हुआ कि मेरा ज़िफ़ार के नगीनों का बना हुआ हार कहीं रास्ते में गिर गया है। मैं उसे ढूँढने लगी और उसमें इतना मगन हो गई कि कूच का ख़्याल ही न रहा।

इतने में जो लोग मेरे होदज को सवार किया करते थे आए और मेरे होदज को उठाकर उस ऊँट पर रख दिया जो मेरी सवारी के लिये था। उन्होंने यही समझा कि मैं उसमें बैठी हुई हूँ। उन दिनों औरतें बहुत हल्की फुल्की होती थीं गोश्त से उनका ज़िस्म भारी नहीं होता था क्योंकि खाने–पीने को बहुत कम मिलता था। यही वजह थी कि जब लोगों ने होदज को उठाया तो उसके हल्के पन में उन्हें कोई अजनबियत नहीं मह़सूस हुई। मैं यूँ भी उस वक़्त कम उ़म्र लड़की थी। चुनाँचे उन लोगों ने उस ऊँट को उठाया और चल पड़े। मुझे हार उस वक़्त मिला जब लश्कर गुज़र चुका था। मैं जब पड़ाव पर पहुँची तो वहाँ न कोई पुकारने वाला था और न कोई जवाब देने वाला। मैं वहाँ जाकर बैठ गई जहाँ पहले बैठी हुई थी। मुझे यक़ीन था कि जल्द ही उन्हें मेरे न होने का इल्म हो जाएगा और फिर वो मुझे तलाश करने के लिये यहाँ आएँगे। मैं अपनी उसी जगह पर बैठी हुई थी कि मेरी आँख लग गई और मैं सो गई। स़फ़्वान बिन मुअ़त्तल सुलमी ज़क्वानी लश्कर के पीछे पीछे आ रहे थे (ताकि अगर लश्कर

حَدِيثِهِمْ يُصَدِّقُ بَعْضًا، وَإِنْ كَانَ بَعْضُهُمْ أَوْعَى لَهُ مِنْ بَعْضٍ، الَّذِي حَدَّثَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ أَقْرَعَ بَيْنَ أَزْوَاجِهِ، فَأَيَّتُهُنَّ خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَهُ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَأَقْرَعَ بَيْنَنَا فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا فَخَرَجَ سَهْمِي، فَخَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ مَا نَزَلَ الْحِجَابُ فَأَنَا أُحْمَلُ فِي هَوْدَجِي وَأُنْزَلُ فِيهِ. فَسِرْنَا حَتَّى إِذَا فَرَغَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ غَزْوَتِهِ تِلْكَ وَقَفَلَ وَدَنَوْنَا مِنَ الْمَدِينَةِ قَافِلِينَ آذَنَ لَيْلَةً بِالرَّحِيلِ، فَمَشَيْتُ حَتَّى جَاوَزْتُ الْجَيْشَ، فَلَمَّا قَضَيْتُ شَأْنِي أَقْبَلْتُ إِلَى رَحْلِي، فَإِذَا عِقْدٌ لِي مِنْ جَزْعِ ظَفَارٍ قَدِ انْقَطَعَ، فَالْتَمَسْتُ عِقْدِي وَحَبَسَنِي ابْتِغَاؤُهُ. وَأَقْبَلَ الرَّهْطُ الَّذِينَ كَانُوا يَرْحَلُونَ لِي فَاحْتَمَلُوا هَوْدَجِي، فَرَحَلُوهُ عَلَى بَعِيرِي الَّذِي كُنْتُ رَكِبْتُ وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنِّي فِيهِ، وَكَانَ النِّسَاءُ إِذْ ذَاكَ خِفَافًا لَمْ يُثْقِلْهُنَّ اللَّحْمُ، إِنَّمَا تَأْكُلُ الْعُلْقَةَ مِنَ الطَّعَامِ، فَلَمْ يَسْتَنْكِرِ الْقَوْمُ خِفَّةَ الْهَوْدَجِ حِينَ رَفَعُوهُ، وَكُنْتُ جَارِيَةً حَدِيثَةَ السِّنِّ، فَبَعَثُوا الْجَمَلَ وَسَارُوا، فَوَجَدْتُ عِقْدِي بَعْدَمَا اسْتَمَرَّ

الْجَيْشُ، فَجِئْتُ مَنَازِلَهُمْ وَلَيْسَ بِهَا دَاعٍ وَلاَ مُجِيبٌ. فَأَمَمْتُ مَنْزِلِي الَّذِي كُنْتُ بِهِ، وَظَنَنْتُ أَنَّهُمْ سَيَفْقِدُونِي فَيَرْجِعُونَ إِلَيَّ. فَبَيْنَا أَنَا جَالِسَةٌ فِي مَنْزِلِي غَلَبَتْنِي عَيْنِي فَنِمْتُ، وَكَانَ صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطَّلِ السُّلَمِيُّ ثُمَّ الذَّكْوَانِيُّ مِنْ وَرَاءِ الْجَيْشِ، فَأَدْلَجَ، فَأَصْبَحَ عِنْدَ مَنْزِلِي، فَرَأَى سَوَادَ إِنْسَانٍ نَائِمٍ فَأَتَانِي فَعَرَفَنِي حِينَ رَآنِي، وَكَانَ يَرَانِي قَبْلَ الْحِجَابِ، فَاسْتَيْقَظْتُ بِاسْتِرْجَاعِهِ حِينَ عَرَفَنِي، فَخَمَّرْتُ وَجْهِي بِجِلْبَابِي، وَاللهِ مَا كَلَّمَنِي كَلِمَةً وَلاَ سَمِعْتُ مِنْهُ كَلِمَةً غَيْرَ اسْتِرْجَاعِهِ، حَتَّى أَنَاخَ رَاحِلَتَهُ فَوَطِئَ عَلَى يَدَيْهَا فَرَكِبْتُهَا، فَانْطَلَقَ يَقُودُ بِي الرَّاحِلَةَ حَتَّى أَتَيْنَا الْجَيْشَ بَعْدَ مَا نَزَلُوا مُوغِرِينَ فِي نَحْرِ الظَّهِيرَةِ، فَهَلَكَ مَنْ هَلَكَ، وَكَانَ الَّذِي تَوَلَّى الإِفْكَ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولَ فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ، فَاشْتَكَيْتُ حِينَ قَدِمْتُ شَهْرًا، وَالنَّاسُ يُفِيضُونَ فِي قَوْلِ أَصْحَابِ الإِفْكِ، لاَ أَشْعُرُ بِشَيْءٍ مِنْ ذَلِكَ، وَهُوَ يَرِيبُنِي فِي وَجَعِي أَنِّي لاَ أَعْرِفُ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللُّطْفَ الَّذِي كُنْتُ أَرَى مِنْهُ حِينَ أَشْتَكِي إِنَّمَا يَدْخُلُ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ يَقُولُ كَيْفَ تِيكُمْ ثُمَّ يَنْصَرِفُ، فَذَاكَ الَّذِي يَرِيبُنِي وَلاَ أَشْعُرُ بِالشَّرِّ، حَتَّى خَرَجْتُ بَعْدَمَا نَقَهْتُ فَخَرَجَتْ مَعِي أُمُّ

वालों से कोई चीज़ छूट जाए तो उसे उठा लें सफ़र में ये दस्तूर था) रात का आख़िरी हिस्सा था, जब मेरे मुक़ाम पर पहुँचे तो सुबह हो चुकी थी। उन्होंने (दूर से) एक इंसानी साया देखा कि पड़ा हुआ है वो मेरे क़रीब आए और मुझे देखते ही पहचान गये। पर्दे के हुक्म से पहले उन्होंने मुझे देखा था। जब वो मुझे पहचान गये तो इन्नालिल्लाह पढ़ने लगे। मैं उनकी आवाज़ पर जाग गई और चेहरा चादर में छुपा लिया। अल्लाह की क़सम! उसके बाद उन्होंने मुझसे एक लफ़्ज़ भी नहीं कहा और न मैंने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन के सिवा उनकी ज़ुबान से कोई कलिमा सुना। उसके बाद उन्होंने अपना ऊँट बिठा दिया और मैं उस पर सवार हो गई वो (ख़ुद पैदल) ऊँट को आगे से खींचते हुए ले चले। हम लश्कर से उस वक़्त मिले जब वो भरी दोपहर में (धूप से बचने के लिये) पड़ाव किये हुए थे, उसके बाद जिसे हलाक होना था वो हलाक हुआ। उस तोह्मत में पेश पेश अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल मुनाफ़िक़ था। मदीना पहुँचकर मैं बीमार पड़ गई और एक महीना तक बीमार रही। इस अ़र्से में लोगों में तोह्मत लगाने वालों की बातों का बराबर चर्चा रहा लेकिन मुझे उन बातों का कोई एहसास भी नहीं था। सिर्फ़ एक मामला से मुझे शुब्हा सा होता था कि मैं अपनी बीमारी में रसूले करीम (ﷺ) की तरफ़ से लुत्फ़ व मुहब्बत का इज़्हार नहीं देखती थी जो पहली बीमारियों के दिनों में देख चुकी थी। आँहज़रत (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाते और सलाम करके सिर्फ़ इतना पूछ लेते कि क्या हाल है? और फिर वापस लौट जाते। आँहज़रत (ﷺ) के इसी तर्ज़े अ़मल की वजह से मुझे शुब्हा होता था लेकिन सूरतेहाल का मुझे कोई एहसास नहीं था। एक दिन जब (बीमारी से कुछ इफ़ाक़ा था) कमज़ोरी बाक़ी थी तो मैं बाहर निकली मेरे साथ उम्मे मिस्तह (रज़ि.) भी थीं हम मनासेअ़ की तरफ़ गये। क़ज़ा-ए-हाजत के लिये हम वहीं जाया करते थे और क़ज़ा-ए-हाजत के लिये हम सिर्फ़ रात ही को जाया करते थे। ये उससे पहले की बात है जब हमारे घरों के क़रीब पाख़ाने नहीं बने थे। उस वक़्त तक हम क़दीम अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ क़ज़ा-ए-हाजत आबादी से दूर जाकर किया करते थे। उससे हमें बदबू से तकलीफ़ होती थी कि बैतुलख़ला हमारे घर के क़रीब बना दिये जाएँ। ख़ैर मैं और उम्मे मिस्तह क़ज़ा-ए-हाजत के लिये रवाना हुए। वो अबी रहम बिन

مِسْطَحٍ قِبَلَ الْمَنَاصِعِ، وَهُوَ مُتَبَرَّزُنَا وَكُنَّا لاَ نَخْرُجُ إِلاَّ لَيْلاً إِلَى لَيْلٍ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ نَتَّخِذَ الْكُنُفَ قَرِيبًا مِنْ بُيُوتِنَا، وَأَمْرُنَا أَمْرُ الْعَرَبِ الأُوَلِ فِي التَّبَرُّزِ قِبَلَ الْغَائِطِ، فَكُنَّا نَتَأَذَّى بِالْكُنُفِ أَنْ نَتَّخِذَهَا عِنْدَ بُيُوتِنَا. فَانْطَلَقْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ وَهِيَ ابْنَةُ أَبِي رُهْمِ بْنِ عَبْدِ مَنَافٍ، وَأُمُّهَا بِنْتُ صَخْرِ بْنِ عَامِرٍ خَالَةُ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ، وَابْنُهَا مِسْطَحُ بْنُ أُثَاثَةَ فَأَقْبَلْتُ أَنَا وَأُمُّ مِسْطَحٍ قِبَلَ بَيْتِي قَدْ فَرَغْنَا مِنْ شَأْنِنَا، فَعَثَرَتْ أُمُّ مِسْطَحٍ فِي مِرْطِهَا، فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلْتُ لَهَا: بِئْسَ مَا قُلْتِ، أَتَسُبِّينَ رَجُلاً شَهِدَ بَدْرًا؟ قَالَتْ: أَيْ هَنْتَاهْ، أَوَ لَمْ تَسْمَعِي مَا قَالَ؟ قَالَتْ قُلْتُ : وَمَا قَالَ؟ فَأَخْبَرَتْنِي بِقَوْلِ أَهْلِ الإِفْكِ، فَازْدَدْتُ مَرَضًا عَلَى مَرَضِي. قَالَتْ فَلَمَّا رَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي وَدَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعْنِي سَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: ((كَيْفَ تِيكُمْ؟)) فَقُلْتُ : أَتَأْذَنُ لِي أَنْ آتِيَ أَبَوَيَّ، قَالَتْ: وَأَنَا حِينَئِذٍ أُرِيدُ أَنْ أَسْتَيْقِنَ الْخَبَرَ مِنْ قِبَلِهِمَا، قَالَتْ فَأَذِنَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَجِئْتُ أَبَوَيَّ، فَقُلْتُ لأُمِّي : يَا أُمَّتَاهُ مَا يَتَحَدَّثُ النَّاسُ؟ قَالَتْ: يَا بُنَيَّةُ هَوِّنِي عَلَيْكِ، فَوَ اللهِ لَقَلَّمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ قَطُّ وَضِيئَةً عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا وَلَهَا ضَرَائِرُ إِلاَّ كَثَّرْنَ عَلَيْهَا. قَالَتْ : فَقُلْتُ سُبْحَانَ اللهِ. وَلَقَدْ تَحَدَّثَ

अब्दे मुनाफ़ की बेटी थीं। इस तरह वो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़ाला होती हैं। उनके लड़के मिस्तह बिन अषाषा हैं। क़ज़ा-ए-हाजत के बाद जब हम घर वापस आने लगे तो मिस्तह की माँ का पैर उन्हीं की चादर में उलझकर फिसल गया। उस पर उनकी ज़ुबान से निकला मिस्तह बर्बाद हो। मैंने कहा तुमने बुरी बात कही, तुम एक ऐसे शख़्स को बुरा कहती हो जो ग़ज़्व-ए-बद्र में शरीक रहा है। उन्होंने कहा, वाह! उसकी बातें तूने नहीं सुनी? मैंने पूछा उन्होंने क्या कहा है? फिर उन्होंने मुझे तोह्मत लगाने वालों की बातें बताईं मैं पहले से बीमार थी ही, उन बातों को सुनकर मेरा मर्ज़ और बढ़ गया और फिर जब मैं घर पहुँची और रसूलुल्लाह (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए तो आपने सलाम किया और पूछा कैसी हो? मैंने अ़र्ज़ किया कि क्या आँह़ज़रत (ﷺ) मुझे अपने माँ बाप के घर जाने की इजाज़त देंगे? मेरा मक़्सद माँ बाप के यहाँ जाने से सिर्फ़ ये था कि इस ख़बर की ह़क़ीक़त उनसे पूरी त़रह मा'लूम हो जाएगी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे जाने की इजाज़त दे दी और मैं अपने वालिदैन के घर आ गई। मैंने वालिदा से पूछा कि ये लोग किस त़रह की बातें कर रहे है? उन्होंने फ़र्माया बेटी स़ब्र करो, कम ही कोई ऐसी ह़सीन व जमील औ़रत किसी ऐसे मर्द के निकाह़ में होगी जो उससे मुह़ब्बत रखता हो और उसकी सौकनें भी हों और फिर भी वो इस त़रह उसे नीचा दिखाने की कोशिश न करें। बयान किया उस पर मैंने कहा, सुब्हानल्लाह! क्या इस त़रह का चर्चा लोगों ने भी कर दिया? उन्होंने बयान किया कि उसके बाद मैं रोने लगी और रात भर रोती रही। सुबह़ हो गई लेकिन मेरे आंसू नहीं थमते थे और न नींद का नामोनिशान था। सुबह़ हो गई और मैं रोये जा रही थी इसी अ़र्से में आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बुलाया क्योंकि उस मामले में आप पर कोई वह्य नाज़िल नहीं हुई थी। आप उनसे मेरे छोड़ देने के लिये मश्वरा लेना चाहते थे क्योंकि वह्य उतरने में देर हो गई थी। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) कहती हैं कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) को उसी के मुत़ाबिक़ मश्वरा दिया जिसका उन्हें इ़ल्म था कि आपकी अहलिया (या'नी ख़ुद आ़इशा स़िद्दीक़ा रज़ि.) इस तोह्मत से बरी हैं। उसके अ़लावा वो ये भी जानते थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) को उनसे

النَّاسُ بِهَذَا؟ قَالَتْ : فَبَكَيْتُ تِلْكَ اللَّيْلَةَ حَتَّى أَصْبَحْتُ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ، وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ حَتَّى أَصْبَحْتُ أَبْكِي، فَدَعَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حِينَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْتَأْمِرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ. قَالَتْ : فَأَمَّا أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ فَأَشَارَ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي يَعْلَمُ مِنْ بَرَاءَةِ أَهْلِهِ، وَبِالَّذِي يَعْلَمُ لَهُمْ فِي نَفْسِهِ مِنَ الْوُدِّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، أَهْلَكَ، وَمَا نَعْلَمُ إِلاَّ خَيْرًا. وأَمَّا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، لَمْ يُضَيِّقِ اللهُ عَلَيْكَ وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ، وَإِنْ تَسْأَلِ الْجَارِيَةَ تَصْدُقْكَ. قَالَتْ: فَدَعَا رَسُولُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَرِيرَةَ، فَقَالَ : ((أَيْ بَرِيرَةُ هَلْ رَأَيْتُ مِنْ شَيْءٍ يُرِيبُكِ))؟ قَالَتْ بَرِيرَةُ : لاَ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ، إِنْ رَأَيْتُ عَلَيْهَا أَمْرًا أَغْمِصُهُ عَلَيْهَا أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِينِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ. فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَعْذَرَ يَوْمَئِذٍ مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنِ سَلُول، قَالَتْ: فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: ((يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ، مَنْ يَعْذِرُنِي مِنْ رَجُلٍ قَدْ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي؟ فَوَ اللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ

कितना ता'ल्लुक़े ख़ातिर है। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपकी बीवी के बारे में ख़ैरो–भलाई के सिवा और हमें किसी चीज़ का इल्म नहीं और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआ़ला ने आप पर कोई तंगी नहीं की है, औ़रतें उनके सिवा और भी बहुत हैं, उनकी बांदी (बरीरह रज़ि.) से भी आप इस मामले में पूछ लें। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने बरीरह (रज़ि.) को बुलाया और दरयाफ़्त किया, बरीरह (रज़ि.)! क्या तुमने कोई ऐसी चीज़ देखी है जिससे तुझको शक गुज़रा हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया, नहीं हुज़ूर (ﷺ)! उस ज़ात की क़सम! जिसने आपको ह़क़ के साथ भेजा है, मैंने उनमें कोई ऐसी बात नहीं देखी जिस पर मैं ऐ़ब लगा सकूँ, एक बात ज़रूर है कि वो कम उम्र लड़की हैं, आटा गूँधने में भी सो जाती हैं और उतने में कोई बकरी या परिन्दा वग़ैरह वहाँ पहुँच जाता है और उनका गुँधा हुआ आटा खा जाता है। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हुए और उस दिन आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल की शिकायत की। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने मिम्बर पर खड़े होकर फ़र्माया ऐ मुसलमानों! एक ऐसे शख़्स के बारे में कौन मेरी मदद करता है जिसकी अज़िय्यते रसानी अब मेरे घर तक पहुँच गई है। अल्लाह की क़सम कि मैं अपनी बीवी को नेक पाक दामन होने के सिवा कुछ नहीं जानता और ये लोग जिस मर्द का नाम ले रहे हैं उनके बारे में भी ख़ैर और भलाई के सिवा मैं और कुछ नहीं जानता। वो जब भी मेरे घर में गये तो मेरे साथ ही गये हैं। उस पर सअ़द बिन मुआ़ज़ अंसारी (रज़ि.) उठे और कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपकी मदद करूँगा और अगर वो शख़्स क़बीला औस से ता'ल्लुक़ रखता है तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूँगा और अगर वो हमारे भाइयों या'नी ख़ज़रज में का कोई आदमी है तो आप हमें हुक्म दें, ता'मील में कोताही नहीं होगी। रावी ने बयान किया कि उसके बाद सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) खड़े हुए, वो क़बीला ख़ज़रज के सरदार थे, उससे पहले वो मर्दे सालेह थे लेकिन आज उन पर क़ौमी ह़मिय्यत

ग़ालिब आ गई थी (अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल मुनाफ़िक़) उन्हीं के क़बीले से ता'ल्लुक़ रखता था उन्होंने उठकर सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) से कहा अल्लाह की क़सम! तुमने झूठ कहा है तुम उसे क़त्ल नहीं कर सकते, तुममें उसके क़त्ल की ताक़त नहीं है। फिर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) खड़े हुए वो सअ़द बिन मुआ़ज़ (रज़ि.) के चचेरे भाई थे उन्होंने सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) से कहा कि अल्लाह की क़सम! तुम झूठ बोलते हो, हम उसे ज़रूर क़त्ल करेंगे, क्या तुम मुनाफ़िक़ हो गये हो कि मुनाफ़िक़ों की तरफ़दारी मे लड़ते हो? इतने में दोनों क़बीले औस और ख़ज़रज उठ खड़े हुए और नौबत आपस ही में लड़ने तक पहुँच गई। रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर खड़े थे। आप (ﷺ) लोगों को ख़ामोश करने लगे। आख़िर सब लोग चुप हो गये और आँहज़रत (ﷺ) भी ख़ामोश हो गये। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उस दिन भी मैं बराबर रोती रही न आंसू थमता था और न नींद आती थी। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (दूसरी) सुबह हुई तो मेरे वालिदैन मेरे पास ही मौजूद थे, दो रातें और एक दिन मुझे मुसलसल रोते हुए गुज़र गया था। इस अ़र्से में न मुझे नींद आई थी और न आंसू थमते थे वालिदैन सोचने लगे कि कहीं रोते रोते मेरा दिल न फट जाए। उन्होंने बयान किया कि अभी वो इसी तरह मेरे पास बैठे हुए थे और मैं रोये जा रही थी कि क़बीला अंसार की एक ख़ातून ने अंदर आने की इजाज़त चाही, मैंने उन्हें इजाज़त दे दी, वो भी मेरे साथ बैठकर रोने लगीं। हम उसी हाल में थे कि रसूले करीम (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और बैठ गये। उन्होंने कहा कि जबसे मुझ पर तोह्मत लगाई गई थी उस वक़्त से अब तक आँहज़रत (ﷺ) मेरे पास नहीं बैठे थे, आपने एक महीना तक उस मामले में इंतिज़ार किया और आप पर उस सिलसिले में कोई वह्य नाज़िल नहीं हुई। उन्होंने बयान किया कि बैठने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुत्बा पढ़ा फिर फ़र्माया, अम्माबअ़द! ऐ आइशा (रज़ि)! तुम्हारे बारे में मुझे इस इस तरह की ख़बरें पहुँची हैं पस अगर तुम बरी हो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी बराअत ख़ुद कर देगा। लेकिन अगर तुमसे

خَيْرًا، وَلَقَدْ ذَكَرُوا رَجُلاً مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ إِلاَّ خَيْرًا. وَمَا كَانَ يَدْخُلُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ مَعِي)). فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ الأَنْصَارِيُّ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَا أَعْذِرُكَ مِنْهُ، إِنْ كَانَ مِنَ الأَوْسِ ضَرَبْتُ عُنُقَهُ، وَإِنْ كَانَ مِنْ إِخْوَانِنَا مِنَ الْخَزْرَجِ أَمَرْتَنَا فَفَعَلْنَا أَمْرَكَ. قَالَتْ : فَقَامَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَهُوَ سَيِّدُ الْخَزْرَجِ وَكَانَ قَبْلَ ذَلِكَ رَجُلاً صَالِحًا وَلَكِنْ احْتَمَلَتْهُ الْحَمِيَّةُ فَقَالَ: لِسَعْدٍ كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ لاَ تَقْتُلُهُ وَلاَ تَقْدِرُ عَلَى قَتْلِهِ. فَقَامَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ وَهُوَ ابْنُ عَمِّ سَعْدٍ، فَقَالَ لِسَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ : كَذَبْتَ لَعَمْرُ اللهِ لَنَقْتُلَنَّهُ، فَإِنَّكَ مُنَافِقٌ تُجَادِلُ عَنِ الْمُنَافِقِينَ. فَتَثَاوَرَ الْحَيَّانِ الأَوْسُ وَالْخَزْرَجُ حَتَّى هَمُّوا أَنْ يَقْتَتِلُوا وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَائِمٌ عَلَى الْمِنْبَرِ، فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَتُوا وَسَكَتَ. قَالَتْ : فَمَكَثْتُ يَوْمِي ذَلِكَ لاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ وَلاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ. قَالَتْ : فَأَصْبَحَ أَبَوَايَ عِنْدِي وَقَدْ بَكَيْتُ لَيْلَتَيْنِ وَيَوْمًا لاَ أَكْتَحِلُ بِنَوْمٍ وَلاَ يَرْقَأُ لِي دَمْعٌ يَظُنَّانِ أَنَّ الْبُكَاءَ فَالِقٌ كَبِدِي : قَالَتْ: فَبَيْنَمَا هُمَا جَالِسَانِ عِنْدِي وَأَنَا أَبْكِي فَاسْتَأْذَنَتْ عَلَيَّ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَأَذِنْتُ لَهَا، فَجَلَسَتْ تَبْكِي مَعِي، قَالَتْ : فَبَيْنَا نَحْنُ عَلَى ذَلِكَ دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ

ग़लती से कोई गुनाह हो गया है तो अल्लाह से दुआ-ए-मग़्फ़िरत करो और उसकी बारगाह में तौबा करो, क्योंकि बन्दा जब अपने गुनाह का इक़रार कर लेता है और फिर अल्लाह से तौबा करता है तो अल्लाह तआला भी उसकी तौबा क़ुबूल कर लेता है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपनी बातचीत ख़त्म करे चुके तो एकबारगी मेरे आंसू इस तरह ख़ुश्क हो गये जैसे एक क़तरा भी बाक़ी न रहा हो। मैंने अपने वालिद (अबूबक्र रज़ि.) से कहा कि आप मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) को जवाब दीजिए। उन्होंने फ़र्माया अल्लाह की क़सम! मैं नहीं समझता कि मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) को इस सिलसिले में क्या कहना चाहिये। फिर मैंने अपनी वालिदा से कहा कि आँहज़रत (ﷺ) की बातों का मेरी तरफ़ से आप जवाब दें। उन्होंने भी यही कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझे नहीं मा'लूम कि मैं आपसे क्या अर्ज़ करूँ। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं ख़ुद ही बोली मैं उस वक़्त नौ उम्र लड़की थी, मैंने बहुत ज़्यादा क़ुर्आन नहीं पढ़ा था (मैंने कहा कि) अल्लाह की क़सम! मैं तो ये जानती हूँ कि इन अफ़वाहों के बारे में जो कुछ आप लोगों ने सुना है वो आप लोगों के दिल में जम गया है और आप लोग उसे सहीह समझने लगे हैं, अब अगर मैं ये कहती हूँ कि मैं इन तोह्मतों से बरी हूँ और अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैं वाक़ई बरी हूँ, तो आप लोग मेरी बात का यक़ीन नहीं करेंगे, लेकिन अगर मैं तोह्मत का इक़रार कर लूँ, हालाँकि अल्लाह के इल्म में है कि मैं उससे क़त्अन बरी हूँ, तो आप लोग मेरी तस्दीक़ करने लगेंगे। अल्लाह की क़सम! मेरे पास आप लोगों के लिये कोई मिष़ाल नहीं है सिवा यूसुफ़ (अलैहि.) के वालिद के उस इर्शाद के कि उन्होंने फ़र्माया था, पस सब्र ही अच्छा है और तुम जो कुछ बयान करते हो उस पर अल्लाह ही मेरी मदद करेगा, बयान किया कि फिर मैंने अपना रुख़ दूसरी तरफ़ कर लिया और अपने बिस्तर पर लेट गई। कहा कि मुझे पूरा यक़ीन था कि मैं बरी हूँ और अल्लाह तआला मेरी बराअत ज़रूर करेगा लेकिन अल्लाह की क़सम! मुझे इसका वहम व गुमान भी नहीं था कि अल्लाह तआला मेरे बारे में ऐसी

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمَ ثُمَّ جَلَسَ، قَالَتْ : وَلَمْ يَجْلِسْ عِنْدِي مُنْذُ قِيلَ مَا قِيلَ قَبْلَهَا، وَقَدْ لَبِثَ شَهْرًا لاَ يُوحَى إِلَيْهِ فِي شَأْنِي قَالَتْ: فَتَشَهَّدَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ جَلَسَ ثُمَّ قَالَ : ((أَمَّا بَعْدُ يَا عَائِشَةُ فَإِنَّهُ قَدْ بَلَغَنِي عَنْكِ كَذَا وَكَذَا، فَإِنْ كُنْتِ بَرِيئَةً فَسَيُبَرِّئُكِ اللهُ، وَإِنْ كُنْتِ أَلْمَمْتِ بِذَنْبٍ فَاسْتَغْفِرِي اللهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ، فَإِنَّ الْعَبْدَ إِذَا اعْتَرَفَ بِذَنْبِهِ ثُمَّ تَابَ إِلَى اللهِ تَابَ اللهُ عَلَيْهِ)). قَالَتْ : فَلَمَّا قَضَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَقَالَتَهُ قَلَصَ دَمْعِي حَتَّى مَا أُحِسُّ مِنْهُ قَطْرَةً، فَقُلْتُ لأَبِي : أَجِبْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا قَالَ : قَالَ : وَاللهِ مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: لأُمِّي: أَجِيبِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَتْ : مَا أَدْرِي مَا أَقُولُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَتْ : فَقُلْتُ وَأَنَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ لاَ أَقْرَأُ كَثِيرًا مِنَ الْقُرْآنِ: إِنِّي وَاللهِ لَقَدْ عَلِمْتُ لَقَدْ سَمِعْتُمْ هَذَا الْحَدِيثَ حَتَّى اسْتَقَرَّ فِي أَنْفُسِكُمْ وَصَدَّقْتُمْ بِهِ، فَلَئِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي بَرِيئَةٌ وَاللهُ يَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ لاَ تُصَدِّقُونِي بِذَلِكَ، وَلَئِنِ اعْتَرَفْتُ لَكُمْ بِأَمْرٍ وَاللهُ يَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ لَتُصَدِّقُنِّي وَاللهِ مَا أَجِدُ لَكُمْ مَثَلاً إِلاَّ قَوْلَ أَبِي يُوسُفَ،

قَالَ: ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾ قَالَتْ: ثُمَّ تَحَوَّلْتُ: فَاضْطَجَعْتُ عَلَى فِرَاشِي. قَالَتْ وَأَنَا حِينَئِذٍ أَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ وَأَنَّ اللهَ مُبَرِّئِي بِبَرَاءَتِي، وَلَكِنْ وَاللهِ مَا كُنْتُ أَظُنُّ أَنَّ اللهَ مُنْزِلٌ فِي شَأْنِي وَحْيًا يُتْلَى وَلَشَأْنِي فِي نَفْسِي كَانَ أَحْقَرَ مِنْ أَنْ يَتَكَلَّمَ اللهُ فِيَّ بِأَمْرٍ يُتْلَى وَلَكِنْ كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّوْمِ رُؤْيَا يُبَرِّئُنِي اللهُ بِهَا. قَالَتْ: فَوَاللهِ مَا رَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلاَ خَرَجَ أَحَدٌ مِنْ أَهْلِ الْبَيْتِ حَتَّى أُنْزِلَ عَلَيْهِ، فَأَخَذَهُ مَا كَانَ يَأْخُذُهُ مِنَ الْبُرَحَاءِ، حَتَّى إِنَّهُ لَيَتَحَدَّرُ مِنْهُ مِثْلُ الْجُمَانِ مِنَ الْعَرَقِ وَهُوَ فِي يَوْمٍ شَاتٍ مِنْ ثِقَلِ الْقَوْلِ الَّذِي يُنْزَلُ عَلَيْهِ قَالَتْ: فَلَمَّا سُرِّيَ عَنْ رَسُولِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ السُّرِّيَ عَنْهُ وَهُوَ يَضْحَكُ، فَكَانَتْ أَوَّلَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا: ((يَا عَائِشَةُ أَمَّا اللهُ عَزَّ وَجَلَّ فَقَدْ بَرَّأَكِ)). فَقَالَتْ أُمِّي: قُومِي إِلَيْهِ قَالَتْ: فَقُلْتُ وَاللهِ لاَ أَقُومُ إِلَيْهِ، وَلاَ أَحْمَدُ إِلاَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ. وَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لاَ تَحْسَبُوهُ﴾ الْعَشْرَ الآيَاتِ كُلَّهَا. فَلَمَّا أَنْزَلَ اللهُ هَذَا فِي بَرَاءَتِي قَالَ أَبُوبَكْرٍ الصِّدِّيقُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحِ بْنِ أُثَاثَةَ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ

वह्य नाज़िल फ़र्माएगा जिसकी तिलावत की जाएगी। मैं अपनी हैषियत इससे बहुत कमतर समझती थी कि अल्लाह तआला मेरे बारे में (क़ुर्आन मजीद की आयत) नाज़िल करे। अल्बत्ता मुझे इसकी तवक़्क़अ ज़रूर थी कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मेरे बारे में कोई ख़्वाब देखेंगे और अल्लाह तआला उसके ज़रिये मेरी बराअत कर देगा। बयान किया कि अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) अभी अपनी उसी मज्लिस में तशरीफ़ फ़र्मा थे घर वालों में से कोई बाहर न था कि आप पर वह्य का नुज़ूल शुरू हुआ और वही कैफ़ियत आप (ﷺ) पर त़ारी हुई थी जो वह्य के नाज़िल होते हुए त़ारी होती थी या'नी आप पसीने पसीने हो गये और पसीना मोतियों की त़रह आपके जिस्मे अत़्हर से ढलने लगा हालाँकि सर्दी के दिन थे। ये कैफ़ियत आप पर उस वह्य की शिद्दत की वजह से त़ारी होती थी जो आप पर नाज़िल हो रही थी। बयान किया कि फिर जब आँहज़रत (ﷺ) की कैफ़ियत ख़त्म हुई तो आप मुस्कुरा रहे थे और सबसे पहला कलिमा जो आपकी ज़ुबाने मुबारक से निकला, ये था कि आइशा (रज़ि.)! अल्लाह ने तुम्हें बरी क़रार दिया है। मेरी वालिदा ने फ़र्माया कि आँहुज़ूर (ﷺ) के सामने (आपका शुक्र अदा करने के लिये) खड़ी हो जाओ। बयान किया कि मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं हर्गिज़ आपके सामने खड़ी नहीं होऊँगी और अल्लाह पाक के सिवा और किसी की ता'रीफ़ नहीं करूँगी। अल्लाह तआला ने जो आयत नाज़िल की थी वो ये थी कि, बेशक जिन लोगों ने तोह्मत लगाई है वो तुममें से एक छोटा सा गिरोह है मुकम्मल दस आयतों तक। जब अल्लाह तआला ने ये आयतें मेरी बराअत में नाज़िल कर दीं तो अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) जो मिस्त़ह बिन उष़ाषा (रज़ि.) के अख़्राजात उनसे क़राबत और उनकी मुह्ताजी की वजह से ख़ुद उठाया करते थे उन्होंने उनके बारे में कहा कि अल्लाह की क़सम! अब मैं मिस्त़ह पर कभी कुछ भी ख़र्च नहीं करूँगा। उसने आइशा (रज़ि.) पर कैसी-कैसी तोह्मतें लगा दी हैं। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, और जो लोग तुममें बुज़ुर्गी और वुस्अत वाले हैं, वो क़राबत वालों को और

وَفَقْرِهِ: وَاللهِ لاَ أُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ شَيْئًا أَبَدًا بَعْدَ الَّذِي قَالَ لِعَائِشَةَ مَا قَالَ فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿وَلاَ يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا، أَلاَ تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَكُمْ وَاللهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ قَالَ أَبُو بَكْرٍ : بَلَى وَاللهِ، إِنِّي أُحِبُّ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لِي. فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحٍ النَّفَقَةَ الَّتِي كَانَ يُنْفِقُ عَلَيْهِ، وَقَالَ : وَاللهِ لاَ أَنْزِعُهَا مِنْهُ أَبَدًا. قَالَتْ عَائِشَةُ : وَكَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْأَلُ زَيْنَبَ ابْنَةَ جَحْشٍ عَنْ أَمْرِي فَقَالَ: ((يَا زَيْنَبُ مَا ذَا عَلِمْتِ أَوْ رَأَيْتِ))؟ فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ : أَحْمِي سَمْعِي وَبَصَرِي، مَا عَلِمْتُ إِلاَّ خَيْرًا قَالَتْ وَهْيَ الَّتِي كَانَتْ تُسَامِينِي مِنْ أَزْوَاجِ رَسُولِ اللهِ فَعَصَمَهَا اللهُ بِالْوَرَعِ، وَطَفِقَتْ أُخْتُهَا حَمْنَةُ تُحَارِبُ لَهَا، فَهَلَكَتْ فِيمَنْ هَلَكَ مِنْ أَصْحَابِ الأَفْكِ.

[راجع: ٢٥٩٣]

मिस्कीनों को और अल्लाह तआला के रास्ते में हिजरत करने वालों की मदद देने से क़सम न खा बैठें बल्कि चाहिये कि उनकी लग़्ज़िशों को मुआफ़ करते रहें और दरगुज़र करते रहें, बेशक अल्लाह बड़ा मग़्फ़िरत वाला, बड़ा रहमत वाला है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) बोले, हाँ अल्लाह की क़सम! मेरी तो यही ख़्वाहिश है कि अल्लाह तआला मेरी मग़्फ़िरत कर दे। चुनाँचे मिस्तह (रज़ि.) को वो फिर वो तमाम अख़्राजात देने लगे जो पहले दिया करते थे और फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! अब कभी उनका ख़र्च बन्द नहीं करूँगा। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से भी मेरे मामला में पूछा था। आपने पूछा कि ज़ैनब! तुमने भी कोई चीज़ कभी देखी है? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे कान और मेरी आँख को अल्लाह सलामत रखे, मैंने उनके अंदर ख़ैर के सिवा और कोई चीज़ नहीं देखी। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अज़्वाजे मुतह्हरात में वही एक थीं जो मुझसे भी ऊपर रहना चाहती थीं लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी परहेज़गारी की वजह से उन्हें तोह्मत लगाने से महफ़ूज़ रखा। लेकिन उनकी बहन हम्ना उनके लिये लड़ी और तोह्मत लगाने वालों के साथ वो भी हलाक हो गई।

(राजेअ: 2593)

तश्रीह : ये तवील हदीष ही वाक़िय-ए-इफ़्क के बारे में है। मुनाफ़िक़ीन के बहकाने में आने पर हज़रत हस्सान भी शुरू में इल्ज़ाम बाज़ों में शरीक हो गये थे। बाद में उन्होंने तौबा की और हज़रत आइशा की पाकीज़गी की शहादत दी जैसा कि शअर मज़्कूर हिस्सान रज़ान में मज़्कूर है। उनकी वालिदा फ़रीआ बिन्ते ख़ालिद बिन ख़ुनैस बिन लवज़ान बिन अब्दूद बिन षअल्बा बिन ख़ज़रज थीं। उम्मे रूमान हज़रत आइशा (रज़ि.) की वालिदा हैं उन्होंने जब ये वाक़िया हज़रत आइशा (रज़ि.) की ज़ुबान से सुना तो उनको इतना रंज नहीं हुआ जितना कि हज़रत आइशा (रज़ि.) को हो रहा था इसलिये कि वो संजीदा ख़ातून ऐसी हफ़्वात से मुताष्षिर होने वाली नहीं थी। हाँ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ज़रूर अपनी प्यारी बेटी का ये दुख सुनकर रोने लग गये, उनको फ़ख़्रे ख़ानदान बेटी का रंज देखकर सब्र न हो सका। आयाते बरात नाज़िल होने पर हज़रत आइशा (रज़ि.) ने अल्लाह पाक का शुक्रिया अदा किया और जोशे ईमानी से वो बातें कह डालीं जो रिवायत के

आख़िर में मज़्कूर है कि मैं ख़ालिस़ अल्लाह ही का शुक्र अदा करूँगी जिसने मुझको चेहरा दिखाने के क़ाबिल बना दिया वरना लोग तो आम व ख़ास़ सब मेरी तरफ़ से इस ख़बर में गिरफ़्तार हो चुके थे। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की कमाले तौह़ीद और स़िदक़ व इख़्लास़ और तवक्कल का क्या कहना, सच है, **अत्तय्यिबातु लित्तय्यिबनि वत्तय्यिबून लित्तय्यिबाति** (अन् नूर : 26) क़यामत तक के लिये उनकी पाकदामनी हर मोमिन की ज़ुबान और दिल और स़फ़्ह़ाते किताबुल्लाह पर नक़्श हो गई। **व ज़ालिक फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन व ख़ज़लल्लाहुल्काफ़िरीन वल्मुनाफ़िक़ीन इला यौमिद्दीनि आमीन.**

ह़ज़रत आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) पर तोह्मत का वाक़िया अ़ब्दुल्लाह बिन उबई जैसे मुनाफ़िक़ का गढ़ा हुआ था जो हर वक़्त इस्लाम की बैख़ कनी के लिये दिल में नापाक बातें सोचता रहता था। इस मुनाफ़िक़ की इस बकवास का कुछ और लोगों ने भी अष़र ले लिया मगर बाद में वो ताइब हुए जैसे ह़ज़रत ह़स्सान और मिस्तह़ वग़ैरह, अल्लाह पाक ने इस बारे में सूरह नूर में मुसलसल दस आयात नाज़िल फ़र्माई और क़यामत तक के लिये ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की पाक दामनी की आयात को क़ुर्आन मजीद में तिलावत किया जाता रहेगा। इसी से ह़ज़रत स़िद्दीक़ा (रज़ि.) की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत षाबित हुई। इस वाक़िया का सबसे अहम पहलू ये है कि रसूले अकरम (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे वरना इतने दिनों तक आप क्यूँ फ़िक्र और तरद्दुद में रहते जो लोग आप (ﷺ) के लिये ग़ैबदानी का अ़क़ीदा रखते हैं वो बड़ी ग़लती पर हैं। फ़ुक़हा-ए-अह़नाफ़ ने स़ाफ़ कह दिया है कि अंबिया औलिया के लिये ग़ैब जानने का अ़क़ीदा रखना कुफ़्र है। रहा ये मामला कि उनको बहुत से ग़ायब उमूर मा'लूम हो जाते हैं, सो ये अल्लाह पाक की वह्य और इल्हाम पर मौक़ूफ़ है। अल्लाह पाक अपने नेक बन्दों को बतौर मुअ़ज़िज़ा या करामत जब चाहता है कुछ उमूर मा'लूम करा देता है उसको ग़ैब नहीं कहा जा सकता। ये अल्लाह का अ़तिया है। ग़ैबदानी ये है कि बग़ैर किसी के मा'लूम कराये किसी को कुछ ख़ुद ब ख़ुद मा'लूम हो जाए ऐसा ग़ैब बन्दों मे से किसी को ह़ासिल नहीं है। क़ुर्आन मजीद में ज़ुबाने रिसालत से स़ाफ़ ऐलान करा दिया गया **लौ कुन्तु आलमुल्गैब लस्तक्षर्तु मिनल्ख़ैरि व मा मस्सनिस्सूउ** (अल् आराफ़ : 188) अगर मैं ग़ैबदाँ होता तो मैं बहुत सी भलाइयाँ जमा कर लेता और मुझको कोई तकलीफ़ नहीं हो सकती। इन तफ़्स़ीलात के बावजूद जो मौलवी मुल्ला आम मुसलमानों को ऐसे मबाह़िष़ में उलझाकर फ़ित्ना फ़साद बरपा कराते हैं वो अपने पेट की आग बुझाने के लिये अपने मुरीदों को उल्लू बनाते हैं। यही वो उ़लम-ए-सूअ हैं जिनकी वजह से इस्लाम को बेशतर ज़मानों में बड़े बड़े नुक़्स़ानात से दो चार होना पड़ा है। ऐसे उ़लमा का बायकाट करना उनकी ज़ुबानों को लगाम लगाना वक़्त का बहुत बड़ा जिहाद है जो आपके ता'लीमयाफ़्ता रोशन ख़्याल स़ाह़िबान फ़हम व फ़रासत नौजवानों को अंजाम देना है। अल्लाह पाक उम्मते मरह़ूमा पर रह़म करे कि वो इस्लाम के नामो निहाद नाम लेवाओं को पहचानकर उनके फ़ित्नों से नजात पा सके आमीन।

बाब 7 : आयत 'व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम' की तफ़्सीर या'नी,

٧- باب قَوْلِهِ :

अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रह़मत न होती दुनिया में भी और आख़िरत में भी तो जिस शुग़्ल (तोह्मत) में तुम पड़े थे उसमे तुम पर सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल होता। मुजाहिद ने कहा कि इज़्तुल्क़ूनहू का मत लब ये है कि तुम एक दूसरे से मुँह दर मुँह इस बात को नक़ल करने लगे। लफ़्ज़े तुफ़ीज़ून(जो सूरह यूनुस में है) बमा'नी तक़ूलून के है। इसका मा'नी तुम कहते थे।

﴿وَلَوْ لاَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿تَلَقَّوْنَهُ﴾: يَرْوِيهِ بَعْضُكُمْ عَنْ بَعْضٍ. ﴿تُفِيضُونَ﴾ : تَقُولُونَ.

4751. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुलैमान बिन कष़ीर ने ख़बर दी, उन्हें ह़ुस़ैन बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने,

٤٧٥١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ

उन्हें अबू वाइल ने, उन्हें मसरूक़ ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) की वालिदा उम्मे रूमान (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आइशा (रज़ि.) ने तोह्मत की ख़बर सुनी तो बेहोश होकर गिर पड़ी थी। (राजेअ : 3388)

مَسْرُوقٍ عَنْ أُمِّ رُومَانَ أُمِّ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ لَمَّا رُمِيَتْ عَائِشَةُ خَرَّتْ مَغْشِيًّا عَلَيْهَا. [راجع: ٣٣٨٨]

तश्रीह : ख़तीब ने इस रिवायत पर ए'तिराज़ किया है कि ये सनद मुन्क़तअ है क्योंकि उम्मे रूमान आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़िंदगी में गुज़र गई थीं। मसरूक़ की उम्र उस वक़्त छः साल की थी उसका जवाब ये है कि क़ौल अली बिन ज़ैद बिन हुदेजान ने नक़ल किया है वो ख़ुद ज़ईफ़ है। सह़ीह़ ये है कि मसरूक़ ने उम्मे रूमान से सुना है ह़ज़रत उमर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में। इब्राहीम ह़रबी और अबू नुऐम ह़ाफ़िज़ीने ह़दीष़ ने ऐसा ही कहा है कि उम्मे रूमान (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद एक मुद्दत तक ज़िंदा रहीं। (वह़ीदी)

बाब 8 : आयत 'इज़ तलक़्क़ौनहू बिअल्सिनतिकुम' की तफ़्सीर या'नी,

٨- باب قوله ﴿إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِنْدَ اللهِ عَظِيمٌ﴾

अल्लाह का बड़ा भारी अ़ज़ाब तो तुमको उस वक़्त पकड़ता जब तुम अपनी ज़ुबानों से तोह्मत को मुँह दर मुँह बयान कर रहे थे और अपनी ज़ुबानों से वो कुछ कह रहे थे जिसकी तुम्हें कोई तह़क़ीक़ न थी और तुम उसे हल्का समझ रहे थे, हालाँकि वो अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ी बात थी।

4752. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी कि इब्ने अबी मुलैका ने कहा कि मैंने उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) से सुना, वो मज़्कूरा बाला आयत इज़ तलक़्क़ोनहू बिअल्सिनतिकुम (जब तुम अपनी ज़ुबानों से उसे मुँह दर मुँह नक़ल कर रहे थे) पढ़ रही थीं। (राजेअ : 4144)

٤٧٥٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ، قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ تَقْرَأُ: ﴿إِذْ تَلِقُونَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ﴾. [راجع: ٤١٤٤]

या'नी वो ब-कसरा लाम और तख़्फ़ीफ़ क़ाफ़ तल्क़ूनहू पढ़ रही थीं जो वलक़ यल्क़ से है वल्क़ के मा'नी झूठ बोलना मशहूर क़िरात तल्क़ूनहू ब तशदीद क़ाफ़ और फ़त्हा लाम है तल्क़ी से या'नी मुँह दर मुँह लेना (वह़ीदी)

बाब : आयत 'व लौला इज़ समिअतुमूहु क़ुल्तुम' की तफ़्सीर

- باب [قَوْلِهِ] : ﴿وَلَوْلاَ إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ﴾

या'नी, और तुमने जब उसे सुना था तो क्यूँ न कह दिया कि हम कैसे ऐसी बात मुँह से निकालें (पाक है तू या अल्लाह!) ये तो सख़्त बोहतान है।

4753. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उनसे उमर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, कहा कि आइशा (रज़ि.) की वफ़ात से थोड़ी देर पहले, जबकि वो नज़अ की हालत में थीं, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उनके पास आने की इजाज़त चाही, आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मुझे डर है कि कहीं वो मेरी ता'रीफ़ न

٤٧٥٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُمَرَ بْنِ سَعِيدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ: اسْتَأْذَنَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَبْلَ مَوْتِهَا عَلَى عَائِشَةَ وَهِيَ مَغْلُوبَةٌ، قَالَتْ: أَخْشَى أَنْ يُثْنِيَ

करने लगें। किसी ने अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के चचाज़ाद भाई हैं और ख़ुद भी इज़्ज़तदार हैं (इसलिये आपको इजाज़त दे देनी चाहिये) इस पर उन्होंने कहा कि फिर उन्हें अंदर बुला लो। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उनसे पूछा कि आप किस हाल में हैं? इस पर उन्होंने फ़र्माया कि अगर मैं अल्लाह के नज़दीक अच्छी हूँ तो सब अच्छा ही अच्छा है। इस पर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि इंशाअल्लाह आप अच्छी ही रहेंगी। आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हैं और आपके सिवा आँहज़रत (ﷺ) ने किसी कुँवारी औरत से निकाह नहीं किया और आपकी बरात (क़ुर्आन मजीद में) आसमान से नाज़िल हुई। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के तशरीफ़ ले जाने के बाद आपकी ख़िदमत में इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) हाज़िर हुए। मुहतरमा ने उनसे फ़र्माया कि अभी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) आए थे और मेरी ता'रीफ़ की, मैं तो चाहती हूँ कि काश! मैं एक भूली बिसरी गुमनाम होती। (राजेअ़ : 3771)

عَلِيٌّ، فَقِيلَ : ابْنُ عَمِّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ مِنْ وُجُوهِ الْمُسْلِمِينَ، قَالَتْ: إِئْذَنُوا لَهُ. فَقَالَ كَيْفَ تَجِدِينَكِ؟ قَالَتْ : بِخَيْرٍ إِنِ اتَّقَيْتُ اللهَ. قَالَ : فَأَنْتِ بِخَيْرٍ إِنْ شَاءَ اللهُ، زَوْجَةُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَمْ يَنْكِحْ بِكْرًا غَيْرَكِ، وَنَزَلَ عُذْرُكِ مِنَ السَّمَاءِ. وَدَخَلَ ابْنُ الزُّبَيْرِ خَلْفَهُ فَقَالَتْ: دَخَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَأَثْنَى عَلَيَّ، وَدِدْتُ أَنِّي كُنْتُ نَسْيًا مَنْسِيًّا.

[راجع: ٣٧٧١]

तश्रीह : या'नी कोई मेरा ज़िक्र ही न करता। औलिया अल्लाह और बुज़ुर्गों का हमेशा यही त़रीक़ा रहा है। उन्होंने शोहरत और नामवरी को कभी पसंद नहीं किया।

4754. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ब्दुल मजीद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के पास आने की इजाज़त चाही। फिर रावी ने मज़्कूरा बाला ह़दीष़ की त़रह़ बयान किया लेकिन इस ह़दीष़ में रावी ने लफ़्ज़ नसिया मन्सिया का ज़िक्र नहीं किया। (राजेअ़ : 3171)

٤٧٥٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ بْنُ عَبْدِ الْمَجِيدِ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ الْقَاسِمِ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اسْتَأْذَنَ عَلَى عَائِشَةَ. نَحْوَهُ وَلَمْ يَذْكُرْ نَسْيًا مَنْسِيًّا.

[راجع: ٣١٧١]

बाब 9 : आयत 'यइज़ुकुमुल्लाहु अन्तऊ़दू' की तफ़्सीर या'नी, अल्लाह तुम्हें नसीह़त करता है कि ख़बरदार! फिर इस क़िस्म की ह़रकत कभी न करना

٩- باب قَوْلِهِ : ﴿يَعِظُكُمُ اللهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا﴾ الآيَةَ.

4755. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़् ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से मुलाक़ात करने की ह़ज़रत ह़स्सान बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने इजाज़त चाही। मैंने अ़र्ज़ किया कि आप उन्हें भी

٤٧٥٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : جَاءَ حَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ

يستأذن عليها، قلت: أتأذنين لهذا؟ قالت: أوليس قد أصابه عذاب عظيم؟ قال سفيان: تعني ذهاب بصره، فقال:

حصان رزان ما تزن بريبة
وتصبح غرثى من لحوم الغوافل

قالت: لكن أنت. [راجع: ٤١٤٦]

इजाज़त देती हैं (ह़ालाँकि उन्होंने भी आप पर तोहमत लगाने वालों का साथ दिया था) इस पर ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा। क्या उन्हें उसकी एक बड़ी सज़ा नहीं मिली है। सुफ़यान ने कहा कि उनका इशारा उनके नाबीना हो जाने की त़रफ़ था। फिर ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) ने ये शे'र पढ़ा। अ़फ़ीफ़ा और बड़ी अ़क़्लमंद हैं कि उनके बारे में किसी को कोई शुब्हा नहीं गुज़र सकता। वो ग़ाफ़िल और पाकदामन औ़रतों का गोश्त खाने से अकमल (पूरी तरह) परहेज़ करती हैं। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया, लेकिन तूने ऐसा नहीं किया। (राजेअ़ : 4146)

तश्रीह़ : ऐ ह़स्सान! तूने तूफ़ान के वक़्त मेरी ग़ीबत की और मुझ पर झूठी तोहमत लगाई। शे'रे मज़्कूर का उर्दू शे'र में तर्जुमा ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम ने यूँ किया है :

आ़क़िला है पाक दामन है हर ऐ़ब से वो नेक बख़्त
सुबह़ करती है वो भूखी, बेगना का गोश्त वो खाती नहीं

ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बड़े अ़ज़ाब का लफ़्ज़ इसलिये कहा कि ह़ज़रत ह़स्सान बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) आख़िर उ़म्र में नाबीना हो गये थे। ये श'र मज़्कूर में क़ुर्आन मजीद की उस आयत की त़रफ़ इशारा है जिसमें ग़ीबत को अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से ता'बीर किया गया है। या'नी जो औ़रतें ग़ाफ़िल और बेपर्दा होती हैं, उनकी इस आ़दत की वजह से आप दूसरों के सामने उनकी किसी त़रह़ की बुराई नहीं करतीं कि ये ग़ीबत है और ग़ीबत अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने के बराबर है।

बाब 10 : आयत 'व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति' की तफ़्सीर या'नी,

١٠- باب ﴿وَيُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الآيَاتِ وَاللهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ﴾

और अल्लाह तुमसे स़ाफ़ स़ाफ़ अह़काम बयान करता है और अल्लाह बड़े इल्म वाला बड़ी ह़िक्मत वाला है।

٤٧٥٦- حدثني محمد بن بشار، حدثنا ابن أبي عدي، أنبأنا شعبة عن الأعمش عن أبي الضحى عن مسروق قال: دخل حسان بن ثابت على عائشة فشبب وقال

حصان رزان ما تزن بريبة
وتصبح غرثى من لحوم الغوافل

قالت: لست كذاك. قلت: تدعين مثل هذا يدخل عليك وقد أنزل الله: ﴿والذي تولى كبره منهم﴾ فقالت: وأي عذاب أشد من العمى. وقالت: وقد

4756. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, कहा कि हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें अबुज़्ज़ुहा ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि ह़ज़रत ह़स्सान बिन ष़ाबित (रज़ि.) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के पास आए और ये शे'र पढ़ा, अ़फ़ीफ़ा और बड़ी अ़क़्लमंद हैं, उनके बारे में किसी को शुब्हा नहीं गुज़र सकता। आप ग़ाफ़िल और पाकदामन औ़रतों का गोश्त खाने से कामिल परहेज़ करती हैं। इस पर ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने फ़र्माया लेकिन ऐ ह़स्सान! तू ऐसा नहीं है। बाद में मैंने अ़र्ज़ किया आप ऐसे शख़्स़ को अपने पास आने देती हैं? अल्लाह तआ़ला तो ये आयत भी नाज़िल कर चुका है कि, और जिसने उनमें से सबसे बड़ा ह़िस्सा लिया अल् अख़।

هَلْ كَانَ يَرُدُّ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٤١٤٦]

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि नाबीना हो जाने से बढ़कर और क्या अ़ज़ाब होगा, फिर उन्होंने कहा कि ह़स्सान (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ से कुफ़्फ़ार की हिज्व का जवाब दिया करते थे (क्या ये शर्फ़ उनके लिये कम है) (राजेअ़ : 4146)

तश्रीह़ : ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) का मत़लब ये था कि ह़स्सान (रज़ि.) ने अगर एक ग़लती की तो दूसरा हुनर भी किया। इस हुनर के मुक़ाबिल उनका ऐब दरगुज़र करने के लायक़ है। दूसरी ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़स्सान (रज़ि.) से फ़र्माया, रूहुल क़ुदुस तेरी मदद पर है जब तक तू अल्लाह व रसूल की त़रफ़ से काफ़िरों का रद्द करे। काफ़िर आँह़ज़रत (ﷺ) की इस्लाम और मुसलमानों की शे'र में भी हिजू किया करते थे उनके जवाब के लिए अल्लाह ने ह़ज़रत ह़स्सान को खड़ा कर दिया वह काफ़िरों की ऐसी हिज्व करते कि उनके दिलों पर चोट लगती ह़ज़रत आइशा के इस इर्शाद का मत़लब ये था कि एक त़रफ़ अगर ह़स्सान से ये ग़लती हो गई कि वो तोह्मत तराशने वालों के साथ हो गये तो दूसरी त़रफ़ ये हुनर भी अल्लाह ने उनको दिया कि वो कुफ़्फ़ार की नज़्म व नष़्र हर त़रह़ से हिजू करते थे। इस अ़ज़ीम हुनर के होते हुए उनका एक ऐब दरगुज़र करने के क़ाबिल है। दूसरी ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़स्सान से फ़र्माया कि रूहुल क़ुदुस तेरी मदद पर है जब तक तू अल्लाह व रसूल की ह़िमायत और काफ़िरों की मज़म्मत जवाबी त़ौर पर करता रहेगा। मा'लूम हुआ कि दुश्मनाने इस्लाम का तह़रीरी व तक़रीरी नज़्म व नष़्र में जवाब देना बहुत बड़ी नेकी है। आजकल कितने ग़ैर–मुस्लिम फ़िर्क़े इस्लाम में बेहूदा ए'तिराज़ करते रहते हैं। ख़ुद मुसलमानों में भी ऐसे नामोनिहाद बहुत हैं जो फ़राइज़ व सुनने इस्लामी पर ज़ुबान दराज़ी करते रहते हैं ऐसे लोगों का रद्द करना, उनकी रद्द में किताबें लिखना, क़ुर्आन व ह़दीष़ को आ़म्मतुल् मुस्लिमीन के मफ़ाद के लिये शाये करना बहुत बड़ी इ़बादत बल्कि अफ़ज़लतरीन इ़बादत है। ख़ास़ त़ौर पर बुख़ारी शरीफ़ जैसी अहम किताब के मुत़ालआ़ में रहना गोया अल्लाह व रसूल और स़ह़ाबा व ताबेईन व मुह़द्दिष़ीने किराम रह़िमहुमुल्लाह की मजालिस बरपा करनाऔर उससे अज्रे अ़ज़ीम ह़ास़िल करना है। मा'लूम हुआ कि काफ़िरों का मुक़ाबला करना, उनकी तह़रीरों और तक़रीरों का जवाब देना बहुत बड़ी नेकी है।

अल्ह़म्दुलिल्लाह कि ये बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू भी ख़ालिस़ लिवज्हिल्लाह दीने इस्लाम की ख़िदमत के त़ौर पर शाये की जा रही है जो लोग इस ख़िदमत के हमदर्द व मआ़विन हैं वो यक़ीनन अल्लाह के यहाँ से अज्रे अ़ज़ीम के मुस्तह़िक़ हैं । आज जबकि अ़वाम मुसलमान क़ुर्आन व ह़दीष़ के मुत़ालआ़से दिन ब दिन ग़फ़लत बरत रहे हैं बल्कि नामानूस होते जा रहे हैं बुख़ारी शरीफ़ की ये ख़िदमत अफ़ज़लतरीन इ़बादत का दर्जा रखती है। अल्लाह पाक हमारे हमदर्दाने किराम व मुआ़विनीने इ़ज़ाम को बेहतरीन जज़ाएँ अ़ता करे और दीन व दुनिया में उन सबको बरकतों से नवाज़े जो इस ख़िदमत में दामे दरमे सुख़्ने मेरे शरीक हैं **जज़ाहुमुल्लाहु अह़सनल्जज़ा फिद्दारैनि आमीन**।

एक अजीब ह़िकायत : ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक एक बुलन्द पाया आलिम और अहले बुज़ुर्ग गुज़रे हैं आप नमाज़ बाजमाअ़त अदा करते ही फ़ौरन गोशा-ए-ख़ल्वत (एकान्तवास) में तशरीफ़ ले जाया करते थे। एक दिन किसी ने कहा कि आप नमाज़ के बाद फ़ौरन कहाँ चले जाया करते हैं। आपने बरजस्ता फ़र्माया कि स़ह़ाबा किराम और ताबेईने इ़ज़ाम की पाकीज़ा मजालिस में पहुँच जाता हूँ। वो शख़्स़ तअ़ज्जुब से बोला कि आज वो पाकीज़ा मजालिस कहाँ हैं। आपने जवाब दिया कि वो मजालिस दफ़ातिर कुतुबे अह़ादीष़ की शक्लों में मौजूद हैं। जिनके मुत़ालआ़ से स़ह़ाबा किराम और ताबेईने इ़ज़ाम व मुह़द्दिष़ीन की मजालिस का लुत्फ़ ह़ास़िल हो जाता है और अ़वाम की मजालिस में जो ग़ीबत वग़ैरह का बाज़ार गर्म होता है उनसे भी दूर रहने का मौक़ा मिल जाता है। फ़िल वाक़ेअ़ कुतुबे अह़ादीष़ का लिखना पढ़ना दरबारे रिसालत व मजालिसे स़ह़ाबा व ताबेईन व अइम्मा मुह़द्दिष़ीन में ह़ाज़िरी देना है। मेरा तजुर्बा है कि ख़ल्वत में जब भी बुख़ारी शरीफ़ लिखने पढ़ने बैठ जाता हूँ दिल को सुकून ह़ासिल होता है और मजालिसे मुह़द्दिष़ीन का लुत्फ़ मिल जाता है। **अल्लाहुम्म तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल्अलीम** आज 17 रजब 1393 हिजरी को ये नोट जामेअ़ अहले ह़दीष़ खण्डेला राजस्थान में बरोज़े जुम्आ ह़वाल-ए-क़लम कर रहा हूँ और जमाअ़त की तरक़्क़ी के लिये दस्त बदुआ हूँ। **अल्लाहुम्मन्सुर मन नस़र दीन मुह़म्मदिन (ﷺ)**

आयत 11 : 'इन्नल्लज़ीन युहिब्बून' की तफ़्सीर

١١- باب [قوله] :

﴿إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَاللهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ﴾ ﴿وَلَوْ لاَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللهَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ﴾. تَشِيعُ : تَظْهَرُ.

या'नी यक़ीनन जो लोग चाहते हैं कि मोमिनीन के दरम्यान बेह्रयाई का चर्चा रहे उनके लिये दुनिया मे भी और आख़िरत में भी दर्दनाक सज़ा है। अल्लाह इल्म रखता है और तुम इल्म नहीं रखते और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता और ये बात न होती कि अल्लाह बड़ा शफ़ीक़ बड़ा रहीम है (तो तुम भी न बचते)। तशीअ़ बमा'नी तज़्हरु है या'नी ज़ाहिर हो।

बाब : 'व ला यातलि उलुल्फज़्लि' की तफ़्सीर

﴿وَلاَ يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلاَ تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَكُمْ وَاللهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾.

या'नी और जो लोग तुममें बुज़ुर्गी वाले और फ़राख़दस्त हैं वो क़राबत वालों को और मिस्कीनों को और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वालों को इमदाद देने से क़सम न खा बैठें, बल्कि उनको चाहिये कि वो उनकी लग़्ज़िशें मुआफ़ करते रहें और दरगुज़र करते रहें क्या तुम ये नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे क़सूर मुआफ़ करता रहे। बेशक अल्लाह बड़ा मग़्फ़िरत करने वाला बड़ा ही रह्रमत वाला है।

तश्रीह़ : ये आयत ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के ह़क़ में नाज़िल हुई, जिन्होंने वाक़िया मज़्कूरा से मुताष्षिर होकर ह़ज़रत मिस्त़ह़ (रज़ि.) को इमदाद देने से इंकार कर दिया था मगर अल्लाह को ये बात पसंद नहीं आई, इस आयत को सुनकर ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) का दिल फ़ौरन नरम हो गया और कहा कि ऐ परवरदिगार! बेशक मैं तेरी बख़्शिश चाहता हूँ और इसी मक़्सद के तह़त अब मिस्त़ह़ की इमदाद फ़ौरन जारी कर दूँगा। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक कहते हैं कि ये आयत किताबुल्लाह में बहुत ही उम्मीद दिलाने वाली आयत है। गोया ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) को एक गुनाहगार मिस्त़ह़ (रज़ि.) की इम्दाद बंद करने के ख़्याल पर डांटा गया। वाह! सुब्ह़ानल्लाह! अ़जब शाने रह़्मानियत है। सच है **अर्रह़मान-अर्रह़ीम-अल्लाहुम्मर्ह़म अ़लैना या अर्ह़मर्राहिमीन**

٤٧٥٧- وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ لَمَّا ذُكِرَ مِنْ شَأْنِي الَّذِي ذُكِرَ وَمَا عَلِمْتُ بِهِ، قَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيَّ خَطِيبًا فَتَشَهَّدَ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ :((أَمَّا بَعْدُ أَشِيرُوا عَلَيَّ فِي أُنَاسٍ أَبَنُوا أَهْلِي، وَايْمُ اللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي مِنْ سُوءٍ، وَأَبَنُوهُمْ

4757. और अबू उसामा ह़म्माद बिन उसामा ने हिशाम बिन उ़र्वा से बयान किया कि उन्हों ने कहा कि मुझे मेरे वालिद उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मेरे बारे में ऐसी बातें कही गईं जिनका मुझे गुमान भी नहीं था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे मामले में लोगों को ख़ुत्बा देने के लिये खड़े हुए। आपने शहादत के बाद अल्लाह की ह़म्दो ष़ना उसकी शान के मुत़ाबिक़ बयान की, फिर फ़र्माया, अम्माबअ़द! तुम लोग मुझे ऐसे लोगों के बारे में मश्वरा दो जिन्होंने मेरी बीवी को बदनाम किया है और अल्लाह की क़सम कि मैंने अपनी बीवी में कोई बुराई नहीं देखी और

तोह्मत भी ऐसे शख़्स (सफ़्वान बिन मुअत्तल) के साथ लगाई है कि अल्लाह की क़सम! उनमें भी मैंने कभी कोई बुराई नहीं देखी। वो मेरे घर में जब भी दाख़िल हुआ तो मेरे मौजूदगी ही में दाख़िल हुआ और अगर मैं कभी सफ़र की वजह से मदीना में नहीं होता तो वो भी नहीं होता और वो मेरे साथ ही रहते हैं। उसके बाद सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) खड़े हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमें हुक्म फ़र्माइये कि हम ऐसे मरदूद लोगों की गर्दनें उड़ा दें। उसके बाद क़बीला ख़ज़रज के एक साहब (सअद बिन उबादा रज़ि.) खड़े हुए, हस्सान बिन साबित की वालिदा उसी क़बीला ख़ज़रज से थीं, उन्होंने खड़े होकर कहा कि तुम झूठे हो, अगर वो लोग (तोह्मत लगाने वाले) क़बीला औस के होते तो तुम कभी उन्हें क़त्ल करना पसंद नहीं करते। नौबत यहाँ तक पहुँची कि मस्जिद ही में औस व ख़ज़रज के क़बाइल में बाहम फ़साद का ख़तरा हो गया, उस फ़साद की मुझको कुछ ख़बर न थी, उसी दिन की रात में मैं क़ज़ा-ए-हाजत के लिये बाहर निकली, मेरे साथ उम्मे मिस्तह (रज़ि.) भी थीं। वो (रास्ते में) फिसल गईं और उनकी ज़ुबान से निकला कि मिस्तह को अल्लाह ग़ारत करे। मैंने कहा, आप अपने बेटे को कोसती हैं, उस पर वो ख़ामोश हो गईं, फिर दोबारा वो फिसलीं और उनकी ज़ुबान से वही अल्फ़ाज़ निकले कि मिस्तह को अल्लाह ग़ारत करे। मैंने फिर कहा कि अपने बेटे को कोसती हो, फिर वो तीसरी बार फिसलीं तो मैंने फिर उन्हें टोका। उन्होंने बताया कि अल्लाह की क़सम! मैं तो तेरी ही वजह से उसे कोसती हूँ। मैंने कहा कि मेरे किस मामले में उन्हें आप कोस रही हैं? बयान किया, कि अब उन्होंने तूफ़ान का सारा क़िस्सा बयान किया मैंने पूछा, क्या वाक़ई ये सबकुछ कहा गया है? उन्होंने कहा कि हाँ! अल्लाह की क़सम! फिर मैं अपने घर आ गई। लेकिन (उन वाक़ियात को सुनकर ग़म का ये हाल था कि) मुझे कुछ ख़बर नहीं कि किस काम के लिये मैं बाहर गई थी और कहाँ से आई हूँ, ज़र्रा बराबर भी मुझे इसका एहसास नहीं रहा। उसके बाद मुझे बुख़ार चढ़ गया और मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ)से कहा कि आप मुझे ज़रा मेरे वालिद के घर पहुँचवा दीजिए। आप (ﷺ) ने मेरे साथ एक बच्चे को कर दिया। मैं घर पहुँची तो मैंने देखा कि उम्मे रूमान (रज़ि) नीचे के

بِمَنْ وَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَطُّ وَلاَ يَدْخُلُ بَيْتِي قَطُّ إِلاَّ وَأَنَا حَاضِرٌ، وَلاَ غِبْتُ فِي سَفَرٍ إِلاَّ غَابَ مَعِي)). فَقَامَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ فَقَالَ ائْذَنْ لِي يَا رَسُولَ اللهِ أَنْ نَضْرِبَ أَعْنَاقَهُمْ، وَقَامَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي الْخَزْرَجِ، وَكَانَتْ أُمُّ حَسَّانَ بْنِ ثَابِتٍ مِنْ رَهْطِ ذَلِكَ الرَّجُلِ، فَقَالَ كَذَبْتَ، أَمَا وَاللهِ أَنْ لَوْ كَانُوا مِنَ الأَوْسِ مَا أَحْبَبْتَ أَنْ تَضْرِبَ أَعْنَاقَهُمْ، حَتَّى كَادَ أَنْ يَكُونَ بَيْنَ الأَوْسِ وَالْخَزْرَجِ شَرٌّ فِي الْمَسْجِدِ وَمَا عَلِمْتُ. فَلَمَّا كَانَ مَسَاءُ ذَلِكَ الْيَوْمِ خَرَجْتُ لِبَعْضِ حَاجَتِي وَمَعِي أُمُّ مِسْطَحٍ، فَعَثَرَتْ وَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلْتُ: أَيْ أُمِّ تَسُبِّينَ ابْنَكِ؟ وَسَكَتَتْ. ثُمَّ عَثَرَتِ الثَّانِيَةَ فَقَالَتْ : تَعِسَ مِسْطَحٌ، فَقُلتُ لَهَا: تَسُبِّينَ ابْنَكِ؟ ثُمَّ عَثَرَتِ الثَّالِثَةَ، فَقَالَتْ: تَعِسَ مِسْطَحٌ فَانْتَهَرْتُهَا، فَقَالَتْ وَاللهِ مَا أَسُبُّهُ إِلاَّ فِيكِ. فَقُلْتُ: فِي أَيِّ شَأْنِي؟ قَالَتْ فَبَقَرَتْ لِي الْحَدِيثَ. فَقُلْتُ : وَقَدْ كَانَ هَذَا؟ قَالَتْ : نَعَمْ وَاللهِ. فَرَجَعْتُ إِلَى بَيْتِي كَأَنَّ الَّذِي خَرَجْتُ لَهُ لاَ أَجِدُ مِنْهُ قَلِيلاً وَلاَ كَثِيرًا. وَوَعَكْتُ فَقُلْتُ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَرْسِلْنِي إِلَى بَيْتِ أَبِي، فَأَرْسَلَ مَعِي الْغُلاَمَ. فَدَخَلْتُ الدَّارَ فَوَجَدْتُ أُمَّ رُومَانَ فِي السُّفْلِ وَأَبَا بَكْرٍ فَوْقَ الْبَيْتِ يَقْرَأُ. فَقَالَتْ أُمِّي : مَا جَاءَ بِكِ يَا بُنَيَّةُ؟

हिस्से में है और अबूबक्र (रज़ि) बालाख़ाने में क़ुर्आन पढ़ रहे हैं। वालिदा ने पूछा बेटी इस वक़्त कैसे आ गईं? मैंने वजह बताई और वाक़िया की तफ़्सीलात सुनाईं। उन बातों से जितना ग़म मुझको था ऐसा मा'लूम हुआ कि उनको उतना ग़म नहीं है। उन्होंने फ़र्माया, बेटी इतना फ़िक्र क्यूँ करती हो कम ही ऐसी कोई ख़ूबसूरत औरत किसी ऐसे मर्द के निकाह में होगी जो उससे मुहब्बत रखता हो और उसकी सौकनें भी हों और वो उससे हसद न करें और उसमें सौ ऐब न निकालें। इस तोहमत से वो इस दर्जा बिलकुल भी मुताष्षिर नहीं मा'लूम होती थीं जितना मैं मुताष्षिर थी। मैंने पूछा वालिद के इल्म में भी ये बातें आ गईं हैं? उन्होंने कहा कि हाँ! मैंने पूछा, और रसूलुल्लाह (ﷺ) के? उन्होंने बताया कि आँहुज़ूर (ﷺ) के भी इल्म में सब कुछ है। मैं ये सुनकर रोने लगी तो अबूबक्र (रज़ि.) ने भी मेरी आवाज़ सुन ली, वो घर के बालाई हिस्से में क़ुर्आन पढ़ रहे थे, उतरकर नीचे आए और वालिदा से पूछा कि इसे क्या हो गया है? उन्होंने कहा कि वो तमाम बातें इसे भी मा'लूम हो गई हैं जो इसके बारे में कही जा रही हैं। उनकी भी आँखें भर आईं और फ़र्माया, बेटी! तुम्हें क़सम देता हूँ, अपने घर वापस चली जाओ चुनाँचे मैं वापस चली आई। (जब मैं अपने वालिदैन के घर आ गई थी तो) रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे हुज्रे में तशरीफ़ लाए थे और मेरी ख़ादिमा (बरीरह) से मेरे बारे में पूछा था। उसने कहा था कि नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं उनके अंदर कोई ऐब नहीं देखती, अल्बत्ता ऐसा हो जाया करता था (कम उम्र की ग़फ़लत की वजह से) कि (आटा गूँधते हुए) सो जाया करतीं और बकरी आकर उनका गुँधा हुआ आटा खा जाती, रसूलुल्लाह (ﷺ) के कुछ सहाबा ने डांटकर उनसे कहा कि आँहुज़ूर (ﷺ) को बात सहीह सहीह क्यूँ नहीं बता देती। फिर उन्होंने खोलकर साफ़ लफ़्ज़ों में उनसे वाक़िया की तस्दीक़ चाही। इस पर वो बोलीं कि सुब्हानल्लाह! मैं तो आइशा (रज़ि.) को इस तरह जानती हूँ जिस तरह सुनार खरे सोने को जानता है। इस तोह्मत की ख़बर जब उन साहब को मा'लूम हुई जिनके साथ तोह्मत लगाई गई थी तो उन्होंने कहा कि सुब्हानल्लाह! अल्लाह की क़सम! कि मैंने आज तक किसी (ग़ैर) औरत का कपड़ा नहीं खोला। आइशा (रज़ि.) ने कहा

فَأَخْبَرْتُهَا وَذَكَرْتُ لَهَا الْحَدِيثَ، وَإِذَا هُوَ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهَا مِثْلَ مَا بَلَغَ مِنِّي. فَقَالَتْ : يَا بُنَيَّةُ خَفِّضِي عَلَيْكِ الشَّأْنَ، فَإِنَّهُ وَاللهِ لَقَلَّمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ قَطُّ حَسْنَاءُ عِنْدَ رَجُلٍ يُحِبُّهَا لَهَا ضَرَائِرُ إِلاَّ حَسَدْنَهَا وَقِيلَ فِيهَا. وَإِذَا هُوَ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهَا مَا بَلَغَ مِنِّي. قُلْتُ : وَقَدْ عَلِمَ بِهِ أَبِي؟ قَالَتْ: نَعَمْ. قُلْتُ: وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ وَرَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَاسْتَعْبَرْتُ وَبَكَيْتُ، فَسَمِعَ أَبُو بَكْرٍ صَوْتِي وَهُوَ فَوْقَ الْبَيْتِ يَقْرَأُ. فَنَزَلَ فَقَالَ لأُمِّي : مَا شَأْنُهَا؟ قَالَتْ: بَلَغَهَا الَّذِي ذُكِرَ مِنْ شَأْنِهَا، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ. قَالَ : أَقْسَمْتُ عَلَيْكِ أَيْ بُنَيَّةُ إِلاَّ رَجَعْتِ إِلَى بَيْتِكِ فَرَجَعْتُ. وَلَقَدْ جَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْتِي فَسَأَلَ عَنِّي خَادِمَتِي فَقَالَتْ : لاَ وَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا عَيْبًا إِلاَّ أَنَّهَا كَانَتْ تَرْقُدُ حَتَّى تَدْخُلَ الشَّاةُ فَتَأْكُلَ خَمِيرَهَا، أَوْ عَجِينَهَا. وَانْتَهَرَهَا بَعْضُ أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَصْدِقِي رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى أَسْقَطُوا لَهَا بِهِ. فَقَالَتْ: سُبْحَانَ اللهِ، وَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَيْهَا إِلاَّ مَا يَعْلَمُ الصَّائِغُ عَلَى تِبْرِ الذَّهَبِ الأَحْمَرِ. وَبَلَغَ الأَمْرُ إِلَى ذَلِكَ الرَّجُلِ الَّذِي قِيلَ لَهُ، فَقَالَ: سُبْحَانَ اللهِ، وَاللهِ مَا كَشَفْتُ كَنَفَ أُنْثَى قَطُّ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُتِلَ شَهِيدًا فِي سَبِيلِ اللهِ.

कि फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते में शहादत पाई। बयान किया कि सुबह़ के वक़्त मेरे वालिदैन मेरे पास आ गये और मेरे पास ही रहे। आख़िर अ़स्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ लाए। मेरे वालिदैन मुझे दाईं और बाईं त़रफ़ से पकड़े हुए थे, आँह़ज़रत (ﷺ) ने अल्लाह की ह़म्दो–ष़ना बयान की और फ़र्माया अम्माबअ़द! ऐ आइशा! अगर तुमने वाक़ई कोई बुरा काम किया है और अपने ऊपर ज़ुल्म किया है तो फिर अल्लाह से तौबा करो, क्योंकि अल्लाह अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता है। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक अंसारी ख़ातून भी आ गईं थीं और दरवाज़े पर बैठी हुई थीं, मैंने अ़र्ज़ की, आप इन ख़ातून का लिहाज़ नहीं करते कहीं ये (अपनी समझ के मुत़ाबिक़ कोई उल्टी सीधी) बात बाहर कह दें। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने नस़ीह़त फ़र्माई, उसके बाद मैं अपने वालिद की त़रफ़ मुतवज्जह हुई और उनसे अ़र्ज़ किया कि आप ही जवाब दीजिए, उन्होंने भी यही कहा कि मैं क्या कहूँ जब किसी ने मेरी त़रफ़ से कुछ नहीं कहा तो मैंने शहादत के बाद अल्लाह की शान के मुत़ाबिक़ उसकी ह़म्दो–ष़ना की और कहा अम्माबअ़द! अल्लाह की क़सम! अगर मैं आप लोगों से ये कहूँ कि मैंने इस त़रह़ की कोई बात नहीं की और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल गवाह है कि मैं अपने इस दावे में सच्ची हूँ, तो आप लोगों के ख़्याल को बदलने में मेरी ये बात मुझे कोई नफ़ा नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि ये बात आप लोगों के दिल में रच बस गई है और अगर मैं ये कह दूँ कि मैंने ह़क़ीक़त में ये काम किया है ह़ालाँकि अल्लाह ख़ूब जानता है कि मैंने ऐसा नहीं किया है, तो आप लोग कहेंगे कि उसने तो ज़ुर्म का ख़ुद इक़रार कर लिया है। अल्लाह की क़सम! कि मेरी और आप लोगों की मिष़ाल यूसुफ़ (अ़लैहि.) के वालिद की सी है कि उन्होंने फ़र्माया था, पस स़ब्र ही अच्छा है और तुम लोग जो कुछ बयान करते हो उस पर अल्लाह ही मदद करे। मैंने ज़हन पर बहुत ज़ोर दिया कि यअ़क़ूब (अ़लैहि.) का नाम याद आ जाए लेकिन नहीं याद आया। उसी वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वह़्य का नुज़ूल शुरू हो गया और हम सब ख़ामोश हो गये। फिर आपसे ये कैफ़ियत ख़त्म हुई तो मैंने देखा कि ख़ुशी आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक से ज़ाहिर हो रही थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने

قَالَتْ: وَأَصْبَحَ أَبَوَايَ عِنْدِي، فَلَمْ يَزَالاَ حَتَّى دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَدْ صَلَّى الْعَصْرَ، ثُمَّ دَخَلَ وَقَدِ اكْتَنَفَنِي أَبَوَايَ عَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ يَا عَائِشَةُ، إِنْ كُنْتِ قَارَفْتِ سُوءًا أَوْ ظَلَمْتِ فَتُوبِي إِلَى اللهِ، فَإِنَّ اللهَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ مِنْ عِبَادِهِ)). قَالَتْ: وَقَدْ جَاءَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَهِيَ جَالِسَةٌ بِالْبَابِ، فَقُلْتُ: أَلاَ تَسْتَحِي مِنْ هَذِهِ الْمَرْأَةِ أَنْ تَذْكُرَ شَيْئًا. فَوَعَظَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَالْتَفَتُّ إِلَى أَبِي فَقُلْتُ: أَجِبْهُ، قَالَ: فَمَاذَا أَقُولُ، فَالْتَفَتُّ إِلَى أُمِّي فَقُلْتُ: أَجِيبِيهِ، فَقَالَتْ: أَقُولُ مَاذَا؟ فَلَمَّا لَمْ يُجِيبَاهُ، تَشَهَّدْتُ فَحَمِدْتُ اللهَ تَعَالَى وَأَثْنَيْتُ عَلَيْهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قُلْتُ: أَمَّا بَعْدُ فَوَاللهِ لَئِنْ قُلْتُ لَكُمْ إِنِّي لَمْ أَفْعَلْ، وَاللهُ عَزَّ وَجَلَّ يَشْهَدُ إِنِّي لَصَادِقَةٌ مَا ذَاكَ بِنَافِعِي عِنْدَكُمْ، لَقَدْ تَكَلَّمْتُمْ بِهِ وَأُشْرِبَتْهُ قُلُوبُكُمْ وَإِنْ قُلْتُ إِنِّي فَعَلْتُ وَاللهُ يَعْلَمُ أَنِّي لَمْ أَفْعَلْ، لَتَقُولُنَّ قَدْ بَاءَتْ بِهِ عَلَى نَفْسِهَا. وَإِنِّي وَاللهِ مَا أَجِدُ لِي وَلَكُمْ مَثَلاً. وَالْتَمَسْتُ اسْمَ يَعْقُوبَ فَلَمْ أَقْدِرْ عَلَيْهِ. إِلاَّ أَبَا يُوسُفَ حِينَ قَالَ: ﴿فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ﴾ وَأُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ سَاعَتِهِ، فَسَكَتْنَا،

فَرُفِعَ عَنْهُ، وَإِنِّي لأَتَبَيَّنُ السُّرُورَ فِي وَجْهِهِ وَهُوَ يَمْسَحُ جَبِينَهُ وَيَقُولُ : ((أَبْشِرِي يَا عَائِشَةُ، فَقَدْ أَنْزَلَ اللهُ بَرَاءَتَكِ))، قَالَتْ : وَكُنْتُ أَشَدَّ مَا كُنْتُ غَضَبًا، فَقَالَ لِي أَبَوَايَ: قُومِي إِلَيْهِ. فَقُلْتُ : وَاللهِ لاَ أَقُومُ إِلَيْهِ، وَلاَ أَحْمَدُهُ وَلاَ أَحْمَدُكُمَا، وَلَكِنْ أَحْمَدُ اللهَ الَّذِي أَنْزَلَ بَرَاءَتِي. لَقَدْ سَمِعْتُمُوهُ فَمَا أَنْكَرْتُمُوهُ وَلاَ غَيَّرْتُمُوهُ. وَكَانَتْ عَائِشَةُ تَقُولُ : أَمَّا زَيْنَبُ ابْنَةُ جَحْشٍ فَعَصَمَهَا اللهُ بِدِينِهَا فَلَمْ تَقُلْ إِلاَّ خَيْرًا، وَأَمَّا أُخْتُهَا حَمْنَةُ فَهَلَكَتْ فِيمَنْ هَلَكَ. وَكَانَ الَّذِي يَتَكَلَّمُ فِيهِ مِسْطَحٌ وَحَسَّانُ بْنُ ثَابِتٍ وَالْمُنَافِقُ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ وَهُوَ الَّذِي كَانَ يَسْتَوْشِيهِ وَيَجْمَعُهُ، وَهُوَ الَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ وَهُوَ وَحَمْنَةُ. قَالَتْ : فَحَلَفَ أَبُو بَكْرٍ أَنْ لاَ يَنْفَعَ مِسْطَحًا بِنَافِعَةٍ أَبَدًا. فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿وَلاَ يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ ﴿وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى وَالْمَسَاكِينَ﴾ يَعْنِي مِسْطَحًا إِلَى قَوْلِهِ : ﴿أَلاَ تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَكُمْ وَاللهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ حَتَّى قَالَ أَبُو بَكْرٍ : بَلَى وَاللهِ يَا رَبَّنَا؟ إِنَّا لَنُحِبُّ أَنْ تَغْفِرَ لَنَا، وَعَادَ لَهُ بِمَا كَانَ يَصْنَعُ.

[راجع: ٢٥٩٣]

(पसीना से) अपनी पेशानी स़ाफ़ करते हुए फ़र्माया, ऑइशा! तुम्हें बशारत हो अल्लाह तआला ने तुम्हारी पाकी नाज़िल कर दी है। बयान किया कि उस वक़्त मुझे बड़ा ग़ुस्स़ा आ रहा था। मेरे वालिदैन ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने खड़ी हो जाओ, मैंने कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं आँहज़रत (ﷺ) के सामने खड़ी नहीं होऊँगी न हुज़ूर (ﷺ) का शुक्रिया अदा करूँगी और न आप लोगों का शुक्रिया अदा करूँगी, मैं तो स़िर्फ़ अल्लाह का शुक्र अदा करूँगी जिसनें मेरी बराअत नाज़िल की है। आप लोगों ने तो ये अफ़वाह सुनी और उसका इंकार भी न कर सके, इसके ख़त्म करने की भी कोशिश नहीं की। ऑइशा (रज़ि.) फ़र्माती थीं कि ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) को अल्लाह तआला ने उनकी दीनदारी की वजह से इस तोह्मत में पड़ने से बचा लिया। मेरी बाबत उन्होंने ख़ैर के सिवा और कोई बात नहीं कही, अल्बत्ता उनकी बहन ह़म्ना हलाक होने वालों के साथ हलाक हुईं। इस तूफ़ान को फैलाने में मिस्तह़ और ह़स्सान और मुनाफ़िक़ अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने ह़िस्स़ा लिया था। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ ही तो खोद खोदकर इसको पूछता और इस पर ह़ाशिया चढ़ाता, वही इस तूफ़ान का बानी मबानी था। वल्लज़ी तवल्ला किबरुहू से वो और ह़म्ना मुराद हैं। ऑइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर अबूबक्र (रज़ि.) ने क़सम खाई कि मिस्तह़ को कोई फ़ायदा आइन्दा कभी वो नहीं पहुँचाएँगे। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, और जो लोग तुममें बुज़ुर्गी वाले और फ़राख़ दस्त हैं अल्अख़ इससे मुराद अबूबक्र (रज़ि.) हैं। वो क़राबत वालों और मिस्कीनों को, इससे मुराद मिस्तह़ हैं। (देने से क़सम न खा बैठें) अल्लाह तआला के इर्शाद क्या तुम ये नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे क़ुस़ूर मुआफ़ करता रहे, बेशक अल्लाह बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला बड़ा ही मेहरबान है तक। चुनाँचे अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि हाँ! अल्लाह की क़सम! ऐ हमारे रब! हम तो इसी के ख़्वाहिशमंद हैं कि तू हमारी मग़्फ़िरत फ़र्मा। फिर वो पहले की त़रह़ मिस्तह़ को जो दिया करते थे वो जारी कर दिया। (राजेअ : 2593)

तश्रीह : इस हदीष़ से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह है कि रसूले करीम (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे जो लोग आपको ग़ैब दाँ कहते हैं वो आप पर तोह्मत लगाते हैं। अगर आप ग़ैब जानते तो रोज़े अव्वल ही इस झूठ को वाज़ेह करके दुश्मनों की ज़ुबान को बंद कर देते मगर इस सिलसिले में आप (ﷺ) को काफ़ी दिनों वह्ये इलाही का इंतिज़ार करना पड़ा। आख़िर सूरह नूर नाज़िल हुई और अल्लाह ने आइशा (रज़ि.) की पाकदामनी को क़यामत तक के लिये क़ुर्आन में महफ़ूज़ कर दिया। इससे ह़ज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत भी षाबित हुई। **रज़ियल्लाहु अन्हा व अर्ज़ाहा आमीन**

बाब 12 : आयत 'वल्यज्रिब्न बिख़ुमुरिहिन्न अ़ला जूयूबिहिन्न' की तफ़्सीर

١٢- باب قوله ﴿وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ﴾

या'नी मुसलमान औरतों को चाहिये कि वो अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें।

4758. और अह़मद बिन शबीब ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद शबीब बिन सईद ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह उन औरतों पर रहम करे जिन्होंने पहली हिजरत की थी। जब अल्लाह तआ़ला ने आयत, और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें। (ताकि सीना और गला वग़ैरह नज़र न आए) नाज़िल की, तो उन्होंने अपनी चादरों को फाड़कर उनके दुपट्टे बना लिये। (दीगर मक़ाम : 4759)

٤٧٥٨- وقال أَحْمَدُ بْنُ شَبِيبٍ : حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ يُونُسَ، قَالَ ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : يَرْحَمُ اللهُ نِسَاءَ الْمُهَاجِرَاتِ الأُوَلَ، لَمَّا أَنْزَلَ اللهُ ﴿وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ﴾ شَقَقْنَ مُرُوطَهُنَّ فَاخْتَمَرْنَ بِهِ. [طرفه في : ٤٧٥٩].

ह़ज़रत अह़मद बिन शबीब ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) के शुयूख़ में से हैं। शायद ये रिवायत ह़ज़रत इमाम ने उनसे नहीं सुनी इसीलिये लफ़्ज़े ह़द्दष़्ना नहीं कहा इब्ने मुंज़िर ने इसे वस्ल किया है।

4759. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे ह़सन बिन मुस्लिम ने, उन से स़फ़िया बिन्ते शैबा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) बयान करती थी कि जब ये आयत नाज़िल हुई कि, और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहा करें, तो (अंस़ार औरतों ने) अपने तहबन्दों को दोनों किनारों से फाड़कर उनकी ओढ़नियाँ बना लीं। (राजेअ़ : 4758)

٤٧٥٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ نَافِعٍ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا كَانَتْ تَقُولُ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ﴾ أَخَذْنَ أُزْرَهُنَّ فَشَقَقْنَهَا مِنْ قِبَلِ الْحَوَاشِي فَاخْتَمَرْنَ بِهَا. [راجع: ٤٧٥٨]

तश्रीह : अ़रब की औ़रतें कुर्ता पहनतीं थीं जिसका गिरेबान सामने से खुला रहता इससे सीना और छातियों पर नज़र पड़ती, इसलिये उनको ओढ़नी से गिरेबान ढाँकने का हुक्म दिया गया। सीने और गिरेबान का ढांकना भी औ़रत के लिये ज़रूरी है। इस मक़्सद के लिये दुपट्टा इस्ते'माल करना, उस पर बुरक़ा ओढ़ना अगर मयस्सर हो तो बेहतर है। बुरक़ा न हो तो बहरह़ाल दुपट्टे या ओढ़नी से औ़रत को सारा जिस्म छुपाना पर्दा के वाजिबात से है।

सूरह फ़ुरक़ान की तफ़्सीर

[٢٥] سُورَةُ الْفُرْقَانِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हबाअम् मन्षूरा के मा'नी जो चीज़ हवा उड़ाकर लाए (गर्दो ग़ुबार वग़ैरह) मद्दज़् ज़िल्ला से वो वक़्त मुराद है जो तुलूअ़े सुबह से सूरज निकलने तक होता है साकिना का मा'नी हमेशा अ़लैहि दलीला में दलील से सूरज का निकलना मुराद है। ख़िल्फ़तन से ये मत़लब है कि रात का जो काम न हो सके वो दिन को पूरा कर सकता है। दिन का जो काम न हो सके वो रात को पूरा कर सकता है और इमाम ह़सन बस़री ने कहा क़ुर्रतु अअ़युन का मत़लब ये है कि हमारी बीवियों को और औलाद को अल्लाह परस्त, अपना ताबेदार बना दे। मोमिन की आँख की ठण्डक इससे ज़्यादा किसी बात में नहीं होती कि उसका मह़बूब अल्लाह की इबादत में मस़रूफ़ हो और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ष़बूरा के मा'नी हलाकत ख़राबी। औरों ने कहा सईर का लफ़्ज़ मुज़क्कर है ये तस्अ़र से निकला है तस्ईर और इज़्तिराम आग के ख़ूब सुलगने को कहते हैं। तुम्ला अ़लैहि उसको पढ़कर सुनाई जाती हैं ये अम्लयत और इम्लात से निकला है। अर् रस कान को कहते हैं इसकी जमा रसास आती है। कान बमा'नी मअ़दन मा यअ़बा अ़रब लोग कहते हैं मा अ़बात बिही शैयआ या'नी मैंने इसकी कुछ परवाह नहीं की। ग़रामा के मा'नी हलाकत और मुजाहिद ने कहा अ़तौ का मा'नी शरारत के हैं और सुफ़यान बिन उ़यय़ना ने कहा आ़तियत का मा'नी ये है कि उसने ख़ज़ानादार फ़रिश्तों का कहना न कहा।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿هَبَاءً مَنْثُورًا﴾ مَا تَسْفِي بِهِ الرِّيحُ. ﴿مَدَّ الظِّلَّ﴾ : مَا بَيْنَ طُلُوعِ الْفَجْرِ إِلَى طُلُوعِ الشَّمْسِ. ﴿سَاكِنًا﴾: دَائِمًا. ﴿عَلَيْهِ دَلِيلاً﴾: طُلُوعُ الشَّمْسِ ﴿خِلْفَةً﴾ : مَنْ فَاتَهُ مِنَ اللَّيْلِ عَمَلٌ أَدْرَكَهُ بِالنَّهَارِ، أَوْ فَاتَهُ بِالنَّهَارِ أَدْرَكَهُ بِاللَّيْلِ. وَقَالَ الْحَسَنُ ﴿هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا﴾: فِي طَاعَةِ اللهِ، وَمَا شَيْءٌ أَقَرُّ لِعَيْنِ الْمُؤْمِنِ أَنْ يَرَى حَبِيبَهُ فِي طَاعَةِ اللهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿ثُبُورًا﴾ : وَيْلاً. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿السَّعِيرُ﴾ مُذَكَّرٌ. وَالتَّسَعُّرُ وَالاِضْطِرَامُ : التَّوَقُّدُ الشَّدِيدُ. ﴿تُمْلَى عَلَيْهِ﴾ : تُقْرَأُ عَلَيْهِ، مِنْ أَمْلَيْتُ وَأَمْلَلْتُ. ﴿الرَّسُّ﴾: الْمَعْدِنُ، جَمْعُهُ رِسَاسٌ. ﴿مَا يَعْبَأُ﴾: يُقَالُ مَا عَبَأْتُ بِهِ شَيْئًا : لاَ يُعْتَدُّ بِهِ. ﴿غَرَامًا﴾: هَلاَكًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿وَعَتَوْا﴾: طَغَوْا. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: ﴿عَاتِيَةٍ﴾: عَتَتْ عَنِ الْخُزَّانِ.

तश्रीह : सूरह फ़ुरक़ान मक्की है जिसमें 77 आयात और छः रुकूअ़ हैं। ष़नाई तर्जुमा वाले क़ुर्आन शरीफ़ में ये पेज नं. 43 से शुरू होती है। अल्फ़ाज़े मुख़्तलिफ़ा जिनके कुछ मआ़नी ह़ज़रत इमाम (रह़) ने बयान फ़र्माए हैं तफ़्सीली मत़ालिब इन आयात के मुलाह़िज़ा ही से मा'लूम होंगे जहाँ जहाँ सूरह फ़ुरक़ान में ये अल्फ़ाज़ आए हैं।

बाब 1 : आयत 'अल्लज़ीन युह़शरून अ़ला वुजूहिहिम' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلِهِ

ये वो लोग हैं जो अपने चेहरों के बल जहन्नम की त़रफ़ चलाए जाएँगे। ये लोग जहन्नम में ठिकाने के लिह़ाज़ से बदतरीन होंगे

﴿الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَى وُجُوهِهِمْ إِلَى جَهَنَّمَ أُولَئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلاً﴾

और ये राह चलने में बहुत ही भटके हुए हैं।

4760. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुहम्मद बग़दादी ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, कहा हमसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक साहब ने पूछा, ऐ अल्लाह के नबी! काफ़िर को क़यामत के दिन उसके चेहरे के बल किस तरह चलाया जाएगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह जिसने उसे इस दुनिया में दो पैर पर चलाया है इस पर क़ादिर है कि क़यामत के दिन उसको उसके चेहरे के बल चला दे। क़तादा ने कहा यक़ीनन हमारे रब की इज़्ज़त की क़सम! यूँ ही होगा। (दीगर मक़ाम : 6523)

٤٧٦٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْبَغْدَادِيُّ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ، يُحْشَرُ الْكَافِرُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: ((أَلَيْسَ الَّذِي أَمْشَاهُ عَلَى الرِّجْلَيْنِ فِي الدُّنْيَا قَادِرًا عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)). قَالَ قَتَادَةُ: بَلَى وَعِزَّةِ رَبِّنَا. [طرفه في : ٦٥٢٣].

क़यामत के दिन एक मंज़र ये भी होगा कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन मुँह के बल चलाए जाएँगे जिससे उनकी इंतिहाई ज़िल्लत व ख़्वारी होगी। अल्लाहुम्मा ला तज्अल्ना मिन्हुम आमीन

बाब 2 : आयत 'वल्लज़ीन ला यदऊन मअल्लाहि' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قَوْلِهِ: ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ وَلاَ يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا﴾ الْعُقُوبَةَ.

और जो अल्लाह तआला के साथ किसी और मा'बूद को नहीं पुकारते और जिस (इंसान) की जान को अल्लाह ने हराम क़रार दिया है उसे वो क़त्ल नहीं करते, मगर हाँ हक़ पर और न ज़िना करते हैं और जो कोई ऐसा करेगा उसे सज़ा भुगतनी ही पड़ेगी। अष़ामा के मा'नी अक़ूबत व सज़ा है।

4761. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया कि मुझसे मंसूर और सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अबू मैसरह ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने (सुफ़्यान ष़ौरी ने कहा कि) और मुझसे वासिल ने बयान किया और उनसे अबू वाइल ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा, या (आपने ये फ़र्माया कि) रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया कि कौनसा गुनाह अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये कि तुम अल्लाह का किसी को शरीक ठहराओ हालाँकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। मैंने पूछा उसके बाद कौनसा? फ़र्माया कि उसके बाद सबसे बड़ा गुनाह ये है

٤٧٦١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ وَسُلَيْمَانُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مَيْسَرَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: وَحَدَّثَنِي وَاصِلٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عنه قَالَ: سَأَلْتُ أَوْ سُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الذَّنْبِ عِنْدَ اللهِ أَكْبَرُ؟ قَالَ: ((أَنْ تَجْعَلَ للهِ نِدًّا، وَهُوَ خَلَقَكَ)). قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ)). قُلْتُ ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((أَنْ

تُزَانِي بِحَلِيلَةِ جَارِكَ)). قَالَ : وَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ تَصْدِيقًا لِقَوْلِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ، وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ وَلاَ يَزْنُونَ﴾.

[راجع: ٤٤٧٧]

कि तुम अपनी औलाद को इस डर से मार डालो कि वो तुम्हारी रोज़ी में शरीक होगी। मैंने पूछा इसके बाद कौनसा? फ़र्माया, इसके बाद ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। रावी ने बयान किया कि ये आयत आँहज़रत (ﷺ) के फ़र्मान की तस्दीक़ के लिये नाज़िल हुई कि, और जो अल्लाह के साथ किसी और मा'बूद को नहीं पुकारते और जिस (इंसान) की जान को अल्लाह ने हराम क़रार दिया है उसे क़त्ल नहीं करते मगर हाँ हक़ पर और न वो ज़िना करते हैं। (राजेअ: 4477)

तश्रीह : कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है। या'नी अल्लाह की इबादत मे किसी भी ग़ैर को शरीक करना ये वो गुनाह है कि इसके करने वाले की अगर वो बग़ैर तौबा मर जाए अल्लाह के यहाँ कोई बख़्शिश नहीं है। मुश्रिकीन हमेशा हमेश दोज़ख़ में रहेंगे। जन्नत उनके लिये क़त्अन हराम है। इसी तरह क़त्ले नाहक़ भी बड़ा गुनाह है और ज़िनाकारी भी गुनाहे कबीरा है। अल्लाह हर मुसलमान को इनसे बचाए, आमीन।

٤٧٦٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ، قَالَ: أَخْبَرَنِي الْقَاسِمُ بْنُ أَبِي بَزَّةَ أَنَّهُ سَأَلَ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ: هَلْ لِمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا مِنْ تَوْبَةٍ؟ فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ ﴿وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ﴾ فَقَالَ سَعِيدٌ: قَرَأْتُهَا عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ كَمَا قَرَأْتَهَا عَلَيَّ فَقَالَ: هَذِهِ مَكِّيَّةٌ نَسَخَتْهَا آيَةٌ مَدَنِيَّةٌ الَّتِي فِي سُورَةِ النِّسَاءِ.

[راجع: ٣٨٥٥]

4762. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे क़ासिम बिन अबी बज़्ज़ा ने ख़बर दी, उन्होंने सईद बिन जुबैर से पूछा कि अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान को जान बुझकर क़त्ल कर दे तो क्या उसकी इस गुनाह से तौबा क़ुबूल हो सकती है? उन्होंने कहा कि नहीं। (इब्ने अबी बज़्ज़ा ने बयान किया कि) मैंने इस पर ये आयत पढ़ी कि, और जिस जान को अल्लाह ने हराम क़रार दिया है उसे क़त्ल न करते, मगर हाँ हक़ के साथ। सईद बिन जुबैर (रज़ि) ने कहा कि मैंने भी ये आयत हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के सामने पढ़ी थी तो उन्होंने कहा था कि मक्की आयत है और मदनी आयत जो इस सिलसिले में सूरह निसा में है इससे इसका हुक्म मन्सूख़ हो गया है। (राजेअ़ :3855)

٤٧٦٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: اخْتَلَفَ أَهْلُ الْكُوفَةِ فِي قَتْلِ الْمُؤْمِنِ، فَرَحَلْتُ فِيهِ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ فَقَالَ: نَزَلَتْ فِي آخِرِ مَا نَزَلَ، وَلَمْ يَنْسَخْهَا شَيْءٌ.

[راجع: ٣٨٥٥]

4763. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि अहले कूफ़ा का मोमिन के क़त्ल के मसले में इख़्तिलाफ़ हुआ (कि उसके क़ातिल की तौबा क़ुबूल हो सकती है या नहीं) तो मैं सफ़र करके इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में पहुँचा तो उन्होंने कहा कि (सूरह निसा की आयत जिसमें ये ज़िक्र है कि जिसने किसी मुसलमान को जान—बूझकर क़त्ल किया उसकी सज़ा जहन्नम है) इस सिलसिले में सबसे आख़िर में नाज़िल हुई है और किसी दूसरी चीज़ से मन्सूख़ नहीं हुई। (राजेअ़ : 3855)

4764. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से फ़जज़ाउहू जहन्नम के बारे में सवाल किया तो उन्होंने फ़र्माया कि उसकी तौबा क़ुबूल नहीं होगी और अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ला यदऊ़ना मअ़ल्लाहि इलाहन आख़र के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि ये उन लोगों के बारे में है जिन्होंने ज़माना-ए-जाहिलियत में क़त्ल किया हो। (राजेअ़ : 3855)

٤٧٦٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ﴾ قَالَ : لاَ تَوْبَةَ لَهُ. وَعَنْ قَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ﴾ قَالَ: كَانَتْ هَذِهِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ. [راجع: ٣٨٥٥]

तश्रीह : या'नी जिन लोगों ने ज़माना-ए-जाहिलियत में क़त्ल किया हो और फिर इस्लाम लाए हों तो उनका हुक्म इस आयत में बताया गया है लेकिन अगर कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई को नाह़क़ क़त्ल कर दे तो ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के नज़दीक उसकी सज़ा जहन्नम है। इस गुनाह से इसकी तौबा क़ुबूल नहीं है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का यही फ़त्वा है कि अ़मदन किसी मुसलमान का नाह़क़ क़ातिल अबदी दोज़ख़ी है। मगर जुम्हूर उम्मत का फ़त्वा है कि ऐसा गुनाहगार उस मक़्तूल के वारिषों को ख़ूँबहा देकर तौबा करे तो वो क़ाबिले मुआ़फ़ी हो जाता है। शायद ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का फ़त्वा ज़जर व तौबीख़ के तौर पर हो। बहरहाल जुम्हूर का फ़त्वा रह़मते इलाही के ज़्यादा क़रीब है।

बाब 3 : आयत 'युजाअ़फ़ु लहुल्अ़ज़ाबु' की तफ़्सीर

या'नी क़यामत के दिन इसका अ़ज़ाब कई गुना बढ़ता ही जाएगा और वो उसमें हमेशा के लिये ज़लील होकर पड़ा रहेगा

٣- باب قَوْلِهِ :
﴿يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا﴾

4765. हमसे सअ़द बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन अब्ज़ा ने बयान किया कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से आयत, और जो कोई किसी मोमिन को जानकर क़त्ल करे उसकी सज़ा जहन्नम है, और सूरह फ़ुरक़ान की आयत, और जिस इंसान की जान मारने को अल्लाह ने ह़राम क़रार दिया है उसे क़त्ल नहीं करते मगर हाँ ह़क़ के साथ इल्ला मन ताबा व आमना तक, मैंने इस आयत के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि जब ये आयत नाज़िल हुई तो अहले मक्का ने कहा कि फिर तो हमने अल्लाह के साथ शरीक भी ठहराया है और नाह़ क़ ऐसे क़त्ल भी किये हैं जिन्हें अल्लाह ने ह़राम क़रार दिया था और हमने बदकारियों का भी इर्तिकाब किया है। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, मगर हाँ जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करता रहे, अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़ा ही मेहरबान है, तक। (राजेअ़ : 3855)

٤٧٦٥- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قَالَ ابْنُ أَبْزَى سُئِلَ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ - حَتَّى بَلَغَ - إِلاَّ مَنْ تَابَ وَآمَنَ﴾ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ قَالَ أَهْلُ مَكَّةَ : فَقَدْ عَدَلْنَا بِاللهِ، وَقَتَلْنَا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ. وَأَتَيْنَا الْفَوَاحِشَ، فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿إِلاَّ مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلاً صَالِحًا - إِلَى قَوْلِهِ - غَفُورًا رَحِيمًا﴾.

[راجع: ٣٨٥٥]

बाब 4 : आयत 'इल्ला मन ताब व आमन व अमिल अमलन सालिहा' की तफ़्सीर या'नी,

मगर हाँ जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करता रहे, सो उनकी बदियों को अल्लाह नेकियों से बदल देगा और अल्लाह तो है ही बड़ा बख़्शने वाला बड़ा ही मेहरबान है।

٤- باب قوله ﴿إِلاَّ مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلاً صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللهُ غَفُورًا رَحِيمًا﴾

4766. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने, उन्हें मंसूर ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया मुझे अब्दुर्रहमान बिन अब्ज़ा ने हुक्म दिया कि मैं हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से दो आयतों के बारे में पूछूँ यानी, और जिसने किसी मोमिन को जान–बूझकर क़त्ल किया, अल्अख़ मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने फ़र्माया कि ये आयत किसी चीज़ से भी मन्सूख़ नहीं हुई है। (और दूसरी आयत जिसके) बारे में मुझे उन्होंने पूछने का हुक्म दिया वो ये थी, और जो लोग किसी मा'बूद को अल्लाह के साथ नहीं पुकारते आपने उसके बारे में फ़र्माया ये मुश्रिकीन के बारे मे नाज़िल हुई थी। (राजेअ : 3855)

٤٧٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ: أَمَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبْزَى أَنْ أَسْأَلَ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَاتَيْنِ الآيَتَيْنِ ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا﴾ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: لَمْ يَنْسَخْهَا شَيْءٌ. وَعَنْ ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ﴾ قَالَ : نَزَلَتْ فِي أَهْلِ الشِّرْكِ. [راجع: ٣٨٥٥]

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का ख़्याल ये था कि **इल्ला मन् ताबा व आमना** अल् आयत का ता'ल्लुक़ उन मुसलमानों से नहीं है जो किसी मुसलमान का जान-बूझकर नाहक़ ख़ून करें ये आयत सिर्फ़ काफ़िर व मुश्रिकों के ईमान लाने के बारे में है।

ये हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का ख़्याल था मगर जुम्हूर उम्मत ने ऐसे क़ातिल के बारे में तौबा व इस्तिग़फ़ार की गुंजाइश बताई है।

बाब 5 : आयत 'फसौफ़ यकूनु लिज़ामा' की तफ़्सीर

या'नी पस अन्क़रीब ये (झुठलाना उनके लिये) बाइ़षे वबाल दोज़ख़ बनकर रहेगा। लिज़ामा या'नी हलाकत।

٥- باب قوله ﴿فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا﴾ : هَلَكَةً.

4767. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़ियाष ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे मुस्लिम ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा (क़यामत की) पाँच निशानियाँ गुज़र चुकी हैं, धुआँ (इसका ज़िक्र आयत यौमा तातिस्समाउ बिदुख़ानिम्मुबीन में है) चाँद का फटना (इसका ज़िक्र आयत इक़्तरबतिस् साअत व वन्शक़्क़ुल क़मर में है) रोम का मग़्लूब होना (इसका ज़िक्र सूरह गुलिबतिर् रूम में है) बत्शहू या'नी अल्लाह की पकड़ जो बद्र में

٤٧٦٧- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: خَمْسٌ قَدْ مَضَيْنَ: الدُّخَانُ، وَالْقَمَرُ، وَالرُّومُ، وَالْبَطْشَةُ، وَاللِّزَامُ ﴿فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا﴾.

[راجع: ١٠٠٧]

हुई (इसका ज़िक्र यौमा नब्तिशुल्बत्शतल्कुब्रा में है) और वबाल जो क़ुरैश पर बद्र के दिन आया (इसका ज़िक्र आयत फ़सौफ़ा यकूना लिज़ामा में है। (राजेअ : 1008)

तश्रीह : ये पाँचों निशानियाँ अलामते क़यामत के बारे में है। धुआँ तो वही है जिसका ज़िक्र **यौमा तातिस्समाउ बिदुखानिम्मुबीन** मे आया है। चाँद का फटना वही है जिसका ज़िक्र सूरह इक़्तरबतिस् साअत में है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के इस क़ौल से साफ़ निकलता है कि चाँद का फटना क़यामत की निशानी था लेकिन चूँकि आँहज़रत (ﷺ) ने पहले इसकी ख़बर दे दी थी इस लिहाज़ से मुअजिज़ा भी हुआ। शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष मरहूम ने तफ़्हीमात में ऐसा ही लिखा है। तीसरे रूमियों का जिनको अपनी ताक़त पर बड़ा घमण्ड था ईरानियों के हाथों मग़लूब होना। बत्शता या'नी पकड़ का ज़िक्र आयत **यौम नब्तिशुल्बत्शतल्कुब्रा** में है। आयत फ़सौफ़ा यकूना लिज़ामा में लाज़िम होना, इससे उस हलाकत का ज़रूर होना मुराद है। जो बद्र के दिन काफ़िरों की हुई। बत्शह से भी यही क़त्ले कुफ़्फ़ार मुराद है जो बद्र के दिन हुआ। कुछ ने कहा लिज़ामा से क़यामत का दिन मुराद है। कुछ ने कहा क़हत मुराद है जो क़ुरैशे मक्का पर बतौरे अज़ाब आया था।

सूरह शुअरा की तफ़्सीर

[٢٦] سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿تَعْبَثُونَ﴾ تَبْنُونَ ﴿هَضِيمٌ﴾ يَتَفَتَّتُ إِذَا مُسَّ. ﴿مُسَحَّرِينَ﴾: الْمَسْحُورِينَ. وَ﴿الْلَيكَةُ والأَيْكَةُ﴾ جَمْعُ أَيْكَةٍ وَهِيَ جَمْعُ شَجَرٍ ﴿يَوْمِ الظُّلَّةِ﴾ إِظْلاَلُ الْعَذَابِ إِيَّاهُمْ ﴿مَوْزُونٍ﴾ مَعْلُومٍ. ﴿كَالطَّوْدِ﴾ الْجَبَلِ. ﴿لَشِرْذِمَةٌ﴾ الشِّرْذِمَةُ طَائِفَةٌ قَلِيلَةٌ ﴿فِي السَّاجِدِينَ﴾ الْمُصَلِّينَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ﴾ كَأَنَّكُمْ ﴿الرِّيعُ﴾ : الأَيْفَاعُ مِنَ الأَرْضِ وَجَمْعُهُ رِيعَةٌ، وَأَرْيَاعٌ وَاحِدُ الرِّيَعَةِ. ﴿مَصَانِعَ﴾ كُلُّ بِنَاءٍ فَهُوَ مَصْنَعَةٌ. ﴿فَرِهِينَ﴾ مَرِحِينَ، فَارِهِينَ بِمَعْنَاهُ، وَيُقَالُ فَارِهِينَ: حَاذِقِينَ. ﴿تَعْثَوْا﴾ هُوَ أَشَدُّ الْفَسَادِ، وَعَاثَ يَعِيثُ عَيْثًا ﴿الْجِبِلَّةَ﴾ الْخَلْقُ، جُبِلَ خُلِقَ، وَمِنْهُ جُبُلاً وَجِبِلاً وَجُبْلاً يَعْنِي الْخَلْقَ. وَقَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ.

मुजाहिद ने कहा लफ़्ज़े तअबषून का मा'नी बनाते हो। हज़ीम वो चीज़ जो छूने से रेज़ा रेज़ा हो जाए। मुसह्हरीना का मा'नी जादू किये गये। लयकतु और अयकतु जमा है अयकतु की और लफ़्ज़ अयकतु सहीह है। शजर या'नी पेड़ की। यौमिज़् ज़ुल्लत या'नी वो दिन जिसमें अज़ाब ने उन पर साया किया था। मौज़ून का मा'नी मा'लूम। कत् तौद या'नी पहाड़ की तरह शिर्ज़िमतुन या'नी छोटा गिरोह। फ़िस् साजिदीन या'नी नमाज़ियों मे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा लअल्लकुम तख़्लुदून का मा'नी ये है कि जैसे हमेशा दुनिया में रहोगे। रयअा बुलंद ज़मीन जैसे टीले रयअा मुफ़रद है इसकी जमा रयअता और अरयाअ आती है। मसानिअ हर इमारत को कहते हैं (या ऊँचे ऊँचे महलों को) फ़रिहीन का मा'नी इतराते हुए ख़ुश व ख़ुर्रम फ़ारिहीन का भी यही मा'नी है। कुछ ने कहा फ़ारिहीन का मा'नी कारीगर होशियार तजुर्बेकार। तअषू जैसे आष यईषु अयषा अयष कहते हैं सख़्त फ़साद करने को (धुँद मचाना) तअषू का भी वही मा'नी है या'नी सख़्त फ़साद न करो। ख़लक़ु जबल या'नी पैदा किया गया है। इसी से जुबुला और जिबिला और जुबुला निकला है या'नी ख़िल्क़त।

तश्रीह : सूरह शुअरा के ये मुख़्तलिफ़ मुक़ामात के अल्फ़ाज़े मुबारका हैं जिनको हज़रत इमाम (रह़) ने यहाँ अपनी रविश के मुत़ाबिक़ वाज़ेह किया है। पूरी तफ़्सीलात के लिये इन आयात का मुत़ालआ बहुत ज़रूरी है जिनमें ये अल्फ़ाज़ वारिद हुए हैं। लफ़्ज़े तअ़षव के ज़ेल हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) का मत़लब ये नहीं है कि ये लफ़्ज़े आ़ष यईषु से निकला है क्योंकि आ़ष यईषु अज्वफ़ है और लफ़्ज़े तअ़षव् अ़षा यअ़षू से निकला है जो नाक़िस़ है। बल्कि मत़लब ये है कि दोनों का मा'नी एक ही है। ये सूरत मक्की है। इसमें 227 आयात और ग्यारह रुकूअ़ हैं और ये ष़नाई तर्जुमा वाले क़ुर्आन मजीद पेज नं.439 पर मुलाहिज़ा की जा सकती है।

बाब 1 : आयत 'व ला तुख़्ज़िनी यौम युब्अ़षून' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قوله ﴿وَلاَ تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ﴾

हज़रत इब्राहीम (अ) ने ये भी दुआ़ की थी कि या अल्लाह! मुझे रुस्वा न करना उस दिन जब हिसाब के लिये सब जमा किये जाएँगे

4768. और इब्राहीम बिन त़ह्मान ने कहा कि उनसे इब्ने अबी ज़ैब ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम अपने वालिद (आज़र) को क़यामत के दिन गर्द आलूद काला कलूटा देखेंगे। इमाम बुख़ारी (रह़) ने कहा, ग़बरह और क़तरा हम मा'नी हैं। (राजेअ़ : 3349)

٤٧٦٨- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ طَهْمَانَ عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: ((إِنَّ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ رَأَى أَبَاهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَيْهِ الْغَبَرَةُ وَالْقَتَرَةُ)). الْغَبَرَةُ هِيَ الْقَتَرَةُ. [راجع: ٣٣٤٩]

तश्रीह : इस हदीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमा से यूँ है कि इस हदीष़ में मज़्कूर है कि हज़रत इब्राहीम (अ) परवरदिगार से अ़र्ज़ करेंगे। मैंने तुझसे दुनिया में दुआ़ की थी कि ह़श्र के दिन मुझको रुस्वा न कीजियो और तूने वा'दा फ़र्मा लिया था। अब बाप की ज़िल्लत से बढ़कर कौनसी रुस्वाई होगी। दूसरी रिवायत में इतना ज़्यादा है कि फिर अल्लाह पाक उनके बाप को एक गंदुमी नजासत में लिथड़े हुए बिज्जू की शक्ल में कर देगा, फ़रिश्ते उसके पैर पकड़कर उसे दोज़ख़ में डाल देंगे। हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) ये क़बीह़ सूरत देखकर उससे बेज़ार हो जाएँगे। इस हदीष़ से उन हिकायतों का ग़लत़ होना ष़ाबित हुआ कि फ़लाँ बुज़ुर्ग या फ़लाँ वली का धोबी या ग़ुलाम जो काफ़िर था उनका नाम लेने से बख़्श दिया गया। इब्राहीम ख़लीलुल्लाह से ज़्यादा इन औलिया अल्लाह का मर्तबा नहीं हो सकता है। जब हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) के वालिद कुफ़्र की वजह से नहीं बख़्शे गये तो और बुज़ुर्गों या वलियों के ग़ुलाम और ख़ादिम किस शुमार में हैं। दूसरी हदीष़ में है एक शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा बाप कहाँ है? आपने फ़र्माया दोज़ख़ में वे रोता हुआ चला आपने फ़र्माया मेरा बाप और तेरा बाप दोनों दोज़ख़ में हैं। तीसरी हदीष़ में है कि अबू त़ालिब को क़यामत के दिन आग की जूतियाँ पहनाई जाएँगी या वो टख़ने बराबर आग में रहेंगे उनका दिमाग़ गर्मी से जोश मारता रहेगा। अल्लाह की पनाह (वहीदी)

4769. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई (अ़ब्दुल ह़मीद) ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी ज़िअब ने, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि इब्राहीम (अ़लैहि.) अपने

٤٧٦٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا أَخِي عَنِ ابْنِ أَبِي ذِئْبٍ عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ

वालिद से (क़यामत के दिन) जब मिलेंगे तो अल्लाह तआला से अ़र्ज़ करेंगे कि ऐ रब! तू ने वा'दा किया था कि तू मुझे उस दिन रुस्वा नहीं करेगा जब सब उठाए जाएँगे लेकिन अल्लाह तआला जवाब देगा कि मैंने जन्नत को काफ़िरों पर हराम क़रार दे दिया है। (राजेअ़ : 3349)

ﷺ قَالَ: ((يَلْقَى إِبْرَاهِيمُ أَبَاهُ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ إِنَّكَ وَعَدْتَنِي أَنْ لاَ تُخْزِيَنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ، فَيَقُولُ اللهُ: إِنِّي حَرَّمْتُ الْجَنَّةَ عَلَى الْكَافِرِينَ)). [راجع: ٣٣٤٩]

तश्रीह : आज़र को जन्नत न मिल सकेगी मगर अल्लाह पाक इब्राहीम (अ़लैहि.) को रुस्वाई से बचाने के लिये आज़र की शक्ल बदलकर उसे दोज़ख़ में डाल देगा ताकि आम तौर पर महशर में उसकी पहचान होकर हज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) के लिये शर्मिन्दगी का सबब न हो। इससे ये भी मा'लूम हुआ कि क़यामत के दिन अंबिया-ए-किराम की शफ़ाअत सिर्फ़ उन ही के हक़ में मुफ़ीद होगी जिनके लिये अल्लाह की रहमत शामिले हाल होगी। आयत **व ला यश्फ़ऊन इल्ला लिमनिर्तज़ा** (अल् अंबिया : 28) का यही मफ़्हूम है। **अल्लाहुम्मर्ज़ुक्ना शफ़ाअ़त हबीबिक मुहम्मद (ﷺ) यौमल्क़ियामति आमीन**

बाब 2 : आयत 'वन्ज़ुर अ़शीरतकल् अक़्रबीना ....अल आयत' की तफ़्सीर या'नी,

वख़्फ़िज़् जनाहका या'नी अपना बाज़ू नरम रखे।

٢- بَابُ قَوْلُهُ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ، أَلِنْ جَانِبَكَ.

या'नी और आप अपने ख़ानदानी क़राबतदारों को डराते रहो (और जो आपकी राह पर चले) तो आप उसके साथ शफ़क़त और आजिज़ी से पेश आओ।

4770. हमसे उ़मर बिन हफ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि मुझसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, और आप अपने ख़ानदानी क़राबतदारों को डराते रहिए, नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) स़फ़ा पहाड़ी चढ़ गये और पुकारने लगे, ऐ बनी फ़हर! और ऐं बनी अ़दी! और क़ुरैश के दूसरे ख़ानदान वालों! इस आवाज़ पर सब जमा हो गये अगर कोई किसी वजह से न आ सका तो उसने अपना कोई चौधरी भेज दिया, ताकि मा'लूम हो कि क्या बात है। अबू लहब क़ुरैश के दूसरे लोगों के साथ मज्मआ में था। आहज़रत (ﷺ) ने उन्हें ख़िताब करके फ़र्माया, तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर मैं तुमसे कहूँ कि वादी में (पहाड़ी के पीछे से) एक लश्कर है और वो तुम पर हमला करना चाहता है तो क्या तुम मेरी बात सच मानोगे? सबने कहा कि हाँ! हम आपकी तस्दीक़ करेंगे हमने हमेशा आपको सच्चा ही पाया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर

٤٧٧٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾ صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الصَّفَا فَجَعَلَ يُنَادِي ((يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيٍّ)) لِبُطُونِ قُرَيْشٍ. حَتَّى اجْتَمَعُوا، فَجَعَلَ الرَّجُلُ إِذَا لَمْ يَسْتَطِعْ أَنْ يَخْرُجَ أَرْسَلَ رَسُولاً لِيَنْظُرَ مَا هُوَ فَجَاءَ أَبُو لَهَبٍ وَقُرَيْشٌ، فَقَالَ: أَرَأَيْتَكُمْ لَوْ أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ خَيْلاً بِالْوَادِي تُرِيدُ أَنْ تُغِيرَ عَلَيْكُمْ أَكُنْتُمْ مُصَدِّقِيَّ؟ قَالُوا: نَعَمْ، مَا جَرَّبْنَا عَلَيْكَ إِلاَّ صِدْقًا.

सुनो, मैं तुम्हें उस सख़्त अ़ज़ाब से डराता हूँ जो बिलकुल सामने है। उस पर अबू लहब बोला, तुझ पर सारे दिन तबाही नाज़िल हो, क्या तूने हमे इसीलिये इकट्ठा किया था। इसी वाक़िया पर ये आयत नाज़िल हुई। अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये और वो बर्बाद हो गया, न उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमाई ही उसके आड़े आई। (राजेअ़ : 1394)

قَالَ : فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ. فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ : تَبًّا لَكَ سَائِرَ الْيَوْمِ، أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟ فَنَزَلَتْ ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ. مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ﴾. [راجع: ١٣٩٤]

तश्रीह : यही अबू लहब है जो बाद में अ़ज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हुआ और सिर्फ़ एक ज़हरीली फुंसी निकलने से इसका सारा जिस्म ज़हर आलूद हो गया। आख़िर जब सारा जिस्म गल सड़ गया तब जाकर मौत ने ख़ात्मा किया। मरने के बाद कई दिनों तक लाश सड़ती रही, आख़िर मुता'ल्लिक़ीन ने लकड़ियों से नअ़श को धकेलकर एक गढ़े में डाला। इस तरह अ़ज़ाबे इलाही का वा'दा पूरा हुआ।

4771. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझको सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, जब आयत, और अपने ख़ानदान के क़राबतदारों को डरा, नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (सफ़ा पहाड़ी पर खड़े होकर) आवाज़ दी कि ऐ जमाअ़ते क़ुरैश! या इसी तरह का और कोई कलिमा आपने फ़र्माया अल्लाह की इताअ़त के ज़रिये अपनी जानों को उसके अ़ज़ाब से बचाओ (अगर तुम शिर्क व कुफ़्र से बाज़ न आए तो) अल्लाह के यहाँ मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आऊँगा। ऐ बनी अ़ब्दे मुनाफ़! अल्लाह के यहाँ मैं तुम्हारे लिये बिलकुल कुछ नहीं कर सकूँगा। ऐ अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब! अल्लाह की बारगाह में मैं तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकूँगा। ऐ सफ़िया! रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी! मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हें कुछ फ़ायदा न पहुँचा सकूँगा। ऐ फ़ातिमा! मुहम्मद (ﷺ) की बेटी मेरे माल में से जो चाहो मुझसे ले लो लेकिन अल्लाह की बारगाह में मैं तुम्हें कोई फ़ायदा न पहुँचा सकूँगा। इस रिवायत की मुताबअ़त अस्बग़ ने इब्ने वहब से, उन्होंने यूनुस से और उन्होंने इब्ने शिहाब से की है।

(राजेअ़ : 2753)

٤٧٧١ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ أَنْزَلَ اللهُ ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ﴾ قَالَ: ((يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ - أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا - اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا. يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، لاَ أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللهِ شَيْئًا، يَا عَبَّاسُ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لاَ أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا، وَيَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا. وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ ﷺ سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي، لاَ أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللهِ شَيْئًا)). تَابَعَهُ أَصْبَغُ عَنِ ابْنِ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ. [راجع: ٢٧٥٣]

तश्रीह : इससे उन नामो–निहाद मुसलमानों को सबक़ हासिल करना चाहिये जो ज़िन्दा मुर्दा पीरों फ़क़ीरों का दामन इसलिये पकड़े हुए हैं कि वो क़यामत के दिन उनको बख़्शवा लेंगे। कितने कम अ़क़्ल नज़्र व नियाज़ के इसी चक्कर में गिरफ़्तार हैं और रोज़ाना उनके घरों में नित नई नियाज़ें होती रहती हैं। सत्तरह्वीं का बकरा और ग्यारहवीं का मुर्ग़ा ये

ऐसे ही धोखे हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को उनसे नजात बख़्शे, आमीन।

[٢٧] سُورَةُ النَّمْلُ

सूरह नम्ल की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

इस सूरत में 93 आयात और सात रुकूअ़ हैं और ये मक्की है।

وَ﴿الْخَبْءَ﴾ مَا خَبَأْتَ. ﴿لاَ قِبَلَ﴾ : لاَ طَاقَةَ ﴿الصَّرْحُ﴾ : كُلُّ مِلاَطٍ اتُّخِذَ مِنَ الْقَوَارِيرِ، وَالصَّرْحُ الْقَصْرُ وَجَمْعُهُ : صُرُوحٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿وَلَهَا عَرْشٌ﴾ : سَرِيرٌ ﴿كَرِيمٌ﴾ : حُسْنُ الصَّنْعَةِ وَغَلاَءُ الثَّمَنِ ﴿مُسْلِمِينَ﴾ طَائِعِينَ ﴿رَدِفَ﴾ اقْتَرَبَ ﴿جَامِدَةً﴾ قَائِمَةً ﴿أَوْزِعْنِي﴾ اجْعَلْنِي. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿نَكِّرُوا﴾ غَيِّرُوا. ﴿وَأُوتِينَا الْعِلْمَ﴾ يَقُولُهُ سُلَيْمَانُ ﴿الصَّرْحُ﴾ بِرْكَةُ مَاءٍ ضَرَبَ عَلَيْهَا سُلَيْمَانُ قَوَارِيرَ أَلْبَسَهَا إِيَّاهُ.

अल् ख़ब्अ पोशीदा छुपी चीज़। ला क़िबला ताक़त नहीं। अस्सरह के मा'नी काँच का गारा और स़रहन महल को भी कहते हैं इसकी जमा सुरूह़ है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा वलहा अ़र्शुन अ़ज़ीम का ये मा'नी है कि इसका तख़्त निहायत उ़म्दह् अच्छी कारीगरी का है जो बेश क़ीमत है। मुस्लिमीन या'नी ताबेदार होकर। रदिफ़ नज़दीक आ पहुँचा। जामिदा अपनी जगह पर क़ायम। अवज़िअ़नी मुझको कर दे। और मुजाहिद ने कहा नकिरू का मा'नी उसका रूप बदल डालो। ऊतीनल् इल्म ये ह़ज़रत सुलैमान (अ़लैहि.) का मक़ूला है। स़रह़ पानी का एक ह़ौज था ह़ज़रत सुलैमान (अ़लैहि.) ने उसे शीशों से ढाँक दिया था। देखने से ऐसा मा'लूम होता था जैसे पानी भरा हुआ है।

[٢٨] سورة الْقَصَصُ

सूरह क़स़स़ की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

ये सूरह मक्की है। इसमें 188 आयात और नौ रुकूअ़ हैं और ये क़ुर्आन पाक तर्जुमा स़नाई में पेज नं. 461 पर मुलाह़िज़ा फ़र्माई जा सकती है।

باب ﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلاَّ وَجْهَهُ﴾ إِلاَّ مُلْكَهُ. وَيُقَالُ : إِلاَّ مَا أُرِيدَ بِهِ وَجْهُ اللهِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الأَنْبَاءُ الْحُجَجُ.

बाब आयत 'कुल्लू शैइन हालिकुन इल्ला वज्हहू' की तफ़्सीर या'नी,

हर चीज़ फ़ना होने वाली है। सिवाए उसकी ज़ात के (इल्ला वज्हहू से मुराद है) बजुज़ उसकी सल्तनत के कुछ लोगों ने इससे मुराद वो आ़माल लिये हैं जो अल्लाह की रज़ा ह़ासिल करने के लिये किये गये हों। (स़वाब के लिहाज़ से वो भी फ़ना न होंगे) मुजाहिद ने कहा कि अल् अम्बाउ से दलीलें मुराद हैं।

लफ़्ज़ वज्हहू ऐसा लफ़्ज़ है जिसकी कोई तावील नहीं की जा सकती है बिला तावील उस पर ईमान लाना ज़रूरी है। उसकी सल्तनत से जो तावील की गई है ये मफ़्हूम के लिहाज़ से है वरना लफ्ज़े वज्हहू से ज़ाते बारी का चेहरा ही मुराद है कि वो फ़ना होने वाला नहीं है। अब वो चेहरा जैसा भी है उस पर हमारा ईमान व यक़ीन है। आमन्ना बिल्लाहि कमा हुवा बिअस्माइही व सिफ़ाइही।

बाब 1 : आयत 'इन्नक ला तहदी मन अह्बब्त' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلِهِ
﴿إِنَّكَ لاَ تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ﴾.

जिसको तुम चाहो हिदायत नहीं कर सकते, अल्बत्ता अल्लाह हिदायत देता है उसे जिसके लिये वो हिदायत चाहता है।

٤٧٧٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ : أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبٍ الْوَفَاةُ جَاءَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَوَجَدَ عِنْدَهُ أَبَاجَهْلٍ، وَعَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أُمَيَّةَ بْنِ الْمُغِيرَةِ فَقَالَ : ((أَيْ عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أُحَاجُّ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). فَقَالَ أَبُوجَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أُمَيَّةَ : أَتَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعْرِضُهَا عَلَيْهِ وَيُعِيدَانِهِ بِتِلْكَ الْمَقَالَةِ حَتَّى قَالَ أَبُو طَالِبٍ آخِرَ مَا كَلَّمَهُمْ : عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، وَأَبَى أَنْ يَقُولَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ. قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَاللهِ لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ مَا لَمْ أُنْهَ عَنْكَ)). فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ﴾ وَأَنْزَلَ اللهُ فِي أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ ﴿إِنَّكَ لاَ تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ، وَلَكِنَّ اللهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ﴾ [راجع: ١٣٦٠]

4772. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद (हज़रत मुसय्यिब बिन हुज़्न रज़ि.) ने बयान किया कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास आए, अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बिन मुग़ीरह वहाँ पहले ही से मौजूद थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, चचा! आप सिर्फ़ कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ दीजिए ताकि इस कलिमा के ज़रिये अल्लाह की बारगाह में आपकी शफ़ाअ़त करूँ। इस पर अबू जहल और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या बोले क्या तुम अ़ब्दुल मुत्तलिब के मज़हब से फिर जाओगे? आँहज़रत (ﷺ) बार बार उनसे यही कहते रहे (कि आप सिर्फ़ यही एक कलिमा पढ़ लें) और ये दोनों भी अपनी बात उनके सामने बार-बार दोहराते रहे (कि क्या तुम अ़ब्दुल मुत्तलिब के मज़हब से फिर जाओगे?) आख़िर अबू तालिब की ज़ुबान से जो आख़री कलिमा निकला वो यही था कि वो अ़ब्दुल मुत्तलिब के मज़हब पर ही क़ायम हैं । उन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने से इंकार कर दिया। रावी ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह की क़सम! मैं आपके लिये तलबे मग़्फ़िरत करता रहूँगा यहाँ तक कि मुझे इससे रोक न दिया जाए। फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, नबी और ईमान वालों के लिये ये मुनासिब नहीं कि वो मुश्रिकीन के लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करें। और ख़ास अबू तालिब के बारे में ये आयत नाज़िल हुई आँहज़रत (ﷺ) से कहा गया कि जिसको तुम चाहो हिदायत नहीं कर सकते, अल्बत्ता अल्लाह हिदायत देता है उसे जिसके लिये वो हिदायत

चाहता है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा। (लतनउ बिल्उ़स्बति उलिल्कुव्वह) से ये मुराद है कि कई ज़ोरदार आदमी मिलकर भी उसकी कुँजियाँ नहीं उठा सकते थे। लतनूउ का मत़लब ढोई जाती थीं। फ़ारिग़ा का मा'नी ये है कि मूसा (अ़लैहि.) की माँ के दिल में मूसा (अ़लैहि.) के सिवा और कोई ख़ास नहीं रहा था। अल फ़रीह़िन का मा'नी ख़ुशी से इतराते हुए। क़ुस्सीहि या'नी उसके पीछे पीछे चली जा। क़ुस़्सी के मा'नी बयान करने के होते हैं जैसे सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया नह़नु नक़ुस़्सु अ़लैका अ़न् जम्बि या'नी दूर से अ़न् जनाबति का भी यही मा'नी है और अ़न् इज्तिनाब का भी यही है। यब्त़िशु ब कसरा त़ाअ और यब्त़ुश ब ज़म्मा त़ाअ दोनों क़िरात हैं। यातमिरून मश्वरा कर रहे हैं। उ़दवान और अ़दाअ और तअ़दी सबका एक ही मफ़्हूम है या'नी ह़द से बढ़ जाना ज़ुल्म करना। आनस का मा'नी देखा। जज़्वतु लकड़ी का मोटा टुकड़ा जिसके सर पर आग लगी हो मगर उसमे शोला न हो और शिहाब जो आयत औ आतीकुम बिशिहाबिन कबस में है) इससे मुराद ऐसी जलती हुई लकड़ी जिसमें शोला हो। ह़य्यात या'नी सांपों की मुख़्तलिफ़ क़िस्में जान, अफ़्इ, अस्वद वग़ैरह रद्द या'नी मददगार पुश्तपनाह। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने युस़द्दिक़ूनी ब ज़म्मा क़ाफ़ पढ़ा है। ओरों ने कहा सनशुद्दु का मा'नी ये है कि हम तेरी मदद करेंगे अ़रब लोगों का मुहावरा है जब किसी को क़ुव्वत देते हैं तो कहते हैं जअ़ल्ना लहू अ़ज़ुदा मक़्बूह़ीन का मा'नी हलाक किये गये वस़ल्नाहू ने उसको बयान किया और पूरा किया यज्बा खिचे आते हैं। बत़िरत शरारत की। फ़ी उम्मिहा रसूला उम्मुल क़ुरा मक्का और इसके अत़राफ़ को कहते हैं। तकुन का मा'नी छुपाती हैं। अ़रब लोग कहते हैं अक्नन्तु या'नी मैंने उसको छुपा लिया। कनन्तहू का भी यही मा'नी है। वयकअन्नल्लाह का मा'नी अलम तरा अन्नल्लाह है या'नी क्या तू ने नहीं देखा। यब्सुतुर्रिज़्क़ रिज़्क़ा लिमय् यशाउ व यक़्दिर या'नी अल्लाह जिसको चाहता है फ़राग़त से रोज़ी देता है जिसे चाहता है तंगी से देता है।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿أُولِي الْقُوَّةِ﴾: لاَ يَرْفَعُهَا الْعُصْبَةُ مِنَ الرِّجَالِ ﴿لَتَنُوءُ﴾ لَتُثْقِلُ. ﴿فَارِغًا﴾ إِلاَّ مِنْ ذِكْرِ مُوسَى، ﴿الْفَرِحِينَ﴾ الْمَرِحِينَ. ﴿قُصِّيهِ﴾ اتَّبِعِي أَثَرَهُ وَقَدْ يَكُونُ أَنْ يَقُصَّ الْكَلاَمَ ﴿نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ﴾ عَنْ جُنُبٍ: عَنْ بُعْدٍ، وَعَنْ جَنَابَةٍ وَاحِدٌ، وَعَنِ اجْتِنَابٍ أَيْضًا. يَبْطِشُ وَيَبْطُشُ. ﴿يَأْتَمِرُونَ﴾ يَتَشَاوَرُونَ. الْعُدْوَانُ وَالْعَدَاءُ وَالتَّعَدِّي وَاحِدٌ، (آنَسَ) أَبْصَرَ. ﴿الْجِذْوَةُ﴾: قِطْعَةٌ غَلِيظَةٌ مِنَ الْخَشَبِ لَيْسَ فِيهَا لَهَبٌ، وَالشِّهَابُ فِيهِ لَهَبٌ. وَالْحَيَّاتُ أَجْنَاسٌ، الْجَانُّ وَالأَفَاعِي وَالأَسَاوِدُ. ﴿رِدْءًا﴾ مُعِينًا. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يُصَدِّقُنِي. وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿سَنَشُدُّ﴾ سَنُعِينُكَ، كُلَّمَا عَزَّزْتَ شَيْئًا فَقَدْ جَعَلْتَ لَهُ عَضُدًا. ﴿مَقْبُوحِينَ﴾ مُهْلَكِينَ. ﴿وَصَّلْنَا﴾ بَيَّنَّاهُ وَأَتْمَمْنَاهُ. ﴿يُجْبَى﴾ يُجْلَبُ. ﴿بَطِرَتْ﴾ أَشِرَتْ. ﴿فِي أُمِّهَا رَسُولاً﴾ أُمُّ الْقُرَى مَكَّةُ وَمَا حَوْلَهَا. ﴿تُكِنُّ﴾ تُخْفِي أَكْنَنْتُ الشَّيْءَ أَخْفَيْتُهُ، وَكَنَنْتُهُ أَخْفَيْتُهُ وَأَظْهَرْتُهُ. (وَيْكَأَنَّ اللهَ) مِثْلُ ﴿أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ﴾: يُوَسِّعُ عَلَيْهِ، وَيُضَيِّقُ عَلَيْهِ.

बाब 2 : आयत 'इन्नल्लज़ी फरज़ अ़लैकल्क़ुर्आन' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب ﴿إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ﴾ الآيَةَ

जिस अल्लाह ने आप पर क़ुर्आन को फ़र्ज़ (या'नी नाज़िल)

किया है, आख़िर आयत तक।

٤٧٧٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا يَعْلَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الْعُصْفُرِيُّ. عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿لَرَادُّكَ إِلَى مَعَادٍ﴾. قَالَ إِلَى مَكَّةَ.

4773. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको यअ़ला बिन उ़बैद ने ख़बर दी, कहा हमसे सुफ़यान बिन दीनार अ़स्फ़री ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि (आयत मज़्कूरा बाला में) लरादुका इला मआ़द से मुराद है कि अल्लाह फिर आपको मक्का पहुँचा कर रहेगा।

अल्लाह ने जो अ़हद फ़र्माया था, वो हर्फ़-ब-हर्फ़ पूरा हो गया और फ़तहे-मक्का के दिन सदाक़ते-मुहम्मदी का सारे अ़रब में परचम लहराया गया। (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

[٢٩] سورة الْعَنْكَبُوتُ

सूरह अ़न्कबूत की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

ये सूरत भी मक्की है इसमें 69 आयात और सात रुकूअ़ हैं ये क़ुर्आन मजीद ष़नाई तर्जुमा पेज नं. 474 पर मुलाहिज़ा हो।

قَالَ مُجَاهِدٌ وَكَانُوا ﴿مُسْتَبْصِرِينَ﴾ ضَلاَلَةً. ﴿فَلَيَعْلَمَنَّ اللهُ﴾: عَلِمَ اللهُ ذَلِكَ، إِنَّمَا هِيَ بِمَنْزِلَةِ ﴿فَلَيَمِيزَ اللهُ﴾، كَقَوْلِهِ: ﴿لِيَمِيزَ اللهُ الْخَبِيثَ﴾ ﴿أَثْقَالاً مَعَ أَثْقَالِهِمْ﴾: أَوْزَارًا مَعَ أَوْزَارِهِمْ وَقَالَ غَيْرُهُ الْحَيَوَانُ وَالْحَيُّ وَاحِدٌ.

मुजाहिद (रह) ने कहा कि, वकानू मुस्तब्सिरीन का ये मा'नी है कि वो गुमराह थे (और अपने आपको हिदायत पर समझते थे) औरों ने कहा कि ह़ैवान मुराद है और उसकी वाह़िद ह़य्यि है फ़ल्यअ़लमन्नल्लाहु में इल्म से तमीज़ या'नी खोलकर बता देना मुराद है जैसे आयत लियमीज़ल्लाहु ख़बीष़ा में है। अष़्क़ाला मअ़ अष़्क़ालिहुम का मतलब या'नी अपने बोझों के साथ दूसरों के बोझ भी उठाएँगे।

जिनको उन्होंने गुमराह किया था उन दोनों को बराबर का बोझ उठाना पड़ेगा।

[٣٠] سورة ﴿الم غُلِبَتِ الرُّومُ﴾

सूरह 'अलिफ़ लाम मीम गुलिबतिर्रूम' की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

﴿فَلاَ يَرْبُو﴾ مَنْ أَعْطَى يَبْتَغِي أَفْضَلَ فَلاَ أَجْرَ لَهُ فِيهَا. قَالَ مُجَاهِدٌ ﴿يُحْبَرُونَ﴾: يُنَعَّمُونَ. ﴿يَمْهَدُونَ﴾ يُسَوُّونَ الْمَضَاجِعَ. ﴿الْوَدْقُ﴾ الْمَطَرُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿هَلْ لَكُمْ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ فِي الآلِهَةِ، وَفِيهِ تَخَافُونَهُمْ أَنْ يَرِثُوكُمْ كَمَا يَرِثُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا، ﴿يَصَّدَّعُونَ﴾: يَتَفَرَّقُونَ. فَاصْدَعْ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ضُعْفٌ وَضَعْفٌ

फ़ला यरबू या'नी जो सूद पर क़र्ज़ दे उसको कुछ ष़वाब नहीं मिलेगा। मुजाहिद ने कहा युह़बरूना का मा'नी नेअ़मतें दिये जाएँगे। फ़लिअन्फ़ुसिहिम यमुहून या'नी अपने लिये बिस्तर (बिछौने) बिछाते हैं (क़ब्र में या बहिश्त में) अल्वदक़ बारिश को कहते हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ये आयत हल लकुम मिम्मा मलकत अयमानकुम अल्लाह पाक और बुतों की मिष़ाल में उतरी है। तख़ाफ़ूनहुम या'नी तुम क्या अपने लौण्डी गुलामों से ये डर करते हो कि वो तुम्हारे वारिष़ बन जाएँगे जैसे तुम आपस में एक–दूसरे के वारिष़ होते हो। यस्सद्दऊना के मा'नी जुदा जुदा हो जाएँगे। फ़अस्दअ़ का मा'नी

لُغَتَانِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿السُّوأَى﴾: الإِسَاءَةُ جَزَاءُ الْمُسِيئِينَ.

हक़ बात खोलकर बयान कर दे और कुछ ने कहा ज़अफ़ा और ज़ुअफ़ा ज़ाद के ज़म्मा और फ़त्हा के साथ दोनों क़िरात हैं। मुजाहिद ने कहा सुवा का मा'नी बुराई या'नी बुराई करने वालों का बदला बुरा मिलेगा।

तश्रीह : आयत **हल लकुम मिम्मा मलकत अयमानकुम** का मतलब ये है कि अल्लाह की मिषाल तो ऐसी है जैसे कोई किसी माल का मालिक होता है भला तुम और तुम्हारे बेटे पोते वग़ैरह और दूसरे अवतार देवता बुत वग़ैरह जिनको मुश्रिकों ने अल्लाह ठहराया है वो लौण्डी ग़ुलामों की तरह हैं क्या लौण्डी ग़ुलाम तुम्हारे माल में साझी हो सकते हैं या तुमको उनका कुछ डर होता है? ये तीनों बातें नहीं होतीं पस इस तरह ये देवता बुत वग़ैरह न अल्लाह के साझी हो सकते हैं न बराबर वाले न अल्लाह को कुछ उनका डर है बल्कि लौण्डी ग़ुलाम तो फिर बेहतर हैं हमारी तरह के आदमी हैं। ये अवतार देवता वग़ैरह तो अल्लाह से कुछ भी निस्बत नहीं रखते। वो ख़ालिक़ है ये उसकी अदना मख़्लूक़ है। बाक़ी अल्फ़ाज़ को आयाते मुता'ल्लिक़ा में मुलाहिज़ा करने से उनके तफ़्सीली मआनी आसानी से समझ में आ सकते हैं। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) का ये भी इर्शाद है कि उन अल्फ़ाज़े मज़्कूरा को आयाते मुता'ल्लिक़ा में तलाश करके क़ुर्आन मजीद के समझने के लिये ग़ौरो ख़ौज़ की आदत डालना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को क़ुर्आन पाक के समझने की तौफ़ीक़ अता करे, आमीन। इस सूरत में 60 आयात और छ : रुकूअ हैं।

٤٧٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، وَالأَعْمَشُ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: بَيْنَمَا رَجُلٌ يُحَدِّثُ فِي كِنْدَةَ، فَقَالَ: يَجِيءُ دُخَانٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَأْخُذُ بِأَسْمَاعِ الْمُنَافِقِينَ وَأَبْصَارِهِمْ يَأْخُذُ الْمُؤْمِنَ كَهَيْئَةِ الزُّكَامِ، فَفَزِعْنَا. فَأَتَيْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ وَكَانَ مُتَّكِئًا، فَغَضِبَ فَجَلَسَ فَقَالَ: مَنْ عَلِمَ فَلْيَقُلْ، وَمَنْ لَمْ يَعْلَمْ فَلْيَقُلِ: اللهُ أَعْلَمُ، فَإِنَّ مِنَ الْعِلْمِ أَنْ يَقُولَ لِمَا لاَ يَعْلَمُ: لاَ أَعْلَمُ فَإِنَّ اللهَ قَالَ لِنَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ﴿قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ﴾ وَإِنَّ قُرَيْشًا أَبْطَؤُوا عَنِ الإِسْلاَمِ، فَدَعَا عَلَيْهِمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ))، فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ حَتَّى هَلَكُوا فِيهَا وَأَكَلُوا الْمَيْتَةَ،

4774. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमसे मंसूर और आ'मश ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि एक शख़्स ने क़बीला कुन्दा में वा'ज़ बयान करते हुए कहा कि क़यामत के दिन एक धुआँ उठेगा जिससे मुनाफ़िक़ों के आँख कान बिलकुल बेकार हो जाएँगे लेकिन मोमिन पर इसका अष़र स़िर्फ़ ज़ुकाम जैसा होगा। हम उसकी बात से बहुत घबरा गये। फिर मैं हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ (और उन्हें उन स़ाहब की ये बात सुनाई) वो उस वक़्त टेक लगाए बैठे थे, उसे सुनकर बहुत ग़ुस्सा हुए और सीधे बैठ गये। फिर फ़र्माया कि अगर किसी को किसी बात का वाक़ई इल्म है तो फिर उसे बयान करना चाहिये लेकिन अगर इल्म नहीं है तो कह देना चाहिये कि अल्लाह ज़्यादा जानने वाला है। ये भी इल्म ही है कि आदमी अपनी ला इल्मी का इक़रार कर ले और स़ाफ़ कह दे कि मैं नहीं जानता। अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माया था। क़ुल मा अस्अलुकुम अलैहि मिन अज्रिन वमा अना मिनल मुतकल्लिफ़ीन (आप कह दीजिए कि मैं अपनी तब्लीग़ व दा'वत पर तुमसे कोई अज्र नहीं चाहता और न मैं बनावट करता हूँ) अस़ल में वाक़िया ये है कि क़ुरैश किसी तरह इस्लाम नहीं लाते थे। इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनके हक़ में बद् दुआ की कि ऐ अल्लाह! इन पर यूसुफ़ (अलैहि.) के ज़माने जैसा

क़हत भेजकर मेरी मदद कर फिर ऐसा क़हत पड़ा कि लोग तबाह हो गये और मुरदार और हड्डियाँ खाने लगे कोई अगर फ़िज़ा में देखता (तो फ़ाक़ा की वजह से) उसे धुएँ जैसा नज़र आता। फिर अबू सुफ़यान आए और कहा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आप हमें सिलारहमी का हुक्म देते हैं लेकिन आपकी क़ौम तबाह हो रही है, अल्लाह से दुआ कीजिए (कि उनकी ये मुसीबत दूर हो) इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी। फ़र्तक़िब यौमा तातिस्समाउ बि दुख़ानिम्मुबीन इला क़ौलिही आइदून हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि क़हत का ये अज़ाब तो आँहज़रत (ﷺ) की दुआ के नतीजे में ख़त्म हो गया था लेकिन क्या आख़िरत का अज़ाब भी उनसे मिट जाएगा? चुनाँचे क़हत ख़त्म होने के बाद फिर वो कुफ़्र से बाज न आए, उसकी तरफ़ इशारा यौमा नब्तिशुल्बत्शतल्कुब्रा में है, ये बतश कुफ़्फ़ार पर ग़ज़्व-ए-बद्र के मौक़ा पर नाज़िल हुई थी (कि उनके बड़े-बड़े सरदार क़त्ल कर दिये गये) और लिज़ामा (क़ैद) से इशारा भी मअरका बद्र ही की तरफ़ है अलिफ़ लाम मीम गुलिबतिर् रूम से सयग़्लिबूना तक का वाक़िया गुज़र चुका है (कि रूम वालों ने फ़ारस वालों पर फ़तह पा ली थी) (राजेअ : 1007)

وَالْعِظَامَ، وَيَرَى الرَّجُلُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ، فَجَاءَهُ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، جِئْتَ تَأْمُرُنَا بِصِلَةِ الرَّحِمِ، وَإِنَّ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكُوا، فَادْعُ اللهَ. فَقَرَأَ ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ، - إِلَى قَوْلِهِ - عَائِدُونَ﴾ أَفَيُكْشَفُ عَنْهُمْ عَذَابُ الآخِرَةِ، إِذَا جَاءَ ثُمَّ عَادُوا إِلَى كُفْرِهِمْ. فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى ﴿يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى﴾ يَوْمَ بَدْرٍ ﴿وَلِزَامًا﴾ يَوْمَ بَدْرٍ ﴿الم غُلِبَتِ الرُّومُ - إِلَى - سَيَغْلِبُونَ﴾ وَالرُّومُ قَدْ مَضَى.
[راجع: ١٠٠٧]

तश्रीह : रूमी अहले किताब थे और अहले फ़ारस आतिश परस्त थे जिनकी रूमियों पर फ़तह होने से मुश्रिकीन ने ख़ुशी का इज़्हार करते हुए कहा था कि एक दिन इस तरह से हम भी मुसलमानों पर ग़ल्बा पाएँगे और रूमियों की तरह मुसलमान भी मग़्लूब हो जाएँगे। इस पर अल्लाह पाक ने पेशगोई की कि एक दिन ऐसा ज़रूर आएगा कि रूमी अहले फ़ारस पर फ़तह पाएँगे चुनाँचे ये पेशगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह साबित हुई।

बाब 1 : आयत 'ला तब्दील लिखल्क़िल्लाहि' की तफ़्सीर

١- باب قوله ﴿لاَ تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللهِ﴾ لِدِينِ اللهِ ﴿خَلْقُ الأَوَّلِينَ﴾: دِينُ الأَوَّلِينَ. وَالْفِطْرَةُ، الإِسْلاَمُ

या'नी अल्लाह की बनाई हुई फ़ितरत (ख़ल्कुल्लाह) में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं, ख़ल्कुल्लाह से अल्लाह का दीन मुराद है। आयत इन् हाज़ा इल्ला ख़ल्कुल अव्वलीन में ख़ल्क़ से दीन मुराद है और फ़ितरत से इस्लाम मुराद है।

4775. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमें अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हर पैदा होने वाला बच्चा दीने फ़ितरत पर पैदा होता है लेकिन उसके माँ–बाप उसे यहूदी,

٤٧٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلاَّ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ،

नसरानी या मजूसी बना लेते हैं। उसकी मिषाल ऐसी है जैसी जानवर का बच्चा सहीह सालिम पैदा होता है क्या तुमने उन्हें नाक कान कटा हुआ कोई बच्चा देखा है। उसके बाद आपने इस आयत की तिलावत की, अल्लाह की इस फ़ित्तरत का इत्तिबाअ़ करो जिस पर उसने इंसान को पैदा किया है, अल्लाह की बनाई हुई फ़ित्तरत में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं। यही सीधा दीन है। (राजेअ़: 1358)

فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يُنَصِّرَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ، كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً جَمْعَاءَ، هَلْ تُحِسُّونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ؟ ثُمَّ يَقُولُ: ﴿فِطْرَةَ اللهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا، لاَ تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللهِ، ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ﴾)).
[راجع: ١٣٥٨]

सूरह लुक़्मान की तफ़्सीर

[٣١] سُورَةُ لُقْمَانَ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ये सूरत मक्की है। इसमें तीस आयात और तीन रुकूअ़ हैं।

बाब 1 : आयत 'ला तुश्रिक बिल्लाहि' की तफ़्सीर

या'नी अल्लाह का शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

١- باب قوله ﴿لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

4776. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नही की, नाज़िल हुई तो अस्हाबे रसूल (ﷺ) बहुत घबराए और कहने लगे कि हम में कौन ऐसा होगा जिसने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नहीं की होगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि आयत में ज़ुल्म से ये मुराद नहीं है। तुमने लुक़्मान (अ़लैहि.) की वो नसीहत नहीं सुनी जो उन्होंने अपने बेटे को की थी कि, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है। (राजेअ़: 32)

٤٧٧٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَقَالُوا: أَيُّنَا لَمْ يَلْبِسْ إِيمَانَهُ بِظُلْمٍ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((إِنَّهُ لَيْسَ بِذَاكَ، أَلاَ تَسْمَعُ إِلَى قَوْلِ لُقْمَانَ لاِبْنِهِ ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾.
[راجع: ٣٢]

बाब 2 : आयत 'इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअ़ति' की तफ़्सीर

या'नी क़यामत (के वाक़ेअ़ होने की तारीख़) की ख़बर सिर्फ़ अल्लाह पाक ही को है।

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾

4777. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे जरीर ने, उनसे अबू हृय्यान ने, उनसे अबू ज़ुरआ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह

٤٧٧٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ عَنْ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ: كَانَ يَوْمًا بَارِزًا لِلنَّاسِ، إِذْ أَتَاهُ رَجُلٌ يَمْشِي، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ مَا الإِيمَانُ؟ قَالَ: ((الإِيمَانُ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلاَئِكَتِهِ، وَرُسُلِهِ، وَلِقَائِهِ، وَتُؤْمِنَ بِالْبَعْثِ الآخِرِ)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا الإِسْلاَمُ؟ قَالَ: ((الإِسْلاَمُ أَنْ تَعْبُدَ اللهَ، وَلاَ تُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا، وَتُقِيمَ الصَّلاَةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ الْمَفْرُوضَةَ، وَتَصُومَ رَمَضَانَ)). قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا الإِحْسَانُ؟ قَالَ: ((الإِحْسَانُ أَنْ تَعْبُدَ اللهَ، كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ)) قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ، مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: ((مَا الْمَسْؤُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ، وَلَكِنْ سَأُحَدِّثُكَ عَنْ أَشْرَاطِهَا: إِذَا وَلَدَتِ الْمَرْأَةُ رَبَّتَهَا فَذَاكَ مِنْ أَشْرَاطِهَا، وَإِذَا كَانَ الْحُفَاةُ الْعُرَاةُ رُؤُوسَ النَّاسِ فَذَاكَ مِنْ أَشْرَاطِهَا، فِي خَمْسٍ لاَ يَعْلَمُهُنَّ إِلاَّ اللهُ ﴿إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ: وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ، وَيَعْلَمُ مَا فِي الأَرْحَامِ﴾ ثُمَّ انْصَرَفَ الرَّجُلُ فَقَالَ: ((رُدُّوا عَلَيَّ)). فَأَخَذُوا لِيَرُدُّوا فَلَمْ يَرَوْا شَيْئًا، فَقَالَ: ((هَذَا جِبْرِيلُ جَاءَ لِيُعَلِّمَ النَّاسَ دِينَهُمْ)).

[راجع: ٥٠]

(रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक दिन लोगों के साथ तशरीफ़ रखते थे कि एक नया आदमी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ईमान क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ईमान ये है कि तुम अल्लाह और उसके फ़रिश्तों, रसूलों और उसकी मुलाक़ात पर ईमान लाओ और क़यामत के दिन पर ईमान लाओ। उन्होंने पूछा, या रसूलल्लाह! इस्लाम क्या है? आहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इस्लाम ये है कि तन्हा अल्लाह की इबादत करो और किसी को उसका शरीक न ठहराओ, नमाज़ क़ायम करो और फ़र्ज़ ज़कात अदा करो और रमज़ान के रोज़े रखो। उन्होंने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! एहसान क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि एहसान ये है कि तुम अल्लाह की इस तरह इबादत करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो वरना ये अक़ीदा लाज़िमन रखो कि अगर तुम उसे नहीं देखते तो वो तुम्हें ज़रूर देख रहा है। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! क़यामत कब क़ायम होगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिससे पूछा जा रहा है ख़ुद वो साइल से ज़्यादा उसके वाक़ेअ होने के बारे में नहीं जानता। अल्बत्ता मैं तुम्हें उसकी चंद निशानियाँ बताता हूँ। जब औरत ऐसी औलाद जने जो उसके आक़ा बन जाएँ तो ये क़यामत की निशानी है, जब नंगे पैर, नंगे जिस्म वाले लोग लोगों पर हाकिम हो जाएँ तो ये क़यामत की निशानी है, क़यामत भी उन पाँच चीज़ों में से है जिसे अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता, बेशक अल्लाह ही के पास क़यामत का इल्म है। वही बारिश बरसाता है और वही जानता है कि माँ के रहम में क्या है (लड़का या लड़की) फिर वो साहब उठकर चले गये तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें मेरे पास वापस बुला लाओ। लोगों ने उन्हें तलाश किया ताकि आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में दोबारा लाए लेकिन उनका कहीं पता नहीं था। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये साहब जिब्रईल (अलैहि.) थे (इंसानी सूरत में) लोगों को दीन की बातें सिखाने आए थे। (राजेअ : 50)

तश्रीह : ईमान और इस्लाम तो सब मोमिनीन को शामिल है और एहसान विलायत का दर्जा है फिर एहसान का आला दर्जा ये है कि आदमी दुनिया के तमाम ख़्यालात को दूर करके अल्लाह की याद में ऐसा ग़र्क़ हो जाए जैसे अल्लाह का मुशाहिदा कर रहा है और अदना दर्जा ये है कि अल्लाह हमको देख रहा है। हर वक़्त ये समझकर गुनाह और बुरी बातों से बचा रहे। जब ये हासिल हो जाए तो वो आदमी यक़ीनन वलीउल्लाह है। अब ये ज़रूरी नहीं कि उसे कश्फ़ व करामत

ह़ासिल हो कश्फ़ व करामत का ज़िक्र करना नादानी है। **अन तलिदल्अमतु रब्बतहा** का मत़लब ये कि लौण्डियों की औलाद बहुत पैदा हो तो माँ लौण्डी और बेटा गोया उसका मालिक हुआ। आख़िर ह़दीष़ में ज़माना ह़ाज़िरा पर इशारा है कि जंगलों के रहने वाले बकरियाँ ऊँट चराने वाले लोग शहरों का रुख़ करेंगे और बड़े बड़े ओहदे पाकर बड़े बड़े मकानात बनाएँगे और व्रो आजकल हो रहा है जैसा कि मुशाहिदा है।

4778. हमसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़मर बिन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ग़ैब की कुँजियाँ पाँच हैं। उसके बाद आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, बेशक अल्लाह ही को क़यामत का इल्म है और वही बारिश नाज़िल करता है और वही जानता है कि मादा के रह़म में नर है या मादा और कोई नफ़्स नहीं जानता कि वो कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वो कहाँ मरेगा। (राजेअ़: 1039)

٤٧٧٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ : أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ، ثُمَّ قَرَأَ ﴿إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾)). [راجع: ١٠٣٩]

इन पाँच बातों को ख़ज़ान-ए-ग़ैब की कुँजियाँ कहा गया है जिसका इल्म ख़ास़ अल्लाह पाक ही को ह़ासिल है जो कोई उनमें से किसी के जानने का दा'वा करे वो झूठा है और जो किसी ग़ैरुल्लाह के लिये ऐसा अ़क़ीदा रखे वो इश्राक फ़िल् इल्म के शिर्क का मुर्तकिब है।

सूरह तंज़ीलुस्सज्दा की तफ़्सीर

[٣٢] تَنْزِيلُ السَّجْدَةِ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

ये सूरत भी मक्की है। इसमें तीस आयात और तीन रुकूअ़ हैं।

मुजाहिद ने कहा कि मुहीन का मा'नी नातवाँ कमज़ोर (या ह़क़ीर) मुराद मर्द का नुत्फ़ा है। ज़ल्लल्ना के मा'नी हम तबाह हुए। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा जुरूज़ा वो ज़मीन जहाँ बिलकुल कम बारिश होती है जिससे कुछ फ़ायदा नहीं होता (या सख़्त और ख़ुश्क ज़मीन) नहदि के मा'नी हम बयान करते हैं।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿مَهِينٍ﴾: ضَعِيفٍ، نُطْفَةُ الرَّجُلِ. ﴿ضَلَلْنَا﴾ هَلَكْنَا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿الْجُرُزُ﴾ الَّتِي لاَ تُمْطَرُ إِلاَّ مَطَرًا لاَ يُغْنِي عَنْهَا شَيْئًا. ﴿نَهْدِ﴾ نُبَيِّنُ.

बाब 1 : आयत 'फ़ला तअ़लमु नफ़्सुम्मा उख़्फ़िय' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلِهِ ﴿فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ﴾

किसी मोमिन को इल्म नहीं जो जो सामान (जन्नत में) उनके लिये पोशीदा करके रखे गये हैं जो उनकी आँखों की ठण्डक बनेंगे।

4779. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि मैंने अपने स़ालेह़

٤٧٧٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. قَالَ : ((قَالَ اللهُ

تَبَارَكَ وَتَعَالَى: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ، وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ)). قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : اقْرَأُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ﴾. قَالَ عَلِيٌّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ اللهُ مِثْلَهُ قِيلَ لِسُفْيَانَ رِوَايَةً؟ قَالَ : فَأَيُّ شَيْءٍ؟ قَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي صَالِحٍ قَرَأَ أَبُو هُرَيْرَةَ قُرَّاتِ أَعْيُنٍ.

[راجع: ٣٢٤٤]

और नेक बन्दों के लिये वो चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन्हें किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी के गुमान व ख़्याल में वो आई हैं। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर चाहो तो इस आयत को पढ़ लो कि, सो किसी को नहीं मा'लूम जो जो सामान आँखों की ठण्डक का उनके लिये जन्नत में छुपाकर रखा गया है। अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि अल्लाह तआला ने फ़र्माया है, पहली हदीष़ की तरह। सुफ़यान से पूछा गया कि ये आप नबी करीम (ﷺ) की हदीष़ रिवायत कर रहे हैं या अपने इज्तिहाद से फ़र्मा रहे हैं? उन्होंने फ़र्माया कि (अगर ये आँहज़रत ﷺ की हदीष़ नहीं है) तो फिर और क्या है? अबू मुआविया ने बयान किया, उनसे आ'मश ने और उनसे स़ालेह ने कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने (आयत मज़्कूरा में) क़िरात (सैग़ा जमा के साथ) पढ़ा है। (राजेअ: 3244)

٤٧٨٠- حدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنِ الأَعْمَشِ. حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ((أَعْدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ مَا لاَ عَيْنٌ رَأَتْ، وَلاَ أُذُنٌ سَمِعَتْ، وَلاَ خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ، ذُخْرًا بَلْهَ مَا أُطْلِعْتُمْ عَلَيْهِ))، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿فَلاَ تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ، جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾)).

[راجع: ٣٢٤٤]

4780. मुझसे इस्हाक़ बिन नस़र ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, कहा हमसे अबू स़ालेह ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला इर्शाद फ़र्माता है कि मैंने अपने नेकोकार बन्दों के लिये वो चीज़ें तैयार रखी हैं जिन्हें किसी आँख ने न देखा और किसी कान ने न सुना और न किसी इंसान के दिल में उनका कभी गुमान व ख़्याल पैदा हुआ। अल्लाह की उन नेअमतों से वाक़फ़ियत और आगाही तो अलग रही (उनका किसी को गुमान व ख़्याल भी पैदा नहीं हुआ) फिर आँहज़रत (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की कि, सो किसी नफ़्से मोमिन को मा'लूम नहीं जो जो सामान आँखों की ठण्डक का (जन्नत में) उनके लिये छुपाकर रखा गया है, ये बदला है उनके नेक अमलों का जो वो दुनिया में करते रहे। (राजेअ: 3244)

सूरह अहज़ाब की तफ़्सीर

[٣٣] سورة ﴿الأَحْزَابِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मदनी है। इसमें 73 आयात और नौ रुकूअ हैं।

मुजाहिद ने कहा कि, स़यासीहिम बमा'नी क़ुसूरहुम है जिससे उनके क़िले महल्ल गढ़ियाँ मुराद हैं।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿صَيَاصِيهِمْ﴾ قُصُورِهِمْ.

बाब 2 : आयत 'अन् नबी औला बिल मोमिनीना मिन अन्फ़ुसिहिम' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله ﴿النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ﴾.

रसूलुल्लाह (ﷺ) मोमिनीन के साथ ख़ुद उनके नफ़्स से भी ज़्यादा ता'ल्लुक़ रखते हैं।

4781. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़र ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने, कहा मुझसे मेरे वालिद ने, उनसे हिलाल बिन अ़ली ने और उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी अ़म्र ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कोई मोमिन ऐसा नहीं कि मैं ख़ुद उसके नफ़्स से भी ज़्यादा उससे दुनिया और आख़िरत में ता'ल्लुक़ न रखता हूँ, अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो कि नबी मोमिनीन के साथ ख़ुद उनके नफ़्स से भी ज़्यादा ता'ल्लुक़ रखता है। पस जो मोमिन भी (मरने के बाद) तर्का माल व अस्बाब छोड़े और कोई उनका वली वारिष़ नहीं है, उसके अ़ज़ीज़ व अक़ारिब जो भी हों उसके माल के वारिष़ होंगे, लेकिन अगर किसी मोमिन ने कोई क़र्ज़ छोड़ा है या औलद छोड़ी है तो वो मेरे पास आ जाएँ उनका ज़िम्मेदार मैं हूँ। (राजेअ़ : 2298)

٤٧٨١- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا مِنْ مُؤْمِنٍ إِلاَّ وَأَنَا أَوْلَى النَّاسِ بِهِ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ. اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ﴾ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ تَرَكَ مَالاً فَلْيَرِثْهُ عَصَبَتُهُ مَنْ كَانُوا، فَإِنْ تَرَكَ دَيْنًا أَوْ ضِيَاعًا فَلْيَأْتِنِي وَأَنَا مَوْلاَهُ)).

[راجع: ٢٢٩٨]

उनका क़र्ज़ अदा करना मेरे ज़िम्मे होगा और उनकी औलाद की परवरिश मैं करूँगा। सुब्हानल्लाह! इस शफ़क़त और मेहरबानी का क्या कहना। (ﷺ)

बाब 2 : आयत 'उदऊ़हुम लिआबाइहिम' की तफ़्सीर

٢- باب قوله ﴿ادْعُوهُمْ لآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ﴾

या'नी उन (आज़ाद शुदा ग़ुलामों को) उनके ह़क़ीक़ी बापों की त़रफ़ मंसूब किया करो।

तश्रीह : ज़ैद बिन ह़ारिष़ा (रज़ि.) रसूले करीम (ﷺ) के ले पालक बेटे थे, लोग उनको ज़ैद बिन मुह़म्मद (ﷺ) कहने लगे। इस पर ये आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि ले पालक लड़के अपने ह़क़ीक़ी बाप ही की औलाद हैं वो मुँह से बेटा बनाने वालों की त़रफ़ मंसूब नहीं किये जा सकते न उनके वारिष़ हो सकते हैं। ऐसे लड़कों लड़कियों के लिये इस्लाम का शरई क़ानून यही है उसमें रद्दोबदल मुम्किन नहीं है।

4782. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मुझसे सालिम ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने

٤٧٨٢- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُخْتَارِ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ قَالَ : حَدَّثَنِي سَالِمٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ

مَوْلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، مَا كُنَّا نَدْعُوهُ إِلاَّ زَيْدَ بْنَ مُحَمَّدٍ، حَتَّى نَزَلَ الْقُرْآنُ ﴿ادْعُوهُمْ لآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ﴾.

बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के आज़ाद किये हुए गुलाम ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) को हम हमेशा ज़ैद बिन मुहम्मद कहकर पुकारा करते थे, यहाँ तक कि क़ुर्आने करीम में आयत नाज़िल हुई कि उन्हें उनके बापों की तरफ़ मंसूब करो कि यही अल्लाह के नज़दीक सच्ची और ठीक बात है।

इस्लाम के क़ानून में ले पालक लड़के लड़की का कोई वज़न नहीं है उसको औलादे हक़ीक़ी जैसे हुक़ूक़ नहीं मिलेंगे।

٣- باب قوله ﴿فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلاً﴾

बाब 3 : आयत 'फमिन्हुम मन कज़ा नहबहू' की तफ़्सीर या'नी,

﴿فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَى نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلاً﴾ نَحْبَهُ : عَهْدَهُ. أَقْطَارِهَا : جَوَانِبُهَا. الْفِتْنَةَ لآتَوْهَا : لأَعْطَوْهَا.

सो उनमें कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपनी नज़्र पूरी कर चुके और कुछ उनमें से वक़्त आने का इंतिज़ार कर रहे हैं और उन्होंने अपने अहद में ज़रा फ़र्क़ नहीं आने दिया। नह्बहु के मा'नी अपना अहद और इक़रार। अक़्तारुहा के मा'नी किनारों से। ला तवहा के मा'नी क़ुबूल कर लें शरीक हो जाएँ।

٤٧٨٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، قَالَ : حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نُرَى هَذِهِ الآيَةَ نَزَلَتْ فِي أَنَسِ بْنِ النَّضْرِ ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ﴾.

[راجع: ٢٨٠٥]

4783. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे षुमामा ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हमारे ख़्याल में ये आयत हज़रत अनस बिन नज़्र (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी कि, अहले ईमान में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो अ़हद किया था उसमें वो सच्चे उतरे। (राजेअ : 2805)

जो कहा था वो करके दिखा दिया कि मैदाने जिहाद में बसदे शौक़ दर्जा-ए-शहादत हासिल किया। हज़रत अनस बिन नज़्र (रज़ि.) और कितने ही मुजाहिदीन इसी शान वाले गुज़रे हैं। (रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु)

٤٧٨٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ: لَمَّا نَسَخْنَا الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ، فَقَدْتُ آيَةً مِنْ سُورَةِ الأَحْزَابِ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقْرَأُهَا لَمْ أَجِدْهَا مَعَ أَحَدٍ، إِلاَّ مَعَ خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ الَّذِي جَعَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ شَهَادَتَهُ شَهَادَةَ

4784. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझको ख़ारजा बिन ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे हज़रत ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम क़ुर्आन मजीद को मुस्हफ़ की सूरत में जमा कर रहे थे तो मुझे सूरत अल अहज़ाब की एक आयत (कहीं लिखी हुई) नहीं मिल रही थी। मैं वो आयत रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुन चुका था। आख़िर वो मुझे ख़ुज़ैमा अंसारी (रज़ि.) के पास मिली जिनकी शहादत को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो मोमिन मर्दों की शहादत के बराबर क़रार दिया था। वो आयत ये थी। अहले ईमान में कुछ लोग ऐसे

भी हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो अ़हद किया था उसमें वो सच्चे उतरे। (राजेअ़ : 2807)

बाब 4 : आयत 'या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल लिअज़्वाजिक' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ नबी (ﷺ)! आप अपनी बीवियों से फ़र्मा दीजिए कि अगर तुम दुनियावी ज़िंदगी और इसकी ज़ैबो ज़ीनत का इरादा रखती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ दुनियावी अस्बाब दे दिलाकर ख़ूबी के साथ रुख़्सत कर दूँ। मअ़मर ने कहा कि, तबर्रूजु ये है कि औरत अपने हुस्न का मर्द के सामने इज़्हार करे। सुन्नतुल्लाह से मुराद वो तरीक़ा जो अल्लाह ने अपने लिये मुक़र्रर कर रखा है।

4785. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को हुक्म दिया कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी अज़्वाज को (आपके सामने रहने या आपसे अलग करने का) इख़्तियार दें तो आप (ﷺ) ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास भी तशरीफ़ ले गये और फ़र्माया कि मैं तुमसे एक मामला के बारे में कहने आया हूँ ज़रूरी नहीं कि तुम उसमें जल्दबाज़ी से काम लो, अपने वालिदैन से भी मश्वरा कर सकती हो। आँह़ज़रत (ﷺ) तो जानते ही थे कि मेरे वालिद कभी आप (ﷺ) से जुदाई का मश्वरा नहीं दे सकते। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है कि, ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दीजिए, आख़िर आयत तक। मैंने अ़र्ज़ किया, लेकिन किस चीज़ के लिये मुझे अपने वालिदैन से मश्वरा की ज़रूरत है, खुली हुई बात है कि मैं अल्लाह, उसके रसूल और आ़लमे आख़िरत को चाहती हूँ। (दीगर मक़ाम : 4786)

बाब 5 : आयत 'व इन कुन्तुन्ना तुरिदंनल्लाह व रसूलहू' की तफ़्सीर

या'नीं ऐ नबी की बीवियों ! अगर तुम अल्लाह को, उसके रसूल को और आ़लमे आख़िरत को चाहती हो तो अल्लाह ने तुममें से नेक अ़मल करने वालियों के लिये बहुत बड़ा ष़वाब

رَجُلَيْنِ ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ﴾. [راجع: ٢٨٠٧]

٤- باب قوله

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلاً﴾ وَقَالَ مَعْمَرٌ : التَّبَرُّجُ أَنْ تُخْرِجَ مَحَاسِنَهَا. سُنَّةَ اللهِ اسْتَنَّهَا جَعَلَهَا.

٤٧٨٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ جَاءَهَا حِينَ أَمَرَ اللهُ أَنْ يُخَيِّرَ أَزْوَاجَهُ، فَبَدَأَ بِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((إِنِّي ذَاكِرٌ لَكِ أَمْرًا، فَلاَ عَلَيْكِ أَنْ تَسْتَعْجِلِي حَتَّى تَسْتَأْمِرِي أَبَوَيْكِ))، وَقَدْ عَلِمَ أَنَّ أَبَوَيَّ لَمْ يَكُونَا يَأْمُرَانِي بِفِرَاقِهِ. قَالَتْ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ قَالَ: ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لأَزْوَاجِكَ﴾)) إِلَى تَمَامِ الآيَتَيْنِ فَقُلْتُ لَهُ : فَفِي أَيِّ هَذَا أَسْتَأْمِرُ أَبَوَيَّ؟ فَإِنِّي أُرِيدُ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الآخِرَةَ. [طرفه في: ٤٧٨٦].

٥- باب قَوْلُهُ :

﴿وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الآخِرَةَ فَإِنَّ اللهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ

أَجْرًا عَظِيمًا﴾ وَقَالَ قَتَادَةُ: ﴿وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَى فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللهِ وَالْحِكْمَةِ﴾ الْقُرْآنُ وَالسُّنَّةُ.

तैयार कर रखा है। क़तादा ने कहा कि आयत, और तुम आयाते अल्लाह और उस ह़िक्मत को याद रखो जो तुम्हारे घरों में पढ़कर सुनाए जाते रहते हैं। (आयात से मुराद) क़ुर्आन मजीद और (ह़िक्मत से मुराद) सुन्नते नबवी है।

तश्रीह : अल्लाह ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात को हुक्म फ़र्माया कि क़ुर्आन व ह़दीष़ का मुत़ालआ घरों में ज़रूर जारी रखें और आँह़ज़रत (ﷺ) से इल्मे दीन ह़ासिल करना अपने लिये ज़रूरी समझें। मा'लूम हुआ कि औरतों के लिये भी घरों में दीनी ता'लीम का चर्चा रखना ज़रूरी है। अगर हर मुस्लिम घरानों में ये सिलसिला जारी रहे तो उम्मत की सुधार के लिये इससे बहुत दूर रस नताइज पैदा हो सकते हैं। दीनी इस्लामी ता'लीम आज के ह़ालात में उम्मत के लिये बहुत बड़ी अहमियत रखती है।

٤٧٨٦- وقال اللَّيث : حدثني يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: لَمَّا أُمِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِتَخْيِيرِ أَزْوَاجِهِ بَدَأَ بِي فَقَالَ: ((إِنِّي ذَاكِرٌ لَكِ أَمْرًا، فَلاَ عَلَيْكِ أَنْ لاَ تَعْجَلِي حَتَّى تَسْتَأْمِرِي أَبَوَيْكِ)). قَالَتْ : وَقَدْ عَلِمَ أَنَّ أَبَوَيَّ لَمْ يَكُونَا يَأْمُرَانِي بِفِرَاقِهِ. قَالَتْ: ثُمَّ قَالَ : ((إِنَّ اللهَ جَلَّ ثَنَاؤُهُ قَالَ: ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لأَزْوَاجِكَ، إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا - إِلَى- أَجْرًا عَظِيمًا﴾)) قَالَتْ: فَقُلْتُ: فَفِي أَيِّ هَذَا أَسْتَأْمِرُ أَبَوَيَّ فَإِنِّي أُرِيدُ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الآخِرَةَ. قَالَتْ: ثُمَّ فَعَلَ أَزْوَاجُ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَ مَا فَعَلْتُ. تَابَعَهُ مُوسَى بْنُ أَعْيَنَ عَنْ مَعْمَرٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ وَأَبُو سُفْيَانَ الْمَعْمَرِيُّ عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ. [راجع: ٤٧٨٥]

4786. और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को हुक्म हुआ कि अपनी अज़्वाज को इख़्तियार दें तो आप मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मैं तुमसे एक मामले के बारे में कहने आया हूँ, ज़रूरी नहीं कि तुम जल्दी करो, अपने वालिदैन से भी मश्वरा ले सकती हो। उन्होंने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) को तो मा'लूम ही था कि मेरे वालिदैन आपसे जुदाई का कभी मश्वरा नहीं दे सकते। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने (वो आयत जिसमें ये हुक्म था) पढ़ी कि अल्लाह पाक का इर्शाद है। ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दीजिए कि अगर तुम दुनयवी ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत को चाहती हो, से अज्रन् अज़ीमा तक। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया लेकिन अपने वालिदैन से मश्वरे की किस बात के लिये ज़रूरत है, ज़ाहिर है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल और आ़लमे आख़िरत को चाहती हूँ। बयान किया कि फिर दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने भी वही कहा जो मैं कह चुकी थी। इसकी मुताबअ़त मूसा बिन अअ़यन ने मअ़मर से की है कि उनसे ज़ुहरी ने बयान किया कि उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और अबू सुफ़यान मअ़मरी ने मअ़मर से बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 4785)

बाब 6 : आयत 'व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सिक मल्लाहू मुब्दीहि' की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب قَوْلُهُ :
﴿وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ﴾.

ऐ नबी! आप अपने दिल में वो बात छुपाते रहे जिसको अल्लाह ज़ाहिर करने वाला ही था और आप लोगों से डर रहे थे, हालाँकि अल्लाह ही इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि उससे डरा जाए।

٤٧٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ مَنْصُورٍ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ ﴿وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللهُ مُبْدِيهِ﴾ نَزَلَتْ فِي شَأْنِ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ وَزَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ.
[طرفه في : ٧٤٢٠].

4787. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़ल्ला बिन मंसूर ने बयान किया, उसे हम्माद बिन ज़ैद ने कहा हमसे षाबित ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत। और आप अपने दिल में वो छुपाते रहे जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था। ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) और ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) के मामले में नाज़िल हुई थी। (दीगर मक़ाम : 7420)

तश्रीह : इसका क़िस्सा तफ़्सीरों में पूरा मज़्कूर है। कहते हैं आँहज़रत (ﷺ) ने इस शर्त के साथ कि अगर ज़ैद अपनी ख़ुशी से ज़ैनब को तलाक़ दे और ज़ैनब की भी ख़ुशी हो तो आप उनको अपने हरम में दाख़िल कर लेंगे, मुल्की रिवाज के ख़िलाफ़ होने की वजह से आप उस बात को दिल में छुपाते रहे। आयत में उसी तरफ़ इशारा है। हज़रत आइशा (रज़ि.) का ये बयान बिलकुल बजा है कि अगर आँहज़रत (ﷺ) क़ुर्आन मजीद की किसी आयत को छुपाना चाहते तो उस आयत को छुपा लेते मगर ज्यों ही आप पर नाज़िल हुई आपने पूरे तौर पर उम्मत पर पहुँचा दिया (ﷺ)। बाद में आपने ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह करके अ़हदे जाहिलियत की एक ग़लत रस्म को तोड़ दिया। अ़हदे जाहिलियत में मुँह बोले बेटे को हक़ीक़ी बेटा तसव्वुर करते, उसकी औरत से निकाह नाजाइज़ था। आपने दोनों रस्मों को मिटा दिया।

बाब 7 : आयत 'तुर्जिअ मन तशाउ मिन्हुन्न' की तफ़्सीर

٧- باب قَوْلِهِ :
﴿تُرْجِئُ مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكَ﴾ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: تُرْجِيءُ : تُؤَخِّرُ. أَرْجِئْهُ أَخِّرْهُ.

या'नी ऐ नबी! उन (अज़्वाजे मुत़हहरात) में से आप जिसको चाहें अपने से दूर रखें और जिसको चाहें अपने नज़दीक रखें और जिनको आपने अलग कर रखा हो उनमें से किसी को फिर तलब कर लें जब भी आप पर कोई गुनाह नहीं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा तुजिअ का मा'नी पीछे डाल दे। इसी से सूरह आराफ़ का ये लफ़्ज़ है अजिअहू या'नी उसको ढील में रखो।

٤٧٨٨- حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ هِشَامٌ: حَدَّثَنَا عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَغَارُ

4788. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने अपने वालिद से सुनकर बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जो औरतें अपने नफ़्स को रसूले

करीम (ﷺ) के लिये हिबा करने आती थीं मुझे उन पर बड़ी ग़ैरत आती थी। मैं कहती कि क्या औरत ख़ुद ही अपने को किसी मर्द के लिये पेश कर सकती है? फिर जब अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि, उनमें से जिसको चाहें अपने से दूर रखें और जिसको चाहें अपने नज़दीक रखें और जिनको आपने अलग कर रखा था उसमें से किसी को फिर तलब कर लें जब भी आप पर कोई गुनाह नहीं है। तो मैंने कहा कि मैं तो समझती हूँ कि आपका रब आपकी मुराद बिला ताख़ीर पूरी कर देना चाहता है। (दीगर मक़ाम : 5113)

عَلَى اللاَّتِي وَهَبْنَ أَنْفُسَهُنَّ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَقُولُ: أَتَهِبُ الْمَرْأَةُ نَفْسَهَا؟ فَلَمَّا أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ، وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكَ﴾ قُلْتُ: مَا أَرَى رَبَّكَ إِلاَّ يُسَارِعُ فِي هَوَاكَ.

[طرفه في : ٥١١٣].

4789. हमसे हब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको आ़सिम अहवल ने ख़बर दी, उन्हें मुआ़ज़ ने और उन्हें हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इस आयत के नाज़िल होने के बाद भी कि, उनमे से आप जिसको चाहें अपने से दूर रखें और जिनको आपने अलग कर रखा था उनमे से किसी को फिर तलब कर लें जब भी आप पर कोई गुनाह नहीं। अगर (अज़्वाजे मुतह्हरात) में से किसी की बारी में किसी दूसरी बीवी के पास जाना चाहते तो जिनकी बारी होती उनसे इजाज़त लेते थे (मुआ़ज़ा ने बयान किया कि) मैंने उस पर आ़इशा (रज़ि.) से पूछा कि ऐसी सूरत में आप आँहज़रत (ﷺ) से क्या कहती थीं? उन्होंने फ़र्माया कि मैं तो ये अ़र्ज़ कर देती थी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर ये इजाज़त आप मुझसे ले रहे हैं तो मैं तो अपनी बारी का किसी दूसरे पर ईषार नहीं कर सकती। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद ने की, उन्होंने आ़सिम से सुना।

٤٧٨٩- حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ عَنْ مُعَاذَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَسْتَأْذِنُ فِي يَوْمِ الْمَرْأَةِ مِنَّا بَعْدَ أَنْ أُنْزِلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ، وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكَ﴾ فَقُلْتُ لَهَا : مَا كُنْتِ تَقُولِينَ؟ قَالَتْ كُنْتُ أَقُولُ لَهُ : إِنْ كَانَ ذَاكَ إِلَيَّ فَإِنِّي لاَ أُرِيدُ يَا رَسُولَ اللهِ أَنْ أُوثِرَ عَلَيْكَ أَحَدًا. تَابَعَهُ عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ سَمِعَ عَاصِمًا.

तश्रीह : इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि जिन औरतों ने अपने आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये हिबा कर दिया था उनमें से किसी को भी आपने अपने साथ नहीं रखा अगरचे अल्लाह तआ़ला ने आपके लिये उसे मुबाह क़रार दिया था लेकिन बहरहाल ये आपकी मंशा पर मौक़ूफ़ था। आँहज़रत (ﷺ) को ये मख़्सूस इजाज़त थी। क़स्तलानी (रह़) ने कहा गो अल्लाह पाक ने इस आयत में आपको इजाज़त दी थी कि आप पर बारी की पाबन्दी भी ज़रूरी नहीं है लेकिन आपने बारी को क़ायम रखा और किसी बीवी की बारी में आप दूसरी बीवी के घर नहीं रहे। अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद की रिवायत को इब्ने मर्दवैह ने वस़्ल किया है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत को त़बरी ने नक़ल किया है।

बाब 8 : आयत 'ला तदखुलू बुयूतन्नबिय्यि (ﷺ)' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ ईमानवालों! नबी के घरों में मत जाया करो। सिवाय उस

٨- باب قَوْلُهُ :

﴿لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ

वक़्त के जब तुम्हें खाने के लिये (आने की) इजाज़त दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुंतज़िर न बैठे रहो, अल्बत्ता जब तुमको बुलाया जाए तब जाया करो। फिर जब खाना खा चुको तो उठकर चले जाया करो और वहाँ बातों में जी लगाकर मत बैठे रहा करो। इस बात से नबी को तकलीफ़ होती है सो वो तुम्हारा लिहाज़ करते हैं और अल्लाह साफ़ बात कहने से (किसी का) लिहाज़ नहीं करता और जब तुम उन (रसूल की अज़्वाज) से कोई चीज़ मांगो तो उनसे पर्दा के बाहर से मांगा करो, ये तुम्हारे और उनके दिलों के पाक रहने का उम्दह ज़रिया है और तुम्हें जाइज़ नहीं कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) को (किसी तरह भी) तकलीफ़ पहुँचाओ और न ये कि आपके बाद आपकी बीवियों से कभी भी निकाह करो। बेशक ये अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ी बात है। इनाह का मा'नी खाना तैयार होना पकना ये अना या'नी इनाह से निकला है। लअल्लस्साअतु तकूना क़रीबा क़यास तो ये था कि क़रीबतु कहते मगर क़रीब का लफ़्ज़ जब मुअन्नष की सिफ़त हो तो उसे क़रीबतु कहते हैं और जब वो ज़र्फ़ या इस्म होता है और सिफ़त मुराद नहीं होती तो हाय तानीष निकाल डालते हैं। क़रीब कहते हैं। ऐसी हालत में वाहिद, तष्निया, जमा मुज़क्कर और मुअन्नष सब बराबर है।

لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ، وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا، وَلاَ مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ وَاللهُ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ، وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ، ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ، وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللهِ وَلاَ أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ، أَبَدًا إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللهِ عَظِيمًا﴾ يُقَالُ إِنَاهُ : إِدْرَاكُهُ أَنَى يَأْنِي أَنَاةً. ﴿لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا﴾ إِذَا وَصَفْتَ صِفَةَ الْمُؤَنَّثِ قُلْتَ قَرِيبَةً، وَإِذَا جَعَلْتَهُ ظَرْفًا وَبَدَلاً وَلَمْ تُرِدِ الصِّفَةَ نَزَعْتَ الْهَاءَ مِنَ الْمُؤَنَّثِ، وَكَذَلِكَ لَفْظُهَا فِي الْوَاحِدِ وَالاِثْنَيْنِ وَالْجَمِيعِ لِلذَّكَرِ وَالأُنْثَى.

तश्रीह : ये अबू उबैदह का क़ौल है जिसे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने इख़्तियार किया है। कुछ ने कहा क़रीबन एक महज़ूफ़ मौसूफ़ की सिफ़त है या'नी शैअन क़रीबन कुछ ने कहा इबारत की तक़दीर यूँ है। **लअल्ल क़ियामस्साअति तकूनु क़रीबन** की तानीष में मुज़ाफ़ इलैहि की मुअन्नष होने की और क़रीबन की तज़्कीर में मुज़ाफ़ के मुज़क्कर होने की रिआयत की गई है। वल्लाहु आलम।

4790. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उनसे हुमैद तवील ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके पास अच्छे बुरे हर तरह के लोग आते हैं, काश! आप अज़्वाजे मुत्तह्हरात को पर्दे का हुक्म दे दें। उसके बाद अल्लाह ने पर्दे का हुक्म उतारा। (राजेअ : 402)

٤٧٩٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ، قَالَ : قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ يَدْخُلُ عَلَيْكَ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ، فَلَوْ أَمَرْتَ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِالْحِجَابِ. فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ الْحِجَابِ.

[راجع: ٤٠٢]

4791. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह रक़ाशी ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया,

٤٧٩١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الرَّقَاشِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ

कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया हमसे अबू मिज्लज़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) से निकाह़ किया तो क़ौम को आपने दा'वते वलीमा दी, खाना खाने के बाद लोग (घर के अंदर ही) बैठे (देर तक) बातें करते रहे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐसा किया गोया आप उठना चाहते हैं (ताकि लोग समझ जाएँ और उठ जाएँ) लेकिन कोई भी नहीं उठा, जब आपने देखा कि कोई नहीं उठता तो आप खड़े हो गये। जब आप खड़े हुए तो दूसरे लोग भी खड़े हो गये, लेकिन तीन आदमी अब भी बैठे रह गये। आँह़ज़रत (ﷺ) जब बाहर से अंदर जाने के लिये आए तो देखा कि कुछ लोग अब भी बैठे हुए हैं। उसके बाद वो लोग भी उठ गये तो मैं ने आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर ख़बर दी कि वो लोग भी चले गये हैं तो आप अंदर तशरीफ़ लाए। मैंने भी चाहा कि अंदर जाऊँ, लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने और मेरे बीच में दरवाज़ा का पर्दा गिरा लिया, उसके बाद आयत (मज़्कूरा बाला) नाज़िल हुई कि, ऐ ईमानवालों! नबी के घरों में मत जाया करो, आख़िर आयत तक।

(दीगर मक़ाम : 4792, 4793, 4794, 5154, 5163, 5166, 5167, 5170, 5171, 5466, 6228, 6229, 6271, 7421)

سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ، حَدَّثَنَا أَبُو مِجْلَزٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا تَزَوَّجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ زَيْنَبَ ابْنَةَ جَحْشٍ دَعَا الْقَوْمَ فَطَعِمُوا ثُمَّ جَلَسُوا يَتَحَدَّثُونَ، وَإِذْ هُوَ كَأَنَّهُ يَتَهَيَّأُ لِلْقِيَامِ، فَلَمْ يَقُومُوا، فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ قَامَ، فَلَمَّا قَامَ قَامَ مَنْ قَامَ وَقَعَدَ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ، فَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ لِيَدْخُلَ فَإِذَا الْقَوْمُ جُلُوسٌ، ثُمَّ إِنَّهُمْ قَامُوا، فَانْطَلَقْتُ فَجِئْتُ فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّهُمْ قَدِ انْطَلَقُوا فَجَاءَ حَتَّى دَخَلَ، فَذَهَبْتُ أَدْخُلُ فَأَلْقَى الْحِجَابَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ، فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ﴾ الآيَةَ.

[أطرافه في: ٤٧٩٢، ٤٧٩٣، ٤٧٩٤، ٥١٥٤، ٥١٦٣، ٥١٦٦، ٥١٦٨، ٥١٧٠، ٥١٧١، ٥٤٦٦، ٦٢٢٨، ٦٢٢٩، ٦٢٧١، ٧٤٢١].

4792. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने कि ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि इस आयत या'नी पर्दा (के शाने नुज़ूल) के बारे में मैं सबसे ज़्यादा जानता हूँ, जब ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने निकाह़ किया और वो आपके साथ आपके घर ही में थीं तो आपने खाना तैयार करवाया और क़ौम को बुलाया (खाने से फ़ारिग़ होने के बाद) लोग बैठे बातें करते रहे। आँह़ज़रत (ﷺ) बाहर जाते और फिर अंदर आते (ताकि लोग उठ जाएँ) लेकिन लोग बैठे बातें करते रहे। इस पर ये आयत नाज़िल हुई कि, ऐ ईमानवालों! नबी के घरों में मत जाया करो। सिवाए उस वक़्त के जब तुम्हें (खाने के लिये) आने की इजाज़त दी जाए। ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के

٤٧٩٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، قَالَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ : أَنَا أَعْلَمُ النَّاسِ بِهَذِهِ الآيَةِ آيَةِ الْحِجَابِ: لَمَّا أُهْدِيَتْ زَيْنَبُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ كَانَتْ مَعَهُ فِي الْبَيْتِ، صَنَعَ طَعَامًا وَدَعَا الْقَوْمَ، فَقَعَدُوا يَتَحَدَّثُونَ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَخْرُجُ ثُمَّ يَرْجِعُ، وَهُمْ قُعُودٌ يَتَحَدَّثُونَ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَن

يؤذن لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ - إِلَى قَوْلِهِ - مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ﴾ فَضُرِبَ الْحِجَابُ، وَقَامَ الْقَوْمُ.[راجع: ٤٧٩١]

मुंतज़िर न रहो। अल्लाह तआला के इर्शाद मिंव् वराइ हिजाबिन तक उसके बाद पर्दा डाल दिया गया और लोग खड़े हो गये। (राजेअ: 4791)

٤٧٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بُنِيَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِزَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ بِخُبْزٍ وَلَحْمٍ، فَأُرْسِلْتُ عَلَى الطَّعَامِ دَاعِيًا، فَيَجِيءُ قَوْمٌ فَيَأْكُلُونَ وَيَخْرُجُونَ ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ فَيَأْكُلُونَ وَيَخْرُجُونَ، فَدَعَوْتُ حَتَّى مَا أَجِدُ أَحَدًا أَدْعُو، فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ مَا أَجِدُ أَحَدًا أَدْعُوهُ، قَالَ: ارْفَعُوا طَعَامَكُمْ وَبَقِيَ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ يَتَحَدَّثُونَ فِي الْبَيْتِ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فَانْطَلَقَ إِلَى حُجْرَةِ عَائِشَةَ فَقَالَ: ((السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ، أَهْلَ الْبَيْتِ وَرَحْمَةُ اللهِ)). فَقَالَتْ: وَعَلَيْكَ السَّلاَمُ وَرَحْمَةُ اللهِ، كَيْفَ وَجَدْتَ أَهْلَكَ، بَارَكَ اللهُ لَكَ.

فَتَقَرَّى حُجَرَ نِسَائِهِ كُلِّهِنَّ، يَقُولُ لَهُنَّ كَمَا يَقُولُ لِعَائِشَةَ، وَيَقُلْنَ لَهُ كَمَا قَالَتْ عَائِشَةُ. ثُمَّ رَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ فَإِذَا ثَلاَثَةُ رَهْطٍ فِي الْبَيْتِ يَتَحَدَّثُونَ وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ شَدِيدَ الْحَيَاءِ فَخَرَجَ مُنْطَلِقًا نَحْوَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، فَمَا أَدْرِي أَخْبَرْتُهُ أَوْ أُخْبِرَ أَنَّ الْقَوْمَ خَرَجُوا، فَرَجَعَ حَتَّى إِذَا وَضَعَ رِجْلَهُ فِي أُسْكُفَّةِ الْبَابِ دَاخِلَةً وَأُخْرَى خَارِجَةً أَرْخَى السِّتْرَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ، وَأُنْزِلَتْ

4793. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन स़ुहैब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से निकाह़ के बाद (बत़ौरे वलीमा) गोश्त और रोटी तैयार करवाई और मुझे खाने पर लोगों को बुलाने के लिये भेजा, फिर कुछ लोग आए और खाकर वापस चले गये फिर दूसरे लोग आए और खाकर वापस चले। मैं बुलाता रहा, आख़िर जब कोई बाक़ी न रहा तो मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी (ﷺ)! अब तो कोई बाक़ी नहीं रहा जिसको मैं दा'वत दूँ तो आपने फ़र्माया कि अब दस्तरख़्वान उठा लो लेकिन तीन अश्ख़ास़ घर में बातें करते रहे। आँह़ज़रत (ﷺ) बाहर निकल आए और ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के हुजरा के सामने जाकर फ़र्माया अस्सलामु अ़लैकुम अहलल बति व रह़मतुल्लाह। उन्होंने कहा वअ़लैयकस्सलाम वरह़मतुल्लाहु, अपनी अहल को आपने कैसा पाया? अल्लाह बरकत अ़त़ा करे। आँह़ज़रत (ﷺ) उसी त़रह़ तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात (रज़ि.) के हुज्रों के सामने गये और जिस त़रह़ ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से फ़र्माया था उस त़रह़ सबसे फ़र्माया और उन्होंने भी ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की त़रह़ जवाब दिया। उसके बाद नबी अकरम (ﷺ) वापस तशरीफ़ लाए तो वो तीन आदमी अब भी घर में बैठे बातें कर रहे थे। नबी अकरम (ﷺ) बहुत ज़्यादा ह़यादार थे, आप (ﷺ) (ये देखकर कि लोग अब भी बैठे हुए हैं) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के हुजरा की त़रफ़ फिर चले गये, मुझे याद नहीं कि उसके बाद मैंने या किसी और ने आपको जाकर ख़बर की कि अब वो तीनों आदमी रवाना हो चुके हैं। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) अब वापस तशरीफ़ लाए और पैर चौखट पर रखा। अभी आपका एक पैर अंदर था और एक पैर बाहर कि आपने पर्दा गिरा लिया और पर्दा की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ: 4791)

آيَةُ الْحِجَابِ. [راجع: ٤٧٩١]

4797. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन बक्र सहमी ने ख़बर दी, कहा हमसे हुमैद तवील ने बयान किया कि हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) से निकाह पर दा'वते वलीमा की और गोश्त और रोटी लोगों को खिलाई। फिर आप उम्महातुल मोमिनीन के हुजरों की तरफ़ गये, जैसा कि आपका मा'मूल था कि निकाह की सुबह को आप जाया करते थे, आप उन्हें सलाम करते और उनके हक़ में दुआ करते और उम्महातुल मोमिनीन भी आपको सलाम करतीं और आपके लिये दुआ करतीं। उम्महातुल मोमिनीन के हुजरों से जब आप अपने हुजरे में वापस तशरीफ़ लाए तो आपने देखा कि दो आदमी आपस में बातचीत कर रहे हैं। जब आपने उन्हें बैठे हुए देखा तो फिर आप हुजरे से निकल गये। उन दोनों ने जब देखा कि अल्लाह के नबी (ﷺ) अपने हुजरा से वापस चले गये हैं तो बड़ी जल्दी जल्दी वो उठकर बाहर निकल गये। मुझे याद नहीं कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को उनके चले जाने की ख़बर दी या किसी और ने फिर आँहज़रत (ﷺ) वापस आए और घर में आते ही दरवाज़ा का पर्दा गिरा लिया और आयते हिजाब नाज़िल हुई। और सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया कि हमको यह्या बिन कषीर ने ख़बर दी, कहा मुझसे हुमैद तवील ने बयान किया और उन्होंने हज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया। (राजेअ: 4791)

٤٧٩٤- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بَكْرٍ السَّهْمِيُّ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَوْلَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ بَنَى بِزَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ فَأَشْبَعَ النَّاسَ خُبْزًا وَلَحمًا، ثُمَّ خَرَجَ إِلَى حُجَرِ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ كَمَا كَانَ يَصْنَعُ صَبِيحَةَ بِنَائِهِ فَيُسَلِّمُ عَلَيْهِنَّ وَيَدْعُو لَهُنَّ، وَيُسَلِّمْنَ عَلَيْهِ وَيَدْعُونَ لَهُ. فَلَمَّا رَجَعَ إِلَى بَيْتِهِ رَأَى رَجُلَيْنِ جَرَى بِهِمَا الْحَدِيثُ، فَلَمَّا رَآهُمَا رَجَعَ عَنْ بَيْتِهِ، فَلَمَّا رَأَى الرَّجُلاَنِ نَبِيَّ اللهِ ﷺ رَجَعَ عَنْ بَيْتِهِ وَثَبَا مُسْرِعَيْنِ، فَمَا أَدْرِي؟ أَنَا أَخْبَرْتُهُ بِخُرُوجِهِمَا أَمْ أُخْبِرَ؟، فَرَجَعَ حَتَّى دَخَلَ الْبَيْتَ وَأَرْخَى السِّتْرَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ، وَأُنْزِلَتْ آيَةُ الْحِجَابِ وَقَالَ ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ : أَخْبَرَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ سَمِعَ أَنَسًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٤٧٩١]

इस सनद के बयान करने से ये ग़र्ज़ है कि हुमैद का सिमाअ़ इससे मा'लूम हो जाए।

4795. हमसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन सौदा (रज़ि.) पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद क़ज़ा-ए-हाजत के लिये निकलीं वो बहुत भारी भरकम थीं जो उन्हें जानता था उससे वो पोशीदा नहीं रह सकती थीं। रास्ते में उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने उन्हें देख लिया और कहा कि ऐ सौदा! हाँ अल्लाह की क़सम! आप हमसे अपने आपको नहीं छुपा सकतीं देखिए तो आप किस तरह बाहर निकली हैं। बयान किया कि सौदा (रज़ि.) उल्टे पैर वहाँ से वापस आ गईं,

٤٧٩٥- حدثني زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجَتْ سَوْدَةُ بَعْدَ مَا ضُرِبَ الْحِجَابُ لِحَاجَتِهَا، وَكَانَتِ امْرَأَةً جَسِيمَةً لاَ تَخْفَى عَلَى مَنْ يَعْرِفُهَا، فرَآهَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَقَالَ : يَا سَوْدَةُ أَمَا وَاللهِ مَا تَخْفَيْنَ عَلَيْنَا، فَانْظُرِي كَيْفَ

تَخْرُجِينَ. فَانْكَفَأَتْ رَاجِعَةً وَرَسُولُ اللهِ ﷺ فِي بَيْتِي، وَإِنَّهُ لَيَتَعَشَّى وَفِي يَدِهِ عَرْقٌ، فَدَخَلَتْ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ إِنِّي خَرَجْتُ لِبَعْضِ حَاجَتِي، فَقَالَ لِي عُمَرُ كَذَا وَكَذَا. قَالَتْ : فَأَوْحَى اللهُ إِلَيْهِ، ثُمَّ رُفِعَ عَنْهُ وَإِنَّ الْعَرْقَ فِي يَدِهِ مَا وَضَعَهُ فَقَالَ: ((إِنَّهُ قَدْ أُذِنَ لَكُنَّ أَنْ تَخْرُجْنَ لِحَاجَتِكُنَّ)).

[راجع: ١٤٦]

रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त मेरे हुज्रे में तशरीफ़ रखते थे और रात का खाना खा रहे थे, आँहज़रत (ﷺ) के हाथ में उस वक़्त गोश्त की एक हड्डी थी। सौदा (रज़ि.) ने दाख़िल होते ही कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं क़ज़ा-ए-हाजत के लिये निकली थी तो उमर (रज़ि.) ने मुझसे बातें कीं, बयान किया कि आप पर वह्य का नुज़ूल शुरू हो गया और थोड़ी देर बाद ये कैफ़ियत ख़त्म हुई, हड्डी अब भी आपके हाथ में थी। आपने उसे रखा नहीं था। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें (अल्लाह की तरफ़ से) क़ज़ा-ए-हाजत के लिये बाहर जाने की इजाज़त दे दी गई है। (राजेअ : 146)

मा'लूम हुआ कि अज़्वाजे मुतह्हरात के लिये भी जो पर्दे का हुक्म दिया गया था उसका मत़लब ये नहीं था कि घर के बाहर न निकलें बल्कि मक़्सूद ये था कि जो आज़ा छुपाना हैं उनको छुपा लें (क़स्तलानी)

٩- باب قَوْلُهُ :

बाब 9 : आयत 'अन्तुब्दू शैअन औ तुख़्फ़ूहु' की तफ़्सीर या'नी,

﴿إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا، لاَ جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ، وَلاَ أَبْنَائِهِنَّ، وَلاَ إِخْوَانِهِنَّ، وَلاَ أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ، وَلاَ أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ، وَلاَ نِسَائِهِنَّ، وَلاَ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ. وَاتَّقِينَ اللهَ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا﴾.

ऐ मुसलमानों! अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करोगे या उसे (दिल में) पोशिदा रखोगे तो अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है, उन (रसूल की बीवियों) पर कोई गुनाह नहीं, सामने आने में अपने बापों के और अपने बेटों के और अपने भाईयों के और अपने भांजों के और अपनी (दीनी बहनों) औरतों के और न अपनी बांदियों के और अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर (अपने इल्म के लिहाज़ से) मौजूद और देखने वाला है।

٤٧٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اسْتَأْذَنَ عَلَيَّ أَفْلَحُ أَخُو أَبِي الْقُعَيْسِ، بَعْدَ مَا أُنْزِلَ الْحِجَابُ فَقُلْتُ : لاَ آذَنُ لَهُ حَتَّى أَسْتَأْذِنَ فِيهِ النَّبِيَّ ﷺ، فَإِنَّ أَخَاهُ أَبَا الْقُعَيْسِ لَيْسَ هُوَ أَرْضَعَنِي، وَلَكِنْ أَرْضَعَتْنِي امْرَأَةُ أَبِي الْقُعَيْسِ، فَدَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ لَهُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ

4796. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद अबुल क़ुऐस ने मुझे थोड़ा ही दूध पिलाया था, मुझे दूध पिलाने वाली तो अबुल क़ुऐस की बीवी थी। फिर आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आपसे अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अबुल क़ुऐस के भाई अफ़लह (रज़ि.) ने मुझसे मिलने की इजाज़त चाही, लेकिन मैंने ये कहलवा दिया कि जब तक आँहज़रत (ﷺ) से इजाज़त न ले लूँ उनसे मुलाक़ात नहीं कर सकती। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने चचा से मिलने से तुमने क्यूँ इंकार किया।

أَفْلَحَ أَخَا أَبِي الْقُعَيْسِ اسْتَأْذَنَ، فَأَبَيْتُ أَنْ آذَنَ حَتَّى اسْتَأْذِنَكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا مَنَعَكِ أَنْ تَأْذَنِينَ عَمَّكِ؟)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ : إِنَّ الرَّجُلَ لَيْسَ هُوَ أَرْضَعَنِي، وَلَكِنْ أَرْضَعَتْنِي امْرَأَةُ أَبِي الْقُعَيْسِ، فَقَالَ: ((ائْذَنِي لَهُ فَإِنَّهُ عَمُّكِ، تَرِبَتْ يَمِينُكِ)). قَالَ عُرْوَةُ: فَلِذَلِكَ كَانَتْ عَائِشَةُ تَقُولُ : حَرِّمُوا مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا تُحَرِّمُونَ مِنَ النَّسَبِ.[راجع: ٢٦٤٤]

मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अबुल क़ुऐ़स ने मुझे थोड़े ही दूध पिलाया था, दूध पिलाने वाली तो उनकी बीवी थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें अंदर आने की इजाज़त दे दो वो तुम्हारे चचा हैं। उ़र्वा ने बयान किया कि इसी वजह से ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) फ़र्माती थीं कि रज़ाअ़त से भी वो चीज़ें (मष़लन निकाह वग़ैरह) ह़राम हो जाती हैं जो नसब की वजह से ह़राम होती हैं। (दीगर मक़ाम : 2644)

तश्रीह : किसी बच्चे या बच्ची को माँ के अ़लावा कोई और औ़रत दूध पिला दे तो वो शरअ़न दूध की माँ बन जाती है और उसके अह़काम ह़क़ीक़ी माँ की त़रह़ हो जाते हैं , उसका शौहर बाप के दर्जे फूफी, रज़ाई मामूँ, रज़ाई ख़ाला सब मुह़रिम हैं । इस ह़दीष़ की मुताबअ़त बाब का तर्जुमा से कई कारणों से है। एक ये कि इस ह़दीष़ से रज़ाई बाप या रज़ाई चचा के सामने निकलना ष़ाबित होता है और आयत में जो आबाउहुन्ना का लफ़्ज़ था इसकी तफ़्सीर ह़दीष़ से हो गई कि रज़ाई बाप और चचा भी आबाउहुन्ना में दाख़िल हैं क्योंकि दूसरी ह़दीष़ में है। अम्मुर्रजुलिस़िन्वु अबीहि दूसरे ये कि आयत मे अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पास जिन लोगों का आना रवा था उनका ज़िक्र है और ह़दीष़ में भी उन ही का तज़्किरा है कि एक शख़्स ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के पास आया। तीसरे ये कि ह़दीष़ में ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) का ये क़ौल मज़्कूर है कि जितने रिश्ते ख़ून की वजह से ह़राम होते हैं वही दूध की वजह से भी ह़राम हो जाते हैं तो इससे आयत की तफ़्सीर हो गई या'नी दूसरे मह़रिम का भी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पास आना रवा है गो आयत में उनका ज़िक्र नहीं है जैसे दादा, नाना, मामूँ, चचा वग़ैरह और तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जिसने ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) पर ये ए'तिराज़ किया कि ह़दीष़ बाब के तर्जुमा के मुवाफ़िक़ नहीं है। क़स्तलानी (रह़) ने कहा इमाम बुख़ारी (रह़) ने ये ह़दीष़ लाकर इक्रिमा और शअ़बी का रद्द किया है जो चचा या मामूँ के सामने औ़रत को दुपट्टा उतारकर आना मकरूह जानते हैं।

١٠– باب قَوْلُهُ :

﴿إِنَّ اللهَ وَمَلاَئِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا﴾ قَالَ أَبُو الْعَالِيَةِ: صَلاَةُ اللهِ ثَنَاؤُهُ عَلَيْهِ عِنْدَ الْمَلاَئِكَةِ، وَصَلاَةُ الْمَلاَئِكَةِ الدُّعَاءُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يُصَلُّونَ يُبَرِّكُونَ. لَنُغْرِيَنَّكَ : لَنُسَلِّطَنَّكَ.

बाब 10 : आयत 'इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लून अ़लन्नबिय्यि' की तफ़्सीर या'नी,

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं , ऐ ईमानवालों! तुम भी आप पर दरूद भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो। अबुल आ़लिया ने कहा लफ़्ज़े स़लात की निस्बत अगर अल्लाह की त़रफ़ हो तो उसका मत़लब ये होता है कि वो नबी की फ़रिश्तों के सामने ष़ना व ता'रीफ़ करता है और अगर मलायका की त़रफ़ हो तो दुआ़ए रह़मत उससे मुराद ली जाती है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि (आयत में) युस़ल्लूना बमा'नी बरकत की दुआ़ करने के है लनुग़्रियन्नका अय्यु लनुसल्लित़न्नक। या'नी हम तुझको

ज़रूर इन पर मुसल्लत कर देंगे।

4797. मुझसे सईद बिन यह्या ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, उनसे हकम ने, उनसे इब्ने अबी लैला ने और उनसे हज़रत कअब बिन उज्रह (रज़ि.) ने कि अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप पर सलाम का तरीक़ा तो हमें मा'लूम हो गया है, लेकिन आप पर सलात का क्या तरीक़ा है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ पढ़ा करो, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मद कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्त अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद।
(राजेअ: 3370)

٤٧٩٧- حدثني سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ عَنِ الْحَكَمِ عَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَمَّا السَّلاَمُ عَلَيْكَ فَقَدْ عَرَفْنَاهُ، فَكَيْفَ الصَّلاَةُ؟ قَالَ: ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ)). [راجع: ٣٣٧٠]

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! हमारे महबूब रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़र्मा और आपकी औलाद पर भी जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) और उनकी औलाद पर रहमतें नाज़िल की हैं बेशक तू ता'रीफ़ के लिये बड़ी बुज़ुर्गी वाला है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद (ﷺ) पर बरकतें नाज़िल फ़र्मा और आप (ﷺ) की औलाद पर भी जैसी बरकतें तूने इब्राहीम (अलैहि.) और उनकी औलाद पर नाज़िल की हैं बेशक तू ता'रीफ़ के लायक़ बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

4798. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्नुल हाद ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें मा'लूम हो गया है। लेकिन सलात (दरूद) भेजने का क्या तरीक़ा है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यूँ कहा करो। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दिक व रसूलिक कमा सल्लैत अला आलि इब्राहीम व बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्त अला आलि इब्राहीम, अबू सालेह ने बयान किया कि और उनसे लैष बिन सअद ने (इन अल्फ़ाज़ के साथ) अला मुहम्मदिव्वं अला आलि मुहम्मद कमा बारक्त अला आलि इब्राहीम के अल्फ़ाज़ रिवायत किये हैं। (दीगर मक़ाम : 6357)

٤٧٩٨- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا التَّسْلِيمُ، فَكَيْفَ نُصَلِّي عَلَيْكَ؟ قَالَ: ((قُولُوا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ)) قَالَ أَبُو صَالِحٍ عَنِ اللَّيْثِ: ((عَلَى مُحَمَّدٍ وعلى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ)). [طرفه في : ٦٣٥٨].

हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी

٠٠٠٠- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ.

हाज़िम और दरावरदी ने बयान किया और उनसे यज़ीद ने और उन्होंने इस तरह बयान किया कि, कमा सल्लयता अला इब्राहीमा व बारिक अला मुहम्मद व आलि मुहम्मद कमा बारकता अला इब्राहीमा व आलि इब्राहीम, इस रिवायत में ज़रा लफ़्ज़ों में कमी बेशी है और इन अल्फ़ाज़ में भी ये दरूद पढ़ना जाइज़ है मा'नी में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

حدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ، عَنْ يَزِيدَ وَقَالَ: ((صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى وَآلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ)).

बाब 11 : आयत 'ला तकूनू कल्लज़ीन आज़ौ मूसा' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ मुसलमानों ! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने हज़रत मूसा (अलैहि.) को तकलीफ़ पहुँचाई थी।

١١- باب قَوْلِهِ : ﴿لاَ تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى﴾.

4799. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको रौह बिन उबादा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे औफ़ ने बयान किया, उनसे हसन बसरी और मुहम्मद बिन सीरीन और ख़िलास ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मूसा (अलैहि.) बड़े हया वाले थे, उसी के बारे में अल्लाह तआला का इर्शाद है कि, ऐ ईमानवालों! उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा (अलैहि.) को ईज़ा पहुँचाई थी, सो अल्लाह ने उन्हें बरी षाबित कर दिया और अल्लाह के नज़दीक वो बड़े इज़्ज़त वाले थे। (राजेअ : 278)

٤٧٩٩- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنِ الْحَسَنِ وَمُحَمَّدٍ وَخِلاسٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((إِنَّ مُوسَى كَانَ رَجُلاً حَيِيًّا، وَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى، فَبَرَّأَهُ اللهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللهِ وَجِيهًا﴾)).

[راجع: ٢٧٨]

तश्रीह : कुछ कम अक़्लों ने ये मशहूर कर रखा था कि मूसा (अलैहि.) जो इस क़दर हया करते हैं और सतर छुपाते हैं उसकी वजह ये है कि उनके जिस्म में ऐब है। अल्लाह पाक ने एक दिन जबकि आप एक पत्थर पर कपड़ों को रखकर ग़ुस्ल कर रहे थे उस पत्थर को हुक्म दिया वो आपके कपड़े लेकर भागा और मूसा (अलैहि.) उसी के पीछे अपने कपड़ों के लिये भागे यहाँ तक कि उन लोगों ने हज़रत मूसा (अलैहि.) का अंदरूनी जिस्म देखा और उनको आपके बेऐब होने का यक़ीन हो गया। उसी तरफ़ आयत में इशारा है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

सूरह सबा की तफ़्सीर

[٣٤] سُورَةُ سَبَأ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ये सूरत मक्की है। इसमें 54 आयतें और छः रुकूअ हैं।

मुआजिज़ीना के मा'नी आगे बढ़ने वाले बिमुअज़ि.ज़ीना हमारे हाथ से निकल जाने वाले। सबक़ू के मा'नी हमारे हाथ से निकल गये। ला यअज़िज़ूना हमारे हाथ से नहीं निकल सकते। यस्बिक़ूना हमको आजिज़ कर सकेंगे। बिमुअज़िज़ीना

يُقَالُ ﴿مُعَاجِزِينَ﴾ مُسَابِقِينَ. ﴿بِمُعْجِزِينَ﴾ بِفَائِتِينَ ﴿مُعَاجِزِينَ﴾ مُغَالِبِينَ ﴿مُعَاجِزِيَّ﴾: مُسَابِقِيَّ.

आजिज़ करने वाले (जैसे मशहूर क़िरात है) और मुआजिज़ीना (जो दूसरी क़िरात है) इसका मा'नी एक–दूसरे पर ग़लबा ढूँढ़ने वाले एक–दूसरे का इज्ज़ ज़ाहिर करने वाले। मिअशार का मा'नी दसवाँ हिस्सा। अक्लु फल। बाअिद (जैसे मशहूर क़िरात है) और बाद जो इब्ने कषीर की क़िरात है दोनों का मा'नी एक है और मुजाहिद ने कहा ला युअज़ुबु का मा'नी उससे ग़ायब नहीं होता। अल् अरिम वो बन्द या एक लाल पानी था जिसको अल्लाह पाक ने बंद पर भेजा वो फटकर गिर गया और मैदान में गड्ढा पड़ गया। बाग़ दोनों तरफ़ से ऊँचे हो गये फिर पानी ग़ायब हो गया। दोनों बाग़ सूख गये और ये लाल पानी बंद में से बहकर नहीं आया था बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब था जहाँ से चाहा वहाँ से भेजा और अम्र बिन शुरहबील ने कहा अरिम कहते हैं बंद को यमन वालों की ज़ुबान में। दूसरों ने कहा अरिम के मा'नी नाले के हैं। अस् साबिग़ात के मा'नी ज़िरहें। मुजाहिद ने कहा। युजाज़ी के मा'नी अ़ज़ाब दिये जाते हैं। अइज़ुकुम बिवाहिदा या'नी मैं तुमको अल्लाह की इताअत करने की नसीहत करता हूँ। मुष्ना दो दो को। फ़ुरादा एक एक को कहते हैं। अत् तनावुस आख़िरत से फिर दुनिया में आना (जो मुम्किन नहीं है) मा यश्तहूना उनकी ख़्वाहिशात माल व औलाद दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत। बिअश्याइहिम उनके जोड़ वाले दूसरे काफ़िर हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कल जवाब जैसे पानी भरने के गड्ढे जैसे जो बत्हा कहते हैं हौज़ को। हज़रत इमाम बुख़ारी का ये मतलब नहीं है कि जवाब और जवबति का मादा एक है क्योंकि जवाब जाबियत का जमा है। उसका ऐन कलिमा ब है और जवबति का ऐन कलिमा वाव है) ख़मत पीलू का पेड़। अल्अष्लु झाऊ का पेड़। अल् अरिम सख़्त रोज़ की (बारिश)।

﴿سَبَقُوا﴾: فَاتُوا. ﴿لاَ يُعْجِزُونَ﴾: لاَ يَفُوتُونَ ﴿يَسْبِقُونَا﴾ يُعْجِزُونَا. قَوْلُهُ ﴿بِمُعْجِزِينَ﴾: بِفَائِتِينَ. وَمَعْنَى ﴿مُعَاجِزِينَ﴾ مُغَالِبِينَ. يُرِيدُ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا أَنْ يُظْهِرَ عَجْزَ صَاحِبِهِ. مِعْشَارٌ عُشْرٌ. الأُكُلُ الثَّمَرُ. بَاعِدْ وَبَعِّدْ وَاحِدٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿لاَ يَعْزُبُ﴾ لاَ يَغِيبُ. ﴿الْعَرِمُ﴾: السُّدُّ مَاءٌ أَحْمَرُ أَرْسَلَهُ فِي السُّدِّ فَشَقَّهُ وَهَدَمَهُ وَحَفَرَ الْوَادِيَ فَارْتَفَعَتَا عَنِ الْجَنْبَيْنِ وَغَابَ عَنْهُمَا الْمَاءُ فَيَبِسَتَا، وَلَمْ يَكُنِ الْمَاءُ الأَحْمَرُ مِنَ السُّدِّ وَلَكِنْ كَانَ عَذَابًا أَرْسَلَهُ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنْ حَيْثُ شَاءَ. وَقَالَ عَمْرُو بْنُ شُرَحْبِيلَ: ﴿الْعَرِمُ﴾ الْمُسَنَّاةُ بِلَحْنِ أَهْلِ الْيَمَنِ. وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿الْعَرِمُ﴾ الْوَادِي. ﴿السَّابِغَاتُ﴾: الدُّرُوعُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿يُجَازَى﴾ يُعَاقَبُ. ﴿أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ﴾ بِطَاعَةِ اللهِ. ﴿مَثْنَى وَفُرَادَى﴾ : وَاحِدٌ وَاثْنَيْنِ. ﴿التَّنَاوُشُ﴾ الرَّدُّ مِنَ الآخِرَةِ إِلَى الدُّنْيَا. وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ : مِنْ مَالٍ أَوْ وَلَدٍ أَوْ زَهْرَةٍ. ﴿بِأَشْيَاعِهِمْ﴾ بِأَمْثَالِهِمْ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿كَالْجَوَابِ﴾ كَالْجَوْبَةِ مِنَ الأَرْضِ ﴿الْخَمْطُ﴾ الأَرَاكُ ﴿وَالأَثْلُ﴾ الطَّرْفَاءُ ﴿الْعَرِمُ﴾ الشَّدِيدُ.

बाब 1 : आयत 'हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़िअ अन क़ुलूबिहिम' की तफ़्सीर या'नी,

١ – باب قَوْلُهُ:

यहाँ तक कि जब उन फ़रिश्तों के दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो वो आपस में पूछने लगते हैं कि तुम्हारे परवरदिगार ने किया

﴿حَتَّى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ، قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا : الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ

الْكَبِيرُ﴾.

फ़र्माया है वो कहते हैं कि हक़ और (वाक़ई) बात का हुक्म फ़र्माया है और वो आलीशान है सबसे बड़ा है।

٤٨٠٠- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو وَقَالَ: سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ يَقُولُ: سَمِعْتُ أَبَا هريرة يَقُولُ: إِنَّ نَبِيَّ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِذَا قَضَى اللهُ الأَمْرَ فِي السَّمَاءِ، ضَرَبَتِ الْمَلاَئِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ كَأَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلَى صَفْوَانٍ، فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا: لِلَّذِي قَالَ الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ، فَيَسْمَعُهَا مُسْتَرِقُ السَّمْعِ، وَمُسْتَرِقُ السَّمْعِ هَكَذَا بَعْضُهُ فَوْقَ بَعْضٍ)). وَوَصَفَ سُفْيَانُ بِكَفِّهِ فَحَرَّفَهَا وَبَدَّدَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ ((فَيَسْمَعُ الْكَلِمَةَ فَيُلْقِيهَا إِلَى مَنْ تَحْتَهُ، حَتَّى يُلْقِيَهَا عَلَى لِسَانِ السَّاحِرِ أَوِ الْكَاهِنِ، فَرُبَّمَا أَدْرَكَ الشِّهَابُ قَبْلَ أَنْ يُلْقِيَهَا، وَرُبَّمَا أَلْقَاهَا قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُ فَيَكْذِبُ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ، فَيُقَالُ: أَلَيْسَ قَدْ قَالَ لَنَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، كَذَا وَكَذَا، فَيُصَدَّقُ بِتِلْكَ الْكَلِمَةِ الَّتِي سَمِعَ مِنَ السَّمَاءِ)).

[راجع: ٤٧٠١]

4800. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने, कहा कि मैंने इक्रिमा से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब अल्लाह तआ़ला आसमान पर किसी बात का फ़ैस़ला करता है तो फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के फ़ैस़ला को सुनकर झुकते हुए आजिज़ी करते हुए अपने बाज़ू फड़फड़ाते हैं, अल्लाह का फ़र्मान उन्हें इस त़रह़ सुनाई देता है जैसा स़ाफ़ चिकने पत्थर पर जंज़ीर चलाने से आवाज़ पैदा होती है। फिर जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो वो आपस में पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या फ़र्माया? वो कहते हैं कि ह़क़ बात का हुक्म फ़र्माया और वो बहुत ऊँचा, सबसे बड़ा है फिर उनकी यही बातचीत चोरी छुपे सुनने वाले शैत़ान सुन भागते हैं, शैत़ान आसमान के नीचे यूँ नीचे ऊपर होते हैं, सुफ़यान ने उस मौक़े पर हथेली को मोड़कर उँगलियाँ अलग अलग करके शयात़ीन के जमा होने की कैफ़ियत बताई कि इस त़रह़ शैत़ान एक के ऊपर एक रहते हैं। फिर वो शयात़ीन कोई एक कलिमा सुन लेते हैं और अपने नीचे वाले को बताते हैं। इस त़रह़ वो कलिमा साह़िर या काहिन तक पहुँचता है। कभी तो ऐसा होता है कि उससे पहले कि वो ये कलिमा अपने से नीचे वाले को बताएँ आग का गोला उन्हें आ दबोचता है और कभी ऐसा होता है कि जब वो बता लेते हैं तो आग का अंगार उन पर पड़ता है, उसके बाद काहिन उसमें सौ झूठ मिलाकर लोगों से बयान करता है (एक बात जब उस काहिन की स़ह़ीह़ हो जाती है तो उनके मानने वालों की त़रफ़ से) कहा जाता है कि क्या उसी त़रह़ हमसे फ़लाँ दिन काहिन नहीं कहा था, उसी एक कलिमा की वजह से जो आसमान पर शयात़ीन ने सुना था काहिनों और साह़िरों की बात को लोग सच्चा जानने लगते हैं।

(राजेअ़ : 4701)

तश्रीह : आज के साइंसी दौर में भी ऐसे कमज़ोर ए'तिक़ाद वाले बकष़रत मौजूद हैं जो ज्योतिषियों की बातों में आकर अपना सब कुछ बर्बाद कर डालते हैं। मुसलमानों में भी ऐसे कमज़ोर ख़्याल के अ़वाम मौजूद हैं ह़ालाँकि ये इस्लामी ता'लीम के सख़्त ख़िलाफ़ है।

बाब 2 : आयत 'इन हुव इल्ला नज़ीरुल्लकुम' की तफ़्सीर या'नी,

۲- باب قوله ﴿إِنْ هُوَ إِلاَّ نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ﴾

ये रसूल तो तुमको बस एक सख़्त अ़ज़ाब (दोज़ख़) के आने से पहले डराने वाले हैं।

4801. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, कहा ह़मसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) स़फ़ा पहाड़ी पर चढ़े और पुकारा या स़बाह़ाह (लोगों दौड़ो) उस आवाज़ पर क़ुरैश जमा हो गये और पूछा क्या बात है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारी क्या राय है अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि दुश्मन सुबह़ के वक़्त या शाम के वक़्त तुम पर ह़मला करने वाला है तो क्या तुम मेरी बात की तस्दीक़ नहीं करोगे? उन्होंने कहा कि हम आपकी तस्दीक़ करेंगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मैं तुमको सख़्त तरीन अ़ज़ाब (दोज़ख़) से पहले डराने वाला हूँ। अबू लहब (मरदूद) बोला तू हलाक हो जा, क्या तूने इसीलिये हमें बुलाया था। इस पर अल्लाह पाक ने आयत तब्बत यदा अबी लहबिंव्व तब नाज़िल फ़र्माई। (राजेअ़ : 1394)

٤٨٠١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَازِمٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ الصَّفَا ذَاتَ يَوْمٍ فَقَالَ: ((يَا صَبَاحَاهُ)) فَاجْتَمَعَتْ إِلَيْهِ قُرَيْشٌ قَالُوا: مَالَكَ؟ قَالَ : ((أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَخْبَرْتُكُمْ أَنَّ الْعَدُوَّ يُصَبِّحُكُمْ أَوْ يُمَسِّيكُمْ أَمَا كُنْتُمْ تُصَدِّقُونِي؟)) قَالُوا: بَلَى. قَالَ: ((فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ)). فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ تَبًّا لَكَ أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا؟ فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ﴾.

[راجع: ١٣٩٤]

तश्रीह : अबू लहब की बददुआ उल्टी उसी के ऊपर पड़ी। अल्लाह ने उसे बड़ी ज़िल्लत की मौत मारा। उसका माल उसका ख़ानदान कोई चीज़ उसके काम नहीं आई। अल्लाह वालों के सताने वालों का आख़िरी अंज़ाम ऐसा ही होता है जैसा कि तारीख़ का मुत़ालआ करने वालों पर मख़्फ़ी नहीं है।

ख़ात्मा! अल्ह़म्दुलिल्लाहि कि अल्लाह की मदद और शाइक़ीने किराम की पुरख़ुलूस़ दुआओं से ये पारा 19 ख़त्म हुआ अपनी हर इम्कानी कोशिश उसे बेहतर से बेहतर बनाने और तर्जुमा और तशरीह़ात लिखने में स़र्फ़ की गई है और सफ़र व ह़ज़र शब व रोज़ में उसके मतन व तर्जुमा व तशरीह़ात को बार-बार मुत़ालआ किया गया है फिर भी इंसान से ख़त़ा व निस्यान का हर वक़्त इम्कान है। अल्लाह पाक हर लग़्ज़िश को मुआफ़ फ़र्माए और मुख़्लिस़ीन माहिरीने इल्मे ह़दीष़ भी चश्मे अफ़्व से काम लेते हुए इम्कानी लग़्ज़िशों पर मुत़्तला फ़र्माकर मश्कूर करें ताकि त़बअ़े ष़ानी में इस्लाह़ कर दी जाए। दुआ है कि अल्लाह पाक अह़ादीष़े नबवी के इस पाकीज़ा ज़ख़ीरे से मुत़ालआ फ़र्माने वाले मुसलमान भाईयों बहनों को रुश्द व हिदायत से मालामाल फ़र्माए और इस पारे के बाद वाले पारों को तक्मील तक पहुँचाने में मुझ नाचीज़ ख़ादिम की मदद करे। (ख़ादिमे ह़दीष़ नबवी (ﷺ) मुह़म्मद दाऊद राज़ वल्द अ़ब्दुल्लाह अस्सलफ़ी अद् देहलवी मुक़ीम मस्जिद अहले ह़दीष़ 1421 अजमेरी गेट देहली। माह मुहर्रमुल् ह़राम यौमे आशूरा मुबारक 1395 हिजरी व 1957 ईस्वी)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बीसवां पारा

सूरह मलाइका की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद (रह) ने कहा क़ित्मीर गैमली का छाह (गुठली का छिल्का या पर्दा मुश्क़लतन) भारी बोझ लदा हुआ। औरों ने कहा हरूर दिन की गर्मी जब सूरज निकला हो और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हरूर रात की गर्मी और समूम दिन की गर्मी। ग़राबीब ग़िरबीब की जमा है बहुत काले काले बिलकुल स्याह।

[٣٥] سورة ﴿الْمَلاَئِكَةُ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿الْقِطْمِيرُ﴾ لِفَافَةُ النَّوَاةِ. ﴿مُثْقَلَةٌ﴾ مُثَقَّلَةٌ. وَقَالَ غَيْرُهُ : الْحَرُورُ بِالنَّهَارِ مَعَ الشَّمْسِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ الْحَرُورُ بِاللَّيْلِ وَالسَّمُومُ بِالنَّهَارِ. وَغَرَابِيبُ أَشَدُّ سَوَادِ الْغِرْبِيبُ. الشَّدِيدَ السَّوَادِ.

तश्रीह : ये सूरत फ़ातिर के नाम से मशहूर है जो मक्का में नाज़िल हुई जिसमें 45 आयात और पाँच रुकूअ़ हैं। जिन सूरतों को अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी से शुरू फ़र्माया गया है उनमें ये आख़िरी सूरत है। इसको सूरह मलाइका भी नाम दिया गया है क्योंकि इसकी पहली आयत में मलाइका और उनके बाज़ू का ज़िक्र है।

सूरह यासीन की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

और मुजाहिद ने कहा कि फ़अ़ज़्ज़ना अय्य शददना या'नी हमने ज़ोर दिया। या हसरतु अ़लल् इबाद या'नी क़यामत के दिन काफ़िर इस पर अफ़सोस करेंगे (या फ़रिश्ते अफ़सोस करेंगे) कि उन्होंने दुनिया में पैग़म्बरों पर ठट्ठा मारा। इन् तुदरिकल् क़मर का ये मतलब है कि सूरज चाँद की रोशनी नहीं छुपाता और न चाँद सूरज की। साबिक़ुन् नहार का मतलब ये है कि ये एक–दूसरे के पीछे रवाँ रवाँ हैं। नस्लख़ु हम रात में से दिन निकाल लेते हैं और दोनों चल रहे हैं। व ख़लक़्नाहुम मिम् मिष़्लिही में मिष़्लिही से मुराद चौपाये हैं। फ़किहून ख़ुश व ख़ुर्रम (या दिल्लगी कर रहे होंगे) जुनदुन मुह़ज़रून या'नी

[٣٦] سُورَةُ ﴿يس﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: فَعَزَّزْنَا شَدَّدْنَا. ﴿يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ﴾ كَانَ حَسْرَةً عَلَيْهِمْ اسْتِهْزَاؤُهُمْ بِالرُّسُلِ. ﴿أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ﴾ لاَ يَسْتُرُ ضَوْءُ أَحَدِهِمَا ضَوْءَ الآخَرِ وَلاَ يَنْبَغِي لَهُمَا ذَلِكَ سَابِقُ النَّهَارِ يَتَطَالَبَانِ حَثِيثَيْنِ. ﴿نَسْلَخُ﴾ نُخْرِجُ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ وَيَجْرِي كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا. ﴿مِنْ

हिसाब के वक़्त हाज़िर किये जाएँगे और इक्रिमा (रज़ि.) से मन्क़ूल है मशहूना का मा'नी बोझल (लदी हुई) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ताइरुकुम या'नी तुम्हारी मुसीबतें (या तुम्हारा नसीबा) यन्सिलून का मा'नी निकल पड़ेंगे। मरक़दिना निकलने की जगह से (ख़ूबगाह या'नी क़ब्र से) अहसयनाहु हमने उसको महफ़ूज़ कर लिया है। मकानतिहिम और मकानिहिम दोनों का मा'नी एक ही है या'नी अपने ठिकानों में (घरों में)।

مِثْلِهِ﴾ مِنَ الأَنْعَامِ. ﴿فَكِهُونَ﴾ مُعْجَبُونَ. ﴿جُنْدٌ مُحْضَرُونَ﴾ عِنْدَ الْحِسَابِ. وَيُذْكَرُ عَنْ عِكْرِمَةَ ﴿الْمَشْحُونُ﴾ الْمُوقَرُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿طَائِرُكُمْ﴾ مَصَائِبُكُمْ. ﴿يَنْسِلُونَ﴾ يَخْرُجُونَ. ﴿مَرْقَدِنَا﴾ مَخْرَجِنَا. ﴿أَحْصَيْنَاهُ﴾ حَفِظْنَاهُ. ﴿مَكَانَتِهِمْ﴾ وَمَكَانُهُمْ وَاحِدٌ.

तश्रीह : सूरह यासीन मक्का में नाज़िल हुई जिसमें तिरासी आयात और 5 रुकूअ़ हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर **चीज़ का दिल होता है और क़ुर्आन मजीद का दिल सूरह यासीन है।** आँहज़रत (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया कि मेरी ख़्वाहिश है कि मेरी उम्मत के हर फ़र्द को ये सूरत याद हो, इस सूरत की तिलावत करने वाले को पूरे क़ुर्आन शरीफ़ की तिलावत का षवाब मिलता है और उसके गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। जब मरने वाले के सामने उसकी तिलावत होती है तो इस पर अल्लाह की रहमत और बरकत नाज़िल होती है। (ये तीनों रिवायात जो मौलाना राज़ साहब ने ज़िक्र फ़र्माई हैं, सनदों के ए'तिबार से ज़ईफ़ और नाक़ाबिले हुज्जत हैं बल्कि नोट फ़र्मा लें कि अलग अलग सूरतों की फ़ज़ीलत में अकषर रिवायात ज़ईफ़ हैं, ए'तिमाद के क़ाबिल अहादीष बहुत कम हैं। अ़ब्दुर्रशीद तूनस्वी)

इस सूरह शरीफ़ा में सात सौ उन्नीस कलिमात और तीन हज़ार हुरूफ़ हैं। क़ुर्आन मजीद की कुल आयतों की ता'दाद 6666 है। कुल अल्फ़ाज़ की मीज़ान 77934 है और कुल हुरूफ़ का शुमार 323760 है (मुवाहिबुर्रहमान) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा यासीन के मा'नी ऐ आदमी! मुराद आँहज़रत (ﷺ) हैं।

बाब 1 : आयत 'वश्शम्सु तज्री लिमुस्तक़र्रिन' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلُهُ: وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ...

4802. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू ज़र (रज़ि.) ने बयान किया कि आफ़ताब ग़ुरूब होने के वक़्त मैं मस्जिद में नबी करीम (ﷺ) के साथ मौजूद था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अबू ज़र (रज़ि.)! तुम्हें मा'लूम है ये आफ़ताब कहाँ ग़ुरूब होता है? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये चलता रहता है यहाँ तक कि अ़र्श के नीचे सज्दा करता है जैसा कि इर्शाद बारी है कि, और आफ़ताब अपने ठिकाने की तरफ़ चलता फिरता रहता है। ये ज़बरदस्त इल्म वाले का ठहराया हुआ अंदाज़ा है। (राजेअ़ : 3199)

٤٨٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ عِنْدَ غُرُوبِ الشَّمْسِ، فَقَالَ: ((يَا أَبَا ذَرٍّ أَتَدْرِي أَيْنَ تَغْرُبُ الشَّمْسُ؟ قُلْتُ : اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ : ((فَإِنَّهَا تَذْهَبُ حَتَّى تَسْجُدَ تَحْتَ الْعَرْشِ، فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى ﴿وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ﴾)). [راجع: ٣١٩٩]

4803. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने

٤٨٠٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا

बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अल्लाह तआला के फ़र्मान, और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है, के बारे में सवाल किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका ठिकाना अर्श के नीचे है। (राजेअ : 3199)

وَكِيعٌ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ : سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا﴾ قَالَ : ((مُسْتَقَرُّهَا تَحْتَ الْعَرْشِ)). [راجع: ٣١٩٩]

तश्रीह : इब्ने कष़ीर और क़स्तलानी (रह़) ने कहा कि अर्श कुर्रबी नहीं है जैसे अहले हयआत समझते हैं बल्कि वो एक कुबा है। उसमें पाये हैं जिसको फ़रिश्ते थामे हुए हैं। तो अर्श आदमियों की सर की जानिब ऊपर की तरफ़ है। फिर वो दिन को सूरज अर्श के बहुत क़रीब होता है और आंधी रात के वक़्त चौथे आसमान पर अपने मुक़ाम में अर्श से दूर होता है, उसी वक़्त सज्दा करता है और उसको मश्रिक़ की तरफ़ जाने की और वहाँ से निकलने की इजाज़त मिलती है। सज्दे से उसकी आजिज़ी और इंक़ियाद मुराद है। मैं कहता हूँ ये उस ज़माने की तक़रीरें हैं जब ज़मीन का कुर्रबी होना और ज़मीन की तरफ़ आबादी होना उसका इल्म अच्छी तरह लोगों को न था। अब ये बात तजुर्बा और मुशाहिदा से षाबित हो गई है कि ज़मीन कुर्रबी है लेकिन उसमें हकीमों का इख़्तिलाफ़ है कि ज़मीन आफ़ताब के गिर्द घूम रही है या आफ़ताब ज़मीन के गिर्द घूम रहा है। हाल के हकीमों ने पहला क़ौल इख़्तियार किया है और ह़दीष़ से दूसरे क़ौल की ताईद हुई है। अब जब अर्श सब जानिब से ज़मीन के ऊपर हो तो उसका भी करवी होना ज़रूरी है और बाए'तिबार इख़्तिलाफ़ आफ़ाक़ के हर आन में कहीं न कहीं तुलूअ हो रहा है कहीं न कहीं ग़ुरूब। इस सूरत में ह़दीष़ में इश्काल पैदा होगा और उसका जवाब ये है कि सज्दे से इंक़ियाद और ख़ुज़ूअ मुराद है तो वो हर वक़्त अर्श के तले गोया सज्दे में है और परवरदिगार से आगे बढ़ने की इजाज़त मांग रहा है। क़यामत के क़रीब ये इजाज़त उसको न मिलेगी और हुक्म होगा कि जिधर से आया है उधर लौट जा तो वो फिर मग़रिब से नमूदार होगा। वल्लाहु आलम आमन्ना बिल्लाहि व कमा क़ाला रसूलुल्लाहु (ﷺ) (वहीदी)

वश्शम्सु तज्री लिमुस्तकर्रिल्लहा क़ाल साहिबुल्लम्आत क़द ज़ुकिर लहू फ़ित्तफ़ासीरि वुजूहुन गैरहा फ़ी हाज़ल्हदीषि व ला शक्क अन्न मा वक़अ फिल्हदीषिल्मुत्तफ़क़ि अलैहि हुवल्मुअतबरू वल्मुअतमदु वल्अजब मिल्बैज़ावी अन्नहू ज़कर वुजूहन फ़ी तफ़्सीरिही व लम यज़्कुर हाज़ल्वज्ह व लअल्लहू औक़अहू तफ़्लसहू नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक व फ़ी कलामिस्सलैबी अयज़न मा युश्इरू लिज़ैक़िस्सदरि नस्अलुल्लाहल्आफ़ियत (हाशिया बुख़ारी पेज नं. 709) साहिबे लम्आत ने कहा कि अल्लाह तआला के इस फ़र्मान **वश्शम्सु तज्रि अल् अख़** (और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है) के बारे में तफ़्सीरों में दूसरी बातें बयान की गई हैं और इस ह़दीष़ के मज़्मून को छोड़ दिया गया है। उसमें शक नहीं कि मज़्कूरा बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष़ में सूरज के बारे में जो बयान किया गया है वही क़ाबिले ए'तिमाद व ए'तिबार है। इमाम बैज़ावी पर तअज्जुब होता है कि उन्होंने अपनी तफ़्सीर में सूरज की हालत पर बहुत सी वजूहात बयान की हैं और वो वजह और बयान छोड़ दिया है जो इस ह़दीष़ में है, ये शायद उन पर यूनानी फ़ल्सफ़ा का अषर है। अल्लाह की पनाह और इस मौक़े पर अल्लामा तीबी (रह़) ने जो कहा है उससे भी सीने में तंगी और भिंचाव पैदा होता है (जिसे शरहे सद्र के साथ कुबूल नहीं किया जा सकता)।

बाब सूरह साफ़्फ़ात की तफ़्सीर

[٣٧] باب سورة والصَّافَّاتِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

मुजाहिद (रह) ने कहा (सूरह सबा मे जो है) व यक़्ज़िफ़ूना

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ.

बिल ग़ैबि मिम्मकानिम् बईद उसका मतलब ये है कि दूर ही ग़ैब के गोले फेंकते रहते हैं और यक़्ज़िफ़ूना मिन कुल्लि जानिब का मतलब ये है कि शैतानों पर हर तरफ़ से मार पड़ती है। व लहुम अज़ाबुन वासिब या'नी हमेशा का अज़ाब (या सख़्त अज़ाब) तातूनिना अनिल् यमीन का मतलब ये है कि काफ़िर शैतानों से कहेंगे तुम हक़ बात की तरफ़ से हमारे पास आते थे। ग़ौलुन का मा'नी पेट का दरिया (या सर का दर्द) वला हुम यंज़िफ़ून और न उनकी अक़्ल में फ़ितूर आएगा। क़रीन शैतान। यहरिऊना दौड़ाए जाते हैं। यज़्फ़ूना नज़दीक नज़दीक पैर रखकर दौड़ रहे हैं। व बैनल् जन्नता नसबा क़ुरैश के काफ़िर फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ और उनकी मांएं सरदार जिन्नों की बेटियों (परियों) को क़रार देते थे। व लक़द अलिमतिल् जिन्नतु इन्नहुम लमुहज़रून या'नी जिन्नों को मा'लूम है कि उनको क़यामत के दिन हिसाब के लिये हाज़िर होना पड़ेगा और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा इन्ना लनहनुस्साफ़्फ़ून ये फ़रिश्तों का क़ौल है। सिरातुल जहीम सवाउल जहीम दोनों के मा'नी वसतुल जहीम के हैं या'नी जहन्नम के बीचो-बीच। ल शौबन मिन हमीम या'नी उनके खाने में गर्म खोलते हुए पानी की मलूनी की जाएगी। मदहूरा धुत्कारा हुआ। बयज़ा मक्नून बंधे हुए मोती। व तरक्ना अलैहि फ़िल् आख़िरीना उसका ज़िक्र ख़ैर पिछले लोगों में बाक़ी रखा। यस्तस्ख़िरूना ठठ्ठा करते हैं। बअला के मा'नी रब, मा'बूद (यमन वालों की लुग़त में) अस्बाब से आसमान मुराद हैं।

مَكَانٍ بَعِيدٍ﴾ : مِنْ كُلِّ مَكَانٍ، وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ. يُرْمَوْنَ. وَاصِبٌ دَائِمٌ. لاَزِبٌ لاَزِمٌ. تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ يَعْنِي الْحَقَّ. اَلْكُفَّارُ تَقُولُهُ لِلشَّيْطَانِ. ﴿غَوْلٌ﴾ : وَجَعُ بَطْنٍ. ﴿يُنْزَفُونَ﴾ لاَ تَذْهَبُ عُقُولُهُمْ. ﴿قَرِينٌ﴾ شَيْطَانٌ. ﴿يُهْرَعُونَ﴾ كَهَيْئَةِ الْهَرْوَلَةِ. ﴿يَزِفُّونَ﴾ النَّسَلاَنُ فِي الْمَشْيِ. ﴿وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا﴾ قَالَ كُفَّارُ قُرَيْشٍ : الْمَلاَئِكَةُ بَنَاتُ اللهِ، وَأُمَّهَاتُهُمْ بَنَاتُ سَرَوَاتِ الْجِنِّ، وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ﴾ سَتُحْضَرُونَ لِلْحِسَابِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿لَنَحْنُ الصَّافُّونَ﴾ الْمَلاَئِكَةُ. ﴿صِرَاطِ الْجَحِيمِ﴾ سَوَاءِ الْجَحِيمِ. وَوَسَطِ الْجَحِيمِ. لَشَوْبًا. مُخْلَطٌ طَعَامُهُمْ وَيُسَاطُ بِالْحَمِيمِ. مَدْحُورًا: مَطْرُودًا. بَيْضٌ مَكْنُونٌ اللُّؤْلُؤُ الْمَكْنُونُ. ﴿وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الآخِرِينَ﴾ يُذْكَرُ بِخَيْرٍ. : يَسْتَسْخِرُونَ يَسْخَرُونَ. بَعْلاً رَبًّا. الأَسْبَابُ : السَّمَاءُ.

तश्रीह : सूरह साफ़्फ़ात मक्की है। 182 आयात और पाँच रुकूअ हैं। आयत **वस् साफ़्फ़ाति सफ़्फ़ा** में सफ़ें बाँधने वाले फ़रिश्तों और मुजाहिदीन की क़सम है फिर हालत जंग में दुश्मनों पर अहकामे इलाही में मुनासिब मौक़े पर सख़्त ज़जर करने वालों की क़सम है, फिर उसी हालत में क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने वालों की। उन क़समों का जवाब ये है कि तुम्हारा मा'बूद बेशक सिर्फ़ एक है मुतअद्दिद (अनेक) नहीं।

बाब 1 : आयत 'व इन्न यूनुस लमिनल्मुर्सलीन' की तफ़्सीर में बिला शुब्हा यूनुस (अ) रसूलों में से थे

١- باب قَوْلُهُ ﴿وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ﴾

4804. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी के लिये मुनासिब नहीं

٤٨٠٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ

رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يَكُونَ خَيْرًا مِنَ ابْنِ مَتَّى)).

[راجع: ٣٤١٢]

कि वो यूनुस बिन मत्ता (अलैहि.) से बेहतर होने का दा'वा करे। (राजेअ़ : 3412)

٤٨٠٥- حدثني إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ هِلاَلِ بْنِ عَلِيٍّ مِنْ بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَالَ: أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّيٍّ فَقَدْ كَذَبَ)).

[راجع: ٣٤١٥]

4805. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे बनी आ़मिर बिन लवी के हिलाल बिन अ़ली ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स ये दा'वा करे कि मैं यूनुस बिन मत्ता (अ़लैहि.) से बेहतर हूँ वो झूठा है। (राजेअ़ : 3415)

[٣٨] باب سورة ﴿ص﴾

बाब सूरह स़ाद की तफ़्सीर

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है जिसमें 88 आयत और 5 रुकूअ़ हैं। जब अबू त़ालिब बीमार हुए तो कुफ़्फ़ारे क़ुरैश जिनमें अबू जहल भी था आँह़ज़रत (ﷺ) की शिकायत करने आए कि वो हमारे मा'बूदों की हिजू बयान करते हैं। अबू त़ालिब ने उनके सामने आप (ﷺ) को बुलाकर पूछा, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं एक ही बात कहता हूँ अगर ये लोग मान लें तो सारा मुल्क अ़रब उनका मुत़ीअ़ हो जाए और अ़जम जिज़्या देवे। लोगों ने कहा एक बात क्या ऐसी दस बातें भी हों तो हम मानने के लिये तैयार हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया वो एक बात **ला इलाहा इल्लल्लाहु** कहना है। ये सुनते ही कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ख़फ़ा होकर खड़े हो गये और कहने लगे कि अरे अ़जीब बात है इसने सब मा'बूदों का एक ही मा'बूद कर दिया। इस पर सूरह स़ाद नाज़िल हुई।

٤٨٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْعَوَّامِ قَالَ: سَأَلْتُ مُجَاهِدًا عَنِ السَّجْدَةِ فِي ص قَالَ: سُئِلَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ: ﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهِ﴾ وَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَسْجُدُ فِيهَا.

[راجع: ٣٤٢١]

4806. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़वाम बिन ह़ौशब ने कि मैंने मुजाहिद से सूरह स़ाद के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि ये सवाल ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी किया गया था तो उन्होंने इस आयत की तिलावत की, यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी थी पस आप भी इन्हीं की हिदायत की इत्तिबाअ़ करें। और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इसमें सज्दा किया करते थे। (राजेअ़ : 3421)

٤٨٠٧- حدثني مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ الطَّنَافِسِيُّ عَنِ الْعَوَّامِ قَالَ: سَأَلْتُ مُجَاهِدًا عَنْ سَجْدَةِ

4807. मुझसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ज़हली ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद त़नाफ़िसी ने, उनसे अ़वाम बिन ह़वेशिब ने बयान किया कि मैंने मुजाहिद से सूरह स़ाद में सज्दा के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास

ص فَقَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ مِنْ أَيْنَ سَجَدْتَ؟ فَقَالَ : أَوْ مَا تَقْرَأُ ﴿وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهِ﴾ فَكَانَ دَاوُدُ مِمَّنْ أُمِرَ نَبِيُّكُمْ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَقْتَدِيَ بِهِ، فَسَجَدَهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. عُجَابٌ عَجِيبٌ. الْقِطُّ. الصَّحِيفَةُ هُوَ هَهُنَا صَحِيفَةُ الْحَسَنَاتِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ فِي عِزَّةٍ مُعَازِّينَ. الْمِلَّةِ الآخِرَةِ. مِلَّةُ قُرَيْشٍ. الاخْتِلاَقُ الْكَذِبُ. الأَسْبَابُ طُرُقُ السَّمَاءِ فِي أَبْوَابِهَا. ﴿جُنْدٌ مَا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ﴾ يَعْنِي قُرَيْشًا. أُولَئِكَ الأَحْزَابُ الْقُرُونُ الْمَاضِيَةُ. فَوَاقٌ رُجُوعٌ. قِطَّنَا عَذَابَنَا. ﴿اتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا﴾ أَحَطْنَا بِهِمْ. أَتْرَابٌ: أَمْثَالٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الأَيْدُ الْقُوَّةُ فِي الْعِبَادَةِ. الأَبْصَارُ الْبَصَرُ فِي أَمْرِ اللهِ. ﴿حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي﴾ مِنْ ذِكْرِ. طَفِقَ مَسْحًا: يَمْسَحُ أَعْرَافَ الْخَيْلِ وَعَرَاقِيبَهَا. الأَصْفَادِ الْوَثَاقِ.

[راجع: ٣٤٢١]

(रज़ि.) से पूछा था कि इस सूरत में आयते सज्दा के लिये दलील क्या है? उन्होंने कहा क्या तुम (सूरत अन्आम) में ये नहीं पढ़ते कि, और उनकी नस्ल से दाऊद और सुलैमान हैं, यही वो लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने ये हिदायत दी थी, सो आप भी उनकी हिदायत की इत्तिबाअ करें। दाऊद (अलैहि.) भी उनमें से थे जिनकी इत्तिबाअ का आँहुज़ूर (ﷺ) को हुक्म था (चूँकि दाऊद अलैहि. के सज्दे का ज़िक्र इसमें है इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने भी इस मौक़े पर सज्दा किया) उ़जाब का मा'नी अजीब अल्क़ित्त क़ित्तुन कहते हैं काग़ज़ के टुकड़े (पर्चे) को यहाँ नेकियों का पर्चा मुराद है (या हिसाब का पर्चा) और मुजाहिद (रह) ने कहा फ़ी इ़ज़्ज़ति का मा'नी ये है कि वो शरारत व सरकशी करने वाले हैं। अलमिल्लतिल आख़िरा से मुराद क़ुरैश का दीन है। इख़्तिलाक़ से मुराद झूठ। अल अस्बाब आसमान के रास्ते दरवाज़े मुराद हैं । जुन्दुम् मा हुनालिकल् आयत से क़ुरैश के लोग मुराद हैं। ऊलाइकल् अह़ज़ाब से अगली उम्मतें मुराद हैं जिन पर अल्लाह का अ़ज़ाब उतरा। फ़वाक़ का मा'नी फिरना, लौटना। अ़ज़्ज़िल लना क़ित्तना में क़ित्त से अ़ज़ाब मुराद है। इत्तख़ज़्नाहुम सिख़रिय्या हमने उनको ठट्ठे में घेर लिया था। अतराब जोड़ वाले और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा अयदन का मा'नी इबादत की क़ुव्वत। अल अब्सार अल्लाह के कामों को ग़ौर से देखने वाले। हुब्बल ख़ैरि अन् ज़िक्र रब्बी में अ़नमिन के मा'नी में है। दाफ़िक़ मस्हा घोड़ों के पैर और अयाल पर मुहब्बत से हाथ फेरना शुरू किया। या बक़ौल कुछ तलवार से उनको काटने लगे (क़ौलहू व तफ़िक़ मस्हम्बिस्सूक़ि वल आनाक़ि अय यम्सहु आराफ़ुल खैलि अराक़ीबुहा हिबालहा) (हाशिया बुख़ारी) अल्अस़्फ़ाद के मा'नी ज़ंजीरें। (राजेअ़ : 3421)

١- باب قَوْلِهِ :

﴿هَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ﴾

बाब 1 : आयत 'हब्ली मुल्कन' की तफ़्सीर में

और मुझे ऐसी सल्तनत दे कि मेरे बाद किसी को मुयस्सर न हो, बेशक तू बहुत बड़ा देने वाला है।

٤٨٠٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحٌ وَمُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ شُعْبَةَ

4808. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे रौह बिन उ़बादा और मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने और

عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ عِفْرِيتًا مِنَ الْجِنِّ تَفَلَّتَ عَلَيَّ الْبَارِحَةَ، أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا لِيَقْطَعَ عَلَيَّ الصَّلاَةَ، فَأَمْكَنَنِي اللهُ مِنْهُ. وَأَرَدْتُ أَنْ أَرْبِطَهُ إِلَى سَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ، حَتَّى تُصْبِحُوا وَتَنْظُرُوا إِلَيْهِ كُلُّكُمْ، فَذَكَرْتُ قَوْلَ أَخِي سُلَيْمَانَ ﴿رَبِّ هَبْ لِي مُلْكًا لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي﴾)). قَالَ رَوْحٌ فَرَدَّهُ خَاسِئًا.

[راجع: ٤٦١]

उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, गुज़िश्ता रात एक सरकश जिन्न अचानक मेरे पास आया या इसी तरह का कलिमा आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ताकि मेरी नमाज़ ख़राब करे लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे उस पर क़ुदरत दे दी और मैंने सोचा कि उसे मस्जिद के सुतून से बाँध दूँ ताकि सुबह के वक़्त तुम सब लोग भी उसे देख सको। फिर मुझको अपने भाई सुलैमान (अलैहि.) की दुआ याद आ गई कि, ऐ मेरे रब! मुझे ऐसी सल्तनत अता कर कि मेरे बाद किसी को मयस्सर न हो। रौह ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उस जिन्न को ज़िल्लत के साथ भगा दिया। (राजेअ : 461)

٢- باب قَوْلُهُ: ﴿وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ﴾

बाब 2 : आयत 'व मा अना मिनल्मुतकल्लिफ़ीन' की तफ़्सीर में,

और न मैं तकल्लुफ़ करने वालों से हूँ।

٤٨٠٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ مَنْ عَلِمَ شَيْئًا فَلْيَقُلْ بِهِ، وَمَنْ لَمْ يَعْلَمْ فَلْيَقُلْ: اللهُ أَعْلَمُ. فَإِنَّ مِنَ الْعِلْمِ أَنْ يَقُولَ لِمَا لاَ يَعْلَمُ اللهُ أَعْلَمُ. قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ لِنَبِيِّهِ ﷺ: ﴿قَالَ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ﴾ وَسَأُحَدِّثُكُمْ عَنِ الدُّخَانِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا قُرَيْشًا إِلَى الإِسْلاَمِ، فَأَبْطَؤُوا عَلَيْهِ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ))، فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ فَحَصَّتْ كُلَّ شَيْءٍ، حَتَّى أَكَلُوا الْمَيْتَةَ وَالْجُلُودَ، حَتَّى

4809. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उन्होंने कहा ऐ लोगों! जिस शख़्स को किसी चीज़ का इल्म हो तो वो उसे बयान करे अगर इल्म न हो तो कहे कि अल्लाह ही को ज़्यादा इल्म है क्योंकि ये भी इल्म ही है कि जो चीज़ न जानता हो उसके बारे में कह दे कि अल्लाह ही ज़्यादा जानने वाला है। अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) से भी कह दिया था कि, आप कह दीजिए कि मैं तुमसे इस क़ुर्आन या तब्लीग़े वह्य पर कोई उज्रत नहीं चाहता हूँ और न मैं बनावट करने वाला हूँ, और मैं दुख़ान (धुएँ) के बारे में बताऊँगा (जिसका ज़िक्र क़ुर्आन में आया है) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ुरैश को इस्लाम की दा'वत दी तो उन्होंने ताख़ीर की, आँहज़रत (ﷺ) ने उनके हक़ में बद् दुआ की ऐ अल्लाह! उन पर यूसुफ़ (अलैहि.) के ज़माने की सी क़हतसाली के ज़रिये मेरी मदद कर। चुनाँचे क़हत पड़ा और इतना ज़बरदस्त कि हर चीज़ ख़त्म हो गई और लोग मुरदार और चमड़े खाने पर मजबूर हो गये।

جَعَلَ الرَّجُلُ يَرَى بَيْنَهُ وَبَيْنَا السَّمَاءِ دُخَانًا مِنَ الْجُوعِ. قَالَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ، يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ قَالَ فَدَعَوْا ﴿رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ. أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُبِينٌ. ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَجْنُونٌ إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلاً، إِنَّكُمْ عَائِدُونَ. أَفَيُكْشَفُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾ قَالَ: فَكُشِفَ، ثُمَّ عَادُوا فِي كُفْرِهِمْ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ يَوْمَ بَدْرٍ. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ﴿يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ﴾.

[راجع: ١٠٠٧]

भूख की शिद्दत की वजह से ये हाल था कि आसमाँ की तरफ़ धुआँ ही धुआँ नज़र आता। उसी के बारे में अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि, पस इंतिज़ार करो उस दिन का जब आसमान खुला हुआ धुआँ लाएगा जो लोगों पर छा जाएगा। ये दर्दनाक अज़ाब है। बयान किया कि फिर क़ुरैश दुआ करने लगे कि, ऐ हमारे रब! इस अज़ाब को हमसे हटा ले तो हम ईमान लाएँगे लेकिन वो नसीहत सुनने वाले कहाँ हैं उनके पास तो रसूल साफ़ मुअज़िज़ात व दलाइल के साथ आ चुका और वो उससे मुँह मोड़ चुके हैं और कह चुके हैं कि इसे तो सिखाया जा रहा है, ये मज्नून है, बेशक हम थोड़े दिनों के लिये उनसे अज़ाब हटा लेंगे यक़ीननन तुम फिर कुफ्र ही की तरफ़ लौट जाओगे क्या क़यामत में भी अज़ाब हटाया जाएगा। इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर ये अज़ाब तो उनसे दूर कर दिया गया लेकिन जब वो दोबारा कुफ्र में मुब्तला हो गये तो जंगे बद्र में अल्लाह ने उन्हें पकड़ा। अल्लाह तआला के इस इर्शाद में उसी तरफ़ इशारा है कि, जिस दिन हम सख़्त पकड़ करेंगे, बिला शुब्हा हम बदला लेने वाले हैं। (राजेअ : 1007)

तश्रीह : ये आख़िरी कलाम हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) का क़ौल है जिसका मतलब ये है कि अगर आज दुनिया का अज़ाब जो क़हत की सूरत में उन पर नाज़िल हुआ है उनसे दूर कर दिया जाए तो क्या क़यामत में भी ऐसा मुम्किन है? नहीं वहाँ तो उनकी बड़ी सख़्त पकड़ होगी और कोई चीज़ अल्लाह के अज़ाब से उन्हें न बचा सकेगी।

[٣٩] باب سورة ﴿الزُّمَرُ﴾

बाब सूरह ज़ुमर की तफ़्सीर में

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿يَتَّقِي بِوَجْهِهِ﴾ يُجَرُّ عَلَى وَجْهِهِ فِي النَّارِ وَهُوَ قَوْلُهُ تَعَالَى : ﴿أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ﴾ ﴿ذِي عِوَجٍ﴾ : لَبْسٍ. ﴿وَرَجُلاً سَلَمًا لِرَجُلٍ﴾ : مَثَلٌ لِآلِهَتِهِمُ الْبَاطِلِ وَالإِلَهِ الْحَقِّ. ﴿وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ﴾ بِالأَوْثَانِ. ﴿خَوَّلْنَا﴾ أَعْطَيْنَا. ﴿وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ﴾ الْقُرْآنُ.

मुजाहिद ने कहा यत्तक़ी बि वज्हिही से ये मुराद है कि मुँह के बल दोज़ख़ में घसीटा जाएगा जैसे इस आयत में फ़र्माया अफ़मय्युल्क़ी फ़िन्नार ख़ैरल आयत ज़ी अवजा के मा'नी शुब्हा वाला। व रजुला सलमन् लि रजुल ये एक मिष़ाल है मुश्रिकीन के मा'बूदाने बातिला की और मा'बूदे बरहक़ की। व यख़ूफ़ूनका बिल्लज़ीना मिन दूनिही में मिन दूनिही से मुराद बुत हैं (या'नी मुश्रिकीन अपने झूठे मअबूदों से तुझको डराते हैं) ख़व्वल्लना के मा'नी हमने दिया वल्लज़ी जाआ बिस्सिदक़ि से क़ुर्आन मुराद है और सिदक़ से मुसलमान मुराद है जो क़यामत के दिन परवरदिगार के सामने आकर अर्ज़ करेगा यही क़ुर्आन है जो तूने दुनिया में मुझको इनायत किया था मैंने उस

﴿وَصَدَّقَ بِهِ﴾ : الْمُؤْمِنُ. يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَقُولُ : هَذَا الَّذِي أَعْطَيْتَنِي عَمِلْتُ بِمَا فِيهِ. ﴿مُتَشَاكِسُونَ﴾ الشَّكِسُ الْعَسِرُ لاَ يَرْضَى بِالإِنْصَافِ. ﴿وَرَجُلاً سَلَمًا﴾ وَيُقَالُ ﴿سَالِمًا﴾ صَالِحًا. ﴿اشْمَأَزَّتْ﴾ نَفَرَتْ ﴿بِمَفَازَتِهِمْ﴾ مِنَ الْفَوْزِ. ﴿حَافِّينَ﴾ أَطَافُوا بِهِ مُطِيفِينَ ﴿بِحِفَافَيْهِ﴾ بِجَوَانِبِهِ. ﴿مُتَشَابِهًا﴾: لَيْسَ مِنَ الاشْتِبَاهِ. وَلَكِنْ يُشْبِهُ بَعْضُهُ بَعْضًا فِي التَّصْدِيقِ.

पर अमल किया। मुतशाकिसूना शकिस से निकला है शकिस बद मिज़ाज तकरारी आदमी को कहते हैं जो इंसाफ़ की बात पसंद न करे। सलमा और सालिमा अच्छे पूरे आदमी को कहते हैं इश्मअज़्ज़त के मा'नी नफ़रत करते हैं, चिढ़ते हैं। बि मफ़ाज़तिहिम फ़वज़न से निकला है मुराद कामयाबबी है। हाफ़्फ़ियनि के मा'नी गिर्दा गिर्द उसके चारों तरफ़। मुत्शाबिहा इश्तिबाह से नहीं बल्कि तशाबहा से निकला है या'नी उसकी एक आयत दूसरी आयत की ताईद व तस्दीक़ करती है।

तश्रीह : सूरह ज़ुमर मक्की है इसमें 75 आयात और 8 रुकूअ हैं। तौहीदे ख़ालिस के बयान से सूरत का आग़ाज़ हुआ है। अल्लाह तआला इसे समझने की मुसलमान को तौफ़ीक़ बख़्शे आमीन। लफ़्ज़े ज़ुमर ज़ुम्रतुन की जमा है। ज़ुम्रतुन गिरोह को कहते हैं। ज़ुमर से बहुत से गिरोह मुराद हैं। ख़ात्मा सूरत पर काफ़िरों और मोमिनों का बहुत से गिरोहों की शक्ल में क़यामत के दिन हाज़िर होने का बयान है। इसीलिये इसे इस लफ़्ज़ से मौसूम किया गया।

١- باب قَوْلُهُ :

﴿يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ، لاَ تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللهِ، إِنَّ اللهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا، إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ﴾.

बाब 1 : 'क़ुल या इबादियल्लज़ीन' की तफ़्सीर

आप कह दो कि ऐ मेरे बन्दों! जो अपने नफ़्सों पर ज़्यादतियाँ कर चुके हो, अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो। बेशक अल्लाह सारे गुनाह बख़्श देगा। बेशक वो बहुत ही बख़्शने वाला और बड़ा मेहरबान है।

٤٨١٠- حدثني إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ، قَالَ يَعْلَى: إِنَّ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ أَخْبَرَهُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَنَّ نَاسًا مِنْ أَهْلِ الشِّرْكِ كَانُوا قَدْ قَتَلُوا وَأَكْثَرُوا، وَزَنَوْا وَأَكْثَرُوا، فَأَتَوْا مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: إِنَّ الَّذِي تَقُولُ وَتَدْعُو إِلَيْهِ لَحَسَنٌ، لَوْ تُخْبِرُنَا أَنَّ لِمَا عَمِلْنَا كَفَّارَةً. فَنَزَلَ ﴿وَالَّذِينَ لاَ

4810. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उनसे यअ़ला बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्हें सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि मुश्रिकीन में कुछ ने क़त्ल का गुनाह किया था और कष्रत से किया था। इसी तरह ज़िनाकारी भी कष्रत से करते रहे थे। फिर वो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ किया कि आप जो कुछ कहते हैं और जिसकी तरफ़ दा'वत देते हैं (या'नी इस्लाम) यक़ीनन अच्छी चीज़ है, लेकिन हमें ये बताइये कि अब तक हमने जो गुनाह किये हैं वो इस्लाम लाने से मुआफ़ होंगे या नहीं? इस पर ये आयत नाज़िल हुई। और वो लोग जो अल्लाह के सिवा और किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते और

किसी भी जान को क़त्ल नहीं करते जिसका क़त्ल करना अल्लाह ने हराम किया है, हाँ मगर हक़ के साथ, और आयत नाज़िल हुई, आप कह दें कि ऐ मेरे बन्दों! जो अपने नफ़्सों पर ज़्यादतियाँ कर चुके हो, अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो। बेशक अल्लाह सारे गुनाहों को मुआफ़ कर देगा। बेशक वो बड़ा ही बख़्शने वाला निहायत ही मेहरबान है।

يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ، وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ، وَلاَ يَزْنُونَ﴾. وَنَزَلَ ﴿قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ لاَ تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللهِ﴾.

बाब 2 : आयत 'व मा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़दरिही' की तफ़्सीर में,

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾

और इन लोगों ने अल्लाह की क़द्र और अ़ज़्मत न पहचानी जैसी कि उसकी क़द्र और अ़ज़्मत पहचाननी चाहिये थी।

4811. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे उ़बैदह सलमानी ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि उ़लम-ए-यहूद में से एक शख़्स रसूले करीम (ﷺ) के पास आया और कहा कि ऐ मुहम्मद! हम तौरात में पाते हैं कि अल्लाह तआ़ला आसमानों को एक उँगली पर रख लेगा इस तरह ज़मीन को एक उँगली पर, पेड़ों को एक उँगली पर, पानी और मिट्टी को एक उँगली पर और तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर, फिर फ़र्माएगा कि मैं ही बादशाह हूँ। आँहज़रत (ﷺ) इस पर हंस दिये और आपके सामने के दांत दिखाई देने लगे। आपका ये हंसना उस यहूदी आ़लिम की तस्दीक़ में था। फिर आपने इस आयत की तिलावत की। और उन लोगों ने अल्लाह की अ़ज़्मत न की जैसी अ़ज़्मत करना चाहिये थी और हाल ये है कि सारी ज़मीन उसी की मुट्ठी में होगी क़यामत के दिन और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे। वो इन लोगो के शिर्क से बिल्कुल पाक और बुलन्दतर है। (दीगर मक़ाम : 7414, 7451, 7513)

٤٨١١- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : جَاءَ حَبْرٌ مِنَ الأَحْبَارِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، إِنَّا نَجِدُ أَنَّ اللهَ يَجْعَلُ السَّمَاوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالشَّجَرَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالْمَاءَ وَالثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ، وَسَائِرَ الْخَلاَئِقِ عَلَى إِصْبَعٍ، فَيَقُولُ : أَنَا الْمَلِكُ. فَضَحِكَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ تَصْدِيقًا لِقَوْلِ الْحَبْرِ، ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾.

[أطرافه في : ٧٤١٤، ٧٤٥١، ٧٥١٣].

तश्रीह : इस हदीष़ से परवरदिगार के लिये उँगलियाँ षाबित होती हैं क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उस यहूदी की तस्दीक़ की और ये अम्र महाल है कि आँहज़रत (ﷺ) बातिल की तस्दीक़ करें। अब कुछ लोगों का ये कहना कि तस्दीक़ल लहू रावी का गुमान है जो उसने अपने गुमान से कह दिया। हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) तस्दीक़ की राह से नहीं हंसे थे बल्कि उस यहूदी की बात को ग़लत जानकर, क्योंकि यहूद मुशब्बि और मुजस्सिमा थे। वो अल्लाह के लिये उँगलियाँ वग़ैरह षाबित करते थे, सहीह नहीं है कि किस लिये कि फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ ने मंसूर से रिवायत की उसमें ये भी है, **तअज्जबम्मिना क़ालहुल हिब्रू व तस्दीकल लहू** तिर्मिज़ी ने कहा ये हदीष़ हसन सहीह है। दूसरी सहीह हदीष़ में है, **मा मिन क़ल्बिन इल्ला वहुवा बयना इस्बअ़ैनि मिन असाबिइर्रहमान** और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की सहीह हदीष़ में,

है तअज्जुबम्मिन्ना कालहुल्हिब्रू व तस्दीक़ल्लहू मा मिन क़ल्बिन इल्ला व हुव बैन इस्बअयनि मिन असाबिइर्रहमान अतानिल्लैलत रब्बी फ़ी अहसिन सूरतिन फवज़अ यदहू बैन कतफ़य हत्ता वजत्तु बुर्द अनामिलिही बैन षदई अनामिल उँगलियों की पोरें। ग़र्ज़ उँगलियों का इष्बात परवरदिगार के लिये ऐसा ही है जैसे वज्हुन और यदैनि और क़दमुन और रजुलुन और जम्बुन वग़ैरह का और अहले हदीष का अक़ीदा उनकी निस्बत ये है कि ये सब अपने मा'नी ज़ाहिरी पर महमूल हैं लेकिन उनकी हक़ीक़त अल्लाह ही जानता है और मुतकल्लिमीन उन चीज़ों की तावील करते हैं क़ुदरत वग़ैरह से। मैं कहता हूँ मुहम्मद बिन सल्त रावी ने इस हदीष के रिवायत करते वक़्त छुँगलिया की तरफ़ इशारा किया फिर पास वाली उँगली की तरफ़ फिर उसके पास वाली उँगली की तरफ़, यहाँ तक कि अंगूठे तक पहुँचे और उससे अहले तावील का मज़हब रद्द होता है। (वहीदी)

बाब आयत 'वल्अर्ज़ु जमीअन क़बज़्तुहू यौमल्क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुन बियमीनिही सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून' की तफ़्सीर,

باب ﴿وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾.

4812. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, कहा कि मुझसे अब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद बिन मुसाफ़िर ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अबू सलमा और हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि क़यामत के दिन अल्लाह सारी ज़मीन को अपनी मुट्ठी में लेगा और आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा। फिर फ़र्माएगा, आज हुकूमत सिर्फ़ मेरी है। दुनिया के बादशाह आज कहाँ हैं? (दीगर मक़ाम : 6519, 7382, 7413)

٤٨١٢ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدِ بْنِ مُسَافِرٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ، وَيَطْوِي السَّمَاوَاتِ بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَقُولُ : أَنَا الْمَلِكُ، أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ؟)).

[أطرافه في : ٦٥١٩، ٧٣٨٢، ٧٤١٣].

बाब 4 : आयत 'व नुफ़िख़ फिस्सूरि फ़सइक़ मन फिस्समावात' की तफ़्सीर में,

٤ - باب قَوْلِهِ:

और सूर फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे जो आसमानों और ज़मीनों में हैं सिवा उसके जिसको अल्लाह चाहे, फिर दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फिर अचानक सबके सब देखते हुए उठ खड़े होंगे।

﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾.

4813. मुझसे हसन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अब्दुर्रहीम ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने, उन्हें आमिर ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िरी मर्तबा सूर फूँके जाने के बाद सबसे पहले अपना सर

٤٨١٣ - حدثني الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ

قال: ((إني أول من يرفع رأسه بعد النفخة الآخرة، فإذا أنا بموسى متعلق بالعرش فلا أدري، أكذلك كان أم بعد النفخة)). [راجع: ٢٤١١]

उठाने वाला मैं होऊँगा लेकिन उस वक़्त मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) को देखूँगा कि अ़र्श के साथ लिपटे हुए हैं, अब मुझे नहीं मा'लूम कि वो पहले ही से इसी त़रह़ थे या दूसरे सूर के बाद (मुझसे पहले उठकर अ़र्शे इलाही को थाम लेंगे) (राजेअ़ : 2411)

٤٨١٤- حدثنا عمر بن حفص، قال حدثنا أبي، قال حدثنا الأعمش قال سمعت أبا صالح قال : سمعت أبا هريرة عن النبي ﷺ قال: ((بين النفختين أربعون))، قالوا: يا أبا هريرة أربعون يوما؟ قال أبيت قال: أربعون سنة قال أبيت قال : أربعون شهرا : قال أبيت، ويبلى كل شيء من الإنسان إلا عجب ذنبه فيه يركب الخلق.

[طرفه في : ٤٩٣٥].

4814. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने अबू स़ालेह़ से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दोनों सूरों के फूँके जाने का दरम्यानी अ़र्सा चालीस है। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा, क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं फिर उन्होंने पूछा चालीस साल? उस पर भी उन्होंने इंकार किया। फिर उन्होंने पूछा चालीस महीने? उसके बारे में भी उन्होंने कहा कि मुझको ख़बर नहीं और हर चीज़ फ़ना हो जाएगी, सिवा रीढ़ की हड्डी के कि उसी से सारी मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (दीगर मक़ाम : 4935)

इस रिवायत में यूँ ही है लेकिन इब्ने मर्वदवैह की रिवायत में चालीस साल मज़्कूर हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है। ह़लीमी ने कहा अकष़र रिवायतें इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ास़ला होगा।

[٤٠] سورة ﴿المؤمن﴾

सूरतुल मोमिन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

قال مجاهد : ﴿حم﴾ مجازها مجاز أوائل السور، ويقال : بل هو اسم لقول شريح بن أبي أوفى العبسي.

يذكرني حاميم والرمح شاجر
فهلا تلا حاميم قبل التقدم

الطول: التفضل. داخرين خاضعين، وقال مجاهد : ﴿إلى النجاة﴾ الإيمان. ليس له دعوة يعني الوثن. ﴿يسجرون﴾ توقد بهم النار ﴿تمرحون﴾ تبطرون. وكان

मुजाहिद ने कहा ह़ामीम का मा'नी अल्लाह को मा'लूम है जैसे दूसरी सूरतों में जो हुरूफ़े मुक़त्तआत शुरू में आए हैं उनके बारे मे ह़क़ीक़ी मआ़नी स़िर्फ़ अल्लाह ही को मा'लूम हैं। कुछ ने कहा ह़ामीम क़ुर्आन या सूरत का नाम है जैसे शुरैह़ इब्ने अबी औफ़ा अ़ब्सी इस शेअ़र में कहता है जबकि नेज़ा जंग में चलने लगा। पढ़ता है ह़ामीम पहले पढ़ना था। अत्तौल के मा'नी एह़सान और फ़ज़्ल करना। दाख़िरीन के मा'नी ज़लील व ख़्वार होकर। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़) ने कहा उदऊ़कुम इलन्नजात से ईमान मुराद है। लयसा लहू दअ़वह् या'नी बुत किसी की दुआ़ क़ुबूल नहीं कर सकता। यस्जरून के मा'नी वो दोज़ख़ के ईंधन बनेंगे। तम्रहून के मा'नी तुम इतराते थे। और अ़लाअ बिन ज़ियाद

مشهور تابعي व मशहूर ज़ाहिद लोगों को दोज़ख़ से डरा रहे थे, एक शख़्स कहने लगा लोगों को अल्लाह की रहमत से मायूस क्यूँ करते हो? उन्होंने कहा मैं लोगों को अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद कैसे कर सकता हूँ मेरी क्या ताक़त है। अल्लाह पाक तो फ़र्माता है ऐ मेरे वो बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया (गुनाह किये) अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो। उसके साथ अल्लाह यूँ भी फ़र्माता है कि गुनाहगार दोज़ख़ी हैं, मगर मैं समझ गया तुम्हारा मतलब ये है कि बुरे काम करते रहो और जन्नत की ख़ुशख़बरी तुमको मिलती जाए। अल्लाह ने तो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को नेकियों पर ख़ुशख़बरी देने वाला और नाफ़र्मानों के लिये दोज़ख़ से डरानेवाला बनाकर भेजा है।

الْعَلَاءُ بْنُ زِيَادٍ يُذَكِّرُ النَّارَ، فَقَالَ رَجُلٌ: لِمَ تُقَنِّطُ النَّاسَ؟ قَالَ: وَأَنَا أَقْدِرُ أَنْ أُقَنِّطَ النَّاسَ؟ وَاللهُ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ: ﴿يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ، لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللهِ﴾ وَيَقُولُ: ﴿وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ﴾ وَلَكِنَّكُمْ تُحِبُّونَ أَنْ تُبَشَّرُوا بِالْجَنَّةِ عَلَى مَسَاوِي أَعْمَالِكُمْ. وَإِنَّمَا بَعَثَ اللهُ مُحَمَّدًا ﷺ مُبَشِّرًا بِالْجَنَّةِ لِمَنْ أَطَاعَهُ، وَمُنْذِرًا بِالنَّارِ مَنْ عَصَاهُ.

तश्रीह : सूरह मोमिन मक्की है और इसमें 85 आयात और नौ रुकूअ हैं। इसमें एक मर्दे मोमिन का ज़िक्र है जो दरबारे फ़िरऔन में अपना ईमान पोशिदा रखे हुए था जो फ़िरऔन की इस बात **ज़रूनी अक़्तुल मूसा** (अल मोमिन : 26) (तुम लोग मुझको मश्वरा दो कि मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ) के जवाब में बोल उठा **अतक़्तुलून रजुलन अंय्यक़ूल रब्बियल्लाह** (अल मोमिन : 28) (क्या तुम ऐसे आदमी को क़त्ल कर रहे हो जो ये कहता है कि मेरा रब अल्लाह है) उसी मर्दे मोमिन के नाम से सूरह मोमिन इस सूरह-ए-शरीफ़ा का नाम हुआ।

शे'र **यज़्कुरनी हामीन व र्रम्हु शाजिर** के तहत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं। या'नी लड़ाई शुरू होने से पहले पढ़ता तो फ़ायदा होता उसकी जान बच जाती। हुआ ये कि शुरैह जंग जमले में हज़रत अली (रज़ि.) की तरफ़ थे और मुहम्मद बिन तलहा बिन उबैदुल्लाह हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ थे एक स्याह अमामा बाँधे हुए। हज़रत अली (रज़ि.) ने अपने लश्कर वालों से फ़र्माया उस काले अमामे वाले को मत मारना, ये अपने बाप की तरफ़ से उनके साथ चला आया है। ख़ैर इसी बातचीत में शुरैह और मुहम्मद बिन तलहा का मुक़ाबला हो गया। जब भाला दोनों तरफ़ से चलने लगा तो मुहम्मद ने हामीम ऐन सीन क़ाफ़ में जो ये आयत है **क़ुल ला अस्अलुकुम अलैहि अज्रन इल्लल्मवद्दत फिल्क़ुर्बा** पढ़ी। कुछ ने कहा कि सूरह मोमिन की ये आयत पढ़ी **अतक़्तुलूना रजुलन अंय्यक़ूला रब्बियल्लाह**। हामीम से यही मुराद है। लेकिन शुरैह ने मुहम्मद बिन तलहा को मार डाला और ये शे'र पढ़ा या'नी जंग हो जाने के बाद फिर हामीम पढ़ने से फ़ायदा। जंग में आने से पेशतर ये पढ़ता तो अल्बत्ता मुफ़ीद होता।

4815. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे औज़ाई ने बयान किया, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी ने बयान किया, कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, आपने बयान किया कि मैंने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस (रज़ि.) से पूछा कि रसूले करीम (ﷺ) के साथ सबसे ज़्यादा सख़्त मामला मुश्रिकीन ने क्या किया था? हज़रत अब्दुल्लाह ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) का'बा के क़रीब

٤٨١٥ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ، قَالَ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيُّ، قَالَ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ قَالَ: قُلْتُ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَخْبِرْنِي بِأَشَدِّ مَا صَنَعَ الْمُشْرِكُونَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: بَيْنَا

رَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي بِفِنَاءِ الْكَعْبَةِ إِذْ أَقْبَلَ عُقْبَةُ بْنُ أَبِي مُعَيْطٍ فَأَخَذَ بِمَنْكِبِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَلَوَى ثَوْبَهُ فِي عُنُقِهِ فَخَنَقَهُ خَنْقًا شَدِيدًا، فَأَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ فَأَخَذَ بِمَنْكِبِهِ وَدَفَعَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَقَالَ: ﴿أَتَقْتُلُونَ رَجُلاً أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللهُ، وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ﴾. [راجع: ٣٦٧٨]

नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़्बा बिन अबी मुईत़ आया उसने आपका शाना मुबारक पकड़ा आपकी गर्दन मे अपना कपड़ा लपेट दिया और उस कपड़े से आपका गला बड़ी सख़्ती के साथ घोंटने लगा। इतने में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि) भी आ गये और उन्होंने इस बदबख़्त का मूँढ़ा पकड़कर उसे आँह़ज़रत (ﷺ) से जुदा किया और कहा कि क्या तुम एक ऐसे शख़्स को क़त्ल कर देना चाहते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वो तुम्हारे रब के पास से अपनी सच्चाई के लिये रोशन दलाइल भी साथ लाया है। (राजेअ़ : 3678)

[٤١] سورة ﴿حم السَّجْدَةِ﴾

सूरह ह़ामीम अस् सज्दा की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ طَاوُسٌ : عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿ائْتِيَا طَوْعًا﴾ أَعْطِيَا. ﴿قَالَتَا: أَتَيْنَا طَائِعِينَ﴾ أَعْطَيْنَا. وَقَالَ الْمِنْهَالُ عَنْ سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لاِبْنِ عَبَّاسٍ إِنِّي أَجِدُ فِي الْقُرْآنِ أَشْيَاءَ تَخْتَلِفُ عَلَيَّ، قَالَ : ﴿فَلاَ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلاَ يَتَسَاءَلُونَ﴾، ﴿وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ﴾، ﴿وَلاَ يَكْتُمُونَ اللهَ حَدِيثًا﴾ ﴿رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ﴾ فَقَدْ كَتَمُوا فِي هَذِهِ الآيَةِ وَقَالَ : ﴿أَمِ السَّمَاءُ بَنَاهَا إِلَى قَوْلِهِ دَحَاهَا﴾ فَذَكَرَ خَلْقَ السَّمَاءِ قَبْلَ خَلْقِ الأَرْضِ، ثُمَّ قَالَ: ﴿أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ - إِلَى طَائِعِينَ﴾ فَذَكَرَ فِي هَذِهِ خَلْقَ الأَرْضِ قَبْلَ السَّمَاءِ وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَكَانَ اللهُ غَفُورًا رَحِيمًا عَزِيزًا حَكِيمًا سَمِيعًا بَصِيرًا﴾

त़ाऊस ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से नक़ल किया इतिया तौअ़न का मा'नी ख़ुशी से इत़ाअ़त कुबूल करो। अतैना ताएईन हमने ख़ुशी ख़ुशी इत़ाअ़त क़ुबूल की। अअ़त़यना हमने ख़ुशी से दिया। और मिन्हाल बिन अ़म्र असदी ने सईद बिन जुबैर से रिवायत किया कि एक शख़्स अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से कहने लगा मैं तो क़ुर्आन में एक के एक ख़िलाफ़ चंद बातें पाता हूँ। (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा) बयान कर। वो कहने लगा एक आयत में तो यूँ है फ़ला अन्साब बैनहुम क़यामत के दिन उनके दरम्यान कोई रिश्ते नाता बाक़ी नहीं रहेगा और न वो बाहम एक–दूसरे से कुछ पूछेंगे। दूसरी आयत में यूँ है, व अक़्बला बअ़ज़हुम अ़ला बअ़ज़ और क़यामत के दिन उनमें बअ़ज़ बअ़ज़ की त़रफ़ मुतवज्जह होकर एक–दूसरे से पूछेंगे (इस त़रह़ दोनों आयतों के बयान मुख़्तलिफ़ हैं) एक आयत में यूँ है वला यक्तुमूनल्लाह ह़दीष़ा (वो अल्लाह से कोई बात नहीं छुपा सकेंगे) दूसरी आयत मे है क़यामत के दिन मुश्रिकीन कहेंगे वल्लाहु रब्बना मा कुन्ना मुश्रिकीन हम अपने रब अल्लाह की क़सम खाकर कहते हैं कि हम मुश्रिक नहीं थे। इस आयत से ज़ाहिर होता है कि वो अपना मुश्रिक होना छुपाएँगे (इस त़रह़ इन दोनों आयतों के बयान मुख़्तलिफ़ हैं) एक जगह फ़र्माया अ अन्तुम अशहु ख़ल्क़न अमिस् समाउ बनाहा, आख़िर तक। इस आयत से ज़ाहिर कि आसमान ज़मीन से पहले पैदा हुआ।

फिर सूरह हामीम सज्दा में फ़र्माया इन्नकुम लतक्फ़ुरूना बिल्लज़ी ख़ल्क़ल अरज़ा फ़ी यौमयन इससे निकलता है कि ज़मीन आसमान से पहले पैदा हुई है (इस तरह दोनों में इख़्तिलाफ़ है) और फ़र्माया कानल्लाहु ग़फ़ूर्रहीमा (अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान था) अज़ीज़न हकीमा समीअम् बसीरा उनके मआनी से निकलता है कि अल्लाह इन सिफ़ात से ज़माना माज़ी में मौसूफ़ था, अब नहीं है। इब्ने अब्बास (रज़ि) ने जवाब में कहा कि ये जो फ़र्माया फ़ला अंसाब बैनहुम (उस दिन कोई नाता रिश्ता बाक़ी न रहेगा) ये उस वक़्त का ज़िक्र है जब पहला सूर फूँका जाएगा और आसमान व ज़मीन वाले सब बेहोश हो जाएँगे उस वक़्त रिश्ते नाते कुछ बाक़ी न रहेगा न एक–दूसरे को पूछेंगे (दहशत के मारे सब नफ़्सी नफ़्सी पुकारेंगे) फिर ये जो दूसरी आयत में है व अक़्बला बअ़ज़ुहुम (एक दूसरे के सामने आकर पूछताछ करेंगे) ये दूसरी दफ़ा सूर फूँके जाने के बाद का हाल है (जब मैदाने महशर में सब दोबारा ज़िन्दा होंगे और किसी क़दर होश ठिकाने आएगा) और ये जो मुश्रिकीन का क़ौल नक़ल किया है वल्लाहु रब्बना मा कुन्ना मुश्रिकीन (हमारे रब की क़सम हम मुश्रिक न थे) और दूसरी जगह फ़र्माया वला यक्तुमूनल्लाह हदीष़ अल्लाह से वो कोई बात न छुपा सकेंगे तो बात ये है कि अल्लाह पाक क़यामत के दिन ख़ालिस़ तौहीद वालों के गुनाह बख़्श देगा और मुश्रिकीन आपस में सलाह व मश्वरा करेंगे कि चलो हम भी चलकर दरबारे इलाही में कहें कि हम मुश्रिक न थे। फिर अल्लाह पाक उनके चेहरे पर मुहर लगा देगा और उनके हाथ पैर बोलना शुरू कर देंगे। उस वक़्त उनको मा'लूम हो जाएगा कि अल्लाह से कोई बात छुप नहीं सकती और उसी वक़्त काफ़िर ये आरज़ू करेंगे कि काश! वो दुनिया में मुसलमान होते (इस तरह ये दोनों आयतें मुख़्तलिफ़ नहीं हैं) और ये जो फ़र्माया कि ज़मीन को दो दिन में पैदा किया उसका मतलब ये है कि उसे फैलाया नहीं (सिर्फ़ उसका माद्दा पैदा किया) फिर आसमान को पैदा किया और दो दिन में उसको बराबर किया (उनके तब्क़ात मुरत्तब किये) उसके बाद ज़मीन को फैलाया और उसका फैलाना ये है कि उसमें से पानी निकाला घास चारा पैदा किया। पहाड़, जानवर, ऊँट वग़ैरह टीले जो जो उनके बीच मे हैं वो सब पैदा

فَكَأَنَّهُ كَانَ ثُمَّ مَضَى، فَقَالَ : ﴿فَلاَ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ﴾ فِي النَّفْخَةِ الأُولَى، ثُمَّ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ فَلاَ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ عِنْدَ ذَلِكَ وَلاَ يَتَسَاءَلُونَ. ثُمَّ فِي النَّفْخَةِ الآخِرَةِ ﴿أَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ﴾ وَأَمَّا قَوْلُهُ ﴿مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ﴾ ﴿وَلاَ يَكْتُمُونَ اللهَ﴾ فَإِنَّ اللهَ يَغْفِرُ لأَهْلِ الإِخْلاَصِ ذُنُوبَهُمْ. وَقَالَ الْمُشْرِكُونَ : تَعَالَوا نَقُولُ لَمْ نَكُنْ مُشْرِكِينَ، فَخُتِمَ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ فَتَنْطِقُ أَيْدِيهِمْ، فَعِنْدَ ذَلِكَ عُرِفَ أَنَّ اللهَ لاَ يُكْتَمُ حَدِيثًا، وَعِنْدَهُ ﴿يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا﴾ الآيَةَ وَخَلَقَ الأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ ثُمَّ خَلَقَ السَّمَاءَ، ثُمَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ فِي يَوْمَيْنِ آخَرَيْنِ ثُمَّ دَحَا الأَرْضَ، وَدَحْوُهَا أَنْ أَخْرَجَ مِنْهَا الْمَاءَ وَالْمَرْعَى وَخَلَقَ الْجِبَالَ وَالْجِمَالَ وَالآكَامَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي يَوْمَيْنِ آخَرَيْنِ فَذَلِكَ قَوْلُهُ: ﴿دَحَاهَا﴾ وَقَوْلُهُ: ﴿خَلَقَ الأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ﴾ فَجُعِلَتِ الأَرْضُ وَمَا فِيهَا مِنْ شَيْءٍ فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ، وَخُلِقَتِ السَّمَاوَاتُ فِي يَوْمَيْنِ ﴿وَكَانَ اللهُ غَفُورًا رَحِيمًا﴾ سَمَّى نَفْسَهُ ذَلِكَ، وَذَلِكَ قَوْلُهُ : أَيْ لَمْ يَزَلْ كَذَلِكَ فَإِنَّ اللهَ لَمْ يُرِدْ شَيْئًا إِلاَّ أَصَابَ بِهِ الَّذِي أَرَادَ فَلاَ يَخْتَلِفْ عَلَيْكَ الْقُرْآنُ فَإِنَّ كُلاًّ مِنْ عِنْدِ اللهِ. حدثنيه

يُوْسُفُ بْنُ عَدِىٍّ حَدَّثَنَا عُبَيْدُاللهِ بْنُ عَمْرٍ، وَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَبِى أُنَيْسَةَ عَنِ الْمِنْهَالِ بِهٰذَا.

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿مَمْنُونٍ﴾ مَحْسُوبٍ. أَقْوَاتَهَا أَرْزَاقَهَا. فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا: مِمَّا أَمَرَ بِهِ. نَحِسَاتٍ مَشَائِيمَ، وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ، تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ عِنْدَ الْمَوْتِ، اِهْتَزَّتْ: بِالنَّبَاتِ، وَرَبَتْ اِرْتَفَعَتْ، وَقَالَ غَيْرُهُ مِنْ أَكْمَامِهَا حِينَ تَطْلُعُ، لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي : أَي بِعَمَلِي، أَيْ أَنَا مَحْقُوقٌ بِهَذَا. سَوَاءً لِلسَّائِلِينَ : قَدَّرَهَا سَوَاءً. فَهَدَيْنَاهُمْ: دَلَلْنَاهُمْ عَلَى الْخَيْرِ وَالشَّرِّ كَقَوْلِهِ: ﴿وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ﴾ وَكَقَوْلِهِ : هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ. وَالْهُدَى الَّذِي هُوَ الْإِرْشَادُ بِمَنْزِلَةِ أَسْعَدْنَاهُ، مِنْ ذَلِكَ قَوْلُهُ : ﴿أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾ يُوزَعُونَ : يُكَفُّونَ. مِنْ أَكْمَامِهَا: قِشْرُ الْكُفُرَّى، هِيَ الْكُمُّ: وَلِيٌّ حَمِيمٌ: الْقَرِيبُ. ﴿مِنْ مَحِيصٍ﴾: حَاصَ حَادَ. مِرْيَةٍ وَمُرْيَةٍ : وَاحِدٌ أَي امْتِرَاءٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ﴾: الْوَعِيدُ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ﴾ الصَّبْرُ عِنْدَ الْغَضَبِ وَالْعَفْوُ عِنْدَ الْإِسَاءَةِ، فَإِذَا فَعَلُوهُ عَصَمَهُمُ اللهُ وَخَضَعَ لَهُمْ عَدُوُّهُمْ ﴿كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ﴾.

किये। ये सब दो दिन में किया। दहाहा का मतलब ये है कि ज़मीन मअ़ अपनी सब चीज़ों के चार दिन में बनी और आसमान दो दिन में बने (इस तरह ये ए'तिराज़ दूर हुआ) अब रहा ये फ़र्माना कि कानल्लाहु ग़फ़ूर्रहीमा में काना का मतलब है कि अल्लाह पाक में ये सिफ़ात अज़ल से हैं और ये उसके नाम हैं (ग़फ़ूर, रहीम, अ़ज़ीज़, हकीम, समीअ़, बसीर वग़ैरह) क्योंकि अल्लाह तआ़ला जो चाहता है वो हासिल कर लेता है हासिल ये है कि सिफ़ात सब क़दीम हैं गो उनके ता'ल्लुक़ात हादिष़ हों जैसे समिअ़ल्लाह का क़दीम से था मगर ता'ल्लुक़ समिअ़ का उस वक़्त से हुआ जबसे आवाज़ें पैदा हुईं। इसी तरह और सिफ़ात में भी कहेंगे) अब तो क़ुर्आन में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं रहा। इख़्तिलाफ़ कैसे होगा। क़ुर्आन मजीद अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। उसके कलाम में इख़्तिलाफ़ नहीं हो सकता। इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा मुझसे यूसुफ़ बिन अ़दी ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़म्र ने, उन्होंने जैद बिन अबी उनैसा से, उन्होंने मिन्हाल से, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से यही रिवायत जो उधर गुज़री है। मुजाहिद ने कहा मम्नून का मा'नी हिसाब है। अक़्वातुहा या'नी बारिश का अंदाज़ा मुक़र्रर किया कि क्या हर मुल्क में कितनी बारिश मुनासिब है। फ़ी कुल्लि समाइन अम्रुहा या'नी जो हुक्म (और इंतिज़ाम करना था) वो हर आसमान के बारे में (फ़रिश्तों को) बतला दिया। नहिसात मन्हूस, ना मुबारक व क़य्यज़्ना लहुम क़ुरनाअ का मअ़नी हमने काफ़िरों के साथ शैतान को लगा दिया ततनज़्ज़लुल अ़लैहिमुल मलाइका या'नी मौत के वक़्त उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं। इहतज़्ज़त या'नी सब्ज़ी से लहलहाने लगती है। वरब्ता फूल जाती है, उभर आती है मुजाहिद के सिवा औरों ने कहा मिन अक्मामिहा या'नी जब फल गाभों से निकलते हैं। लियक़ूना हाज़ाली या'नी ये मेरा हक़ है मेरे नेक कामों का बदला है। सवाउल लिस्साइलीन सब मांगने वालों के लिये उसको यकसाँ रख। फ़हदयनाहुम से ये मुराद है कि हमने उनका अच्छा बुरा दिखला दिया, बतला दिया जैसे दूसरी जगह फ़र्माया व हदयनाहुन् नज्दैन (सूरह बलद में और सूरह दहर में फ़र्माया) इन्ना हदयनाहुस्सबील लेकिन हिदायत का वो मा'नी

सीधे और सच्चे रास्ते पर लगा देना, वो तो अस्आद (या अस्आद) के मा'नी में है। (सूरह अन्आम) ऊलाइकल्लज़ीना हुदाहुमुल्लाह में यही मा'नी मुराद हैं। यूज़अ़ना रोके जाएँगे। मि अकाममिहा में कम कहते हैं गाभा के छिल्के को (ये इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है) ओरों ने कहा अंगूर जब निकलते हैं तो उसको भी फ़वरा और कुफ़रा कहते हैं। वलिय्युन हमीम क़रीबी दोस्त। मिम् महीस़ हास़ से निकला है हासुन के मा'नी निकल भागा अलग हो गया। मिरयत बकसरा मीम और मुरयति बज़म्मा मीम (दोनों क़िरातें हैं) दोनों का एक ही मा'नी शक व शुब्हा के हैं और मुजाहिद ने कहा इअ़मलूमा शिअतुम में वईद है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा इदफ़अ़ बिल्लती हिया अहसन से ये मुराद है कि गुस़्से के वक़्त स़ब्र कर लो और बुराई को मुआफ़ कर दे जब लोग ऐसे अख़्लाक़ इख़्तियार करेंगे तो अल्लाह उनको हर आफ़त से बचाए रखेगा और उनके दुश्मन भी आजिज़ होकर उनके दिली दोस्त बन जाएँगे।

तश्रीह : सूरह हामीम सज्दा मक्की है। इसमें 54 आयात और छह रुकूअ़ हैं। कहते हैं कि एक दिन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश इकट्ठे हुए और आपस में ये तज्वीज़ किया कि हममें से कोई शख़्स जाकर (हज़रत) मुहम्मद (ﷺ) को समझाए, उसने हमारी जमाअ़त में फूट डाल दी है। आख़िर उ़त्बा बिन रबीआ़ गया और आँहज़रत (ﷺ) से कहा कि तुम अच्छे हो या तुम्हारे बाप दादा अच्छे थे। तुमको क्या हो गया है तुमने सारी क़ौम को ख़राब कर दिया और हमारे दीन को रुस्वा कर दिया। अब अगर तुमको माल की ज़रूरत है तो हम सब माल जमा करके तुमको अमीर बना लेते हैं और अगर औ़रत की ख़्वाहिश है तो दस औ़रतें तुमको ब्याह देते हैं। उसके जवाब में आपने ये सूरह मुबारका पढ़नी शुरू की। जब आप इस आयत पर पहुँचे **फ़इन आ़रज़ू फक़ुल अन्ज़र्तुकुम स़ाइक़ा** (हामीम सज्दा : 13) तो उ़त्बा ने कहा बस चुप रहो, तुम्हारे पास यही है और कुछ नहीं। वो अपनी क़ौम के पास आया और कहा कि मैं ने ऐसा कलाम सुना है कि वैसा मेरे कानों ने कभी नहीं सुना। लफ़्ज़े हामीम हुरूफ़े मुक़त्तआ़त में से है जिनके हक़ीक़ी मा'नी सिर्फ़ अल्लाह ही को मा'लूम हैं।

जुम्ला **व ख़लक़ल्अर्ज़ फ़ी यौमयनि** (हामीम सज्दा : 9) से ये शुब्हा न रहा कि एक जगह तो आसमान की पैदाइश ज़मीन से पहले बयान फ़र्माई दूसरी जगह ज़मीन की पैदाइश पहले बयान की मगर अब भी ये ए'तिराज़ बाक़ी रहेगा कि सूरह हामीम सज्दा में यूँ है **वजअ़ल फ़ीहा रवासिय मिन फ़ौक़िहा व बारक फ़ीहा व क़द्दर फ़ीहा अक़्वातहा फ़ी अर्बअ़ति अय्यामिन सवाअल्लिस्साइलीन षुम्मस्तवा इलस्समाइ व हिय दुख़ान** (हामीम सज्दा : 10, 11) इसका ज़ाहिरी मत़लब तो ये निकलता है कि आसमानों की तर्तीब और उनके सात तब्क़े बनाना ये ज़मीन के दहव या'नी फैलाने के बाद है और सूरह वन् नाज़िआ़त से ये निकलता है कि ज़मीन का दहव उसके बाद है। चुनाँचे इस सूरत में यूँ फ़र्माता है। **अन्तुम अशद्दु ख़ल्क़न अमिस्समाउ बनाहा रफ़अ़ सम्कहा फसव्वहा व अग़तश लैलहा व अख़रज ज़ुहाहा वल्अर्ज़ बअ़द ज़ालिक दहाहा** (वन नाज़िआ़त : 27–30) इसलिये कुछ मुफ़स्सिरीन ने यूँ कहा कि ये सूरह वन् नाज़िआ़त में बअ़दा ज़ालिका दहाहा का ये मत़लब है कि उसके अ़लावा ये किया कि ज़मीन को फ़ैलाया, बादा ज़ालिका से बअ़दियत ज़मानी मुराद नहीं है। जामेउ़ल बयान में है कि ये मुक़ाम मुश्किल है और अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानता है। (वहीदी)

बाब 1 : आयत 'वमा कुन्तुम तस्ततिरून' ١- باب قوله

अल्अख़ की तफ़्सीर या'नी,

और तुम उस बात से अपने को छुपा नहीं सकते थे कि तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान, तुम्हारी आँखें और तुम्हारी जिल्दें गवाही देंगी, बल्कि तुम्हें तो ये ख़्याल था कि अल्लाह को बहुत सी उन चीज़ों की ख़बर ही नहीं है जिन्हें तुम करते रहे।

﴿وَمَا كُنتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللهَ لاَ يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ﴾.

4816. हमसे स़ल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे रौह़ बिन क़ासिम ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अबू मअ़मर और उनसे ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने, आयत, और तुम इस बात से अपने को छुपा नहीं सकते थे कि तुम्हारे कान गवाही देंगे, अल्अख़ के बारे में कहा कि क़ुरैश के दो आदमी और बीवी की त़रफ़ से उनके क़बीले ष़क़ीफ़ का कोई रिश्तेदार या ष़क़ीफ़ के दो अफ़राद थे और बीवी की त़रफ़ क़ुरैश का कोई रिश्तेदार, ये ख़ान-ए-का'बा के पास बैठे हुए थे उनमें से कुछ ने कहा कि क्या तुम्हारा ख़्याल है कि अल्लाह तआला हमारी बातें सुनता होगा? एक ने कहा कि कुछ बातें सुनता है। दूसरे ने कहा कि अगर कुछ बातें सुन सकता है तो सब सुनता होगा। इस पर ये आयत नाज़िल हुई, और तुम इस बात से अपने को छुपा नहीं सकते कि तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें गवाही देंगी आख़िर आयत तक। (दीगर मक़ाम : 4817, 7521)

٤٨١٦- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ عَنْ رَوْحِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ﴾ الآيَةَ، كَانَ رَجُلاَنِ مِنْ قُرَيْشٍ وَخَتَنٌ لَهُمَا مِنْ ثَقِيفٍ أَوْ رَجُلاَنِ مِنْ ثَقِيفٍ وَخَتَنٌ لَهُمَا مِنْ قُرَيْشٍ فِي بَيْتٍ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: أَتُرَوْنَ أَنَّ اللهَ يَسْمَعُ حَدِيثَنَا؟ قَالَ بَعْضُهُمْ : يَسْمَعُ بَعْضَهُ، وَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَئِنْ كَانَ يَسْمَعُ بَعْضَهُ لَقَدْ يَسْمَعُ كُلَّهُ، فَأُنْزِلَتْ : ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ﴾ الآيَةَ.

[طرفاه في: ٤٨١٧، ٧٥٢١].

बाब 2 : आयत 'व ज़ालिक ज़न्नुकुम अल्आयः' की तफ़्सीर

٢- باب قوله ﴿وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمْ﴾

या'नी और ये तुम्हारा गुमान है... आख़िर आयत तक।

4817. हमसे ह़ुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुजाहिद ने बयान किया, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़ान-ए-का'बा के पास दो क़ुरैशी और एक ष़क़फ़ी या एक क़ुरैशी और दो ष़क़फ़ी मर्द बैठे हुए थे। उनके पेट बहुत मोटे थे लेकिन अ़क़्ल से कोरे। एक ने उनमें से कहा, तुम्हारा क्या

٤٨١٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : اجْتَمَعَ عِنْدَ الْبَيْتِ قُرَشِيَّانِ وَثَقَفِيٌّ أَوْ ثَقَفِيَّانِ وَقُرَشِيٌّ كَثِيرَةٌ شَحْمُ بُطُونِهِمْ، قَلِيلَةٌ فِقْهُ قُلُوبِهِمْ. فَقَالَ أَحَدُهُمْ: أَتُرَوْنَ

يَسْمَعُ إِنْ جَهَرْنَا، وَلاَ يَسْمَعُ إِنْ أَخْفَيْنَا، وَقَالَ الآخَرُ : إِنْ كَانَ يَسْمَعُ إِذَا جَهَرْنَا فَإِنَّهُ يَسْمَعُ إِذَا أَخْفَيْنَا. فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ﴾ الآيَةَ. وَكَانَ سُفْيَانُ يُحَدِّثُنَا بِهَذَا فَيَقُولُ: حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ أَوْ ابْنُ نَجِيحٍ أَوْ حُمَيْدًا، أَحَدُهُمْ أَوِ اثْنَانِ مِنْهُمْ، ثُمَّ ثَبَتَ عَلَى مَنْصُورٍ، وَتَرَكَ ذَلِكَ مِرَارًا غَيْرَ وَاحِدَةٍ.

ख़्याल है क्या अल्लाह हमारी बातों को सुन रहा है? दूसरे ने कहा अगर हम ज़ोर से बोलें तो सुनता है लेकिन आहिस्ता बोलें तो नहीं सुनता। तीसरे ने कहा अगर अल्लाह ज़ोर से बोलने पर सुन सकता है तो आहिस्ता बोलने पर भी ज़रूर सुनता होगा। इस पर ये आयत उतरी कि, और तुम उस बात से अपने को नहीं छुपा सकते कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे चमड़े गवाही देंगे, आख़िर आयत तक। सुफ़यान हमसे ये ह़दीष़ बयान करते थे और कहा कि हमसे मंसूर ने या इब्ने नुजैह़ ने या ह़ुमैद ने उनमें से किसी एक ने या किसी दो ने ये ह़दीष़ बयान की, फिर आप मंसूर ही का ज़िक्र करते थे और दूसरी का ज़िक्र एक से ज़्यादा बार नहीं किया।

باب قوله فَإِنْ يصبروا فالنّارُ مَثْوًى لَهُمْ

बाब आयत 'फइय्यंस्बिरू फन्नारू मष़्वा लहुम' की तफ़्सीर या'नी,

पस ये लोग अगर स़ब्र ही करें तब भी दोज़ख़ ही उनका ठिकाना है।

٥٠٠٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بِنَحْوِهِ.

हसमे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे मंसूर ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने पहली ह़दीष़ की त़रह़ बयान किया।

[٤٢] سورة ﴿حم عسق﴾

सूरह ह़ामीम एन सीन क़ाफ़ की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: عَقِيمًا لاَ تَلِدُ. رُوحًا مِنْ أَمْرِنَا. الْقُرْآنُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: يَذْرَؤُكُمْ : فِيهِ نَسْلٌ بَعْدَ نَسْلٍ. لاَ حُجَّةَ بَيْنَنَا: لاَ خُصُومَةَ طَرْفٍ خَفِيٍّ: ذَلِيلٍ. وَقَالَ غَيْرُهُ : فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ يَتَحَرَّكْنَ وَلاَ يَجْرِينَ فِي الْبَحْرِ. شَرَعُوا : ابْتَدَعُوا.

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से अ़क़ीमा के मा'नी बांझ मन्क़ूल है रूह़म्मिन् अम्रिना में रूह़ से क़ुर्आन मजीद मुराद है। और मुजाहिद ने कहा, यज़्रुऊकुम फ़ीही का मत़लब ये है कि एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल फैलाता रहेगा, ला हुज्जत बयनना या'नी अब हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं रहा त़र्फ़िन् ख़फ़िय्य कमज़ोर की निगाह से या दज़दीदा नज़र से औरों ने कहा फ़यज़्लल्ना रवाकिदा का मत़लब ये है कि अपने मुक़ाम पर मौजों के थपेड़ों से हिलती रहीं न आगे बढ़ीं न पीछे हटीं शरऊ़ नया दीन निकाला।

तश्रीह : इस सूरह का लफ़्ज़े शूरा से भी मौसूम किया गया है, उसमें मुसलमानों के मिल्ली इज्तिमाई उमूर को बाहमी मश्वरों से हल करने की ताकीद है, इसीलिये इसे लफ़्ज़े शूरा से मौसूम किया गया।

बाब 1 : आयत 'इल्लल्मवद्दत फ़िल्क़ुर्बा' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلِهِ : ﴿إِلاَّ الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى﴾

क़राबतदारी की मुहब्बत के सिवा मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता।

4818. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया कि मैंने त़ाऊस से सुना कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, सिवा रिश्तेदारी की मुहब्बत के, बारे में पूछा गया तो सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि आले मुहम्मद (ﷺ) की क़राबतदारी मुराद है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने इस पर कहा कि तुमने जल्दबाज़ी की। क़ुरैश की कोई शाख़ ऐसी नहीं जिसमें आँह़ज़रत (ﷺ) की क़राबतदारी न हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुमसे सिर्फ़ ये चाहता हूँ कि तुम इस क़राबतदारी की वजह से सिलारहमी का मामला करो जो मेरे और तुम्हारे बीच में मौजूद है। (राजेअ : 3497)

٤٨١٨ - حدَّثَنا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ طَاوُسًا عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ : رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ قَوْلِهِ: ﴿إِلاَّ الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى﴾ فَقَالَ سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ: قُرْبَى آلِ مُحَمَّدٍ ﷺ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: عَجِلْتَ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ بَطْنٌ مِنْ قُرَيْشٍ إِلاَّ كَانَ لَهُ فِيهِمْ قَرَابَةٌ، فَقَالَ: ((إِلاَّ أَنْ تَصِلُوا مَا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ مِنَ الْقَرَابَةِ)).

[راجع: ٣٤٩٧]

तश्रीह : व ह़ासिलु कलामिब्नि अ़ब्बास अन्न जमीअ क़ुरैश क़ारिबु रसूलिल्लाहि (ﷺ) व लैसल्मुरादु मिनल्आयति बनू हाशिम व नहवुहुम कमा यतबादरू इलज़्ज़िहनि मिन क़ौलि सईदिब्नि जुबैर या'नी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के क़ौल का मत़लब ये है कि आयत में अक़ारिबे नबवी से मुराद सारे क़ुरैश हैं, ख़ास़ बनू हाशिम मुराद लेना स़ह़ीह़ नहीं है।

सूरह ह़ामीम ज़ुख़रुफ़ की तफ़्सीर

[٤٣] سورة ﴿حم﴾ الزُّخْرُفُ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा कि अ़ला उम्मति के मा'नी एक इमाम पर (या एक मिल्लत पर या एक दीन पर) वक़ीलिही या रब का मा'नी है, क्या काफ़िर लोग ये समझते हैं कि हम उनकी आहिस्ता बातें और उनकी कानाफूसी और उनकी बातचीत नहीं सुनते (ये तफ़्सीर इस क़िरात पर है जब वक़ीलहू बिही नस़बे लाम पढ़ा जाए। इस ह़ालत में व सिर्रुहुम व नज्वाहुम पर अ़त़्फ़ होगा और मशहूर क़िरात व क़ीलिही कस्रे लाम है। इस स़ूरत में ये अस् साअ़तु पर अ़त़्फ़ होगा या'नी अल्लाह तआ़ला उनकी

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿عَلَى أُمَّةٍ﴾ عَلَى إِمَامٍ. ﴿وَقِيلِهِ يَا رَبِّ﴾ تَفْسِيرُهُ: أَيَحْسَبُونَ أَنَّا لاَ نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَلاَ نَسْمَعُ قِيلَهُمْ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿وَلَوْ لاَ أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً﴾: لَوْ لاَ أَنْ جَعَلَ النَّاسَ كُلَّهُمْ كُفَّارًا، لَجَعَلْتُ لِبُيُوتِ

الْكُفَّارِ سُقُفًا مِنْ فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ مِنْ فِضَّةٍ. وَهِيَ دَرَجٌ. وَسُرُرَ فِضَّةٍ. مُقْرِنِينَ: مُطِيقِينَ. آسَفُونَا: أَسْخَطُونَا. يَعْشُ: يَعْمَى. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ﴾: أَيْ تُكَذِّبُونَ بِالْقُرْآنِ ثُمَّ لاَ تُعَاقَبُونَ عَلَيْهِ؟ ﴿وَمَضَى مَثَلُ الأَوَّلِينَ﴾ سُنَّةُ الأَوَّلِينَ. مُقْرِنِينَ يَعْنِي الإِبِلَ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ. ﴿يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ﴾ الْجَوَارِي جَعَلْتُمُوهُنَّ لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ﴿فَكَيْفَ تَحْكُمُونَ﴾. ﴿لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ﴾ يَعْنُونَ الأَوْثَانَ، لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿مَالَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ﴾ الأَوْثَانُ، إِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ. فِي عَقِبِهِ : وَلَدِهِ. مُقْتَرِنِينَ: يَمْشُونَ مَعًا. سَلَفًا قَوْمُ فِرْعَوْنَ سَلَفًا لِكُفَّارِ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ. وَمَثَلاً: عِبْرَةً. يَصِدُّونَ : يَضِجُّونَ. مُبْرِمُونَ: مُجْمِعُونَ. أَوَّلُ الْعَابِدِينَ: أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ. ﴿إِنَّنِي بَرَاءٌ مِمَّا تَعْبُدُونَ﴾ الْعَرَبُ تَقُولُ: نَحْنُ مِنْكَ الْبَرَاءُ وَالْخَلاَءُ، الْوَاحِدُ وَالاِثْنَانِ وَالْجَمِيعُ مِنَ الْمُذَكَّرِ وَالْمُؤَنَّثِ يُقَالُ فِيهِ بَرَاءٌ لأَنَّهُ مَصْدَرٌ، وَلَوْ قَالَ: ﴿بَرِيءٌ﴾ لَقِيلَ فِي الاِثْنَيْنِ بَرِيئَانِ وَفِي الْجَمِيعِ بَرِيئُونَ وَقَرَأَ عَبْدُ اللهِ إِنَّنِي بَرِيءٌ بِالْيَاءِ. وَالزُّخْرُفُ الذَّهَبُ. مَلاَئِكَةً يَخْلُفُونَ: يَخْلُفُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا.

बातचीत भी जानता है और सुनता है) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा व लौला अंय्ययकूनन्नास उम्मतंव वाहिदा का मत़लब ये है, अगर ये बात न होती कि सब लोगों को काफ़िर ही बना डालता तो मैं काफ़िरो के घरों में चाँदी की छतें और चाँदी की सीढ़ियाँ कर देता मआ़रिज के मा'नी सीढ़ियाँ तख़्त वग़ैरह। मुक़र्रिनीन, ज़ोर वाले। आसफ़ून हमको ग़ुस्सा दिलाया। यअ़शु, अंधा बन जाए। मुजाहिद ने कहा, अफ़नज़्रिबु अ़न्कुमुज़्ज़करा का मत़लब ये है कि क्या तुम ये समझते हो कि तुम क़ुर्आन को झुठलाते रहोगे और हम तुम पर अ़ज़ाब नहीं उतारेंगे (तुमको ज़रूर अ़ज़ाब होगा) व मज़ा मिष़्लुल अव्वलीन अगलों के क़िस्से कहानियाँ चल पड़ें। वमा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन या'नी ऊँट घोड़े, ख़च्चर और गधों पर हमारा ज़ोर और क़ाबू न चल सकता था। यन्शिरू फ़िल हिल्यति से बेटियाँ मुराद हैं, या'नी तुमने बेटी ज़ात को अल्लाह की औलाद ठहराया, वाह वाह! क्या अच्छा हुक्म लगाते हो। लौ शाअर्रह्मान मा अ़बदनाहुम, में हुम की ज़मीर बुतों की त़रफ़ फिरती है क्योंकि आगे फ़र्माया, मा लहुम बिज़ालिका मिन इल्म या'नी बुतों को जिनको ये पूजते हैं कुछ भी इल्म नहीं है वो तो बिलकुल बेजान हैं फ़ी उ़क़्बिही, उसकी औलाद में। मुक़्रिनीन साथ साथ चलते हुए। सलफ़ा से मुराद फ़िरऔन की क़ौम है। वो लोग ह़ज़रत मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत में जो काफ़िर हैं उनके पेशवा या'नी अगले लोग थे। व मष़लल् आख़रीना या'नी पिछलों की इबरत और मिष़ाल। यसुद्दूना चिल्लाने लगे, शोरो ग़ुल करने लगे। मुब्रमून ठानने वाले, क़रार देने वाले, अव्वलुल आ़बिदीन सबसे पहले ईमान लाने वाला इन्ननी बराउ मिम्मा तअ़बुदून अ़रब लोग कहते हैं हम तुमसे बरा हैं, हम तुमसे ख़ला हैं (या'नी बेज़ार हैं। अलग हैं, कुछ ग़र्ज़ वास्ता तुमसे नहीं रखते) वाहिद, तष़्निया और जमा मुज़क्कर व मुवन्नष़ सब में बराअ का लफ़्ज़ बोला जाता है क्योंकि बराअ मस़दर है और अगर बरीआ पढ़ा जाए जैसे इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरात है तब तो तष़्निया में बरीआन और जमा में बरीऊ़न कहना चाहिये। अज़् ज़ुख़रुफ़ के मा'नी सोना। मलाइकतु यख़्लुफ़ून या'नी फ़रिश्ते जो एक के पीछे एक आते रहते हैं।

तश्रीह : सूरह ज़ुख़रुफ़ मक्की है जिसमें 89 आयात और सात रुकूअ हैं। लफ़्ज़े ज़ुख़रुफ़ के मा'नी सोने के हैं। अल्लाह ने इस सूरत में बतलाया है कि निज़ामे इंसानी मेरे हुक्म के तहत चल रहा है वरना मैं चाहता तो सोने चाँदी से उनके घर भर देता मगर ये सब कुछ दुनिया की चंद रोज़ा ज़िंदगी का सामान होता है अल्लाह के यहाँ तो सिर्फ़ आलमे आख़िरत की क़द्र व मंज़िलत है जो मुत्तक़ीन के लिये बेहतर से बेहतर शक्ल में सजाया गया है।

बाब 1 : आयत 'व नादौ या मालिक' की तफ़्सीर,

١- باب قوله

﴿وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ﴾

जहन्नमी कहेंगे ऐ दारोग़ा—ए—जहन्नम! तुम्हारा रब हमें मौत दे दे। वो कहेगा तुम इसी हाल मे पड़े रहो।

4819. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे अ़ता ने, उनसे सफ़्वान बिन यअ़ला ने और उनसे उनके वालिद ने कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को मिम्बर पर ये आयत पढ़ते सुना, और ये लोग पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा परवरदिगार हमारा काम ही तमाम कर दे। और क़तादा ने कहा मष़लल् आख़रीन या'नी पिछलों के लिये नस़ीहत। दूसरो ने कहा मुक़रिनीन का मा'नी क़ाबू मे रखने वाले। अ़रब लोग कहते हैं फ़ुलाना फ़ुलाने का मुक़्रिन है या'नी इस पर इख़्तियार रखता है (उसको क़ाबू में लाया है) अक्वाब वो कूज़े (प्याले) जिन में टूँटी न हो (बल्कि मुँह खुला हुआ हो जहाँ से आदमी चाहे पिये। इन् काना लिर्रह़मान वलद का मा'नी ये है कि उसकी कोई औलाद नहीं हैं। (इस स़ूरत में अन् नाफ़िया है) आ़बिदीन से आनफ़ीन मुराद है या'नी सबसे पहले में उससे आ़र करता हूँ। उसमें दो लुग़त हैं आ़बिद व अ़बद और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने इसको व क़ालर्रसुल या रब पढ़ा है। अव्वलुल आ़बिदीन के मा'नी सबसे पहला इंकार करने वाला या'नी अगर अल्लाह की औलाद ष़ाबित करते हो तो मैं उसका सबसे पहला इंकारी हूँ। इस स़ूरत में आ़बिदीन बाब अ़बद यअ़बुदु से आएगा और क़तादा ने कहा फ़ी उम्मिल किताबि का मा'नी यह है कि मज्मूई किताब और अस़ल किताब (या'नी लौहे महफ़ूज़ में)। (राजेअ़ : 3230)

٤٨١٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ عَمْرٍو عَنْ عَطَاءٍ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ عَلَى الْمِنْبَرِ ﴿وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ﴾. وَقَالَ قَتَادَةُ: ﴿مَثَلاً لِلآخِرِينَ﴾ عِظَةً. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿مُقْرِنِينَ﴾ ضَابِطِينَ يُقَالُ: فُلاَنٌ مُقْرِنٌ لِفُلاَنٍ ضَابِطٌ لَهُ. وَالأَكْوَابُ: الأَبَارِيقُ الَّتِي لاَ خَرَاطِيمَ لَهَا. ﴿أَوَّلُ الْعَابِدِينَ﴾ أَيْ مَا كَانَ فَأَنَا أَوَّلُ الآنِفِينَ. وَهُمَا لُغَتَانِ، رَجُلٌ عَابِدٌ وَعَبِدٌ، وَقَرَأَ عَبْدُ اللهِ: ﴿وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ﴾ وَيُقَالُ أَوَّلُ الْعَابِدِينَ الْجَاحِدِينَ. مِنْ عَبِدَ يَعْبَدُ. وَقَالَ قَتَادَةُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ فِي جُمْلَةِ الْكِتَابِ أَصْلِ الْكِتَابِ.

[راجع: ٣٢٣٠]

बाब 2 : आयत 'अफनज़्रिबु अन्कुमुज़्ज़िकर सफ़्हन अन्कुन्तुम क़ौमम्मुसरिफ़ीन' की तफ़्सीर,

٢- بَابٌ ﴿أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُسْرِفِينَ﴾ مُشْرِكِينَ

يَا لله لَوْ أَنَّ الْقُرْآنَ رُفِعَ حَيْثُ رَدَّهُ أَوَائِلُ هَذِهِ الأُمَّةِ لَهَلَكُوا. ﴿فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا، وَمَضَى مَثَلُ الأَوَّلِينَ﴾ عُقُوبَةُ الأَوَّلِينَ. جُزْءًا﴾ عِدْلاً.

मुस्रिफ़ीन से मुराद मुश्रिकीन हैं। वल्लाह! अगर ये क़ुर्आन उठा लिया जाता जबकि इब्तिदा में क़ुरैश ने उसे रद्द कर दिया था तो सब हलाक हो जाते। फ़अह्लक्ना अशद्दा मिन्कुम बत़्शन व मज़ा मिष्लुल अव्वलीन में मष़लु से अ़ज़ाब मुराद है। जुज़्अ बमा'नी इदला या'नी शरीक।

[٤٤] باب سورة ﴿الدُّخَانِ﴾

सूरह दुख़ान की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿رَهْوًا﴾ طَرِيقًا يَابِسًا، ﴿عَلَى الْعَالَمِينَ﴾ عَلَى مِنْ بَيْنَ ظَهْرَيْهِ. ﴿فَاعْتِلُوهُ﴾ ادْفَعُوهُ. ﴿وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ﴾ أَنْكَحْنَاهُمْ حُورًا عِينًا يَحَارُ فِيهَا الطَّرْفُ. تَرْجُمُونِ: الْقَتْلُ. وَرَهْوًا: سَاكِنًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿كَالْمُهْلِ﴾ أَسْوَدُ كَمُهْلِ الزَّيْتِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿تُبَّعٍ﴾ مُلُوكُ الْيَمَنِ، كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمْ يُسَمَّى تُبَّعًا لأَنَّهُ يَتْبَعُ صَاحِبَهُ، وَالظِّلُّ يُسَمَّى تُبَّعًا لأَنَّهُ يَتْبَعُ الشَّمْسَ.

मुजाहिद ने कहा रहवा का मा'नी सूखा रास्ता। अ़लल आ़लमीन से मुराद उनके ज़माने के लोग हैं। फ़अ़तिलूहू के मा'नी उनको धकेल दो। वज़व्वज्ना हुम बिह़ूरिन ऐ़न का मत़लब हमने बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उनका जोड़ा मिला दिया जिनका जमाल देखने से आँखों को ह़ैरत होती है। तुरजमून मुझको क़त्ल करो। रहवा थमा हुआ। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कल मुह्लि या'नी काला तिलछट की त़रह़ ओरों ने कहा तुब्बअ़ से यमन के बादशाह मुराद हैं। उनको तुब्बअ़ा इसलिये कहा जाता था कि एक के बाद एक बादशाह होता और साया को भी तुब्बअ़ा कहते हैं क्योंकि वो सूरज के साथ रहता है।

तश्रीह़ : दुख़ान के मा'नी धुएँ के हैं। धुएँ से क्या मुराद है? इसमें सलफ़ के दो क़ौल हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह कहते हैं कि क़यामत के क़रीब एक धुआँ उठेगा जो तमाम ही लोगों को घेर लेगा। नेक आदमी को उसका ख़फ़ीफ़ अष़र पहुँचेगा जिससे ज़ुकाम हो जाएगा और काफ़िर मुनाफ़िक़ के दिमाग़ में घुसकर उसे बेहोश कर देगा। वही धुआँ यहाँ मुराद है। शायद ये धुआँ वही समावात का माद्दा हो जिसका ज़िक्र **षुम्मस्तवा इलस्समाइ व हिया दुख़ान** (हामीम सज्दा : 11) में हुआ है। गोया आसमान तह़लील होकर अपनी पहली ह़ालत की त़रफ़ ऊ़द करने लगेंगे और ये उसकी इब्तिदा होगी। वल्लाहु आ़लम। और इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ज़ोर व शोर के साथ दा'वा करते हैं कि इस आयत से मुराद वो धुंआ नहीं है जो अ़लामाते क़यामत में से है बल्कि क़ुरैश के ज़ुल्म व त़ुग़्यान से तंग आकर नबी करीम (ﷺ) ने दुआ़ फ़र्माई थी कि उन पर भी सात साल का क़ह़त़ मुसल्लत़ कर दे जैसे यूसुफ़ (अ़लैहि.) के ज़माने में मिस्रियों पर मुसल्लत़ किया था। चुनाँचे क़ह़त़ पड़ा जिसमें मक्का वालों को मुरदार और चमड़े हड्डियाँ तक खाने की नौबत आ गई। ग़ालिबन उसी दौरान यमामा के रईस षुमामा बिन उष़ाल (रज़ि.) मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हुए और वहाँ से अनाज की भरती मक्का को आती थी बंद कर दी। ग़र्ज़ अहले मक्का भूखों मरने लगे और क़ायदा है कि शिद्दते भूख और मुसलसल ख़ुश्क साली के ज़माने में ज़मीन व आसमान के दरम्यान धुआँ सा आँखों के सामने नज़र आया करता है और वो भी मुद्दते दराज़ तक बारिश बंद रहने से गर्द व गुबार वग़ैरह आसमान पर धुआँ सा मा'लूम होने लगता है उसको यहाँ दुख़ान से ता'बीर किया गया है। इस तक़्दीर पर **यग़्शन्नास** (अद्

दुख़ान : 11) में लोगों से मुराद मक्का वाले होंगे। गोया ये एक पेशनगोई थी कमा यदुल्लु अ़लैहि क़ौलुहू फ़र्तक़िब जो पूरी हुई। ये सूरत मक्की है। इसमें 59 आयात और तीन रुकूअ़ हैं।

बाब 1 : आयत 'यौम तातिस्समाउ बिदुखानिम्मुबीन' की तफ़्सीर या'नी,

पस आप इंतिज़ार करें उस दिन का जब आसमान की त़रफ़ एक नज़र आने वाला धुंआ पैदा हो। क़तादा ने फ़र्माया कि फ़रतक़िब अय्य फ़ंतज़िर या'नी इंतिज़ार कीजिए।

١- باب ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ﴾ قَالَ قَتَادَةُ (فَارْتَقِبْ) فَانْتَظِرْ.

4820. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे मुस्लिम ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि (क़यामत की) पाँच अ़लामतें गुज़र चुकी हैं अद् दुख़ान (धुआँ) अर् रूम (ग़ल्बा रूम) अल् क़मर (चाँद का टुकड़े होना) अल बत़्शता (पकड़) और अल् लिज़ाम (हलाकत और क़ैद) (राजेअ़ : 1007)

٤٨٢٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: مَضَى خَمْسٌ: الدُّخَانُ، وَالرُّومُ، وَالْقَمَرُ، وَالْبَطْشَةُ، وَاللِّزَامُ. [راجع: ١٠٠٧]

बाब 2 : आयत 'यग़्शन्नास हाज़ा अ़ज़ाबुन अलीम' की तफ़्सीर या'नी,

उन सब लोगों पर छा जाएगा, ये एक अ़ज़ाबे दर्दनाक होगा।

٢- باب قوله ﴿يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

4821. हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अबु मुआ़विया ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुस्लिम ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि ये (क़ह़त़) इसलिये पड़ा था कि क़ुरैश जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की दा'वत क़ुबूल करने की बजाय शिर्क पर जमे रहे तो आपने उनके लिये ऐसे क़ह़त़ की बद दुआ़ की जैसा यूसुफ़ (अ़लैहि.) के ज़माने मे पड़ा था। चुनाँचे क़ह़त़ की नौबत यहाँ तक पहुँची कि लोग हड्डियाँ तक खाने लगे। लोग आसमान की त़रफ़ नज़र उठाते लेकिन भूख और फ़ाक़ा की शिद्दत की वजह से धुएँ के सिवा और कुछ नज़र न आता उसी के बारे में अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, तो आप इंतिज़ार करें उस रोज़ का जब आसमान की त़रफ़ नज़र आने वाला धुंआ पैदा हो जो लोगों पर छा जाए। ये एक दर्दनाक अ़ज़ाब होगा, बयान किया कि फिर एक स़ाह़ब आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़बील-ए-मुज़र के लिये बारिश की दुआ़ कीजिए कि वो बर्बाद हो चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया,

٤٨٢١- حَدَّثَنَا يَحْيَى، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ إِنَّمَا كَانَ هَذَا لأَنَّ قُرَيْشًا لَمَّا اسْتَعْصَوْا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ دَعَا عَلَيْهِمْ بِسِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ، فَأَصَابَهُمْ قَحْطٌ وَجَهْدٌ حَتَّى أَكَلُوا الْعِظَامَ، فَجَعَلَ الرَّجُلُ يَنْظُرُ إِلَى السَّمَاءِ فَيَرَى مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ مِنَ الْجَهْدِ. فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ، يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ قَالَ: فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ اسْتَسْقِ اللهَ لِمُضَرَ فَإِنَّهَا قَدْ هَلَكَتْ قَالَ ((لِمُضَرَ؟ إِنَّكَ لَجَرِيءٌ))، فَاسْتَسْقَى، فَسُقُوا،

मुज़र के हक़ में दुआ के लिये कहते हो, तुम बड़ी जरी हो। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये दुआ की और बारिश हुई। इस पर आयत इन्नकुम आइदून नाज़िल हुई। (या'नी अगरचे तुमने ईमान का वा'दा किया है लेकिन तुम कुफ़्र की तरफ़ फिर लौट जाओगे) चुनाँचे जब फिर उनमें ख़ुशहाली हुई तो शिर्क की तरफ़ लौट गये (और अपने ईमान के वादे को भुला दिया) इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, जिस रोज़ हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे (उस रोज़) हम पूरा बदला ले लेंगे। बयान किया इस आयत से मुराद बद्र की लड़ाई है। (राजेअ : 1007)

فَنَزَلَتْ ﴿إِنَّكُمْ عَائِدُونَ﴾ فَلَمَّا أَصَابَتْهُمُ الرَّفَاهِيَةُ عَادُوا إِلَى حَالِهِمْ حِينَ أَصَابَتْهُمُ الرَّفَاهِيَةُ، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ﴾ قَالَ يَعْنِي يَوْمَ بَدْرٍ. [راجع: ١٠٠٧]

तश्रीह : क़ालल्मुज़र अय क़ाल अ अजीबन अ तामुरूनी अन अस्तस्क़िय लि मुज़र मा मअहुम अलैहि मिम्मअसियतिल्लाह वल्इशराकु बिही इन्नक लजरी अय ज़ू जुर्अतिन हैषु तुश्रिक बिल्लाही व तत्लबु रहमतहू फ़स्तस्क़ी (अ) अल्अख़ (क़स्तलानी) या'नी आप (ﷺ) ने मुज़र क़बीले के लिये तअज्जुब से फ़र्माया कि वो अल्लाह तआला के नाफ़र्मान और मुश्रिक हैं। तुम बड़े जुर्अतमंद हो जो ऐसे मुश्रिकीन के लिये अल्लाह से दुआ कराते हो फिर आप (ﷺ) ने उनके लिये बारिश की दुआ फ़र्माई। (ﷺ)

बाब 3 : आयत 'रब्बनक्शिफ अन्नल्अज़ाब इन्ना मूमिनून' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ﴾

ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे इस अज़ाब को दूर कर दे, हम ज़रूर ईमान ले आएँगे।

4822. हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंने कहा कि ये भी इल्म ही है कि तुम्हें अगर कोई बात मा'लूम नहीं है तो उसके बारे में यूँ कह दिया करो कि अल्लाह ही ज़्यादा जानने वाला है। अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माया कि आप अपनी क़ौम से कह दो कि मैं तुमसे किसी उज्रत का तालिब नहीं हूँ और न मैं बनावटी बातें करता हूँ। जब क़ुरैश हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को तकलीफ़ पहुँचाने और आप (ﷺ) के साथ मुआनिदाना रविश में बराबर बढ़ते ही रहे तो आपने उनके लिये बद् दुआ की कि ऐ अल्लाह! उनके ख़िलाफ़ मेरी मदद ऐसे क़हत के ज़रिये कर जैसा कि यूसुफ़ (अलैहि.) के ज़माने में पड़ा था। चुनाँचे क़हत पड़ा और भूख की शिद्दत का ये हाल हुआ कि लोग हड्डियाँ और मुरदार खाने लग गये। लोग आसमान की तरफ़ देखते थे लेकिन फ़ाक़ा की वजह से धुएँ के सिवा और कुछ नज़र न

٤٨٢٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عَبْدِ اللهِ فَقَالَ: إِنَّ مِنَ الْعِلْمِ أَنْ تَقُولَ: لِمَا لاَ تَعْلَمُ اللهُ أَعْلَمُ، إِنَّ اللهَ قَالَ لِنَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ﴿قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ، وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ﴾ إِنَّ قُرَيْشًا لَمَّا غَلَبُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاسْتَعْصَوْا عَلَيْهِ، قَالَ: ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ)). فَأَخَذَتْهُمْ سَنَةٌ، أَكَلُوا فِيهَا الْعِظَامَ وَالْمَيْتَةَ مِنَ الْجَهْدِ، حَتَّى جَعَلَ أَحَدُهُمْ يَرَى مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ مِنَ الْجُوعِ ... وا: رَبَّنَا

आता। आख़िर उन्होंने कहा कि, ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे इस अ़ज़ाब को दूर कर, हम ज़रूर ईमान ले आएँगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उनसे कह दिया था कि अगर हमने ये अ़ज़ाब दूर कर दिया तो फिर भी तुम अपनी पहली ह़ालत पर लौट आओगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके ह़क़ में दुआ़ की और ये अ़ज़ाब उनसे हट गया लेकिन वो फिर भी कुफ़्र व शिर्क पर ही जमे रहे, इसका बदला अल्लाह तआ़ला ने बद्र की लड़ाई में लिया। यही वाक़िया आयत यौमा तातियस्समाउ बिदुख़ानिम् मुबीन आख़िर तक में बयान हुआ है। (राजेअ़ : 1007)

اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ﴾ فَقِيلَ لَهُ: إِنْ كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَادُوا، فَدَعَا رَبَّهُ فَكَشَفَ عَنْهُمْ فَعَادُوا فَانْتَقَمَ اللهُ مِنْهُمْ يَوْمَ بَدْرٍ. فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى ﴿يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ﴾ إِلَى قَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿إِنَّا مُنْتَقِمُونَ﴾.

[راجع: ١٠٠٧]

बाब 4 : आयत 'अन्ना लहुमुज़्ज़िक्र' की तफ़्सीर,

٤- باب قوله ﴿أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُبِينٌ﴾ اَلذِّكْرُ وَالذِّكْرَى وَاحِدٌ.

उनको कब इससे नसीह़त होती है ह़ालाँकि उनके पास पैग़म्बर खुले हुए दलाइल के साथ आ चुका है, अज़्ज़िक्रू, अज़्ज़िक्रा दोनों के एक ही मा'नी हैं ।

4823. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अब ज़्ज़ुह़ा ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। उन्होंने फ़र्माया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने क़ुरैश को इस्लाम की दा'वत दी तो उन्होंने आपको झुठलाया और आपके साथ सरकशी की। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये बद् दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरी उनके ख़िलाफ़ यूसुफ़ (अलैहि.) जैसे क़ह़त़ के ज़रिये मदद फ़र्मा। चुनाँचे क़ह़त़ पड़ा और हर चीज़ ख़त्म हो गई। लोग मुरदार खाने लगे। कोई शख़्स़ खड़ा होकर आसमान की त़रफ़ देखता तो भूख और फ़ाक़ा की वजह से आसमान और उसके दरम्यान धुआँ ही धुआँ नज़र आता। फिर आपने इस आयत की तिलावत शुरू की तो आप (ﷺ) इंतिज़ार करें उस रोज़ का जब आसमान की त़रफ़ से नज़र आने वाला एक धुआँ पैदा हो जो लोगों पर छा जाए। ये एक दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। बेशक हम जब इस अ़ज़ाब को हटा लेंगे और तुम भी अपनी पहली ह़ालत पर लौट आओगे। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने फ़र्माया, क्या क़यामत के अ़ज़ाब से भी वो बच सकेंगे। फ़र्माया कि सख़्त पकड़ बद्र की

٤٨٢٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ : دَخَلْتُ عَلَى عَبْدِ اللهِ، ثُمَّ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا دَعَا قُرَيْشًا كَذَّبُوهُ، وَاسْتَعْصَوا عَلَيْهِ، فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ)). فَأَصَابَتْهُمْ سَنَةٌ حَصَّتْ كُلَّ شَيْءٍ، حَتَّى كَانُوا يَأْكُلُونَ الْمَيْتَةَ، وَكَانَ يَقُومُ أَحَدُهُمْ فَكَانَ يَرَى بَيْنَهُ وَبَيْنَ السَّمَاءِ مِثْلَ الدُّخَانِ، مِنَ الْجَهْدِ وَالْجُوعِ. ثُمَّ قَرَأَ. ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ﴾ يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ حَتَّى بَلَغَ ﴿إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيلاً، إِنَّكُمْ عَائِدُونَ﴾ قَالَ عَبْدُ اللهِ: أَفَيُكْشَفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟

قَالَ : وَالْبَطْشَةُ الْكُبْرَى يَوْمَ بَدْرٍ.

[راجع: ١١٠٧]

जंग में हुई थी। (राजेअ़ : 1107)

٥- باب قوله ﴿ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَجْنُونٌ﴾

बाब 5 : आयत 'षुम्म तवल्लौ अ़न्हु व क़ालू मुअ़ल्लमुम्मज्नून' की तफ़्सीर या'नी,

फिर भी ये लोग सरताबी करते रहे और यही कहते रहे कि ये सिखाया हुआ दीवाना है।

٤٨٢٤- حدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ، وَمَنْصُورٍ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ، قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ إِنَّ اللهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا ﷺ، وَقَالَ ﴿قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ﴾ فَإِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمَّا رَأَى قُرَيْشًا اسْتَعْصَوْا عَلَيْهِ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَيْهِمْ بِسَبْعٍ كَسَبْعِ يُوسُفَ)) فَأَخَذَتْهُمُ السَّنَةُ حَتَّى حَصَّتْ كُلَّ شَيْءٍ حَتَّى أَكَلُوا الْعِظَامَ وَالْجُلُودَ، فَقَالَ أَحَدُهُمْ: حَتَّى أَكَلُوا الْجُلُودَ وَالْمَيْتَةَ، وَجَعَلَ يَخْرُجُ مِنَ الأَرْضِ كَهَيْئَةِ الدُّخَانِ، فَأَتَاهُ أَبُو سُفْيَانَ فَقَالَ : أَيْ مُحَمَّدُ : إِنَّ قَوْمَكَ هَلَكُوا، فَادْعُ اللهَ أَنْ يَكْشِفَ عَنْهُمْ. فَدَعَا، ثُمَّ قَالَ: ((تَعُودُوا بَعْدَ هَذَا)). فِي حَدِيثِ مَنْصُورٍ : ثُمَّ قَرَأَ ﴿فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُبِينٍ - إِلَى عَائِدُونَ﴾ أَيُكْشَفُ عَذَابُ الآخِرَةِ؟ فَقَدْ مَضَى الدُّخَانُ وَالْبَطْشَةُ وَاللِّزَامُ، وَقَالَ أَحَدُهُمْ : الْقَمَرُ وَقَالَ الآخَرُ : الرُّومُ.

[راجع: ١٠٠٧]

4824. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें सुलैमान और मंसूर ने, उन्हें अबुज़्ज़ुहा ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद (ﷺ) को मब्ऊ़ष किया और आपने फ़र्माया, कह दो कि मैं तुमसे किसी अज्र का त़ालिब नहीं हूँ और न मैं बनावटी बातें करने वालों में से हूँ। फिर जब आपने देखा कि क़ुरैश इनाद से बाज़ नहीं आते तो आप (ﷺ) ने उनके लिये बद् दुआ़ की कि, ऐ अल्लाह! उनके ख़िलाफ़ मेरी मदद ऐसे क़ह्त़ से कर जैसा यूसुफ़ (अ़लैहि.) के ज़माने में पड़ा था। क़ह्त़ पड़ा और हर चीज़ ख़त्म हो गई। लोग हड्डियाँ और चमड़े खाने पर मजबूर हो गये (सुलैमान और मंसूर) राविआने ह़दीष़ में से एक ने बयान किया कि, वो चमड़े और मुरदार खाने पर मजबूर हो गये और ज़मीन से धुआँ सा निकलने लगा। आख़िर अबू सुफ़यान आए और कहा कि ऐ मुह़म्मद (ﷺ)! आपकी क़ौम हलाक हो चुकी, अल्लाह से दुआ़ कीजिए कि उनसे क़ह्त़ को दूर कर दे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने दुआ़ फ़र्माई और क़ह्त़ ख़त्म हो गया। लेकिन उसके बाद वो फिर कुफ़्र की त़रफ़ लौट गये। मंसूर की रिवायत में है कि फिर आपने ये आयत पढ़ी, तो आप उस रोज़ का इंतिज़ार करें जब आसमान की त़रफ़ एक नज़र आने वाला धुआँ पैदा हो आइदून तक क्या आख़िरत का अ़ज़ाब भी उनसे दूर हो सकेगा? धुआँ और सख़्त पकड़ और हलाकत गुज़र चुके कुछ ने चाँद और कुछ ने ग़ल्बा रूम का भी ज़िक्र किया है। कि ये भी गुज़र चुका है। (राजेअ़ : 1007)

तश्रीह : ये अगली रिवायतों के ख़िलाफ़ नहीं है जिनमें ये मज़्कूर है कि देखने वाले को ज़मीन आसमान के बीच मे एक धुआँ सा मा'लूम होता क्योंकि अन्देशा है कि ये धुआँ ज़मीन से आसमान तक फैला हो या दोनों बातें हुई हों, अकषर ऐसा होता है जब बारिश बिलकुल नहीं होती तो ज़मीन बिलकुल गर्म हो जाती है और उसमें से एक धुआँ की त़रह निकलता है। इटालिया की त़रफ़ तो ऐसे पहाड़ मौजूद हैं जिनमें से रात दिन आग निकलती रहती है वहाँ धुआँ रहता है और कभी कभी ज़मीन में से ये गर्म माद्दा निकल कर दूर दूर तक बहता चला गया है और जो चीज़ सामने आई पेड़ आदमी जानवर वग़ैरह उसको जलाकर ख़ाक स्याह कर दिया है। (वह़ीदी)

बाब 6 : आयत 'यौम नब्तिशुल्कुब्रा' की तफ़्सीर

٦- باب قوله ﴿يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ﴾

या'नी, उस दिन को याद करो जबकि हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे। हम बिला शक उस दिन पूरा पूरा बदला लेंगे।

4825. हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे मुस्लिम ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि पाँच (क़ुर्आन मजीद की पेशीनगोईयाँ) गुज़र चुकी हैं लिज़ाम (बद्र की लड़ाई की हलाकत) अर् रूम (ग़ल्ब-ए-रूम) अल बत़्शता (सख़्त पकड़) अल् क़मर (चाँद के टुकड़े होना) और अद् दुख़ान धुआँ, शिद्दते फ़ाक़ा की वजह से। (राजेअ़ : 1007)

٤٨٢٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ مُسْلِمٍ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: خَمْسٌ قَدْ مَضَيْنَ: اللِّزَامُ، وَالرُّومُ، وَالْبَطْشَةُ، وَالْقَمَرُ، وَالدُّخَانُ.

[راجع: ١٠٠٧]

सूरह जाषिया की तफ़्सीर

[٤٥] سورة ﴿الجاثية﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जाषिया या'नी डर की वजह से अहले मह़शर दो ज़ानू होंगे। मुजाहिद ने कहा कि नस्तन्सिख़ु ब मा'नी नक्तुबु है या'नी हम लिख लेते हैं। नन्साकुम अय्य नत्रुकु कुम (यानी) हम तुमको भुला देंगे या'नी छोड़ देंगे।

جَاثِيَةً مُسْتَوْفِزِينَ عَلَى الرُّكَبِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : نَسْتَنْسِخُ نَكْتُبُ. نَنْسَاكُمْ : نَتْرُكُكُمْ.

तश्रीह : सूरह जाषिया मक्की है। इसमें 37 आयात और चार रुकूअ़ हैं। ये सूरत भी बिल इत्तिफ़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई है। इसमें इन्हीं तीन मसाइल से बह़ष है। नुबुव्वत, तौह़ीद, मआ़द। इससे पहले सूरह दुख़ान में अव्वल मसला नुबुव्वत में कलाम था। यहाँ भी इफ़्तिताह़े सूरह में इस मसले में एक अ़जीब लुत्फ़ के साथ कलाम किया है, वो ये कि ह़ामीम मे किसी ख़ास़ बात की त़रफ़ इशारा करके या अपनी ज़ात व सिफ़ात ह़मिय्यत की क़सम खाकर ये बताना, मक़्सूद है कि ये किताब, अल्लाह ज़बरदस्त की त़रफ़ से नाज़िल हुई है जो बड़ा ह़कीम है और ये भी उसकी ह़िक्मत का मुक़्तज़ा था कि बन्दों को वो बह़्रे ज़लालत से नजात दे। उसके बाद तौह़ीद व इष्बाते बारी में कलाम करता है। फ़र्माया आसमानों और ज़मीन में उसके वजूद तौह़ीद के लिये बड़ी बड़ी निशानियाँ हैं, उनकी मिक़्दार और ह़रकात और औज़ान वग़ैरह की कमी ज़्यादती हर एक बात एक निशानी है इसलिये कि ये अज्साम ह़वादिष से ख़ाली नहीं हैं। पस ये तमाम अज्साम ह़ादिष हैं हर ह़ादिष के लिये एक मुह़दिष ज़रूर है। दोम ये अज्साम अज्ज़ा से मुरक्कब हैं और ये अज्ज़ा बाहम मुतमाषिल हैं फिर एक एक जुज़ को एक जगह में और एक ख़ास़ हेयत में पैदा करने वाला वही अल्लाह है जो आदमियों को पैदा करता है। ज़मीन पे मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानवरों को वजूद देता है। रात–दिन को बदलता रहता है। आसमान से पानी बरसाता है फिर उससे मुख़्तलिफ़ नबातात पैदा करता है। ये सब निशानियाँ हैं, अंधों के लिये नहीं बल्कि आँखों वालो के लिये जिनका अहले ईमान व अहले

यक़ीन कहते हैं।

बाब 1 : आयत 'व मा युहलिकुना इलद्दहर' की तफ़्सीर या'नी,

١-باب ﴿وَمَا يُهْلِكُنَا إِلاَّ الدَّهْرُ﴾ الآيَةَ

और हमको तो सिर्फ़ ज़माना ही हलाक करता है।

4826. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इब्ने आदम मुझे तकलीफ़ पहुँचाता है वो ज़माना को गाली देता है हालाँकि मैं ज़माना हूँ, मेरे ही हाथ में सब कुछ है । मैं रात और दिन को बदलता रहता हूँ।

٤٨٢٦- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ. حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ((قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: يُؤْذِينِي ابْنُ آدَمَ يَسُبُّ الدَّهْرَ، وَأَنَا الدَّهْرُ، بِيَدِي الأَمْرُ أُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ)).

तश्रीह : इंसान मुझे ईज़ा देता है, इसका मतलब ये है कि ऐसा मामला करता है जो अगर तुम्हारे साथ करे तो तुम्हारे लिये ईज़ा का मौजिब हो, वरना अल्लाह इस बात से पाक है कि कोई उसको ईज़ा पहुँचा सके। मैं ज़माना हूँ या'नी ज़माना तो मेरे क़ाबू में है इसको उलट पलट मैं ही करता हूँ। **व क़ालल्किर्मानी इन्नी अना बाक़िन अबदन व हुवल्मुरादु मिनद्दहरि वल्लाहु आलमु**

सूरह अहक़ाफ़ की तफ़्सीर

[٤٦] سورة ﴿الأَحْقَافِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मुजाहिद ने कहा तफ़ीज़ून का मा'नी जो तुम ज़ुबान से निकालते हो, कहते हो। कुछ ले कहा अष्रतुन और उष्रतुन (ब ज़म्मा हम्ज़ा) और अषारतुन (तीनों क़िरात हैं) उनका मा'नी बाक़ी मांदा इल्म। (हदीष पर इसी से अषर का लफ़्ज़ बोला गया है कि वो आँहज़रत (ﷺ) का बाक़ी मांदा इल्म है) और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा बदअ़ा मिनर् रुसुल का ये मा'नी है कि मैं ही कुछ पहला पैग़म्बर दुनिया में नहीं आया। ओरों ने कहा, अरअयतुम मा तदऊना मिन दूनिल्लाह (*अल अहक़ाफ़ : 4*) में हम्ज़ा ज़जर व तौबीख़ के लिये है। या'नी अगर तुम्हारा दा'वा सहीह हो तो ये चीज़ें जिनको तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो बताओ उन्होंने कुछ पैदा किया है (ये सूरत मक्की है और इसमें 53 आयात और चार रुकूअ हैं । अहक़ाफ़ क़ौमे आद की ज़मीन का नाम था जहाँ हज़रत हूद (अलैहि.) मब्ऊष हुए। अहक़ाफ़ हक़्फ़ की जमा है। मुत्लक़ रेत के पहाड़ को कहते हैं। इस क़ौम पर बादल के साथ तेज़ हवा का अ़ज़ाब आया था जिससे सब हलाक हो गये।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿تُفِيضُونَ﴾ تَقُولُونَ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: (أَثَرَةٌ وَأُثْرَةٌ وَأَثَارَةٌ بَقِيَّةُ عِلْمٍ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ﴾ لَسْتُ بِأَوَّلِ الرُّسُلِ. وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿أَرَأَيْتُمْ﴾ هَذِهِ الأَلِفُ إِنَّمَا هِيَ تَوَعُّدٌ، إِنْ صَحَّ مَا تَدْعُونَ لاَ يَسْتَحِقُّ أَنْ يُعْبَدَ، وَلَيْسَ قَوْلُهُ ﴿أَرَأَيْتُمْ﴾ بِرُؤْيَةِ الْعَيْنِ، إِنَّمَا هُوَ : أَتَعْلَمُونَ أَبَلَغَكُمْ أَنَّ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللهِ خَلَقُوا شَيْئًا؟

बाब 1 : आयत 'वल्लज़ी क़ाल लि वालैदयहि' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قوله ﴿وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلاَّ أَسَاطِيرُ الأَوَّلِينَ﴾

और जिस शख़्स ने अपने माँ बाप से कहा कि अफ़सोस है तुम पर, क्या तुम मुझे ये ख़बर देते हो कि मैं क़ब्र से फिर दोबारा निकाला जाऊँगा । मुझसे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं और वो दोनों वालिदैन अल्लाह से फ़रियाद कर रहे हैं (और उस औलाद से कह रहे हैं) अरे तेरी कमबख़्ती तू ईमान ला बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है। तो इस पर वो कहता क्या है कि ये बस अगलों के ढकोसले हैं।

٤٨٢٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ يُوسُفَ بْنِ مَاهَكَ قَالَ: كَانَ مَرْوَانُ عَلَى الْحِجَازِ اسْتَعْمَلَهُ مُعَاوِيَةُ فَخَطَبَ فَجَعَلَ يَذْكُرُ يَزِيدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ، لِكَيْ يُبَايَعَ لَهُ، بَعْدَ أَبِيهِ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ شَيْئًا : فَقَالَ : خُذُوهُ، فَدَخَلَ بَيْتَ عَائِشَةَ فَلَمْ يَقْدِرُوا، فَقَالَ مَرْوَانُ : إِنَّ هَذَا الَّذِي أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ﴿وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي﴾ فَقَالَتْ عَائِشَةُ مِنْ وَرَاءِ الْحِجَابِ : مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِينَا شَيْئًا مِنَ الْقُرْآنِ، إِلاَّ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ عُذْرِي.

4727. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे यूसुफ़ बिन माहिक ने बयान किया कि मर्वान को ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) ने हिजाज़ का अमीर (गवर्नर) बनाया था। उसने एक मौक़े पर ख़ुत्बा दिया और ख़ुत्बा मे यज़ीद बिन मुआविया का बार बार ज़िक्र किया, ताकि उसके वालिद (ह़ज़रत मुआविया रज़ि) के बाद उससे लोग बेअ़त करें। इस पर अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने ए'तिराज़न कुछ फ़र्माया। मर्वान ने कहा उसे पकड़ लो। अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) अपनी बहन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में चले गये तो वो लोग पकड़ नहीं सके। इस पर मर्वान बोला कि इसी शख़्स ने अपने माँ बाप से कहा कि तुफ़्फ़ है तुम पर क्या तुम मुझे ख़बर देते हो, इस पर आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हमारे (आले अबीबक्र के) बारे में अल्लाह तआला ने कोई आयत नाज़िल नहीं की बल्कि, तोहमत से मेरी बराअत ज़रूर नाज़िल की थी।

बाब 2 : आयत 'फलम्मा रऔहू आरिज़न अल्आयः' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قَوْلِهِ :

﴿فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ، قَالُوا: هَذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: عَارِضٌ السَّحَابُ

फ़िर जब उन लोगों ने बादल को अपनी वादियों के ऊपर आते देखा तो बोले कि वाह! ये तो वो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि ये तो वो है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे। या'नी एक आँधी जिसमें दर्दनाक अ़ज़ाब है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा आ़रिज़ बमा'नी बादल है।

٤٨٢٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ، حَدَّثَنَا ابْنُ

4728. हमसे अह़मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने

बयान किया, उन्हें अम्र ने ख़बर दी, उनसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन यसार ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को कभी इस तरह हंसते नहीं देखा कि आपके हलक़ का कव्वा नज़र आ जाए बल्कि आप तबस्सुम फ़र्माया करते थे, बयान किया कि जब भी आप बादल या हवा देखते तो (घबराहट और अल्लाह का डर) आपके चेहरा-ए-मुबारक से पहचान लिया जाता। (दीगर मक़ाम : 6092)

وَهْبٍ، أَخْبَرَنَا عَمْرٌو أَنَّ أَبَا النَّضْرِ حَدَّثَهُ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ ضَاحِكًا حَتَّى أَرَى مِنْهُ لَهَوَاتِهِ إِنَّمَا كَانَ يَتَبَسَّمُ.

[طرفه في: ٦٠٩٢].

4829. उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! जब लोग बादल देखते हैं तो ख़ुश होते हैं कि इससे बारिश बरसेगी लेकिन उसके बरख़िलाफ़ आपको मैं देखती हूँ कि जब आप बादल देखते हैं तो नागवारी का अषर आपके चेहरा मुबारक पर नुमायाँ हो जाता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ आइशा (रज़ि.)! क्या ज़मानत है कि उसमें अज़ाब न हो। एक क़ौम (आद) पर हवा का अज़ाब आया था। उन्होंने जब अज़ाब देखा तो बोले कि ये तो बादल है जो हम पर बरसेगा। (राजेअ : 3206)

٤٨٢٩- قَالَتْ وَكَانَ إِذَا رَأَى غَيْمًا أَوْ رِيحًا عُرِفَ فِي وَجْهِهِ، قَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ النَّاسَ إِذَا رَأَوُا الْغَيْمَ فَرِحُوا رَجَاءَ أَنْ يَكُونَ فِيهِ الْمَطَرُ، وَأَرَاكَ إِذَا رَأَيْتَهُ عُرِفَ فِي وَجْهِكَ الْكَرَاهِيَةُ؟ فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ مَا يُؤْمِنِّي أَنْ يَكُونَ فِيهِ عَذَابٌ؟ عُذِّبَ قَوْمٌ بِالرِّيحِ، وَقَدْ رَأَى قَوْمٌ الْعَذَابَ فَقَالُوا: ﴿هَذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا﴾)).

[راجع: ٣٢٠٦]

बाब सूरह 'अल्लज़ीन कफरू' या'नी सूरह मुहम्मद (ﷺ) की तफ़्सीर

[٤٧] باب سورة محمد ﷺ ﴿الَّذِينَ كَفَرُوا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अवज़ारहा अपने गुनाह धर दिये यहाँ तक कि मुसलमान के सिवा कोई बाक़ी न रहे (अकषर लोगों ने अवज़ारहा के मा'नी हथियारों के किये हैं) अरफ़ुहा उसको बयान कर देगा, बतला देगा। (हर एक बहिश्ती अपना घर पहचान लेगा) मुजाहिद ने कहा मौल्लज़ीन आमनू उस मौला से वली या'नी कारसाज़ मुराद है। अज़्मुल अम्र जब लड़ाई का इरादा पक्का हो जाए। फ़ला तहिनू सुस्ती न करो और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा अज़्ग़ानहुम के मा'नी उनका हसद कीना। आसिन सड़ा हुआ पानी जिसका रंग या बू या मज़ा बदल जाए।

أَوْزَارَهَا: آثَامَهَا. حَتَّى لاَ يَبْقَى إِلاَّ مُسْلِمٌ. عَرَّفَهَا : بَيَّنَهَا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا﴾ وَلِيُّهُمْ. عَزَمَ الأَمْرُ : جَدَّ الأَمْرُ. فَلاَ تَهِنُوا: لاَ تَضْعُفُوا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَضْغَانَهُمْ: حَسَدَهُمْ. آسِنٍ: مُتَغَيِّرٍ.

सूरह मुहम्मद (ﷺ) मदनी है। इसमें 38 आयात और चार रुकूअ हैं। आँहज़रत (ﷺ) के नाम नामी पर ये सूरत मौसूम है।

इसमें आपका नाम मज़्कूर है।

बाब 1 : आयत 'व तुक़त्तिऊ अर्हामकुम' की तफ़्सीर, तुम नाता रिश्ता तोड़ डालोगे।

١- باب ﴿وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ﴾

4830. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुआविया बिन अबी मुज़र ने बयान किया, उनसे सईद बिन यसार ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ पैदा की, जब वो उसकी पैदाइश से फ़ारिग़ हुआ तो, रहम ने खड़े होकर रहम करने वाले अल्लाह के दामन में पनाह ली। अल्लाह तआला ने उससे फ़र्माया क्या तुझे ये पसंद नहीं कि जो तुझको जोड़े मैं भी उसे जोड़ूँ और जो तुझे तोड़े मैं भी उसे तोड़ूँ। रहम ने अर्ज़ किया, हाँ ऐ मेरे परवरदिगार! अल्लाह तआला ने फ़र्माया, फिर ऐसा ही होगा। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो ये आयत पढ़ लो, अगर तुम किनाराकश रहो तो आया तुमको ये अन्देशा भी है कि तुम लोग दीन में फ़साद मचा दोगे और आपस में क़त्अ ता'ल्लुक़ कर लोगे। (दीगर मक़ाम : 4731, 4732, 5973, 7502)

٤٨٣٠- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي مُزَرِّدٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْهُ قَامَتِ الرَّحِمُ فَأَخَذَتْ بِحَقْوِ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ لَهُ: مَهْ قَالَتْ : هَذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ الْقَطِيعَةِ. قَالَ : أَلاَ تَرْضَيْنَ أَنْ أَصِلَ مَنْ وَصَلَكِ وَأَقْطَعَ مَنْ قَطَعَكِ؟ قَالَتْ : بَلَى يَا رَبِّ، قَالَ : فَذَاكِ)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ﴾.

[أطرافه في : ٤٨٣١، ٤٨٣٢، ٥٩٨٣، ٧٥٠٢].

4831. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, कहा कि हमको हातिम ने बयान किया, उनसे मुआविया ने बयान किया, उनसे उनके चचा अबुल ह्बाब सईद बिन यसार ने बयान किया, और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने साबिक़ा हदीष़ की तरह । फिर (अबू हुरैरह रज़ि. ने बयान किया कि) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो आयत, अगर तुम किनाराकश रहो, पढ़ लो। (राजेअ : 4730)

٤٨٣١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عَمِّي أَبُو الْحُبَابِ سَعِيدُ بْنُ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ بِهَذَا ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ: ((اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ﴾)).

[راجع: ٤٨٣٠]

4832. हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें मुआविया बिन मज़रिंद ने ख़बर दी, साबिक़ा हदीष़ की तरह (और ये कि अबू हुरैरह रज़ि. ने बयान किया) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुम्हारा जी चाहे तो आयत, अगर तुम किनाराकश रहो। पढ़ लो। (राजेअ : 4730)

٤٨٣٢- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي الْمُزَرِّدِ بِهَذَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ﴾ [راجع: ٤٨٣٠]

सूरह फ़तह की तफ़्सीर

[٤٨] ﴿سُورَةُ الْفَتْحِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ﴾ السَّحْنَةُ. وَقَالَ مَنْصُورٌ عَنْ مُجَاهِدٍ: التَّوَاضُعُ. شَطْأَهُ فِرَاخَهُ. فَاسْتَغْلَظَ : غَلُظَ. سُوقِهِ : السَّاقُ حَامِلَةُ الشَّجَرَةِ. وَيُقَالُ دَائِرَةُ السَّوْءِ كَقَوْلِكَ رَجُلُ السَّوْءِ وَدَائِرَةُ السَّوْءِ الْعَذَابُ. تُعَزِّرُوهُ يَنْصُرُوهُ. شَطْأَهُ : شَطْءُ السُّنْبُلِ. تُنْبِتُ الْحَبَّةُ عَشْرًا أَوْ ثَمَانِيًا أَوْسَبْعًا فَيَقْوَى بَعْضُهُ بِبَعْضٍ، فَذَاكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿فَآزَرَهُ﴾ قَوَّاهُ، وَلَوْ كَانَتْ وَاحِدَةً لَمْ تَقُمْ عَلَى سَاقٍ، وَهُوَ مَثَلٌ ضَرَبَهُ اللهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ إِذْ خَرَجَ وَحْدَهُ، ثُمَّ قَوَّاهُ بِأَصْحَابِهِ كَمَا قَوَّى الْحَبَّةَ بِمَا يَنْبُتُ مِنْهَا.

मुजाहिद ने कहा बवरा के मा'नी हलाक होने वालों के हैं, मुजाहिद ने ये भी कहा कि सीमाहुम फ़ी वुजूहिहिम का मतलब ये है कि उनके चेहरे पर सज्दों की वजह से नरमी और ख़ुशनुमाई होती है और मंसूर ने मुजाहिद से नक़ल किया सीमा से मुराद तवाज़ोअ और आजिज़ी है। अख़रज शत्अहू उसने अपना ख़ौशा निकाला। फ़स्तग़लज़ पस वो मोटा हो गया। साक़ पेड़ की नली जिस पर पेड़ खड़ा रहता है उसकी जड़। दाइरतिस् सूअ जैसे कहते हैं रजुलुस् सूअ, दाइरतिस् सूअ से मुराद अज़ाब है। तुअज़्ज़िरूहु उसकी मदद करें। शत्अहू से बाल का पट्ठा मुराद। एक दाना दस या आठ था सात बालें उगाता है और एक दूसरे से सहारा मिलता है। फ़आज़रुहू से यही मुराद है, या'नी उसको ज़ोर दिया। अगर एक ही बाली होती तो वो एक नली पर खड़ी न रह सकती। ये एक मिष़ाल अल्लाह ने नबी करीम (ﷺ) की बयान की है। जब आपको रिसालत मिली आप बिलकुल तंहा बे यार व मददगार थे। फिर अल्लाह पाक ने आपके अस्हाब (रज़ि.) से आपको ताक़त दी जैसे दाने को बालियों से ताक़त मिलती है।

ये सूरह मदनी है, इसमें 29 आयात और चार रुकूअ हैं। सुलह हुदैबिया के मौक़ा पर ये सूरत नाज़िल हुई।

बाब 1 : आयत 'इन्ना फतहना लक फ़त्हम्मुबीना' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾

बेशक हमने तुझको खुली हुई फ़तह दी है।

٤٨٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، كَانَ يَسِيرُ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسِيرُ مَعَهُ لَيْلاً، فَسَأَلَهُ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَنْ شَيْءٍ فَلَمْ يُجِبْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، فَقَالَ عُمَرُ بْنُ

4833. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक सफ़र में जा रहे थे। हज़रत उमर (रज़ि.) भी आपके साथ थे। रात का वक़्त था हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने सवाल किया लेकिन हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर उन्होंने सवाल किया और इस मर्तबा भी आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया। तीसरी मर्तबा भी उन्होंने सवाल किया लेकिन आप (ﷺ) ने जवाब नहीं दिया। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, उमर की माँ उसे

रोये। आँहज़रत (ﷺ) से तुमने तीन मर्तबा सवाल में इस्रार किया, लेकिन आँहज़रत (ﷺ)ने तुम्हें किसी मर्तबा जवाब नहीं दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने अपने ऊँट को हरकत दी और लोगों से आगे बढ़ गया। मुझे डर था कि कहीं मेरे बारे में क़ुर्आन मजीद की कोई आयत न नाज़िल हो। अभी थोड़ी देर ही हुई थी कि एक पुकारने वाले की आवाज़ मैंने सुनी जो मुझे ही पुकार रहा था। मैंने कहा कि मुझे तो डर था ही कि मेरे बारे में कोई आयत न नाज़िल हो जाए। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम किया, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझ पर आज रात एक सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे इस सारी कायनात से ज़्यादा अ़ज़ीज़ है जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है फिर आपने सूरह फ़तह की तिलावत फ़र्माई। (राजेअ़ : 4177)

الْخَطَّابِ: ثَكِلَتْ أُمُّ عُمَرَ نَزَرْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ كُلُّ ذَلِكَ لاَ يُجِيبُكَ، قَالَ عُمَرُ: فَحَرَّكْتُ بَعِيرِي ثُمَّ تَقَدَّمْتُ أَمَامَ النَّاسِ وَخَشِيتُ أَنْ يُنْزَلَ فِيَّ الْقُرْآنُ فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي فَقُلْتُ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزَلَ فِيَّ قُرْآنٌ، فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: ((لَقَدْ أُنْزِلَتْ عَلَيَّ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ لَهِيَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ. ثُمَّ قَرَأَ : ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾)). [راجع: ٤١٧٧]

4834. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सूरह फ़तह सुलह हुदैबिया के बारे में नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 4182)

٤٨٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾ قَالَ: الْحُدَيْبِيَةُ. [راجع: ٤١٧٢]

4835. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन क़ुर्रह ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तह मक्का के दिन सूरह फ़तह ख़ूब ख़ुश इल्हानी से पढ़ी। मुआविया बिन क़ुर्रह ने कहा कि अगर मैं चाहूँ कि तुम्हारे सामने आँहज़रत (ﷺ) की इस मौक़े पर तर्ज़े क़िरात की नक़ल करूँ तो कर सकता हूँ। (राजेअ़ : 4281)

٤٨٣٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ قُرَّةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ، يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ سُورَةَ الْفَتْحِ فَرَجَّعَ فِيهَا، قَالَ مُعَاوِيَةُ: لَوْ شِئْتُ أَنْ أَحْكِيَ لَكُمْ قِرَاءَةَ النَّبِيِّ ﷺ لَفَعَلْتُ.[راجع: ٤٢٨١]

बाब 2 : आयत 'लियग़्फ़िरुल्लाहु लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक व मा तअख़्ख़र' की तफ़्सीर

٢- باب

﴿لِيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا﴾.

या'नी, ताकि अल्लाह आपकी सब अगली पिछली ख़ताएँ मुआफ़ कर दे और आप पर एहसानात की तकमील कर दे और आपको सीधे रास्ते पर ले चले।

4836. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्हें इब्ने उयैना ने ख़बर दी, उनसे ज़ियाद ने बयान किया और उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ मे रात भर खड़े रहे यहाँ तक कि आपके दोनों पैर सूज गये। आपसे अर्ज़ किया गया कि अल्लाह तआला ने तो आपकी अगली पिछली तमाम ख़ताएँ मुआफ़ कर दी हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? (राजेअ: 1130)

٤٨٣٦- حدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا زِيَادٌ أَنَّهُ سَمِعَ الْمُغِيرَةَ يَقُولُ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ، فَقِيلَ لَهُ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ : ((أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا)). [راجع: ١١٣٠]

4837. हमसे हसन बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन यह्या ने बयान किया, उन्हें हयवह ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद ने, उन्होंने उर्वा से सुना और उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) रात की नमाज़ में इतना लम्बा क़याम करते कि आपके क़दम फट जाते। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक बार अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप इतनी ज़्यादा मुशक़्क़त क्यूँ उठाते हैं। अल्लाह तआला ने तो आपकी अगली पिछली सारी ख़ताएँ मुआफ़ कर दी हैं। आपने फ़र्माया क्या फिर मैं शुक्रगुज़ार बन्दा बनना पसंद न करूँ। उम्र की आख़िरी हिस्सा में (जब लम्बा क़याम दुश्वार हो गया तो) आप बैठकर रात की नमाज़ पढ़ते और जब रुकूअ का वक़्त आता तो खड़े हो जाते (और तक़रीबन तीस या चालीस आयतें और पढ़ते) फिर रुकूअ करते। (राजेअ: 1118)

٤٨٣٧- حدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ سَمِعَ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ نَبِيَّ اللهِ كَانَ يَقُومُ مِنَ اللَّيْلِ حَتَّى تَتَفَطَّرَ قَدَمَاهُ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ : لِمَ تَصْنَعُ هَذَا يَا رَسُولَ اللهِ وَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ : ((أَفَلاَ أُحِبُّ أَنْ أَكُونَ عَبْدًا شَكُورًا)). فَلَمَّا كَثُرَ لَحْمُهُ صَلَّى جَالِسًا فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَقَرَأَ ثُمَّ رَكَعَ.

[راجع: ١١١٨]

बाब 3 : आयत 'इन्ना अर्सल्नाक शाहिदव्वं मुबश्शिरंव्वनज़ीरा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قوله ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾

4838. हमसे अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी हिलाल ने, उनसे अता बिन यसार ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ने कि ये आयत जो क़ुर्आन में है, ऐ नबी! बेशक मैंने आपको गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तो आँहज़रत (ﷺ) के बारे में यही अल्लाह तआला ने तोरियत मे भी फ़र्माया था, ऐ नबी! बेशक हमने आपको गवाही देने वाला और बशारत देने वाला और अनपढ़ों (अरबों) की हिफ़ाज़त करने वाला बनाकर भेजा है। आप मेरे

٤٨٣٨- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ الَّتِي فِي الْقُرْآنِ ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾ قَالَ فِي التَّوْرَاةِ : يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا، وَحِرْزًا لِلأُمِّيِّينَ. أَنْتَ عَبْدِي وَرَسُولِي سَمَّيْتُكَ الْمُتَوَكِّلَ. لَيْسَ بِفَظٍّ وَلاَ غَلِيظٍ وَلاَ سَخَّابٍ بِالأَسْوَاقِ، وَلاَ يَدْفَعُ السَّيِّئَةَ بِالسَّيِّئَةِ، وَلَكِنْ يَعْفُو وَيَصْفَحُ، وَلَنْ يَقْبِضَهُ اللهُ حَتَّى يُقِيمَ بِهِ الْمِلَّةَ الْعَوْجَاءَ بِأَنْ يَقُولُوا : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، فَيُفْتَحَ بِهَا أَعْيُنًا عُمْيًا، وَآذَانًا صُمًّا، وَقُلُوبًا غُلْفًا.

[راجع: ٢١٢٥]

बन्दे हैं और मेरे रसूल हैं। मैंने आपका नाम मुतवक्किल रखा, आप न बद ख़ू हैं और न सख़्त दिल और न बाज़ारों में शोर करने वाले और न वो बुराई का बदला बुराई से देंगे बल्कि मुआफ़ी और दरगुज़र से काम लेंगे और अल्लाह उनकी रूह उस वक़्त तक क़ब्ज़ नहीं करेगा जब तक कि वो कज क़ौम (अरबी) को सीधा न कर लें या'नी जब तक वो उनसे ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार न करा लें पस इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये वो अंधी आँखों को और बहरे कानों को और पर्दा पड़े हुए दिलों को खोल देंगे। (राजेअ : 2125)

٤- قوله باب ﴿هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ﴾

बाब 4 : आयत 'हुवल्लज़ी अन्ज़लस्सकीनत' की तफ़्सीर

या'नी, वो अल्लाह वही तो है जिसने अहले ईमान के दिलों में सकीनत (तहम्मुल) पैदा किया।

٤٨٣٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : بَيْنَمَا رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ يَقْرَأُ، وَفَرَسُهُ مَرْبُوطٌ فِي الدَّارِ، فَجَعَلَ يَنْفِرُ، فَخَرَجَ الرَّجُلُ فَنَظَرَ فَلَمْ يَرَ شَيْئًا، وَجَعَلَ يَنْفِرُ، فَلَمَّا أَصْبَحَ ذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((تِلْكَ السَّكِينَةُ تَنَزَّلَتْ بِالْقُرْآنِ)).

[راجع: ٣٦١٤]

4839. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे हज़रत बरा (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) के एक सहाबी (हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि. रात में सूरह कहफ़) पढ़ रहे थे। उनका एक घोड़ा जो घर में बंधा हुआ था बिदकने लगा तो वो सहाबी निकले, उन्होंने कोई ख़ास चीज़ नहीं देखी वो घोड़ा फिर भी बिदक रहा था। सुबह के वक़्त वो सहाबी आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और रात का वाक़िया बयान किया। आपने फ़र्माया कि वो चीज़ (जिससे घोड़ा बिदक रहा था) सकीनत थी जो क़ुर्आन की वजह से नाज़िल हुई। (राजेअ : 3614)

दूसरी रिवायत में सकीनत की जगह फ़रिश्तों का ज़िक्र है। इसलिये यहाँ भी सकीनत से मुराद फ़रिश्ते ही हैं। (राज़)

٥- بَابُ قَوْلِهِ : ﴿إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾

बाब 5 : आयत 'इज़ युबायिऊनक तहतश्शज्रति' की तफ़्सीर या'नी,

वो वक़्त याद करो जबकि वो पेड़ के नीचे आपके हाथ पर बेअत कर रहे थे।

٤٨٤٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا

4840. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे

सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अम्र ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि सुलह हुदबिया के मौक़े पर लश्कर में हम (मुसलमान) एक ह़ज़ार चार सौ थे। (राजेअ़ : 3576)

سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ أَلْفًا وَأَرْبَعَمِائَةٍ.

[راجع: ٣٥٧٦]

4841. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे शबाबा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उन्होंने उ़क़्बा बिन सुह्मान से सुना और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) से, उन्होंने कहा कि मैं पेड़ के नीचे बेअ़त में मौजूद था, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो उँगलियों के दरम्यान कंकरी लेकर फेंकने से मना किया। (दीगर मक़ाम : 5749, 6220)

٤٨٤١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ عُقْبَةَ بْنَ صُهْبَانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ الْمُزَنِيِّ، مِمَّنْ شَهِدَ الشَّجَرَةَ. نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْخَذْفِ.

[طرفاه في: ٥٧٤٩، ٦٢٢٠].

4842. और उ़क़्बा बिन सुह्मान ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) से गुसलख़ाना में पेशाब करने के बारे में सुना। (या'नी ये कि आपने उससे मना किया)।

٤٨٤٢- وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ صُهْبَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الْمُغَفَّلِ الْمُزَنِيَّ فِي الْبَوْلِ فِي الْمُغْتَسَلِ.

4843. मुझसे मुहम्मद बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ने, उनसे अबू क़लाबा ने और उनसे ष़ाबित बिन ज़िह्हाक (रज़ि.) ने और वो (सुलह हुदैबिया के दिन) पेड़ के नीचे बेअ़त करने वालों में शामिल थे। (राजेअ़ : 1363)

٤٨٤٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ خَالِدٍ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ الشَّجَرَةِ.

[راجع: ١٣٦٣]

4844. हमसे अह़मद बिन इस्ह़ाक़ सुल्मी ने बयान किया, कहा हमसे यअ़ला ने, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन स्याह ने, उनसे ह़बीब बिन ष़ाबित ने, कि मैं अबू वाइल (रज़ि.) की ख़िदमत में एक मसला पूछने के लिये (ख़्वारिज के बारे में) गया, उन्होंने फ़र्माया कि हम मुक़ामे सिफ़्फ़ीन में पड़ाव डाले हुए थे (जहाँ अ़ली और मुआ़विया रज़ि.) की जंग हुई थी) एक शख़्स ने कहा कि आपका क्या ख़्याल है अगर कोई शख़्स किताबुल्लाह की त़रफ़ सुलह के लिये बुलाए? अ़ली (रज़ि.) ने फ़र्माया ठीक है। लेकिन ख़्वारिज ने जो मुआ़विया (रज़ि.) के ख़िलाफ़ अ़ली (रज़ि.) के साथ थे उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। इस पर सहल बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) ने फ़र्माया तुम पहले अपना जाइज़ा लो। हम लोग हुदैबिया के मौक़े पर मौजूद थे आपकी

٤٨٤٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَقَ السُّلَمِيُّ، حَدَّثَنَا يَعْلَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ سِيَاهٍ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ قَالَ: أَتَيْتُ أَبَا وَائِلٍ أَسْأَلُهُ فَقَالَ: كُنَّا بِصِفِّينَ، فَقَالَ رَجُلٌ: أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللهِ تَعَالَى، فَقَالَ عَلِيٌّ: نَعَمْ. فَقَالَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ: اتَّهِمُوا أَنْفُسَكُمْ، فَلَقَدْ رَأَيْتُنَا يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ، يَعْنِي الصُّلْحَ الَّذِي كَانَ بَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْمُشْرِكِينَ وَلَوْ نَرَى قِتَالاً لَقَاتَلْنَا

فَجَاءَ عُمَرُ فَقَالَ أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَهُمْ عَلَى الْبَاطِلِ أَلَيْسَ قَتْلاَنَا فِي الْجَنَّةِ، وَقَتْلاَهُمْ فِي النَّارِ؟ قَالَ : بَلَى قَالَ : فَفِيمَ أُعْطِي الدَّنِيَّةَ فِي دِينِنَا. وَنَرْجِعُ وَلَمَّا يَحْكُمُ اللهُ بَيْنَنَا؟ فَقَالَ : يَا ابْنَ الْخَطَّابِ: إِنِّي رَسُولُ اللهِ، وَلَنْ يُضَيِّعَنِي اللهُ أَبَدًا، فَرَجَعَ مُتَغَيِّظًا فَلَمْ يَصْبِرْ حَتَّى جَاءَ أَبَا بَكْرٍ، فَقَالَ : يَا أَبَا بَكْرٍ أَلَسْنَا عَلَى الْحَقِّ وَهُمْ عَلَى الْبَاطِلِ؟ قَالَ: يَا ابْنَ الْخَطَّابِ : إِنَّهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَلَنْ يُضَيِّعَهُ اللهُ أَبَدًا، فَنَزَلَتْ سُورَةُ الْفَتْحِ.

[راجع: ٣١٨١]

मुराद उस सुलह से थी जो मुक़ामे हुदैबिया मे नबी करीम (ﷺ) और मुश्रिकीन के बीच हुई थी और जंग का मौक़ा आता तो हम उससे पीछे हटने वाले नहीं थे। (लेकिन सुलह की बात चली तो हमने उसमें भी स़ब्र व ष़बात का दामन नहीं छोड़ा) इतने में उ़मर (रज़ि.) आँहुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया क्या हम ह़क़ पर नहीं हैं? और क्या कुफ़्फ़ार बात़िल पर नहीं हैं? क्या हमारे मक़्तूलीन जन्नत में नहीं जाएँगे और क्या उनके मक़्तूलीन जहन्नम में नहीं जाएँगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्यूँ नहीं! उ़मर (रज़ि.) ने कहा फिर हम अपने दीन के बारे में ज़िल्लत का मुज़ाहिरा क्यूँ करें (या'नी दबकर सुलह क्यूँ करें) और क्यूँ वापस जाएँ, जबकि अल्लाह तआ़ला ने हमें उसका हुक्म फ़र्माया है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ इब्ने ख़त्ताब! मैं अल्लाह का रसूल हूँ और अल्लाह तआ़ला मुझे कभी ज़ाये नहीं करेगा। उ़मर (रज़ि.) आँहुज़ूर (ﷺ) के पास से वापस आ गये उनको ग़ुस्सा आ रहा था, स़ब्र नहीं आया और अबूबक्र (रज़ि) के पास आए और कहा, ऐ अबूबक्र (रज़ि)! क्या हम ह़क़ पर और वो बात़िल पर नहीं है? अबूबक्र (रज़ि.) ने भी वही जवाब दिया कि ऐ इब्ने ख़त्ताब! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह उन्हें हर्गिज़ ज़ाया नहीं करेगा। फिर सूरह अल् फ़तह नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 3181)

तश्रीह : हुआ ये कि जब जंगे सिफ़्फ़ीन में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के लोग ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) के लोगों पर ग़ालिब होने लगे तो ह़ज़रत अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) को ये मश्वरा दिया कि तुम क़ुर्आन शरीफ़ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास भिजवाओ और कहो हम तुम दोनों इस पर अ़मल करें। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) क़ुर्आन शरीफ़ पर ज़रूर राज़ी होंगे। जब क़ुर्आन शरीफ़ आया तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा मैं तो तुमसे बढ़कर इस पर अ़मल करने वाला हूँ। इतने मे ख़ारजी लोग आए जिनको क़ुर्रा कहते थे उन्होंने कहा कि या अमीरल मोमिनीन! हम तो इंतिज़ार नहीं करने के हम उनसे लड़ने जाते हैं, हम तो उनसे लड़ेंगे। ख़ारजी कहते थे कि हम पंचायत या'नी तह़कीम क़ुबूल नहीं करेंगे क्योंकि अल्लाह के सिवा और कोई ह़ाकिम नहीं हो सकता। लड़ाई हो और दोनों में कोई ग़ालिब हो। सुहैल बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) की तक़रीर ख़्वारिज के ख़िलाफ़ थी जैसा कि रिवायत में मज़्कूर है शारेह़ीन लिखते हैं। **क़ौलुहू सहल बिन हनीफ़ इत्तहमू अन्फुसकुम फ़इन्नी ला उकस्सिरू व मा कुन्तु मुकस्सिरन वक़तल्हाजति कमा फ़ी यौमिल्हुदैबिय्यति फइन्नी रायतु नफ़्सी यौमइज़िन बिहैषु लौ कदर्तु मुख़ालफ़त रसूलिल्लाहि (ﷺ) लक़ातल्तु क़ितालन अ़ज़ीमन लाकिन्नल्यौम ला नरल्मस्लहत फिल्क़िताली बलित्तक़्क़फ़ु लिमस्लहतिल्मुस्लिमीन व अम्मल्इन्कारू अलत्तहकीमि इज़ लैस असरू ज़ालिक फ़ी किताबिल्लाहि फक़ाल अ़ली नअ़म लाकिन्नल्मुन्किरीन मिन्हुमुल्लज़ीन अ़दलू मिन किताबिल्लाहि लिअन्नल्मुज्तहदि लम्मा रवा ज़न्नहू इला जवाज़ित्तहकीमि फहुव हुक्मुल्लाहि व कालहू सहल इत्तहम्तुम अन्फुसकुम फिल्इन्कारि लिअन्ना अयज़न कुन्ना कारिहीन तर्कल्क़िताली यौमल्हुदैबिय्यति व कहर्नन्नबिय्यु (ﷺ) अलस्सुल्हि व क़द आक़ब खैरन कषीरा** (किर्मानी)

सूरह हुजुरात की तफ़्सीर

[٤٩] باب ﴿سُورَةُ الْحُجُرَاتِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तश्रीह : ये सूरत मदनी है जिसमें अठारह आयात और दो रुकूअ हैं। उसमें ज़िम्नन हुजूरात नबवी का ज़िक्र है। इसलिए ये इस नाम से मौसूम हुई।

मुजाहिद ने कहा ला तुक़द्दिमू का मतलब ये है कि आँहज़रत (ﷺ) के सामने बढ़कर बातें न करो। (बल्कि अदब से क़ालल्लाहु व क़ालर्रसूल सुना करो) यहाँ तक कि जो हुक्म अल्लाह को देना है वो अपने रसूल की ज़ुबान से तुमको पहुँचाए। इम्तहना का मा'नी साफ़ किया। परख लिया। ला तनाबज़ू बिल अल्क़ाब का मा'नी ये है कि मुसलमान होने के बाद फिर उसको काफ़िर, यहूदी या ईसाई कहकर न पुकारो। ला यल्तिकुम तुम्हारा ष़वाब कुछ कम नहीं करेगा सूरह तूर में वमा अलत्ना इसलिये है कि हमने उनके अमल का ष़वाब कुछ कम नहीं किया।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ لاَ تُقَدِّمُوا لاَ تَفْتَاتُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَقْضِيَ اللهُ عَلَى لِسَانِهِ. امْتَحَنَ أَخْلَصَ. تَنَابَزُوا يُدْعَى بِالْكُفْرِ بَعْدَ الإِسْلاَمِ. يَلِتْكُمْ يَنْقُصْكُمْ أَلَتْنَا نَقَصْنَا.

बाब 1 : आयत 'ला तर्फ़ऊ अस्वातकुम' की तफ़्सीर

१- باب قوله ﴿لاَ تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ﴾ الآيَةَ.

या'नी, ऐ ईमानवालों ! नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ों को ऊँचा न किया करो। तश्अरून का मा'नी जानते हो। इससे लफ़्ज़े शाइर निकला है या'नी जानने वाला।

﴿تَشْعُرُونَ﴾ تَعْلَمُونَ وَمِنْهُ الشَّاعِرُ.

4845. हमसे यस्रह बिन स़फ़्वान बिन जमील लख़्मी ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उ़मर ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि क़रीब था कि वो सबसे बेहतर अफ़राद तबाह हो जाएँ या'नी अबूबक्र (रज़ि.) और उ़मर (रज़ि.) इन दोनों हज़रात ने नबी करीम (ﷺ) के सामने अपनी आवाज़ बुलंद कर दी थी। ये उस वक़्त का वाक़िया है जब बनी तमीम के सवार आए थे (और आँहज़रत (ﷺ) से उन्होंने दरख़्वास्त की कि हमारा कोई अमीर बना दें) उनमें से एक (उ़मर रज़ि.) ने बनी मजाशेअ के अक़्रअ बिन हाबिस (रज़ि.) के) इंतिख़ाब के लिये कहा था और दूसरे (अबूबक्र रज़ि.) ने एक दूसरे का नाम पेश किया था। नाफ़ेअ ने कहा कि उनका नाम मुझे याद नहीं। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने हज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा कि आपका इरादा मुझसे इख़्तिलाफ़ करना ही है। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मेरा इरादा आपसे

٤٨٤٥- حَدَّثَنَا يَسْرَةُ بْنُ صَفْوَانَ بْنِ جَمِيلِ اللَّخْمِيُّ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ. قَالَ : كَادَ الْخَيِّرَانِ أَنْ يَهْلِكَا أَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، رَفَعَا أَصْوَاتَهُمَا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ قَدِمَ عَلَيْهِ رَكْبُ بَنِي تَمِيمٍ، فَأَشَارَ أَحَدُهُمَا بِالأَقْرَعِ بْنِ حَابِسٍ أَخِي بَنِي مَجَاشِعٍ، وَأَشَارَ الآخَرُ بِرَجُلٍ آخَرَ قَالَ نَافِعٌ لاَ أَحْفَظُ اسْمَهُ، فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعُمَرَ: مَا أَرَدْتَ إِلاَّ خِلاَفِي قَالَ: مَا أَرَدْتُ خِلاَفَكَ، فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا فِي

تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ﴾ الآيَةَ قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ : فَمَا كَانَ عُمَرُ يُسْمِعُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. بَعْدَ هَذِهِ الآيَةِ حَتَّى يَسْتَفْهِمَهُ، وَلَمْ يَذْكُرْ ذَلِكَ عَنْ أَبِيهِ. يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ.

[راجع: ٣٤٦٧]

इख़्तिलाफ़ करना नहीं है। इस पर उन दोनों की आवाज़ बुलंद हो गई। फिर अल्लाह तआला ने ये आयत उतारी, ऐ ईमानवालों! अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से बुलंद न किया करो, अल्अख़। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद हज़रत उमर (ﷺ) नबी करीम (ﷺ) के सामने इतनी आहिस्ता आहिस्ता बात करते कि आप साफ़ सुन भी न सकते थे और दोबारा पूछना पड़ता था। उन्होंने अपने नाना या'नी हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बारे में इस सिलसिले में काई चीज़ बयान नहीं की। (राजेअ : 3467)

٤٨٤٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا أَزْهَرُ بْنُ سَعْدٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ قَالَ: أَنْبَأَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ افْتَقَدَ ثَابِتَ بْنَ قَيْسٍ، فَقَالَ رَجُلٌ : يَا رَسُولَ اللهِ، أَنَا أَعْلَمُ لَكَ عِلْمَهُ، فَأَتَاهُ فَوَجَدَهُ جَالِسًا فِي بَيْتِهِ مُنَكِّسًا رَأْسَهُ، فَقَالَ لَهُ : مَا شَأْنُكَ؟ قَالَ : شَرٌّ. كَانَ يَرْفَعُ صَوْتَهُ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَأَتَى الرَّجُلُ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَالَ كَذَا وَكَذَا، فَقَالَ مُوسَى، فَرَجَعَ إِلَيْهِ الْمَرَّةَ الآخِرَةَ بِبِشَارَةٍ عَظِيمَةٍ، فَقَالَ: ((اذْهَبْ إِلَيْهِ، فَقُلْ لَهُ إِنَّكَ لَسْتَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، وَلَكِنَّكَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ)).

[راجع: ٣٦١٣]

4846. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अज़्हर बिन सअद ने बयान किया, कहा हमको इब्ने औन ने ख़बर दी, कहा कि मुझे मूसा बिन अनस ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) को नहीं पाया। एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपके लिये उनकी ख़बर लाता हूँ। फिर वो ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) के यहाँ आए। देखा कि वो घर में सर झुकाए बैठे हैं पूछा क्या हाल है? कहा कि बुरा हाल है कि नबी करीम (ﷺ) की आवाज़ के मुक़ाबले में बुलंद आवाज़ से बोला करता था अब सारे नेक अमल अकारत हुए और अहले दोज़ख़ में क़रार दे दिया गया हूँ। वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने जो कुछ कहा था उसकी ख़बर आपको दी। हज़रत मूसा बिन अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि वो शख़्स अब दोबारा उनके लिये एक अज़ीम बशारत लेकर उनके पास आए। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि उनके पास जाओ और कहो कि तुम अहले दोज़ख़ में से नहीं हो बल्कि तुम अहले जन्नत में से हो। (राजेअ : 3613)

तश्रीह : हज़रत ष़ाबित बिन क़ैस (रज़ि.) अंसार के ख़तीब हैं आपकी आवाज़ बहुत बुलंद थी। जब मज़्कूरा बाला आयात नाज़िल हुई और मुसलमानों को नबी करीम (ﷺ) के सामने बुलंद आवाज़ से बोलने से मना किया गया तो इतने ग़म ज़दा हुए कि घर से बाहर नहीं निकलते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने जब उन्हें नहीं देखा तो उनके बारे में पूछा।

٢- باب قوله ﴿إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لاَ يَعْقِلُونَ﴾

बाब 2 : आयत 'इन्नल्लज़ीन युनादूनक मिव्वंराइल्हुजुराति' की तफ़्सीर या'नी,

ذَلِكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ

बेशक जो लोग आपको हुजरों के बाहर से पुकारा करते हैं उनमें से अकष़र अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

٤٨٤٧- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُمْ أَنَّهُ قَدِمَ رَكْبٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ: أَمِّرِ الْقَعْقَاعَ بْنَ مَعْبَدٍ وَقَالَ عُمَرُ: أَمِّرِ الأَقْرَعَ بْنَ حَابِسٍ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ مَا أَرَدْتَ إِلَيَّ - أَوْ إِلاَّ - خِلاَفِي فَقَالَ عُمَرُ: مَا أَرَدْتُ خِلاَفَكَ، فَتَمَارَيَا حَتَّى ارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا. فَنَزَلَ فِي ذَلِكَ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللهِ وَرَسُولِهِ﴾ حَتَّى انْقَضَتِ الآيَةُ.[راجع: ٤٣٦٧]

4847. हमसे ह़सन बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि क़बीला बनी तमीम के सवारों का वफ़्द नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि उनका अमीर आप क़अक़ाअ़ बिन मअ़बद को बना दें और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा बल्कि अक़रअ़ बिन ह़ाबिस को अमीर बनाएँ। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने इस पर कहा कि मक़्सद तो स़िर्फ़ मेरी मुख़ालफ़त ही करना है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आपके ख़िलाफ़ करने की ग़र्ज़ से ये नहीं कहा है। इस पर दोनों में बह़ष़ छिड़ गई और आवाज़ भी बुलंद हो गई। उसी के बारे में ये आयत नाज़िल हुई कि, ऐ ईमानवालों! तुम अल्लाह और उसके रसूल से पहले किसी काम में जल्दी मत किया करो। आख़िर आयत तक। (राजेअ़ : 4367)

بَابُ قَوْلِهِ:
﴿وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ﴾

बाब आयत 'लौ अन्नहुम सबरू हत्ता तख़रूज इलैहिम लकान खैरल्लहुम'

की तफ़्सीर या'नी, अगर वो स़ब्र करते यहाँ तक कि आप उनकी त़रफ़ ख़ुद निकलकर जाते तो ये स़ब्र करना उनके लिये बेहतर होता।

इस बाब में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) कोई ह़दीष़ नहीं लाए शायद कोई ह़दीष़ रखना चाहते होंगे लेकिन आपकी शर्त़ पर न होने की वजह से न लिख सके। (वह़ीदी)

[٥٠] ﴿سُورَةُ ق﴾

सूरह क़ाफ़ की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

﴿رَجْعٌ﴾ بَعِيدٌ رَدٌّ. ﴿فُرُوجٍ﴾ فُتُوقٍ وَاحِدُهَا فَرْجٌ. ﴿وَرِيدٌ﴾ فِي حَلْقِهِ. الْحَبْلُ حَبْلُ الْعَاتِقِ وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿مَا تَنْقُصُ الأَرْضُ﴾ مِنْ عِظَامِهِمْ. ﴿تَبْصِرَةً﴾ بَصِيرَةً. ﴿حَبَّ الْحَصِيدِ﴾ الْحِنْطَةُ. ﴿بَاسِقَاتٍ﴾ الطِّوَالُ. ﴿أَفَعَيِينَا﴾ أَفَأَعْيَا

रज्अ़म बई़दा या'नी दुनिया की त़रफ़ फिर जाना दूर अज़क़यास है। फ़ुरूजा के मा'नी सूराख़ रूज़न, फ़र्ज की जमा है। वरीदा ह़लक़ की रग। और जमल मूँढ़े की रग। मुजाहिद ने कहा मा तन्क़ुसुल्अर्ज़ु मिन्हुम से उनकी हड्डियाँ मुराद हैं जिनको ज़मीन खा जाती है। तब्स़िरहु के मा'नी राह दिखाना। ह़ब्बल ह़स़ीद गेहूँ के दाने। बासिक़ात लम्बी लम्बी बाल। अफ़ अ़ईना क्या हम इससे आ़जिज़ हो गये हैं। क़ाला क़रीनुहू में क़रीन से शैत़ान

(हमज़ाद) मुराद है जो हर आदमी के साथ लगा हुआ है फ़नक़्क़बू फ़िल् बिलाद या'नी शहरों में फिरे दौरा किया। अव अल्क़स् सम्अ़ा का ये मत़लब है कि दिल में दूसरा कुछ ख़्याल न करे कान लगाकर सुने अफ़अ़यीना बिल ख़ल्क़िल् अव्वल या'नी जब तुमको शुरू में पैदा किया तो क्या उसके बाद हम आ़जिज़ बन गये अब दोबारा पैदा नहीं कर सकते? साइक़ु और शहीदा दो फ़रिश्ते हैं एक लिखने वाला दूसरा गवाह। शहीद से मुराद ये है कि दिल लगाकर सुने। लुग़ूब थकन। मुजाहिद के सिवा ओरों ने कहा नज़ीद वो गाभा है, जब तक वो पत्तों के ग़िलाफ़ में छिपा रहे। नज़ीदा उसको इसलिये कहते हैं कि वो तह ब तह होता है जब पेड़ का गाभा ग़िलाफ़ से निकल आए तो फिर उसको नज़ीद नहीं कहेंगे। अदबारन् नुजूम (जो सूरह तूर में है) और अदबारस्सुजूद जो इस सूरत में है। तो आ़स़िम सूरह क़ाफ़ मे (अदबार को) बरफ़त्ह़ा अलिफ़ और सूरह तूर में बकसरा अलिफ़ पढ़ते हैं। कुछ ने दोनों जगह बकसरा अलिफ़ पढ़ा है कुछ ने दोनों जगह बर फ़त्ह़ अलिफ़ पढ़ा है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा यौमल ख़ुरूज से वो दिन मुराद है जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे।

عَلَيْنَا. ﴿وَقَالَ قَرِينُهُ﴾ الشَّيْطَانُ الَّذِي قُيِّضَ لَهُ. ﴿فَنَقَّبُوا﴾ ضَرَبُوا. ﴿أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ﴾ لاَ يُحَدِّثُ نَفْسَهُ بِغَيْرِهِ. ﴿حِينَ أَنْشَأَكُمْ﴾ وَأَنْشَأَ خَلْقَكُمْ. ﴿رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ رَصَدٌ. ﴿سَائِقٌ وَشَهِيدٌ﴾ الْمَلَكَانِ ﴿كَاتِبٌ وَشَهِيدٌ﴾. شَهِيدٌ شَاهِدٌ بِالْقَلْبِ. ﴿لُغُوبٍ﴾ النَّصَبُ. وَقَالَ غَيْرُهُ: نَضِيدٌ الْكُفُرَّى مَا دَامَ فِي أَكْمَامِهِ وَمَعْنَاهُ مَنْضُودٌ بَعْضُهُ عَلَى بَعْضٍ فَإِذَا خَرَجَ مِنْ أَكْمَامِهِ فَلَيْسَ بِنَضِيدٍ. فِي أَدْبَارِ النُّجُومِ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ، كَانَ عَاصِمٌ يَفْتَحُ الَّتِي فِي ق وَيَكْسِرُ الَّتِي فِي الطُّورِ وَيُكْسَرَانِ جَمِيعًا وَيُنْصَبَانِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَوْمَ الْخُرُوجِ يَخْرُجُونَ مِنَ الْقُبُورِ.

तश्रीह़ : सूरह क़ाफ़ मक्की है जिसमें 45 आयात और तीन रुकूअ़ हैं जिन सूरतों को मुफ़स़्स़ल की सूरत कहा जाता है। उनमें से पहली सूरत यही है आँह़ज़रत (ﷺ) नमाज़े ईदैन की पहली रकअ़त में ज़्यादातर सूरह सूरह क़ाफ़ और दूसरी रकअ़त में सूरह इक़्तरबतिस्साअ़त पढ़ा करते थे। जुम्आ़ के ख़ुत्बा में ज़्यादातर आपका उ़न्वान यही मुबारक सूरत हुआ करती थी। मुश्रिकीने मक्का को क़यामत और ह़श्र अज्साद में सख़्त इंकार था उनके जवाब में ये सूरह शरीफ़ा नाज़िल हुई।

बाब 1 : आयत 'व तक़ूलु हल मिम्मज़ीद' की तफ़्सीर या'नी,

١- بَابُ قَوْلِهِ: ﴿وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ﴾

अल्लाह का इर्शाद, और वो जहन्नम कहेगी कि कुछ और भी है।

4848. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे ह़रमी ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जहन्नम में दोज़ख़ियों को डाला जाएगा और वो कहे कि कुछ और भी है? यहाँ तक कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपना क़दम उस पर रखेगा और वो कहेगी कि बस बस। (दीगर मक़ाम : 1343, 6661)

٤٨٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُلْقَى فِي النَّارِ، وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ قَدَمَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ)).

[طرفاه في: ٦٦٦١، ١٣٨٤].

4849. हमसे मुहम्मद बिन मूसा क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे अबू सुफ़यान हिम्यरी सईद बिन यह्या बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे औफ़ ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से अबू सुफ़यान हिम्यरी अकषर इस हदीष को आँहज़रत (ﷺ) से मौक़ूफ़न ज़िक्र करते थे कि जहन्नम से पूछा जाएगा तू भर भी गई? वो कहेगी कि कुछ और भी है? फिर अल्लाह तबारक व तआला अपना क़दम उस पर रखेगा और कहेगी कि बस बस।

(दीगर मक़ाम : 7449, 4750)

٤٨٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الْقَطَّانُ، حَدَّثَنَا أَبُو سُفْيَانَ الْحِمْيَرِيُّ سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَفَعَهُ، وَأَكْثَرُ مَا كَانَ يُوقِفُهُ أَبُو سُفْيَانَ يُقَالُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلأْتِ؟ وَتَقُولُ : هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ فَيَضَعُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدَمَهُ عَلَيْهَا فَتَقُولُ : قَطْ قَطْ. [طرفاه في : ٤٨٥٠، ٧٤٤٩].

तश्रीह : क़स्तलानी (रह) ने इस मुक़ाम पर पिछले मुतकल्लिमीन की पैरवी से तावील की है और कहा है क़दम रखने से इसका ज़लील करना मुराद है या किसी मख़्लूक़ का क़दम मुराद है। अहले हदीष इस क़िस्म की तावीलें नहीं करते बल्कि क़दम और रिज्ल को इसी तरह तस्लीम करते हैं जैसे समअ और बसर और ऐन और वज्ह वग़ैरह को और इब्ने फ़ौरक़ ने ला इल्मी से रिज्ल का इंकार किया और कहा रिज्ल का लफ़्ज़ षाबित नहीं है हालाँकि सहीहैन की रिवायत में रिज्ल का लफ़्ज़ भी मौजूद है। इन हदीषों से जहमियों की जान निकलती है और अहले हदीष को हयाते ताज़ा हासिल होती है। (वहीदी)

व क़ाल मुहियुस्सुन्नति अव तक़ूलु हल मिम्मज़ीद अल्क़दमु वरिज्लु फी हाज़ल्हदीषि मिन सिफ़ातिल्लाहि तआला फ़ल्ईमानु बिहा फर्ज़ुन वल्इम्तिनाउ अनिल्खौज़ि फ़ीहा वाजिबुन फल्मुहतदी मन सलक फीहिमा तरीक़त्तस्लीम व इन्नमा नस्सुन फ़ीहा ज़ाइउन वल्मुन्करू मुअत्तलुन वल्मुकीफ़ु मुशब्बहुन लैस कमिष्लिही शैउन

4850. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत और दोज़ख़ ने बहष की, दोज़ख़ ने कहा मैं मुतकब्बिरों और ज़ालिमों के लिये ख़ास की गई हूँ। जन्नत ने कहा मुझे क्या हुआ कि मेरे अंदर सिर्फ़ कमज़ोर और कम रुत्बा वाले लोग दाख़िल होंगे। अल्लाह तआला ने इस पर जन्नत से कहा कि तू मेरी रहमत है, तेरे ज़रिया में अपने बन्दो मे जिस पर चाहूं रहम करूँ और दोज़ख़ से कहा कि तू अ़ज़ाब है तेरे ज़रिये में अपने बन्दों मे से जिसे चाहूँ अ़ज़ाब दूँ। जन्नत और दोज़ख़ दोनों भरेंगी। दोज़ख़ तो उस वक़्त तक नहीं भरेगी। जब तक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपना क़दम उस पर नहीं रख देगा। उस वक़्त वो बोलेगी कि बस बस बस! और उस वक़्त भर जाएगी और उसका कुछ हिस़्सा कुछ दूसरे हिस़्से पर चढ़ जाएगा और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करेगा और जन्नत के

٤٨٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَحَاجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ، فَقَالَتِ النَّارُ: أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ، وَقَالَتِ الْجَنَّةُ: مَا لِي لاَ يَدْخُلُنِي إِلاَّ ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ؟ قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : لِلْجَنَّةِ أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي، وَقَالَ لِلنَّارِ: إِنَّمَا أَنْتِ عَذَابٌ أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي، وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِلْؤُهَا، فَأَمَّا النَّارُ فَلاَ تَمْتَلِىءُ، حَتَّى يَضَعَ رِجْلَهُ فَتَقُولُ: قَطٍ قَطٍ قَطٍ فَهُنَالِكَ تَمْتَلِىءُ

وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ، وَلاَ يَظْلِمُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا وَأَمَّا الْجَنَّةُ فَإِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يُنْشِىءُ لَهَا خَلْقًا)). ﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ﴾

[راجع: ٤٨٤٩]

लिये अल्लाह तआला एक मख़्लूक़ पैदा करेगा और अपने रब की ह़म्दो ष़ना करते रहिये सूरज के निकलने से पहले और उसके छुपने से पहले। (राजेअ़ : 4849)

٤٨٥١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ جَرِيرٍ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : كُنَّا جُلُوسًا لَيْلَةً مَعَ النَّبِيِّ ﷺ، فَنَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ فَقَالَ : ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ، كَمَا تَرَوْنَ هَذَا لاَ تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لاَ تُغْلَبُوا عَنْ صَلاَةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا فَافْعَلُوا)). ثُمَّ قَرَأَ ﴿وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ﴾.

[راجع: ٥٥٤]

4851. हमसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे जरीर ने, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि) ने बयान किया कि हम एक रात नबी करीम (ﷺ) के साथ बैठे हुए थे चौदहवीं रात थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने चाँद की त़रफ़ देखा और फिर फ़र्माया कि यक़ीनन तुम अपने रब को उसी त़रह़ देखोगे जिस त़रह़ इस चाँद को देख रहे हो, उसकी रूइयत में तुम धक्कम पैल नहीं करोगे (बल्कि बड़े इत्मिनान से एक—दूसरे को धक्का दिये बग़ैर देखोगे) इसलिये अगर तुम्हारे लिये मुम्किन हो तो सूरज निकलने और डूबने से पहले नमाज़ न छोड़ो। फिर आपने आयत, और अपने रब की ह़म्दो ष़ना करते रहिये आफ़ताब निकलने से पहले और छुपने से पहले, की तिलावत की। (राजेअ़ : 554)

٤٨٥٢- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَمَرَهُ أَنْ يُسَبِّحَ فِي أَدْبَارِ الصَّلَوَاتِ كُلِّهَا يَعْنِي قَوْلَهُ: ﴿وَأَدْبَارَ السُّجُودِ﴾.

4852. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे वरक़ा ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नजीह़ ने, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन्हें तमाम नमाज़ों के बाद तस्बीह़ पढ़ने का हुक्म दिया था। आपका मक़्सद अल्लाह तआ़ला का इर्शाद व अदबारस्सुजूद की तशरीह़ करना था।

[٥١] سورة ﴿وَالذَّارِيَاتِ﴾

सूरह अज़् ज़ारियात की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रिहमानिर्रहीम

قَالَ عَلِيٌّ عَلَيْهِ السَّلاَمُ: ﴿الذَّارِيَاتُ﴾ الرِّيَاحُ. وَقَالَ غَيْرُهُ: تَذْرُوهُ تُفَرِّقُهُ. ﴿وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلاَ تُبْصِرُونَ﴾: تَأْكُلُ وَتَشْرَبُ فِي مَدْخَلٍ وَاحِدٍ وَيَخْرُجُ مِنْ مَوْضِعَيْنِ،

ह़ज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि अज़् ज़ारियात से मुराद हवाएँ हैं। उनके ग़ैर ने कहा कि तज़रूहु का मा'नी ये है कि उसको बिखेर दे (ये लफ़्ज़ सूरह कहफ़ में है) अर् रियाह़ की मुनासबत से यहाँ लाया गया। व फ़ी अन्फ़ुसिकुम अफ़ला तुब्सिरून या'नी ख़ुद तुम्हारी ज़ात में निशानियाँ हैं क्या तुम नहीं

«فَرَاغَ». فَرَجَعَ، «فَصَكَّتْ» فَجَمَعَتْ أَصَابِعَهَا، فَضَرَبَتْ جَبْهَتَهَا، وَ«الرَّمِيمُ» نَبَاتُ الأَرْضِ إِذَا يَبِسَ وَدِيسَ، «لَمُوسِعُونَ» : أَيْ لَذُوو سَعَةٍ، وَكَذَلِكَ عَلَى «الْمُوسِعِ قَدَرُهُ» : يَعْنِي الْقَوِيَّ «زَوْجَيْنِ»: الذَّكَرَ وَالأُنْثَى، وَاخْتِلاَفُ الأَلْوَانِ : حُلْوٌ وَحَامِضٌ، فَهُمَا زَوْجَانِ، «فَفِرُّوا إِلَى اللهِ» مِنَ اللهِ إِلَيْهِ. «إِلاَّ لِيَعْبُدُونِ» مَا خَلَقْتُ أَهْلَ السَّعَادَةِ مِنْ أَهْلِ الْفَرِيقَيْنِ إِلاَّ لِيُوَحِّدُونِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: خَلَقَهُمْ لِيَفْعَلُوا، فَفَعَلَ بَعْضٌ، وَتَرَكَ بَعْضٌ، وَلَيْسَ فِيهِ حُجَّةٌ لأَهْلِ الْقَدَرِ. وَالذَّنُوبُ الدَّلْوُ الْعَظِيمُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ. «صَرَّةٍ» صَيْحَةٍ، «ذَنُوبًا» سَبِيلاً «الْعَقِيمَ» الَّتِي لاَ تَلِدُ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ «وَالْحُبُكُ»: اسْتِوَاؤُهَا، وَحُسْنُهَا. فِي «غَمْرَةٍ» فِي ضَلاَلَتِهِمْ يَتَمَادَوْنَ، وَقَالَ غَيْرُهُ : «تَوَاصَوْا» تَوَاطَؤُوا. وَقَالَ غَيْرُهُ : «مُسَوَّمَةً» : مُعَلَّمَةً، مِنَ السِّيمَا. «قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ»: لُعِنَ.

देखते कि खाना पीना एक रास्ते मुँह से होता है लेकिन वो फ़ुज़्ला बनकर दूसरे रास्तों से निकलता है। फ़राग़ लौट आया (या चुपके से चला आया, फ़सक्कत या'नी मुट्ठी बाँधकर अपने माथे पर हाथ को मारा। अर्रमीम ज़मीन की घास जब ख़ुश्क हो जाए और रौंद दी जाए। लि मूसिऊन के मा'नी हमने उसको कुशादा और वसीअ किया है। (और सूरह बक़र: में जो है) अलल् मूसिउ क़दरुहु यहाँ मूसिउ के मा'नी ज़ोर ताक़त वाला है। ज़ौजेन या'नी तर व मादा या अलग अलग रंग या अलग अलग मज़े की जैसे मीठी खट्टी ये दो क़िस्में हैं। फ़फ़िरू इलल्लाह या'नी अल्लाह की मअ़सियत से उसकी इत़ाअ़त की त़रफ़ भागकर आओ। इल्ला लियअबुदूना या'नी जिन व इंस में जितनी भी नेक रूहें हैं उन्हें मैंने स़िर्फ़ अपनी तौहीद के लिये पैदा किया। कुछ ने कहा जिन्नों और आदमियों को अल्लाह तआ़ला ने पैदा तो इसी मक़्स्द से किया था कि वो अल्लाह की तौहीद को माने लेकिन कुछ ने माना और कुछ ने नहीं माना। मुअतज़िला के लिये इस आयत में कोई दलील नहीं है। अज़्ज़नूब के मा'नी बड़े डोल के हैं। ह़ज़रत मुजाहिद ने फ़र्माया कि ज़नूबा बमा'नी रास्ते है। ह़ज़रत मुजाहिद ने कहा कि स़र्रतुन के मा'नी चीख़ना। ज़नूबा के मा'नी रास्ते और त़रीक़ के हैं अल अ़क़ीम के मा'नी जिसको बच्चा न पैदा हो बांझ। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल हुबुक से आसमान का ख़ूबस़ूरत बराबर होना मुराद है। फ़ी ग़म्रति या'नी अपनी गुमराही में पड़े औक़ात गुज़ारते हैं। औरों ने कहा तवास़वा का मा'नी ये है कि ये ! ी उनके मुवाफ़िक़ कहने लगे। मुसव्वमत निशान किये गये। ये सीमा से निकला है जिसके मा'नी निशानी के हैं। क़ुतिलल् ख़र्रासून या'नी झूठे ला'नत किये गये।

तशरीह : अहले बैत के अस्मा के बाद और ह़ज़रत अ़ली के नाम के बाद अलैहिस्सलाम बढ़ाकर पढ़ने की निस्बत ह़ज़रत मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम ने वज़ाह़त ये की है कि उसको फ़रयाबी ने वस़्ल किया है स़ह़ीह़ बुख़ारी के अकष़र नुस्ख़ों में यूँ है वक़ाला अ़ली अ़लैहिस्सलाम क़स्तलानी ने कहा उसका मा'नी तो स़ह़ीह़ है मगर स़ह़ाबा मे मसावात करना चाहिये क्योंकि ये ता'ज़ीम का कलिमा है तो शैख़ेन और ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) और ज़्यादा इसके मुस्तह़िक़ हैं और जो नबी (अ़लैहि.) ने कहा कि सलाम मिष्ल स़लात के है और बिल इंफ़िराद सिवा पैग़म्बरों के और किसी के लिये उसका इस्तेमाल न किया जाए। मुतर्जिम कहता है जो नबी के इस कलाम पर दलील किया है और ये स़िर्फ़ इस्तिलाह़ बाँधी हुई बात है कि पैग़म्बरों को अ़लैहिस्सलाम और स़ह़ाबा को रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कहते है तो इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़ज़रत अ़ली को (अ़लैहिस्सलाम) कहकर रद्द किया। अब क़स्तलानी का ये कहना है शैख़ेन या ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) इस कलिमे के ज़्यादा मुस्तह़िक़ हैं और स़ह़ाबा में मसावात लाज़िम है। इस पर ये ए'तिराज़ होता है कि शैख़ेन या ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के लिये

अलैहिस्सलाम कहने से इमाम बुख़ारी (रह़) ने कहाँ मना किया फिर ये ए'तिराज़ में बनिस्बत दूसरे सह़ाबा के एक और ख़ुसूसियत है वो ये है कि आप आँह़ज़रत (ﷺ) के चचाज़ाद भाई और आपके परवरिशियाफ़्ता और क़दीमुल इस्लाम और ख़ासकर दामाद थे और आपका शुमार अहले बैत में है और अहले बैत बहुत से काम में ख़ास किये गये हैं इसी त़रह़ ये भी है कि अहले बैत के अस्मा के बाद (अलैहिस्सलाम) कहा जाता है जैसे कहते हैं ह़ज़रत हुसैन (अलैहिस्सलाम) या ह़ज़रत जा'फ़र सादिक़ (अलैहि व अली आबाहुस्सलाम और उसमें कोई शरई क़बाह़त नहीं है। (वह़ीदी) कुछ लोग सह़ाबा बशमूल अहले बैत के लिये लफ़्ज़ (रज़ि.) ही को ज़्यादा पसंद करते हैं। बहरह़ाल कुल्लु अला ख़ैर (राज़)

[٥٢] باب سُورَةُ ﴿وَالطُّورِ﴾

सूरह तूर की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ قَتَادَةُ ﴿مَسْطُورٍ﴾ مَكْتُوبٍ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿الطُّورُ﴾ الْجَبَلُ بِالسُّرْيَانِيَّةِ. ﴿رَقٍّ مَنْشُورٍ﴾ : صَحِيفَةٍ. وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ : سَمَاءٌ. وَالْمَسْجُورِ: الْمُوقَدِ. وَقَالَ الْحَسَنُ : تَسْجُرُ حَتَّى يَذْهَبَ مَاؤُهَا. فَلاَ يَبْقَى فِيهَا قَطْرَةٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿أَلَتْنَاهُمْ﴾ نَقَصْنَاهُمْ وَقَالَ غَيْرُهُ : ﴿تَمُورُ﴾ تَدُورُ.

क़तादा ने कहा मस्तूर बमा'नी मक्तूब या'नी लिखी हुई है। मुजाहिद ने कहा अत् तूर सिरया'नी ज़ुबान में पहाड़ को कहते हैं। रक़्क़िम मंशूर या'नी सह़ीफ़ा खुला हुआ वरक़। अस्सक़्फ़िल मर्फ़ूअ या'नी आसमान। अल् मस्जूर या'नी गर्म किया गया। ह़सन बसरी ने कहा मसजूर से मुराद ये हैं कि समुन्दर में एक दिन तुग़यानी आकर उसका सारा पानी सूख जाएगा और उसमे एक क़तरा भी बाक़ी न रहेगा। मुजाहिद ने कहा कि अत्तनाहुम के मा'नी घटाया कम किया। मुजाहिद के अलावा दूसरों ने कहा कि तमूर घूमेगा अह़लामहुम के मा'नी उनकी अक़्लें। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा अल् बिर्र के मा'नी मेहरबान। कसफ़ा के मा'नी टुकड़े। अल् मस्नून के मा'नी मौत। औरों ने कहा यतनाज़ऊना का मा'नी एक–दूसरे से झपट लें इन्ही मज़ाक़ से या लड़ाई से।

सूरह तूर मक्की है जिसमें 49 आयात और 2 रुकूअ़ हैं। इसमें अल्लाह ने कोहे तूर की क़सम खाई है यही वजहे तस्मिया है।

٤٨٥٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ نَوْفَلٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: شَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنِّي أَشْتَكِي فَقَالَ: ((طُوفِي مِنْ وَرَاءِ النَّاسِ وَأَنْتِ رَاكِبَةٌ))، فَطُفْتُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ يُصَلِّي إِلَى جَنْبِ الْبَيْتِ يَقْرَأُ : بِالطُّورِ وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ.
[راجع: ٤٦٤]

4853. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन नौफ़िल ने, उन्हें उ़र्वा ने, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे सलमा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि (ह़ज्ज के मौक़े पर) मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि मैं बीमार हूँ आपने फ़र्माया कि फिर सवारी पर बैठकर लोगों के पीछे से त़वाफ़ करे चुनाँचे मैं ने त़वाफ़ किया और आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त ख़ाना–ए–काबा के पहलू मे नमाज़ पढ़ते हुए सूरह तूर व किताबिम्मस्तूर की तिलावत कर रहे थे। (राजेअ : 464)

4854. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे बाप ने ज़ुहरी के वास्ते से बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम ने और उनसे उनके वालिद हज़रत जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप मग़रिब की नमाज़ में सूरह वत् तूर पढ़ रहे थे। जब आप इस आयत पर पहुँचे क्या ये लोग बग़ैर किसी के पैदा किये पैदा हो गये या ये ख़ुद (अपने) ख़ालिक़ हैं? या इन्होंने आसमान और ज़मीन को पैदा कर लिया है। अस़्ल ये है कि उनमे यक़ीन ही नहीं। क्या इन लोगों के पास आपके परवरदिगार के ख़ज़ाने हैं या ये लोग हाकिम हैं तो मेरा दिल उड़ने लगा। हज़रत सुफ़यान ने बयान किया लेकिन मैंने ज़ुहरी से सुना है वो मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम से रिवायत करते थे, उनसे उनके वालिद (हज़रत जुबैर बिन मुत्इम रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को मग़रिब में सूरह वत् तूर पढ़ते सुना (सुफ़यान ने कहा कि) मेरे साथियों ने उसके बाद जो इज़ाफ़ा किया है वो मैंने ज़ुहरी से नहीं सुना। (राजेअ : 765)

٤٨٥٤- حدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثُونِي عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ، عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ، فَلَمَّا بَلَغَ هَذِهِ الآيَةَ ﴿أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ؟ أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ؟ بَلْ لاَ يُوقِنُونَ، أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ. أَمْ هُمُ الْمُسَيْطِرُونَ﴾؟ كَادَ قَلْبِي أَنْ يَطِيرَ. قَالَ سُفْيَانُ : فَأَمَّا أَنَا فَإِنَّمَا سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ: فِي الْمَغْرِبِ بِالطُّورِ، لَمْ أَسْمَعْهُ زَادَ الَّذِي قَالُوا لِي.

[راجع: ٧٦٥]

सूरह वन् नज्म की तफ़्सीर

[٥٣] سورة ﴿وَالنَّجْمِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा कि ज़ू मिर्रति के मा'नी ज़ोरदार ज़बरदस्त (या'नी जिब्राईल अलैहिस्सलाम) क़ाब क़वसैनि या'नी कमान के दोनों किनारे जहाँ पर चिल्ला लगा रहता है। ज़ीज़ा के मा'नी टेढ़ी ग़लत़ तक़्सीम। वअक्दा और देना मौक़ूफ़ कर दिया। अश्शिअ़रा वो सितारे है जिसे मिर्जमुल्जौज़ा भी कहते हैं। अल्लज़ी वफ़्फ़ा या'नी अल्लाह ने जो उन पर फ़र्ज़ किया था वो बजा लाए। अज़िफ़तिल् आज़िफ़ा क़यामत क़रीब आ गई। सामिदून के मा'नी खेल करते हो। बुर्तमह एक खेल का नाम है। हज़रत इक्रिमा ने कहा हिम्यरी ज़ुबान मे गाने के मा'नी में है और हज़रत इब्राहीम नख़ई (रह) ने कहा कि अफ़तूमारूनहू का मा'नी क्या तुम उससे झगड़ते हो। कुछ ने यूँ पढ़ा है फ़तम्रूनहू या'नी क्या तुम उस काम का इंकार करते हो। मा ज़ाग़ल बस़र

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿ذُو مِرَّةٍ﴾ ذُو قُوَّةٍ. ﴿قَابَ قَوْسَيْنِ﴾ حَيْثُ الْوَتَرُ مِنَ الْقَوْسِ. ﴿ضِيزَى﴾ عَوْجَاءُ. ﴿وَأَكْدَى﴾ قَطَعَ عَطَاءَهُ. ﴿رَبُّ الشِّعْرَى﴾ هُوَ مِرْزَمُ الْجَوْزَاءِ. ﴿الَّذِي وَفَّى﴾ وَفَّى مَا فُرِضَ عَلَيْهِ. ﴿أَزِفَتِ الآزِفَةُ﴾ اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ. ﴿سَامِدُونَ﴾ الْبَرْطَمَةُ وَقَالَ عِكْرِمَةُ يَتَغَنَّوْنَ بِالْحِمْيَرِيَّةِ. قَالَ إِبْرَاهِيمُ ﴿أَفَتُمَارُونَهُ﴾ أَفَتُجَادِلُونَهُ وَمَنْ قَرَأَ

أَفَتُمْرُونَهُ يَعْنِي أَفَتَجْحَدُونَهُ. ﴿مَا زَاغَ الْبَصَرُ﴾ بَصَرُ مُحَمَّدٍ ﷺ. ﴿وَمَا طَغَى﴾ وَلاَ جَاوَزَ مَا رَأَى. ﴿فَتَمَارَوْا﴾ كَذَّبُوا. وَقَالَ الْحَسَنُ ﴿إِذَا هَوَى﴾ غَابَ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿وَأَغْنَى وَأَقْنَى﴾ أَعْطَى فَأَرْضَى.

से आँहज़रत (ﷺ) की चश्मे मुबारक मुराद है। वमा तग़ा या'नी जितना हुक्म था उतना ही देखा (उससे ज़्यादा नहीं बढ़े) फ़तमारू सूरह क़मर में है या'नी झुठलाया। (हज़रत इमाम हसन बसरी (रज़ि.) ने कहा इज़ा हवा या'नी ग़ायब हुआ और डूब गया और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा अग़्ना व अक़्ना का मा'नी ये है कि दिया और राज़ी किया।

तश्रीह : सूरह नज्म मक्की है इसमें 62 आयात और तीन रुकूअ हैं इस सूरह में अल्लाह पाक ने आँहज़रत (ﷺ) के मर्तब-ए-मेअराज का ज़िक्र एक सितारे की क़सम खाकर बयान करना शुरू किया है, इसलिये इसको लफ़्ज़े नज्म से मौसूम किया गया। नज्म सितारा को कहते हैं। जो लोग इस बात के क़ाइल हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ने शबे मेअराज में अल्लाह को देखा था उनमें कोई कहता है कि दिल की आँख से देखा था कोई कहता है ज़ाहिरी आँख से देखा था वो ये कहते हैं कि पहली आयत में औराक से अहाता मुराद है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा इस आयत का मतलब है कि जब वो अपने असली नूर के साथ तजल्ली करे तो आँखें उसको नहीं देख सकतीं जैसे दूसरी हदीष़ में है कि अल्लाह तआला ने अपने ऊपर सत्तर हज़ार हिजाब रखे हैं अगर उन हिजाबों को उठा दे तो उसके चेहरे की शुआओं से जहाँ तक उसकी नज़र जाती है सब चीज़ें जलकर रह जाएँ। दूसरी आयत से रिवायत की नफ़ी नहीं निकलती बल्कि कलाम का तरीक़ा उसमें बयान हुआ है बेशक कलाम करते वक़्त उसकी रिवायत बिला हिजाब नहीं हो सकती वो भी दुनिया में न कि आख़िरत में। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि अल्लाह तआला ने कलाम से हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) को सरफ़राज़ किया और रूइयत से तुम्हारे पैग़म्बर (ﷺ) को। (वहीदी) राजेह ख़्याल यही है कि बारी तआला को आपने शबे मेअराज में इन आँखों से नहीं देखा। आँहज़रत (ﷺ) का मेअराज जिस्मानी हक़ है और क़यामत में दीदारे बारी हक़ है मेअराज में रूइयत के बारे में अकष़र लोगों ने ख़ामोशी इख़्तियार किया है। वल्लाहु बिस्सवाब

उख़्तुलिफ़ क़दीमन व हदीष़न फ़ी रूयतिही (ﷺ) रब्बहू लैलतल्इस्रा फ़ज़हब आयशतु व ब्नु मस्ऊद इला नफ़्यिहा वब्नु अब्बास व बअ्ज़ु आख़रून इला इष़्बातिहा व कान ज़हब इला अन्नहू राअ बिकल्बिही ला बिअयनिही व अख़रज मुस्लिम अनिब्नि अब्बास अन्नहू राअ रब्बहू बिफ़ुवादिही मर्रतैनि व अला हाज़ा युम्किनुल्जम्उ बैन इष़्बाति इब्नि अब्बास व नफ़्यि आयशत बिअंय्युहमल नफ्युहा अला रूयतिल्बसरि व इष़्बातुहा अला रूयतिल्क़ल्बि लाकिन्नल्मश्हूर मिन इब्नि अब्बास अन्नहू क़ाल बिरूयतिल्बस़र व मिन्हुम मन तवक़्क़फ़ फ़ी हाज़िहिल्मस्अलति वरज्जहल्कुर्तुबी हाज़ल्क़ौल व अज़ाहु लिजमाअतिम्मिनल्मू हक़्क़िक़ीन व कौलहू बिअन्नहू लैस फिल्बाबि दलीलुन क़ातिउन व लैस मिम्मा यक्तफ़ी फीहि बिमुर्जर्दिज़्ज़न्नि कज़ा फिल्लम्आत (या'नी इस मसले में तरजीह सकूत को हासिल है)

बाब 1 :

١ – باب

٤٨٥٥ – حَدَّثَنَا يَحْيَى. حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ عَنْ عَامِرٍ، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا يَا أُمَّتَاهُ هَلْ رَأَى مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَبَّهُ؟ فَقَالَتْ : لَقَدْ قَفَّ شَعَرِي مِمَّا قُلْتَ، أَيْنَ أَنْتَ مِنْ ثَلاَثٍ مَنْ حَدَّثَكَهُنَّ فَقَدْ كَذَبَ: مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ

4855. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, उनसे वकीअ ने, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे आमिर ने और उनसे मसरूक़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा ऐ ईमानवालों की माँ! क्या हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने मेअराज की रात मे अपने रब को देखा था ? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा तुमने ऐसी बात कही कि मेरे रोंगटे खड़े हो गये क्या तुम उन तीन बातों से भी नावाक़िफ़ हो? जो शख़्स भी तुममें से ये तीन बातें बयान करे वो झूठा है जो शख़्स ये कहता हो कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने शबे मेअराज में अपने रब

مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَبَّهُ، فَقَدْ كَذَبَ، ثُمَّ قَرَأَتْ: ﴿لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ، وَهُوَ يُدْرِكُ الأَبْصَارَ، وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ. وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللهُ إِلاَّ وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ﴾ وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ فَقَدْ كَذَبَ، ثُمَّ قَرَأَتْ ﴿وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَا ذَا تَكْسِبُ غَدًا﴾ وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ كَتَمَ فَقَدْ كَذَبَ، ثُمَّ قَرَأَتْ: ﴿يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ﴾ الآيَةَ، وَلَكِنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فِي صُورَتِهِ مَرَّتَيْنِ.

[راجع: ٣٢٣٤]

को देखा था वो झूठा है। फिर उन्होंने आयत ला तुदरिक्हुल् अब्सार से लेकर मिंव् वराइ हिजाब तक की तिलावत की और कहा कि इंसान के लिये मुम्किन नहीं कि अल्लाह से बात करे सिवा उसके कि वह्य के ज़रिये हो या फिर पर्दे के पीछे से हो और जो शख़्स तुमसे कहे कि आँहज़रत (ﷺ) आने वाले कल की बात जानते थे वो भी झूठा है। उसके लिये उन्होंने आयत वमा तदरी नफ़्सुम् मा तक्सिबु ग़दा या'नी और कोई शख़्स नहीं जानता कि कल क्या करेगा; की तिलावत फ़र्माई। और जो शख़्स तुममें से कहे कि आँहज़रत (ﷺ) ने तब्लीग़े दीन मे कोई बात छुपाई थी वो भी झूठा है। फिर उन्होंने ये आयत तिलावत की या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़ मा उन्ज़िला इलैका मिर्रब्बिक या'नी ऐ रसूल! पहुँचा दीजिए वो सब कुछ जो आपके रब की तरफ़ से आप पर उतारा गया है। हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को उनकी अस्ल सूरत में दो मर्तबा देखा था। (राजेअ : 3234)

तश्रीह : इस तफ़्सील से उसी को तरजीह हासिल हुई कि आप (ﷺ) ने शबे मेअराज में इन आँखों से अल्लाह को नहीं देखा वल्लाहु आलम। हज़रत आइशा (रज़ि.) का नफ़ी करना हयाते दुनियावी के बारे में है। आख़िरत का दीदारे इलाही ज़रूर होगा उसका इंकार मुराद नहीं है। आयत में आम तौर पर हर नफ्स मुराद है कि वो नहीं जानता है कि कल क्या होने वाला है इससे आँहज़रत (ﷺ) के लिये भी ग़ैबदानी की नफ़ी षाबित होती है। दूसरी आयत मे बसराहत मज़्कूर है **कुल ला यअलमु मन फ़िस्समावाति वल्अर्ज़िल्ग़ैब इल्लल्लाह** (अन् नमल : 65) अब ग़ौरतलब चीज़ ये है कि जब कल की ख़बर आँहज़रत (ﷺ) को भी हासिल नहीं है तो दूसरे वली या बुज़ुर्ग या पीर फ़क़ीर व शहीद किस गिनती और शुमार में हैं। ये बात अलग है कि अल्लाह पाक अपने किसी बन्दे को वह्य या इल्हाम के ज़रिये से कल की किसी बात पर आगाह कर दे उससे उस बन्दे का आलिमुल ग़ैब होना षाबित नहीं हो सकता जो अहले बिदअत ख़ुदसाख़्ता मुर्शिदों को ग़ैबदाँ जानते हैं उनके मुश्रिक होने में कोई शक नहीं है और वो इश्राक फ़िल् इल्म के मुर्तकिब हैं और अल्लाह के यहाँ उनका नाम मुश्रिकों के दफ़्तर में लिखा गया ख़्वाह वो दुनिया में कितने ही इस्लाम का दा'वा करें और अपने आपको मुसलमान व मोमिन समझें कुर्आन पाक की एक आयत में ऐसे ही लोगों का ज़िक्र है, **वमा यूमिनु अक्षरहुम बिल्लाहि इल्ला वहुम मुश्रिकून** (यूसुफ़ : 106) या'नी कितने ईमान के दावेदार अल्लाह के नज़दीक मुश्रिक हैं ख़ुद फ़ुक़हा-ए-अहनाफ़ ने सराहत की है कि ग़ैरुल्लाह को ग़ैबदाँ जानना कुफ़्र है। इसी तरह जो कोई अल्लाह के साथ उसके रसूल को भी ग़ैबदाँ जानकर गवाह बना दें वो भी मुश्रिक हो जाता है। बहरहाल ऐसे मुश्रिकाना अक़ाइद से हर मुवह्हिद मुसलमान को बिल्कुल दूर रहना चाहिये। वबिल्लाहित् तौफ़ीक़।

بَاب قَوْلِهِ ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى﴾ حَيْثُ الْوَتَرُ مِنَ الْقَوْسِ

बाब आयत 'फकान क़ाब' अल्अख़ की तफ़्सीर

इतना फ़ासला रह गया था जितना कमान से चिल्ला (या'नी तांत) में होता है।

٤٨٥٦- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ

4856. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, उनसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान शैबानी

ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़िर्रा बिन हबीश से सुना और उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से आयत फ़काना क़ाबा क़ौसैनि औ अदना या'नी सिर्फ़ दो कमानों का फ़ासला रह गया था बल्कि और भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल की जो कुछ भी नाज़िल किया, के बारे में बयान किया कि हमसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को उनकी अस़ल सूरत में देखा था उनके छः सौ पर थे। (राजेअ़ : 3232)

الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ زِرًّا عَنْ عَبْدِ اللهِ ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[راجع: ٣٢٣٢]

बाब 'क़ौलुहू फ़औहा इला अ़ब्दिही मा औहा' की तफ़्सीर या'नी,

باب قَوْلِهِ ﴿فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे की त़रफ़ वह्य की जो भी वहय की।

4857. हमसे त़ल्क़ बिन ग़न्नाम ने बयान किया, उनसे ज़ायदा बिन क़ुदामा कूफ़ी ने बयान किया, उनसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया कि मैंने ज़िर्र बिन हुबैश से इस आयत के बारे में पूछा फ़कान क़ाब क़वसैन अल्अख़ या'नी सो दो कमानों का फ़ासला रह गया बल्कि और भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल की जो कुछ भी नाज़िल किया तो उन्होंने बयान किया कि हमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) को देखा था जिनके छः सौ पर थे। (राजेअ़ : 3232)

٤٨٥٧- حَدَّثَنَا طَلْقُ بْنُ غَنَّامٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ زِرًّا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[راجع: ٣٢٣٢]

तश्रीह : तो फ़ओहा इला अ़ब्दिही वमा औहा में अ़ब्दुहू की ज़मीर अल्लाह की त़रफ़ फिरेगी और फ़ओहा की ज़मीर हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) की त़रफ़ क़रीन-ए-कलाम भी उसी को मुक़्तज़ा है क्योंकि शदीदुल क़ुवा और ज़ुमिर्रत ये हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) के सिफ़ात हैं कुछ ने कहा ख़ुद परवरदिगार मुराद है इस सूरत में औहा और अ़ब्दहू दोनों की ज़मीर अल्लाह की त़रफ़ लौटेगी।

बाब 'क़ौलुहू राअ मिन आयति रब्बिहिल्कुब्रा' की तफ़्सीर या'नी,

باب قوله ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾

तह़क़ीक़ आँहुज़ूर (ﷺ) ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियों को देखा।

4858. हमसे क़बीस़ा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने आयत लक़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल्कुब्रा या'नी आपने अपने रब की अ़ज़ीम निशानियाँ

٤٨٥٨- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾ قَالَ: رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ قَدْ سَدَّ الأُفُقَ.

[راجع: ٣٢٣٢]

देखीं, के बारे में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने रफ़रफ़ (सब्ज़ फ़र्श) को देखा जिसने आसमान के किनारों को ढांप लिया था। (राजेअ :

तश्रीह : आयते शरीफ़ा **लक़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल कुब्रा** (अन् नज्म : 18) मे लफ़्ज़े आयात जमा है जिससे मा'लूम होता है कि शबे मेअ़राज मे आँहज़रत (ﷺ) ने बहुत से अजाइबाते क़ुदरत का मुशाहिदा फ़र्माया जिनकी तफ़्सीलात पूरी तौर पर अल्लाह ही बेहतर जानता है यहाँ रिवायत में एक आयत या'नी रफ़रफ़ का ज़िक्र है कुछ लोगों ने कहा कि रफ़रफ़ से पर्दा मुराद है कुछ ने कहा कि कपड़े का जोड़ा मुराद है या'नी हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) सब्ज़ रंग का लिबास पहने हुए थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि शबे मेअ़राज में रफ़रफ़ लटक आया आप उस पर बैठ गये फिर वो रफ़ रफ़ रह गया और आप परवरदिगार के नज़दीक हो गये षुम्मा दन फतदल्ला से यही मुराद है आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं उस मुक़ाम पर हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) मुझसे अलग हो गये और आवाज़ें सब मौक़ूफ़ हो गईं और मैंने अपने परवरदिगार का कलाम सुना। ये कुर्तुबी ने नक़ल किया है (वह़ीदी) सिदरतुल मुंतहा और मनाज़िरे नूरी व नारी जो भी आपने शबे मेअ़राज में मुलाहिज़ा फ़र्माए सब इस आयत की तफ़्सीर में दाख़िल हैं।

बाब 2 : आयत 'अ फरायतुमुल्लात वल्उज़्ज़' की तफ़्सीर

٢- باب ﴿أَفَرَأَيْتُمُ اللاَّتَ وَالْعُزَّى﴾

या'नी, भला तुमने लात और उ़ज़्ज़ा को भी देखा है।

अ़रबों के मशहूर बुतों के नाम हैं। आयत में बतौरे तअ़रीज़ इर्शाद है कि उन बुतों को भी देखा जिनको लोगों ने मा'बूद बना रखा है हालाँकि वो बिलकुल आ़जिज़ मुह़ताज लाचार बेबस और मिट्टी के बने हुए हैं।

4859. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम फ़राहीदी ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अश्हब जा'फ़र बिन हय्यान ने बयान किया, कहा कि हमसे अबुल जोज़ाअ ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने लात और उ़ज़्ज़ा के हाल में कहा कि लात एक शख़्स को कहते थे जो हाजियों के लिये सत्तू घोलता था।

٤٨٥٩- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْهَبِ، حَدَّثَنَا أَبُو الْجَوْزَاءِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ ﴿اللاَّتِ وَالْعُزَّى﴾: كَانَ اللاَّتُ رَجُلاً يَلُتُّ سَوِيقَ الْحَاجِّ.

तश्रीह : इसीलिये कुछ ने लात को बतशदीदे ताअ पढ़ा है और जिन्होंने तख़्फ़ीफ़ के साथ पढ़ा है उनकी क़िरात पर ये तौजिह हो सकती है कि कष़रते इस्तेमाल से तख़्फ़ीफ़ हो गई। कहते हैं उस शख़्स का नाम अ़म्र बिन लुहय या हरमा बिन ग़नम था। ये घी और सत्तू मिलाकर एक पत्थर के पास हाजियों को खिलाया करता जब मर गया तो लोग उस पत्थर को पूजने लगे जहाँ खिलाया करता था और उस पत्थर का नाम लात रख दिया ताकि उस शख़्स की यादगार रहे। इब्ने अबी हातिम ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला जो कोई उसका सत्तू खाता वो मोटा हो जाता इसलिये उसकी परस्तिश करने लगे अल्लाह तआ़ला की मार हो उन बेवक़ूफ़ों पर। (वह़ीदी)

अब भी बहुत से कमफ़हम अ़वाम का यही हाल है कि अपनी ख़ुदसाख़्ता अ़क़ीदत की बिना पर कितने ही बुज़ुर्गान को उनकी वफ़ात के बाद क़ाज़ियुल् हाजात समझकर उनकी पूजा परस्तिश शुरू कर देते हैं।

आज टाटानगर जमशेदपुर बिहार में बर मकान जनाब मुहम्मद इस्ह़ाक़ स़ाहब गार्ड ये नोट लिख रहा हूँ यहाँ बतलाया गया कि बिलकुल इसी तरह से एक स़ाहब यहाँ चूना भट्टी में काम किया करते थे इत्तिफ़ाक़ से वो दीवाने हो गये और लोगों ने उनको अल्लाह वाला समझकर बाबा बना लिया। अब उनके इंतिक़ाल के बाद उनकी क़ब्र को मज़ार की शक्ल में आरास्ता पैरास्ता करके चूना बाबा के नाम से मशहूर कर दिया गया है और वहाँ सालाना उ़र्स और क़व्वालियाँ होती हैं बहुत से लोग उनको क़ाज़ियुल् हाजात समझकर उनकी क़ब्र पर हाथ बाँधकर अपनी अ़र्ज़ियाँ पेश करते रहते हैं। अल्लाह जाने मुसलमानों की अ़क़्ल मारी गई है कि वो ऐसे तोहमात में मुब्तला होकर परचमे तौह़ीद की अपने हाथों से धज्जियाँ बिखेर रहे हैं **इन्ना लिल्लाहि अल्लाहुम्महदि क़ौमी फइन्नहुम ला यअलमून आमीन।**

4860. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमें ज़ुह्री ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स क़सम खाए और कहे कि क़सम है लात और उ़ज़्ज़ा की तो उसे तजदीदे ईमान के लिये कहना चाहिये ला इलाहा इल्लल्लाह; और जो शख़्स अपने साथी से ये कहे कि आओ जुआ खेले तो उसे सदक़ा देना चाहिये। (दीगर मक़ाम : 6107, 6301, 6650)

٤٨٦٠– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((مَنْ حَلَفَ، فَقَالَ فِي حَلِفِهِ وَاللاَّتِ وَالْعُزَّى، فَلْيَقُلْ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أُقَامِرْكَ، فَلْيَتَصَدَّقْ)).

[أطرافه في : ٦١٠٧، ٦٣٠١، ٦٦٥٠].

तश्रीह : ये सदक़ा इसलिये कि एक ख़्याली गुनाह का ये कफ़्फ़ारा बन जाए। कलिमा-ए-तौह़ीद पढ़ने का हुक्म उस शख़्स के लिये दिया गया जो अ़रबों में से नया नया इस्लाम में दाख़िल होता था। चूँकि पहले से ज़ुबान पर ये कलिमात चढ़े हुए थे, इसलिये फ़र्माया कि अगर ग़लती से ज़ुबान पर इस त़रह़ के कलिमात आ जाएँ तो फ़ौरन उसकी तलाफ़ी कर लेनी चाहिये। और कलिमा-ए-तय्यिबा पढ़कर ईमान और अ़क़ीदा-ए-तौह़ीद को ताज़ा करना चाहिये। ऐसा ही हुक्म उन लोगों के लिये है जो अपने पीरों मुर्शिदों ग़ौषे शाह बुज़ुर्गान या ज़िन्दा इंसानों की क़सम खाते रहते हैं। ह़दीष़ मे है कि जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई उसने शिर्क का इर्तिकाब किया। बहरह़ाल क़सम तो अल्लाह ही की खानी चाहिये और वो भी सच्ची क़सम हो वरना अल्लाह के नाम की झूठी क़सम खाना भी कबीरा गुनाह है।

बाब 3 : आयत 'व मनातष़्ष़लिष़तल्उख़्रा' की तफ़्सीर या'नी,

٣– باب قوله ﴿وَمَنَاةَ الثَّالِثَةَ الأُخْرَى﴾

और तीसरा बुत मनात के (ह़ालात भी सुनो)

4861. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमेदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया कि मैंने उ़र्वा से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने कहा कि कुछ लोग मनात बुत के नाम पर एह़राम बाँधते जो मुक़ामे मुश्लल में था, वो स़फ़ा और मर्वा के दरम्यान (ह़ज्ज व उ़मरह में) सई नहीं करते थे इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल की बेशक स़फ़ा और मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं। चुनाँचे रसूले करीम (ﷺ) ने उनके दरम्यान त़वाफ़ किया और मुसलमानों ने भी त़वाफ़ किया। सुफ़ियान ने कहा कि मनात मुक़ामे क़ुदैद पर मुशल्लल में था और अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद ने बयान किया कि उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा

٤٨٦١– حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، سَمِعْتُ عُرْوَةَ قُلْتُ لِعَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَتْ : إِنَّمَا كَانَ مَنْ أَهَلَّ بِمَنَاةَ الطَّاغِيَةِ الَّتِي بِالْمُشَلَّلِ لاَ يَطُوفُونَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللهِ﴾ فَطَافَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَالْمُسْلِمُونَ قَالَ سُفْيَانُ: مَنَاةُ بِالْمُشَلَّلِ مِنْ قُدَيْدٍ، وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ : نَزَلَتْ

(रज़ि.) ने कहा कि ये आयत अंसार के बारे में नाज़िल हुई थी। इस्लाम से पहले अंसार और क़बीला ग़स्सान के लोग मनात के नाम पर एहराम बाँधते थे, पहली हदीष़ की तरह। और मअ़मर ने ज़ुह्री से बयान किया, उनसे उर्वा ने, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि क़बीला अंसार के कुछ लोग मनात के नाम का एहराम बाँधते थे। मनात एक बुत था जो मक्का और मदीना के बीच रखा हुआ था (इस्लाम लाने के बाद) उन लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम मनात की ता'ज़ीम के लिये सफ़ा और मर्वा के दरम्यान सई नहीं किया करते थे। (राजेअ़: 1643)

فِي الأَنْصَارِ، كَانُوا هُمْ وَغَسَّانُ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمُوا يُهِلُّونَ لِمَنَاةَ ...». وَقَالَ مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ: كَانَ رِجَالٌ مِنَ الأَنْصَارِ مِمَّنْ كَانَ يُهِلُّ لِمَنَاةَ، وَمَنَاةُ صَنَمٌ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ، قَالُوا: يَا نَبِيَّ اللهِ كُنَّا لاَ نَطُوفُ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ تَعْظِيمًا لِمَنَاةَ نَحْوَهُ.

[راجع: ١٦٤٣]

तश्रीह़ : मुशल्लल क़ुदेद में एक मुक़ाम का नाम था मनात का बुतख़ाना वहीं था। असाफ़ और नाइला नामी दो बुत सफ़ा और मर्वा पर थे। अल्हम्दुलिल्लाह इस्लाम ने उन सबको उजाड़कर परचमे तौह़ीद अरब के चप्पे चप्पे पर लहरा दिया। अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी सदक़ वअ़दहू व नसर अ़ब्दहू

बाब 4 : आयत '(फ़स्जुदुल्लाह वअ़बुदू') की तफ़्सीर

٤- باب قوله ﴿فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا﴾

या'नी ख़ास अल्लाह के लिये सज्दा करो और ख़ास उसी की इबादत करो

4862. हमसे अबू मअ़मर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सूरह अन् नज्म में सज्दा किया और आपके साथ मुसलमानों ने और तमाम मुश्रिकों और जिन्नात व इंसानों ने भी सज्दा किया। अ़ब्दुल वारिष़ के साथ इस ह़दीष़ को इब्राहीम बिन त़ह्मान ने भी अय्यूब से रिवायत किया और इस्माईल बिन उ़लय्या ने अपनी रिवायत में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का ज़िक्र नहीं किया। (राजेअ़: 1071)

٤٨٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَجَدَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنَّجْمِ، وَسَجَدَ مَعَهُ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْجِنُّ وَالإِنْسُ. تَابَعَهُ ابْنُ طَهْمَانَ عَنْ أَيُّوبَ. وَلَمْ يَذْكُرِ ابْنُ عُلَيَّةَ ابْنَ عَبَّاسٍ.

[راجع: ١٠٧١]

4863. हमसे नस्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमको अबू अह़मद ज़ुबैरी ने ख़बर दी, कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि सबसे पहले नाज़िल होने वाली सज्दा वाली सूरत सूरह नज्म है। बयान किया कि फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (उसकी तिलावत के बाद) सज्दा किया और जितने लोग आपके पीछे थे सब ही ने आपके साथ सज्दा किया, सिवा एक शख़्स के, मैंने देखा

٤٨٦٣- حَدَّثَنَا نَصْرُ بْنُ عَلِيٍّ، أَخْبَرَنِي أَبُو أَحْمَدَ يَعْنِي الزُّبَيْرِيَّ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَوَّلُ سُورَةٍ أُنْزِلَتْ فِيهَا سَجْدَةٌ وَالنَّجْمِ، قَالَ: فَسَجَدَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَسَجَدَ مَنْ خَلْفَهُ، إِلاَّ رَجُلاً رَأَيْتُهُ أَخَذَ كَفًّا مِنْ تُرَابٍ فَسَجَدَ

عَلَيْهِ، فَرَأَيْتُهُ بَعْدَ ذَلِكَ قُتِلَ كَافِرًا، وَهُوَ أُمَيَّةُ بْنُ خَلَفٍ. [راجع: ١٠٦٧]

कि उसने अपनी हथेली में मिट्टी उठाई और उसी पर सज्दा कर लिया। बाद में (बद्र की लड़ाई में) मैंने उसे देखा कि कुफ़्र की हालत में वो क़त्ल किया हुआ पड़ा है। वो शख़्स उमय्या बिन ख़लफ़ था।

[٥٤] سُورَةُ ﴿اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ﴾

सूरह इक़्तरबतिस्साअत की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तश्रीह : इसका नाम सूरह क़मर भी है। इसमें 55 आयात और तीन रुकूअ हैं। इसमें अल्लाह पाक ने क़यामत के नज़दीक होने का ज़िक्र करते हुए मुअजिज़ा शक़्क़ुल क़मर का ज़िक्र फ़र्माया है। चाँद फट जाने का मुअजिज़ा हक़ है। इसमें किसी तावील की क़त्अन गुंजाइश नहीं है।

قَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مُسْتَمِرٌّ﴾ ذَاهِبٌ. ﴿مُزْدَجَرٌ﴾ مُتَنَاهٍ. ﴿وَازْدُجِرَ﴾: ﴿فَاسْتُطِيرَ جُنُونًا﴾: ﴿دُسُرٍ﴾ : أَضْلاَعُ السَّفِينَةِ. ﴿لِمَنْ كَانَ كُفِرَ﴾ يَقُولُ كُفِرَ لَهُ جَزَاءً مِنَ اللهِ. ﴿مُحْتَضَرٌ﴾ يَحْضُرُونَ الْمَاءَ. وَقَالَ ابْنُ جُبَيْرٍ ﴿مُهْطِعِينَ﴾ النَّسَلاَنُ الْخَبَبُ: السِّرَاعُ. وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿فَتَعَاطَى﴾ فَعَاطَهَا بِيَدِهِ فَعَقَرَهَا. ﴿الْمُحْتَظِرِ﴾ كَحِظَارٍ مِنَ الشَّجَرِ مُحْتَرِقٍ ﴿ازْدُجِرَ﴾ افْتُعِلَ مِنْ زَجَرْتُ : ﴿كُفِرَ﴾ فَعَلْنَا بِهِ وَبِهِمْ مَا فَعَلْنَا جَزَاءً لِمَا صُنِعَ بِنُوحٍ وَأَصْحَابِهِ. ﴿مُسْتَقِرٌّ﴾ عَذَابٌ حَقٌّ. يُقَالُ: ﴿الأَشَرُ﴾ الْمَرَحُ وَالتَّجَبُّرُ.

मुजाहिद ने कहा मुस्तमिर का मा'नी जाने वाला। बातिल होने वाला। मुज़्दजिर बेइंतिहा झिड़कने वाले तम्बीह करने वाले। वज़्दुजिर दीवाना बनाया गया (या झिड़का गया) दुसुर कश्ती के तख़्ते या कीलें या रस्सियाँ। जज़ाउ लिमन काना कुफ़िर या'नी ये अ़ज़ाब अल्लाह की तरफ़ से बदला था उस शख़्स का जिसकी उन्होंने नाक़द्री की थी या'नी नूह (अलैहिस्सलाम) की कुल्लु शिर्बिम मुहतज़र या'नी हर फ़रीक़ अपनी बारी पर पानी पीने को आए मुहतिईन इलद् दाअ सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने कहा या'नी डरते हुए अरबी ज़ुबान में दौड़ने को निस्लान, अल्हबब, सिराअ कहते हैं। औरों ने कहा कि फ़तआती या'नी हाथ चलाया उसको ज़ख़्मी किया कहैशमल मुहतज़िर का मा'नी जैसे टूटी जली हुई बाड़। इज़्दुजिर माज़ी मज्हूल का सैग़ा है बाब इफ़्तिआल से उसका मुजर्रद ज़ुज्रत है। जज़ा लिमन काना कफ़र या'नी हमने नूह और उनकी क़ौम वालों के साथ जो सुलूक किया ये उसका बदला था जो नूह और उनके ईमानदार साथ वालों के साथ काफ़िरों की तरफ़ से किया गया था। मुस्तक़िर जमा रहने वाला। अ़ज़ाबु अशर का मा'नी है इतरना, ग़ुरूर करना।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने यहाँ सूरह इक़्तरबतिस्साअत के चंद जुमलों और लफ़्ज़ों की वज़ाहत फ़र्माई है ताकि उसकी तफ़्सीर का मुतालआ करने वाले के लिये यहाँ से रोशनी मिल सके। हज़रत इमाम ने पूरी किताबुत् तफ़्सीर में यही तरीक़ा रखा है जैसा कि नाज़िरीने किराम पर मख़्फ़ी नहीं है।

١- باب قوله ﴿وَانْشَقَّ الْقَمَرُ وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا﴾

बाब 1 : आयत 'वन्शक़्क़ल्क़मर व इंय्यरौ आयतय्युंअरिज़ू' की तफ़्सीर

٤٨٦٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ

4864. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने

बयान किया, उनसे शुअ़बा और सुफ़यान ने और उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अबू मअ़मर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में चाँद दो टुकड़े हो गया था एक टुकड़ा पहाड़ के ऊपर और दूसरा उसके पीछे चला गया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसी मौक़े पर हमसे फ़र्माया था कि गवाह रहना। (राजेअ़ : 3636)

شُعْبَةُ، وَسُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِرْقَتَيْنِ فِرْقَةٌ فَوْقَ الْجَبَلِ، وَفِرْقَةٌ دُونَهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اشْهَدُوا)).

[راجع: ٣٦٣٦]

4865. हमसे अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अबी नजीह ने ख़बर दी, उन्हें मुजाहिद ने, उन्हें अबू मअ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि चाँद फट गया था और उस वक़्त हम भी नबी करीम (ﷺ) के साथ थे। चुनाँचे उसके दो टुकड़े हो गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया कि लोगों गवाह रहना। गवाह रहना। (राजेअ़ : 3636)

٤٨٦٥- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنَا ابْنُ أَبِي نَجِيحٍ عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ وَنَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَصَارَ فِرْقَتَيْنِ، فَقَالَ لَنَا: ((اشْهَدُوا، اشْهَدُوا)).

[راجع: ٣٦٣٦]

4866. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे बक्र ने बयान किया, उनसे जा'फ़र ने, उनसे इराक बिन मालिक ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में चाँद फट गया था। (राजेअ़ : 3637)

٤٨٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، قَالَ حَدَّثَنِي بَكْرٌ عَنْ جَعْفَرٍ عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بن عتبة بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ فِي زَمَانِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٣٦٣٨]

4867. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मक्का वालों ने नबी करीम (ﷺ) से मुअ़जिज़ा दिखाने को कहा तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें चाँद के फट जाने का मुअ़जिज़ा दिखाया। (राजेअ़ : 3637)

٤٨٦٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَأَلَ أَهْلُ مَكَّةَ أَنْ يُرِيَهُمْ آيَةً فَأَرَاهُمُ انْشِقَاقَ الْقَمَرِ. [راجع: ٣٦٣٧]

4868. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि चाँद दो टुकड़ों में फट गया था। (राजेअ़ : 3637)

٤٨٦٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: انْشَقَّ الْقَمَرُ فِرْقَتَيْنِ. [راجع: ٣٦٣٧]

तशरीह : क़स्तलानी (रह़) ने कहा ये पाँच ह़दीषें हैं जो शक़्कुल क़मर के बाब में वारिद हैं। तीन शख़्स इनके रावी हैं ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.)। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) सिर्फ़ रिवायत के गवाह हैं बाक़ी ह़ज़रत अनस (रज़ि.) तो उस वक़्त मदीना में थे उनकी उ़म्र पाँच साल की होगी और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) तो उस वक़्त तक पैदा नहीं हुए थे लेकिन उनके सिवा और एक जमाअ़त स़ह़ाबा ने भी शक़्कुल क़मर का वाक़िया नक़ल किया है। मुतर्जिम कहता है अगर शक़्कुल क़मर न हुआ होता और कुर्आन में ये उतरता कि चाँद फट गया तो सबके सब कुर्आन को ग़लत समझते, इस्लाम से फिर जाते। बस यही एक दलील इस वाक़िये के षुबूत के लिये काफ़ी है और इस तावील की कोई ज़रूरत नहीं कि माज़ी बमा'नी मुस्तक़्बिल है जैसे **व नुफ़िख़ा फ़िस्सूर** (अल कहफ़ : 99) **व जाअ रब्बुक वल्मलकु स़फ़्फ़न स़फ़्फ़ा** (अल फ़ज्र : 22) में इसलिये कि जो काम आइन्दा मुम्किन अल् वुक़ूअ़ है उसका ज़माना माज़ी में भी वाक़ेअ़ होना मुम्किन है जब सच्चे शख़्स उसके वुक़ूअ़ की गवाही दें। अब ये कहना कि अज्रामे अ़ल्विया क़ाबिले ख़र्क़ वत् तियाम नहीं हैं एक ख़ुद राय शख़्स अरस्तू की तक़्लीद है जिसने इस पर कोई दलील क़ायम नहीं की। अगर अरस्तू को ये मा'लूम होता कि मर्कज़ आ़लम आफ़ताब है और ज़मीन भी एक सय्यारा और अज्राम अ़ल्वी में दाख़िल है चाँद ज़मीन का ताबेअ़ है इसी पर बड़े बड़े ग़ार मौजूद हैं तो ऐसी बेवक़ूफ़ी की बात न कहता। ज़मीन क़ाबिले ख़र्क़ वत् तियाम नहीं ये क्या मा'नी ख़ुद सूरज क़ाबिले ख़र्क़ वत् तियाम है बहुत से ह़कीम कहते हैं कि ज़मीन सूरज ही का एक टुकड़ा है जो अलग होकर आ रहा है और अपने षक़्ल की वजह से सूरज से इतने फ़ास़ले पर थमा हुआ है रहा ये अम्र कि तुमने अपनी उ़म्र में अज्रामे अ़ल्विया का ख़र्क़ वत् तियाम नहीं देखा तो तुम क्या तुम्हारी उ़म्र क्या। पुश्शा के दानद कि ख़ाना अज़्कियत (वह़ीदी)

रसूले करीम (ﷺ) की ह़याते त़य्यिबा में आपकी दुआ़ओं से चाँद फट जाना बिलकुल ह़क़्क़ुल यक़ीन है। मुअ़ज़िज़ा उसी चीज़ को कहा जाता है जो इंसानी अ़क़्ल को आजिज़ करने वाला हो। अंबिया किराम के मुअ़ज़िज़ात बरह़क़ हैं मुअ़ज़िज़ात का इंकार करना या उनमें बेजा तावीलात से काम लेना ये सच्चे मोमिन मुसलमान की शान नहीं है।

बाब 2 : आयत 'तज्री बिआयुनिना' की तफ़्सीर

٢- باب قوله ﴿تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ قَالَ قَتَادَةُ: أَبْقَى اللهُ سَفِينَةَ نُوحٍ، حَتَّى أَدْرَكَهَا أَوَائِلُ هَذِهِ الأُمَّةِ.

क़तादा ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने नूह़ (अ़लैहिस्सलाम) की कश्ती को बाक़ी रखा और इस उम्मत के कुछ पहले बुज़ुर्गों ने उसे जूदी पहाड़ पर देख लिया।

या'नी वो (कश्ती) मेरी निगरानी में चलती थी, ये सब ह़िमायत में उस शख़्स (नूह़ अ़लैहिस्सलाम) के था जिसका इंकार किया गया था और मैंने उस कश्ती को निशान (इ़बरत) के त़ौर पर बाक़ी रहने दिया सो है कोई नस़ीह़त ह़ास़िल करने वाला।

٤٨٦٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾. [راجع: ٣٣٤١]

4869. हमसे ह़फ़्स बिन उ़मर ने बयान किया, कहा कि हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे अस्वद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (रज़ि.) ने बयान कि नबी करीम (ﷺ) 'फहल मिम्मुद्दकिर' पढ़ा करते थे। (राजेअ़ : 3341)

बाब आयत 'व लक़द यस्सरनल् क़ुर्आना लिज़्ज़िक्रि फ़हल मिम्मुद्दकिर' की तफ़्सीर या'नी,

باب قوله ﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ قَالَ مُجَاهِدٌ

और हमने आसान कर दिया है क़ुर्आन को नस़ीह़त ह़ास़िल

: يَسَّرْنَا هَوَّنَّا قِرَاءَتَهُ.

करने के लिये, सो है कोई नसीहत हासिल करने वाला? मुजाहिद ने कहा कि यस्सर्ना के मा'नी ये कि हमने उसकी क़िरात (और उसकी फ़हम) आसान कर दी।

इसको फ़रयाबी ने वस्ल किया है क़स्तलानी (रह़) ने कहा या'नी इसके अल्फ़ाज़ हमने सहल रखे और इसका मतलब आसान कर दिया।

٤٨٧٠– حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ: يَقْرَأُ ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾. [راجع: ٣٣٤١]

4870. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे शुअबा ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़हल मिम्मुद्दकिर पढ़ा करते थे। (सो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?) (राजेअ़ :3341)

मा'लूम हुआ कि नसीहत हासिल करने वाले के लिये क़ुर्आन जैसी आसान और सहल कोई और नसीहत की चीज़ नहीं है।

باب قوله ﴿أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ فكيف كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ﴾

बाब 'कअन्नहुम आजाज़ु नख़्लिन .... अल्आयः' की तफ़्सीर,

(वो हलाक शुदा काफ़िर) गोया उखड़ी हुई खजूरों के तने थे सो देखो मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा।

٤٨٧١– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلاً سَأَلَ الأَسْوَدَ، فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ، أَوْ مُذَّكِرٍ؟ فَقَالَ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ يَقْرَؤُهَا ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ قَالَ : وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَؤُهَا ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ دَالاً. [راجع: ٣٣٤١]

4871. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उन्होंने एक शख़्स को अस्वद से पूछते सुना कि सूरह क़मर में आयत फ़हल मिम्मुद्दकिर है या मुज़्ज़किर? उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से सुना वो फ़हल मिम्मुद्दकिर पढ़ते थे। उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को भी फहल मिम्मुद्दकिर पढ़ते सुना है। (दाल मुहमला से) (राजेअ़ : 3341)

तशरीह : ये अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का फ़ज़्ल व करम है कि क़ुर्आन व ह़दीष़ के मतालिब उसने सहल व आसान रखे हैं ताकि आम व ख़ास सब उनका मतलब समझ सकें और उन पर अ़मल करें और आजकल तो बफ़ज़्लिही क़ुर्आन व ह़दीष़ के तराजिम दूसरी ज़ुबानों में शाये हो रहे हैं जिनसे ग़ैर अ़रबी भी क़ुर्आन व ह़दीष़ को समझकर हिदायत हासिल कर रहे हैं। अल्हम्दुलिल्लाह ष़नाई तर्जुमा और मुंतख़ब ह़वाशी वाला क़ुर्आन मजीद इसका रोशन षुबूत है और बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू भी रोशन दलील है।

٣– باب قوله ﴿فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ من مُدَّكِرٍ﴾

बाब 3 : 'फकानू कहशीमिल्मुहतज़िर ... अल्आयः' की तफ़्सीर,

सो वो (ष़मूद) ऐसे हो गये जैसे कांटों की बाड़ जो चकना चूर हो गई हो और हमने क़ुर्आन को आसान कर दिया है। क्या कोई है क़ुर्आन मजीद से नसीहत हासिल करने वाला? जो क़ुर्आन मजीद से नसीहत हासिल करे।

4872. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको हमारे वालिद उ़ष्मान ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अबी इस्हाक़ ने, उन्हे अस्वद ने और उन्हें ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़हल मिम् मुद्दकिर पढ़ा अल आयत (दाल मुहमला से) (राजेअ़ : 3341)

٤٨٧٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا أَبِي عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَرَأَ ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ الآيَةَ. [راجع: ٣٣٤١]

बाब 4 : 'व लक़द सब्बहहुम बुक्रतन अ़ज़ाबुम्मुस्तकिर्र' की तफ़्सीर या'नी,

और सुबह सवेरे ही उन पर अ़ज़ाबे दाइमी आ पहुँचा और उनसे कहा गया कि पस मेरे अ़ज़ाब और डराने का मज़ा चखो।

٤- باب قوله ﴿وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُسْتَقِرٌّ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ﴾

4873. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़हल मिम् मुद्दकिर (दाल मुहमला से) पढ़ा था। (राजेअ़ : 3341)

٤٨٧٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَرَأَ ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾. [راجع: ٣٣٤١]

बाब आयत 'व लक़द अहलक्ना अश्याअ़कुम' की तफ़्सीर,

और हम तुम्हारे जैसे लोगों को हलाक कर चुके हैं सो है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

باب ﴿وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾

4874. हमसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) के सामने फ़हल मिम् मुज़्ज़किर पढ़ा तो आपने फ़र्माया कि फ़हल मिम् मुद्दकिर (या'नी दाल मुहमला से पढ़ो) (राजेअ़ : 3341)

٤٨٧٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ ﴿فَهَلْ مِنْ مُذَّكِرٍ﴾ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ﴿فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾.[راجع: ٣٣٤١]

बाब 5 : 'सयुहज़मुल्जम्उ' की तफ़्सीर या'नी,

काफ़िरों की अ़न्क़रीब सारी जमाअ़त शिकस्त खाएगी और ये सब पीठ फेरकर भागेंगे।

٥- باب قوله ﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ﴾

4875. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ौशब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और मुझसे मुह़म्मद

٤٨٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ح.

وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ وُهَيْبٍ. حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ وَهُوَ فِي قُبَّةٍ يَوْمَ بَدْرٍ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ، اللَّهُمَّ إِنْ تَشَأْ لاَ تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ،)) فَأَخَذَ أَبُوبَكْرٍ بِيَدِهِ فَقَالَ: حَسْبُكَ يَا رَسُولَ اللهِ، أَلْحَحْتَ عَلَى رَبِّكَ وَهُوَ يَثِبُ فِي الدِّرْعِ فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: ((﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ﴾. [راجع: ٢٩١٥]

बिन यह्या ज़हली ने बयान किया, कहा हमसे अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे वुहैब ने, कहा हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जबकि आप बद्र की लड़ाई के दिन एक ख़ैमे में थे और ये दुआ कर रहे थे कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरा अ़हद और वा'दा नुसरत याद दिलाता हूँ। ऐ अल्लाह! तेरी मर्ज़ी है अगर तू चाहे (इन थोड़े से मुसलमानों को भी हलाक कर दे) फिर आज के बाद तेरी इबादत बाक़ी नहीं रहेगी। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) का हाथ पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया बस या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने अपने रब से बहुत ही गिर्या व ज़ारी से दुआ कर ली है। उस वक़्त आँहुज़ूर (ﷺ) ज़िरह पहने हुए चल फिर रहे थे और आप ख़ैमा से निकले तो ज़ुबाने मुबारक पर ये आयत थी सो अन्क़रीब (काफ़िरों की) जमाअ़त शिकस्त खाएगी और ये सब पीठ फेरकर भागेंगे। (राजेअ़: 2915)

٦- باب قَوْلِهِ ﴿بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ﴾ يَعْنِي مِنَ الْمَرَارَةِ

बाब 6 : 'बलिस्साअ़तु मौइदुहुम' की तफ़्सीर

या'नी, बल्कि उनका अस़ल वा'दा तो क़यामत के दिन का है और क़यामत बड़ी सख़्त और तल्ख़ तरीन चीज़ है अमर्रू न मिरारतुन से है। जिसके मा'नी तल्ख़ी के हैं या'नी क़यामत का दिन बहुत ही तल्ख़ होगा।

٤٨٧٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ، قَالَ أَخْبَرَنِي يُوسُفُ بْنُ مَاهَكَ، قَالَ: إِنِّي عِنْدَ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ، قَالَتْ لَقَدْ أُنْزِلَ عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ بِمَكَّةَ وَإِنِّي لَجَارِيَةٌ أَلْعَبُ: ﴿بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ﴾.[طرفه في : ٤٩٩٣].

4876. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे युसूफ़ बिन माहिक ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) उम्मुल मोमिनीन की ख़िदमत में हाज़िर था। आपने फ़र्माया कि जिस वक़्त आयत लेकिन उनका अस़ल वा'दा तो क़यामत के दिन का है और क़यामत बड़ी सख़्त और तल्ख़ चीज़ है। हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर मक्का में नाज़िल हुई तो मैं बच्ची थी और खेला करती थी। (दीगर मक़ाम : 4993)

٤٨٧٧- حدثني إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ عن خالدٍ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ وَهُوَ

4877. मुझसे इस्हाक़ बिन शाहीन वास्ती ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह तहान ने, कहा उनसे ख़ालिद बिन महरान हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जबकि

आप (ﷺ) बद्र की लड़ाई के मौक़ पर मैदान में एक ख़ैमे में ये दुआ कर रहे थे कि, ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरा अ़हद और वा'दा-ए-नुस्रत याद दिलाता हूँ। ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे कि (मुसलमान को फ़ना कर दे) तो आज के बाद फिर कभी तेरी इबादत नहीं की जाएगी। और उस पर ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि) ने आँह़ज़रत (ﷺ) का हाथ पकड़कर अ़र्ज़ किया, बस या रसूलल्लाह! आप अपने रब से ख़ूब गिरिया व ज़ारी के साथ दुआ कर चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त ज़िरह पहने हुए थे। आप बाहर तशरीफ़ लाए तो आपकी ज़ुबाने मुबारक पर ये आयत थी सयुहज़मल जम्उ व युवल्लूनद् दुबर या'नी अ़न्क़रीब काफ़िरों की ये जमाअ़त हार जाएगी और ये सब पीठ फेरकर भागेंगे। लेकिन इनका अ़सल वा'दा तो क़यामत के दिन का है और क़यामत बड़ी सख़्त और बहुत ही कड़वी चीज़ है। (राजेअ़ : 2915)

فِي قُبَّةٍ لَهُ يَوْمَ بَدْرٍ : ((أَنْشُدُكَ عَهْدَكَ وَوَعْدَكَ، اللَّهُمَّ إِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ بَعْدَ الْيَوْمِ أَبَدًا))، فَأَخَذَ أَبُوبَكْرٍ بِيَدِهِ وَقَالَ : حَسْبُكَ يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَدْ أَلْحَحْتَ عَلَى رَبِّكَ وَهُوَ فِي الدِّرْعِ، فَخَرَجَ وَهُوَ يَقُولُ: (﴿سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ، بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ﴾)).

[راجع: ٢٩١٥]

क़यामत की सख़्तियों और दोज़ख़ के अ़ज़ाबों पर इशारा है।

सूरह रह़मान की तफ़्सीर

[٥٥] سُورَةُ ﴿الرَّحْمَنِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

तश्रीह : सूरह रह़मान मक्की है इसमें 78 आयात और तीन रुकूअ़ हैं। ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) कहते हैं कि एक दिन नबी करीम (ﷺ) स़ह़ाबा किराम की जमाअ़त मे तशरीफ़ लाए और आपने इस सारी सूरत को सुनाया। स़ह़ाबा किराम ख़ामोश सुनते रहे। आख़िरत में आपने फ़र्माया कि तुमसे तो जिन्नता अच्छे हैं जब मैंने उनको ये सूरत सुनाई तो वो आयत **फबिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान** के जवाब में यूँ कहते रहे **ला बिशैइम्मिन निअमिक रब्बना नुकज़्ज़िबु फलकल्हम्दु** (तिर्मिज़ी) इससे षाबित हुआ कि क़ुर्आन मजीद पढ़ने वाले के सिवा सुनने वालों को भी ऐसे मुक़ामात पर आयाते क़ुर्आनी का जवाब देना चाहिये।

मुजाहिद ने बिहुस्बान या'नी चक्की की त़रह घूम रहे हैं। औरों ने कहा व अक़ीमुल वज़्ना का मा'नी ये है कि तराज़ू की ज़ुबान सीधी रखो (या'नी बराबर तोलो) अ़स्फ़ु कहते हैं खेती की उस पैदा'वार (सब्ज़े) को जिसको पकने से पहले काट लें ये तो अ़स्फ़ के मा'नी हुए और यहाँ रैह़ान से खेती के पत्ते और दाने जिनको खाते हैं मुराद हैं। और रैह़ान अ़रबों की ज़ुबान में रोज़ी को कहते हैं कुछ ने कहा ख़ुश्बूदार सब्ज़े को कुछ ने कहा अ़स्फ़ वो दाने जिनको खाते हैं और रैह़ान वो पका अनाज जिसको कच्चा नहीं खाते। औरों ने कहा अ़स्फ़ गेहूँ के पत्ते हैं। ज़िह़ाक ने कहा अ़स्फ़ भूसा जो जानवर खाते हैं अबू मालिक ग़िफ़ारी (ताबेई) ने कहा अ़स्फ़ खेती का वो सब्ज़ा जो पहले पहल

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿بِحُسْبَانٍ﴾ كَحُسْبَانِ الرَّحَى. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ﴾ يُرِيدُ لِسَانَ الْمِيزَانِ. ﴿وَالْعَصْفُ﴾ بَقْلُ الزَّرْعِ إِذَا قُطِعَ مِنْهُ شَيْءٌ قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَ فَذَلِكَ وَالرَّيْحَانُ فِي كَلاَمِ الْعَرَبِ الرِّزْقُ الْعَصْفُ، وَالرَّيْحَانُ وَرَقٌ. ﴿وَالْحَبُّ﴾ الَّذِي يُؤْكَلُ مِنْهُ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ ﴿وَالْعَصْفُ﴾ يُرِيدُ الْمَأْكُولَ مِنَ الْحَبِّ

उगता है किसान लोग उसको हिबूर कहते हैं। मुजाहिद ने कहा अस़्फ़ गेहूँ का पत्ता और रैहान रोज़ी का। मआरिज आग की लपट (को) ज़र्द या सब्ज़ जो आग रोशन करने पर ऊपर चढ़ती है कुछ ने मुजाहिद से रिवायत किया है कि रब्बुल मश्रिक़ैन व रब्बुल मग़्रिबैन में मश्रिक़ैन से जाड़े और गर्मी की मश्रिक़ और मग़्रिबैन से जाड़े गर्मी की मग़्रिब मुराद है। ला यब्ग़ियान मिल नहीं जाते। अल मुंशआतु वो कश्तियाँ जिनका बादबान ऊपर उठाया गया हो (वही दूर से पहाड़ की त़रह़ मा'लूम होती हैं) और जिन कश्तियों का बादबान न चढ़ाया जाए उनको मुंशआत नहीं कहेंगे। ह़ज़रत मुजाहिद ने कहा कल्फ़ख़्ख़ार या'नी जैसा ठीकरा बनाया जाता है। अश् शुवाज़ आग का शोला जिसमें धुआँ हो। फ़नुह़ास पीतल जो गलाकर दोज़ख़ियों के सर पर डाला जाएगा। उनको उसी से अ़ज़ाब दिया जाएगा। ख़ाफ़ मक़ाम रब्बुहू का ये मत़लब है कि कोई आदमी गुनाह करने का क़स्द करे फिर अपने परवरदिगार को याद करके उससे बाज़ आ जाए। मुदहाम्मतान बहुत शादाबी की वजह से काले या सब्ज़ हो रहे होंगे। स़ल्स़ाल वो गारा कीचड़ जिसमें रेत मिलाई जाए वो ठीकरी की त़रह़ खनखनाने लगे। कुछ ने कहा स़लस़ाल बदबूदार कीचड़ जैसे कहते है स़ल्लल् लह़्म या'नी गोश्त बदबूदार हो गया सड़ गया जैसे स़र्रलबाब दरवाज़े बन्द करते वक़्त आवाज़ दी और स़र्सरलबाब और कबब्तुहू को कब्कब्तुहू कहते हैं। फ़ाकिहतुवं व नख़्लुवं व रुम्मान या'नी वहाँ मेवा होगा और खजूर और अनार इस आयत से कुछ ने (ह़ज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह़ ने) ये निकाला है कि खजूर और अनार मेवा नहीं हैं। अ़रब लोग तो इन दोनों को मेवों में शुमार करते हैं अब रहा नख़्ल और व रुम्मान का अ़त़्फ़ फ़ाकिहतुन पर तो वो ऐसा है जैसे दूसरी आयत में फ़र्माया ह़ाफ़िज़ू अ़लस्स़लावाति वस़्स़लातिल् वुस्त़ा तो पहले सब नमाज़ों की मुह़ाफ़िज़त का हुक्म दिया स़लातुल वुस्त़ा भी उनके आ गई फिर स़लातुल वुस्त़ा को अ़त़्फ़ करके दोबारा बयान कर देना इससे ग़र्ज़ ये है कि उसका और ज़्यादा ख़याल रख, ऐसे ही यहाँ भी नख़्ल व रुम्मान फ़ाकिहति मे आ गये थे उनकी उ़म्दगी की

وَالرَّيْحَانُ النَّضِيجُ الَّذِي لَمْ يُؤْكَلْ : وَقَالَ غَيْرُهُ : الْعَصْفُ وَرَقُ الْحِنْطَةِ. وَقَالَ الضَّحَّاكُ : الْعَصْفُ التِّبْنُ: وَقَالَ أَبُو مَالِكٍ الْعَصْفُ أَوَّلُ مَا يَنْبُتُ تُسَمِّيهِ النَّبَطُ هَبُورًا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : الْعَصْفُ وَرَقُ الْحِنْطَةِ. وَالرَّيْحَانُ الرِّزْقُ، وَالْمَارِجُ اللَّهَبُ الأَصْفَرُ وَالأَخْضَرُ الَّذِي يَعْلُو النَّارَ إِذَا أُوقِدَتْ وَقَالَ بَعْضُهُمْ عَنْ مُجَاهِدٍ : ﴿رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ﴾ لِلشَّمْسِ فِي الشِّتَاءِ مَشْرِقٌ، وَمَشْرِقٌ فِي الصَّيْفِ. ﴿وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ﴾ مَغْرِبُهَا فِي الشِّتَاءِ، وَالصَّيْفِ ﴿لاَ يَبْغِيَانِ﴾ لاَ يَخْتَلِطَانِ. ﴿الْمُنْشَآتُ﴾ مَا رُفِعَ قِلْعُهُ مِنَ السُّفُنِ، فَأَمَّا مَا لَمْ يُرْفَعْ قِلْعُهُ فَلَيْسَ بِمُنْشَآتٍ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿كَالْفَخَّارِ﴾ كَمَا يَصْنَعُ الْفَخَّارُ. ﴿الشُّوَاظُ﴾ لَهَبٌ مِنْ نَارٍ. النُّحَاسُ الصُّفْرُ يُصَبُّ عَلَى رُؤُوسِهِمْ يُعَذَّبُونَ بِهِ. ﴿خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ﴾ يَهُمُّ بِالْمَعْصِيَةِ فَيَذْكُرُ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ فَيَتْرُكُهَا. ﴿مُدْهَامَّتَانِ﴾ سَوْدَاوَانِ مِنَ الرِّيِّ. ﴿صَلْصَالٍ﴾ طِينٍ خُلِطَ بِرَمْلٍ فَصَلْصَلَ كَمَا يُصَلْصِلُ الْفَخَّارُ، وَيُقَالُ مُنْتِنٌ يُرِيدُونَ بِهِ صَلَّ، يُقَالُ صَلْصَالٌ كَمَا يُقَالُ صَرَّ الْبَابُ عِنْدَ الإِغْلاَقِ، وَصَرْصَرَ مِثْلُ كَبْكَبْتُهُ : يَعْنِي كَبَبْتُهُ. ﴿فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ﴾ قَالَ بَعْضُهُمْ: لَيْسَ الرُّمَّانُ وَالنَّخْلُ بِالْفَاكِهَةِ. وَأَمَّا الْعَرَبُ فَإِنَّهَا

تَعُدُّهَا فَاكِهَةً كَقَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ ﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى﴾ فَأَمَرَهُمْ بِالْمُحَافَظَةِ عَلَى كُلِّ الصَّلَوَاتِ، ثُمَّ أَعَادَ الْعَصْرَ تَشْدِيدًا لَهَا كَمَا أُعِيدَ النَّخْلُ وَالرُّمَّانُ، وَمِثْلُهَا، ﴿أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ﴾ ثُمَّ قَالَ: ﴿وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ، وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ﴾ وَقَدْ ذَكَرَهُمْ فِي أَوَّلِ قَوْلِهِ ﴿مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ﴾ وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿أَفْنَانٍ﴾ أَغْصَانٍ. ﴿وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ﴾ مَا يُجْتَنَى قَرِيبٌ. وَقَالَ الْحَسَنُ ﴿فَبِأَيِّ آلَاءِ﴾ نِعَمِهِ، وَقَالَ قَتَادَةُ ﴿رَبِّكُمَا﴾ يَعْنِي الْجِنَّ وَالْإِنْسَ. وَقَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ ﴿كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ﴾ يَغْفِرُ ذَنْبًا، وَيَكْشِفُ كَرْبًا، وَيَرْفَعُ قَوْمًا، وَيَضَعُ آخَرِينَ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿بَرْزَخٌ﴾ حَاجِزٌ. ﴿الْأَنَامُ﴾ الْخَلْقُ. ﴿نَضَّاخَتَانِ﴾ فَيَّاضَتَانِ. ﴿ذُو الْجَلَالِ﴾ ذُو الْعَظَمَةِ. وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿مَارِجٌ﴾ خَالِصٌ مِنَ النَّارِ، يُقَالُ مَرَجَ الْأَمِيرُ رَعِيَّتَهُ إِذَا خَلَّاهُمْ يَعْدُوا بَعْضُهُمْ على بَعْضٍ مَرِج امر الناس مَرِيجٍ ملتَبِسٌ مَرَجَ اختلط البحران من مَرَجتَ دابَّتك تَرَكتَهَا: ﴿سَنَفْرُغُ لَكُمْ﴾ سَنُحَاسِبُكُمْ، لَا يَشْغَلُهُ شَيْءٌ عَنْ شَيْءٍ، وَهُوَ مَعْرُوفٌ فِي كَلَامِ الْعَرَبِ يُقَالُ: لَأَتَفَرَّغَنَّ لَكَ، وَمَابِهِ شُغْلٌ، لَآخُذَنَّكَ عَلَى غِرَّتِكَ.

वजह से दोबारा उनका ज़िक्र किया जैसे इस आयत में फ़र्माया अलम् तरा अन्नल्लाह यस्जुदु लहू मन फ़िस्समावाति व मन् फ़िल अरज़ि फिर उसके बाद फ़र्माया व कष़ीरु मिनन्नास व कष़ीरुन हक़्क़ुन् अलैहिल् अज़ाब हालाँकि ये दोनों मन फ़िस्समावाति व मन् फ़िल अरज़ि में आ गये औरों ने (मुजाहिद या अबू हनीफ़ा रह के सिवा) कहा अफ़नान का मा'नी शाख़ें डालियाँ हैं। वजनल् जन्नतैनि दान या'नी दोनों बाग़ों का मेवा क़रीब होगा और हसन बस़री ने कहा फ़बि अय्यि आलाइ या'नी उसकी कौन कौनसी नेअ़मतों को और क़तादा ने कहा रब्बिकुमा में जिन्न व इंसान की तरफ़ ख़िताब है और अबू दर्दा ने कहा कुल्ल यौमिन हुवा फ़ी शअन का ये मतलब है किसी का गुनाह बख़्शता है, किसी की तकलीफ़ दूर करता है, किसी क़ौम को बढ़ाता है, किसी क़ौम को घटाता है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा बरज़ख़ से आड़ मुराद है अनाम ख़लक़ा नज़्ज़ाख़तान ख़ैर और बरकत से यहाँ रहते हैं। ज़ुल जलालि बुज़ुर्गी वाला औरों ने कहा। मारिज ख़ालिस़ अंगार (जिसमें धुआँ न हो) अ़रब लोग कहते हैं मरजल अमीर रअ़यतुहू या'नी हाकिम ने अपनी रुअ़यत का ख़्याल छोड़ दिया या एक को दूसरा सता रहा है। लफ़्ज़े मरीज जो सूरह क़ाफ़ में है। इसका मा'नी गड्ड-मड्ड मिला हुआ। मरजल बह्रैन या'नी दोनों दरिया मिल गये हैं ये मरज्ता दाब्बतका से निकला है या'नी तूने अपना जानवर छोड़ दिया इस तरह रहकर हम अन्क़रीब तुम्हारा ख़ात्मा करेंगे यहाँ फ़राग़त का मा'नी नहीं क्योंकि अल्लाह पाक को कोई चीज़ दूसरी चीज़ की तरफ़ ख़्याल करने से बाज़ नहीं रख सकती है। ये एक मुहावरा है जो सब लोगों में मशहूर है कोई शख़्स़ बेकार होता है उसको फ़ुरस़त होती है लेकिन डराने के लिये दूसरे से कहता है, अच्छा मैं तेरे लिये फ़राग़त करूँगा या'नी वो डर जब टल जाएगा तो तुझको सज़ा दूँगा।

बहरहाल अल्लाह तआ़ला ने जिन्नों और इंसानों को अपनी नाराज़गी से डराया है कि मुझको नाराज़ करोगे तो उसका नतीजा तुमको भुगतना पड़ेगा अल्लाह पाक सारे पढ़ने वालों को ग़ज़ब और ग़ुस्सा से बचाए। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

बाब 1 : आयत 'व मिन दूनिहिमा जन्नतान' की तफ़्सीर या'नी,

١ - باب قَوْلِهِ ﴿وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ﴾

और उन बाग़ों से कम दर्जा में दो और बाग़ भी हैं।

4878. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल् अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुस्समद अल्अम्मी ने बयान किया, कहा हमसे अबू इमरान अल जोफ़ी ने बयान किया, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ने और उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अबू मूसा अशअ़री रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (जन्नत में) दो बाग़ होंगे जिनके बर्तन और तमाम दूसरी चीज़ें चाँदी की होंगी और दो दूसरे बाग़ होंगे जिनके बर्तन और तमाम दूसरी चीज़ें सोने के होंगी और जन्नते अ़दन से जन्नतियों के अपने रब के दीदार में कोई चीज़ सिवाए किब्रियाई की चादर के जो उसके चेहरे पर होगी, हाइल न होगी। (दीगर मक़ाम : 4770, 7444)

٤٨٧٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ الْعَمِّيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ : ((جَنَّتَانِ مِنْ فِضَّةٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَجَنَّتَانِ مِنْ ذَهَبٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَمَا بَيْنَ الْقَوْمِ وَبَيْنَ أَنْ يَنْظُرُوا إِلَى رَبِّهِمْ إِلاَّ رِدَاءُ الْكِبْرِ عَلَى وَجْهِهِ فِي جَنَّةِ عَدْنٍ)).

[طرفاه في : ٤٨٨٠، ٧٤٤٤].

या अल्लाह! क़यामत के दिन हम सबको अपने दीदार पुर अनवार से मुशर्रफ़ फ़र्माइयो आमीन।

बाब 2 : 'हूरूम्मक़्सूरातुन फ़िल्ख़ियाम' की तफ़्सीर

٢ - باب

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा हूर के मा'नी काली आँखों वाली और मुजाहिद ने कहा मक़्सूरात के मा'नी उनकी निगाह और जान अपने शौहरों पर रुकी हुई होगी (वो अपने शौहरों के सिवा और किसी पर आँख नहीं डालेंगी) क़ासिरात के मा'नी अपने शौहर के सिवा और किसी की ख़्वाहिशमंद न होंगी। फ़िल् ख़ियाम के मा'नी ख़ैमों में महफ़ूज़ होंगी।

﴿حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: حُورٌ سُودُ الْحَدَقِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مَقْصُورَاتٌ﴾ مَحْبُوسَاتٌ قُصِرَ طَرْفُهُنَّ وَأَنْفُسُهُنَّ عَلَى أَزْوَاجِهِنَّ قَاصِرَاتٌ لاَ يَبْغِينَ غَيْرَ أَزْوَاجِهِنَّ.

4879. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुस् समद ने बयान किया, कहा हमसे अबू इमरान जोफी ने बयान किया, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ने और उनसे उनके वालिद ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत में खोखले मोती का ख़ैमा होगा, उसकी चौड़ाई साठ मील होगी और उसके हर किनारे पर मुसलमान की एक बीवी होगी एक किनारे वाली दूसरे किनारे वाली को न देख सकेगी।

٤٨٧٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ أَبِيهِ : أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ خَيْمَةً مِنْ لُؤْلُؤَةٍ مُجَوَّفَةٍ، عَرْضُهَا سِتُّونَ مِيلاً، فِي كُلِّ

زَاوِيَةٍ مِنْهَا أَهْلٌ مَا يَرَوْنَ الآخَرِينَ، يَطُوفُ عَلَيْهِمُ الْمُؤْمِنُونَ. [راجع: ٣٢٤٣]

٤٨٨٠- وَجَنَّتَانِ مِنْ فِضَّةٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَجَنَّتَانِ مِنْ كَذَا آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا، وَمَا بَيْنَ الْقَوْمِ وَبَيْنَ أَنْ يَنْظُرُوا إِلَى رَبِّهِمْ إِلاَّ رِدَاءُ الْكِبْرِ عَلَى وَجْهِهِ فِي جَنَّةِ عَدْنٍ)). [راجع: ٤٨٧٨]

4880. और मोमिन उनके पास बारी बारी जाएँगे और दो बाग़ होंगे जिनके बर्तन और तमाम दूसरी चीज़ें चाँदी की होंगी और ऐसे भी दो बाग़ होंगे जिनके बर्तन और दूसरी चीज़ें सोने की होंगी। जन्नते अदन वालों को अल्लाह के दीदार में सिर्फ़ एक जलाल की चादर हाइल होगी जो उसके (मुबारक) चेहरे पर पड़ी होगी।

[٥٦] سورة ﴿الْوَاقِعَةُ﴾

सूरह वाक़िया की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस सूरह में 96 आयात और तीन रुकूअ हैं और ये मक्का में नाज़िल हुई ये अजीबुल अष़र सूरत है जो कोई उसको हर रोज़ एक बार पढ़ता है वो कभी मुहताज न होगा दौलत और तवंगरी चाहने वालो! इधर आओ सूरह वाक़िया को अपना विर्द कर लो अमीन बन जाओगे और क़ब्र के अ़ज़ाब से बचने के लिये सूरह मुल्क या'नी तबारकल्लज़ी हर रात को पढ़ लिया करो। दीन और दुनिया दोनों की भलाई इन दो सूरतों से हासिल करो। (वहीदी)

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿رُجَّتْ﴾ زُلْزِلَتْ. ﴿بُسَّتْ﴾ فُتَّتْ لُتَّتْ كَمَا يُلَتُّ السَّوِيقُ ﴿الْمَخْضُودُ﴾ الْمُوقَرُ حَمْلاً وَيُقَالُ أَيْضًا لاَ شَوْكَ لَهُ. ﴿مَنْضُودٍ﴾ الْمَوْزُ. ﴿وَالْعُرُبُ﴾ الْمُحَبَّبَاتُ إِلَى أَزْوَاجِهِنَّ. ﴿ثُلَّةٌ﴾ أُمَّةٌ. ﴿يَحْمُومٍ﴾ دُخَانٌ أَسْوَدُ. ﴿يُصِرُّونَ﴾ يُدِيمُونَ. ﴿الْهِيمُ﴾ الإِبِلُ الظِّمَاءُ. ﴿لَمُغْرَمُونَ﴾ لَمُلْزَمُونَ. ﴿رَوْحٌ﴾ جَنَّةٌ وَرَخَاءٌ. ﴿وَرَيْحَانٌ﴾ الرِّزْقُ ﴿وَنُنْشِئَكُمْ﴾ فِي أَيِّ خَلْقٍ نَشَاءُ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿تَفَكَّهُونَ﴾ تَعْجَبُونَ. ﴿عُرُبًا﴾ مُثَقَّلَةً وَاحِدُهَا عَرُوبٌ مِثْلُ صَبُورٍ وَصُبُرٍ، يُسَمِّيهَا أَهْلُ مَكَّةَ الْعَرِبَةَ، وَأَهْلُ الْمَدِينَةِ الْغَنِجَةَ، وَأَهْلُ الْعِرَاقِ الشَّكِلَةَ، وَقَالَ فِي ﴿خَافِضَةٌ﴾ لِقَوْمٍ إِلَى

मुजाहिद ने कहा रुज्जत का मा'नी हिलाई जाए। बुस्सत चूर चूर किये जाएँगे और सत्तू की तरह लथपथ कर दिये जाएँगे। अल मख़्ज़ूद बोझ लदे हुए या जिनमें काँटा न हो। मन्ज़ूद मोज़ (केला) उरूब अपने शौहर की प्यारी बीवी। षुल्लत उम्मत गिरोह। यहमूम काला धुआँ। युसिर्रून हटधर्मी करते हमेशा करते थे। अल्हीम प्यासे ऊँट। लमुग़रमून टोटे में आ गये डंड हुआ। रौह बहिश्त आराम राहत। रैहान रिज़्क़ रोज़ी व नुन्शिउकुम फ़ीमा ला तअलमून या'नी जिस सूरत में हम चाहें तुमको पैदा करें। हज़रत मुजाहिद के सिवा औरों ने कहा, तफ़्कहून का मा'नी तअजबून तअज्जुब करते जाएँ। उरूब मुष़क़्क़लत (या'नी ज़म्मा के साथ) उरूब की जमा जैसे सबूर की जमा सब्र आती है (उरूब ख़ूबसूरत प्यारी औरत) मक्का वाले ऐसी औरत को अरिबा कहते हैं और मदीना वाले ग़निजा और इराक़ वाले शकिला कहते हैं। ख़ाफ़िज़त एक क़ौम को नीचा दिखाने वाली या'नी दोज़ख़ में ले जाने वाली। राफ़िआ एक क़ौम को बुलंद करने वाली या'नी बहिश्त में ले जाने वाली। मवज़ूनति सोने से बने हुए उसी से निकला है व ज़ीनुन्नाक़ह या'नी ऊँटनी का ज़ेर बन्द (तंग) कुब आबख़ोरा जिसमें टूँटी और कुँड न हो (अक्वाब जमा है) इब्रीक़ वो कूज़ा जिसमें टूँटी कुँडा हो। अबारीक़ इसकी जमा है। मस्कूब बहता

हुआ (जारी) व फ़ुरूशिम्मर्फ़ूआ ऊँचे ऊँचे बिछौने या'नी एक के ऊपर एक तले ऊपर बिछाए गये। मुतरफ़ीन का मा'नी आसूदा आराम परवरदा थे। मातम्नून नुत़्फ़ा जो औरतों के रह्मों में डालते हो। मत़ाअल् लिल् मुक़्वीन मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिये ये क़िय से निकला है क़िय कहते हैं बेआब व ग्याह मैदान को। बिमवाक़ेइन् नुजूम से क़ुर्आन की मुह़कम आयतें मुराद हैं कुछ ने कहा तारे डूबने के मक़ामात, मवाक़ेअ जमा है, उसका वाह़िद मौक़ा दोनों का (जब मुज़ाफ़ हों) एक ही मा'नी है। मुदहिनून झुठलाने वाले जैसे इस आयत में है वद्दू लौ तुदहिनू फ़युदहिनून फ़सलामुल् का मिन अस्ह़ाबिल यमीन का ये मा'नी है मुसल्लमा लका इन्नका मिन अस्ह़ाबिल यमीन या'नी ये बात मान ली गई है चाहे कि तू दाहिने हाथ वालों में से है तो उनका लफ़्ज़ गिरा दिया गया मगर उसका मा'नी क़ायम रखा गया उसकी मिषाल ये है कि मष़लन कोई कहे मैं अब थोड़ी देर में सफ़र करने वाला हूँ और तू उससे कहे अन्ता मुस़द्दक़ मुसाफ़िर अन क़लील यहाँ भी इन्ना मह़ज़ूफ़ है या'नी अन्ता मुस़द्दक़ इन्नका मुसाफ़िर अन क़लील कभी सलाम का लफ़्ज़ बत़ौरे दुआ के इस्ते'माल होता है अगर मर्फ़ूअ हो जैसे फ़सक़िय्या नस़ब के साथ दुआ के मा'नों में आता है या'नी अल्लाह तुझको सैराब करे। तूरून सुलगाते हो आग निकालते हो औरयतु से या'नी मैंने सुलगाया। लग़्व, बात़िल, झूठ। ताष़ीमा झूठ ग़लत़।

النَّارِ، ﴿وَرَافِعَةٌ﴾ إِلَى الْجَنَّةِ. ﴿مَوْضُونَةٍ﴾ مَنْسُوجَةٍ وَمِنْهُ وَضِينُ النَّاقَةِ. وَالْكُوبُ لاَ آذَانَ لَهُ وَلاَ عُرْوَةَ، وَالأَبَارِيقُ ذَوَاتُ الآذَانِ وَالْعُرَى ﴿مَسْكُوبٍ﴾ جَارٍ: ﴿وَفُرُشٍ مَرْفُوعَةٍ﴾ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ﴿مُتْرَفِينَ﴾ مُتَمَتِّعِينَ. ﴿مَا تُمْنُونَ﴾ هِيَ النُّطْفَةُ فِي أَرْحَامِ النِّسَاءِ، ﴿لِلْمُقْوِينَ﴾ لِلْمُسَافِرِينَ، وَالْقِيُّ الْقَفْرُ. ﴿بِمَوَاقِعِ النُّجُومِ﴾ بِمُحْكَمِ الْقُرْآنِ، وَيُقَالُ بِمَسْقَطِ النُّجُومِ إِذَا سَقَطْنَ وَمَوَاقِعُ وَمَوْقِعٌ وَاحِدٌ. ﴿مُدْهِنُونَ﴾ مُكَذِّبُونَ مِثْلُ ﴿لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ﴾ ﴿فَسَلاَمٌ لَكَ﴾ أَيْ مُسَلَّمٌ لَكَ ﴿إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ﴾ وَأُلْغِيَتْ ((إِنَّ)) وَهُوَ مَعْنَاهَا كَمَا تَقُولُ: أَنْتَ مُصَدَّقٌ، مُسَافِرٌ عَنْ قَلِيلٍ إِذَا كَانَ قَدْ قَالَ إِنِّي مُسَافِرٌ عَنْ قَلِيلٍ وَقَدْ يَكُونُ كَالدُّعَاءِ لَهُ، كَقَوْلِكَ فَسَقْيًا مِنَ الرِّجَالِ إِنْ رَفَعْتَ السَّلاَمَ فَهُوَ مِنَ الدُّعَاءِ، ﴿تُورُونَ﴾ تَسْتَخْرِجُونَ، أَوْرَيْتُ أَوْقَدْتُ. ﴿لَغْوًا﴾ بَاطِلاً ﴿تَأْثِيمًا﴾ كَذِبًا.

बाब 1 : 'व ज़िल्लिम्ममदूद' की तफ़्सीर या'नी,

और जन्नत के पेड़ों का बहुत ही लम्बा साया होगा

١- باب قَوْلِهِ ﴿وَظِلٍّ مَمْدُودٍ﴾

4881. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, वो कहते थे कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत में एक पेड़ त़वील होगा (इतना

٤٨٨١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ شَجَرَةً يَسِيرُ

الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا، مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا وَاقْرَؤُوا إِنْ شِئْتُمْ ﴿وَظِلٍّ مَمْدُودٍ﴾.
[راجع: ٣٢٥٢]

बड़ा कि) सवार उसके साये में सौ साल तक चलेगा और फिर भी उसका साया ख़त्म न होगा अगर तुम्हारा जी चाहे तो आयत वज़िल्लम्मम्दूदा की क़िरअत कर लो।

ये साया सूरज का न होगा बल्कि अल्लाह के नूर का साया होगा कुछ ने कहा अल्लाह के अ़र्श का साया होगा क्योंकि जन्नत में सूरज न होगा।

[٥٧] سورة ﴿الْحَدِيدُ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

सूरह ह़दीद की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूरह ह़दीद मदनी है इसमें 29 आयात और चार रुकूअ़ हैं। अल्लाह पाक ने इसमें लोहे की अफ़ादियत को बयान फ़र्माया है, इसीलिये ये सूरत ह़दीद बमा'नी लोहा से मौसूम हुई।

قَالَ مُجَاهِدٌ ﴿جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ﴾ مُعَمَّرِينَ فِيهِ. ﴿مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ﴾ مِنَ الضَّلاَلَةِ إِلَى الْهُدَى. ﴿وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ﴾ جُنَّةٌ وَسِلاَحٌ. ﴿مَوْلاَكُمْ﴾ أَوْلَى بِكُمْ. ﴿لِئَلاَّ يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ﴾ لِيَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ. يُقَالُ الظَّاهِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا. وَالْبَاطِنُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا. أَنْظِرُونَا : انْتَظِرُونَا.

मुजाहिद ने कहा जअ़लकुम मुस्तख़लफ़ीना फ़ीही या'नी जिसने ज़मीन में तुमको बसाया (जानशीन किया, आबाद किया) मिनज़्ज़ुलुमाति इलन् नूर (या'नी गुमराही से हिदायत की त़रफ़ व मनाफ़ेअ लिन्नास या'नी तुम लोहे से ढाल और हथियार वग़ैरह बनाते हो। मौलाकुम या'नी आग तुम्हारे लिये ज़्यादा सज़ावार है। लिअल्ला यअ़लमु ताकि अहले किताब जान लें (अल्ला ज़ाइद है) अज़्ज़ाहिरु इल्म की रू से। अल बात़िन इल्म की रू से उंज़ुरूना (बफ़तह हम्ज़ा व कसरा ज़ाअ एक क़िरात है) या'नी हमारा इंतिज़ार करो।

[٥٨] سورة ﴿الْمُجَادِلَةُ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

सूरह मुजादिला की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿يُحَادُّونَ﴾ يُشَاقُّونَ اللهَ. ﴿كُبِتُوا﴾ أُخْزُوا مِنَ الْخِزْيِ. ﴿اسْتَحْوَذَ﴾ غَلَبَ.

मुजाहिद ने कहा युह़ादुनल्लाह का मा'नी अल्लाह की मुख़ालफ़त करते हैं। कुबितू ज़लील किये गये। इस्तह़वज़ ग़ालिब हो गया।

सूरह मुजादिला मदनी है, उसमे 22 आयात और तीन रुकूअ़ हैं। इस सूरत में एक ऐसी औरत का ज़िक्र है जिसने अपने शौहर के बारे मे रसूलुल्लाह (ﷺ) से झगड़ा किया था उस औरत का नाम ख़ौला बिन्ते ष़अ़्लबा था। अल्लाह ने उस औरत के बारे में उसी सूरह की इब्तिदाई आयात का नुज़ूल फ़र्माया उसके शौहर ने उससे ज़िहार किया था अल्लाह ने ज़िहार का कफ़्फ़ारा बयान किया जो आगे आयात में मज़्कूर है। एक दफ़ा ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में सवारी पर जा रहे थे ह़ज़रत ख़ौला (रज़ि.) ने उनकी सवारी रोक ली लोगों ने कहा आप एक बुढ़िया के लिये रुक गये। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम क्या जानो ये बुढ़िया कौन है? ये ख़ौला बिन्ते ष़अ़्लबा (रज़ि.) हैं जिसकी फ़रियाद अल्लाह तआ़ला ने सात आसमानों पर से सुनी, भला उ़मर (रज़ि.) की क्या मजाल है कि इसकी बात न सुने।

सूरह हश्र की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

[٥٩] سورة ﴿الْحَشْرِ﴾

ये सूरत मदनी है इसमे 24 आयात और तीन रुकूअ हैं यहूदियों ने मुसलमानों के साथ सुलह की थी जिसे उन्होंने बाद में तोड़ दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी मदीना से जलावतनी का हुक्म सादिर फ़र्माया इस जलावतनी को मिजाज़न लफ़्ज़े हश्र से ता'बीर किया गया है फ़िल् वाक़ेअ उनकी जलावतनी के दिन हश्र का नज़ारा इसलिये था कि बड़ी ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना करना पड़ा।

बाब 1 : लफ़्ज़ अल्जलाउ इख़राज के मा'नी एक ज़मीन से दूसरी ज़मीन की तरफ़ निकाल देना जिसे जलावतनी कहते हैं।

١- باب : اَلْجَلاَءُ الإِخْرَاجُ مِنْ أَرْضٍ إِلَى أَرْضٍ.

4882. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर् रहीम ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको अबू बिश्र जा'फ़र ने ख़बर दी, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से सुरह तौबा के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा ये सूरह तौबा की है या फ़ज़ीहत करने वाली है इस सूरत में बराबर यही उतरता रहा कुछ लोग ऐसे हैं और कुछ लोग ऐसे हैं यहाँ तक कि लोगों को गुमान हुआ ये सूरत किसी का कुछ भी नहीं छोड़ेगी बल्कि सबके भेद खोल देगी। बयान किया कि मैंने सूरह अल् अनफ़ाल के बारे में पूछा तो फ़र्माया कि ये जंगे बद्र के बारे में नाज़िल हुई थी। बयान किया कि मैंने सूरह हश्र के बारे में पूछा तो फ़र्माया कि क़बीला बनू नज़ीर के यहूद के बारे में नाज़िल हुई थी।

٤٨٨٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ سُورَةُ التَّوْبَةِ؟ قَالَ التَّوْبَةُ هِيَ الْفَاضِحَةُ، مَا زَالَتْ تَنْزِلُ : وَمِنْهُمْ، وَمِنْهُمْ، حَتَّى ظَنُّوا أَنَّهَا لَمْ تُبْقِ أَحَدًا مِنْهُمْ إِلاَّ ذُكِرَ فِيهَا. قَالَ : قُلْتُ سُورَةُ الأَنْفَالِ؟ قَالَ نَزَلَتْ فِي بَدْرٍ قَالَ: قُلْتُ سُورَةُ الْحَشْرِ؟ قَالَ : نَزَلَتْ فِي بَنِي النَّضِيرِ. [راجع: ٤٠٢٩]

4883. हमसे हसन बिन मुदरक ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अबू अवाना ने ख़बर दी, उन्हें हज़रत अबू बिश्र (जा'फ़र बिन अबी) ने और उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सूरह अल् हश्र के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा बल्कि उसे सूरह नज़ीर कहो।

٤٨٨٣- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُدْرِكٍ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدٍ قَالَ قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سُورَةُ الْحَشْرِ قَالَ قُلْ سُورَةُ النَّضِيرِ. [راجع: ٤٠٢٩]

बाब 2 : 'मा कतअतुम मिल्लीनतिन ......' की तफ़्सीर

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ﴾ نَخْلَةٍ مَا لَمْ تَكُنْ عَجْوَةً أَوْ بَرْنِيَّةً

या'नी, जो खजूरों के पेड़ तुमने काटे, आयत में लीनति ब-मा'नी नख़्ला है जिसका मा'नी खजूर है जबकि वो अज्वह या

बरनी न हो या'नी खजूर मुराद हैं।

٤٨٨٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ حَرَّقَ نَخْلَ بَنِي النَّضِيرِ وَقَطَعَ، وَهِيَ الْبُوَيْرَةُ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللهِ، وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ﴾. [راجع: ٢٣٢٦]

4884. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनू नज़ीर के खजूरों के पेड़ जला दिये थे और उन्हें काट डाला था। ये पेड़ मुक़ामे बुवेरा में थे फिर उसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल की कि, जो खजूरों के दरख़्त तुमने काटे या उन्हें उनकी जड़ों पर क़ायम रहने दिया सो ये दोनों अल्लाह ही के हुक्म के मुवाफ़िक़ हैं और ताकि नाफ़र्मानों को ज़लील करे। (राजेअ़ : 2326)

तश्रीह : मदीना के यहूदियों की ह़द से ज़्यादा शरारतों और ग़द्दारियों की बिना पर उनके ख़िलाफ़ ऐसा सख़्त क़दम उठाया गया वरना आ़म तौर पर मवाक़ेअ़े जंग में ऐसा करना मुनासिब नहीं है हाँ अगर इमाम ऐसी ज़रूरत महसूस करे तो इस्लाम मे उसकी भी इजाज़त है।

٣- باب قوله ﴿مَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ﴾

बाब 3 : 'मा आफ़ाअल्लाहु अला रसूलिही .... अल्आयः' की तफ़्सीर या'नी

और जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल को उनसे बतौर फ़ै दिलवाया

٤٨٨٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ غَيْرَ مَرَّةٍ عَنْ عَمْرٍو وَعَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَوْسِ بْنِ الْحَدَثَانِ، عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النَّضِيرِ مِمَّا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ مِمَّا لَمْ يُوجِفِ الْمُسْلِمُونَ عَلَيْهِ بِخَيْلٍ وَلاَ رِكَابٍ، فَكَانَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ خَاصَّةً، يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ مِنْهَا نَفَقَةَ سَنَتِهِ، ثُمَّ يَجْعَلُ مَا بَقِيَ فِي السِّلاَحِ وَالْكُرَاعِ عُدَّةً فِي سَبِيلِ اللهِ. [راجع: ٢٩٠٤]

4885. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने कई मर्तबा अ़म्र बिन दीनार से बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे मालिक बिन औस बिन ह़दष़ान ने और उनसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी नज़ीर के अम्वाल को अल्लाह तआ़ला ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को बग़ैर लड़ाई के दिया था। मुसलमानों ने इसके लिये घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए। उन अम्वाल का ख़र्च करना ख़ास़ तौर से रसूलुल्लाह (ﷺ) के हाथ में था। चुनाँचे आप इसमें से अज़्वाजे मुतह्हरात का सालाना ख़र्च देते थे और जो बाक़ी बचता था इससे सामाने जंग और घोड़ों के लिये ख़र्च करते थे ताकि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के रास्ता में जिहाद के मौक़े पर काम आएं।

तश्रीह : इस्लाम की इस्तिलाह़ में फ़ै वो माल है जो दारुल ह़रब से बिला जंग ह़ासिल हो जाए।

٤- باب قوله ﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ﴾

बाब 'व मा आताकुमुर्रसूलु फखुज़ूहू' की तफ़्सीर

या'नी, ऐ मुसलमानों! और रसूल तुम्हें जो कुछ दे उसे ले लिया करो और जिससे आप (ﷺ) रोकें उससे रुक जाया करो।

4886. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन ड़ययना ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअतमिर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला ने गुदवाने वालियों और गोदने वालियों पर ला'नत भेजी है चेहरे के बाल उखाड़ने वालियों और हुस्न के लिए आगे के दांतों में कुशादगी करने वालियों पर ला'नत भेजी है कि ये अल्लाह की पैदा की हुई सूरत में तब्दीली करती हैं। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का ये कलाम क़बीला बनी असद की एक औरत को मा'लूम हुआ जो उम्मे यअक़ूब के नाम से मअरूफ़ थी वो आई और कहा कि मुझे मा'लूम हुआ है कि आपने इस तरह की औरतों पर ला'नत भेजी है? अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा आख़िर क्यूँ न मैं उन्हें ला'नत करूँ जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ला'नत की है और जो किताबुल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ मल्ऊन है। उस औरत ने कहा कि क़ुर्आन मजीद तो मैंने भी पढ़ा है लेकिन आप जो कुछ कहते हैं मैंने तो उसमे कहीं ये बात नहीं देखी। उन्होंने कहा कि अगर तुमने ग़ौर से पढ़ा होता तो तुम्हें ज़रूर मिल जाता क्या तुमने ये आयत नहीं पढ़ी कि, रसूल (ﷺ) तुम्हें जो कुछ दे, ले लिया करो और जिससे तुम्हें रोक दे, रुक जाया करो। उसने कहा कि पढ़ी है अब्दुल्लाह बिन मसऊद(रज़ि.) ने कहा कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उन चीज़ों से रोका है। इस पर उस औरत ने कहा कि मेरा ख़याल है कि आपकी बीवी भी ऐसा करती हैं। उन्होंने कहा कि अच्छा जाओ और देख लो। वो औरत गई और उसने देखा लेकिन इस तरह की उनके यहाँ कोई मअयूब चीज़ उसे नहीं मिली। फिर अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि अगर मेरी बीवी उसी तरह करती तो भला वो मेरे साथ रह सकती थी? हर्गिज़ नहीं। (दीगर मक़ाम : 4887, 5931, 5939, 5943, 5948)

٤٨٨٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : لَعَنَ اللهُ الْوَاشِمَاتِ وَالْمُوتَشِمَاتِ وَالْمُتَنَمِّصَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ، الْمُغَيِّرَاتِ خَلْقَ اللهِ. فَبَلَغَ ذَلِكَ امْرَأَةً مِنْ بَنِي أَسَدٍ يُقَالُ لَهَا أُمُّ يَعْقُوبَ فَجَاءَتْ فَقَالَتْ : إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّكَ لَعَنْتَ كَيْتَ وَكَيْتَ، فَقَالَ : وَمَا لِي لاَ أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَنْ هُوَ فِي كِتَابِ اللهِ، فَقَالَتْ: لَقَدْ قَرَأْتُ مَا بَيْنَ اللَّوْحَيْنِ، فَمَا وَجَدْتُ فِيهِ مَا تَقُولُ: فَقَالَ لَئِنْ كُنْتِ قَرَأْتِيهِ لَقَدْ وَجَدْتِيهِ: أَمَا قَرَأْتِ ﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا﴾ قَالَتْ : بَلَى. قَالَ : فَإِنَّهُ قَدْ نَهَى عَنْهُ. قَالَتْ: فَإِنِّي أَرَى أَهْلَكَ يَفْعَلُونَهُ، قَالَ : فَاذْهَبِي فَانْظُرِي، فَذَهَبَتْ فَنَظَرَتْ فَلَمْ تَرَ مِنْ حَاجَتِهَا شَيْئًا. فَقَالَ: لَوْ كَانَتْ كَذَلِكَ مَا جَامَعْتُهَا.

[أطرافه في: ٤٨٨٧، ٥٩٣١، ٥٩٣٩، ٥٩٤٣، ٥٩٤٨].

तश्रीह : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के इस क़ौल से उन लोगों का रद्द हुआ जो सिर्फ़ क़ुर्आन को वाजिबुल अमल जानते हैं और हदीष शरीफ़ को वाजिबुल अमल नहीं जानते ऐसे लोग दायर-ए-इस्लाम से ख़ारिज और **व युरीदूना अंय्युफ़रिंक़ू बयनल्लाहि व रुसूलिही** (अन् निसा : 150) में दाख़िल हैं। हदीष शरीफ़ क़ुर्आन मजीद से जुदा नहीं है क़ुर्आन शरीफ़ में ख़ुद हदीष शरीफ़ की पैरवी का हुक्म है इसलिये हदीष के मुंकिर ख़ुद क़ुर्आन के भी इंकारी हैं।

4887. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कि मैंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस से मंसूर बिन मुअ़तमिर की ह़दीष़ का ज़िक्र किया जो वो इब्राहीम से बयान करते थे कि उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सर के क़ुदरती बालों के साथ मस्नूई बाल लगाने वालियों पर ला'नत भेजी थी, अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस ने कहा कि मैंने भी उम्मे यअ़क़ूब नामी एक औ़रत से सुना था वो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से मंसूर की ह़दीष़ के मिष़्ल बयान करती थी। (राजेअ़ : 4886)

٤٨٨٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ سُفْيَانَ، قَالَ: ذَكَرْتُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ حَدِيثَ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْوَاصِلَةَ، فَقَالَ: سَمِعْتُهُ مِنْ امْرَأَةٍ، يُقَالُ لَهَا أُمُّ يَعْقُوبَ عَنْ عَبْدِ اللهِ مِثْلَ حَدِيثِ مَنْصُورٍ.

[راجع: ٤٨٨٦]

क़ुदरती बालों में मस्नूई (नक़ली) बाल लगाकर ख़ूबसूरती पैदा करने का रुज्हान आजकल बहुत बढ़ रहा है अल्लाह मुसलमान औ़रतों को हिदायत बख़्शे आमीन।

बाब 5 : 'वल्लज़ीन तबव्वउद्दार वल्ईमान .... (अल्आयः)' की तफ़्सीर

٥- باب قوله ﴿وَالَّذِينَ تَبَوَّأُوا الدَّارَ وَالإِيمَانَ﴾

और उन लोगों का (भी ह़क़ है) जो दारुस्‌ सलाम और ईमान में उनसे पहले ही ठिकाना पकड़े हुए हैं। आयत में अंस़ार मुराद हैं।

4888. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र ने बयान किया, उनसे ह़ुसैन ने, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने (ज़ख़्मी होने के बाद इंतिक़ाल से पहले) फ़र्माया था मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को मुहाजिरीने अव्वलीन के बारे में वस़िय्यत करता हूँ कि वो उनका ह़क़ पहचाने और मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को अंस़ार के बारे में वस़िय्यत करता हूँ जो दारुस्सलाम और ईमान में नबी करीम (ﷺ) की हिजरत से पहले ही से क़रार पकड़े हुए हैं ये कि उनमें जो नेकोकार हैं उनकी इ़ज़्ज़त करे और उनके ग़लतकारों से दरगुज़र करे। (राजेअ़ : 1392)

٤٨٨٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ قَالَ: قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أُوصِي الْخَلِيفَةَ بِالْمُهَاجِرِينَ الأَوَّلِينَ، أَنْ يَعْرِفَ لَهُمْ حَقَّهُمْ. وَأُوصِي الْخَلِيفَةَ بِالأَنْصَارِ الَّذِينَ تَبَوَّأُوا الدَّارَ وَالإِيمَانَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُهَاجِرَ النَّبِيُّ ﷺ، أَنْ يَقْبَلَ مِنْ مُحْسِنِهِمْ وَيَعْفُوَا عَنْ مُسِيئِهِمْ.

[راجع: ١٣٩٢]

बाब 6 : 'व यूषि़रून अ़ला अन्फ़ुसिहिम .... अल्आयः' की तफ़्सीर या'नी,

٦- باب قَوْلِهِ : ﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ﴾ الآيَةَ الْخَصَاصَةُ: الْفَاقَةُ. الْمُفْلِحُونَ : الْفَائِزُونَ بِالْخُلُودِ الْفَلاَحُ الْبَقَاءُ حَيَّ عَلَى الْفَلاَحِ عَجِّلْ. وَقَالَ

और अपने से मुक़द्दम रखते हैं, आख़िर आयत तक। अल् ख़स़ास़ह के मअ़नी फ़ाक़ा के हैं। अल मुफ़्लिहून हमेशा कामयाब रहने वाले। अल फ़लाह बाक़ी रहना। ह़य्या अ़लल

الْحَسَنُ : حَاجَةً حَسَدًا.

फ़लाह बक़ा की तरफ़ जल्द आओ या'नी उस काम की तरफ़ जिससे हयाते अबदी हासिल हो और इमाम हसन बसरी ने कहा ला यजिदून फ़ी सुदूरिहिम हाजतन में हाजत से हसद मुराद है।

٤٨٨٩- حدثني يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ غَزْوَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ الأَشْجَعِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَتَى رَجُلٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَصَابَنِي الْجَهْدُ. فَأَرْسَلَ إِلَى نِسَائِهِ فَلَمْ يَجِدْ عِنْدَهُنَّ شَيْئًا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : ((أَلاَ رَجُلٌ يُضَيِّفُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ يَرْحَمُهُ اللهُ))؟ فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ : أَنَا يَا رَسُولَ اللهِ. فَذَهَبَ إِلَى أَهْلِهِ فَقَالَ لاِمْرَأَتِهِ ضَيْفُ رَسُولِ اللهِ ﷺ: لاَ تَدَّخِرِيهِ شَيْئًا، قَالَتْ: وَاللهِ مَا عِنْدِي إِلاَّ قُوتُ الصِّبْيَةِ. قَالَ : فَإِذَا أَرَادَ الصِّبْيَةُ الْعَشَاءَ فَنَوِّمِيهِمْ، وَتَعَالَى فَأَطْفِئِي السِّرَاجَ وَنَطْوِي بُطُونَنَا اللَّيْلَةَ. فَفَعَلَتْ. ثُمَّ غَدَا الرَّجُلُ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((لَقَدْ عَجِبَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ أَوْ ضَحِكَ مِنْ فُلاَنٍ وَفُلاَنَةٍ)). فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ﴾.

[راجع: ٣٧٩٨]

4889. मुझसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा कि हमसे उसामा ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ेल बिन ग़ज़्वान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम अश्जई ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में एक साहब ख़ुद (हज़रत अबू हुरैरह रज़ि.) हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं फ़ाक़ा से हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें अज़्वाजे मुतह्हरात के पास भेजा (कि वो आपकी दा'वत करें) लेकिन उनके पास कोई चीज़ खाने की नहीं थी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या कोई शख़्स ऐसा नहीं जो आज रात इस मेहमान की मेज़बानी करे? अल्लाह उस पर रहम करेगा। इस पर एक अंसारी सहाबी (अबू तलहा) खड़े हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये आज मेरे मेहमान हैं फिर वो उन्हें अपने साथ घर ले गये और अपनी बीवी से कहा कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) के मेहमान हैं, कोई चीज़ उनसे बचा के न रखना। बीवी ने कहा अल्लाह की क़सम! मेरे पास इस वक़्त बच्चों के खाने के सिवा और कोई चीज़ नहीं है। अंसारी सहाबी ने कहा अगर बच्चे खाना मांगें तो उन्हें सुला दो और आओ ये चिराग़ भी बुझा दो, आज रात हम भूखे ही रह लेंगे। बीवी ने ऐसा ही किया। फिर वो अंसारी सहाबी सुबह के वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने फ़लाँ (अंसारी सहाबी) और उनकी बीवी (के अ़मल) को पसंद फ़र्माया। या (आपने ये फ़र्माया कि) अल्लाह तआ़ला मुस्कुराया फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की व यूष़िरून अ़ला अंफ़ुसिहिम वलौ काना बिहिम ख़सासह या'नी और अपने से मुक़द्दम रखते हैं अगरचे ख़ुद फ़ाक़ा में ही हों। (राजेअ़ : 3798)

तश्रीह : इस हदीष़ में तअ़ज्जुब और ज़हक दो सिफ़तों का अल्लाह के लिये ज़िक्र है जो बरहक़ है उनकी कैफ़ियत में बह्ष़ करना बिदअ़त है और ज़ाहिर पर ईमान लाना वाजिब है। सिफ़ात उलूहिया को बग़ैर तावील के तस्लीम करना ज़रूरी है सलफ़े सालिहीन का यही तरीक़ा है। ईमान की सलामती इसी में है कि सिर्फ़ मसलक सलफ़ को इत्तिबाअ़ की जाए और बस।

[٦٠] سورة ﴿الْمُمْتَحِنَةِ﴾

सूरह मुम्तहिना की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मदीना में उतरी इसमें तेरह आयात और दो रुकूअ हैं आयत, **इज़ा जाअकल मुअमिनात** में ह़ज़रत उम्मे कुल्षुम (रज़ि.) का ज़िक्र है जो उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ की बेटी और ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) की बीवी थी इस सूरत में मुहाजिर औ़रतों के ईमानी इम्तिह़ान का ज़िक्र है इसलिये उसे लफ़्ज़े मुम्तहिना से ता'बीर किया गया।

मुजाहिद ने कहा ला तज्अल्ना फ़ित्नतन लिल्लज़ीन कफ़रू का मा'नी ये है कि काफ़िरों के हाथों से हमको तकलीफ़ न पहुँचा, वो यूँ कहने लगीं अगर उन मुसलमानों का दीन सच्चा होता तो ये हमारे हाथ से मग़लूब क्यूँ होते ऐसी तकलीफ़ें क्यूँ उठाते। बिइसमिल कवाफ़िर से ये मुराद है कि आँह़ज़रत (ﷺ) के अस्ह़ाब को ये हुक्म हुआ कि उन काफ़िर औ़रतों को छोड़ दें जो मक्का में बह़ालते कुफ़्र रह गईं हैं।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿لاَ تَجْعَلْنَا فِتْنَةً﴾. لاَ تُعَذِّبْنَا بِأَيْدِيهِمْ : فَيَقُولُونَ : لَوْ كَانَ هَؤُلاَءِ عَلَى الْحَقِّ مَا أَصَابَهُمْ هَذَا. ﴿بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ﴾ أُمِرَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ بِفِرَاقِ نِسَائِهِمْ. كُنَّ كَوَافِرَ بِمَكَّةَ.

तश्रीह : क्योंकि वो मुश्रिका थीं और मुसलमान का मुश्रिक औ़रतों से निकाह़ नहीं हो सकता। या अल्लाह! या मालिकल मुल्क! बिदअ़तियों के हाथ से अहले ह़दीष़ को भी फ़ित्ना से मह़फ़ूज़ फ़र्मा। बिदअ़तियों को इन पर ग़ालिब मत कर। अहले ह़दीष़ पर अपना रह़म व करम कर, मैंने बहुत से बे दीनों को ये कहते हुए सुना कि अहले ह़दीष़ सिवाय एक अल्लाह वाह़िद के न और किसी को पुकारते हैं और किसी से मदद चाहते हैं न बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर जाकर उनसे अ़र्ज़ व मअ़रिज़ करते हैं न अल्लाह के सिवा बुज़ुर्गों की कुछ नज़्र व नियाज़ मन्नत फ़ातिह़ा वग़ैरह करते हैं। देखें अल्लाह तआ़ला उनकी दुआ क्यूँ कर क़ुबूल करता है। या अल्लाह! उन बे दीनों को झूठा कर दे और हमारी दुआ क़ुबूल फ़र्मा, हम ख़ास़ तेरे ही को पुकारने वाले हैं और तुझ ही से मदद चाहने वाले हैं, उन बे दीनों को हम पर हंसने का मौक़ा न दे **या अल्लाह या मालिकल्मुल्कि या अल्लाह या अर्ह़मर्राह़िमीन इस्मअ़ वस्तजिब** या अल्लाह! हमारी ये दुआ सुन ले और क़ुबूल फ़र्मा। (वह़ीदी)

फ़िल् वाक़ेअ़ क़ब्रपरस्त बिदअ़तियों का यही ह़ाल है कि वो अहले तौह़ीद पर ऐसे ही आवाज़ें कसते हैं जिस त़रह़ मुश्रिकीने मक्का मुसलमानों के ख़िलाफ़ आवाज़ें कसा करते थे बल्कि ये लोग मुश्रिकीने मक्का से भी बहुत से अफ़्आ़ले शिर्किया में आगे हैं जो मस़ाइब के वक़्त पीरों, मुर्शिदों, वलियों को पुकारते हैं उनकी दुहाई देते हैं और ऐसे वक़्त में भी अल्लाह को याद नहीं करते। अल्लाह पाक हमारे मरहूम मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम की दुआ-ए-मज़्कूरा बाला क़ुबूल फ़र्माकर अहले तौह़ीद को अहले बिदअ़त के मकर व फ़रेब और उनके नापाक ख़्यालात से मह़फ़ूज़ रखे आमीन।

4890. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैयना ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़सन बिन मुह़म्मद बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने अ़ली (रज़ि.) के कातिब उ़बैदुल्लाह बिन अबी राफ़ेअ़ से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने अ़ली (रज़ि.) से सुना उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे, ह़ज़रत ज़ुबैर और मिक़्दाद (रज़ि.) को रवाना किया और फ़र्माया कि चले जाओ और जब मुक़ामे ख़ाख़ के बाग़ पर पहुँच जाओगे (जो मक्का और मदीना के दरम्यान था) तो वहाँ तुम्हें होदज में एक औ़रत मिलेगी, उसके साथ एक ख़त़ होगा,

٤٨٩٠ - حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ قَالَ: حَدَّثَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ أَبِي رَافِعٍ كَاتِبَ عَلِيٍّ يَقُولُ: سَمِعْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ : بَعَثَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَالزُّبَيْرَ وَالْمِقْدَادَ فَقَالَ: ((انْطَلِقُوا حَتَّى

تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ، فَإِنَّ بِهَا ظَعِينَةً مَعَهَا كِتَابٌ فَخُذُوهُ مِنْهَا)). فَذَهَبْنَا تَعَادَى بِنَا خَيْلُنَا حَتَّى أَتَيْنَا الرَّوْضَةَ، فَإِذَا نَحْنُ بِالظَّعِينَةِ، فَقُلْنَا: أَخْرِجِي الْكِتَابَ. فَقَالَتْ: مَا مَعِي مِنْ كِتَابٍ، فَقُلْنَا: لَتُخْرِجِنَّ الْكِتَابَ أَوْ لَتُلْقِيَنَّ الثِّيَابَ، فَأَخْرَجَتْهُ مِنْ عِقَاصِهَا فَأَتَيْنَا بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَإِذَا فِيهِ مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى أُنَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ مِمَّنْ بِمَكَّةَ يُخْبِرُهُمْ بِبَعْضِ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَا هَذَا يَا حَاطِبُ؟)) قَالَ: لاَ تَعْجَلْ عَلَيَّ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مِنْ قُرَيْشٍ وَلَمْ أَكُنْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، وَكَانَ مَنْ مَعَكَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ لَهُمْ قَرَابَاتٌ يَحْمُونَ بِهَا أَهْلِيهِمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِمَكَّةَ، فَأَحْبَبْتُ إِذَا فَاتَنِي مِنَ النَّسَبِ فِيهِمْ أَنْ أَصْطَنِعَ إِلَيْهِمْ يَدًا يَحْمُونَ قَرَابَتِي، وَمَا فَعَلْتُ ذَلِكَ كُفْرًا وَلاَ ارْتِدَادًا عَنْ دِينِي، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّهُ قَدْ صَدَقَكُمْ)). فَقَالَ عُمَرُ: دَعْنِي يَا رَسُولَ اللهِ فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ. فَقَالَ: إِنَّهُ شَهِدَ بَدْرًا، وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ اطَّلَعَ عَلَى أَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ : اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ قَالَ عَمْرٌو وَنَزَلَتْ فِيهِ : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ﴾ قَالَ: لاَ أَدْرِي الآيَةَ

वो ख़त तुम उससे ले लेना। चुनाँचे हम रवाना हुए हमारे घोड़े हमें तेज़ रफ़्तारी के साथ ले जा रहे थे। आख़िर जब हम उस बाग़ पर पहुँचे तो वाक़ई वहाँ हमने होदज में उस औरत को पा लिया हमने उससे कहा कि ख़त निकाल। उसने कहा मेरे पास कोई ख़त नहीं है हमने उससे कहा कि ख़त निकाल दे वरना हम तेरा सारा कपड़ा उतारकर तलाशी लेंगे। आख़िर उसने अपनी चोटी से ख़त निकाला हम लोग वो ख़त लेकर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस ख़त में लिखा हुआ था कि हातिब बिन अबी बल्तआ की तरफ़ से मुश्रिकीन के चंद आदमियों की तरफ़ जो मक्का में थे उस ख़त में उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) की तैयारी का ज़िक्र लिखा था (कि आँहज़रत ﷺ एक बड़ी फ़ौज लेकर आते हैं तुम अपना बचाव कर लो) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने दरयाफ़्त फ़र्माया हातिब! ये क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे मामले में जल्दी न फ़र्माएँ मैं क़ुरैश के साथ बतौरे हलीफ़ (ज़मान-ए -क़ियामे मक्का में) रहा करता था लेकिन उनके क़बीले व ख़ानदान से मेरा कोई ता'ल्लुक़ नहीं था। इसके बरख़िलाफ़ आपके साथ जो दूसरे मुहाजिरीन हैं उनकी क़ुरैश में रिश्तेदारियाँ हैं और उनकी रिआयत से क़ुरैश मक्का में रह जाने वाले उनके अहल व अयाल और माल की हिफ़ाज़त करते हैं। मैंने चाहा कि जबकि उनसे मेरा कोई नसबी ता'ल्लुक़ नहीं है तो इस मौक़ा पर उन पर एक एहसान कर दूँ और उसकी वजह से वो मेरे रिश्तेदारों की मक्का में हिफ़ाज़त करें। या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ये अमल कुफ़्रिया अपने दीन से फिर जाने की वजह से नहीं किया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया यक़ीनन उन्होंने तुमसे सच्ची बात कह दी है। उमर (रज़ि.) बोले कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे इजाज़त दें मैं उसकी गर्दन मार दूँ आप (ﷺ) ने फ़र्माया ये बद्र की जंग में हमारे साथ मौजूद थे। तुम्हें क्या मा'लूम, अल्लाह तआला बद्र वालों के तमाम हालात से वाक़िफ़ था और उसके बावजूद उनके बारे में फ़र्मा दिया कि जो जी चाहे करो कि मैंने तुम्हें मुआफ़ कर दिया। अम्र बिन दीनार ने कहा कि हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) ही के बारे में ये आयत नाज़िल हुई थी कि या अय्युहल्लज़ीन आमनू

ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम औलिया ..... अल आयत ऐ ईमानवालों! तुम मेरे दुश्मन और अपने दुश्मन को दोस्त न बना लेना। सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा कि मुझे इसका इल्म नहीं कि इस आयत का ज़िक्र ह़दीष़ में दाख़िल है या ये अ़म्र बिन दीनार का क़ौल है। (राजेअ़ : 3007)

فِي الْحَدِيثِ أَوْ قَوْلُ عَمْرٍو.
[راجع: ٣٠٠٧]

हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया कि सुफ़यान बिन उ़ययना से ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ (रज़ि.) के बारे में पूछा गया कि क्या आयत ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वि उन्हीं के बारे में नाज़िल हुई थी? सुफ़यान ने कहा कि लोगों की रिवायत में तो यूँ ही है लेकिन मैंने अ़म्र से जो ह़दीष़ याद की उसमें से एक ह़र्फ़ भी मैंने नहीं छोड़ा और मैं नहीं समझता कि मेरे सिवा और किसी ने इस ह़दीष़ को अ़म्र से ख़ूब याद रखा हो।

حَدَّثَنَا عَلِيٌّ قِيلَ لِسُفْيَانَ فِي هَذَا فَنَزَلَتْ : ﴿لاَ تَتَّخِذُوا عَدُوِّي﴾ قَالَ سُفْيَانُ : هَذَا فِي حَدِيثِ النَّاسِ حَفِظْتُهُ مِنْ عَمْرٍو، مَا تَرَكْتُ مِنْهُ حَرْفًا، وَمَا أُرَى أَحَدًا حَفِظَهُ غَيْرِي.

बाब 2 : 'कौलूहु इज़ा जाअकुमुल्मूमिनातु मुहाजिरात' की तफ़्सीर या'नी,

जब तुम्हारे पास ईमान वाली औ़रतें हिजरत करके आएँ।

٢- باب ﴿إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ﴾

4891. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब के भतीजे ने अपने चचा मुह़म्मद बिन मुस्लिम से, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़ह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इस आयत के नाज़िल होने के बाद उन मोमिन औ़रतों का इम्तिह़ान लिया करते थे जो हिजरत करके मदीना आती थीं। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़र्माया था कि या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जाअकल् मोमिनात अल्अख़ या'नी ऐ नबी करीम! जब आपसे मुसलमान औ़रतें बेअ़त करने के लिये आएं, इर्शाद ग़फ़ूरुर्रहीम तक। ह़ज़रत उ़र्वा ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा चुनाँचे जो औ़रत इस शर्त (आयत में मज़्कूर या'नी ईमान वग़ैरह) का इक़रार कर लेती तो आँह़ज़रत (ﷺ) उससे ज़ुबानी त़ौर पर फ़र्माते कि मैंने तुम्हारी बेअ़त क़ुबूल कर ली और हर्गिज़ नहीं। अल्लाह की क़सम! आँह़ज़रत (ﷺ) के हाथ ने किसी औ़रत का हाथ बेअ़त लेते वक़्त कभी नहीं छुआ सिर्फ़ आप

٤٨٩١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَخِي ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَمِّهِ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَمْتَحِنُ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ بِهَذِهِ الآيَةِ بِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ إِلَى قَوْلِهِ - غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ قَالَ عُرْوَةُ : قَالَتْ عَائِشَةُ : فَمَنْ أَقَرَّ بِهَذَا الشَّرْطِ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ، قَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَدْ بَايَعْتُكِ))، كَلاَمًا، وَلاَ وَاللهِ مَا مَسَّتْ يَدُهُ يَدَ امْرَأَةٍ قَطُّ فِي

उनसे ज़ुबानी बेअ़त लेते थे कि आयत में मज़्कूरा बातों पर क़ायम रहना। इस रिवायत की मुताबअ़त यूनुस, मअ़मर और अ़ब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ ने ज़ुह्री से की और इस्हाक़ बिन राशिद ने ज़ुह्री से बयान किया कि उनसे उ़र्वा और अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने कहा। (राजेअ़ : 2713)

الْمُبَايَعَةِ، مَا يُبَايِعُهُنَّ إِلاَّ بِقَوْلِهِ : ((قَدْ بَايَعْتُكِ عَلَى ذَلِكِ)) تَابَعَهُ يُونُسُ وَمَعْمَرٌ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ إِسْحَاقُ بْنُ رَاشِدٍ : عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ وَعَمْرَةَ. [راجع: ٢٧١٣]

तश्रीह : अब उम्मे अ़तिया (रज़ि.) की ह़दीष़ में जो है आपने घर के ब ाहर से अपना हाथ दराज़ किया और हमने घर के अंदर से, इससे भी मुस़ाफ़ा नहीं निकलता। इसी त़रह़ एक रिवायत में है एक औ़रत ने अपना हाथ खींच लिया इससे भी मुस़ाफ़ा ष़ाबित नहीं होता और अबू दाऊद ने मरासील में शअ़बी से निकाला कि आपने एक चादर हाथ पर रख ली और फ़र्माया मैं औ़रतों से मुस़ाफ़ा नहीं करता इन ह़दीष़ों को देखकर भी जो मुर्शिद औ़रतों को मुरीद करते वक़्त उनसे हाथ मिलाए वो बिदअ़ती और मुख़ालिफ़े रसूलुल्लाह (ﷺ) है इसी त़रह़ जो मुर्शिद ग़ैर मह़रम औ़रतों मुरीदीनियों को बे सतर अपने दे। मष़लन सर और सीना खोले हुए तो वो मुर्शिद नहीं है बल्कि मुज़िल या'नी गुमराह करने वाला शैत़ान का भाई है। (वह़ीदी)

जो लोग पेशेवर पीर मुर्शिद बने हुए हैं उनकी अकष़रियत का यही ह़ाल है वो मुरीद होने वाली मस्तूरात अह़्काम शरइया पर्दा ह़ि जाब वग़ैरह से अपने लिये अलग समझते हैं और उनसे बग़ैर ह़िजाब के ख़ लत़ मलत़ रखने में कोई ऐ़ब नहीं समझते ऐसे पीरों मुर्शिदों ही के बारे में मौलाना रूम ने फ़र्माया,

कारे शैतान मी कुनद नामश वली गर वली ईं अस्त लअ़नत बर वली

या'नी कितने लोग शैत़ानी काम करने वाले वली कहलाते हैं अगर ऐसे ही लोग वली हैं तो ऐसे पर अल्लाह की ला'नत नाज़िल हों आमीन।

बाब 3 : 'इज़ा जाअकल्मूमिनातु युबायिअ़नक ....अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ﴾

(ऐ रसूल!) जब ईमानवाली औ़रतें आपके पास आएं ताकि वो आपसे बेअ़त करें।

4892. हमसे अबू मअ़ मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने, कहा हमसे अय्यूब ने, उनसे ह़फ़्स़ा बिन्ते सीरीन ने और उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की तो आपने हमारे सामने इस आयत की तिलावत की अल्ला युश्रिकना बिल्लाहि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी और हमें नौहा (या'नी मय्यत पर ज़ोर ज़ोर से रोना पीटना) करने से मना फ़र्माया। आँह़ज़रत (ﷺ) की इस मुमानअ़त पर एक औ़रत (ख़ुद उम्मे अ़तिया रज़ि) ने अपना हाथ खींच लिया और अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ औ़रत ने नौहा में मेरी मदद की थी, मैं चाहती हूँ कि उसका बदला चुका आऊँ, आँह़ज़रत

٤٨٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ حَفْصَةَ بِنْتِ سِيرِينَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : بَايَعْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَرَأَ عَلَيْنَا: ﴿أَنْ لاَ يُشْرِكْنَ بِاللهِ شَيْئًا﴾))، وَنَهَانَا عَنِ النِّيَاحَةِ، فَقَبَضَتِ امْرَأَةٌ يَدَهَا فَقَالَتْ : أَسْعَدَتْنِي فُلاَنَةُ أُرِيدُ أَنْ أَجْزِيَهَا، فَمَا قَالَ لَهَا النَّبِيُّ ﷺ شَيْئًا، فَانْطَلَقَتْ وَرَجَعَتْ،

(ﷺ) ने उसका कोई जवाब नहीं दिया चुनाँचे वो गईं और फिर दोबारा आकर आँहज़रत (ﷺ) से बेअ़त की।

فَبَايَعَهَا. [راجع: ١٣٠٦]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि आपने उसको इजाज़त दी। ये एक ख़ास हुक्म था जो हज़रत उम्मे अ़तिया (रज़ि.) को दिया गया वरना नौहा अ़मूमन हराम है इसकी हुर्मत में अहादीषे सहीहा वारिद हैं और कुछ मालिकिया का क़ौल है कि नौहा हराम नहीं है बल्कि शाज़ और मरदूद है। क़स्तलानी (रह) ने कहा पहले नौहा मुबाह था फिर मकरूहे तन्ज़ीही हुआ फिर हराम हुआ और मुम्किन है कि हज़रत उम्मे अ़तिया (रज़ि.) के बेअ़त करते वक़्त मकरूहे तन्ज़ीही हुआ, इसलिये आपने इजाज़त दी हो, उसके बाद हराम हो गया हो। हाफ़िज़ (रह) ने कहा नौहा करना मुत्लक़न हराम है और यही तमाम उ़लमा का मज़हब है तो **व ला यअ़सीनक फ़ी मअ़रूफ़िन** से ये मुराद होगा कि नौहा न करें या ग़ैर मर्द से ख़ल्वत न करें या शौहरों की नाफ़र्मानी न करें अगर ये मा'नी हो कि अच्छी बात में तेरी नाफ़र्मानी न करें तब तो औरतों मर्दों सबके लिये ये हुक्म आम होगा जैसे आगे की हदीष से मा'लूम होता है कि आपने लैलतुल अ़क़्बा मे अंसार से इन्हीं शर्तों पर बेअ़त ली थी, और अंसार के हर मर्द व औरत ने बख़ुशी इन शर्तों पर बेअ़त करके अपने अ़मल से ये षाबित कर दिया कि हम शर्तों से फिरने वाले और बेअ़त से चेहरे मोड़ने वाले नहीं हैं, अल्लाह पाक अंसार को उनकी वफ़ादारी की बेहतरीन जज़ाएँ बख़्शे आमीन।

4893. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा कि हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने ज़ुबैर से सुना, उन्होंने इक्रिमा से और उन्होंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ला यअ़सीनका फ़ी मअ़रूफ़ या'नी, और भली बातों (और अच्छे कामों में) आपकी नाफ़र्मानी न करेंगी। के बारे में उन्होंने कहा कि ये भी एक शर्त थी जिसे अल्लाह तआ़ला ने (आँहज़रत ﷺ से बेअ़त के वक़्त) औरतों के लिये ज़रूरी क़रार दिया था।

٤٨٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، قَالَ : حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ سَمِعْتُ الزُّبَيْرَ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ: ﴿وَلاَ يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ﴾ قَالَ إِنَّمَا هُوَ شَرْطٌ شَرَطَهُ اللهُ لِلنِّسَاءِ.

इस हदीष में मा'लूम हुआ कि औरतें भी अच्छाई के कामों और नेक अ़मलों के करने पर बेअ़त कर सकती हैं।

4894. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू इदरीस ने बयान किया और उन्होंने हज़रत उ़बादह बिन सामित (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर थे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम मुझसे इस बात पर बेअ़त करोगे कि अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे और न ज़िना करोगे और न चोरी करोगे। आपने सूरह निसा की आयतें पढ़ीं। सुफ़यान ने इस हदीष में ज़्यादातर यूँ

٤٨٩٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ، حَدَّثَنَاهُ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو إِدْرِيسَ سَمِعَ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ : ((أَتُبَايِعُونِي عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللهِ شَيْئًا، وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَسْرِقُوا))، وَقَرَأَ آيَةَ النِّسَاءِ وَأَكْثَرُ لَفْظِ

سُفْيَانُ قَرَأَ الآيَةَ ((فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْهَا شَيْئًا مِنْ ذَلِكَ فَسَتَرَهُ اللهُ، فَهُوَ إِلَى اللهِ : إِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ، وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُ)) تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّزَّاقِ عَنْ مَعْمَرٍ.

[راجع: ١٨]

कहा कि आपने ये आयत पढ़ी। फिर तुममें से जो शख़्स इस शर्त को पूरा करेगा तो उसका अज्र अल्लाह पर है और जो कोई उनमें से किसी शर्त के ख़िलाफ़वर्ज़ी कर बैठा और उस पर उसे सज़ा भी मिल गई तो सज़ा उसके लिये कफ़्फ़ारा बन जाएगी लेकिन किसी ने अपने किसी अ़हद के ख़िलाफ़ किया और अल्लाह ने छुपा लिया तो वो अल्लाह के ह़वाले है अल्लाह चाहे तोउसे इस पर अ़ज़ाब दे और अगर चाहे मुआ़फ़ कर दे। सुफ़यान के साथ इस ह़दीष़ को अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने भी मअ़मर से रिवायत किया उन्होंने ज़ुहरी से और यूँ ही कहा आयत पढ़ी। (राजेअ़ : 18)

٤٨٩٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا هَارُونُ بْنُ مَعْرُوفٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ، قَالَ : وَأَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ أَنَّ الْحَسَنَ بْنَ مُسْلِمٍ أَخْبَرَهُ عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: شَهِدْتُ الصَّلاَةَ يَوْمَ الْفِطْرِ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ وَعُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ، فَكُلُّهُمْ يُصَلِّيهَا قَبْلَ الْخُطْبَةِ ثُمَّ يَخْطُبُ بَعْدُ، فَنَزَلَ نَبِيُّ اللهِ فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ حِينَ يُجَلِّسُ الرِّجَالَ بِيَدِهِ ثُمَّ أَقْبَلَ يَشُقُّهُمْ حَتَّى أَتَى النِّسَاءَ مَعَ بِلاَلٍ فَقَالَ : (({يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لاَ يُشْرِكْنَ بِاللهِ شَيْئًا وَلاَ يَسْرِقْنَ وَلاَ يَزْنِينَ وَلاَ يَقْتُلْنَ أَوْلاَدَهُنَّ وَلاَ يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ)) حَتَّى فَرَغَ مِنَ الآيَةِ كُلِّهَا ثُمَّ قَالَ حِينَ فَرَغَ ((أَنْتُنَّ عَلَى ذَلِكِ))، وَقَالَتْ امْرَأَةٌ وَاحِدَةٌ لَمْ يُجِبْهُ غَيْرُهَا : نَعَمْ يَا رَسُولَ

4895. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे हारून बिन मअ़रूफ़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया कि मुझे इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें ह़सन बिन मुस्लिम ने ख़बर दी, उन्हें ताउस ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) और इ़मर और इ़ष्मान (रज़ि.) के साथ ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पढ़ी है। इन तमाम बुज़ुर्गों ने नमाज़ ख़ुत्बा से पहले पढ़ी थी और ख़ुत्बा बाद में दिया था (एक मर्तबा ख़ुत्बा से फ़ारिग़ होने के बाद) नबी करीम (ﷺ) उतरे गोया अब भी मैं आँह़ज़रत (ﷺ) को देख रहा हूँ, जब आप लोगों को अपने हाथ के इशारे से बिठा रहे थे फिर आप सफ़ चीरते हुए आगे बढ़े और औरतों के पास तशरीफ़ लाए। बिलाल (रज़ि.) आपके साथ थे फिर आपने ये आयत तिलावत की या अय्युहन् नबिय्यु इज़ा जाअकल मुअमिनात अल्अख़ या'नी ऐ नबी! जब मोमिन औरतें आपके पास आएँ कि आपसे इन बातों पर बेअ़त करें कि अल्लाह के साथ न किसी को शरीक करेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी करेंगी और न अपने बच्चों को क़त्ल करेंगी और न बोहतान लगाएँगी जिसे अपने हाथ और पैर के दरम्यान गढ़ लें। आपने पूरी आयत आख़िर तक पढ़ी। जब आप आयत पढ़ चुके तो फ़र्माया तुम इन शराइत पर क़ायम रहने का वा'दा करती हो? उनमे से एक औरत ने जवाब दिया हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनके सिवा और किसी औरत ने (शर्म की वजह से) कोई बात

نہیں कही। हसन को इस औरत का नाम मा'लूम नहीं था बयान किया कि फिर औरतों ने सदक़ा देना शुरू किया और बिलाल (रज़ि.) ने अपना कपड़ा फैला लिया। औरतें बिलाल (रज़ि.) के कपड़े में छल्ले अंगूठियाँ डालने लगीं। (राजेअ : 98)

الله لاَ يَدْرِي الْحَسَنُ مَنْ هِيَ قَالَ ((فَتَصَدَّقْنَ)) وَبَسَطَ بِلاَلٌ ثَوْبَهُ فَجَعَلْنَ يُلْقِينَ الْفَتَخَ وَالْخَوَاتِيمَ فِي ثَوْبِ بِلاَلٍ. [راجع:٩٨]

सूरह सफ़्फ़ की तफ़्सीर

[٦١] سُورَةُ ﴿الصَّفِّ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा मन अन्सारी इलल्लाहि का मा'नी ये है कि मेरे साथ होकर कौन अल्लाह की तरफ़ जाता है और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा मरसूस ख़ूब मज़बूती से मिला हुआ, जुड़ा हुआ, औरों ने कहा सीसा मिलाकर जुड़ा हुआ।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللهِ﴾ مَنْ يَتَّبِعُنِي إِلَى اللهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿مَرْصُوصٌ﴾ مُلْصَقٌ بَعْضُهُ بِبَعْضٍ وَقَالَ غَيْرُهُ : بِالرَّصَاصِ.

सूरह सफ़्फ़ मदनी है इसमें 14 आयात और दो रुकूअ हैं। इस सूरत में लतीफ़ इशारात हैं कि यहूद, नसारा और मुश्रिकीन हमेशा मुसलमान के हद से ज़्यादा तकलीफ़ देने वाले रहे हैं लेकिन अहले इस्लाम अगर सीसा पिलाई हुई दीवार बनकर अपने दुश्मनों का मुक़ाबला करते रहेंगे और हर हर ज़माने के हालात के मुताबिक़ मुक़ाबले की पूरी पूरी तैयारी रखेंगे तो वो ज़रूर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह उनकी मदद करता रहेगा।

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़ंदा ज़न फूँकों से ये चराग़ बुझाया न जाएगा

बाब 1 : आयत 'मिम्बअदी इस्मुहू अहमद' की तफ़्सीर

١- باب قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾

या'नी, हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़र्माया कि मेरे बाद एक रसूल आएगा जिसका नाम अहमद होगा।

4896. हमसे अबुल यमान ने बयान किया कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी और उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद जुबैर बिन मुतइम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि मेरे कई नाम हैं। मैं मुहम्मद हूँ मैं अहमद हूँ मैं माही हूँ कि जिसके ज़रिये अल्लाह तआला कुफ्र को मिटा देगा और मैं हाशिर हूँ कि अल्लाह तआला सबको हश्र में मेरे बाद जमा करेगा और मैं आक़िब हूँ। (राजेअ : 3532)

٤٨٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ لِي أَسْمَاءً، أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِي، الَّذِي يَمْحُوا اللهُ بِيَ الْكُفْرَ. وَأَنَا الْحَاشِرُ، الَّذِي يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا الْعَاقِبُ)). [راجع: ٣٥٣٢]

या'नी सब पैग़म्बरों के बाद दुनिया में आने वाला हूँ।

सूरह जुमुआ की तफ़्सीर

[٦٢] سُورَةُ ﴿الْجُمُعَةِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मदनी है। इसमें 11 आयतें और दो रुकूअ हैं इसमें नमाज़े जुम्आ का ज़िक्र है इसलिये इसको इस नाम से मौसूम किया गया।

बाब 1 : 'व आखरीन मिन्हुम ....अल्आयः' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلُهُ : ﴿وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ﴾ وَقَرَأَ عُمَرُ ﴿فَامْضُوا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ﴾

और दूसरों के लिये भी उनमें से (आपको भेजा) जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़म्ज़ू इला ज़िक्रिल्लाह पढ़ा है या'नी अल्लाह तआला की याद की तरफ़ चलो।

٤٨٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ، قَالَ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ ثَوْرٍ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَأُنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْجُمُعَةِ ﴿وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ﴾ قَالَ : قُلْتُ : مَنْ هُمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَلَمْ يُرَاجِعْهُ حَتَّى سَأَلَ ثَلاَثًا وَفِينَا سَلْمَانُ الْفَارِسِيُّ، وَضَعَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَدَهُ عَلَى سَلْمَانَ ثُمَّ قَالَ : ((لَوْ كَانَ الإِيمَانُ عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهُ رِجَالٌ. أَوْ رَجُلٌ مِنْ هَؤُلاَءِ)). [طرفه في ٤٨٩٨]

4897. मुझसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन हिलाल ने बयान किया, उनसे ष़ौर ने, उनसे अबुल ग़ैष़ सालिम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि सूरह जुम्आ की ये आयतें नाज़िल हुईं। व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम अल आयत और दूसरों के लिये भी जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए हैं (आँहज़रत ﷺ हादी और मुअल्लिम हैं) बयान किया मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये दूसरे कौन लोग हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया आख़िर यही सवाल तीन बार किया। मज्लिस में सलमान फ़ारसी (रज़ि.) भी मौजूद थे आँहज़रत (ﷺ) ने उन पर हाथ रखकर फ़र्माया अगर ईमान षुरय्या पर भी होगा तब भी इन लोगों (या'नी फ़ारस वालों) में से उस तक पहुँच जाएँगे या यूँ फ़र्माया कि एक आदमी उन लोगों में से उस तक पहुँच जाएगा। (दीगर मक़ाम : 4898)

तश्रीह : दूसरी रिवायत कई आदमी से बग़ैर शक के मज़्कूर है। क़ुर्तुबी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने जैसा फ़र्माया था वैसा ही हुआ। बहुत से हदीष़ के हाफ़िज़ और इमाम (रह.) मुल्के फ़ारस में पैदा हुए। मैं कहता हूँ उन लोगों से सिर्फ़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) और इमाम मुस्लिम (रह.) और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) वग़ैरह मुराद हैं। ये सब हदीष़ के इमाम मुल्के फ़ारस के थे और रजुलुन मन हा उलाइ, की अगर रिवायत सहीह हो तो उससे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) मुराद हैं इल्मे हदीष़ बइस्नादे सहीह मुत्तस्ला इसी मर्द की हिम्मते मर्दाना से अब तक बाक़ी है और हनफ़ियों ने जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) को इससे लिया है तो हमको हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) की फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी में इख़्तिलाफ़ नहीं है मगर उनकी अस्ल मुल्के फ़ारस से नहीं थी बल्कि काबुल से थी और काबुल बिलादे फ़ारस में दाख़िल नहीं, इसलिये वो इस हदीष़ के मिस्दाक़ नहीं हो सकते। अलावा इसके हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) मुद्दत उम्र फ़ुक़हा और इज्तिहाद में मसरूफ़ रहे और इल्मे हदीष़ की तरफ़ उनकी तवज्जह बिलकुल कम रही, इसीलिये वो हदीष़ के इमाम नहीं गिने जाते और न अइम्म-ए-हदीष़ जैसे इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम (रह) वग़ैरह ने अपनी किताबों में इनसे रिवायत की है बल्कि मुहम्मद बिन नस़र मरवज़ी मुहद्दिष़ कहते हैं हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह) की बज़ाअत इल्मे हदीष़ में बहुत थोड़ी थी और ख़तीब ने कहा कि इमाम अबू हनीफ़ा (रह) ने सिर्फ़ पचास मर्फ़ूअ हदीष़ें रिवायत की हैं, अल्बत्ता मुज्तहिद इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हंबल और इस्हाक़ बिन राहवै और औज़ाई और

सुफ़यान ष़ौरी और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक (रज़ि.) ऐसे कामिल गुज़रे हैं कि फ़िक़्ह और ह़दीष़ में बयक वक़्त इमाम थे अल्लाह तआला इन सबसे राज़ी हो और इनको दरजाते आली अ़ता फ़र्माए। आमीन (वह़ीदी)

4898. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उन्हें ष़ौर ने और उनसे अबुल ग़ैष़ ने, उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) ने कि, उनकी क़ौम के कुछ लोग उसे पा लेंगे। (राजेअ़ : 4897)

٤٨٩٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، أَخْبَرَنِي ثَوْرٌ عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((لَنَالَهُ رِجَالٌ مِنْ هَؤُلاَءِ)).

[راجع: ٤٨٩٧]

तश्रीह़ : आँह़ज़रत (ﷺ) का इशारा आले फ़ारस की त़रफ़ था। चुनाँचे अल्लाह पाक ने मुह़द्दिष़ीने किराम को पैदा फ़र्माया जिनमें बेशतर फ़ारसी नस्ल हैं, इस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) की पेशनगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सह़ीह़ ष़ाबित हुई और आयत व आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्ह़क़ू बिहिम का मिस्दाक़ मुह़द्दिष़ीने किराम क़रार पाए।

बाब 2 : 'व इज़ा रऔ तिजारतन' की तफ़्सीर

٢- باب قوله ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً﴾

और जब कभी उन्होने अम्वाले तिजारत देखा। आख़िर तक।

4899. मुझसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे ह़ुस़ैन ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अबी अल जअ़दि ने और अबू सुफ़यान ने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि जुम्आ के दिन सामाने तिजारत लिये हुए ऊँट आए हम उस वक़्त नबी करीम (ﷺ) के साथ थे उन्हें देखकर सिवाए बारह आदमी के सब लोग उधर ही दौड़ पड़े। इस पर अल्लाह तबारक व तआला ने ये आयत नाज़िल की व इज़ा रअव तिजारतन् अव लह्वन् फ़ज़्ज़ू इलैहा अल आयत या'नी और कुछ लोगों ने जब कभी एक सौदे या तमाशे की चीज़ को देखा तो उसकी त़रफ़ दौड़ते हुए फैल गये। (राजेअ़ : 936)

٤٨٩٩- حدثني حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، وَعَنْ أَبِي سُفْيَانَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : أَقْبَلَتْ عِيرٌ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَنَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَثَارَ النَّاسُ، إِلاَّ اثْنَا عَشَرَ رَجُلاً فَأَنْزَلَ اللهُ : ﴿وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انْفَضُّوا إِلَيْهَا﴾.

[راجع: ٩٣٦]

सूरह मुनाफ़िक़ून की तफ़्सीर

[٦٣] سُورَةُ ﴿الْمُنَافِقُونَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मदनी है जिसमें 11 आयात और दो रुकूअ़ हैं इसमें मुनाफ़िक़ीन का ज़िक्र है जो मुतालआ से ता'ल्लुक़ रखता है।

बाब 1 : 'क़ालू नश्हदु इन्नक लरसूलुल्लाहि .... अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب قَوْلُهُ ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللهِ - إِلَى لَكَاذِبُونَ﴾.

जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते तो कहते हैं कि बेशक हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं। लकाज़िबून तक।

4900. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं एक ग़ज़्वा (तबूक़) में था और मैंने (मुनाफ़िक़ों के सरदार) अ़ब्दुल्लाह बिन उबई को ये कहते सुना कि जो लोग (मुहाजिरीन) रसूल के पास जमा हैं उन पर ख़र्च न करो ताकि वो ख़ुद ही रसूलुल्लाह से जुदा हो जाएँ। उसने ये भी कहा अब अगर हम मदीना लौटकर जाएँगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहाँ से ज़िल्लत वालों को निकाल बाहर करेगा। मैंने इसका ज़िक्र अपने चचा (सअ़द बिन इ़बादह अंसारी) से किया या ह़ज़रत इ़मर (रज़ि.) से इसका ज़िक्र किया। (रावी को शक था) उन्होंने उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलाया मैंने तमाम बातें आपको सुना दीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों को बुला भेजा। (उन्होंने क़सम खा ली कहा कि उन्होंने इस त़रह की कोई बात नहीं कही थी। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझको झूठा समझा और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई को सच्चा समझा। मुझे इसका इतना स़दमा हुआ किऐसा कभी न हुआ था। फिर मैं घर में बैठ रहा। मेरे चचा ने कहा कि मेरा ख़याल नहीं था कि आँह़ज़रत (ﷺ) तुम्हारी तक्ज़ीब करेंगे और तुम पर नाराज़ होंगे फिर अल्लाह तआ़ला ने ये सूरत नाज़िल की। जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाया और इस सूरत की तिलावत की और फ़र्माया कि ऐ ज़ैद! अल्लाह तआ़ला ने तुमको सच्चा कर दिया है। (दीगर मक़ाम: 4901, 4902, 4903, 4904)

٤٩٠٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ : كُنْتُ فِي غَزَاةٍ فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ يَقُولُ : لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَتَّى يَنْفَضُّوا مِنْ حَوْلِهِ، وَلَوْ رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِهِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي أَوْ لِعُمَرَ، فَذَكَرَهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَدَعَانِي فَحَدَّثْتُهُ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ وَأَصْحَابِهِ، فَحَلَفُوا مَا قَالُوا فَكَذَّبَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَصَدَّقَهُ فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ فَجَلَسْتُ فِي الْبَيْتِ، فَقَالَ لِي عَمِّي : مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَمَقَتَكَ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ﴾ فَبَعَثَ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقَرَأَ فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ قَدْ صَدَّقَكَ يَا زَيْدُ)). [أطرافه في: ٤٩٠١، ٤٩٠٢، ٤٩٠٣، ٤٩٠٤].

बाब 2 : 'इत्तख़ज़ू अयमानहुम जुन्नः' की तफ़्सीर

٢- باب قوله ﴿اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً﴾ يَجْتَنُّونَ بِهَا

या'नी, उन लोगों ने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है या'नी जिससे वो अपने निफ़ाक़ की पर्दापोशी करते हैं।

4901. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने बयान किया और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने चचा (सअ़द बिन इ़बादह या अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि.) के साथ था मैंने

٤٩٠١- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي، فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ

مَلُولٍ يَقُولُ: لاَ تُنفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ حَتَّى يَنفَضُّوا. وَقَالَ أَيْضًا: لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي، فَذَكَرَ عَمِّي لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللهِ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ وَأَصْحَابِهِ فَحَلَفُوا مَا قَالُوا: فَصَدَّقَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَكَذَّبَنِي، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ فَجَلَسْتُ فِي بَيْتِي، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ - إِلَى قَوْلِهِ - هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لاَ تُنفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ - إِلَى قَوْلِهِ - لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ﴾ فَأَرْسَلَ إِلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَرَأَهَا عَلَيَّ ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ قَدْ صَدَّقَكَ)). [راجع: ٤٩٠٠]

अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को कहते सुना कि जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हैं उन पर ख़र्च मत करो ताकि वो उनके पास से भाग जाएँ। ये भी कहा कि अगर अब हम मदीना लौटकर जाएँगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहाँ से ज़लीलों को निकालकर बाहर कर देगा। मैंने उसकी ये बात चचा से आकर कही और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों को बुलवाया उन्होंने क़सम खा ली कि ऐसी कोई बात उन्होंने नहीं कही थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने भी उनको सच्चा जाना और मुझको झूठा समझा। मुझे उसे इतना स़दमा पहुँचा कि ऐसा कभी नहीं पहुँचा होगा फिर मैं घर के अंदर बैठ गया। फिर अल्लाह तआ़ला ने ये सूरत नाज़िल की इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना क़ालू नश्हदु इन्नका लरसूलुल्लाह... इला क़ौलिही... ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन इन्दा रसूलिल्लाह और आयत लयुख़्रिजन्नल् अअ़ज़्ज़ु मिन्हल् अज़ल्ल तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाया और मेरे सामने इस सूरत की तिलावत की फिर फ़र्माया। अल्लाह ने तुम्हारे बयान को सच्चा कर दिया है। (राजेअ़ : 4900)

तश्रीह : आयाते मज़्कूरा का शाने नुज़ूल ये है कि एक सफ़र में दो शख़्स़ लड़ पड़े एक मुहाजिरीन से और एक अंस़ार का। दोनों ने अपनी ह़िमायत के लिये अपनी जमाअ़त को पुकारा जिस पर ख़ास़ा हंगामा हो गया। ये ख़बर रईसे मुनाफ़िक़ीन अ़ब्दुल्लाह बिन उबई को पहुँची। कहने लगा अगर हम उन मुहाजिरीन को अपने शहर में जगह न देते तो हमसे मुक़ाबला क्यूँ करते, तुम ही ख़बरगिरी करते हो तो ये लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जमा रहते हैं ख़बरगिरी छोड़ दो अभी ख़र्च से तंग आकर मुतफ़र्रिक़ ही हो जाएँगे और सब मज्मअ़ा बिछड़ जाएगा ये भी कहा कि इस सफ़र से वापस होकर हम मदीना पहुँचे तो जिसका इस शहर में ज़ोर व इक़्तिदार है चाहिये कि ज़लील बे क़द्रों को निकाल दे (या'नी हम जो मुअ़ज़्ज़ज़ लोग हैं ज़लील मुसलमानों को निकाल देंगे)। एक स़ह़ाबी ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने ये बातें सुनकर ह़ज़रत के पास नक़ल करा दीं। आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई वग़ैरह से तह़क़ीक़ की तो क़समें खाने लगे कि ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने हमारी दुश्मनी से झूठ बोला है। लोग ज़ैद पर आवाज़ें कसने लगे वो बेचारे सख़्त नादिम थे उस वक़्त ये आयात नाज़िल हुईं, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने ज़ैद (रज़ि.) को फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने तुझे सच्चा कर दिया। रिवायात में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के वो अल्फ़ाज़ कि इ़ज़्ज़त वाला ज़लील को ज़िल्लत के साथ निकाल देगा जब उसके बेटे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उबई को पहुँचे, जो मुख़्लिस़ मुसलमान थे तो बाप के सामने तलवार लेकर खड़े हो गये बोले जब तक इक़रार न करेगा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) इ़ज़्ज़त वाले हैं और तू ज़लील है ज़िन्दा न छोड़ूँगा और न मदीना में घुसने दूँगा आख़िर इक़रार कराकर छोड़ा।

अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने मुसलमानों को ज़लील और अपने आपको और दीगर मुनाफ़िक़ीन को इ़ज़्ज़तदार समझा ह़ालाँकि ये कमबख़्त इ़ज़्ज़त और इ़ज़्ज़तदारी का उसूल भी नहीं समझते, अस़ल इ़ज़्ज़त वो है जो ज़वाल पज़ीर न हो। माल सरकारी नौकरी तिजारत वग़ैरह ये सब ज़वाल पज़ीर हैं आज कोई शख़्स़ मालदार है तो कल नहीं आज कोई सरकारी ओ़हदा

पर है तो कल मअ़ज़ूल है इसलिये उन लोगों की इ़ज़्ज़त अस़ल नहीं। अस़ल इ़ज़्ज़त अल्लाह की है और रसूल की है और स़ालेहीन की है जो महज़ ईमान की वजह से मुअ़ज़्ज़ हैं चाहे। अमीर हों या ग़रीब इसमें कुछ फ़र्क़ नहीं, उनके उ़लमा फ़ुक़रा इ़ज़्ज़त के मुस्तह़िक़ हैं, वो सब मोमिनीन में दाख़िल हैं मगर मुनाफ़िक़ लोग जानते नहीं हैं कि इ़ज़्ज़त क्या चीज़ है मुसलमानों! तुम जानते हो कि उन मुनाफ़िक़ों का ये घमण्ड दो वजह से है एक क़ुव्वते बाज़ू से या'नी ये जानते हैं कि हम मालदार हैं। दोम ये है कि हम औलाद वाले भी हैं हम जहाँ खड़े हो जाएँ हमारी क़ुव्वत हमारे साथ है ये बातें ग़ुरूर की हैं पस तुम माल और औलाद का घमण्ड न करना क्योंकि ये चीज़ें आने और जाने वाली हैं, उन पर घमण्ड करना और इतराना न चाहिये बल्कि शुक्र करना चाहिये पस तुम मुसलमान ऐसे नापसन्दीदा कामों से बचते रहा करो और मुनाफ़िक़ों की त़रह़ बुख़्ल न किया करो। (षनाई)

बाब 2 : आयत 'ज़ालिक बिअन्नहुम आमनू षुम्म कफरू फतुबिअ़ अ़ला क़ुलूबिहिम' की तफ़्सीर,

या'नी ये इस सबब से है कि ये लोग ज़ाहिर में ईमान ले आए फिर दिलों में काफ़िर हो गये सो उनके दिलों में मुहर लगा दी गई पस अब ये नहीं समझते।

٢- باب قوله ﴿ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لاَ يَفْقَهُونَ﴾

4902. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने मुह़म्मद बिन कअ़ब क़ुर्ज़ी से सुना, कहा कि मैंने ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल ने कहा कि जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास हैं इन पर ख़र्च न करो ये भी कहा कि अब अगर हम मदीना वापस गये तो हममें से इ़ज़्ज़त वाला ज़लीलों को निकाल बाहर करेगा तो मैंने ये ख़बर नबी करीम (ﷺ) तक पहुँचाई। इस पर अन्स़ार ने मुझे मलामत की और अ़ब्दुल्लाह बिन उबइ ने क़सम खा ली कि उसने ये बात नहीं कही थी फिर मैं घर वापस आ गया और सो गया। उसके बाद मुझे आँह़ज़रत (ﷺ) ने त़लब फ़र्माया और मैं ह़ाज़िर हुआ तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तस्दीक़ मे आयत नाज़िल कर दी है और ये आयत उतरी है हुमुल्लज़ीना यक़ूलूना ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन इन्दा रसूलिल्लाह अल्अ़ख़ आख़िर तक और इब्ने अबी लैला ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी त़रह़ नक़ल किया। (राजेअ़ : 4900)

٤٩٠٢- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ، قَالَ سَمِعْتُ مُحَمَّدُ بْنَ كَعْبٍ الْقُرَظِيَّ قَالَ : سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ رَضِيَ الله عَنْهُ قَالَ : لَمَّا قَالَ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ : لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ الله وَقَالَ أَيْضًا: لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ، أَخْبَرْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَلاَمَنِي الأَنْصَارُ، وَحَلَفَ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ مَا قَالَ ذَلِكَ فَرَجَعْتُ إِلَى الْمَنْزِلِ فَنِمْتُ، فَدَعَانِي رَسُولُ الله ﷺ فَأَتَيْتُهُ: فَقَالَ: ((إِنَّ الله قَدْ صَدَّقَكَ)). وَنَزَلَ ﴿هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لاَ تُنْفِقُوا﴾ الآيَةَ وَقَالَ ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ عَمْرٍو وَعَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٤٩٠٠]

बाब आयत 'व इज़ा रायतहुम तुअजिबुक अज्सामहुम' की तफ़्सीर या'नी,

ऐ नबी (ﷺ)! तू उनको देखता है तो तुझे उनके जिस्म ह़ैरान करते

باب

﴿وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ وَإِنْ

हैं, जब वो बातें करते हैं तो तू उनकी बात सुनता है गोया वो बहुत बड़ी लकड़ी के खम्बे हैं जिनके साथ लोग तकिया लगाते हैं, हर एक ज़ोरदार आवाज़ को अपने ही बरख़िलाफ़ जानते हैं पस तुम ऐ नबी! इन दुश्मनों से बचते रहो। इन पर अल्लाह की मार हो कहाँ को बहके जाते हैं।

يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ اللهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾.

4903. हमसे अम्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक़ या बनी अल् मुस्तलक़) में थे जिसमें लोगों पर बड़े तंग औक़ात आए थे। अब्दुल्लाह बिन उबई ने अपने साथियों से कहा कि, जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जमा हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो ताकि वो उनके पास से मुंतशिर हो जाएँ, उसने ये भी कहा कि, अगर हम अब मदीना लौटकर जाएँगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहाँ से ज़लीलों को निकाल बाहर करेगा। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर उनकी इस बातचीत की ख़बर दी तो आपने अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को बुलाकर पूछा। उसने बड़ी क़समें खाकर कहा कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही। लोगों ने कहा कि ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने झूठ बोला है। लोगों की इस तरह की बातों से मैं बड़ा रंजीदा हुआ यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरी तस्दीक़ फ़र्माई और ये आयत नाज़िल हुई इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना अल्अख़ या'नी जब आपके पास मुनाफ़िक़ आए फिर आप (ﷺ) ने उन्हें बुलाया ताकि उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें लेकिन उन्होंने अपने सर फेर लिये। ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआला के इर्शाद ख़ुशुबुम् मुसन्नदह् गोया वो बहुत बड़े लकड़ी के खम्बे हैं (उनके बारे में इसलिये कहा गया कि) वो बड़े ख़ूबसूरत और डील डोल मअक़ूल मगर दिल में निफ़ाक़ था। (राजेअ: 4900)

٤٩٠٣- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ أَصَابَ النَّاسَ فِيهِ شِدَّةٌ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ لأَصْحَابِهِ: لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَنْفَضُّوا مَنْ حَوْلَهُ، وَقَالَ : لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَأَرْسَلَ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ فَسَأَلَهُ، فَاجْتَهَدَ يَمِينَهُ مَا فَعَلَ قَالُوا كَذَبَ زَيْدٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَعَ فِي نَفْسِي مِمَّا قَالُوا شِدَّةٌ، حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ تَصْدِيقِي فِي ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ﴾ فَدَعَاهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَغْفِرَ لَهُمْ فَلَوَّوْا رُؤُوسَهُمْ. وَقَوْلُهُ ﴿خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ﴾ قَالَ: كَانُوا رِجَالاً أَجْمَلَ شَيْءٍ.

[راجع: ٤٩٠٠]

बाब 4 : आयत 'व इज़ा क़ील लहुम तआलौ यस्तग़्फ़िर लकुम रसूलुल्लाहि लव्वव रूऊसहुम ...'

٤- بَابُ قَوْلُهُ

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ

की तफ़्सीर या'नी, और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह के रसूल (ﷺ) तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार फ़र्माए तो वो अपना सर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखेंगे कि घमण्ड करते हुए वो किस क़द्र बेरुख़ी बरत रहे हैं। लव्वव का मा'नी ये है कि अपने सर हंसी ठट्ठे की राह से हिलाने लगे। कुछ ने लव्वव बर तख़्फ़ीफ़ वाव लवयत से पढ़ा है या'नी सर फेर लिया।

اللہ لَوَّوْا رُؤُسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ﴾
حَرَّكُوا اسْتَهْزَؤُوا بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُقْرَأُ بِالتَّخْفِيفِ مِنْ لَوَيْتُ.

4904. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने चचा के साथ था। मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को कहते सुना कि, जो लोग रसूल (ﷺ) के पास हैं उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि वह बिखर जाएँ और अगर अब हम मदीना वापस लौटेंगे तो हमम में से जो इ़ज़्ज़त वाले हैं वो ज़लीलों को बाहर कर देंगे। मैंने उसका ज़िक्र अपने चचा से किया और उन्होंने रसूल (ﷺ) से कहा जब आँहज़रत (ﷺ) ने उन ही की तस्दीक़ कर दी तो मुझे उसका इतना अफ़सोस हुआ कि पहले कभी किसी बात पर न हुआ होगा, मैं ग़म से अपने घर मे बैठ गया। मेरे चचा ने कहा कि तुम्हारा क्या ऐसा ख़्याल था कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें झुठलाया और तुम पर ख़फ़ा हुए हैं? फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना.. अल आयत जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते कि आप बेशक अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाकर इस आयत की तिलावत फ़र्माई और फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी तस्दीक़ नाज़िल कर दी है। (राजेअ़ : 4900)

٤٩٠٤ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولَ يَقُولُ : لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَتَّى يَنْفَضُّوا، وَلَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي فَذَكَرَ عَمِّي لِلنَّبِيِّ ﷺ وَصَدَّقَهُمْ، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ، فَجَلَسْتُ فِي بَيْتِي وَقَالَ عَمِّي : مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَقَتَكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللهِ﴾، وَأَرْسَلَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَرَأَهَا وَقَالَ : ((إِنَّ اللهَ قَدْ صَدَّقَكَ)).
[راجع: ٤٩٠٠]

तशरीह : आँहज़रत (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे, दिलों का हाल सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला जानता है। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने क़समें खा खाकर अपनी बराअत ज़ाहिर की। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी बातों का यक़ीन कर लिया बाद में वह्य इलाही ने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई का झूठ ज़ाहिर फ़र्माया और ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के ब यान की तस्दीक़ फ़र्माई जिससे ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) का दिल मुत्मईन हो गया और मुनाफ़िक़ीन का सूरह मुनाफ़िक़ीन में सारा पोल खोल दिया गया।

बाब 5 : 'सवाउन अलैहिमुस्तग़फ़र्त लहुम अम लम तस्तग़्फ़िर्लहुम लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम .... (अल्आयः)' की तफ़्सीर या'नी,

उनके लिये बराबर है ख़्वाह आप उनके लिये इस्तिग़फ़ार करें या

٥- باب قَوْلِهِ :
﴿سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ اسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْلَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَهُمْ إِنَّ اللهَ لاَ

يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾.

न करें अल्लाह तआला उन्हें किसी हाल में नहीं बख़्शेगा। बेशक अल्लाह तआला ऐसे नाफ़र्मान लोगों को हिदायत नहीं देता।

٤٩٠٥- حدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا فِي غَزَاةٍ قَالَ سُفْيَانُ مَرَّةً فِي جَيْشٍ فَكَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ الأَنصارِي: يا لَلأَنصار، وقال الْمُهَاجِرِيُّ: يَا لَلْمُهَاجِرِينَ. فَسَمِعَ ذَاكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَا بَالُ دَعْوَى جَاهِلِيَّةٍ)). قَالُوا : يَا رَسُولَ اللهِ، كَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ : ((دَعُوهَا فَإِنَّهَا مُنْتِنَةٌ)). فَسَمِعَ بِذَلِكَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ فَقَالَ : فَعَلُوهَا أَمَا وَاللهِ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ: فَقَامَ عُمَرُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعْهُ لاَ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ مُحَمَّدًا يَقْتُلُ أَصْحَابَهُ)). وَكَانَتِ الأَنْصَارُ أَكْثَرَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ، حِينَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ ثُمَّ إِنَّ الْمُهَاجِرِينَ كَثُرُوا بَعْدُ، قَالَ سُفْيَانُ: فَحَفِظْتُهُ مِنْ عَمْرٍو قَالَ عَمْرٌو سَمِعْتُ جَابِرًا كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٥١٨]

4095. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया कि उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया और उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम एक ग़ज़्वा (तबूक़) में थे। सुफ़यान ने एक मर्तबा (बजाय ग़ज़्वा के) जैश (लश्कर) का लफ़्ज़ कहा। मुहाजिरीन में से एक आदमी ने अंस़ार के एक आदमी को लात मार दी। अंस़ारी ने कहा कि या अंस़ार! या'नी ऐ अंस़ारियों! दौड़ो और मुहाजिर ने कहा या मुहाजिरीन! या'नी ऐ मुहाजिरीन! दौड़ो। तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने भी उसे सुना और फ़र्माया क्या क़िस्सा है? ये जाहिलियत की पुकार को छोड़ दो कि ये निहायत नापाक बातें हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने भी ये बात सुनी तो कहा अच्छा अब यहाँ तक नौबत पहुँच गई। अल्लाह की क़सम! जब हम मदीना लौटेंगे तो हमसे इ़ज़्ज़त वाला ज़लीलों को निकालकर बाहर कर देगा। इसकी ख़बर आँहुज़ूर (ﷺ) को पहुँच गई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने खड़े होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह(ﷺ)! मुझे इजाज़त दें कि मैं इस मुनाफ़िक़ को ख़त्म कर दूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उसे छोड़ दो ताकि लोग ये न कहें कि मुहम्मद (ﷺ) अपने साथियों को क़त्ल करा देते हैं। जब मुहाजिरीन मदीनतुल मुनव्वरा मे आए तो अंस़ार की ता'दाद से उनकी ता'दाद कम थी। लेकिन बाद में उन मुहाजिरीन की ता'दाद ज़्यादा हो गई थी। सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने ये ह़दीष़ अ़म्र बिन दीनार से याद की, अ़म्र ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ थे। (राजेअ़ : 3518)

٦- باب قَوْلُهُ : ﴿هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لاَ تُنفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ حَتَّى

बाब 6 : 'हुमुल्लज़ीन यक़ूलून ला तुन्फ़िक़ू (अल्आयः)' की तफ़्सीर या'नी,

यही लोग तो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास

जमा हो रहे हैं, उन पर ख़र्च मत करो। यहाँ तक कि (भूखे रहकर) वो आप ही ख़ुद तितर–बितर हो जाएँ हालाँकि अल्लाह ही के क़ब्ज़े मे आसमान और ज़मीन के ख़ज़ाने हैं लेकिन मुनाफ़िक़ीन ये नहीं समझते।

يَنفَضُّوا﴾ يَتفرَّقُوا ﴿وَ لِلهِ خَزَائِنُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لاَ يَفْقَهُونَ﴾

तश्रीह : अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ का क़ौल दूसरी रिवायत में यूँ है कि हम ही ने तो उनको यहाँ बुलाया और अपने मुल्क मे उनको जगह दी अब वो हम पर ही हुकूमत करना चाहते हैं। एक रिवायत मे है कि उसने यूँ कहा हमारी और इन कुरैश के लोगों की ये मिष़ाल है जैसे किसी शख़्स ने कहा कुत्ते को खिलाओ पिलाओ मोटा करो वो अख़ीर में तुझ ही को खा जाएगा। फिर अपने लोगों के पास आया और कहने लगा कि देखो तुमने उन लोगों को अपने मुल्क में उतारा, अपने माल और जायदाद में इनको शरीक कर लिया ये उसी का बदला है, ख़ुद कर्दा राचे इलाज, अगर तुम उन लोगों से अच्छा सुलूक़ न करते, उनको अपने घरों में न उतारते तो ये और कहीं चले जाते तुम बचे रहते। (वहीदी)

गोया मुनाफ़िक़ीने मदीना मुहाजिरीन को ग़ैर मुल्की तस़व्वुर करके उनको मुल्क बदर करना चाहते थे। आजकल भी यही हाल है कि कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन बहुत से मुक़ामात पर मुसलमानों को ग़ैर मुल्की होने का ताना देते और उनको निकल जाने के लिये कहते रहते हैं मगर जिस तरह मुनाफ़िक़ीने मदीना अपने इरादों मे कामयाब न हो सके इस तरह आजकल के दुश्मनाने इस्लाम भी अपने नापाक इरादों में नाकाम ही रहेंगे मुसलमानो का अक़ीदा तो ये है कि,

हर मुल्क मुल्के मास्त कि मुल्के ख़ुदा-ए-मास्त

4906. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इस्माईल बिन इब्राहीम बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ज़्ल ने बयान किया और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से उनका बयान नक़ल किया कि मुक़ामे हर्रा में जो लोग शहीद कर दिये गये थे उन पर मुझे बड़ा रंज हुआ। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) को मेरे ग़म की ख़बर पहुँचीतो उन्होंने मुझे लिखा कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है, आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि ऐ अल्लाह! अंस़ार की मग़्फ़िरत फ़र्मा और उनके बेटों की भी मग़्फ़िरत फ़र्मा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ज़्ल को इसमें शक था कि आपने अंस़ार के बेटों के बेटों का भी ज़िक्र किया था या नहीं। हज़रत अनस (रज़ि.) से उनकी मज्लिस के हाज़िरीन में से किसी ने सवाल किया तो उन्होंने कहा कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ही वो हैं जिनके सुनने की अल्लाह तआला ने तस्दीक़ की थी।

٤٩٠٦– حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ : حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ عُقْبَةَ عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ الْفَضْلِ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: عَلَى مَنْ أُصِيبَ بِالْحَرَّةِ، فَكَتَبَ إِلَيَّ زَيْدُ بْنُ أَرْقَمَ، وَبَلَغَهُ شِدَّةُ حُزْنِي يَذْكُرُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَلأَبْنَاءِ الأَنْصَارِ))، وَشَكَّ ابْنُ الْفَضْلِ فِي أَبْنَاءِ أَبْنَاءِ الأَنْصَارِ فَسَأَلَ أَنَسًا بَعْضُ مَنْ كَانَ عِنْدَهُ فَقَالَ : هُوَ الَّذِي يَقُولُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَذَا الَّذِي أَوْفَى اللهُ لَهُ بِأُذُنِهِ)).

तश्रीह : हर्रा मदीना का एक मैदान है, 63 हिजरी में जहाँ पर यज़ीदियों ने पड़ाव किया जबकि मदीना मुनव्वरा के लोगों ने यज़ीद की बेअ़त से इंकार कर दिया था। उसने एक फ़ौज भेजी जिसने मदीना मुनव्वरा पहुँचकर वहाँ क़त्ले

क़त्ले आम किया। अंसार की एक बहुत बड़ी ता'दाद इस हादषे में शहीद हो गई थी। हज़रत अनस (रज़ि.) उन दिनों बसरा में थे जब उनको उसकी ख़बर मिली तो बहुत रंजीदा हुए। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) की तस्दीक़ से मुराद यही है कि अल्लाह पाक ने मुनाफ़िक़ों के ख़िलाफ़ बयान देने में उनकी तस्दीक़ के लिये सूरह मुनाफ़िक़ून नाज़िल फ़र्माई थी।

बाब 7 : 'यक़ूलून लइर्रजअना इलल्मदीनति .... अल्आयः' की तफ़्सीर या'नी,

٧- باب قوله:

﴿يَقُولُونَ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لاَ يَعْلَمُونَ﴾

(मुनाफ़िक़ों ने कहा कि) अगर हम अब मदीना लौटकर जाएँगे तो इज़्ज़त वाला वहाँ से ज़लीलों को निकालकर बाहर कर देगा हालाँकि इज़्ज़त तो बस अल्लाह ही के लिये और उसके पैग़म्बर (ﷺ) के लिये और ईमान वालों के लिये है अल्बत्ता मुनाफ़िक़ीन इल्म नहीं रखते।

तशरीह : हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) की कुन्नियत अबू हम्ज़ा है, क़बीला ख़ज़रज से हैं, उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) के ख़ादिमे ख़ास होने का शर्फ़ हासिल है उनकी माँ का नाम उम्मे सुलैम बिन्ते मिल्हान है। जब रसूले करीम (ﷺ) मक्का से हिजरत करके मदीना में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त उनकी उम्र दस साल की थी उनको आँहज़रत की ख़िदमत करने का शर्फ़ मुतवातिर दस साल तक हासिल हुआ। हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में उनको बसरा में मुबल्लिग़ के तौर पर मुक़र्रर फ़र्माया था। बसरा ही में उनका इंतिक़ाल 91 हिजरी में हुआ और बसरा मे ये आख़िरी सहाबी थे एक सौ तीन साल की उम्र पाई। इंतिक़ाल के वक़्त उनके अठहत्तर (78) बेटे और दो बेटियाँ थीं । हदीषे नबवी के ख़ास रिवायत करने वालों में से हैं और उनके शागिर्दों की ता'दाद भी कषीर है।

वफ़ाते नबवी के वक़्त पूरे क़ुर्आन के हाफ़िज़ सब इख़्तिलाफ़ात क़िरात के साथ हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) थे जिनका नाम अवेमिर बिन आमिर अंसारी ख़ज़रजी मशहूर है, दर्दा उनकी बेटी का नाम है। थोड़ी ताख़ीर से इस्लाम लाए मगर मुसलमान होने के बाद बड़े ख़ुलूस का षुबूत दिया और इस्लाम के बड़े फ़क़ीह, आलिम और हकीम षाबित हुए। शाम में सकूनत की और दमिश्क़ में 32 हिजरी में फ़ौत हुए। बहुत लोगों ने आपसे रिवायत की है।

नम्बर दोम पर हाफ़िज़े क़ुर्आन मुआज़ (रज़ि.) हैं जो अंसारी ख़ज़रजी हैं, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है, ये उन सत्तर सहाबियों में शामिल थे, जिन्होंने उक़्बा षानिया (दूसरी घाटी) में रसूले करीम (ﷺ) से इस्लाम पर बेअत की थी। जंगे बद्र और बाद की सब लड़ाइयों में शरीक रहे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको बहुत सी वसिय्यतों के साथ यमन की तरफ़ क़ाज़ी और मुबल्लिग़ बनाकर भेजा था। हज़रत अबू उबैदह इब्ने जर्राह (रज़ि.) की वफ़ात के बाद हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको शाम का हाकिम मुक़र्रर फ़र्माया था। अड़तीस साल की उम्र में अम्वास के ताऊन में 18 हिजरी में इंतिक़ाल हुआ (रज़ियल्लाहु अन्हु)

तीसरे हाफ़िज़े क़ुर्आन हज़रत ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) थे, ये भी अंसारी हैं । जब रसूले करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो उनकी उम्र 11 साल की थी। लिखना पढ़ना जानते थे लिहाज़ा आँहज़रत (ﷺ) ने उनको कातिबे क़ुर्आन पाक मुक़र्रर फ़र्माया। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के ज़माने में क़ुर्आन शरीफ़ जमा करने की ख़िदमत उनको सौंपी गई, जिसे उन्होंने बहुस्न व ख़ूबी अंजाम दिया और हज़रत उष्मान ग़नी (रज़ि.) के ज़माने में भी मुस्हफ़े उष्मानी की तर्तीब मे उनका बड़ा हिस्सा था जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ही के अहद के जमा कर्दा नुस्ख़े की नक़ल थी। छप्पन साल की उम्र पाकर मदीना ही में 45 हिजरी में वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अन्हु।

चौथे सहाबी-ए-क़ुर्आन अबू ज़ैद (रज़ि.) हैं उनको भी ये सआदत हासिल है कि उन्होंने अहदे नबवी ही में सारे क़ुर्आन पाक को हिफ़्ज़ किया था, ये भी अंसारी हैं। हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) उनके भतीजे थे वही उनके वारिष हुए क्योंकि उनकी कोई औलाद न थी। जम्अे क़ुर्आन बअहदे नबवी की सआदत इन ही चार बुज़ुर्गों पर मुन्हसिर नहीं है बल्कि

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और हज़रत सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) और हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) वग़ैरह भी क़ुर्आन पाक के बड़े आलिम फ़ाज़िल बुज़ुर्गतरीन सहाबा हैं। ऐसे ही हज़रत उमर और हज़रत उष्मान ग़नी और हज़रत अली (रज़ि.) को भी क़ुर्आन पाक की ख़िदमत में मुक़ामे ख़ास हासिल है। इन हज़रात के बाद उलमा-ए-इस्लाम ने क़ुर्आन पाक की जो ख़िदमात अंजाम दी हैं वो इस क़द्र बेनज़ीर हैं जिनकी मिषालें मज़ाहिबे आलम में मिलनी महाल हैं। इन ही ख़िदमात का नतीजा है कि क़ुर्आन मजीद आज पूरे चौदह सौ साल गुज़र जाने के बाद आज भी हर्फ़ ब हर्फ़ महफ़ूज़ है और क़यामत तक महफ़ूज़ रहेगा।

रोज़े क़यामत हर कसे हाज़िर शूद बा नामा मन नेज़ हाज़िर मी शवम तफ़्सीरे क़ुर्आन दर बग़ल

(राज़)

ये रिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है, ये भी अंसारी सहाबी हैं। ये अपने वालिद के साथ उक़्बा षानिया में इस्लाम लाए थे। हज़रत जाबिर (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) से बेइंतिहा मुहब्बत थी। ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर तमाम लश्करी बेआब व दाना ख़ंदक़ के खोदने मे मशग़ूल था। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) भी ख़ंदक़ खोद रहे थे। इसी बीच में सरवरे इस्लाम (ﷺ) हाथ में कुदाल लिये हुए एक सख़्त पत्थर के तोड़ने में लगे हुए हैं। शिकमे मुबारक से चादर हटी हुई थी तो देखा कि आपके मुबारक शिकम पर तीन पत्थर बँधे हुए हैं। ये देखकर आँहज़रत (ﷺ) से इजाज़त लेकर घर पहुँचे और बीवी से कहा कि आज ऐसी बात देखी जिस पर सब्र नहीं हो सकता। कुछ हो तो पकाओ और ख़ुद एक बकरी का बच्चा ज़िब्ह करके आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे यहाँ चलकर जो कुछ मौजूद है तनावुल फ़र्माइये। आँहुज़ूर (ﷺ) का तीन रोज़ से फ़ाक़ा था, दा'वत क़ुबूल फ़र्माई और आम मुनादी करा दी कि जाबिर (रज़ि.) ने सब लोगों की दा'वत की है। हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने इंतिज़ाम आपके और दो तीन आदमियों के लिये किया था इसलिये निहायत तंगदिल हुए मगर अदब से ख़ामोश रहे। आँहज़रत (ﷺ) तमाम मज्मअ को लेकर उनके मकान पर तशरीफ़ ले गये। ख़ुद भी खाना नोश फ़र्माया और लोगों ने भी खाया भी बचा रहा। आप (ﷺ) ने उनकी बीवी से फ़र्माया कि ये तुम खाओ और लोगों के यहाँ भेजो क्योंकि लोग भूख में मुब्तला हैं। हज़रत जाबिर (रज़ि.) निहायत सादा मिज़ाज थे सहाबा-ए-किराम (रज़ि.) का एक गिरोह मकान पर मिलने आया। अंदर से रोटी और सिरका लाए और कहा बिस्मिल्लाह इसको नोश फ़र्माइये क्योंकि सिरका की बड़ी फ़ज़ीलत आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्माई है।

4907. हमसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमने ये हदीष अम्र बिन दीनार से याद की, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि हम एक ग़ज़्वा में थे, अचानक मुहाजिरीन के ए क आदमी ने अंसारी के एक आदमी को मार दिया। अंसार ने कहा ऐ अंसारियों ! दौड़ो और मुहाजिर ने कहा, ऐ मुहाजिरीन! दौड़ो। अल्लाह तआला ने ये अपने रसूल (ﷺ) को भी सुनाया। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या बात है? लोगों ने बताया कि एक मुहाजिर ने एक अंसारी को मार दिया है। इस पर अंसारी ने कहा कि ऐ अंसारियों!दौड़ो और मुहाजिर ने कहा कि ऐ मुहाजिरीन! दौड़ो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इस तरह पुकारना छोड़ दो कि ये निहायत नापाक बातें हैं। हज़रत

٤٩٠٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَفِظْنَاهُ مِنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، قَالَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : كُنَّا فِي غَزَاةٍ فَكَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا لَلأَنْصَارِ، وَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ: يَا لَلْمُهَاجِرِينَ، فَسَمَّعَهَا اللهُ رَسُولَهُ ﷺ قَالَ: ((مَا هَذَا؟)). فَقَالُوا: كَسَعَ رَجُلٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا لَلأَنْصَارِ، وَقَالَ الْمُهَاجِرِيُّ: يَا لَلْمُهَاجِرِينَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعُوهَا

فَإِنَّهَا مُنْتِنَةٌ)). قَالَ جَابِرٌ: وَكَانَتِ الأَنْصَارُ حِينَ قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ أَكْثَرَ ثُمَّ كَثُرَ الْمُهَاجِرُونَ بَعْدُ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَوَ قَدْ فَعَلُوا وَاللهِ لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ فَقَالَ عُمَرُ ابْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : دَعْنِي يَا رَسُولَ اللهِ أَضْرِبْ عُنُقَ هَذَا الْمُنَافِقِ. قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((دَعْهُ لاَ يَتَحَدَّثُ النَّاسُ أَنَّ مُحَمَّدًا يَقْتُلُ أَصْحَابَهُ)).[راجع: ٣٥١٨]

जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो शुरू में अंसार की ता'दाद ज़्यादा थी लेकिन बाद में मुहाजिरीन ज़्यादा हो गये थे। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा अच्छा अब नौबत यहाँ तक पहुँच गई है, अल्लाह की क़सम मदीना वापस होकर इज़्ज़त वाले ज़लीलों को बाहर निकाल देंगे। ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इजाज़त हो तो उस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूँ। तो नबी अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं वरना लोग यूँ कहेंगे मुहम्मद (ﷺ) अपने ही साथियों को क़त्ल कराने लगे हैं। (राजेअ़: 3518)

[٦٤] سورة ﴿التغابن﴾

सूरह तग़ाबून की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

وَقَالَ عَلْقَمَةُ عَنْ عَبْدِ اللهِ ﴿وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللهِ يَهْدِ قَلْبَهُ﴾ هُوَ الَّذِي إِذَا أَصَابَتْهُ مُصِيبَةٌ رَضِيَ بِهَا وَعَرَفَ أَنَّهَا مِنَ اللهِ.

अ़ल्क़मा ने अ़ब्दुल्लाह से ये नक़ल किया कि आयत वमय्युअमिन बिल्लाहि और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाता है अल्लाह उसके दिल को नूर हिदायत से रोशन कर देता है, से मुराद वो शख़्स है कि अगर उस पर कोई मुसीबत आ पड़े तो उस पर भी वो राज़ी रहता है बल्कि समझता है कि ये अल्लाह ही की त़रफ़ से है।

ये सूरत मदनी है इसमे 12 आयात और दो उकूअ़ हैं।

[٦٥] سُورَةُ ﴿الطَّلاَقِ﴾

सूरह त़लाक़ की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: وَبَالَ أَمْرِهَا جَزَاءُ أَمْرِهَا

मुजाहिद ने कहा कि वबाला अम्रिहा अय्य जज़ाअ अम्रिहा या'नी उसके गुनाह का वबाल जो सज़ा की शक्ल में है उसे भुगतना होगा, वो मुराद है।

ये सूरत मदनी है इसमे 12 आयात और दो रूकूअ़ हैं।

٤٩٠٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ وَهْيَ حَائِضٌ، فَذَكَرَ عُمَرُ لِرَسُولِ اللهِ

4908. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको सालिम ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने अपनी बीवी आमना बिन्ते ग़िफ़ार को जबकि वो ह़ाइज़ा थीं त़लाक़ दे दी। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया। आप

(ﷺ) इस पर बहुत ग़ुस्सा हुए और फ़र्माया कि वो उनसे (अपनी बीवी से) रुजूअ कर लें और अपने निकाह में रखें यहाँ तक कि वो माहवारी से पाक हो जाए फिर माहवारी आए और फिर वो उससे पाक हो, अब अगर वो त़लाक़ मुनासिब समझो तो उसकी पाकी (तुहर) के ज़माने में उनके साथ हमबिस्तरी से पहले त़लाक़ दे सकते हैं पस यही वो वक़्त है जिसमें अल्लाह तआला ने (मर्दों को) हुक्म दिया है कि इसमें या'नी ह़ालते तुहर में त़लाक़ दें। (दीगर मक़ाम : 5251, 5252, 5253, 5258, 5264, 5332, 5333, 7160)

ﷺ فَتَغَيَّظَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((لِيُرَاجِعْهَا ثُمَّ يُمْسِكْهَا حَتَّى تَطْهُرَ، ثُمَّ تَحِيضَ فَتَطْهُرَ فَإِنْ بَدَا لَهُ أَنْ يُطَلِّقَهَا فَلْيُطَلِّقْهَا طَاهِرًا قَبْلَ أَنْ يَمَسَّهَا، فَتِلْكَ الْعِدَّةُ كَمَا أَمَرَهُ اللهُ)).[أطرافه في : ٥٢٥١، ٥٢٥٢، ٥٢٥٣، ٥٢٥٨، ٥٢٦٤، ٥٣٣٢، ٥٣٣٣، ٧١٦٠].

तशरीह : फ़िक़्ही इस्तिलाह में त़लाक़े शरई वो है कि तीन तुहर तक या'नी ह़ालते त़हर में जबकि औरत हैज़ से न हो त़लाक़ दी जाए। इस त़रह़ अगर मुतवातिर तीन माह तक तीन त़लाक़ें कोई भी अपनी औरत को दे दे तो फिर वो औरत उसके निकाह़ से बिलकुल बाहर हो जाती है और ह़त्ता तन्किह़ ज़ौजन ग़ैरुहू आयत के तह़त वो औरत उसके निकाह़ में दोबारा नहीं आ सकती। ये तीन त़लाक़ जो मरव्वजा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ मर्द तीन बार एक ही मजलिस में अपनी औरत को त़लाक़ दे दे फिर फ़त्वा त़लब करे, अइम्म-ए-अहले ह़दीष़ के नज़दीक एक ही त़लाक़ के हुक्म में हैं और वो औरत इद्दत में दोबारा इस शौहर के निकाह़ में आ सकती है। मगर अकष़र फ़ुक़हा-ए-अह़नाफ़ उनको तीन त़लाक़ क़रार देकर उस औरत को मर्द से जुदा करा देते हैं और उसको ह़लाला का हुक्म देते हैं। ह़ालाँकि ऐसा ह़लाला कराने वालों पर शरीअत में ला'नत आई है। फ़ुक़हा-ए-अह़नाफ़ का ये फ़त्वा अइम्म-ए-अहले ह़दीष़ के नज़दीक बिलकुल ग़लत़ है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त के दौर में सियासी मस्लिह़त के तह़त ऐसा ऑर्डर जारी कर दिया था जो मह़ज़ वक़्ती था जो उ़लमा आजकल बेशतर इस त़रह़ मुत़ल्लक़ा औरतों को जुदा करा देते हैं उनको ग़ौर करना चाहिये कि वो इस त़रह़ कितनी औरतों पर ज़ुल्म कर रहे हैं। अल्लाह इनको नेक समझ अ़त़ा करे (आमीन)। आज आख़िरी ज़ीक़अ़दा 1393 हिजरी में ये नोट ब सिलसिला ब क़याम सूरत शहर ह़वाल-ए- क़लम किया गया अल्ह़म्दुलिल्लाह दिसम्बर 1973 पर्चा नूरुल ईमान में कुछ उ़लमा-ए-अह़नाफ़ व अहले ह़दीष़ का मुत्तफ़क़ा फ़त्वा शाये किया गया है जो अह़मदाबाद के सेमिनार मुनअ़क़िदा में लिखा गया था जिसमें उसका मुत्तफ़क़ा ह़ल निकाला गया है।

बाब 2 : 'व उलातुल अह़मालि अजलहुन्न अंय्यज़अन ह़मलहुन्न' की तफ़्सीर या'नी,

सो ह़मल वालियों की इद्दत उनके बच्चे का पैदा हो जाना है और जो कोई अल्लाह से डरे अल्लाह उसके काम में आसानी पैदा कर देगा और उलातुल अह़माल से मुराद ज़ातुल ह़मल है जिसके मा'नी ह़मल वाली औरत है।

٢- باب : ﴿وَأُولاَتُ الأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَمَنْ يَتَّقِ اللهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا﴾ وَأُولاَتُ الأَحْمَالِ وَاحِدُهَا ذَاتُ حَمْلٍ.

4909. हमसे सअ़द बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह़्या ने बयान किया, कहा मुझे अबू सलाम बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि एक शख़्स़ इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास आया अबू हुरैरह (रज़ि.) भी उनके पास बैठे हुए थे। आने वाले ने पूछा कि आप मुझे उस औरत के बारे में मसला बताइये जिसने अपने शौहर

٤٩٠٩- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ وَأَبُو هُرَيْرَةَ جَالِسٌ عِنْدَهُ فَقَالَ: أَفْتِنِي فِي امْرَأَةٍ وَلَدَتْ بَعْدَ زَوْجِهَا بِأَرْبَعِينَ لَيْلَةً فَقَالَ ابْنُ

عَبَّاسٍ: آخِرُ الأَجَلَيْنِ قُلْتُ أَنَا: ﴿وَأُولَاتُ الأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: أَنَا مَعَ ابْنِ أَخِي، يَعْنِي أَبَا سَلَمَةَ، فَأَرْسَلَ ابْنُ عَبَّاسٍ غُلاَمَهُ كُرَيْبًا إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ يَسْأَلُهَا، فَقَالَتْ : قُتِلَ زَوْجُ سُبَيْعَةَ الأَسْلَمِيَّةِ وَهِيَ حُبْلَى، فَوَضَعَتْ بَعْدَ مَوْتِهِ بِأَرْبَعِينَ لَيْلَةً، فَخُطِبَتْ فَأَنْكَحَهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ أَبُو السَّنَابِلِ فِيمَنْ خَطَبَهَا.

[طرفه في : ٥٣١٨].

की वफ़ात के चार महीने बाद बच्चा जना? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि जिसका शौहर फ़ौत हो वो इद्दत की दो मुद्दतों में जो मुद्दत लम्बी हो उसकी रिआयत करे (अबू सलमा ने बयान किया कि) मैंने अ़र्ज़ किया कि (क़ुर्आन मजीद में तो उनकी इद्दत का ये हुक्म है) ह़मल वालियों की इद्दत उनके ह़मल का पैदा हो जाना है। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैं भी इस मसले में अपने भतीजे के साथ ही हूं। उनकी मुराद अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान से थी आख़िर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने गुलाम कुरैब को उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) की ख़िदमत में भेजा यही मसला पूछने के लिये। उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने बताया कि सबीआ़ अस्लमिया के शौहर (सअ़द बिन ख़ौला रज़ि) शहीद कर दिये गये थे वो उस वक़्त ह़ामला थीं शौहर की मौत के चालीस दिन बाद उनके यहाँ बच्चा पैदा हुआ, फिर उनके पास निकाह़ का पैग़ाम पहुँचा और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनका निकाह़ कर दिया। अबुस सनाबिल भी उनके पास पैग़ामे निकाह़ भेजने वालों में से थे। (दीगर मक़ाम : 5318)

इस बारे में स़ह़ीह़ मसला वही है जो आयत में मज़्कूर है या'नी ह़मल वाली औरतें मुत़ल्लक़ा हों तो उनकी इद्दत वज़ए ह़मल है। बच्चा पैदा होने पर वो चाहें तो निकाहे ष़ानी कर सकती हैं ख़्वाह बच्चा कम से कम मुद्दत में पैदा हो जाए या देर में बहरहाल फ़त्वा स़ह़ीह़ यही है।

٤٩١٠– وَقَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ : وَأَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ يَزِيدَ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ: كُنْتُ فِي حَلْقَةٍ فِيهَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي لَيْلَى وَكَانَ أَصْحَابُهُ يُعَظِّمُونَهُ فَذَكَرَ آخِرَ الأَجَلَيْنِ، فَحَدَّثْتُ بِحَدِيثِ سُبَيْعَةَ بِنْتِ الْحَارِثِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، قَالَ : فَضَمَّزَ لِي بَعْضُ أَصْحَابِهِ، قَالَ مُحَمَّدٌ فَفَطِنْتُ لَهُ فَقُلْتُ إِنِّي إِذًا لَجَرِيءٌ، إِنْ كَذَبْتُ عَلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ وَهُوَ فِي نَاحِيَةِ الْكُوفَةِ فَاسْتَحْيَى وَقَالَ لَكِنْ عَمُّهُ لَمْ يَقُلْ ذَاكَ، فَلَقِيتُ أَبَا عَطِيَّةَ مَالِكَ بْنَ عَامِرٍ فَسَأَلْتُهُ فَذَهَبَ يُحَدِّثُنِي

4910. और सुलैमान बिन ह़र्ब और अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने और उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि मैं एक मजलिस में जिसमें अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला भी थे मौजूद था। उनके शागिर्द उनकी बहुत इ़ज़्ज़त किया करते थे। मैंने वहाँ सुबैआ़ बिन्तुल ह़ारिष़ की ह़दीष़ को अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) से बयान किया कि इस पर उनके शागिर्द ने ज़ुबान और आँखों के इशारे से होंठ काटकर मुझे तम्बीह की। मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि मैं समझ गया और कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा कूफ़ा में अभी ज़िन्दा मौजूद हैं। अगर मैं उनकी त़रफ़ भी झूठ निस्बत करता हूँ तो बड़ी जुर्अत की बात होगी मुझे तम्बीह करने वाले स़ाह़ब इस पर शर्मिन्दा हो गये और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला ने कहा लेकिन उनके चचा तो ये बात नहीं करते थे (इब्ने सीरीन ने बयान किया कि) फिर मैं अबू अ़त़िया मालिक बिन आ़मिर से

حديثَ سُبَيْعَةَ، فَقُلْتُ هَلْ سَمِعْتَ عَنْ عَبْدِ اللهِ فِيهَا شَيْئاً؟ فَقَالَ: كُنَّا عِنْدَ عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ : أَتَجْعَلُونَ عَلَيْهَا التَّغْلِيظَ وَلاَ تَجْعَلُونَ عَلَيْهَا الرُّخْصَةَ؟ لَنَزَلَتْ سُورَةُ النِّسَاءِ الْقُصْرَى بَعْدَ الطُّولَى ﴿وَأُولاَتُ الأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾. [راجع: ٤٥٣٢]

मिला और उनसे ये मसला पूछा वो भी सुबैआ वाली ह़दीष़ बयान करने लगे लेकिन मैंने उनसे कहा आपने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि) से भी इस सिलसिले में कुछ सुना है? उन्हों ने बयान किया कि हम ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे तो उन्होंने कहा क्या तुम इस पर (जिसके शौहर का इंतिक़ाल हो गया और वो ह़ामिला हो। इद्दत की मुद्दत को तूल देकर) सख़्ती करना चाहते हो और रुख़्सत व सहूलत देने के लिये तैयार नहीं, बात ये है कि छोटी सूरह निसा या'नी (सूरह त़लाक़) बड़ी सूरह निसा के बाद नाज़िल हुई है और कहा व उलातुल अह़मालि अजलहुन्ना अय्ँ यज़अना ह़मलहुन्ना.. अल आयत और ह़मल वालियों की इद्दत उनके ह़मल का पैदा हो जाना है। (राजेअ़ : 4532)

तश्रीह़ : लम्बी मुद्दत से जिसका शौहर फ़ौत हो गया हो, चार माह और दस दिन मुराद हैं। ह़ामला औरत जिसका शौहर वफ़ात पा गया हो उनकी इद्दत के बारे में जुम्हूर का यही मसलक है कि बच्चा का पैदा हो जाना ही उसकी इद्दत है और उसके बाद वो दूसरा निकाह़ कर सकती है ख़्वाह मुद्दत त़वील हो या मुख़्तसर। ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) का भी यही मसलक था पस उनके बारे मे ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला का ख़्याल स़ह़ीह़ नहीं था जैसा कि मालिक बिन आ़मिर की रिवायत से ज़ाहिर होता है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) मुद्दते त़वील के क़ाइल थे मगर ये ख़्याल उनका स़ह़ीह़ नहीं था। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि) ने ह़ज़रत अबू सलमा (रज़ि.) को आ़म अ़रबी मुह़ावरा के मुत़ाबिक़ अपना भतीजा कह दिया जबकि उनमें कोई ज़ाहिरी क़राबत न थी।

[٦٦] سُورَةُ ﴿التَّحْرِيمِ﴾

सूरह तह़रीम की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاةَ أَزْوَاجِكَ وَاللهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾.

ऐ नबी! जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिये ह़लाल किया है उसे आप अपने लिये क्यूँ ह़राम क़रार दे रहे हैं। मह़ज़ अपनी बीवियों की ख़ुशी ह़ासिल करने के लिये ह़ालाँकि ये आपके लिये ज़ेबा नहीं है और अल्लाह बड़ा ही बख़्शने वाला बड़ी ही रह़म करने वाला है।

ये सूरह मदनी है और इसमें बारह आयात और दो रुकूअ़ हैं।

٤٩١١ - حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنِ ابْنِ حَكِيمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ فِي الْحَرَامِ يُكَفِّرُ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ أُسْوَةٌ

हमसे मुआ़ज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सई़द क़त्त़ान ने, उनसे इब्ने ह़कीम ने, उनसे सई़द बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अगर किसी ने अपने ऊपर कोई ह़लाल चीज़ ह़राम कर ली तो उसका कफ़्फ़ारा देना होगा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा लक़द काना लकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन ह़सना या'नी बेशक तुम्हारे लिये तुम्हारे रसूल की

ज़िंदगी बेहतरीन नमूना है। (दीगर मक़ाम : 5266)

حَسَنَةٌ﴾. [طرفه في: ٥٢٦٦].

4912. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने, उन्हें अ़ता ने, उन्हें उ़बैद बिन उ़मैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) के घर में शहद पीते और वहाँ ठहरते थे फिर मैंने और ह़फ़्सा (रज़ि.) ने ऐसे किया कि हममें से जिसके पास भी आँह़ज़रत (ﷺ) (ज़ैनब के यहाँ से शहद पी कर आने के बाद) दाख़िल हों तो वो कहे कि क्या आपने प्याज खाई है। आप (ﷺ) के मुँह से मग़ाफ़ीर की बू आती है चुनाँचे जब आप तशरीफ़ लाए तो मंसूबा के तह़त यही कहा गया, आँह़ज़रत (ﷺ) बदबू को बहुत नापसंद करते थे। इसलिये आपने फ़र्माया मैंने मग़ाफ़ीर नहीं खाई है अल्बत्ता ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) के यहाँ से शहद पिया था लेकिन अब उसे भी हर्गिज़ नहीं पीऊँगा। मैंने इसकी क़सम खा ली है लेकिन तुम किसी से इसका ज़िक्र न करना।

٤٩١٢- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ عُمَيْرٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَشْرَبُ عَسَلاً عِنْدَ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ، وَيَمْكُثُ عِنْدَهَا فَوَاطَيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ عَنْ أَيَّتُنَا دَخَلَ عَلَيْهَا فَلْتَقُلْ لَهُ أَكَلْتَ مَغَافِيرَ إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرَ قَالَ: ((لاَ، وَلَكِنِّي كُنْتُ أَشْرَبُ عَسَلاً عِنْدَ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ فَلَنْ أَعُودَ لَهُ وَقَدْ حَلَفْتُ لاَ تُخْبِرِي بِذَلِكَ أَحَدًا)).

इस पर मज़्कूरा आयात नाज़िल हुई। मग़ाफ़ीर एक बदबूदार गोंद है जो एक पेड़ से झड़ता है।

तशरीह : आँह़ज़रत (ﷺ) बड़े लतीफ़ मिज़ाज और निफ़ासत (सफ़ाई) पसंद थे आपको इससे नफ़रत थी कि आपके जिस्म या कपड़ों से किसी क़िस्म की बदबू आए हमेशा ख़ुश्बू को पसंद किया करते थे और ख़ुश्बू का इस्तेमाल करते थे। जिधर आप गुज़रते थे वहाँ के दरो दीवार मुअ़त्तर हो जाते। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ये इस्तिलाह़ इसलिये की कि आप ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) के पास जाना वहाँ ठहरे रहना कम कर दें। इसी वाक़िये पर आयात **या अय्युहन्नबिय्यु लिमा तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु** (सूरह तह़रीम : 1) नाज़िल हुईं और क़समों के तोड़ने और कफ़्फ़ारा अदा करने का हुक्म हुआ। इस वाक़िये में स़दाक़ते मुह़म्मदी की बड़ी दलील है अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप अल्लाह के सच्चे रसूल न होते तो इस ज़ाती वाक़िये को इस त़रह़ इज़्हार में न लाते बल्कि पोशीदा रख छोड़ते, बरख़िलाफ़ इसके अल्लाह पाक ने बज़रिये वह्य इसे क़ुर्आन शरीफ़ में नाज़िल कर दिया जो क़यामत तक इस कमज़ोरी की निशानदेही करता रहेगा। इसमें ईमान वालों के लिये बहुत से अस्बाक़ मुज़मर (पोशीदा) हैं अल्लाह पाक समझने और ग़ौरो–फ़िक्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता करे, आमीन। ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) उम्महातुल मोमिनीन में से हैं उनकी वालिदा का नाम उमय्या है, जो अ़ब्दुल मुत्तलिब की बेटी हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) की फूफी हैं। ये ज़ैद बिन ह़ारषा के निकाह़ में थीं जो आँह़ज़रत (ﷺ) के आज़ादकर्दा गुलाम थे फिर ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने उनको त़लाक़ दे दी थी। उसके बाद 8 हिजरी में ये ह़ज़रत रसूले करीम (ﷺ) के ह़रम में दाख़िल हुईं। ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से आप (ﷺ) की वफ़ात के बाद सबसे पहले इंतिक़ाल करने वाली हैं। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) उनकी शान में फ़र्माती हैं कि ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) सबसे ज़्यादा दीनदार, सबसे बढ़कर तक़्वा शिआ़र, सबसे ज़्यादा सच बोलने वाली हैं। 20 हिजरी या 21 हिजरी में बउ़म्र 53 साल मदीना में वफ़ात पाई। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) और ह़ज़रत उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) वग़ैरह उनसे रिवायते ह़दीष़ करती हैं।

बाब 2 : 'तब्तगी मर्ज़ात अज़्वाजिक ... अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب

﴿تَبْتَغِي مَرْضَاةَ أَزْوَاجِكَ قَدْ فَرَضَ اللهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ﴾

ऐ नबी! आप अपनी बीवियों की ख़ुशी हासिल करना चाहते हैं अल्लाह ने तुम्हारे लिये क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है।

٤٩١٣ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ أَنَّهُ قَالَ: مَكَثْتُ سَنَةً أُرِيدُ أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ عَنْ آيَةٍ فَمَا أَسْتَطِيعُ أَنْ أَسْأَلَهُ هَيْبَةً لَهُ، حَتَّى خَرَجَ حَاجًّا فَخَرَجْتُ مَعَهُ، فَلَمَّا رَجَعْنَا وَكُنَّا بِبَعْضِ الطَّرِيقِ، عَدَلَ إِلَى الأَرَاكِ لِحَاجَةٍ لَهُ، قَالَ فَوَقَفْتُ لَهُ حَتَّى فَرَغَ، ثُمَّ سِرْتُ مَعَهُ فَقُلْتُ لَهُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ مَنِ اللَّتَانِ تَظَاهَرَتَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ أَزْوَاجِهِ، فَقَالَ: تِلْكَ حَفْصَةُ وَعَائِشَةُ، قَالَ فَقُلْتُ: وَاللهِ إِنْ كُنْتُ لأُرِيدُ أَنْ أَسْأَلَكَ عَنْ هَذَا مُنْذُ سَنَةٍ فَمَا أَسْتَطِيعُ هَيْبَةً لَكَ، قَالَ: فَلاَ تَفْعَلْ مَا ظَنَنْتَ أَنَّ عِنْدِي مِنْ عِلْمٍ فَاسْأَلْنِي فَإِنْ كَانَ لِي عِلْمٌ خَبَّرْتُكَ بِهِ، قَالَ ثُمَّ قَالَ عُمَرُ: وَاللهِ إِنْ كُنَّا فِي الْجَاهِلِيَّةِ مَا نَعُدُّ لِلنِّسَاءِ أَمْرًا حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ فِيهِنَّ مَا أَنْزَلَ وَقَسَمَ لَهُنَّ مَا قَسَمَ، قَالَ: فَبَيْنَا فِي أَمْرٍ أَتَأَمَّرُهُ إِذْ قَالَتِ امْرَأَتِي لَوْ صَنَعْتَ كَذَا وَكَذَا، قَالَ فَقُلْتُ لَهَا: مَا لَكِ وَلِمَا هَهُنَا، فِيمَا تَكَلُّفُكِ فِي أَمْرٍ أُرِيدُهُ فَقَالَتْ لِي عَجَبًا لَكَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ مَا تُرِيدُ أَنْ تُرَاجَعَ أَنْتَ وَإِنَّ ابْنَتَكَ لَتُرَاجِعُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

4913. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे उ़बैद बिन हुनैन ने कि उन्होंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को हदीष़ बयान करते हुए सुना, उन्होंने कहा एक आयत के बारे में हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से पूछने के लिये एक साल तक में तरद्दुद में रहा, उनका इतना डर ग़ालिब था कि मैं उनसे न पूछ सका। आख़िर वो हज्ज के लिये गये तो मैं भी उनके साथ हो लिया, वापसी में जब हम रास्ते में थे तो रफ़अ़े हाजत के लिये वो पीलू के पेड़ में गये। बयान किया कि मैं उनके इंतिज़ार में खड़ा रहा जब वो फ़ारिग़ होकर आए तो फिर मैं उनके साथ चला उस वक़्त मैंने अ़र्ज़ किया। अमीरुल मोमिनीन! उम्महातुल मोमिनीन में वो कौन औ़रत थीं जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के लिये मुत्तफ़क़ा मंसूबा बनाया था? उन्होंने बतलाया कि हफ़्सा और आ़इशा (रज़ि.) थीं। बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम! मैं ये सवाल आपसे करने के लिये एक साल से इरादा कर रहा था लेकिन आपके रुअ़ब की वजह से पूछने की हिम्मत नही होती थी। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा ऐसा न किया करो जिस मसले के बारे में तुम्हारा ख़्याल हो कि मेरे पास इस सिलसिले में कोई इल्म है तो उसे पूछ लिया करो, अगर मेरे पास उसका कोई इल्म नहीं होगा तो तुम्हें बता दिया करूँगा। बयान किया कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा अल्लाह की क़सम! जाहिलियत में हमारी नज़र में औ़रतों की कोई इ़ज़्ज़त न थी। यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने उनके बारे में वो अहकाम नाज़िल किये जो नाज़िल करने थे और उनके हुक़ूक़ मुक़र्रर किये जो मुक़र्रर करने थे। बतलाया कि एक दिन में सोच रहा था कि मेरी बीवी ने मुझसे कहा कि बेहतर है अगर तुम इस मामले को फ़लाँ फ़लाँ तरह करो, मैंने कहा तुम्हारा इसमें क्या काम। मामला मेरे बारे में है तुम इसमें दख़ल देने वाली कौन होती हो? मेरी बीवी ने इस पर कहा ख़त्ताब के बेटे! तुम्हारे इस तर्ज़े अ़मल पर हैरत है तुम अपनी बातों का जवाब बर्दाश्त नहीं कर सकते तुम्हारी लड़की (हफ़्सा रज़ि.) तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को भी जवाब देती हैं एक दिन तो

उसने आँहज़रत (ﷺ) को ग़ुस्सा भी कर दिया था। ये सुनकर हज़रत उ़मर (रज़ि.) खड़े हो गये और अपनी चादर ओढ़कर हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के घर पहुँचे और फ़र्माया, बेटी! क्या तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) की बातों का जवाब देती हो, यहाँ तक कि एक दिन तुमने आँहज़रत (ﷺ) को दिन भर नाराज़ भी रखा है। हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया हाँ अल्लाह की क़सम! हम आँहुज़ूर (ﷺ) को कभी जवाब देते हैं। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने कहा जान लो मैं तुम्हें अल्लाह की सज़ा और उसके रसूल की सज़ा (नाराज़गी) से डराता हूँ। बेटी! उस औरत की वजह से धोखे में न आ जाना जिसने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की मुहब्बत हासिल कर ली है। उनका इशारा हज़रत आइशा (रज़ि.) की तरफ़ था कहा कि फिर मैं वहाँ से निकलकर उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास आया क्योंकि वो भी मेरी रिश्तेदार थीं। मैंने उनसे भी बातचीत की उन्होंने कहा इब्ने ख़त्ताब (रज़ि)! तअ़ज्जुब है कि आप हर मामले में दख़ल अंदाज़ी करते हैं और आप चाहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) और उनकी अज़्वाज के मामले में भी दख़ल दें। अल्लाह की क़सम! उन्होंने मेरी ऐसी गिरफ़्त की कि मेरे ग़ुस्से को ठण्डा कर दिया, मैं उनके घर से बाहर निकल आया। मेरे एक अंसारी दोस्त थे, जब मैं आँहज़रत (ﷺ) की मजलिस में हाज़िर न होता तो वो मजलिस की तमाम बातें मुझसे आकर बताया करते और जब वो हाज़िर न होते तो मैं उन्हें आकर बताया करता था। उस ज़माने में हमें ग़स्सान के बादशाह की तरफ़ से डर था ख़बर मिली थी कि वो मदीना पर चढ़ाई करने का इरादा कर रहा है, उस ज़माने में कई ईसाई व ईरानी बादशाह ऐसा ग़लत घमण्ड रखते थे कि ये मुसलमान क्या हैं हम जब चाहेंगे उनका सफ़ाया कर देंगे मगर ये सारे ख़्यालात ग़लत षाबित हुए अल्लाह ने इस्लाम को ग़ालिब किया। चुनाँचे हमको हर वक़्त यही ख़तरा रहता था, एक दिन अचानक मेरे अंसारी दोस्त ने दरवाज़ा खटखटाया और कहा खोलो! खोलो! खोलो! मैंने कहा मा'लूम होता है ग़स्सानी आ गये। उन्होंने कहा बल्कि इससे भी ज़्यादा अहम मामला पेश आ गया है, वो ये कि रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी बीवियों से अलैहिदगी (अलगाव) इख़्तियार कर ली है। मैंने कहा हफ़्सा और आइशा (रज़ि.) की नाक ग़ुबार

وَسَلَّمَ حَتَّى يَظَلَّ يَوْمَهُ غَضْبَانَ. فَقَامَ عُمَرُ فَأَخَذَ رِدَاءَهُ مَكَانَهُ حَتَّى دَخَلَ عَلَى حَفْصَةَ، فَقَالَ لَهَا : يَا بُنَيَّةُ إِنَّكِ لَتُرَاجِعِينَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَظَلَّ يَوْمَهُ غَضْبَانَ ؟ فَقَالَتْ حَفْصَةُ: وَاللهِ إِنَّا لَنُرَاجِعُهُ. فَقُلْتُ: تَعْلَمِينَ إِنِّي أُحَذِّرُكِ عُقُوبَةَ اللهِ. وَغَضَبَ رَسُولِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. يَا بُنَيَّةُ لاَ يَغُرَّنَّكِ هَذِهِ الَّتِي أَعْجَبَهَا حُسْنُهَا حُبُّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِيَّاهَا يُرِيدُ عَائِشَةَ قَالَ : ثُمَّ خَرَجْتُ حَتَّى دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ لِقَرَابَتِي مِنْهَا، فَكَلَّمْتُهَا فَقَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ، عَجَبًا لَكَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ دَخَلْتَ فِي كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى تَبْتَغِي أَنْ تَدْخُلَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَزْوَاجِهِ فَأَخَذَتْنِي وَاللهِ أَخْذًا كَسَرَتْنِي عَنْ بَعْضِ مَا كُنْتُ أَجِدُ. فَخَرَجْتُ مِنْ عِنْدِهَا وَكَانَ لِي صَاحِبٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِذَا غِبْتُ أَتَانِي بِالْخَبَرِ، وَإِذَا غَابَ كُنْتُ أَنَا آتِيهِ بِالْخَبَرِ وَنَحْنُ نَتَخَوَّفُ مَلِكًا مِنْ مُلُوكِ غَسَّانَ، ذُكِرَ لَنَا أَنَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَسِيرَ إِلَيْنَا فَقَدِ امْتَلأَتْ صُدُورُنَا مِنْهُ، فَإِذَا صَاحِبِي الأَنْصَارِيُّ يَدُقُّ الْبَابَ فَقَالَ: افْتَحِ افْتَحْ. فَقُلْتُ جَاءَ الْغَسَّانِيُّ فَقَالَ : بَلْ أَشَدُّ مِنْ ذَلِكَ اعْتَزَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَزْوَاجَهُ فَقُلْتُ: رَغِمَ أَنْفُ حَفْصَةَ وَعَائِشَةَ فَأَخَذْتُ ثَوْبِي فَأَخْرُجُ

حَتَّى جِئْتُ فَإِذَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَشْرُبَةٍ لَهُ يرقى عَلَيْهَا بِعُجْلَةٍ، وَغُلاَمٌ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَسْوَدُ عَلَى رَأْسِ الدَّرَجَةِ فَقُلْتُ لَهُ : قُلْ هَذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَأَذِنَ لِي قَالَ عُمَرُ: فَقَصَصْتُ عَلَى رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَذَا الْحَدِيثَ فَلَمَّا بَلَغْتُ حَدِيثَ أُمِّ سَلَمَةَ تَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِنَّهُ لَعَلَى حَصِيرٍ مَا بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ شَيْءٌ، وَتَحْتَ رَأْسِهِ وِسَادَةٌ مِنْ اَدَمٍ حَشْوُهَا لِيفٌ، وَإِنَّ عِنْدَ رِجْلَيْهِ قَرَظًا مَصْبُوبًا، وَعِنْدَ رَأْسِهِ أَهَبٌ مُعَلَّقَةٌ، فَرَأَيْتُ أَثَرَ الْحَصِيرِ فِي جَنْبِهِ فَبَكَيْتُ فَقَالَ: ((مَا يُبْكِيكَ؟)) فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ كِسْرَى وَقَيْصَرَ فِيمَا هُمَا فِيهِ وَأَنْتَ رَسُولُ اللهِ فَقَالَ : ((أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ لَهُمُ الدُّنْيَا وَلَنَا الآخِرَةُ)).

[راجع: ٨٩]

आलूद हो। चुनाँचे मैंने अपना कपड़ा पहना और बाहर निकल आया। मैंजब पहुँचा तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने बालाख़ाने में तशरीफ़ रखते थे जिस पर सीढ़ी से चढ़ा जाता था। आँहज़रत (ﷺ) का एक हब्शी गुलाम (रिबाह) सीढ़ी के सिरे पर मौजूद था, मैंने कहा आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ करो कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आया है और अंदर आने की इजाज़त चाहता है। मैंने आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचकर अपना सारा वाक़िया सुनाया। जब मैं हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की बातचीत पर पहुँचा तो आपको हंसी आ गई। उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) खजूर की एक चटाई पर तशरीफ़ रखते थे आपके जिस्मे मुबारक और उस चटाई के दरम्यान कोई और चीज़ नहीं थी आपके सर के नीचे एक चमड़े का तकिया था। जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। पैर की त़रफ़ कीकर के पत्तों का ढेर था और सर की त़रफ़ मशकीज़ा लटक रहा था। मैंने चटाई के निशानात आपके पहलू पर देखे तो रो पड़ा। आपने फ़र्माया, किस बात पर रोने लगे हो? मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़ैसर व किसरा को दुनिया का हर त़रह का आराम मिल रहा है, आप अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं (आप फिर ऐसी तंग ज़िंदगी गुज़ारते हैं)। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इस पर ख़ुश नहीं हो कि उनके हिस़्से में दुनिया है और हमारे हिस़्से में आख़िरत है। (राजेअ़ : 89)

तश्रीह : रिवायत में ज़िम्नी त़ौर पर बहुत सी बातें ज़िक्र में आ गई हैं ख़ास़ त़ौर पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने फ़ारूक़ी जलाल का बयान बड़े ऊँचे लफ़्ज़ों में बयान फ़र्माया है इस पर मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम का नोट दर्ज ज़ेल है

हैबते हक़ सत ईं अज़ ख़ल्क़ नीस्त
हैबत ईं मर्द स़ाहबे दल्क़ नीस्त

हज़रत उ़मर का जाहो-जलाल ऐसा ही था ये अल्लाह की त़रफ़ से था इतना सख़्ततरीन रुअब कि मुवाफ़िक़ मुख़ालिफ़ सब थर्राते रहते थे। मुक़ाबला तो क्या चीज़ है मुक़ाबले के ख़्याल की भी किसी को जुर्अत नहीं होती। अगर हज़रत उ़मर (रज़ि.) दस बारह साल और ज़िन्दा रहते तो सारी दुनिया में इस्लाम ही इस्लाम नज़र आता। हज़रत उ़मर (रज़ि.) के मुख़ालिफ़ीन जो शिया और रवाफ़िज़ हैं। वो भी आपके हुस्ने इंतिज़ाम और सियासत की अच्छाई और जलाल और दबदबे के मुअ़तरिफ़ हैं। एक मज्लिस में चंद राफ़ज़ी बैठे हुए जनाब उ़मर (रज़ि.) की शान में कुछ बेअदबी की बातें कर रहे थे, उन्हीं में से एक इंसाफ़ पसन्द शख़्स़ ने कहा कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) को इंतिक़ाल किये हुए आज तेरह सौ साल गुज़र चुके हैं अब

तुम उनकी बुराई करते हो भला सच कहना अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) एक तलवार काँधे पर रखे हुए इस वक़्त तुम्हारे सामने आ जाएँ तो तुम ऐसी बातें कर सकोगे? उन्होंने इक़रार किया कि अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) सामने आ जाएँ तो हमारे मुँह से बात न निकले (रज़ि.)। उस मौक़े पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का बयान दूसरी रिवायत में यूँ है जब मैं आपके पास पहुँचा देखा तो आपके चेहरे पर मलाल मा'लूम होता था मैंने इधर उधर की बातें शुरू कीं गोया आपका दिल बहलाया फिर ज़िक्र करते करते मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी बीवी अगर मुझसे बढ़ बढ़कर कुछ मांगे तो मैं उसकी गर्दन ही तोड़ डालूँ, इस पर आप हंस दिये आप (ﷺ) का रंज जाता रहा। सुब्ह़ानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की दानाई और लियाक़त और इल्मे मजलिसी पर आफ़रीं। मुसलमानों! देखो पैग़म्बर (ﷺ) की मुहब्बत इसको कहते हैं। पैग़म्बर स़ाह़ब का रंज स़ह़ाबा को ज़रा भी गवारा नहीं था। अपनी बेटियों को ठोकने और तम्बीह करने पर मुस्तैद थे। अफ़सोस है कि ऐसे बुज़ुर्गाने दीन आ़शिक़ाने रसूल (ﷺ) पर हम तोहमतें बाँधें और इस ज़माने के बदमाश मुनाफ़िक़ लोगों पर उनका क़यास करके उनकी बुराई करें। ये शैत़ान है जो तुमको तबाह करना चाहता है और बुज़ुर्गाने दीन और जान निषाराने सय्यदुल मुर्सलीन की निस्बत तुमको बदगुमान बनाता है तौबा करो तौबा ला ह़ौल वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह। (वह़ीदी)

रिवायत में सलम के पत्तों का ज़िक्र है । सलम क़ुर्ज़ को कहते हैं जिसके पत्तों से चमड़ा स़ाफ़ करते हैं ग़ालिबन कीकर का पेड़ है जिसकी छाल से चमड़ा रंगा जाता है। इस मौक़े पर ह़ज़रत रसूले करीम (ﷺ) की बे-सरो सामानी देखकर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का इज़्हारे मलाल भी बजा था। हाय! बादशाहे कौनेन ने दुनिया में ज़िंदगी बे सरो सामानी और तकलीफ़ के साथ बसर की। मुसलमानों! हमारे सरदार ने दुनिया इस त़रह़ काटी तो हम क्यूँ अपनी बे सरो सामानी और मुफ़्लिसी की वजह से रंज करें और दुनिया के बे ह़क़ीक़त और फ़ानी माल व मताअ़ के लिये इन दुनियादार कुत्तों से क्यूँ डरें। ये हमारा क्या बिगाड़ लेंगे एक बोरिया और एक पानी का प्याला हमको कहीं भी मिल जाएगा। कोई हमको डराता है देखो शरअ़ की सच्ची बात कहोगे तो नौकरी छिन जाएगी कोई कहता है शहर से निकाले जाओगे। अरे बेवक़ूफ़ों! शहर से निकालेंगे पर ज़मीन से तो नहीं निकाल सकते। सारी ज़मीन में कहीं भी रह जाएँगे नौकरी छीन लें हम तिजारत और मेह़नत करके अपनी रोटी कमा लेंगे। परवरदिगार राज़िक़े मुत्लक़ है वो जब तक ज़िंदगी है किसी बहाने से रोटी देगा। तुम लाख डराओ हम डरने वाले नहीं हमारा भरोसा अल्लाह पर है। **वअ़लल्लाह फ़ल्यतवक्कलिल मोमिनून** (वह़ीदी)। ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) जिनका रिवायत में ज़िक्र है, ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) की स़ाह़बज़ादी हैं, उनकी वालिदा ज़ैनब हैं जो मज़्ऊ़न की बेटी हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) से पहले ये ह़ज़रत ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी (रज़ि) के निकाह़ में थीं और ह़ज़रत ख़ुनैस (रज़ि) के साथ हिजरत कर गई थीं, ग़ज़्व-ए-बद्र के बाद ह़ज़रत ख़ुनैस (रज़ि.) का इंतिक़ाल हो गया। फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने इनका निकाह़ रसूले करीम (ﷺ) से कर दिया। ये 3 हिजरी का वाक़िया है। एक मौक़े पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको एक त़लाक़ दे दी थी लेकिन अल्लाह पाक ने आप पर वह्य से ख़बर कर दी कि ह़फ़्स़ा (रज़ि.) से रुजूअ़ कर लो क्योंकि वो बहुत रोज़ा रखती हैं, रात को इ़बादत करने वाली हैं और वो जन्नत में भी आपकी जोज़ा रहेंगी। चुनाँचे आप (ﷺ) ने ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) से रुजूअ़ कर लिया। उनकी वफ़ात शाबान 45 हिजरी में बउ़म्र 60 साल हुई। (रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अरज़ाहा) (आमीन)

बाब 3 : 'व इज़ असर्रन्नबियु इला बअ़ज़ि अज़्वाजिही हदीष़ा' की तफ़्सीर या'नी,

३- باب

﴿وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَذَا قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ﴾ فِيهِ عَائِشَةُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

और जब नबी करीम (ﷺ) ने एक बात अपनी बीवी से फ़र्मा दी फिर जब आपकी बीवी ने वो बात किसी और बीवी को बता दी और अल्लाह ने नबी को इसकी ख़बर दी तो नबी ने उसका कुछ हिस्सा बतला दिया और कुछ से एअ़राज़ फ़र्माया। फिर जब नबी ने उन बीवी को वो बात बतला दी तो वो कहने लगीं कि आपको किसने इसकी ख़बर दी है आपने फ़र्माया कि मुझे

इल्म रखने वाले और ख़बर रखने वाले अल्लाह ने ख़बर दी है। इस बाब में हज़रत आइशा (रज़ि) की भी एक हदीष नबी करीम (ﷺ) से मरवी है।

4914. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, कहा मैंने उबैद बिन हुनैन से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना वो बयान करते थे कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से एक बात पूछने का इरादा किया और अर्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन! वो कौन दो औरतें थीं जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सताने के लिये मंसूबा बनाया था? अभी मैंने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि उन्होंने कहा वो आइशा और हफ़्सा (रज़ि.) थीं।

٤٩١٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ : سَمِعْتُ عُبَيْدَ بْنَ حُنَيْنٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: أَرَدْتُ أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ فَقُلْتُ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ مَنِ الْمَرْأَتَانِ اللَّتَانِ تَظَاهَرَتَا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَمَا أَتْمَمْتُ كَلاَمِي حَتَّى قَالَ: عَائِشَةُ وَحَفْصَةُ:

बाब 4 : 'इन ततूबा इलल्लाहि फक़द सग़त क़ुलूबुकुमा' की तफ़्सीर या'नी,

٤- باب قوله :

ऐ दोनों बीवियों! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लोगी तो बेहतर है तुम्हारे दिल उस (ग़लत बात की) तरफ़ झुक गये हैं। अरब लोग कहते हैं सग़ोतु अय अस्ग़ैतु या'नी मैं झुक पड़ा (अत्तस्ग़ा) जो सूरह अन्आम में है जिसका मा'नी झुक जाएँ व इन तज़ाहरु अलैहि अल आयत या'नी अगर नबी के मुक़ाबले में तुम रोज़ नया हमला करती रहीं तो उसका मददगार तो अल्लाह है और जिब्रईल (अलैहि) हैं और नेक मुसलमान हैं और उनके अलावा फ़रिश्ते भी मददगार हैं। ज़हीर का मा'नी मददगार। तज़ाहरून एक की एक मदद करते हो। मुजाहिद ने कहा आयत क़ू अन्फुसकुम व अहलीकुम का मत़ लब ये है कि तुम अपने आपको और अपने घर वालों को अल्लाह का डर इख़्तियार करने की नसीहत करो और उन्हें अदब सिखाओ।

﴿إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا﴾. صَغَوْتُ وَأَصْغَيْتُ مِلْتُ. لِتَصْغَى لِتَمِيلَ.
﴿وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللهَ هُوَ مَوْلاَهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ، وَالْمَلاَئِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ﴾ عَوْنٌ. تَظَاهَرُونَ تَعَاوَنُونَ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ﴾ أَوْصُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ بِتَقْوَى اللهِ وَأَدِّبُوهُمْ.

4815. हमसे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, कहा कि मैंने उबैद बिन हुनैन से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि.) से उन दो औरतों के बारे में सवाल करना चाहा जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के ऊपर ज़ोर किया था। एक साल मैं इसी फ़िक्र में रहा

٤٩١٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُبَيْدَ بْنَ حُنَيْنٍ يَقُولُ : سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ : أَرَدْتُ أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ عَنِ الْمَرْأَتَيْنِ اللَّتَيْنِ تَظَاهَرَتَا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَمَكَثْتُ سَنَةً فَلَمْ أَجِدْ لَهُ مَوْضِعًا

और मुझे कोई मौक़ा नहीं मिलता था आख़िर उनके साथ हज्ज के लिये निकला (वापसी में) जब हम मुक़ामे ज़हरान मे थे तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) रफ़्अ़े हाजत के लिये गये। फिर कहा कि मेरे लिये वुज़ू का पानी लाओ, मैं एक बर्तन में पानी लाया और उनको वुज़ू कराने लगा उस वक़्त मुझको मौक़ा मिला। मैंने अ़र्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन! वो औ़रतें कौन थीं? जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के मुक़ाबिल ऐसा किया था? अभी मैंने अपनी बात पूरी न की थी उन्होंने कहा कि वो आ़इशा और हफ़्सा (रज़ि.) थीं। (राजेअ़: 89)

حَتَّى خَرَجْتُ مَعَهُ حَاجًّا فَلَمَّا كُنَّا بِظَهْرَانَ ذَهَبَ عُمَرُ لِحَاجَتِهِ فَقَالَ: أَدْرِكْنِي بِالْوَضُوءِ فَأَدْرَكْتُهُ بِالإِدَاوَةِ فَجَعَلْتُ أَسْكُبُ عَلَيْهِ وَرَأَيْتُ مَوْضِعًا فَقُلْتُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ مَنِ الْمَرْأَتَانِ اللَّتَانِ تَظَاهَرَتَا: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : فَمَا أَتْمَمْتُ كَلاَمِي حَتَّى قَالَ عَائِشَةُ وَحَفْصَةُ. [راجع: ٨٩]

बाब 5 : 'अ़सा रब्बुहू इन तल्लक़कुन्न ....' की तफ़्सीर या'नी,

٥- باب قَوْلُهُ :

और अगर तुम्हें त़लाक़ दे दे तो उसका परवरदिगार तुम्हारे बदले उन्हें तुमसे बेहतर बीवियाँ दे देगा। वो इस्लाम लाने वालियाँ, पुख़्ता ईमान वालियाँ, फ़र्मांबरदारी करने वालियाँ, तौबा करने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, रोज़ा रखने वालियाँ, बेवा भी होंगी और कुँवारियाँ भी होंगी।

﴿عَسَى رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا﴾.

4916. हमसे अ़म्र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाज आँहज़रत (ﷺ)को ग़ैरत दिलाने के लिये जमा हो गईं तो मैंने उनसे कहा अगर नबी त़लाक़ दे दे तो उनका परवरदिगार तुम्हारे बदले में उन्हें तुमसे बेहतर बीवियाँ दे देगा। चुनाचे ये आयत नाज़िल हुई। अ़सा रब्बुहू इन त़ल्लक़कुन आख़िर तक। (राजेअ़: 402)

٤٩١٦- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ قَالَ عُمَرُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: اجْتَمَعَ نِسَاءُ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْغَيْرَةِ عَلَيْهِ، فَقُلْتُ لَهُنَّ عَسَى رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ. فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ.

[راجع: ٤٠٢]

सूरह मुल्क की तफ़्सीर

[٦٧] سورة الْمُلْكِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है इसमें 30 आयात और दो रुकूअ़ हैं।

अत्तफ़ावुत का मा'नी इख़्तिलाफ़ फ़र्क़ तफ़ावुत और तफ़ूत दोनों का मा'नी है। तमय्यज़ टुकड़े टुकड़े हो जाए मनाकिबिहा उसके किनारों में तद्दऊ़न (दाल की तशदीद) और तदऊ़न (दाल के जज़्म के साथ) दोनों का एक ही मा'नी है जैसे

التَّفَاوُتُ: الاِخْتِلاَفُ، وَالتَّفَاوُتُ وَالتَّفَوُّتُ وَاحِدٌ. تَمَيَّزُ : تَقَطَّعُ. مَنَاكِبِهَا : جَوَانِبِهَا. تَدَّعُونَ وَتَدْعُونَ مِثْلُ تَذَّكَّرُونَ وَتَذْكُرُونَ.

وَيَقْبِضْنَ يَضْرِبْنَ بِأَجْنِحَتِهِنَّ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ صَافَّاتٍ بَسْطُ أَجْنِحَتِهِنَّ. وَنُفُورٍ الْكُفُورُ.

तज़क्करून और तज़्कुरून (ज़ाल के जज़्म के साथ) का एक ही मा'नी है यक़्बिज़्ना अपने पंख मारते हैं (या समेट लेते हैं) मुजाहिद ने कहा स़ाफ़्फ़ात के मा'नी अपने बाज़ू खोले हुए नुफ़ूर से कुफ़्र और शरारत मुराद है।

[٦٨] باب سُورَةُ ﴿ن وَالْقَلَمِ﴾

सूरह नून की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَتَخَافَتُونَ يَنْتَجُونَ السِّرَارَ وَالْكَلَامَ الْخَفِيَّ. وَقَالَ قَتَادَةُ : حَرْدٌ جِدٌّ فِي أَنْفُسِهِمْ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : لَضَالُّونَ : أَضْلَلْنَا. مَكَانَ جَنَّتِنَا. وَقَالَ غَيْرُهُ كَالصَّرِيمِ: كَالصُّبْحِ انْصَرَمَ مِنَ اللَّيْلِ وَاللَّيْلِ انْصَرَمَ مِنَ النَّهَارِ، وَهُوَ أَيْضًا كُلُّ رَمْلَةٍ انْصَرَمَتْ مِنْ مُعْظَمِ الرَّمْلِ. وَالصَّرِيمُ أَيْضًا الْمَصْرُومُ مِثْلُ قَتِيلٍ وَمَقْتُولٍ.

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा यतख़ाफ़तूना चुपके चुपके काना फूसी करते हुए। क़तादा ने कहा ह़रदुन के मा'नी दिल से कोशिश करना या बख़ीली या ग़ुस्सा। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा लज़ाल्लूना का मत़लब ये है कि हम अपने बाग़ की जगह भूल गये, भटक गये और आगे बढ़ गये। औरों ने कहा स़रीम के मा'नी सुबह़ जो रात से कटकर अलग हो जाती है या रात जो दिन से कटकर अलग हो जाती है। स़रीम उस रेती को भी कहते हैं जो रेत के बड़े बड़े टीलों से कटकर अलग हो जाए। स़रीम मस़रूम के मा'नी में है जैसे क़तील मक़्तूल के मा'नों में है।

ये सूरत मक्की है इसमें 52 आयात और दो रुकूअ़ हैं।

लफ़्ज़े ह़रदुन की तफ़्सीर मे ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह़) फ़र्माते हैं : **क़ाल अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अन मअ़मर अ़न क़तादः कानतिल्जन्नतु लिशैख़िन व कान युम्सिक क़ूत सनतिन व यतस़द्दक़ु बिल्फ़ज़्लि व कान बनूहु यन्हौन अनस़्स़िदक़ति फ़लम्मा मात अबूहुम गदौ अ़लैहा फ़क़ालू ला यदख़ुलुहल्यौम अ़लैकुम मिस्कीन व गदौ अ़ला हर्दिन क़ादिरीन व क़द क़ील फ़ी हर्दिन अन्नहा इस्मुल्जन्नति व क़ील इस्मु क़र्यतिहिम व ह़का अबू उ़बैदा फ़ीहि अक़्वालन उख़रा अल्क़स़द वल्मन्अ वल्ग़ज़ब वल्ह़क़्द.** (फ़त्ह़ुल बारी)

या'नी उन लड़कों के वालिद का एक बाग़ जिसकी आमद में से वो साल भर का ख़ुराकी ख़र्चा रख लेता और बाक़ी को ख़ैरात कर देता था। उसके लड़के इस स़दक़ा से उसको मना करते थे जब बूढ़े का इंतिक़ाल हो गया तो वो लड़के सुबह सवेरे बाग़ में गये इस ख़्याल से कि आज मिस्कीन उनसे ख़ैरात मांगने न आ सके और वो सुबह़ सवेरे इस इरादे से बाग़ पर क़ब्ज़ा करने के लिये दाख़िल हुए मगर जाकर देखा तो वो सारा बाग़ रात को सर्दी से जल चुका था, वो अफ़सोस करते ही रह गये। कहा गया कि ह़र्द उस बाग़ का नाम था और ये भी कहा गया है कि उनकी बस्ती का नाम था। अबू उ़बैदह ने इसमें कई क़ौल नक़ल किये हैं जैसे क़स्द और मना करना और ग़ज़ब ग़ुस्सा बुख़्ल वग़ैरह कीना कपट वग़ैरह ऐसे ह़ालात आजकल स़ाबित हैं कि नेकबख़्त फ़य्याज़ बाप की औलाद इंतिहा से ज़्यादा बख़ील स़ाबित होती है।

١ - باب ﴿عُتُلٍّ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ﴾

बाब 1 : 'उतुल्लिम्बअद ज़ालिक ज़नीम' की तफ़्सीर

या'नी वो काफ़िर सख़्त मिज़ाज है। इसके अ़लावा बद ज़ात भी हैं।

तश्रीह : ये आयत वलीद बिन मुग़ीरह के बारे में नाज़िल हुई थी। आँहज़रत (ﷺ) से पूछा गया कि उ़तुल्लिम ज़नीम कौन है? फ़र्माया बद ख़ल्क़ ख़ूब खाने—पीने वाला ज़ालिम पेटू आदमी। ऐसे नालायक़ शख़्स पर आसमान भी रोता है जिसे अल्लाह ने तंदरुस्ती दी पेट भर खाने को दिया फिर भी वो लोगों पर ज़ु ल्म व सितम कर रहा है उसकी बदज़ाती पर आसमान मातम करता है। उ़तुल कहते हैं जिसका बदन सह़ीह़ त़ाक़तवर और ख़ूब खाने वाला ज़ोरदार शख़्स हो, वलदुज़्ज़िना हो। ऐसा पर शैत़ान का ग़लबा बहुत रहा करता है। (इब्ने कष़ीर) कहते हैं इसकी छः छः उँगलियाँ थीं छठी उँगली उस गोश्त की त़ रह़ थी जो बकरी के कान पर लटका रहता है। कुछ ने कहा ज़नीम से मुराद वो दोग़ला है जो किसी क़ौम में ख़्वाह मख़्वाह शरीक हो गया हो न अपनी क़ौम का रहा न उस क़ौम का। कुछ ने इन इशारात से अबू जहल को मुराद लिया है। (वह़ीदी)

٤٩١٧- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي حُصِينٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عُتُلٍّ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ، قَالَ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ : لَهُ زَنَمَةٌ مِثْلُ زَنَمَةِ الشَّاةِ.

4917. हमसे मह़मूद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू ह़ुसैन ने, उनसे मुजाहिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत उ़तुल्लिम् बअ़दा ज़ालिका ज़नीम या'नी वो ज़ालिम सख़्त मिज़ाज है। उसके अ़लावा ह़रामी भी है, के बारे में फ़र्माया कि ये आयत क़ुरैश के एक शख़्स के बारे में नाज़िल हुई थी उसकी गर्दन में एक निशानी थी जैसे बकरी में निशानी होती है कि कुछ उनमें का कोई ह़िस्सा बढ़ा हुआ होता है।

٤٩١٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ، قَالَ سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ الْخُزَاعِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ الْجَنَّةِ، كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعِّفٍ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ أَلاَ أُخْبِرُكُمْ بِأَهْلِ النَّارِ كُلُّ عُتُلٍّ جَوَّاظٍ مُسْتَكْبِرٍ)).[طرفاه في: ٦٠٧١، ٦٦٥٧].

4918. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने अ़ब्द बिन ख़ालिद से बयान किया, कहा कि मैंने ह़ारिष़ा बिन वहब ख़ुज़ाई (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि मैं तुम्हें बहिश्ती आदमी के ब ारे में न बता दूँ। वो देखने में कमज़ोर नातवाँ होता है (लेकिन अल्लाह के य हाँ उसका मर्तबा ये है कि) अगर किसी बात पर अल्लाह की क़सम खा ले तो अल्लाह उसे ज़रूर पूरी कर देता है और क्या मैं तुम्हें दोज़ख़ वालों के बारे में न बता दूँ हर बद ख़ू भारी जिस्म वाला और तकब्बुर करने वाला।

(दीगर मक़ाम : 6071, 6657)

मा'लूम हुआ कि जन्नती ज़्यादातर मुस्तजाबुद् दअ़वात होते हैं बज़ाहिर बहुत कमज़ोर नातवाँ ग़ैर मशहूर मगर उनके दिल मुह़ब्बते इलाही से भरपूर होते हैं। जअ़ल्नल्लाहु मिन्हुम आमीन।

٢- باب ﴿يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ﴾

बाब 2 : 'यौम युक्शफ़ु अन साक़िन .... अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

वो दिन याद करो जब पिण्डली खोली जाएगी।

٤٩١٩- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ خَالِدِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ

4919. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार

أبي سَعِيدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ: يَقُولُ: ((يَكْشِفُ رَبُّنَا عَنْ سَاقِهِ، فَيَسْجُدُ لَهُ كُلُّ مُؤْمِنٍ وَمُؤْمِنَةٍ، وَيَبْقَى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ فِي الدُّنْيَا رِيَاءً وَسُمْعَةً، فَيَذْهَبُ لِيَسْجُدَ فَيَعُودُ ظَهْرُهُ طَبَقًا وَاحِدًا)). [راجع: ٢٢]

और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि हमारा रब क़यामत के दिन अपनी पिण्डली खोलेगा उस वक़्त हर मोमिन मर्द और हर मोमिना औरत उसके लिये सज्दे में गिर पड़ेंगे। सिर्फ़ वो बाक़ी रह जाएँगे जो दुनिया में दिखावे और नामवरी के लिये सज्दा करते थे। जब वो सज्दा करना चाहेंगे तो उनकी पीठ तख़्ता हो जाएगी और वो सज्दा के लिये न मुड़ सकेंगे। (राजेअ : 26)

तश्रीह : पिण्डली के ज़ाहिरी मा'नों पर ईमान लाना ज़रूरी है। अहले हदीष़ ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ की तावील नहीं करते बल्कि उनकी हक़ीक़त अल्लाह को सौंपते हैं उसमें कुरेद करना बिदअत जानते हैं, जैसा अल्लाह है वैसी उसकी पिण्डली है। **आमन्ना बिल्लाहि कमा हुव बिअस्माइही व सिफ़ातिही** और हम उसकी ज़ात और सिफ़ात पर जैसा भी वो है हमारा ईमान है उसकी सिफ़ात के ज़वाहिर पर हम यक़ीन रखते हैं और उनमें कोई तावील नहीं करते **हाज़ा हुवस्सिरातुल्मुस्तक़ीम**।

[٦٩] سُورَةُ ﴿الْحَاقَّةِ﴾

सूरह अल् हाक़्क़ा की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

﴿عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ﴾: يُرِيدُ فِيهَا الرِّضَا. ﴿الْقَاضِيَةَ﴾ الْمَوْتَةَ الأُولَى الَّتِي مُتُّهَا ثُمَّ أُحْيَا بَعْدَهَا. ﴿مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ﴾ أَحَدٌ يَكُونُ لِلْجَمْعِ وَلِلْوَاحِدِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿الْوَتِينَ﴾ نِيَاطُ الْقَلْبِ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿طَغَى﴾ كَثُرَ وَيُقَالُ بِالطَّاغِيَةِ بِطُغْيَانِهِمْ وَيُقَالُ طَغَتْ عَلَى الْخُزَّانِ كَمَا طَغَى الْمَاءُ عَلَى قَوْمِ نُوحٍ.

ईशतुर्राज़िया, मर्ज़िया के मा'नी में है या'नी पसंदीदा ईश। अल क़ाज़िया पहली मौत या'नी काश! पहली मौत जो आई थी उसके बाद में मरा ही रहता फिर ज़िंदा न होता। मिन अहदिन अन्हु हाजिज़ीन अहद का इत्लाक़ मुफ़रद और जमा दोनों पर आता है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा वतीन से मुराद जान की रग जिसके कटने से आदमी मर जाता है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा तग़ा अल्माउ या'नी पानी बहुत चढ़ गया। बित्ताग़िया अपनी शरारत की वजह से कुछ ने कहा ताग़िया से आँधी मुराद है उसने इतना ज़ोर किया कि फ़रिश्तों के इख़्तियार से बाहर हो गई जैसे पानी ने हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम पर ज़ोर किया था।

ये सूरत मक्की है, इसमें 52 आयात ओर दो रुकूअ हैं।

[٧٠] باب سُورَةُ ﴿سَأَلَ سَائِلٌ﴾

सूरह सअल साइलुन की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

الْفَصِيلَةُ أَصْغَرُ آبَائِهِ الْقُرْبَى إِلَيْهِ يَنْتَمِي مَنْ انْتَمَى. ﴿لِلشَّوَى﴾ الْيَدَانِ وَالرِّجْلاَنِ وَالأَطْرَافُ وَجِلْدَةُ الرَّأْسِ يُقَالُ لَهَا شَوَاةٌ

फ़सीलह नज़दीक का दादा जिसकी तरफ़ आदमी को निस्बत दी जाती है। शवा दोनों हाथ–पैर, बदन के किनारे, सर की खाल उसको शवा कहते हैं और जिस हिस्से के काटने से आदमी मरता

नहीं है वो शवा है। इज़ून गिरोह गिरोह इसका मुफ़रद इज़तुन है।

ये सूरह मक्की है इसमें 44 आयात और दो रुकूअ हैं।

सूरह नूह की तफ़्सीर

[٧١] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अत्वार कभी कुछ कभी कुछ मष़लन मनी फिर गोश्त का लौथड़ा अ़रब लोग कहते हैं अ़दा त़ौरूहू अपने अंदाज़ से बढ़ गया। कुब्बार (बतशदीद बाअ) में कुबार से ज़्यादा मुबालग़ा है या'नी बहुत ही बड़ा, जैसे जमील ख़ूबसूरत जुम्माल बहुत ही ख़ूबसूरत ग़र्ज़ कुब्बार का मा'नी बड़ा कभी उसको कुब्बार तख़्फ़ीफ़ बाअ से भी पढ़ा है। अ़रब लोग कहते हैं हुस्सान और जुम्माल (तशदीद से) और हुसान और जुमाल (तख़्फ़ीफ़ से) दय्यारा दौर से निकला है। इसका वज़न फ़यआल है (अस़ल में दीवार था) जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अल ह़य्युल् क़य्यूम को अल् ह़य्युल क़ियाम पढ़ा है। ये क़यामत क़ुम्तु से निकला है (तो अस़ल में क़यवाम था) औरों ने कहा दय्यारा के मअ़नी किसी को तबारा हलाक़त। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा मिदरारा एक के पीछे दूसरा या'नी लगातार बारिश। वक़ारा अ़ज़्मत बड़ाई मुराद है।

﴿أَطْوَارًا﴾ طَوْرًا كَذَا وَطَوْرًا كَذَا يُقَالُ عَدَا طَوْرَهُ أَيْ قَدْرَهُ. وَالْكُبَّارُ أَشَدُّ مِنَ الْكُبَارِ وَكَذَلِكَ جُمَّالٌ وَجَمِيلٌ لأَنَّهَا أَشَدُّ مُبَالَغَةً وَكُبَّارٌ الْكَبِيرُ وَكُبَارًا أَيْضًا بِالتَّخْفِيفِ وَالْعَرَبُ تَقُولُ رَجُلٌ حُسَّانٌ وَجُمَّالٌ وَحُسَانٌ مُخَفَّفٌ وَجُمَالٌ مُخَفَّفٌ. دَيَّارًا مِنْ دَوْرٍ وَلَكِنَّهُ فَيْعَالٌ مِنَ الدَّوَرَانِ كَمَا قَرَأَ عُمَرُ الْحَيُّ الْقَيَّامُ وَهْيَ مِنْ قُمْتُ وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿دَيَّارًا﴾ أَحَدًا ﴿تَبَارًا﴾ هَلاَكًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿مِدْرَارًا﴾ يَتْبَعُ بَعْضُهَا بَعْضًا. ﴿وَقَارًا﴾ عَظَمَةً.

ये सूरत मक्की है इसमें 28 आयात और दो रुकूअ हैं।

बाब 'वद्दा वला सुवाअ़ंव् वला यग़ूष़व् व यऊक़ व नस्र' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب ﴿وَدًّا وَلاَ سُوَاعًا وَلاَ يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا﴾

4920. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने और अ़त़ा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जो बुत ह़ज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम मे पूजे जाते थे बाद मे वही अ़रब में पूजे जाने लगे। वद्दा दौमतुल जन्दल में बनी कल्ब का बुत था। सुवाअ़ बनी हुज़ैल का। यग़ूष़ बनी मुराद का और मुराद की शाख़ बनी ग़ुत़ैफ़ का जो वादी जौफ़ में क़ौमे सबा के पास रहते थे यऊक़ बनी हम्दान का बुत था। नस्र हिम्यर का बुत था जो ज़ुल कलाअ़ की आल

٤٩٢٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : صَارَتِ الأَوْثَانُ الَّتِي كَانَتْ فِي قَوْمِ نُوحٍ فِي الْعَرَبِ بَعْدُ، أَمَّا وُدٌّ كَانَتْ لِكَلْبٍ بِدَوْمَةِ الْجَنْدَلِ، وَأَمَّا سُوَاعٌ كَانَتْ لِهُذَيْلٍ، وَأَمَّا يَغُوثُ فَكَانَتْ لِمُرَادٍ، ثُمَّ لِبَنِي غُطَيْفٍ

بِالْجَوْفِ عِنْدَ سَبَأٍ. وَأَمَّا يَعُوقُ فَكَانَتْ لِهَمْدَانَ. وَأَمَّا نَسْرٌ فَكَانَتْ لِحِمْيَرَ، لآلِ ذِي الْكَلاَعِ، أَسْمَاءُ رِجَالٍ صَالِحِينَ مِنْ قَوْمِ نُوحٍ. فَلَمَّا هَلَكُوا أَوْحَى الشَّيْطَانُ إِلَى قَوْمِهِمْ أَنِ انْصِبُوا إِلَى مَجَالِسِهِمُ الَّتِي كَانُوا يَجْلِسُونَ أَنْصَابًا وَسَمُّوهَا بِأَسْمَائِهِمْ فَفَعَلُوا. فَلَمْ تُعْبَدْ، حَتَّى إِذَا هَلَكَ أُولَئِكَ وَتَنَسَّخَ الْعِلْمُ عُبِدَتْ.

में से थे। ये पाँचों हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम के नेक लोगों के नाम थे जब उनकी मौत हो गई तो शैतान ने उनके दिल में डाला कि अपनी मजलिसों में जहाँ वो बैठते थे उनके बुत क़ायम कर लें और उन बुतों के नाम अपने नेक लोगों के नाम पर रख लें। चुनाँचे उन लोगों ने ऐसा ही किया उस वक़्त उन बुतों की पूजा नहीं होती थी लेकिन जब वो लोग भी मर गये जिन्होंने बुत क़ायम किये थे और इल्म लोगों में न रहा तो उनकी पूजा होने लगी।

तशरीह : बुतपरस्ती की इब्तिदा तमाम बुतपरस्तों की अक़्वाम में इस तरह शुरू हुई कि उन्होंने अपने नेक लोगों के नामों पर बुत बना लिये। पहले इबादत में उनको सामने रखने लगे शैतान ने ये फ़रेब इस तरह चलाया कि उन बुतों के देखने से बुज़ुर्गों की याद ताज़ा रहेगी और इबादत में दिल लगेगा, धीरे धीरे वो बुत ही ख़ुद मा'बूद बना लिये गये। तमाम बुत परस्तों का आज तक यही हाल है पस दुनिया में बुतपरस्ती यूँ शुरू हुई। इसीलिये इस्लामी शरीअत में अल्लाह तआला ने बुत और सूरत के बनाने से मना फ़र्मा दिया और ये हुक्म हुआ कि जहाँ बुत या सूरत देखो उसको तोड़ फोड़कर फेंक दो क्योंकि ये चीज़ें अख़ीर में शिर्क का ज़रिया हो गईं। इस्लामी शरीअत में यादगार के लिये भी बुत या सूरत का बनाना दुरुस्त नहीं है और कोई कितने ही मुक़द्दस पैग़म्बर या अवतार की सूरत हो उसकी कोई इज़्ज़त या हुर्मत नहीं करना चाहिये क्योंकि वो सिर्फ़ एक मूरत है जिसका इस्लाम में कोई वज़न नहीं। मुसलमानों को हमेशा अपने इस उसूले मज़हबी का ख़्याल रखना चाहिये और किसी बादशाह या बुज़ुर्ग के बुत बनाने में उनको बिलकुल मदद न करना चाहिये, अल्लाह तआला फ़र्माता है **व तआवनू अलल्बिर्रि वत्तक़्वा व ला तआवनू अलल्इस्मि वल्उदवान** (अल माइदः 2) (वहीदी) मगर ये किस क़दर अफ़सोसनाक हरकत है कि कुछ ता'ज़िये परस्त हज़रात ता'ज़िये के साथ हज़रत फ़ातिमातुज़्ज़ौहरा की काग़ज़ी सूरत बनाकर ता'ज़िये के आगे रखते हैं और उसका पूरा अदब बजा लाते हैं। कितने नामो निहाद मुसलमानों ने मज़ारे औलिया के फ़ोटो लेकर उनको घरों में रखा हुआ है और सुबह और शाम उनको मुअत्तर करके उन पर फूल चढ़ाते और उनकी ता'ज़ीम करते हैं ये तमाम हरकात बुत साज़ी और बुतपरस्ती ही की शक्लें हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को नेक समझ अता करे कि वो ऐसी हरकतों से बाज़ रहें वरना मैदाने महशर में सख़्ततरीन रुस्वाई के लिये तैयार रहें।

[٧٢] سُورَةُ ﴿قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ﴾

सूरह जिन्न की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ये सूरत मक्की है इसमें 28 आयात और दो रुकूअ हैं।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لِبَدًا أَعْوَانًا.

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा लिबदा के मा'नी मददगार के हैं।

٤٩٢١– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: انْطَلَقَ

4921. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा के साथ

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي طَائِفَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ عَامِدِينَ إِلَى سُوقِ عُكَاظٍ، وَقَدْ حِيلَ بَيْنَ الشَّيَاطِينِ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ، وَأُرْسِلَتْ عَلَيْهِمُ الشُّهُبُ فَرَجَعَتِ الشَّيَاطِينُ، فَقَالُوا مَا لَكُمْ؟ قالوا: حِيلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ، وَأُرْسِلَتْ عَلَيْنَا الشُّهُبُ، قَالَ: مَا حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرَ السَّمَاءِ إِلاَّ مَا حَدَثَ، فَاضْرِبُوا مَشَارِقَ الأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا فَانْظُرُوا مَا هَذَا الأَمْرُ الَّذِي حَدَثَ؟ فَانْطَلَقُوا فَضَرَبُوا مَشَارِقَ الأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا يَنْظُرُونَ مَا هَذَا الأَمْرُ الَّذِي حَالَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ خَبَرِ السَّمَاءِ؟ قَالَ: فَانْطَلَقَ الَّذِينَ تَوَجَّهُوا نَحْوَ تِهَامَةَ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَخْلَةٍ وَهْوَ عَامِدٌ إِلَى سُوقِ عُكَاظٍ وَهْوَ يُصَلِّي بِأَصْحَابِهِ صَلاَةَ الْفَجْرِ، فَلَمَّا سَمِعُوا الْقُرْآنَ تَسَمَّعُوا لَهُ، فَقَالُوا : هَذَا الَّذِي حَالَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ خَبَرَ السَّمَاءِ، فَهُنَالِكَ رَجَعُوا إِلَى قَوْمِهِمْ فَقَالُوا يَا قَوْمَنَا، إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ. وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا. أَوْ أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى نَبِيِّهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ﴿قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِنَ الْجِنِّ﴾ وَإِنَّمَا أُوحِيَ إِلَيْهِ قَوْلُ الْجِنِّ.

[راجع: ٧٧٣]

सूक़े उ़काज़ (मक्का और ताइफ़ के बीच एक मैदान जहाँ अ़रबों का मशहूर मेला लगता था) का क़स्द किया। उस ज़माने में शयातीन तक आसमान की ख़बरों के चुरा लेने में रुकावट पैदा कर दी गई थी और उन पर आसमान से आग के अंगारे छोड़े जाते थे जब वो जिन्न अपनी क़ौम के पास लौटकर आए तो उनकी क़ौम ने उनसे पूछा कि क्या बात हुई। उन्होंने बताया कि आसमान की ख़बरों में और हमारे दरम्यान रुकावट कर दी गई है और हम पर आसमान से आग के अंगारे बरसाए गये हैं, उन्होंने कहा कि आसमान की ख़बरों और तुम्हारे दरम्यान रुकावट होने की वजह ये है कि कोई ख़ास़ बात पेश आई है। इसलिये सारी ज़मीन पर मश्रिक़ व मग़्रिब में फैल जाओ और तलाश करो कि कौनसी बात पेश आ गई है। चुनाँचे शयातीन मश्रिक़ व मग़्रिब में फैल गये। ताकि उस बात का पता लगाएँ कि आसमान की ख़बरों की उन तक पहुँचने मे रुकावट पैदा की गई है वो किस बड़े वाक़िये की वजह से है। बयान किया कि जो शयातीन इस खोज मे निकले थे उनका एक गिरोह वादी तिहामा की तरफ़ भी आ निकला (ये जगह मक्का मुअ़ज़्ज़मा से एक दिन के सफ़र की राह पर है) जहाँ रसूले करीम (ﷺ) मंडी उ़काज़ की तरफ़ जाते हुए खजूर के एक बाग़ के पास ठहरे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त स़हाबा के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे। जब शयातीन ने क़ुर्आन मजीद सुना तो ये उसको सुनने लग गये फिर उन्होंने कहा कि यही चीज़ है वो जिसकी वजह से तुम्हारे और आसमान की ख़बरों के दरम्यान रुकावट पैदा हुई है। उसके बाद वो अपनी क़ौम की तरफ़ लौट आए और उनसे कहा कि इन्ना समिअ़ना क़ुर्आनन अ़जबा अल आयत हमने एक अ़जीब क़ुर्आन सुना है जो नेकी की राह दिखलाता है सो हम तो उस पर ईमान ले आए और हम अब अपने परवरदिगार को किसी का साझी न बनाएँगे और अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) पर ये आयत नाज़िल की क़ुल ऊहिया इलय्या अन्नहुस्तमिअ़ नफ़रूम मिनल् जिन्न अल आयत आप कहिये कि मेरे पास वह्य आई है इस बात की कि जिन्नों की एक जमाअ़त ने क़ुर्आन मजीद सुना यही जिन्नों का क़ौल आँहज़रत (ﷺ) पर नाज़िल हुआ। (राजेअ़ : 773)

सूरह अल् मुज़्ज़म्मिल की तफ़्सीर

[٧٣] سُورَةُ ﴿الْمُزَّمِّلُ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿وَتَبَتَّلْ﴾ أَخْلِصْ. وَقَالَ الْحَسَنُ: ﴿أَنْكَالاً﴾ قُيُودًا. ﴿مُنْفَطِرٌ بِهِ﴾. مُثْقَلَةٌ بِهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿كَثِيبًا مَهِيلاً﴾ الرَّمْلُ السَّائِلُ. ﴿وَبِيلاً﴾ شَدِيدًا.

मुजाहिद ने कहा कि तबत्तल के मा'नी ख़ालिस उसी का हो जा और इमाम हसन बस़री (रह) ने फ़र्माया अन्काला का मा'नी बेड़ियाँ हैं। मुन्फ़त़िरुन बिही इसके सबब से भारी हो जाएगा भारी होकर फट जाएगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कषीबम्महीला फिसलती बहती रेत। वबीला के मा'नी सख़्त के हैं।

ये सूरत मक्की है इसमें 20 आयात और 2 रुकूअ़ हैं।

सूरह मुज़्ज़म्मिल बड़ी बाबरकत सूरत है जिसका हमेशा तिलावत करना मौजिबे स़द दरजात है।

बाब सूरह अल् मुद्दष़्ष़िर की तफ़्सीर

[٧٤] سُورَةُ ﴿الْمُدَّثِّرِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿عَسِيرٌ﴾: شَدِيدٌ. ﴿قَسْوَرَةٍ﴾ رِكْزُ النَّاسِ وَأَصْوَاتُهُمْ. وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : الأَسَدُ وَكُلُّ شَدِيدٍ قَسْوَرَةٌ: الصوت. ﴿مُسْتَنْفِرَةٌ﴾ نَافِرَةٌ مَذْعُورَةٌ.

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा अ़सीर का मा'नी सख़्त। क़स्वरह का मा'नी लोगों का शोरो-गुल। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा क़स्वरह शेर को कहते हैं और हर सख़्त और ज़ोरदार चीज़ को क़स्वरह कहते हैं। मुस्तन्फ़िरह भड़कने वाली।

ये सूरत मक्की है इसमें 56 आयात और 2 रुकूअ़ हैं।

٤٩٢٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ،سَأَلْتُ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَوَّلِ مَا نَزَلَ مِنَ الْقُرْآنِ قَالَ : ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴾ قُلْتُ : يَقُولُونَ ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ﴾ فَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ: سَأَلْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عَنْ ذَلِكَ وَقُلْتُ لَهُ مِثْلَ الَّذِي قُلْتَ، فَقَالَ جَابِرٌ: لاَ أُحَدِّثُكَ إِلاَّ مَا حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((جَاوَرْتُ بِحِرَاءٍ، فَلَمَّا قَضَيْتُ

4922. हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे वक़ीअ़ ने बयान किया, उनसे अ़ली बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उन्होंने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान से पूछा कि क़ुर्आन मजीद की कौनसी आयत सबसे पहले नाज़िल हुई थी। उन्होंने कहा कि या अय्युहल मुद्दष़्ष़िर मैंने अ़र्ज़ किया कि लोग तो कहते हैं कि इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ सबसे पहले नाज़िल हुई अबू सलमा ने इस पर कहा कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से पूछा था और जो बात अभी तुमने मुझसे कही वही मैंने भी उनसे कही थी लेकिन हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कहा था कि मैं तुमसे वही ह़दीष़ बयान करता हूँ जो हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माई थी। आपने फ़र्माया था कि मैं ग़ारे हिरा में एक मुद्दत के लिये ख़ल्वत नशीन था। जब मैं वो दिन पूरे करके पहाड़ से उतरा तो मुझे आवाज़ दी गई, मैंने उस आवाज़ पर अपने दाईं त़रफ़ देखा लेकिन कोई

चीज़ नहीं दिखाई दी। फिर बाईं तरफ़ देखा उधर भी कोई चीज़ दिखाई नहीं दी, सामने देखा उधर भी कोई चीज़ नहीं दिखाई दी, पीछे की तरफ़ देखा और उधर भी कोई चीज़ नहीं दिखाई दी। अब मैंने अपना सर ऊपर की तरफ़ उठाया तो मुझे एक चीज़ दिखाई दी। फिर मैं ख़दीजा (रज़ि) के पास आया और उनसे कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो और मुझ पर ठण्डा पानी डालो। फ़र्माया कि फिर उन्होंने मुझे कपड़ा ओढ़ा दिया और ठण्डा पानी मुझ पर बहाया। फ़र्माया कि फिर ये आयत नाज़िल हुई या अय्युहल मुद्दष़्षिर क़ुम फ़अन्ज़िर व रब्बुका फ़कब्बिर या'नी ऐ कपड़े में लिपटने वाले! उठिये फिर लोगों को अ़ज़ाबे इलाही से डराइये और अपने परवरदिगार की बड़ाई बयान कीजिए। (राजेअ़ : 4)

جِوَارِي هَبَطْتُ، فَنُودِيتُ، فَنَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا، وَنَظَرْتُ عَنْ شِمَالِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا، وَنَظَرْتُ أَمَامِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا، وَنَظَرْتُ خَلْفِي فَلَمْ أَرَ شَيْئًا، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَرَأَيْتُ شَيْئًا. فَأَتَيْتُ خَدِيجَةَ فَقُلْتُ: دَثِّرُونِي وَصُبُّوا عَلَيَّ مَاءً بَارِدًا، قَالَ فَدَثَّرُونِي وَصَبُّوا عَلَيَّ مَاءً بَارِدًا، فَنَزَلَتْ: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ، قُمْ فَأَنْذِرْ. وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ﴾)).

[راجع: ٤]

तश्रीह : पहले सूरह इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ही नाज़िल हुई थी बाद में ये सिलसिला एक मुद्दत तक बन्द रहा। फिर पहली आयत या अय्युहल् मुद्दष़्षिर ही नाज़िल हुई। (कमा फ़ी कुतुबित् तफ़्सीर)

बाब 2 : आयत 'क़ुम फ अन्ज़िर' की तफ़्सीर

٢- باب قَوْلُهُ ﴿قُمْ فَأَنْذِرْ﴾

या'नी आप उठिये और फिर लोगों को डराइये।

4923. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने और उनके ग़ैर (अबू दाऊद तयालिसी) ने बयान किया, कहा कि हमसे हर्ब बिन शद्दाद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं ग़ारे हिरा में तंहाई इख़्तियार किये हुए था। ये रिवायत भी उ़ष्मान बिन उ़मर की ह़दीष़ की त़रह है जो उन्होंने अ़ली बिन मुबारक से बयान की है। (राजेअ़ : 4)

٤٩٢٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ وَغَيْرُهُ قَالاَ: حَدَّثَنَا حَرْبُ بْنُ شَدَّادٍ عَنْ يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((جَاوَرْتُ بِحِرَاءٍ)) مِثْلَ حَدِيثِ عُثْمَانَ بْنِ عُمَرَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ الْمُبَارَكِ. [راجع: ٤]

बाब 3 : आयत 'व रब्बक फकब्बिर' की तफ़्सीर

٣- بَابُ ﴿وربك فكبر﴾

या'नी और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।

4924. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, कहा हमसे हर्ब ने बयान किया कि हमसे यह्या ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सलमा से पूछा कि क़ुर्आन मजीद की कौनसी आयत सबसे पहले नाज़िल हुई थी? फ़र्माया कि या अय्युहल मुद्दष़्षिर मैंने कहा कि मुझे ख़बर

٤٩٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا حَرْبٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى قَالَ سَأَلْتُ أَبَا سَلَمَةَ أَيُّ الْقُرْآنِ أُنْزِلَ أَوَّلُ؟ فَقَالَ: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴾

मिली है कि इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ सबसे पहले नाज़िल हुई थी। अबू सलमा ने बयान किया कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से पूछा था कि क़ुर्आन की कौनसी आयत सबसे पहले नाज़िल हुई थी? उन्होंने फ़र्माया कि या अय्युहल मुद्दष्षिर (ऐ कपड़े में लिपटने वाले!) मैंने उनसे यही कहा था कि मुझे तो ख़बर मिली है कि इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़ सबसे पहले नाज़िल हुई थी तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें वही ख़बर दे रहा हूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने ग़ारे हिरा में तन्हाई इख़्तियार की जब मैं वो मुद्दत पूरी कर चुका और नीचे उतरकर वादी के बीच में पहुँचा तो मुझे पुकारा गया। मैंने अपने आगे पीछे दाएँ बाएँ देखा और मुझे दिखाई दिया फ़रिश्ता आसमान और ज़मीन के दरम्यान कुर्सी पर बैठा है। फिर मैं ख़दीजा (रज़ि.) के पास आया और उनसे कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो और मेरे ऊपर ठण्डा पानी डालो और मुझ पर आयत नाज़िल हुई। या अय्युहल मुद्दष्षिर ऐ कपड़े में लिपटने वाले! उठिये फिर लोगों को अ़ज़ाबे आख़िरत से डराइये और अपने परवरदिगार की बड़ाई बयान कीजिए। (राजेअ़ : 4)

فَقُلْتُ أُنْبِئْتُ أَنَّهُ ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ﴾ فَقَالَ أَبُو سَلَمَةَ: سَأَلْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَيُّ الْقُرْآنِ أُنْزِلَ أَوَّلَ؟ فَقَالَ: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ﴾ فَقُلْتُ: أُنْبِئْتُ أَنَّهُ ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ﴾ فَقَالَ: لاَ أُخْبِرُكَ إِلاَّ بِمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((جَاوَرْتُ فِي حِرَاءٍ، فَلَمَّا قَضَيْتُ جِوَارِي هَبَطْتُ فَاسْتَبْطَنْتُ الْوَادِيَ، فَنُودِيتُ فَنَظَرْتُ أَمَامِي وَخَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي، فَإِذَا هُوَ جَالِسٌ عَلَى عَرْشٍ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ. فَأَتَيْتُ خَدِيجَةَ فَقُلْتُ دَثِّرُونِي وَصُبُّوا عَلَى مَاءً بَارِدًا. وَأُنْزِلَ عَلَيَّ: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ﴾)).

[راجع: ٤]

तश्रीह : सूरह इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी के बाद ये पहली आयात हैं जो आप पर नाज़िल हुईं इनमें आपको तब्लीग़े इस्लाम का हुक्म दिया गया है।

बाब 4 : 'व षियाबक फ़तह्हिर' आयत की तफ़्सीर

٤- باب ﴿وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ﴾

या'नी अपने कपड़ों को पाक रखिये।

4925. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) और मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने ख़बर दी, कहा मुझको अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आँहज़रत (ﷺ) दरम्यान मे वह्य का सिलसिला रुक जाने का हाल बयान फ़र्मा रहे थे। आपने फ़र्माया कि मैं रो रहा था कि मैंने आसमान की

٤٩٢٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، فَأَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَهُوَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الْوَحْيِ، فَقَالَ فِي حَدِيثِهِ: ((فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي إِذْ سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا

तरफ़ से आवाज़ सुनी। मैंने अपना सर ऊपर उठाया तो वही फ़रिश्ता नज़र आया जो मेरे पास ग़ारे हिरा में आया था। वो आसमान और ज़मीन के दरम्यान कुर्सी पर बैठा हुआ था। मैं उसके डर से घबरा गया फिर मैं घर वापस आया और ख़दीजा (रज़ि.) से कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो। उन्होंने मुझे कपड़ा ओढ़ा दिया फिर अल्लाह तआला ने आयत, या अय्युहल मुद्दष़्ष़िर से फ़ह्जुर तक नाज़िल की। ये सूरत नमाज़ फ़र्ज़ किये जाने से पहले नाज़िल हुई थी अर् रुजज़ा से मुराद बुत है। (राजेअ : 4)

الْمَلَكُ الَّذِى جَاءَنِي بِحِرَاءِ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَجُئِثْتُ مِنْهُ رُعْبًا، فَرَجَعْتُ فَقُلْتُ زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي فَدَثِّرُونِي. فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ - إِلَى - وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ﴾ قَبْلَ أَنْ تُفْرَضَ الصَّلاَةُ وَهِيَ الأَوْثَانُ)).

[راجع: ٤]

बाब 5 : 'वर्रजज़ फहजुर' की तफ़्सीर या'नी,

और बुतों से अलग रहिये, कहा गया है कि वर् रुजज़ा और अर्रिज्स अ़ज़ाब के मा'नी में हैं।

٥- باب ﴿وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ﴾ يُقَالُ الرِّجْزُ وَالرِّجْسُ الْعَذَابُ.

चूँकि बुतपरस्ती अ़ज़ाब का सबब है लिहाज़ा बुतों को भी ये कह दिया।

4926. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मैंने अबू सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) दरम्यान में वह्य के सिलसिले के रुक जाने के बारे में फ़र्मा रहे थे कि मैं चल रहा था कि आसमान की तरफ़ से आवाज़ सुनी। अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाकर देखा तो वही फ़रिश्ता नज़र आया जो मेरे पास ग़ारे हिरा में आया था। वो कुर्सी पर आसमान और ज़मीन के बीच में बैठा हुआ था। मैं उसे देखकर इतना डरा कि ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर मैं अपनी बीवी के पास आया और उनसे कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो! मुझे कपड़ा ओढ़ा दो। फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की या अय्युहल मुद्दष़्ष़िर फ़ह्जुर तक अबू सलमा ने बयान किया कि अर् रुजज़ा बुत के मा'नी में है। फिर वह्य शुरू हो गई और सिलसिला नहीं टूटा। (राजेअ : 4)

٤٩٢٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ، سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ : أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الْوَحْيِ، ((فَبَيْنَا أَنَا أَمْشِي، إِذْ سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ بَصَرِي قِبَلَ السَّمَاءِ فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءِ قَاعِدٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَجُئِثْتُ مِنْهُ حَتَّى هَوَيْتُ إِلَى الأَرْضِ، فَجِئْتُ أَهْلِي فَقُلْتُ زَمِّلُونِي، زَمِّلُونِي، فَزَمَّلُونِي، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى : ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ -إِلَى قَوْلِهِ - فَاهْجُرْ﴾)) قَالَ أَبُو سَلَمَةَ : وَالرِّجْزُ، الأَوْثَانُ ثُمَّ حَمِيَ الْوَحْيُ وَتَتَابَعَ.

[راجع: ٤]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने कभी बुतपरस्ती नहीं की थी। मगर आपकी क़ौम बुतपरस्त थी। गोया आपको ताकीदन कहा गया कि आप बुतपरस्त क़ौम का साथ बिलकुल छोड़ दें।

सूरह क़यामह की तफ़्सीर

[٧٥] سُورَةُ ﴿الْقِيَامَةِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह तआला का फ़र्मान है, आप उसको (या'नी क़ुर्आन को) जल्दी जल्दी लेने के लिये उस पर ज़ुबान न हिलाया डुलाया करें। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि सुदा या'नी बेक़ैद आज़ाद जो चाहे वो करे। लियफ़्जुरा अमामह या'नी इंसान हमेशा गुनाह करता रहता है और यही कहता रहता है कि जल्दी तौबा कर लूँगा। जल्दी अच्छे अमल करूँगा। ला वज़र ला हिस्न या'नी पनाह के लिये कोई क़िला नहीं मिलेगा।

﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿سُدًى﴾ هَمَلاً. ﴿لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ﴾ سَوْفَ أَتُوبُ، سَوْفَ أَعْمَلُ. ﴿لاَ وَزَرَ﴾ لاَ حِصْنَ.

ये सूरत मक्की है, इसमें 40 आयात और दो रुकूअ हैं।

4927. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन अबी आइशा ने बयान किया और मूसा सिक़ह थे, उन्होंने सईद बिन जुबैर से और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होती तो आप उस पर अपनी ज़ुबान हिलाया करते थे। सुफ़यान ने कहा कि इस हिलाने से आपका मक़्सूद वह्य को याद करना होता था। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़र्माई की, आप जल्दी जल्दी लेने के लिये उस पर ज़ुबान न हिलाया करें, इसका जमा कर देना और इसका पढ़वा देना, ये दोनों काम तो मेरे ज़िम्मे है। (राजेअ : 5)

٤٩٢٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ. حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَبِي عَائِشَةَ وَكَانَ ثِقَةً عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا نَزَلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ، حَرَّكَ بِهِ لِسَانَهُ. وَوَصَفَ سُفْيَانُ يُرِيدُ أَنْ يَحْفَظَهُ فَأَنْزَلَ اللهُ : ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾.

[راجع: ٥]

बाब 2 : 'इन्ना अलैना जमअहू व क़ुर्आनहू' की तफ़्सीर

٢- باب ﴿إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ﴾

4928. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने, उनसे मूसा बिन अबी आइशा ने कि उन्होने सईद बिन जुबैर से अल्लाह तआला के इर्शाद ला तुहर्रिकु बिही लिसानक अल आयत या'नी आप क़ुर्आन को लेने के लिये ज़ुबान न हिलाया करें के बारे में पूछा तो उन्होंने बयान किया कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा जब रसूले करीम (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई तो आप अपने होंठ हिलाया करते थे इसलिये आपसे कहा गया कि ला तुहर्रिकु बिही लिसानक अल्अख़ या'नी वह्य

٤٩٢٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ أَنَّهُ سَأَلَ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَانَ يُحَرِّكُ شَفَتَيْهِ إِذَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ، فَقِيلَ لَهُ: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ﴾ يَخْشَى أَنْ

पर अपनी ज़ुबान न हिलाया करें, इसका तुम्हारे दिल में जमा देना और इसका पढ़ा देना हमारा काम है। जब हम इसको पढ़ चुकें या'नी जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) को सुना चुकें तो जैसा ज़िब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) ने पढ़कर सुनाया तू भी उस तरह पढ़। फिर ये भी हमारा ही काम है कि हम तेरी ज़ुबान से इसको पढ़वा देंगे। (राजेअ़ : 5)

يَتَفَلَّتَ مِنْهُ، إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ : وَقُرْآنَهُ أَنْ نَجْمَعَهُ فِي صَدْرِكَ، وَقُرْآنَهُ أَنْ تَقْرَأَهُ، فَإِذَا قَرَأْنَاهُ يَقُولُ : ﴿أُنْزِلَ عَلَيْهِ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ﴾ أَنْ نُبَيِّنَهُ عَلَى لِسَانِكَ.

[راجع: ٥]

बाब 3 : 'फ़इज़ा करअनाहू फ़त्तबिअ़ क़ुर्आनहू' की तफ़्सीर

٣- بَابٌ ﴿فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ﴾

या'नी, फिर जब हम उसे पढ़ने लगें तो आप इसके ताबेअ़ हो जाया करें। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा क़रानाहु के मा'नी ये हैं हमने उसे बयान किया, और फ़त्तबिअ़ का मा'नी ये कि तुम इस पर अ़मल करो।

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : قَرَأْنَاهُ بَيَّنَّاهُ فَاتَّبِعْ إِعْمَلْ بِهِ.

4929. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अबी आ़इशा ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला का इर्शाद ला तुह़रिकु बिही लिसानक अल आयत या'नी आप इसको जल्दी जल्दी लेने के लिये इस पर ज़ुबान न हिलाया करें, के बारे में बतलाया कि जब ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) आप पर वह्य नाज़िल करते तो रसूले करीम (ﷺ) अपनी ज़ुबान और होंठ हिलाया करते थे और आप पर ये बहुत सख़्त गुज़रता, ये आपक चेहरे से भी ज़ाहिर होता था। इसलिये अल्लाह तआ़ला ने वो आयत नाज़िल की जो सूरह ला उक़्सिमु बि यौमिल क़ियामह् में है या'नी ला तुह़र्रिकु बिही अल आयत या'नी आप इसको जल्दी जल्दी लेने के लिये उस पर ज़ुबान न हिलाया करें । ये तो हमारे ज़िम्मे है उसका जमा कर देना और उसका पढ़वाना, फिर जब हम उसे पढ़ने लग तो आप उसके पीछे याद करते जाया करें। या'नी जब हम वह्य नाज़िल करें तो आप ग़ौर से सुनें। फिर उसका बयान करा देना भी हमारे ज़िम्मे है। या'नी ये भी हमारे ज़िम्मे है कि हम उसे आपकी ज़ुबानी लोगों के स ामने बयान करा दें। बयान किया कि चुनाँचे उसके ब ाद जब जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) वह्य लेकर आते तो आँह़ज़रत (ﷺ) ख़ामोश हो जाते और जब चले जाते तो पढ़ते जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने आपसे वा'दा किया था। आयत औला लका फ़औला में तहदीद या'नी डराना धमकाना मुराद है। (राजेअ़ : 5)

٤٩٢٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ جِبْرِيلُ بِالْوَحْيِ، وَكَانَ مِمَّا يُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَهُ وَشَفَتَيْهِ فَيَشْتَدُّ عَلَيْهِ، وَكَانَ يُعْرَفُ مِنْهُ فَأَنْزَلَ اللهُ الآيَةَ الَّتِي فِي ﴿لاَ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ﴾: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ﴾ قَالَ : عَلَيْنَا أَنْ نَجْمَعَهُ فِي صَدْرِكَ وَقُرْآنَهُ ﴿فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ﴾ فَإِذَا أَنْزَلْنَاهُ فَاسْتَمِعْ ﴿ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ﴾ عَلَيْنَا أَنْ نُبَيِّنَهُ بِلِسَانِكَ، قَالَ: فَكَانَ إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيلُ أَطْرَقَ فَإِذَا ذَهَبَ قَرَأَهُ كَمَا وَعَدَهُ اللهُ : ﴿أَوْلَى لَكَ فَأَوْلَى﴾ تَوَعُّدٌ.

[راجع: ٥]

[٧٦] سورة ﴿هَلْ أَتَى عَلَى الإِنْسَانِ﴾

يُقَالُ مَعْنَاهُ هَلْ أَتَى عَلَى الإِنْسَانِ، وَهَلْ تَكُونُ جَحْدًا وَتَكُونُ خَبَرًا، وَهَذَا مِنَ الْخَبَرِ، يَقُولُ: كَانَ شَيْئًا فَلَمْ يَكُنْ مَذْكُورًا، وَذَلِكَ مِنْ حِينِ خَلْقِهِ مِنْ طِينٍ إِلَى أَنْ يُنْفَخَ فِيهِ الرُّوحُ. ﴿أَمْشَاجٍ﴾: الأَخْلاَطُ: مَاءُ الْمَرْأَةِ وَمَاءُ الرَّجُلِ، الدَّمُ وَالْعَلَقَةُ، وَيُقَالُ : إِذَا خُلِطَ مَشِيجٌ، كَقَوْلِكَ لَهُ خَلِيطٌ، وَمَمْشُوجٌ مِثْلُ مَخْلُوطٍ. وَيُقَالُ سَلاَ سِلاً وَأَغْلاَلاً، وَلَمْ يُجِزْهُ بَعْضُهُمْ. مُسْتَطِيرًا، مُمْتَدًّا الْبَلاَءُ. وَالْقَمْطَرِيرُ الشَّدِيدُ، يُقَالُ يَوْمٌ قَمْطَرِيرٌ وَيَوْمٌ قُمَاطِرٌ، وَالْعَبُوسُ وَالْقَمْطَرِيرُ وَالْقُمَاطِرُ وَالْعَصِيبُ أَشَدُّ مَا يَكُونُ مِنَ الأَيَّامِ فِي الْبَلاَءِ. وَقَالَ مَعْمَرٌ: ﴿أَسْرَهُمْ﴾ شِدَّةُ الْخَلْقِ وَكُلُّ شَيْءٍ شَدَدْتَهُ مِنْ قَتَبٍ فَهُوَ مَأْسُورٌ.

सूरह दहर की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लफ़्ज़ हल अता का मा'नी आ चुका। हल का लफ़्ज़ कभी तो इंकार के लिये आता है, कभी तह्क़ीक़ के लिये (क़द के मा'नी में) यहाँ क़द ही के मा'नी में है। या'नी एक ज़माना इंसान पर ऐसा आ चुका है कि वो ज़िक्र करने के क़ाबिल चीज़ न था, ये वो ज़माना है जब मिट्टी से उसका पुतला बनाया गया था। उस वक़्त तक जब रूह उसमें फूँकी गई। अम्शाज मिली हुई चीज़ें या'नी मर्द और औरत दोनों की मनी और ख़ून और फुटकी और जब कोई चीज़ दूसरी चीज़ से मिला दी जाए तो कहते हैं मशीज जैसे ख़लीत़ या'नी मम्शूज और मख़्लूत़ कुछ ने यूँ पढ़ा है सलासिला व अग़लाला (कुछ ने सलासिल व अग़लाला बग़ैर तनवीन के पढ़ा है) उन्होंने सलासिला की तनवीन जाइज़ नहीं रखी। मुस्तत़ीरा उसकी बुराई फैल हुई। क़म्त़रीर सख़्त। अरब लोग कहते हैं यौम क़म्त़रीर व यौमा क़ुमात़िर या'नी सख़्त मुसीबत का दिन। अबूस और क़म्त़रीर और क़ुमात़िर और असीब इन चारों के मा'नी वो दिन जिस पे सख़्त मुसीबत आए और मअ़मर बिन उ़बैदह ने कहा शददना अस्रहुम का मा'नी ये है कि हमने उनकी ख़िल्क़त ख़ूब मज़बूत़ की है। अरब लोग जिसको तू मज़बूत़ बाँधे जैसे पालान हौदज वग़ैरह उसको मासूर कहते हैं (रसूले करीम ﷺ जुम्आ की नमाज़े फ़ज्र में) अकषर पहली रकअ़त मे सूरह अलिफ़ लाम मीम सज्दा और दूसरी रकअ़त में सूरह हल अता अ़लल इंसान की तिलावत फ़र्माया करते थे।

ये सूरह मक्की है, इसमें 31 आयात और दो रुकूअ़ हैं।

[٧٧] سُورَةُ ﴿وَالْمُرْسَلاَتِ﴾

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: جِمَالاَتٌ: حِبَالٌ. ارْكَعُوا : صَلُّوا. لاَ يَرْكَعُونَ : لاَ يُصَلُّونَ. وَسُئِلَ

सूरह वल मुर्सलात की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

और मुजाहिद ने कहा जिमालात जहाज़ की मोटी रस्सियाँ। इर्कऊ नमाज़ पढ़ो। ला यरकऊन नमाज़ नहीं पढ़ते। किसी ने

ابْنُ عَبَّاسٍ لاَ يَنْطِقُونَ، وَاللهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ، الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ، فَقَالَ : إِنَّهُ ذُو أَلْوَانٍ : مَرَّةً يَنْطِقُونَ، وَمَرَّةً يُخْتَمُ عَلَيْهِمْ.

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा ये क़ुर्आन मजीद मे इख़्तिलाफ़ किया है एक जगह तो फ़र्माया कि काफ़िर बात न करेंगे। दूसरी जगह यूँ है कि काफ़िर क़सम खाकर कहेंगे कि हम (दुनिया मे) मुश्रिक न थे। तीसरी जगह यूँ है कि हम उनके मूँहों पर मुहर लगा देंगे। उन्होंने कहा क़यामत के दिन काफ़िरों के मुख़्तलिफ़ हालात होंगे। कभी तो वो बात करेंगे, कभी उनके मुँह पर मुहर कर दी जाएगी।

(वो बात न कर सकेंगे) हज़रत मुजाहिद बिन जुबैर मशहूर ताबेई हैं, कुन्नियत अबुल हज्जाज है। अ़ब्दुल्लाह बिन साइब के आज़ाद कर्दा बनू मख़्ज़ूम से हैं। मक्कतुल मुकर्रमा के क़ारियों और फ़ुक़हा में मअ़रूफ़ सरकर्दा शख़्स हैं। क़िरात और तफ़्सीर के इमाम हैं। 100 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। रहिमहुल्लाहु तआ़ला। ये सूरह मक्की है उसमें 50 आयात और दो रुकूअ़ हैं।

٤٩٣٠- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأُنْزِلَتْ عَلَيْهِ ﴿وَالْمُرْسَلاَتِ﴾ وَإِنَّا لَنَتَلَقَّاهَا مِنْ فِيهِ، فَخَرَجَتْ حَيَّةٌ فَابْتَدَرْنَاهَا، فَسَبَقَتْنَا فَدَخَلَتْ جُحْرَهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((وُقِيَتْ شَرَّكُمْ كَمَا وُقِيتُمْ شَرَّهَا)).

[راجع: ١٨٣٠]

4930. हमसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ थे और आप पर सूरह वल मुर्सलात नाज़िल हुई थी और हम उसको आप (ﷺ) के मुँह से सीख रहे थे कि इतने में एक सांप निकल आया। हम लोग उसके मारने को बढ़े लेकिन वो बच निकला और अपने सुराख़ में घुस गया। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो तुम्हारे शर से बच गया और तुम उसके शर से बच गये। (राजेअ़: 1830)

٤٩٣١- حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ مَنْصُورٍ بِهَذَا، وَعَنْ إِسْرَائِيلَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ مِثْلَهُ. وَتَابَعَهُ أَسْوَدُ بْنُ عَامِرٍ عَنْ إِسْرَائِيلَ وَقَالَ حَفْصٌ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَسُلَيْمَانُ بْنُ قَرْمٍ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ: أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ

4931. हमसे अ़ब्दह बिन अ़ब्दुल्लाह ख़ुज़ाई ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन आदम ने ख़बर दी, उन्हें इस्राईल ने, उन्हे मंसूर ने यही हदीष़ और इस्राईल ने इस हदीष़ को आ'मश से, उन्होंने इब्राहीम से, उन्होंने अ़ल्क़मा से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द(रज़ि.) से भी रिवायत किया है और यह्या बिन आदम के साथ इस हदीष़ को अस्वद बिन आ़मिर ने इस्राईल से रिवायत किया और हफ़्स बिन ग़याष़ और अबू मुआ़विया और सुलैमान बिन क़रम ने आ'मश से, उन्होंने इब्राहीम से, उन्होंने अस्वद से रिवायत किया और यह्या बिन हम्माद (शैख़ बुख़ारी) ने कहा हमको अबू अ़वाना ने ख़बर दी, उन्होंने मुग़ीरह से, उन्होंने इब्राहीम से, उन्होंने अ़ल्क़मा से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से और मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने इस हदीष़

عَبْدِ اللهِ، وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ: عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَسْوَدِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ.
[راجع: ۱۸۳۰]

को अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद से रिवायत किया, उन्होंने अपने वालिद अस्वद से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से बयान किया। (राजेअ़ : 1830)

– حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ : قَالَ عَبْدُ اللهِ بَيْنَا نَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَارٍ إِذْ نَزَلَتْ عَلَيْهِ ﴿وَالْمُرْسَلاَتِ﴾ فَتَلَقَّيْنَاهَا مِنْ فِيهِ، وَإِنَّ فَاهُ لَرَطْبٌ بِهَا، إِذْ خَرَجَتْ حَيَّةٌ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((عَلَيْكُمْ، اقْتُلُوهَا))، قَالَ فَابْتَدَرْنَاهَا فَسَبَقَتْنَا قَالَ: فَقَالَ: ((وُقِيَتْ شَرَّكُمْ، كَمَا وُقِيتُمْ شَرَّهَا)).

हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि) ने बयान किया कि हम रसूले करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ार में थे कि आप पर सूरह वल् मुर्सलात नाज़िल हुई। हमने उसे आपके मुँह से याद कर लिया। इस वह्य से आपके दहने मुबारक की ताज़गी अभी ख़त्म नहीं हुई थी कि इतने में एक सांप निकल पड़ा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इसे ज़िन्दा न छोड़ो। बयान किया कि हम उसकी त़रफ़ बढ़े लेकिन वो निकल गया। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उसके शर से बच गये और वो तुम्हारे शर से बच गया।

तश्रीह : सनद में अस्वद बिन यज़ीद बिन क़ैस नख़ई मुराद हैं जो अल्क़मा के साथी और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के शागिर्द थे। वो क़स्तलानी (रह़) ने ग़लती की जो उसको अस्वद बिन आ़मिर क़रार दिया। अस्वद बिन आ़मिर शाज़ान त़ब्क़-ए-तासिआ़ में और अस्वद मज़्कूरा त़ब्क़ा षानिया में हैं (वह़ीदी)

٢– باب قَوْلِهِ : ﴿إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ﴾

बाब 2 : आयत 'इन्नहा तर्मी बिशररिन कल्क़स्र' की तफ़्सीर या'नी,

और दोज़ख़ बड़े बड़े मह़ल जैसे आग के अंगारे फेंकेगी।

٤٩٣٢– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ : ﴿إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ﴾، قَالَ: كُنَّا نَرْفَعُ الْخَشَبَ بِقَصَرٍ ثَلاَثَةَ أَذْرُعٍ أَوْ أَقَلَّ. فَنَرْفَعُهُ لِلشِّتَاءِ، فَنُسَمِّيهِ الْقَصَرَ.
[طرفه في : ٤٩٣٣].

4933. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफियान ने ख़बर दी, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन आ़बिस ने बयान किया, कहा मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से आयत इन्नहा तरमी बिशररिन कल क़स्र या'नी वो अंगारे बरसाएगी जैसे बड़े महल, के बारे में पूछा और उन्होंने कहा कि हम तीन तीन हाथ की लकड़ियाँ उठाकर रखते थे। ऐसा हम जाड़ों के लिये करते थे (ताकि वो जलाने के काम आएँ) और उनका नाम क़स्र रखते थे। (दीगर मक़ाम : 4933)

٣– باب قَوْلِهِ : ﴿كَأَنَّهُ جِمَالاَتٌ صُفْرٌ﴾

बाब 3 : आयत 'कअन्नहू जिमालातुन सुफ़्र' की तफ़्सीर या'नी,

गोया कि वो अंगार पीले पीले रंग वाले ऊँट हैं।

٤٩٣٣– حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ

4933. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे

यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें सुफ़यान ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन आ़बिस ने बयान किया और उन्होंने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, आयत तरमी बिशररिन कल क़स्र के बारे में। आपने फ़र्माया कि हम तीन हाथ या उससे भी लम्बी लकड़ियाँ उठाकर जाड़ों के लिये रख लेते थे। ऐसी लकड़ियों को हम क़स्र कहते थे कअन्नहू जिमालातुन सुफ़्र से मुराद कश्ती की रस्सियाँ हैं जो जोड़कर रखी जाएँ, वो आदमी की कमर बराबर मोटी हो जाएँ। (राजेअ़ : 4932)

الرَّحْمَنِ بْنُ عَابِسٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿تَرْمِي بِشَرَرٍ﴾: كُنَّا نَعْمِدُ إِلَى الْخَشَبَةِ ثَلاَثَةَ أَذْرُعٍ وَفَوْقَ ذَلِكَ فَنَرْفَعُهُ لِلشِّتَاءِ، فَنُسَمِّيهِ الْقَصَرَ. كَأَنَّهُ جِمَالاَتٌ صُفْرٌ حِبَالُ السُّفُنِ، تُجْمَعُ حَتَّى تَكُونَ كَأَوْسَاطِ الرِّجَالِ.

[راجع: ٤٩٣٢]

बाब 4 : 'हाज़ा यौमुल्ला यन्तिक़ून' की तफ़्सीर

٤- باب ﴿هَذَا يَوْمُ لاَ يَنْطِقُونَ﴾

या'नी, आज वो दिन है कि उसमें ये लोग बोल ही न सकेंगे।

4934. हमसे उ़मर बिन हफ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा मुझसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अस्वद ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ग़ार में थे कि आँहज़रत (ﷺ) पर सूरह वल मुर्सलात नाज़िल हुई, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी तिलावत की और मैंने उसे आप ही के मुँह से याद कर लिया। वह्य से आपकी मुँह की ताज़गी उस वक़्त भी बाक़ी थी कि इतने में ग़ार की त़रफ़ एक सांप लपका। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे मार डालो। हम उसकी त़रफ़ बढ़े लेकिन वो भाग गया। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि वो भी तुम्हारे शर से इस त़रह बच निकला जैसा कि तुम उसके शर से बच गये। उ़मर बिन हफ़्स़ ने कहा मुझे ये ह़दीष़ याद है, मैंने अपने वालिद से सुनी थी, उन्होंने इतना और बढ़ाया था कि वो ग़ार मिना में था। (राजेअ़ : 1830)

٤٩٣٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي غَارٍ، إِذَا نَزَلَتْ عَلَيْهِ: ﴿وَالْمُرْسَلاَتِ﴾ فَإِنَّهُ لَيَتْلُوهَا وَإِنِّي لأَتَلَقَّاهَا مِنْ فِيهِ، وَإِنَّ فَاهُ لَرَطْبٌ بِهَا إِذْ وَثَبَتْ عَلَيْنَا حَيَّةٌ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اقْتُلُوهَا)). فَابْتَدَرْنَاهَا فَذَهَبَتْ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وُقِيَتْ شَرَّكُمْ، كَمَا وُقِيتُمْ شَرَّهَا)). قَالَ عُمَرُ: حَفِظْتُهُ مِنْ أَبِي فِي غَارٍ بِمِنًى.

[راجع: ١٨٣٠]

सूरह 'अम्म यतसाअलून' की तफ़्सीर

[٧٨] سُورَةُ ﴿عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा ला यरजूना ह़िसाबा का मा'नी ये है कि वो आ़माल के (ह़िसाब किताब) से नहीं डरते। ला यम्लिकूना मिन्हू ख़ित़ाबा या'नी डर के मारे उससे बात न कर सकेंगे मगर जब उनको बात करने की इजाज़त मिलेगी। स़वाबा या'नी

قَالَ مُجَاهِدٌ لاَ يَرْجُونَ حِسَابًا: لا يخافونه لاَ يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا، لاَ يُكَلِّمُونَهُ إِلاَّ أَنْ يَأْذَنَ لَهُمْ. صَوَابًا : حَقًّا فِي الدُّنْيَا وَعَمِلَ

بِهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَهَّاجًا: مُضِيئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ: غَسَّاقًا: غَسَقَتْ عَيْنُهُ وَيَغْسِقُ الْجُرْحُ يَسِيلُ كَأَنَّ الْغَسَاقَ وَالْغَسِيقَ وَاحِدٌ. عَطَاءً حِسَابًا: جَزَاءً كَافِيًا، أَعْطَانِي مَا أَحْسَبَنِي، أَيْ كَفَانِي.

जिसने दुनिया में सच्ची बात कही थी उस पर अ़मल किया था। इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) ने कहा वह्हाजा रोशन चमकता हुआ। औरों ने कहा ग़स्साक़्स ग़सक़त अ़यनुहू से निकला है या'नी उसकी आँख तारीक हो गई, उसी से है। यग़्सिक़ुल जरह या'नी ज़ख़्म बह रहा है ग़साक़ और ग़सीक़ दोनों का एक ही मा'नी है या'नी दोज़ख़ियों का ख़ून पीप। अ़त़ाअन ह़िसाबा पूरा बदला अ़रब लोग कहते हैं। अ़अ़त़ानी मा अह़सबनी या'नी मुझको इतना दिया जो काफ़ी हो गया।

ये सूरत मक्की है इसमे चालीस आयात और 2 रुकूअ़ हैं।

١- باب ﴿يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا﴾ زُمَرًا

बाब 1 : आयत 'यौम युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

वो दिन कि जब सूर फूँका जाएगा तो तुम गिरोह दर गिरोह होकर आओगे। अफ़्वाजा के मा'नी ज़ुमुरा या'नी गिरोह गिरोह के हैं।

٤٩٣٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ، قَالَ: أَرْبَعُونَ، يَوْمًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ : أَرْبَعُونَ شَهْرًا؟ قَالَ : أَبَيْتُ. قَالَ : أَرْبَعُونَ سَنَةً؟ قَالَ : أَبَيْتُ. قَالَ : ثُمَّ يُنْزِلُ اللهُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً، فَيَنْبُتُونَ كَمَا يَنْبُتُ الْبَقْلُ، لَيْسَ مِنَ الإِنْسَانِ شَيْءٌ إِلاَّ يَبْلَى، إِلاَّ عَظْمًا وَاحِدًا وَهُوَ عَجْبُ الذَّنَبِ، وَمِنْهُ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)). [راجع: ٤٨١٤]

4935. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उन्हे आ'मश ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो सूर फूँके जाने के दरम्यान चालीस फ़ास़ला होगा। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस महीने मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस साल मुराद हैं? कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। कहा कि फिर अल्लाह तआ़ला आसमान से पानी बरसाएगा। जिसकी वजह से तमाम मुर्दे जी उठेंगे जैसे सब्ज़ियाँ पानी से आग आती हैं। उस वक़्त इंसान का हर ह़िस़्सा गल चुका होगा। सिवा रीढ़ की हड्डी के और उससे क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (राजेअ़ : 4814)

इब्ने मर्दवैह ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ास़ला होगा।

[٧٩] سُورَةُ ﴿وَالنَّازِعَاتِ﴾

सूरह वन्नाज़िआ़त की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा अल आयतुल कुब्रा से मुराद ह़ज़रत मूसा (अलैहि.) की अ़सा और उनका हाथ है। इज़ामन्न ख़िरह और नाख़िरह दोनों त़रह़ से पढ़ा है जैसे त़ामिअ़ और त़मिअ़ और बाख़िल और बुख़्ल और कुछ ने कहा नख़िरतु और नाख़िरतु में फ़र्क़ है। नख़िरतु कहते हैं गली हुई हड्डी को और नाख़िरतु खोखली हड्डी जिसके अंदर हवा जाए तो आवाज़ निकले और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ह़ाफ़िरह हमारी वो ह़ालत जो दुनिया की (ज़िंदगी) में है ओरों ने कहा अय्यान मुरसाहा या'नी उसकी इंतिहा कहाँ है ये लफ़्ज़ मुर्सस् सफ़ीनत से निकला है। या'नी जहाँ कश्ती आख़िर में जाकर ठहरती है।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الآيَةُ الْكُبْرَى عَصَاهُ. وَيَدُهُ. يُقَالُ: النَّاخِرَةُ وَالنَّخِرَةُ سَوَاءٌ، مِثْلَ الطَّامِعِ وَالطَّمِعِ، وَالْبَاخِلِ وَالْبَخِيلِ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ: النَّخِرَةُ الْبَالِيَةُ وَالنَّاخِرَةُ الْعَظْمُ الْمُجَوَّفُ الَّذِي يَمُرُّ فِيهِ الرِّيحُ فَيَنْخَرُ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الْحَافِرَةُ الَّتِي أَمْرُنَا الأَوَّلُ إِلَى الْحَيَاةِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: أَيَّانَ مُرْسَاهَا مَتَى مُنْتَهَاهَا، وَمُرْسَى السَّفِينَةِ حَيْثُ تَنْتَهِي.

ये सूरत मक्की है, इसमें 46 आयात और 2 रुकूअ़ हैं।

4936. हमसे अह़मद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप अपनी बीच की उँगली और अंगूठे के क़रीब वाली उँगली के इशारे से फ़र्मा रहे थे कि मैं ऐसे वक़्त में मब्ऊ़ष़ हुआ हूँ कि मेरे और क़यामत के बीच सिर्फ़ इन दो के बराबर फ़ास़ला है।

٤٩٣٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ بِإِصْبَعَيْهِ: هَكَذَا بِالْوُسْطَى وَالَّتِي تَلِي الإِبْهَامَ، ((بُعِثْتُ وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ. الطَّامَّةُ تَطُمُّ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ)).

या'नी क़यामत में और आँहुज़ूर (ﷺ) की बिअ़ष़त में अब सिर्फ़ इतना फ़ास़ला रह गया है जितना इन दो उँगलियों में है। दुनिया के अव्वल से आख़िर तक वजूद की मिष़ाल उँगलियों से दी गई है और मुराद ये है कि अकष़र मुद्दत गुज़र चुकी और जो कुछ रह गई है वो मुद्दत बहुत ही कम है।

सूरह अ़बस की तफ़्सीर

[٨٠] سُورَةُ ﴿عَبَسَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अ़बस मुँह बनाया। तवल्ला मुँह फेर लिया। औरों ने कहा मुत़ह्हरा दूसरी जगह फ़र्माया। ला यमस्सुहा इल्लल् मुत़ह्हरून उनको वही हाथ लगाते हैं जोपाक हैं या'नी फ़रिश्ते। तो मह़मूल की स़िफ़त ह़ामिल की कर दी। जैसे फ़ल् मुदब्बिराति अम्रन मुदब्बिरात से मुराद सवार हैं (जो मह़मूल हैं) मिजाज़न उनके ह़ामिलों या'नी घोड़ों को मुदब्बिरात कह दिया। वस् सुहुफ़ मुत़ह्हरा यहाँ अस़ल में तत़्हिर किताबों की स़िफ़त है उनके उठाने वालों या'नी फ़रिश्तों को भी मुत़ह्हिर फ़र्माया। सफ़रह

﴿عَبَسَ﴾ كَلَحَ وَأَعْرَضَ. وَقَالَ غَيْرُهُ: مُطَهَّرَةٌ لاَ يَمَسُّهَا إِلاَّ الْمُطَهَّرُونَ وَهُمُ الْمَلاَئِكَةُ، وَهَذَا مِثْلُ قَوْلِهِ: ﴿فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا﴾ جَعَلَ الْمَلاَئِكَةَ وَالصُّحُفَ مُطَهَّرَةً لأَنَّ الصُّحُفَ يَقَعُ عَلَيْهَا التَّطْهِيرُ، فَجَعَلَ التَّطْهِيرَ لِمَنْ حَمَلَهَا أَيْضًا. سَفَرَةٌ:

الْمَلاَئِكَةُ، وَاحِدُهُمْ سَافِرٌ، سَفَرْتُ أَصْلَحْتُ بَيْنَهُمْ، وَجُعِلَتِ الْمَلاَئِكَةُ إِذَا نَزَلَتْ بِوَحْيِ اللهِ وَتَأْدِيَتِهِ كَالسَّفِيرِ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ الْقَوْمِ. وَقَالَ غَيْرُهُ: تَصَدَّى تَغَافَلَ عَنْهُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿لَمَّا يَقْضِ﴾ لاَ يَقْضِ أَحَدٌ مَا أُمِرَ بِهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿تَرْهَقُهَا﴾ تَغْشَاهَا شِدَّةٌ. ﴿مُسْفِرَةٌ﴾ مُشْرِقَةٌ. ﴿بِأَيْدِي سَفَرَةٍ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ كَتَبَةٍ، ﴿أَسْفَارًا﴾ كُتُبًا. ﴿تَلَهَّى﴾ تَشَاغَلَ. يُقَالُ وَاحِدُ الأَسْفَارِ سِفْرٌ.

फ़रिश्ते ये साफ़िर की जमा है अरब लोग कहते हैं सफ़रतु बैनल क़ौम या'नी मैंने क़ौम के लोगों में सुलह करा दी जो फ़रिश्ते अल्लाह की वह्य लेकर पैग़म्बरों को पहुँचाते हैं। उनको भी सफ़ीर क़रार दिया जो लोगों में मिलाप कराता है। कुछ ने कहा सफ़रह के मा'नी लिखने वाले ओरों ने कहा तसद्दा के मा'नी ग़ाफ़िल हो जाना है। मुजाहिद ने कहा। लम्मा यक़्ज़िमा अमरा का मा'नी ये है कि आदमी को जिस बात का हुक्म दिया गया था वो उसने पूरा पूरा अदा नहीं किया और इब्ने अ ब्बास (रज़ि.) ने कहा तरहक़ुहा क़तरह का मा'नी ये है कि उस पर सख़्ती बरस रही होगी। मुस्फ़िरह चमकते हुए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा। सफ़रह के मा'नी लिखने वाले। सूरह जुम्आ में लफ़्ज़ अस्फ़ार इसी से है या'नी किताबें। तलह्हा ग़ाफ़िल होता है कहते हैं अस्फ़ार जो किताबों के म अनी में है। सिफ़्र बकसरि सीन की जमा है।

ये सूरत मक्की है इसमें 42 आयात हैं और एक रुकूअ है।

सूरह अबस का शाने नुज़ूल ये है कि एक बार कुरैश के नामी गिरामी लोग आँहज़रत (ﷺ) की मजलिस में आए हुए थे और आप (ﷺ) उनसे कुबूलियते इस्लाम की उम्मीद पर मशग़ूले गुफ़्तगू थे। ऐसे वक़्त में उस मज्लिस में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम नाबीना (रज़ि.) तशरीफ़ ले आए। आपने उस वक़्त उनका आना नापसंद किया। इस पर अल्लाह पाक ने ये सूरह शरीफ़ा नाज़िल करके आँहज़रत (ﷺ) को तम्बीह फ़र्माई बाद में जब कभी ये नाबीना बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाते, आँहज़रत (ﷺ) पूरे एअज़ाज़ के साथ उनसे मुख़ातिब होते थे।

٤٩٣٧ - حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: سَمِعْتُ زُرَارَةَ بْنَ أَوْفَى يُحَدِّثُ عَنْ سَعْدِ بْنِ هِشَامٍ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَهُوَ حَافِظٌ لَهُ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ، وَمَثَلُ الَّذِي يَقْرَؤُهُ وَهُوَ يَتَعَاهَدُهُ وَهُوَ عَلَيْهِ شَدِيدٌ فَلَهُ أَجْرَانِ)).

4937. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुरारह बिन औफ़ा से सुना, वो सअद बिन हिशाम से बयान करते थे और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उस शख़्स की मिषाल जो कुर्आन पढ़ता है और वो उसका हाफ़िज़ भी है, मुकर्रम और नेक लिखने वाले (फ़रिश्तों) जैसी है और जो शख़्स क़ुर्आन मजीद बार बार पढ़ता है फिर भी वो उसके लिये दुश्वार है तो उसे दोगुना षवाब मिलेगा।

कुछ लोगों की ज़ुबानों पर अल्फ़ाज़े कुर्आन पाक जल्दी नहीं चढ़ते और उनको बार बार मश्क़ करनी पड़ती है। उन ही के लिये दो गुना षवाब है क्योंकि वो काफ़ी मशक़्क़त के बाद क़िराते कुर्आन में कामयाब होते हैं।

[٨١] باب ﴿إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ﴾

सूरह 'इज़शशम्सु कुव्विरत' की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

﴿انْكَدَرَتْ﴾ انْتَثَرَتْ. وَقَالَ الْحَسَنُ: ﴿سُجِرَتْ﴾: ذَهَبَ مَاؤُهَا فَلاَ يَبْقَى قَطْرَةٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿الْمَسْجُورُ﴾ الْمَمْلُوءُ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿سُجِرَتْ﴾ أَفْضَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ، فَصَارَتْ بَحْرًا وَاحِدًا. ﴿وَالْخُنَّسُ﴾ تَخْنِسُ فِي مُجْرَاهَا تَرْجِعُ. وَتَكْنِسُ تَسْتَتِرُ كَمَا تَكْنِسُ الظِّبَاءُ. ﴿تَنَفَّسَ﴾ ارْتَفَعَ النَّهَارُ. ﴿وَالظَّنِينُ﴾ الْمُتَّهَمُ وَالضَّنِينُ يَضَنُّ بِهِ. وَقَالَ عُمَرُ ﴿النُّفُوسُ زُوِّجَتْ﴾ يُزَوَّجُ نَظِيرُهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ ثُمَّ قَرَأَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ﴿احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ﴾ ﴿عَسْعَسَ﴾ أَدْبَرَ.

इमाम हसन बस़री ने कहा सुज्जिरत का मा'नी ये है कि समन्दर सूख जाएँगे, उनमें पानी का एक क़तरा भी बाक़ी न रहेगा। मुजाहिद ने कहा मस्जूर का मा'नी (जो सूरह तूर में है) भरा हुआ औरों ने कहा सुज्जिरत का मा'नी ये है कि समुन्दर फूटकर एक–दूसरे से मिलकर एक समन्दर बन जाएँगे। ख़ुन्नस चलने का मक़ाम में फिर लौटकर आने वाले। कुन्नस तक्निसु से निकला है या'नी हिरण की तरह छुप जाते हैं। तनफ़्फ़स दिन चढ़ जाए। ज़नीन (ज़ाए मुअज्जमा से ये भी एक क़िरात है) या'नी तोहमत लगाता है और ज़नीन इसका मा'नी ये है कि वो अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने में बख़ील नहीं है और ह़ज़रत उमर (रज़ि) ने कहा अन् नुफ़ूस ज़ुव्विजत या'नी हर आदमी को जोड़ लगा दिया जाएगा ख़्वाह जन्नती हो या दोज़ख़ी फिर ये आयत पढ़ी। उह़शुरुल्लज़ीना ज़लमू व अज़्वाजहुम अस्अस जब रात पीठ फेर ले।

या जब रात का अंधेरा आ पड़े।

ये सूरत मक्की है, इसमे 29 आयात और एक रुकूअ है।

[٨٢] سورة ﴿إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ﴾

सूरह 'इज़स्समाउन्फ़त़रत' की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ الرَّبِيعُ بْنُ خُثَيْمٍ : فُجِّرَتْ فَاضَتْ. وَقَرَأَ الأَعْمَشُ وَعَاصِمٌ ﴿فَعَدَلَكَ﴾ بِالتَّخْفِيفِ، وَقَرَأَهُ أَهْلُ الْحِجَازِ بِالتَّشْدِيدِ، وَأَرَادَ مُعْتَدِلَ الْخَلْقِ. وَمَنْ خَفَّفَ يَعْنِي فِي أَيِّ صُورَةٍ شَاءَ: إِمَّا حَسَنٌ وَإِمَّا قَبِيحٌ، وَطَوِيلٌ وَقَصِيرٌ.

रबीअ बिन ख़ुषीम ने कहा फ़ुज्जिरत के मा'नी बह निकलें और आ'मश और आ़सिम ने फ़अदलक को तख़्फ़ीफ़े दाल के साथ पढ़ा है। हिजाज़ वालों ने फ़अद्दलक तशदीदे दाल के साथ पढ़ा है। जब तशदीद के साथ हो तो मा'नी ये होगा कि बड़ी ख़िल्क़त मुनासिब और मुअतदिल रखी और तख़्फ़ीफ़ के साथ पढ़ो तो मा'नी ये होगा जिस सूरत में चाहा तुझे बना दिया ख़ूबसूरत या बदसूरत लम्बा या ठिगना (छोटे क़द वाला)।

ये सूरह मक्की है, इसमें 19 आयतें हैं।

[٨٣] سُورَةُ ﴿وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ﴾

सूरह 'वैलुल्लिल्मुतफ़्फ़िफ़ीन' की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ بَلْ رَانَ ثَبْتُ الْخَطَايَا.

और मुजाहिद ने कहा कि बल रान का मा'नी ये है कि गुनाह

ثُوِّبَ: جُوزِيَ. وَقَالَ غَيْرُهُ : الْمُطَفِّفُ لاَ يُوَفِّي غَيْرَهُ.

उनके दिल पर जम गया। षुव्विब बदला दिये गये। औरों ने कहा मुतफ़्फ़िफ़ वो है जो पूरा माप तौल न दे। (दग़ाबाज़ी करे)
ये सूरत मक्की है। इसमें 36 आयात और एक रुकूअ़ है।

मतने क़स्तलानी (रह़) में यहाँ इतनी इ़बारत ज़ाइद है। **अर्रहीक़ अल्ख़मर खितामुहू मिस्कतीनुहू अत्तस्नीम युअलू शराबुन अहलल्जन्नति** या'नी रह़ीक़ शराब को कहते हैं। ख़ितामुहू मिस्क या'नी मुश्क की मुहर उसके शीशे पर लगी होगी। तस्नीम एक लतीफ़ अ़र्क़ है जो जन्नतियों की शराब पर डाला जाएगा।

٤٩٣٨- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ﴿يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ حَتَّى يَغِيبُ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ)). [طرفه في : ٦٥٣١].

4938. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस दिन लोग दोनों जहान के पालने वाले के सामने ह़िसाब देने के लिये खड़े होंगे तो कानों की लौ तक पसीना में डूब जाएँगे।
(दीगर मक़ाम : 6531)

[٨٤] سُورَةُ ﴿إِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ﴾

सूरह 'इजस्सामउन्शक़्क़त' की तफ़्सीर

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

قَالَ مُجَاهِدٌ : كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ، يَأْخُذُ كِتَابَهُ مِنْ وَرَاءِ ظَهْرِهِ. وَسَقَ : جَمَعَ مِنْ دَابَّةٍ. ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ : لاَ يَرْجِعَ إِلَيْنَا.

मुजाहिद ने कहा कि किताबहू बिशिमालिही का मत़लब ये है कि वो अपना नामा—ए—आमाल अपनी पीठ पीछे से लेगा, वमा वसक़ जानवर वग़ैरह जिन जिन चीज़ों पर रात आती है। अल्लंय्यहूर ये कि नहीं लौटेगा।
ये सूरह मक्की है, इसमें 25 आयतें हैं।

٤٩٣٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ سَمِعْتُ عَائِشَةَ قَالَتْ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ. ح.

4939. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे उ़ष्मान बिन अस्वद ने बयान किया, उन्होंने इब्ने अबी मुलैका से सुना और उन्होंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना।
मज़ीद तफ़्सील नीचे दी गई हदीष़ में बयान हो रही है।

- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح.

हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना।
क्या सुना? ये तफ़्सील इस ह़दीष़ में आ रही है।

- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي

हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने, उनसे अबू यूनुस

हातिम बिन अबी सग़ीरह ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे क़ासिम ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिस किसी से भी क़यामत के दिन हिसाब ले लिया गया तो वो हलाक हो जाएगा। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे, क्या अल्लाह तआला ने ये इर्शाद नहीं फ़र्माया कि फ़अम्मा मन उतिया किताबह् बियमीनिही फ़सौफ़ा युहासबु हिसाबय्ं यसीरा, तो जिस किसी का नाम—ए—आमाल उसके दाहिने हाथ में मिलेगा सो उससे आसान हिसाब लिया जाएगा, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया आयत में जिस हिसाब का ज़िक्र है वो तो पेशी होगी। वो सिर्फ़ पेश किये जाएँगे (और बग़ैर हिसाब छूट जाएँगे) लेकिन जिससे भी पूरी तरह हिसाब ले लिया गया वो हलाक होगा। (राजेअ : 103)

يُونُس حَاتِمِ بْنِ أَبِي صَغِيرَةَ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَيْسَ أَحَدٌ يُحَاسَبُ إِلاَّ هَلَكَ)). قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ جَعَلَنِي اللهُ فِدَاءَكَ، أَلَيْسَ يَقُولُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا﴾ قَالَ: ((ذَاكِ الْعَرْضُ يُعْرَضُونَ، وَمَنْ نُوقِشَ الْحِسَابَ هَلَكَ)).

[راجع: ١٠٣]

इसलिये कि हिसाब में बिल्कुल पाक निकलना बेशतर लोगों के लिये नामुम्किन होगा।

4940. हमसे सईद बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमको हुशैम ने ख़बर दी, कहा मुझको अबू बिश्र जा'फ़र बिन अयास ने ख़बर दी, उनसे मुजाहिद ने बयान किया कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा लतरकबुन्ना तबक़न अन तबक़ या'नी तुमको ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुँचना है। बयान किया कि यहाँ मुराद नबी करीम (ﷺ) हैं कि आपको कामयाबी रफ़्ता रफ़्ता हासिल होगी।

٤٩٤٠ - حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ النَّضْرِ، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ جَعْفَرُ بْنُ إِيَاسٍ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ: قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ﴾: حَالاً بَعْدَ حَالٍ، قَالَ: هَذَا نَبِيُّكُمْ ﷺ.

तश्रीह : या'नी चंद रोज़ काफ़िरों से मग़लूब रहोगे फिर बराबरी के साथ उनसे लड़ते रहोगे। फिर ग़ालिब होगे या सब आदमियों की तरफ़ इशारा है पहले शीर ख़्वार फिर बच्चा जवान फिर बूढ़े होते हो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर इस क़िरात पर है। जब लतरकबुन्ना फ़त्हा बाअ के साथ पढ़ें और दूसरी तफ़्सीर मशहूर क़िरात पर है या'नी लतरकबुन्नु ज़म्मा के साथ बाअ। इब्ने मसऊद ने कहा तरकबुन्ना सेग़ा मुअन्नष ग़ायब का है और ज़मीर आसमान की तरफ़ फिरती है या'नी आसमान तरह तरह के रंग बदलेगा। (वहीदी)

आयते क़ुर्आनी अपने उमूम के लिहाज़ से बहुत सी गहराईयाँ लिये हुए है। जिसमें आजके तरक़्क़ी याफ़्ता दौर को भी शामिल किया जा सकता है जो बनी नोअ इंसान को बहुत से अदवार तै करने के बाद हासिल हुआ है और अभी आइन्दा अल्लाह ही बेहतर जानता है कि और कौन कौन से दौर वजूद में आने वाले हैं। आज के इख़्तिराआत ने इंसान को कायनात की जिस क़दर मख़्फ़ी दौलतें अता की हैं ज़रूरी था कि क़ुर्आन पाक में इन सब पर इशारे किये जाते जिसके लिये आयत को पेश किया जा सकता है। ये इस हक़ीक़त पर भी दाल है कि क़ुर्आन मजीद एक ऐसा आसमानी इल्हाम है जो हर ज़माने और हर हर दौर में इंसान की रहनुमाई करता रहेगा और ज़्यादा से ज़्यादा उसे तरक़्क़ियात पर ले जाएगा ताकि सहीह मा'नों मे इंसान ख़लीफ़तुल्लाह बनकर और राज़ हाय क़ुदरत को दरयाफ़्त करके और इस कायनात को इसके शायान शान आबाद करके अपनी ख़िलाफ़त के फ़राइज़ अदा कर सके। सच है। लतरकबुन्ना तबक़न अन तबक़ सदक़ल्लाहु तबारक व तआला।

सूरह बुरूज की तफ़्सीर

[٨٥] سُورَةُ ﴿الْبُرُوجِ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

قَالَ مُجَاهِدٌ : الأُخْدُودُ شَقٌّ فِي الأَرْضِ. فَتَنُوا : عَذَّبُوا.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा उख़्दूद ज़मीन में जो नाली खोदी जाए। फ़तनू या'नी तकलीफ़ दी।

ये सूरह मक्की है, इसमें 22 आयतें हैं।

[٨٦] سُورَةُ ﴿الطَّارِقِ﴾

सूरह त़ारिक़ की तफ़्सीर

بسم الله الرحمن الرحيم

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿ذَاتِ الرَّجْعِ﴾ سَحَابٌ يَرْجِعُ بِالْمَطَرِ. ﴿ذَاتِ الصَّدْعِ﴾.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा ज़ातिर रज्अ अब्र की स़िफ़त है (तो समाउन से अब्र मुराद है) या'नी बार बार बरसने वाला। ज़ातिस़् स़द्अ बार बार उगाने वाली, फूटने वाली, ये ज़मीन की स़िफ़त है।

तश्रीह : इसको फ़रयाबी ने वस़्ल किया मतने क़स्तलानी में इतनी इ़बारत ज़्यादा है। **अत्तारिकु अन्नज्मु व मा अताक लैलन फहुव त़ारिकुन्नज्म अष्षाक़िब अल्मूज़ी व क़ाल इब्नु अ़ब्बास लिक़ौलिन फ़स़्ल हक्कुन लम्मा अलैहा (हाफ़िज़) इल्ला अ़लैहा** या'नी त़ारिक़ सितारा है और त़ारिक़ उसको भी कहते हैं जो रात को आए। अन् नज्मुष् षाक़िब रोशन सितारा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) ने कहा क़ौलुन फ़स़्ल या'नी ह़क़ बात। लम्मा अ़लैहा ह़ाफ़िज़ में लम्मा अल्ला के मा'नी में है या'नी कोई नफ़्स ऐसा नहीं जिस पर एक निगाहबान अल्लाह की त़ रफ़ से मामूर न हो (वह़ीदी) सूरह क़ाफ़ में इस मज़्मून को यूँ बयान किया गया है। **मा यल्फ़िज़ु मिन क़ौलिन इल्ला लदयहि रक़ीबुन अ़तीद** (क़ाफ़ : 18) या'नी इंसान अपने मुँह से जो लफ़्ज़ कहता है उसके पास एक निगाहबान फ़रिश्ता मौजूद है जो फ़ौरन उसके अल्फ़ाज़ को नोट कर लेता है।

एक जगह मज़ीद वज़ाह़त यूँ मौजूद है। **किरामन कातिबीन यअ़लमूना मा तफ़्अ़लून** (अल इंफ़ितार : 10,11) या'नी अल्लाह की त़रफ़ से तुम पर मुअ़ज़्ज़ मुंशी लिखने वाला मुक़र्रर शुदा हैं। जो तुम्हारे हर काम को जानते और तुम्हारे नाम–ए–अ़ामाल में लिख लेते हैं। बहरहाल ये एक मुसल्लम ह़क़ीक़त है कि हर इंसान के साथ बत़ौर मुह़ाफ़िज़ या कातिब एक ग़ैबी त़ाक़त हर वक़्त मौजूद है जिसे फ़रिश्ता कहा जाता है। लिहाज़ा हर मोमिन मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वो सोच समझकर ज़िंदगी गुज़ारे ताकि मरने के बाद उसे शर्मिन्दगी ह़ासिल न हो। अल्लाहुम्मा वफ़्फ़िक़्ना लिमा तुह़िब्बु व तरज़ा।

[٨٧] سورة ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى﴾

सूरह आ़ला की तफ़्सीर

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इसमें 19 आयात हैं।

मतने क़स्तलानी में यहाँ इतनी इ़बारत ज़ाइद है, **क़ाल मुजाहिद कद्दर फहदा क़दरल्इन्सान अश्शिक़ाअ वस्सआ़दत व हदल्अन्आ़म मराईहा** या'नी मुजाहिद ने कहा क़दरे फ़ह्दा का मा'नी ये है कि आदमी के लिये तो नेक बख़्ती और बदबख़्ती की तक़दीर मुक़द्दर कर दी और जानवरों को उनके चरागाह बतला दिये इसको त़बरानी ने वस़्ल किया है।

٤٩٤١– حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ

4941. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अबू इस्ह़ाक़ ने और उनसे बरा बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

قَالَ: أَوَّلُ مَنْ قَدِمَ عَلَيْنَا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ وَابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ، فَجَعَلاَ يُقْرِئَانِنَا الْقُرْآنَ. ثُمَّ جَاءَ عَمَّارٌ وَبِلاَلٌ وَسَعْدٌ، ثُمَّ جَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فِي عِشْرِينَ، ثُمَّ جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ، فَمَا رَأَيْتُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ فَرِحُوا بِشَيْءٍ فَرَحَهُمْ بِهِ، حَتَّى رَأَيْتُ الْوَلاَئِدَ وَالصِّبْيَانَ يَقُولُونَ: هَذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قَدْ جَاءَ، فَمَا جَاءَ حَتَّى قَرَأْتُ ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الأَعْلَى﴾ فِي سُوَرٍ مِثْلِهَا.

(ﷺ) के (मुहाजिर) सहाबा में सबसे पहले हमारे पास मदीना तशरीफ़ लाने वाले मुसअब बिन उमैर और इब्ने उम्मे मक्तूम (रज़ि.) थे। मदीना पहुँचकर इन बुज़ुर्गों ने हमें क़ुर्आन मजीद पढ़ाना शुरू कर दिया। फिर अम्मार, बिलाल और सअद (रज़ि.) आए और फिर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) बीस सहाबा को साथ लेकर आए। उसके बाद नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए मैं ने कभी मदीना वालों को इतना ख़ुश होने वाला नहीं देखा था, जितना वो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की आमद पर ख़ुश हुए थे। बच्चियाँ और बच्चे भी कहने लगे थे कि आप (ﷺ) अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं, हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए हैं। मैंने आँहज़रत (ﷺ) की मदीना में तशरीफ़ आवरी से पहले ही सब्बिहिस्मा रब्बिकल आला और इस जैसी और सूरतें पढ़ ली थीं।

[٨٨] سُورَةُ ﴿هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ﴾

सूरह ग़ाशिया की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿عَامِلَةٌ نَاصِبَةٌ﴾ النَّصَارَى، وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿عَيْنٍ آنِيَةٍ﴾ بَلَغَ إِنَاهَا وَحَانَ شُرْبُهَا. ﴿حَمِيمٍ آنٍ﴾ بَلَغَ إِنَاهُ. ﴿لاَ تَسْمَعُ فِيهَا لاَغِيَةً﴾ شَتْمًا. الضَّرِيعُ نَبْتٌ يُقَالُ لَهُ: الشِّبْرِقُ. يُسَمِّيهِ أَهْلُ الْحِجَازِ الضَّرِيعَ إِذَا يَبِسَ وَهُوَ سُمٌّ. ﴿بِمُسَيْطِرٍ﴾ بِمُسَلَّطٍ وَيُقْرَأُ بِالصَّادِ وَالسِّينِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿إِيَابَهُمْ﴾ مَرْجِعَهُمْ.

और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा आमिलतुन नासिबह से नसारा मुराद हैं मुजाहिद ने कहा अयनिन आनियह या'नी गर्मी की हद को पहुँच गया उसके पीने का वक़्त आन पहुँचा (सूरह रहमान में) हमीमिन आन का भी यही मा'नी है या'नी गर्मी की हद को पहुँच गया। ला तस्मउ फ़ीहा लाग़िया वहाँ गाली गुलूच नहीं सुनाई देगी। ज़रीअ एक भाजी है जिसे शिब्रिक़ कहते हैं हिजाज़ वाले इसको ज़रीअ कहते हैं जब वो सूख जाती है ये ज़हर है बिमुसयत्तिर (सीन से) मुत्लक़न कड़वी कुछ ने स़ाद से पढ़ा है। बिमुस़यत्तिर। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा इयाबहुम उनका लौटना आमिलतुन नास़िबा से अहले बेअत मुराद हैं।

ये सूरत मक्की है इसमें 26 आयात और एक रुकूअ है।

जो बहुत सा पैसा ख़र्च करके अपने ख़्याल में बड़े बड़े आमाल करते हैं मगर उन अमलों का षुबूत क़ुर्आन व हदीष से नहीं है, लिहाज़ा वो आमाल इकारत जाते हैं। अल्लाह के यहाँ सिर्फ़ अमले सालिहा क़ुबूल होता है जिसमें ख़ुलूस हो और वो सुन्नते नबविय्या के मुताबिक़ हो। क़ब्रों पर उर्स करना, माहे मुहर्रम में ता'ज़िया बनाना, मजालिस, मीलादे मुरव्वजा मुनअक़िद करना, तीजा फ़ातिहा चहल्लुम वग़ैरह तमाम रस्में ऐसी हैं जिन पर ये लोग दिल खोलकर पैसा और वक़्त ख़र्च करते हैं। मगर ग़ैर शरई होने की वजह से ये सब आयत आमिलतुन नास़िबा के मिस्दाक़ हैं अल्लाह पाक अवाम मुसलमानों को शऊर अता करे कि वो सुन्नत और बिदअत के फ़र्क़ को समझें और सुन्नत पर कारबन्द हों, बिदआत से इज्तिनाब करें।

[٨٩] سُورَةُ ﴿وَالْفَجْرِ﴾

सूरह फ़ज्र की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

وَقَالَ مُجَاهِدٌ الْوَتْرُ اللهُ: ﴿إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ﴾ الْقَدِيمَةِ. وَالْعِمَادُ أَهْلُ عَمُودٍ لاَ يُقِيمُونَ. ﴿سَوْطَ عَذَابٍ﴾ الَّذِي عُذِّبُوا بِهِ ﴿أَكْلاً لَمًّا﴾ السَّفُّ. وَجَمًّا الْكَثِيرُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: كُلُّ شَيْءٍ خَلَقَهُ فَهُوَ شَفْعٌ، السَّمَاءُ شَفْعٌ، وَالْوَتْرُ: اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿سَوْطَ عَذَابٍ﴾ كَلِمَةٌ تَقُولُهَا لِكُلِّ نَوْعٍ مِنَ الْعَذَابِ يَدْخُلُ فِيهِ السَّوْطُ ﴿لَبِالْمِرْصَادِ﴾: إِلَيْهِ الْمَصِيرُ. ﴿تَحَاضُّونَ﴾ تُحَافِظُونَ: وَتَحُضُّونَ. تَأْمُرُونَ بِإِطْعَامِهِ. ﴿الْمُطْمَئِنَّةُ﴾ الْمُصَدِّقَةُ بِالثَّوَابِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: ﴿يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ﴾ إِذَا أَرَادَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ قَبْضَهَا اطْمَأَنَّتْ إِلَى اللهِ وَاطْمَأَنَّ اللهُ إِلَيْهَا، وَرَضِيَتْ عَنِ اللهِ وَرَضِيَ اللهُ عَنْهَا، فَأَمَرَ بِقَبْضِ رُوحِهَا وَأَدْخَلَهَا اللهُ الْجَنَّةَ وَجَعَلَهُ مِنْ عِبَادِهِ الصَّالِحِينَ. وَقَالَ غَيْرُهُ: ﴿جَابُوا﴾ نَقَبُوا، مِنْ جِيبِ الْقَمِيصِ قُطِعَ لَهُ جَيْبٌ، يَجُوبُ الْفَلاَةَ: يَقْطَعُهَا. ﴿لَمًّا﴾ لَمَمْتُهُ أَجْمَعَ: أَتَيْتُ عَلَى آخِرِهِ.

मुजाहिद ने कहा वत्र से मुराद अल्लाह तआला है। इरमा ज़ातिल इमाद से पुरानी क़ौमे आद मुराद है। इमाद के मा'नी ख़ैमा के हैं, ये लोग ख़ानाबदोश थे। जहाँ पानी चारा पाते वहीं ख़ैमा लगाकर रह जाते। सौत़ अ़ज़ाब का मा'नी ये कि उनको अ़ज़ाब दिया गया। अकलल्लम्मा सब चीज़ समेट कर खा जाना। हुब्बन जम्मा बहुत मुहब्बत रखना मुजाहिद ने कहा अल्लाह ने जिस चीज़ को पैदा किया वो (शफ़्अ) जोड़ा है आसमान भी ज़मीन का जोड़ा है और वतर सिर्फ़ अल्लाह पाक ही है। औरों ने कहा स़ौत अ़ज़ाब ये अ़रब का एक मुहावरा है जो हर एक क़िस्म के अ़ज़ाब को कहते हैं मिन जुम्ला उनके एक कोड़े का भी अ़ज़ाब है। लबिल मिरस़ाद या'नी अल्लाह की त़रफ़ सबको फिर जाना है। ला तहाज़्ज़ूना (अलिफ़ के साथ जैसे मशहूर क़िरात है) मुहाफ़िज़त नहीं करते हो कुछ ने मुतहाज़ून पढ़ा है या'नी हुक्म नहीं देते हो, अल् मुत्मइन्ना वो नफ़्स जो अल्लाह के स़वाब पर यक़ीन रखने वाला हो। मोमिन कामिलुल ईमान इमाम ह़सन बस़री ने कहा नफ़्से मुत़्मइन वो नफ़्स कि जब अल्लाह उसको बुलाना चाहे (मौत आए) तो उसको अल्लाह के पास चैन नस़ीब हो, अल्लाह उससे ख़ुश हो, वो अल्लाह से ख़ुश हो, फिर अल्लाह उसकी रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म दे और उसको बहिश्त में ले जाए, अपने नेक बन्दों में शामिल कर दे। औरों ने कहा जाबू का मा'नी कुरैद कुरैद कर मकान बनाना ये जयब से निकला है जब उसमें जैब लगाई जाए। इसी त़रह अ़रब लोग कहते हैं फ़लान यजूबुल फ़लात वो जंगल क़त़्अ करता है लम्मा अ़रब लोग कहते हैं लमम्तुहू (जमा में उसके अख़ीर तक पहुँच गया।

या'नी सारा तरका खा जाते हो एक पैसा नहीं छोड़ते। सूरह फ़ज्र के ये मुन्तख़ब अल्फ़ाज़ हैं जिनको ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने यहाँ ह़ल फ़र्माया है इन अल्फ़ाज़ की मज़ीद तफ़ासीर मा'लूम करने के लिये सारी सूरह फ़ज्र का मुत़ालआ करना ज़रूरी है। ये सूरत मक्की है इसमें तीस आयात हैं।

[٩٠] سُورَةُ ﴿لاَ أُقْسِمُ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

बाब सूरत ला उक़्सिमु की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा बिहाज़ल बलद से मक्का मुराद है। मतलब ये है कि ख़ास तेरे लिये ये शहर हलाल हुआ औरों को वहाँ लड़ना गुनाह है। वालिद से हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) वमा वलद से उनकी औलाद मुराद है लुबदा बहुत सारा। अन्नज्दैन दो रास्ते भले और बुरे। मस्ग़बह भूख मत्रबह मिट्टी में पड़ा रहना मुराद है फ़लक़् तहमल अक़बह या'नी उसने दुनिया में घाटी नहीं फांदी फिर घाटी फांदने को आगे बयान किया। अक़बह ग़ुलाम आज़ाद करना भूख और तकलीफ़ के दिन भूखों को खाना खिलाना।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿بِهَذَا الْبَلَدِ﴾ مَكَّةَ، لَيْسَ عَلَيْكَ مَا عَلَى النَّاسِ فِيهِ مِنَ الإِثْمِ. ﴿وَوَالِدٍ﴾ آدَمُ ﴿وَمَا وَلَدَ﴾ ﴿لُبَدًا﴾: كَثِيرًا. وَالنَّجْدَيْنِ : الْخَيْرُ وَالشَّرُّ. مَسْغَبَةٌ مَجَاعَةٍ. مَتْرَبَةٍ: السَّاقِطُ فِي التُّرَابِ. يُقَالُ : ﴿فَلاَ اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ﴾: فَلَمْ يَقْتَحِمِ الْعَقَبَةَ فِي الدُّنْيَا، ثُمَّ فَسَّرَ الْعَقَبَةَ فَقَالَ ﴿وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ؟ فَكُّ رَقَبَةٍ، أَوْ إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ﴾.

ये सूरत मक्की है इसमें 20 आयात हैं इस सूरत में अल्लाह पाक ने अपने हबीब (ﷺ) को क़सम दिलाकर बतलाया कि एक दिन ज़रूर आप (ﷺ) मक्का वापस आएँगे। आप (ﷺ) को बेफ़िक्र होना चाहिये। ये मक्का आपके लिये हलाल होगा। यही हुआ हिजरत के चंद ही सालों बाद अल्लाह ने आप (ﷺ) के लिये फ़त्ह करा दिया। सच है **जाअल्हक़्क़ु व ज़हकल्बातिलु इन्नल्बातिल कान ज़हूक़ा**

सूरह 'वश्शम्सि व जुहाहा' की तफ़्सीर

[٩١] سُورَةُ ﴿وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मुजाहिद ने कहा कि बित़ग्वाहा अपने गुनाहों की वजह से वा यख़ाफ़ु उक़्बाहा या'नी अल्लाह को किसी का डर नहीं कि कोई उससे बदला ले सकेगा।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿بِطَغْوَاهَا﴾ بِمَعَاصِيهَا. وَلاَ يَخَافُ عُقْبَاهَا : عُقْبَى أَحَدٍ.

इसको फ़रयाबी ने वस्ल किया है मतने क़स्तलानी मे यहाँ इतनी इबारत ज़ाइद है। **व क़ाल मुजाहिद ज़ुहाहा ज़ौउहा इज़ा तलाहा तब्अहा व त़हाहा दस्साहा अग्वाहा फल्हमहा अर्रफ़हा अश्शिक़ाअ वस्सआदत** या'नी मुजाहिद ने कहा ज़ुहा से रोशनी मुराद है। इज़ा त़लाहा इसके पीछे निकला। त़हाहा फैला दिया बिछाया दस्साहा गुमराह कर दिया। फअल्हमहा या'नी नेकी और बदी दोनों का रास्ता उसको बतला दिया। ये सूरत मक्की है इसमें 15 आयात हैं।

4942. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें अब्दुल्लाह बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने अपने एक ख़ुत्बे में हज़रत सालेह (अलैहिस्सलाम) की ऊँटनी का ज़िक्र किया और उस शख़्स का भी ज़िक्र किया जिसने उसकी कूँचें काट डाली थीं फिर आपने इर्शाद फ़र्माया, इज़िम् बअ़ष अश्क़ाहा या'नी उस ऊँटनी को मार डालने के लिये एक मुफ़्सिद बदबख़्त (क़िदार नामी) जो अपनी क़ौम में अबू ज़म्आ की तरह ग़ालिब और ताक़तवर था, आँहज़रत

٤٩٤٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَمْعَةَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ وَذَكَرَ النَّاقَةَ وَالَّذِي عَقَرَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((﴿إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا﴾ انْبَعَثَ لَهَا رَجُلٌ عَزِيزٌ عَارِمٌ مَنِيعٌ فِي رَهْطِهِ)). مِثْلَ أَبِي زَمْعَةَ. وَذَكَرَ النِّسَاءَ فَقَالَ: ((يَعْمِدُ أَحَدُكُمْ يَجْلِدُ

امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ، فَلَعَلَّهُ يُضَاجِعُهَا مِنْ آخِرِ يَوْمِهِ)). ثُمَّ وَعَظَهُمْ فِي ضَحِكِهِمْ مِنَ الضَّرْطَةِ وَقَالَ: ((لِمَ يَضْحَكُ أَحَدُكُمْ مِمَّا يَفْعَلُ؟)) وَقَالَ أَبُو مُعَاوِيَةَ : حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَمْعَةَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مِثْلُ أَبِي زَمْعَةَ عَمِّ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ)).

[راجع: ٣٣٧٧]

(ﷺ) ने औरतों के हुक़ूक का भी ज़िक्र किया कि तुममें कुछ अपनी बीवी को ग़ुलाम की तरह कोड़े मारते हैं हालाँकि उसी दिन के ख़त्म होने पर वो उससे हमबिस्तरी भी करते हैं। फिर आपने उन्हें रियाह ख़ारिज होने पर हंसने से मना किया और फ़र्माया कि एक काम जो तुममें हर शख़्स करता है उसी पर तुम दूसरों पर किस तरह हंसते हो। अबू मुआविया ने बयान किया कि हमसे हिशाम बिन उर्वा बिन ज़ुबैर ने, उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (इस हदीष में) यूँ फ़र्माया, अबू ज़म्आ की तरह जो ज़ुबैर बिन अवाम का चचा था। (राजेअ़ : 3377)

तशरीह : क्योंकि अबू ज़म्आ मुत्तलिब बिन असद का बेटा था और ज़ुबैर अवाम बिन ख़ुवेलिद बिन असद के बेटे थे तो अबू ज़म्आ अवाम का चचाज़ाद भाई था जो ज़ुबैर का चचा हुआ। इस रिवायत को इस्हाक़ बिन राहवै ने अपनी सनद में वस्ल किया है।

सूरह वश्शम्स मक्का में उतरी। हदीष में है आप इशा की नमाज़ में ये सूरत और उसी के बराबर की सूरत पढ़ते। **वल्क़मरि इज़ा तलाहा** और चाँद जबकि उसके पीछे आए या'नी सूरज छुप जाए और चाँद चमकने लगे फिर दिन की क़सम खाई जबकि वो मुनव्वर हो जाए।

इमाम इब्ने जरीर (रह) फ़र्माते हैं कि इन सब में ज़मीर हा का मर्जअ शम्स है क्योंकि इसका ज़िक्र चल रहा है। इब्ने अबी हातिम की एक रिवायत में है कि जब रात आती है तो अल्लाह पाक फ़र्माता है मेरे बन्दों को मेरी एक बहुत बड़ी ख़ल्क़ ने छुपा लिया पस मख़्लूक़ रात से हैबत करती है, उसके पैदा करने वाले से और ज़्यादा हैबत चाहिये फिर आसमान की क़सम खाता है। यहाँ जो मा है ये मस्दर भी हो सकता है या'नी आसमान और उसकी बनावट की क़सम और बमा'नी मन के भी हो सकता है तो मतलब ये होगा कि आसमान की क़सम और उसके बनाने वाले की क़सम। मुतर्जिम मरहूम मौलाना वहीदुज़्ज़माँ ने यही तर्जुमा इख़्तियार फ़र्माया है। (वहीदी)।

[٩٢] سُورَةُ ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿بِالْحُسْنَى﴾ بِالْخَلَفِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿تَرَدَّى﴾ مَاتَ. ﴿وَتَلَظَّى﴾: تَوَهَّجُ. وَقَرَأَ عُبَيْدُ بْنُ عُمَيْرٍ: تَتَلَظَّى.

सूरह वल् लैल की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा। व कज़्ज़ब बिल हुस्ना से ये मुराद है कि उसको ये यक़ीन नहीं कि अल्लाह की राह में जो ख़र्च करेगा उसका बदला अल्लाह उसको देगा और मुजाहिद ने कहा इज़ा तरद्दा जब मर जाए। तलज़्ज़ा वो दोज़ख़ की आग भड़कती शोला मारती है। और उबैद बिन उमेर ने ततलज़्ज़ा दो (ताअ) के साथ पढ़ा है।

ये सूरह मक्की है, इसमें 21 आयात हैं।

١- باب ﴿وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى﴾

बाब 'वन्नहारि इज़ा तजल्लाहा' की तफ़्सीर

और क़सम है दिन की जब वो रोशन हो जाए।

4943. हमसे क़ुबैसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अ़ल्क़मा बिन क़ैस ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के शागिर्दों के स ाथ मे मुल्के शाम पहुँचा हमारे बारे में अबू दर्दा (रज़ि) ने सुना तो हमसे मिलने ख़ुद तशरीफ़ लाए और पूछा तुममें कोई क़ुर्आन मजीद का क़ारी भी है? हमने कहा जी हाँ है। पूछा कि सबसे अच्छा क़ारी कौन है? लोगों ने मेरी त़रफ़ इशारा किया। आपने फ़र्माया कि फिर कोई आयत तिलावत की। अबू दर्दा (रज़ि.) ने पूछा क्या तुमने ख़ुद ये आयत अपने उस्ताद अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की ज़ुबानी इसी त़रह़ सुनी है? मैंने कहा जी हाँ। उन्होंने इस पर कहा कि मैंने भी नबी करीम (ﷺ) की ज़ुबानी ये आयत इसी त़रह़ सुनी है, लेकिन ये शाम वाले हम पर इंकार करते हैं।

٤٩٤٣- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ بْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: دَخَلْتُ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ عَبْدِ اللهِ الشَّامَ، فَسَمِعَ بِنَا أَبُو الدَّرْدَاءِ فَأَتَانَا فَقَالَ : أَفِيكُمْ مَنْ يَقْرَأُ؟ فَقُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ فَأَيُّكُمْ أَقْرَأُ؟ فَأَشَارُوا إِلَيَّ، فَقَالَ: اقْرَأْ، فَقَرَأْتُ: ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى، وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى، وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى﴾ قَالَ أَنْتَ سَمِعْتَهَا مِنْ فِي صَاحِبِكَ؟ قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ : وَأَنَا سَمِعْتُهَا مِنْ فِي النَّبِيِّ ﷺ، وَهَؤُلاَءِ يَأْبُونَ عَلَيْنَا.

इसकी बजाय वो मशहूर क़िरात वमा ख़लक़ज़्ज़कर वल उन्षा पढ़ते थे। शाम वाले मशहूर व मुत्तफ़क़ अ़लैह क़िरात करते थे मगर ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने इस आयत को दूसरे त़र्ज़ पर सुना था, वो इसी पर मुसिर्र थे पस ख़ात़ी कोई भी नहीं है। सात क़िरातों का यही मत़लब है।

बाब 2 : आयत 'व मा ख़लक़ज़्ज़कर वल्उन्षा' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله ﴿وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالأُنْثَى﴾

और क़सम है उसकी जिसने नर और मादा को पैदा किया।

ह़ैवानात नबातात जमादात सबके नर व मादा मुराद हैं।

4944. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि) के कुछ शागिर्द अबू दर्दा (रज़ि.) के यहाँ (शाम) आए उन्होंने उन्हें तलाश किया और पा लिया। फिर उनसे पूछा कि तुममें कौन अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरात के मुत़ाबिक़ क़िरात कर सकता है? शागिर्दों ने कहा कि हम सब कर सकते हैं। फिर पूछा किसे उनकी क़िरात ज़्यादा मह़फ़ूज़ है? सबने ह़ज़रत अ़ल्क़मा की त़रफ़ इशारा किया। उन्होंने दरयाफ़्त किया उन्हें सूरह वल् लैलि इज़ा यग़शा की क़िरात किस त़रह़ सुना है? अ़ल्क़मा ने कहा कि वज़्ज़कर वल उन्षा (बग़ैर ख़ल्क़

٤٩٤٤- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: قَدِمَ أَصْحَابُ عَبْدِ اللهِ عَلَى أَبِي الدَّرْدَاءِ فَطَلَبَهُمْ فَوَجَدَهُمْ فَقَالَ: أَيُّكُمْ يَقْرَأُ عَلَى قِرَاءَةِ عَبْدِ اللهِ؟ قَالَ كُلُّنَا: قَالَ: فَأَيُّكُمْ أَحْفَظُ؟ وَأَشَارُوا إِلَى عَلْقَمَةَ، قَالَ: كَيْفَ سَمِعْتَهُ يَقْرَأُ ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى﴾ قَالَ عَلْقَمَةُ : ﴿وَالذَّكَرِ وَالأُنْثَى﴾ قَالَ: أَشْهَدُ

के) कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने भी रसूले करीम (ﷺ) को इसी तरह क़िरात करते सुना है। लेकिन ये लोग (या'नी शाम वाले) चाहते हैं कि मैं, वमा ख़लक़ज़्ज़कर वल उन्षा पढ़ूँ। अल्लाह की क़सम मैं इनकी पैरवी नहीं करूँगा।

أني سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ هَكَذَا، هَؤُلاَءِ يُرِيدُونِي عَلَى أَنْ أَقْرَأَ ﴿وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالأُنْثَى﴾ وَاللهِ لاَ أُتَابِعُهُمْ.

तश्रीह : क्योंकि अबू दर्दा (रज़ि) आँहज़रत (ﷺ) के मुँह से यूँ सुन चुके थे वज़्ज़कर वल उन्षा वो उसके ख़िलाफ़ क्यूँ कर सकते थे। उलमा ने कहा है कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) पर जहाँ और कई बातें मख़्फ़ी रह गईं, उनमें से ये क़िरात भी थी। उनको दूसरी क़िरात की ख़बर नहीं हुई। या'नी वमा ख़लक़ज़्ज़कर वल उन्षा की जो अख़ीर क़िरात और मुतवातिर थी और इसीलिये मुस्हफ़ उष्मानी में क़ायम की गई (वहीदी) क़िराते मुतवातिर यही है जो मुस्हफ़े उष्मानी में दर्ज है। हज़रत अबू दर्दा का नाम अवेमिर है। ये आमिर अंसारी ख़ज़रजी के बेटे हैं। अपनी कुन्नियत के साथ मशहूर हैं दर्दा उनकी बेटी का नाम है अपने ख़ानदान मे सबसे आख़िर में इस्लाम लाने वालों में से हैं। बड़े सालेह, समझदार आलिम और साहिबे हिक्मत थे। शाम में क़याम किया और 32 हिजरी में दमिश्क़ में वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु आमीन।

बाब 3 : आयत 'फअम्मा मन आता वत्तक़ा ....' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب [قَوْلِهِ]: ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى﴾

सो जिसने दिया और अल्लाह से डरा और उसने अच्छी बातों की तस्दीक़ की हम उसके लिये नेक कामों को आसान कर देंगे।

4945. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय़ना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे सअद बिन उबैदह ने, उनसे अबू अब्दुर्रहमान सुल्मी (रह) ने और उनसे हज़रत अली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ बक़ीउल ग़र्क़द (मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान) में एक जनाज़े में थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़र्माया तुममें कोई ऐसा नहीं जिसका ठिकाना जन्नत या जहन्नम में लिखा न जा चुका हो। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर क्यूँ न हम अपनी इस तक़्दीर पर भरोसा कर लें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अमल करते रहो कि हर शख़्स को उसी अमल की तौफ़ीक़ मिलती रहती है (जिसके लिये वो पैदा किया गया है) फिर आपने आयत फ़अम्मा मन अअ़ता वत्तक़ा आख़िर तक पढ़ी। या'नी हम उसके लिये नेक काम आसान कर देंगे। (राजेअ : 1362)

٤٩٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي بَقِيعِ الْغَرْقَدِ فِي جَنَازَةٍ، فَقَالَ: ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ وَقَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَمَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ)). فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نَتَّكِلُ؟ فَقَالَ: ((اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ)). ثُمَّ قَرَأَ ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى -إِلَى قَوْلِهِ- لِلْعُسْرَى﴾. [راجع: ١٣٦٢]

बाब 4 : आयत 'व सद्दक़ बिल्हुस्ना' की तफ़्सीर

या'नी, और उसने नेक बातों की तस्दीक़ की।

٤- باب [قَوْلِهِ] : ﴿وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى﴾

.... - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا قُعُودًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَذَكَرَ الْحَدِيثَ.

हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के पास बैठे हुए थे। फिर रावी ने यही ह़दीष़ बयान की। (जो ऊपर गुज़री)

٥- باب قوله ﴿فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى﴾

बाब 5 : आयत 'फसनुयस्सिरूहू लिल्युस्रा' की तफ़्सीर,

सो हम उसके लिये नेक कामों को अ़मल में लाना आसान कर देंगे।

٤٩٤٦- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ فِي جَنَازَةٍ، فَأَخَذَ عُودًا يَنْكُتُ فِي الأَرْضِ فَقَالَ: ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ وَقَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ، أَوْ مِنَ الْجَنَّةِ)). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نَتَّكِلُ؟ قَالَ : ((اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى﴾)) الآيَةَ، قَالَ شُعْبَةُ : وَحَدَّثَنِي بِهِ مَنْصُورٌ فَلَمْ أُنْكِرْهُ مِنْ حَدِيثِ سُلَيْمَانَ.

[راجع: ١٣٦٢]

4946. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान आ'मश ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक जनाज़े मे थे, आपने एक लकड़ी उठाई और उससे ज़मीन कुरेदते हुए फ़र्माया कि तुममें कोई शख़्स ऐसा नहीं जिसका जन्नत या दोज़ख़ का ठिकाना लिखा न जा चुका हो। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ) क्या फिर हम उसी पर भरोसा न कर लें? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अ़मल करते रहो कि हर शख़्स को तौफ़ीक़ दी गई है (उन्हीं आ़माल की जिनके लिये वो पैदा किया गया है) सो जिसने दिया और अल्लाह से डरा और अच्छी बात को सच्चा समझा आख़िर आयत तक। शुअ़बा ने बयान किया कि मुझसे ये ह़दीष़ मंसूर बिन मुअ़तमिर ने भी बयान की और उन्होंने भी सुलैमान अअ़मश से उसी के मुवाफ़िक़ बयान की, इसमें कोई ख़िलाफ़ नहीं। (राजेअ़ : 1362)

٦- باب [قَوْلِهِ] : ﴿وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى﴾

बाब 6 : आयत 'व अम्मा मम्बख़िल वस्तग़ना .....अल्आय:' की तफ़्सीर

या'नी, और जिसने बुख़्ल किया और बेपरवाही बरती और अच्छी बातों को उसने झुठलाया हम उसके लिये सारे बुरे कामों को अ़मल में लाना आसान कर देंगे।

٤٩٤٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ

4947. हमसे यह्या बिन मूसा बल्ख़ी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे सअ़द

बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के पास बैठे हुए थे। आपने फ़र्माया कि हममें कोई ऐसा नहीं जिसका जहन्नम का ठिकाना लिखा न जा चुका हो। हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर हम उसी पर भरोसा न कर लें? फ़र्माया नहीं अ़मल करते रहो क्योंकि हर शख़्स को आसानी दी गई है और उसके बाद आपने इस आयत की तिलावत की फ़अम्मा मन अअ़्ता वत् तक़ा अल आयत या'नी सो जिसने दिया और अल्लाह से डरा और अच्छी बात को सच्चा समझा उसके लिये राहत की चीज़ आसान कर देंगे। ता फ़सनुयस्सिरुहू लिल् उ़सरा। (राजेअ : 1362)

الرَّحْمَنِ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ : ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ وَقَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَمَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ)). فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نَتَّكِلُ؟ قَالَ: ((لاَ، إِعْمَلُوا، فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ)). ثُمَّ قَرَأَ: ((فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى -إِلَى قَوْلِهِ- فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى)).

[راجع: ١٣٦٢]

बाब 7 : आयत 'व कज़्ज़ब बिल्हुस्ना' की तफ़्सीर

٧- باب [قَوْلُهُ] : ﴿وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى﴾

4948. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुल्मी ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम बक़ीउ़ल ग़रक़द में एक जनाज़े के साथ थे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) भी तशरीफ़ लाए। आप बैठ गये और हम भी आपके चारों त़रफ़ बैठ गये। आपके हाथ में छड़ी थी। आपने सर झुका लिया फिर छड़ी से ज़मीन को कुरैदने लगे। फिर फ़र्माया कि तुममें कोई शख़्स ऐसा नहीं, कोई पैदा होने वाली जान ऐसी नहीं जिसका जन्नत और जहन्नम का ठिकाना लिखा न जा चुका हो, ये लिखा जा चुका है कि कौन नेक है और कौन बुरा है। एक स़ाह़ब ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर क्या ह़र्ज है अगर हम अपनी उसी तक़्दीर पर भरोसा कर लें और नेक अ़मल करना छोड़ दें जो हममें नेक होगा, वो नेकियों के साथ जा मिलेगा और जो बुरा होगा उससे बुरों के से आ़माल हो जाएँगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो लोग नेक होते हैं उन्हें नेकियों ही के अ़मल की तौफ़ीक़ ह़ासिल होती है और जो बुरे होते हैं उन्हें बुरों ही जैसे अ़मल करने

٤٩٤٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا فِي جَنَازَةٍ فِي بَقِيعِ الْغَرْقَدِ، فَأَتَانَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَعَدَ وَقَعَدْنَا حَوْلَهُ، وَمَعَهُ مِخْصَرَةٌ، فَنَكَّسَ فَجَعَلَ يَنْكُتُ بِمِخْصَرَتِهِ، ثُمَّ قَالَ : ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ، وَمَا مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوسَةٍ، إِلاَّ كُتِبَ مَكَانُهَا مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، وَإِلاَّ قَدْ كُتِبَتْ شَقِيَّةً أَوْ سَعِيدَةً)). قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نَتَّكِلُ عَلَى كِتَابِنَا وَنَدَعُ الْعَمَلَ. فَمَنْ كَانَ مِنَّا مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ فَسَيَصِيرُ إِلَى أَهْلِ السَّعَادَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنَّا مِنْ أَهْلِ الشَّقَاءِ فَسَيَصِيرُ إِلَى عَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ؟ قَالَ : ((أَمَّا أَهْلُ السَّعَادَةِ فَيُيَسَّرُونَ لِعَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ،

की तौफ़ीक़ होती है। फिर आपनेइस आयत की तिलावत की फ़अम्मा मन् अअ़्ता वत्तक़ा जिसने दिया और अल्लाह से डरा और अच्छी बात को सच्चा समझा सो हम उसके लिये नेक कामों को आसान कर देंगे। (राजेअ़ : 1363)

وَأَمَّا أَهْلُ الشَّقَاوَةِ فَيُيَسَّرُونَ لِعَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاءِ))، ثُمَّ قَرَأَ : ((﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى﴾)) الآيَةَ.
[راجع: ١٣٦٣]

तश्रीह : इस ह़दीष़ की बहष़ इंशाअल्लाह तआ़ला आगे किताबुल क़द्र में आएगी। आँह़ज़रत (ﷺ) का मत़लब ये है कि तक़्दीरे इलाही का तो ह़ाल किसी को मा'लूम नहीं मगर नेक आ़माल अगर बन्दा कर रहा है तो उसको इस अम्र का क़रीना समझना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला ने उसका ठिकाना बहिश्त में किया है और अगर बुरे कामों मे मसरूफ़ है तो ये गुमान हो सकता है कि उसका ठिकाना दोज़ख़ में बनाया गया है बाक़ी होगा तो वही जो अल्लाह तआ़ला ने तक़्दीर में लिख दिया और चूँकि क़द्र का इल्म बन्दे को नहीं दिया गया और उसको अच्छी और बुरी दोनों राहें बतला दी गईं इसलिये बन्दे का फ़र्ज़े मनस़बी यही है कि अच्छी राह को इख़्तियार करे नेक आ़माल में कोशिश करे। तक़्दीर के बारे में कुछ लोगों ने बहुत से औहामे फ़ासिदा पैदा करके अपने ईमान को ख़राब किया है। तक़्दीर पर बिला चूँ चरा ईमान लाना ज़रूरी है जो कुछ दुनिया में होता है तक़्दीरे इलाही के तह़त होता है। अल्लाह पाक क़ादिरे मुत्लक़ है वो तक़्दीर को जिधर चाहे फेरने पर भी क़ादिर है, इसलिये उससे नेक तक़्दीर के लिये दुआ़एँ करना बन्दे का फ़र्ज़ है और बस।

बाब 8 : आयत 'फसनुयस्सिरूहू लिल्उ़स्रा' की तफ़्सीर

٨- باب قوله ﴿فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى﴾

या'नी सो हम उसके लिये सख़्त बुराई के कामों को अ़मल में लाना आसान कर देंगे।

4949. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने सअ़द बिन उ़बैदह से सुना, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान सुल्मी बयान करते थे कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) एक जनाज़े में तशरीफ़ रखते थे। फिर आपने एक चीज़ ली और उससे ज़मीन कुरेदने लगे और फ़र्माया, तुममें कोई ऐसा शख़्स़ नहीं जिसका जहन्नम या जन्नत का ठिकाना लिखा न जा चुका हो। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! तो फिर हम क्यों न अपनी तक़्दीर पर भरोसा कर लें और नेक अ़मल करना छोड़ दें। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नेक अ़मल करो, हर शख़्स़ को उन आ़माल की तौफ़ीक़ दी जाती है जिनके लिये वो पैदा किया गया है जो शख़्स़ नेक होगा उसे नेकों के अ़मल की तौफ़ीक़ मिली होती है और जो बदबख़्त होता है उसे बदबख़्तों के अ़मल की तौफ़ीक़ मिलती है फिर आपने आयत फ़अम्मा मन् अअ़्ता वत्तक़ा

٤٩٤٩- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ: سَمِعْتُ سعدَ بْنَ عُبَيْدَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ فِي جَنَازَةٍ، فأخذ شَيْئًا فَجَعَلَ يَنْكُتُ بِهِ الأَرْضَ فَقَالَ : ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ. إِلاَّ وَقَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ، وَمَقْعَدُهُ مِنَ الْجَنَّةِ)). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نَتَّكِلُ عَلَى كِتَابِنَا وَنَدَعُ الْعَمَلَ؟ قَالَ : ((اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ، أَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ السَّعَادَةِ فَيُيَسَّرُ لِعَمَلِ أَهْلِ السَّعَادَةِ،

आख़िर तक पढ़ी। या'नी, सो जिसने दिया और अल्लाह से डरा और अच्छी बात को सच्चा समझा, सो हम उसके लिये नेक अमलों को आसान कर देंगे।

وَأَمَّا مَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الشَّقَاءِ فَيُيَسَّرُ لِعَمَلِ أَهْلِ الشَّقَاوَةِ، ثُمَّ قَرَأَ: (﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى﴾) الآيَةَ.

सूरह अज़्ज़ुहा की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा इज़ा सजा जब बराबर हो जाए। ओरों ने कहा जब अंधेरी हो जाए या थम जाए। आइला बाल बच्चे वाला, मुह़ताज।

[٩٣] قوله سُورَةُ ﴿الضُّحَى﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ إِذَا سَجَى اسْتَوَى وَقَالَ غَيْرُهُ: أَظْلَمَ وَسَكَنَ، عَائِلاً ذُو عِيَالٍ.

ये सूरह मक्की है, इसमें 11 आयतें हैं।

4950. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने बयान किया, कहा कि मैंने जुन्दब बिन सुफ़यान (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बीमार पड़ गये और दो या तीन रातों को (तहज्जुद के लिये) नहीं उठ सके। फिर एक औरत (अबू लहब की औरत औराअ) आई और कहने लगी ऐ मुहम्मद! मेरा ख़्याल है कि तुम्हारे शैतान ने तुम्हें छोड़ दिया है। दो या तीन रातों से देख रही हूँ कि तुम्हारे पास वो नहीं आया। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की, वज़्ज़ुहा आख़िर आयत तक या'नी, क़सम है दिन की रोशनी की और रात की जब वो क़रार पकड़े कि आपके परवरदिगार ने न आपको छोड़ा है और न आपसे बेज़ार हुआ है। (राजेअ: 1124)

٤٩٥٠ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا الأَسْوَدُ بْنُ قَيْسٍ قَالَ سَمِعْتُ جُنْدُبَ بْنَ سُفْيَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اشْتَكَى رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَلَمْ يَقُمْ لَيْلَتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا، فَجَاءَتِ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: يَا مُحَمَّدُ إِنِّي لأَرْجُوا أَنْ يَكُونَ شَيْطَانُكَ قَدْ تَرَكَكَ، لَمْ أَرَهُ قَرِبَكَ مُنْذُ لَيْلَتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَالضُّحَى وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَى مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى﴾.

[راجع: ١١٢٤]

बाब 2 : आयत 'मा वद्दअक रब्बुक .....' की तफ़्सीर या'नी,

मा वद्दअक रब्बुक वमा क़ला तशदीद और तख़फ़ीफ़ दोनों तरह पढ़ा जा सकता है और मा'नी एक ही रहेंगे, या'नी अल्लाह ने तुझको छोड़ा नहीं है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मफ़्हूम ये है मा तरकक वमा अब्ग़ज़क, या'नी अल्लाह ने तुझको छोड़ा नहीं है और न वो तेरा दुश्मन बना है।

٢- باب قَوْلِهِ: ﴿مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى﴾

تُقْرَأُ بِالتَّشْدِيدِ وَبِالتَّخْفِيفِ بِمَعْنًى وَاحِدٍ: مَا تَرَكَكَ رَبُّكَ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَا تَرَكَكَ وَمَا أَبْغَضَكَ

4951. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ग़ुन्दर ने, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने बयान किया कि मैंने जुन्दब बजली

٤٩٥١ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ

الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ جُنْدُبًا الْبَجَلِيَّ قَالَتِ امْرَأَةٌ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا أَرَى صَاحِبَكَ إِلاَّ أَبْطَأَكَ. فَنَزَلَتْ: ﴿مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى﴾.

[راجع: ١١٢٤]

(रज़ि.) से सुना कि एक औरत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं देखती हूँ कि आपके दोस्त (जिब्रईल अलैहिस्सलाम) आपके पास आने में देर करते हैं। इस पर आयत नाज़िल हुई। मा वद्दअक रब्बुक वमा क़ला या'नी आपके परवरदिगार ने न आपको छोड़ा है और न आपसे वो बेज़ार हुआ है। (राजेअ : 1124)

तश्रीह : हज़रत जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सुफ़यान बजली अल्क़मी ख़ानदान से हैं जो बजीला की एक शाख़ है फ़ित्न-ए-अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के चार साल बाद वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु।

[٩٤] سُورَةُ ﴿أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿وِزْرَكَ﴾ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، ﴿أَنْقَضَ﴾: أَثْقَلَ، ﴿مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا﴾: قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ أَيْ مَعَ ذَلِكَ الْعُسْرِ يُسْرًا آخَرَ، كَقَوْلِهِ: ﴿هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلاَّ إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ﴾ وَلَنْ يَغْلِبَ عُسْرٌ يُسْرَيْنِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿فَانْصَبْ﴾ فِي حَاجَتِكَ إِلَى رَبِّكَ. وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: ﴿أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ﴾ شَرَحَ اللهُ صَدْرَهُ لِلإِسْلاَمِ.

सूरह अलम नशरह़ की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा विज़्रक से वो बातें मुराद हैं जो आँह़ज़रत (ﷺ) से जाहिलियत के ज़माने में स़ादिर हुईं (तर्के ऊला वग़ैरह) अन्क़ज़ के मा'नी भारी किया। मअ़ल उ़स्रि युसरा सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा इसका मत़लब ये है कि एक मुस़ीबत के साथ दो नेअ़मतें मिलती हैं जैसे आयत हल तरब्बस़ूना इल्ला इह़दल्हुस्नयैन में मुसलमानों के लिये दो नेकियाँ मुराद हैं और ह़दीस़ में है एक मुस़ीबत दो नेकियों पर ग़ालिब नहीं आ सकती और मुजाहिद ने कहा फ़न्स़ब या'नी अपने परवरदिगार से दुआ़ मांगने में मेह़नत उठा और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है उन्होंने कहा अलम नशरह़ लक स़दरक से मुराद है कि हमने तेरा सीना इस्लाम के लिये खोल दिया है।

फ़इज़ा फ़रग़्त फ़न्स़ब की तफ़्सीर में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मत़लब ये है कि जब तू फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ चुके तो अपने मालिक से दुआ़ किया करें। शैत़ान ने कुछ लोगों को इस त़रह़ बहकाया है कि वो नमाज़ के बाद सलाम फेरकर फ़ौरन भाग जाते हैं । अल्लाह हर मुसलमान को शैत़ान के धोखे से मह़फ़ूज़ रखे आमीन। आयत **व इला रब्बिक फर्गब** में अल्लाह की त़रफ़ मुतवज्जह होने की ताकीद मुराद है। नमाज़े फ़र्ज़ के बाद सुन्नत नफ़्ल पढ़कर जाना चाहिये या ये घर पर अदा करें तब भी जाइज़ है। ये सूरत मक्की है और इसमे आठ आयात हैं।

[٩٥] سُورَةُ ﴿وَالتِّينِ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : هُوَ التِّينُ وَالزَّيْتُونُ الَّذِي يَأْكُلُ النَّاسُ. يُقَالُ: فَمَا يُكَذِّبُكَ؟ فَمَا الَّذِي يُكَذِّبُكَ بِأَنَّ النَّاسَ يُدَانُونَ

सूरह वत् तीन की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा कि आयत में वही तीन (अंजीर) और ज़ेतून मशहूर मेवे ज़िक्र हुए हैं जिन्हें लोग खाते हैं। फ़मा युकज़्ज़िबुक या'नी क्या वजह है जो तू इस बात को झुठलाए कि क़यामत के दिन लोगों को उनके आ़माल का बदला मिलेगा। गोया यूँ कहा

कौन कह सकता है कि तू अ़ज़ाब और ष़वाब को झुठलाने लगा।

بِأَعْمَالِهِمْ؟ كَأَنَّهُ قَالَ: وَمَنْ يَقْدِرُ عَلَى تَكْذِيبِكَ بِالثَّوَابِ وَالْعِقَابِ؟.

ये सूरत मक्की है इसमें आठ आयात हैं।

अंजीर और ज़ैतून ये दोनों चीज़ें निहायत कष़ीरुल मनाफ़ेअ और जामेउ़ल फ़वाइद होने की वजह से इंसान की ह़क़ीक़ते जामिआ के साथ ख़ुसूसी मुशाबिहत रखते हैं। इसीलिये **वलक़द खलक़्नल इन्सान फ़ी अहसनि तक़्वीम** (अत् तीन : 4) के मज़्मून को दोनों को क़समों से शुरू किया और कुछ मुह़क़्क़िक़ीन कहते हैं कि यहाँ तीन और ज़ैतून से दो पहाड़ों की त़रफ़ इशारा है जिनके क़रीब बैतुल मक़्दिस वाक़ेअ है। गो इन दरख़्तों की क़सम मक़्सूद नहीं बल्कि उस मुक़ामे मुक़द्दस की क़सम खाई है जहाँ ये पेड़ बकष़रत पाए जाते हैं और वही मौलिद और मब्अष़ ह़ज़रत मसीह़ (अ़लैहिस्सलाम) का है। तूरे सीनीन वो पहाड़ है जिस पर ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को अल्लाह ने शर्फ़े हमकलामी बख़्शा और अमन वाला शहर मक्का मुअ़ज़्ज़मा है जहाँ सारे आलम के सरदार ह़ज़रत मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) मब्ऊष़ हुए और अल्लाह की सबसे बड़ी और आख़िरी अमानत क़ुर्आन करीम अव्वल इसी शहर में उतारी गई। तौरात के आख़िर में है, अल्लाह तूरे सीना से आया और साईर से चमका (जो बैतुल मक़्दिस का पहाड़ है) और फ़ारान से बुलंद होकर फैला। फ़ारान मक्का के पहाड़ हैं। ह़ासिल ये कि ये सब मक़ामाते मुतबर्रका जहाँ से ऐसे ऐसे ऊलुल अ़ज़्म पैग़म्बर उठे गवाह हैं कि हमने इंसान को कैसे अच्छे साँचे में ढाला और कैसी कुछ क़ुव्वतें और ज़ाहिरी और बातिनी ख़ूबियाँ उसके वजूद में जमा की हैं अगर ये अपनी स़ह़ीह़ फ़ित़रत पर तरक़्क़ी करे तो फ़रिश्तों से सबक़त ले जाए मस्जूदे मलाइका है और जब मुंकिर हुआ तो जानवरों से बदतर है सूरह वत् तीन का यही ख़ुलास़ा है।

4952. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझे अ़दी बिन ष़ाबित ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) एक सफ़र मे थे और इशा की एक रकअ़त में आपने सूरह वत् तीन की तिलावत फ़र्माई थी। तक़्वीम के मा'नी पैदाइश बनावट के हैं। (राजेअ : 767)

٤٩٥٢- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيٌّ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ فِي سَفَرٍ فَقَرَأَ فِي الْعِشَاءِ فِي إِحْدَى الرَّكْعَتَيْنِ بِالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ. تَقْوِيمٍ: الْخَلْقِ. [راجع: ٧٦٧]

बाब सूरह इक़्रा की तफ़्सीर

٩٦ سُورَةُ ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

और क़ुतैबा ने बयान किया कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन अ़तीक़ ने कि इमाम ह़सन बस़री ने कहा कि मुस़्ह़फ़ में सूरह फ़ातिह़ा के शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखो और दो सूरतों के दरम्यान एक ख़त़ खींच लिया करो जिससे मा'लूम हो कि नई सूरत शुरू हुई। मुजाहिद ने कहा कि नादिया या'नी अपने कुम्बे वालों को, अ़ज़्बानिया दोज़ख़ के फ़रिश्ते और मअ़मर ने कहा रुज्आ लौट जाने का मुक़ाम। लनस्फ़अन् अल्बत्ता हम पकड़ेंगे।

وَقَالَ قُتَيْبَةُ : حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ عَتِيقٍ، عَنِ الْحَسَنِ قَالَ : اكْتُبْ فِي الْمُصْحَفِ فِي أَوَّلِ الإِمَامِ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ وَاجْعَلْ بَيْنَ السُّورَتَيْنِ خَطًّا. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: نَادِيَهُ عَشِيرَتَهُ، الزَّبَانِيَةَ الْمَلاَئِكَةَ، وَقَالَ مَعْمَرٌ الرُّجْعَى

इसमे नूने ख़फ़ीफ़ा है (गोया ये अलिफ़ से लिखा जाता है ये सफ़अतु बियदिही से निकला है या'नी मैंने उसका हाथ पकड़ा।

الْمَرْجِعُ، لَنَسْفَعَنْ قَالَ لَنَأْخُذَنْ، وَلَنَسْفَعَنْ بِالنُّونِ وَهِيَ الْخَفِيفَةُ، سَفَعْتُ بِيَدِهِ أَخَذْتُ.

तश्रीह : ये सूरत मक्की है और इसमें उन्नीस आयात हैं इसके शुरू की पाँच आयात ग़ारे ह़िरा में सबसे पहले नाज़िल हुईं। अहले बसीरत के लिये ता'लीम पर इसमे बहुत से मुफ़ीद इशारात दिये गये हैं, ख़ास़ तौर पर क़लम की अहमियत को बतलाया गया है।

उ़लमा-ए-इस्लाम ने इस पर इत्तिफ़ाक़ किया है कि हर सूरत के शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखवाई सिवा सूरह बराअत (तौबा) के। कुछ ने कहा ह़सन बस़री का मत़लब ये कि सूरह फ़ातिह़ा से पहले तो स़िर्फ़ बिस्मिल्लाह लिखें फिर दूसरी सूरतों के शुरू बिस्मिल्लाह भी लिखें और एक लकीर भी करें। मुस़्ह़फ़े उ़ष्मानी में हर सूरत के शुरू मे बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखी गई है और इज्माअे उम्मत के तह़त एक ये भी मा'मूल है। हर सूरत के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखने का मक़्स़द ये है कि पहली और आगे आने वाली सूरत के दरम्यान फ़स़्ल हो जाए। दोनों का जुदा जुदा होना मा'लूम हो जाए। सूरह फ़ातिह़ा में बिस्मिल्लाह को इस सूरत की एक आयत शुमार किया गया है हर काम जो बिस्मिल्लाह पढ़कर शुरू किया जाए इसमें अल्लाह की बरकत शामिल होती है, अगर उसे न पढ़ा गया तो वो काम बरकत से ख़ाली होता है। तह़रीर में भी आग़ाज़ बिस्मिल्लाह ही से होना चाहिये।

बाब 1 :

١ - باب

4953. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम बुख़ारी ने कहा और मुझसे सईद बिन मर्वान ने बयान किया और उनसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी रज़्मा ने, उन्हें अबू स़ालेह़ सल्मूया ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि मुझे इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उनसे नबी करीम (ﷺ) की पाक बीवी आ़इशा (रज़ि) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) को नुबुव्वत से पहले सच्चे ख़्वाब दिखाए जाते थे चुनाँचे उस दौर में आप (ﷺ) जो ख़्वाब भी देख लेते वो सुबह़ की रोशनी की त़रह़ बेदारी में नमूदार होता। फिर आपको तन्हाई भली लगने लगी। उस दौर में आप (ﷺ) ग़ारे ह़िरा तन्हा तशरीफ़ ले जाते और आप (ﷺ) वहाँ तह़न्नुष़ किया करते थे। उ़र्वा ने कहा कि तह़न्नुष़ से इबादत मुराद है। आप (ﷺ) वहाँ कई कई रातें जागते, घर में न आते और उसके लिये अपने घर से तौशा ले जाया करते थे। फिर जब तौशा ख़त्म हो जाता फिर ख़दीजा (रज़ि.) के यहाँ लौटकर तशरीफ़ लाते और इतना ही तौशा फिर ले जाते। इसी ह़ाल में आप (ﷺ) ग़ारे ह़िरा में थे कि दफ़अतन आप पर वह़्य नाज़िल हुई। चुनाँचे फ़रिश्ता आपके पास आया

٤٩٥٣ - حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، وَحَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ مَرْوَانَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي رِزْمَةَ، أَخْبَرَنَا أَبُو صَالِحٍ سَلْمُويَةَ قَالَ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ قَالَ : أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: كَانَ أَوَّلُ مَا بُدِىءَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ الرُّؤْيَا الصَّادِقَةُ فِي النَّوْمِ، فَكَانَ لاَ يَرَى رُؤْيَا إِلاَّ جَاءَتْ مِثْلَ فَلَقِ الصُّبْحِ، ثُمَّ حُبِّبَ إِلَيْهِ الْخَلاَءُ فَكَانَ يَلْحَقُ بِغَارِ حِرَاءٍ فَيَتَحَنَّثُ فِيهِ. قَالَ : وَالتَّحَنُّثُ: التَّعَبُّدُ. اللَّيَالِيَ ذَوَاتِ الْعَدَدِ، قَبْلَ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى أَهْلِهِ، وَيَتَزَوَّدُ لِذَلِكَ، ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى خَدِيجَةَ، فَيَتَزَوَّدُ بِمِثْلِهَا، حَتَّى فَجِئَهُ الْحَقُّ وَهُوَ فِي غَارِ حِرَاءٍ، فَجَاءَهُ الْمَلَكُ

और कहा पढ़िये! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़रमाया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। आँहुज़ूर (ﷺ) ने बयान किया कि मुझे फ़रिश्ते ने पकड़ लिया और इतना भींचा कि मैं बे ताक़त हो गया फिर उन्होंने मुझे छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये! मैंने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उन्होने फिर दूसरी मर्तबा मुझे पकड़कर इस तरह भींचा कि मैं बेताक़त हो गया और छोड़ने के बाद कहा कि पढ़िये! मैंने इस बार भी यही कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उन्होंने तीसरी बार फिर उसी तरह पकड़कर भींचा कि मैं बेताक़त हो गया और कहा कि पढ़िये! पढ़िये! अपने परवरदिगार के नाम के साथ जिसने सबको पैदा किया, जिसने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया है, आप पढ़िये और आपका रब बड़ा करीम है, जिसने क़लम के ज़रिये ता'लीम दी है, से आयत अ़ल्लमल् इंसान मालम यअ़लम तक फिर आँहज़रत (ﷺ) उन पाँच आयात को लेकर वापस घर तशरीफ़ लाए और घबराहट से आपके मूँढ़े और गर्दन का गोश्त फड़क (हरकत कर) रहा था। आप (ﷺ) ने ख़दीजा (रज़ि.) के पास पहुँचकर फ़र्माया कि मुझे चादर ओढ़ा दो! मुझे चादर ओढ़ा दो! चुनाँचे उन्होंने आपको चादर ओढ़ा दी। जब घबराहट आपसे दूर हुई तो आप (ﷺ) ने ख़दीजा (रज़ि.) से कहा अब क्या होगा मुझे तो अपनी जान का डर हो गया है फिर आप (ﷺ) ने सारा वाक़िया उन्हें सुनाया। ख़दीजा (रज़ि.) ने कहा ऐसा हर्गिज़ न होगा, आपको ख़ुशख़बरी हो, अल्लाह की क़सम! अल्लाह आपको कभी रुस्वा नहीं करेगा। अल्लाह की क़सम! आप तो सिलारहमी करने वाले हैं, आप हमेशा सच बोलते हैं, आप कमज़ोर व नातवाँ का बोझ ख़ुद उठा लेते हैं, जिन्हें कहीं से कुछ नहीं मिलता वो आप (ﷺ) के यहाँ से पा लेते हैं। आप मेहमान नवाज़ हैं और ह़क़ के रास्ते में पेश आने वाली मुसीबतों पर लोगों की मदद करते हैं। फिर ख़दीजा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) को लेकर वरक़ा बिन नौफ़िल के पास आईं वो ख़दीजा (रज़ि.) के चचा और आप (ﷺ) के वालिद के भाई थे वो ज़मान-ए-जाहिलियत में नसरानी हो गये थे और अ़रबी लिख लेते थे जिस तरह अल्लाह ने चाहा उन्होंने इंजील भी अ़रबी में लिखी थी। वो बहुत बूढ़े थे और नाबीना हो गये थे। ख़दीजा (रज़ि.) ने उनसे कहा चचा अपने भतीजे का हाल सुनिये। वरक़ा ने कहा बेटे! तुमने क्या देखा है? आप (ﷺ)

فَقَالَ: اقْرَأْ . فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا أَنَا بِقَارِىءٍ. قَالَ : فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجُهْدُ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: اقْرَأْ قُلْتُ : مَا أَنَا بِقَارِىءٍ، فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي الثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجُهْدُ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ : اقْرَأْ قُلْتُ: مَا أَنَا بِقَارِىءٍ فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي الثَّالِثَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجُهْدُ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ : ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ، خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ، اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ عَلَّمَ الإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ﴾)). الآيَاتِ فَرَجَعَ بِهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ تَرْجُفُ بَوَادِرُهُ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى خَدِيجَةَ فَقَالَ: ((زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي))، فَزَمَّلُوهُ. حَتَّى ذَهَبَ عَنْهُ الرَّوْعُ. قَالَ لِخَدِيجَةَ: ((أَيْ خَدِيجَةُ مَالِي لَقَدْ خَشِيتُ عَلَى نَفْسِي؟)) فَأَخْبَرَهَا الْخَبَرَ. قَالَتْ خَدِيجَةُ: كَلاَّ أَبْشِرْ، فَوَ اللهِ لاَ يُخْزِيكَ اللهُ أَبَدًا، فَوَ اللهِ إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَصْدُقُ الْحَدِيثَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ. وَتَكْسِبُ الْمَعْدُومَ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ. فَانْطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ حَتَّى أَتَتْ بِهِ وَرَقَةَ بْنَ نَوْفَلٍ، وَهْوَ ابْنُ عَمِّ خَدِيجَةَ أَخِي أَبِيهَا، وَكَانَ امْرَأً تَنَصَّرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ يَكْتُبُ الْكِتَابَ الْعَرَبِيَّ، وَيَكْتُبُ مِنَ الإِنْجِيلِ بِالْعَرَبِيَّةِ، مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَكْتُبَ، وَكَانَ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ عَمِيَ، فَقَالَتْ

ने सारा हाल सुनाया जो कुछ आपने देखा था। इस पर वरक़ा ने कहा यही वो नामूस (ह़ज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम) हैं जो ह़ज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास आते थे। काश! मैं तुम्हारी नुबुव्वत के ज़माने में जवान और ताक़तवर होता। काश! मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रह जाता, फिर वरक़ा ने कुछ और कहा कि जब आपकी क़ौम आपको मक्का से निकालेगी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या वाक़ई ये लोग मुझे मक्का से निकाल देंगे वरक़ा ने कहा हाँ, जो दा'वत आप लेकर आए हैं उसे जो भी लेकर आया तो उससे अदावत ज़रूर की गई। अगर मैं आपकी नुबुव्वत के ज़माने में ज़िन्दा रह गया तो मैं ज़रूर भरपूर तरीक़े पर आपका साथ दूँगा। उसके बाद वरक़ा का इंतिक़ाल हो गया और कुछ दिनों के लिये वह्य का आना भी बन्द हो गया। आप (ﷺ) वह्य के बन्द हो जाने की वजह से ग़मगीन रहने लगे।

خَدِيجَةُ يَا عَمِّ، اسْمَعْ مِنِ ابْنِ أَخِيكَ، قَالَ وَرَقَةُ يَا ابْنَ أَخِي مَا ذَا تَرَى. فَأَخْبَرَهُ النَّبِيُّ ﷺ خَبَرَ مَا رَأَى فَقَالَ وَرَقَةُ : هَذَا النَّامُوسُ الَّذِي أُنزِلَ عَلَى مُوسَى، لَيْتَنِي فِيهَا جَذَعًا. لَيْتَنِي أَكُونُ حَيًّا ذَكَرَ حَرْفًا. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَوَ مُخْرِجِيَّ هُمْ))؟ قَالَ وَرَقَةُ : نَعَمْ، لَمْ يَأْتِ رَجُلٌ بِمَا جِئْتَ بِهِ إِلاَّ أُوذِيَ، وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ حَيًّا أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا. ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ وَفَتَرَ الْوَحْيُ فَتْرَةً حَتَّى حَزِنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ.

4954. मुह़म्मद बिन शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) वह्य के कुछ दिनों के लिये रुक जाने का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं चल रहा था कि मैंने अचानक आसमान की त़रफ़ से एक आवाज़ सुनी। मैंने नज़र उठाकर देखा तो वही फ़रिश्ता (जिब्रईल अलैहिस्सलाम) जो मेरे पास ग़ारे ह़िरा में आया था, आसमान और ज़मीन के दरम्यान कुर्सी पर बैठा हुआ नज़र आया। मैं उनसे बहुत डरा और घर वापस आकर मैंने कहा कि मुझे चादर ओढ़ा दो चुनाँचे घर वालों ने मुझे चादर ओढ़ा दी, फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की या अय्युहल मुद्दष़्षि़र क़ुम फ़अन्ज़िर ऐ कपड़े में लिपटने वाले! उठिये! फिर लोगों को डराइये और अपने परवरदिगार की बड़ाई बयान कीजिए और अपने कपड़ों को पाक रखिए। अबू सलमा (रज़ि.) ने कहा कि अर् रुज़्ज़ा जाहिलियत के बुत थे जिनकी वो परस्तिश किया करते थे। रावी ने बयान किया कि फिर वह्य बराबर आने लगी। (राजेअ : 3)

٤٩٥٤- قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ شِهَابٍ، فَأَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ، أَنَّ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الْوَحْيِ، قَالَ فِي حَدِيثِهِ : ((بَيْنَا أَنَا أَمْشِي، سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ بَصَرِي فَإِذَا الْمَلَكُ الَّذِي جَاءَنِي بِحِرَاءٍ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَفَرِقْتُ مِنْهُ، فَرَجَعْتُ فَقُلْتُ: زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي)). فَدَثَّرُوهُ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ، قُمْ فَأَنْذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ، وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ، وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ﴾ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: وَهِيَ الأَوْثَانُ الَّتِي كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَعْبُدُونَ، قَالَ ثُمَّ تَتَابَعَ الْوَحْيُ.

[راجع: ٣]

तश्रीह : हज़रत इमाम (रह) इस तवील हदीष़ को यहाँ इसलिये लाए हैं कि इसमें पहली वह्य **इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़** अल्अख़ का ज़िक्र है। नुज़ूले क़ुर्आन की इब्तिदा इसी से हुई। ज़िम्नी तौर पर और भी बहुत सी बातें इस हदीष़ में मज़्कूर हुई हैं। हज़रत वरक़ा बिन नौफ़िल, हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के चचाज़ाद भाई इसलिये हुए कि हज़रत ख़दीजा के वालिद ख़ुवैलिद और हज़रत वरक़ा के वालिद नौफ़िल दोनों असद के बेटे और भाई भाई थे, वरक़ा नसरानी हो गये थे, मगर हुज़ूर (ﷺ) की उस मुलाक़ात से मुताष़्षिर होकर ये ईमान ले आए। **इक़्रा बिस्मि रब्बिक** के बाद जो दूसरी सूरत नाज़िल हुई वो **याअय्युहल्मुद्दष़्षिर** ही है।

बाब 2 : आयत 'खलक़ल इन्सान मिन अलक़' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قَوْلِهِ ﴿خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ﴾

इंसान को अल्लाह ने ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।

4955. हमसे इब्ने बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि शुरू में रसूले करीम (ﷺ) को सच्चे ख़्वाब दिखाए जाने लगे। फिर आपके पास फ़रिश्ता आया और कहा कि, आप (ﷺ) पढ़िये अपने परवरदिगार के नाम के साथ, जिसने (सबको पैदा किया है) जिसने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया है। आप पढ़ा कीजिए और आप (ﷺ) का परवरदिगार बड़ा करीम है। (राजेअ़ : 3)

٤٩٥٥- حَدَّثَنَا ابْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ، أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ. فَجَاءَهُ الْمَلَكُ فَقَالَ : ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ﴾. [راجع: ٣]

तश्रीह : इसी पहली वह्य में आप (ﷺ) को इल्म हासिल करने की रग़बत दिलाई गई। साथ ही इंसान की ख़िल्क़त को बतलाया गया। जिसमें इशारा था कि इंसान का अव्वलीन फ़र्ज़ ये है कि पहले अपने रब की मग़्फ़िरत हासिल करे फिर ख़ुद अपने वजूद को और अपने नफ़्स को पहचाने। तहसील इल्म के आदाब पर भी इसमें लतीफ़ इशारे है। **तदब्बरू या उलिल्अब्सार**

बाब 3 : आयत 'इक़्रा व रब्बुकल्अक्रम' की तफ़्सीर

٣- باب قَوْلِهِ : ﴿اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ﴾

आप (ﷺ) पढ़ा कीजिए और आपका रब बड़ा ही मेहरबान है।

4956. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने (दूसरी सनद) और लैष़ ने बयान किया कि उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उन्हे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) की नुबुव्वत की इब्तिदा सच्चे ख़्वाबों से की गई और कहा कि आप (ﷺ) पढ़िये और अपने परवरदिगार के नाम की मदद से जिसने सबको पैदा किया है, जिसने इंसान को ख़ून के लोथड़े से बनाया। आप पढ़ा कीजिए और आपका परवरदिगार बड़ा करीम है, जिसने क़लम को

٤٩٥٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، قَالَ مُحَمَّدٌ : أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا : أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ الرُّؤْيَا الصَّادِقَةُ، جَاءَهُ الْمَلَكُ فَقَالَ: ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ، خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ، اقْرَأْ وَرَبُّكَ

ज़रिय–ए–ता'लीम बनाया। (राजेअ : 3)

الأَكْرَمُ الَّذي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ﴾. [راجع: ٣]

4957. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, और उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने उ़र्वा से सुना, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर रसूले करीम (ﷺ) ख़दीजा (रज़ि.) के पास वापस तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि मुझे चादर ओढ़ा दो मुझे चादर ओढ़ा दो। फिर आपने सारा वाक़िया बयान किया। (राजेअ : 3)

٤٩٥٧- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: فَرَجَعَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى خَدِيجَةَ فَقَالَ: ((زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي)). فَذَكَرَ الْحَدِيثَ. [راجع: ٣]

बाब 4 : 'कल्ला लइल्लम ..... अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

٤- باب

हाँ हाँ अगर ये (कमबख़्त) बाज़ न आया तो हम उसे पेशानी के बल पकड़कर घसीटेंगे जो पेशानी झूठ और गुनाहों मे आलूदा हो चुकी है।

﴿كَلاَّ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعَنْ بِالنَّاصِيَةِ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ﴾

4958. हमसे यह़्या बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे अ़ब्दुल करीम जज़री ने, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, अबू जहल ने कहा था कि अगर मैंने मुह़म्मद (ﷺ) को का'बा के पास नमाज़ पढ़ते देख लिया तो उसकी गर्दन मं कुचल दूँगा। आँहुज़ूर (ﷺ) को जब ये बात पहुँची तो आपने फ़र्माया कि अगर उसने ऐसा किया होता तो उसे फ़रिश्ते पकड़ लेते। अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ के साथ इस ह़दीष़ को अ़म्र बिन ख़ालिद ने रिवायत किया है, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे अ़ब्दुल करीम ने बयान किया।

٤٩٥٨- حدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ الْجَزَرِيِّ عَنْ عِكْرِمَةَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ أَبُوجَهْلٍ: لَئِنْ رَأَيْتُ مُحَمَّدًا يُصَلِّي عِنْدَ الْكَعْبَةِ لأَطَأَنَّ عَلَى عُنُقِهِ. فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ فَعَلَهُ لأَخَذَتْهُ الْمَلاَئِكَةُ)). تَابَعَهُ عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَبْدِ الْكَرِيمِ.

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है कि अबू जहल ने अपने कहने के मुवाफ़िक़ एक बार का'बा के पास आँह़ज़रत (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा। वो आपको ईज़ा देने के लिये चला जब आपके क़रीब पहुँचा तो यकायक ऐड़ियों के बल झिझककर पीछे हटा। लोगों ने पूछा ये क्या मामला है तो तू कहता था मैं मुह़म्मद (ﷺ) की गर्दन कुचल डालूँगा अब भागता क्यूँ है? वो कहने लगा कि जब मैं उनके क़रीब पहुँचा तो मुझको आग की एक ख़ंदक़ और हौलनाक चीज़ें नज़र आए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया अगर वो और नज़दीक आता तो फ़रिश्ते उसको उचक लेते, उसका एक एक ह़िस्सा जुदा कर डालते (वह़ीदी)। कितने लोग ऐसे बदबख़्त होते हैं कि क़ुदरत की बहुत सी निशानियाँ देखने के बावजूद भी ईमान नहीं लाते। अबू जहल बदबख़्त भी उन ही लोगों में से था जो दिल से इस्लाम की ह़क़ीक़त जानता और स़दाक़ते मुह़म्मदी को मानता था मगर मह़ज़ क़ौम की आर और तअ़स्सुब व दुश्मनी की बिना पर मुसलमान होने के लिये तैयार न हुआ। आगे इर्शादे बारी है, **वस्जुद वक़्तरिब** सज्दा कर और अल्लाह की नज़दीकी ढूँढ़। इसमें इशारा है कि सज्दे में बन्दा अल्लाह से बहुत नज़दीक होता है, इसीलिये हुक्म है कि सज्दे मे जाओ तब दिल खोलकर अल्लाह से दुआएँ करो क्योंकि सज्दे की दुआएँ अ़मूमन क़ुबूल होती हैं। **क़ज़ा जरब्ना बिऔनिल्लाह तआ़ला व हुस्नि तौफ़ीक़िही.**

सूरह क़द्र की तफ़्सीर

[٩٧] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

मतलअ़ साथ फ़त्हा लाम (मस़दर है) तुलूअ़ के मा'नों मे और मतलअ़ साथ कसरा लाम (जैसे कुसाई ने पढ़ा है) वो मुक़ाम जहाँ से सूरज निकले। इन्ना अन्ज़ल्नाहु में ज़मीर क़ुर्आन की तरफ़ फिरती है। (गो कि क़ुर्आन का ज़िक्र ऊपर नहीं आया है मगर उसकी शान बढ़ाने के लिये इज़्मार क़ब्लज़्ज़िक्र किया) अन्ज़ल्नाहु स़ैग़ा जमा मुतकल्लिम का है ह़ालाँकि उतारने वाला एक ही है या'नी अल्लाह पाक मगर अ़रबी में वाह़िद को जमीअ़ और इष्बात के लिये बा स़ैग़ा जमा लाते हैं।

يُقَالُ الْمَطْلَعُ هُوَ الطُّلُوعُ، وَالْمَطْلِعُ هُوَ الْمَوْضِعُ الَّذِي يُطْلَعُ مِنْهُ. أَنْزَلْنَاهُ الْهَاءُ كِنَايَةٌ عَنِ الْقُرْآنِ، أَنْزَلْنَاهُ مَخْرَجُ الْجَمْعِ، وَالْمُنْزِلُ هُوَ اللهُ تَعَالَى وَالْعَرَبُ تُوَكِّدُ فِعْلَ الْوَاحِدِ فَتَجْعَلُهُ بِلَفْظِ الْجَمْعِ لِيَكُونَ أَثْبَتَ وَأَوْكَدَ.

तश्रीह़ : सूरह क़द्र मक्की है और इसमें पाँच आयात हैं, लैलतुल क़द्र का वजूद बरह़क़ है जिसे अल्लाह ने ख़ास़ उम्मते मुह़म्मदिया को अ़ता फ़र्माया है। ये मुबारक रात हर रमज़ान के आख़िरी अ़शर की त़ाक़ रातों में से एक रात है जो हर साल आती रहती है। किसी साल 21 को किसी साल 23 को किसी साल 25 को किसी साल 27 को किसी साल 29 को ये रात आती है। इसीलिये जो लोग उन पाँचों रातों में शब बेदारी करते हैं तो वो रात ज़रूर नस़ीब हो जाती है। इस रात में ये दुआ पढ़नी सुन्नत है, **अल्लाहुम्म इन्नक अ़फ़ुव्वुन तुहिब्बुल्अफ़्व फ़अफ़ु अन्नी** ऐ अल्लाह! बेशक तू मुआफ़ करने वाला है और तू मुआफ़ी को पसंद करता है पस मुझको मुआफ़ी अ़ता फ़र्मा दे आमीन। फ़ज़ाइल लैलतुल क़द्र के बारे में कुतुबे अह़ादीष में बहुत सी रिवायात मौजूद हैं मगर उनमे से कोई ह़दीष ह़ज़रत इमाम को उनकी शराइत़ के मुताबिक़ नहीं मिली। लिहाज़ा इस सूरह शरीफ़ा के चंद अल्फ़ाज़ की तफ़्सीर करके उसके बरह़क़ होने का इशारा फ़र्मा दिया। ह़ज़रत इमाम के शराइत़ के मुवाफ़िक़ न होने का ये मतलब हर्गिज़ नहीं है कि वो अह़ादीष क़ाबिले ए'तिबार नहीं बिला शक वो अह़ादीष स़ह़ीह़ और मर्फ़ूअ़ क़ाबिले ए'तिबार हैं। इमाम स़ाह़ब के शराइत़ बहुत सख़्त हैं और वो उसूलन उनकी पाबन्दी कर गये हैं, इसीलिये वो बहुत सी अह़ादीष को छोड़ देते हैं।

सूरह बय्यिनह की तफ़्सीर

[٩٨] سُورَةُ ﴿لَمْ يَكُنْ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मुन्फ़क्कीन के मा'नी छोड़ने वाले। क़य्यिमह क़ायम और मज़बूत़ ह़ालाँकि दीन मुज़क्कर है मगर इसको मुअन्नष या'नी क़य्यिमा की त़रफ़ मुज़ाफ़ किया दीन को मिल्लत के मा'नी में लिया जो मुअन्नष है।

مُنْفَكِّينَ: زَائِلِينَ. قَيِّمَةٌ. وَالْقَائِمَةُ. دِينُ الْقَيِّمَةِ: أَضَافَ الدِّينَ إِلَى الْمُؤَنَّثِ.

4959. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा कि हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, मैंने क़तादा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हें सूरह लम् यकुनिल्लज़ीना कफ़रू पढ़कर सुनाऊँ। ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया क्या अल्लाह तआ़ला ने मेरा

٤٩٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأُبَيٍّ: ((إِنَّ اللهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ ﴿لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا﴾)) قَالَ:

नाम भी लिया है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। इस पर वो रोने लगे। (राजेअ : 3809)

وَسَمَّانِي قَالَ : ((نَعَمْ. فَبَكَى)). [راجع: ٣٨٠٩]

तश्रीह : ये सूरत मदनी है। इसमें आठ आयात हैं। ख़ुशी के मारे रोने लगे कि कहाँ मैं एक नाचीज़ बन्दा और कहाँ वो ज़मीन व आसमान का शहंशाह। कुछ ने कहा कि डर से रो दिये कि इस इनायत व नवाज़िश का शुक्रिया मुझसे क्यूँकर हो सकेगा। अरब के अहले किताब और मुश्रिकीन अपने ख़्यालाते बातिला व औहामे फ़ासिदा पर इस क़दर क़ाने थे कि वो किसी क़ीमत पर भी उनको छोड़ने वाले न थे लेकिन अल्लाह तआला ने एक ऐसा बेहतरीन रसूल जो मुजस्सम दलील थी मब्ऊष किया कि उनकी पाकीज़ा ता'लीमात से कितने ख़ुशनसीब राहे रास्त पर आ गये। कितनों को हिदायत नसीब हुई। सूरह बय्यिनह में अल्लाह पाक ने उसी मज़मून को बेहतरीन अंदाज़ में बयान किया है और कुर्आन पाक को सुहुफ़म् मुत़हरह और रसूले करीम (ﷺ) को लफ़्ज़े बय्यिनह से ता'बीर किया है। **सदक़ल्लाहु तबारक व तआला आमन्ना बिही व सद्दक़्ना रब्बना फक्तुब्ना मअश्शाहिदीन** (आमीन)

४٩٦٠- حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ حَسَّانَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأُبَيٍّ: ((إِنَّ اللهَ أَمَرَنِي أَنْ أَقْرَأَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ)). قَالَ أُبَيٌّ اللهُ سَمَّانِي لَكَ. قَالَ: ((اللهُ سَمَّاكَ)). فَجَعَلَ أُبَيٌّ يَبْكِي. قَالَ قَتَادَةُ : فَأُنْبِئْتُ أَنَّهُ قَرَأَ عَلَيْهِ ﴿لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ﴾.

4960. हमसे हस्सान बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उबई बिन कअब (रज़ि.) से फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हें कुर्आन (सूरह लम यकुन) पढ़कर सुनाऊँ। हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) ने अर्ज़ किया क्या आपसे अल्लाह तआला ने मेरा नाम भी लिया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ अल्लाह तआला ने तुम्हारा नाम भी मुझसे लिया है। हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) ये सुनकर रोने लगे। क़तादा ने बयान किया कि मुझे ख़बर दी गई है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें सूरह लम यकुनिल्लज़ीना कफ़रू मिन अहलिल किताब पढ़कर सुनाई थी।

उबई बिन कअब (रज़ि.) कुर्आन पाक के हाफ़िज़ क़ारी होने की बिना पर अल्लाह के हाँ इतने मक़्बूल हुए कि ख़ुद अल्लाह पाक ने अपने प्यारे रसूल (ﷺ) को हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) के सामने कुर्आन पाक सुनाने का हुक्म फ़र्माया, इस क़िस्मत का क्या अंदाज़ा किया जा सकता है।

١- باب قَوْلِهِ : ﴿وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ﴾

٤٨٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُلْقَى فِي النَّارِ، وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ قَدَمَهُ فَتَقُولُ : قَطْ قَطْ)). [طرفاه في : ٦٦٦١، ١٣٨٤].

4961. हमसे अहमद बिन अबी दाऊद जा'फ़र मुनादी ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी इरूबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उबई बिन कअब (रज़ि.) से फ़र्माया अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हे कुर्आन (की सूरह लम यकुन) पढ़कर सुना। उन्होंने पूछा क्या अल्लाह ने आपसे मेरा नाम भी लिया है? आपने फ़र्माया कि हाँ! हज़रत उबई बिन कअब (रज़ि.) बोले तमाम जहानों के पालने वाले के यहाँ मेरा ज़िक्र हुआ? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! इस पर उनकी आँखों से आंसू निकल पड़े। (दीगर मक़ाम : 1384, 6661)

सूरह इज़ा ज़ुल्ज़िलत की तफ़्सीर

٩٩ سُورَةُ ﴿إِذَا زُلْزِلَتِ الأَرْضُ زِلْزَالَهَا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब अल्लाह तआला का इर्शाद है फ़मय्ँ यअमल मिष़्क़ाल ज़रतिन अल आयत या'नी जो कोई ज़र्रा भर भी नेकी करेगा उसे भी वो देख लेगा औहा इलैहा औहा लहा और वहा लहा और वहा इलैहा सबका एक ही मा'नी है।

١ -باب قَوْلِهِ ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ﴾ يُقَالُ: أَوْحَى لَهَا أَوْحَى إِلَيْهَا، وَوَحَى لَهَا وَوَحَى إِلَيْهَا وَاحِدٌ.

ये सूरह मक्की है और इसमें आठ आयतें हैं।

4962. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनेस अबू स़ालेह़ सिमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। घोड़ा तीन त़रह़ के लोग तीन क़िस्म के पालते हैं । एक शख़्स़ के लिये वो अज्र होता है दूसरे के लिये वो मुआफ़ी है, तीसरे के लिये अ़ज़ाब है। जिसके लिये वो अज्रो–ष़वाब है वो शख़्स़ है जो उसे अल्लाह के रास्ते में जिहाद की निय्यत से पालता है। चरागाह या उसके बजाय रावी ने ये कहा बाग़ मे उसकी रस्सी को दराज़ कर देता है और वो घोड़ा चरागाह या बाग़ मे अपनी रस्सी तुड़ा ले और एक दो कोड़े (फेंकने की दूरी) तक अपनी ह़द से आगे बढ़ गया तो उसके निशानात क़दम और उसकी लीद भी मालिक के लिये ष़वाब बन जाती है और अगर किसी नहर से गुज़रते हुए उसमें से मालिक के इरादे के बग़ैर ख़ुद ही उसने पानी पी लिया तो ये भी मालिक के लिये बाइ़षे ष़वाब बन जाता है। दूसरा शख़्स़ जिसके लिये उसका घोड़ा बाइ़षे मुआफ़ी पर्दा बनता है। ये वो शख़्स़ है जिसने लोगों से बेपरवाह रहने और लोगों (के सामने सवाल करने से) बचने के लिये उसे पाला और उस घोड़े की गर्दन पर जो अल्लाह तआला का ह़क़ है और उसकी पीठ का जो ह़क़ है उसे भी वो अदा करता रहता है। तो घोड़ा उसके लिये बाइ़षे मआफ़ी पर्दा बन जाता है और जो शख़्स़ घोड़ा अपने दरवाज़े पर फ़ख़्र और दिखावे और इस्लाम दुश्मनी की ग़र्ज़ से बाँधता है, वो उसके लिये वबाल है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से गधों के बारे मे पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने उसके बारे में मुझ पर कोई ख़ास़ आयत सिवा उस अकेली

٤٩٦٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((الْخَيْلُ لِثَلاَثَةٍ: لِرَجُلٍ أَجْرٌ، وَلِرَجُلٍ سِتْرٌ. وَعَلَى رَجُلٍ وِزْرٌ. فَأَمَّا الَّذِي لَهُ أَجْرٌ، فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأَطَالَ لَهَا فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ، فَمَا أَصَابَتْ فِي طِيَلِهَا ذَلِكَ فِي الْمَرْجِ وَالرَّوْضَةِ كَانَ لَهُ حَسَنَاتٍ. وَلَوْ أَنَّهَا قَطَعَتْ طِيَلَهَا فَاسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْ شَرَفَيْنِ، كَانَتْ آثَارُهَا وَأَرْوَاثُهَا حَسَنَاتٍ لَهُ، وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهَرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ، وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَ بِهِ كَانَ ذَلِكَ حَسَنَاتٍ لَهُ، فَهِيَ لِذَلِكَ الرَّجُلِ أَجْرٌ. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا تَغَنِّيًا وَتَعَفُّفًا وَلَمْ يَنْسَ حَقَّ اللهِ فِي رِقَابِهَا وَلاَ ظُهُورِهَا فَهِيَ لَهُ سِتْرٌ. وَرَجُلٌ رَبَطَهَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَنِوَاءً فَهِيَ عَلَى ذَلِكَ وِزْرٌ)). فَسُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْحُمُرِ، قَالَ: ((مَا أَنْزَلَ اللهُ عَلَيَّ

फ़ीहा इल्ला हाज़िहिल आयतल फ़ाज़तल जामिअ़त
आ़म और जामेअ़ आयत के नाज़िल नहीं की फ़मंय्यअ़मल मिष्क़ाल ज़रतिन ख़ैरय् यरहू अल्अख़ या'नी जो कोई ज़र्रा भर नेकी करेगा वो उसे भी देख लेगा और जो कोई ज़र्रा भर बुराई करेगा वो उसे भी देख लेगा। (राजेअ़ : 2371)

فِيهَا إِلاَّ هَذِهِ الآيَةَ الْفَاذَّةَ الْجَامِعَةَ ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ، وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾)).

[راجع: ٢٣٧١]

तश्रीह : पहला शख़्स जिसके लिये घोड़ा बाअ़िषे अज्रो-ष़वाब है वो जिसने उसे फ़ी सबीलिल्लाह के तस़व्वुर से रखा। दूसरा वो जिसके लिये वो मुआफ़ी है अपनी ज़ाती ज़रूरियात के लिये पालने वाला न बतौरे फ़ख़्र व रिया के। तीसरा महज़ रिया व नमूद फ़ख़्र व ग़ुरूर के लिये पालने वाला। आजकल की तमाम बरक़ी सवारियाँ भी सब इसी ज़ैल में हैं। गर्दन का जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ है कि अगर वो तिजारती हैं तो उनकी ज़कात अदा करे। पुश्त का ह़क़ ये कि थके मांदे मुसाफ़िर मांगने वाले को आ़रियतन सवारी के लिये दे दे। आजकल बरक़ी सवारियाँ भी सब उसी ज़ेल में आकर बाअ़िषे अ़ज़ाब व ष़वाब बन सकती हैं।

बाब 2 : आयत 'व मंय्यअ़मल मिष्क़ाल ज़रतिन शर्रय्यरहू' की तफ़्सीर या'नी,

٢- باب قوله ﴿وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾

जो कोई एक ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा उसे भी वो देख लेगा।

4963. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको इमाम मालिक (रह) ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें अबू स़ालेह ने और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) से गधों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि इस अकेली आ़म आयत के सिवा मुझ पर उसके बारे में कोई ख़ास़ हुक्म नाज़िल नहीं हुआ है या'नी जो कोई ज़र्रा बराबर नेकी करेगा उसे देख लेगा और जो कोई ज़र्रा बराबर बुराई करेगा वो उसे भी देख लेगा। (राजेअ़ : 2371)

٤٩٦٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ أَخْبَرَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الْحُمُرِ فَقَالَ: ((لَمْ يُنْزَلْ عَلَيَّ فِيهَا شَيْءٌ إِلاَّ هَذِهِ الآيَةُ الْجَامِعَةُ الْفَاذَّةُ ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ، وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾)). [راجع: ٢٣٧١]

तश्रीह : या'नी इस आयत के ज़ेल गधे भी अगर कोई नेक निय्यती से पालेगा तो उसे ष़वाब मिलेगा, बदनिय्यती से पालेगा तो उसको अ़ज़ाब होगा।

सूरह वल् आ़दियात की तफ़्सीर

[١٠٠] سُورَةُ ﴿وَالْعَادِيَاتِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

मुजाहिद ने कहा कनूद का मा'नी नाशुक्रा है फ़अष़रना बिही नक़्अ़न या'नी सुबह के वक़्त धूल उड़ाते हैं, गर्द उड़ाते हैं। लिहुब्बिल ख़ैर या'नी माल की क़िल्लत की वजह से। ल शदीद बख़ील है बख़ील को शदीद कहते हैं। हुस़्सिल के मा'नी

وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْكَنُودُ الْكَفُورُ. يُقَالُ فَأَثَرْنَ بِهِ نَقْعًا. رَفَعْنَ بِهِ غُبَارًا. لِحُبِّ الْخَيْرِ مِنْ أَجْلِ حُبِّ الْخَيْرِ. لَشَدِيدٌ:

لَبَخِيلٌ، وَيُقَالُ لِلْبَخِيلِ شَدِيدٌ. حُصِّلَ مُيِّزَ.

जुदा किया जाए या जमा किया जाए।

ये सूरत मक्की है और इसमें ग्यारह आयात हैं। हज़रत इमाम को इस सूरह शरीफ़ा के बारे में मज़ीद कोई ह़दीष़ उनकी अपनी शराइत़ के मुत़ाबिक़ न मिली होगी लिहाज़ा आपने उन ही चंद अल्फ़ाज़ पर इक्तिफ़ा फ़र्माया आगे भी कई जगह ऐसा ही है।

[١٠١] سُورَةُ ﴿الْقَارِعَةِ﴾

بسم ا لله الرحمن الرحيم

﴿كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ﴾ كَغَوْغَاءِ الْجَرَادِ يَرْكَبُ بَعْضُهُ بَعْضًا، كَذَلِكَ النَّاسُ يَجُولُ بَعْضُهُمْ فِي بَعْضٍ. كَالْعِهْنِ: كَأَلْوَانِ الْعِهْنِ وَقَرَأَ عَبْدُ ا لله كَالصُّوفِ.

सूरह क़ारिआत की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कल फ़राशिल मब्षूष़ या'नी परेशान टिड्डियों की त़रह़ की जैसे वो ऐसी ह़ालत में एक–दूसरे पर चढ़ जाती हैं यही ह़ाल (ह़श्र के दिन) इंसानों का होगा कि वो एक–दूसरे पर गिर रहे होंगे कल इह़्निल ऊन की त़रह़ रंग बिरंग। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने यूँ पढ़ा है कस्सूफ़िल्मन्फ़ूश मनफ़ूश या'नी धुनी हुई ऊन की त़रह़ उड़ते फिरेंगे।

ये सूरह मक्की है और इसमें ग्यारह आयात हैं।

[١٠٢] سُورَةُ ﴿أَلْهَاكُمُ﴾

بِسْمِ ا لله الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: التَّكَاثُرُ مِنَ الأَمْوَالِ وَالأَوْلاَدِ.

सूरह तकाषुर की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अत् तकाषुर से माल और औलाद का बहुत होना मुराद है।

ये सूरह मक्की है और इसमें आठ आयात हैं।

[١٠٣] سُورَةُ ﴿وَالْعَصْرِ﴾

بسم ا لله الرحمن الرحيم

وَقَالَ يَحْيَى الدَّهْرُ أَقْسَمَ بِهِ.

सूरह वल अ़स्र की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह़्या बिन ज़ियाद ने कहा कि अल अ़स्र से मुराद ज़माना है उसी की क़सम खाई गई है।

ये सूरह मक्की है और इसमें 3 आयात हैं।

[١٠٤] سُورَةُ ﴿وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ﴾

بِسْمِ ا لله الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحُطَمَةُ اسْمُ النَّارِ مِثْلُ سَقَرَ وَلَظَى.

सूरह हुमज़ा की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल हुत़मह़ दोज़ख़ का एक नाम है जैसे सक़र और लज़ा भी उसके नामों मे से हैं।

ये सूरत मक्की है और इसमें नौ आयात हैं।

सूरह फ़ील की तफ़्सीर

[١٠٥] ﴿أَلَمْ تَرَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

قَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿أَلَمْ تَرَ﴾ أَلَمْ تَعْلَمْ. قَالَ مُجَاهِدٌ أَبَابِيلَ مُتَتَابِعَةً مُجْتَمِعَةً. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ مِنْ سِجِّيلٍ هِيَ سَنْكْ وَكِلْ.

मुजाहिद ने कहा अबाबील या'नी पे दर पे आने वाले झुण्ड के झुण्ड परिन्दे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा मिन सिज्जील (ये लफ़्ज़ फ़ारसी का मुअ़रब है) या'नी संग (पत्थर) और गुल (मिट्टी) मुराद है।

ये सूरत मक्की है और इसमें पाँच आयात हैं।

इस सूरह शरीफ़ा में वो तारीख़ी वाक़िया बयान किया गया है जो यमन के बादशाह अबरह के बारे में है। ये दुश्मन ख़ान–ए–का'बा को ढाने के लिये बहुत सा लाव लश्कर लेकर आया था। लेकिन अल्लाह पाक ने ऐसा तबाह किया कि वो क़यामत तक के लिये इबरत बन गया।

सूरह क़ुरैश की तफ़्सीर

[١٠٦] سُورَةُ ﴿لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

وَقَالَ مُجَاهِدٌ لِإِيلَافِ أَلِفُوا ذَلِكَ فَلاَ يَشُقُّ عَلَيْهِمْ فِي الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ. وَآمَنَهُمْ مِنْ كُلِّ عَدُوِّهِمْ فِي حَرَمِهِمْ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ ﴿لِإِيلَافِ﴾ لِنِعْمَتِي عَلَى قُرَيْشٍ.

मुजाहिद ने कहा लि इलाफ़ि क़ुरैश का मत़लब ये है कि क़ुरैश के लोगों का दिल सफ़र में लगा दिया था, गर्मी जाड़े किसी भी मौसम में उन पर सफ़र करना दुश्वार न था और उनको ह़रम में जगह देकर दुश्मनों से बेफ़िक्र कर दिया था। सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा कि लि इलाफ़ि क़ुरैश का मा'नी ये है क़ुरैश पर मेरे एह़सान की वजह से।

ये सूरत मक्की है और इसमें चार आयात हैं।

मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम ने जुम्ला क़ाल इब्ने उ़ययना अल्अख़ को रिवायत के ज़ेल मे दर्ज किया है जो कातिब की भूल है।

सूरह माऊ़न की तफ़्सीर

١٠٧– سورة ﴿أَرَأَيْتَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ الله الرحمن الرحيم

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : يَدُعُّ يَدْفَعُ عَنْ حَقِّهِ، يُقَالُ لَهُ مِنْ دَعَعْتُ، يُدَعُّونَ يُدْفَعُونَ، سَاهُونَ : لاَهُونَ، وَالْمَاعُونَ الْمَعْرُوفُ كُلُّهُ، وَقَالَ بَعْضُ الْعَرَبِ: الْمَاعُونُ الْمَاءُ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: أَعْلاَهَا الزَّكَاةُ الْمَفْرُوضَةُ، وَأَدْنَاهَا عَارِيَةُ الْمَتَاعِ.

मुजाहिद ने कहा यदुअ़्ऋ का मा'नी दफ़ा करता है या'नी यतीम को उसका ह़क़ नहीं लेने देता, कहते हैं ये दा'वत से निकला है उसी से सूरह त़ूर मे लफ़्ज़ यौम युदऊ़न है (या'नी जिस दिन दोज़ख़ की त़रफ़ उठाए जाएँगे धकेले जाएँगे) साहून भूलने वाले ग़ाफ़िल। माऊ़न कहते हैं मुरव्वत के हर अच्छे काम को। कुछ अ़रब माऊ़न पानी को कहते हैं। इक्रिमा ने कहा माऊ़न का आ़ला दर्जा ज़कात देना है और अदना दर्जा ये है कि कोई शख़्स़ कुछ सामान मांगे तो उसे वो दे दे, उसका इंकार न करे।

ये सूरत मक्की है और इसमें सात आयात हैं।

सूरह कौष़र की तफ़्सीर

[١٠٨] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा शानिअक तेरा दुश्मन।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : (شَانِئَكَ) عَدُوُّكَ

जिससे आ़स़ बिन वाइल या अबू जहल या उ़त्बा बल्कि क़यामत तक होने वाले तमाम दुश्मनाने रसूल (ﷺ) मुराद हैं जो हमेशा अंजाम के लिहाज़ से ख़ाइब व ख़ासिर व नामुराद रहे हैं। ये सूरत मक्की है इसमें तीन आयात हैं।

4964. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) को मेअ़राज हुई तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं एक नहर के किनारे पर पहुँचा जिसके दोनों किनारों पर ख़ोलदार मोतियों के डेरे लगे हुए थे। मैंने पूछा ऐ जिब्रईल! ये नहर कैसी है? उन्होंने बताया कि ये हौज़े कौष़र है (जो अल्लाह ने आपको दिया है)

٤٩٦٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ. لَمَّا عُرِجَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى السَّمَاءِ، قَالَ: ((أَتَيْتُ عَلَى نَهَرٍ حَافَتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ مُجَوَّفٌ، فَقُلْتُ : مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ هَذَا الْكَوْثَرُ)).

4965. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद काहिली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अबू उ़बैदह ने कि मैंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से अल्लाह के इर्शाद इन्ना अअ़तयनाक अल्अख़ या'नी मैंने आपको कौष़र अ़ता किया है के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि ये (कौष़र) एक नहर है जो तुम्हारे नबी (ﷺ) को बख़्शी गई है, इसके दो किनारे हैं जिन पर ख़ोलदार मोतियों के डेरे हैं। उसके आबख़ोरे सितारों की त़रह अनगिनत हैं। इस हदीष़ की रिवायत ज़करिया और अबुल अहवस़ और मुत़र्रिफ़ ने अबू इस्हाक़ से की है।

٤٩٦٥- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ الْكَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَ : سَأَلْتُهَا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾ قَالَتْ: نَهَرٌ أُعْطِيَهُ نَبِيُّكُمْ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، شَاطِئَاهُ عَلَيْهِ دُرٌّ مُجَوَّفٌ آنِيَتُهُ كَعَدَدِ النُّجُومِ. رَوَاهُ زَكَرِيَّا وَأَبُو الأَحْوَصِ وَمُطَرِّفٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ.

4966. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कौष़र के बारे में कि वो ख़ैरे कष़ीर है जो अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (ﷺ) को दी है। अबू बिश्र ने बयान किया कि मैंने सईद बिन जुबैर से अ़र्ज़ की,

٤٩٦٦- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ فِي الْكَوْثَرِ : هُوَ الْخَيْرُ الَّذِي أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ. قَالَ أَبُو بِشْرٍ قُلْتُ لِسَعِيدِ

लोगों का तो ख़्याल है कि इससे जन्नत की एक नहर मुराद है? सईद ने कहा कि जन्नत की नहर भी उस ख़ैरे कषीर में से एक है जो अल्लाह तआला ने आँहुज़ूर (ﷺ) को दी है। (दीगर मक़ाम : 6578)

بْنِ جُبَيْرٍ : فَإِنَّ النَّاسَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُ نَهَرٌ فِي الْجَنَّةِ، فَقَالَ سَعِيدٌ : النَّهَرُ الَّذِي فِي الْجَنَّةِ مِنَ الْخَيْرِ أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ.

[طرفه في : ٦٥٧٨].

तश्रीह : सहीह मुस्लिम में ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से मन्क़ूल है कि कौषर एक नहर है जिसको अल्लाह ने मुझे अता फ़र्माया है। उमूमी तफ़्सीर लफ़्ज़ ख़ैरे कषीर से भी की गई है। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं **व क़द नक़लल्मुफ़स्सिरून फ़िल्कौषरि अक़्वालन गैर हाज़ैनि तज़ीदु अल्अश्रह** अल्अख़ या'नी मुफ़स्सिरीन ने कौषर की तफ़्सीर में दस से भी ज़्यादा क़ौल नक़ल किये हैं नुबुव्वत, क़ुर्आन, इस्लाम, तौहीद, कषरत, इत्तिबाअ, ईषार, रफ़्अे ज़िक्र, नूरे क़ल्ब, शफ़ाअत, मुअजिज़ात, इजाबते दुआ, फ़िक्ह फ़िद्दीन, सल्वातुल ख़म्स इन सबको कौषर की तफ़्सीर में नक़ल किया गया है। हक़ीक़त में इससे हौज़े कौषर मुराद है और ज़िम्नी तौर पर ये सारी ख़ूबियाँ जो मज़्कूर हुई हैं अल्लाह ने अपने हबीब को अता फ़र्माई हैं जिनको ख़ैरे कषीर के तहत लफ़्ज़े कौषर से ता'बीर किया जा सकता है। तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी का मुतालआ किया जाए।

सूरह काफ़िरून की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कहा गया है कि लकुम दीनुकुम से मुराद कुफ़्र है और वलियदीन से मुराद इस्लाम है दीनी नहीं कहा क्योंकि आयात का ख़त्म नून पर हुआ है। इसलिये यहाँ भी याअ को हज़्फ़ कर दिया, जैसे बोलते हैं यह्दीनि व यश्फ़ीन। औरों ने कहा कि अब न तो मैं तुम्हारे मा'बूदों की इबादत करूँगा या'नी जिन मा'बूदों की तुम इस वक़्त इबादत करते हो और न मैं तुम्हारा ये दीन अपनी बाक़ी ज़िंदगी में क़ुबूल करूँगा और न तुम मेरे मा'बूद की इबादत करोगे। इससे मुराद वो कुफ़्फ़ार हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़र्माया है वल् यज़ीदन्ना कषीरम् मिन्हुम अल आयत या'नी और जो वह्य आपके रब की तरफ़ से आप पर नाज़िल की जाती है। उनमें बहुत से लोगों को सरकशी और कुफ़्र में वो और ज़्यादा कर देती है।

ये सूरह मक्की है, इसमें छः आयतें हैं।

[١٠٩] سُورَةُ ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

يُقَالُ ﴿لَكُمْ دِينُكُمْ﴾ الْكُفْرُ. ﴿وَلِيَ دِينِ﴾ الإِسْلاَمُ. وَلَمْ يَقُلْ دِينِي لأَنَّ الآيَاتِ بِالنُّونِ فَحُذِفَتِ الْيَاءُ كَمَا قَالَ يَهْدِينِ وَيَشْفِينِ. وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿لاَ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ﴾ الآنَ : وَلاَ أُجِيبُكُمْ فِيمَا بَقِيَ مِنْ عُمْرِي ﴿وَلاَ أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ﴾ وهم الَّذِينَ قَالَ : ﴿وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا﴾.

सूरह नस्र की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

[١١٠] سُورَةُ ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बाब 1 :

١ - باب

4967. हमसे हसन बिन रबीअ ने बयान किया, कहा हमसे

٤٩٦٧ - حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ،

حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا صَلَّى النَّبِيُّ ﷺ صَلاَةً بَعْدَ أَنْ نَزَلَتْ عَلَيْهِ ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ إِلاَّ يَقُولُ فِيهَا: ((سُبْحَانَكَ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي)).

[راجع: ٧٩٤]

अबुल अहवस़ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत इज़ा जाअ नस़्रुल्लाह या'नी जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ पहुँची, जबसे नाज़िल हुई थी तो रसूले करीम (ﷺ) ने कोई नमाज़ ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें आप ये दुआ न करते हों। सुब्हानकल्लाहुम्मा रब्बना वबिहम्दिक अल्लाहुम् मग़्फ़िरली या'नी, पाक है तेरी ज़ात ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! और तेरे ही लिये ता'रीफ़ है। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दे। (राजेअ: 794)

ये सूरत मदनी है इसमे तीन आयात हैं। ये सूरत यौमुन् नह़र को ह़ज्जतुल वदाअ के मौक़े पर मिना में नाज़िल हुई। इस सूरत के नाज़िल होने के बाद रसूले करीम (ﷺ) इकयासी दिन ज़िन्दा रहे। (फ़त्हुल बारी)

٢- باب

बाब 2 :

٤٩٦٨- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ: ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي)) يَتَأَوَّلُ الْقُرْآنَ.

[راجع: ٧٩٤]

4968. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू ज़ुहा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) (सूरह फ़तह नाज़िल होने के बाद) अपने रुकूअ और सज्दों में बकष़रत ये दुआ पढ़ते थे सुब्हान-कल्लाहुम्मा रब्बना अल्अख़ या'नी, पाक है तेरी ज़ात, ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा दे। क़ुर्आन मजीद के हुक्मे मज़्कूर पर इस तरह आप अमल करते थे। (राजेअ: 794)

तश्रीह़ : अब मसनून यही है कि रुकूअ और सज्दा में यही दुआ पढ़ी जाए जैसा कि अहले ह़दीष़ का अ़मल है या'नी **सुब्हानक अल्लाहुम्म रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्फ़िर्ली** गो दूसरी माषूर दुआओं का पढ़ना जाइज़ है।

٣- باب قوله ﴿وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللهِ أَفْوَاجًا﴾

बाब 3 : 'व रअयतन्नास' की तफ़्सीर या'नी,

और आप अल्लाह के दीन में लोगों को जोक़ दर जोक़ दाख़िल होते हुए ख़ुद देख रहे हैं।

٤٩٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سَأَلَهُمْ عَنْ

4969. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे सुफ़ियान ष़ौरी ने, उनसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बूढ़े बद्री स़ह़ाबा से अल्लाह तआ़ला के इर्शाद इज़ा जा अ

नस्रुल्लाह या'नी जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ पहुँची के बारे में पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि इससे इशारा बहुत से शहरों और मुल्कों के फ़तह होने की तरफ़ है। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा इब्ने अब्बास (रज़ि.) तुम्हारा क्या ख़याल है? हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया कि इसमें आप (ﷺ) की वफ़ात की ख़बर या एक मिषाल है गोया आप (ﷺ) की मौत की आप (ﷺ) को ख़बर दी गई है। (राजेअ : 3627)

قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ قَالُوا : فَتْحُ الْمَدَائِنِ وَالْقُصُورِ، قَالَ : مَا تَقُولُ يَا ابْنَ عَبَّاسٍ؟ قَالَ : أَجَلٌ، أَوْ مَثَلٌ ضُرِبَ لِمُحَمَّدٍ ﷺ، نُعِيَتْ لَهُ نَفْسُهُ.

[راجع: ٣٦٢٧]

बाब 4 : आयत 'फसब्बिह़ बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर्हु अल्आय:.....' की तफ़्सीर या'नी,

٤- باب قَوْلِهِ : ﴿فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا﴾

ऐ नबी! अब तुम अपने रब की ह़म्दो षना बयान किया करो और उससे बख़्शिश चाहो बेशक वो बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है। तव्वाब के मा'नी बन्दों की तौबा क़ुबूल करने वाला। आदमियों में तव्वाब उसे कहेंगे जो गुनाह से तौबा करे।

تَوَّابٌ عَلَى الْعِبَادِ، وَالتَّوَّابُ مِنَ النَّاسِ التَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ

4970. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मुझे बूढ़े बद्री सहाबा के साथ मजलिस में बिठाते थे। कुछ (अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ रज़ि) को इस पर ए'तिराज़ हुआ, उन्होंने ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से कहा कि उसे आप मजलिस में हमारे साथ बिठाते हैं, उसके जैसे तो हमारे भी बच्चे हैं? ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि इसकी वजह तुम्हें मा'लूम है। फिर उन्होंने एक दिन इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को बुलाया और उन्हें बूढ़े बद्री सहाबा के साथ बिठाया (इब्ने अ़ब्बास रज़ि. ने कहा कि) मैं समझ गया कि आपने आज मुझे उन्हें दिखाने के लिये बुलाया है, फिर उनसे पूछा अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि अल्अख़ या'नी जब अल्लाह की मदद और फ़तह हासिल हुई तो अल्लाह की ह़म्द और उससे इस्तिग़्फ़ार का हमे आयत में हुक्म दिया गया है। कुछ लोग ख़ामोश रहे और कोई जवाब नहीं दिया। फिर आपने मुझसे पूछा इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)! क्या तुम्हारा भी यही ख़याल है? मैंने अ़र्ज़ किया कि नहीं। पूछा फिर तुम्हारी क्या राय है? मैंने अ़र्ज़ किया

٤٩٧٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : كَانَ عُمَرُ يُدْخِلُنِي مَعَ أَشْيَاخِ بَدْرٍ، فَكَأَنَّ بَعْضَهُمْ وَجَدَ فِي نَفْسِهِ فَقَالَ : لِمَ تُدْخِلُ هَذَا مَعَنَا وَلَنَا أَبْنَاءٌ مِثْلُهُ؟ فَقَالَ عُمَرُ : إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ عَلِمْتُمْ؟ فَدَعَا ذَاتَ يَوْمٍ فَأَدْخَلَهُ مَعَهُمْ فَمَا رُئِيتُ أَنَّهُ دَعَانِي يَوْمَئِذٍ إِلاَّ لِيُرِيَهُمْ. قَالَ: مَا تَقُولُونَ فِي قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَقَالَ بَعْضُهُمْ : أُمِرْنَا نَحْمَدُ اللهَ وَنَسْتَغْفِرُهُ إِذَا نُصِرْنَا وَفُتِحَ عَلَيْنَا، وَسَكَتَ بَعْضُهُمْ فَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا. فَقَالَ لِي : أَكَذَاكَ تَقُولُ يَا ابْنَ عَبَّاسٍ؟ فَقُلْتُ لاَ قَالَ فَمَا تَقُولُ؟ قُلْتُ : هُوَ أَجَلُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْلَمَهُ

لَهُ، قَالَ : ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ وَذَلِكَ عَلاَمَةُ أَجَلِكَ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا. فَقَالَ عُمَرُ: مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَقُولُ.

[راجع: ٣٦٢٧]

कि उसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात की त़रफ़ इशारा है। अल्लाह तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को यही चीज़ बताई है और फ़र्माया कि जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ पहुँची, या'नी फिर ये आपकी वफ़ात की अ़लामत है, इसलिये आप अपने परवरदिगार की पाकी व ता'रीफ़ बयान कीजिए और उससे बख़्शिश मांगा कीजिए। बेशक वो बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उस पर कहा मैं भी वही जानता हूँ जो तुमने कहा। (राजेअ़ : 3627)

तश्रीह़ : दूसरी रिवायत में है उसके बाद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने लोगों से कहा अब तुम मुझको क्या मलामत करते हो अगर मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को तुम्हारे बराबर जगह दी और तुम्हारे साथ बुलाया। इस ह़दीष़ से ये निकला कि अहले फ़ज़्ल और अहले इल्म क़ाबिले ता'ज़ीम हैं गो उनकी उ़म्र कम हो और ये भी ष़ाबित हुआ कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) इल्म के बड़े क़द्रदान थे और हर एक बादशाह या ख़लीफ़ा को इल्म की क़द्रदानी और आ़लिमों की ता'ज़ीम और तकरीम ज़रूरी है। अफ़सोस मुसलमान जो तबाह हुए और ग़ैर क़ौमों के दस्ते निगराँ बन गये वो जिहालात और कम इल्मी ही की वजह से और इस क़द्र तबाही पर अब भी मुसलमान उमरा इल्म की त़रफ़ मुतवज्जह नहीं हुए बल्कि जाहिलों और बेवक़ूफ़ों को अपनी मुस़ाहिब बनाते हैं। आ़लिम की सुह़बत से घबराते हैं। **ला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह** (वह़ीदी)

١١١ – سُورَةُ ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ﴾

सूरह लहब की तफ़्सीर

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

تَبَابٌ خُسْرَانٌ. تَتْبِيبٌ تَدْمِيرٌ.

तबाब के मा'नी तबाही टूटा तत्बीब के मा'नी तबाह करना।

ये सूरत मक्की है इसमें 5 आयात हैं।

١ – باب

बाब 1 :

٤٩٧١ – حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الأَقْرَبِينَ، وَرَهْطَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ﴾ خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى صَعِدَ الصَّفَا فَهَتَفَ ((يَا صَبَاحَاهُ)) فَقَالُوا : مَنْ هَذَا فَاجْتَمَعُوا إِلَيْهِ، فَقَالَ:

4971. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई। आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये और अपने गिरोह के उन लोगों को डराओ जो मुख़्लिस़ीन हैं, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) स़फ़ा पहाड़ी पर चढ़ गये और पुकारा या स़बाह़ाह क़ुरैश ने कहा ये कौन है? फिर वहाँ सब आकर जमा हो गये, आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर मैं तुम्हे बताऊँ कि एक लश्कर इस पहाड़

((أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخْبَرْتُكُمْ، أَنَّ خَيْلاً تَخْرُجُ مِنْ سَفْحِ هَذَا الْجَبَلِ أَكُنْتُمْ مُصَدِّقِيَّ))؟ قَالُوا مَا جَرَّبْنَا عَلَيْكَ كَذِبًا. قَالَ : ((فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ)). قَالَ أَبُو لَهَبٍ : تَبًّا لَكَ، مَا جَمَعْتَنَا إِلاَّ لِهَذَا؟ ثُمَّ قَامَ. فَنَزَلَتْ ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ﴾ وَقَدْ تَبَّ. هَكَذَا قَرَأَهَا الأَعْمَشُ يَوْمَئِذٍ.

[راجع: ١٣٩٤]

के पीछे से आने वाला है, तो क्या तुम मुझको सच्चा नहीं समझोगे? उन्होंने कहा कि हमें झूठ का आपसे तजुर्बा कभी भी नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर मैं तुम्हें उस सख़्त अ़ज़ाब से डराता हूँ जो तुम्हारे सामने आ रहा है। ये सुनकर अबू लहब बोला तू तबाह हो गया तूने हमें इसीलिये जमा किया था? फिर आँहज़रत (ﷺ) वहाँ से चले आए और आप पर ये सूरत नाज़िल हुई। तब्बत यदा अबी लहबिंव् व तब्ब अल्अख़ या'नी दोनों हाथ टूट गये अबू लहब के और वो बर्बाद हो गया। आ'मश ने यूँ पढ़ा वक़द् तब्ब जिस दिन ये ह़दीष़ रिवायत की। (राजेअ़ : 1394)

तश्रीह : दुश्मन के ह़मले के ख़त़रे के वक़्त अपनी क़ौम को तम्बीह करने के लिये अहले अ़रब लफ़्ज़ या स़बाह़ाह के साथ पुकारा करते थे। आँह़ज़रत (ﷺ) को भी उनके कुफ़्र व शिर्क और जिहालत के ख़िलाफ़ उन्हें तम्बीह करना और डराना था। इसलिये आपने उन्हें इस त़रह़ पुकारा जिस त़रह़ दुश्मन के ख़त़रे के वक़्त पुकारा जाता था।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत **व अन्ज़िर अशीरतकल्अक़्रबीन** के साथ लफ़्ज़े **व रहतुकल्मुख्लिस़ीन** भी ज़्यादा किये हैं लेकिन जुम्हूर ने इस आयत को नहीं पढ़ा। इसीलिये ये मस्ह़फ़े उ़ष्मानी में भी नहीं लिखी गई। शायद इसकी तिलावत मन्सूख़ हो गई जिसका इ़ल्म ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को न हो सका हो। क़द का लफ़्ज़ क़ुर्आन शरीफ़ में नहीं है। आ'मश ने ये अपने त़ौर पर कहा कि अल्लाह ने जो ख़बर दी थी वो पूरी हो गई और वक़द् तब्ब का यही मत़लब है।

٢- باب قَوْلُهُ ﴿وَتَبَّ مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ﴾

बाब 2 : आयत 'व तब्ब मा अग्ना अ़न्हु मालुहू अल्आयः .....' की तफ़्सीर या'नी,

वो हलाक हुआ न उसका माल उसके काम आया और न जो कुछ उसने कमाया वो काम आया।

٤٩٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ إِلَى الْبَطْحَاءِ، فَصَعِدَ إِلَى الْجَبَلِ فَنَادَى: ((يَا صَبَاحَاهُ)). فَاجْتَمَعَتْ إِلَيْهِ قُرَيْشٌ فَقَالَ : ((أَرَأَيْتُمْ إِنْ حَدَّثْتُكُمْ أَنَّ الْعَدُوَّ مُصَبِّحُكُمْ أَوْ مُمَسِّيكُمْ أَكُنْتُمْ تُصَدِّقُونِي))؟ قَالُوا: نَعَمْ، قَالَ: ((فَإِنِّي نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ

4972. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह् ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बत़ह़ा की त़रफ़ तशरीफ़ ले गये। और पहाड़ पर चढ़कर पुकारा। या स़बाह़ाह क़ुरैश उस आवाज़ पर आपके पास जमा हो गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि दुश्मन तुम पर सुबह़ के वक़्त या शाम के वक़्त ह़मला करने वाला है तो क्या तुम मेरी तस्दीक़ नहीं करोगे? उन्होंने कहा कि हाँ! ज़रूर आपकी तस्दीक़ करेंगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तो मैं तुम्हें सख़्त अ़ज़ाब से

डराता हूँ जो तुम्हारे सामने आ रहा है। अबू लहब बोला तुम तबाह हो जाओ, क्या तुमने हमें इसीलिये जमा किया था, इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की तब्बत यदा अबी लहबिव् वतब्ब, आख़िर तक। (राजेअ: 1394)

شَدِيدٍ)). فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ: أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا تَبًّا لَكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ﴾ إِلَى آخِرِهَا.[راجع: ١٣٩٤]

बाब 3 : आयत 'सयस़्ला नारन ज़ात लहब' की तफ़्सीर या'नी,

٣– باب قوله : ﴿سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ﴾.

अ़न्क़रीब वो भड़कती हुई आग मे दाख़िल होगा।

4973. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू लहब ने कहा था कि तू तबाह हो, क्या तूने हमें इसीलिये जमा किया था? इस पर आयत तब्बत यदा अबी लहब नाज़िल हुई। (राजेअ: 1394)

٤٩٧٣ ـ دَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا شُ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ ابو لَهَبٍ : تَبًّا لَكَ أَلِهَذَا جَمَعْتَنَا فَنَزَلَتْ ﴿تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ﴾.

[راجع: ١٣٩٤]

बाब 4 : आयत 'वम्रातुहू ह़म्मालतल्ह़तब ......' की तफ़्सीर या'नी,

٤– باب ﴿وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ﴾

अ़न्क़रीब वो भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा और उसकी बीवी भी जो लकड़ियाँ का गट्ठा उठाने वाली है। मुजाहिद ने कहा ह़म्मा लतल ह़तब चुग़लख़ोर। फ़ी जीदिहा ह़ब्लुम् मिम् मसद कहते हैं मसद से मुराद गूगल के पेड़ की छाल है कुछ ने कहा दोज़ख़ की रस्सी मुराद है।

وَقَالَ مُجَاهِدٌ : حَمَّالَةَ الْحَطَبِ تَمْشِي بِالنَّمِيمَةِ. ﴿فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ﴾ يُقَالُ: مِنْ مَسَدٍ لِيفِ الْمُقْلِ وَهِيَ السِّلْسِلَةُ الَّتِي فِي النَّارِ.

तश्रीह़ : आयते शरीफ़ा **फ़ी जीदिहा ह़ब्लुम् मिम् मसद** (सूरह लहब : 5) के ज़ेल मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम का नोट ये है जो उसके मुँह में घुसाकर दुबुर की त़रफ़ से निकालेंगे। ये औ़रत आँह़ज़रत (ﷺ) की बड़ी दुश्मन थी मरदूद फ़साद कराती फिरती। आपकी चुग़लियाँ खाती लोगों में लड़ाई डलवाती आख़िर उसका अंजाम ये हुआ कि लकड़ी का गट्ठा सर पर लादे ला रही थी रास्ते में थककर एक पत्थर पर बैठी। फ़रिश्ते ने आकर वो रस्सी जिससे गट्ठा बाँधती थी और उसकी गर्दन में पड़ी थी पीछे से ज़ोर से खींची कमबख़्त दम घुटकर मर गई। **ख़सिरहुनिया वल आख़िरा।**

अल्लाह तआला के फ़र्मान 'क़ुल हुवल्लाहु अह़द' की तफ़्सीर

[١١٢] سُورَةُ ﴿ص أَحَدٌ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कहा गया है कि अह़द पर तन्वीन नहीं पढ़ी जाती बल्कि दाल को साकिन ही पढ़ना चाहिये। अह़द के मा'नी वो एक है।

يُقَالُ : لاَ يُنَوَّنُ ﴿أَحَدٌ﴾ أَيْ وَاحِدٌ.

ये सूरह मक्की है और इसमें चार आयात हैं। इसे सूरतुल-इख़्लास कहा गया है।

٤٩٧٤- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. قَالَ: قَالَ اللهُ تَعَالَى: كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، وَشَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ. فَأَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ، فَقَوْلُهُ : لَنْ يُعِيدَنِي كَمَا بَدَأَنِي : وَلَيْسَ أَوَّلُ الْخَلْقِ بِأَهْوَنَ عَلَيَّ مِنْ إِعَادَتِهِ. وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ: اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا وَأَنَا الأَحَدُ الصَّمَدُ، لَمْ أَلِدْ وَلَمْ أُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لِي كُفُوًا أَحَدٌ)). [راجع: ١٣٩٣]

4974. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कहा अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मुझे इब्ने आदम ने झुठलाया ह़ालाँकि उसके लिये ये मुनासिब नहीं था मुझे उसने गाली दी ह़ालाँकि उसके लिये ये भी मुनासिब नहीं था। मुझे झुठलाना ये है कि कहता है कि मैं उसको दोबारा नहीं पैदा करूँगा ह़ालाँकि मेरे लिये दोबारा पैदा करना उसके पहली बार पैदा करने से ज़्यादा मुश्किल नहीं। उसका मुझे गाली देना ये है कि कहता है कि अल्लाह ने अपना बेटा बनाया है ह़ालाँकि मैं अकेला हूँ, बेनियाज़ हूँ न मेरी कोई औलाद है और न मैं किसी की औलाद हूँ और न कोई मेरे बराबर का है। (राजेअ : 1393)

बाब : आयत 'अल्लाहुस्समद' की तफ़्सीर

باب قَوْلُهُ : ﴿اللهُ الصَّمَدُ﴾

وَالْعَرَبُ تُسَمِّي أَشْرَافَهَا الصَّمَدَ، قَالَ أَبُو وَائِلٍ : هُوَ السَّيِّدُ الَّذِي انْتَهَى سُؤْدَدُهُ

मा'नी अल्लाह बेनियाज़ है। अरब लोग सरदार और शरीफ़ को समद कहते हैं। अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा ने कहा ह़द दर्जे सबसे बड़ा सरदार जो हो उसे समद कहते हैं।

٤٩٧٥- حدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، وَشَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذَلِكَ، أَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ، أَنْ يَقُولَ إِنِّي لَنْ أُعِيدَهُ كَمَا بَدَأْتُهُ، وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ أَنْ يَقُولَ اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا، وَأَنَا الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ أَلِدْ وَلَمْ أُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لِي كُفُوًا أَحَدٌ)). ﴿لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾ كُفُوًا

4975. हमसे इस्ह़ाक़ इब्ने मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें मअमर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया (अल्लाह पाक ने फ़र्माया है कि) इब्ने आदम ने मुझे झुठलाया ह़ालाँकि उसके लिये ये मुनासिब नहीं था। उसने मुझे गाली दी ह़ालाँकि ये उसका ह़क़ नहीं था। मुझे झुठलाना ये है कि कहता है कि मैं उसे दोबारा ज़िंदा नहीं कर सकता जैसा कि मैंने उसे पहली दफ़ा पैदा किया था। उसका गाली देना ये है कि कहता है अल्लाह ने बेटा बना लिया है ह़ालाँकि मैं बेपरवाह हूँ, मेरे यहाँ न कोई औलाद है और न मैं किसी की औलाद और न कोई मेरे बराबर का है। कुफ़ुवन और कफ़ीअन व किफ़ाउन

हम मा'नी हैं। (राजेअ : 3193)

وَكَفِيئًا وَكِفَاءً وَاحِدٌ. [راجع: ٣١٩٣]

तश्रीह : ये सूरह इख़्लास है इसमें तौहीदे ख़ालिस़ का बयान और मुश्रिकीन की तर्दीद है जो अल्लाह के साथ ग़ैरों को शरीक बनाते हैं कुछ दो ख़ुदाओं के क़ाइल हैं। कुछ अल्लाह के लिये औलाद ष़ाबित करते हैं। कुछ लोग पीरों फ़क़ीरों अंबिया व औलिया को इबादत में अल्लाह का शरीक बनाते हैं। अल्लाह ने सूरह शरीफ़ा में इन सबकी तर्दीद की है और तौहीदे ख़ालिस़ पर निशानदेही फ़र्माई है। मुश्रिकीने मक्का ने अल्लाह का नसब नामा पूछा था उनके जवाब में ये सूरह शरीफ़ा नाज़िल हुई। कुफ़्व से हमज़ात होना मुराद है।

सूरह फ़लक़ की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा कि ग़ासिक़ से रात मुराद है। इज़ा वक़ब से सूरज का डूब जाना मुराद है। फ़रक़ि और फ़लक़ के एक ही मा'नी हैं। कहते हैं ये बात फ़रक़ि सुबह या फ़लक़ि सुबह से ज़्यादा रोशन है। अरब लोग वक़ब उस वक़्त कहते हैं जब कोई चीज़ बिलकुल किसी चीज़ में घुस जाए और अंधेरा हो जाए।

[١١٣] سُورَةُ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَقَالَ مُجَاهِدٌ ﴿الْفَلَقُ﴾ الصُّبْحُ. ﴿وَغَاسِقٍ﴾ اللَّيْلُ. إِذَا وَقَبَ، غُرُوبُ الشَّمْسِ. يُقَالُ : أَبْيَنُ مِنْ فَرَقِ وَفَلَقِ الصُّبْحِ. وَقَبَ : إِذَا دَخَلَ فِي كُلِّ شَيْءٍ وَأَظْلَمَ.

ये सूरत मदनी है, इसमें 5 आयात हैं।

तश्रीह : लबीद बिन आ़सिम ने जब अपनी बेटियों से आँहज़रत (ﷺ) पर जादू कराया तो आँहज़रत (ﷺ) को ख़्वाब में दो फ़रिश्तों ने इस जादू का ह़ाल बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) के बालों और कंघी के दंदानों पर ये जादू किया गया है और ज़रवान का कुआँ जो मशहूर है वहाँ ये जादू की चीज़ें एक पत्थर के नीचे हैं जब ये चीज़ें मंगवाई गईं तो मा'लूम हुआ कि सर के बालों और एक तांत के टुकड़े में ग्यारह गिरह (गांठें) लगाई गई थीं। ग़र्ज़ उसी वक़्त ये ग्यारह आयतों की दोनों सूरतें या'नी **कुल अऊज़ु बिरब्बिल्फ़लक़** और **कुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास** नाज़िल हुईं और हर एक आयत पढ़ने के साथ ही जादू की एक गिरह खुलती गई। दोनों सूरतों के ख़त्म होते ही आपसे जादू का अष़र जाता रहा और आप (ﷺ) तंदरुस्त हो गये। (तफ़्सीरे कामिल)

4976. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ़सिम और अ़ब्दह ने, उनसे ज़र बिन हुबैश ने बयान किया, उन्होंने उबई बिन कअ़ब (रज़ि) से मुअ़वज़्ज़तैन के बारे में पूछा तो उन्होंने बयान किया कि ये मसला मैंने भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे (जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम) की ज़ुबानी कहा गया है कि यूँ कह कि अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़ अल्अख़ मैंने उसी त़रह़ कहा चुनाँचे हम भी वही कहते हैं जो रसूले करीम (ﷺ) ने कहा। (दीगर मक़ाम : 4937)

٤٩٧٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَاصِمٍ وَعَبْدَةَ عَنْ زِرِّبْنِ حُبَيْشٍ قَالَ : سَأَلْتُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ عَنِ الْمُعَوِّذَتَيْنِ فَقَالَ : سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((قِيلَ لِي)) فَقُلْتُ : فَنَحْنُ نَقُولُ كَمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ.

[طرفه في : ٤٩٣٧].

तश्रीह : हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) इन दोनों सूरतों को क़ुर्आन में दाख़िल नहीं समझते थे बल्कि कोई मुस्ह़फ़ में लिखता तो छील डालते। वो कहते ये दोनों सूरतें सिर्फ़ इसलिये उतरी हैं कि लोग बतौर तअ़व्वुज़ के पढ़ा करें और जिन लोगों ने कहा कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से ये रिवायत स़ह़ीह़ नहीं है उन्होंने ग़लती की लेकिन जुम्हूर स़ह़ाबा (रज़ि.) और ताबेईन सबका क़ौल है कि मुअ़वज़्ज़तैन क़ुर्आन में दाख़िल हैं और इस पर इज्माअ़ है और मुम्किन है कि ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) का ये मतलब हो कि गोया दोनों सूरतें कलामे इलाही हैं मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको मुस्ह़फ़ में नहीं लिखवाया इसलिये मुस्ह़फ़ में लिखना ज़रूरी नहीं। नववी (रह़) ने शरह़ मुस्लिम में कहा कि मुसलमानों ने इस पर इज्माअ़ किया कि मुअ़वज़्ज़तैन और सूरह फ़ातिह़ा क़ुर्आन में दाख़िल हैं और जो कोई क़ुर्आन से किसी जुज़्व का इंकार करे वो काफ़िर है और ह़ाफ़िज़ ने इस पर ए'तिराज़ किया (वह़ीदी)। बहरह़ाल मुस्ह़फ़े उ़स्मानी की बिना पर ये दोनों सूरतें क़ुर्आन शरीफ़ ही के ह़िस्से हैं। चौदह सौ बरस से इनकी क़ुर्आनी तिलावत होती आ रही है, इस लिह़ाज़ से उम्मत का इनके क़ुर्आन का ह़िस्सा होने पर इज्माअ़ हो चुका है। लिहाज़ा अब शक व तरद्दुद की कोई गुंजाइश नहीं है। बहुत से उ़लमा ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की त़रफ़ इस क़ौल की निस्बत ही को शुरू से ग़लत़ ठहराया है और कुछ ने कहा है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने अपने इस क़ौल से रुजूअ़ कर लिया है। ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से मुअ़वज़्ज़तैन के बारे में ये पूछा गया कि क्या ये दोनों सूरतें क़ुर्आन में दाख़िल हैं या नहीं।

सूरह नास की तफ़्सीर

[١١٤] سُورَةُ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने वस्वासु के बारे में बतलाया कि जब बच्चा पैदा होता है शैत़ान उसको कचोका लगाता है। अगर वहाँ अल्लाह का नाम लिया गया तो वो भाग जाता है वरना बच्चे के दिल पर जम जाता है।

وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ الْوَسْوَاسُ إِذَا وُلِدَ خَنَسَهُ الشَّيْطَانُ، فَإِذَا ذُكِرَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ذَهَبَ، وَإِذَا لَمْ يُذْكَرِ اللهُ ثَبَتَ عَلَى قَلْبِهِ.

ये सूरत मदनी है और इसमें छह आयतें हैं।

یہ سورة مدنی ہے اس میں چھ آیات ہیں۔

4977. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुफ़यान स़ौरी (रह़) ने बयान किया, उनसे अ़ब्दह़ बिन अबी लुबाबह़ ने बयान किया, उनसे ज़र बिन हुबैश ने (सुफ़यान ने कहा) और हमसे आ़सिम ने भी बयान किया, उनसे ज़र ने बयान किया कि मैंने उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से पूछा या अबल मुंज़िर! आपके भाई अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) तो ये कहते हैं कि सूरह मुअ़वज़्ज़तैन क़ुर्आन में दाख़िल नहीं हैं। उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस बात को पूछा था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि (जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम की ज़ुबानी) मुझसे यूँ कहा गया कि ऐसा कह और मैंने कहा। उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) ने कहा कि हम भी वही कहते हैं जैसा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था।

(राजेअ़ : 4976)

٤٩٧٧ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ أَبِي لُبَابَةَ عَنْ زِرِّ بْنِ حُبَيْشٍ ح. وَحَدَّثَنَا عَاصِمٌ عَنْ زِرٍّ قَالَ : سَأَلْتُ أُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ قُلْتُ : يَا أَبَا الْمُنْذِرِ إِنَّ أَخَاكَ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ كَذَا وَكَذَا. فَقَالَ أُبَيٌّ : سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لِي: ((قِيلَ لِي)). فَقُلْتُ. قَالَ فَنَحْنُ نَقُولُ كَمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ٤٩٧٦]

ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) की कमाले दानाई और दयानतदारी थी कि इख़्तिलाफ़ से बचने के लिये आपने सवाले

मज़्कूर के जवाब में वही लफ़्ज़ नक़ल कर दिये जो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से सुने थे इससे इशारतन ये भी ज़ाहिर हुआ कि वो इन सूरतों को अगर क़ुर्आन से जुदा जानते तो फ़ौरन कह देते, उनकी इस बारे में ख़ामोशी इस अम्र पर दाल है कि वो इनको क़ुर्आन पाक ही से समझते थे।

66. किताब फ़ज़ाइलुल क़ुर्आन

क़ुर्आन के फ़ज़ाइल का बयान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : वह्य क्यूँकर उतरी और सबसे पहले कौनसी आयत नाज़िल हुई थी? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अल मुहैमिन, अमीन के मा'नी में है। क़ुर्आन अपने से पहले की हर आसमानी किताब का अमानतदार और निगहबान है।

١ - باب كَيْفَ نُزُولُ الْوَحْيِ، وَأَوَّلُ مَا نَزَلَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ﴿الْمُهَيْمِنُ﴾ الأَمِينُ الْقُرْآنُ أَمِينٌ عَلَى كُلِّ كِتَابٍ قَبْلَهُ.

तश्रीह : क़ुर्आन मजीद के मुहमिन अमानतदार निगहबान होने का मतलब ये है कि पहली किताबों तौरात, जबूर, इंजील में जो कुछ उनके मानने वालों ने तह्रीफ़ कर डाली है क़ुर्आन मजीद उस तह्रीफ़ की निशानदेही करके अस़ल मज़्मून से आगाही बख़्शता है। एक मिष़ाल से ये बात समझ में आ जाएगी। तौरात मौजूदा का बयान है कि ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ सफ़ेद इसलिये था कि आपको हाथ मे बस़ की बीमारी लग गई थी। ये बयान बिलकुल ग़लत है क़ुर्आन मजीद ने इस ग़लतबयानी की तर्दीद करके **तख़्रूजु बैज़ाउम्मिन ग़ैरि सूइन** के अल्फ़ाज़े मुबारका में ह़क़ीक़ते ह़ाल से आगाह किया है। या'नी ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ बतौरे मुअजिज़ा सफ़ेद हो जाया करता था। उसमें कोई बीमारी नहीं लगी थी। तौरात, जबूर व इंजील की ऐसी बहुत सी मिष़ालें बयान की जा सकती हैं। इस लिहाज़ से क़ुर्आन मजीद मुहमिन या'नी सुहुफ़ साबिक़ा की अस़लियत का भी निगहबान है। वह्य नाज़िल होने की तफ़्सीलात पारा अव्वल में मुलाहिज़ा की जा सकती हैं।

4978,4979. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने बयान किया कि मुझको ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) और अ़ब्दुल्लाह और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) मक्का में दस साल रहे और क़ुर्आन नाज़िल होता रहा और मदीना में भी दस साल तक रहे और आप पर वहाँ भी क़ुर्आन नाज़िल होता रहा। (राजेअ : 4464)

٤٩٧٨، ٤٩٧٩ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانَ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ وَابْنُ عَبَّاسٍ قَالاَ: لَبِثَ النَّبِيُّ ﷺ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ، وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرَ سِنِينَ. [راجع: ٤٤٦٤]

क़ुर्आन पाक का जो ह़िस़्सा, हिजरत से पहले नाज़िल हुआ वो मक्की कहलाता है और जो हिजरत के बाद नाज़िल हुआ वो मदनी कहलाता है, इस उसूल को याद रखना ज़रूरी है।

4980. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैं ने अपने वालिद से सुना, उनसे अबू उ़ष्मान मह्दी ने बयान किया कि मुझे मा'लूम हुआ है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) नबी करीम (ﷺ) के पास आये और आपसे बात करने लगे। उस वक़्त उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ि.) आपके पास मौजूद थीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा कि जानती हो ये कौन हैं? या इसी त़रह़ के अल्फ़ाज़ आपने फ़र्माए। उम्मुल मोमिनीन ने कहा कि दह़िया कल्बी हैं। जब आप खड़े हुए ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया अल्लाह की क़सम! उस वक़्त भी मैं उन्हें दह़िया कल्बी समझती रही। आख़िर जब मैंने नबी करीम (ﷺ) का ख़ुत्बा सुना जिसमें आपने ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) के आने की ख़बर सुनाई तब मुझे ह़ाल मा'लूम हुआ या इसी त़रह़ के अल्फ़ाज़ बयान किये। मुअ़तमिर ने बयान किया कि मेरे वालिद (सुलैमान) ने कहा, मैं ने अबू उ़ष्मान मह्दी से कहा कि आपने ये ह़दीष़ किससे सुनी थी? उन्होंने बताया कि ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से। (राजेअ़ : 3633)

٤٩٨٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ سَمِعْتُ أَبِي عَنْ أَبِي عُثْمَانَ قَالَ: أُنْبِئْتُ أَنَّ جِبْرِيلَ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ وَعِنْدَهُ أُمُّ سَلَمَةَ، فَجَعَلَ يَتَحَدَّثُ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأُمِّ سَلَمَةَ : ((مَنْ هَذَا؟)) أَوْ كَمَا قَالَ. قَالَتْ : هَذَا دِحْيَةُ. فَلَمَّا قَامَ قَالَتْ: وَاللهِ مَا حَسِبْتُهُ إِلاَّ إِيَّاهُ، حَتَّى سَمِعْتُ خُطْبَةَ النَّبِيِّ ﷺ يُخْبِرُ خَبَرَ جِبْرِيلَ أَوْ كَمَا قَالَ : قَالَ أَبِي قُلْتُ لأَبِي عُثْمَانَ مِمَّنْ سَمِعْتَ هَذَا؟ قَالَ مِنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ.
[راجع: ٣٦٣٣]

दह़िया कल्बी एक ख़ूबसूरत स़ह़ाबी थे ह़ज़रत जिब्रइल (अ़लैहिस्सलाम) जब आदमी की सूरत में आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आते तो उन ही की सूरत में आया करते थे।

4981. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सअ़द मक़बरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद कैसान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी को ऐसे ऐसे मुअजिज़ात अ़त़ा किये गये हैं कि (उन्हें देखकर) उन पर ईमान लाए (बाद के ज़माने में उनका कोई अष़र नहीं रहा) और मुझे जो मुअजिज़ा दिया गया है वो वह़्य (क़ुर्आन) है जो अल्लाह तआ़ला ने मुझ पर नाज़िल की है (इसका अष़र क़यामत तक बाक़ी रहेगा) इसलिये मुझे उम्मीद है कि क़यामत के दिन मेरे ताबेअ़ फ़र्मान लोग दूसरे पैग़म्बरों के ताबेअ़ फ़र्मानों से ज़्यादा होंगे। (दीगर मक़ाम : 7274)

٤٩٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ الْمَقْبُرِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا مِنَ الأَنْبِيَاءِ نَبِيٌّ إِلاَّ أُعْطِيَ مَا مِثْلُهُ آمَنَ عَلَيْهِ الْبَشَرُ، وَإِنَّمَا كَانَ الَّذِي أُوتِيتُهُ وَحْيًا أَوْحَاهُ اللهُ إِلَيَّ، فَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ أَكْثَرَهُمْ تَابِعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ)). [طرفه في : ٧٢٧٤].

तश्रीह : अल्लाह तआ़ला ने हर ज़माने में जिस क़िस्म के मुअजिज़े की ज़रूरत होती थी ऐसा मुअजिज़ा पैग़म्बर को दिया। ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) के ज़माने में इल्मे सह़र (जादू) का बहुत रिवाज था उनको ऐसा मुअजिज़ा दिया कि सारे जादूगर हार मान गये दम बख़ुद रह गये। ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के ज़माने में तिब्ब का रिवाज था। उनको ऐसे मुअजिज़े

दिये कि किसी तबीब के बाप से भी ऐसे इलाज मुम्किन नहीं। हमारे हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के ज़माने में फ़साहत, बलाग़त, श'र व शाइरी के दुआओं का बड़ा चर्चा था तो आपको कुर्आन मजीद का ऐसा अ़ज़ीम मुअजिज़ा दिया गया कि सारे ज़माने के फ़सीह व बलीग़ लोग उसका लोहा मान गये और एक छोटी सी सूरत भी कुर्आन की तरह न बना सके। इस ह़दीष़ का मतलब ये है कि दूसरे पैग़म्बरों के मुअजिज़े तो जिन लोगों ने देखे थे उन्होंने ही देखे वो ईमान लाए बाद वालों पर उनका अष़र नहीं रहा। गो माँ–बाप और अगले बुज़ुर्गों की तक़्लीद से कुछ लोग उनके तरीक़ पर क़ायम रहें मगर अपने अपने ज़माने में वो मुअजिज़ों को एक अफ़साना से ज़्यादा ख़्याल नहीं करते और मेरा मुअजिज़ा कुर्आन हमेशा बाक़ी है वो हर ज़माना और हर वक़्त में ताज़ा है और जितना उसमें ग़ौर करते जाओ लुत्फ़ ज़्यादा हो जाता है। उसके नकात और फ़वाइद ला इंतिहा हैं जो क़यामत तक लोग निकालते रहेंगे। इस लिहाज़ से मेरे पैरो लोग हमेशा क़ायम रहेंगे और मेरा मुअजिज़ा कुर्आन भी हमेशा मौजूद रहेगा।

٤٩٨٢– حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ اللهَ تَعَالَى تَابَعَ عَلَى رَسُولِهِ ﷺ الْوَحْيَ قَبْلَ وَفَاتِهِ حَتَّى تَوَفَّاهُ أَكْثَرَ مَا كَانَ الْوَحْيُ، ثُمَّ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَعْدُ.

4982. हमसे अ़म्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद (इब्राहीम बिन सअ़द) ने, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अल्लाह तआ़ला नबी करीम (ﷺ) पर पे दर पे वह्य उतारता रहा और आपकी वफ़ात के क़रीबी ज़माने में तो बहुत वह्य उतरी फिर उसकेबाद आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई।

तश्रीह : मतलब ये है कि इब्तिदाई ज़मान-ए-नुबुव्वत मे तो सूरह इक़्रा उतरकर फिर एक मुद्दत तक वह्य मौक़ूफ़ रही उसके बाद बराबर पे दर पे उतरती रही फिर जब आप मदीना में तशरीफ़ लाए तो आपकी उ़म्र के आख़िरी ह़िस्से में बहुत कुर्आन उतरा क्योंकि इस्लामी फ़ुतूह़ात का सिलसिला बढ़ गया। मामलात और मुक़द्दमाते नुबुव्वत होने लगे तो कुर्आन भी ज़्यादा उतरा।

٤٩٨٣– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ جُنْدُبًا يَقُولُ: اشْتَكَى النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ يَقُمْ لَيْلَةً أَوْ لَيْلَتَيْنِ، فَأَتَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: يَا مُحَمَّدُ مَا أُرَى شَيْطَانَكَ إِلاَّ قَدْ تَرَكَكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿وَالضُّحَى وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَى، مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى﴾.

[راجع: ١١٢٤]

4983. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने, कहा कि मैंने जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) बीमार पड़े और एक या दो रातों में (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) न उठ सके तो एक औ़रत (औ़राअ बिन्ते रब अबू लहब की बीवी) आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आई और कहने लगी मुह़म्मद (ﷺ)! मेरा ख़्याल है कि तुम्हारे शैत़ान ने तुम्हें छोड़ दिया है। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की वज़्ज़ुह़ा अल्अख़ क़सम है दिन की रोशनी की और रात की जब वो क़रार पकड़े कि आपके परवरदिगार ने न आपको छोड़ा है और न वो आपसे ख़फ़ा हुआ है। (राजेअ़ : 1124)

٢– باب نَزَلَ الْقُرْآنُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ وَالْعَرَبِ ﴿قُرْآنًا عَرَبِيًّا﴾ ﴿بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ﴾

बाब 2 : कुर्आन मजीद कुरैश और अ़रब के मुहावरा में नाज़िल हुआ

(अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़र्माया है) कुर्आना अ़रबिय्या या'नी

क़ुर्आन वाज़ेह़ अरबी ज़ुबान में नाज़िल हुआ है।

4984. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने और उन्हें ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने ज़ैद बिन ष़ाबित, सईद बिन आ़स़, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ारिष़ बिन हिशाम (रज़ि.) को हुक्म दिया कि क़ुर्आन मजीद को किताबी शक्ल में लिखें और फ़र्माया कि अगर क़ुर्आन के किसी मुहावरे में तुम्हारा ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) से इख़्तिलाफ़ हो तो इस लफ़्ज़ को क़ुरैश के मुहावरे के मुत़ाबिक़ लिखो, क्योंकि क़ुर्आन उन ही के मुहावरे पर नाज़िल हुआ है चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया। (राजेअ़: 3506)

٤٩٨٤- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَأَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ قَالَ فَأَمَرَ عُثْمَانُ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ وَسَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ أَنْ يَنْسَخُوهَا فِي الْمَصَاحِفِ، وَقَالَ لَهُمْ : إِذَا اخْتَلَفْتُمْ أَنْتُمْ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ فِي عَرَبِيَّةٍ مِنْ عَرَبِيَّةِ الْقُرْآنِ، فَاكْتُبُوهَا بِلِسَانِ قُرَيْشٍ، فَإِنَّ الْقُرْآنَ أُنْزِلَ بِلِسَانِهِمْ، فَفَعَلُوا. [راجع: ٣٥٠٦]

ह़दीष़े बाला में लफ़्ज़ व अख़्बरनी अनस बिन मालिक की जगह कुछ नुस्ख़ों में फ़अख़्बरनी है ये ह़दीष़ मुख़्तस़र है पूरी ह़दीष़ आइन्दा बाब में आएगी इस वाव अ़त़्फ़ का मतलब मा'लूम हो जाएगा।

4985. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह़्या ने बयान किया, हमसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने बयान किया (दूसरी सनद) और (मेरे वालिद) मुसद्दद बिन ज़ैद ने बयान किया कि हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा मुझको अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने ख़बर दी, कहा कि मुझे स़फ़्वान बिन यअ़ला बिन उमय्या ने ख़बर दी कि (मेरे वालिद) यअ़ला कहा करते थे कि काश! मैं रसूले करीम (ﷺ) को उस वक़्त देखता जब आप पर वह़्य नाज़िल होती हो। चुनाँचे जब आप मुक़ामे जिअ़राना में ठहरे हुए थे। आपके ऊपर कपड़े से साया कर दिया गया था और आपके साथ आपके चंद स़ह़ाबा मौजूद थे कि एक शख़्स़ जो ख़ुश्बू मे बसा हुआ था, आया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसे शख़्स़ के बारे में क्या फ़त्वा है। जिसने ख़ुश्बू में बसा हुआ एक जुब्बा पहनकर एह़राम बाँधा हो। थोड़ी देर के लिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने देखा और फिर आप पर वह़्य आना शुरू हो गई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत यअ़ला (रज़ि.) को इशारा से बुलाया। यअ़ला आए और अपना सर (उस कपड़े के जिससे आँह़ज़रत ﷺ के लिये साया किया गया था) अंदर कर लिया, आँह़ज़रत (ﷺ) का चेहरा उस वक़्त सुर्ख़ हो रहा था और आप तेज़ी से सांस ले रहे थे, थोड़ी देर तक यही

٤٩٨٥- حدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ حَدَّثَنَا عَطَاءٌ ح. وَقَالَ مُسَدَّدٌ: حَدَّثَنَا يَحْيَى سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، قَالَ : أَخْبَرَنِي صَفْوَانُ بْنُ يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ أَنَّ يَعْلَى كَانَ يَقُولُ: لَيْتَنِي أَرَى رَسُولَ اللهِ حِينَ يَنْزِلُ عَلَيْهِ الْوَحْيُ، فَلَمَّا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْجِعِرَّانَةِ وَعَلَيْهِ ثَوْبٌ قَدْ أُظِلَّ عَلَيْهِ وَمَعَهُ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، إِذَا جَاءَهُ رَجُلٌ مُتَضَمِّخٌ بِطِيبٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ تَرَى فِي رَجُلٍ أَحْرَمَ فِي جُبَّةٍ بَعْدَمَا تَضَمَّخَ بِطِيبٍ، فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ سَاعَةً فَجَاءَهُ الْوَحْيُ، فَأَشَارَ عُمَرُ إِلَى يَعْلَى أَنْ تَعَالَ، فَجَاءَ يَعْلَى فَأَدْخَلَ رَأْسَهُ، فَإِذَا هُوَ مُحْمَرُّ الْوَجْهِ وَيَغِطُّ كَذَلِكَ سَاعَةً، ثُمَّ سُرِّيَ عَنْهُ فَقَالَ : ((أَيْنَ الَّذِي

يسألني عن العُمْرَةِ انِفًا))؟ فَالْتُمِسَ الرَّجُلُ فَجِيءَ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((أَمَّا الطِّيبُ الَّذِي بِكَ فَاغْسِلْهُ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، وَأَمَّا الْجُبَّةُ فَانْزِعْهَا، ثُمَّ اصْنَعْ فِي عُمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فِي حَجِّكَ)).[راجع: ١٥٣٦]

कैफ़ियत रही। फिर ये कैफ़ियत दूर हो गई और आपने दरयाफ़्त फ़र्माया कि जिसने अभी मुझसे इम्रा के बारे में फ़त्वा पूछा था वो कहाँ है? उस शख़्स को तलाश करके आपके पास लाया गया। आप (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, जो ख़ुश्बू तुम्हारे बदन या कपड़े पर लगी हुई है उसको तीन मर्तबा धो लो और जुब्बा को उतार दो फिर इमरह में भी इसी तरह करो जिस तरह हज्ज में करते हो। (राजेअ : 1536)

तश्रीह : अकष़र उलमा ने कहा है कि ये ह़दीष़ इस बाब से ता'ल्लुक़ नहीं रखती बल्कि अगले बाब के बारे में है और शायद कातिब ने ग़लती से यहाँ उसे दर्ज कर दिया है। कुछ ने कहा इस बाब में ये ह़दीष़ इसलिये लाए कि ह़दीष़ भी क़ुर्आन की तरह वह्य है और वो भी क़ुरैश के मुहावरे पर उतरी है। ये ह़दीष़ किताबुल ह़ज्ज मे भी गुज़र चुकी है। ख़ुश्बू के बारे में ये हुक्म बाद मे मन्सूख़ हो गया है।

٣- باب جَمْعِ الْقُرْآنِ

बाब 3 : क़ुर्आन मजीद के जमा करने का बयान

٤٩٨٦- حدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ بْنِ السَّبَّاقِ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ مَقْتَلَ أَهْلِ الْيَمَامَةِ، فَإِذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عِنْدَهُ، قَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : إِنَّ عُمَرَ أَتَانِي فَقَالَ : إِنَّ الْقَتْلَ قَدِ اسْتَحَرَّ يَوْمَ الْيَمَامَةِ بِقُرَّاءِ الْقُرْآنِ، وَإِنِّي أَخْشَى أَنْ يَسْتَحِرَّ الْقَتْلُ بِالْقُرَّاءِ بِالْمَوَاطِنِ فَيَذْهَبَ كَثِيرٌ مِنَ الْقُرْآنِ وَإِنِّي أَرَى أَنْ تَأْمُرَ بِجَمْعِ الْقُرْآنِ. قُلْتُ لِعُمَرَ: كَيْفَ تَفْعَلُ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ؟ قَالَ عُمَرُ: هَذَا وَاللهِ خَيْرٌ. فَلَمْ يَزَلْ عُمَرُ يُرَاجِعُنِي حَتَّى شَرَحَ اللهُ صَدْرِي لِذَلِكَ وَرَأَيْتُ فِي ذَلِكَ الَّذِي رَأَى عُمَرُ قَالَ زَيْدٌ قَالَ أَبُو بَكْرٍ : إِنَّكَ رَجُلٌ شَابٌّ عَاقِلٌ لاَ

4986. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उबैद बिन सब्बाक़ ने और उनसे ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे यमामा में (स़ह़ाबा की बहुत बड़ी ता'दाद के) शहीद हो जाने के बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे बुला भेजा। उस वक़्त ह़ज़रत उमर (रज़ि.) भी उनके पास ही मौजूद थे। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि उमर (रज़ि.) मेरे पास आए और उन्हों ने कहा कि यमामा की जंग में बहुत बड़ी ता'दाद में क़ुर्आन के क़ारियों की शहादत हो गई है और मुझे डर है कि उसी तरह कुफ्फ़ार के साथ दूसरी जंगों में भी क़ुर्राअे क़ुर्आन बड़ी ता'दाद में क़त्ल हो जाएँगे और यूँ क़ुर्आन के जानने वालों की बहुत बड़ी ता'दाद ख़त्म हो जाएगी। इसलिये मेरा ख़्याल है कि आप क़ुर्आन मजीद को (बाक़ायदा किताबी शक्ल में) जमा करने का हुक्म दे दें। मैंने ह़ज़रत उमर (रज़ि.) से कहा कि आप एक ऐसा काम किस तरह करेंगे जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (अपनी ज़िंदगी में) नहीं किया? ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने उसका ये जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम ये तो एक कारे ख़ैर है। उमर (रज़ि.) ये बात मुझसे बार बार कहते रहे। आख़िर अल्लाह तआला ने इस मसले में मेरा भी सीना खोल दिया और अब मेरी भी वही राय हो गई जो ह़ज़रत उमर (रज़ि.) की थी। ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा

تتهمك، وقد كنت تكتب الوحي لرسول الله ﷺ، فتتبع القرآن فاجمعه. فو الله لو كلفوني نقل جبل من الجبال ما كان أثقل علي مما أمرني به من جمع القرآن. قلت كيف تفعلون شيئا لم يفعله رسول الله؟ قال: هو والله خير. فلم يزل أبوبكر يراجعني حتى شرح الله صدري للذي شرح له صدر أبي بكر وعمر رضي الله عنهما. فتتبعت القرآن أجمعه من العسب واللخاف وصدور الرجال، حتى وجدت آخر سورة التوبة مع أبي خزيمة الأنصاري لم أجدها مع أحد غيره ﴿لقد جاءكم رسول من أنفسكم عزيز عليه ما عنتم﴾ حتى خاتمة براءة، فكانت الصحف عند أبي بكر حتى توفاه الله، ثم عند عمر حياته، ثم عند حفصة بنت عمر رضي الله عنه.

[راجع: ٢٨٠٧]

आप (ज़ैद रज़ि) जवान और अक़्लमंद हैं, आपको मामला में मुन्तहम भी नहीं किया जा सकता और आप रसूलुल्लाह (ﷺ) की वह्य लिखते भी थे, इसलिये आप क़ुर्आन मजीद को पूरी तलाश और मेहनत के साथ एक जगह जमा कर दें। अल्लाह की क़सम! अगर ये लोग मुझे किसी पहाड़ को भी उसकी जगह से दूसरी जगह हटाने के लिये कहते तो मेरे लिये ये काम भी उतना मुश्किल नहीं था जितना कि उनका ये हुक्म कि मैं क़ुर्आन मजीद को जमा कर दूँ। मैंने उस पर कहा कि आप लोग एक ऐसे काम को करने की हिम्मत कैसे करते हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुद नहीं किया था। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! ये एक अमले ख़ैर है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ये जुम्ला बराबर दोहराते रहे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मेरा भी उनकी और उमर (रज़ि.) की तरह सीना खोल दिया। चुनाँचे मैंने क़ुर्आन मजीद (जो मुख़्तलिफ़ चीज़ों पर लिखा हुआ मौजूद था) की तलाश शुरू कर दी और क़ुर्आन मजीद को खजूर की छिली हुई शाख़ों, पतले पत्थरों से, (जिन पर क़ुर्आन मजीद लिखा गया था) और लोगों के सीनों की मदद से जमा करने लगा। सूरह तौबा की आख़िरी आयतें मुझे अबू ख़ुज़ैमा अंसारी (रज़ि.) के पास लिखी हुई मिलीं, ये चंद आयात मक्तूब शक्ल में उनके सिवा और किसी के पास नहीं थीं लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अलैहि मा अनित्तुम से सूरह बराअत (तौबा) के ख़ात्मे तक। जमा के बाद क़ुर्आन मजीद के ये सहीफ़े हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास महफ़ूज़ थे। फिर उनकी वफ़ात के बाद हज़रत उमर (रज़ि.) ने जब तक वो ज़िंदा रहे अपने साथ रखा फिर वो उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा बिन्ते उमर (रज़ि.) के पास महफ़ूज़ रहे। (राजेअ : 2807)

तश्रीह : क़ुर्आन आँहज़रत (ﷺ) के अहद में मुतफ़र्रिक़ अलग अलग सहीफ़ों, वरक़ों, हड्डियों पर लिखा हुआ था। मगर सारा क़ुर्आन एक जगह एक मुस्हफ़ में नहीं जमा हुआ था। अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में एक जगह जमा किया गया। हज़रत उष्मान (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में इसकी नक़लें मुरत्तब होकर तमाम मुल्कों में भेजी गईं। ग़र्ज़ ये क़ुर्आन सारा का सारा लिखा हुआ आँहज़रत (ﷺ) के अहद में भी मौजूद था। मगर मुतफ़र्रिक़ अलग अलग किसी के पास एक टुकड़ा किसी के पास दूसरा टुकड़ा और सूरतों में भी कोई तर्तीब न थी। ये तर्तीब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में की गई। इस रिवायत से ये भी निकला कि सहाबा बिदअत से सख़्त परहेज़ करते थे और जो काम आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में न हुआ उसे मअयूब जाना करते थे। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.), हज़रत उमर फिर हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने जो काम किया कि सारे क़ुर्आन को एक जगह मुरत्तब कर दिया ऐसा होना ज़रूरी था। वरना पहली किताबों की

तरह कुर्आन में भी शदीद इख़्तिलाफ़ात हो जाते। बिदअत वो काम है जिसका षुबूत क़ुरूने षलाषा से न हो जैसा आजकल लोग तीजा, फ़ातिहा, चहल्लुम करते हैं। क़ब्रों पर मेले लगाते, उर्स करते, नज़्रें चढ़ाते हैं। ये तमाम उमूर बिदआते सय्यिआ में दाख़िल हैं। अल्लाह तआला हर मुसलमान को बिदअत से बचाकर राहे सुन्नत पर चलने की तौफ़ीक़ अता करे, आमीन। जम्अे कुर्आन शरीफ़ के बारे में मुफ़स्सल मक़ाला इस पारे के आख़िर में मुलाहिज़ा हो।

٤٩٨٧- حدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُ، أَنَّ حُذَيْفَةَ بْنَ الْيَمَانِ قَدِمَ عَلَى عُثْمَانَ، وَكَانَ يُغَازِي أَهْلَ الشَّامِ فِي فَتْحِ أَرْمِينِيَةَ وَأَذْرَبِيجَانَ مَعَ أَهْلِ الْعِرَاقِ، فَأَفْزَعَ حُذَيْفَةَ اخْتِلاَفُهُمْ فِي الْقِرَاءَةِ، فَقَالَ حُذَيْفَةُ لِعُثْمَانَ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، أَدْرِكْ هَذِهِ الأُمَّةَ قَبْلَ أَنْ يَخْتَلِفُوا فِي الْكِتَابِ اخْتِلاَفَ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى: فَأَرْسَلَ عُثْمَانُ إِلَى حَفْصَةَ أَنْ أَرْسِلِي إِلَيْنَا بِالصُّحُفِ نَنْسَخُهَا فِي الْمَصَاحِفِ ثُمَّ نَرُدُّهَا إِلَيْكِ. فَأَرْسَلَتْ بِهَا حَفْصَةُ إِلَى عُثْمَانَ، فَأَمَرَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ وَعَبْدَ اللهِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدَ بْنَ الْعَاصِ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ، فَنَسَخُوهَا فِي الْمَصَاحِفِ، وَقَالَ عُثْمَانُ لِلرَّهْطِ الْقُرَشِيِّينَ الثَّلاَثَةِ : إِذَا اخْتَلَفْتُمْ أَنْتُمْ وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ فِي شَيْءٍ مِنَ الْقُرْآنِ فَاكْتُبُوهُ بِلِسَانِ قُرَيْشٍ فَإِنَّمَا نَزَلَ بِلِسَانِهِمْ، فَفَعَلُوا حَتَّى إِذَا نَسَخُوا الصُّحُفَ فِي الْمَصَاحِفِ رَدَّ عُثْمَانُ الصُّحُفَ إِلَى حَفْصَةَ، فَأَرْسَلَ إِلَى كُلِّ أُفُقٍ بِمُصْحَفٍ مِمَّا نَسَخُوا، وَأَمَرَ

4987. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद औफ़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हुज़ैफ़ह बिन अल यमान (रज़ि.) अमीरुल मोमिनीन उ़ष्मान (रज़ि.) के पास आए। उस वक़्त उ़ष्मान (रज़ि.) अरमीनिया और आज़र बैजान की फ़तह के सिलसिले में शाम के ग़ाज़ियों के लिये जंग की तैयारियों में मस़रूफ़ थे, ताकि वो अहले इराक़ को साथ लेकर जंग करें। ह़ज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) कुर्आन मजीद की क़िरअत के इख़्तिलाफ़ की वजह से बहुत परेशान थे। आपने ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) से कहा कि अमीरुल मोमिनीन! इससे पहले कि ये उम्मत (मुस्लिमा) भी यहूदियों और नस़रानियों की त़रह किताबुल्लाह में इख़्तिलाफ़ करने लगे, आप इसकी ख़बर लीजिए। चुनाँचे ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के यहाँ कहलाया कि स़हीफ़े (जिन्हें ज़ैद (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) के हुक्म से जमा किया था और जिन पर मुकम्मल क़ुर्आन मजीद लिखा हुआ था) हमें दे दें ताकि हम उन्हें मुस्ह़फ़ों में (किताबी शक्ल में) नक़ल करवा लें फिर अस़ल हम आपको लौटा देंगे। ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) ने वो स़ह़ीफ़े ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के पास भेज दिये और आपने ज़ैद बिन षाबित, अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, सअ़द बिन आ़स़, अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ारिष बिन हिशाम (रज़ि.) को हुक्म दिया कि वो इन स़ह़ीफ़ों को मुस्ह़फ़ों में नक़ल कर लें। ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने इस जमाअ़त के तीन कुरैशी स़हाबियों से कहा कि अगर आप लोगों का क़ुर्आन मजीद के किसी लफ़्ज़ के सिलसिले में ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) से इख़्तिलाफ़ हो तो उसे कुरैश की ज़ुबान के मुताबिक़ लिख लें क्योंकि क़ुर्आन मजीद भी कुरैश ही की ज़ुबान में नाज़िल हुआ था। चुनाँचे उन लोगों ने ऐसा ही किया और जब तमाम स़ह़ीफ़े मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों में नक़ल कर लिये गये तो ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने उन स़ह़ीफ़ों को वापस लौटा दिया और अपनी सल्तनत के हर इलाक़े

بِمَا سِوَاهُ مِنَ الْقُرْآنِ فِي كُلِّ صَحِيفَةٍ أَوْ مُصْحَفٍ أَنْ يُحْرَقَ. [راجع: ٣٥٠٦]

में नक़लशुदा मुस्हफ़ का एक एक नुस्ख़ा भिजवा दिया और हुक्म दिया कि इसके सिवा कोई चीज़ अगर क़ुर्आन की तरफ़ मन्सूब की जाती है ख़्वाह वो किसी सहीफ़े या मुस्हफ़ में हो तो उसे जला दिया जाए। (राजेअ : 3506)

٤٩٨٨- قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : وَأَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ سَمِعَ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ: فَقَدْتُ آيَةً مِنَ الأَحْزَابِ حِينَ نَسَخْنَا الْمُصْحَفَ قَدْ كُنْتُ أَسْمَعُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقْرَأُ بِهَا فَالْتَمَسْنَاهَا فَوَجَدْنَاهَا مَعَ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ الأَنْصَارِيِّ: ﴿مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللهَ عَلَيْهِ﴾ فَأَلْحَقْنَاهَا فِي سُورَتِهَا فِي الْمُصْحَفِ. [راجع: ٢٨٠٥]

4988. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे ख़ारजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने सुना, उन्होंने बयान किया कि जब हम (उ़ष्मान रज़ि) के ज़माने में) मुस्हफ़ की सूरत में क़ुर्आन मजीद को नक़ल कर रहे थे, तो मुझे सूरह अह़ज़ाब की एक आयत नहीं मिली, हालाँकि मैं उस आयत को भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना करता था और आप उसकी तिलावत किया करते थे, फिर हमने उसे तलाश किया तो ख़ुज़ैमा बिन ष़ाबित अंसारी (रज़ि.) के पास मिली। वो आयत ये थी। मिनल्मूमिनीन रिजालुन स़दक़ू मा आ़हदुल्लाह अ़लैहि। चुनाँचे हमने इस आयत को सूरह अह़ज़ाब में लगा दिया। (राजेअ़ : 2805)

या'नी अपने ठिकाने पर तो सिर्फ़ सूरतों की तर्तीब और वुजूहे क़िरात वग़ैरह में ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने तसर्रुफ़ किया। आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़हद में ये तर्तीब सूरतों की न थी और इसीलिये नमाज़ी को जाइज़ है कि जिस सूरत को चाहे पहले पढ़े जिसे चाहे बाद में पढ़े उनमें तर्तीब का ख़्याल रखना कुछ फ़र्ज़ नहीं है। हाँ! इस क़दर मुनासिब है कि पहली रकअ़त में ज़्यादा आयात पढ़ी जाएँ दूसरी में कम आयात वाली सूरत पढ़ी जाए।

तश्रीह : ह़ज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) ने क़ुर्आन पाक की बहुत सी नक़लें तैयार कराईं और पूरी जाँच पड़ताल के बाद उनको अतराफ़े मम्लकते इस्लामिया में इस तौर पर तक़्सीम करा दिया कि एक नुस्ख़ा कूफ़ा में, एक बस़रा में, एक शाम में और एक मदीना में अपने पास रहने दिया। कुछ रिवायतों में यूँ है कि सात मुस्ह़फ़ तैयार कराये और मक्का और शाम और यमन और बह़रीन और बस़रा और कूफ़ा को एक एक भेजा और एक मदीना में रखा। ह़दीष़ नं. 4987 में क़ुर्आन मजीद के तस्दीक़शुदा नुस्ख़े के अलावा बाक़ी मुस्हफ़ों को जलाने का हुक्म देना, ऐन मुनासिब और मस्लिह़त के तहत था। ये हुक्म ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने सब स़ह़ाबा (रज़ि.) के सामने दिया। उन्होंने इस पर इंकार नहीं किया। कुछ ने कहा ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) ने उनको जमा कराया फिर जलवा दिया। इस ह़दीष़ से ये भी निकलता है कि जिन काग़ज़ों में अल्लाह का नाम हों उनको जला डालना दुरुस्त है। अब जो मुस्ह़फ़ ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि) के पास था वो ज़िन्दगी भर उन्हीं के पास रहा। मर्वान ने मांगा तो भी उन्होंने नहीं दिया, उनकी वफ़ात के बाद मर्वान ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से वो मुस्तआ़र मंगवाया और जलवा डाला अब किसी के पास कोई मुस्ह़फ़ न रहा। अल्बत्ता कहते हैं अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने अपना नुस्ख़ा ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के मांगने पर भी नहीं दिया था। लेकिन अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की वफ़ात के बाद मा'लूम नहीं वो मुस्ह़फ़ कहाँ गया। कुछ रिवायतों में है कि ह़ज़रत अली (रज़ि.) ने भी एक मुस्ह़फ़ ब तर्तीब नुज़ूल तैयार किया था लेकिन उसका भी पता नहीं चलता अल्लाह को जो मंज़ूर था वही हुआ, यही मुस्ह़फ़े उ़ष्मानी दुनिया में बाक़ी रह गया। मुवाफ़िक़ मुख़ालिफ़ हर मुल्क और हर फ़िरक़े में जहाँ देखो वहाँ यही मुस्ह़फ़ है। (वह़ीदी)

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के कातिब का बयान

4989. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैद इब्ने सिबाक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया, कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में मुझे बुलाया और कहा कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने क़ुर्आन लिखते थे। इसलिये अब भी क़ुर्आन (जमा करने के लिये) तुम ही तलाश करो। मैंने तलाश की और सूरह तौबा की आख़री दो आयतें मुझे ह़जरत ख़ुज़ैमा अंसारी (रज़ि.) के पास लिखी हुई मिलीं, उनके सिवा और कहीं ये दो आयतें नहीं मिल रही थीं। वो आयतें ये थीं, लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फुसिकुम अ़ज़ीज़ुन अ़लैहि मा अ़नित्तुम आख़िर तक। (राजेअ़ : 2807)

٤ - باب كَاتِبِ النَّبِيِّ ﷺ

٤٩٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ ابْنَ السَّبَّاقِ قَالَ : إِنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ : أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُوبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّكَ كُنْتَ تَكْتُبُ الْوَحْيَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَاتَّبِعِ الْقُرْآنَ. فَتَتَبَّعْتُ حَتَّى وَجَدْتُ آخِرَ سُورَةِ التَّوْبَةِ آيَتَيْنِ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ لَمْ أَجِدْهُمَا مَعَ أَحَدٍ غَيْرِهِ ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ﴾ إِلَى آخِرِهِ. [راجع: ٢٨٠٧]

490. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत ला यस्तविल् क़ाइदूना मिनल् मोमिनीन वल् मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाह नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ैद को मेरे पास बुलाओ और उनसे कहो कि तख़्ती, दवात और मूँढ़े की हड्डी (लिखने का सामान) लेकर आएं, या रावी ने इसके बजाय हड्डी और दवात (कहा) फिर (जब वो आ गये तो) आँह़ ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि लिखो ला यस्तविल्क़ाइदून अल्अख़ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पीछे अ़म्र इब्ने उम्मे मक्तूम बैठे हुए थे जो नाबीना थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर आपका मेरे बारे में क्या हुक्म है? मैं तो नाबीना हूँ (जिहाद में नहीं जा सकता अब मुझको भी मुजाहिदीन का दर्जा मिलेगा या नहीं) उस वक़्त ये आयत यूँ उतरी, ला यस्तविल्क़ाइदून मिनल्मूमिनीन वल्मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाहि ग़ैर उलिज़्ज़ररि नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 2831)

٤٩٩٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ادْعُ لِي زَيْدًا وَلْيَجِيءْ بِاللَّوْحِ وَالدَّوَاةِ، وَالْكَتِفِ أَوِ الْكَتِفِ وَالدَّوَاةِ، ثُمَّ قَالَ : اكْتُبْ ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ﴾)) وَخَلْفَ ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ عَمْرُو بْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ الأَعْمَى قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ فَمَا تَأْمُرُنِي؟ فَإِنِّي رَجُلٌ ضَرِيرُ الْبَصَرِ فَنَزَلَتْ مَكَانَهَا ﴿لاَ يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾. [راجع: ٢٨٣١]

बाब 5 : क़ुर्आन मजीद सात क़िरातों से नाज़िल हुआ है

٥- باب أُنْزِلَ الْقُرْآنُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ

٤٩٩١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ:

4991. हमसे सईद बिन ड़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे ड़बैदुल्लाह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिब्रईल (अ़लैहि.) ने मुझको (पहले) अ़रब के एक ही मुहावरे पर क़ुर्आन पढ़ाया। मैंने उनसे कहा (इसमें बहुत सख़्ती होगी) मैं बराबर उनसे कहता रहा कि और मुहावरों में भी पढ़ने की इजाज़त दो। यहाँ तक कि सात मुहावरों की इजाज़त मिली। (राजेअ़ : 3219)

حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنَا عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ: ((أَقْرَأَنِي جِبْرِيلُ عَلَى حَرْفٍ فَرَاجَعْتُهُ، فَلَمْ أَزَلْ أَسْتَزِيدُهُ وَيَزِيدُنِي حَتَّى انْتَهَى إِلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ)). [راجع: ٣٢١٩]

4992. हमसे सईद बिन ड़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझसे ड़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, उनसे मिस्वर बिन मख़्रमा और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत ड़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) की ज़िंदगी में मैंने हिशाम बिन ह़कीम को सूरह फ़ुरक़ान नमाज़ में पढ़ते सुना, मैंने उनकी क़िरात को ग़ौर से सुना तो मा'लूम हुआ कि वो सूरत में ऐसे हुरूफ़ पढ़ रहे हैं कि मुझे इस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने नहीं पढ़ाया था, क़रीब था कि मैं उनका सर नमाज़ ही में पकड़ लेता लेकिन मैंने बड़ी मुश्किल से स़ब्र किया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उनकी चादर से उनकी गर्दन बाँधकर पूछा ये सूरत जो मैंने अभी तुम्हें पढ़ते हुए सुनी है, तुम्हें किसने इस त़रह़ पढ़ाई है? उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे इसी त़रह़ पढ़ाई है, मैंने कहा तुम झूठ बोलते हो। ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे इससे मुख़्तलिफ़ दूसरे ह़रफ़ों से पढ़ाई जिस त़रह़ तुम पढ़ रहे थे। आख़िर मैं उन्हें खींचता हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि मैंने इस शख़्स से सूरह फ़ुरक़ान ऐसे ह़रफ़ों में पढ़ते सुनी जिनकी आपने मुझे ता'लीम नहीं दी है। आपने फ़र्माया ड़मर (रज़ि.) तुम पहले इन्हें छोड़ दो और ऐ हिशाम! तुम पढ़कर सुनाओ। उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने भी उन ही ह़रफ़ों मे पढ़ा जिनमें मैंने उन्हें नमाज़ में पढ़ते सुना था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने सुनकर फ़र्माया कि ये सूरत इसी त़रह़ नाज़िल हुई है। फिर फ़र्माया, ड़मर! अब तुम पढ़कर सुनाओ। मैंने उस त़रह़ पढ़ा जिस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे ता'लीम दी

٤٩٩٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدٍ الْقَارِيَّ حَدَّثَاهُ أَنَّهُمَا سَمِعَا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ يَقُولُ: سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ فَإِذَا هُوَ يَقْرَأُ عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَتَصَبَّرْتُ حَتَّى سَلَّمَ، فَلَبَّبْتُهُ بِرِدَائِهِ فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَأُ؟ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقُلْتُ: كَذَبْتَ، فَإِنَّ رَسُولَ اللهِ قَدْ أَقْرَأَنِيهَا عَلَى غَيْرِ مَا قَرَأْتَ. فَانْطَلَقْتُ بِهِ أَقُودُهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ: فقلت انى سمعت هَذا يقرأ بسورةِ الفرقان على حُروفٍ لم تقرئنيها فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم ((أَرْسِلْهُ، اقْرَأْ يَا هِشَامُ)). فَقَرَأَ عَلَيْهِ الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ يَقْرَأُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَذَلِكَ

أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ: ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ))، فَقَرَأْتُ الْقِرَاءَةَ الَّتِي أَقْرَأَنِي فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَذَلِكَ أُنْزِلَتْ. إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ، فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)). [راجع: ٢٤١٩]

थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे भी सुनकर फ़र्माया कि इसी तरह नाज़िल हुई है। ये क़ुर्आन सात हरफ़ों पर नाज़िल हुआ है। पस तुम्हें जिस तरह आसान हो पढ़ो। (राजेअ : 2419)

तश्रीह : सात तरीक़ों या सात ह़र्फ़ों से सात क़िरात मुराद हैं। जैसे मालिकि यौमिद्दीन में मलिकि यौमिद्दीन और मलाकि यौमिद्दीन मुख़्तलिफ़ क़िराते हैं इनसे मआनी में कोई फ़र्क़ नहीं आता, इसलिये इन सातों क़िरातों पर क़िराते क़ुर्आने करीम जाइज़ है। हाँ मशहूर आम क़िरात वो हैं जिनमें मौजूदा क़ुर्आन मजीद मुस्ह़फ़े उ़ष्मानी की शक्ल में मौजूद है।

٦- باب تَأْلِيفِ الْقُرْآنِ :

बाब 6 : क़ुर्आन मजीद या आयतों की तर्तीब का बयान

लफ़्ज़े तालीफ़ से तर्तीब मुराद है।

٤٩٩٣- حدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ وَأَخْبَرَنِي يُوسُفُ بْنُ مَاهَكٍ قَالَ : إِنِّي عِنْدَ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا إِذْ جَاءَهَا أَعْرَابِيٌّ، فَقَالَ : أَيُّ الْكَفَنِ خَيْرٌ؟ قَالَتْ : وَيْحَكَ وَمَا يَضُرُّكَ، قَالَ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ أَرِينِي مُصْحَفَكِ، قَالَتْ: لِمَ؟ قَالَ : لَعَلِّي أُوَلِّفُ الْقُرْآنَ عَلَيْهِ، فَإِنَّهُ يُقْرَأُ غَيْرَ مُؤَلَّفٍ قَالَتْ : وَمَا يَضُرُّكَ آيَةً قَرَأْتَ قَبْلُ إِنَّمَا نَزَلَ أَوَّلَ مَا نَزَلَ مِنْهُ سُورَةٌ مِنَ الْمُفَصَّلِ فِيهَا ذِكْرُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، حَتَّى إِذَا ثَابَ النَّاسُ إِلَى الإِسْلاَمِ نَزَلَ الْحَلاَلُ وَالْحَرَامُ، وَلَوْ نَزَلَ أَوَّلَ شَيْءٍ لاَ تَشْرَبُوا الْخَمْرَ لَقَالُوا : لاَ نَدَعُ الْخَمْرَ أَبَدًا، وَلَوْ نَزَلَ لاَ تَزْنُوا لَقَالُوا لاَ نَدَعُ الزِّنَا أَبَدًا، لَقَدْ نَزَلَ بِمَكَّةَ عَلَى مُحَمَّدٍ ﷺ وَإِنِّي لَجَارِيَةٌ أَلْعَبُ: ﴿بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ﴾. وَمَا نَزَلَتْ سُورَةُ

4993. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उनसे कैसान ने कहा कि मुझे यूसुफ़ बिन माहिक ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि मैं उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक इराक़ी उनके पास आया और पूछा कि कफ़न कैसा होना चाहिये? उम्मुल मोमिनीन (रज़ि.) ने कहा अफ़सोस इससे मतलब! किसी तरह का भी कफ़न हो तुझे क्या नुक़्सान होगा। फिर उस शख़्स ने कहा उम्मुल मोमिनीन! मुझे अपने मुस्ह़फ़ दिखा दीजिए। उन्होंने कहा क्यूँ? (क्या ज़रूरत है?) उसने कहा ताकि मैं भी क़ुर्आन मजीद उस तर्तीब के मुताबिक़ पढ़ूँ क्योंकि लोग बग़ैर तर्तीब के पढ़ते हैं, उन्होंने कहा फिर इसमें क्या क़बाह़त है जैसी सूरत तू चाहे पहले पढ़ ले (जैसी सूरत चाहे बाद में पढ़ ले अगर उतरने की तर्तीब देखता है) तो पहले मुफ़स्सल की एक सूरत, उतरी, (इक़्रा बिस्मि रब्बिक) जिसमें जन्नत दोज़ख़ का ज़िक्र है। जब लोगों का दिल इस्लाम की तरफ़ रुजूअ हो गया, (ए'तिक़ाद पुख़्ता हो गये) उसके बाद ह़लाल व ह़राम के अह़काम उतरे, अगर कहीं शुरू ही में ये उतरता कि शराब न पीना तो लोग कहते हम तो कभी शराब पीना नहीं छोड़ेंगे। अगर शुरू ही में ये उतरता कि ज़िना न करो तो लोग कहते हम तो ज़िना नहीं छोड़ेंगे। इसके बजाय मक्का में मुह़म्मद (ﷺ) पर उस वक़्त जब मैं बच्ची थी और खेला करती थी ये आयत नाज़िल हुई, बलिस्साअतु मवइदुहुम वस्साअतु अदहा वअमर्रू लेकिन सूरह बक़रः और सूरह निसा उस वक़्त नाज़िल हुई, जब

मैं (मदीना में) हुज़ूर अकरम (ﷺ) के पास थी। बयान किया कि फिर उन्होंने उस इराक़ी के लिये अपना मुस्हफ़ निकाला और हर सूरत की आयात की तफ़्सील लिखवाई। (राजेअ : 4876)

الْبَقَرَةِ وَالنِّسَاءِ إِلاَّ وَأَنَا عِنْدَهُ. قَالَ: فَأَخْرَجَتْ لَهُ الْمُصْحَفَ، فَأَمْلَتْ عَلَيْهِ آيَ السُّورَةِ. [راجع: ٤٨٧٦]

कि इस सूरत में इतनी आयात हैं और इस में इतनी हैं।

4994. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने अब्दुर्रहमान बिन उमय्या से सुना और उन्होंने हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा सूरह बनी इस्राईल, सूरह कहफ़, सूरह मरयम, सूरह ताहा और सूरह अंबिया के बारे में बतलाया कि ये पाँचों सूरतें अव्वल दर्जा की फ़सीह सूरतें हैं और मेरी याद की हुई हैं। (राजेअ : 4708)

٤٩٩٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ مَسْعُودٍ يَقُولُ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ وَالْكَهْفِ وَمَرْيَمَ وَطَهَ وَالأَنْبِيَاءِ: إِنَّهُنَّ مِنَ الْعِتَاقِ الأُوَلِ، وَهُنَّ مِنْ تلادي. [راجع: ٤٧٠٨]

तश्रीह : या'नी ये सूरतें नुज़ूल में मुक़द्दम थीं, लेकिन मुस्हफ़े उ़ष्मानी में सूरतों की तर्तीब नुज़ूल के मुवाफ़िक़ नहीं है बल्कि बड़ी सूरतों को पहले रखा है उसके बाद छोटी सूरतों को और ये तर्तीब भी अकषर आँहज़रत (ﷺ) की क़िरात से निकाली गई है। कहीं कहीं अपनी राय से भी मषलन ह़दीष में आपने फ़र्माया सूरह बक़रः और आले इमरान तो सूरह बक़रः को सूरत आले इमरान पर मुक़द्दम किया। इसी तरह मुस्हफ़े उ़ष्मानी में भी सूरह बक़रः पहले रखी गई बहरहाल मौजूदा मुस्हफ़ शरीफ़ ऐन मंशा-ए-इलाही के मुताबिक़ मुरत्तबशुदा है, ला शक्क फ़ीही।

4995. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमको अबू इस्हाक़ ने बयान किया कि मैंने सूरत सब्बिहिस्मा रब्बिक नबी करीम (ﷺ) के मदीना मुनव्वरा आने से पहले ही सीख ली थी।

٤٩٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ أَنْبَأَنَا أَبُو إِسْحَاقَ سَمِعَ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: تَعَلَّمْتُ ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ﴾ قَبْلَ أَنْ يَقْدَمَ النَّبِيُّ ﷺ.

4996. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा (मुहम्मद बिन मैमून) ने, उनसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कहा मैं उन जुड़वाँ सूरतों को जानता हूँ जिन्हें नबी करीम (ﷺ) हर रकअत में दो दो पढ़ते थे फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) मजलिस से खड़े हो गये (और अपने घर) चले गये। अ़ल्क़मा भी आपके साथ अंदर गये। जब ह़ज़रत अ़ल्क़मा (रज़ि.) बाहर निकले तो हमने उनसे उन्हीं सूरतों के बारे में पूछा। उन्होंने कहा ये शुरू मुफ़स्सल की बीस सूरतें हैं, उनकी

٤٩٩٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ شَقِيقٍ قَالَ : قَالَ عَبْدُ اللهِ: قَدْ تَعَلَّمْتُ النَّظَائِرَ الَّتِي كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَؤُهُنَّ اثْنَيْنِ اثْنَيْنِ فِي كُلِّ رَكْعَةٍ، فَقَامَ عَبْدُ اللهِ وَدَخَلَ مَعَهُ عَلْقَمَةُ، وَخَرَجَ عَلْقَمَةُ فَسَأَلْنَاهُ فَقَالَ : عِشْرُونَ سُورَةً مِنْ أَوَّلِ الْمُفَصَّلِ عَلَى تَأْلِيفِ ابْنِ مَسْعُودٍ

आख़री सूरतें वो हैं जिनकी अव्वल में हामीम है। हामीम दुख़ान और अ़म्मा यतसाअलून भी उन ही में से हैं। (राजेअ़ : 775)

آخِرُهُنَّ الْحَوَامِيمُ، ﴿حم الدخان﴾ و﴿عم يتساءلون﴾. [راجع: ٧٧٥]

तश्रीह : अबू ज़र की रिवायत में यूँ है। हा-मीम की सूरतों में से हा-मीम दुख़ान और अ़म्मा यतसाअलून। इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत में यूँ है उनमें पहली सूरत सूरह रहमान है और आख़िर की दुख़ान। इस रिवायत से ये निकला कि इब्ने मसऊद (रज़ि.) का मुस्हफ़े उ़ष्मानी तर्तीब पर न था, न नुज़ूल की तर्तीब पर; कहते हैं कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) का मुस्हफ़ नुज़ूल की तर्तीब के मुताबिक़ था। शुरू में सूरह इक़्रा फिर सूरह मुद्दष्षिर, फिर सूरह क़लम और इसी तरह पहले सब मक्की सूरतें थीं। फिर मदनी सूरतें और मुस्हफ़े उ़ष्मानी की तर्तीब सहाबा (रज़ि.) की राय और इज्तिहाद से हुई थी। जुम्हूर उ़लमा का यही क़ौल है या'नी सूरतों की तर्तीब लेकिन आयतों की तर्तीब बइत्तिफ़ाक़ उ़लमा-ए-तौक़ीफ़ी है या'नी पहली लिखी हुई हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) आँहज़रत (ﷺ) से कह देते थे इस आयत को वहाँ रखो और इस आयत को तो इस आयत को वहाँ तो आयतों में तक़्दीम ताख़ीर किसी तरह जाइज़ नहीं और इसी मज़्मून की एक हदीष है जिसको हाकिम और बैहक़ी ने निकाला। हाकिम ने कहा वो सहीह है। बुख़ारी ने अ़लामाते नुबुव्वत में वस्ल किया। हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **अ़ला तालीफ़ि इब्नि मस्ऊद फ़ीहि दलालतुन अ़ला अन्न तालीफ़ इब्नि मस्ऊद अ़ला ग़ैरित्तालीफ़िल्उष्मानी व कान अव्वलुहू अल्फ़ातिहतु षुम्मल्बक़रतु षुम्मन्निसाउ षुम्म आलि इम्रान व लम यकुन अ़ला तर्तीबिन्नुज़ूलि अव्वलुहू इक्रः षुम्मल्मुद्दष्षिर षुम्मन्नून वल्क़लम षुम्मल्मुज़्ज़म्मिल षुम्म तब्बत षुम्मत्तक्वीर षुम्म सब्बिहिस्म व हाकज़ा इला आखिरिल्मक्की षुम्मल्मदनी वल्लाहु आ़लम** (फ़त्हुल बारी) या'नी लफ़्ज़ अ़ला तालीफ़े इब्ने मसऊद में दलील है कि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) का तालीफ़ कर्दा क़ुर्आन शरीफ़ मुस्हफ़े उ़ष्मानी से ग़ैर था उसमें अव्वल सूरह फ़ातिहा फिर सूरह बक़रः फिर सूरह निसा फिर सूरह आले इमरान दर्ज थीं और तर्तीब नुज़ूल के मुवाफ़िक़ न था। हाँ कहा जाता है कि मुस्हफ़े अ़ली (रज़ि.) तर्तीबे नुज़ूल पर था। वो सूरह इक़्रा से शुरू होता था, फिर सूरह मुद्दष्षिर, फिर सूरह नून, फिर सूरह मुज़्ज़म्मिल, फिर सूरह तब्बत यदा, फिर सूरह सब्बिहिस्म फिर इस तरह पहले की सूरतें फिर मदनी सूरतें उसमें दर्ज थीं। बहरहाल जो हुआ मंश-ए-इलाही के तहत हुआ कि आज दुनिया-ए-इस्लाम में मुस्हफ़े उ़ष्मानी मुतदाविल है और दीगार मसाहिफ़ को क़ुदरत ने ख़ुद गुम कर दिया ताकि नफ़्से क़ुर्आन पर उम्मत में इख़्तिलाफ़ पैदा न हो सके। बिऔनिल्लाह ऐसा ही हुआ और क़यामत तक ऐसा ही होता रहेगा। व लौ करिहल काफ़िरून।

बाब 7 :

٧- باب

हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) नबी करीम (ﷺ) से क़ुर्आन मजीद का दौर किया करते थे।

और मसरूक़ ने कहा, उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूले करीम (ﷺ) ने चुपके से फ़र्माया था कि हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) मुझसे हर साल क़ुर्आन मजीद का दौर करते थे और इस साल उन्होंने मुझसे दो बार दौरा किया है, मैं समझता हूँ कि उसकी वजह ये है कि मेरी मौत का वक़्त आ पहुँचा है।

كَانَ جِبْرِيلُ يُعْرِضُ الْقُرْآنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ مَسْرُوقٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنْ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: أَسَرَّ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ أَنَّ جِبْرِيلَ يُعَارِضُنِي بِالْقُرْآنِ كُلَّ سَنَةٍ، وَأَنَّهُ عَارَضَنِي الْعَامَ مَرَّتَيْنِ، وَلاَ أُرَاهُ إِلاَّ حَضَرَ أَجَلِي.

4997. हमसे यह्या बिन क़ुज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ख़ैर ख़ैरात करने में सबसे ज़्यादा सख़ी थे और रमज़ान में आपकी सख़ावत की

٤٩٩٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ

بِالْخَيْرِ، وَأَجْوَدُ مَا يَكُونُ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ، لأَنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ فِي شَهْرِ رَمَضَانَ حَتَّى يَنْسَلِخَ، يَعْرِضُ عَلَيْهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْقُرْآنَ، فَإِذَا لَقِيَهُ جِبْرِيلُ كَانَ أَجْوَدَ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ. [راجع:٦]

तो कोई हद ही नहीं थी क्योंकि रमज़ान के महीनों में ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आपसे आकर हर रात मिलते थे यहाँ तक कि रमज़ान का महीना ख़त्म हो जाता वो उन रातों में आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ क़ुर्आन मजीद का दौरा किया करते थे। जब ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आपसे मिलते तो उस ज़माने में आँह़ज़रत (ﷺ) तेज़ हवा से भी बढ़कर सख़ी हो जाते थे। (राजेअ़ : 6)

तश्रीह : सख़ावत से माली जानी जिस्मानी व रूहानी हर क़िस्म की सख़ावतें मुराद हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) सख़ावत की तमाम क़िस्मों के जामेअ़ थे सच है :

बलगल्उला बिकमालिही	कशफहुजा बिजमालिही
हसुनत जमीअ़ ख़िसालिही	सल्लू अ़लैहि व आलिही

٤٩٩٨- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ حَدَّثَنَا أَبُوبَكْرٍ عَنْ أَبِي حُصَيْنٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : كَانَ جِبْرِيلُ يَعْرِضُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ الْقُرْآنَ كُلَّ عَامٍ مَرَّةً، فَعَرَضَ عَلَيْهِ مَرَّتَيْنِ فِي الْعَامِ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ وَكَانَ يَعْتَكِفُ كُلَّ عَامٍ عَشْرًا، فَاعْتَكَفَ عِشْرِينَ فِي الْعَامِ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ. [راجع: ٢٠٤٤]

4998. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र बिन अ़याश ने बयान किया, उनसे अबू हुस़ैन ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ हर साल एक बार क़ुर्आन मजीद का दौरा किया करते थे लेकिन जिस साल आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हुई उसमें उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ दो मर्तबा दौरा किया। आँह़ज़रत (ﷺ) हर साल दिन का एअतिकाफ़ किया करते थे लेकिन जिस साल आपकी वफ़ात हुई उस साल आप (ﷺ) ने बीस दिन का ए'तिकाफ़ किया। (राजेअ़ : 2044)

٨- باب الْقُرَّاءِ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) के स़ह़ाबा में क़ुर्आन के क़ारी (ह़ाफ़िज़) कौन कौन थे?

٤٩٩٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَمْرٍو بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مَسْرُوقٍ ذَكَرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو وَعَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ فَقَالَ: لاَ أَزَالُ أُحِبُّهُ، سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((خُذُوا الْقُرْآنَ مِنْ أَرْبَعَةٍ، مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ وَسَالِمٍ وَمُعَاذٍ وَأُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ)). [راجع: ٣٧٥٨]

4999. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे मसरूक़ ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) का ज़िक्र किया और कहा कि उस वक़्त से उनकी मुहब्बत मेरे दिल में घर कर गई है जबसे मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को ये कहते हुए सुना कि क़ुर्आन मजीद को चार अस़्ह़ाब से ह़ास़िल करो जो अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, सालिम, मुआ़ज़ और उबई बिन कअ़ब (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) हैं। (राजेअ़ : 3758)

इनमें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) और सालिम (रज़ि.) तो मुहाजिरीन में से हैं और मुआ़ज़ और उबई बिन कअ़ब

(रज़ि.) अंसार में से हैं। कुर्आन पाक के बड़े आलिम और याद करने वाले यही सहाबी थे। हर चंद और भी सहाबा कुर्आन के क़ारी हैं मगर इन चार को सबसे ज़्यादा कुर्आन याद था।

٥٠٠٠– حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا شَقِيقُ بْنُ سَلَمَةَ قَالَ: خَطَبَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ فَقَالَ: وَاللهِ لَقَدْ أَخَذْتُ مِنْ فِي رَسُولِ اللهِ ﷺ بِضْعًا وَسَبْعِينَ سُورَةً، وَاللهِ لَقَدْ عَلِمَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ أَنِّي مِنْ أَعْلَمِهِمْ بِكِتَابِ اللهِ، وَمَا أَنَا بِخَيْرِهِمْ. قَالَ شَقِيقٌ فَجَلَسْتُ فِي الْحِلَقِ أَسْمَعُ مَا يَقُولُونَ فَمَا سَمِعْتُ رَادًّا يَقُولُ غَيْرَ ذَلِكَ.

5000. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने हमें ख़ुत्बा दिया और कहा कि अल्लाह की क़सम! मैंने सत्तर से ज़्यादा सूरतें ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) की ज़ुबाने मुबारक से सुनकर हासिल की हैं। अल्लाह की क़सम! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सहाबा को ये बात अच्छी तरह मा'लूम है कि मैं उन सबसे ज़्यादा क़ुर्आन मजीद का जानने वाला हूँ हालाँकि मैं उनसे बेहतर नहीं हूँ। शक़ीक़ ने बयान किया कि फिर मैं मजलिस में बैठा ताकि सहाबा की राय सुन सकूँ कि वो क्या कहते हैं लेकिन मैंने किसी से इस बात की तर्दीद नहीं सुनी।

तश्रीह: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने ये अपना वाक़िया हाल बयान फ़र्माया गो इसमें फ़ज़ीलत निकली उनकी निय्यत ग़ुरूर और तकब्बुर की न थी हाँ! फ़ख़ र ग़ुरूर से ऐसा कहना मना है। **इन्नमल आमालु बिन्नियात**। शक़ीक़ का क़ौल महल्ले ग़ौर है क्योंकि इब्ने अबी दाऊद ने ज़ुह्री से निकाला है। उन्होंने कहा कि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के इ स क़ौल को मुजाहिद (रज़ि.) ने पसंद नहीं किया (वहीदी) सच है व फ़ौक़ कुल्लि ज़ु इल्मिन अलीम।

٥٠٠١– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: كُنَّا بِحِمْصَ فَقَرَأَ ابْنُ مَسْعُودٍ سُورَةَ يُوسُفَ فَقَالَ رَجُلٌ: مَا هَكَذَا أُنْزِلَتْ قَالَ: قَرَأْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَحْسَنْتَ)). وَوَجَدَ مِنْهُ رِيحَ الْخَمْرِ، فَقَالَ: ((أَتَجْمَعُ أَنْ تُكَذِّبَ بِكِتَابِ اللهِ وَتَشْرَبَ الْخَمْرَ)). فَضَرَبَهُ الْحَدَّ.

5001. मुझसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान षौरी ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा ने बयान किया कि हम हिम्स में थे हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने सूरह यूसुफ़ पढ़ी तो एक शख़्स बोला कि इस तरह नहीं नाज़िल हुई थी। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने इस सूरत की तिलावत की थी और आपने मेरी क़िरात की तहसीन फ़र्माई थी। उन्होंने महसूस किया कि इस मुअतरिज़ के मुँह से शराब की बदबू आ रही है फ़र्माया कि अल्लाह की किताब के बारे में झूठा बयान और शराब पीना जैसे गुनाह एक साथ करता है। फिर उन्होंने उस पर हद जारी करा दी।

तश्रीह: या'नी वहाँ के हाकिम से कहला भेजा उसने हद लगाई क्योंकि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) को हिम्स की हुकूमत नहीं मिली थी अल्बत्ता कूफ़ा के हाकिम वो एक अर्सा तक रहे थे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का फ़त्वा यही है कि किसी शख़्स के मुँह से शराब की बदबू आए तो उसे हद लगा सकते हैं।

٥٠٠٢– حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ رَضِيَ اللهُ

5002. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे मुस्लिम ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान

किया कि हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कहा, उस अल्लाह की क़सम! जिसके सिवा और कोई मा'बूद नहीं, किताबुल्लाह की जो सूरत भी नाज़िल हुई है उसके बारे में मैं जानता हूँ कि कहाँ नाज़िल हुई और किताबुल्लाह की जो आयत भी नाज़िल हुई उसके बारे में मैं जानता हूँ कि किसके बारे में नाज़िल हुई, और अगर मुझे ख़बर हो जाए कि कोई शख़्स मुझसे ज़्यादा किताबुल्लाह का जानने वाला है और ऊँट ही उसके पास मुझे पहुँचा सकते हैं (या'नी उनका घर बहुत दूर है) तब भी मैं सफ़र करके उसके पास जाकर उससे उस इल्म को हासिल करूँगा।

عَنْهُ وَاللهِ الَّذِي لاَ إِلَهَ غَيْرُهُ، مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مِنْ كِتَابِ اللهِ إِلاَّ أَنَا أَعْلَمُ أَيْنَ أُنْزِلَتْ، وَلاَ أُنْزِلَتْ آيَةٌ مِنْ كِتَابِ اللهِ إِلاَّ أَنَا أَعْلَمُ فِيمَنْ أُنْزِلَتْ، وَلَوْ أَعْلَمُ أَحَدًا أَعْلَمَ مِني بِكِتَابِ اللهِ تُبَلِّغُهُ الإِبِلُ لَرَكِبْتُ إِلَيْهِ.

उलमा-ए-इस्लाम ने तहसीले इल्म के लिये ऐसे ऐसे पुर-मशक़्क़त सफ़र किये हैं जिनकी तफ़्सीलात से हैरत तारी होती है इस बारे में मुहद्दिषीन का मुक़ाम निहायत अरफ़अ व आला है। रहिमहुमुल्लाहु अज्मईन

5003. हमसे हफ़्स बिन उमर बिन ग़याष ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में क़ुर्आन को किन लोगों ने जमा किया था, उन्होंने बतलाया कि चार सहाबियों ने, ये चारों क़बीला अंसार से हैं। उबई बिन कअब, मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन षाबित और अबू ज़ैद। इस रिवायत की मुताबअत फ़ज़ल ने हुसैन बिन वाक़िद से की है। उनसे षमामा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने। (राजेअ : 3810)

٥٠٠٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ: سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: مَنْ جَمَعَ الْقُرْآنَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَالَ: أَرْبَعَةٌ كُلُّهُمْ مِنَ الأَنْصَارِ أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ، وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، وَأَبُو زَيْدٍ. تَابَعَهُ الْفَضْلُ عَنْ حُسَيْنِ بْنِ وَاقِدٍ عَنْ ثُمَامَةَ عَنْ أَنَسٍ. [راجع: ٣٨١٠]

(हज़रत अनस रज़ि. ने ये अपनी मा'लूमात की बिना पर कहा है। इन चार के अलावा और भी कई बुज़ुर्ग सहाबी हैं। जिन्होंने बक़द्रे तौफ़ीक़ क़ुर्आन मजीद जमा किया था। हज़रत अनस (रज़ि.) की मुराद पूरे क़ुर्आन मजीद से है कि सारा क़ुर्आन सिर्फ़ इन चार हज़रात ने जमा किया था।)

5004. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा कि मुझसे षाबित बिनानी और षुमामा ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात तक क़ुर्आन मजीद को चार सहाबियों के सिवा और किसी ने जमा नहीं किया था। अबू दर्दा, मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन षाबित और अबू ज़ैद (रज़ि.)। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत अबू ज़ैद के वारिष हम हुए हैं। (राजेअ : 3810)

٥٠٠٤- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنِي ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ وَثُمَامَةُ عَنْ أَنَسٍ قَالَ مَاتَ النَّبِيُّ ﷺ وَلَمْ يَجْمَعِ الْقُرْآنَ غَيْرُ أَرْبَعَةٍ: أَبُو الدَّرْدَاءِ، وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ، وَزَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، وَأَبُو زَيْدٍ. قَالَ: وَنَحْنُ وَرِثْنَاهُ. [راجع: ٣٨١٠]

इनकी कोई औलाद न थी, अनस उनके भतीजे थे, इसीलिये उन्होंने अपने आपको उनका वारिष बतलाया, इसमें इल्मी विराषत भी दाख़िल है। शारेहीन लिखते हैं : **व नहनु वरष्नाहु रद्द अला मन क़ाल अन्न अबा ज़ैद हुव सअद उबैद अल्औसी लिअन्न अनसन हुव खज़रजी फअबू ज़ैद हुव अहदु अमूमतिही अल्लज़ी वरिषहू कैफ़ यकूनु**

औसियन कमा वरद फिल्मनाक़िब अन रिवायति कतादः कुल्तु लिअनस मन अबू ज़ैद क़ाल हुव अहदु अमूमती (हाशिया बुख़ारी) ख़ुलासा ये है कि अबू ज़ैद हज़रत अनस के एक चचा हैं वो सअद उबैद औसी नहीं हैं इसलिये कि अनस खज़रजी नहीं पस जिन लोगों ने ज़ैद से सअद उबैद औसी को मुराद लिया है उनका ख़्याल दुरुस्त नहीं है।

5005. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन सईद क़त्तान ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ष़ौरी ने, उन्हें हबीब बिन उबई ष़ाबित ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, उबई बिन कअ़ब हममें सबसे अच्छे क़ारी हैं लेकिन उबई जहाँ ग़लती करते हैं उसको हम छोड़ देते हैं (वो कुछ मन्सूख़ुत् तिलावत आयतों को भी पढ़ते हैं) और कहते हैं कि मैंने तो इस आयत को आँहज़रत (ﷺ) के मुँह मुबारक से सुना है, मैं किसी के कहने से इसे छोड़ने वाला नहीं और अल्लाह ने ख़ुद फ़र्माया है कि मा नन्सुख़ु मिन आयातिन अव नुन्सिहा अल आयत या'नी हम जब किसी आयत को मन्सूख़ कर देते हैं फिर या तो उसे भुला देते हैं या उससे बेहतर लाते हैं। (राजेअ : 4481)

٥٠٠٥- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : قَالَ عُمَرُ أُبَيٌّ أَقْرَؤُنَا، وَإِنَّا لَنَدَعُ مِنْ لَحْنِ أُبَيٍّ وَأُبَيٌّ يَقُولُ أَخَذْتُهُ مِنْ فِي رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلاَ أَتْرُكُهُ لِشَيْءٍ، قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنْسَأْهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلِهَا﴾.
[راجع: ٤٤٨١]

गोया इस आयत से हज़रत उमर (रज़ि.) ने उबई का रद्द किया कि कुछ आयात मन्सूख़ुत् तिलावत या मन्सूख़ुल् हुक्म हो सकती हैं और आँहज़रत (ﷺ) से सुनना इससे ये लाज़िम नहीं आता कि उसकी तिलावत मन्सूख़ न हुई हो।

कुर्आन अ़ज़ीज़ का सरकारी नुस्ख़ा

अज़ तबर्रुकात हज़रतुल अ़ल्लाम फ़ाज़िल नबील मौलाना मुहम्मद इस्माईल स़ाहब शैख़ुल हदीष़ दारुल उलूम गूजराँ वाला (रह्मतुल्लाह तआ़ला अ़लैहि)

आँहज़रत (ﷺ) के पास कुर्आन मुक़द्दस की जो तहरीर सूरत सुहुफ़ व अज्ज़ा में मौजूद थी उसे सरकारी तहरीर कहना चाहिये इस तहरीर की रोशनी में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने वाक़िया हर्रा के बाद सरकारी नुस्ख़ा मुरत्तब किया उसी की बुनियाद पर वो सरकारी नुस्ख़े लिखे गये जा हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) ने मुख़्तलिफ़ गवर्नर को इर्साल फ़र्माए। हिज्जा के इख़्तिलाफ़ और ख़त्त के नामुकम्मल होने की वजह से जब शुब्हा पैदा हुआ तो हिफ़्ज़ के साथ जुज़्वी नविश्तों से इसका मुक़ाबला करने के लिये तस्हीह की ख़ातिर क़ुरैश के लुग़त व लहजा को असास (बुनियाद) क़रार दिया गया। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़ते राशिदा में हुफ़्फ़ाज़ और क़ुर्राअ की मौत से कुर्आन अ़ज़ीज़ के ज़ाया होने का ख़तरा पैदा हो गया था। हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) की ख़िलाफ़ते राशिदा में अ़ज्मी उन्सर की कष़रत और अ़ज्मी हिज्जा की यौरिश की वजह से सरकारी नुस्ख़े पर नज़रे ष़ानी की गई और सबसे बड़ी ख़ूबी ये हुई कि तमाम मशकूक दस्तावेज़ को ज़ाया कर दिया गया ताकि बह्ष़ और तशकीक के लिये कोई मवाद बाक़ी न रह जाए, अब वष़ूक़ के साथ कहा जा सकता है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास बऐनिही वही कुर्आन मुक़द्दस था जो आँहज़रत (ﷺ) ने और आपके अस्हाबे किराम (रज़ि.) ने अपनी ज़िंदगियों में बार बार पढ़ा और उसे सरकारी दस्तावेज़ के तौर पर लिखवाया और हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि) की बरवक़्त कोशिश इस क़द्र कारगर हुई कि आज तक उसमें एक हर्फ़ की भी कमी बेशी नहीं हो सकी और उसमें मुतवातिर क़िरात स़हीह तौर पर आ गई और तमाम शज़ूज़ को एक तरफ़ कर दिया गया। इत्क़ान में हाफ़िज़ सियूती ने और ज़रकशी ने **बुरहान फ़ी उलूमिल कुर्आन** में कुछ उमूर ऐसे ज़िक्र फ़र्माए हैं जिनसे कुर्आने अ़ज़ीज़ की जमा व तर्तीब के बारे में कुछ शुब्हात पैदा हो सकते हैं। कुछ दूसरी रिवायात से भी इसकी ताईद होती है, लेकिन कुर्आने अ़ज़ीज़ हिफ़्ज़ के बाद जिस

अ़ज़ीमुश्शान तवातुर से मन्क़ूल हुआ है उसके सामने इन आहाद और आष़ार की कोई अस़लियत नहीं रह जाती। अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़्म अल्मिलल वन्निहल में फ़र्माते हैं जब आँह़ज़रत (ﷺ) का इंतिक़ाल हुआ उस वक़्त इस्लाम जज़ीरा अ़रब में फैल चुका था। बह़्रे क़ुल्ज़ुम और सवाह़िले यमन से गुज़र कर ख़लीजे फ़ारस और फ़ुरात के किनारों तक इस्लाम की रोशनी फैल चुकी थी। फिर इस्लाम शाम की आख़िरी सरह़दों से होता हुआ बह़्रे-कुल्ज़ुम के किनारों तक शाये हो चुका थ। उस वक़्त जज़ीरा अ़रब में इस क़द्र शहर और बस्तियाँ वजूद में आ गई थीं कि जिनकी ता'दाद अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। यमन, बह़रीन, ओमान, नज्द, बनू तै के पहाड़, मुज़र और रबीआ़ व क़ुज़ाआ़ की आबादियाँ, त़ाइफ़, मक्का, मदीना ये सब लोग मुसलमान हो चुके थे उनमें मस्जिदें भरपूर थीं। हर शहर हर गाँव हर बस्ती की मसाजिद में क़ुर्आन मजीद पढ़ाया जाता था। बच्चे और औ़रतें क़ुर्आन जानते थे और उसके लिखे हुए नुस्ख़े उनके पास मौजूद थे। आँह़ज़रत (ﷺ) आ़लमे बाला को तशरीफ़ ले गये। मुसलमानों में कोई इख़्तिलाफ़ न था वो स़िर्फ़ एक जमाअ़त थे और एक ही दीन से वाबस्ता थे। ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़ते राशिदा ढाई साल रही उनकी ख़िलाफ़त में फ़ारस रोम के कुछ ह़िस़स़ और यमामा का इलाक़ा भी इस्लामी क़लम रू में शामिल हुआ क़ुर्आने अ़ज़ीज़ की क़िरात में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ लोगों ने क़ुर्आने मुक़द्दस को लिखा। ह़ज़रत अबीबक्र, ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत उ़ष़्मान, ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत अबू ज़र ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) वग़ैरहुम हमने क़ुर्आन मजीद के नुस्ख़े लिखे और जमा किये हर शहर में क़ुर्आन मजीद के नुस्ख़े मौजूद थे और उन ही में पढ़ा जा रहा था। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का इंतिक़ाल हुआ सूरते ह़ाल बदस्तूर थी उनकी ख़िलाफ़त में मुसैलमा और अस्वद अ़नसी का फ़ित्ना खड़ा हुआ, ये दोनों नुबुव्वत के मुद्दई थे और आँह़ज़रत (ﷺ) के बाद नुबुव्वत का खुले त़ौर पर ऐलान करते थे। कुछ लोगों ने ज़कात से इंकार किया। कुछ क़बीलों ने कुछ दिन इर्तिदाद इख़्तियार किया लेकिन उन ही क़बीलों के मुसलमानों ने उनका मुक़ाबला किया और एक साल नहीं गुज़रने पाया था कि फ़ित्ना व फ़साद ख़त्म हो गया और ह़ालात बदस्तूर ए'तिदाल पर आ गये। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि) के बाद मस्नदे ख़िलाफ़त को ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ज़ीनत बख़्शी। फ़ारस पूरा फ़तह़ हो गया। शाम, अल जज़ाइर, मिस्र और अफ़्रीक़ा के कुछ इलाक़े इस्लामी क़लमरू में शामिल हुए। मस्जिदें ता'मीर हुईं क़ुर्आने अ़ज़ीज़ पढ़ा जाने लगा, तमाम मुमालिक में क़ुर्आन अ़ज़ीज़ के मख़्तूते शाये हुए, मश्रिक़ व मग़्रिब तक मकातिब में उ़लमा से लेकर बच्चों तक क़ुर्आन की तिलावत होने लगी, पूरे दस साल ये सिलसिला जारी रहा। इस्लाम में कभी इख़्तिलाफ़ न था वो एक ही मिल्लत के पाबन्द थे और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इंतिक़ाल के वक़्त मिस्र, इराक़, शाम, यमन के इलाक़ों मे कम अज़ कम क़ुर्आन अ़ज़ीज़ के एक लाख नुस्ख़े शाये हो चुके होंगे। फिर ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में इस्लामी फ़ुतूह़ात और भी वसीअ़ हुईं और क़ुर्आने अ़ज़ीज़ की इशाअ़त मफ़्तूह़ा मुमालिक में वसीअ़ पैमाना पर हुई। क़ुर्आन मजीद के शाये शुदा नुस्ख़ों का उस वक़्त शुमार नामुमकिन होगा। ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) की शहादत से इख़्तिलाफ़ात का दौर शुरू हुआ और रवाफ़िज़ की तह़रीक ने ज़ोर पकड़ा और रवाफ़िज़ ही की वजह से क़ुर्आन मजीद की ह़िफ़ाज़त के बारे में ए'तिराज़ात और शुब्हात शुरू हुए। स़ूरतेह़ाल ये थी कि नाबग़ा और ज़ुहैर के अश्आ़र में कोई कमी बेशी कर दे तो ये मुम्किन नहीं, दुनिया में उसे ज़लील व ख़्वार होना पड़ेगा। क़ुर्आन मजीद का मामला तो और भी मुख़्तलिफ़ है। उस वक़्त क़ुर्आन मजीद उंदुलुस, बरबर, सूडान, काबुल, ख़ुरासान, तुर्क और स़क़ीलिया और हिन्दुस्तान तक फैल चुका था। इससे रवाफ़िज़ की ह़िमाक़त ज़ाहिर हुई और वो क़ुर्आन मजीद की जमा व तालीफ़ में ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) को मुत्तह़म कहते हैं। यही ह़ाल मसीह़ी और समाजी मिशनरियों का है। ये लोग रवाफ़िज़ से सीखकर क़ुर्आन मजीद को अपने नविश्तों की त़रह़ मुह़र्रिफ़ ष़ाबित करने की कोशिश करते हैं, ह़ालाँकि उन ह़ालात में कमी व बेशी एक ह़र्फ़ की भी ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) या किसी दूसरे शख़्स़ के लिये नामुमकिन थी। रवाफ़िज़ और उनके तलामिज़ा की ये ग़लत़बयानी यूँ भी वाज़ेह़ होती है कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) पाँच साल नौ माह तक बा इख़्तियार ख़लीफ़ा रहे और उनके बाद ह़ज़रत ह़सन हुए। उन्होंने क़ुर्आन के बदलने का हुक्म नहीं दिया, न ही अपनी ह़ुकूमत में क़ुर्आने अ़ज़ीज़ का दूसरा स़ह़ीह़ नुस्ख़ा शाये फ़र्माया। ये कैसे बावर कर लिया जाए कि पूरी इस्लामी क़लम रू में ग़लत़ और मुह़र्रफ़ क़ुर्आन पढ़ा जाए और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) उसे आसानी से गवारा करें। (मुख़्तसरल फ़स़्ल फ़िल्मिलल वन्निह़ल, इब्ने ह़ज़्म)

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़ज़म ने क़ुर्आन अ़ज़ीज़ की ह़िफ़ाज़त के बारे में ये बयान मसीह़ी और रवाफ़िज़ की ग़लत़बयानियों

के बारे में लिखा है जो ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की शहादत के बाद अ़र्से तक शाये होती रहीं, शिया चूँकि मुसलमान कहलाते थे और तक़िया का रिवाज उनके यहाँ आ़म था इसलिये इस क़िस्म का मज़्मूम लिट्रेचर रूवात की ग़लती से अहले सुन्नत की रिवायात में भी आ गया। गो मुह़द्दिष़ीन ने ऐसी रिवायात की ह़क़ीक़त को वाजेह़ कर दिया है और उनके किज़्ब और वज़अ़ की ह़क़ीक़त को वाज़ेह़ कर दिया। फ़न्ने ह़दीष़ के माहिर इन रिवायात और आ़ष़ार की ह़क़ीक़त को समझते हैं लेकिन इब्ने ह़ज़्म ने उसूली और इत्तिफ़ाक़ी जवाब दिया है कि इस अ़ज़ीमुश्शान तवातुर के सामने इस मशकूक ज़ख़ीर-ए-रिवायात की अहमियत नहीं, इसलिये जब तआ़रुज़ ही नहीं तो तत़्बीक़ और तरजीह़ का सवाल ही पैदा नहीं होता।

नाक़िल ख़लील अह़मद राज़ी वल्द ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद दाऊद राज़ मद्दज़िल्लहुल आ़ली रहपुवा

ज़िला गुड़गांव (हरियाणा)

अल्ह़म्दुलिल्लाह माह स़फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1394 हिजरी का दूसरा अ़शरा है, अ़स्र का वक़्त है। आज इस पारे की तस्वीद ख़त्म कर रहा हूँ मुझको ख़ुद मा'लूम नहीं कि इस पारे के हर एक लफ़्ज़ को मैंने कितनी कितनी दफ़ा पढ़ा है और ह़क व इज़ाफ़ा के लिये कितनी मर्तबा क़लम को इस्ते'माल किया है, फिर भी इंसान हूँ, कम फ़हम हूँ, बस यही कह सकता हूँ कि इस अहम ख़िदमत में जो भी कोताही हुई हो अल्लाह पाक उसे मुआ़फ़ करे। उम्मीद है कि मुख़्लिस़ उ़लमा-ए-किराम भी कोताहियों के लिये चश्मे अ़फ़्व से काम लेंगे और पुरख़ुलूस़ इस़्लाह़ फ़र्माकर मेरी दुआएँ ह़ास़िल करेंगे। या अल्लाह! जिस त़रह़ तूने इस अहम किताब का ये दूसरा ह़िस़्सा भी पूरा करा दिया है तीसरे ह़िस़्से को भी जो पारा 21 से शुरू होकर 30 पर ख़त्म हो उसे भी पूरा करा दीजियो। मेरी उ़म्रे मुस्तआ़र को इस क़द्र मुहलत अ़त़ा फ़र्माइयो कि ब शर्फ़े तक्मील से मुशर्रफ़ हो सकूँ और क़यामत के दिन अपने तमाम मुआ़विनीने किराम व हमदर्दाने इ़ज़ाम को हमराह लेकर लवाए ह़म्द के नीचे ह़ज़रत सय्यदना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह़) की क़यादत में दरबारे नबवी में ह़ौज़े कौष़र पर ह़ाज़िरी देकर ये ह़क़ीर ख़िदमत पेश कर सकूँ और हमको आँह़ ज़रत (ﷺ) के दस्ते मुबारक से जामे कौष़र नस़ीब हो। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउ़ल्अ़लीम व स़ल्लल्लाहु अ़ला ख़ैरि खल्क़िही मुहम्मदिव्वं आ़लिही व अस़्ह़ाबिही अज्मईन बिरहमतिक या अर्ह़मर्राह़िमीन आमीन षुम्म आमीन**

नाचीज़ ख़ादिमे ह़दीष़े नबवी मुह़म्मद दाऊद वल्द अ़ब्दुल्लाह राज़ सलफ़ी मौज़अ़ रहपुवा जिला गुड़गांव हरियाणा (भारत) (6–3–74)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इक्कीसवां पारा

बाब सूरह फ़ातिहा की फ़ज़ीलत का बयान

(तशरीह अज़् मुतर्जिम)

इस सूरत का सबसे ज़्यादा मशहूर नाम फ़ातिहतुल किताब या अल फ़ातिहा है। फ़ातिहा इब्तिदा और शुरू को कहते हैं, चूँकि तर्तीबे ख़त्ती में ये सूरत कुर्आन मजीद के इब्तिदा में है इसलिये इसका नाम फ़ातिहा रखा गया। फ़ातिहा के मा'नी खोलने के भी हैं। चूँकि ये सूरत कुर्आन मजीद के उलूमे बेपायाँ की चाबी है, इसलिये भी उसे फ़ातिहा कहा गया। इस सूरत के और भी कई एक नाम हैं। मष़लन उम्मुल किताब और उम्मुल कुर्आन चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ में है, **सुम्मियत उम्मुल्किताब लिअन्नहू यब्दउ बिकिताबतिहा फ़िल्मसाहिफ़ व यब्दउ बिक़िरातिहा फ़िस्सलात** सूरह फ़ातिहा का नाम उम्मुल किताब इसलिये रखा गया कि कुर्आन शरीफ़ की किताबत की इब्तिदा इसी से होती है और नमाज़ में क़िरात भी इसी से शुरू होती है। उम्मुल कुर्आन इसे इसलिये भी कहते हैं कि ये कुर्आन की अस़ल और तमाम मक़ासिदे कुर्आन पर मुश्तमिल है। सारे कुर्आन शरीफ़ का ख़ुलासा है या यूँ कहिये कि सारा कुर्आन शरीफ़ इसी की तफ़्सीर है। इस सूरह शरीफ़ा का एक नाम सब्उल मष़ानी भी है या'नी ऐसी सात आयात जो बार बार दोहराई जाती हैं चूँकि सूरह फ़ातिहा की सात आयात हैं और इसे नमाज़ की हर रकअत में दोहराया जाता है इसलिये ख़ुद अल्लाह पाक ने कुर्आन शरीफ़ की आयत शरीफ़ा **व लक़द आतैनाक सब्अम्मिनल्मष़ानी वल्कुर्आनल्अज़ीम** (अल् हिज्र : 87) में इसका नाम सब्उल मष़ानी और अल कुर्आनुल अ़ज़ीम रखा है या'नी ऐ नबी! हमने आपको एक ऐसी सूरत दी है जिसमें सात आयात हैं (जो बार बार पढ़ी जाती हैं) और जो अ़ज़्मत व ष़वाब की बड़ाई के लिहाज़ से सारे कुर्आन शरीफ़ के बराबर है। चुनाँचे इमाम राज़ी फ़र्माते हैं कि ये वो सूरह शरीफ़ा है जिससे दस हज़ार मसाइल निकलते हैं। (तफ़्सीर कबीर)

इस सूरह शरीफ़ा का नाम अस्सलात भी है। चुनाँचे बरिवायत हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) हदीष़ में मज़्कूर है कि **क़स्समतुस्सलात बैनी व बैन अ़ब्दी निस्फ़ैनि व लिअ़ब्दी मा सअल फ़इज़ा क़ालल्अ़ब्दु अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन क़ालल्लाहु हमिदनी अ़ब्दी अल्हदीष़** (मुस्लिम) या'नी अल्लाह पाक फ़र्माता है कि मैंने नमाज़ को अपने दरम्यान और अपने बन्दे के दरम्यान आधा-आधा तक़्सीम कर दिया है और मेरे बन्दे को वो मिलेगा जो उसने मांगा। पस जब बन्दा अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन कहता है तो अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मेरे बन्दे ने मेरी ता'रीफ़ की और जब बन्दा अर्रह्मान निर्रहीम कहता है तो अल्लाह फ़र्माता है कि मेरे बन्दे ने मेरी बड़ी ही शान बयान की और जब बन्दा **इय्याक नअबुदू व इय्याक नस्तईन** कहता है तो अल्लाह फ़र्माता है कि इस आयत का निस्फ़ मेरे लिये और निस्फ़ मेरे बन्दे के लिये है और जो मेरे बन्दे ने मांगा वो उसे मिलेगा आख़िर तक। इस हदीष़ में निहायत स़राहत के साथ अस् स़लात से सूरह फ़ातिहा को मुराद लिया गया है जिससे स़ाफ़ ज़ाहिर है कि नमाज़ की मुकम्मल रूह सूरह फ़ातिहा के अंदर छुपी हुई है।

हम्दो षना, अ़हद व दुआ़, यादे आख़िरत व सिराते मुस्तक़ीम की तलब, गुमराह फ़िर्क़ों पर निशानदेही ये तमाम चीज़ें इस सूरह-ए-शरीफ़ा में आ गई हैं और ये तमाम चीज़ें न सिर्फ़ नमाज़ बल्कि पूरे इस्लाम की और तमाम क़ुर्आन की रूह हैं। इस सूरह शरीफ़ को अस्सलात इसलिये भी कहा गया है कि सेह़ते नमाज़ की बुनियाद इसी सूरह शरीफ़ा की क़िरात पर मौक़ूफ़ है और नमाज़ की हर एक रकअ़त में ख़्वाह नमाज़ फ़र्ज़ हो या सुन्नत या नफ़्ल, इमाम व मुक़्तदी सबके लिये इस सूरह शरीफ़ा का पढ़ना फ़र्ज़ है जैसा कि मुंदर्जा ज़ेल ह़दीष से वाज़ेह़ है। **अन उबादतब्निस्सामित क़ाल समिअ़तु रसूलल्लाहि (ﷺ) यक़ूलु ला सलात लिमल्लम यक़्रा बिफ़ातिहतिल्किताब इमामुन औ गैर इमामिन रवाहुल्बैहक़ी फ़ी किताबिल्क़िरात** ह़ज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़ि.) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप फ़र्माते थे कि जो शख़्स नमाज़ में सूरह फ़ातिह़ा न पढ़े वो इमाम हो या मुक़्तदी उसकी नमाज़ नहीं होती। (तफ़्सील के लिये क़ुर्आन शरीफ़ षनाई तर्जुमा का ज़मीमा पेज नं. 208 वाला मुतालआ करें)

ह़ज़रत पीराने पीर सय्यद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह़) फ़र्माते हैं, **फइन्न क़िरातहा फरीज़तुन व हिय रुक्नुन तब्तुलुस्सलातु बितर्किहा** (गुन्यतुत्तालिबीन, पेज 853) नमाज़ में इस सूरह फ़ातिह़ा की क़िरात फ़र्ज़ है और ये इसका एक ज़रूर रुक्न है जिसके छोड़ने से नमाज़ बातिल हो जाती है, तमाम क़ुर्आन में से सिर्फ़ इसी सूरत को नमाज़ में बतौरे रुक्न के मुक़र्रर किया गया और बाक़ी क़िरात के लिये इख़्तियार दिया गया कि जहाँ से चाहो पढ़ लो। इसकी वजह ये है कि सूरह फ़ातिह़ा पढ़ने में आसान, मज़्मून में जामेअ़ और सारे क़ुर्आन का ख़ुलासा और षवाब में सारे क़ुर्आन ख़त्म के बराबर है। इतने औसाफ़ वाली क़ुर्आन की कोई दूसरी सूरत नहीं है।

इस सूरत के नामों में से सूरह अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन भी है (बुख़ारी व दारे क़ुत्नी)। इसलिये कि इसमें उसूली तौर पर अल्लाह तआ़ला की तमाम मख़्सूस तारीफ़ मज़्कूर हैं और इसको अश्शिफ़ा वर् रुक़्या भी कहा गया है। सुनन दारमी में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सूरह फ़ातिह़ा हर बीमारी के लिये शिफ़ा है (दारमी पेज नं. 430)। आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़हदे मुबारक में एक मौक़े पर एक सह़ाबी ने एक सांप डसे शख़्स पर इस सूरत का दम झाड़ किया था तो उसे शिफ़ा हो गई थी। (बुख़ारी)

इन नामों के अ़लावा और भी इस सूरह शरीफ़ा के अनेक नाम हैं मषलन अल्कन्ज़ (ख़ज़ाना), अल असास (बुनियादी सूरह), अल काफ़िया (काफ़ी वाफ़ी), अश् शाफ़िया (हर बीमारी के लिये शिफ़ा), अल वाफ़िया (काफ़ी वाफ़ी) अश्शुक्र (शुक्र), अद् दुआ़ (दुआ़), ता'लीमुल मसला (अल्लाह से सवाल करने के आदाब सिखाने वाली सूरत), अल मुनाजात (अल्लाह से दुआ़), अत् तफ़्वीज़ (जिसमें बन्दा अपने आपको अल्लाह के ह़वाले कर दे) और भी इसके अनेक नाम मज़्कूर हैं। ये वो सूरह शरीफ़ा है जिसके बारे में आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, **उअ़तीतु फ़ातिहतल्किताब मिन तहतिल्अर्श** (अल ह़सन) या'नी ये सूरत वो सूरत है जिसे मैं अ़र्श के नीचे के ख़ज़ानों में से दिया गया हूँ जिसकी मिषाल कोई सूरत न तौरात में नाज़िल हुई और न इंजील में न ज़बूर में और क़ुर्आन में यही सब्अ़े मषानी है और क़ुर्आन अ़ज़ीम जो मुझे अ़ता हुई (दारमी, पेज नं. 430) ऐसा ही बुख़ारी शरीफ़ किताबुत् तफ़्सीर में मरवी है।

सुनन इब्ने माजा व मुस्नद अह़मद व मुस्तदरक ह़ाकिम में ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) से मरवी है कि एक देहाती ने आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ की कि ह़ज़रत मेरे बेटे को तकलीफ़ है। आपने पूछा कि क्या तकलीफ़ है? उसने कहा कि उसे आसेब है। आपने फ़र्माया, उसे मेरे पास ले आओ चुनाँचे वो ले आया तो आपने उसे अपने सामने बिठाया और उस पर सूरह फ़ातिह़ा और दीगर आयात से दम किया तो वो लड़का उठ खड़ा हुआ गोया कि उसे कोई भी तकलीफ़ न थी। (ह़िस्ने ह़सीन पेज नं. 171)

ख़ुलासा ये कि सूरह फ़ातिह़ा हर मर्ज़ के लिये बतौरे दम के इस्ते'माल की जा सकती है और यक़ीनन इससे शफ़ा ह़ासिल होती है मगर ए'तिक़ादे रासिख़ शर्ते अव्वल है कि बग़ैर ए'तिक़ाद सह़ीह़ व ईमान बिल्लाह के कुछ भी ह़ासिल नहीं नेज़ इस सूरह शरीफ़ा में अल्लाह ही की इ़बादत बंदगी करने और हर क़िस्म की मदद अल्लाह ही से चाहने के बारे में जो ता'लीम दी गई है उस पर भी अमल व अक़ीदा ज़रूरी है। जो लोग अल्लाह पाक के साथ इ़बादत में पीरों, फ़क़ीरों, ज़िंदा मुर्दा बुज़ुर्गों, नबियों, रसूलों या देवी देवताओं को भी शरीक करते हैं वो सब इस सूरह शरीफ़ा की रोशनी में ह़क़ीक़ी तौर पर अल्लाह वह़्दहू

ला शरीक लहू के मानने वाले इस पर ईमान व अक़ीदा रखने वाले नहीं क़रार दिये जा सकते, सच्चे ईमानवालों का सच्चे दिल से अल्लाह के सामने ये अहद होना चाहिये। **इय्यक नअबुदू व इय्यक नस्तईन** या'नी ऐ अल्लाह! हम ख़ास तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं। सच कहा है,

ग़ैरों से मदद मांगनी गर तुझको चाहिये
इय्यक नस्तईन ज़ुबाँ पर न लाइये

सिराते मुस्तक़ीम जिसका ज़िक्र इस सूरह शरीफ़ा में करते हुए इस पर चलने की दुआ हर मोमिन मुसलमान को सिखलाई गई है वो अक़ाइदे हक़्क़ा और आमाले सालेहा के मज्मूआ का नाम है जिनका रुक्ने आज़म सिर्फ़ अल्लाह वाहिद को अपना रब व मालिक व परवरदिगार जानना और सिर्फ़ उसी की इबादत करना है। चुनाँचे हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की ज़ुबानी ज़िक्र किया कि उन्होंने बहुक्मे इलाही बनी इस्राईल से कहा था, **इन्नल्लाह रब्बी व रब्बुकुम फ़अबुदू हाज़ा सिरातुम्मुस्तक़ीम** या'नी बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा रब है सिर्फ़ उसी अकेले की इबादत करो यही सिराते मुस्तक़ीम है। सूरह यासीन में है, **व अनिअ बुदूनी हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम** या'नी सिर्फ़ मेरी ही इबादत करो यही सिराते मुस्तक़ीम है, इसी तरह तौहीदे इलाही पर जमे रहने और शिर्क न करने, माँ–बाप के साथ नेक सुलूक करने, औलाद को क़त्ल न करने, ज़ाहिरी और बातिनी ख़्वाहिश के क़रीब तक न फटकने, नाहक़ ख़ून न करने, नाप तौल को पूरा करने, यतीमों के माल में बेजा तसर्रुफ़ न करने, अदल व इंसाफ़ की बात कहने और अहद के पूरे करने की ताकीद शदीद के बाद फ़र्माया, **व अन्न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमा फत्तबिऊहू व ला तत्तबिउस्सुबुल (अल्आय:)** या'नी यही मेरी सीधी राह है जिसकी पैरवी करनी होगी। यही उन लोगो का रास्ता है जिन पर अल्लाह पाक के इन्आमात की बारिश हुई जिससे अंबिया व सिद्दीक़ीन व शुहदा व सालिहीन मुराद हैं। दीने इलाही में जिसके अरकान ऊपर बयान हुए कमी व ज़्यादती करने वालों को मग़ज़ूब व ज़ाल्लीन कहा गया है यहूद व नसारा इसीलिये मग़ज़ूब व ज़ाल्लीन क़रार पाए कि उन्होंने दीने इलाही में कमी व बेशी करके सच्चे दीन का हुलिया बदल कर रख दिया। पस सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की और उस पर क़ायम रहने की दुआ करना और दीन में कमी बेशी करने वालों की राह से बचे रहने की दुआ मांगना इस सूरह शरीफ़ा का यही ख़ुलासा है।

फ़ज़ाइले आमीन

सूरह फ़ातिहा के ख़त्म होने पर जहरी नमाज़ों में जहर से या'नी बुलंद आवाज़ से और सिर्री नमाज़ों में आहिस्ता आमीन कहना सुन्नते रसूल है। आमीन ऐसा मुबारक लफ़्ज़ है कि मिल्लते इब्राहीमी की तीनों शाख़ों में या'नी यहूद व नसारा और अहले इस्लाम में दुआ के मौक़े पर इसका पुकारना पाया जाता है और ये इबादतगुज़ार लोगों में क़दीमी दस्तूर है आमीन का लफ़्ज़ इब्रानियुल असल है इसका मतलब ये कि या अल्लाह! जो दुआ की गई है उसे क़ुबूल कर ले।

अहादीषे सहीहा से ये क़तई तौर पर षाबित है कि जहरी नमाज़ों में रसूले करीम (ﷺ) और आपके अस्हाबे किराम (रज़ि.) सूरह फ़ातिहा पढ़ने के बाद लफ़्ज़ आमीन को ज़ोर से कहा करते थे। कुछ रिवायात में यहाँ तक है कि अस्हाबे किराम (रज़ि.) की आमीन की आवाज़ से मस्जिद गूंज उठती थी। अस्हाबे रसूल (ﷺ) के अलावा बहुत से ताबेईन, तबेअ ताबेईन, मुहद्दिषीन, अइम्म-ए-दीन, मुज्तहिदीन आमीन बिल जहर के क़ाइल व आमिल हैं। मगर तअज्जुब है उन लोगों पर जिन्होंने इस आमीन बिल जहर ही को वजहे नज़ाअ बनाकर अहले इस्लाम में फूट डाल रखी है और ज़्यादा तअज्जुब उन उलमा पर है जो हक़ीक़ते हाल से वाक़िफ़ होने के बावजूद जबकि हज़रत इमाम शाफ़िई, इमाम अहमद बिन हंबल, हज़रत इमाम मालिक (रह) सब ही आमीन बिल जहर के क़ाइल हैं, अपने मानने वालों को आमीन बिल जहर की नफ़रत से नहीं रोकते। हालाँकि ये चिढ़ना सुन्नते रसूल (ﷺ) से नफ़रत करना है और सुन्नते रसूल (ﷺ) से नफ़रत करना ख़ुद रसूले पाक (ﷺ) से नफ़रत करना है। आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं, **मन रग़िब अन सुन्नती फ़लैस मिन्नी** (मिश्कात) या'नी जो मेरी सुन्नत से नफ़रत करे उसका मुझसे कोई ता'ल्लुक़ नहीं। यूँ तो आमीन बिल जहर के बारे में बहुत सी अहादीष मौजूद हैं मगर हम सिर्फ़ एक ही हदीष दर्ज करते हैं जिसकी सिहत पर दुनिया जहान के सारे मुहद्दिषीन का इत्तिफ़ाक़ है। हज़रत इमाम

मालिक, हज़रत इमाम बुख़ारी, हज़रत इमाम मुस्लिम, हज़रत मुहम्मद, इमाम शाफ़िई, इमाम तिर्मिज़ी, इमाम नसाई, इमाम बैहक़ी रहमतुल्लाह अलैहिम अज्मईन सब ही ने तुरूक़े मुतअद्दा से इस हदीष़ को नक़ल किया है, वो हदीष़ ये है,

अन अबी हुरैरत क़ाल क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) इज़ा अम्मनल्इमामु फ़अम्मिनू फ़इन्नहू मन वाफ़क़ तामीनुहू तामीनल्मलाइकति गुफ़िर लहू मा तक़द्दम मिन्ज़म्बिही क़ाल इब्नु शिहाब व कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) यक़ूलु आमीन. (मुअत्ता इमाम मालिक)

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत करते हैं कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो पस हक़ीक़त ये है कि जिसकी आमीन को फ़रिश्तों की आमीन से मुवाफ़क़त हो गई उसके पहले गुनाह बख़्श दिये गये। इमाम ज़ुह्री (रह़) कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) ख़ुद भी आमीन कहा करते थे।

हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह़) शरह़ बुख़ारी में फ़र्माते हैं कि इस हदीष़ से इस्तिदलाल की सूरत ये है कि अगर मुक़्तदी इमाम की आमीन न सुने तो उसे उसका इल्म नहीं हो सकता हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) ने मुक़्तदी की आमीन को इमाम की आमीन से वाबस्ता किया है पस ज़ाहिर हुआ कि यहाँ इमाम और मुक़्तदी दोनों को आमीन बिल जहर ही के लिये इर्शाद हो रहा है। एक हदीष़ और मुलाहिज़ा हो,

अन वाइलिब्नि हुज्रिन क़ाल समिअतुन्नबिय्य (ﷺ) क़रअ गैरिल्मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन व क़ाल आमीन व मद्द बिहा स़ौतहू रवाहुत्तिर्मिज़ी या'नी हज़रत वाइल बिन हजर (रह़) कहते हैं कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को कहते सुना आपने जब ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन पढ़ा तो आपने उसके ख़त्म पर आमीन कही और अपनी आवाज़ को लफ़्ज़े आमीन के साथ खींचा। (तल्ख़ीसुल हबीर जिल्द नं. 1 पेज नं. 89) में रफ़अ बिहा स़ौतुहू भी आया है या'नी आमीन के साथ आवाज़ को बुलंद किया।

ख़ुलास़ा ये है कि आमीन बिल जहर रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नत है आपकी सुन्नत पर अमल करना बाइ़ष़े ख़ैर व बरकत है और सुन्नते रसूले (ﷺ) से नफ़रत करना दोनों जहानों में ज़िल्लत व रुस्वाई का मौजिब है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को सुन्नते रसूल (ﷺ) पर ज़िंदा रखे और उसी पर मौत नस़ीब फ़र्माए, आमीन।

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

5006. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने बयान किया, कहा मुझसे हबीब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे ह़फ़्स़ बिन आ़स़िम ने और उनसे हज़रत अबू सईद बिन मुअ़ल्ला (रज़ि.) ने कि मैं नमाज़ में मशग़ूल था तो रसूले करीम (ﷺ) ने मुझे बुलाया इसलिये मैं कोई जवाब नहीं दे सका, फिर मैंने (आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर) अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नमाज़ पढ़ रहा था। इस पर आँहज़रत (ﷺ)ने फ़र्माया क्या अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें हुक्म नहीं दिया है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) जब तुम्हें पुकारें तो उनकी पुकार पर फ़ौरन अल्लाह व रसूल के लिए लब्बैक कहा करो। फिर आपने फ़र्माया मस्जिद से निकलने से पहले क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत में तुम्हें क्यूँ न सिखा दूँ। फिर आपने मेरा हाथ पकड़ लिया और

٥٠٠٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: حَدَّثَنِي خُبَيْبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي، فَدَعَانِي النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ أُجِبْهُ. قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي. قَالَ: ((أَلَمْ يَقُلِ اللهُ ﴿اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ﴾)). ثُمَّ قَالَ ((أَلاَ أُعَلِّمُكَ أَعْظَمَ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ

नخرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ؟))، فَأَخَذَ بِيَدِي، فَلَمَّا أَرَدْنَا أَنْ نَخْرُجَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّكَ قُلْتَ لأُعَلِّمَنَّكَ أَعْظَمَ سُورَةٍ مِنَ الْقُرْآنِ، قَالَ: ﴿الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ)). [راجع: ٤٤٧٤]

जब हम मस्जिद से बाहर निकलने लगे तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने अभी फ़र्माया था कि मस्जिद के बाहर निकलने से पहले आप मुझे क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत बताएँगे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ! वो सूरत अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन है यही वो सात आयात हैं जो (हर नमाज़ में) बार बार पढ़ी जाती हैं और यही वो क़ुर्आने अ़ज़ीम है जो मुझे दिया गया है।
(राजेअ़ : 4474)

तश्रीह : क़ुर्आन मजीद के नाज़िल फ़र्माने वाले अल्लाह रब्बुल आलमीन का जिस क़द्र शुक्र अदा करूँ कम है कि इस दौरे गिरानी व ज़ुअफ़े क़ल्बी व क़ालिबी में बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू के बीस पारे पूरे करके तीसरी मंज़िल या'नी पारा 21 का आग़ाज़ कर रहा हूँ, हालात बिलकुल नासाज़गार हैं फिर भी अल्लाह पाक से क़वी उम्मीद है कि वो अपने कलाम और अपने हबीब रसूले करीम (ﷺ) के इर्शादाते आलिया की ख़िदमत व इशाअ़त के लिये ग़ैब से सामान व अस्बाब मुहय्या करेगा और मिष्ले साबिक़ इन बक़ाया पारों की भी तक्मील कराके अपने प्यारे बन्दों और बन्दियों के लिये इसको बाइ़षे रुश्दो-हिदायत क़रार देगा। आख़री अशरा माह जमादिष्षानी 1394 हिजरी में इस पारे की तस्वीद का काम शुरू कर रहा हूँ। तक्मील अल्लाह ही के हाथ में है।

सूरह फ़ातिहा के बारे में हज़रत हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **उख़्तुस्सतिल्फ़ातिहतु बिअन्नहा मब्दउल्क़ुर्आन व हावियतुल्लिजमीइ उ़लूमिही लिइहतिवाइहा अलष्षनाइ अ़लल्लाहि वल्इक़्रारू लिइबादतिही वल्इख़्लासु लहू व सुवालुल्हिदायति मिन्हु वल्इशारतु इलल्इअतिराफ़ि बिल्इ़ज्ज़ि अनिल्क़ियाममि बिनिअ़मिही व इला शानिल्मअ़ादि व बयानि आक़िबतिल्जाहिदीन** (फ़त्हुल्बारी) या'नी सूरह फ़ातिहा की ये ख़ुसूसियात हैं कि ये उ़लूमे क़ुर्आन मजीद का ख़ज़ाना है जो क़ुर्आन पाक के सारे उ़लूम का हादी है ये ष़ना अ़लल्लाह पर मुश्तमिल है इस पर इ़बादत और इख़्लास के लिये बन्दों की त़रफ़ से इज़्हारे इक़रार है और अल्लाह से हिदायत मांगने और अपनी आजिज़ी का इक़रार करने और उसकी नेअ़मतों के क़याम वग़ैरह के ईमान अफ़रोज़ बयानात हैं जो बन्दों की ज़ुबान से इस सूरह शरीफ़ा के ज़रिये ज़ाहिर होते हैं। साथ ही इस सूरत में शाने मआ़द का भी इज़्हार है और जो लोग इस्लाम व क़ुर्आन के मुंकिरीन हैं उनके अंजामे बद पर भी निशानदेही की गई है। पहले इस सूरत के बारे में एक मुफ़स्सल मक़ाला दिया गया है जिससे क़ारेईन ने इस सूरह के बारे में बहुत सी मा'लूमात हासिल कर ली होंगी।

٥٠٠٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى. حَدَّثَنَا وَهْبٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ مَعْبَدٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ : كُنَّا فِي مَسِيرٍ لَنَا، فَنَزَلْنَا، فَجَاءَتْ جَارِيَةٌ فَقَالَتْ : إِنَّ سَيِّدَ الْحَيِّ سَلِيمٌ، وَإِنَّ نَفَرَنَا غَيَبٌ، فَهَلْ مِنْكُمْ رَاقٍ؟ فَقَامَ مَعَهَا رَجُلٌ مَا كُنَّا نَأْبُنُهُ بِرُقْيَةٍ، فَرَقَاهُ فَبَرَأَ، فَأَمَرَ لَهُ بِثَلاثِينَ شَاةً وَسَقَانَا لَبَنًا : فَلَمَّا رَجَعَ قُلْنَا

5007. मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने, उनसे मअ़बद बिन सीरीन ने, और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम एक फ़ौजी सफ़र में थे (रात में) हमने एक क़बीले के नज़दीक पड़ाव किया। फिर एक लौण्डी आई और कहा कि क़बीला के सरदार को बिच्छू ने काट लिया है और हमारे क़बीले के मर्द मौजूद नहीं हैं, क्या तुममें कोई बिच्छू का झाड़ फूँक करने वाला है? एक सहाबी (ख़ुद अबू सईद) उसके साथ खड़े हो गये, हमको मा'लूम था कि वो झाड़—फूँक नहीं जानते लेकिन उन्होंने क़बीले के सरदार को झाड़ा तो उसे सेहत हो गई। उसने उसके शुक्राने में तीस

لَهُ أَكُنْتَ تُحْسِنُ رُقْيَةً أَ كُنْتَ تَرْقِي قَالَ : مَا رَقَيْتُ إِلاَّ بِأُمِّ الْكِتَابِ قُلْنَا : لاَ تُحْدِثُوا شَيْئًا حَتَّى نَأْتِيَ أَوْ نَسْأَلَ النَّبِيَّ ﷺ، فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ ذَكَرْنَاهُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ ((وَمَا كَانَ يُدْرِيهِ أَنَّهَا رُقْيَةٌ؟ اقْسِمُوا وَاضْرِبُوا لِي بِسَهْمٍ)). وَقَالَ أَبُو مَعْمَرٍ : حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ حَدَّثَنِي مَعْبَدُ بْنُ سِيرِينَ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ بِهَذَا.

[راجع: ٢٢٧٦]

बकरियाँ देने का हुक्म दिया और हमें दूध पिलाया। जब वो झाड़ फूँक करके वापस आए तो हमने उनसे पूछा क्या तुम वाक़ई कोई रुक़्या (मंत्र) जानते हो? उन्होंने कहा कि नहीं मैंने तो सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा पढ़कर उस पर दम किया था। हमने कहा कि अच्छा जब तक हम रसूले करीम (ﷺ) से इसके बारे मे न पूछ लें इन बकरियों के बारे में अपनी तरफ़ से कुछ न कहो। चुनाँचे हमने मदीना पहुँचकर आँहुज़ूर (ﷺ) से ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि उन्होंने कैसे जाना कि सूरह फ़ातिहा रुक़्या भी है। (जाओ ये माल हलाल है) इसे तक़्सीम कर लो और इसमें मेरा भी हिस्सा लगाना। और मअ़मर ने बयान किया हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन सीरीन ने बयान किया, कहा हमसे मअ़बद बिन सीरीन ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने यही वाक़िया बयान किया। (राजेअ : 2276)

١٠- باب فَضْلُ سورة الْبَقَرَةِ

बाब 10 : सूरह बक़रः की फ़ज़ीलत के बयान में

ये सूरत मदीना में नाज़िल हुई और इसमें 286 आयात और 40 रुकूअ़ हैं।

٥٠٠٨- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَرَأَ بِالآيَتَيْنِ)).

[راجع: ٤٠٠٨]

5008. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें सुलैमान बिन मेहरान ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद ने, उन्हें हज़रत अबू मसऊ़द अंसारी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (सूरह बक़रः में से) जिसने भी दो आख़िरी आयतें पढ़ीं। (दूसरी सनद) (राजेअ : 4008)

٥٠٠٩- حدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ. عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ قَرَأَ بِالآيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)).[راجع: ٤٠٠٨]

5009. और हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअतमिर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन यज़ीद ने और उनसे हज़रत अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने सूरह बक़रः की दो आख़िरी आयतें रात में पढ़ लीं वो उसे हर आफ़त से बचाने के लिये काफ़ी हो जाएँगी। (राजेअ : 4008)

5010. और उ़ष्मान बिन हैषम ने कहा कि हमसे औ़फ़ बिन अबी जमीला ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने मुझे स़दक़-ए-फ़ित्र की ह़िफ़ाज़त पर मुक़र्रर फ़र्माया। फिर एक शख़्स आया और दोनों हाथों से (खजूरें) समेटने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा कि मैं तुझे रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पेश करूँगा । फिर उन्होंने ये पूरा क़िस्सा बयान किया (मुफ़स्सल ह़दीष़ इससे पहल किताबुल वकालत में गुज़र चुकी है) (जो स़दक़ा फ़ित्र चुराने आया था) उसने कहा कि जब तुम रात को अपने बिस्तर पर सोने के लिये जाओ तो आयतल कुर्सी पढ़ लिया करो, फिर सुबह़ तक अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से तुम्हारी ह़िफ़ाज़त करने वाला एक फ़रिश्ता मुक़र्रर हो जाएगा और शैत़ान तुम्हारे पास भी न आ सकेगा। (ह़ज़रत अबू हुरैरह रज़ि ने ये बात आप ﷺ से बयान की तो) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उसने तुम्हें ये ठीक बात बताई है अगरचे वो बड़ा झूठा है, वो शैत़ान था। (राजेअ़ : 2311)

٥٠١٠- وقال عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ : حَدَّثَنَا عوْفٌ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَكَّلَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ بِحِفْظِ زَكَاةِ رَمَضَانَ، فَأَتَانِي آتٍ فَجَعَلَ يَحْثُو مِنَ الطَّعَامِ، فَأَخَذْتُهُ فَقُلْتُ : لأَرْفَعَنَّكَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَصَّ الْحَدِيثَ، فَقَالَ: ((إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَاقْرَأْ آيَةَ الْكُرْسِيِّ لَنْ يَزَالَ مَعَكَ مِنَ اللهِ حَافِظٌ وَلاَ يَقْرَبُكَ شَيْطَانٌ حَتَّى تُصْبِحَ. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ- صَدَقَكَ وَهُوَ كَذُوبٌ، ذَاكَ شَيْطَانٌ)). [راجع: ٢٣١١]

तश्रीह : सूरह बक़रः क़ुर्आन मजीद की सबसे बड़ी सूरत है। बक़रः गाय को कहते हैं । इस सूरत में बनी इस्राईल की एक गाय का ज़िक्र है जिसे एक ख़ास़ मक़्स्द के तह़त ह़ज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के हुक्म से ज़िब्ह़ किया गया था। इसी गाय से इस सूरत को मौसूम किया गया। अह़काम व मन्हियाते इस्लाम के लिह़ाज़ से ये बड़ी जामेअ़ सूरत है जिसके फ़ज़ाइल बयान करने के लिये एक दफ़्तर भी नाकाफ़ी है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने उसकी आख़री दो आयत और आयतल कुर्सी की फ़ज़ीलत बयान करके पूरी सूरत के फ़ज़ाइल पर इशारा फ़र्मा दिया है। **व फ़ीहि किफ़ायतुन लिमल् लहू दिरायत।**

सूरह बक़रः की आख़िरी दो आयतों के काफ़ी होने का मत़लब कुछ ह़ज़रात ने ये भी बयान किया है कि जो शख़्स़ सोते वक़्त इनको पढ़ लेगा उसके वास्ते ये पढ़ना रात के क़याम का बदल हो जाएगा और तहज्जुद का ष़वाब उसे मिल जाएगा। ह़ज़रत उ़ष्मान बिन हैशम वाली रिवायत को इस्माईल और अबू नुऐ़म ने वस़्ल किया है। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) वाला क़िस़्सा किताबुल वकालह में भी गुज़र चुका है। पहले दिन ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने उसकी आजिज़ी और मुह़ताजी पर रह़म करके उसको छोड़ दिया। कहने लगा कि मैं बाल–बच्चे वाला बहुत ही मुह़ताज हूँ। दूसरे दिन फिर आया और खजूरें चुराने लगा तो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने पकड़ा वो बहुत आ़जिज़ी करने लगा, उन्होंने छोड़ दिया। तीसरे दिन फिर आया और चुराने लगा तो ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने सख़्ती की और गिरफ़्तार कर लिया। उसने बहुत आ़जिज़ी की और आख़िरी में ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को आयतल कुर्सी का मज़्कूरा वज़ीफ़ा बतलाया।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) सूरह बक़रः की फ़ज़ीलत में सिर्फ़ यही रिवायत लाए हैं वरना इस सूरत की फ़ज़ीलत में और भी बहुत सी अह़ादीष़ मरवी हैं। क़ुर्आन पाक की ये सबसे बड़ी सूरत है और मज़ामीन के लिह़ाज़ से भी ये एक बह़्रे ज़ख़ार है सूरह बक़रः की आख़िरी दो आयात **आमनर्रसूलु बिमा उंज़िला इलैहि मिन् रब्बिही अल्अख़** के बारे में ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **फ़क़्रजहुम व अ़ल्लिमूहुमा अब्नाअकुम व निसाअकुम फ़इन्नहुमा क़ुर्आनुन व स़लातुन व दुआउन** (फ़त्ह़) या'नी इन आयात को ख़ुद पढ़ो, अपने बच्चों और औ़रतों को सिखाओ ये आयात मग़ज़े क़ुर्आन हैं , ये नमाज़ हैं और ये दुआ हैं।

बाब 11 : सूरह कहफ़ की फ़ज़ीलत के बयान में

١١- باب فَضْلِ الْكَهْفِ

ये सूरत मक्का मुअ़ज़मा में नाज़िल हुई इसमें 110 आयात और 12 रुकूअ़ हैं।

5011. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि एक सहाबी (उसैद बिन हुज़ैर) सूरह कहफ़ पढ़ रहे थे। उनके एक तरफ़ एक घोड़ा दो रस्सों से बँधा हुआ था। उस वक़्त एक अब्र (बादल) ऊपर से से आया और नज़दीक से नज़दीकतर होने लगा। उनका घोड़ा उसकी वजह से बिदकने लगा। फिर सुबह के वक़्त वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे इसका ज़िक्र किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो (अब्र का टुकड़ा) सकीना था जो कुर्आन की तिलावत की वजह से उतरा था। (राजेअ़ : 3614)

٥٠١١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ يَقْرَأُ سُورَةَ الْكَهْفِ، وَإِلَى جَانِبِهِ حِصَانٌ مَرْبُوطٌ بِشَطَنَيْنِ، فَتَغَشَّتْهُ سَحَابَةٌ، فَجَعَلَتْ تَدْنُو وَتَدْنُو، وَجَعَلَ فَرَسُهُ يَنْفِرُ. فَلَمَّا أَصْبَحَ أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ: ((تِلْكَ السَّكِينَةُ تَنَزَّلَتْ بِالْقُرْآنِ)). [راجع: ٣٦١٤]

तश्रीह़ : कहफ़ ग़ार को कहते हैं। पिछले ज़माने में चंद नौजवान शिर्क से बेज़ार होकर तौह़ीद के शैदाई बन गये थे मगर हुकूमत और अ़वाम ने उनका पीछा किया लिहाज़ा वो पहाड़ के एक ग़ार में पनाह गुज़ीं हो गये। जिनका तफ़्सीली वाक़िया इस सूरत में मौजूद है, इसलिये उसे लफ़्ज़े कहफ़ से मौसूम किया गया। इस सूरत के भी बहुत से फ़ज़ाइल हैं एक ह़दीष़ में आया कि जो मुसलमान उसे हर जुम्आ़ को तिलावत करेगा अल्लाह उसे फ़ित्न-ए-दज्जाल से महफ़ूज़ रखेगा। ह़दीष़े मज़्कूरा से भी इसकी बड़ी फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है।

बाब 12 : सूरह फ़तह़ की फ़ज़ीलत का बयान

١٢- باب فَضْلِ سُورَةِ الْفَتْحِ

ये सूरत मदीना मुनव्वरा में नाज़िल हुई और इसमे 29 आयात और 4 रुकूअ़ हैं।

5012. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने और उनसे उनके वालिद असलम ने कि रसूले करीम (ﷺ) रात को एक सफ़र में जा रहे थे। ह़ज़रत इ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी आपके साथ थे। ह़ज़रत इ़मर (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से कुछ पूछा। लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसका कोई जवाब न दिया। ह़ज़रत इ़मर (रज़ि.) ने फिर पूछा आपने फिर कोई जवाब नहीं दिया। तीसरी बार फिर पूछा और जब इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया तो ह़ज़रत इ़मर (रज़ि.) ने (अपने आपको) कहा तेरी माँ तुझ पर रोये तूने आँहुज़ूर (ﷺ) से तीन बार आ़जिज़ी से सवाल किया और आँह़ज़रत (ﷺ) ने किसी मर्तबा भी जवाब नहीं दिया। ह़ज़रत इ़मर (रज़ि.) ने

٥٠١٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ كَانَ يَسِيرُ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَسِيرُ مَعَهُ لَيْلاً، فَسَأَلَهُ عُمَرُ عَنْ شَيْءٍ فَلَمْ يُجِبْهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ، ثُمَّ سَأَلَهُ فَلَمْ يُجِبْهُ. فَقَالَ عُمَرُ: ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ نَزَرْتَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ كُلُّ ذَلِكَ لاَ يُجِيبُكَ. قَالَ عُمَرُ: فَحَرَّكْتُ

बयान किया कि फिर मैंने अपनी ऊँटनी को दौड़ाया और लोगों से आगे हो गया (आपके बराबर चलना छोड़ दिया) मुझे डर था कि कहीं इस हरकत पर मेरे बारे में कोई आयत नाज़िल न हो जाए अभी थोड़ा ही वक़्त गुज़रा था कि मैंने एक पुकारने वाले को सुना जो पुकार रहा था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने सोचा मुझे तो डर था ही कि मेरे बारे में कुछ वह्य नाज़िल होगी। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया चुनाँचे मैं रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आया और मैंने आपको सलाम किया (सलाम के जवाब के बाद आँहज़रत ﷺ ने फ़र्माया कि ऐ उमर! आज रात मुझ पर ऐसी सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे उन सब चीज़ों से ज़्यादा पसंद है जिन पर सूरज निकलता है। फिर आपने सूरह इन्ना फ़तहना लक फत्हम्मुबीना की तिलावत फ़र्माई। (राजेअ : 4177)

بَعِيرِي حَتَّى كُنْتُ أَمَامَ النَّاسِ وَخَشِيتُ أَنْ يَنْزِلَ فِيَّ قُرْآنٌ، فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ، قَالَ: فَقُلْتُ: لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزَلَ فِيَّ قُرْآنٌ، قَالَ: فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَقَالَ: ((لَقَدْ أُنْزِلَتْ عَلَيَّ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ لَهِيَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾)).

[راجع: ٤١٧٧]

तश्रीह : इस सूरत की फ़ज़ीलत के लिये ये ह़दीष़ काफ़ी वाफ़ी है, इसका ता'ल्लुक़ सुलह़ हुदैबिया से है जिसके बाद फ़तहे-इस्लामी का दरवाज़ा खुल गया। इस लिहाज़ से इस सूरत को एक ख़ास़ तारीख़ी हैषियत हासिल है।

बाब 13 : सूरह क़ुल हुवल्लाहु अहद की फ़ज़ीलत

इस बाब में नबी करीम की एक ह़दीष़ अम्रा ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से नक़ल की है।

١٣- باب فَضْلِ ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾

فِيهِ عَمْرَةُ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

जो मक्का में नाज़िल हुई और इस सूरत में तीन आयात हैं।

5013. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन उबई स़अ़स़आ ने, उन्हें उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह ने और उन्हें ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि एक स़हाबी (ख़ुद अबू सईद ख़ुदरी रज़ि.) ने एक दूसरे स़हाबी (क़तादा बिन नोअमान रज़ि.) अपने माँ जाए भाई को देखा कि वो रात को सूरह क़ुल हुवल्लाह बार बार पढ़ रहे हैं। सुबह हुई तो वो स़हाबी (अबू सईद रज़ि) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आँहज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया गोया उन्होंने समझा कि उसमे कोई बड़ा ष़वाब न होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! ये सूरत क़ुर्आन मजीद के एक तिहाई हिस्से के बराबर है। (दीगर मक़ाम : 6643, 7374)

٥٠١٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ. أَنَّ رَجُلاً سَمِعَ رَجُلاً يَقْرَأُ: ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ يُرَدِّدُهَا، فَلَمَّا أَصْبَحَ جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ، وَكَأَنَّ الرَّجُلَ يَتَقَالُّهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّهَا لَتَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ)).

[طرفاه في : ٦٦٤٣، ٧٣٧٤].

5014. और अबू मअ़मर (अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र मन्क़री) ने इतना ज़्यादा किया कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी स़अ़स़अ़ा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि मुझे मेरे भाई ह़ज़रत क़तादा बिन नोअ़मान (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक स़ह़ाबी नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में सेहरी के वक़्त से खड़े क़ुल हुवल्लाहु अह़द पढ़ते रहे। उनके सिवा और कुछ नहीं पढ़ते थे। फिर जब सुबह़ हुई तो दूसरे स़ह़ाबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए (बाक़ी ह़िस़्सा) पिछली ह़दीष़ की त़रह़ बयान किया।

٥٠١٤- وَزَادَ أَبُو مَعْمَرٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَخِي قَتَادَةُ بْنُ النُّعْمَانِ أَنَّ رَجُلاً قَامَ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ يَقْرَأُ مِنَ السَّحَرِ: ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ لاَ يَزِيدُ عَلَيْهَا. فَلَمَّا أَصْبَحْنَا أَتَى الرَّجُلُ النَّبِيَّ ﷺ نَحْوَهُ.

इस सूरत से ख़ुसूसी मुह़ब्बत और इसका विर्द वज़ीफ़ा तरक़्क़ियाते दारैन के लिये अकसीर का दर्जा रखता है क्योंकि इसमें तौह़ीदे ख़ालिस़ का बयान और शिर्क की तमाम क़िस्मों की मज़म्मत और अ़क़ाइदे बात़िला की बैख़-कनी है।

तश्रीह : ये ह़दीष़ आगे मौस़ूलन मज़्कूर होगी उसमें ये है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक शख़्स़ को फ़ौज का सरदार बनाकर भेजा वो अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाता और हर रकअ़त मे क़िरात क़ुल हुवल्लाहु अह़द पर ख़त्म करता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये सुनकर फ़र्माया कि उससे कह दो कि अल्लाह पाक भी उससे मुह़ब्बत रखता है। दूसरी रिवायत में है कि क़ुल हुवल्लाहु अह़द की मुह़ब्बत ने तुझको जन्नत में दाख़िल कर दिया है। तीसरी ह़दीष़ में है जो शख़्स़ सोते वक़्त सौ बार क़ुल हुवल्लाहु अह़द को पढ़ ले तो क़यामत के दिन परवरदिगार फ़र्माएगा मेरे बन्दे! जन्नत में दाख़िल हो जा जो तेरे दाहिने त़रफ़ है। इस सूरत के तीन बार पढ़ लेने से पूरे क़ुर्आन मजीद के पूरा करने का ष़वाब मिल जाता है।

5015. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम नख़ई और ज़िह़ाक मश्रिक़ी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने स़ह़ाबा से फ़र्माया क्या तुममें से किसी के लिये ये मुम्किन नहीं कि क़ुर्आन का एक तिहाई ह़िस़्सा एक रात में पढ़ा करे। स़ह़ाबा को ये अ़मल बड़ा मुश्किल मा'लूम हुआ और उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हममें से कौन इसकी त़ाक़त रखता है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि क़ुल हुवल्लाहु अह़द अल्लाहुस़्समद क़ुर्आन मजीद का एक तिहाई ह़िस़्सा है। मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रबरी ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह़) के कातिब अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अबी ह़ातिम से सुना, वो कहते थे कि इमाम बुख़ारी (रह़) ने कहा इब्राहीम नख़ई की रिवायत ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से मुन्क़त़अ है

٥٠١٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ وَالضَّحَّاكُ الْمَشْرِقِيُّ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لأَصْحَابِهِ: ((أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَقْرَأَ ثُلُثَ الْقُرْآنِ فِي لَيْلَةٍ)). فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ، وَقَالُوا: أَيُّنَا يُطِيقُ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ فَقَالَ: ((اللهُ الْوَاحِدُ الصَّمَدُ ثُلُثُ الْقُرْآنِ)). قَالَ الْفِرَبْرِيُّ: سَمِعْتُ أَبَا جَعْفَرٍ مُحَمَّدَ بْنَ أَبِي حَاتِمٍ وَرَّاقَ أَبِي عَبْدِ اللهِ: عَنْ إِبْرَاهِيمَ مُرْسَلٌ، وَعَنِ الضَّحَّاكِ الْمَشْرِقِيِّ مُسْنَدٌ.

(इब्राहीम ने अबू सईद से नहीं सुना) लेकिन ज़िहाक मश्रिक़ी की रिवायत अबू सईद से मुत्तसिल है।

तश्रीह : इसीलिये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने इस ह़दीष़ को अपनी स़ह़ीह़ में निकाला अगर ये ह़दीष़ सिर्फ़ इब्राहीम नख़ई के त़रीक़ से मरवी होती तो ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) इसको न लाते क्योंकि वो मुन्क़त़अ है। इमाम बुख़ारी (रह़) और अकष़र अहले ह़दीष़ मुन्क़त़अ को मुरसल और मुत्तसिल को मुस्नद कहते हैं (वह़ीदी) इस सूरत को सूरह इख़्लास़ का नाम दिया गया है इसकी फ़ज़ीलत के लिये ये अह़ादीष़ काफ़ी हैं जो ह़ज़रत इमाम (रह़) ने यहाँ नक़ल की हैं।

बाब 14 : मुअव्विज़ात की फ़ज़ीलत का बयान

١٤- باب فَضْلِ الْمُعَوِّذَاتِ

5016. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उन्हें आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) जब बीमार पड़ते तो मुअ़व्विज़ात की सूरतें पढ़कर उसे अपने ऊपर दम करते (इस त़रह कि हवा के साथ कुछ थूक भी निकलता) फिर जब (मर्ज़ुल मौत में) आपकी तकलीफ़ बढ़ गई तो मैं उन सूरतों को पढ़कर आँहुज़ूर (ﷺ) के हाथों से बरकत की उम्मीद में आपके जसदे मुबारक पर फेरती थी।
(राजेअ़ : 4439)

٥٠١٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا اشْتَكَى يَقْرَأُ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَيَنْفُثُ، فَلَمَّا اشْتَدَّ وَجَعُهُ كُنْتُ أَقْرَأُ عَلَيْهِ وَأَمْسَحُ بِيَدِهِ رَجَاءَ بَرَكَتِهَا. [راجع: ٤٤٣٩]

तश्रीह : मुअ़व्विज़ात से तीन सूरतें सूरह इख़्लास़, सूरह फ़लक़ और सूरह नास मुराद हैं। दम पढ़ने के लिये इन सूरतों की ताष़ीर फ़िल वाक़ेअ़ अकसीर का दर्जा रखती है। तअ़ज्जुब है उन अह़मक़ नामोनिहाद आ़मिलों पर जो बनावटी महमल लफ़्ज़ों में छू मंतर करते और क़ुर्आनी अकसीर सूरतों से मुँह मोड़ते हैं।

5017. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुफ़ज़्ज़ल बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़क़ील बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने बयान किया, और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हर रात जब बिस्तर पर आराम फ़र्माते तो अपनी दोनों हथेलियों को मिलाकर क़ुल हुवल्लाहु अह़द, क़ुल अऊ़ज़ुबि रब्बिल फ़लक़ और क़ुल अऊ़ज़ुबि रब्बिन्नास (तीनों सूरतें मुकम्मल) पढ़कर उन पर फूँकते और फिर दोनों हथेलियों को जहाँ तक मुम्किन होता अपने जिस्म पर फेरते थे। पहले सर और चेहरा पर हाथ फेरते और सामने के बदन पर। ये अ़मल आप तीन बार करते थे।
(दीगर मक़ाम : 6319, 5748)

٥٠١٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا الْمُفَضَّلُ بْنُ فَضَالَةَ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ كُلَّ لَيْلَةٍ جَمَعَ كَفَّيْهِ ثُمَّ نَفَثَ فِيهِمَا فَقَرَأَ فِيهِمَا: ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ وَ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ وَ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا مَا اسْتَطَاعَ مِنْ جَسَدِهِ، يَبْدَأُ بِهِمَا عَلَى رَأْسِهِ وَوَجْهِهِ وَمَا أَقْبَلَ مِنْ جَسَدِهِ، يَفْعَلُ ذَلِكَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ.
[طرفاه في : ٥٧٤٨، ٦٣١٩].

तश्रीह : एक मर्तबा आँहुज़ूर (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन असलम (रज़ि.) के सीने पर हाथ रखकर फ़र्माया कह! वो न समझे कि क्या कहें फिर फ़र्माया कह! तो उन्होंने **कुलहुवल्लाहु अह़द** पढ़ी। आपने फ़र्माया, कह! फ़र्माया फिर **कुल अऊ़ज़ुबि रब्बिल फ़लक़** पढ़ी। आपने फिर यही फ़र्माया तो **कुल अऊ़ज़ुबि रब्बिन्नास** पढ़ी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसी त़रह़ पनाह मांगा कर इन जैसी पनाह मांगने की और सूरतें नहीं हैं।

बाब 15 : क़ुर्आन की तिलावत के वक़्त सकीनत और फ़रिश्तों के उतरने का बयान

١٥- باب نُزُولِ السَّكِينَةِ وَالْمَلاَئِكَةِ عِنْدَ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ.

5018. और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझसे यज़ीद बिन हाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने कि उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने बयान किया कि रात के वक़्त वो सूरह बक़रः की तिलावत कर रहे थे और उनका घोड़ा उनके पास ही बंधा हुआ था। इतने में घोड़ा बिदकने लगा तो उन्होंने तिलावत बंद कर दी तो घोड़ा भी रुक गया। फिर उन्होंने तिलावत शुरू की तो घोड़ा फिर बिदकने लगा। इस बार भी जब उन्होंने तिलावत बंद की तो घोड़ा भी ख़ामोश हो गया। तीसरी मर्तबा उन्होंने जब तिलावत शुरू की तो फिर घोड़ा बिदका। उनके बेटे यह्या चूँकि घोड़े के क़रीब ही थे इसलिये इस डर से कि कहीं उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुँच जाए। उन्होंने तिलावत बंद कर दी और बच्चे को वहाँ से हटा दिया फिर ऊपर नज़र उठाई तो कुछ न दिखाई दिया। सुबह के वक़्त ये वाक़िया उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इब्ने हुज़ैर! तुम पढ़ते रहते तिलावत बंद न करते (तो बेहतर था) उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे डर लगा कि कहीं घोड़ा मेरे बच्चे यह्या को न कुचल डाले, वो उससे बहुत क़रीब था। मैंने सर ऊपर उठाया और फिर यह्या की त़रफ़ गया। फिर मैंने आसमान की त़रफ़ सर उठाया तो एक छतरी सी नज़र आई जिसमें रोशन चिराग़ थे। फिर जब मैं दोबारा बाहर आया तो मैंने उसे नहीं देखा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें मा'लूम भी है वो क्या चीज़ थी? उसैद (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो फ़रिश्ते थे तुम्हारी आवाज़ सुनने के लिये क़रीब हो रहे थे अगर तुम रात भर पढ़ते रहते तो सुबह तक और लोग भी उन्हें देखते वो लोगों से छुपते नहीं। और इब्नुल हाद ने बयान किया, कहा मुझसे ये

٥٠١٨- وقال اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ الْهَادِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ قَالَ: بَيْنَمَا هُوَ يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ سُورَةَ الْبَقَرَةِ وَفَرَسُهُ مَرْبُوطٌ عِنْدَهُ إِذْ جَالَتِ الْفَرَسُ، فَسَكَتَ فَسَكَتَتْ، فَقَرَأَ فَجَالَتِ الْفَرَسُ، فَسَكَتَ وَسَكَتَتِ الْفَرَسُ، ثُمَّ قَرَأَ فَجَالَتِ الْفَرَسُ فَانْصَرَفَ، وَكَانَ ابْنُهُ يَحْيَى قَرِيبًا مِنْهَا فَأَشْفَقَ أَنْ تُصِيبَهُ، فَلَمَّا اجْتَرَّهُ رَفَعَ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ حَتَّى مَا يَرَاهَا، فَلَمَّا أَصْبَحَ حَدَّثَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((اقْرَأْ يَا ابْنَ حُضَيْرٍ، اقْرَأْ يَا ابْنَ حُضَيْرٍ)). قَالَ : فَأَشْفَقْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَنْ تَطَأَ يَحْيَى، وَكَانَ مِنْهَا قَرِيبًا، فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَانْصَرَفْتُ إِلَيْهِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِي إِلَى السَّمَاءِ، فَإِذَا مِثْلُ الظُّلَّةِ فِيهَا أَمْثَالُ الْمَصَابِيحِ، فَخَرَجَتْ حَتَّى لاَ أَرَاهَا، قَالَ ((وَتَدْرِي مَا ذَاكَ؟)) قَالَ : لاَ. قَالَ: ((تِلْكَ الْمَلاَئِكَةُ دَنَتْ لِصَوْتِكَ، وَلَوْ قَرَأْتَ لأَصْبَحَتْ يَنْظُرُ النَّاسُ إِلَيْهَا، لاَ تَتَوَارَى مِنْهُمْ)). قَالَ ابْنُ الْهَادِ، وَحَدَّثَنِي هَذَا الْحَدِيثَ عَبْدُ اللهِ بْنُ خَبَّابٍ، عَنْ

हदीष़ अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने बयान की, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने।

أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ.

फ़रिश्ते ग़ैर मरई मख़्लूक़ हैं इसलिये अल्लाह पाक ने इस मौक़े पर भी उनको नज़रों से पोशिदा कर दिया। इससे सूरह बक़रः की इंतिहाई फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई।

बाब 16 : उसके बारे में जिसने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने जो क़ुर्आन तर्का में छोड़ा वो सब मुस्हफ़ में दो लौहों के दरम्यान महफ़ूज़ है, उसका ये कहना सहीह है

١٦- باب مَنْ قَالَ: لَمْ يَتْرُكِ النَّبِيُّ ﷺ إِلاَّ مَا بَيْنَ الدَّفَّتَيْنِ

5019.हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रफ़ीअ़ ने बयान किया कि मैं और शद्दाद बिन मअ़क़ल इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के पास गये। शद्दाद बिन मअ़क़ल ने उनसे पूछा क्या नबी करीम (ﷺ) ने इस क़ुर्आन के सिवा कोई और भी क़ुर्आन छोड़ा था। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने (वह्ये मतलू) जो कुछ भी छोड़ी हैवो सबकी सब इन दो दफ़्तियों के दरम्यान सहीफ़ा में महफ़ूज़ है। अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रबीअ़ बयान करते हैं कि हम मुहम्मद बिन हनीफ़ा की ख़िदमत में भी हाज़िर हुए और उनसे भी पूछा तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने जो भी वह्ये मतलू छोड़ी वो सब दो दफ़्तियों के बीच (क़ुर्आन मजीद की शक्ल में) महफ़ूज़ है।

٥٠١٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ قَالَ: دَخَلْتُ أَنَا وَشَدَّادُ بْنُ مَعْقِلٍ عَلَى ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، فَقَالَ لَهُ شَدَّادُ بْنُ مَعْقِلٍ: أَتَرَكَ النَّبِيُّ ﷺ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالَ مَا تَرَكَ إِلاَّ مَا بَيْنَ الدَّفَّتَيْنِ. قَالَ: وَدَخَلْنَا عَلَى مُحَمَّدِ بْنِ الْحَنَفِيَّةِ فَسَأَلْنَاهُ، فَقَالَ: مَا تَرَكَ إِلاَّ مَا بَيْنَ الدَّفَّتَيْنِ.

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने ये दोनों अष़र लाकर उन लोगों का रद्द किया है जो कहते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ में हज़रत अ़ली (रज़ि.) की इमामत का ज़िक्र उतरा था मगर उन आयात को सहाबा (रज़ि.) ने निकाल डाला। जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को जो आँहज़रत (ﷺ) के चचाज़ाद भाई हैं और मुहम्मद बिन हनीफ़ा को जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) के साहबज़ादे हैं इन बातों की ख़बर न हो तो और लोगों को कैसे मा'लूम हो सकती है। मा'लूम हुआ कि राफ़ज़ियों का गुमान ग़लत है। (वहीदी)

इससे उन राफ़ज़ियों का रद्द मंज़ूर है जो कहते हैं ये पूरा क़ुर्आन नहीं है कई सूरतें जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) और अहले बैत (रज़ि.) की फ़ज़ीलत में उतरी थीं मआ़ज़ अल्लाह सहाबा (रज़ि.) ने उनको निकाल डाला है और एक शिया ने अपनी एक किताब में एक सूरत हज़रत अ़ली (रज़ि.) के नाम पर मौसूम करके सूरह अ़ली के नाम नक़ल कर डाली है उसका शुरू ये है **या अय्युहल्लज़ीन आमनु आमिनु बिन्नूरैनि अन्ज़ल्ना हुमा यत्लुवानि अलैकुम आयाती व युहज़्ज़िरानिकुम अज़ाब यौमिन अ़ज़ीम** अल्अख़ मआ़ज़ अल्लाह! ये सारी इ़बारत बिलकुल बेमानी है जिसे देखने ही से उसके गढ़ने वाले की हिमाक़त मा'लूम होती है। आजकल भी बहुत से शिया हज़रात औहामे बातिला में गिरफ़्तार हैं जिनका ख़्याल है कि क़ुर्आन शरीफ़ के दस पारे ग़ायब कर दिये गये हैं **नऊ़ज़ुबिल्लाहि मिन हाज़िहिल इन्हिराफ़ात**

बाब 17 : क़ुर्आन मजीद की फ़ज़ीलत दूसरे तमाम कलामों पर किस क़दर है?

١٧- باب فَضْلِ الْقُرْآنِ عَلَى سَائِرِ الْكَلاَمِ

ये तर्जुमा-ए-बाब ख़ुद एक ह़दीष़ से निकलता है जिसे इमाम तिर्मिज़ी ने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से निकाला है। उसमें यूँ है कि अल्लाह के कलाम की फ़ज़ीलत दूसरे कलामों पर ऐसी है जैसे ख़ुद अल्लाह की फ़ज़ीलत उसकी मख़्लूक़ पर है ह़दीष़ **फइन्न ख़ैरल्हदीषि किताबुल्लाह** का यही मत़लब है इसीलिये कहा गया है कि कलामुल मुलूक मुलूकुल कलाम बादशाहों का कलाम भी कलामों का बादशाह हुआ करता है।

5020. हमसे अबू ख़ालिद हदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी (मोमिन की) मिष़ाल जो क़ुर्आन की तिलावत करता है संतरे की सी है जिसका मज़ा भी लज़ीज़ होता है और जिसकी ख़ुश्बू भी बेहतरीन होती है और जो (मोमिन) क़ुर्आन की तिलावत नहीं करता उसकी मिष़ाल खजूर की सी है जिसका मज़ा तो उम्दह होता है लेकिन उसमे ख़ुश्बू नहीं होती और उस बदकार (मुनाफ़िक़) की मिष़ाल जो क़ुर्आन की तिलावत करता है रयह़ाना की सी है कि उसकी ख़ुश्बू तो अच्छी होती है लेकिन मज़ा कड़वा होता है और उस बदकार की मिष़ाल जो क़ुर्आन की तिलावत भी नहीं करता उंदराइन की सी है जिसका मज़ा भी कड़वा होता है और उसमें कोई ख़ुश्बू भी नहीं होती। (दीगर मक़ाम : 5059, 5427, 7560)

٥٠٢٠- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ أَبُو خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَالأُتْرُجَّةِ، طَعْمُهَا طَيِّبٌ وَرِيحُهَا طَيِّبٌ، وَالَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَالتَّمْرَةِ طَعْمُهَا طَيِّبٌ لاَ رِيحَ لَهَا. وَمَثَلُ الْفَاجِرِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ الرَّيْحَانَةِ رِيحُهَا طَيِّبٌ، وَطَعْمُهَا مُرٌّ، وَمَثَلُ الْفَاجِرِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ، كَمَثَلِ الْحَنْظَلَةِ طَعْمُهَا مُرٌّ، وَلاَ رِيحَ لَهَا)).

[أطرافه في : ٥٠٥٩، ٥٤٢٧، ٧٥٦٠].

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से बाब का मत़लब यूँ निकला कि इसमें क़ारी की फ़ज़ीलत मज़्कूर है और ये फ़ज़ीलते क़ुर्आन ही की वजह से है तो इस क़ुर्आन की फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई।

5021. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद अंसारी ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमानों! गुज़री उम्मतों की उ़म्रों के मुक़ाबले में तुम्हारी उ़म्र ऐसी है जैसे अ़स्र से सूरज डूबने तक का वक़्त होता है और तुम्हारी और यहूद व नस़ारा की मिष़ाल ऐसी है कि किसी शख़्स़ ने कुछ मज़दूर काम पर लगाए और उनसे कहा कि एक क़ीरात़ मज़दूरी पर मेरा काम सुबह से दोपहर दिन तक कौन करेगा? ये काम यहूदियों ने किया। फिर उसने कहा

٥٠٢١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَجَلُكُمْ فِي أَجَلِ مَنْ خَلاَ مِنَ الأُمَمِ، كَمَا بَيْنَ صَلاَةِ الْعَصْرِ وَمَغْرِبِ الشَّمْسِ، وَمَثَلُكُمْ وَمَثَلُ الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى، كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَعْمَلَ عُمَّالاً، فَقَالَ : مَنْ يَعْمَلُ لِي إِلَى نِصْفِ النَّهَارِ

عَلَى قِيرَاطٍ؟ فَعَمِلَتِ الْيَهُودُ، فَقَالَ : مَنْ يَعْمَلُ لِي مِنْ نِصْفِ النَّهَارِ إِلَى الْعَصْرِ؟ فَعَمِلَتِ النَّصَارَى، ثُمَّ أَنْتُمْ تَعْمَلُونَ مِنَ الْعَصْرِ إِلَى الْمَغْرِبِ بِقِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ، قَالُوا : نَحْنُ أَكْثَرُ عَمَلاً وَأَقَلُّ عَطَاءً، قَالَ هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ؟ قَالُوا: لاَ. قَالَ: فَذَاكَ فَضْلِي أُوتِيهِ مَنْ شِئْتُ)).

[راجع: ٥٥٧]

कि अब मेरा काम आधे दिन से अ़स्र तक (एक ही क़ीरात़ मज़दूरी पर) कौन करेगा? ये काम नसारा ने किया। फिर तुमने अ़स्र से मग़्रिब तक दो दो क़ीरात़ मज़दूरी पर काम किया। यहूद व नस़ारा क़यामत के दिन कहेंगे हमने काम ज़्यादा किया लेकिन मज़दूरी कम पाई? अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा क्या तुम्हारा ह़क़ कुछ मारा गया, वो कहेंगे कि नहीं। फिर अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि फिर ये मेरा फ़ज़्ल है, मैं जिसे चाहूँ और जितना चाहूँ अ़ता करूँ। (राजेअ़ : 557)

तश्रीह : मत़लब ये है कि उन उम्मतों की उ़म्रें बहुत लम्बी थीं और तुम्हारी उ़म्रें छोटी हैं। अगली उम्मतों की उ़म्र गोया तुलूए आफ़ताब से अ़स्र तक ठहरी और तुम्हारी अ़स्र से लेकर मग़्रिब तक जो अगले वक़्त की चौथाई है काम ज़्यादा करने से यहूद व नस़ारा का मज्मूई वक़्त मुराद है या'नी सुबह से लेकर अ़स्र तक ये उस वक़्त से कहीं ज़ाइद है जो अ़स्र से लेकर मग़्रिब तक होता है। अब इस ह़दीष़ से ह़नफ़िया का इस्तिदलाल कि अ़स्र की नमाज़ का वक़्त दो मिष़्ल से शुरू होता है पूरा न होगा।

बाब 18 : किताबुल्लाह पर अ़मल करने की वस़िय्यत का बयान

١٨- باب الْوَصَاةِ بِكِتَابِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ

वस़िय्यते मुबारका के अल्फ़ाज़ यूँ मन्क़ूल हैं, **तरक्तु फ़ीकुम अम्रैनि लन तज़िल्लू मा तमस्सक्तुम बिहिमा किताबुल्लाहि व सुन्नती** (अव कमा क़ाल) या'नी मैं तुममें दो चीज़ें छोड़कर जा रहा हूँ जब तक तुम उन दोनों पर कारबन्द रहोगे हर्गिज़ गुमराह न होगे एक अल्लाह की किताब कुर्आन शरीफ़ है दूसरी चीज़ मेरी सुन्नत या'नी ह़दीष़ है। फ़िल् वाक़ेअ़ जब तक मुसलमान सिर्फ़ इन दो पर कारबन्द रहे उनका दुनिया भर में तूती बोलती थी और जबसे इनसे मुँह मोड़कर और तक़्लीदे शख़्सी में फंसकर आराए रिजाल और क़ील व क़ाल के पीछे लगे फ़िर्क़ों में तक़्सीम होकर तबाह हो गये और **व तहसबुहुम जमीअ़न व क़ुलूबुहुम शत्ता.**

٥٠٢٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، حَدَّثَنَا طَلْحَةُ قَالَ: سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى أَوْصَى النَّبِيُّ ﷺ؟ فَقَالَ : لاَ، فَقُلْتُ : كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ، أُمِرُوا بِهَا وَلَمْ يُوصِ؟ قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللهِ.

[راجع: ٢٧٤٠]

5022. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़्वल ने, कहा हमसे त़लह़ा ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सवाल किया क्या नबी करीम (ﷺ) ने कोई वस़िय्यत फ़र्माई थी? उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने अ़र्ज़ किया फिर लोगों पर वस़िय्यत कैसे फ़र्ज़ की गई कि मुसलमानों को तो वस़िय्यत का हुक्म है और ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ने कोई वस़िय्यत नहीं की। उन्होंने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने किताबुल्लाह को मज़बूती से थामे रहने की वस़िय्यत फ़र्माई थी। (राजेअ़ : 2740)

वस़िय्यत की नफ़ी से मुराद है कि माल या दौलत या दुनिया के उमूर में या ख़िलाफ़त के बाब में कोई वस़िय्यत नहीं की और इष़्बात से ये मुराद है कि कुर्आन पर अ़मल करते रहने की या इसकी ता'लीम या दुश्मन के मुल्क में न जाने की वस़िय्यत की

तो दोनों फ़िक़रों में तनाकुज़ न रहेगा। (वहीदी) हदीषे मीराष नाज़िल होने के बाद माल में मुत्लक़ वसिय्यत करना मन्सूख़ हो गया।

बाब 19 : उस शख़्स के बारे में जो कुर्आन मजीद को ख़ुश आवाज़ी से न पढ़े और अल्लाह तआला का फ़र्मान, क्या इनके लिये काफ़ी नहीं है वो किताब जो मैंने तुम पर नाज़िल की जो उन पर पढ़ी जाती है

١٩- باب مَنْ لَمْ يَتغَنَّ بِالْقُرْآنِ وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَى عَلَيْهِمْ﴾

तबरी ने यह्या से निकाला कुछ मुसलमान अगली किताबें जो यहूद से हासिल की थीं, लेकर आए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये लोग कैसे बेवक़ूफ़ हैं इनका पैग़म्बर जो किताब लाया उसको छोड़कर दूसरी किताबें हासिल करना चाहते हैं। उस वक़्त ये आयत उतरी आयत से उन लोगों का भी रद्द होता है जो कुर्आन व सुन्नत को छोड़कर कील व क़ाल और आरा-ए-रिजाल के पीछे लगे रहते हैं और वो भी मुराद हैं जो किताब व सुन्नत से मुँह मोड़कर ग़फ़लत में डूबे हुए हैं।

5023. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझको अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह ने कोई चीज़ इतनी तवज्जह से नहीं सुनी जितनी तवज्जह से उसने नबी करीम (ﷺ) का कुर्आन बेहतरीन आवाज़ के साथ पढ़ते हुए सुना है। अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान का एक दोस्त अब्दुल हमीद बिन अब्दुर्रहमान कहता था कि इस हदीष में यतग़न्ना बिल कुर्आन से ये मुराद है कि अच्छी आवाज़ से इसे पुकार कर पढ़े। (दीगर मक़ाम : 5024, 7482, 7544)

٥٠٢٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَمْ يَأْذَنِ اللهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَنْ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ)). وَقَالَ صَاحِبٌ لَهُ : يُرِيدُ يَجْهَرُ بِهِ.

[أطرافه في : ٥٠٢٤، ٧٤٨٢، ٧٥٤٤].

तश्रीह : एक रिवायत में है कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कुर्आन मजीद की तिलावत में किस तरह की आवाज़ सबसे ज़्यादा पसंद है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस तिलावत से अल्लाह का डर पैदा हो। ये भी रिवायत है कि कुर्आन मजीद को अहले अरब के लहजे और उनकी आवाज़ के मुताबिक़ पढ़ो। गाने वालों और अहले किताब के लब व लहजे से कुर्आन मजीद की तिलावत में परहेज़ करो, मेरे बाद एक क़ौम ऐसी पैदा होगी जो कुर्आन मजीद को गवय्यों की तरह गा-गाकर पढ़ेंगे, ये तिलावत उनके गले से नीचे नहीं उतरेगी और उनके दिल फ़ित्ने में मुब्तला होंगे। ऐसी तिलावत क़त्अन मना है जिसमें गवय्यों की नक़ल की जाए। इस मुमानअत के बावजूद आज पेशेवर क़ारियों ने क़िरात के मौजूदा तौर व तरीक़ जो ईजाद किये हैं नाक़ाबिले बयान हैं अल्लाह तआला नेक समझ अता करे आमीन।

5024. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने कोई चीज़ इतनी तवज्जह से नहीं सुनी जितनी तवज्जह से अपने

٥٠٢٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا أَذِنَ اللهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ

نبی کریم ﷺ ...

لِلنَّبِيِّ ﷺ أَنْ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ)). قَالَ سُفْيَانُ تَفْسِيرُهُ يَسْتَغْنِي بِهِ. [راجع: ٥٠٢٣]

नबी करीम (ﷺ) को बेहतरीन आवाज़ के साथ क़ुर्आन मजीद पढ़ते सुना है। सुफ़यान बिन उ़यैयना ने कहा यतग़न्ना से ये मुराद है कि क़ुर्आन पर क़नाअ़त करे। (राजेअ़ : 5023)

तश्रीह : अब मुख़ालिफ़ किताबों या दुनिया के माल व दौलत की उसको परवाह न रहे और क़ुर्आन ही को अपनी सबसे बड़ी दौलत समझे। ख़ुश आवाज़ी से क़ुर्आन का पढ़ना मसनून है या'नी ठहर ठहरकर तरतील के साथ दरम्यानी आवाज़ से पढ़ना। ख़ुश आवाज़ी से ये मुराद नहीं कि गाने की त़रह पढ़े। मालिकिया ने उसे ह़राम कहा है और शाफ़िइया और ह़नफ़िया ने मकरूह रखा है। ह़ाफ़िज़ ने कहा उसका ये मत़लब है कि किसी ह़र्फ़ के निकालने में ख़लल न आए अगर ह़ुरूफ़ में तग़य्युर हो जाए तो बिल इज्माअ़ ह़राम है।

बाब 20 : क़ुर्आन मजीद पढ़ने वाले पर रश्क करना जाइज़ है

٢٠- باب اغْتِبَاطِ صَاحِبِ الْقُرْآنِ

٥٠٢٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ : ((لاَ حَسَدَ إِلاَّ عَلَى اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْكِتَابَ وَقَامَ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ، وَرَجُلٌ أَعْطَاهُ اللهُ مَالاً فَهُوَ يَتَصَدَّقُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ)).[طرفه في: ٧٥٢٩].

5025. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना। रश्क तो बस दो ही आदमियों पर हो सकता है, एक तो उस पर जिसे अल्लाह ने क़ुर्आन का इल्म दिया और वो उसके साथ रात की घड़ियों में खड़ा होकर नमाज़ पढ़ता रहा और दूसरा आदमी वो जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल दिया और वो उसे मुह़ताजों पर रात दिन ख़ैरात करता रहा। (दीगर मक़ाम : 7529)

٥٠٢٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ، سَمِعْتُ ذَكْوَانَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ حَسَدَ إِلاَّ فِي اثْنَتَيْنِ : رَجُلٌ عَلَّمَهُ اللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَتْلُوهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ، فَسَمِعَهُ جَارٌ لَهُ فَقَالَ : لَيْتَنِي أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ فُلاَنٌ، فَعَمِلْتُ مِثْلَ مَا يَعْمَلُ. وَرَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالاً فَهُوَ يُهْلِكُهُ فِي الْحَقِّ، فَقَالَ رَجُلٌ لَيْتَنِي أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ فُلاَنٌ، فَعَمِلْتُ مِثْلَ مَا يَعْمَلُ)).

5026. हमसे अ़ली बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें रौह़ बिन उ़बादह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उन्होंने कहा मैंने ज़क्वान से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया रश्क तो बस दो ही आदमियों पर होना चाहिये एक उस पर जिसे अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन का इल्म दिया और वो रात दिन उसकी तिलावत करता रहता है कि उसका पड़ौसी सुनकर कह उठे कि काश! मुझे भी इस जैसा इल्मे क़ुर्आन होता और मैं भी इसकी त़रह अ़मल करता और दूसरा वो जिसे अल्लाह ने माल दिया और वो उसे ह़क़ के लिये लुटा रहा है (उसको देखकर) दूसरा शख़्स कह उठता है कि काश! मेरे पास भी इसके जितना माल होता और मैं भी इसकी त़रह ख़र्च करता।

(दीगर मक़ाम : 7232, 7528)

[أطرافه في : ٧٢٣٢، ٧٥٢٨].

इसकी तफ़्सीर किताबुल इल्म में गुज़र चुकी है रश्क या'नी दूसरे को जो नेअ़मत अल्लाह ने दी है उसकी आरज़ू करना ये दुरुस्त है, ह़सद दुरुस्त नहीं। ह़सद ये है कि दूसरे की नेअ़मत का ज़वाल चाहे। ह़सद बहुत ही बुरा मर्ज़ है जो इंसान को और उसकी तमाम नेकियों को घुन (दीमक) की त़रह़ खा जाता है।

बाब 21 : तुममें सबसे बेहतर वो है जो क़ुर्आन मजीद पढ़े और दूसरों को पढ़ाए

٢١- باب خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ

क़ुर्आन सीखने से सिर्फ़ ये मुराद नहीं है कि उसके अल्फ़ाज़ पढ़ना सीखना बल्कि अल्फ़ाज़ को सेह़त के साथ सीखे फिर उनके मा'नी फिर मत़लब और शाने नुज़ूल वग़ैरह ग़र्ज़ ह़दीष़ और क़ुर्आन यही दो इल्मे दीन के हैं जो शख़्स इनकी ता'लीम और तअ़ल्लुम में मस़रूफ़ है उसका दर्जा सारे मुसलमानों से बढ़कर है। मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान गंज फ़र्माया करते थे अगर कोई शख़्स रात भर इबादत करता रहे या'नी अज़्कार और नवाफ़िल में मस़रूफ़ रहे वो उसके बराबर नहीं हो सकता जो रात को एक घण्टा भी क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ और मत़ालिब और मा'नी की तह़क़ीक़ में अपनी वक़्त गुज़ारे। ह़क़ीक़त में इल्मे दीन सारी नेकियों की जड़ है और इल्म ही पर सारी दुरवेशी और ज़ुहद का दारोमदार है। एक बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने किसी जाहिल को कभी अपना वली नहीं बनाया जाहिल से मुराद वो शख़्स है जिसको बक़द्रे ज़रूरत भी क़ुर्आन व ह़दीष़ का इल्म न हो।

5027. हमसे ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़ल्क़मा बिन मुर्ष़द ने ख़बर दी, उन्होंने सअ़द बिन उ़बैदह से सुना, उन्होंने अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी से और उन्होंने उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें सबसे बेहतर वो है जो क़ुर्आन मजीद पढ़े और पढ़ाए। सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया कि अबू अ़ब्दुर्रह़मान सलमी ने लोगों को उ़ष्मान (रज़ि) के ज़माना-ए- ख़िलाफ़त से ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के इराक़ के गवर्नर होने तक क़ुर्आन मजीद की ता'लीम दी। वो कहा करते थे कि यही ह़दीष़ है जिसने मुझे इस जगह (क़ुर्आन मजीद पढ़ाने के लिये) बिठा रखा है। (दीगर मक़ाम : 5028)

٥٠٢٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ. حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ : أَخْبَرَنِي عَلْقَمَةُ بْنُ مَرْثَدٍ سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ عَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ)). قَالَ: وَأَقْرَأَ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ فِي إِمْرَةِ عُثْمَانَ حَتَّى كَانَ الْحَجَّاجُ، قَالَ: وَذَاكَ الَّذِي أَقْعَدَنِي مَقْعَدِي هَذَا. [طرفه في : ٥٠٢٨].

आज भी कितने ख़ुश क़िस्मत बुज़ुर्ग ऐसे मिलेंगे जिन्होंने ता'लीमे क़ुर्आन में अपनी सारी उ़म्रों को ख़त्म कर दिया है बल्कि उसी ह़ाल में वो अल्लाह से जा मिले हैं रह़िमहुमुल्लाहु अज्मईन।

5028. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़ल्क़मा बिन मुर्ष़द ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी ने, उनसे ह़ज़रत उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सब में बेहतर वो है जो क़ुर्आन मजीद पढ़े और पढ़ाए। (राजेअ़ : 527)

٥٠٢٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ مَرْثَدٍ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ أَفْضَلَكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ)).[راجع: ٥٢٧]

5029. हमसे अम्र बिन औन ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और कहा कि उन्होंने अपने आपको अल्लाह और उसके रसूल (की रज़ा) के लिये हिबा कर दिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब मुझे औरतों से निकाह की कोई हाजत नहीं है। एक साहब ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ) इनका निकाह मुझसे कर दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर इन्हें (महर में) एक कपड़ा लाके दे दो। उन्होंने अर्ज़ किया कि मुझे तो ये भी मयस्सर नहीं है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर उन्हें कुछ तो दो, एक लोहे की अंगूठी ही सही। वो इस पर बहुत परेशान हुए (क्योंकि उनके पास ये भी न थी)। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा तुमको क़ुर्आन कितना याद है? उन्होंने अर्ज़ किया कि फ़लाँ फ़लाँ सूरतें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मैंने तुम्हारा इनसे क़ुर्आन की इन सूरतों पर निकाह किया जो तुम्हें याद हैं। (राजेअ : 2310)

٥٠٢٩- حدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: إِنَّهَا قَدْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا للهِ وَلِرَسُولِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا لِي فِي النِّسَاءِ مِنْ حَاجَةٍ)). فَقَالَ رَجُلٌ: زَوِّجْنِيهَا. قَالَ: ((أَعْطِهَا ثَوْبًا)). قَالَ: لاَ أَجِدُ. قَالَ: ((أَعْطِهَا وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)). فَاعْتَلَّ لَهُ فَقَالَ: ((مَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ))، قَالَ: كَذَا وَكَذَا. فَقَالَ: ((فَقَدْ زَوَّجْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)). [راجع: ٢٣١٠]

तशरीह : आँहज़रत (ﷺ) का मतलब ये था कि तू ये सूरतें इस औरत को सिखला दे यही महर है। इस हदीष़ की मज़ीद तशरीह किताबुन् निकाह में आएगी और बाब का मतलब इससे यूँ निकलता है कि आप (ﷺ) ने क़ुर्आन की अज़्मत इस तरह से ज़ाहिर की कि वो दुनिया में भी माल व दौलत के क़ायम मुक़ाम है और आख़िरत की अज़्मत तो ज़ाहिर है। (वहीदी)

बाब 22 : ज़ुबानी क़ुर्आन मजीद की तिलावत करना

٢٢- باب الْقِرَاءَةِ عَنْ ظَهْرِ الْقَلْبِ.

5030. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने, उनसे हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपकी ख़िदमत में अपने आपको हिबा करने के लिये आई हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी तरफ़ नज़र उठाकर देखा और फिर नज़र नीची कर ली और सर झुका लिया। जब उस ख़ातून ने देखा कि उनके बारे में कोई फ़ैसला आँहज़रत (ﷺ) ने नहीं फ़र्माया तो वो बैठ गई फिर आँहज़रत (ﷺ) के सहाबा में से एक साहब उठे और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर आपको इनकी ज़रूरत नहीं है तो मेरे साथ इनका निकाह कर दें। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हारे पास कुछ (महर के लिये) भी ह? उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं या

٥٠٣٠- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ جِئْتُ لأَهَبَ لَكَ نَفْسِي. فَنَظَرَ إِلَيْهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَصَعَّدَ النَّظَرَ إِلَيْهَا وَصَوَّبَهُ، ثُمَّ طَأْطَأَ رَأْسَهُ فَلَمَّا رَأَتِ الْمَرْأَةُ أَنَّهُ لَمْ يَقْضِ فِيهَا شَيْئًا جَلَسَتْ. فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ فَزَوِّجْنِيهَا.

فَقَالَ: ((هَلْ عِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ)). فَقَالَ : لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ : ((اذْهَبْ إِلَى أَهْلِكَ فَانْظُرْ هَلْ تَجِدُ شَيْئًا)). فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ مَا وَجَدْتُ شَيْئًا. قَالَ: ((انْظُرْ وَلَوْ خَاتِمًا مِنْ حَدِيدٍ)). فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ : لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ وَلاَ خَاتِمًا مِنْ حَدِيدٍ وَلَكِنْ هَذَا إِزَارِي قَالَ سَهْلٌ : مَا لَهُ رِدَاءٌ فَلَهَا نِصْفُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا تَصْنَعُ بِإِزَارِكَ إِنْ لَبِسْتَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْهَا مِنْهُ شَيْءٌ وَإِنْ لَبِسَتْهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ شَيْءٌ)). فَجَلَسَ الرَّجُلُ حَتَّى طَالَ مَجْلِسُهُ، ثُمَّ قَامَ فَرَآهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ مُوَلِّيًا فَأَمَرَ بِهِ فَدُعِيَ فَلَمَّا جَاءَ قَالَ: ((مَاذَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)) قَالَ: مَعِي سُورَةُ كَذَا، وَسُورَةُ كَذَا، وَسُورَةُ كَذَا. عَدَّهَا قَالَ: ((أَتَقْرَؤُهُنَّ عَنْ ظَهْرِ قَلْبِكَ)). قَالَ : نَعَمْ. قَالَ : ((اذْهَبْ فَقَدْ مَلَّكْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

[راجع: ٢٣١٠]

रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अपने घर जाओ और देखो शायद कोई चीज़ मिले, वो साहब गये और वापस आ गये और अर्ज़ किया नहीं अल्लाह की क़सम! या रसूलल्लाह! मुझे वहाँ कोई चीज़ नहीं मिली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर देख लो एक लोहे की अंगूठी ही सही। वो साहब गये और फिर वापस आ गये और अर्ज़ किया नहीं। अल्लाह की क़सम! या रसूलल्लाह! लोहे की अंगूठी भी मुझे नहीं मिली। अल्बत्ता ये एक तहमद मेरे पास है। हज़रत सहल (रज़ि.) कहते हैं कि उनके पास कोई चादर भी (ओढ़ने के लिये) नहीं थी। उन सहाबी ने कहा कि ख़ातून को उसमें से आधा फाड़कर दे दीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारे तह्मद का वो क्या करेगी। अगर तुम इसे पहनते हो तो उसके क़ाबिल नही रहता और अगर वो पहनती है तो तुम्हारे क़ाबिल नहीं। फिर वो साहब बैठ गये काफ़ी देर तक बैठे रहने के बाद उठे। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें जाते हुए देखा तो बुलवाया। जब वो हाज़िर हुए तो आपने पूछा कि तुम्हें क़ुर्आन मजीद कितना याद है? उन्होंने बतलाया कि फ़लाँ फ़लाँ फलाँ सूरतें मुझे याद हैं? उन्होंने उनके नाम गिनाए। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुम उन्हें ज़ुबानी पढ़ लेते हो? अर्ज़ किया जी हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जाओ तुम्हें क़ुर्आन मजीद की जो सूरतें याद हैं उनके बदले में मैंने इसे तुम्हारे निकाह में दे दिया। (राजेअ : 2310)

तश्रीह : इंतिहाई नादारी की हालत में आज भी ये हदीष़ दीन के आसान होने को ज़ाहिर कर रही है। मगर सद अफ़सोस कि फ़ुक़हा की ख़ुद साख़्ता हद बन्दियों ने दीन को बेहद मुश्किल बल्कि नाक़ाबिले अमल बना दिया है, इससे क़ुर्आन मजीद को हिफ़्ज़ करने की भी फ़ज़ीलत निकलती है। मुबारक हैं वो मुसलमान जिनको क़ुर्आन मजीद पूरा बर ज़ुबान याद है अल्लाह पाक अमल की भी सआदत नसीब करे आमीन।

बाब 23 : क़ुर्आन मजीद को हमेशा पढ़ते और याद करते रहना

٢٣- باب اسْتِذْكَارِ الْقُرْآنِ وَتَعَاهُدِهِ.

٥٠٣١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا مَثَلُ صَاحِبِ الْقُرْآنِ كَمَثَلِ

5031. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, और उन्हें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हाफ़िज़े क़ुर्आन की मिष़ाल रस्सी से बंधे हुए

صَاحِبِ الإِبِلِ الْمُعَقَّلَةِ، إِنْ عَاهَدَ عَلَيْهَا أَمْسَكَهَا وَإِنْ أَطْلَقَهَا ذَهَبَتْ)).

ऊँट के मालिक जैसी है और वो उसकी निगरानी रखेगा तो वो उसे रोक सकेगा वरना वो रस्सी तुड़वाकर भाग जाएगा।

क्योंकि अगर क़ुर्आन का पढ़ना छोड़ देगा तो वो भूल जाएगा अकष़र ह़ाफ़िज़ों को देखा गया है कि वो सुस्ती के मारे क़ुर्आन का पढ़ना छोड़ देते हैं फिर सारी मेह़नत बर्बाद हो जाती है और क़ुर्आन मजीद को भूल जाते हैं।

٥٠٣٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بِئْسَ مَا لأَحَدِهِمْ أَنْ يَقُولَ: نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكَيْتَ بَلْ نُسِّيَ، وَاسْتَذْكِرُوا الْقُرْآنَ فَإِنَّهُ أَشَدُّ تَفَصِّيًا مِنْ صُدُورِ الرِّجَالِ مِنَ النَّعَمِ)). [طرفه في : ٥٠٣٩].

5032. हमसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बहुत बुरा है किसी शख़्स़ का ये कहना कि मैं फ़लाँ फ़लाँ आयत भूल गया बल्कि यूँ (कहना चाहिये) कि मुझे भुला दिया गया और क़ुर्आन मजीद का पढ़ना जारी रखो क्योंकि इंसानों के दिलों से दूर हो जाने में वो ऊँट के भागने से भी बढ़कर है। (दीगर मक़ाम: 5039)

तशरीह़ : क्योंकि अल्लाह ही बन्दे के तमाम अफ़आ़ल का ख़ालिक़ है गो बन्दे की त़रफ़ भी अफ़आ़ल की निस्बत की जाती है। मक़्सूद ये है कि अपनी त़रफ़ निस्बत देने में गोया अपना इख़्तियार रहता है कि मैं भूल गया अगरचे बहुत सी ह़दीष़ों मे निस्यान की निस्बत आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपनी त़रफ़ ही की है और क़ुर्आन मजीद में है **रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन नसीना औ अख़्ताना** (अल बक़र : 286) ये तशरीह़ लफ़्ज़ नसीतु आयत कैत व कैत के बारे में है।

حدثنا عثمان حدثنا جرير عن منصور مثله. تابعه بشر عن ابن المبارك عن شعبة. وتابعه ابن جريج عن عبدة عن شقيق سمعت النبي ﷺ.

हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने, और उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने पिछली ह़दीष़ की त़रह़। मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह़ के साथ उसको बिश्र बिन अ़ब्दुल्लाह ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक से, उन्हों ने शुअ़बा से रिवायत किया है और मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह़ उसको इब्ने जुरैज ने भी अ़ब्दह़ से, उन्होंने शक़ीक़ बिन मस्लमा से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से ऐसा ही रिवायत किया है।

٥٠٣٣ - حدثنا محمد بن العلاء، حدثنا أبو أسامة عن بريد عن أبي بردة عن أبي موسى عن النبي ﷺ قال: ((تعاهدوا القرآن. فو الذي نفسي بيده لهو أشد تفصيا من الإبل في عقلها)).

5033. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़ुर्आन मजीद का पढ़ते रहना लाज़िम पकड़ लो। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है वो ऊँट के अपनी रस्सी तुड़वाकर भाग जाने से ज़्यादा तेज़ी से भागता है।

कितने ह़ाफ़िज़ ऐसे देखे गये जिन्हों ने तिलावत करना छोड़ दिया और क़ुर्आन मजीद उनके ज़हनों से निकल गया। स़दक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।

बाब 24 : सवारी पर तिलावत करना

٢٤- باب الْقِرَاءَةِ عَلَى الدَّابَّةِ

5034. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अबू अयास ने ख़बर दी, कहा कि मैंने अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को फ़तहे मक्का के दिन देखा कि आप सवारी पर सूरह फ़तह की तिलावत कर रहे थे। (राजेअ : 4281)

٥٠٣٤- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو إِيَاسٍ، قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مُغَفَّلٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ وَهُوَ يَقْرَأُ عَلَى رَاحِلَتِهِ سُورَةَ الْفَتْحِ.

[راجع: ٤٢٨١]

कुर्आन पाक की तिलावत भी एक क़िस्म का ज़िक्रे इलाही है जो आयत **अल्लज़ीन यज़्कुरूनल्लाह क़ियामव्वंक़ुऊदव्वं अला जुनूबिहिम** (आल इम्रान : 191) के तहत ज़रूरी है।

बाब 25 : बच्चों को क़ुर्आन मजीद की ता'लीम देना

٢٥- باب تَعْلِيمِ الصِّبْيَانِ الْقُرْآنَ

ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह) ने सईद बिन जुबैर और इब्राहीम नख़्ई का रद्द किया जिन्होंने इसको मकरूह समझा है। इब्ने अब्बास ने कहा कि कुर्आन की तफ़्सीर मुझसे पूछो मैंने बचपन में कुर्आन को याद कर लिया था। नववी ने कहा सुफ़यान बिन उ़य्यना ने चार बरस की उ़म्र में कुर्आन हिफ़्ज़ कर लिया था।

5035. मुझसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि जिन सूरतों को तुम मुफ़स्सल कहते हो वो सब मुहकम हैं। उन्होंने बयान किया कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा जब रसूले करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो मेरी उ़म्र दस साल की थी और मैंने मुहकम सूरतें सब पढ़ ली थीं। (दीगर मक़ाम : 5036)

٥٠٣٥- حدثنا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ : إِنَّ الَّذِي تَدْعُونَهُ الْمُفَصَّلَ هُوَ الْمُحْكَمُ: قَالَ: وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنَا ابْنُ عَشْرِ سِنِينَ وَقَدْ قَرَأْتُ الْمُحْكَمَ. [طرفه في: ٥٠٣٦].

5036. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको अबू बिश्र ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उन्हें हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि मैंने मुहकम सूरतें रसूले करीम (ﷺ) के ज़माने में सब याद कर ली थीं, मैंने पूछा कि मुहकम सूरतें कौनसी हैं? कहा कि मुफ़स्सल। (राजेअ : 5035)

٥٠٣٦- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا جَمَعْتُ الْمُحْكَمَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ لَهُ وَمَا الْمُحْكَمُ قَالَ: الْمُفَصَّلُ.

[راجع: ٥٠٣٥]

तश्रीह : या'नी सूरह हुजुरात से आख़िर कुर्आन तक। मुहकम से मुराद वह है जो मन्सूख़ न हो। फ़क़ुल्तु लहू अबू बिश्र का कलाम है और क़ाल की ज़मीर सईद बिन जुबैर की त़रफ़ फिरती है और उसकी दलील ये है कि अगली रिवायत मे ये स़राहत है कि ये कलाम सईद बिन जुबैर का है, ह़ाफ़िज़ ने ऐसा ही कहा है और ऐ़नी ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ ह़ाफ़िज़ स़ाहब पर ए'तिराज़ जमाया कि ये ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है। ज़ाहिर यही है कि फ़क़ुल्तु लहू सईद का कलाम है और लहू

की ज़मीर इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की त़रफ़ फिरती है। इसका जवाब ये है कि तू ख़ुद ह़ाफ़िज़ ने कहा है कि ज़ाहिरे मुतबादिर यही है लेकिन उन्होंने मुब्हम रिवायत को मुफ़स्सिर रिवायत के मुवाफ़िक़ मह़मूल किया और यही मुनासिब है। (वह़ीदी)

बाब 26 : क़ुर्आन मजीद को भुला देना और क्या ये कहा जा सकता है कि मैं फ़लाँ फ़लाँ आयतें भूल गया हूँ और अल्लाह का फ़र्मान, मैं आपको क़ुर्आन पढ़ा दूंगा फिर आप उसे न भूलेंगे सिवा उन आयात के जिन्हें अल्लाह चाहे

٢٦- باب نِسْيَانِ الْقُرْآنِ وَهَلْ يَقُولُ نَسِيتُ آيَةَ كَذَا وَكَذَا؟ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿سَنُقْرِئُكَ فَلاَ تَنْسَى إِلاَّ مَا شَاءَ اللهُ﴾

इस आयत से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने ये निकाला कि निस्यान की निस्बत आदमी की त़रफ़ हो सकती है।

5037. हमसे रबीअ़ बिन यह़्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ायदा बिन क़ुदामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख़्स को मस्जिद में क़ुर्आन पढ़ते सुना तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह इस पर रह़म करे, उसने मुझे फ़लाँ सूरत की फ़लाँ आयतें याद दिला दीं। (राजेअ़ : 2655)

٥٠٣٧- حَدَّثَنَا رَبِيعُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ، فَقَالَ: ((يَرْحَمُهُ اللهُ، لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً مِنْ سُورَةِ كَذَا)).[راجع: ٢٦٥٥]

हमसे मुह़म्मद बिन उ़बैद बिन मैमून ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने (इज़ाफ़ा के साथ बयान किया कि) मैंने फ़लाँ सूरत की फ़लाँ फ़लाँ आयतें भुला दी थीं। मुह़म्मद बिन उ़बैद के साथ इसको अ़ली बिन मिस्हर और अ़ब्दह ने भी हिशाम से रिवायत किया है।

....- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا عِيسَى عَنْ هِشَامٍ وَقَالَ : أَسْقَطْتُهُنَّ مِنْ سُورَةِ كَذَا. تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ وَعَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ.

5038. हमसे अह़मद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद (उ़र्वा बिन ज़ुबैर) ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक स़ाह़ब को रात के वक़्त एक सूरत पढ़ते हुए सुना तो फ़र्माया अल्लाह इस पर रह़म करे, इसने मुझे फ़लाँ आयतें याद दिला दीं, जो मुझे फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से भुला दी गई थीं। (राजेअ़ : 2655)

٥٠٣٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : سَمِعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَجُلاً يَقْرَأُ فِي سُورَةٍ بِاللَّيْلِ فَقَالَ: ((يَرْحَمُهُ اللهُ، لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً كُنْتُ أُنْسِيتُهَا مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)). [راجع: ٢٦٥٥]

5039. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन

٥٠٣٩- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

इयना ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी के लिये ये मुनासिब नहीं कि ये कहे कि मैं फ़लाँ फ़लाँ आयतें भूल गया बल्कि उसे (यूँ कहना चाहिये) कि मैं फ़लाँ फ़लाँ आयतों को भुला दिया गया। (राजेअ़ : 5032)

بْنُ عُيَيْنَةَ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بِئْسَ مَا لأَحَدِهِمْ يَقُولُ نَسِيتُ آيَةَ كَيْتَ وَكَيْتَ، بَلْ هُوَ نُسِّيَ)). [راجع: ٥٠٣٢]

तश्रीह : अह़ादीषे मन्क़ूला और बाब में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है। क़ुर्आन का याद होना भी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है और उसे भूल जाना भी अल्लाह तआ़ला ही की त़रफ़ से है। कोशिश इंसान का काम है पस हर मुसलमान को क़ुर्आन मजीद के याद रखने की कोशिश करते रहना चाहिये जो लोग क़ुर्आन मजीद याद करके उसे पढ़ना छोड़ दें और वो क़ुर्आन मजीद उनके ज़हन से निकल जाए ऐसे ग़ाफ़िल इंसान के लिये सख़्ततरीन वईद आई है और उस शख़्स पर वाजिब है कि रोज़ाना क़ुर्आन पाक कुछ ह़िस्सा बलाग़ाना दोहरा लिया करे। इस तसलसुल से क़ुर्आन पाक ज़हन में मह़फ़ूज़ रहेगा और आँह़ज़रत (ﷺ) हर वक़्त क़ुर्आन पाक की तिलावत फ़र्माया करते थे कि ऐसा न हो कि मैं भूल जाऊँ लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद कहा है कि मेरे ज़िम्मे उसका आप (ﷺ) के सीने में जमा करना और ज़ुबान से उसकी तिलावत कराना है तो उम्मते मुह़म्मदिया पर भी वाजिब है कि तिलावते क़ुर्आन पाक रोज़ाना किया करे ताकि उसको भूलने न पाए।

बाब 27 : जिनके नज़दीक सूरह बक़रः या फ़लाँ फ़लाँ सूरत (नाम के साथ) कहने में कोई ह़र्ज नहीं

٢٧- باب: مَنْ لَمْ يَرَ بَأْسًا أَنْ يَقُولَ سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَسُورَةُ كَذَا وَكَذَا

ये बाब लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने उस ह़दीष़ के ज़ुअ़फ़ की त़रफ़ इशारा किया जिसे त़बरानी ने मुअ़जमे औसत़ में ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से मर्फ़ूअ़न निकाला कि यूँ न कहो सूरह बक़रः सूरह आले इमरान बल्कि यूँ कहो कि वो सूरत जिनमें बक़रः का ज़िक्र है इस त़रह़ सारे क़ुर्आन में। इसकी सनद में अ़म्बस बिन मैमून अ़त़्त़ा ज़ईफ़ है। इब्ने जौज़ी ने इसे मौज़ूआत में लिखा है।

5040. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अ़ल्क़मा और अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत अबू मसऊ़द अंस़ारी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सूरह बक़रः के आख़िर की दो आयतों को जो शख़्स़ रात में पढ़ लेगा वो उसके लिये काफ़ी होंगी। (राजेअ़ : 4008)

٥٠٤٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ. حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((الآيَتَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ. مَنْ قَرَأَ بِهِمَا فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)). [راجع: ٤٠٠٨]

इस ह़दीष़ में सूरह बक़रः नाम मज़्कूर है यही बाब और ह़दीष़ में वजहे मुत़ाबक़त है।

5041. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने मसऊ़द बिन मख़रमा और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी से ख़बर दी कि उन दोनों ने ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने हिशाम बिन ह़कीम बिन ह़िज़ाम (रज़ि.) को रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िंदगी

٥٠٤١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ. قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ حَدِيثِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدٍ الْقَارِيِّ أَنَّهُمَا سَمِعَا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

يقولُ : سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ فَإِذَا هُوَ يَقْرَؤُهَا عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَانْتَظَرْتُهُ حَتَّى سَلَّمَ فَلَبَّبْتُهُ فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَأُ؟ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. فَقُلْتُ لَهُ : كَذَبْتَ، فَوَ اللهِ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَهُوَ أَقْرَأَنِي هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَقُودُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا، وَإِنَّكَ أَقْرَأْتَنِي سُورَةَ الْفُرْقَانِ. فَقَالَ: ((يَا هِشَامُ اقْرَأْهَا)). فَقَرَأَهَا الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ: ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ)). فَقَرَأْتُهَا الَّتِي أَقْرَأَنِيهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)). [راجع: ٢٤١٩]

में सूरह फ़ुरक़ान पढ़ते सुना। मैं उनकी क़िरात को ग़ौर से सुनने लगा तो मा'लूम हुआ कि वो ऐसे बहुत से त़रीक़ों मे तिलावत कर रहे थे जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नहीं सिखाया था। मुम्किन था कि मैं नमाज़ ही में उनका सर पकड़ लेता लेकिन मैंने इंतिज़ार किया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उनके गले में चादर लपेट दी और पूछा ये सूरतें जिन्हें अभी अभी तुम्हें पढ़ते हुए मैंने सुना है तुम्हें किसने सिखाई हैं? उन्होंने कहा कि मुझे इस त़रह़ इन सूरतों को रसूले करीम (ﷺ) ने सिखाया है। मैंने कहा कि तुम झूठ बोल रहे हो। ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे भी ये सूरतें पढ़ाई हैं जो मैंने तुमसे सुनीं। मैं उन्हें खींचते हुए आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ख़ुद सुना कि ये शख़्स सूरह फ़ुरक़ान ऐसी क़िरात से पढ़ रहा था। जिसकी ता'लीम आप (ﷺ) ने हमें नहीं दी है आप (ﷺ) मुझे भी सूरह फ़ुरक़ान पढ़ा चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हिशाम! पढ़कर सुनाओ। उन्होंने इसी त़रह़ उसकी क़िरात की जिस त़रह़ मैं उनसे सुन चुका था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई है। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उ़मर! अब तुम पढ़ो। मैंने भी इसी त़रह़ क़िरात की जिस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे सिखाया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई थी। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आन मजीद सात क़िस्म की क़िरातों पर नाज़िल हुआ है बस तुम्हारे लिये जो आसान हो उसके मुत़ाबिक़ पढ़ो। (राजेअ़ : 2419)

इस ह़दीष़ शरीफ़ में सूरह फ़ुरक़ान का लफ़्ज़ है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि उमूरे मुख़्तलिफ़ा में इंशिक़ाक़ व इफ़्तिराक से बचना ज़रूरी है।

٥٠٤٢ - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ قَارِئًا يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ:

5042. हमसे बिश्र बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक क़ारी को रात के वक़्त मस्जिद में क़ुर्आन मजीद पढ़ते हुए सुना तो फ़र्माया

कि अल्लाह उस आदमी पर रहम करे उसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैंने फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से छोड़ रखा था। (राजेअ : 2655)

((يَرْحَمُهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا، آيَةً أَسْقَطْتُهَا مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)).

[راجع: ٢٦٥٥]

बाब 28 : क़ुर्आन मजीद की तिलावत साफ़ साफ़ और ठहर ठहरकर करना

٢٨- باب التَّرْتِيلِ فِي الْقِرَاءَةِ، وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلاً﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ﴾ وَمَا يُكْرَهُ أَنْ يُهَذَّ كَهَذِّ الشِّعْرِ. يُفْرَقُ : يُفَصَّلُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَرَقْنَاهُ : فَصَّلْنَاهُ.

और अल्लाह तबारक व तआला ने सूरत मुज़्ज़म्मिल में फ़र्माया, और क़ुर्आन मजीद को तरतील से पढ़। (या'नी हर एक हर्फ़ अच्छी तरह निकालकर इत्मीनान के साथ) और सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया और हमने क़ुर्आन मजीद को थोड़ा थोड़ा करके इसलिये भेजा कि तू ठहर ठहरकर लोगों को पढ़कर सुनाए और शे'र व सुख़न की तरह उसका जल्दी जल्दी पढ़ना मकरूह है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा इस सूरत में जो फ़रक़्ना का लफ़्ज़ है (व क़ुर्आनन फ़रक़्नाहू) उसका मा'नी ये है कि हमने उसे कई हिस्से करके उतारा।

٥٠٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا وَاصِلٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : غَدَوْنَا عَلَى عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ رَجُلٌ : قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ الْبَارِحَةَ فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ الشِّعْرِ إِنَّا قَدْ سَمِعْنَا الْقِرَاءَةَ، وَإِنِّي لأَحْفَظُ الْقُرَنَاءَ الَّتِي كَانَ يَقْرَأُ بِهِنَّ النَّبِيُّ ﷺ. ثَمَانِيَ عَشْرَةَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ وَسُورَتَيْنِ مِنَ آلِ حم.

[راجع: ٧٧٥]

5044. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे मह्दी बिन मैमून ने, कहा हमसे वासिल अहदब ने, उनसे अबू वाइल ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से बयान किया कि हम उनकी ख़िदमत में सुबह सवेरे हाज़िर हुए। हाज़िरीन में से एक साहब ने कहा कि रात मैंने (तमाम) मुफ़स्सल सूरतें पढ़ डालीं। इस पर अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) बोले जैसे अश्आर जल्दी जल्दी पढ़ते हैं तुमने वैसे ही पढ़ ली होंगी। हमने क़िरात सुनी है और मुझे वो जोड़ वाली सूरतें भी याद हैं जिनको मिलाकर नमाज़ों म नबी करीम (ﷺ) पढ़ा करते थे। ये अठारह सूरतें मुफ़स्सल की हैं और वो दो सूरतें जिनके शुरू में हामीम है। (राजेअ : 775)

٥٠٤٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ جِبْرِيلُ بِالْوَحْيِ،

5044. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अबी आइशा ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह तआला के फ़र्मान, आप क़ुर्आन को जल्दी जल्दी लेने के लिये इस पर नाज़िल होते तो रसूले करीम (ﷺ) अपनी ज़ुबान और होंठ हिलाया करते थे। उसकी वजह से आपके लिये वह्य याद करने में बहुत बार पड़ता था और ये आपके चेहरे से भी ज़ाहिर हो जाता था। इसलिये अल्लाह

وَكَانَ مِمَّا يُحَرِّكُ بِهِ لِسَانَهُ وَشَفَتَيْهِ، فَيَشْتَدُّ عَلَيْهِ، وَكَانَ يُعْرَفُ مِنْهُ، فَأَنْزَلَ اللهُ الآيَةَ الَّتِي فِي ﴿لاَ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ﴾ ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ، إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ﴾ ﴿فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ﴾ فَإِذَا أَنْزَلْنَاهُ فَاسْتَمِعْ ﴿ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ﴾ قَالَ : إِنَّ عَلَيْنَا أَنْ نُبَيِّنَهُ بِلِسَانِكَ، قَالَ: وَكَانَ إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيلُ أَطْرَقَ، فَإِذَا ذَهَبَ قَرَأَهُ كَمَا وَعَدَهُ اللهُ.

[راجع: ٥]

तआला ने ये आयत जो सूरह ला उक़्सिमु बियौमिल क़ियामह में है नाज़िल की कि आप क़ुर्आन को जल्दी जल्दी लेने के लिये इस पर ज़ुबान को न हिलाया करें ये तो मेरे ज़िम्मे है इसका जमा करना और इसका पढ़वाना तो जब हम इसे पढ़ने लगें तो आप उसके पीछे पीछे पढ़ा करें फिर आपकी ज़ुबान से उसकी तफ़्सीर बयान करा देना भी मेरे ज़िम्मे है। रावी ने बयान किया कि फिर जब जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आते तो आप सर झुका लेते और जब वापस जाते तो पढ़ते जैसा कि अल्लाह ने आपसे याद करवाने का वा'दा किया था। कि तेरे दिल में जमा देना उसको पढ़ा देना मेरा काम है फिर आप उसके मुवाफ़िक़ पढ़ते। (राजेअ : 5)

आयत षुम्म इन्न अलैना बयानहू (अल् क़ियामः 19) से षाबित हुआ कि सिलसिले तफ़्सीरे क़ुर्आन रसूले करीम (ﷺ) ने जो कुछ फ़र्माया जिसे लफ़्ज़े ह़दीष से ता'बीर किया जाता है ये सारा ज़ख़ीरा भी अल्लाह पाक ही का ता'लीम फ़रमूदा है। इसी से अह़ादीष को वह्ये ग़ैर मतलू से ता'बीर किया गया है जो लोग अह़ादीषे स़ह़ीह़ा के मुंकिर हैं वो क़ुर्आन पाक की इस आयत का इंकार करते हैं इसलिये वो सिर्फ़ मुंकिरे ह़दीष ही नहीं बल्कि मुंकिरे क़ुर्आन भी हैं, हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम आयत।

٢٩– باب مَدِّ الْقِرَاءَةِ

बाब 29 : क़ुर्आन मजीद पढ़ने में मद करना या'नी जहाँ मद हो उस ह़र्फ़ को खींचकर अदा करना

٥٠٤٥– حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ الأَزْدِيُّ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ : سَأَلْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ قِرَاءَةِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: كَانَ يَمُدُّ مَدًّا. [طرفه في : ٥٠٤٦].

5045. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम अज़्दी ने बयान किया, कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की तिलावत क़ुर्आन मजीद के बारे में सवाल किया तो उन्होंने बतलाया कि आँहुज़ूर (ﷺ) उन अल्फ़ाज़ को खींचकर पढ़ते थे जिनमें मद होता था। (दीगर मक़ाम : 5046)

٥٠٤٦– حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ قَالَ: سُئِلَ أَنَسٌ كَيْفَ كَانَتْ قِرَاءَةُ النَّبِيِّ ﷺ؟ فَقَالَ: كَانَتْ مَدًّا، ثُمَّ قَرَأَ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَمُدُّ بِبِسْمِ اللهِ، وَيَمُدُّ بِالرَّحْمَنِ، وَيَمُدُّ بِالرَّحِيمِ.[راجع: ٥٠٤٥]

5046. हमसे अ़म्र बिन आ़स़िम ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से पूछा गया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़िरात कैसी थी? उन्होंने बयान किया कि मद के साथ। फिर आपने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ा और कहा कि बिस्मिल्लाह (में अल्लाह की लाम) को मद के साथ पढ़ते अर् रहमान (में मीम) को मद के साथ पढ़ते और अर्रहीम (में ह़ाअ को) मद के साथ पढ़ते। (राजेअ : 4045)

बाब 30 : क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ते वक़्त हलक़ में आवाज़ को घुमाना और ख़ुश आवाज़ी से क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ना

٣٠- باب التَّرْجِيعِ

5047. हमसे आदम बिन अबीअयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अयास ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) को देखा कि आप अपनी ऊँटनी या ऊँट पर सवार होकर तिलावत कर रहे थे। सवारी चल रही थी और आप सूरह फ़तह पढ़ रहे थे या (रावी ने ये बयान किया कि) सूरह फ़तह में से पढ़ रहे थे नरमी और आहिस्तगी के साथ क़िरात कर रहे थे और आवाज़ हलक़ में दोहराते थे। (राजेअ़ : 4281)

٥٠٤٧- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو إِيَاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مُغَفَّلٍ، قَالَ : رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ وَهُوَ عَلَى نَاقَتِهِ أَوْ جَمَلِهِ وَهْيَ تَسِيرُ بِهِ وَهُوَ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفَتْحِ، أَوْ مِنْ سُورَةِ الْفَتْحِ قِرَاءَةً لَيِّنَةً يَقْرَأُ وَهُوَ يُرَجِّعُ.
[راجع: ٤٢٨١]

दोहराने से हुरूफ़े क़ुर्आनी मे मद व जज़र पैदा करना मुराद है जो अच्छी आवाज़ की सूरत है।

बाब 31 : ख़ुश इलहानी के साथ तिलावत करना मुस्तहब है

٣١- باب حُسْنِ الصَّوْتِ بِالْقِرَاءَةِ

5048. हमसे मुहम्मद बिन ख़ल्फ़ अबूबक्र अ़स्क़लानी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू यह्या हिमानी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बुर्दा ने बयान किया, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबू मूसा! तुझे दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) जैसी बेहतरीन आवाज़ अ़ता की गई है।

٥٠٤٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَلَفٍ أَبُوبَكْرٍ، حَدَّثَنَا أَبُو يَحْيَى الْحِمَّانِيُّ حَدَّثَنَا بُرَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لَهُ : ((يَا أَبَا مُوسَى، لَقَدْ أُوتِيتُ مِزْمَارًا مِنْ مَزَامِيرِ آلِ دَاوُدَ)).

हज़रत दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) को ख़ुश आवाज़ी का मुअ़जज़ा दिया गया था। वो जब भी ज़बूर ख़ुश आवाज़ी से पढ़ते एक अ़जीब समाँ बंध जाता था। आँहज़रत (ﷺ) ने उसी त़रफ़ इशारा किया है।

बाब 32 : उस शख़्स के बारे में जिसने क़ुर्आन मजीद को दूसरे से सुनना पसंद किया

٣٢- باب مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَسْتَمِعَ الْقُرْآنَ مِنْ غَيْرِهِ.

5049. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उ़बैदह ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे क़ुर्आन मजीद पढ़कर सुनाओ। मैंने अ़र्ज़ किया मैं आपको क़ुर्आन सुनाऊँ आप (ﷺ)

٥٠٤٩- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي عَنِ الأَعْمَشِ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((اقْرَأْ عَلَيَّ الْقُرْآنَ)). قُلْتُ: اقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ

पर तो क़ुर्आन नाज़िल होता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं क़ुर्आन मजीद दूसरे से सुनना महबूब रखता हूँ। (राजेअ : 4582)

أُنْزِلَ قَالَ: ((إِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي)). [راجع: ٤٥٨٢]

बाब 33 : क़ुर्आन मजीद सुनने वाले का पढ़ने वाले से कहना कि बस कर, बस कर

٣٣- باب قَوْلِ الْمُقْرِىءِ لِلْقَارِىءِ: حَسْبُكَ

5050. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उ़बैदह ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे क़ुर्आन मजीद पढ़कर सुनाओ। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपको पढ़कर सुनाऊँ, आप पर तो क़ुर्आन नाज़िल होता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ सुनाओ। चुनाँचे मैंने सूरह निसा पढ़ी जब मैं आयत फकैफ़ इज़ा जिअना मिन कुल्लि उम्मतिन बिशहीदिन व जिअना बिक अ़ला हाउलाइ शहीदा पर पहुँचा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब बस करो। मैंने आपकी त़रफ़ देखा तो आँहज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू जारी थे। (राजेअ : 4582)

٥٠٥٠- حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((اقْرَأْ عَلَيَّ الْقُرْآنَ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ اقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) فَقَرَأْتُ سُورَةَ النِّسَاءِ حَتَّى أَتَيْتُ إِلَى هَذِهِ الآيَةِ ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ، وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلاَءِ شَهِيدًا﴾ قَالَ : ((حَسْبُكَ الآنَ)). فَالْتَفَتُّ إِلَيْهِ فَإِذَا عَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ. [راجع: ٤٥٨٢]

आयते शरीफ़ा को सुनकर मज़्कूरा मंज़रे क़यामत आँखों में समा गया जिससे आप (ﷺ) आबदीदा हो गये बल्कि क़ुर्आने करीम का यही तक़ाज़ा है कि मौक़ा व महल के लिहाज़ से आयाते क़ुर्आन का पूरा पूरा अष़र लिया जाए अल्लाह पाक हमको ऐसी ही तौफ़ीक़ बख़्शे। (आमीन)

बाब 34 : कितनी मुद्दत में क़ुर्आन मजीद ख़त्म करना चाहिये? और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, पस पढ़ो जो कुछ भी उसमें से तुम्हारे लिये आसान हो

٣٤- باب فِي كَمْ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ؟ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ﴾

5051. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा कि हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने शुब्रमा ने बयान किया (जो कूफ़ा के क़ाज़ी थे) कि मैंने ग़ौर किया कि नमाज़ में कितना क़ुर्आन पढ़ना काफ़ी हो सकता है। फिर मैंने देखा कि एक सूरत में तीन आयतों से कम नहीं है। इसलिये मैंने ये राय क़ायम की कि किसी के लिये तीन आयतों से कम पढ़ना मुनासिब नहीं। अ़ली अल मदीनी ने बयान किया कि हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमको मंसूर ने ख़बर दी। उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन

٥٠٥١- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ لِي ابْنُ شُبْرُمَةَ : نَظَرْتُ كَمْ يَكْفِي الرَّجُلَ مِنَ الْقُرْآنِ، فَلَمْ أَجِدْ سُورَةً أَقَلَّ مِنْ ثَلاَثِ آيَاتٍ، فَقُلْتُ لاَ يَنْبَغِي لأَحَدٍ أَنْ يَقْرَأَ أَقَلَّ مِنْ ثَلاَثِ، آيَاتٍ قَالَ عَلِيٌّ : حَدَّثَنَا سُفْيَانُ أَخْبَرَنَا مَنْصُورٌ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ أَخْبَرَهُ عَلْقَمَةُ

यज़ीद ने, उन्हें अल्क़मा ने ख़बर दी और उन्हें अबू मसऊद (रज़ि.)ने (अल्क़मा ने बयान किया कि) मैंने उनसे मुलाक़ात की तो वो बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे थे। उन्होंने नबी करीम (ﷺ) का ज़िक्र किया (कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था) कि जिसने सूरह बक़रः के आख़िर की दो आयतें रात में पढ़ लीं वो उसके लिये काफ़ी हैं। (राजेअ : 4008)

عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ وَلَقِيتُهُ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ، فَذَكَرَ النَّبِيَّ ﷺ: ((أَنَّ مَنْ قَرَأَ بِالآيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)). [راجع: ٤٠٠٨]

इससे मा'लूम हुआ कि नमाज़ में बतौर क़िरात कम से कम दो आयतों का पढ़ लेना भी काफ़ी होगा हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) का मंशा इसी मसले को बयान करना है और यही **मा तयस्सर मिन्ह** की तफ़्सीर है।

5052. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, उनसे मुग़ीरह बिन मिक़्सम ने, उनसे मुजाहिद बिन जुबैर ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे वालिद अम्र बिन अल आस़ (रज़ि.) ने मेरा निकाह़ एक शरीफ़ ख़ानदान की औरत (उम्मे मुहम्मद बिन्ते महमिया) से कर दिया था और हमेशा उसकी ख़बरगिरी करते रहते थे और उनसे बार बार उसके शौहर (या'नी ख़ुद उन) के बारे में पूछते रहते थे। मेरी बीवी कहते कि बहुत अच्छा मर्द है। अल्बत्ता जबसे मैं उनके निकाह़ में आई हूँ उन्होंने अब तक हमारे बिस्तर पर क़दम भी नहीं रखा न मेरे कपड़े में कभी हाथ डाला। जब बहुत दिन उसी तरह हो गये तो वालिद स़ाहब ने मजबूर होकर उसका तज़्किरा नबी करीम (ﷺ) से किया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझसे उसकी मुलाक़ात कराओ। चुनाँचे मैं उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) से मिला। आप (ﷺ) ने पूछा कि रोज़ा किस तरह रखते हो। मैंने अर्ज़ किया कि रोज़ाना फिर दरयाफ़्त किया क़ुर्आन मजीद किस तरह ख़त्म करते हो? मैंने अर्ज़ किया हर रात। उस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर महीने में तीन दिन रोज़े रखो और क़ुर्आन एक महीने में ख़त्म करो। बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे इससे ज़्यादा की ताक़त है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर दो दिन बिला रोज़े के रहो और एक दिन रोज़े से। मैंने अर्ज़ किया मुझे इससे भी ज़्यादा की ताक़त है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर वो रोज़ा रखो जो सबसे अफ़ज़ल है, या'नी दाऊद (अलैहिस्सलाम) का रोज़ा, एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन इफ़्तार करो और क़ुर्आन मजीद सात दिन में ख़त्म करो।

٥٠٥٢ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ مُغِيرَةَ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: أَنْكَحَنِي أَبِي امْرَأَةً ذَاتَ حَسَبٍ، فَكَانَ يَتَعَاهَدُ كَنَّتَهُ فَيَسْأَلُهَا عَنْ بَعْلِهَا، فَتَقُولُ: نِعْمَ الرَّجُلُ مِنْ رَجُلٍ، لَمْ يَطَأْ لَنَا فِرَاشًا وَلَمْ يُفَتِّشْ لَنَا كَنَفًا مُذْ أَتَيْنَاهُ، فَلَمَّا طَالَ ذَلِكَ عَلَيْهِ ذَكَرَ لِلنَّبِيِّ، فَقَالَ: الْقِنِي بِهِ فَلَقِيتُهُ بَعْدُ، فَقَالَ ((كَيْفَ تَصُومُ؟)) قَالَ كُلَّ يَوْمٍ قَالَ: ((وَكَيْفَ تَخْتِمُ؟)) قَالَ: كُلَّ لَيْلَةٍ. قَالَ: ((صُمْ فِي كُلِّ شَهْرٍ ثَلاَثَةً، وَاقْرَأِ الْقُرْآنَ فِي كُلِّ شَهْرٍ)). قُلْتُ: أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ قَالَ: ((صُمْ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ فِي الْجُمْعَةِ)). قَالَ: قُلْتُ: أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ قَالَ: ((أَفْطِرْ يَوْمَيْنِ وَصُمْ يَوْمًا)) قُلْتُ أُطِيقُ أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ قَالَ: ((صُمْ أَفْضَلَ الصَّوْمِ صَوْمَ دَاوُدَ، صِيَامَ يَوْمٍ وَإِفْطَارَ يَوْمٍ، وَاقْرَأْ فِي كُلِّ سَبْعِ لَيَالٍ مَرَّةً)). فَلَيْتَنِي قَبِلْتُ رُخْصَةَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَذَاكَ أَنِّي كَبِرْتُ

وَضَعُفْتُ فَكَانَ يَقْرَأُ عَلَى بَعْضِ أَهْلِهِ السُّبْعَ مِنَ الْقُرْآنِ بِالنَّهَارِ، وَالَّذِي يَقْرَؤُهُ يَعْرِضُهُ مِنَ النَّهَارِ لِيَكُونَ أَخَفَّ عَلَيْهِ بِاللَّيْلِ، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَتَقَوَّى أَفْطَرَ أَيَّامًا وَأَحْصَى وَصَامَ مِثْلَهُنَّ، كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتْرُكَ شَيْئًا فَارَقَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهِ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ بَعْضُهُمْ فِي ثَلاَثٍ وَفِي خَمْسٍ وَأَكْثَرُهُمْ عَلَى سَبْعٍ.

[راجع: ١١٣١]

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) कहा करते थे काश! मैंने आँहज़रत (ﷺ) की रुख़्सत क़ुबूल कर ली होती क्योंकि अब मैं बूढ़ा और कमज़ोर हो गया हूँ। हज्जाज ने कहा कि आप अपने घर के किसी आदमी को क़ुर्आन मजीद का सातवाँ हिस्सा या'नी एक मंज़िल दिन में सुना देते थे। जितना क़ुर्आन मजीद आप रात के वक़्त पढ़ते उसे पहले दिन में सुना रखते ताकि रात के वक़्त आसानी से पढ़ सकें और जब (क़ुव्वत ख़त्म हो जाती और निढाल हो जाते और) क़ुव्वत हासिल करनी चाहते तो कई कई दिन रोज़ा न रखते और उन दिनों को शुमार करते और फिर इतने ही दिन एक साथ रोज़ा रखते क्योंकि आपको ये पसंद नहीं था कि जिस चीज़ का रसूलुल्लाह (ﷺ) के आगे वा'दा कर लिया है (एक दिन रोज़ा रखना एक दिन इफ़्तार करना) उसमें से कुछ भी छोड़ें। इमाम बुख़ारी (रह) कहते हैं कि कुछ रावियों ने तीन दिन में और कुछ ने पाँच दिन में। लेकिन अकष़र ने सात रातों में ख़त्म की हदीष़ रिवायत की है। (राजेअ़: 1131)

इस हदीष़ में ख़त्मे क़ुर्आन की मुद्दतों का बयान है, बाब और हदीष़ में यही मुताबक़त है।

٥٠٥٣- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ. ((فِي كَمْ تَقْرَأُ الْقُرْآنَ؟)). [راجع: ١١٣١]

5053. हमसे सअ़द बिन हफ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन औ़फ़(रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूले करीम (ﷺ) ने पूछा। क़ुर्आन मजीद तुम कितने दिन में ख़त्म कर लेते हो? (राजेअ़: 1131)

٥٠٥٤- حدثني إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى، عَنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ مَوْلَى بَنِي زُهْرَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: وَاحْسِبُنِي قَالَ: سَمِعْتُ أَنَا مِنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْرَأِ الْقُرْآنَ فِي شَهْرٍ))، قُلْتُ: إِنِّي أَجِدُ قُوَّةً، حَتَّى قَالَ: ((فَاقْرَأْهُ فِي سَبْعٍ وَلاَ تَزِدْ عَلَى ذَلِكَ)).

5054. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको ड़बैदुल्लाह बिन मूसा ने ख़बर दी, उन्हें शैबान ने, उन्हें यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उन्हें बनी ज़ुहरा के मौला मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने। यह्या ने कहा और मैं ख़याल करता हूँ शायद मैंने ये हदीष़ ख़ुद अबू सलमा से सुनी है। बिलावास्ता (मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान के) ख़ैर अबू सलमा ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) से रिवायत किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया हर महीने में क़ुर्आन का एक ख़त्म किया करो मैंने अ़र्ज़ किया मुझको तो ज़्यादा पढ़ने की ताक़त है। आपने फ़र्माया अच्छा सात रातों में

ख़त्म किया कर उससे ज़्यादा मत पढ़ो। (राजेअ : 1131)

[راجع: ١١٣١]

इस ह़दीष़ में भी ख़त्मे क़ुर्आन की मुद्दत मुअय्यन की गई है।

बाब 35 : क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते वक़्त (ख़ौफ़े इलाही से) रोना

٣٥- باب الْبُكَاءِ عِنْدَ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ

5055. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको यह्या बिन सईद ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ष़ौरी ने, उन्हें सुलैमान ने, उन्हें इब्राहीम नख़ई ने, उन्हें उ़बैदह सलमानी ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने। यह्या क़त्तान ने कहा इस ह़दीष़ का कुछ टुकड़ा आ'मश ने इब्राहीम से ख़ुद सुना है और कुछ टुकड़ा अ़म्र बिन मुर्रह से, उन्होंने इब्राहीम से सुना है कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया।

٥٠٥٥- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ أَخْبَرَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ يَحْيَى : بَعْضُ الْحَدِيثِ عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

(दूसरी सनद) हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उ़बैदह सलमानी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने। आ'मश ने बयान किया कि मैंने इस ह़दीष़ का एक टुकड़ा तो ख़ुद इब्राहीम से सुना और एक टुकड़ा इस ह़दीष़ का मुझसे अ़म्र बिन मुर्रह ने नक़ल किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबुज़्ज़ुहा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे सामने क़ुर्आन मजीद की तिलावत करो। मैंने अ़र्ज़ किया आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने मैं क्या तिलावत करूँ। आप पर तो क़ुर्आन मजीद नाज़िल ही होता है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं चाहता हूँ कि किसी और से क़ुर्आन सुनूँ। रावी ने बयान किया कि फिर मैंने सूरह निसा पढ़ी और जब मैं आयत फ़कैफ़ इज़ा जिअना मिन कुल्लि उम्मतिन बिशहीदिन व जिअना बिक अ़ला हा उलाइ शहीदा पर पहुँचा तो आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ठहर जाओ (आँह़ज़रत ﷺ ने) किफ़ फ़र्माया या अम्सिक रावी को शक है। मैंने देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) की आँखों से आंसू बह रहे थे। (राजेअ : 4582)

٥٠٠٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ الأَعْمَشُ : وَبَعْضُ الْحَدِيثِ حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي الضُّحَى عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اقْرَأْ عَلَيَّ)). قَالَ قُلْتُ: آقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ؟ قَالَ: ((إِنِّي أَشْتَهِي أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي)). قَالَ: فَقَرَأْتُ النِّسَاءَ حَتَّى إِذَا بَلَغْتُ ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلاَءِ شَهِيدًا﴾ قَالَ لِي: ((كُفَّ أَوْ أَمْسِكْ)) فَرَأَيْتُ عَيْنَيْهِ تَذْرِفَانِ.

[راجع: ٤٥٨٢]

किफ़ और अम्सिक दोनों के एक मा'नी हैं या'नी रुक जाओ। आयत में मह़शर में रसूलुल्लाह (ﷺ) के उस वक़्त का ज़िक्र है जब आप अपनी उम्मत पर गवाही के लिये पेश होंगे।

5056. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे

٥٠٥٦- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حفص، حَدَّثَنَا

अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उ़बैदह सलमानी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे क़ुर्आन मजीद पढ़कर सुनाओ। मैंने अ़र्ज़ किया क्या मैं सुनाऊँ? आप (ﷺ) पर तो क़ुर्आन मजीद नाज़िल होता है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं किसी से सुनना महबूब रखता हूँ। (राजेअ़ : 4582)

عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبِيْدَةَ السَّلْمَانِي عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ ((اقْرَأْ عَلَيَّ)) قُلْتُ : آقْرَأُ عَلَيْكَ وَعَلَيْكَ أُنْزِلَ؟ قَالَ: ((إِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَسْمَعَهُ مِنْ غَيْرِي)).

[راجع: ٤٥٨٢]

बाब : 36 उस शख़्स के बुराई में जिसने दिखावे या शिकम परवरी या फ़ख़्र के लिये क़ुर्आन मजीद को पढ़ा

٣٦- باب مَنْ رَايَا بِقِرَاءَةِ الْقُرْآنِ أَوْ تَأَكَّلَ بِهِ أَوْ فَخَرَ بِهِ

5057. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे ख़ैष़मा बिन अ़ब्दुर्रहमान कूफ़ी ने, उनसे सुवेद बिन ग़फ़्ला ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि आख़िरी ज़माने में एक क़ौम पैदा होगी नौजवानों और कम अ़क़्लों की। ये लोग ऐसा बेहतरीन कलाम पढ़ेंगे जो बेहतरीन ख़ल्क़ का (पैग़म्बर का) है या ऐसा कलाम पढ़ेंगे जो सारे ख़ल्क़ के कलामों से अफ़ज़ल है। (या'नी ह़दीष़ या आयत पढ़ेंगे उससे सनद लाएँगे) लेकिन इस्लाम से वो इस त़रह निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार को पार करके निकल जाता है उनका ईमान उनके ह़लक़ से नीचे नहीं उतरेगा तुम उन्हें जहाँ भी पाओ क़त्ल कर दो क्योंकि उनका क़त्ल क़यामत में उस शख़्स के लिये बाइ़ष़े अज्र होगा जो उन्हें क़त्ल कर देगा। (राजेअ़ : 3611)

٥٠٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ خَيْثَمَةَ عَنْ سُوَيْدِ بْنِ غَفَلَةَ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يَأْتِي فِي آخِرِ الزَّمَانِ قَوْمٌ حُدَثَاءُ الأَسْنَانِ، سُفَهَاءُ الأَحْلاَمِ، يَقُولُونَ مِنْ خَيْرِ قَوْلِ الْبَرِيَّةِ، يَمْرُقُونَ مِنَ الإِسْلاَمِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، لاَ يُجَاوِزُ إِيمَانُهُمْ حَنَاجِرَهُمْ، فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ، فَإِنَّ قَتْلَهُمْ أَجْرٌ لِمَنْ قَتَلَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٣٦١١]

ख़ारजी मुराद हैं जिन लोगों ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के ख़िलाफ़ ख़ुरूज किया और आयाते क़ुर्आनी का बेमह़ल इस्ते'माल करके मुसलमानों में फ़ित्ना बरपा किया।

5058. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें यह़्या बिन सईद अंसारी ने, उन्हें मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन ह़ारिष़ तैमी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें एक क़ौम ऐसी पैदा होगी कि तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के मुक़ाबले में

٥٠٥٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ:

सिमिअ्तु रसूलल्लाह ﷺ

سِمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَخْرُجُ فِيكُمْ قَوْمٌ تَحْقِرُونَ صَلاَتَكُمْ مَعَ صَلاَتِهِمْ، وَصِيَامَكُمْ مَعَ صِيَامِهِمْ، وَعَمَلَكُمْ مَعَ عَمَلِهِمْ، وَيَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ، كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يَنْظُرُ فِي النَّصْلِ فَلاَ يَرَى شَيْئًا، وَيَنْظُرُ فِي الْقِدْحِ فَلاَ يَرَى شَيْئًا، وَيَنْظُرُ فِي الرِّيشِ فَلاَ يَرَى شَيْئًا، وَيَتَمَارَى فِي الْفُوقِ)). [راجع: ٣٣٤٤]

हक़ीर समझोगे, उनके रोज़ों के मुक़ाबले में तुम्हें अपने रोज़े और उनके अ़मल के मुक़ाबले में तुम्हें अपना अ़मल ह़क़ीर नज़र आएगा और वो क़ुर्आन मजीद की तिलावत भी करेंगे लेकिन क़ुर्आन मजीद उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। दीन से वो इस त़रह़ निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार को पार करते हुए निकल जाता है और वो भी इतनी स़फ़ाई के साथ (कि तीर चलाने वाला) तीर के फल में देखता है तो उसमें भी (शिकार के ख़ून वग़ैरह का) कोई अष़र नज़र नहीं आता। उससे ऊपर देखता है वहाँ भी कुछ नज़र नहीं आता। तीर के पर पर देखता है और वहाँ भी कुछ नज़र नहीं आता। बस सूफ़ार में कुछ शुब्हा गुज़रता है। (राजेअ़ : 3344)

तश्रीह़ : सूफ़ार तीर का वो मुक़ाम जो चिल्ला से लगाया जाता है कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है रावी को शक है कि आपने सूफ़ार का ज़िक्र किया या नहीं। मा'नीये-ह़दीष़ का ख़ुलास़ा ये है कि जिस त़रह़ तीर शिकार को लगते ही बाहर निकल जाता है। वही ह़ाल उन लोगों का होगा कि इस्लाम में आते ही बाहर हो जाएँगे और जिस त़रह़ तीर में शिकार के ख़ून वग़ैरह का भी कोई अष़र महसूस नहीं होता वही ह़ाल उनकी तिलावत का होगा। मुराद उनसे ख़्वारिज हैं जिन्होंने ख़लीफ़ा-ए-बरह़क़ ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के ख़िलाफ़ अ़लमे बग़ावत बुलंद किया था। ज़ाहिर में बड़ी दीनदारी का दम भरते थे लेकिन दिल में ज़रा भी नूरे ईमान न था। उन ही के बारे में ह़दीषे हाज़ा में ये मज़्मून बयान हुआ। आजकल भी ऐसे लोग बहुत हैं जो बेमह़ल आयाते क़ुर्आनी का इस्ते'माल करके उम्मत के मसला मसाइल के ख़िलाफ़ लब कुशाई करते हैं। वो दर ह़क़ीक़त इस ह़दीष़ के मिस्दाक़ हैं।

٥٠٥٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمُؤْمِنُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ، وَيَعْمَلُ بِهِ كَالأُتْرُجَّةِ، طَعْمُهَا طَيِّبٌ وَرِيحُهَا طَيِّبٌ، وَالْمُؤْمِنُ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ، وَيَعْمَلُ بِهِ كَالتَّمْرَةِ طَعْمُهَا طَيِّبٌ وَلاَ رِيحَ لَهَا. وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَالرَّيْحَانَةِ رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا مُرٌّ. وَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَالْحَنْظَلَةِ طَعْمُهَا مُرٌّ، أَوْ خَبِيثٌ وَرِيحُهَا مُرٌّ)). [راجع: ٥٠٢٠]

5059. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उस मोमिन की मिष़ाल जो क़ुर्आन मजीद पढ़ता है और उस पर अ़मल भी करता है मीठे लैमून की सी है जिसका मज़ा भी लज़्ज़तदार और ख़ुश्बू भी अच्छी और वो मोमिन जो क़ुर्आन पढ़ता तो नहीं लेकिन उस पर अ़मल करता है उसकी मिष़ाल खजूर की है जिसका मज़ा तो उ़म्दह है लेकिन ख़ुश्बू के बग़ैर और उस मुनाफ़िक़ की मिष़ाल जो क़ुर्आन पढ़ता है रयह़ान की सी है जिसकी ख़ुश्बू तो अच्छी होती है लेकिन मज़ा कड़वा होता है और उस मुनाफ़िक़ की मिष़ाल जो क़ुर्आन भी नहीं पढ़ता उंदराइन के फल की सी है जिसका मज़ा भी कड़वा होता है (रावी को शक है) कि लफ़्ज़ मुर्र है या ख़बीष़ और उसकी बू भी ख़राब होती है। (राजेअ़ : 5020)

बाब 37 : क़ुर्आन मजीद उस वक़्त तक पढ़ो जब तक दिल लगा रहे

٣٧- باب اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ قُلُوبُكُمْ

ज़रा भी दिल में उचाट हो तो उस वक़्त क़ुर्आन मजीद न पढ़ो।

5060. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अबू इ़मरान जौनी ने और उनसे ह़ज़रत जुन्दुब बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़ुर्आन मजीद उस वक़्त तक पढ़ो जब तक उसमें दिल लगे, जब जी उचाट होने लगे तो पढ़ना बन्द कर दो। (दीगर मक़ाम : 5061, 7346, 7565)

٥٠٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ قُلُوبُكُمْ، فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فَقُومُوا عَنْهُ)).

[أطرافه في : ٥٠٦١، ٧٣٦٤، ٧٣٦٥].

ये तर्जुमा भी किया गया है कि क़ुर्आन मजीद उसी वक़्त तक पढ़ो जब तक तुम्हारे दिल मिले जुले हों, इख़्तिलाफ़ और फ़साद की निय्यत न हो। फिर जब तुममें इख़्तिलाफ़ पड़ जाए और तकरार और फ़साद की निय्यत हो जाए तो उठ खड़े हो और क़ुर्आन पढ़ना मौक़ूफ़ कर दो। इख़्तिलाफ़ करके फ़साद तक नौबत पहुँचाना कितना बुरा है, ये इससे ज़ाहिर है काश! मौजूदा मुसलमान उस पर ग़ौर करें।

5061. हमसे अ़म्र बिन अ़ली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी ने बयान किया, उनसे सल्लाम बिन अबी मुत़ीअ़ ने बयान किया, उनसे अबू इ़मरान जौनी ने और उनसे ह़ज़रत जुन्दुब इब्ने अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया इस क़ुर्आन को जब ही तक पढ़ो जब तक तुम्हारे दिल मिले जुले या लगे रहें, जब इख़्तिलाफ़ और झगड़ा करने लगो तो उठ खड़े हो। (क़ुर्आन मजीद पढ़ना छोड़ दो) सल्लाम के साथ इस ह़दीष़ को ह़ारिष़ बिन उ़बैद और सईद बिन ज़ैद ने भी अबू इमरान जौनी से रिवायत किया और ह़म्माद बिन सलमा और अबान ने इसको मर्फ़ूअ़ नहीं बल्कि मौक़ूफ़न रिवायत किया है और ग़ुन्दर मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने भी शुअ़बा से, उन्होंने अबू इमरान से यूँ रिवायत किया कि मैंने जुन्दुब से सुना, वो कहते थे (लेकिन मौक़ूफ़न रिवायत किया) और अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने इसको अबू इमरान से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन स़ामित से, उन्होंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से उनका क़ौल रिवायत किया (मर्फ़ूअ़ नहीं किया) और जुन्दुब की रिवायत ज़्यादा स़ह़ीह़ है। (राजेअ़ : 5060)

٥٠٦١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا سَلاَّمُ بْنُ أَبِي مُطِيعٍ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ عَنْ جُنْدُبٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ عَلَيْهِ قُلُوبُكُمْ، فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فَقُومُوا عَنْهُ)). تَابَعَهُ الْحَارِثُ بْنُ عُبَيْدٍ وَسَعِيدُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ. وَلَمْ يَرْفَعْهُ حَمَّادُ بْنُ مَسْلَمَةَ وَأَبَانُ. وَقَالَ غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ سَمِعْتُ جُنْدُبًا قَوْلَهُ. وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ عَنْ أَبِي عِمْرَانَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الصَّامِتِ عَنْ عُمَرَ قَوْلَهُ، وَجُنْدُبٌ أَصَحُّ وَأَكْثَرُ.

[راجع: ٥٠٦٠]

5062. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे

٥٠٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ،

शुअ़बा ने, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने, उनसे नज़्ज़ाल बिन सबरह ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने एक साहब (उबई बिन कअ़ब रज़ि.) को एक आयत पढ़ते सुना, वही आयत उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसके ख़िलाफ़ सुनी थी। (इब्ने मसऊ़द रज़ि. ने बयान किया कि) फिर मैंने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में लाया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम दोनों सहीह हो (इसलिये अपने अपने तौर पढ़ो)। (शुअ़बा कहते हैं कि) मेरा ग़ालिब गुमान ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया (इख़्तिलाफ़ व निज़ाअ़ न किया करो) क्योंकि तुमसे पहले की उम्मतों ने इख़्तिलाफ़ किया और उसी वजह से अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हलाक कर दिया। (राजेअ़ : 2410)

حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَيْسَرَةَ عَنِ النَّزَّالِ بْنِ سَبْرَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ، أَنَّهُ سَمِعَ رَجُلاً يَقْرَأُ آيَةً سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ قَرَأَ خِلاَفَهَا فَأَخَذْتُ بِيَدِهِ فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: ((كِلاَكُمَا مُحْسِنٌ، فَاقْرَآ)). أَكْبَرُ عِلْمِي قَالَ : ((فَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ اخْتَلَفُوا فَأَهْلَكَهُمْ)).

[راجع: ٢٤١٠]

तश्रीह : इख़्तिलाफ़ व निज़ाअ़ से क़ुर्आन व ह़दीष़ में जिस क़दर रोका गया है सद अफ़सोस कि मुसलमानों ने उसी क़दर बाहमी इख़्तिलाफ़ व नज़ाआ़त को अपनाया है। मुसलमान गिरोह दर गिरोह इस क़दर तक़्सीम हुए हैं कि तफ़्सील के लिये दफ़ातिर की ज़रूरत है। ख़ुद अहले इस्लाम में कितने फ़िर्क़े बन गये हैं और फ़िर्क़ों में फिर फ़िर्क़े पैदा ही होते जा रहे हैं अल्लाह पाक इस चौदहवीं सदी के ख़ात्मे पर मुसलमानों को समझ दे कि वो अपने बाहमी इख़्तिलाफ़ को ख़त्म कर दें और एक अल्लाह, एक रसूल, एक क़ुर्आन, एक का'बा पर सारे कलिमा-गो मुत्तहि़द हो जाएँ, आमीन।

67. किताबुन् निकाह

निकाह के मसाइल का बयान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : निकाह की फ़ज़ीलत का बयान

अल्लाह तआ़ला ने सूरह निसा में फ़र्माया कि, तुमको जो औरतें पसंद आएँ उनसे निकाह कर लो

١ - باب التَّرْغِيبُ فِي النِّكَاحِ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ﴾ الآيَة.

5063. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा

٥٠٦٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ،

हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, कहा हमको हुमैद बिन अबी हुमैद त़वील ने ख़बर दी, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक से सुना, उन्होंने बयान किया कि तीन ह़ज़रात (अ़ली बिन अबी त़ालिक, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ और उ़स्मान बिन मज़ऊ़न (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाजे मुत़ह्हरात के घरों की त़रफ़ आपकी इबादत के बारे में पूछने आए, जब उन्हें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का अ़मल बताया गया तो जैसे उन्होंने उसे कम समझा और कहा कि हमारा आँह़ज़रत (ﷺ) से क्या मुक़ाबला! आप की तो तमाम अगली पिछली लग़्ज़िशें मुआ़फ़ कर दी गई हैं। उनमें से एक ने कहा कि आज से मैं हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ा करूँगा। दूसरे ने कहा कि मैं हमेशा रोज़े से रहूँगा और कभी नाग़ा नहीं होने दूँगा। तीसरे ने कहा कि मैं औ़रतों से जुदाई इख़्तियार कर लूँगा और कभी निकाह़ नहीं करूँगा। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और उनसे पूछा क्या तुमने ही ये बातें कही हैं? सुन लो! अल्लाह तआ़ला की क़सम! अल्लाह रब्बुल आ़लमीन से मैं तुम सबसे ज़्यादा डरने वाला हूँ। मैं तुम सबसे ज़्यादा परहेज़गार हूँ लेकिन मैं अगर रोज़े रखता हूँ तो इफ़्त़ार भी करता रहता हूँ। नमाज़ भी पढ़ता हूँ (रात में) और सोता भी हूँ और मैं औ़रतों से निकाह़ करता हूँ। मेरे त़रीक़े से जिसने बेरग़बती की वो मुझमें में नहीं है।

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ أَخْبَرَنَا حُمَيْدُ بْنُ أَبِي حُمَيْدٍ الطَّوِيلُ، أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ : جَاءَ ثَلاَثَةُ رَهْطٍ إِلَى بُيُوتِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ يَسْأَلُونَ عَنْ عِبَادَةِ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا أُخْبِرُوا كَأَنَّهُمْ تَقَالُّوهَا، فَقَالُوا : وَأَيْنَ نَحْنُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ؟ قَدْ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ. قَالَ أَحَدُهُمْ : أَمَّا أَنَا فَإِنِّي أُصَلِّي اللَّيْلَ أَبَدًا. وَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَصُومُ الدَّهْرَ وَلاَ أُفْطِرُ. وَقَالَ آخَرُ: أَنَا أَعْتَزِلُ النِّسَاءَ فَلاَ أَتَزَوَّجُ أَبَدًا. فَجَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: ((أَنْتُمُ الَّذِينَ قُلْتُمْ كَذَا وَكَذَا؟ أَمَا وَاللهِ إِنِّي لأَخْشَاكُمْ لِلَّهِ وَأَتْقَاكُمْ لَهُ، لَكِنِّي أَصُومُ وَأُفْطِرُ، وَأُصَلِّي وَأَرْقُدُ، وَأَتَزَوَّجُ النِّسَاءَ، فَمَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِي فَلَيْسَ مِنِّي)).

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ के लाने से मुह़द्दिष़ की ग़र्ज़ निकाह़ की अहमियत बतलाना है कि निकाह़ इस्लाम में सख़्त ज़रूरी अ़मल है। साथ ही इसी ह़दीष़ से ह़क़ीक़ते इस्लाम पर भी रोशनी पड़ती है जिससे अदयाने आ़लम के मुक़ाबले पर इस्लाम का दीने फ़ित़रत होना ज़ाहिर होता है। इस्लाम दुनिया व दीन दोनों की ता'मीर चाहता है वो ग़लत़ रुहबानियत और ग़लत़ त़ौर पर तर्के दुनिया का क़ाइल नहीं है। एक आ़लमगीर आख़िरी दीन के लिये उन ही औस़ाफ़ का होना ज़रूरी थी इसीलिये उसे नासिख़े अदयान क़रार देकर बनी नोअ़ इंसान का आख़िरी दीन क़रार दिया गया, सच है **इन्नद्दीन इन्दल्लाहिल इस्लाम** (आले इमरान : 19)

5064. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने ह़स्सान बिन इब्राहीम से सुना, उन्होंने यूनुस बिन यज़ीद ऐली से, उनसे ज़ुह्री ने, कहा मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद व इन ख़िफ़्तुम अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फन्किहू मा त़ाब लकुम मिनन्निसाइ (अन् निसा : 3) के बारे में पूछा, और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों से इंस़ाफ़ न कर सकोगे तो

٥٠٦٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ سَمِعَ حَسَّانَ بْنَ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ عَنْ قَوْلِهِ ﴿ تَعَالَى وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ

النِّسَاءِ مَثْنَى وَثُلاثَ وَرُبَاعَ فَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ، ذَلِكَ أَدْنَى انْ لاَ تَعُولُوا﴾ قَالَتْ: يَا ابْنَ أُخْتِي، الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا، فَيَرْغَبُ فِي مَالِهَا وَجَمَالِهَا يُرِيدُ أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِأَدْنَى مِنْ سُنَّةِ صَدَاقِهَا، فَنُهُوا أَنْ يَنْكِحُوهُنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ فَيُكْمِلُوا الصَّدَاقَ، وَأُمِرُوا بِنِكَاحِ مَنْ سِوَاهُنَّ مِنَ النِّسَاءِ.[راجع: ٢٤٩٤]

जो औरतें तुम्हें पसंद हों उनसे निकाह कर लो। दो दो से, ख़्वाह तीन तीन से, ख़्वाह चार चार से, लेकिन अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम इंसाफ़ नहीं कर सकोगे तो फिर एक ही पर बस करो या जो लौण्डी तुम्हारी मिल्क में हो, उस सूरत में क़वी उम्मीद है कि तुम ज़ुल्म व ज़्यादती न कर सकोगे। आइशा (रज़ि.) ने कहा भांजे! आयत में ऐसी यतीम मालदार लड़की का ज़िक्र है जो अपने वली की परवरिश मे हो। वो लड़की के माल और उसके हुस्न की वजह से उसकी तरफ़ माइल हो और उससे मा'मूली मुहर पर शादी करना चाहता हो तो ऐसे शख़्स को इस आयत में ऐसी लड़की से निकाह करने से मना किया गया है। हाँ! अगर उसके साथ इंसाफ़ कर सकता हो और पूरा महर अदा करने का इरादा रखता हो तो इजाज़त है, वरना ऐसे लोगों से कहा गया है कि अपनी परवरिश में यतीम लड़कियों के सिवा और दूसरी लड़कियों से शादी कर लें। (राजेअ : 2494)

तश्रीह : या'नी इस आयत में ये जो फ़र्माया अगर तुम यतीम लड़कियों में इंसाफ़ न कर सको तो जो औरतें तुमको पसंद आएँ उनसे निकाह कर लो तो उर्वा ने इसका मतलब पूछा कि यतीम लड़कियों में इंसाफ़ न करने का क्या मतलब है और **फ़न्किहू मा ताब लकुम** (अन् निसा :3) या'नी जज़ा को शर्त **व इन ख़िफ़्तुम** (अन् निसा : 3) से क्या ता' ल्लुक़ है? ये आयत सूरह निसा में है और ये हदीष़ इस सूरत की तफ़्सीर में ही गुज़र चुकी है। उर्वा के जवाब में हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ये तक़रीर फ़र्माई जो हदीष़ में मज़्कूर है।

٢- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ. لأَنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَأَحْصَنُ لِلْفَرجِ)). وَهَلْ يَتَزَوَّجُ مَنْ لاَ أَرَبَ لَهُ فِي النِّكَاحِ؟

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि तुममें जो शख़्स जिमाअ करने की ताक़त रखता हो उसे निकाह कर लेनी चाहिये

क्योंकि ये नज़र को नीची रखने वाला और शर्मगाह को महफ़ूज़ रखने वाला अमल है और क्या ऐसा शख़्स भी निकाह कर सकता है जिसे इसकी ज़रूरत न हो?

٥٠٦٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَبْدِ اللهِ، فَلَقِيَهُ عُثْمَانُ بِمِنًى فَقَالَ: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ، إِنَّ لِي إِلَيْكَ حَاجَةً فَخَلَيَا، فَقَالَ عُثْمَانُ: هَلْ لَكَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ فِي أَنْ نُزَوِّجَكَ بِكْرًا تُذَكِّرُكَ مَا كُنْتَ تَعْهَدُ؟

5065. हमसे उमर बिन हफ़्स़ ने बयान किया, मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अल्क़मा बिन क़ैस ने बयान किया कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) के साथ था, उनसे हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने मिना में मुलाक़ात की और कहा ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मुझे आपसे एक काम है फिर वो दोनों तन्हाई में चले गये। हज़रत उष्मान (रज़ि.) ने उनसे कहा ऐ अबू अब्दुर्रहमान! क्या आप मंज़ूर करेंगे कि हम आपका निकाह किसी कुँवारी लड़की से कर दें जो आपको

فَلَمَّا رَأَى عَبْدُ اللهِ أَنْ لَيْسَ لَهُ حَاجَةٌ إِلَى هَذَا أَشَارَ إِلَيَّ فَقَالَ: يَا عَلْقَمَةُ، فَانْتَهَيْتُ إِلَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ: أَمَا لَئِنْ قُلْتَ ذَلِكَ لَقَدْ قَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ الشَّبَابِ مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَهُ وِجَاءٌ)).
[راجع: ١٩٠٥]

गुज़रे हुए अय्याम याद दिला दे। चूँकि हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) उसकी ज़रूरत महसूस नहीं करते थे इसलिये उन्होंने मुझे इशारा किया और कहा अ़ल्क़मा! मैं जब उनकी ख़िदमत में पहुँचा तो वो कह रहे थे कि अगर आपका ये मश्वरा है तो रसूले करीम (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया था ऐ नौजवानों! तुममें जो भी शादी की ताक़त रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिये और जो ताक़त न रखता हो उसे रोज़ा रखना चाहिये क्योंकि ये ख़्वाहिशे नफ़्सानी को तोड़ देगा। (राजेअ़ : 1905)

तश्रीह : ख़स्सी होने से ये बेहतर और अफ़ज़ल है कि रोज़ा रखकर शह्वत को कम किया जाए। ख़स्सी होने की किसी हालत में इजाज़त नहीं दी जा सकती।

٣- باب مَنْ لَمْ يَسْتَطِعِ الْبَاءَةَ فَلْيَصُمْ

बाब 3 : जो निकाह करने की (बवजहे ग़ुर्बत के) ताक़त न रखता हो उसे रोज़ा रखना चाहिये

٥٠٦٦- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ حَدَّثَنِي عُمَارَةُ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ عَلْقَمَةَ وَالأَسْوَدِ عَلَى عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ شَبَابًا لاَ نَجِدُ شَيْئًا، فَقَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا مَعْشَرَ الشَّبَابِ، مَنِ اسْتَطَاعَ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ، فَإِنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَأَحْصَنُ لِلْفَرْجِ، وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَهُ وِجَاءٌ)).
[راجع: ١٩٠٥]

5066. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे अअ़मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे उ़मारा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा कि मैं अ़ल्क़मा और अस्वद (रह़िमहुमुल्लाह) के साथ ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ, उन्होंने हमसे कहा कि हम नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में नौजवान थे और हमें कोई चीज़ मयस्सर नहीं थी। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया, नौजवानों की जमाअ़त! तुममें जिसे भी निकाह करने के लिये माली ताक़त हो उसे निकाह कर लेना चाहिये क्योंकि ये नज़र को नीची रखने वाला और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने वाला अ़मल है और जो कोई निकाह की बवजहे ग़ुर्बत ताक़त न रखता हो उसे चाहिये कि रोज़ा रखे क्योंकि रोज़ा उसकी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को तोड़ देगा। (राजेअ़ : 1905)

रोज़ा ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को कम कर देने वाला अ़मल है इसलिये मुजर्रद (ग़ैर शादीशुदा) नौजवानों को बकष़रत रोज़ा रखना चाहिये कि ख़्वाहिशे नफ़्सानी उनको गुनाह पर न उभार सके, आज की दुनिया में ऐसे अल्लाह वाले ईमानदार नौजवानों का फ़र्ज़ है कि सिनेमाबाज़ी व फ़ह़्श रिसाले के पढ़ने और फ़ह़्श गानों के सुनने से बिलकुल दूर रहें।

٤- باب كَثْرَةِ النِّسَاءِ

बाब 4 : एक ही वक़्त में कई बीवियाँ रखने के बारे में

कई औरतों से चार तक की ता'दाद मुराद है इसकी इजाज़त इस शर्त के साथ है कि सबके हुक़ूक़ अदा किये जा सकें वरना सिर्फ़ एक ही

की इजाज़त है तलाक़ या मौत की सूरत में हस्बे मौक़ा जितनी औरतें भी निकाह में आएँ उन पर पाबन्दी नहीं है।

5067. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे अ़ता बिन अबी रिबाह ने ख़बर दी, कहा कि हम ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि) के साथ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) के जनाज़े में शरीक थे। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हैं जब तुम उनका जनाज़ा उठाओ तो ज़ोर ज़ोर से ह़रकत न देना बल्कि आहिस्ता आहिस्ता नरमी के साथ जनाज़ा को लेकर चलना। नबी करीम (ﷺ) के पास आपकी वफ़ात के वक़्त आपके निकाह में नौ बीवियाँ थीं आठ के लिये तो आपने बारी मुक़र्रर कर रखी थी लेकिन एक की बारी नहीं थी।

٥٠٦٧- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ قَالَ : حَضَرْنَا مَعَ ابْنِ عَبَّاسٍ جَنَازَةَ مَيْمُونَةَ بِسَرِفٍ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هَذِهِ زَوْجَةُ النَّبِيِّ ﷺ، فَإِذَا رَفَعْتُمْ نَعْشَهَا فَلاَ تُزَعْزِعُوهَا وَلاَ تُزَلْزِلُوهَا وَارْفُقُوا، فَإِنَّهُ كَانَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ تِسْعٌ كَانَ يَقْسِمُ لِثَمَانٍ وَلاَ يَقْسِمُ لِوَاحِدَةٍ.

बयक वक़्त नौ बीवियाँ का रखना ये ख़साइसे नबवी में से है उम्मत को सिर्फ़ चार तक की इजाज़त है जिनकी बारी मुक़र्रर नहीं थी उनसे ह़ज़रत सौदा (रज़ि.) मुराद हैं, उन्होंने बुढ़ापे की वजह से अपनी बारी ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि) को दे दी थी।

5068. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक मर्तबा एक ही रात में अपनी तमाम बीवियों के पास गये, आँह़ज़रत (ﷺ) की नौ बीवियाँ थीं। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा इब्ने ख़ियात ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से फिर यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 268)

٥٠٦٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَطُوفُ عَلَى نِسَائِهِ فِي لَيْلَةٍ وَاحِدَةٍ، وَلَهُ تِسْعُ نِسْوَةٍ. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٦٨]

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) की जो नौ बीवियाँ आख़िरी ज़िंदगी तक आप (ﷺ) के निकाह में थीं उनके अस्मा-ए-गिरामी ये हैं। (1) ह़ज़रत ह़फ़्सा (2) ह़ज़रत उम्मे ह़बीबा (3) ह़ज़रत सौदा (4) ह़ज़रत उम्मे सलमा (5) ह़ज़रत स़फ़िया (6) ह़ज़रत मैमूना (7) ह़ज़रत ज़ैनब (8) ह़ज़रत जुवेरिया (9) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ियल्लाहु अ़न्हा)। उनमें से आठ के लिये बारी मुक़र्रर की थी मगर ह़ज़रत सौदा (रज़ि.) ने बख़ुशी अपनी बारी ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) को बख़्श दी थी। इसलिये उनकी बारी साक़ित हो गई थी। नौ बीवियाँ होने के बावजूद आपके आ़दिलाना रवैये का ये ह़ाल था कि कभी किसी को शिकायत का मौक़ा नहीं दिया गया।

5069. हमसे अ़ली बिन ह़कम अंस़ारी ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे रक़्बा ने, उनसे त़लह़ा अल्यामी ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि मुझसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने पूछा क्या तुमने शादी कर ली है? मैंने

٥٠٦٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَكَمِ الأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ رَقَبَةَ، عَنْ طَلْحَةَ الْيَامِيِّ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ :

٥٠٦٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْحَكَمِ الأَنْصَارِيُّ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ رَقَبَةَ، عَنْ طَلْحَةَ الْيَامِي عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ :

अ़र्ज़ किया कि नहीं। आपने फ़र्माया शादी कर लो क्योंकि इस उम्मत के बेहतरीन शख़्स जो थे (या'नी आँहज़रत ﷺ) उनकी बहुत सी बीवियाँ थीं। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है कि इस उम्मत में अच्छे वही लोग हैं जिनकी बहुत औरतें हों।

तश्रीह : ह़द्दे शरई के अंदर बयक वक़्त चार औरतें रखी जा सकती हैं बशर्ते कि उनमें इंसाफ़ किया जा सके वरना सिर्फ़ एक ही बीवी चाहिये। कुछ ने यूँ तर्जुमा किया है इस उम्मत में अच्छे वही लोग हैं जिनकी औरतें बहुत हों। जिनका मतलब ह़द शरई के अंदर अंदर है कि एक मर्द को अगर ज़रूरत हो और वो इंसाफ़ के साथ सबकी दिलजोई कर सके और हुक़ूक़ अदा कर दे तो सिर्फ़ चार औरतों की इजाज़त है। चार से ज़ाइद बयक वक़्त निकाह में रखना इस्लाम में क़त्अ़न ह़राम है बल्कि क़ुर्आन मजीद ने साफ़ ऐलान किया है, **व इन ख़िफ़्तुम अंल्ला तअ़दिलू फवाहिद:** अगर तुमको डर हो कि इंसाफ़ न कर सकोगे तो बस सिर्फ़ एक ही औरत पर इक्तिफ़ा करो। इस सूरत में एक से ज़्यादा हर्गिज़ न रखो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उ़म्र के आख़िरी हिस्से में बयक वक़्त अपने घर में नौ बीवियाँ रखी थीं, ये आपकी ख़ुसूसियात में से है। उससे कोई ये समझे कि आपकी निय्यते शह्वत या अ़य्याशी की थी तो ऐसा समझना बिलकुल ग़लत़ है क्योंकि ऐन आ़लमे शबाब में आप (ﷺ) ने सिर्फ़ एक बूढ़ी औरत ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) पर क़नाअ़त की थी। अख़ीर उ़म्र में नौ बीवियाँ रखने में दीनी व दुनियावी बहुत से मस़ालेह़ थे जिनकी तफ़्सील मुलाह़िज़ा करने के शाइक़ीन इस मुक़ाम पर शरहे वह़ीदी का मुत़ालअ़ा फ़र्माएँ। नौ की ता'दाद में कई बूढ़ी बेवा औरतें थीं जिनको मह़ज़ मिल्ली मफ़ाद के तह़त आपने निकाह़ में क़ुबूल फ़र्मा लिया था।

٥- باب مَنْ هَاجَرَ أَوْ عَمِلَ خَيْرًا لِتَزْوِيجِ امْرَأَةٍ فَلَهُ مَا نَوَى

बाब 5 : जिसने किसी औरत से शादी की निय्यत से हिजरत की हो या किसी नेक काम की निय्यत की हो तो उसे उसकी निय्यत के मुताबिक़ बदला मिलेगा

٥٠٧٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَمَلُ بِالنِّيَّةِ، وَإِنَّمَا لاِمْرِىءٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُه إِلَى اللهِ ورسولِهِ فهجرته إلى الله ورسوله ومن كانت هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوْ امْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ)).

[راجع: ١]

5070. हमसे यह़्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन सईद ने, उनसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम बिन ह़ारिस़ ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ ने और उनसे ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है और हर शख़्स को वही मिलता है जिसकी वो निय्यत करे। इसलिये जिसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल की रज़ा ह़ास़िल करने के लिये हो। उसे अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ)की रज़ा ह़ास़िल होगी लेकिन जिसकी हिजरत दुनिया ह़ास़िल करने की निय्यत से या किसी औरत से शादी करने के इरादे से हो, उसकी हिजरत उसी के लिये है जिसके लिये उसने हिजरत की। (राजेअ़ : 1)

तश्रीह : मुज्तहिदे आज़म हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) का इशारा इस बुनियादी बात की तरफ़ है कि इस्लाम में निय्यत की बड़ी अहमियत है शादी ब्याह के भी बहुत से मामलात ऐसे हैं जो निय्यत ही पर मबनी हैं मुसलमान को लाज़िम है कि निय्यत में हर वक़्त रज़ा-ए-इलाही का तसव्वुर रखे और फ़ासिद ग़र्ज़ों का ज़हन में तसव्वुर भी न लाए।

बाब 6 : ऐसे तंगदस्त की शादी कराना जिसके पास सिर्फ़ क़ुर्आन मजीद और इस्लाम है इस बाब में हज़रत सहल (रज़ि.) से भी एक हदीष़ नबी करीम (ﷺ) से मरवी है

٦- باب تَزْوِيجِ الْمُعْسِرِ الَّذِي مَعَهُ الْقُرْآنُ وَالإِسْلاَمُ. فِيهِ سَهْلٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

5071. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे क़ैस ने बयान किया और उनसे हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने बयान कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ जिहाद किया करते थे और हमारे साथ बीवियाँ नहीं थीं। इसलिये हमने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम अपने आपको ख़स्सी क्यूँ न कर लें? आपने हमें इससे मना किया। (राजेअ : 4515)

٥٠٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي قَيْسٌ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا نَغْزُو مَعَ النَّبِيِّ ﷺ لَيْسَ لَنَا نِسَاءٌ، فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ نَسْتَخْصِي؟ فَنَهَانَا عَنْ ذَلِكَ. [راجع: ٤٦١٥]

तश्रीह : आजकल की नसबन्दी भी ख़स्सी होना ही है जो मुसलमान के लिये हर्गिज़ जाइज़ नहीं है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने इससे बाब का मतलब इस तरह से निकाला कि जब ख़स्सी होने से आपने मना फ़र्माया तो अब शहवत निकालने के लिये निकाह बाक़ी रह गया पस मा'लूम हुआ कि मुफ़्लिस को भी निकाह करना दुरुस्त है। सहल की हदीष़ में उसकी सराहत मज़्कूर हो चुकी है।

बाब 7 : किसी शख़्स का अपने भाई से ये कहना कि तुम मेरी जिस बीवी को भी पसंद कर लो मैं उसे तुम्हारे लिये तलाक़ दे दूँगा। उसको अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने भी रिवायत किया है

٧- باب قَوْلِ الرَّجُلِ لأَخِيهِ : انْظُرْ أَيَّ زَوْجَتَيَّ شِئْتَ حَتَّى أَنْزِلَ لَكَ عَنْهَا. رَوَاهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ

ये हदीष़ किताबुल बुयूअ में गुज़र चुकी है।

5072. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, उनसे हुमैद तवील ने बयान किया कि मैंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, बयान किया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) (हिजरत करके मदीना) आए तो नबी करीम (ﷺ) ने उनके और सअ़द बिन रबीअ़ अंसारी (रज़ि.) के दरम्यान भाईचारा कराया। सअ़द अंसारी (रज़ि.) के निकाह में दो बीवियाँ थीं। उन्होंने अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) से कहा कि वो उनके अहल (बीवी) और माल में से आधा लें। इस पर अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह

٥٠٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ : قَدِمَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فَآخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُ وَبَيْنَ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ الأَنْصَارِيِّ، وَعِنْدَ الأَنْصَارِيِّ امْرَأَتَانِ، فَعَرَضَ عَلَيْهِ أَنْ يُنَاصِفَهُ أَهْلَهُ وَمَالَهُ فَقَالَ : بَارَكَ اللهُ لَكَ

فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ، دُلُّونِي عَلَى السُّوقِ، فَأَتَى السُّوقَ، فَرَبِحَ شَيْئًا مِنْ أَقِطٍ وَشَيْئًا مِنْ سَمْنٍ، فَرَآهُ النَّبِيُّ ﷺ بَعْدَ أَيَّامٍ وَعَلَيْهِ وَضَرٌ مِنْ صُفْرَةٍ، فَقَالَ: ((مَهْيَمْ يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ)). فَقَالَ: تَزَوَّجْتُ أَنْصَارِيَّةً قَالَ ((فَمَا سُقْتَ))؟ قَالَ: وَزْنَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ. قَالَ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)). [راجع: ٢٠٤٩]

तआला आपके अहल और आपके माल में बरकत दे, मुझे तो बाज़ार का रास्ता बता दो। चुनाँचे आप बाज़ार आए और यहाँ आपने कुछ पनीर और कुछ घी की तिजारत की और नफ़ा कमाया। चंद दिनों के बाद उन पर ज़ा'फ़रान की ज़र्दी लगी हुई थी। आपने पूछा कि अ़ब्दुर्रह़मान ये क्या है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैंने एक अंसारी ख़ातून से शादी कर ली है। आप (ﷺ) ने पूछा कि उन्हें महर में क्या दिया अ़र्ज़ किया कि एक गुठली बराबर सोना दिया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया फिर वलीमा कर अगरचे एक बकरी ही का हो। (राजेअ़ : 2049)

तश्रीह : वलीमा सुन्नते नबवी है जो औ़रत से मिलाप के बाद किया जाना चाहिये मगर अफ़सोस कि आजकल मुसलमानों ने आ़म तौ़र पर इल्ला माशा अल्लाह उसे भी तर्क कर दिया है। ज़र्दी लगने कीवजह ये थी कि औ़रतों की ख़ुश्बू में ज़ा'फ़रान पड़ता था इस वजह से वो रंगदार हुआ करती थी। चुनाँचे एक ह़दीष़ में आया है कि मर्दों की ख़ुश्बू में रंग न हो औ़रतों की ख़ुश्बू में तेज़ बू न हो। इसीलिये ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने बादे निकाह़ जब दुल्हन से इख़्तिलात़ किया तो ज़ोजा की ताज़ा ख़ुश्बू कहीं उनके कपड़े में लग गई। ये नहीं कि क़स्दन ज़ा'फ़रान लगाया हो जिससे मर्दों के ह़क़ में नहीं आई है और दूल्हा को केसरिया लिबास पहनाने का दस्तूर जो कुछ बुतपरस्त अक़्वाम मे है इसका अ़रब में नामो निशान भी न था। पस ये वही ज़ा'फ़रानी रंग था जो दुल्हन के कपड़ों से उनके कपड़ों से लग गया था, दीगर हेच। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) को वलीमा करने का हुक्म फ़र्माया जिससे मा'लूम हुआ कि दूल्हा को वलीमा की दा'वत करना सुन्नत है मगर स़द अफ़सोस कि बेशतर मुसलमानों से ये सुन्नत भी मतरूक होती जा रही है और ब्याह शादी में क़िस्म क़िस्म की शिर्किया शक्लें अ़मल में लाई जा रही हैं। अल्लाह पाक मुसलमानों को अपने सच्चे रसूल (ﷺ) के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा करे और हमारी लग़्ज़िशों को मुआ़फ़ करे, आमीन।

٨- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّبَتُّلِ وَالْخِصَاءِ

बाब 8 : मुजर्रद रहना और अपने को नामर्द बना देना मना है

٥٠٧٣- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ سَمِعْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ رَدَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى عُثْمَانَ ابْنِ مَظْعُونٍ التَّبَتُّلَ، وَلَوْ أَذِنَ لَهُ لاَخْتَصَيْنَا. [أطرافه في : ٥٠٧٤].

5073. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब से सुना, वो कहते हैं कि मैंने ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने तबत्तुल या'नी औ़रतों से अलग रहने की ज़िंदगी से मना किया था। अगर आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें इजाज़त दे देते तो हम तो ख़स़्सी ही हो जाते। (दीगर मक़ाम : 5074)

٥٠٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ

5074. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा मुझे सईद बिन

الْمُسَيَّبِ أَنَّهُ سَمِعَ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ يَقُولُ : لَقَدْ رَدَّ ذَلِكَ - يَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ - عَلَى عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونِ التَّبَتُّلَ، وَلَوْ أَجَازَ لَهُ التَّبَتُّلَ لاَخْتَصَيْنَا. [راجع: ٥٠٧٣]

मुसय्यिब ने ख़बर दी और उन्होंने ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत उ़ष्मान बिन मज़ऊ़न (रज़ि.) को औ़रत से अलग रहने की इजाज़त नहीं दी थी। अगर आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें उसकी इजाज़त दे देते तो हम भी अपने को ख़स़्सी बना लेते। (राजेअ़ : 5073)

इस्लाम में मुजर्रद रहने को बेहतर जानने के लिये कोई गुंजाइश नहीं है बल्कि निकाह़ से बेरग़बती करने वाले को अपनी उम्मत से ख़ारिज क़रार दिया है।

٥٠٧٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: كُنَّا نَغْزُوا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَيْسَ لَنَا شَيْءٌ، فَقُلْنَا: الاَ نَسْتَخْصِي فَنَهَانَا عَنْ ذَلِكَ ثُمَّ رَخَّصَ لَنَا أَنْ نَنْكِحَ الْمَرْأَةَ بِالثَّوْبِ، ثُمَّ قَرَأَ عَلَيْنَا : (﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكُمْ، وَلاَ تَعْتَدُوا، إِنَّ اللهَ لاَ يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ﴾)). [راجع: ٤٦١٥]

5057. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद बज्ली ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ जिहाद को जाया करते थे और हमारे पास रुपया न था (कि हम शादी कर लेते) इसलिये हमने अ़र्ज़ किया हम अपने को ख़स़्सी क्यूँ न करा लें लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमें उससे मना फ़र्माया। फिर हमें उसकी इजाज़त दे दी कि हम किसी औ़रत से एक कपड़े पर (एक मुद्दत तक के लिये) निकाह़ कर लें। आपने हमें क़ुर्आन मजीद की ये आयत पढ़कर सुनाई कि, ईमान लाने वालों! वो पाकीज़ा चीज़ें मत ह़राम करो जो तुम्हारे लिये अल्लाह तआ़ला ने ह़लाल की हैं और ह़द से आगे न बढ़ो, बेशक अल्लाह ह़द से आगे बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता। (राजेअ़ : 4515)

٥٠٧٦- وَقَالَ أَصْبَغُ : أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ بْنِ يَزِيدَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي رَجُلٌ شَابٌّ، وَأَنَا أَخَافُ عَلَى نَفْسِي الْعَنَتَ، وَلاَ أَجِدُ مَا أَتَزَوَّجُ بِهِ النِّسَاءَ، فَسَكَتَ عَنِّي. ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذَلِكَ، فَسَكَتَ عَنِّي ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذَلِكَ، فَسَكَتَ عَنِّي ثُمَّ قُلْتُ مِثْلَ ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا أَبَا هُرَيْرَةَ جَفَّ الْقَلَمُ بِمَا أَنْتَ لاَقٍ، فَاخْتَصِ عَلَى

5076. और अस्बग़ ने कहा कि मुझे इब्ने वहब ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस बिन यज़ीद ने, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नौजवान हूँ और मुझे अपने पर ज़िना का डर रहता है। मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस पर मैं किसी औ़रत से शादी कर लूँ। आप मेरी ये बात सुनकर ख़ामोश रहे। दोबारा मैंने अपनी यही बात दोहराई लेकिन आप इस बार भी ख़ामोश रहे। तीसरी बार मैंने अ़र्ज़ किया आप फिर भी ख़ामोश रहे। मैंने चौथी बार अ़र्ज़ किया आपने फ़र्माया ऐ अबू हुरैरह! जो कुछ तुम करोगे उसे (लौह़े मह़फ़ूज़ में) लिखकर क़लम ख़ुश्क हो चुका है। ख़्वाह अब तुम ख़स़्सी

ذَلِكَ أَوْ ذَرْ)).

हो जाओ या बाज़ रहो। या'नी ख़स्सी होना बेकारे महज़ है।

तश्रीह : दूसरी हदीष़ में है ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा इजाज़त हो तो मैं ख़स्सी हो जाऊँ? इस सूरत मे जवाब सवाल के मुताबिक़ हो जाएगा। इससे ये मक़्सूद नहीं है कि आप (ﷺ) ने ख़स्सी होने की इजाज़त दे दी क्योंकि दूसरी ह़दीष़ों में स़राहतन इसकी मुमानअ़त वारिद है बल्कि इसमें ये इशारा है कि ख़स्सी होने में कोई फ़ायदा नहीं तेरी तक़्दीर में जो लिखा है वो ज़रूर पूरा होगा अगर ह़राम में पड़ना लिखा है तो ह़राम में मुब्तला होगा अगर बचना लिखा है तो मह़फ़ूज़ रहेगा। फिर अपने को नामर्द बनाना क्या ज़रूरी है और चूँकि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रोज़े बहुत रखा करते थे लेकिन रोज़ों से उनकी शहवत नहीं गई थी लिहाज़ा आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको रोज़ों का हुक्म नहीं दिया। रिवायत में मुतआ़ का ज़िक्र है जो वक़्ती तौर पर उस वक़्त ह़लाल था मगर बाद में क़यामत तक के लिये ह़राम क़रार दे दिया गया।

٩- باب نِكَاحِ الإِبْكَارِ

बाब 9 : कुँवारियों से निकाह़ करने का बयान

وَقَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ : قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ لِعَائِشَةَ: لَمْ يَنْكِحِ النَّبِيُّ ﷺ بِكْرًا غَيْرَكِ.

और इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आ़इशा (रज़ि.) से कहा कि आपके सिवा नबी करीम (ﷺ) ने किसी कुँवारी लड़की से निकाह़ नहीं किया।

٥٠٧٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ لَوْ نَزَلْتَ وَادِيًا وَفِيهِ شَجَرَةٌ قَدْ أُكِلَ مِنْهَا، وَوَجَدْتَ شَجَرًا لَمْ يُؤْكَلْ مِنْهَا، فِي أَيِّهَا كُنْتَ تُرْتِعُ بَعِيرَكَ؟ قَالَ: ((فِي الَّتِي لَمْ يُرْتَعْ مِنْهَا)). تَعْنِي أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمْ يَتَزَوَّجْ بِكْرًا غَيْرَهَا.

5077. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फ़र्माइये अगर आप किसी वादी में उतरें और उसमें एक पेड़ ऐसा हो जिसमें ऊँट चर गये हों और एक दरख़्त ऐसा हो जिसमें से कुछ भी न खाया गया हो तो आप अपना ऊँट उन दरख़्तों में से किसी पेड़ में चराएँगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस पेड़ में जिसमें से अभी चराया न गया हो। उनका इशारा इस त़रफ़ था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके सिवा किसी कुँवारी लड़की से निकाह़ नहीं किया।

٥٠٧٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُرِيتُكِ فِي الْمَنَامِ مَرَّتَيْنِ، إِذَا رَجُلٌ يَحْمِلُكِ فِي سَرَقَةِ حَرِيرٍ فَيَقُولُ: هَذِهِ امْرَأَتُكَ، فَأَكْشِفُهَا فَإِذَا هِيَ أَنْتِ. فَأَقُولُ: إِنْ يَكُنْ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ يُمْضِهِ)).

5078. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ आ़इशा (रज़ि.)! मुझे ख़्वाब में दो बार तुम दिखाई गईं। एक शख़्स़ (जिब्रईल अ़लैहि.) तुम्हारी सूरत ह़रीर के एक टुकड़े में उठाए हुए है और कहता है कि ये आपकी बीवी है मैंने जो उस कपड़े को खोला तो उसमें तुम थीं। मैंने ख़्याल किया कि अगर ये ख़्वाब अल्लाह की त़रफ़ से है तो वो इसे ज़रूर पूरा करके रहेगा।

(राजेअ़ : 3895) [راجع: ٣٨٩٥]

कुछ ख़्वाब हूबहू सच्चे हो जाते हैं जिसकी मिष़ाल आँह़ज़रत (ﷺ) का ये ख़्वाब है।

बाब 10 : बेवा औ़रतों का बयान और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपनी बेटियाँ और बहनें निकाह़ के लिये मेरे सामने मत पेश करो

١٠- باب الثَّيِّبَاتِ

وَقَالَتْ أُمُّ حَبِيبَةَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ)).

5079. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हशम ने बयान किया, कहा हमसे सय्यार बिन अबी सय्यार ने बयान किया, उनसे आ़मिर शअ़बी ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक जिहाद से वापस हो रहे थे। मैं अपने ऊँट को जो सुस्त था तेज़ चलाने की कोशिश कर रहा था। इतने में मेरे पीछे से एक सवार मुझसे आकर मिला और अपना नेज़ा मेरे ऊँट को चुभो दिया। उसकी वजह से मेरा ऊँट तेज़ चल पड़ा जैसा कि किसी उ़म्दह क़िस्म के ऊँट की चाल तुमने देखी होगी। अचानक नबी करीम (ﷺ) मिल गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा जल्दी क्यूँ कर रहे हो? मैंने अ़र्ज़ किया अभी मेरी नई शादी हुई है। आप (ﷺ) ने पूछा कुँवारी से या बेवा से? मैंने अ़र्ज़ किया कि बेवा से। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि किसी कुँवारी से क्यूँ न की तुम उसके साथ दिल्लगी करते और वो तुम्हारे साथ करती। बयान किया कि फिर जब हम मदीना में दाख़िल होने वाले थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि थोड़ी देर ठहर जाओ और रात हो जाए तब दाख़िल हो ताकि परेशान बालों वाली कंघा कर ले वे और जिनके शौहर मौजूद नहीं थे वो अपने बाल स़ाफ़ कर लें। (राजेअ़ : 443)

٥٠٧٩- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا سَيَّارٌ عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، قَالَ: قَفَلْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ غَزْوَةٍ، فَتَعَجَّلْتُ عَلَى بَعِيرٍ لِي قَطُوفٍ، فَلَحِقَنِي رَاكِبٌ مِنْ خَلْفِي، فَنَخَسَ بَعِيرِي بِعَنَزَةٍ كَانَتْ مَعَهُ، فَانْطَلَقَ بَعِيرِي كَأَجْوَدِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنَ الإِبِلِ، فَإِذَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: ((مَا يُعْجِلُكَ))؟ قُلْتُ: كُنْتُ حَدِيثَ عَهْدٍ بِعُرْسٍ. قَالَ: ((بِكْرًا أَمْ ثَيِّبًا؟)) قُلْتُ: ثَيِّبًا. قَالَ: ((فَهَلاَّ جَارِيَةً تُلاَعِبُهَا وَتُلاَعِبُكَ)). قَالَ: فَلَمَّا ذَهَبْنَا لِنَدْخُلَ قَالَ : ((أَمْهِلُوا حَتَّى تَدْخُلُوا لَيْلاً - أَيْ عِشَاءً - لِكَيْ تَمْتَشِطَ الشَّعِثَةُ وَتَسْتَحِدَّ الْمُغِيبَةُ)).

[راجع: ٤٤٣]

तश्रीह़ : दूसरी ह़दीष़ में इसकी मुख़ालफ़त है कि रात को आदमी सफ़र से आकर अपने घर में जाए मगर वो मह़मूल है उस पर जब उसके घर वालों को दिन से उसके आने की ख़बर न हो जाए और यहाँ लोगों के आने की ख़बर औ़रतों को दिन से हो गई होगी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़रा दम लेकर जाओ ताकि औ़रतें अपना बनाव सिंगार कर लें।

5080. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुह़ारिब बिन दष़ार ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैंने शादी की तो नबी

٥٠٨٠- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مُحَارِبٌ قَالَ : سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ تَزَوَّجْتُ، فَقَالَ لِي

رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. ((مَا تَزَوَّجْتَ))؟ فَقُلْتُ تزوجت ثَيِّبًا. فَقَالَ: ((مَا لَكَ وَلِلْعَذَارَى وَلِعَابِهَا)). فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، فَقَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((هَلاَّ جَارِيَةً تُلاَعِبُهَا وَتُلاَعِبُكَ)).

[راجع: ٤٤٣]

करीम (ﷺ) ने मुझसे पूछा कि किससे शादी की है? मैंने अ़र्ज़ किया कि एक बेवा औरत से। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कुँवारी से क्यूँ न की कि उसके साथ तुम दिल्लगी करते। मुहारिब ने कहा फिर मैंने आँहज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद अ़म्र बिन दीनार से बयान किया तो उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना है, मुझसे उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) का फ़र्मान इस त़रह बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया तुमने किसी कुँवारी औरत से शादी क्यूँ न की कि तुम उसके साथ खेलकूद करते और वो तुम्हारे साथ खेलती। (राजेअ : 443)

बेवा से भी निकाह़ जाइज़ है और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है गो कुँवारी से शादी करना बेहतर है। हिन्दुस्तान में पहले मुसलमानों के य हाँ भी निकाह़ बेवगान को मअ़यूब समझा जाता था मगर ह़ज़रत मौलाना शाह इस्माईल शहीद (रह़) ने इस रस्मे बद के ख़िलाफ़ जिहाद किया और उसे अ़मलन ख़त्म कराया।

١١- باب تَزْوِيجِ الصِّغَارِ مِنَ الْكِبَارِ

बाब 11 : कम उ़म्र की औ़रत से ज़्यादा उ़म्र वाले मर्द के साथ शादी का होना

٥٠٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ عَنْ عِرَاكٍ، عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَطَبَ عَائِشَةَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ، فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ: إِنَّمَا أَنَا أَخُوكَ، فَقَالَ : ((أَنْتَ أَخِي فِي دِينِ اللهِ وَكِتَابِهِ، وَهِيَ لِي حَلاَلٌ)).

5081. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे यज़ीद बिन ह़बीब ने, उनसे इराक बिन मालिक ने और उनसे उ़र्वा ने कि नबी करीम (ﷺ) ने आइशा (रज़ि.) से शादी के लिये अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) से कहा। अबूबक्र (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि मैं आपका भाई हूँ (आप आइशा कैसे निकाह़ कैसे करेंगे?) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के दीन और उसकी किताब पर ईमान लाने के रिश्ते से तुम मेरे भाई हो और आइशा मेरे लिये ह़लाल है।

इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि कम उ़म्र की औ़रत से बड़ी उ़म्र के मर्द की शादी जाइज़ है।

١٢- باب إِلَى مَنْ يَنْكِحُ، وَأَيُّ النِّسَاءِ خَيْرٌ؟ وَمَا يُسْتَحَبُّ أَنْ يَتَخَيَّرَ لِنُطَفِهِ مِنْ غَيْرِ إِيجَابٍ

बाब 12 : किस त़रह की औ़रत से निकाह़ किया जाए और कौनसी औ़रत बेहतर है? और मर्द के लिये अच्छी औ़रत को अपनी नस्ल के लिये बीवी बनाना बेहतर है, मगर ये वाजिब नहीं है

٥٠٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ

5082. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज

ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऊँट पर सवार होने वाली (अरब) औरतों में बेहतरीन औरत क़ुरैश की सालेह औरत होती है जो अपने बच्चे से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करने वाली और अपने शौहर के माल-अस्बाब में उसकी उम्दह निगाहबान व निगरान षाबित होती है। (राजेअ : 3434)

أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((خَيْرُ نِسَاءٍ رَكِبْنَ الإِبِلَ صَالِحُو نِسَاءِ قُرَيْشٍ : أَحْنَاهُ عَلَى وَلَدٍ فِي صِغَرِهِ، وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ)). [راجع: ٣٤٣٤]

इस हदीष से मा'लूम हुआ कि निकाह के लिये औरत का दीनदार होना साथ ही ख़ानगी उमूर से वाक़िफ़ होना भी ज़रूरी है।

बाब 13 : लौण्डी का रखना कैसा है और उस शख़्स का षवाब जिसने अपनी लौण्डी को आज़ाद किया और फिर उससे शादी कर ली

١٣- باب اتِّخَاذِ السَّرَارِيِّ وَمَنْ أَعْتَقَ جَارِيَتَهُ ثُمَّ تَزَوَّجَهَا

اسے دہرا ثواب ملے گا۔

5083. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने, कहा हमसे सालेह बिन सालेह हम्दानी ने, कहा हमसे आमिर शअबी ने, कहा कि मुझसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख़्स के पास लौण्डी हो वो उसे ता'लीम दे और ख़ूब अच्छी तरह दे, उसे अदब सिखाए और पूरी कोशिश और मेहनत के साथ सिखाए और उसके बाद उसे आज़ाद करके उससे शादी कर ले तो उसे दोहरा षवाब मिलता है और अहले किताब में से जो शख़्स भी अपने नबी पर ईमान रखता हो और मुझ पर ईमान लाए तो उसे दोहरा षवाब मिलता है और जो ग़ुलाम अपने आक़ा के हुक़ूक़ भी अदा करता है और अपने रब के हुक़ूक़ भी अदा करता है उसे दोहरा षवाब मिलता है। आमिर शअबी ने (अपने शागिर्द से इस हदीष को सुनाने के बाद) कहा कि बग़ैर किसी मशक़्क़त और मेहनत के इसे सीख लो। उससे पहले तालिब इल्मों को इस हदीष से कम के लिये भी मदीना तक का सफ़र करना पड़ता था। और अबूबक्र ने बयान किया अबू हुसैन से, उसने अबू बुर्दा से, उनसे अपने वालिद से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि, इस शख़्स ने बांदी को (निकाह करने के लिये) आज़ाद कर दिया और यही आज़ादी उसका मुहर मुक़र्रर की। (राजेअ : 97)

٥٠٨٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ حَدَّثَنَا صَالِحُ بْنُ صَالِحٍ الْهَمْدَانِيُّ، حَدَّثَنَا الشَّعْبِيُّ حَدَّثَنِي أَبُو بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَيُّمَا رَجُلٍ كَانَتْ عِنْدَهُ وَلِيدَةٌ فَعَلَّمَهَا فَأَحْسَنَ تَعْلِيمَهَا، وَأَدَّبَهَا فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهَا، ثُمَّ أَعْتَقَهَا وَتَزَوَّجَهَا، فَلَهُ أَجْرَانِ. وَأَيُّمَا رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمَنَ بِنَبِيِّهِ وَآمَنَ بِي، فَلَهُ أَجْرَانِ. وَأَيُّمَا مَمْلُوكٍ أَدَّى حَقَّ مَوَالِيهِ وَحَقَّ رَبِّهِ، فَلَهُ أَجْرَانِ)).
قَالَ الشَّعْبِيُّ : خُذْهَا بِغَيْرِ شَيْءٍ، قَدْ كَانَ الرَّجُلُ يَرْحَلُ فِيمَا دُونَهُ إِلَى الْمَدِينَةِ. وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: عَنْ أَبِي حَصِينٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَعْتَقَهَا ثُمَّ أَصْدَقَهَا)). [راجع: ٩٧]

5084. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, कहा कि मुझे अब्दुल्लाह बिन वहब ने ख़बर दी, कहा कि मुझे जरीर बिन हाज़िम ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब सुख़ितयानी ने, उन्हें मुहम्मद

٥٠٨٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ وَهْبٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي جَرِيرُ

बिन सीरीन ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया।

بْنُ حَازِمٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ . . .)).

(दूसरी सनद) हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की ज़ुबान से तीन बार के सिवा कभी दीन में झूठ बात नहीं निकली। एक मर्तबा आप एक ज़ालिम बादशाह की हुकूमत से गुज़रे आपके साथ आपकी बीवी सारा (अलैहि.) थीं। फिर पूरा वाक़िया बयान किया (कि बादशाह के सामने) आपने सारा (अलैहि.) को अपनी बहन (या'नी दीनी बहन) कहा। फिर उस बादशाह ने सारा (अलैहि.) को हाजर (हाजरा) को दे दिया। (बीबी सारा अलैहि. ने इब्राहीम अलैहि. से) कहा कि अल्लाह तआला ने काफ़िर के हाथ को रोक दिया और आजर (हाजरा अलैहि.) को मेरी ख़िदमत के लिये दिलवाया। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि ऐ आसमान के पानी के बेटो! या'नी ऐ अरबवालों! यही हाजरा (अलैहि.) तुम्हारी माँ हैं। (राजेअ: 2217)

٥٠٠٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ حَمَّادِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ لَمْ يَكْذِبْ إِبْرَاهِيمُ إِلاَّ ثَلاَثَ كَذَبَاتٍ: بَيْنَمَا إِبْرَاهِيمُ مَرَّ بِجَبَّارٍ وَمَعَهُ سَارَةُ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فَأَعْطَاهَا هَاجَرَ قَالَتْ: كَفَّ اللهُ يَدَ الْكَافِرِ، وَأَخْدَمَنِي آجَرَ. قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : فَتِلْكَ أُمُّكُمْ يَا بَنِي مَاءِ السَّمَاءِ.

[راجع: ٢٢١٧]

तश्रीह: हज़रत हाजरा (अलैहि.) उस बादशाह की लड़की थी उसने हज़रत सारा (अलैहि.) और हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) की करामात को देखा और एक मुअ़ज़्ज़ रूहानी घराना देखकर अपनी और बेटी की सआ़दतमंदी तस़व्वुर करते हुए अपनी बेटी हज़रत हाजरा (अलैहि.) को उस घराने की इज़्ज़त के पेशेनज़र हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) के हरम में दाख़िल कर दिया। हज़रत हाजरा (अलैहि.) को लौण्डी कहा गया है ये शाही ख़ानदान की बेटी थी जिसकी क़िस्मत में उम्मे इस्माईल बनने की सआ़दत अज़ल से मरक़ूम थी। जिन तीन बातों को झूठ कहा गया है वो हक़ीक़त में झूठ न थीं और यही हज़रत सारा (अलैहि.) को बहन कहना ये दीने तौहीद की बिना पर आपने कहा था क्योंकि दीन की बिना पर हर मर्द और औरत भाई-बहन हैं। दूसरा वाक़िया उस वक़्त पेश आया जबकि कुफ़्फ़ार आपको भी अपने साथ अपने त्याहार में शामिल करना चाहते थे। आपने फ़र्माया था कि मैं बीमार हूँ। ये भी झूठ न था इसलिये कि उन काफ़िरों की हरकते बद देख देखकर आप बहुत दुखी थे इसलिये आपने अपने को बीमार कहा। तीसरा मौक़ा आपकी बुत शिकनी के वक़्त था जबकि आपने बतौरे इस्तिफ़्हाम इस काम को बड़े बुत की तरफ़ मन्सूब किया था।

5085. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा कि हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ैबर और मदीना के दरम्यान तीन दिन तक क़याम किया और यहीं उम्मुल मोमिनीन हज़रत स़फ़िया बिन्ते हुय्य (रज़ि.) के साथ ख़ल्वत की। फिर मैं ने आँहज़रत (ﷺ) के वलीमा की मुसलमानों को दा'वत दी। उस दा'वते वलीमा में न रोटी थी और न गोश्त था। दस्तरख़्वान बिछाने का हुक्म हुआ और उस पर खजूर, पनीर और घी रख दिया गया और यही आँहज़रत

٥٠٨٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ خَيْبَرَ وَالْمَدِينَةِ ثَلاَثًا يُبْنَى عَلَيْهِ بِصَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيٍّ، فَدَعَوْتُ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ، فَمَا كَانَ فِيهَا مِنْ خُبْزٍ وَلاَ لَحْمٍ، أَمَرَ بِالأَنْطَاعِ فَأُلْقِيَ فِيهَا مِنَ التَّمْرِ وَالأَقِطِ

وَالسَّمْنِ، فَكَانَتْ وَلِيمَتَهُ، فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ : إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، أَوْ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ؟ فَقَالُوا: إِنْ حَجَبَهَا فَهِيَ مِنْ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، وَإِنْ لَمْ يَحْجُبْهَا فَهِيَ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ، فَلَمَّا ارْتَحَلَ وَطَّأَ لَهَا خَلْفَهُ وَمَدَّ الْحِجَابَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ النَّاسِ.

[راجع: ٣٧١]

(ﷺ) का वलीमा था। कुछ मुसलमानों ने पूछा कि हज़रत सफ़िया (रज़ि.) उम्महातुल मोमिनीन में से हैं (या'नी आँहज़रत ﷺ ने उनसे निकाह किया है) या लौण्डी की हैषियत से आपने उनके साथ ख़ल्वत की है? इस पर कुछ लोगों ने कहा कि अगर आँहज़रत (ﷺ) उनके लिये पर्दा का इंतिज़ाम करें तो इससे षाबित होगा कि वो उम्महातुल मोमिनीन में से हैं और अगर उनके लिये पर्दा का एहतिमाम न करें तो इससे षाबित होगा कि वो लौण्डी की हैषियत से आपके साथ हैं। फिर जब कूच करने का वक़्त हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये अपनी सवारी पर बैठने के लिये जगह बनाई और उनके लिये पर्दा डाला ताकि लोगों को वो नज़र न आएँ। (राजेअ : 371)

इससे ज़ाहिर हुआ कि वो उम्महातुल मोमिनीन में दाख़िल हो चुकी हैं। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है कि आपने सफ़िया (रज़ि.) को आज़ाद करके अपने हरम में दाख़िल कर लिया।

١٤- باب مَنْ جَعَلَ عِتْقَ الأَمَةِ صَدَاقَهَا

बाब 14 : जिसने लौण्डी की आज़ादी को उसका मेहर क़रार दिया

٥٠٨٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ، وَشُعَيْبُ بْنِ الْحَبْحَابِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَعْتَقَ صَفِيَّةَ، وَجَعَلَ عِتْقَهَا صَدَاقَهَا.

5086. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित बिनानी और शुऐब बिन हब्हाब ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत सफ़िया (रज़ि.) को आज़ाद किया और उनकी आज़ादी को उनका मेहर क़रार दिया।

सफ़िया बिन्ते हुय्य (रज़ि.) जो जंगे ख़ैबर में गिरफ़्तार हुई थीं। आप (ﷺ) ने उनको आज़ाद करके अपने अज़्वाज में दाख़िल कर लिया था। हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ व मुहम्मद और हनाबिला और षौरी और अहले हदीष का यही क़ौल है कि लौण्डी की आज़ादी यही उसका महर हो सकती है और हनफ़िया व शाफ़िइया कहते हैं कि आँहज़रत (ﷺ) का ख़ास्सा था और किसी को ऐसा करना दुरुस्त नहीं। अहले हदीष की दलील हज़रत अनस (रज़ि.) की हदीष है। इसमें साफ़ ये है कि आज़ादी ही महर क़रार पाई।

शाफ़िइया और हनफ़िया कहते हैं कि हज़रत अनस (रज़ि.) को दूसरे महर का इल्म नहीं हुआ तो उन्होंने अपने इल्म की नफ़ी की न असल महर की। अहले हदीष कहते हैं कि तबरानी और अबुश शैख़ ने ख़ुद हज़रत सफ़िया (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा मेरी आज़ादी ही मेरा मेहर क़रार पाई। दलाइल के लिहाज़ से यही मसलक राजेह है। इसलिये अहले हदीष का मसलक ही सहीह है। फ़तहुल बारी में है **अख़ज़ बिज़ाहिरिही मिनल्कुदमाइ सइद इब्निल्मुसय्यिब व इब्राहीम अन्नख़ई व ताऊस वज़्ज़ुहरी व मिन फ़ुहाइल्अम्सार अष्षौरी व अबू यूसुफ़ व अहमद व इस्हाक़ क़ालू इज़ा आतक़ अला अंय्यज़्अल इत्क़हा सदाक़हा सह्हल्अक़्दु वल्इत्क़ु वल्महरू अला ज़ाहिरिल्हदीषि**

١٥- باب تَزْوِيجِ الْمُعْسِرِ، لِقَوْلِهِ

बाब 15 : मुफ़्लिस का निकाह कराना दुरुस्त है

तَعَالَى ﴿إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهِ﴾.

जैसा कि अल्लाह पाक ने सूरह नूर में फ़र्माया है कि अगर वो (दूल्हा दुल्हन) नादार हैं तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें मालदार कर देगा।

कुछ दफ़ा निकाह तंगदस्त के लिये बाइ़षे बरकत बन जाता है और उसके ज़रिये रोज़ी वसीअ़ हो जाती है, उसी ह़क़ीक़त की तरफ़ इशारा है। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से मरवी है कि तुम अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक़ निकाह़ कर लो अल्लाह भी अपना वा'दा पूरा करेगा तुमको मालदार कर देगा। इस आयत से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने ये निकाला कि नादारी स़ेह़ते निकाह़ के लिये मानेअ़ नहीं है, हाँ आइन्दा अगर नान नफ़्क़ा न हो तो फिर मामला अलग है ऐसी ह़ालत में क़ाज़ी तफ़रीक़ करा सकता है।

٥٠٨٧ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ جِئْتُ أَهَبُ لَكَ نَفْسِي قَالَ: فَنَظَرَ إِلَيْهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَصَعَّدَ النَّظَرَ فِيهَا وَصَوَّبَهُ، ثُمَّ طَأْطَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَأْسَهُ، فَلَمَّا رَأَتِ الْمَرْأَةُ أَنَّهُ لَمْ يَقْضِ فِيهَا شَيْئًا جَلَسَتْ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ فَزَوِّجْنِيهَا. فَقَالَ: ((وَهَلْ عِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ؟)) قَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ. فَقَالَ: ((اذْهَبْ إِلَى أَهْلِكَ فَانْظُرْ هَلْ تَجِدُ شَيْئًا)) فَذَهَبَ، ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: لاَ وَاللهِ مَا وَجَدْتُ شَيْئًا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((انْظُرْ وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)) فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ، وَلاَ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ، وَلَكِنْ هَذَا إِزَارِي قَالَ سَهْلٌ: مَالَهُ رِدَاءٌ فَلَهَا نِصْفُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا تَصْنَعُ بِإِزَارِكَ، إِنْ لَبِسْتَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْهَا مِنْهُ شَيْءٌ، وَإِنْ لَبِسَتْهُ لَمْ يَكُنْ

5087. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक औ़रत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आई और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं आपकी ख़िदमत में अपने आपको आपके लिये वक़्फ़ करने ह़ाज़िर हुई हूँ। रावी ने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने नज़र उठाकर उसे देखा। फिर आपने नज़र को नीची किया और फिर अपना सर झुका लिया। जब उस औ़रत ने देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके बारे में कोई फ़ैसला नहीं किया तो वो बैठ गई। उसके बाद आप (ﷺ) के एक स़ह़ाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ) अगर आपको इनसे निकाह की ज़रूरत नहीं है तो मेरा निकाह़ कर दीजिए। आपने पूछा तुम्हारे पास (महर के लिये) कोई चीज़ है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि नहीं अल्लाह की क़सम या रसूलल्लाह (ﷺ)! आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि अपने घर जा और देखो मुम्किन है तुम्हें कोई चीज़ मिल जाए। वो गये और वापस आ गये और अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम मैंने कुछ नहीं पाया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर लोहे की एक अंगूठी भी मिल जाए तो ले आओ। वो गये और वापस आ गये और अ़र्ज़ किया। अल्लाह की क़सम या रसूलल्लाह! मेरे पास लोहे की एक अंगूठी भी नहीं है। अल्बत्ता मेरे पास ये एक तहमद है। उन्हें (ख़ातून को) उसमें से आधा दे दीजिए। ह़ज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने फ़र्माया ये तुम्हारे इस तहमद का क्या करेगी। अगर तुम इसे पहनोगे तो उनके लिये इसमें कुछ नहीं बचेगा और अगर वो पहन ले तो तुम्हारे लिये कुछ नहीं रहेगा। उसके बाद वो स़ह़ाबी बैठ गये। काफ़ी देर

बैठे रहने के बाद जब वो खड़े हुए तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें देखा कि वो वापस जा रहे हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुलवाया जब वो आए तो आपने पूछा कि तुम्हें क़ुर्आन मजीद कितना याद है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ फ़लाँ सूरतें याद हैं। उन्होंने गिनकर बताईं। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुम उन्हें बग़ैर देखे पढ़ सकते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर जाओ। मैंने उन्हें तुम्हारे निकाह में दिया। इन सूरतों के बदले जो तुम्हें याद हैं। (राजेअ़ : 2310)

عَلَيْكَ شَيْءٌ)). فَجَلَسَ الرَّجُلُ حَتَّى إِذَا طَالَ مَجْلِسُهُ قَامَ، فَرَآهُ رَسُولُ اللهِ مُوَلِّيًا فَأَمَرَ بِهِ فَدُعِيَ فَلَمَّا جَاءَ قَالَ: ((مَاذَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ؟)) قَالَ: مَعِي سُورَةُ كَذَا، وَسُورَةُ كَذَا، عَدَّدَهَا فَقَالَ: ((تَقْرَؤُهُنَّ عَنْ ظَهْرِ قَلْبِكَ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((اذْهَبْ فَقَدْ مَلَّكْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)). [راجع: ٢٣١٠]

तश्रीह : तुम्हारा महर यही है कि तुम इसको वो सूरतें जो तुमको याद हैं इनको याद करा देना। नसाई और अबू दाऊद की रिवायत में सूरह बक़रः और उसके पास वाली सूरत आले इमरान मज़्कूर है। दारे क़ुत्नी की रिवायत में सूरह बक़रह और मुफ़स्सल की चंद सूरतें मज़्कूर हैं। एक रिवायत मे यूँ है ह़ज़रत अबू उमामा (रज़ि.) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक अंसारी का निकाह सात सूरतों पर कर दिया। एक रिवायत में यूँ है कि उसको बीस आयतें सिखला दे वो तेरी बीवी है। इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि ता'लीमुल क़ुर्आन पर उजरत लेना जाइज़ है और ह़नफ़िया ने बरख़िलाफ़ इन अह़ादीषे स़ह़ीह़ा के ये हुक्म दिया है कि ता'लीमुल क़ुर्आन महर नहीं हो सकती और कहते हैं **इन तब्तग़ू बिअम्वालिकुम** हम कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ता'लीमुल क़ुर्आन को भी माल क़रार दिया और आँह़ज़रत (ﷺ) से ज़्यादा क़ुर्आन को तुम नहीं जानते। वल्लाहु आलम!

बाब 16 : किफ़ायत में दीनदारी का लिहाज़ होना और सूरह फ़ुरक़ान में

अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि अल्लाह वही है जिसने इंसान को पानी (नुत्फ़े) से पैदा किया, फिर उसे ददिहाल और ससुराल के रिश्तों में बांट दिया (इसको किसी का बेटा बेटी किसी का दामाद बहू बना दिया (या'नी ख़ानदानी और ससुराल दोनों रिश्ते रखे) और ऐ पैग़म्बर! तेरा मालिक बड़ी क़ुदरत वाला है।

١٦ - باب الإِكْفَاءِ فِي الدِّينِ وَقَوْلِهِ

﴿وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا. وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا﴾

तश्रीह : या'नी काफ़िर मुसलमान का कुफ़्व नहीं हो सकता कुछ ने किफ़ायत में स़िर्फ़ दीन का इत्तिह़ाद काफ़ी समझा है और किसी बात की ज़रूरत नहीं मष़लन सय्यद, शैख़, मुग़ल, पठान जो मुसलमान हों वो सब एक–दूसरे के कुफ़्व हैं लेकिन जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक (इस्लाम के बाद) किफ़ायत में नसब और ख़ानदान का भी लिहाज़ होना चाहिये। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़) ने कहा है कि क़ुरैश एक–दूसरे के कुफ़्व हैं दूसरे अ़रब उनके कुफ़्व नहीं हैं। शाफ़िइया और ह़नफ़िया के नज़दीक अगर वली राज़ी हों तो ग़ैर कुफ़्व मे भी निकाह़ स़ह़ीह़ है मगर एक वली भी अगर नाराज़ हो तो निकाह़ फ़स्ख़ करा सकता है (वह़ीदी)। (मुहाजिरीन स़ह़ाबा का अंसार की औरतों से निकाह़ करना ष़ाबित है कि किफ़ायत में स़िर्फ़ दीन ही काफ़ी है बाक़ी सब कुछ इज़ाफ़ी और ष़ानवी ह़ैषियत रहे और अगली ह़दीष़ भी इसी बात की ताईद करने वाली हैं । अ़ब्दुर्रशीद तौंसवी)

5088. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़ बर दी और

٥٠٨٨ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ

उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि अबू हुज़ैफ़ह (रज़ि.) बिन उत्बा बिन रबीआ बिन अब्दे शम्स (मह्शम) ने जो उन सहाबा में से थे जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) के साथ ग़ज़्व-ए-बद्र में शिर्कत की थी। सालिम बिन मअक़ल (रज़ि) को लय पालक बेटा बनाया, और फिर उनका निकाह अपने भाई की लड़की हिन्दा बिन्तुल वलीद बिन उत्बा बिन रबीआ (रज़ि) से कर दिया। पहले सालिम (रज़ि.) एक अंसारी ख़ातून (शबीआ बिन्ते यआर) के आज़ादकर्दा ग़ुलाम थे लेकिन अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने उनको अपना मुँह बोला बेटा बनाया था। जैसा कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़ैद (रज़ि.) को (जो आप ﷺ ही के आज़ादकर्दा ग़ुलाम थे) अपना लय पालक बेटा बनाया था। जाहिलियत के ज़माने में ये दस्तूर था कि अगर कोई शख़्स किसी को लय पालक बेटा बना लेता तो लोग उसे उसी की तरफ़ निस्बत करके पुकारा करते थे और लय पालक बेटा उसकी मीराष़ में से भी हिस्सा पाता। आख़िर जब सूरह अहज़ाब म ये आयत उतरी कि, उन्हें उनके हक़ीक़ी बापों की तरफ़ मन्सूब करके पुकारो। अल्लाह तआला के फ़र्मान व मवालीकुम तक तो लोग उन्हें उनके बापों की तरफ़ मन्सूब करके पुकारने लगे जिसके बाप का इल्म न होता तो उसे मौला और दीनी भाई कहा जाता। फिर सहला बिन्ते सुहैल बिन अम्र क़ुरशी षुम्मल आमदी (रज़ि.) जो अबू हुज़ैफ़ह (रज़ि.) की बीवी हैं, नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हम तो सालिम को अपना हक़ीक़ी जैसा बेटा समझते थे। अब अल्लाह ने जो हुक्म उतारा वो आपको मा'लूम है फिर आख़िर तक हदीष़ बयान की। (राजेअ : 4000)

الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ أَبَا حُذَيْفَةَ بْنَ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ بْنِ عَبْدِ شَمْسٍ، وَكَانَ مِمَّنْ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ تَبَنَّى سَالِمًا وَأَنْكَحَهُ بِنْتَ أَخِيهِ هِنْدَ بِنْتَ الْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ، وَهُوَ مَوْلًى لاِمْرَأَةٍ مِنَ الأَنْصَارِ، كَمَا تَبَنَّى النَّبِيُّ ﷺ زَيْدًا، وَكَانَ مَنْ تَبَنَّى رَجُلاً فِي الْجَاهِلِيَّةِ دَعَاهُ النَّاسُ إِلَيْهِ وَوَرِثَ مِنْ مِيرَاثِهِ حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ ﴿ادْعُوهُمْ لآبَائِهِمْ -إِلَى قَوْلِهِ- وَمَوَالِيكُمْ﴾ فَرُدُّوا إِلَى آبَائِهِمْ. فَمَنْ لَمْ يُعْلَمْ لَهُ أَبٌ كَانَ مَوْلًى وَأَخًا فِي الدِّينِ فَجَاءَتْ سَهْلَةُ بِنْتُ سُهَيْلِ بْنِ عَمْرٍو الْقُرَشِيِّ ثُمَّ الْعَامِرِيِّ وَهْيَ امْرَأَةُ أَبِي حُذَيْفَةَ بْنِ عُتْبَةَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّا كُنَّا نَرَى سَالِمًا وَلَدًا، وَقَدْ أَنْزَلَ اللهُ فِيهِ مَا قَدْ عَلِمْتَ فَذَكَرَ الْحَدِيثَ.

[راجع: ٤٠٠٠]

तश्रीह : अबू दाऊद ने पूरी हदीष़ नक़ल की है इसमें यूँ है सहला ने कहा आप क्या हुक्म देते हैं, क्या हम सालिम से पर्दा करें? आपने फ़र्माया तू ऐसा कर सालिम को दूध पिला दे। उसने पाँच बार उसको अपना दूध पिला दिया, अब वो उसके रज़ाई बेटे की तरह हो गया। हज़रत आइशा (रज़ि.) भी इस हदीष़ के मुवाफ़िक़ जिससे पर्दा न करना चाहतीं तो अपनी भतीजियों या भांजियों से कहतीं वो उसको दूध पिला देतीं गो वो उम्र में बड़ा जवान होता लेकिन बीवी उम्मे सलमा (रज़ि.) और आँहज़रत (ﷺ) की दूसरी बीवियों ने ऐसी रज़ाअत की वजह से बेपरवाह होना न माना जब तक बचपने में रज़ाअत न हो। वो कहती थीं शायद आँहज़रत (ﷺ) ने ये इजाज़त ख़ास़ सालिम के लिये ही दी होगी औरों के लिये ऐसा हुक्म नहीं है। क़स्तलानी (रह़) ने कहा ये हुक्म सहला और सालिम से ख़ास़ था या मन्सूख़ है उसकी बह़ष़ इंशाअल्लाह आगे आएगी। बाब की मुताबक़त इस तरह है कि सालिम ग़ुलाम थे मगर अबू हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने अपनी भतीजी का जो शुरफ़ाए क़ुरैश में से थीं। उनसे निकाह कर दिया तो मा'लूम हुआ कि किफ़ायत में सिर्फ़ दीन का लिहाज़ काफ़ी है। (वहीदी)

5089. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे

٥٠٨٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ،

अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ुबाअ़ बिन्ते ज़ुबैर (रज़ि.) के पास गये (ये ज़ुबैर अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटे और आँह़ज़रत ﷺ के चचा थे) और उनसे फ़र्माया शायद तुम्हारा इरादा ह़ज्ज का है? उन्होंने अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम मैं तो अपने आपको बीमार पाती हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि फिर भी ह़ज्ज का एह़राम बाँध ले। अल्बत्ता शर्त लगा लेना और ये कह लेना कि ऐ अल्लाह! मैं उस वक़्त ह़लाल हो जाऊँगी जब तू मुझे (मर्ज़ की वजह से) रोक लेगा। और (ज़ुबाआ़ बिन्ते ज़ुबैर क़ुरैशी रज़ि) मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) के निकाह में थीं।

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: دَخَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ضُبَاعَةَ بِنْتِ الزُّبَيْرِ فَقَالَ لَهَا: ((لَعَلَّكِ أَرَدْتِ الْحَجَّ)) قَالَتْ: وَاللهِ لاَ أَجِدُنِي إِلاَّ وَجِعَةً، فَقَالَ لَهَا: ((حُجِّي وَاشْتَرِطِي، قُولِي اللَّهُمَّ مَحِلِّي حَيْثُ حَبَسْتَنِي))، وَكَانَتْ تَحْتَ الْمِقْدَادِ بْنِ الأَسْوَدِ.

जो क़ुरैशी न थे उन्होंने ऐसा ही क्या मा'लूम हुआ कि अस़ल किफ़ायत दुनियावी है और बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है।

5090. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उनसे उ़बैदुल्लाह अ़म्वी ने कि मुझसे सईद बिन अबी सईद ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, औ़रत से निकाह़ चार चीज़ों की बुनियाद पर किया जाता है। उसके माल की वजह से और उसके ख़ानदानी शर्फ़ की वजह से और उसकी ख़ूबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से और तू दीनदार औ़रत से निकाह़ करके कामयाबी ह़ासिल कर, अगर ऐसा न करे तो तेरे हाथों को मिट्टी लगेगी (या'नी अख़ीर में तुझको नदामत होगी)

٥٠٩٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا، وَلِحَسَبِهَا، وَجَمَالِهَا وَلِدِينِهَا، فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّينِ تَرِبَتْ يَدَاكَ)).

5091. हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने, उनसे उनके वालिद सलमा बिन दीनार ने, उनसे सहल बिन सअ़द साअ़दी ने बयान किया कि एक स़ाह़ब (जो मालदार थे) रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने से गुज़रे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने पास मौजूद स़ह़ाबा से पूछा कि ये कैसा शख़्स़ है? स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि ये उस लायक़ है कि अगर ये निकाह़ का पैग़ाम भेजे तो उससे निकाह़ किया जाए, अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाए अगर कोई बात कहे तो ग़ौर से सुनी जाए। सहल ने बयान किया कि ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) उस पर चुप रहे। फिर एक—दूसरे स़ाह़ब गुज़रे, जो मुसलमानों के ग़रीब और मुह़ताज लोगों में शुमार किये जाते

٥٠٩١- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمَ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ، قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((مَا تَقُولُونَ فِي هَذَا)): قَالُوا: حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ يُنْكَحَ، وَإِنْ شَفَعَ، أَنْ يُشَفَّعَ وَإِنْ قَالَ أَنْ يُسْتَمَعَ قَالَ: ثُمَّ سَكَتَ فَمَرَّ رَجُلٌ مِنْ فُقَرَاءِ الْمُسْلِمِينَ. فَقَالَ: ((مَا تَقُولُونَ فِي هَذَا؟)) قَالُوا حَرِيٌّ إِنْ خَطَبَ أَنْ لاَ يُنْكَحَ وَإِنْ

شَفَعَ أَنْ لاَ يُشَفَّعَ وَإِنْ قَالَ أَنْ لاَ يُسْتَمَعَ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((هَذَا خَيْرٌ مِنْ مِلْءِ الأَرْضِ مِثْلَ هَذَا)).
[طرفه في : ٦٤٤٧].

थे। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि उसके बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? सहाबा ने अर्ज़ किया कि ये इस क़ाबिल है कि अगर किसी के यहाँ निकाह का पैग़ाम भेजे तो उससे निकाह न किया जाए, अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल न की जाए, अगर कोई बात कहे तो उसकी बात न सुनी जाए। आप (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया, ये शख़्स अकेला पहला शख़्स की तरह दुनिया भर से बेहतर है। (दीगर मक़ाम : 6447)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि कुफ़्व म दरअस्ल दीनदारी ही होना ज़रूरी है, कोई बे दीन आदमी कितना ही बड़ा मालदार हो एक दीनदार औरत का कुफ़्व नहीं हो सकता। यही हुक्म मर्दों के लिये है। बेहतर होने का मतलब ये कि इस मालदार की तरह अगर दुनिया भर के लोग फ़र्ज़ किये जाएँ तो उन सबसे ये अकेला ग़रीब शख़्स दर्जा में बढ़कर है। दूसरी हदीष़ में आया है कि ग़रीब दीनदार लोग मालदारों से पाँच सौ बरस पहले जन्नत में जाएँगे। **अल्लाहुम्मज्अल्ना मिन्हुम** आमीन सच है।

ख़ाकसाराने जहाँ राब हिक़ारत मंगर - तू चे दानी कि दरीं गर्द सवारे बाशद

١٧- باب الأَكْفَاءِ فِي الْمَالِ، وَتَزْوِيجِ الْمُقِلِّ الْمُثْرِيَةَ

बाब 17 : किफ़ायत में मालदारी का लिहाज़ होना और ग़रीब मर्द का मालदार औरत से निकाह करना

या'नी कुफ़्व में माल की कोई हक़ीक़त नहीं है।

٥٠٩٢- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى﴾ قَالَتْ: يَا ابْنَ أُخْتِي، هَذِهِ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا، فَيَرْغَبُ فِي جَمَالِهَا وَمَالِهَا، وَيُرِيدُ أَنْ يَنْتَقِصَ صَدَاقَهَا، فَنُهُوا عَنْ نِكَاحِهِنَّ، إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا فِي إِكْمَالِ الصَّدَاقِ، وَأُمِرُوا بِنِكَاحِ مَنْ سِوَاهُنَّ. قَالَتْ: وَاسْتَفْتَى النَّاسُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ - إِلَى - وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ﴾ فَأَنْزَلَ اللهُ لَهُمْ

5092. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि उन्होंने आइशा (रज़ि.) से आयत, और अगर तुम्हें डर हो कि यतीम लड़कियों के बारे में तुम इंसाफ़ नहीं कर सकोगे। (सूरह निसाअ)के बारे में सवाल किया। आइशा (रज़ि.) ने कहा मेरे भांजे इस आयत में उस यतीम लड़की का हुक्म बयान हुआ है जो अपने वली की परवरिश में हो और उसका वली उसकी ख़ूबसूरती और मालदारी पर रीझ कर ये चाहे कि उससे निकाह करे लेकिन उसके महर में कमी करने का भी इरादा हो। ऐसे वली को अपनी ज़ेरे परवरिश यतीम लड़की से निकाह करने से मना किया गया है। अल्बत्ता इस सूरत में उन्हें निकाह की इजाज़त है जब वो उनका महर इंसाफ़ से पूरा अदा कर देंगे अगर वो ऐसा न करें तो फिर आयत में ऐसे वलियों को हुक्म दिया गया कि वो अपनी ज़ेरे परवरिश यतीम लड़की के सिवा किसी और से निकाह कर लें। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसके बाद सवाल किया तो अल्लाह

أَنَّ الْيَتِيمَةَ إِذَا كَانَتْ ذَاتَ جَمَالٍ وَمَالٍ رَغِبُوا فِي نِكَاحِهَا وَنَسَبِهَا فِي إِكْمَالِ الصَّدَاقِ، وَإِذَا كَانَتْ مَرْغُوبَةً عَنْهَا فِي قِلَّةِ الْمَالِ وَالْجَمَالِ تَرَكُوهَا وَأَخَذُوا غَيْرَهَا مِنَ النِّسَاءِ قَالَتْ: فَكَمَا يَتْرُكُونَهَا حِينَ يَرْغَبُونَ عَنْهَا فَلَيْسَ لَهُمْ أَنْ يَنْكِحُوهَا إِذَا رَغِبُوا فِيهَا، إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهَا وَيُعْطُوهَا حَقَّهَا الأَوْفَى فِي الصَّدَاقِ. [راجع: ٢٤٩٤]

तआला ने सूरह निसाअ में आयत व यस्तफ़्तूनक फ़िन् निसाअ से व तरग़बूना अन तन्किहुहुन्ना तक नाज़िल की। इस आयत में अल्लाह तआला ने ये हुक्म दिया कि यतीम लड़कियाँ अगर ख़ूबसूरत और साहिबे माल हों तो उनके वली भी उनके साथ निकाह कर लेना चाहते हैं, उसका ख़ानदान पसंद करते हैं और महर पूरा अदा करके उनसे निकाह कर लेते हैं। लेकिन उनमें हुस्न की कमी हो और माल भी न हो तो फिर उनकी तरफ़ रग़बत नहीं होगी और वो उन्हें छोड़कर दूसरी औरतों से निकाह कर लेते हैं। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि आयत का मतलब ये है कि जैसे उस वक़्त यतीम लड़की को छोड़ देते हैं जब वो नादार हो और ख़ूबसूरत न हो ऐसे ही उस वक़्त भी छोड़ देना चाहिये जब वो मालदार और ख़ूबसूरत हो अल्बत्ता उसके हक़ में इंसाफ़ करे और उसका महर पूरा अदा करें तब उससे निकाह कर सकते हैं। (राजेअ: 2494)

١٨- باب مَا يُتَّقَى مِنْ شُؤْمِ الْمَرْأَةِ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلاَدِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ﴾

बाब 18 : औरत की नहूसत से बचने का बयान और अल्लाह तआला का फ़र्मान कि, बिला शुब्हा तुम्हारी कुछ बीवियों और तुम्हारे कुछ बच्चों में तुम्हारे दुश्मन होते हैं

٥٠٩٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ حَمْزَةَ وَسَالِمٍ ابْنَيْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الشُّؤْمُ فِي الْمَرْأَةِ وَالدَّارِ وَالْفَرَسِ)). [راجع: ٢٠٩٩]

5093. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के साहबज़ादे हम्ज़ा और सालिम ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया नहूसत औरत में, घर में और घोड़े में हो सकती है। (नहूसत बे-बरकती अगर हो तो इनमें हो सकती है)। (राजेअ: 2099)

तश्रीह : बद अख़्लाक़ औरत मन्हूस होती है, हर वक़्त घर में कल-कल रह सकती है। कुछ मकान भी टूटे फूटे होते हैं जिनमें हर वक़्त जान को ख़तरा हो सकता है और कुछ घोड़े भी सरकश होते हैं जिनसे सवार को ख़तरा रहता है नहूसत का यही मतलब है।

٥٠٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدٍ

5094. हमसे मुहम्मद बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे इमरान बिन अस्क़लानी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और

उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) के सामने नहूसत का ज़िक्र किया गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहूसत किसी चीज़ में हो तो घर, औरत और घोड़े में हो सकती है। (राजेअ़ : 2099)

الْعَسْقَلاَنِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ذَكَرُوا الشُّؤْمَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنْ كَانَ الشُّؤْمُ فِي شَيْءٍ فَفِي الدَّارِ وَالْمَرْأَةِ وَالْفَرَسِ)). [راجع: ٢٠٩٩]

5095. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने और उन्हें सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर (नहूसत) किसी चीज़ में हो तो घोड़े औरत और घर में हो सकती है। (राजेअ़ : 2859)

٥٠٩٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ ((إِنْ كَانَ فِي شَيْءٍ فَفِي الْفَرَسِ وَالْمَرْأَةِ وَالْمَسْكَنِ)). [راجع: ٢٨٥٩]

तश्रीह : उसका बयान ऊपर गुज़र चुका है एक ह़दीष़ में है कि इंसान की नेकबख़्ती ये है कि उसकी औरत अच्छी हो और सवारी अच्छी हो, घर अच्छा हो, और बदबख़्ती ये है कि बीवी बुरी हो, घर बुरा हो, सवारी बुरी हो। उ़लमा ने कहा है औरत की नहूसत ये है कि बाँझ हो, बद अख़्लाक़, जुबान दराज़ हो। घोड़े की नहूसत ये है कि अल्लाह की राह में उस पर जिहाद न किया जाए, शरीर व बद-ज़ात हो। घर की नहूसत ये है कि आंगन तंग हो, हमसाए बुरे हों लेकिन नहूसत के मा'नी बदफ़ाली के नहीं हैं जिसको अवाम नहूसत समझते हैं। ये तो दूसरी स़ह़ीह़ ह़दीष़ में आ चुका है कि बद फ़ाली लेना शिर्क है। मष़लन बाहर जाते वक़्त कोई काना आदमी सामने आ गया या औरत या बिल्ली गुज़र गई या छींक आई तो ये न समझना कि अब काम न होगा। ये एक जिहालत का ख़्याल है जिसकी दलील अ़क़्ल या शरअ़ से बिलकुल नहीं है, इस त़रह़ तारीख़ या दिन या वक़्त की नहूसत ये सब बातें मह़ज़ लग़्व हैं जो लोग इन पर ए'तिक़ाद रखते हैं वो पक्के जाहिल और ग़ैर तर्बियतयाफ़्ता हैं। (वह़ीदी)

5096. हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उन्होंने अबू उ़ष़्मान नहदी से सुना और उन्होंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि) से रिवायत किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने अपने बाद मर्दों के लिये औरतो के फ़ित्ने से बढ़कर नुक़्स़ान देने वाला और कोई फ़ित्ना नहीं छोड़ा है।

٥٠٩٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سُلَيْمَانَ التَّيْمِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا عُثْمَانَ النَّهْدِيَّ. عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ)).

कुछ दफ़ा औरतों के फ़ित्ने में क़ौमें तबाह हो जाती हैं। ज़र, ज़मीन, ज़न या'नी जोरू की बाबत फ़सादात तारीख़े इंसानी में हमेशा होते चले आए हैं।

बाब 19 : आज़ाद औरत का गुलाम मर्द का निकाह में होना जाइज़ है

١٩- باب الْحُرَّةِ تَحْتَ الْعَبْدِ

5097. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें रबीआ़ बिन अबू अ़ब्दुर्रह़मान ने, उन्हें क़ासिम बिन मुह़म्मद ने और उनसे ह़ज़रत

٥٠٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ رَبِيعَةَ بْنِ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ

رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَتْ فِي بَرِيرَةَ ثَلاَثُ سُنَنٍ، عَتَقَتْ فَخُيِّرَتْ، وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ))، وَدَخَلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبُرْمَةٌ عَلَى النَّارِ فَقُرِّبَ إِلَيْهِ خُبْزٌ وَأُدْمٌ مِنْ أُدْمِ الْبَيْتِ فَقَالَ: ((لَمْ أَرَ الْبُرْمَةَ))؟ فَقِيلَ لَحْمٌ تُصُدِّقَ عَلَى بَرِيرَةَ وَأَنْتَ لاَ تَأْكُلُ الصَّدَقَةَ، قَالَ: ((هُوَ عَلَيْهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ)).

[راجع: ٤٥٦]

आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बरीरह (रज़ि.) के साथ तीन सुन्नत क़ायम होती हैं, उन्हें आज़ाद किया और फिर इख़्तियार दिया गया (कि अगर चाहें तो अपने शौहर साबिक़ा से अपना निकाह फ़स्ख़ कर सकती हैं) और रसूले करीम (ﷺ) ने (हज़रत बरीरह रज़ि. के बारे में) फ़र्माया कि विला आज़ाद कराने वाले के साथ क़ायम हुई है और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) घर में दाख़िल हुए तो एक हाँडी (गोश्त की) चूल्हे पर थी। फिर आँहज़रत (ﷺ) के लिये रोटी और घर का सालन लाया गया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया (चूल्हे पर) हाँडी (गोश्त की) भी तो मैंने देखी थी। अ़र्ज़ किया गया कि वो हाँडी उस गोश्त की थी जो बरीरह (रज़ि.) को स़दक़ा में मिला था और आप (ﷺ) स़दक़ा नहीं खाते। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया वो उसके लिये स़दक़ा है और अब हमारे लिये उनकी त़रफ़ से तोह़फ़ा है। (राजेअ़ : 456)

हम उसें खा सकते हैं।

٢٠- باب لاَ يَتَزَوَّجُ أَكْثَرَ مِنْ أَرْبَعٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى ﴿مَثْنَى وَثُلاَثَ وَرُبَاعَ﴾ وَقَالَ عَلِيُّ بْنُ الْحُسَيْنِ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ : يَعْنِي مَثْنَى أَوْ ثُلاَثَ أَوْ رُبَاعَ، وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿أُولِي أَجْنِحَةٍ مَثْنَى وَثُلاَثَ وَرُبَاعَ﴾ يَعْنِي مَثْنَى أَوْ ثُلاَثَ أَوْ رُبَاعَ

बाब 20 : चार बीवियों से ज़्यादा (एक वक़्त में) आदमी नहीं रख सकता

क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया मष्ना व षुलाष़ व रुबाअ़ वाव आ के मा'नी में है (या'नी दो बीवियाँ रखो या तीन या चार)

ह़ज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन बिन हुसैन अ़लैहिस्सलाम फ़र्माते हैं या'नी दो या तीन या चार जैसे सूरह फ़ात़िर में उसकी नज़ीर मौजूद है औला अज्निहतिन मष्ना व षुलाष़ व रुबाअ़ या'नी दो पंख वाले फ़रिश्ते या तीन वाले या चार पंख वाले।

٥٠٩٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلاَّ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى﴾ قَالَ: الْيَتِيمَةُ تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ وَهُوَ وَلِيُّهَا فَيَتَزَوَّجُهَا عَلَى مَالِهَا وَيُسِيءُ صُحْبَتَهَا وَلاَ يَعْدِلُ فِي مَالِهَا فَلْيَتَزَوَّجْ مَا طَابَ لَهُ مِنَ النِّسَاءِ سِوَاهَا مَثْنَى وَثُلاَثَ وَرُبَاعَ.

[راجع: ٢٤٩٤]

5098. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला के इर्शाद, और अगर तुम्हें डर हो कि तुम यतीमों के बारे में इंस़ाफ़ नहीं कर सकोगे, के बारे में फ़र्माया कि उससे मुराद यतीम लड़की है जो अपने वली की परवरिश में हो। वली उससे उसके माल की वजह से शादी करते और अच्छी त़रह उससे सुलूक न करते और न उसके माल के बारे में इंस़ाफ़ करते, ऐसे शख़्सों को ये हुक्म हुआ कि उस यतीम लड़की से निकाह न करें बल्कि उसके सिवा जो औ़रतें भली लगें उनसे निकाह कर लें। दो दो,

तीन तीन या चार चार तक की इजाज़त है। (राजेअ : 2494)

शरीअते इस्लामी में एक वक़्त में चार से ज़्यादा बीवियाँ रखना क़त्अन हराम है। बाब में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने हज़रत ज़ैनुल आबेदीन का क़ौल नक़ल करके राफ़ज़ियों का रद्द किया क्योंकि वो उनको बहुत मानते हैं फिर उनके क़ौल के ख़िलाफ़ कुर्आन शरीफ़ की तफ़्सीर क्यूँकर जाइज़ रखते हैं।

बाब 21 : आयते करीमा या'नी, और तुम्हारी वो माएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया है या'नी रज़ाअत का बयान

٢١- باب ﴿وَأُمَّهَاتُكُمُ اللاَّتِي أَرْضَعْنَكُمْ﴾

और आँहज़रत (ﷺ) के इस फ़र्मान का बयान कि जो रिश्ता ख़ून से हराम होता है वो दूध से भी हराम होता है।

وَيَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ

तश्रीह : रज़ाअत या'नी दूध पीने से ऐसा रिश्ता हो जाता है कि दूध पिलाने वाली औरत, उसका शौहर जिससे दूध है, उसकी बेटी, माँ, बहन, पोती, नवासी, फूफी, भतीजी, भांजी, बाप, दादा, नाना, भाई, पोता, नवासा, चचा, भतीजा, भांजा ये सब शीरख़्वार के महरम हो जाते हैं। बशर्ते कि पाँच बार दूध चूसा हो और मुद्दते रज़ाअत या'नी दो बरस के अंदर पिया हो लेकिन जिस बच्चे या बच्ची ने दूध पिया उसके बाप भाई या बहन या माँ, नानी, ख़ाला, मामू वग़ैरह दूध देने वाली औरत या उसके शौहर पर हराम नहीं होते तो क़ायदा कुल्लिया ये ठहरा कि दूध पिलाने वाली की तरफ़ से तो सब लोग दूध पीने वाले के महरम हो जाते हैं लेकिन दूध पीने वाले की तरफ़ से वो ख़ुद या उसकी औलाद सिर्फ़ महरम होती है उसके बाप, भाई, चचा, मामू, ख़ाला वग़ैरह ये महरम नहीं होते। (वहीदी)

5099. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबूबक्र ने, उनसे अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत़हहरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) उनके यहाँ तशरीफ़ रखते थे और आपने सुना कि कोई स़ाहब उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा (रज़ि.) के घर में अंदर आने की इजाज़त चाहते हैं। बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ये शख़्स आपके घर में आने की इजाज़त चाहता है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा ख़याल है कि ये फ़लाँ शख़्स है, आपने हफ़्सा (रज़ि.) के एक दूध के चचा का नाम लिया। उस पर आइशा (रज़ि.) ने पूछा, क्या फ़लाँ, जो उनके दूध के चचा थे, अगर ज़िन्दा होते तो मेरे यहाँ आ जा सकते थे? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ जैसे ख़ून मिलने से हुर्मत होती है, वैसे ही दूध पीने से भी हुर्मत षाबित हो जाती है। (राजेअ : 2646)

٥٠٩٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ عِنْدَهَا، وَأَنَّهَا سَمِعَتْ صَوْتَ رَجُلٍ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِ حَفْصَةَ، قَالَتْ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ هَذَا رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فِي بَيْتِكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أُرَاهُ فُلاَنًا، لِعَمِّ حَفْصَةَ مِنَ الرَّضَاعَةِ)). قَالَتْ عَائِشَةُ : لَوْ كَانَ فُلاَنٌ حَيًّا لِعَمِّهَا مِنَ الرَّضَاعَةِ دَخَلَ عَلَيَّ؟ فَقَالَ: ((الرَّضَاعَةُ تُحَرِّمُ مَا تُحَرِّمُ الْوِلاَدَةُ)).

[راجع: ٢٦٤٦]

5100. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे हज़रत

٥١٠٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ جَابِرِ بْنِ زَيْدٍ عَنِ

ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قِيلَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَلاَ تَزَوَّجُ ابْنَةَ حَمْزَةَ؟ قَالَ: إِنَّهَا ابْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ. وَقَالَ بِشْرُ بْنُ عُمَرَ: حَدَّثَنَا شُعْبَةُ سَمِعْتُ قَتَادَةَ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ زَيْدٍ مِثْلَهُ.

[راجع: ٢٦٤٥]

जाबिर बिन ज़ैद ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से कहा गया कि आँहुज़ूर (ﷺ) हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की बेटी से निकाह क्यूँ नहीं कर लेते? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो मेरे दूध के भाई की बेटी है। और बिश्र बिन उमर ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उन्होंने इसी तरह जाबिर बिन ज़ैद से सुना। (राजेअ : 2645)

हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) और आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत षुवैबा लौण्डी का दूध पिया था जो अबू लहब की लौण्डी थी इसलिये हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) आपके दूध भाई क़रार पाए। एक दिन अबू जहल ने रसूले करीम (ﷺ) को ईज़ा दी और गाली दी। हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) की लौण्डी ने ये वाक़िया हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) को सुनाया। वो ग़ुस्से में अबू जहल के सामने आये और कमान से उसका सर तोड़ डाला और कहा कि ले मैं ख़ुद मुसलमान होता हूँ तू कर ले क्या करना चाहता है चुनाँचे उसी दिन हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) मुसलमान हो गये। ये छठे साल नुबुव्वत का वाक़िया है आँहज़रत (ﷺ) से ये उम्र में बड़े थे, उहुद में शहीद हुए।

٥١٠١- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ بِنْتَ أَبِي سُفْيَانَ أَخْبَرَتْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، انْكِحْ أُخْتِي بِنْتَ أَبِي سُفْيَانَ، قَالَ: ((أَوَ تُحِبِّينَ ذَلِكِ)) فَقُلْتُ : نَعَمْ، لَسْتُ لَكَ بِمُخْلِيَةٍ، وَأَحَبُّ مَنْ شَارَكَنِي فِي خَيْرٍ أُخْتِي. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((إِنَّ ذَلِكِ لاَ يَحِلُّ لِي)). قُلْتُ: فَإِنَّا نُحَدَّثُ أَنَّكَ تُرِيدُ أَنْ تَنْكِحَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ. قَالَ: ((بِنْتَ أُمِّ سَلَمَةَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ : ((لَوْ أَنَّهَا لَمْ تَكُنْ رَبِيبَتِي فِي حَجْرِي مَا حَلَّتْ لِي. إِنَّهَا لاَبْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ، أَرْضَعَتْنِي وَأَبَا سَلَمَةَ ثُوَيْبَةُ، فَلاَ تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ)). قَالَ عُرْوَةُ : وَثُوَيْبَةُ مَوْلاَةٌ لأَبِي لَهَبٍ كَانَ أَبُو لَهَبٍ أَعْتَقَهَا فَأَرْضَعَتِ

5101. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने ख़बर दी और उन्हें उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा बिन्ते अबी सुफ़यान ने ख़बर दी कि उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरी बहन (अबू सुफ़यान की लड़की) से निकाह कर लीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इसे पसंद करोगी (कि तुम्हारी सौकन तुम्हारी बहन बने?) मैंने अर्ज़ किया हाँ! मैं तो पसंद करती हूँ अगर मैं अकेली आपकी बीवी होती तो पसंद न करती। फिर मेरी बहन अगर मेरे साथ भलाई में शरीक हो तो मैं क्यूँकर न चाहूँगी (ग़ैरों से तो बहन ही अच्छी है) आपने फ़र्माया वो मेरे लिये हलाल नहीं है। हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि) ने कहा या रसूलल्लाह! लोग कहते हैं आप अबू सलमा की बेटी से उम्मे सलमा के पेट से है, निकाह करने वाले हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगर वो मेरी रबीबा और मेरी परवरिश में न होती (या'नी मेरी बीवी की बेटी न होती) तब भी मेरे लिये हलाल न होती, वो दूसरे रिश्ते से मेरी भतीजी है, मुझको और अबू सलमा के बाप को दोनों को षुवैबा ने दूध पिलाया है। देखो, ऐसा मत करो अपनी बेटियों और बहनों को मुझसे निकाह करने के लिये न कहो। हज़रत उर्वा रावी ने कहा षुवैबा अबू लहब की लौण्डी थी। अबू लहब ने उसको आज़ाद कर दिया था (जब उसने आँहज़रत ﷺ के पैदा होने की ख़बर अबू लहब को दी थी) फिर

النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَلَمَّا مَاتَ أَبُو لَهَبٍ أُرِيَهُ بَعْضُ أَهْلِهِ بِشَرِّ حِيبَةٍ، قَالَ لَهُ : مَاذَا لَقِيتَ؟ قَالَ أَبُو لَهَبٍ : لَمْ أَلْقَ بَعْدَكُمْ، خَيْرًا غَيْرَ أَنِّي سُقِيتُ فِي هَذِهِ بِعَتَاقَتِي ثُوَيْبَةَ.

[أطرافه في: ٥١٠٦، ٥١٠٧، ٥١٣٣، ٥٣٧٢].

उसने आँहज़रत (ﷺ) को दूध पिलाया था जब अबू लहब मर गया तो उसके किसी अज़ीज़ ने मरने के बाद उसको ख़्वाब में बुरे हाल में देखा तो पूछा क्या हाल है क्या गुज़री? वो कहने लगा जबसे मैं तुमसे जुदा हुआ हूँ कभी आराम नहीं मिला मगर एक ज़रा सा पानी (पीर के दिन मिल जाता है) अबू लहब ने उस गड्ढे की तरफ़ इशारा किया जो अंगूठे और कलिमा के उँगली के बीच में होता है ये भी इस वजह से कि मैंने षुवैबा को आज़ाद कर दिया था। (दीगर मक़ाम : 5106, 5107, 5133, 5372)

٢٢- باب مَنْ قَالَ : لاَ رَضَاعَ بَعْدَ حَوْلَيْنِ، لِقَوْلِهِ تَعَالَى:

﴿حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ﴾ وَمَا يُحَرِّمُ مِنْ قَلِيلِ الرَّضَاعِ وَكَثِيرِهِ.

बाब 22 : उस शख़्स की दलील जिसने कहा कि दो साल के बाद फिर रज़ाअत से हुर्मत न होगी

क्योंकि अल्लाह तआला का फ़र्मान है दो पूरे साल उस शख़्स के लिये जो चाहता हो कि रज़ाअत पूरी करे और रज़ाअत कम हो जब भी हुर्मत षाबित होती है और ज़्यादा हो जब भी।

तश्रीह : ये ज़रूरी नहीं कि पाँच बार चूसे। आयते करीमा **हौलैनि कामिलैनि** (अल बक़र : 233) लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने ह़नफ़ियों का रद्द किया है जो रज़ाअत की मुद्दत अढ़ाई बरस तक बतलाते हैं। ह़नफ़ी ह़ज़रात कहते हैं कि दूसरी आयत में **हम्लुहू व फ़िसालुहू षलाषून शहरन** (अल अहकाफ़ : 15) आया है (उसका ह़मल और दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस महीने हैं) उसका जवाब ये है कि आयत में ह़मल की अक़ले मुद्दत छः महीने और फ़िसाल की चौबीस महीने दोनों की मुद्दत तीस महीने मज़्कूर है। ये नहीं कि ह़मल की मुद्दत तीस महीने और फ़िसाल की तीस महीने जैसा तुमने समझा है और उसकी दलील ये है कि दूसरी आयत में **लिमन अराद अंय्युतिम्मर्रज़ाअत** (अल बक़र : 233) आया है तो रज़ाअत की अकषर से अकषर मुद्दत दो बरस होगी और कम मुद्दत पौने दो बरस हैं। ह़मल की मुद्दत नौ महीने तमाम तीस हुए और रज़ाअत क़लील हो या कषीर उससे हुर्मत षाबित हो जाएगी। ये ज़रूरी नहीं कि पाँच बार दूध चूसे। इमाम ह़नीफ़ा (रह़) और इमाम मालिक (रह़) और अकषर उलमा का यही क़ौल है लेकिन इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद और इस्ह़ाक़ और इब्ने ह़ज़म (रज़ि.) और अहले ह़दीष का मज़हब ये है कि हुर्मत के लिये कम से कम पाँच बार दूध चूसना ज़रूरी है उनकी दलील ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की स़ह़ीह़ ह़दीष है जिसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है कि क़ुर्आन में अख़ीर हुक्म पाँच बार दूध चूसने का था। दूसरी ह़दीष में है कि एक बार या दो बार चूसने से हुर्मत षाबित नहीं होती।

٥١٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَشْعَثِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ مَسْرُوقٍ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا وَعِنْدَهَا رَجُلٌ فَكَأَنَّهُ تَغَيَّرَ وَجْهُهُ، كَأَنَّهُ كَرِهَ ذَلِكَ، فَقَالَتْ: إِنَّهُ

5102. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अश्अष ने, उनसे उनके द ादा ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ लाए तो देखा कि उनके यहाँ एक मर्द बैठा हुआ है। आप (ﷺ) के चेहरे का रंग बदल गया गोया कि आपने उसको पसंद नहीं फ़र्माया। ह़ज़रत आइशा

(रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये मेरे दूध वाले भाई हैं। आपने फ़र्माया देखो ये सोच समझकर कहो कौन तुम्हारा भाई है? (राजेअ़ : 2647)

أَخِي. فَقَالَ: ((انْظُرْنَ مَنْ إِخْوَانُكُنَّ، فَإِنَّمَا الرَّضَاعَةُ مِنَ الْمَجَاعَةِ)).

[راجع: ٢٦٤٧]

शायद वो अबू क़ुऐ़स का कोई बेटा हो जो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) का रज़ाई बाप था और जिसने ये मर्द अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद बतलाया है, उसने ग़लत कहा वो बिल इत्तेफ़ाक़ ताबेईन में से है।

बाब 23 : जिस मर्द का दूध हो वो भी दूध पीने वाले पर ह़राम हो जाता है (क्योंकि शीरख़्वार का बाप बन जाता है)

٢٣- باب لَبَنِ الْفَحْلِ

5103. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबू क़ुऐ़स के भाई अफ़लह़ ने उनके यहाँ अंदर आने की इजाज़त चाही। वो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के रज़ाई चचा थे। (ये वाक़िया पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद का है। ह़ज़रत आ़इशा रज़ि. ने बयान किया कि) मैंने उन्हें अंदर आने की इजाज़त नहीं दी। फिर जब रसूले करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आपको उनके साथ अपने मामले को बताया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे हुक्म दिया कि मैं उन्हें अंदर आने की इजाज़त दे दूँ। (राजेअ़ : 2644)

٥١٠٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أَفْلَحَ أَخَا أَبِي الْقُعَيْسِ جَاءَ يَسْتَأْذِنُ عَلَيْهَا وَهُوَ عَمُّهَا مِنَ الرَّضَاعَةِ بَعْدَ أَنْ نَزَلَ الْحِجَابُ، فَأَبَيْتُ أَنْ آذَنَ لَهُ فَلَمَّا جَاءَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخْبَرْتُهُ بِالَّذِي صَنَعْتُ، فَأَمَرَنِي أَنْ آذَنَ لَهُ.

[راجع: ٢٦٤٤]

तश्रीह़ : क्योंकि वो उनके रज़ाई चचा थे। अकष़र उ़लमा और अइम्मा-ए-अरबअ़ (चारों इमामों) का यही क़ौल है कि जैसे दूध पिलाने से मुरज़िआ़ ह़राम हो जाती है वैसे ही उसका वो शौहर भी और उसके अ़ज़ीज़ भी मह़रम हो जाते हैं। जिस शौहर के जिमाअ़ की वजह से औ़रत के दूध हुआ है जिन्होंने उसके ख़िलाफ़ कहा है उनका कहना ग़लत़ है।

बाब 24 : अगर स़िर्फ़ दूध पिलाने वाली औ़रत रज़ाअ़त की गवाही दे

٢٤- باب شَهَادَةِ الْمُرْضِعَةِ

अगर कोई गवाह न हो तो उस सूरत में इमाम अह़मद बिन ह़ंबल और ह़सन और इस्ह़ाक़ और अहले ह़दीष़ के नज़दीक रिज़ाअ़ ष़ाबित हो जाएगा।

5104. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने, कहा हमको अय्यूब सुख़ितयानी ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने, कहा कि मुझसे उ़बैद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उनसे उ़क़्बा बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) ने (अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने) बयान किया कि मैंने ये ह़दीष़ ख़ुद उ़क़्बा से भी सुनी है लेकिन मुझे उ़बैद के वास्ते से सुनी हुई ह़दीष़ ज़्यादा याद

٥١٠٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا أَيُّوبُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي عُبَيْدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ وَقَدْ سَمِعْتُهُ مِنْ عُقْبَةَ لَكِنِّي لِحَدِيثِ عُبَيْدٍ

أَحْفَظُ قَالَ: تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً، فَجَاءَتْنَا امْرَأَةٌ سَوْدَاءُ فَقَالَتْ: أَرْضَعْتُكُمَا، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: تَزَوَّجْتُ فُلاَنَةَ بِنْتَ فُلاَنٍ فَجَاءَتْنَا امْرَأَةٌ سَوْدَاءُ، فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ أَرْضَعْتُكُمَا، وَهِيَ كَاذِبَةٌ. فَأَعْرَضَ عَنْهُ، فَأَتَيْتُهُ مِنْ قِبَلِ وَجْهِهِ قُلْتُ: إِنَّهَا كَاذِبَةٌ. قَالَ: ((كَيْفَ بِهَا وَقَدْ زَعَمَتْ أَنَّهَا قَدْ زَعَمتْ أنها قد أَرْضَعَتْكُمَا، دَعْهَا عَنْكَ)). وَأَشَارَ إِسْمَاعِيلُ بِإِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَةَ وَالْوُسْطَى يَحْكِي أَيُّوبَ.

[راجع: ٨٨]

है। उ़क़्बा बिन ह़ारिष़ ने बयान किया कि मैंने एक औ़रत (उम्मे यह़्या बिन्ते अबी एहाब) से निकाह़ किया। फिर एक काली औ़रत आई और कहने लगी कि मैंने तुम दोनों (मियाँ–बीवी) को दूध पिलाया है। मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि मैंने फ़लानी बिन्ते फ़लाँ से निकाह़ किया है। उसके बाद हमारे यहाँ एक काली औ़रत आई और मुझसे कहने लगी कि मैंने तुम दोनों को दूध पिलाया है, ह़ालाँकि वो झूठी है (आप ﷺ को उ़क़्बा का ये कहना कि वो झूठी है नागवार गुज़रा) आपने इस पर अपना चेहरा मुबारक फेर लिया। फिर मैं आपके सामने आया और अ़र्ज़ किया वो औ़रत झूठी है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उस बीवी से अब कैसे निकाह़ रह सकेगा जबकि ये औ़रत यूँ कहती है कि उसने तुम दोनों को दूध पिलाया है, उस औ़रत को अपने से अलग कर दो। (ह़दीष़ के रावी) इस्माईल बिन अ़लिया ने अपनी शहादत और बीच की उँगली से इशारे करके बताया कि अय्यूब ने इस त़रह़ इशारा करके। (राजेअ़ : 88)

उस मौक़े पर आँह़ज़रत (ﷺ) के इशारा को बताया था। उन्हों ने आँह़ज़रत (ﷺ) का इशारा नक़ल किया, आप (ﷺ) ने उँगलियों से भी इशारा किया और ज़ुबान से भी फ़र्माया कि उस औ़रत को छोड़ दे जो लोग कहते हैं कि रज़ाअ़त सिर्फ़ मुरज़िआ़ की शहादत से ष़ाबित नहीं होती वो ये कहते हैं कि आपने एह़तियात़न ये हुक्म फ़र्माया था। मगर ऐसा कहना ठीक नहीं, ह़लाल व ह़राम का मामला है, आप (ﷺ) ने उस शहादत को तस्लीम करके औ़रत को जुदा करा दिया यही स़ह़ीह़ है।

٢٥- باب مَا يَحِلُّ مِنَ النِّسَاءِ وَمَا يَحْرُمُ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالاَتُكُمْ وَبَنَاتُ الأَخِ وَبَنَاتُ الأُخْتِ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَتَيْنِ إِلَى قَوْلِهِ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا﴾ وَقَالَ أَنَسٌ: ﴿وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ﴾ ذَوَاتُ الأَزْوَاجِ الْحَرَائِرُ حَرَامٌ ﴿إِلاَّ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ لاَ يَرَى بَأْسًا أَنْ يَنْزِعَ الرَّجُلُ جَارِيَتَهُ مِنْ عَبْدِهِ. وَقَالَ: ﴿وَلاَ تَنْكِحُوا

बाब 25 : कौनसी औ़रतें ह़लाल हैं और कौनसी ह़राम हैं और अल्लाह ने सूरह निसाअ में उनको बयान फ़र्माया है जिनका तर्जुमा ये है,

ह़राम हैं तुम पर माएँ तुम्हारी, बेटियाँ तुम्हारी, बहनें तुम्हारी, फूफ़ियाँ तुम्हारी, ख़ालाएँ तुम्हारी, भतीजियाँ तुम्हारी, भांजियाँ तुम्हारी। बेशक अल्लाह जानने वाला ह़िक्मत वाला है। ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा वल मुह़स़नातु मिनन् निसाअ से शौहर वाली औ़रतें मुराद हैं जो आज़ाद हों वो भी ह़राम हैं और वमा मलकत अयमानुकुम का ये मत़लब है कि अगर किसी की लौण्डी उसके गुलाम के निकाह़ मे हो तो उसको गुलाम से छीनकर या'नी त़लाक़ दिलवाकर ख़ुद अपनी बीवी बना सकते हैं और अल्लाह ने ये भी फ़र्माया कि मुश्रिक औ़रतों से जब तक

वो ईमान न लाएँ निकाह न करो और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा चार औरतें होते हुए पाँचवीं से भी निकाह करना हराम है, जैसे अपनी माँ बेटी बहन से निकाह करना।

5105. और इमाम अह़मद बिन हंबल (रह़) ने मुझसे कहा कि हमसे यह़्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उन्होंने सुफ़यान ष़ौरी से, कहा मुझसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन जुबैर से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से, उन्होंने कहा ख़ून की रू से तुम पर सात रिश्ते ह़राम हैं और शादी की वजह से (या'नी ससुराल की त़रफ़ से) सात रिश्ते भी। उन्होंने ये आयत पढ़ी, ह़ुर्रिमत अ़लैकुम उम्महातुकुम आख़िर तक और अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब ने अ़ली (रज़ि.) की स़ाह़बज़ादी ज़ैनब और अ़ली (रज़ि.) की बीबी (लैला बिन्ते मसऊ़द) दोनों से निकाह़ किया, उनको जमा किया और इब्ने सीरीन ने कहा उसमें कोई क़बाह़त नहीं है और इमाम ह़सन बस़री ने एक बार तो उसे मकरूह कहा फिर कहने लगे उसमें कोई क़बाहत नहीं है और ह़सन बिन ह़सन बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब ने अपने दोनों चाचाओं (या'नी मुह़म्मद बिन अ़ली और अ़म्र बिन अ़ली) की बेटियों को एक साथ में निकाह़ में ले लिया और जाबिर बिन ज़ैद ताबेई ने उसको मकरूह जाना, इस ख़्याल से कि बहनों में जलापा न पैदा हो मगर ये कुछ ह़राम नहीं है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि उनके सिवा और सब औ़रतें तुमको ह़लाल हैं और इक्रिमा ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत किया अगर किसी ने अपनी साली से ज़िना किया तो उसकी बीवी (साली की बहन) उस पर ह़राम न होगी और यह़्या बिन क़ैस कुन्दी से रिवायत है, उन्होंने शअ़बी और जा'फ़र से, दोनों ने कहा अगर कोई शख़्स़ हमजिंसी करे और किसी लौण्डे के दुख़ूल कर दे तो अब उसकी माँ से निकाह़ न करे और ये यह़्या रावी मशहूर शख़्स़ नहीं है और न किसी और ने उसके साथ होकर ये रिवायत की है और इक्रिमा ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत की कि अगर किसी ने अपनी सास से ज़िना किया तो उसकी बीवी उस पर ह़राम न होगी और अबू नस़्र ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)से रिवायत की कि ह़राम हो जाएगी और उस रावी अबू नस़्र का ह़ाल मा'लूम नहीं। उसने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना है या

الْمُشْرِكَاتِ حَتَّى يُؤْمِنَّ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: مَا زَادَ عَلَى أَرْبَعٍ فَهُوَ حَرَامٌ كَأُمِّهِ وَابْنَتِهِ وَأُخْتِهِ.

٥١٠٥- وَقَالَ لَنَا أَحْمَدُ بْنُ حَنْبَلٍ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنِي حَبِيبٌ عَنْ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حُرِّمَ مِنَ النَّسَبِ سَبْعٌ وَمِنَ الصِّهْرِ سَبْعٌ. ثُمَّ قَرَأَ: ﴿حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ﴾ الآيَةَ. وَجَمَعَ عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ بَيْنَ ابْنَةِ عَلِيٍّ وَامْرَأَةِ عَلِيٍّ. وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ: لاَ بَأْسَ بِهِ، وَكَرِهَهُ الْحَسَنُ مَرَّةً ثُمَّ قَالَ: لاَ بَأْسَ بِهِ. وَجَمَعَ الْحَسَنُ بْنُ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ بَيْنَ ابْنَتَيْ عَمٍّ فِي لَيْلَةٍ، وَكَرِهَهُ جَابِرُ بْنُ زَيْدٍ لِلْقَطِيعَةِ وَلَيْسَ فِيهِ تَحْرِيمٌ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكُمْ﴾ وَقَالَ عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: إِذَا زَنَى بِأُخْتِ امْرَأَتِهِ لَمْ تَحْرُمْ عَلَيْهِ امْرَأَتُهُ. وَيُرْوَى عَنْ يَحْيَى الْكِنْدِيِّ، عَنِ الشَّعْبِيِّ وَأَبِي جَعْفَرٍ فِيمَنْ يَلْعَبُ بِالصَّبِيِّ إِنْ أَدْخَلَهُ فَلاَ يَتَزَوَّجَنَّ أُمَّهُ. وَيَحْيَى هَذَا غَيْرُ مَعْرُوفٍ، لَمْ يُتَابَعْ عَلَيْهِ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: إِذَا زَنَى بِهَا لاَ تَحْرُمُ عَلَيْهِ امْرَأَتُهُ. وَيُذْكَرُ عَنْ أَبِي نَصْرٍ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ حَرَّمَهُ، وَأَبُو نَصْرٍ هَذَا لَمْ يُعْرَفْ بِسَمَاعِهِ مِنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، وَيُرْوَى عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ وَجَابِرِ

بْنِ زَيْدٍ وَالْحَسَنِ وَبَعْضِ أَهْلِ الْعِرَاقِ تَحْرُمُ عَلَيْهِ، وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ لاَ تَحْرُمُ . حَتَّى يُلْزِقَ بِالأَرْضِ. يَعْنِي يُجَامِعَ. وَجَوَّزَهُ ابْنُ الْمُسَيَّبِ وَعُرْوَةُ وَالزُّهْرِيُّ، وَقَالَ الزُّهْرِيُّ : قَالَ عَلِيٌّ لاَ تَحْرُمُ وَهَذَا مُرْسَلٌ.

नहीं (लेकिन अबू ज़रआ ने उसे षिक़ह कहा है) और इम्रान बिन हुसैन और जाबिर बिन ज़ैद और हसन बसरी और कुछ इराक़ वालों (इमाम षौरी और इमाम अबू हनीफ़ा रह) का यही क़ौल है कि हराम हो जाएगी और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा हराम न होगी जब तक उसकी माँ (अपनी ख़ुश दामन) को ज़मीन से न लगा दे (या'नी उससे जिमाअ न करे) और सईद बिन मुसय्यिब और इर्वा और ज़ुहरी ने उसके बारे में कहा है कि अगर कोई सास से ज़िना करे तब भी उसकी बेटी या'नी ज़िना करनेवाले की बीवी उस पर हराम न होगी (उसको रख सकता है) और ज़ुहरी ने कहा अली (रज़ि.) ने फ़र्माया उसकी बीवी उस पर हराम न होगी और ये रिवायत मुन्क़तअ है।

٢٦-باب ﴿وَرَبَائِبُكُمُ اللاَّتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ اللاَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ﴾

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الدُّخُولُ وَالْمَسِيسُ وَاللِّمَاسُ هُوَ الْجِمَاعُ. وَمَنْ قَالَ : بَنَاتُ وَلَدِهَا مِنْ بَنَاتِهِ فِي التَّحْرِيمِ، لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لأُمِّ حَبِيبَةَ، ((لاَ تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ)) وَكَذَلِكَ حَلاَئِلُ وَلَدِ الأَبْنَاءِ هُنَّ حَلاَئِلُ الأَبْنَاءِ، وَهَلْ تُسَمَّى الرَّبِيبَةَ وَإِنْ لَمْ تَكُنْ فِي حَجْرِهِ وَدَفَعَ النَّبِيُّ ﷺ رَبِيبَةً لَهُ إِلَى مَنْ يَكْفُلُهَا))، وَسَمَّى النَّبِيُّ ﷺ ابْنَ ابْنَتِهِ ابْنًا.

बाब 26 : अल्लाह के इस फ़र्मान का बयान और हराम हैं तुम पर तुम्हारी बीवियों की लड़कियाँ

(जो वो दूसरे शौहर से लाएँ) जिनको तुम परवरिश करते हो जब उन बीवियों से दुख़ूल कर चुके हो और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा लफ़्ज़ दुख़ूल और मसीस और मसास इन सबसे जिमाअ ही मुराद है और इस क़ौल का बयान कि बीवी की औलाद की औलाद (मषलन पोती या नवासी) भी हराम है क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने उम्मे हबीबा (रज़ि.) से फ़र्माया अपनी बेटियों और बहनों को मुझ पर न पेश किया करो तो बेटियों में बेटे की बेटी (पोती) और बेटी की बेटी (नवासी) सब आ गईं और इस तरह बहूओं में पोत बहू (पोते की बीवी) और बेटियों में बेटे की बेटियाँ (पोतियाँ) और नवासियाँ सब दाख़िल हैं और बीवी की बेटी हर हाल में रबीबा है ख़्वाह शौहर की परवरिश में हो या और किसी के पास परवरिश पाती हो, हर तरह से हराम और आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी रबीबा (ज़ैनब को) जो अबू सलमा की बेटी थी एक और शख़्स (नौफ़िल अश्जई) को पालने के लिये दी और आँहज़रत (ﷺ) ने अपने नवासे हज़रत हसन (रज़ि.) को अपना बेटा फ़र्माया।

इससे ये भी निकलता है कि बीवी की पोती मिष्ल उसकी बेटी के हराम है।

٥١٠٦- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

5106. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन

حدثنا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ، هَلْ لَكَ فِي بِنْتِ أَبِي سُفْيَانَ؟ قَالَ: ((فَأَفْعَلُ مَاذَا)) قُلْتُ: تَنْكِحُ. قَالَ: ((أَتُحِبِّينَ؟)) قُلْتُ: لَسْتُ لَكَ بِمُخْلِيَةٍ، وَأَحَبُّ مَنْ شَرِكَنِي فِيكَ أُخْتِي قَالَ: ((إِنَّهَا لاَ تَحِلُّ لِي)). قُلْتُ: بَلَغَنِي أَنَّكَ تَخْطُبُ. قَالَ: ((ابْنَةَ أُمِّ سَلَمَةَ؟)) قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((لَوْ لَمْ تَكُنْ رَبِيبَتِي، مَا حَلَّتْ لِي أَرْضَعَتْنِي وَأَبَاهَا ثُوَيْبَةُ فَلاَ تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ)). وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنَا هِشَامٌ دُرَّةُ بِنْتُ أَبِي سَلَمَةَ.

[راجع: ٥١٠١]

इ़यना ने बयान किया कि हमसे हिशाम बिन इ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने और उनसे उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप (ﷺ) अबू सुफियान की साह़बज़ादी (ग़र्रह या दर्रह या ह़म्ना) को चाहते हैं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया फिर मैं उसके साथ क्या करूँगा? मैंने अ़र्ज़ किया कि उससे आप निकाह़ कर लें। फ़र्माया क्या तुम उसे पसंद करोगी? मैंने अ़र्ज़ किया मैं कोई तन्हा तो हूँ नहीं और मैं अपनी बहन के लिये ये पसंद करती हूँ कि वो भी मेरे साथ आपके ता'ल्लुक़ में शरीक हो जाए। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो मेरे लिये ह़लाल नहीं है मैंने अ़र्ज़ किया मुझे मा'लूम हुआ है कि आपने (ज़ैनब से) निकाह़ का पैग़ाम भेजा है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उम्मे सलमा की लड़की के पास? मैंने कहा कि जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया। वाह वाह अगर वो मेरी रबीबा नहीं होती जब भी वो मेरे लिये ह़लाल न होती। मुझे और उसके वालिद अबू सलमा को षुवैबा ने दूध पिलाया था। देखो तुम आइन्दा मेरे निकाह़ के लिये अपनी लड़कियों और बहनों को न पेश किया करो और लैष़ बिन सअ़द ने भी इस ह़दीष़ को हिशाम से रिवायत किया है उसमें अबू सलमा की बेटी का नाम दर्रह मज़्कूर है। (राजेअ़ : 5101)

और किसी रिवायत में ज़ैनब।

बाब 27 : 'व अन्तज्मऊ़ बैनल्उख़्तैनि' अल्अख़ का बयान

٢٧- باب وَأَنْ تَجْمَعُوا بَيْنَ الأُخْتَيْنِ إِلاَّ مَا قَدْ سَلَفَ

या'नी तुम दो बहनों को एक साथ निकाह़ में जमा करो (ये तुम पर ह़राम है) सिवा उसके जो गुज़र चुका (कि वो मुआ़फ़ है)

ह़ाफ़िज़ ने कहा दो बहनों का निकाह़ मे जमा करना बिल इज्माअ़ ह़राम है ख़्वाह सगी बहनें हों या अ़लाती या अख़्याफ़ी या रज़ाई बहनें हों। जो लोग ऐसी ह़रकत करते हैं वो इस्लाम के बाग़ी और शरअ़ की रू से सख़्ततरीन मुजरिम हैं।

٥١٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ أَخْبَرَهُ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ انْكِحْ أُخْتِي بِنْتَ أَبِي

5107. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें इ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, और उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ह़ज़रत उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी बहन (ग़र्रह) बिन्ते अबी सुफ़यान से

سُفْيَانَ، قَالَ : ((وَتُحِبِّينَ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ. لَسْتُ بِمُخْلِيَةٍ، وَأَحَبُّ مَنْ شَارَكَنِي فِي خَيْرٍ أُخْتِي. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ ذَلِكَ لاَ يَحِلُّ لِي)). قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، فَوَ اللهِ إِنَّا لَنَتَحَدَّثُ أَنَّكَ تُرِيدُ أَنْ تَنْكِحَ دُرَّةَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ. قَالَ: ((بِنْتُ أُمِّ سَلَمَةَ)). فَقُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَوَ اللهِ لَوْ لَمْ تَكُنْ فِي حَجْرِي مَا حَلَّتْ لِي إِنَّهَا لاِبْنَةُ أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ، أَرْضَعَتْنِي وَأَبَا سَلَمَةَ ثُوَيْبَةُ. فَلاَ تَعْرِضْنَ عَلَيَّ بَنَاتِكُنَّ وَلاَ أَخَوَاتِكُنَّ)).

[راجع: ٥١٠١]

आप निकाह कर लें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया और तुम्हें भी पसंद है? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ! कोई मैं तन्हा तो हूँ नहीं और मेरी ख़्वाहिश है कि आपकी भलाई में मेरे साथ मेरी बहन भी शरीक हो जाए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये मेरे लिये हलाल नहीं है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की क़सम, इस तरह की बातें सुनने में आती हैं कि आप अबू सलमा (रज़ि.) की स़ाहबज़ादी दर्रह से निकाह करना चाहते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा उम्मे सलमा (रज़ि.) की लड़की से? मैंने कहा जी हाँ। फ़र्माया अल्लाह की क़सम! अगर वो मेरी परवरिश में न होती जब भी वो मेरे लिये हलाल नहीं थी क्योंकि वो मेरे रज़ाई भाई की लड़की है। मुझे और अबू सलमा को षुवैबा ने दूध पिलाया था। (इसलिये वो मेरी रज़ाई भतीजी हो गई) तुम लोग मेरे निकाह के लिये अपनी लड़कियों और बहनों को न पेश किया करो। (राजेअ : 5105)

इसमें उन नामो–निहाद पीरों मुर्शिदों के लिये भी तम्बीह है जो अपने को इस्लाम के अहकाम व क़वानीन से बाला समझ कर बहुत से नाजाइज़ कामों को अपने लिये जाइज़ कर लेते हैं और बहुत से इस्लामी फ़राइज़ व वाजिबात से अपने को मुस्तषना समझ लेते हैं, **क़ातलहुमुल्लाहु अन्ना यूफ़कून** (अत् तौबा : 30) बहुत से नामो–निहाद पीरों मुरीदों के घरों में घुसकर उनमें हिजाब वग़ैरह से बाला होकर इस क़दर ख़लत–मलत हो जाते हैं कि आख़िर में ज़िनाकारी या अग़वा तक नौबत पहुँचती है। ऐसे मुरीदों को भी सोचना चाहिये कि आजकल कितने पीर मुर्शिद अंदर से शैतान होते हैं, इसीलिये मौलाना रोम (रह) ने फ़र्माया है कि,

ऐ बसा इब्लीस आदम रूए हस्त
पस बहर दस्ते न बायद दाद दस्त

या'नी कितने इंसान दर हक़ीक़त इब्लीस होते हैं बस किसी के ज़ाहिर को देखकर धोखा न खाना चाहिये।

٢٨- باب لاَ تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ عَلَى عَمَّتِهَا

बाब 28 : इस बयान में कि अगर फूफी या ख़ाला निकाह में हो तो उसकी भतीजी या भांजी को निकाह में नहीं लाया जा सकता

٥١٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ، عَنِ الشَّعْبِيِّ سَمِعَ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ تُنْكَحَ الْمَرْأَةُ عَلَى عَمَّتِهَا أَوْ خَالَتِهَا. وَقَالَ دَاوُدُ وَابْنُ عَوْنٍ: عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ.

5108. हमसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको आ़सिम ने ख़बर दी, उन्हें शअ़बी ने और उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किसी ऐसी औ़रत से निकाह करने से मना किया था जिसकी फूफी या ख़ाला उसके निकाह में हो। और दाऊद बिन औ़न ने शअ़बी से बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने।

5109. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी औ़रत को उसकी फूफी या उसकी ख़ाला के साथ निकाह़ में जमा न किया जाए। (राजेअ़ : 5110)

٥١٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يُجْمَعُ بَيْنَ الْمَرْأَةِ وَعَمَّتِهَا، وَلاَ بَيْنَ الْمَرْأَةِ وَخَالَتِهَا)).

[طرفه في : ٥١١٠].

तश्रीह : इब्ने मुंज़िर ने कहा इस पर उ़लमा का इज्माअ़ है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से एक रिवायत ये भी है कि दो फूफियों और खालाओं में भी जमा करना मकरूह है। क़स्तलानी (रह़) ने कहा फूफी में दादा की बहन, नाना की बहन, उनके बाप की बहन, इसी त़रह़ ख़ाला में नानी की बहन, नानी की माँ सब दाख़िल हैं और उसका क़ायदा कुल्लिया ये है कि उन दो औ़रतों का निकाह़ में जमा करना दुरुस्त नहीं है कि अगर उनमे से एक को मर्द फ़र्ज़ करे तो दूसरी औ़रत उसकी मह़रम हो **अल्बत्ता अपनी बीवी के मामू की बेटी या चचा की बेटी या फूफी की बेटी से निकाह कर सकता है इस्लाम का ये वो पर्सनल लॉ है जिस पर इस्लाम को फ़ख़्र है।** इसने अपनी पैरोकारों के लिये एक बेहतरीन पर्सनल लॉ दिया है। इसके मुक़र्ररकर्दा उसूल व क़वानीन क़यामत तक के लिये किसी भी रद्दोबदल से ऊपर हैं। दुनिया में कितने ही इंक़िलाबात आएँ नोअ़े इंसानी में कितना ही इंक़िलाब बरपा हो मगर इस्लामी क़वानीन बराबर क़ायम रहेंगे किसी भी ह़ुकूमत को उनमें दस्तअंदाज़ी का ह़क़ नहीं है सच है **मा युबद्दिलुल्क़ौलु लदय्य व मा अना बिज़ल्लामिल्लिल अ़बीद** (क़ाफ़ : 29) हाँ जो ग़लत़ क़ानून लोगों ने अज़्ख़ुद बनाकर इस्लाम के ज़िम्मे लगा दिये हैं उनका बदलना बेह़द ज़रूरी है।

5110. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उन्हें ज़ुह्‌री ने, कहा कि मुझसे क़ुबैसा इब्ने ज़ुवैब ने बयान किया और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो बयान कर रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इससे मना किया है कि किसी औ़रत को उसकी फूफी या उसकी ख़ाला के साथ निकाह़ में जमा किया जाए (ज़ुह्‌री ने कहा कि) हम समझते हैं कि औ़रत के बाप की ख़ाला भी (ह़राम होने में) इसी दर्जा में है क्योंकि ...

(राजेअ़ : 5109)

٥١١٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي قَبِيصَةُ بْنُ ذُؤَيْبٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُنْكَحَ الْمَرْأَةُ عَلَى عَمَّتِهَا وَالْمَرْأَةُ وَخَالَتُهَا، فَنُرَى خَالَةَ أَبِيهَا بِتِلْكَ الْمَنْزِلَةِ.

[راجع: ٥١٠٩]

5111. ... उ़र्वा ने मुझसे बयान किया, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रज़ाअ़त से भी उन तमाम रिश्तों को ह़राम समझा जो ख़ून की वजह से ह़राम होते हैं। (राजेअ़ : 2644)

٥١١١- لأَنَّ عُرْوَةَ حَدَّثَنِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : حَرِّمُوا مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ النَّسَبِ. [راجع: ٢٦٤٤]

मत़लब ये है कि जैसे बाप की ख़ाला या बाप की फूफी से निकाह़ दुरुस्त नहीं, इसी त़रह़ बाप की ख़ाला और उसके भांजे की बेटी और बाप की फूफी और उसके भतीजे की बेटी में जमा जाइज़ न होगा।

बाब 29 : शिग़ार के निकाह़ का बयान

٢٩- باب الشِّغَارِ

तफ़्सील ह़दीषे-ज़ैल में आ रही है।

5112. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ज़रत इमाम मालिक (रह) ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने शिग़ार से मना फ़र्माया है। शिग़ार ये है कि कोई शख़्स अपनी लड़की या बहन का निकाह इस शर्त के साथ करे कि वो दूसरा शख़्स अपनी (बेटी या बहन) उसको ब्याह दे और कुछ महर न ठहरे। (दीगर मक़ाम : 6960)

٥١١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الشِّغَارِ. وَالشِّغَارُ أَنْ يُزَوِّجَ الرَّجُلُ ابْنَتَهُ عَلَى أَنْ يُزَوِّجَهُ الآخَرُ ابْنَتَهُ لَيْسَ بَيْنَهُمَا صَدَاقٌ. [طرفه في : ٦٩٦٠].

लफ़्ज़े शिग़ार की ये तफ़्सीर बक़ौल कुछ ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) या नाफ़ेअ या इमाम मालिक की है।

बाब 30 : क्या कोई औरत किसी से निकाह के लिये अपने आपको हिबा कर सकती है?

٣٠- باب هَلْ لِلْمَرْأَةِ أَنْ تَهَبَ نَفْسَهَا لأَحَدٍ؟

या'नी हिबा के लफ़्ज़ से निकाह सह़ीह़ होगा या नहीं। जुम्हूर उ़लमा के नज़दीक अगर महर वग़ैरह का ज़िक्र न करे सिर्फ़ यूँ कहे कि उसने अपनी बहन तुझको बख़्श दी तो निकाह सह़ीह़ न होगा और ह़नफ़िया के नज़दीक सह़ीह़ हो जाएगा और मेहरे मिष्ल वाजिब होगा। जुम्हूर की दलील ये है कि हिबा से निकाह होना बग़ैर ज़िक्रे मेहर के रसूले करीम (ﷺ) लिए ख़ास़ था अल्लाह ने फ़र्माया, **खालिसतल्ल्क मिन दूनिल्मूमिनीन** (अल अह़ज़ाब : 50) शाफ़िइया का भी यही क़ौल है कि बग़ैर लफ़्ज़ निकाह या तज़्वीज के निकाह सह़ीह़ नहीं होता।

5113. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि ह़ज़रत ख़ौला बिन्ते ह़कीम (रज़ि.) उन औरतों में से थीं जिन्होंने अपने आपको रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये हिबा किया था। इस पर ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि एक औरत अपने आपको किसी मर्द के लिये हिबा करते शर्माती नहीं। फिर जब आयत तुर्जी मन तशाउ मिन्हुन्न (ऐ पैग़म्बर ﷺ! तू अपनी जिस बीवी को चाहे पीछे डाल दे और जिसे चाहे अपने पास जगह दे) नाज़िल हुई तो मैंने कहा, या रसूलल्लाह! अब मैं समझी अल्लाह तआ़ला जल्द जल्द आपकी ख़ुशी को पूरा करता है।

इस ह़दीष़ को अबू सईद (मुह़म्मद बिन मुस्लिम) मुअद्दिब और मुह़म्मद बिन बिश्र और अ़ब्दह बिन सुलैमान ने भी हिशाम से, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत किया है। एक ने दूसरे से कुछ ज़्यादा मज़्मून नक़ल किया है। (राजेअ़ : 4788)

٥١١٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَتْ خَوْلَةُ بِنْتُ حَكِيمٍ مِنَ اللاَّئِي وَهَبْنَ أَنْفُسَهُنَّ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ : أَمَا تَسْتَحِي الْمَرْأَةُ أَنْ تَهَبَ نَفْسَهَا لِلرَّجُلِ، فَلَمَّا نَزَلَتْ : ﴿تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ﴾ قُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ، مَا أَرَى رَبَّكَ إِلاَّ يُسَارِعُ فِي هَوَاكَ.

رَوَاهُ أَبُو سَعِيدٍ الْمُؤَدِّبُ وَمُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ وَعَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ، يَزِيدُ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ.

[راجع: ٤٧٨٨]

मुअद्दिब की रिवायत को इब्ने मर्दवैह ने और मुह़म्मद बिन बिश्र की रिवायत को इमाम अह़मद (रह) ने और अ़ब्दह की रिवायत को इमाम मुस्लिम और इब्ने माजा ने मुर्सल कहा है। इल्मे इलाही में कुछ ऐसे मख़्सूस मिल्ली मफ़ादात थे कि

जिनकी बिना पर अल्लाह पाक ने अपने रसूले करीम (ﷺ) को ये इजाज़त अ़ता फ़र्माई।

बाब 31 : एहराम वाला शख़्स सिर्फ़ निकाह (अ़क़्द) कर सकता है हालते एहराम में अपनी बीवी से जिमाअ़ करना जाइज़ नहीं है

٣١- باب نِكَاحِ الْمُحْرِمِ

5114. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान बिन उ़ययना ने ख़बर दी, कहा हमको अ़म्र बिन दीनार ने ख़बर दी, कहा हमसे जाबिर बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमको इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (हज़रत मैमूना रज़ि. से) निकाह किया और उस वक़्त आप एहराम बाँधे हुए थे। (राजेअ़ : 1837)

٥١١٤- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ أَخْبَرَنَا عَمْرٌو، حَدَّثَنَا جَابِرُ بْنُ زَيْدٍ قَالَ: أَنْبَأَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ وَهُوَ مُحْرِمٌ. [راجع: ١٨٣٧]

तश्रीह : सईद बिन मुसय्यिब ने कहा इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ग़लती की। उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) से ख़ुद मरवी है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे जिस वक़्त निकाह किया आप एहराम बाँधे हुए न थे और अबू राफ़ेअ़ उस निकाह में वकील थे। उनसे इब्ने हब्बान और इब्ने ख़ुज़ैमा और तिर्मिज़ी ने रिवायत किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत मैमूना (रज़ि.) से जब निकाह किया उस वक़्त आप हलाल थे। अब कुछ लोगों का ये कहना है कि हज़रत मैमूना (रज़ि.), इब्ने अ़ब्बास की ख़ाला थीं वो उनका हाल ज़्यादा जानते थे कुछ मुफ़ीद नहीं क्योंकि यज़ीद बिन अस़मा की भी वो ख़ाला थीं वो उन्होंने ख़ुद हज़रत मैमूना (रज़ि.) की ज़ुबानी नक़ल किया कि जब आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे निकाह किया उस वक़्त आप हलाल थे और मुम्किन है कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के नज़दीक तक़्लीदे हदी से आदमी मुहरिम हो जाता हो। उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को ये देखकर कि आपने हदी की तक़्लीद से क़यास कर लिया कि आप महरम थे हालाँकि आपने एहराम नहीं बाँधा था और हज़रत उ़मर और हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने एक मर्द को एक औरत से जुदा कर दिया था जिसने हालते एहराम में निकाह किया था (वहीदी)। इस मसला में इख़्तिलाफ़ है शाफ़िइया और अहले हदीस़ का यही क़ौल है कि मुहरिम न अपना निकाह करे न किसी दूसरे को न निकाह का पैग़ाम भेजे।

बाब 32 : आख़िर में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने निकाह मुत्अ़ा से मना कर दिया था (इसलिये अब मुत्अ़ा हराम है)

٣٢- باب نَهْيِ رَسُولِ اللهِ ﷺ عَنْ نِكَاحِ الْمُتْعَةِ أَخِيرًا

5115. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उन्होंने ज़ुह्री से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे हसन बिन मुहम्मद बिन अ़ली और उनके भाई अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अ़ली ने अपने वालिद (मुहम्मद बिन हनीफ़ा) से ख़बर दी कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने मुत्अ़ा और पालतू गधे का गोश्त से जंगे ख़ैबर के ज़मान्ने में मना फ़र्माया था। (राजेअ़ : 4216)

٥١١٥- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ أَنَّهُ سَمِعَ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ أَخْبَرَنِي الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ وَأَخُوهُ عَبْدُ اللهِ عَنْ أَبِيهِمَا أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَى عَنِ الْمُتْعَةِ، وَعَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الأَهْلِيَّةِ زَمَنَ خَيْبَرَ. [راجع: ٤٢١٦]

5116. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह ने बयान किया, कहा मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उनसे औरतों के साथ निकाह मुतआ करने के बारे में सवाल किया गया था तो उन्होंने उसकी इजाज़त दी। फिर उनके एक ग़ुलाम ने उनसे पूछा कि इसकी इजाज़त सख़्त मजबूरी या औरतों की कमी या इसी जैसी कोई सूरतों में होगी? तो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि हाँ।

٥١١٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ سُئِلَ عَنْ مُتْعَةِ النِّسَاءِ فَرَخَّصَ، فَقَالَ لَهُ مَوْلًى لَهُ: إِنَّمَا ذَلِكَ فِي الْحَالِ الشَّدِيدِ، وَفِي النِّسَاءِ قِلَّةٌ أَوْ نَحْوَهُ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ. نَعَمْ.

तश्रीह : ये ह़ुर्मत से पहले की बात है बाद में हर ह़ालत में हर शख़्स के लिये मुतआ ह़राम क़रार दे दिया गया जो क़यामत तक के लिये ह़राम है। **अन्नत्तहरीम वल्इबाहत कानता मर्रतैनि फ़कानत हलालतुन क़ब्ल ख़ैबर षुम्म हुर्रिमत यौम ख़ैबर षुम्म उबीहत यौम औत़ास षुम्म हुर्रिमत यौमइज़िन बअ़द ष़लाष़ति अय्याम तहरीमन मुवब्बिदन इला यौमिल्क़ियामति वस्तमर्रत्तहरीमु कमा फ़ी रिवायति मुस्लिम अ़न सबरतिल्जुहनी अन्नहू कान मअ़ रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़क़ाल याअय्युहन्नासु इन्नी क़द कुन्तु अज़्ज़न्तु लकुम फ़िल्इस्तिम्ताइ मिनन्निसाइ व अन्नल्लाह क़द हर्रम ज़ालिक इला यौमिल्क़ियामति फ़मन कान इन्दहू मिन्हुन्न शैउन फलियख़िल्लि सबीलहू फलअ़ल्ल अलिय्यन लम यब्लुग्हुल्इबाहतु यौम औतास लिक़िल्लतिहा कमा रवा मुस्लिम रख़्ख़स रसूल (ﷺ) आम औतास फिल्मुत्अति ष़लाषन षुम्म नहा** (हाशिया : बुख़ारी)

या'नी मुतआ की ह़ुर्मत और इबाह़त दो बार हुई है ख़ैबर से पहले मुतआ ह़लाल था फिर ख़ैबर में इसे ह़राम क़रार दिया गया फिर जंगे औत़ास में उसे ह़लाल किया गया फिर तीन दिन के बाद ये हमेशा क़यामत तक के लिये ह़राम कर दिया गया और ये तह़रीम दाइमी है जैसा कि सब्रह की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ लोगों! मैंने तुमको मुतआ की इजाज़त दी थी मगर अब उसे अल्लाह ने क़यामत तक के लिये ह़राम कर दिया है पस जिनके पास कोई मुतआ वाली औरत हो तो उसे फ़ौरन निकाल दो पस शायद अ़ली (रज़ि.) को यौमे औत़ास की ह़िल्लत और दोबारा ह़ुर्मत का इ़ल्म नहीं हो सका क्योंकि ये ह़िल्लत सिर्फ़ तीन दिन रही बाद में ह़रामे मुत्लक़ होने का ऐलान कर दिया गया। अब मुतआ क़यामत तक के लिये किसी भी ह़ालत में ह़लाल नहीं है आज के कुछ मुतजद्दिद अपनी तजद्दुद पसंदी चमकाने के लिये मुतआ की ह़ुर्मत में कुछ मूशगाफ़ियाँ करते हैं जो मह़ज़ अबात़ील हैं। शिया ह़ज़रात को छोड़कर अहले सुन्नत वल जमाअ़त के तमाम फ़िर्क़े इस पर इत्तिफ़ाक़ रखते हैं कि अब मुतआ के ह़लाल होने के लिये कोई भी सूरत सामने आ जाए मगर मुतआ हमेशा के लिये हर ह़ाल में ह़राम क़रार दिया गया है, इसकी ह़िल्लत के लिये कोई गुंजाइश क़त़्अन नहीं है।

5117-5118. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे ह़सन बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी और सलमा बिन अल अक्वा ने बयान किया कि हम एक लश्कर में थे। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि तुम्हें मुतआ करने की इजाज़त दी गई है इसलिये तुम निकाहे मुतआ कर सकते हो।

٥١١٧، ٥١١٨- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا، سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: عَنِ الْحَسَنِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ وَسَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ قَالاَ: كُنَّا فِي جَيْشٍ، فَأَتَانَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: ((إِنَّهُ قَدْ أُذِنَ لَكُمْ أَنْ تَسْتَمْتِعُوا، فَاسْتَمْتِعُوا)).

5119. और इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया कि मुझसे अयास बिन सलमा बिन अल अक्वा ने बयान किया और उनसे उनके

٥١١٩- وَقَالَ ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ حَدَّثَنِي إِيَاسُ بْنُ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ

رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((أَيُّمَا رَجُلٍ وَامْرَأَةٍ تَوَافَقَا فَعِشْرَةُ مَا بَيْنَهُمَا ثَلاَثُ لَيَالٍ، فَإِنْ أَحَبَّا أَنْ يَتَزَايَدَا أَوْ يَتَتَارَكَا)). فَمَا أَدْرِي أَشَيْءٌ كَانَ لَنَا خَاصَّةً، أَمْ لِلنَّاسِ عَامَّةً. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَبَيَّنَهُ عَلِيٌّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ مَنْسُوخٌ.

वालिद ने और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि जो मर्द और ऑरत मुतआ कर लें और कोई मुद्दत मुतअय्यन न करें तो (कम से कम) तीन दिन तीन रात मिलकर रहें, फिर अगर वो तीन दिन से ज़्यादा उस मुतआ को रखना चाहें या ख़त्म करना चाहें तो उन्हें उसकी इजाज़त है (सलमा बिन अल अक्वा कहते हैं कि) मुझे मा'लूम नहीं ये हुक्म स़िर्फ़ हमारे (स़हाबा) ही के लिये था या तमाम लोगों के लिये है अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम बुख़ारी) कहते हैं कि ख़ुद अ़ली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से ऐसी रिवायत की जिससे मा'लूम होता है कि मुतआ की ह़िल्लत मन्सूख़ है।

٣٣- باب عَرْضِ الْمَرْأَةِ نَفْسَهَا عَلَى الرَّجُلِ الصَّالِحِ

बाब 33 : ऑरत का अपने आपको किसी स़ालेह़ मर्द के निकाह़ के लिये पेश करना

٥١٢٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مَرْحُومٌ قَالَ: سَمِعْتُ ثَابِتًا الْبُنَانِيَّ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ أَنَسٍ وَعِنْدَهُ ابْنَةٌ لَهُ، قَالَ أَنَسٌ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَعْرِضُ عَلَيْهِ نَفْسَهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَلَكَ بِي حَاجَةٌ؟ فَقَالَتْ بِنْتُ أَنَسٍ: مَا أَقَلَّ حَيَاءَهَا وَاسَوْأَتَاهُ. وَاسَوْأَتَاهُ قَالَ: هِيَ خَيْرٌ مِنْكِ، رَغِبَتْ فِي النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَرَضَتْ عَلَيْهِ نَفْسَهَا.

[طرفه في : ٦١٢٣].

5120. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मरहूम बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बस़री ने बयान किया, कहा कि मैंने षाबित बिनानी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं ह़ज़रत अनस (रज़ि.) के पास था और उनके पास उनकी बेटी भी थीं। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के लिये पेश करने की ग़र्ज़ से ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या आपको मेरी ज़रूरत है? इस पर ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की बेटी बोलीं कि वो कैसी बेह़या ऑरत थी। हाय बेशर्मी! हाय बेशर्मी! ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने उनसे कहा वो तुमसे बेहतर थीं, उनको नबी करीम (ﷺ) की त़रफ़ रग़्बत थी, इसलिये उन्होंने अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के लिये पेश किया। (दीगर मक़ाम : 6123)

ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने अपनी बेटी को डांटा और उस ख़ातून के इस इक़्दाम को मुह़ब्बते रसूले करीम (ﷺ) पर मह़मूल करके उसकी ता'रीफ़ फ़र्माई।

क़स्तलानी (रह़) ने कहा कि इस ह़दीष़ से ये निकाला कि नेकबख़्त और दीनदार मर्द के सामने अगर ऑरत अपने आपको निकाह़ के लिये पेश करे तो इसमें कोई आ़र नहीं है अल्बत्ता दुनियावी ग़र्ज़ से ऐसा करना बुरा है।

٥١٢١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ امْرَأَةً عَرَضَتْ نَفْسَهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ : يَا

5121. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि एक ऑरत ने अपने आपको नबी करीम (ﷺ) से निकाह़ के लिये पेश किया। फिर एक स़ह़ाबी ने आँहज़रत (ﷺ) से कहा कि या

रसूलल्लाह! इनका निकाह मुझसे करा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हारे पास (महर के लिये) क्या है? उन्होंने कहा कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ और तलाश करो, ख़्वाह लोहे की एक अंगूठी ही मिल जाए। वो गये और वापस आ गये और अ़र्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम! मैंने कोई चीज़ नहीं पाई। मुझे लोहे की अंगूठी भी नहीं मिली, अल्बत्ता ये मेरा तह्मद मेरे पास है इसका आधा इन्हें दे दीजिए। ह़ज़रत सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके पास चादर भी नहीं थी। मगर ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तुम्हारे इस तहबंद का क्या करेगी, अगर ये इसे पहन लेगी तो ये इस क़दर छोटा कपड़ा है कि फिर तो तुम्हारे लिये इसमें से कुछ बाक़ी नहीं बचेगा और अगर तुम पहनोगे तो इसके लिये कुछ नहीं रहेगा। फिर वो स़ाहब बैठ गये। देर तक बैठे रहने के बाद उठे (और जाने लगे) तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें देखा और बुलाया। या उन्हें बुलाया गया (रावी को इन अल्फ़ाज़ में शक था) फिर आपने उनसे पूछा कि तुम्हें क़ुर्आन कितना याद है? उन्होंने कहा कि मुझे फ़लाँ फ़लाँ सूरतें याद हैं चंद सूरतें उन्होंने गिनाईं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमने तुम्हारे निकाह में इसको उस क़ुर्आन के बदले दे दिया जो तुम्हें याद है। (राजेअ़ : 2310)

رَسُولَ اللهِ، زَوِّجْنِيهَا فَقَالَ: ((مَا عِنْدَكَ))؟ قَالَ: مَا عِنْدِي شَيْءٌ. قَالَ: ((اذْهَبْ فَالْتَمِسْ وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)) فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: لاَ وَاللهِ مَا وَجَدْتُ شَيْئًا وَلاَ خَاتِمًا مِنْ حَدِيدٍ، وَلَكِنْ هَذَا إِزَارِي وَلَهَا نِصْفُهُ، قَالَ سَهْلٌ: وَمَالَهُ رِدَاءٌ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا تَصْنَعُ بِإِزَارِكَ إِنْ لَبِسْتَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْهَا مِنْهُ شَيْءٌ، وَإِنْ لَبِسَتْهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ مِنْهُ شَيْءٌ)). فَجَلَسَ الرَّجُلُ حَتَّى إِذَا طَالَ مَجْلِسُهُ قَامَ، فَرَآهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَعَاهُ، أَوْدُعِيَ لَهُ فَقَالَ لَهُ: ((مَاذَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)). فَقَالَ مَعِي سُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا لِسُوَرٍ يُعَدِّدُهَا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَمْلَكْنَا كَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

[راجع: ٢٣١٠].

जो सूरतें तुमको याद हैं इनको भी याद करा देना, यही तुम्हारा महर है। ह़नफ़िया ने कहा है कि क़ुर्आन की सूरतों का याद करा देना महर नहीं क़रार पा सकता मगर ये क़ौल सरासर इस ह़दीष़ के ख़िलाफ़ है।

बाब 34 : किसी इंसान का अपनी बेटी या बहन को अहले ख़ैर से निकाह के लिये पेश करना

٣٤- باب عَرْضِ الإِنْسَانِ ابْنَتَهُ أَوْ أُخْتَهُ عَلَى أَهْلِ الْخَيْرِ

5122. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर से ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के बारे में सुना कि जब (उनकी स़ाहबज़ादी) ह़फ़्स़ा बिन्ते उ़मर (रज़ि.) (अपने शौहर) ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी की वफ़ात की वजह से बेवा हो गईं और ख़ुनैस (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबी थे और उनकी

٥١٢٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ: أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حِينَ تَأَيَّمَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ

वफ़ात मदीना मुनव्वरा में हुई थी। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हज़रत उष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) के पास आया और उनके लिये हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) को पेश किया। उन्होंने कहा कि मैं इस मामले में ग़ौर करूँगा। मैंने कुछ दिनों तक इंतिज़ार किया। फिर मुझसे हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुलाक़ात की और मैंने कहा कि अगर आप पसंद करें तो मैं आपकी शादी हफ़्सा (रज़ि.) से कर दूँ। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़ामोश रहे और मुझे कोई जवाब नहीं दिया। उनकी इस बेरुख़ी से मुझे हज़रत उष्मान (रज़ि.) के मामले से भी ज़्यादा रंज हुआ। कुछ दिनों तक मैं ख़ामोश रहा। फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुद हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) से निकाह का पैग़ाम भेजा और मैंने आँहज़रत (ﷺ) से उसकी शादी कर दी। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मुझसे मिले और कहा कि जब तुमने हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) का मामला मेरे सामने पेश किया था तो उस पर मेरे ख़ामोश रहने से तुम्हें तकलीफ़ हुई होगी कि मैंने तुम्हें उसका कोई जवाब नहीं दिया था। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा कि वाक़ई हुई थी। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि तुमने जो कुछ मेरे सामने रखा था, उसका जवाब मैंने सिर्फ़ इस वजह से नहीं दिया था कि मेरे इल्म में था कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुद हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) का ज़िक्र किया है और मैं हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के राज़ को ज़ाहिर करना नहीं चाहता था अगर आँहज़रत (ﷺ) छोड़ देते तो मैं हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) को अपने निकाह में ले आता। (राजेअ : 4005)

عُمَرَ مِنْ خُنَيْسِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَتُوُفِّيَ بِالْمَدِينَةِ. فَقَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: أَتَيْتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ حَفْصَةَ فَقَالَ: سَأَنْظُرُ فِي أَمْرِي فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ، ثُمَّ لَقِيَنِي فَقَالَ: قَدْ بَدَا لِي أَنْ لاَ أَتَزَوَّجَ يَوْمِي هَذَا. قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ فَقُلْتُ إِنْ شِئْتَ زَوَّجْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتَ عُمَرَ، فَصَمَتَ أَبُو بَكْرٍ فَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيَّ شَيْئًا، وَكُنْتُ أَوْجَدَ عَلَيْهِ مِنِّي عَلَى عُثْمَانَ، فَلَبِثْتُ لَيَالِي. ثُمَّ خَطَبَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَأَنْكَحْتُهَا إِيَّاهُ، فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ: لَعَلَّكَ وَجَدْتَ عَلَيَّ حِينَ عَرَضْتَ عَلَيَّ حَفْصَةَ فَلَمْ أَرْجِعْ إِلَيْكَ شَيْئًا؟ قَالَ عُمَرُ قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَإِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَرْجِعَ إِلَيْكَ فِيمَا عَرَضْتَ عَلَيَّ إِلاَّ أَنِّي كُنْتُ عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ ذَكَرَهَا، فَلَمْ أَكُنْ لأُفْشِيَ سِرَّ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَوْ تَرَكَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قَبِلْتُهَا. [راجع: ٤٠٠٥]

5123. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने, उनसे इराक बिन मालिक ने और उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने ख़बर दी कि हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) से कहा कि हमें मा'लूम हुआ है कि आँहज़रत (ﷺ) दुर्रह बिन्ते अबी सलमा से निकाह करने वाले हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या मैं उससे उसके बावजूद निकाह कर सकता हूँ कि (उनकी माँ) उम्मे सलमा (रज़ि.) मेरे निकाह में पहले ही मौजूद हैं और अगर मैं उम्मे सलमा (रज़ि.) से निकाह न किये होता जब भी वो दुर्रह

٥١٢٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ عِرَاكِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ: أَنَّ أُمَّ حَبِيبَةَ قَالَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ: إِنَّا قَدْ تَحَدَّثْنَا أَنَّكَ نَاكِحٌ دُرَّةَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَعَلَى أُمِّ سَلَمَةَ؟ لَوْ لَمْ أَنْكِحْ أُمَّ سَلَمَةَ مَا حَلَّتْ لِي، إِنَّ

मेरे लिये ह़लाल नहीं थी। क्योंकि उसके वालिद (अबू सलमा रज़ि.) मेरे रज़ाई भाई थे। (राजेअ : 5101)

أَبَاهَا أَخِي مِنَ الرَّضَاعَةِ)).

[راجع: ٥١٠١]

इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब के तर्जुमे से मुश्किल है और अस़ल ये है कि इमाम बुख़ारी (रह़) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ इस रिवायत को लाकर उसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया जो ऊपर गुज़र चुका उसमें बाब का मत़लब मौजूद है कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) ने अपनी बहन को आँह़ज़रत (ﷺ) पर पेश किया था कि आप उनसे निकाह़ कर लें इसी से बाब से मुत़ाबक़त हो जाती है।

बाब 35 : अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान और तुम पर कोई गुनाह उसमें नहीं कि तुम उन या'नी,

इद्दत में बैठने वाली औ़रतों से पैग़ामे निकाह के ब ारे में कोई बात इशारे से कहो, या (ये इरादा) अपने दिलों में ही छुपा कर रखो, अल्लाह को तो इल्म है। अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ग़फ़ूरुन् ह़लीम तक। अकनन्तुम बमा'नी अज़्मरतुम है। या'नी हर वो चीज़ जिसकी ह़िफ़ाज़त करो और दिल में छुपाओ। वो मक्नून कहलाती है।

٣٥- باب قَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَلاَ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ، عَلِمَ اللهُ﴾ الآيَةَ إِلَى قَوْلِهِ ﴿غَفُورٌ حَلِيمٌ﴾ أَكْنَنْتُمْ، أَضْمَرْتُمْ وَكُلُّ شَيْءٍ صُنْتَهُ وَأَضْمَرْتَهُ فَهْوَ مَكْنُونٌ.

5124. इमाम बुख़ारी (रह़) ने कहा मुझसे त़ल्क़ बिन ग़न्नाम ने बयान किया, कहा हमसे ज़ायदा बिन क़ुदाम ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे मुजाहिद ने कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत फ़ीमा अ़रज़्तुम की तफ़्सीर में कहा कि कोई शख़्स़ किसी ऐसी औ़रत से जो इद्दत में हो कहे कि मेरा इरादा निकाह़ का है और मेरी ख़्वाहिश है कि मुझे कोई नेकबख़्त औ़रत मयस्सर आ जाए और उस निकाह़ में क़ासिम बिन मुह़म्मद ने कहा कि (तअ़रीज़ ये है कि) इद्दत में औ़रत से कहे कि तुम मेरी नज़र में बहुत अच्छी हो और मेरा ख़्याल निकाह़ करने का है और अल्लाह तुम्हें भलाई पहुँचाएगा या इसी त़रह के जुम्ले कहे और अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने कहा कि तअ़रीज़ व किनाया से कहे। स़ाफ़ स़ाफ़ न कहे (मष़लन) कहे कि मुझे निकाह़ की ज़रूरत है और तुम्हें बशारत हो और अल्लाह के फ़ज़्ल से अच्छी हो और औ़रत उसके जवाब में कहे कि तुम्हारी बात मैंने सुन ली है (बस़राहत) कोई वा'दा न करे और अगर ऐसी औ़रत का वली भी उसके इल्म के बग़ैर कोई वा'दा न करे और अगर औ़रत ने ज़मान-ए-इद्दत में किसी मर्द से निकाह़ का वा'दा कर लिया और फिर बाद में उससे निकाह़ किया तो दोनों में जुदाई नहीं कराई जाएगी। ह़सन ने कहा कि ला तुवाइदूहुन्ना सिर्रन से ये मुराद है कि औ़रत से छुपकर

٥١٢٤- وَقَالَ لِي طَلْقُ بْنُ غَنَّامٍ: حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ مُجَاهِدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿فِيمَا عَرَّضْتُمْ﴾ يَقُولُ: إِنِّي أُرِيدُ التَّزْوِيجَ، وَلَوَدِدْتُ أَنَّهُ تَيَسَّرَ لِي امْرَأَةٌ صَالِحَةٌ. وَقَالَ الْقَاسِمُ: يَقُولُ إِنَّكِ عَلَيَّ كَرِيمَةٌ، وَإِنِّي فِيكِ لَرَاغِبٌ، وَإِنَّ اللهَ لَسَائِقٌ إِلَيْكِ خَيْرًا، أَوْ نَحْوَ هَذَا، وَقَالَ عَطَاءٌ : يُعَرِّضُ وَلاَ يَبُوحُ، يَقُولُ : إِنَّ لِي حَاجَةً، وَأَبْشِرِي، وَأَنْتِ بِحَمْدِ اللهِ نَافِقَةٌ، وَتَقُولُ هِيَ : قَدْ أَسْمَعُ مَا تَقُولُ وَلاَ تَعِدُ شَيْئًا، وَلاَ يُوَاعِدُ وَلِيُّهَا بِغَيْرِ عِلْمِهَا، وَإِنْ وَاعَدَتْ رَجُلاً فِي عِدَّتِهَا ثُمَّ نَكَحَهَا بَعْدُ لَمْ يُفَرَّقْ بَيْنَهُمَا. وَقَالَ الْحَسَنُ: لاَ تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا الزِّنَا. وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ ﴿الْكِتَابُ أَجَلَهُ﴾ تَنْقَضِي الْعِدَّةُ.

बदकारी न करो। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि अल किताब अजलहू से मुराद इद्दत का पूरा करना है।

बाब 36 : निकाह से पहले औरत को देखना

٣٦- باب النَّظَرِ إِلَى الْمَرْأَةِ قَبْلَ التَّزْوِيجِ.

5125. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि (निकाह से पहले) मैंने तुम्हें ख़्वाब में देखा कि एक फ़रिश्ता (जिब्रईल अलैहि.) रेशम के एक टुकड़े में तुम्हें लपेटकर ले आया है और मुझसे कह रहा है कि ये तुम्हारी बीवी है। मैंने उसके चेहरे से कपड़ा हटाया तो वो तुम थीं। मैंने कहा कि अगर ये ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से है तो वो उसे ख़ुद ही पूरा कर देगा। (राजेअ: 3895)

٥١٢٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((رَأَيْتُكِ فِي الْمَنَامِ يَجِيءُ بِكِ الْمَلَكُ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيرٍ، فَقَالَ لِي : هَذِهِ امْرَأَتُكَ فَكَشَفْتُ عَنْ وَجْهِكِ الثَّوْبَ، فَإِذَا أَنْتِ هِيَ فَقُلْتُ : إِنْ يَكُ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ يُمْضِهِ)). [راجع: ٣٨٩٥]

5126. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने, उनसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं आपकी ख़िदमत में अपने आपको हिबा करने आई हूँ। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनकी तरफ़ देखा और नज़र उठाकर देखा, फिर नज़र नीची कर ली और सर को झुका लिया। जब ख़ातून ने देखा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनके बारे में कोई फ़ैसला नहीं फ़र्माया तो बैठ गईं। उसके बाद आपके सहाबा में से एक साहब खड़े हुए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! अगर आपको इनकी ज़रूरत नहीं तो इनका निकाह मुझसे करा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि तुम्हारे पास कोई चीज़ है? उन्होंने अर्ज़ किया कि नहीं या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की क़सम, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपने घर जाओ और देखो शायद कोई चीज़ मिल जाए। वो गये और वापस आकर अर्ज़ किया कि नहीं या रसूलल्लाह! मैंने कोई चीज़ नहीं पाई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया और देख लो, अगर एक लोहे की अंगूठी भी मिल जाए। वो गये और वापस आकर

٥١٢٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، جِئْتُ لأَهَبَ لَكَ نَفْسِي فَنَظَرَ إِلَيْهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَصَعَّدَ النَّظَرَ إِلَيْهَا وَصَوَّبَهُ ثُمَّ طَأْطَأَ رَأْسَهُ. فَلَمَّا رَأَتِ الْمَرْأَةُ لَمْ يَقْضِ فِيهَا شَيْئًا جَلَسَتْ، فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ : أَيْ رَسُولَ اللهِ، إِنْ لَمْ تَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ فَزَوِّجْنِيهَا. فَقَالَ: هَلْ عِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ)) قَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ : ((اذْهَبْ إِلَى أَهْلِكَ فَانْظُرْ هَلْ تَجِدُ شَيْئًا)). فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ، مَاوجدتُ شيأ قَالَ انظر ولوخاتما من حديد فَذَهَبَ ثُمَّ رَجَعَ

अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मुझे लोहे की एक अंगूठी भी नहीं मिली, अल्बत्ता ये मेरा तहबंद है। सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके पास चादर भी नहीं थी (उन सहाबी ने कहा कि) इन ख़ातून को इस तहबंद में से आधा इनायत कर दीजिए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया ये तुम्हारे (ﷺ) तहबंद का क्या करेगी अगर तुम इसे पहनोगे तो इसके लिये इसमें से कुछ बाक़ी नहीं रहेगा। इसके बाद वो साहब बैठ गये और देर तक बैठे रहे फिर खड़े हुए तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें वापस जाते हुए देखा और उन्हें बुलाने के लिये फ़र्माया, उन्हें बुलाया गया। जब वो आए तो आपने उनसे पूछा कि तुम्हारे पास क़ुर्आन मजीद कितना है। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि फ़लाँ फ़लाँ सूरतें। उन्होंने उन सूरतों को गिनाया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम इन सूरतों को ज़ुबानी पढ़ लेते हो। उन्होंने हाँ में जवाब दिया आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया जाओ मैंने इस ख़ातून को तुम्हारे निकाह में इस क़ुर्आन की वजह से दिया जो तुम्हारे पास है। (राजेअ़ : 2310)

فَقَالَ لاَ وَا للهِ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَلاَ خَاتِمًا مِنْ حَدِيدٍ وَلَكِنْ هَذَا إِزَارِي قَالَ سَهْلٌ: مَالَهُ رِدَاءٌ فَلَهَا نِصْفُهُ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا تَصْنَعُ بِإِزَارِكَ إِنْ لَبِسْتَهُ، لَمْ يَكُنْ عَلَيْهَا مِنْهُ شَيْءٌ وَإِنْ لَبِسَتْهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ شَيْءٌ)). فَجَلَسَ الرَّجُلُ حَتَّى طَالَ مَجْلَسُهُ، ثُمَّ قَامَ فَرَآهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ مُوَلِّيًا فَأَمَرَ بِهِ فَدُعِيَ فَلَمَّا جَاءَ قَالَ: ((مَاذَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ))؟ قَالَ: مَعِي سُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا، عَدَّدَهَا، قَالَ: ((أَتَقْرَؤُهُنَّ عَنْ ظَهْرِ قَلْبِكَ)). قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((اذْهَبْ فَقَدْ مَلَّكْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

[راجع: ٢٣١٠]

इन सूरतों को इसे याद करा दो।

तश्रीह : उस शख़्स ने उस औ़रत को देखकर और पसंद करके निकाह की ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी बाब और ह़दीष़ में यही मुत़ाबक़त है।

बाब 37 : बग़ैर वली के निकाह सहीह नहीं होता क्योंकि अल्लाह तआला (सूरह बक़र:) में इर्शाद फ़र्माता है जब तुम औ़रतों को त़लाक़ दो फिर वो अपनी इद्दत पूरी कर लें तो औ़रतों के औलिया तुमको उनका रोक रखना दुरुस्त नहीं। उसमें ष़य्यिबा और बाकिरा सब क़िस्म की औ़रतें आ गईं और अल्लाह तआला ने उसी सूरत में फ़र्माया औ़रतों के औलिया तुम औ़रतों का निकाह मुश्रिक मर्दों से न करे और सूरह नूर में फ़र्माया जो औ़रतें शौहर नहीं रखतीं उनका निकाह कर दो।

٣٧- بَابُ مَنْ قَالَ : لاَ نِكَاحَ إِلاَّ بِوَلِيٍّ لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿فَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ﴾ فَدَخَلَ فِيهِ الثَّيِّبُ، وَكَذَلِكَ الْبِكْرُ. وَقَالَ: ﴿وَلاَ تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا﴾ وَقَالَ ﴿وَأَنْكِحُوا الأَيَامَى مِنْكُمْ﴾

तश्रीह : रोक रखने का मत़लब निकाह़ न करने देना। इस आयत से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने ये निकाला कि निकाह़ वली के इख़्तियार में है वरना रोक रखने का कोई मत़लब नहीं हो सकता।

इन दोनों आयतों में अल्लाह ने औलिया की तरफ़ ख़िताब किया कि निकाह न करो या निकाह कर दो तो मा'लूम हुआ कि निकाह करना वली के इख़्तियार में है। कुछ उलमा ने हदीष़, **ला निकाह इल्ला बिवलिय्यिन** को बालिग़ा और मजनून औरत के साथ ख़ास किया है और ष़य्यिबा या'नी बेवा को इस हुक्म से मुस्तष़्ना क़रार दिया है क्योंकि मुस्लिम और अबू दाऊद और तिर्मिज़ी वग़ैरह में हदीष़ मरवी है, **क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) अल्अय्यिमु अहक़्क़ु बिनफ़्सिहा मिन वलिय्यिहा** या'नी बेवा को अपने नफ़्स पर वली से ज़्यादा इख़्तियार हासिल है।

अहले हदीष़ और इमाम शाफ़िई और इमाम अहमद बिन हंबल और अकष़र उलमा का यही क़ौल है कि औरत का निकाह बग़ैर वली की सहीह नहीं होता और जिस औरत का कोई वली रिश्तेदार ज़िन्दा न हो तो हाकिम या बादशाह उसका वली है और इस बाब में सहीह हदीष़ें वारिद हैं जिनको हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अपनी शर्त पे न होने की वजह से न ला सके हैं। एक अबू मूसा की हदीष़ कि निकाह बग़ैर वली के नहीं होता उसको अबू दाऊद और तिर्मिज़ी और इब्ने माजा ने निकाला और हाकिम और इब्ने हिब्बान और हाकिम ने निकाला कि जो औरत बग़ैर इजाज़ते वली के अपना निकाह करे उस का निकाह बातिल है, बातिल है, बातिल है। (वहीदी)

5127. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा हमसे अहमद बिन सालेह ने बयान किया, कहा हमसे अम्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ज़मान-ए-जाहिलियत में निकाह चार तरह से होते थे। एक सूरत तो यही थी जैसे आजकल लोग करते हैं, एक शख़्स दूसरे शख़्स के पास उसकी ज़ेरे परवरिश लड़की या उसकी बेटी के निकाह का पैग़ाम भेजता और उसका महर देकर उससे निकाह करता। दूसरा निकाह ये था कि कोई शौहर अपनी बीवी से जब वो हैज़ से पाक हो जाती तो कहता तू फ़लाँ शख़्स के पास चली जा और उससे मुँह काला करा ले उस मुद्दत में शौहर उससे जुदा रहता और उसे छूता भी नहीं। फिर जब उस ग़ैर मर्द से उसका हमल ज़ाहिर होने के बाद उसका शौहर अगर चाहता तो उससे सुहबत करता। ऐसा इसलिये करते थे ताकि उनका लड़का शरीफ़ और उम्दा पैदा हो। ये निकाह, निकाहे इस्तिब्ज़ाअ कहलाता था। तीसरी क़िस्म निकाह की ये थी कि चंद आदमी जो ता'दाद में दस से कम होते किसी एक औरत के पास आना जाना रखते और उससे सुहबत करते। फिर जब वो औरत हामला होती और बच्चा जनती तो वज़अे हमल पर चंद दिन गुज़रने के बाद वो औरत अपने उन तमाम मर्दों को बुलाती, इस मौक़े पर उनमें से कोई शख़्स इंकार नहीं कर सकता था।

٥١٢٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ عَنْ يُونُسَ ح قَالَ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ حَدَّثَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النِّكَاحَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ كَانَ عَلَى أَرْبَعَةِ أَنْحَاءٍ: فَنِكَاحٌ مِنْهَا نِكَاحُ النَّاسِ الْيَوْمَ يَخْطُبُ الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ وَلِيَّتَهُ أَوِ ابْنَتَهُ فَيُصْدِقُهَا ثُمَّ يَنْكِحُهَا. وَنِكَاحٌ آخَرُ كَانَ الرَّجُلُ يَقُولُ لاِمْرَأَتِهِ إِذَا طَهُرَتْ مِنْ طَمْثِهَا : أَرْسِلِي إِلَى فُلاَنٍ فَاسْتَبْضِعِي مِنْهُ وَيَعْتَزِلُهَا زَوْجُهَا وَلاَ يَمَسُّهَا أَبَدًا حَتَّى يَتَبَيَّنَ حَمْلُهَا مِنْ ذَلِكَ الرَّجُلِ الَّذِي تَسْتَبْضِعُ مِنْهُ، فَإِذَا تَبَيَّنَ حَمْلُهَا أَصَابَهَا زَوْجُهَا إِذَا أَحَبَّ، وَإِنَّمَا يَفْعَلُ ذَلِكَ رَغْبَةً فِي نَجَابَةِ الْوَلَدِ، فَكَانَ هَذَا النِّكَاحُ نِكَاحَ الاسْتِبْضَاعِ، وَنِكَاحٌ آخَرُ يَجْتَمِعُ الرَّهْطُ مَا دُونَ الْعَشَرَةِ

चुनाँचे वो सब उस औरत के पास जमा हो जाते और वो उनसे कहती कि जो तुम्हारा मामला था वो तुम्हें मा'लूम है और अब मैंने ये बच्चा जना है। फिर वो कहती कि ऐ फ़लाँ! ये बच्चा तुम्हारा है। वो जिसका चाहती नाम ले लेती और उसका वो लड़का उसी का समझा जाता, वो शख़्स उससे इंकार की जुर्अत नहीं कर सकता था। चौथा निकाह इस तौर पर था कि बहुत से लोग किसी औरत के पास आया जाया करते थे। औरत अपने पास किसी भी आने वाले को रोकती नहीं थी। ये कस्बियाँ होती थीं। इस तरह की औरतें अपने दरवाज़ों पर झण्डे लगाए रहती थीं जो निशानी समझे जाते थे। जो भी चाहता उनके पास जाता। इस तरह की औरत जब हामिला होती और बच्चा जनती तो उसके पास आने जाने वाले जमा होते और किसी क़याफ़ा जानने वाले को बुलाते और बच्चे का नाक नक़्शा जिससे मिलता जुलता होता उस औरत के उस लड़के को उसी के साथ मन्सूब कर देते और वो बच्चा उसी का बेटा कहा जाता, इससे कोई इंकार नहीं करता था। फिर जब हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हक़ के साथ रसूल होकर तशरीफ़ लाए तो आपने जाहिलियत के तमाम निकाहों को बातिल क़रार दे दिया सिर्फ़ उस निकाह को बाक़ी रखा जिसका आज रिवाज है।

فَيَدْخُلُونَ عَلَى الْمَرْأَةِ كُلُّهُمْ يُصِيبُهَا، وَإِذَا حَمَلَتْ وَوَضَعَتْ وَمَرَّ عَلَيْهَا لَيَالِيَّ بَعْدَ أَنْ تَضَعَ حَمْلَهَا أَرْسَلَتْ إِلَيْهِمْ، فَلَمْ يَسْتَطِعْ رَجُلٌ مِنْهُمْ أَنْ يَمْتَنِعَ حَتَّى يَجْتَمِعُوا عِنْدَهَا، تَقُولُ لَهُمْ: قَدْ عَرَفْتُمُ الَّذِي كَانَ مِنْ أَمْرِكُمْ، وَقَدْ وَلَدْتُ، فَهُوَ ابْنُكَ يَا فُلاَنُ، تُسَمِّي مَنْ أَحَبَّتْ بِاسْمِهِ، فَيَلْحَقُ بِهِ وَلَدُهَا لاَ يَسْتَطِيعُ أَنْ يَمْتَنِعَ بِهِ الرَّجُلُ، وَنِكَاحُ الرَّابِعِ يَجْتَمِعُ النَّاسُ الْكَثِيرُ فَيَدْخُلُونَ عَلَى الْمَرْأَةِ لاَ تَمْتَنِعُ مِمَّنْ جَاءَهَا، وَهُنَّ الْبَغَايَا كُنَّ يَنْصِبْنَ عَلَى أَبْوَابِهِنَّ رَايَاتٍ تَكُونُ عَلَمًا، فَمَنْ أَرَادَهُنَّ دَخَلَ عَلَيْهِنَّ، فَإِذَا حَمَلَتْ إِحْدَاهُنَّ وَوَضَعَتْ حَمْلَهَا جُمِعُوا لَهَا، وَدَعَوْا لَهُمُ الْقَافَةَ، ثُمَّ أَلْحَقُوا وَلَدَهَا بِالَّذِي يَرَوْنَ، فَالْتَاطَ بِهِ وَدُعِيَ ابْنَهُ لاَ يَمْتَنِعُ مِنْ ذَلِكَ. فَلَمَّا بُعِثَ مُحَمَّدٌ ﷺ بِالْحَقِّ هَدَمَ نِكَاحَ الْجَاهِلِيَّةِ كُلَّهُ، إِلاَّ نِكَاحَ النَّاسِ الْيَوْمَ.

तशरीह: इस हदीष से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने षाबित किया कि निकाह वली के इख़्तियार में है क्योंकि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने पहली क़िस्म निकाह की जो इस्लाम के ज़माने में भी बाक़ी रही है बयान की कि एक मर्द औरत के वली को पैग़ाम भेजता वो महर ठहराकर उसका निकाह कर देता। मा'लूम हुआ कि निकाह के लिये वली का होना ज़रूरी है।

5128. हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत (वमा युत्ला अलैकुम फ़िल किताब अल्अख़ या'नी वो (आयात भी) जो तुम्हें किताब के अंदर उन यतीम लड़कियों के बाब मे पढ़कर सुनाई जाती हैं जिन्हें तुम वो नहीं देते हो जो उनके लिये मुक़र्रर हो चुका है और उससे बेज़ार हो कि उनका किसी से निकाह करो। ऐसी यतीम

٥١٢٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ هِشَامِ ابْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ: ﴿وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاءِ اللاَّتِي لاَ تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ﴾ قَالَتْ: هَذَا فِي الْيَتِيمَةِ الَّتِي تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ، لَعَلَّهَا أَنْ

تَكُونَ شَرِيكَتَهُ فِي مَالِهِ، وَهُوَ أَوْلَى بِهَا فَيَرْغَبُ أَنْ يَنْكِحَهَا، فَيَعْضُلُهَا لِمَالِهَا، وَلاَ يُنْكِحُهَا غَيْرَهُ كَرَاهِيَةَ أَنْ يَشْرَكَهُ أَحَدٌ فِي مَالِهَا.

[راجع: ٢٤٩٤]

लड़की के बारे में नाज़िल हुई थी जो किसी शख़्स की परवरिश में हो। मुम्किन है कि उसके माल व जायदाद में भी शरीक हो, वही लड़की का ज़्यादा हक़दार है लकिन वो उससे निकाह नहीं करना चाहता अल्बत्ता उसके माल की वजह से उसे रोके रखता है और किसी दूसरे मर्द से उसकी शादी नहीं होने देता क्योंकि वो नहीं चाहता कि कोई दूसरा उसके माल में हिस्सेदार बने। (राजेअ : 2494)

यहीं से बाब का मत़लब निकलता है क्योंकि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि दूसरे से भी निकाह़ न करने देते तो मा'लूम हुआ कि वली को निकाह़ का इख़्तियार है, अगर औरत अपना निकाह़ आप कर सकती तो वली उसको क्यूँकर रोक सकता पस निकाह़ के लिये वली का होना ज़रूरी है।

٥١٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّ عُمَرَ حِينَ تَأَيَّمَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عُمَرَ مِنِ ابْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ تُوُفِّيَ بِالْمَدِينَةِ، فَقَالَ عُمَرُ: لَقِيتُ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ فَعَرَضْتُ عَلَيْهِ فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ. فَقَالَ: سَأَنْظُرُ فِي أَمْرِي، فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ ثُمَّ لَقِيَنِي فَقَالَ : بَدَا لِي أَنْ لاَ أَتَزَوَّجَ يَوْمِي هَذَا. قَالَ عُمَرُ: فَلَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ.

[راجع: ٤٠٠٥]

5129. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब ह़फ़्स़ा बिन्ते उ़मर (रज़ि.) इब्ने हुज़ाफ़ा सहमी (रज़ि.) से बेवा हुईं। इब्ने हुज़ाफ़ा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के अस्ह़ाब में से थे और बद्र की जंग में शरीक थे उनकी वफ़ात मदीना मुनव्वरा में हुई थी। तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ह़ज़रत उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से मिला और उन्हें पेशकश की और कहा कि अगर आप चाहें तो मैं ह़फ़्स़ा (रज़ि.) का निकाह़ आपसे करूं। उन्होंने जवाब दिया कि मैं इस मामले में ग़ौर करूँगा। चंद दिन मैंने इंतिज़ार किया उसके बाद वो मुझसे मिले और कहा कि मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अभी निकाह़ न करूँ। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से मिला और उनसे कहा कि अगर आप चाहें तो मैं ह़फ़्स़ा (रज़ि.) का निकाह़ आपसे कर दूँ। (राजेअ़ : 4005)

यहीं से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने बाब का मत़लब निकाला क्योंकि ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) बावजूद ये कि बेवा थीं लेकिन ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि) की विलायत उन पर से साक़ित नहीं हुई। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैं उनका निकाह़ कर देता हूँ।

٥١٣٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي عَمْرٍو، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ : حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ يُونُسَ عَنِ الْحَسَنِ: فَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ قَالَ: حَدَّثَنِي مَعْقِلُ بْنُ يَسَارٍ أَنَّهَا نَزَلَتْ

5130. हमसे अह़मद बिन अबी अ़म्र ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ह़फ़्स़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन त़ह्मान ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे ह़सन बस़री ने आयत फ़ला तअ़ज़िलूहुन्ना की तफ़्सीर में बयान किया कि मुझसे मअ़क़ल बिन यसार

فِيهِ قَالَ: زَوَّجْتُ أُخْتًا لِي مِنْ رَجُلٍ فَطَلَّقَهَا، حَتَّى إِذَا انْقَضَتْ عِدَّتُهَا جَاءَ وَ يَخْطُبُهَا، فَقُلْتُ لَهُ زَوَّجْتُكَ وَأَفْرَشْتُكَ وَأَكْرَمْتُكَ فَطَلَّقْتَهَا ثُمَّ جِئْتَ تَخْطُبُهَا، لاَ وَاللهِ لاَ تَعُودُ إِلَيْكَ أَبَدًا، وَكَانَ رَجُلاً لاَ بَأْسَ بِهِ، وَكَانَتِ الْمَرْأَةُ تُرِيدُ أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، فَأَنْزَلَ اللهُ هَذِهِ الآيَةَ ﴿فَلاَ تَعْضُلُوهُنَّ﴾ فَقُلْتُ: الآنَ أَفْعَلُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: فَزَوَّجَهَا إِيَّاهُ.

[راجع: ٤٥٢٩]

(रज़ि.) ने बयान किया कि ये आयत मेरे ही बारे में नाज़िल हुई थी। मैंने अपनी एक बहन का निकाह एक शख़्स से कर दिया था। उसने उसे तलाक़ दे दी लेकिन जब इद्दत पूरी हुई तो वो शख़्स (अबुल बदाह) मेरी बहन से फिर निकाह का पैग़ाम लेकर आया। मैंने उससे कहा कि मैंने तुमसे उसका (अपनी बहन) का निकाह किया। उसे तुम्हारी बीवी बनाया और तुम्हें इज़्ज़त दी लेकिन तुमने उसे तलाक़ दे दी और अब फिर तुम उससे निकाह का पैग़ाम लेकर आए हो। हर्गिज़ नहीं अल्लाह की क़सम! अब मैं तुम्हें कभी उसे नहीं दूँगा। वो शख्स अबुल बदाह कुछ बुरा आदमी न था और औरत भी उसके यहाँ वापस जाना चाहती थी। इसलिये अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि, तुम औरतों को मत रोको, मैंने अ र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! अब मैं कर दूँगा। बयान किया कि फिर उन्होंने अपनी बहन का निकाह उस शख़्स से कर दिया। (राजेअ : 4529)

इस हदीष़ से भी बाब का मतलब ष़ाबित हुआ क्योंकि मअक़ल ने अपनी बहन का दोबारा निकाह अबुल बदाह से न होने दिया हालाँकि बहन चाहती थी तो मा'लूम हुआ कि निकाह वली के इख़्तियार में है। अ़क़्ल के मुताबिक़ भी है कि औरत को पूरे तौर पर आज़ाद न छोड़ा जाए इसीलिये शादी ब्याह में बहुत से मसालेह के तहत वली का होना लाज़िम क़रार पाया। जो लोग वली का होना बतौरे शर्त नहीं मानते उनका क़ौल ग़लत है।

٣٨- باب إِذَا كَانَ الْوَلِيُّ هُوَ الْخَاطِبَ

बाब 38 : अगर औरत का वली ख़ुद उससे निकाह करना चाहे

तो क्या अपने आप निकाह करे या दूसरे वली से निकाह कराये।

وَخَطَبَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ امْرَأَةً هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِهَا فَأَمَرَ رَجُلاً فَزَوَّجَهُ، وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ لأُمِّ حَكِيمٍ بِنْتِ قَارِظٍ أَتَجْعَلِينَ أَمْرَكِ إِلَيَّ؟ قَالَتْ: نَعَمْ. فَقَالَ: قَدْ تَزَوَّجْتُكِ. وَقَالَ عَطَاءٌ: لِيُشْهِدْ أَنِّي قَدْ نَكَحْتُكِ، أَوْ لِيَأْمُرْ رَجُلاً مِنْ عَشِيرَتِهَا. وَقَالَ سَهْلٌ: قَالَتِ امْرَأَةٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهَبُ لَكَ نَفْسِي فَقَالَ: رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللهِ، إِنْ لَمْ تَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ

और मुग़ीरह बिन शुअबा ने एक औरत को निकाह का पैग़ाम दिया और सबसे क़रीब के रिश्तेदार उस औरत के वही थे। आख़िर उन्होंने एक और शख़्स (उ़ष्मान बिन अबी अल आ़स) से कहा, उसने उनका निकाह पढ़ा दिया और अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने उम्मे हकीम बिन्ते क़ारिज़ से कहा तू ने अपने निकाह के बाब में मुझको मुख़्तार किया है, मैं जिससे चाहूँ तेरा निकाह कर दूँ। उसने कहा हाँ। अ़ब्दुर्रहमान ने कहा तो मैंने ख़ुद तुझसे निकाह किया और अ़ता बिन अबी रिबाह ने कहा दो गवाहों के सामने उस औरत से कह दे कि मैंने तुझसे निकाह किया या औरत के कुंबे वालों में से (गो दूर के रिश्तेदार हों) किसी को मुक़र्रर कर दे (वो उसका निकाह पढ़ा दे) और सहल बिन सअ़द साएदी ने रिवायत किया कि एक औरत ने

فَزَوِّجْنِيهَا.

आँहज़रत (ﷺ) से कहा मैं अपने को आपको बख़्श देती हूँ, उसमें एक शख़्स कहने लगा या रसूलल्लाह! अगर आपको इसकी ख़्वाहिश न हो तो मुझसे इसका निकाह कर दीजिए।

तश्रीह : इस हदीष़ की मुनासबत बाब से इस तरह पर है कि अगर आँहज़रत (ﷺ) इसको पसंद करते तो वो अपना निकाह उससे कर लेते आप उस औरत के और सब मुसलमानों के वली थे। कुछ ने कहा मुनासबत ये है कि जब उस मर्द ने पैग़ाम दिया तो आँहज़रत (ﷺ) जो सब मुसलमानों के वली थे, आपने उससे उसका निकाह करा दिया।

٥١٣١- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فِي قَوْلِهِ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ قَالَتْ : هِيَ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ الرَّجُلِ قَدْ شَرِكَتْهُ فِي مَالِهِ فَيَرْغَبُ عَنْهَا أَنْ يَتَزَوَّجَها، وَيَكْرَهُ أَنْ يُزَوِّجَهَا غَيْرَهُ فَيَدْخُلَ عَلَيْهِ فِي مَالِهِ فَيَحْبِسُهَا، فَنَهَاهُمُ اللهُ عَنْ ذَلِكَ.

5131. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने आयत यस्तफ़्तूनक फ़िन् निसाइ अल आयत और आपसे औरतों के बारे में मसला पूछते हैं, आप कह दीजिए कि अल्लाह उनके बारे में तुम्हें मसला बताता है आख़िर आयत तक फ़र्माया कि ये आयत यतीम लड़की के बारे में नाज़िल हुई, जो किसी मर्द की परवरिश में हो। वो मर्द उसके माल के माल में भी शरीक हो और उससे ख़ुद निकाह करना चाहता हो और उसका निकाह किसी दूसरे से करना पसंद न करता हो कि कहीं दूसरा शख़्स उसके माल में हिस्सेदार न बन जाए। इस ग़र्ज़ से वो लड़की को रोके रखे तो अल्लाह ने लोगों को इससे मना किया है।

٥١٣٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ حَدَّثَنَا سَهْلُ بْنُ سَعْدٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جُلُوسًا فَجَاءَتْهُ امْرَأَةٌ تَعْرِضُ نَفْسَهَا عَلَيْهِ فَخَفَّضَ فِيهَا النَّظَرَ وَرَفَعَهُ فَلَمْ يُرِدْهَا، فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِهِ. زَوِّجْنِيهَا يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((أَعِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ؟)). قَالَ: مَا عِنْدِي مِنْ شَيْءٍ قَالَ: ((وَلاَ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ؟)) قَالَ: وَلاَ خَاتَمًا، وَلَكِنْ أَشُقُّ بُرْدَتِي هَذِهِ

5132. हमसे अहमद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अबू हाज़िम ने बयान किया, कहा हमसे सहल बिन सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि एक ख़ातून आई और अपने आपको आँहज़रत (ﷺ) के लिये पेश किया। आँहुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें नज़र नीची और ऊपर करके देखा और कोई जवाब नहीं दिया फिर आपके सहाबा में से एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! उनका निकाह मुझसे करा दीजिए। आँहुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, तुम्हारे पास कोई चीज़ है? उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। आँहुज़ूर (ﷺ) ने पूछा लोहे की अंगूठी भी नहीं? उन्होंने अर्ज़ किया कि लोहे की एक अंगूठी भी नहीं है। अल्बत्ता मैं अपनी ये चादर फाड़कर आधी इन्हें दे दूँगा और आधी ख़ुद रखूँगा। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! तुम्हारे पास कुछ क़ुर्आन भी है? उन्होंने

فَأَعْطِيهَا النِّصْفَ، وَآخُذُ النِّصْفَ قَالَ: ((لاَ هَلْ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ شَيْءٌ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((اذْهَبْ فَقَدْ زَوَّجْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).
[راجع: ۲۳۱۰]

अ़र्ज़ किया कि है। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जाओ मैंने तुम्हारा निकाह इनसे उस क़ुर्आन मजीद की वजह से किया जो तुम्हारे साथ है। (राजेअ़ : 2310)

तश्रीह : इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब से इस त़रह़ पर है कि अगर आँह़ज़रत (ﷺ) उसको पसंद करते अपना निकाह़ आप उससे कर लेते। आप उस औ़रत के और सब मुसलमानों के वली थे कुछ ने कहा कि मुनासबत ये है कि जब उस मर्द ने पैग़ाम दिया तो आँह़ज़रत (ﷺ) जो सब मुसलमानों के वली थे आप (ﷺ) ने उससे उसका निकाह़ कर दिया।

٣٩- باب إِنْكَاحِ الرَّجُلِ وَلَدَهُ الصِّغَارَ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَاللاَّئِي لَمْ يَحِضْنَ﴾ فَجَعَلَ عِدَّتَهَا ثَلاَثَةَ أَشْهُرٍ قَبْلَ الْبُلُوغِ

बाब 39 : आदमी अपनी नाबालिग़ लड़की का निकाह़ कर सकता है इसकी दलील ये है कि अल्लाह ने सूरह त़लाक़ में फ़र्माया वल्लाई लम यह़िज़्न या'नी जिन औ़रतों को अभी ह़ैज़ न आया हो उनकी भी इ़द्दत तीन महीने हैं

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) का ये उ़म्दह इस्तिम्बात़ है क्योंकि तीन महीने की मुद्दत बग़ैर त़लाक़ के नहीं होती और त़लाक़ बग़ैर निकाह़ के नहीं हो सकती, पस मा'लूम हुआ कि कमसिन और नाबालिग़ लड़कियों का निकाह़ दुरुस्त है मगर इस आयत मे ये तख़्सीस़ नहीं कि बाप ही को ऐसा करना जाइज़ है और न कुँवारी की तख़्सीस़ है। अहले ह़दीष़ और मुह़क़्क़िक़ीन ने इसको इख़्तियार किया है कि जब लड़की बालिग़ा हो ख़्वाह कुँवारी हो या बेवा उसका इजाज़त लेना ज़रूरी है और कुँवारी के लिये उसका ख़ामोश रहना ही उसका इजाज़त है और ष़य्यिबा को ज़ुबान से इजाज़त देना चाहिये। एक ह़दीष़ में है कि एक कुँवारी लड़की आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आई, उसके बाप ने उसका निकाह़ जबरन कर दिया था वो पसंद नहीं करती थी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने लड़की को इख़्तियार दिया ख़्वाह निकाह़ बाक़ी रखे ख़्वाह फ़स्ख़ कर डाला। (वह़ीदी)

٥١٣٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَزَوَّجَهَا وَهِيَ بِنْتُ سِتِّ سِنِينَ، وَأُدْخِلَتْ عَلَيْهِ وَهِيَ بِنْتُ تِسْعٍ، وَمَكَثَتْ عِنْدَهُ تِسْعًا.
[راجع: ۳۸۹٤]

5133. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब उनसे निकाह़ किया तो उनकी उ़म्र छः साल थी और जब उनसे सुह़बत की तो उस वक़्त उनकी उ़म्र नौ बरस की थी और वो नौ बरस आपके पास रहीं। (राजेअ़ : 3894)

٤٠- باب تَزْوِيجِ الأَبِ ابْنَتَهُ مِنَ الإِمَامِ، وَقَالَ عُمَرُ : خَطَبَ النَّبِيُّ

बाब 40 : बाप का अपनी बेटी का निकाह़ मुसलमानों के इमाम या बादशाह से करना और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम

إِلَيَّ حَفْصَةَ فَأَنْكَحْتُهُ.

(ﷺ) ने हफ़्सा (रज़ि.) का पैग़ामे निकाह मेरे पास भेजा और मैंने उनका निकाह आँहज़रत (ﷺ) से कर दिया।

ये हदीष मौसूलन ऊपर गुज़र चुकी है।

٥١٣٤ - حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تَزَوَّجَهَا وَهِيَ بِنْتُ سِتِّ سِنِينَ، وَبَنَى بِهَا وَهِيَ بِنْتُ تِسْعِ سِنِينَ، قَالَ هِشَامٌ : وَأُنْبِئْتُ أَنَّهَا كَانَتْ عِنْدَهُ تِسْعَ سِنِينَ. [راجع: ٣٨٩٤]

5134. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उनसे निकाह किया तो उनकी उ़म्र छः साल थी और जब उनसे सुहबत की तो उनकी उ़म्र नौ साल थी। हिशाम बिन उ़र्वा ने कहा कि मुझे ख़बर दी गई है कि वो आँहज़रत (ﷺ) के साथ नौ साल रहीं। (राजेअ : 3894)

तश्रीह : या'नी जब उनकी उ़म्र अठारह साल की थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने वफ़ात पाई। अ़रब गर्म मुल्क है वहाँ की लड़कियाँ जल्दी जवान हो जाती हैं तो नौ बरस की उ़म्र में हज़रत आइशा (रज़ि.) जवान हो गई थी।

٤١ - باب السُّلْطَانُ وَلِيٌّ، لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((زَوَّجْنَاكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ))

बाब 41 : सुल्तान भी वली है क्योंकि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हमने इस औरत का निकाह तुझसे कर दिया उस क़ुर्आन के बदले जो तुझको याद है

٥١٣٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: إِنِّي وَهَبْتُ مِنْ نَفْسِي، فَقَامَتْ طَوِيلاً فَقَالَ رَجُلٌ زَوِّجْنِيهَا إِنْ لَمْ تَكُنْ لَكَ بِهَا حَاجَةٌ، قَالَ: ((هَلْ عِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ تُصْدِقُهَا؟)) قَالَ: ((مَا عِنْدِي إِلاَّ إِزَارِي)). فَقَالَ: ((إِنْ أَعْطَيْتَهَا إِيَّاهُ جَلَسْتَ لاَ إِزَارَ لَكَ فَالْتَمِسْ شَيْئًا)). فَقَالَ : مَا أَجِدُ شَيْئًا. فَقَالَ: ((الْتَمِسْ وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)). فَلَمْ يَجِدْ فَقَالَ : ((أَمَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ شَيْءٌ؟)).

5135. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम मुस्लिम बिन दीनार ने और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक औरत रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आई और कहा कि मैं अपने आपको आपके लिये हिबा करती हूँ। फिर वो देर तक खड़ी रही। इतने में एक मर्द ने कहा कि अगर आँहुज़ूर (ﷺ) को इसकी ज़रूरत नहीं हो तो इसका निकाह मुझसे करा दें। आपने पूछा कि तुम्हारे पास इन्हें महर में देने के लिये कोई चीज़ है? उसने कहा कि मेरे पास इस तहबंद के सिवा और कुछ नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर तुम अपना ये तहबंद इसको दे दोगे तो तुम्हारे पास पहनने के लिये तहबंद भी नहीं रहेगा। कोई और चीज़ तलाश कर लो। उस मर्द ने कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं। आपने फ़र्माया कि कुछ तो तलाश करो, एक लोहे की अंगूठी ही सही! उसे वो भी नहीं मिली तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा। क्या तुम्हारे पास कुछ क़ुर्आन

قَالَ : نَعَمْ، سُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا لِسُوَرٍ سَمَّاهَا فَقَالَ : ((قَدْ زَوَّجْنَاكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

[راجع: ٢٣١٠]

मजीद है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ! फ़लाँ फ़लाँ सूरतें हैं, उन सूरतों का उन्होंने नाम लिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर हमने तेरा निकाह इस औ़रत से उन सूरतों के बदल किया जो तुमको याद हैं। (राजेअ़ : 2310)

٤٢- باب لاَ يُنْكِحُ الأَبُ وَغَيْرُهُ الْبِكْرَ وَالثَّيِّبَ إِلاَّ بِرِضَاهَا

बाब 42 : बाप या कोई दूसरा वली कुँवारी या बेवा औ़रत का निकाह उसकी रज़ामंदी के बग़ैर न करे

٥١٣٦- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ تُنْكَحُ الأَيِّمُ حَتَّى تُسْتَأْمَرَ، وَلاَ تُنْكَحُ الْبِكْرُ حَتَّى تُسْتَأْذَنَ))، قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، وَكَيْفَ إِذْنُهَا؟ قَالَ: ((أَنْ تَسْكُتَ)).

[طرفاه في : ٦٩٦٨، ٦٩٧٠].

5136. हमसे मुआ़ज़ बिन फ़ज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने, उनसे यह्या बिन अबी बशीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बेवा औ़रत का निकाह उस वक़्त तक न किया जाए जब तक उसकी इजाज़त न ली जाए और कुँवारी औ़रत का निकाह उस वक़्त तक न किया जाए जब तक उसकी इजाज़त न मिल जाए। सहाबा ने कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! कुँवारी औ़रत इज़ाजत क्यूँकर देगी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उसकी सूरत ये है कि वो ख़ामोश रह जाए। ये ख़ामोशी उसको इजाज़त समझी जाएगी। (दीगर मक़ाम : 6968, 6970)

तश्रीह : ख़्वाह वो छोटी हो या बड़ी हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) और कुछ अहले ह़दीष़ का यही क़ौल मा'लूम होता है लेकिन अकष़र उ़लमा ने ये कहा है बल्कि इस पर इज्माअ़ हो गया है कि कुँवारी छोटी (या'नी नाबालिग़ लड़की) का निकाह उसका बाप कर सकता है, उससे पूछने की ज़रूरत नहीं है और ष़य्यिबा बालिग़ा का निकाह उसके पूछे बग़ैर जाइज़ नहीं इत्तिफ़ाक़न न बाप को न और किसी वली को। अब रह गई कुँवारी नाबालिग़ा और ष़य्यिबा नाबालिग़ा इनमें इख़्तिलाफ़ है। कुँवारी नाबालिग़ा से भी ह़नफ़िया के नज़दीक इजाज़त लेना चाहिये और इमाम मालिक और इमाम शाफ़िई और इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह़) के नज़दीक बाप को उससे इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं है इसी तरह दादा को भी अगर बाप ह़ाज़िर न हो। ह़दीष़ से इजाज़त लेने की ताईद होती है और ह़ज़रत इमाम शौकानी (रह़) ने अहले ह़दीष़ का यही मज़हब क़रार दिया है लकिन ष़य्यिबा नाबालिग़ा तो इमाम मालिक (रह़) और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़) ये कहते हैं कि बाप उसका निकाह कर सकता है उससे पूछने की ज़रूरत नहीं और इमाम शाफ़िई और इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुह़म्मद (रह़) ये कहते हैं कि उससे इजाज़त लेना ज़रूरी है क्योंकि ष़य्यिबा होने की वजह से वो ज़्यादा शर्म नहीं करती बहरह़ाल नाबालिग़ औ़रत को निकाह अगर किया जाए और उसमें इजाज़त भी ली जाए तो बादे बुलूग़ उसको इख़्तियार बाक़ी रहता है।

٥١٣٧- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ الرَّبِيعِ بْنِ طَارِقٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ أَبِي عَمْرٍو مَوْلَى عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ الْبِكْرَ

5137. हमसे अ़म्र बिन रबीअ़ बिन ताऱिक़ ने बयान किया, कहा कि मुझे लैष़ बिन सअ़द ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने, उन्हें ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के ग़ुलाम अबू अ़म्र ज़क्वान ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! कुँवारी लड़की (कहते हुए) शर्माती है।

तَسْتَحْيِي، قَالَ: ((رِضَاهَا صَمْتُهَا)).

[طرفاه في : ٦٩٤٩، ٦٩٧١].

आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसका ख़ामोश हो जाना ही उसकी रज़ामन्दी है।

٤٣- باب إِذَا زَوَّجَ ابْنَتَهُ وَهِيَ كَارِهَةٌ، فَنِكَاحُهُ مَرْدُودٌ

बाब 43 : अगर किसी ने अपनी बेटी का निकाह (वो कुँवारी हो या बेवा) जबरन कर दिया तो ये निकाह बातिल होगा

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) का मज़हब आम मा'लूम होता है लेकिन बाब की हदीष से मा'लूम होता है कि ये हुक्म षय्यिबा के निकाह में है जैसा कि इमाम नसाई ने हज़रत जाबिर से रिवायत किया है कि एक मर्द ने अपनी कुँवारी बेटी का निकाह कर दिया और वो उससे नाराज़ थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उसको अपने शौहर से जुदा करा दिया। इसी तरह हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी मरवी है। हाफ़िज़ ने कहा इस हदीष में ज़ुअफ़ है लेकिन इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की हदीष को इमाम अहमद और अबू दाऊद और इब्ने माजा और दारे क़ुत्नी ने निकाला और उसके रावी षिक़ह हैं और नसाई ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से ऐसा ही निकाला ऐसी सूरत में हज़रत इमाम बुख़ारी का मज़हब क़वी होगा कि लड़की ख़्वाह कुँवारी हो या षय्यिबा हर हाल में जो निकाह उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो वो नाजाइज़ होगा गो षय्यिबा के निकाह के नाजाइज़ होने पर सबका इत्तिफ़ाक़ है। इमाम बैहक़ी ने कहा अगर कुँवारी की रिवायत षाबित हो तो वो महमूल है उस पर कि ये निकाह ग़ैर कुफ़्व (ग़ैर बराबरी) में हुआ होगा। हाफ़िज़ ने कहा यही जवाब उम्दह है (वहीदी)

٥١٣٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَمُجَمِّعٍ ابْنَيْ يَزِيدَ بْنِ جَارِيَةَ عَنْ خَنْسَاءَ بِنْتِ خِذَامٍ الأَنْصَارِيَّةِ، أَنَّ أَبَاهَا زَوَّجَهَا وَهِيَ ثَيِّبٌ فَكَرِهَتْ ذَلِكَ، فَأَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَرَدَّ نِكَاحَهُ.

[أطرافه في: ٥١٣٩، ٦٩٤٥، ٦٩٦٩].

5138. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अ़ब्दुर रहमान और मज्मअ़ ने जो दोनों यज़ीद बिन हारषा के बेटे हैं, उनसे ख़न्सा बिन्ते ख़िज़ाम अंसारिया (रज़ि.) ने कि उनके वालिद ने उनका निकाह कर दिया था, वो षय्यिबा थीं, उन्हें ये निकाह मंज़ूर नहीं था, इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। आँहज़रत (ﷺ) ने उस निकाह को फ़स्ख़ कर डाला। (दीगर मक़ाम : 5139, 6945, 6969)

٥١٣٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا يَزِيدُ، أَخْبَرَنَا يَحْيَى أَنَّ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ حَدَّثَهُ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ وَمُجَمِّعَ بْنَ يَزِيدَ حَدَّثَاهُ، أَنَّ رَجُلاً يُدْعَى خِذَامًا أَنْكَحَ ابْنَةً لَهُ نَحْوَهُ. [راجع: ٥١٣٨]

5139. हमसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन हारून ने ख़बर दी, कहा हमको यह्या बिन सईद अंसारी ने ख़बर दी, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर रहमान बिन यज़ीद और मज्मअ़ बिन यज़ीद ने बयान किया कि ख़िज़ाम नामी एक सहाबी ने अपनी एक लड़की का निकाह कर दिया था। फिर पिछली हदीष की तरह बयान किया। (राजेअ़ : 5138)

٤٤- باب تَزْوِيجِ الْيَتِيمَةِ، لِقَوْلِهِ : ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلاَّ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا﴾ وَإِذَا قَالَ لِلْوَلِيِّ زَوِّجْنِي فُلاَنَةَ

बाब 44 : यतीम लड़की का निकाह कर देना क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया,

अगर तुम डरो कि यतीम लड़कियों के हक़ में इंसाफ़ न कर सकोगे

فَمَكَثَ سَاعَةً أَوْ قَالَ : مَا مَعَكَ؟ فَقَالَ: مَعِي كَذَا وَكَذَا أَوْ لَبِثَا ثُمَّ قَالَ: زَوَّجْتُكَهَا فَهُوَ جَائِزٌ. فِيهِ سَهْلٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

तो दूसरी औरतों से जो तुमको भली लगें निकाह कर लो। अगर किसी शख़्स ने यतीम लड़की के वली से कहा मेरा निकाह उस लड़की से कर दो फिर वली एक घड़ी तक ख़ामोश रहा या वली ने ये पूछा तेरे पास क्या क्या जायदाद है। वो कहने लगा फ़लाँ फ़लाँ जायदाद या दोनों ख़ामोश हो रहे। उसके बाद वली ने कहा मैंने उसका निकाह तुझसे कर दिया तो निकाह जाइज़ हो जाएगा इस बाब में सहल की हदीष़ आँहज़रत (ﷺ) से मरवी है।

तशरीह : हज़रत सहल (रज़ि.) की हदीष़ इससे पहले कई बार गुज़र चुकी है। इस हदीष़ से ये निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उस मर्द के ईजाब के बाद दूसरी बहुत बातचीत की और उसके बाद फ़र्माया **जव्वज्नाकहा बिमा मअक मिनल्क़ुर्आन** बाब और हदीष़ में यही मुताबक़त है।

٥١٤٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَ لَهَا: يَا أُمَّتَاهُ ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَلاَّ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى - إِلَى - مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ قَالَتْ عَائِشَةُ : يَا ابْنَ أُخْتِي هَذِهِ الْيَتِيمَةُ تَكُونُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا فَيَرْغَبُ فِي جَمَالِهَا وَمَالِهَا وَيُرِيدُ أَنْ يَنْتَقِصَ مِنْ صَدَاقِهَا فَنُهُوا عَنْ نِكَاحِهِنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ فِي إِكْمَالِ الصَّدَاقِ، وَأُمِرُوا بِنِكَاحِ مَنْ سِوَاهُنَّ مِنَ النِّسَاءِ، قَالَتْ عَائِشَةُ: اسْتَفْتَى النَّاسُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعْدَ ذَلِكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ - إِلَى - وَتَرْغَبُونَ﴾ فَأَنْزَلَ اللهُ لَهُمْ فِي هَذِهِ الآيَةِ، أَنَّ الْيَتِيمَةَ إِذَا كَانَتْ ذَاتَ مَالٍ وَجَمَالٍ، رَغِبُوا فِي نِكَاحِهَا وَنَسَبِهَا وَالصَّدَاقِ، وَإِذَا كَانَتْ مَرْغُوبًا عَنْهَا فِي قِلَّةِ الْمَالِ وَالْجَمَالِ تَرَكُوهَا وَأَخَذُوا غَيْرَهَا مِنَ

5140. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने और (दूसरी सनद) और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ज़ुह्री ने, कहा मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि उन्होंने हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से सवाल किया कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! और अगर तुम्हें डर हो कि तुम यतीमों के बारे में इंस़ाफ़ न कर सकोगे तो उसे मा मलकत अयमानुकुम तक कि उस आयत में क्या हुक्म बयान हुआ है? हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा मेरे भांजे! इस आयत में उस यतीम लड़की का हुक्म बयान हुआ है जो अपने वली की परवरिश में हो और वली को उसके हुस्न और उसके माल की वजह से उसकी त़रफ़ तवज्जह हो और वो उसका महर कम करके उससे निकाह करना चाहता हो तो ऐसे लोगों को ऐसी यतीम लड़कियों से निकाह से मुमानअ़त की गई है सिवा इस सूरत के कि वो उनके महर के बारे में इंस़ाफ़ करें (और अगर इंस़ाफ़ नहीं कर सकते तो उन्हें उनके सिवा दूसरी औरतों से निकाह का हुक्म दिया गया है। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा लोगों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसके बाद मसला पूछा तो अल्लाह तआ़ला ने आयत, और आपसे औरतों के बारे में पूछते हैं, से व तरग़बून तक नाज़िल की। अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में ये हुक्म नाज़िल किया कि यतीम लड़कियाँ जब स़ाहिबे माल व स़ाहिबे जमाल होती हैं तब तो महर मे कमी करके उससे निकाह करना रिश्ता लगाना पसंद करते हैं और जब दौलतमंदी या ख़ूबसूरती नहीं रखती उस वक़्त उसको छोड़कर दूसरी औरतों से निकाह कर लेते हैं (ये

النِّسَاءِ، قَالَتْ: فَكَمَا يَتْرُكُونَهَا حِينَ يَرْغَبُونَ عَنْهَا، فَلَيْسَ لَهُمْ أَنْ يَنْكِحُوهَا إِذَا رَغِبُوا فِيهَا إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهَا وَيُعْطُوهَا حَقَّهَا الأَوْفَى مِنَ الصَّدَاقِ.

[راجع: ٢٤٩٤].

क्या बात) उनको चाहिये कि जैसे माल व दौलत और हुस्न व जमाल न होने की सूरत में उसको छोड़ देते हैं ऐसे ही उस वक़्त भी छोड़ दें जब वो मालदार और ख़ूबसूरत हो अल्बत्ता अगर इंसाफ़ से चलें और उसका पूरा महर मुक़र्रर करे तो ख़ैर निकाह कर लें। (राजेअ : 2494)

٤٥- باب إِذَا قَالَ الْخَاطِبُ لِلْوَلِيِّ : زَوِّجْنِي فُلاَنَةَ قَالَ: قَدْ زَوَّجْتُكَ بِكَذَا وَكَذَا، جَازَ النِّكَاحُ وَإِنْ لَمْ يَقُلْ لِلزَّوْجِ أَرَضِيتَ أَوْ قَبِلْتَ

बाब 45 : अगर किसी मर्द ने लड़की के वली से कहा मेरा निकाह उस लड़की से कर दो, उसने कहा मैंने इतने महर पर तेरा निकाह इससे कर दिया तो निकाह हो गया गो वो मर्द से ये न पूछे कि तुम इस पर राज़ी हो या तुमने क़ुबूल किया या नहीं?

तश्रीह : इस बाब से मतलब ये है कि मर्द का दरख़्वास्त करना क़ुबूल करने के क़ायम मुक़ाम है। अब उसके बाद फिर इज़्हार क़ुबूल की ह़ाजत नहीं। बेअ़ में भी यही हुक्म है मष़लन किसी ने दूसरे से कहा चार रुपये को ये चीज़ मेरे हाथ बच डाल उसने कहा कि मैंने बेच दी तो बेअ़ तमाम हो गई अब उसकी ज़रूरत नहीं कि फिर मशतरी कहे कि मैंने क़ुबूल की।

٥١٤١- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ امْرَأَةً أَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَرَضَتْ عَلَيْهِ نَفْسَهَا فَقَالَ : ((مَا لِي الْيَوْمَ فِي النِّسَاءِ مِنْ حَاجَةٍ)). فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللهِ، زَوِّجْنِيهَا. قَالَ: ((مَا عِنْدَكَ؟)) قَالَ : مَا عِنْدِي شَيْءٌ. قَالَ: ((أَعْطِهَا وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)). قَالَ: مَا عِنْدِي شَيْءٌ. قَالَ: ((فَمَا عِنْدَكَ مِنَ الْقُرْآنِ؟)) قَالَ : كَذَا وَكَذَا قَالَ : ((فَقَدْ مَلَّكْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).

[راجع: ٢٣١٠]

5141. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने, उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने कि एक औ़रत रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आई और उसने अपने आपको आँह़ज़रत (ﷺ) से निकाह़ के लिये पेश किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझे अब औ़रत की ज़रूरत नहीं है। इस पर एक सह़ाबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ) इनका निकाह़ मुझसे कर दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा कि तुम्हारे पास क्या है? उन्होंने अ़र्ज़ किया मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इस औ़रत को कुछ दो ख़्वाह लोहे की अंगूठी ही सही। उन्होंने कहा कि हुज़ूर (ﷺ) मेरे पास कुछ भी नहीं है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें क़ुर्आन कितना याद है? अ़र्ज़ किया फ़लाँ फ़लाँ सूरतें याद हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मैंने उन्हें तुम्हारे निकाह़ में दिया, उस क़ुर्आन के बदले जो तुमको याद है। (राजेअ़ : 2310)

तश्रीह : इस वाक़िया में आँह़ज़रत (ﷺ) बतौर वली के थे। आपसे उस शख़्स ने उस औ़रत से निकाह़ करा देने की दरख़्वास्त की, आपने निकाह़ करा दिया। बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त हो गई।

मिर्ज़ा हैरत साहब मरहूम की हैरत अंगेज़ जसारत! हज़रत मिर्ज़ा हैरत साहब मरहूम ने भी बुख़ारी शरीफ़ का उर्दू तर्जुमा शाया किया था मगर कुछ कुछ जगह आप हैरत अंगेज़ जसारत से काम ले जाते हैं चुनाँचे इस हदीष के ज़ेल आपकी जसारत मुलाहिज़ा फ़र्माएँ, लिखते हैं,

बुख़ारी इस हदीष से ये समझ गये कि ता'लीमुल क़ुर्आन आँहज़रत (ﷺ) ने महर क़रार दिया और कुछ न क़रार दिया हालाँकि इससे ये लाज़िम नहीं आता बल्कि महर मुअज्जल मुक़र्रर कर दिया होगा और उसके मा'नी ये हैं कि हमने बुज़ुर्गिये क़ुर्आन याद होने की वजह से उसका निकाह तुझसे कर दिया। बुख़ारी ने बाअ के मा'नी ऐवज़ के लेकर मसला क़ायम कर दिया हालाँकि बाअ मुसब्बबा है। (तर्जुमा सहीह बुख़ारी, जिल्द सौम पेज नं. 22)

मिर्ज़ा साहब मरहूम ने हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष को जिस ला-उबालीपन से याद किया है वो आपकी हैरत अंगेज़ जसारत है फिर मज़ीद जसारत ये कि आँहज़रत (ﷺ) के इस निकाह कर देने की बड़ी ही भोण्डी तस्वीर पेश की है। हदीष के साफ़ अल्फ़ाज़ हैं **फ़क़द मलक्तुकहा बिमा मअक मिनल्क़ुर्आन** तुझको जो क़ुर्आन ज़ुबानी याद है, उसके ऐवज़ उस औरत का मैंने तुझको मालिक बना दिया। ये उस वक़्त हुआ जबकि साइल के घर में एक लोहे की अंगूठी या छल्ला भी न था मगर मिर्ज़ा साहब की जसारत मुलाहिज़ा हो कि आप लिखते हैं, बल्कि महरे मुअज्जल मुक़र्रर कर दिया होगा। अगर ऐसा हुआ होता तो तफ़्सील में आँहज़रत (ﷺ) उसका ज़िक्र ज़रूर फ़र्माते मगर साफ़ वाज़ेह है कि मिर्ज़ा साहब ने आँहज़रत (ﷺ) पर ये महज़ क़यासी इफ़्तिराबाज़ी की है जिसकी बिना पर आप हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) की फ़ुक़ाहते हदीष पर हमला कर रहे हैं और अपनी फहम के आगे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) की फहम हदीष को हैच षाबित करना चाहते हैं। अल्लाह पाक हज़रत मिर्ज़ा साहब की इस जसारत को मुआफ़ करे। दरअसल तअस्सुबे तक़्लीद इतना बुरा मर्ज़ है कि आदमी उसमें बिलकुल अंधा बहरा बनकर हक़ीक़त से बिलकुल दूर हो जाता है हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने बाब से जो मसला षाबित किया है वो ऐसे हालात में यक़ीनन इर्शादे रिसालते मआब (ﷺ) से षाबित है। **व ला शक्क फ़ीहि अला रग्मि अनूफ़िल्मुक़ल्लिदीनल्जामिदीन रहिमहुमुल्लाहु अज्मईन.**

बाब 46 : किसी मुसलमान भाई ने एक औरत को पैग़ाम भेजा हो तो दूसरा शख़्स उसको पैग़ाम न भेजे जब तक वो उससे निकाह न करे या पयाम न छोड़ दे या'नी मंगनी तोड़ दे

٤٦- باب لاَ يَخْطُبُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ حَتَّى يَنْكِحَ أَوْ يَدَعَ

5142. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मैंने नाफ़ेअ से सुना, उन्होंने बयान किया कि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने इससे मना किया है कि हम किसी के भाव पर भाव लगाएँ और किसी शख़्स को अपने किसी (दीनी) भाई के पैग़ामे निकाह पर पैग़ाम न भेजना चाहिये, यहाँ तक कि पैग़ाम वाला अपना इरादा बदल दे या उसे पैग़ामे निकाह की इजाज़त दे दे तो जाइज़ है। (राजेअ : 2139)

٥١٤٢- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ نَافِعًا يُحَدِّثُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ يَقُولُ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ، أَنْ يَبِيعَ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ، وَلاَ يَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ حَتَّى يَتْرُكَ الْخَاطِبُ قَبْلَهُ أَوْ يَأْذَنَ لَهُ الْخَاطِبُ. [راجع: ٢١٣٩]

दयानत और अमानत का तक़ाज़ा है कि किसी भाई के सौदे में या उसकी मंगनी में दख़लअंदाज़ी न की जाए हाँ वो ख़ुद हट जाए तो बात अलग है।

5143. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया वो नबी करीम (ﷺ) से रिवायत करते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बदगुमानी से बचते रहो क्योंकि बदगुमानी सबसे झूठी बात है (और लोगों के राज़ों की) खोद कुरैद न किया करो और न (लोगों की निजी बातचीत को) कान लगाकर सुनो, आपस में दुश्मनी न पैदा करो बल्कि भाई बनकर रहो। (दीगर मक़ाम : 6064, 6066, 6724)

٥١٤٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ عَنِ الأَعْرَجِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَأْثُرُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ. وَلاَ تَجَسَّسُوا، وَلاَ تَحَسَّسُوا، وَلاَ تَبَاغَضُوا، وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا)).

[أطرافه في : ٦٠٦٤، ٦٠٦٦، ٦٧٢٤].

5144. और कोई शख़्स अपने भाई के पैग़ाम पर पैग़ाम न भेजे यहाँ तक कि वो निकाह़ करे या छोड़ दे। (राजेअ़ : 2140)

٥١٤٤- ((وَلاَ يَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ حَتَّى يَنْكِحَ أَوْ يَتْرُكَ)).

[راجع: ٢١٤٠]

अख़्लाक़े फ़ाज़िला की ता'लीम के लिये इस ह़दीष़ को बुनियादी ह़ैष़ियत दी जा सकती है। इस्लाहे मुआशरा और स़ालेह़ तरीन समाज बनाने के लिये इन औस़ाफ़े ह़सना का होना ज़रूरी है, बदगुमानी, ऐबजोई, चुग़ली सब इसमें दाख़िल हैं। इस्लाम का मंशा सारे इंसानों को मुख़्लिस़तरीन भाइयों की त़रह़ ज़िंदगी गुज़ारने का पैग़ाम देना है।

बाब 47 : पैग़ाम छोड़ देने की वजह बयान करना

٤٧- باب تَفْسِيرِ تَرْكِ الْخِطْبَةِ

5145. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा कि मुझे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब मेरी बेटी ह़फ़्स़ा (रज़ि.) बेवा हुईं तो मैं ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) से मिला और उनसे कहा कि अगर आप चाहें तो मैं आपका निकाह़ अ़ज़ीज़ा ह़फ़्स़ा बिन्ते उ़मर (रज़ि.) से कर दूँ। फिर कुछ दिनों के बाद रसूले करीम (ﷺ) ने उनके निकाह़ का पैग़ाम भेजा। उसके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मुझसे मिले और कहा कि आपने जो सूरत मेरे सामने रखी थी। उसका जवाब मैंने स़िर्फ़ इस वजह से नहीं दिया था कि मुझे मा'लूम था कि रसूले करीम (ﷺ) ने उनका ज़िक्र किया है। मैं नहीं चाहता था कि आप (ﷺ) का राज़ खोलूँ हाँ अगर आँह़ज़रत (ﷺ) उन्हें छोड़ देते तो मैं उनको क़ुबूल कर लेता। शुऐब के साथ इस ह़दीष़ को यूनुस बिन यज़ीद और मूसा बिन उ़क़्बा और मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अ़तीक़ ने भी

٥١٤٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ، أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ حِينَ تَأَيَّمَتْ حَفْصَةُ قَالَ عُمَرُ: لَقِيتُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتَ أَنْكَحْتُكَ حَفْصَةَ بِنْتَ عُمَرَ، فَلَبِثْتُ لَيَالِيَ ثُمَّ خَطَبَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ : إِنَّهُ لَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَرْجِعَ إِلَيْكَ فِيمَا عَرَضْتَ إِلاَّ أَنِّي قَدْ عَلِمْتُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ ذَكَرَهَا، فَلَمْ أَكُنْ لأُفْشِيَ سِرَّ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَلَوْ تَرَكَهَا لَقَبِلْتُهَا. تَابَعَهُ يُونُسُ وَمُوسَى بْنُ عُقْبَةَ وَابْنُ أَبِي عَتِيقٍ عَنِ

ज़ुहरी से रिवायत किया है। (राजेअ : 5005)

الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٥٠٠٥]

हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने पैग़ाम छोड़ देने की वजह बयान कर दी यही बाब का मक़सद है।

बाब 48 : (अक़्द से पहले) निकाह का ख़ुत्बा पढ़ना

٤٨- باب الْخُطْبَةِ

5146. हमसे क़ुबैसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, कहा कि मैंने हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि दो आदमी मदीना के मश्रिक़ की त़रफ़ से आए, वो मुसलमान हो गये और ख़ुत़बा दिया, निहायत फ़सीह़ और बलीग़। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कुछ तक़रीर जादू की त़रह अष़र करती है। (दीगर मक़ाम : 5767)

٥١٤٦- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ قَالَ : سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ يَقُولُ: جَاءَ رَجُلاَنِ مِنَ الْمُشْرِقِ فَخَطَبَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِنَ الْبَيَانِ سِحْرًا)). [طرفه في: ٥٧٦٧].

तश्रीह : ये ह़दीष़ लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने उस त़रफ़ इशारा किया कि निकाह़ का ख़ुत्बा स़ाफ़ स़ाफ़ दरम्यानी तक़रीर में होना चाहिये न ये कि बड़े तकल्लुफ़ और ख़ुश तक़रीरी के साथ जिससे सामेईन पर जादू का सा अष़र हो और ख़ुत्ब-ए- निकाह़ के बाब में स़रीह़ ह़दीष़ इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की है जिसे अस्ह़ाबे सुनन ने रिवायत किया है लेकिन ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) शायद अपनी शर्त़ पर न होने से उसे न ला सके। निकाह़ का ख़ुत्बा मशहूर ये है, **अल्हम्दु लिल्लाहि नहमदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़्फ़िरूहू व नूमिनु बिही व नतवक्कलु अ़लैहि व नऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन शुरूरि अन्फ़ुसिना व मिन सय्यिआति आमालिना मंय्यहदिहिल्लाहु फला मुज़िल्ल लहू व मंय्युज़्लिलहू फ़ला हादिय लहू व अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू अम्मा बअ़द अऊ़ज़ुबिल्लाह मिनश्शैतानिर्रजीम या अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह ह़क़्क़ तुक़ातिही वला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून . या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी खलक़कुम मिन नफ़्सिनव्वांहिद: व ख़लक़ मिन्हा ज़ौजहा व बष़्ष़ मिन्हुमा रिजालन कष़ीरन व निसाअन वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसाअलून बिही वल्अरहाम इन्नल्लाह कान अ़लैकुम रक़ीबा. या अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह व क़ूलु क़ौलन सदीदन युस्लिह लकुम आ़मालकुम व यग़्फ़िर्लकुम ज़ुनूबकुम व मय्युतीइल्लाह व रसूलहू फक़द फ़ाज़ फ़ौज़न अ़ज़ीमा.** तक पढ़कर फिर क़ाज़ी ईजाब व क़ुबूल कराए (ख़ुत्बा मे मज़्कूर लफ़्ज़ व नुअमिनू बिही व नतवक्कलु अ़लैहि मह़ल्ल नज़र हैं या'नी ये लफ़्ज़ सनदन ष़ाबित नहीं है। इस त़रह़ दूसरी आयत जिससे सूरह निसाअ का आग़ाज़ होता है, वो पूरी पढ़नी चाहिये वल्लाहु आलम बिस्सवाब। अ़ब्दुर्रशीद तनसवी)

बाब 49 : निकाह़ और वलीमा की दा'वत में दुफ़ बजाना

٤٩- باب ضَرْبِ الدُّفِّ فِي النِّكَاحِ وَالْوَلِيمَةِ

ऐलाने निकाह़ के लिये दफ़ बजाना जिसमें घुँघरू न हा जाइज़ है मगर आजकल का गाना बजाना सरासर ह़राम है।

5147. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ज़क्वान ने बयान किया, कहा कि रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्विज़ इब्ने उ़फ़रा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) तशरीफ़ लाए और जब मैं दुलहन बनाकर बिठाई गई आँह़ज़रत (ﷺ) अंदर तशरीफ़ लाए और मेरे बिस्तर पर बैठे, इसी त़रह जैसे तुम इस वक़्त मेरे पास बैठे हुए हो। फिर हमारे यहाँ की कुछ लड़कियाँ दुफ़ बजाने लगीं और मेरे बाप और चचा जो जंगे बद्र में शहीद

٥١٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ قَالَ : قَالَتِ الرُّبَيِّعُ بِنْتُ مُعَوِّذِ بْنِ عَفْرَاءَ : جَاءَ النَّبِيُّ ﷺ فَدَخَلَ حِينَ بُنِيَ عَلَيَّ، فَجَلَسَ عَلَى فِرَاشِي كَمَجْلِسِكَ مِنِّي، فَجَعَلَتْ جُوَيْرِيَاتٌ لَنَا يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ وَيَنْدُبْنَ مَنْ

قُتِلَ مِنْ آبَائِي يَوْمَ بَدْرٍ، إِذْ قَالَتْ إِحْدَاهُنَّ وَفِينَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، فَقَالَ : ((دَعِي هَذِهِ وَقُولِي بِالَّذِي كُنْتِ تَقُولِينَ)).

[راجع: ٤٠٠١]

हुए थे, उनका मर्षिया पढ़ने लगीं। इतने में उनमें से एक लड़की ने पढ़ा, और हममें एक नबी है जो उन बातों की ख़बर रखता है जो कुछ कल होने वाली हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये छोड़ दो। उसके सिवा जो कुछ तुम पढ़ रही थीं वो पढ़ो। (राजेअ : 4001)

तश्रीह : उस लड़की को आपने ऐसा शे'र पढ़ने से मना कर दिया क्योंकि आप आ़लिमुल ग़ैब नहीं थे आ़लिमुल ग़ैब सिर्फ़ ज़ाते बारी तआ़ला है। क़ुर्आन पाक में स़ाफ़ उसकी स़राहत मज़्कूर है। मिरक़ात में है कि वो दुफ़ जो बजा रही थीं उनमें घुँघरू जैसी आवाज़ नहीं थी **व कान लहुन्न ग़ैर मस्हूबिन बिजलाजिल** इससे आजकल के गाने बजाने पर दलील पकड़ना ग़लत़ है। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने ऐसे गानों बजाने से सख़्ती के साथ मना किया है बल्कि आप (ﷺ) दुनिया में ऐसे तमाम गानों को मिटाने के लिये मब्ऊ़ष हुए थे (ﷺ), **क़ाल फ़िल्फ़त्हि व इन्नमा अन्कर अ़लैहा मा ज़कर मिनल्अत़्राइ हैषु उत्लिक़ इल्मुल्ग़ैबि बिही व हिय सिफ़तुन तख़्तस्सु बिल्लाहि तआ़ला** या'नी आपने उस लड़की को उस शे'र के पढ़ने से इसलिये मना किया कि उसमें मुबालग़ा था और इ़ल्मुल ग़ैब का इत़्लाक़ आप (ﷺ) की ज़ात पर किया गया था ह़ालाँकि ये ऐसी सिफ़त है जो अल्लाह के साथ ख़ास़ है।

٥٠- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿وَآتُوا النِّسَاءَ صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً﴾ وَكَثْرَةِ الْمَهْرِ، وَأَدْنَى مَا يَجُوزُ مِنَ الصَّدَاقِ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلاَ تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ ﴿أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ﴾ وَقَالَ سَهْلٌ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ))

बाब 50 : अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान और औ़रतों को उनका महर ख़ुशदिली से अदा कर दो

और महर ज़्यादा रखना और कम से कम कितना जाइज़ है और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान (सूरह निसा में)

और अगर तुमने उन (औ़रतों) में से किसी को (महर में) ढेर का ढेर दिया हो, जब भी उससे वापस न लो और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान (सूरह बक़रः में) या तुमने उनके लिये कुछ (महर के त़ौर पर) मुक़र्रर किया हो, और सहल बिन सअ़द स़ाएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कुछ तो ढूँढकर ला, अगरचे लोहे की एक अंगूठी ही सही।

٥١٤٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ تَزَوَّجَ امْرَأَةً عَلَى وَزْنِ نَوَاةٍ فَرَأَى النَّبِيُّ ﷺ بَشَاشَةَ الْعُرْسِ، فَسَأَلَهُ فَقَالَ: إِنِّي تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً عَلَى وَزْنِ نَوَاةٍ، وَعَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ، أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ تَزَوَّجَ امْرَأَةً عَلَى وَزْنِ نَوَاةٍ مِنْ

5148. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन स़ुहैब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने एक ख़ातून से एक गुठली के वज़न के बराबर (सोने की महर पर) निकाह किया। फिर नबी करीम (ﷺ) ने शादी की ख़ुशी उनमें देखी तो उनसे पूछा। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि मैंने एक औ़रत से एक गुठली के बराबर सोने पर निकाह किया है। और क़तादा ने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से ये रिवायत इस त़रह नक़ल की है कि ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने एक औ़रत से एक गुठली के वज़न के बराबर

सोने पर निकाह किया था। (राजेअ : 2049)

ذَهَبٍ. [راجع: ٢٠٤٩]

तश्रीह : इसमें सोने की तस़रीह़ मज़्कूर है। इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि महर की कमी बेशी की कोई ह़द नहीं है मगर बेहतर ये है कि (त़ाक़त होने पर महर दस दिरहम से कम और पाँच सौ दिरहम से ज़्यादा न हो। क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) की बीवियों और स़ाह़बज़ादियों का यही महर था। (वह़ीदी) आजकल लोग नामो नमूद के लिये हज़ारों का महर बाँध देते हैं बाद में अदायगी का नाम नहीं लेते इल्ला माशा अल्लाह। ऐसे लोगों को चाहिये कि उतना ही महर बँधवाएँ जिसे बख़ुशी अदा कर सकें।

बाब 51 : क़ुर्आन की ता'लीम महर हो सकती है इस त़रह़ महर का ज़िक्र ही न करे तब भी निकाह़ स़ह़ीह़ हो जाएगा (और महर मिष़्ल लाज़िम होगा)

٥١- باب التَّزْوِيجِ عَلَى الْقُرْآنِ وَبِغَيْرِ صَدَاقٍ

महरुल मिष़्ल औ़रत के बाप के कुंबे के महर पर भी क़यास करके मुक़र्रर किया जाता है जैसे उसकी इलाक़ी बहनें और फूफियाँ और चचाज़ाद बहनें। जब निकाह़ के वक़्त कुछ महर न मुक़र्रर हुआ हो या पहले या बाद में निकाह़ के मिक़्दार महर के तअ़य्युन व तस़रीह़ न कर दी गई हो या महर अ़मदन या सह्वन ग़ैर मुअ़य्यन छोड़ दिया गया हो तो औ़रत उस महर की मुस्तह़िक़ होगी जिसको शरअ़ मे महरुल मिष़्ल या'नी उसकी अम्ष़ाल व अक़्रान का महर कहते हैं। औ़रत का महरुल मिष़्ल निकालने का ये क़ायदा मुक़र्रर किया गया है कि उसके शौहर की ह़ालत बए'तिबारे शराफ़त और दौलत के उस औ़रत के शौहर की ह़ालत के मानिन्द हो जो उसकी मिष़्ल क़रार दी गई है। महरुल मिष़्ल स़िर्फ़ उन सूरतों में लिया जाता है जिनमें निकाह़ शरअ़न स़ह़ीह़ व जाइज़ है।

5149. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा मैंने अबू ह़ाज़िम से सुना, वो कहते थे कि मैंने सहल बिन सअ़द साएदी से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं लोगों के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। इतने में एक ख़ातून खड़ी हुईं और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अपने आपको आपके लिये हिबा करती हूँ, आप अब जो चाहें करें। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। वो फिर खड़ी हुईं और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैंने अपने आपको आपके लिये हिबा कर दिया है हुज़ूर (ﷺ) जो चाहें करें। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने इस बार भी कोई जवाब नहीं दिया। वो तीसरी बार खड़ी हुईं और कहा कि उन्होंने अपने आपको हुज़ूर (ﷺ) के लिये हिबा कर दिया है, हुज़ूर (ﷺ) जो चाहें करें। उसके बाद एक स़ह़ाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! उनका निकाह़ मुझसे कर दीजिए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उनसे पूछा तुम्हारे पास कुछ है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ और तलाश करो एक लोहे की अंगूठी भी अगर मिल जाए तो ले आओ। वो गये और तलाश किया, फिर वापस

٥١٤٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ سَمِعْتُ أَبَا حَازِمٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ، يَقُولُ: إِنِّي لَفِي الْقَوْمِ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ قَامَتِ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّهَا قَدْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لَكَ، فَرَ فِيهَا رَأْيَكَ. فَلَمْ يُجِبْهَا شَيْئًا. ثُمَّ قَامَتْ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّهَا قَدْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لَكَ، فَرَ فِيهَا رَأْيَكَ. فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، انْكِحْنِيهَا. قَالَ: ((هَلْ عِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ : ((اذْهَبْ فَاطْلُبْ وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ)). فَذَهَبَ وَطَلَبَ، ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ : مَا وَجَدْتُ شَيْئًا وَلاَ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ. فَقَالَ : ((هَلْ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ

شيءٌ؟)) قَالَ : مَعِي سُورة كَذَا، وَسُورَة كَذا، قَالَ : ((اذْهَبْ فَقَدْ أَنْكَحْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ)).
[راجع: ٢٣١٠]

आकर अ़र्ज़ किया कि मैंने कुछ नहीं पाया, लोहे की एक अंगूठी भी नहीं मिली। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हारे पास कुछ क़ुर्आन है? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ। मेरे पास फ़लाँ फ़लाँ सूरतें हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जाओ मैंने तुम्हारा निकाह़ इनसे उस क़ुर्आन पर किया जो तुमको याद है। (राजेअ़ : 2310)

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

٥٢- باب الْمَهْرِ بِالْعُرُوضِ وَخَاتَمٍ مِنْ حَدِيدٍ

बाब 52 : कोई जिंस या लोहे की अंगूठी महर हो सकती है, गो नक़द रुपया न हो

٥١٥٠- حدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ عَنْ سُفْيَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، قَالَ : لِرَجُلٍ : ((تَزَوَّجْ وَلَوْ بِخَاتِمٍ مِنْ حَدِيدٍ)). [راجع: ٢٣١٠]

5150. हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे स़ह़ाबी ह़ज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक आदमी से फ़र्माया निकाह़ कर, ख़्वाह लोहे की एक अंगूठी पर ही हो। (राजेअ़ : 2310)

इससे स़ाफ़ ज़ाहिर हुआ कि निकाह़ में एक मा'मूली रक़म के म हर पर भी हो सकता है यहाँ तक कि एक लोहे की अंगूठी पर भी जबकि दूल्हा बिलकुल मुफ़्लिस हो। अल्ग़र्ज़ शरीअ़त ने निकाह़ का मामला बहुत आसान कर दिया है।

٥٣- باب الشُّرُوطِ فِي النِّكَاحِ

बाब 53 : निकाह़ में जो शर्तें की जाएँ (उनका पूरा करना ज़रूरी है)

وَقَالَ عُمَرُ: مَقَاطِعُ الْحُقُوقِ عِنْدَ الشُّرُوطِ. وَقَالَ الْمِسْوَرُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ ذَكَرَ صِهْرًا لَهُ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ فَأَحْسَنَ، قَالَ: ((حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي)).

और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा ह़क़ का पूरा करना उसी वक़्त होगा जब शर्त़ पूरी की जाए और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने कहा मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना, आपने अपने एक दामाद (अबुल आस़) का ज़िक्र फ़र्माया और उनकी ता'रीफ़ की कि दामादी का ह़क़ उन्होंने अदा किया जो बात कही वो सच कही और जो वा'दा किया वो पूरा किया।

٥١٥١- حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَحَقُّ مَا أَوْفَيْتُمْ مِنَ الشُّرُوطِ،

5151. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे ह़ज़रत उ़क़्बा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तमाम शर्तें सबसे ज़्यादा पूरी की जाने के लायक़ हैं जिनके ज़रिये तुमने

शर्मगाहों को हलाल किया है। या'नी निकाह की शर्तें ज़रूर पूरी करनी होंगी। (राजेअ : 2721)

أَنْ تُوفُوا بِهِ مَا اسْتَحْلَلْتُمْ بِهِ الْفُرُوجَ)).

[راجع: ٢٧٢١]

तशरीह : निकाह के वक़्त जो शर्तें की जाएँ उनका पूरा करना लाज़िम है, इमाम अहमद और अहले हदीष का यही क़ौल है मगर एक शर्त कि मर्द अपनी पहली बीवी को तलाक़ दे दे उसका पूरा करना ज़रूरी नहीं और ऐसी शर्तें कि मर्द दूसरी शादी न करे या लौण्डी न रखे या बीवी को उसके मुल्क से बाहर न ले जाए या नान नफ़्क़ा उतना दे तो इन शर्तों का पूरा करना शौहर पर लाज़िम है वरना औरत क़ाज़ी के यहाँ मुक़द्दमा करके जुदा हो सकती है। हाँ कोई शर्त शरीअत के ख़िलाफ़ हो तो उसे तोड़ देना लाज़िम है।

बाब 54 : वो शर्तें जो निकाह में जाइज़ नहीं. हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि कोई औरत (सौकन) बहन की तलाक़ की शर्त न लगाए

٥٤- باب الشُّرُوطِ الَّتِي لاَ تَحِلُّ فِي النِّكَاحِ. وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ : لاَ تَشْتَرِطِ الْمَرْأَةُ طَلاَقَ أُخْتِهَا

5152. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा उनसे ज़करिया ने जो अबू ज़ायदा के साहबज़ादे हैं, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी औरत के लिये जाइज़ नहीं कि अपनी किसी (सौकन) बहन की तलाक़ की शर्त इसलिये लगाए ताकि उसके हिस्से का प्याला भी ख़ुद उंडेल ले क्योंकि उसे वही मिलेगा जो उसके मुक़द्दर में होगा। (राजेअ : 2140)

٥١٥٢- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ زَكَرِيَّا هُوَ ابْنُ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَحِلُّ لاِمْرَأَةٍ تَسْأَلُ طَلاَقَ أُخْتِهَا لِتَسْتَفْرِغَ صَحْفَتَهَا، فَإِنَّمَا لَهَا مَا قُدِّرَ لَهَا)).

[راجع: ٢١٤٠]

बाब 55 : शादी करने वाले के लिये ज़र्द रंग का जवाज़

इसकी रिवायत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से की है।

٥٥- باب الصُّفْرَةِ لِلْمُتَزَوِّجِ، وَرَوَاهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

तशरीह : दूल्हा के ज़र्दी लगाना हनफ़िया और शाफ़िइया के नज़दीक मुत्लक़ मना है और मालिकिया ने सिर्फ़ कपड़े में लगाना दूल्हे के लिये जाइज़ रखा है न कि बदन पे। उनकी दलील अबू मूसा की हदीष है जिसमें मज़्कूर है कि अल्लाह तआला उस शख़्स की नमाज़ क़ुबूल नहीं करता जिसके बदन में ज़र्द ख़ुश्बूएँ हों। हनफ़िया और शाफ़िइया कहते हैं कि अब्दुर्रहमान की हदीष से मर्द के लिये ज़र्दी लगाने का जवाज़ नहीं निकलता क्योंकि अब्दुर्रहमान ने ज़र्दी नहीं लगाई थी

5153. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उनको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद तवील ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि) ने कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उनके ऊपर ज़र्द रंग का निशान था। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने उसके बारे में पूछा तो

٥١٥٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ حُمَيْدٍ الطَّوِيلِ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِهِ أَثَرُ

صُفْرَةٍ فَسَأَلَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ تَزَوَّجَ امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ قَالَ: ((كَمْ سُقْتَ إِلَيْهَا؟)) قَالَ : زِنَةَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ. قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).

[راجع: ٢٠٤٩]

उन्होंने बताया कि उन्होंने अंसार की एक औरत से निकाह किया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा उसे महर कितना दिया है? उन्होंने कहा कि एक गुठली के बराबर सोना। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर वलीमा कर ख़्वाह एक बकरी ही का हो। (राजेअ : 2049)

٥٦- باب

बाब 56 :

٥١٥٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: أَوْلَمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِزَيْنَبَ فَأَوْسَعَ الْمُسْلِمِينَ خَيْرًا، فَخَرَجَ كَمَا يَصْنَعُ إِذَا تَزَوَّجَ، فَأَتَى حُجَرَ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ يَدْعُو وَيَدْعُونَ ثُمَّ انْصَرَفَ فَرَأَى رَجُلَيْنِ فَرَجَعَ، لاَ أَدْرِي أَخْبَرْتُهُ أَوْ أُخْبِرَ بِخُرُوجِهِمَا.

[راجع: ٤٧٩١]

5154. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) के साथ निकाह पर दा'वते वलीमा की और मुसलमानों के लिये खाने का इंतिज़ाम किया। (खाने से फ़राग़त के बाद) आँह़जरत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ ले गये, जैसा कि निकाह के बाद आपका दस्तूर था। फिर आप उम्महातुल मोमिनीन के हुज्रों में तशरीफ़ ले गये। आपने उनके लिये दुआ की और उन्होंने आपके लिये दुआ की। फिर आप वापस तशरीफ़ लाए तो दो स़हाबा को देखा (कि अभी बैठे हुए थे) इसलिये आप फिर तशरीफ़ ले गये (अनस रज़ि. ने बयान किया कि) मुझे पूरी त़रह याद नहीं कि मैंने ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) को ख़बर दी या किसी और ने ये ख़बर दी कि वो दोनों स़हाबी भी चले गये हैं। (राजेअ : 4791)

तश्रीह : सुह़बत के बाद दूल्हा को वलीमा की दा'वत करना सुन्नत है ये ज़रूरी नहीं कि उसमें गोश्त ही हो बल्कि जो मयस्सर हो वो खिलाए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने वलीमा की दा'वत में खजूर और घी और पनीर खिलाया था। शादी से पहले खिलाना शरीअ़त से स़ाबित नहीं है, ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) इस ह़दीस़ को इसलिये लाए कि उसमें ये ज़िक्र नहीं है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ज़र्द ख़ुश्बू लगाई तो मा'लूम हुआ कि दूल्हा को ज़र्द ख़ुश्बू लगाना ज़रूरी नहीं है।

٥٧- باب كَيْفَ يُدْعَى لِلْمُتَزَوِّجِ

बाब 57 : दूल्हा को किस त़रह दुआ़ दी जाए?

٥١٥٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ ابْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى عَلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَثَرَ صُفْرَةٍ، قَالَ: ((مَا هَذَا؟)) قَالَ : إِنِّي تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً

5155. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे स़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ पर ज़र्दी का निशान देखा तो पूछा कि ये क्या है? उन्होंने कहा कि मैंने एक औ़रत से एक गुठली के वज़न के बराबर सोने के महर पर निकाह़ किया है। आँह़ज़रत

(ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला तुम्हें बरकत दे दा'वते वलीमा कर ख़्वाह एक बकरी ही की हो। (राजेअ : 2049)

عَلَى وَزْنِ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ. قَالَ : ((بَارَكَ اللهُ لَكَ. أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).

[راجع: ٢٠٤٩]

तश्रीह : निकाह के बाद सब लोग दूल्हा को यूँ दुआ दें **बारकल्लाहु लक (या) बारकल्लाहु अलैक व जमअ बैनिकुमा फ़ी खैर.** तिर्मिज़ी की रिवायत में यूँ है, **बारकल्लाहु लक व अलैक व जमअ बैनिकुमा फ़ी खैर** बैहक़ी बिन मुख़लद की रिवायत में ये अल्फ़ाज़ मरवी हैं **बारकल्लाहु बिकुम व बारक फ़ीकुम व बारक अलैकुम** हज़रत अब्दुर्रहमान ने ज़र्दी नहीं लगाई थी बल्कि उनकी दूल्हन की ज़र्दी उनको लग गई होगी। (वहीदी)

बाब 58 : जो औरतें दूल्हन को बनाव-सिंगार करके दूल्हा के घर लाएँ उनको और दूल्हन को क्यूँकर दुआ दें

٥٨- باب الدُّعَاءِ لِلنِّسَاءِ اللاَّتِي يُهْدِينَ الْعَرُوسَ، وَلِلْعَرُوسِ

5156. हमसे फ़रवा बिन अबी अल मग़राअ ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जब मुझसे शादी की तो मेरी वालिदा (उम्मे रूमान बिन्ते आमिर) मेरे पास आईं और मुझे आँहज़रत (ﷺ) के घर के अंदर ले गईं। घर के अंदर क़बीला अंसार की औरतें मौजूद थीं। उन्होंने (मुझको और मेरी माँ को) यूँ दुआ दी बारिक व बारकल्लाहु अल्लाह करे तुम अच्छी हो तुम्हारा नसीबा अच्छा हो। (राजेअ : 3894)

٥١٥٦- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ ابْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ. عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: تَزَوَّجَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَتْنِي أُمِّي فَأَدْخَلَتْنِي الدَّارَ فَإِذَا نِسْوَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ فِي الْبَيْتِ، فَقُلْنَ: عَلَى الْخَيْرِ وَالْبَرَكَةِ، وَعَلَى خَيْرِ طَائِرٍ. [راجع: ٣٨٩٤]

इमाम अहमद की रिवायत में है कि उम्मे रूमान (रज़ि.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) की गोद में बिठाया और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ये आपकी बीवी है अल्लाह तआला मुबारक करे।

बाब 59 : जिहाद में जाने से पहले नई दूल्हन से सुहबत कर लेना बेहतर है ताकि दिल उसमें लगा न रहे

٥٩- باب مَنْ أَحَبَّ الْبِنَاءَ قَبْلَ الْغَزْوِ

5157. हमसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह इब्नुल मुबारक ने बयान किया, उनसे मअमर बिन राशिद ने, उनसे हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गुज़िश्ता अंबिया मे से एक नबी (हज़रत यूशा अलैहि. या हज़रत दाऊद अलैहि.) ने ग़ज़्वा किया और (ग़ज़्वा से पहले) अपनी क़ौम से कहा कि मेरे साथ कोई ऐसा शख़्स न चले जिसने किसी नई औरत से शादी की हो और उसके साथ सुहबत करने का इरादा रखता हो और अभी सुहबत न की हो। (राजेअ : 3124)

٥١٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((غَزَا نَبِيٌّ مِنَ الأَنْبِيَاءِ، فَقَالَ لِقَوْمِهِ: لاَ يَتْبَعْنِي رَجُلٌ مَلَكَ بُضْعَ امْرَأَةٍ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَبْنِيَ بِهَا وَلَمْ يَبْنِ بِهَا)).

[راجع: ٣١٢٤]

बाब 60 : जिसने नौ साल की उम्र की बीवी के साथ ख़ल्वत की (जब वो जवान हो गई हो)

٦٠- باب مَنْ بَنَى بِامْرَأَةٍ وَهِيَ بِنْتُ تِسْعِ سِنِينَ

5158. हमसे क़ुबैसा बिन उक़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने और उनसे उर्वा ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से जब निकाह किया तो उनकी उम्र छ : साल की थी और जब उनके साथ ख़ल्वत की तो उनकी उम्र नौ साल की थी और वो आँहज़रत (ﷺ) के साथ नौ साल तक रहीं। (राजेअ : 3894)

٥١٥٨- حدَّثَنَا قَبِيصَةُ بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ تَزَوَّجَ النَّبِيُّ ﷺ عَائِشَةَ وَهِيَ ابْنَةُ سِتٍّ، وَبَنَى بِهَا وَهِيَ ابْنَةُ تِسْعٍ، وَمَكَثَتْ عِنْدَهُ تِسْعًا. [راجع: ٣٨٩٤]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के वक़्त हज़रत आइशा (रज़ि.) की उम्र अठारह साल की थी। अरब जैसे गर्म मुल्क में औरतें उमूमन नौ साल की उम्र में बालिग़ हो जाया करती थीं। इब्तिदाए बुलूग़ का ता'ल्लुक़ मौसम और आबो-हवा के साथ भी बहुत हद तक है। बहुत ज़्यादा गर्म ख़ित्तों में औरतें और मर्द जल्द बालिग़ हो जाते हैं, उसके बरअक्स बहुत ज़्यादा सर्द ख़ित्तों में बुलूग़ औसतन अठारह बीस साल में होता है लिहाज़ा ये कोई बईद अज़ अक़्ल बात नहीं है। इस बारे में कुछ उलमा ने बहुत से तकल्लुफ़ात किये हैं मगर ज़ाहिरे हक़ीक़त यही है जो रिवायत में मज़्कूर है तकल्लुफ़ की कोई ज़रूरत नहीं है। अरब में नौ साल की लड़कियों का बालिग़ हो जाना बईद अज़ अक़्ल बात नहीं थी उसके मुताबिक़ ही यहाँ हुआ। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

बाब 61 : सफ़र में नई दल्हन के साथ ख़ल्वत करना

٦١- باب الْبِنَاءِ فِي السَّفَرِ

5159. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें हुमैद ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मदीना और ख़ैबर के दरम्यान (रास्ते में) तीन दिन तक क़याम किया और वहाँ उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) के साथ ख़ल्वत की। मैंने मुसलमानों को आँहज़रत (ﷺ) के वलीमा पर बुलाया लेकिन उस दा'वत में रोटी और गोश्त नहीं था। आप (ﷺ) ने दस्तरख़्वान बिछाने का हुक्म दिया और उस पर खजूर, पनीर और घी रख दिया गया और यही आँहज़रत (ﷺ) का वलीमा था। मुसलमानों ने हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के बारे में (कहा कि) उम्महातुल मोमिनीन में से हैं या आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें लौण्डी ही रखा है (क्योंकि वो भी जंगे ख़ैबर के क़ैदियो में से थीं) उस पर कुछ ने कहा कि अगर आँहज़रत (ﷺ) उनके लिये पर्दा कराएँ तो फिर तो उम्महातुल मोमिनीन में से हैं और अगर आप उनके लिये पर्दा न कराएँ तो फिर वो लौण्डी की हैषियत से हैं। जब सफ़र हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये अपनी सवारी पर पीछे जगह

٥١٥٩- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: أَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ خَيْبَرَ وَالْمَدِينَةِ ثَلاَثًا يُبْنَى عَلَيْهِ بِصَفِيَّةَ بِنْتِ حُيَيٍّ، فَدَعَوْتُ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ، فَمَا كَانَ فِيهَا مِنْ خُبْزٍ وَلاَ لَحْمٍ أَمَرَ بِالأَنْطَاعِ فَأُلْقِيَ فِيهَا مِنَ التَّمْرِ وَالأَقِطِ وَالسَّمْنِ. فَكَانَتْ وَلِيمَتَهُ، فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ : إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، أَوْ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ؟ فَقَالُوا: إِنْ حَجَبَهَا فَهِيَ مِنْ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ، وَإِنْ لَمْ يَحْجُبْهَا فَهِيَ مِمَّا مَلَكَتْ يَمِينُهُ. فَلَمَّا ارْتَحَلَ وَطَّأَ لَهَا خَلْفَهُ، وَمَدَّ الْحِجَابَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ

बनाई और लोगों के और उनके दरम्यान पर्दा डलवाया। (राजेअ : 371)

النَّاسِ.
[راجع: ٣٧١]

तश्रीह : जिससे लोगों ने जान लिया कि हज़रत सफ़िया (रज़ि.) को आप (ﷺ) ने अपने हरम में दाख़िल फ़र्मा लिया और आपको आज़ाद करके आपसे शादी कर ली है। आप तीन दिन बराबर हज़रत सफ़िया (रज़ि.) के पास रहे क्योंकि वो ष़य्यिबा थीं। बाकिरह के पास दूल्हा सात दिन तक रह सकता है। ये उस सूरत में है कि उसके निकाह में दूसरी औरतें भी हों उसके बाद वो बारी मुक़र्रर करेगा तन्हा एक ही औरत है तो उसके लिये कोई क़ैद नहीं है।

बाब 62 : दूल्हा का दुल्हन के पास या दुल्हन का दूल्हे के पास दिन को आना सवारी या रोशनी की कोई ज़रूरत नहीं है

٦٢- باب الْبِنَاءِ بِالنَّهَارِ بِغَيْرِ مَرْكَبٍ وَلاَ نِيرَانٍ

5160. मुझसे फ़रवा बिन अबी अल मग़राअ ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मुस्हिर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे शादी की थी। मेरी वालिदा मेरे पास आईं और तन्हा मुझे एक घर में दाख़िल कर दिया। फिर मुझे किसी चीज़ ने डर नहीं दिलाया सिवाय रसूलुल्लाह (ﷺ) के कि आप अचानक ही मेरे पास चाश्त के वक़्त आ गये। आपने मुझसे मिलाप फ़र्माया। (राजेअ : 3894)

٥١٦٠- حدثني فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تَزَوَّجَنِي النَّبِيُّ ﷺ، فَأَتَتْنِي أُمِّي فَأَدْخَلَتْنِي الدَّارَ فَلَمْ يَرُعْنِي إِلاَّ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضُحًى.
[راجع: ٣٨٩٤]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि शादी के बाद मर्द–औरत के बाहमी मिलाप के लिये रात ही की कोई क़ैद नहीं है दिन में भी ये दुरुस्त है न आजकल की रुसूम की ज़रूरत है जो जलवा वग़ैरह के नाम से लोगों ने ईजाद कर रखी हैं।

बाब 63 : औरतों के लिये मख़मल के बिछौने वग़ैरह बिछाना जाइज़ है (या बारीक पर्दा लटकाना)

٦٣- باب الأَنْمَاطِ وَنَحْوِهَا لِلنِّسَاءِ

5161. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया, उनसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे (जब उन्होंने शादी की) फ़र्माया तुमने झालरदार चादरें भी ली हैं या नहीं? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे पास झालरदार चादरें कहाँ हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जल्दी ही मयस्सर हो जाएँगी। (राजेअ : 3631)

٥١٦١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلِ اتَّخَذْتُمْ أَنْمَاطًا؟)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، وَأَنَّى لَنَا أَنْمَاطٌ. قَالَ : ((إِنَّهَا سَتَكُونُ)).
[راجع: ٣٦٣١]

तश्रीह : या'नी मुस्तक़्बिल में जल्द तुम लोग ख़ुशहाल हो जाओगे स़दक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)। इससे ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने पर्दे या सौज़नी का जवाज़ निकाला लेकिन मुस्लिम की ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने दरवाज़े पर से ये पर्दा निकालकर फेंक दिया था और फ़र्माया था कि हमको ये हुक्म नहीं मिला कि हम मिट्टी पत्थर को कपड़ा पहनाएँ। अकष़र शाफ़िइया ने इसी ह़दीष़ की बिना पर दीवारों पर कपड़ा लगाना मकरूह ह़राम रखा है। अबू दाऊद की रिवायत में यूँ है कि दीवार को कपड़े से मत छुपाओ। इस ह़दीष़ में स़ाफ़ मुमानअ़त है जबदीवारों पर कपड़ा डालना मना हुआ तो क़ब्रों पर चादरें ग़िलाफ़ डालना क्यूँ मना न होगा मगर जाहिलों ने क़ब्रों पर उ़म्दा से उ़म्दा ग़िलाफ़ डालना जाइज़ बना रखा है जो सरासर बुतपरस्ती की नक़्ल है बुत परस्तबुतों को क़ीमती लिबास पहनाते हैं, क़बपरस्त क़ब्रों पर क़ीमती ग़िलाफ़ डालते हैं। फिर इस्लाम का दा'वा करते हैं।

बाब 64 : वो औरतें जो दुल्हन का बनाव-सिंगार करके उसे शौहर के पास ले जाएँ

٦٤- باب النِّسْوَةِ اللاَّتِي يُهْدِينَ الْمَرْأَةَ إِلَى زَوْجِهَا

5162. हमसे फ़ज़्ल बिन यअ़क़ूब ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि वो एक दूल्हन को एक अंस़ारी मर्द के पास लेकर गईं तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आइशा! तुम्हारे पास लह्व (दुफ़ बजाने वाला) नहीं था, अंस़ार को दुफ़ पसंद है।

٥١٦٢- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ حَدَّثَنَا إِسرائيل عَنْ هِشَامِ بن عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا زَفَّتِ امْرَأَةً إِلَى رَجُلٍ مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالَ نَبِيُّ اللهِ: ((يَا عَائِشَةُ، مَا كَانَ مَعَكُمْ لَهْوٌ، فَإِنَّ الأَنْصَارَ يُعْجِبُهُمُ اللَّهْوُ)).

तश्रीह : अबुश शैख़ ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से निकाला अंस़ार की एक यतीम लड़की की शादी में दूल्हन के साथ गई जब लौटकर आई तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुमने दूल्हा वालों के पास जाकर किया कहा। मैंने कहा कि सलाम किया, मुबारक बाद दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि दुफ़ बजाने वाली लौण्डी साथ में होती वो दुफ़ बजाती और यूँ गाती **आतैनाकुम आतैनाकुम फहय्युना व हय्याकुम** हम तुम्हारे हाँ आए तुमको और हमको ये शादी मुबारक हो। मा'लूम हुआ कि इस ह़द तक दुफ़ के साथ मुबारकबाद के ऐसे शे'र कहना जाइज़ है मगर आजकल जो गाने बजाने लह्व व लइ़ब के त़रीक़े शादियों में इख़्तियार किये जाते हैं ये हर्गिज़ जाइज़ नहीं हैं क्योंकि उससे सरासर फ़िस्क़ व फ़िजूर को शह मिलती है।

बाब 65 : दुल्हन को तोह़फ़े भेजना

٦٥- باب الْهَدِيَّةِ لِلْعَرُوسِ

5163. और इब्राहीम बिन त़ह्मान ने अबू उ़ष़्मान जअ़द बिन दीनार से रिवायत किया, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से, अबू उ़ष़्मान कहते हैं कि अनस (रज़ि.) हमारे सामने से बनी रिफ़ाआ की मस्जिद में (जो बस़रा में है) गुज़रे। मैंने उनसे सुना वो कह रहे थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) का क़ायदा था आप जब उम्मे सुलैम (रज़ि.) के घर की त़रफ़ से गुज़रते तो उनके पास जाते, उनको सलाम करते (वो आपकी रज़ाई ख़ाला होती थीं) फिर अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि एक बार ऐसा हुआ कि आँह़ज़रत (ﷺ) दूल्हा थ। आपने ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह़ किया था तो उम्मे सुलैम (मेरी माँ) मुझसे

٥١٦٣- وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ : عَنْ أَبِي عُثْمَانَ وَاسْمُهُ الْجَعْدُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ : مَرَّ بِنَا فِي مَسْجِدِ بَنِي رِفَاعَةَ، فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا مَرَّ بِجَنَبَاتِ أُمِّ سُلَيْمٍ دَخَلَ عَلَيْهَا فَسَلَّمَ عَلَيْهَا. ثُمَّ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرُوسًا بِزَيْنَبَ، فَقَالَتْ لِي أُمُّ سُلَيْمٍ: لَوْ أَهْدَيْنَا لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

कहने लगीं उस वक़्त हम आँहज़रत (ﷺ) के पास कुछ ताहफ़ा भेजें तो अच्छा है, मैंने कहा मुनासिब है। उन्होंने खजूर और घी और पनीर मिलाकर एक हाँडी में हलवा बनाया और मेरे हाथ में देकर आँहज़रत (ﷺ) के पास भिजवाया, मैं लेकर आपके पास चला, जब पहुँचा तो आपने फ़र्माया कि रख दे और जाकर फ़लाँ फ़लाँ लोगों को बुला ला आप (ﷺ) ने उनका नाम लिया और जो भी कोई तुझको रास्ते मे मिले उसको बुला ले। अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैं आपके हुक्म के मुवाफ़िक़ लोगों को दा'वत देने गया। लौटकर जो आया तो क्या देखता हूँ कि सारा घर लोगों से भरा हुआ है। मैंने देखा कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने दोनों हाथ उस हलवे पर रखे और जो अल्लाह को मंज़ूर था वो ज़ुबान से कहा (बरकत की दुआ फ़र्माई) फिर दस दस आदमियों को खाने के लिये बुलाना शुरू किया। आप उनसे फ़र्माते जाते थे अल्लाह का नाम लो और हर एक आदमी अपने आगे से खाए। (रकाबी के बीच में हाथ न डाले)। यहाँ तक कि सब लोग खाकर घर के बाहर चल दिये। तीन आदमी घर में बैठे बातें करते रहे और मुझको उनके न जाने से रंज पैदा हुआ (इस ख़याल से कि आँहज़रत ﷺ को तकलीफ़ होगी) आख़िर आँहज़रत (ﷺ) अपनी बीवियों के हुजरों पर गये मैं भी आपके पीछे पीछे गया फिर रास्ते में मैंने आपसे कहा अब वो तीन आदमी भी चले गये हैं। उस वक़्त आप लौटे और (ज़ैनब रज़ि. के हुजरे में) आए। मैं भी हुजरे ही में था लेकिन आप (ﷺ) ने मेरे और अपने बीच में पर्दा डाल लिया। आप सूरह अहज़ाब की ये आयत पढ़ रहे थे। मुसलमानों! नबी के घरों में न जाया करो मगर जब खाने के लिये तुमको अंदर आने की इजाज़त दी जाए उस वक़्त जाओ वो भी ऐसा ठीक वक़्त देखकर कि खाने के पकने का इंतिज़ार न करना पड़े अल्बत्ता जब बुलाए जाओ तो अंदर आ जाओ और खाने से फ़ारिग़ होते ही चल दो। बातों में लगकर वहाँ बैठे न रहा करो, ऐसा करने से पैग़म्बर को तकलीफ़ होती थी, उसको तुमसे शर्म आती थी (कि तुमसे कहे कि चले जाओ) और अल्लाह तआला हक़ बात कहने में नहीं शर्माता। अबू उ़म्मान (जअ़दि बिन दीनार) कहते थे कि अनस (रज़ि.) कहा करते थे कि मैंने दस बरस तक मुतवातिर आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत

هَدِيَّةً، فَقُلْتُ لَهَا: افْعَلِي. فَعَمَدَتْ إِلَى تَمْرٍ وَسَمْنٍ وَأَقِطٍ فَاتَّخَذَتْ حَيْسَةً فِي بُرْمَةٍ فَأَرْسَلَتْ بِهَا مَعِي إِلَيْهِ، فَانْطَلَقْتُ بِهَا إِلَيْهِ فَقَالَ لِي: ((ضَعْهَا)) ثُمَّ أَمَرَنِي فَقَالَ: ((ادْعُ لِي رِجَالاً)) سَمَّاهُمْ، وَادْعُ لِي مَنْ لَقِيتَ. قَالَ: فَفَعَلْتُ الَّذِي أَمَرَنِي فَرَجَعْتُ فَإِذَا الْبَيْتُ غَاصٌّ بِأَهْلِهِ، فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى تِلْكَ الْحَيْسَةِ وَتَكَلَّمَ بِهَا مَا شَاءَ اللهُ، ثُمَّ جَعَلَ يَدْعُو عَشَرَةً عَشَرَةً يَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَقُولُ لَهُمْ: ((اذْكُرُوا اسْمَ اللهِ، وَلْيَأْكُلْ كُلُّ رَجُلٍ مِمَّا يَلِيهِ)) قَالَ: حَتَّى تَصَدَّعُوا كُلُّهُمْ عَنْهَا. فَخَرَجَ مِنْهُمْ مَنْ خَرَجَ، وَبَقِيَ نَفَرٌ يَتَحَدَّثُونَ، قَالَ: وَجَعَلْتُ أَغْتَمُّ ثُمَّ خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحْوَ الْحُجُرَاتِ، وَخَرَجْتُ فِي إِثْرِهِ فَقُلْتُ: إِنَّهُمْ قَدْ ذَهَبُوا فَرَجَعَ فَدَخَلَ الْبَيْتَ وَأَرْخَى السِّتْرَ، وَإِنِّي لَفِي الْحُجْرَةِ وَهُوَ يَقُولُ: (({يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ، وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا، فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا، وَلاَ مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ، إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ، وَاللهُ لاَ يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ})) قَالَ أَبُو عُثْمَانَ : قَالَ أَنَسٌ إِنَّهُ خَدَمَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشْرَ سِنِينَ.

की है। (राजेअ : 4791) [راجع: ٤٧٩١]

तश्रीह : क़ाज़ी अयाज़ ने कहा यहाँ ये इश्काल होता है कि हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) के वलीमा में तो आपने लोगों को पेट भरकर गोश्त रोटी खिलाया था जैसा कि दूसरी रिवायत में है फिर उन्होंने क्या खाया। इस रिवायत में ये भी मज़्कूर है कि खाना बढ़ गया था तो इस रिवायत में रावी का सह्व है। उसने एक क़िस्सा को दूसरे क़िस्से पर चस्पा कर दिया उधर मुम्किन है कि हलवा उसी वक़्त आया हो जब लोग रोटी गोश्त खा रहे हों तो सबने ये हलवा भी खा लिया। कुर्तुबी ने कहा शायद ऐसा हुआ होगा कि रोटी गोश्त खाकर कुछ लोग चल दिये होंगे, सिर्फ़ तीन आदमी उनमें से बैठे रह गये होंगे जो बातों मे लग गये थे इतने में हज़रत अनस (रज़ि.) हलवा लेकर आए होंगे तो आपने उनके ज़रिये से दूसरे लोगों को बुलवाया वो भी खाकर चल दिये लेकिन ये तीन आदमी बैठे के बैठे रहे। उन ही के बारे में ये आयत नाज़िल हुई अब भी हुक्म यही है।

बाब 66 : दुल्हन के पहनने के लिये कपड़े और ज़ेवर वग़ैरह आरियतन लेना

٦٦- بَابُ اسْتِعَارَةِ الثِّيَابِ لِلْعَرُوسِ وَغَيْرِهَا

तश्रीह : गो हदीष़ में कपड़ा मांगने का ज़िक्र नहीं है मगर बाब का तर्जुमा में कपड़े वग़ैरह का ज़िक्र है, वग़ैरह में ज़ेवर ज़ुरूफ़ सब आ गये तो हदीष़ बाब के मुवाफ़िक़ हो गई। अब ये इश्काल बाक़ी रहा कि हज़रत आइशा (रज़ि.) उस वक़्त दुल्हन न थीं तो फिर हदीष़ बाब के मुताबिक़ न हुई। उसका जवाब यूँ दिया है कि गो हज़रत आइशा (रज़ि.) उस वक़्त दुल्हन न थीं मगर जब औरत को अपने शौहर के लिये ज़ीनत करने के वास्ते अश्याअ का मांगना दुरुस्त हुआ तो दुल्हन को बत़रीक़े औला दुरुस्त होगा। हाफ़िज़ ने कहा इस बाब के ज़्यादा मुनासिब वो हदीष़ है जो किताबुल हिबा में गुज़री, उसमे ये है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा मेरे पास एक चादर थी जिसको हर एक औरत ज़ीनत के लिये मुझसे मंगवा भेजा करती थी।

5164. मुझसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने (अपनी बहन) हज़रत अस्मा (रज़ि.) से एक हार आरियतन ले लिया था, रास्ते में वो गुम हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा में से कुछ आदमियों को उसे तलाश करने के लिये भेजा। तलाश करते हुए नमाज़ का वक़्त हो गया (और पानी नहीं था) इसलिये उन्होंने वुज़ू के बग़ैर नमाज़ पढ़ी। फिर जब वो आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में वापस हुए तो आपके सामने ये शिकवा किया। इस पर तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई। हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आइशा (रज़ि.)! अल्लाह तुम्हें बेहतरीन बदला दे, वल्लाह! जब भी आप पर कोई मुश्किल आन पड़ी है तो अल्लाह तआला ने तुमसे उसे दूर कर दिया और मज़ीद बराँ ये कि मुसलमानों के लिये बरकत और भलाई हुई। (राजेअ : 334)

٥١٦٤- حدثني عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا اسْتَعَارَتْ مِنْ أَسْمَاءَ قِلاَدَةً فَهَلَكَتْ، فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِهِ فِي طَلَبِهَا، فَأَدْرَكَتْهُمُ الصَّلاَةُ فَصَلَّوْا بِغَيْرِ وُضُوءٍ، فَلَمَّا أَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ شَكَوْا ذَلِكَ إِلَيْهِ، فَنَزَلَتْ آيَةُ التَّيَمُّمِ، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ: جَزَاكِ اللهُ خَيْرًا، فَوَ اللهِ مَا نَزَلَ بِكِ أَمْرٌ قَطُّ إِلاَّ جَعَلَ اللهُ لَكِ مِنْهُ مَخْرَجًا، وَجَعَلَ لِلْمُسْلِمِينَ فِيهِ بَرَكَةً.

[راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : ऐसा ही यहाँ हुआ है कि उनका हार गुम हो गया और मुसलमान उसे तलाश करने निकले तो पानी न होने की सूरत में नमाज़ के लिये तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई हज़रत आइशा (रज़ि.) की अल्लाह के नज़दीक ये क़ुबूलियत की दलील है।

बाब 67 : जब शौहर अपनी बीवी के पास आए तो उसे कौनसी दुआ पढ़नी चाहिये

٦٧- باب مَا يَقُولُ الرَّجُلُ إِذَا أَتَى أَهْلَهُ

5165. हमसे सअद बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे मंसूर बिन मुअतमिर ने, उनसे सालिम बिन अबी अल जअदि ने, उनसे कुरैब ने, और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। कोई शख़्स अपनी बीवी के पास हमबिस्तरी के लिये जब आए तो ये दुआ पढ़े बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा जन्निब्निश्शैतान व जन्निबिश्शैतान मा रज़क़तना या'नी मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ ऐ अल्लाह! शैतान को मुझसे दूर रख और शैतान को उस चीज़ से भी दूर रख जो (औलाद) हमें तू अता करे। फिर उस अर्सा में उनके लिये कोई औलाद नसीब हो तो उसे शैतान कभी ज़रर न पहुँचा सकेगा। (राजेअ : 141)

٥١٦٥- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ عَنْ كُرَيْبٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَا لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ يَقُولُ حِينَ يَأْتِي أَهْلَهُ : بِسْمِ اللهِ، اللَّهُمَّ جَنِّبْنِي الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا، ثُمَّ قُدِّرَ بَيْنَهُمَا فِي ذَلِكَ أَوْ قُضِيَ وَلَدٌ لَمْ يَضُرَّهُ شَيْطَانٌ أَبَدًا)). [راجع: ١٤١]

तश्रीह : क़ालल्किर्मानी फ़इन कुल्तु मल्फ़र्कु बैनल्कज़ाइ वल्क़दरि कुल्तु ला फ़र्क़ बैनिहिमा लुग़तन व अम्मा फ़िल्इस्तिलाहि फल्क़ज़ाउ व हुवल्अम्रूल्कुल्ली अल्इज्माली अल्लज़ी फ़िल्अज़्लि वल्क़दरि हुवल्जुज़्इय्यात ज़ालिकल्कुल्ली (फ़त्ह) या'नी किरमानी ने कहा कि लफ़्ज़े क़ज़ा और क़द्र मे लुग़त के लिहाज़ से कोई फ़र्क़ नहीं है मगर इस्तिलाह में क़ज़ा वो है जो इज्माली तौर पर रोज़ अज़ल में हो चुका है और उस कुल्ली की जुज़इयात का नाम क़द्र है। हदीष मज़्कूर में लफ़्ज़ षुम्म क़दर बयनहुम के बारे में ये तशरीह है। आजकल इंसान अपने जज़्बात में डूबकर उस दुआ से ग़ाफ़िल होकर ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी कर रहा है और बे बहा नेअमत से महरूम हो जाता है।

बाब वलीमा की दा'वत दूल्हा को करना लाज़िम है और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि वलीमा की दा'वत कर ख़्वाह एक बकरी ही हो

٦٨- باب الْوَلِيمَةُ حَقٌّ

وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).

तश्रीह : अक्षर उलमा ने वलीमा की दा'वत को सुन्नत कहा है और उसे क़ुबूल करना भी सुन्नत है, ये बीवी से पहली बार जिमाअ करके होता है।

5166. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि जब रसूले करीम (ﷺ) मदीना मुनव्वरा हिजरत करके आए तो उनकी उम्र दस बरस की थी। मेरी माँ और बहनें नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत के लिये मुझको ताकीद

٥١٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّهُ كَانَ ابْنَ عَشْرِ سِنِينَ مَقْدَمَ رَسُولِ اللهِ الْمَدِينَةَ، فَكَانَ أُمَّهَاتِي يُوَاظِبْنَنِي عَلَى خِدْمَةِ النَّبِيِّ ﷺ،

فَخَدَمْتُهُ عَشْرَ سِنِيْنَ. وَتُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا ابْنُ عِشْرِينَ سَنَةً، فَكُنْتُ أَعْلَمُ النَّاسِ بِشَأْنِ الْحِجَابِ حِيْنَ أُنْزِلَ، وَكَانَ أَوَّلُ مَا أُنْزِلَ فِي مُبْتَنَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ بِزَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ، أَصْبَحَ النَّبِيُّ ﷺ بِهَا عَرُوسًا فَدَعَا الْقَوْمَ فَأَصَابُوا مِنَ الطَّعَامِ، ثُمَّ خَرَجُوا وَبَقِيَ رَهْطٌ مِنْهُمْ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَأَطَالُوا الْمُكْثَ، فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَرَجَ وَ خَرَجْتُ مَعَهُ لِكَيْ يَخْرُجُوا، فَمَشَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَشَيْتُ حَتَّى جَاءَ عَتَبَةَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ، ثُمَّ ظَنَّ أَنَّهُمْ خَرَجُوا فَرَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ، حَتَّى إِذَا دَخَلَ عَلَى زَيْنَبَ فَإِذَا هُمْ جُلُوسٌ لَمْ يَقُومُوا، فَرَجَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ، حَتَّى إِذَا بَلَغَ عَتَبَةَ حُجْرَةِ عَائِشَةَ وَظَنَّ أَنَّهُمْ قَدْ خَرَجُوا رَجَعَ وَرَجَعْتُ مَعَهُ فَإِذَا هُمْ قَدْ خَرَجُوا، فَضَرَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ بِالسِّتْرِ، وَأَنْزَلَ الْحِجَابَ.

[راجع: ٤٧٩١]

करती रहती थीं। चुनाँचे मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की दस बरस तक ख़िदमत की और जब आपकी वफ़ात हुई तो मैं बीस बरस का था। पर्दा के बारे में सबसे ज़्यादा जानने वालों में से हूँ कि कब नाज़िल हुआ। सबसे पहले ये हुक्म उस वक़्त नाज़िल हुआ था जब आँहज़रत (ﷺ) ज़ैनब बिन्ते जहश (रज़ि.) से निकाह के बाद उन्हें अपने घर लाए थे, आप उनके दूल्हा बने थे। फिर आपने लोगों को (दा'वते वलीमा पर) बुलाया। लोगों ने खाना खाया और चले गये। लेकिन कुछ लोग उनमें से आँहज़रत (ﷺ) के घर में (खाने के बाद भी) देर तक वहीं बैठे (बातें करते रहे) आख़िर आँहज़रत (ﷺ) खड़े हुए और बाहर तशरीफ़ ले गये। मैं भी आँहज़रत (ﷺ) के साथ बाहर चला गया ताकि ये लोग भी चले जाएँगे। आँहज़रत (ﷺ) चलते रहे और मैं भी आपके साथ रहा। जब आप हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे के पास दरवाज़े पर आए तो आपको मा'लूम हुआ कि वो लोग चले गये हैं। इसलिये आप वापस तशरीफ़ लाए और मैं भी आपके साथ आया। जब आप ज़ैनब (रज़ि.) के घर में दाख़िल हुए तो देखा कि वो लोग अभी बैठे हुए हैं और अभी तक नहीं गये हैं। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) वहाँ से फिर वापस तशरीफ़ लाए और मैं भी आपके साथ वापस आ गया जब आप आइशा (रज़ि.) के हुज्रे के दरवाज़े पर पहुँचे और आपको मा'लूम हुआ कि वो लोग चले गये हैं तो आप फिर वापस तशरीफ़ लाए और मैं भी आपके साथ वापस आया। अब वो लोग वाक़ई जा चुके थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके बाद अपने और मेरे बीच मे पर्दा डाल दिया और पर्दा की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ : 4791)

तश्रीह : नववी ने कहा वलीमा की दा'वत आठ हैं। ख़त्ना की दा'वत, सलामती के साथ ज़चगी की दा'वत करना, मुसाफ़िर की ख़ैरियत से वापसी पर दा'वत करना, मकान की तैयारी या सुकूनत पर, ग़मी पर खाना खिलाना, दा'वते अहबाब जो बिला सबब हो, बच्चे के होशियार होने पर, तस्मिया ख़्वानी की दा'वत, अशीरह माहे रजब की दा'वत, ये तमाम दअवात वो हैं जिनमें शिर्कत ज़रूरी नहीं है न इनका करना ज़रूरी है। ऐसी दा'वत सिर्फ़ वलीमा की दा'वत है जो करनी भी ज़रूरी और उसमें शिर्कत भी ज़रूरी है। वलीमा की दा'वत इंसान को हस्बे तौफ़ीक़ करना चाहिये। शोहरत और नामवरी के तौर पर पाँच छ : दिन तक खिलाना भी ठीक नहीं है या कुछ ज़्यादा खाना पकवाते हैं और दा'वत कम लोगों की करते हैं जिसकी वजह से खाना ख़राब हो जाता है या खाना कम पकाते हैं और लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा मदऊ करते हैं महज़ दिखावे के लिये तो ऐसा करना भी दुरुस्त नहीं बल्कि हस्बे हाल करना बेहतर है ग़मी पर खाना करना बतौरे रस्म न हो वरना उल्टा गुनाह हो जाएगा।

बाब 69 : वलीमा में एक बकरी भी काफ़ी है

٦٩- باب الْوَلِيمَةِ وَلَوْ بِشَاةٍ

5167. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुमैद त़वील ने बयान किया और उन्होंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से पूछा, उन्होंने क़बीला अंसार की एक औ़रत से शादी की थी कि महर कितना दिया है? उन्होंने कहा कि एक गुठली के वज़न के बराबर सोना। और हुमैद से रिवायत है कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना और उन्होंने बयान किया कि जब (आँह़ज़रत ﷺ और मुहाजिरीने सह़ाबा) मदीना हिजरत करके आए तो मुहाजिरीन ने अंसार के यहाँ क़याम किया अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने सअ़द बिन रबीअ़ (रज़ि.) के यहाँ क़याम किया। सअ़द (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मैं आपको अपना माल तक़्सीम कर दूँगा और अपनी दो बीवियों में से एक को आपके लिये छोड़ दूँगा। अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा कि अल्लाह आपके अहल व अ़याल और माल में बरकत दे फिर वो बाज़ार निकल गये और वहाँ तिजारत शुरू की और पनीर और घी नफ़ा में कमाया। उसके बाद शादी की तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि दा'वते वलीमा कर ख़्वाह एक बकरी ही की हो। (राजेअ़ : 2049)

٥١٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلَ النَّبِيُّ ﷺ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ وَتَزَوَّجَ امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ: كَمْ أَصْدَقْتَهَا، قَالَ: وَزْنَ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ. وَعَنْ حُمَيْدٍ سَمِعْتُ أَنَسًا قَالَ: لَمَّا قَدِمُوا الْمَدِينَةَ نَزَلَ الْمُهَاجِرُونَ عَلَى الأَنْصَارِ، فَنَزَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ عَلَى سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ، فَقَالَ: أُقَاسِمُكَ مَالِي، وَأَنْزِلُ لَكَ عَنْ إِحْدَى امْرَأَتَيَّ. قَالَ: بَارَكَ اللهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ. فَخَرَجَ إِلَى السُّوقِ، فَبَاعَ وَاشْتَرَى، فَأَصَابَ شَيْئًا مِنْ أَقِطٍ وَسَمْنٍ، فَتَزَوَّجَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ)).

[راجع : ٢٠٤٩]

वलीमा में बकरी का होना बत़ौरे शर्त़ नहीं है। गोश्त न हो तो जो भी दाल दलिया हो उसी से वलीमा किया जा सकता है।

5168. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, क़हा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) जैसा वलीमा अपनी बीवियों मे से किसी का नहीं किया, उनका वलीमा आपने एक बकरी का किया था। (राजेअ़ : 4891)

٥١٦٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ : مَا أَوْلَمَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى شَيْءٍ مِنْ نِسَائِهِ مَا أَوْلَمَ عَلَى زَيْنَبَ، أَوْلَمَ بِشَاةٍ.

[راجع: ٤٨٩١]

क़ाज़ी अ़याज़ ने इस पर इज्माअ़ नक़ल किया है कि वलीमा मे कमी बेशी की कोई क़ैद नहीं है ह़स्बे ज़रूरत और ह़स्बे तौफ़ीक़ वलीमा का खाना पकाया जा सकता है वो थोड़ा हो या ज़्यादा। आज ख़त़रनाक महंगाई के दौर में दर्जे ज़ेल ह़दीष़ से भी काफ़ी आसानी मिलती है। नेज़ आगे एक ह़दीष़ भी मुलाह़ज़ा की जा सकती है।

5169. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे शुऐ़ब ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत स़फ़िया

٥١٦٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ، عَنْ شُعَيْبٍ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ

أَعْتَقَ صَفِيَّةَ وَتَزَوَّجَهَا، وَجَعَلَ عِتْقَهَا صَدَاقَهَا، وَأَوْلَمَ عَلَيْهَا بِحَيْسٍ.
[راجع : ٣٧١]

(रज़ि.) को आज़ाद किया और फिर उनसे निकाह किया और उनकी आज़ादी को उनका महर क़रार दिया और उनका वलीमा मलीदा से किया। (राजेअ : 371)

मा'लूम हुआ कि वलीमा के लिये गोश्त का होना बतौरे शर्त नहीं है। मलीदा खिलाकर भी वलीमा किया जा सकता है आपने घी, पनीर और सत्तू मिलाकर ये मलीदा तैयार कराया था सुब्हानल्लाह कितना मज़ेदार वो मलीदा होगा जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) तैयार कराएँ।

٥١٧٠- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ بَيَانٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: بَنَى النَّبِيُّ ﷺ بِامْرَأَةٍ، فَأَرْسَلَنِي فَدَعَوْتُ رِجَالاً إِلَى الطَّعَامِ.
[راجع: ٤٧٩١]

5170. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) एक ख़ातून (ज़ैनब बिन्ते जह़श रज़ि) को निकाह़ करके लाए तो मुझे भेजा और मैंने लोगों को वलीमा खाने के लिये बुलाया। (राजेअ : 4791)

तफ़्सील के लिये ह़दीष़ पीछे गुज़र चुकी है।

٧٠- باب مَنْ أَوْلَمَ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ أَكْثَرَ مِنْ بَعْضٍ

बाब 70 : किसी बीवी के वलीमा में खाना ज़्यादा तैयार करना किसी के वलीमा में कम, जाइज़ दुरुस्त है

٥١٧١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ قَالَ: ذُكِرَ تَزْوِيجُ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ عِنْدَ أَنَسٍ فَقَالَ: مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَوْلَمَ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَائِهِ مَا أَوْلَمَ عَلَيْهَا، أَوْلَمَ بِشَاةٍ.[راجع: ٤٧٩١]

5171. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने, उनसे ष़ाबित बिनानी ने, कि अनस (रज़ि.) के सामने ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) के निकाह़ का ज़िक्र किया गया तो उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उनके जैसा अपनी बीवियों में से किसी के लिये वलीमा करते नहीं देखा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनका वलीमा एक बकरी से किया था। (राजेअ : 4791)

यही खुशनसीब ज़ैनब (रज़ि.) है जिन के निकाह के लिये आसमान से अल्लाह पाक ने लफ़्ज़ **ज़व्वज्नाकहा** से बशारत दी और अल्लाह ने फ़र्माया कि ऐ नबी! ज़ैनब का तुम से निकाह मैंने खुद कर दिया है।

٧١- باب مَنْ أَوْلَمَ بِأَقَلَّ مِنْ شَاةٍ

बाब 71 : एक बकरी से कम का वलीमा करना

٥١٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورِ بْنِ صَفِيَّةَ عَنْ أُمِّهِ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ قَالَتْ: أَوْلَمَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ بِمُدَّيْنِ مِنْ شَعِيرٍ.

5172. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मंसूर इब्ने स़फ़िया ने, उनसे उनकी वालिदा ह़ज़रत स़फ़िया बिन्ते शैबा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ)ने अपनी एक बीवी का वलीमा दो मुद (तक़्रीबन पौने दो सैर) जौ से किया था।

या'नी सवा सेर या दो सेर जौ का आटा पकाया गया था। सच कहा है **अद्दीनु युस्रून** या'नी दीन का मामला बिलकुल आसान है पस आज होलनाक महंगाई के दौर मे उ़लमा का फ़रीज़ा है कि अहले इस्लाम के लिये ऐसी आसानियों की भी बशारत दें।

बाब : 72 : वलीमा की दा'वत और हर एक दा'वत को क़ुबूल करना ह़क़ है और जिसने सात दिन तक दा'वते वलीमा को जारी रखा और नबी करीम (ﷺ) ने उसे सि़र्फ़ एक या दो दिन तक कुछ मुअय्यन नहीं फ़र्माया

٧٢- باب حَقِّ إِجَابَةِ الْوَلِيمَةِ وَالدَّعْوَةِ وَمَنْ أَوْلَمَ سَبْعَةَ أَيَّامٍ وَنَحْوَهُ، وَلَمْ يُوَقِّتِ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمًا وَلاَ يَوْمَيْنِ.

तश्रीह़ : वलीमा वो दा'वत है जो शादी में बीवी से मिलाप के बाद की जाती है। जहाँ तक मुम्किन हो वलीमा करना ज़रूरी है मजबूरी से न कर सके तो दूसरी चीज़ है अगर अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो ये दा'वत तीन दिनों तक लगातार जारी रखना भी जाइज़ है मगर रिया व नमूद का शाइबा भी न हो वरना ष़वाब की जगह उल्टा अ़ज़ाब होगा क्योंकि रिया व नमूद हर नेक अ़मल को बर्बाद करके उल्टा बाइ़ष़े अ़ज़ाब बना देता है।

5173. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से किसी को दा'वते वलीमा पर बुलाया जाए तो उसे आना चाहिये। मा'लूम हुआ कि दा'वते वलीमा का क़ुबूल करना ज़रूरी है। (दीगर मक़ाम : 5179)

٥١٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى الْوَلِيمَةِ فَلْيَأْتِهَا)). [طرفه في : ٥١٧٩].

5174. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन कष़ीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, कहा कि मुझसे मंसू़र ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़ैदी को छुड़ाओ दा'वत करने वाले की दा'वत क़ुबूल करो और बीमार की अ़यादत करो। (राजेअ़ : 3046)

٥١٧٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ قَالَ: حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فُكُّوا الْعَانِيَ، وَأَجِيبُوا الدَّاعِيَ وَعُودُوا الْمَرِيضَ)). [راجع: ٣٠٤٦]

कोई मुसलमान नाह़क़ क़ैद व बन्द में फंस जाए तो उसकी आज़ादी के लिये माले ज़कात से ख़र्च किया जा सकता है आजकल ऐसे वाक़ियात बकष़रत होते रहते हैं मगर मुसलमानों को कोई तवज्जह नहीं है इल्ला माशाअल्लाह। दा'वत क़ुबूल करना, बीमार की अ़यादत करना ये भी अफ़्आ़ले मस्नूना हैं।

5175. हमसे ह़सन बिन रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ (सलाम बिन सुलैम) ने बयान किया, उनसे अश्अ़ष़ बिन अबी शअ़शाअ ने, उनसे मुआ़विया बिन सुवैद ने कि बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें सात कामों का हुक्म दिया और सात कामों से मना फ़र्माया। हमें आँह़ज़रत (ﷺ) ने बीमार की अ़यादत, जनाज़े के पीछे चलने, छींकने वाले के जवाब देने (यरह़मुकल्लाह या'नी अल्लाह तुम पर रह़म करे, कहना) क़सम को पूरा करने, मज़्लूम की मदद करने, सबको सलाम करने और दा'वत करने वाले की दा'वत क़ुबूल करने का हुक्म दिया था और हमें आँह़ज़रत (ﷺ) ने सोने की

٥١٧٥- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ عَنِ الأَشْعَثِ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدٍ قَالَ : قَالَ الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِسَبْعٍ وَنَهَانَا عَنْ سَبْعٍ : أَمَرَنَا بِعِيَادَةِ الْمَرِيضِ، وَاتِّبَاعِ الْجَنَازَةِ، وَتَشْمِيتِ الْعَاطِسِ، وَإِبْرَارِ الْقَسَمِ، وَنَصْرِ الْمَظْلُومِ، وَإِفْشَاءِ السَّلاَمِ، وَإِجَابَةِ الدَّاعِي. وَنَهَانَا

अंगूठी पहनने, चाँदी के बर्तन इस्ते'माल करने, रेशमी गद्दे, क़सिय्या (रेशमी कपड़ा) इस्तबरक़ (माटे रेशम का कपड़ा) और दीबाज (एक रेशमी कपड़ा) के इस्ते'माल से मना फ़र्माया था। अबू अवाना और शैबानी ने अश्अष की रिवायत से लफ़्ज़ इफ़्शाउस्सलाम में अबुल अह्वस की मुताबअत की। (राजेअ : 1239)

عَنْ خَوَاتِيمِ الذَّهَبِ وَعَنْ آنِيَةِ الْفِضَّةِ، وَعَنِ الْمَيَاثِرِ وَالْقَسِّيَّةِ، وَالإِسْتَبْرَقِ، وَالدِّيبَاجِ. تَابَعَهُ أَبُو عَوَانَةَ وَالشَّيْبَانِيُّ عَنْ أَشْعَثَ فِي إِفْشَاءِ السَّلاَمِ.

[راجع: ١٢٣٩]

मज़्कूरा बातें सिर्फ़ छह हैं, सातवीं बात रह गई है जो ख़ालिस रेशमी कपड़ा से मना करना है और अबरारुल क़सम का मतलब ये है कि कोई मुसलमान भाई क़स्मिया तौर पर मुझसे किसी काम को करने के लिये कहे तो उसकी क़सम को सच्ची करना बशर्ते कि वो कोई गुनाह का मुआमला न हो, ये भी एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर हक़ है।

5176. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) को अपनी शादी पर दा'वत दी, उनकी दुल्हन उम्मे उसैद सलामा बिन्ते वहब ज़रूरी जो काम काज कर रही थीं और वही दुल्हन बनी थीं। ह़ज़रत सहल (रज़ि.) ने कहा तुम्हें मा'लूम है उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) को उस मौक़ा पर किया पिलाया था? रात के वक़्त उन्होंने कुछ खजूरें पानी में भिगो दी थीं (सुबह को) जब आँह़ज़रत (ﷺ) खाने से फ़ारिग़ हुए तो आपको वही पिलाया। (दीगर मक़ाम : 5182, 5183, 5541, 5591, 5597, 6685)

٥١٧٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: دَعَا أَبُو أُسَيْدٍ السَّاعِدِيُّ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي عُرْسِهِ، وَكَانَتِ امْرَأَتُهُ يَوْمَئِذٍ خَادِمَهُمْ وَهِيَ الْعَرُوسُ. قَالَ سَهْلٌ تَدْرُونَ مَا سَقَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ أَنْقَعَتْ لَهُ تَمَرَاتٍ مِنَ اللَّيْلِ، فَلَمَّا أَكَلَ سَقَتْهُ إِيَّاهُ.

[أطرافه في : ٥١٨٢، ٥١٨٣، ٥٥٤١، ٥٥٩١، ٥٥٩٧، ٦٦٨٥].

बाब 73 : जिस किसीने दा'वत कुबूल करने से इंकार किया उसने अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़र्मानी की

٧٣- باب مَنْ تَرَكَ الدَّعْوَةَ فَقَدْ عَصَى اللهَ وَرَسُولَهُ

तश्रीह : क्योंकि ऐसा शख़्स मुसलमानों में मेल जोल रखना नहीं चाहता जो इस्लाम का एक बड़ा मक़सद है, इसलिये दा'वत न क़ुबूल करने वाला अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) का नाफ़र्मान है। मेलजोल व मुहब्बत के लिये दा'वत का क़ुबूल करना ज़रूरी है।

5177. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि वलीमा का वो खाना बदतरीन खाना है जिसमें सिर्फ़ मालदारों को उसकी तरफ़ दा'वत दी जाए और मुहताजों को न खिलाया जाए और जिसने वलीमे की दा'वत क़ुबूल करने से इंकार किया उसने अल्लाह और उसके रसूल

٥١٧٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ : شَرُّ الطَّعَامِ طَعَامُ الْوَلِيمَةِ، يُدْعَى لَهَا الأَغْنِيَاءُ وَيُتْرَكُ الْفُقَرَاءُ، وَمَنْ تَرَكَ

الدَّعْوَةَ فَقَدْ عَصَى اللهَ وَرَسُولَهُ ﷺ.

की नाफ़र्मानी की।

तश्रीह : इससे जाइज़ दा'वत की क़बूलियत की अहमियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है जिसे ज़रूर क़ुबूल करना चाहिये क्योंकि जो दा'वत क़ुबूल नहीं करना चाहता वो मुसलमानों में मेलजोल रखना नहीं चाहता जो इस्लाम का एक बड़ा रुक्न है। हृदया और दा'वत से मेलजोल पैदा होता है और दीन और दुनिया की भलाइयाँ आपसी मेलजोल और इत्तिफ़ाक़ में मुन्हसिर हैं जिन लोगों ने तक़्वा इसे समझा कि लोगों से दूर रहा जाए और किसी की भी दा'वत न क़ुबूल की जाए ये तक़्वा नहीं है बल्कि ख़िलाफ़े सुन्नत है। मगर कुछ सीधे-सादे लोग उसी को कमाले तक़्वा समझते हैं अल्लाह उनको नेक समझ बख़्शे आमीन।

٧٤- باب مَنْ أَجَابَ إِلَى كُرَاعٍ

बाब 74 : जिसने बकरी के खुर की दा'वत की तो उसे भी क़ुबूल करना चाहिये

क्योंकि दा'वत से मेलजोल इत्तिफ़ाक़ पैदा होता है और दीन व दुनिया की भलाइयाँ सब इत्तिफ़ाक़ पर मुन्हसिर हैं।

٥١٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ دُعِيتُ إِلَى كُرَاعٍ لأَجَبْتُ، وَلَوْ أُهْدِيَ إِلَيَّ كُرَاعٌ لَقَبِلْتُ)). [راجع: ٢٥٦٨]

5178. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मुझे बकरी के खुर की दा'वत दी जाए तो मैं उसे भी क़ुबूल करूँगा और अगर मुझे वो ख़ुर भी हदिया में दिये जाएँ तो मैं उसे क़ुबूल करूँगा। (राजेअ़ : 2568)

कैसा ही कम ह़िस्सा हो मैं ले लूँगा किसी मुसलमान की दिलशिकनी न करूँगा। यही वो अख़्लाक़ ह़सना थे जिसकी बिना पर अल्लाह ने आपको **इन्नक लअ़ला ख़ुलुक़िन अ़ज़ीम** (अल क़लम : 4) से नवाज़ा। ग़रीबों की दा'वत में न जाना, ग़रीबों से नफ़रत करना, ये फ़िरआनियत है ऐसे मुतकब्बिर लोग अल्लाह के नज़दीक मच्छर से भी ज़्यादा ज़लील हैं।

٧٥- باب إِجَابَةِ الدَّاعِي فِي الْعُرْسِ وَغَيْرِهَا

बाब 75 : हर एक दा'वत क़ुबूल करना शादी की हो या किसी और बात की

तश्रीह : यही क़ौल है कुछ शाफ़िइया और ह़नाबिला और अस्ह़ाबुल ह़दीष़ का और ह़नफ़िया और मालिकिया कहते हैं कि वलीमा के सिवा और दा'वत का क़ुबूल करना वाजिब नहीं। शाफ़िई ने कहा अगर दूसरी दा'वत में न जाए तो गुनाहगार नहीं लेकिन वलीमा की दा'वत मे न जाने से गुनाहगार होगा। मुस्लिम की रिवायत में यूँ है जब तुममें से कोई खाने के लिये बुलाया जाए तो वो ज़रूर जाए। अगर रोज़ा न हो तो खाए वरना बरकत की दुआ दे। इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया कि एक दा'वत में एक शख़्स बोला में रोज़ेदार हूँ आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वाह! तेरा भाई तो तेरे लिये तकलीफ़ उठाए और तू रोज़े का बहाना करके उसका दिल दुखाए, ये बात ग़ैर मुनासिब है।

٥١٧٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ : قَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ : أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ قَالَ : سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ

5179. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ज्जाज बिन मुह़म्मद अअ़वर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझको मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस वलीमे की जब

رَضِيَ اللهُ عَنْهَا يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَجِيبُوا هَذِهِ الدَّعْوَةَ إِذَا دُعِيتُمْ لَهَا))، قَالَ: كَانَ عَبْدُ اللهِ يَأْتِي الدَّعْوَةَ فِي الْعُرْسِ وَغَيْرِ الْعُرْسِ وَهُوَ صَائِمٌ.

[راجع: ٥١٧٣]

तुम्हें दा'वत दी जाए तो क़ुबूल करो। बयान किया कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) अगर रोज़े से होते जब भी वलीमा की दा'वत या किसी दूसरे दा'वत में शिर्कत करते थे। (राजेअ़ : 5173)

तश्रीह़ : अगर नफ़्ली रोज़ा है तो उसे खोलकर ऐसी दा'वतों मे शरीक होना बेहतर है क्योंकि उनसे बाहमी मुह़ब्बत बढ़ती है, बाहमी मेल-मिलाप पैदा होता है।

٧٦- باب ذَهَابِ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ إِلَى الْعُرْسِ

बाब 76 : शादी की दा'वत में औ़रतों और बच्चों का भी जाना जाइज़ है

٥١٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ صُهَيْبٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَبْصَرَ النَّبِيُّ ﷺ نِسَاءً وَصِبْيَانًا مُقْبِلِينَ مِنْ عُرْسٍ فَقَامَ مُمْتَنًّا فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ أَنْتُمْ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ)).

[راجع: ٣٧٨٥]

5180. हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सुहैब ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने औ़रतों और बच्चों को किसी शादी से आते हुए देखा तो आप (ﷺ) ख़ुशी के मारे जल्दी से खड़े हो गये और फ़र्माया या अल्लाह! (तू गवाह रह) तुम लोग सब लोगों से ज़्यादा मुझको मह़बूब हो। (राजेअ़ : 3785)

तश्रीह़ : क्योंकि अंसारियों ने आँह़ज़रत (ﷺ) को अपने शहर में जगह दी, आपके साथ होकर काफ़िरों से लड़े और यहूदियों से भी मुक़ाबला किया। हर मुश्किल और सख़्त मौक़ों पर आपके साथ रहे अंसार का एह़सान मुसलमानों पर क़यामत तक बाक़ी रहेगा।

इस ह़दीष़ से वज़ाह़त के साथ मा'लूम हुआ कि औ़रतें और बच्चे भी अगर वलीमा की दा'वतों में बुलाए जाएँ तो उनको भी उसमें जाना कैसा है? वाजिब है मुस्तह़ब।

क़स्तलानी (रह़) ने कहा बशर्ते कि किसी क़िस्म के फ़ित्ने का डर न हो तो बख़ुशी औ़रतें और बच्चे जा सकते हैं लेकिन औ़रतों को दा'वत में जाने के लिये अपने शौहर से इजाज़त लेना ज़रूरी है, बग़ैर इजाज़त जाना ठीक नहीं। हो सकता है कि शौहर नाराज़ हो जाए। इससे भी औ़रतों के लिये उनके शौहरों का मुक़ाम वाज़ेह़ हुआ। अल्लाह तआ़ला औ़रतों को उसे समझने की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

٧٧- باب

هَلْ يَرْجِعُ إِذَا رَأَى مُنْكَرًا فِي الدَّعْوَةِ؟ وَرَأَى ابْنُ مَسْعُودٍ صُورَةً فِي الْبَيْتِ فَرَجَعَ، وَدَعَا ابْنُ عُمَرَ أَبَا أَيُّوبَ فَرَأَى فِي

बाब 77 : अगर दा'वत में जाकर वहाँ कोई काम ख़िलाफ़े शरअ़ देखे तो

लौट आए या क्या करे और इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने (वलीमे वाले घर में) एक तस्वीर देखी तो वो वापस आ गये। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने एक मर्तबा अबू अय्यूब (रज़ि.) की दा'वत की

(अबू अय्यूब रज़ि ने) उनके घर में दीवार पर पर्दा पड़ा हुआ देखा। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने (मअ़ज़रत करते हुए) कहा कि औरतों ने हमको मजबूर कर दिया है। इस पर अबू अय्यूब (रज़ि.) ने कहा कि और लोगों के बारे में तो मुझे उसका ख़तरा था लेकिन तुम्हारे बारे में मेरा ये ख़याल नहीं था (कि तुम भी ऐसा करोगे) वल्लाह! मैं तुम्हारे यहाँ खाना नहीं खाऊँगा चुनाँचे वो वापस आ गये।

الْبَيْتِ سِتْرًا عَلَى الْجِدَارِ. فَقَالَ ابْنُ عُمَرَ غَلَبَنَا عَلَيْهِ النِّسَاءُ، فَقَالَ : مَنْ كُنْتُ أَخْشَى عَلَيْهِ فَلَمْ أَكُنْ أَخْشَى عَلَيْكَ، وَاللهِ لاَ أَطْعَمُ لَكُمْ طَعَامًا فَرَجَعَ.

तश्रीह : ह़ज़रत अबू अय्यूब बिन ज़ैद अंसारी ख़ज़रजी रसूले करीम (ﷺ) के मेज़बान हैं। ख़ानाजंगियों में ये ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ रहे और 51 हिजरी में यज़ीद बिन मुआ़विया (रज़ि.) के मातह़त कुस्तुन्तुनिया की जंग में शामिल हुए और वहीं पर आपने जामे शहादत नोश फ़र्माया और कुस्तुन्तुनिया की दीवार के पास ही आपका मरक़द है। अल्लाहुम्मा बल्लिग़ सलामी अ़लैहि (राज़)

5181. हमसे इस्माईल बिन अबी उवेस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने एक छोटा सा गद्दा ख़रीदा जिसमें तस्वीरें बनी हुई थीं। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे देखा तो दरवाज़े पर खड़े हो गये और अंदर नहीं आए। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहरे पर ख़फ़्गी के आषार देख लिये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अल्लाह और रसूल से तौबा करती हूँ, मैंने क्या ग़लती की है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये गद्दा यहाँ कैसे आया? बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया मैंने ही इसे ख़रीदा है ताकि आप इस पर बैठें और इस पर टेक लगाएँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन तस्वीरों के (बनाने वालों को) क़यामत के दिन अ़ज़ाब दिया जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि जो तुमने तस्वीरसाज़ी की है उसे ज़िन्दा भी करो? और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिन घरो में तस्वीरें होती हैं उनमें (रह़मत के) फ़रिश्ते नहीं आते। (राजेअ़ : 2105)

٥١٨١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا اشْتَرَتْ نُمْرُقَةً فِيهَا تَصَاوِيرُ، فَلَمَّا رَآهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قَامَ عَلَى الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهِيَةَ، فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ، أَتُوبُ إِلَى اللهِ وَإِلَى رَسُولِهِ، مَاذَا أَذْنَبْتُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا بَالُ هَذِهِ النُّمْرُقَةِ؟)) قَالَتْ: فَقُلْتُ اشْتَرَيْتُهَا لَكَ لِتَقْعُدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَيُقَالُ لَهُمْ أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ، وَقَالَ : إِنَّ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ الصُّوَرُ لاَ تَدْخُلُهُ الْمَلاَئِكَةُ)).

[راجع: ٢١٠٥]

तश्रीह : बेजान चीज़ों की तस्वीरें इससे मुस्तष्ना हैं। फ़त्हुल बारी में है कि जिस दा'वत में ह़राम काम होता हो तो अगर उसके दूर करने पर क़ादिर हो तो उसको दूर कर दे वरना लौटकर चला जाए, खाना न खाए और त़बरानी ने मर्फ़ूअ़न रिवायत किया है कि फ़ासिक़ों की दा'वत क़ुबूल करने से आँह़ज़रत (ﷺ) ने मना फ़र्माया। मष़लन वो लोग जो शराब पीते हों या फ़ाह़िशा औ़रतों का नाच रंग हो रहा हो तो उस दा'वत में शिर्कत न करना बेहतर है। ह़ज़रत अबू अय्यूब अंसारी का ये कमाले वरअ़ था कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के मकान में दीवार पर कपड़ा देखकर उसमे बैठना और खाना खाना गवारा न किया। क़स्तलानी (रह़) ने कहा कि जुम्हूर शाफ़िइया इसकी कराहियत के क़ाइल हैं क्योंकि अगर ह़राम होता

तो दूसरे सहाबा भी वहाँ न बैठते न खाना खाते। ये भी मुम्किन है कि दूसरे सहाबा को हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) की राय से इत्तिफ़ाक़ न हो अगर हज़रत अबू अय्यूब (रज़ि.) आज की बिदआत को देखते तो क्या कहते, जबकि बेशतर अहले बिदअत ने क़ब्रों और मज़ारों पर इस क़द्र ज़ैब व ज़ीनत कर रखी है कि बुतख़ानों को भी मात कर रखा है। एक मुक़ाम पर एक बुज़ुर्ग उजाला शाह नामी का मज़ार है जहाँ सुबह उजाला होते ही रोज़ाना कमख़्वाब की एक चादर चढ़ाई जाती है इस पर मिठाई की टोकरी होती है और संदल से उनकी क़ब्र को लीपा जाता है। सद अफ़सोस कि ऐसी हुर्मतों को ऐन इस्लाम समझा जाता है और इस्लाह के लिये कोई कुछ कह दे तो उसे वहाबी कहकर मअतूब क़रार दिया जाता है और उससे सख़्त दुश्मनी की जाती है। अल्लाह पाक ऐसे नामो निहाद मुसलमानों को नेक समझ अता करे, आमीन।

बाब 78 : शादी में औरत मर्दों का काम काज ख़ुद अपनी ज़ात से करे तो कैसा है?

٧٨- باب قِيَامِ الْمَرْأَةِ عَلَى الرِّجَالِ فِي الْعُرْسِ وَخِدْمَتِهِمْ بِالنَّفْسِ

5182. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन मुत्रफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम (सलमा बिन दीनार) ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) ने शादीकी तो उन्होंने नबी करीम (ﷺ) और आपके सहाबा को दा'वत दी। इस मौक़े पर खाना उनकी दुल्हन उम्मे उसैद (रज़ि.) ही ने तैयार किया था और उन्होंने ही मर्दों के सामने खाना रखा। उन्होंने पत्थर के एक बड़े प्याले में रात के वक़्त खजूरें भिगो दी थीं और जब आँहज़रत (ﷺ) खाने से फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने ही उसका शरबत बनाया और आँहज़रत (ﷺ) के सामने (तोहफ़ा के तौर पर) पीने के लिये पेश किया। (राजेअ : 5176)

٥١٨٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ عَنْ سَهْلٍ قَالَ لَمَّا عَرَّسَ أَبُو أُسَيْدٍ السَّاعِدِيُّ دَعَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابَهُ فَمَا صَنَعَ لَهُمْ طَعَامًا وَلاَ قَرَّبَ إِلَيْهِمْ إِلاَّ امْرَأَتُهُ أُمُّ أُسَيْدٍ، بَلَّتْ تَمَرَاتٍ فِي تَوْرٍ مِنْ حِجَارَةٍ مِنَ اللَّيْلِ، فَلَمَّا فَرَغَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الطَّعَامِ أَمَاثَتْهُ لَهُ فَسَقَتْهُ تُتْحِفُهُ بِذَلِكَ.
[راجع: ٥١٧٦]

लफ़्ज़े अमषत्हु अमातत से है उसके मा'नी पानी में किसी चीज़ का हल करना। मा'लूम हुआ कि दुल्हन भी फ़राइज़े मेज़बानी अदा कर सकती है। मा'लूम हुआ कि बवक़्ते ज़रूरत पर्दे के साथ औरत ऐसे सारे काम काज कर सकती है।

बाब 79 : खजूर का शरबत या और कोई शरबत जिसमें नशा न हो शादी में पिलाना

٧٩- باب النَّقِيعِ وَالشَّرَابِ الَّذِي لاَ يُسْكِرُ فِي الْعُرْسِ

5183. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान क़ारी ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने, कहा कि मैंने हज़रत सहल बिन सअद (रज़ि.) से सुना कि हज़रत अबू उसैद साएदी (रज़ि.) ने अपनी शादी के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ)को दा'वत दी। उस दिन उनकी बीवी ही सबकी ख़िदमत कर रही थीं , हालाँकि वो दुल्हन थीं। बीवी ने कहा या सहल (रज़ि) ने, (रावी को शक था) कि तुम्हें

٥١٨٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الْقَارِيُّ عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ أَنَّ أَبَا أُسَيْدٍ السَّاعِدِيَّ دَعَا النَّبِيَّ ﷺ لِعُرْسِهِ فَكَانَتِ امْرَأَتُهُ خَادِمَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَهِيَ

मा'लूम है कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) के लिये क्या तैयार किया था? मैंने आपके लिये एक बड़े प्याले में रात के वक़्त से खजूर का शरबत तैयार किया था। (राजेअ : 5176)

الْعَرُوسُ فَقَالَتْ: أَوْ قَالَ أَتَدْرُونَ مَا أَنْقَعْتُ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ؟ أَنْقَعْتُ لَهُ تَمَرَاتٍ مِنَ اللَّيْلِ فِي تَوْرٍ. [راجع: ٥١٧٦]

अरब में खजूर एक मरग़ूब और बकषरत मिलने वाली जिंस थी। खाने में और शरबत बनाने में अकषर उसी का इस्ते'माल होता था जैसा कि ह़दीषे हाज़ा से ज़ाहिर है।

बाब 80 : औरतों के साथ ख़ुश ख़ल्क़ी से पेश आना और आँहज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि

औरत पसली की त़रह है।

٨٠- باب الْمُدَارَاةِ مَعَ النِّسَاءِ، وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّمَا الْمَرْأَةُ كَالضِّلَعِ)).

उसके मिज़ाज में पैदाइश से कजी और टेढ़ापन है।

5184. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज़रत इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया औरत मिष्ल पसली के है, अगर तुम उसे सीधा करना चाहोगे तो तोड़ लोगे और अगर उससे फ़ायदा ह़ासिल करना चाहोगे तो उसकी टेढ़ के साथ ही फ़ायदा ह़ासिल करोगे। (राजेअ : 3331)

٥١٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْمَرْأَةُ كَالضِّلَعِ، إِنْ أَقَمْتَهَا كَسَرْتَهَا، وَإِنِ اسْتَمْتَعْتَ بِهَا اسْتَمْتَعْتَ بِهَا وَفِيهَا عِوَجٌ)).[راجع: ٣٣٣١]

तश्रीह़ : पसली से पैदा होने का इशारा इस त़रफ़ है कि ह़ज़रत ह़व्वा अ़लैहिस्सलाम ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पसली से पैदा हुई थीं पसली ऊपर ही की त़रफ़ से ज़्यादा टेढ़ी होती है, इस त़रह़ औरत भी ऊपर की त़रफ़ से या'नी ज़ुबान से टेढ़ी होती है पस उनकी ज़ुबान दराज़ी और सख़्त गोई पर स़ब्र करते रहना इसी में आँहज़रत (ﷺ) की पैरवी है।

बाब 81 : औरतों से अच्छा सुलूक करने के बारे में वस़िय्यते नबवी का बयान

٨١- باب الْوَصَاةِ بِالنِّسَاءِ

5185. हमसे इस्ह़ाक़ बिन नस़्र ने बयान किया, कहा हमसे ह़ुसैन जअ़फ़ी ने बयान किया, उनसे ज़ायदा ने, उनसे मैसरह ने, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखता हो वो अपने पड़ौसी को तकलीफ़ न पहुँचाए और मैं तुम्हें। (दीगर मक़ाम : 6136, 6018, 6475)

٥١٨٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْجُعْفِيُّ عَنْ زَائِدَةَ عَنْ مَيْسَرَةَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلاَ يُؤْذِي جَارَهُ)).

[أطرافه في : ٦١٣٦، ٦٠١٨، ٦٤٧٥].

5186. औरतों के बारे में भलाई की वस़िय्यत करता हूँ क्योंकि

٥١٨٦- وَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا فَإِنَّهُنَّ

वो पसली से पैदा की गई है और पसली में भी सबसे ज़्यादा टेढ़ा उसके ऊपर का हिस्सा है। अगर तुम उसे सीधा करना चाहोगे तो उसे तोड़ डालोगे और अगर उसे छोड़ दोगे तो वो टेढ़ी ही बाक़ी रह जाएगी। इसलिये मैं तुम्हें औरतों के बारे में अच्छे सुलूक़ की वसिय्यत करता हूँ। (राजेअ : 3331)

خُلِقْنَ مِنْ ضِلَعٍ، وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلاَهُ، فَإِنْ ذَهَبْتَ تُقِيمُهُ كَسَرْتَهُ، وَإِنْ تَرَكْتَهُ لَمْ يَزَلْ أَعْوَجَ، فَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا. [راجع: ٣٣٣١]

5187. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के वक़्त में हम अपनी बीवियों के साथ बातचीत और बहुत ज़्यादा बेतकल्लुफ़ी से इस डर की वजह से परहेज़ करते थे कि कहीं कोई बेए'तिदाली हो जाए और हमारी बुराई मे कोई हुक्म न नाज़िल हो जाए फिर जब आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो हमने उनसे ख़ूब खुल के बातचीत की और ख़ूब बेतकल्लुफ़ी करने लगे।

٥١٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا نَتَّقِي الْكَلاَمَ وَالاِنْبِسَاطَ إِلَى نِسَائِنَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ هَيْبَةَ أَنْ يَنْزِلَ فِينَا شَيْءٌ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ تَكَلَّمْنَا وَانْبَسَطْنَا.

बाब 82 : अल्लाह का सूरह तहरीम में ये फ़र्माना कि लोगों! ख़ुद को और अपने बीवी बच्चों को दोज़ख की आग से बचाओ

٨٢- باب ﴿قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا﴾

इस बाब में हज़रत मुअल्लिफ़ ने इशारा किया कि बुरे कामों में औरतों पर सख़्ती भी ज़रूरी है।

5188. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से (उसकी रइयत के बारे में) सवाल होगा। पस इमाम हाकिम है उससे सवाल होगा। मर्द अपनी बीवी बच्चों का हाकिम है और उससे सवाल होगा। औरत अपने शौहर के घर की हाकिम है और उससे सवाल होगा। गुलाम अपने सरदार के माल का हाकिम है और उससे सवाल होगा हाँ पस तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से सवाल होगा। (राजेअ : 893)

٥١٨٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ: فَالإِمَامُ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى بَيْتِ زَوْجِهَا وَهِيَ مَسْؤُولَةٌ، وَالْعَبْدُ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ، أَلاَ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ)). [راجع: ٨٩٣]

तश्रीह : इस हदीष़ की मुताबक़त बाब के तर्जुमा से यूँ है कि जब हर एक से उसकी रइयत के बारे में बाज़पुर्स होगी तो आदमी को अपने घर वालों का ख़्याल रखना उनको बुरे कामो से रोकना ज़रूरी है वरना वो भी क़यामत के दिन दोज़ख़ में उनके साथ होंगे और कहा जाएगा कि तुमने अपने घर वालों को बुरे कामों से क्यूँ न रोका आयत **कू अन्फुसकुम व अहलीकुम नारा** (अत् तहरीम : 6) का यही मफ़्हूम है।

बेहतर इंसान वही है जो ख़ुद नेक हो और अपने बीवी बच्चों के ह़क़ में भी भला हो। मुह़ब्बत और नर्मी से घर का और बाल बच्चों का निज़ाम बेहतर रहता है। आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी बीवियों से बहुत ख़ुश अख़्लाक़ी का बर्ताव करते थे कुछ दफ़ा अपनी बीवियों से मज़ाह़ भी कर लिया करते थे कुछ दफ़ा अपनी बीवियों से मुक़ाबले की दौड़ लगा लिया करते थे और अपनी बीवियों की ज़ुबान दराज़ी को दरगुज़र कर दिया करते थे। हमें आँहुज़ूर (ﷺ) के किरदार से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये ताकि हम भी अपने घर के बेहतरीन ह़ाकिम बन सकें।

बाब 83 : अपने घर वालों से अच्छा सुलूक़ करो

٨٣- باب حُسْنِ الْمُعَاشَرَةِ مَعَ الأَهْلِ

5189. हमसे सुलैमान बिन अ़ब्दुर्रहमान और अ़ली बिन हुज्र ने बयान किया, इन दोनों ने कहा कि हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उसने कहा कि हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्होंने अपने भाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़र्वा से, उन्होंने अपने वालिद उ़र्वा बिन ज़ुबैर से, उन्होंने आ़इशा (रज़ि) से, उन्होंने कहा कि ग्यारह औ़रतों का एक इज्तिमाअ़ हुआ जिसमें उन्होंने आपस मे ये तै किया कि मज्लिस में वो अपने अपने शौहर का स़ह़ीह़ स़ह़ीह़ ह़ाल बयान करें कोई बात न छुपाएँ। चुनाँचे पहली औ़रत (नाम ना मा'लूम) बोली मेरे शौहर की मिस़ाल ऐसी है जैसे दुबले ऊँट का गोश्त जो पहाड़ की चोटी पर रखा हुआ हो न तो वहाँ तक जाने का रास्ता स़ाफ़ है कि आसानी से चढ़कर उसको कोई ले आवे और न वो गोश्त ही ऐसा मोटा ताज़ा है जिसे लाने के लिये उस पहाड़ पर चढ़ने की तकलीफ़ गवारा करो। दूसरी औ़रत (अ़म्रह़ बिन्ते अ़म्र तमीमी नामी) कहने लगी मैं अपने शौहर का ह़ाल बयान करूँ तो कहाँ तक बयान करूँ (उसमें इतने ऐ़ब हैं) मैं डरती हूँ कि सब बयान न कर सकूँगी । इस पर भी अगर बयान करूँ तो उसके खुले और छुपे सारे ऐ़ब बयान कर सकती हूँ। तीसरी औ़रत (हुयी बिन्ते कअ़ब यमानी) कहने लगी, मेरा शौहर क्या है एक ताड़ का ताड़ (लम्बा तड़ंगा) है अगर उसके ऐ़ब बयान करूँ तो त़लाक़ तैयार है अगर ख़ामोश रहूँ तो इधर लटकी रहूँ। चौथी औ़रत (महद बिन्ते अबी हरदमा) कहने लगी कि मेरा शौहर मुल्के तिहामा की रात की त़रह़ मुअ़तदिल है न ज़्यादा गर्म न बहुत ठण्डा न उससे मुझको डर है न उक्ताहट है। पाँचवीं औ़रत (कब्शा नामी) कहने लगी कि मेरा शौहर ऐसा है कि घर में आता है तो वो एक चीता है और जब बाहर निकलता है तो शेर (बहादुर) की त़रह़ है। जो चीज़ घर में छोड़कर जाता है उसके बारे में पूछता ही नहीं (कि वो कहाँ

٥١٨٩- حدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَعَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ قَالاَ: أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنُ عُرْوَةَ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : جَلَسَ إِحْدَى عَشْرَةَ امْرَأَةً فَتَعَاهَدْنَ وَتَعَاقَدْنَ أَنْ لاَ يَكْتُمْنَ مِنْ أَخْبَارِ أَزْوَاجِهِنَّ شَيْئًا. قَالَتِ الأُولَى : زَوْجِي لَحْمُ جَمَلٍ غَثٌّ، عَلَى رَأْسِ جَبَلٍ، لاَ سَهْلٍ فَيُرْتَقَى، وَلاَ سَمِينًا فَيُنْتَقَلُ. قَالَتِ الثَّانِيَةُ : زَوْجِي لاَ أَبُثُّ خَبَرَهُ، إِنِّي أَخَافُ أَنْ لاَ أَذَرَهُ، إِنْ أَذْكُرْهُ أَذْكُرْ عُجَرَهُ وَبُجَرَهُ. قَالَ الثَّالِثَةُ : زَوْجِي الْعَشَنَّقُ، إِنْ أَنْطِقْ أُطَلَّقْ، وَإِنْ أَسْكُتْ أُعَلَّقْ. قَالَتِ الرَّابِعَةُ. زَوْجِي كَلَيْلِ تِهَامَةَ، لاَ حَرٌّ وَلاَ قُرٌّ وَلاَ مَخَافَةَ وَلاَ سَآمَةَ. قَالَتِ الْخَامِسَةُ زَوْجِي إِنْ دَخَلَ فَهِدَ، وَإِنْ خَرَجَ أَسِدَ، وَلاَ يَسْأَلُ عَمَّا عَهِدَ. قَالَتِ السَّادِسَةُ: زَوْجِي إِنْ أَكَلَ لَفَّ، وَإِنْ شَرِبَ اشْتَفَّ، وَإِنِ اضْطَجَعَ الْتَفَّ وَلاَ يُولِجُ الْكَفَّ لِيَعْلَمَ الْبَثَّ. قَالَتِ السَّابِعَةُ: زَوْجِي غَيَايَاءُ، أَوْ عَيَايَاءُ. طَبَاقَاءُ، كُلُّ دَاءٍ لَهُ دَاءٌ، شَجَّكِ أَوْ فَلَّكِ أَوْ جَمَعَ كُلاًّ لَكِ.

गई?) इतना बेपरवाह है जो आज कमाया उसे कल के लिये उठाकर रखता ही नहीं इतना सख़ी है। छठी औरत (हिन्द नामी) कहने लगी कि मेरा शौहर जब खाने पर आता है तो सब कुछ चट कर जाता है और जब पीने पर आता है तो एक बूँद भी बाक़ी नहीं छोड़ता और जब लेटता है तो तन्हा ही अपने ऊपर कपड़ा लपेट लेता है और अलग पड़कर सो जाता है मेरे कपड़े में कभी हाथ भी नहीं डालता कि कभी मेरा दुख दर्द कुछ तो मा'लूम करे। सातवीं औरत (हुई बिन्ते अल्क़मा) मेरा शौहर तो जाहिल या मस्त है। सुहबत के वक़्त अपना सीना मेरे सीने से लगाकर औंधा पड़ जाता है। दुनिया में जितने ऐब लोगों में एक एक करके जमा हैं वो सब उसकी ज़ात में जमा हैं (कमबख़्त से बात करूँ तो) सर फोड़ डाले या हाथ तोड़ डाले या दोनों काम कर डाले। आठवीं औरत (या सुर्र बिन्ते ओस) कहने लगी मेरा शौहर छूने में ख़रगोश की तरह नरम है और ख़ुश्बू में सूँघो तो ज़ा'फ़रान जैसा ख़ुश्बूदार है। नवीं औरत (नाम नामा'लूम) कहने लगी कि मेरे शौहर का घर बहुत ऊँचा और बुलन्द है वो क़द आवर बहादुर है, उसके यहाँ खाना इस क़दर पकता है कि राख के ढेर के ढेर जमा हैं (ग़रीबों को ख़ूब खिलाता है) लोग जहाँ सलाह व मश्वरे के लिये बैठते हैं (या'नी पंचायत घर) वहाँ से उसका घर बहुत नज़दीक है। दसवीं औरत (कब्शा बिन्ते राफ़ेअ) कहने लगी मेरे शौहर का क्या पूछना जायदाद वाला है, जायदाद भी कैसी बड़ी जायदाद वैसी किसी के पास नहीं हो सकती बहुत सारे ऊँट जो जा-बजा उसके घर के पास जुटे रहते हैं और जंगल में चरने कम जाते हैं। जहाँ उन ऊँटों ने बाजे की आवाज़ सुनी बस उनको अपने ज़िबह होने का यक़ीन हो गया। ग्यारहवीं औरत (उम्मे ज़रअ बिन्ते अकीमल बिन साअदा) कहने लगी मेरा शौहर अबू ज़रअ है उसका क्या कहना उसने मेरे कानों के ज़ेवरों से बोझल कर दिया है और मेरे दोनों बाज़ू चर्बी से फुला दिया है मुझे ख़ूब खिलाकर मोटा कर दिया है कि मैं भी अपने तईं ख़ूब मोटी समझने लगी हूँ। शादी से पहले मैं थोड़ी सी भेड़–बकरियों में तंगी से गुज़र बसर करती थी। अबू ज़रआ ने मुझको घोड़ों, ऊँटों, खेत खलिहान सबका मालिक बना

قَالَتِ الثَّامِنَةُ : زَوْجِي الْمَسُّ، مَسُّ أَرْنَبٍ وَالرِّيحُ رِيحُ زَرْنَبٍ. قَالَتِ التَّاسِعَةُ: زَوْجِي رَفِيعُ الْعِمَادِ، طَوِيلُ النِّجَادِ، عَظِيمُ الرَّمَادِ، قَرِيبُ الْبَيْتِ مِنَ النَّادِ. قَالَتِ الْعَاشِرَةُ : زَوْجِي مَالِكٌ وَمَا مَالِكٌ، مَالِكٌ خَيْرٌ مِنْ ذَلِكِ، لَهُ إِبِلٌ كَثِيرَاتُ الْمَبَارِكِ، قَلِيلاَتُ الْمَسَارِحِ، وَإِذَا سَمِعْنَ صَوْتَ الْمِزْهَرِ، أَيْقَنَّ أَنَّهُنَّ هَوَالِكُ. قَالَتِ الْحَادِيَةَ عَشْرَةَ: زَوْجِي أَبُو زَرْعٍ، فَمَا أَبُو زَرْعٍ، أَنَاسَ مِنْ حُلِيٍّ أُذُنَيَّ وَمَلأَ مِنْ شَحْمٍ عَضُدَيَّ، وَبَجَّحَنِي فَبَجِحَتْ إِلَيَّ نَفْسِي، وَجَدَنِي فِي أَهْلِ غُنَيْمَةٍ بِشِقٍّ، فَجَعَلَنِي فِي أَهْلِ صَهِيلٍ وَأَطِيطٍ، وَدَائِسٍ وَمُنَقٍّ فَعِنْدَهُ أَقُولُ فَلاَ أُقَبَّحُ، وَأَرْقُدُ فَأَتَصَبَّحُ وَأَشْرَبُ فَأَتَقَنَّحُ أُمُّ أَبِي زَرْعٍ فَمَا أُمُّ أَبِي زَرْعٍ عُكُومُهَا رَدَاحٌ، وَبَيْتُهَا فَسَاحٌ، ابْنُ أَبِي زَرْعٍ فَمَا ابْنُ أَبِي زَرْعٍ، مَضْجَعُهُ كَمَسَلِّ شَطْبَةٍ وَيُشْبِعُهُ ذِرَاعُ الْجَفْرَةِ. بِنْتُ أَبِي زَرْعٍ فما بنت ابي زرع طَوْعُ أَبِيهَا، وَطَوْعُ أُمِّهَا، وَمِلْءُ كِسَائِهَا، وَغَيْظُ جَارَتِهَا. جَارِيَةُ أَبِي زَرْعٍ فَمَا جَارِيَةُ أَبِي زَرْعٍ لاَ تَبُثُّ حَدِيثَنَا تَبْثِيثًا وَلاَ تُنَقِّثُ مِيرَتَنَا تَنْقِيثًا، وَلاَ تَمْلأُ بَيْتَنَا تَعْشِيشًا، قَالَتْ: خَرَجَ أَبُو زَرْعٍ وَالأَوْطَابُ تُمْخَضُ، فَلَقِيَ امْرَأَةً مَعَهَا وَلَدَانِ لَهَا كَالْفَهْدَيْنِ يَلْعَبَانِ مِنْ تَحْتِ خَصْرِهَا بِرُمَّانَتَيْنِ، فَطَلَّقَنِي وَنَكَحَهَا، فَنَكَحْتُ بَعْدَهُ

दिया है इतनी बहुत जायदाद मिलने पर भी उसका मिज़ाज इतना उम्दा है कि बात कहूँ तो बुरा नहीं मानता मुझको कभी बुरा नहीं कहता। सोई पड़ी रहूँ तो सुबह तक मुझे कोई नहीं जगाता। पानी पियूँ तो ख़ूब सैराब होकर पी लूँ। रही अबू ज़रआ की माँ (मेरी सास) तो मैं उसकी क्या ख़ूबियाँ बयान करूँ उसका तौशाख़ाना माल व अस्बाब से भरा हुआ, उसका घर बहुत ही कुशादा। अबू ज़रआ का बेटा वो भी कैसा अच्छा ख़ूबसूरत (नाज़ुक बदन दुबला पतला) हरी छाली या नंगी तलवार के बराबर उसके सोने की जगह, ऐसा कम ख़ूराक कि बकरी के चार माह के बच्चे के दस्त का गोश्त उसका पेट भर दे। अबू ज़रआ की बेटी वो भी सुब्हानल्लाह! क्या कहना अपने बाप की प्यारी, अपनी माँ की प्यारी (ताबेअ फ़र्मान इताअतगुज़ार) कपड़ा भरपूर पहनने वाली (मोटी ताज़ी) सौकन की जलन। अबू ज़रआ की लौण्डी उसकी भी क्या पूछते हो कभी कोई बात हमारी मशहूर नहीं करती (घर का भेद हमेशा पोशीदा रखती है) खाने तक नहीं चुराती घर में कूड़ा कचरा नहीं छोड़ती। मगर एक दिन ऐसा हुआ कि लोग मक्खन निकालने को दूध मथ रहे थे (सुबह ही सुबह) अबू ज़रआ बाहर गया अचानक उसने एक औरत देखी जिसके दो बच्चे चीतों की तरह उसकी कमर के तले दो अनारों से खेल रहे थे (मुराद उसकी दोनों छातियाँ हैं जो अनार की तरह थीं। अबू ज़रआ ने मुझको तलाक़ देकर उस औरत से निकाह कर लिया। उसके बाद मैंने एक और शरीफ़ सरदार से निकाह कर लिया जो घोड़े का अच्छा सवार, उम्दह नेज़ा बाज़ है, उसने भी मुझको बहुत से जानवर दे दिये हैं और हर क़िस्म के अस्बाब में से एक एक जोड़ दिया हुआ है और मुझसे कहा करता है कि उम्मे ज़रअ! ख़ूब खा पी, अपने अज़ीज़ व अक़रबा को भी ख़ूब खिला पिला तेरे लिये आम इजाज़त है मगर ये सबकुछ भी जो मैंने तुझको दिया हुआ है अगर इकट्ठा करूँ तो तेरे पहले शौहर अबू ज़रआ ने जो तुझको दिया था, उसमें का एक छोटा बर्तन भी न भरे।

رَجُلاً سَرِيًّا، رَكِبَ شَرِيًّا وَأَخَذَ خَطِّيًّا، وَأَرَاحَ عَلَيَّ نَعَمًا ثَرِيًّا، وَأَعْطَانِي مِنْ كُلِّ رَائِحَةٍ زَوْجًا، وَقَالَ كُلِي أُمَّ زَرْعٍ. وَمِيرِي أَهْلَكِ قَالَتْ فَلَوْ جَمَعْتُ كُلَّ شَيْءٍ أَعْطَانِيهِ مَا بَلَغَ أَصْغَرَ آنِيَةِ أَبِي زَرْعٍ قَالَتْ عَائِشَةُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((كُنْتُ لَكِ كَأَبِي زَرْعٍ لأُمِّ زَرْعٍ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ قَالَ سَعِيدُ بْنُ سَلَمَةَ عَنْ هِشَامٍ: وَلاَ تُعَشِّشُ بَيْتَنَا تَعْشِيشًا. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ وَقَالَ بَعْضُهُمْ فَأَتَقَمَّحُ بِالْمِيمِ وَهَذَا أَصَحُّ.

तश्रीह : या'नी अबू ज़रआ के माल के सामने ये सारा माल बे हक़ीक़त है मगर मैं तुझको अबू ज़रआ की तरह तलाक़ देने वाला नहीं हूँ। हज़रत आइशा (रज़ि.) कहती हैं कि ये सारा क़िस्सा सुनाने के बाद आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि ऐ आइशा रज़ि)! मैं भी तेरे लिये ऐसा शौहर हूँ जैसे अबू ज़रआ उम्मे ज़रआ के लिये था। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा हज़रत सईद बिन सलमा ने भी इस हदीष़ को हिशाम से रिवायत किया है (उसमें लौण्डी के ज़िक्र में) अल्फ़ाज़ **वला तम्लउ बैतना तअशीशन** की जगह **वला तुअश्शिशु बैतना तअशीशन** के लफ़्ज़ हैं (मा'नी वही हैं कि वो लौण्डी हमारे घर में कूड़ा कचरा रखकर उसे मैला कुचेला नहीं करती। कुछ ने उसे लफ़्ज़े अनीक़ से पढ़ा है जिसके मा'नी ये होंगे कि वो हमसे कभी दग़ा फ़रेब नहीं करती)। नेज़ हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि (अल्फ़ाज़ **व अशरब फ़त्फ़ख़ु** में) कुछ लोगों ने **फ़त्क़मह** मीम के साथ पढ़ा है और ये ज़्यादा सहीह है।

मत़लब ये कि उसका शौहर बख़ील है जिससे कुछ फ़ायदे की उम्मीद नहीं दूसरे ये है कि वो बदखुल्क़ आदमी है महज़ बेकार।

या मैं डरती हूँ कि मेरे शौहर को कहीं ख़बर न हो जाए और वो मुझे तलाक़ दे दे जबकि मैं उसको छोड़ भी नहीं सकती। मगर मेरे लिये ख़ामोश रहना ही बेहतर है।

न तलाक़ मिले कि दूसरा शौहर कर लूँ न उस शौहर से कोई सुख मिलना है।

या'नी आया कि सो रहा घर गृहस्थी से उसे कुछ मतलब नहीं। या तो आते ही मुझ पर चढ़ बैठता है न कलिमा न कलाम न बोसा व किनार।

मत़लब ये कि बड़ा पेटू है मगर मेरे लिये निकम्मा।

या'नी अव्वल तो शहवत कम, औरत का मतलब पूरा नहीं करता उस पर बद ख़ू की बात करो तो काट खाने पर मौजूद, मारने कूटने पर तैयार।

ज़ा'फ़रान का तर्जुमा वैसे बा मुहावरा कर दिया वरना ज़ुरुम्ब एक पेड़ का छिलका है जो ज़ाफ़रान की तरह ख़ुश्बूदार और रंगदार होता है। उसने अपने शौहर की ता'रीफ़ की कि ज़ाहिरी और बातिनी उसके दोनों अख़्लाक़ बहुत अच्छे हैं।

इसलिये ऐसे लोग जहाँ सलाह व मश्वरा के लिये बुलाते हैं वहाँ उसकी राय पर अमल करते हैं।

ताकि मेहमान लोग आएं तो उनका गोश्त और दूध उनको तैयार मिले।

ये बाजा मेहमानों के आने पर ख़ुशी से बजाया जाता था कि ऊँट समझ जाते कि अब हम मेहमानों के लिये काटे जाएँगे।

या'नी छरहरे जिस्म वाला नाज़ुक कमर वाला जो सोते वक़्त बिस्तर पर टिकती है।

कि सौकन उसकी ख़ूबसूरती और अदब व लियाक़त पर रश्क करके जली जाती है।

हमेशा घर को झाड़ पोंछकर साफ़ सुथरा रखती है अलग़र्ज़ सारा घर नूरुन अला नूर है। अबू ज़रआ से लेकर उसकी माँ बेटी बेटा लौण्डी बांदी सब फ़र्दे फ़रीद हैं।

٥١٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا هِشَامٌ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ الْحَبَشُ يَلْعَبُونَ بِحِرَابِهِمْ فَسَتَرَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنَا أَنْظُرُ، فَمَا زِلْتُ أَنْظُرُ حَتَّى كُنْتُ أَنَا أَنْصَرِفُ، فَاقْدُرُوا قَدْرَ الْجَارِيَةِ الْحَدِيثَةِ السِّنِّ تَسْمَعُ اللَّهْوَ.

5190. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उर्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ फ़ौजी खेल का नेज़ाबाज़ी से मुज़ाहिरा कर रहे थे, तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (अपने जिस्मे मुबारक से) मेरे लिये पर्दा किया और मैं वो खेल देखती रही। मैंने उसे देर तक देखा और ख़ुद ही उकता कर लौट आई। अब तुम ख़ुद समझ लो कि एक कम उम्र लड़की खेल को कितनी देर देख

सकती है और उसमें दिलचस्पी ले सकती है। (राजेअ : 454) [راجع: ٤٥٤]

तश्रीह : हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) का मतलब ये है कि आँहज़रत (ﷺ) के अख़्लाक़े करीमाना ऐसे बेहतर अपनी बीवियों के साथ थे कि फ़न्ने हर्ब ख़ुद देखते और दिखाते थे ताकि वक़्ते ज़रूरत पर औरत भी अपना क़दम पीछे न हटाएँ। इस हदीष से ये भी निकला कि औरत को ग़ैर मर्दों की तरफ़ देखना जाइज़ है बशर्ते कि बदनिय्यती और शहवत की राह से न हो। इस हदीष से ये भी निकला कि मसाजिद मे दुनिया की कोई जाइज़ बात करना मना नहीं है बशर्ते कि शोरो-गुल न हो।

बाब 84 : आदमी अपनी बेटी को उसके शौहर के मुक़द्दमा में नसीहत करे तो कैसा है?

٨٤- باب مَوْعِظَةِ الرَّجُلِ ابْنَتَهُ لِحَالِ زَوْجِهَا

5191. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा कि मुझे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी षौर ने ख़बर दी और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि बहुत दिनों तक मेरे दिल में ख़्वाहिश रही कि मैं उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की उन दो बीवियों के बारे में पूछूँ जिनके बारे में अल्लाह ने ये आयत नाज़िल की थी। इन ततूबा इलल्लाहि फ़क़द सग़त क़ुलूबुकुमा अल्अख़। एक मर्तबा उन्होंने हज्ज किया और उनके साथ मैंने भी हज्ज किया। एक जगह जब वो रास्ते से हटकर (क़ज़ा-ए-हाजत के लिये) गये तो मैं भी एक बर्तन में पानी लेकर उनके साथ रास्ते से हट गया। फिर उन्होंने क़ज़ा-ए-हाजत की और वापस आए तो मैंने उनके हाथों पर पानी डाला, फिर उन्होंने वुज़ू किया तो मैंने उस वक़्त उनसे पूछा कि या अमीरल मोमिनीन! नबी करीम (ﷺ) की बीवियों में वो दो कौन हैं जिनके बारे में अल्लाह ने ये इर्शाद फ़र्माया है कि इन ततुबा इलल्लाहि फ़क़द सग़त क़ुलूबुकुमा। उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने इस पर कहा, ऐ इब्ने अब्बास (रज़ि.)! तुम पर हैरत है वो आइशा और हफ़्सा (रज़ि.) हैं। फिर उमर (रज़ि.) ने तफ़्सील के साथ हदीष बयान करनी शुरू की। उन्होंने कहा कि मैं और मेरे एक अंसारी पड़ौसी जो बनू उमय्या बिन ज़ैद से थे और अवाली मदीना में रहते थे। हमने (अवाली से) रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिये बारी मुक़र्रर कर रखी थी। एक दिन वो हाज़िरी देते और एक दिन मैं हाज़िरी देता, जब मैं हाज़िर होता तो उस दिन की तमाम ख़बरें जो वह्य वग़ैरह के बारे में होतीं लाता (और अपने पड़ौसी से

٥١٩١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي ثَوْرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ أَزَلْ حَرِيصًا عَلَى أَنْ أَسْأَلَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ عَنِ الْمَرْأَتَيْنِ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّتَيْنِ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا﴾ حَتَّى حَجَّ وَحَجَجْتُ مَعَهُ، وَعَدَلَ وَعَدَلْتُ مَعَهُ بِإِدَاوَةٍ، فَتَبَرَّزَ، ثُمَّ جَاءَ فَسَكَبْتُ عَلَى يَدَيْهِ مِنْهَا فَتَوَضَّأَ، فَقُلْتُ لَهُ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ مَنِ الْمَرْأَتَانِ مِنْ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّتَانِ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا﴾ قَالَ: وَاعَجَبًا لَكَ يَا ابْنَ عَبَّاسٍ، هُمَا عَائِشَةُ وَحَفْصَةُ. ثُمَّ اسْتَقْبَلَ عُمَرُ الْحَدِيثَ يَسُوقُهُ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَجَارٌ لِي مِنَ الأَنْصَارِ فِي بَنِي أُمَيَّةَ بْنِ زَيْدٍ وَهُمْ مِنْ عَوَالِي الْمَدِينَةِ، وَكُنَّا نَتَنَاوَبُ النُّزُولَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَنْزِلُ

يَوْمًا وَأَنْزِلُ يَوْمًا، فَإِذَا نَزَلْتُ جِئْتُهُ بِمَا حَدَثَ مِنْ خَبَرِ ذَلِكَ الْيَوْمِ مِنَ الْوَحْيِ أَوْ غَيْرِهِ، وَإِذَا نَزَلَ فَعَلَ مِثْلَ ذَلِكَ، وَكُنَّا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ نَغْلِبُ النِّسَاءَ، فَلَمَّا قَدِمْنَا عَلَى الأَنْصَارِ إِذَا قَوْمٌ تَغْلِبُهُمْ نِسَاؤُهُمْ، فَطَفِقَ نِسَاؤُنَا يَأْخُذْنَ مِنْ أَدَبِ نِسَاءِ الأَنْصَارِ. فَصَخِبْتُ عَلَى امْرَأَتِي فَرَاجَعَتْنِي، فَأَنْكَرْتُ أَنْ تُرَاجِعَنِي قَالَتْ: وَلِمَ تُنْكِرُ أَنْ أُرَاجِعَكَ؟ فَوَاللهِ إِنَّ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُرَاجِعْنَهُ وَإِنَّ إِحْدَاهُنَّ لَتَهْجُرُهُ الْيَوْمَ حَتَّى اللَّيْلِ فَأَفْزَعَنِي ذَلِكَ وَقُلْتُ لَهَا: قَدْ خَابَ مَنْ فَعَلَ ذَلِكَ مِنْهُنَّ. ثُمَّ جَمَعْتُ عَلَيَّ ثِيَابِي، فَنَزَلْتُ فَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ فَقُلْتُ لَهَا: أَيْ حَفْصَةُ أَتُغَاضِبُ إِحْدَاكُنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْيَوْمَ حَتَّى اللَّيْلِ؟ قَالَتْ: نَعَمْ. فَقُلْتُ: قَدْ خِبْتِ وَخَسِرْتِ، أَفَتَأْمَنِينَ أَنْ يَغْضَبَ اللهُ لِغَضَبِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَهْلِكِي؟، لاَ تَسْتَكْثِرِي النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلاَ تُرَاجِعِيهِ فِي شَيْءٍ وَلاَ تَهْجُرِيهِ، وَسَلِينِي مَا بَدَا لَكِ وَلاَ يَغُرَّنَّكِ أَنْ كَانَتْ جَارَتُكِ أَوْضَأَ مِنْكِ وَأَحَبَّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُرِيدُ عَائِشَةَ قَالَ عُمَرُ: وَكُنَّا قَدْ تَحَدَّثْنَا أَنَّ غَسَّانَ تُنْعِلُ الْخَيْلَ لِغَزْوِنَا، فَنَزَلَ صَاحِبِي الأَنْصَارِيُّ يَوْمَ نَوْبَتِهِ، فَرَجَعَ إِلَيْنَا عِشَاءً فَضَرَبَ بَابِي ضَرْبًا شَدِيدًا وَقَالَ:

बयान करता) और जिस दिन वो ह़ाज़िर होते तो वो भी ऐसे ही करते। हम क़ुरैशी लोग अपनी औ़रतों पर ग़ालिब थे लेकिन जब हम मदीना तशरीफ़ लाए तो ये लोग ऐसे थे कि औ़रतों से मग़लूब थे, हमारी औ़रतों ने भी अंस़ार की औ़रतों का त़रीक़ा सीखना शुरू कर दिया। एक दिन मैंने अपनी बीवी को डांटा तो उसने भी मेरा तुर्की ब तुर्की जवाब दिया। मैंने उसके इस त़रह जवाब देने पर नागवारी का इज़्हार किया तो उसने कहा कि मेरा जवाब देना तुम्हें बुरा क्यूँ लगता है, अल्लाह की क़सम नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाज भी उनको जवाब दे देती हैं और कुछ तो आँह़ज़रत (ﷺ) से एक दिन रात तक अलग रहती हैं। मैं इस बात पर कांप उठा और कहा कि उनमें से जिसने भी ये मामला किया यक़ीनन वो नामुराद हो गई। फिर मैंने अपने कपड़े पहने और (मदीना के लिये) रवाना हुआ फिर मैं ह़फ़्स़ा (रज़ि.) के घर गया और मैंने उससे कहा ऐ ह़फ़्स़ा (रज़ि.)! क्या तुममें से कोई भी नबी करीम (ﷺ) से एक दिन रात तक ग़ुस़्स़ा रहती है? उन्होंने कहा कि जी हाँ! कभी (ऐसा हो जाता है) मैंने उस पर कहा कि फिर तुमने अपने आपको ख़सारा में डाल लिया और नामुराद हुई। क्या तुम्हें उसका कोई डर नहीं कि नबी करीम (ﷺ) के ग़ुस़्स़े की वजह से अल्लाह तुम पर ग़ुस़्स़ा हो जाए और फिर तुम तन्हा ही हो जाओगी। ख़बरदार! हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से मुत़ालबात न किया करो न किसी मामले में आँह़ज़रत (ﷺ) को जवाब दिया करो और न आँह़ज़रत (ﷺ) को छोड़ा करो। अगर तुम्हें कोई ज़रूरत हो तो मुझसे मांग लिया करो। तुम्हारी सौकन जो तुमसे ज़्यादा ख़ूबस़ूरत है और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को तुमसे ज़्यादा प्यारी है, उनकी वजह से तुम किसी ग़लत़फ़हमी में न मुब्तला हो जाना। उनका इशारा आ़इशा (रज़ि.) की त़रफ़ था। उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें मा'लूम हुआ था कि मुल्के ग़स्सान हम पर ह़मला के लिये फ़ौजी तैयारियाँ कर रहा है। मेरे अंस़ारी साथी अपनी बारी पर मदीना मुनव्वरा गये हुए थे। वो रात गये वापस आए और मेरे दरवाज़े पर बड़ी ज़ोर ज़ोर से दस्तक दी और कहा कि क्या उ़मर (रज़ि.) घर में हैं। मैं घबराकर बाहर निकला तो उन्होंने कहा आज तो बड़ा ह़ादस़ा हो गया। मैंने कहा क्या बात हुई, क्या ग़स्सानी चढ़ आए हैं?

उन्होंने कहा कि नहीं, हादषा उससे भी बड़ा और उससे भी ज़्यादा ख़ौफ़नाक है। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अज़्वाजे मुतहहरात को तलाक़ दे दी है। मैंने कहा कि हफ़्सा तो ख़ासिर व नामुराद हुई। मुझे तो उसका ख़तरा लगा ही रहता था कि इस तरह का कोई हादषा जल्द ही होगा। फिर मैंने फ़ज्र की नमाज़ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के साथ पढ़ी (नमाज़ के बाद) हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अपने एक बालाख़ाने में चले गये और वहाँ तन्हाई इख़्तियार कर ली। मैं हफ़्सा के पास गया तो वो रो रही थी। मैंने कहा अब रोती क्या हो, मैंने तुम्हें पहले ही मुतनब्बह कर दिया था। क्या आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें तलाक़ दे दी है? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उस वक़्त बालाख़ाने में तन्हा तशरीफ़ रखते थे। मैं वहाँ से निकला और मिम्बर के पास आया। उसके गिर्द कुछ सहाबा किराम (रज़ि.) मौजूद थे और उनमे से कुछ रो रहे थे। थोड़ी देर तक मैं उनके साथ बैठा रहा। उसके बाद मेरा ग़म मुझ पर ग़ालिब आ गया और मैं उस बालाख़ाने के पास आया। जहाँ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) तशरीफ़ रखते थे। मैंने आँहज़रत (ﷺ) के एक हब्शी गुलाम से कहा कि उमर के लिये अंदर आने की इजाज़त ले लो। गुलाम अंदर गया और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से बातचीत करके वापस आ गया। उसने मुझसे कहा कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ की और आँहज़रत (ﷺ) से आपका ज़िक्र किया लेकिन आप ख़ामोश रहे। चुनाँचे मैं वापस चला आया और फिर उन लोगों के साथ बैठ गया जो मिम्बर के पास मौजूद थे। मेरा ग़म मुझ पर ग़ालिब आया और दोबारा आकर मैंने गुलाम से कहा कि उमर (रज़ि.) के लिये इजाज़त ले लो। उस गुलाम ने वापस आकर फिर कहा कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) के सामने आपका ज़िक्र किया तो आँहज़रत (ﷺ) ख़ामोश रहे। मैं फिर वापस आ गया और मिम्बर के पास जो लोग मौजूद थे उनके साथ बैठ गया। लेकिन मेरा ग़म मुझ पर ग़ालिब आया और मैंने फिर आकर गुलाम से कहा कि उमर (रज़ि.) के लिये इजाज़त ले लो। गुलाम अंदर गया और वापस आकर जवाब दिया कि मैंने आपका ज़िक्र आँहज़रत (ﷺ) से किया और आँहज़रत (ﷺ) ख़ामोश रहे। मैं वहाँ से वापस आ रहा था कि गुलाम ने मुझे पुकारा और

أَنَّمْ هُوَ؟ فَفَزِعْتُ فَخَرَجْتُ إِلَيْهِ، فَقَالَ: قَدْ حَدَثَ الْيَوْمَ أَمْرٌ عَظِيمٌ، قُلْتُ : مَا هُوَ؟ أَجَاءَ غَسَّانُ؟ قَالَ: لاَ بَلْ أَعْظَمُ مِنْ ذَلِكَ وَأَهْوَلُ. طَلَّقَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِسَاءَهُ. فَقُلْتُ خَابَتْ حَفْصَةُ وَخَسِرَتْ. قَدْ كُنْتُ أَظُنُّ هَذَا يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ. فَجَمَعْتُ عَلَيَّ ثِيَابِي، فَصَلَّيْتُ صَلاَةَ الْفَجْرِ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَدَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَشْرُبَةً لَهُ فَاعْتَزَلَ فِيهَا، وَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ فَإِذَا هِيَ تَبْكِي، فَقُلْتُ مَا يُبْكِيكِ؟ أَلَمْ أَكُنْ حَذَّرْتُكِ هَذَا؟ أَطَلَّقَكُنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَتْ: لاَ أَدْرِي، هَا هُوَ ذَا مُعْتَزِلٌ فِي الْمَشْرُبَةِ، فَخَرَجْتُ فَجِئْتُ إِلَى الْمِنْبَرِ فَإِذَا حَوْلَهُ رَهْطٌ يَبْكِي بَعْضُهُمْ فَجَلَسْتُ مَعَهُمْ قَلِيلاً، ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَجِدُ فَجِئْتُ الْمَشْرُبَةَ الَّتِي فِيهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ لِغُلاَمٍ لَهُ أَسْوَدَ: اسْتَأْذِنْ لِعُمَرَ، فَدَخَلَ الْغُلاَمُ فَكَلَّمَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ: كَلَّمْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ ذَكَرْتُكَ لَهُ فَصَمَتَ، فَانْصَرَفْتُ حَتَّى جَلَسْتُ مَعَ الرَّهْطِ الَّذِينَ عِنْدَ الْمِنْبَرِ. ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَجِدُ فَجِئْتُ فَقُلْتُ لِلْغُلاَمِ اسْتَأْذِنْ لِعُمَرَ، فَدَخَلَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ : قَدْ ذَكَرْتُكَ لَهُ فَصَمَتَ، فَرَجَعْتُ فَجَلَسْتُ مَعَ الرَّهْطِ الَّذِينَ عِنْدَ

कहा कि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने तुम्हें इजाज़त दे दी है। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप उस बान की चारपाई पर जिससे चटाई बनाई जाती है लेटे हुए थे। उस पर कोई बिस्तर भी नहीं था। बान के निशानात आपके पहलू मुबारक पर पड़े हुए थे। जिस तकिये पर आप टेक लगाए हुए थे उसमें छाल भरी हुई थी। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को सलाम किया और खड़े ही खड़े अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आपने अपनी अज़्वाज को तलाक़ दे दी है? आँहुज़ूर (ﷺ) ने मेरी तरफ़ नज़र उठाई और फ़र्माया नहीं। मैं (ख़ुशी की वजह से) कह उठा। अल्लाहु अकबर। फिर मैंने खड़े ही खड़े आँहज़रत (ﷺ) को ख़ुश करने के लिये कहा कि या रसूलल्लाह! आपको मा'लूम है हम क़ुरैश के लोग औरतों पर ग़ालिब रहा करते थे। फिर जब हम मदीना आए तो यहाँ के लोगो पर उनकी औरतें ग़ालिब थीं। आँहज़रत (ﷺ) इस पर मुस्कुरा दिये। फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपको मा'लूम है मैं हफ़्सा के पास एक मर्तबा गया था और उससे कह आया था कि अपनी सौकन की वजह से जो तुमसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और तुमसे ज़्यादा रसूलुल्लाह (ﷺ) को अ़ज़ीज़ है, धोखे में मत रहना। उनका इशारा आइशा (रज़ि.) की तरफ़ था। इस पर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) दोबारा मुस्कुरा दिये। मैंने जब आँहुज़ूर (ﷺ) को मुस्कुराते देखा तो बैठ गया फिर नज़र उठाकर मैंने आँहुज़ूर (ﷺ) के घर का जाइज़ा लिया। अल्लाह की क़सम! मैंने आँहज़रत (ﷺ) के घर में कोई चीज़ ऐसी नहीं देखी जिस पर नज़र रुकती सिवा तीन चमड़ों के (जो वहाँ मौजूद थे) मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह से दुआ कीजिए कि वे आपकी उम्मत को फ़राख़ी अ़ता करे। फ़ारस और रोम को फ़राख़ी और वुस्अ़त हासिल है और उन्हें दुनिया दी गई है हालाँकि वो अल्लाह की इबादत नहीं करते। आँहज़रत (ﷺ) अभी तक टेक लगाए हुए थे, लेकिन अब सीधे बैठ गये और फ़र्माया इब्ने ख़त्ताब! तुम्हारी नज़र में भी ये चीज़ें अहमियत रखती हैं, ये तो वो लोग हैं जिन्हें जो कुछ मिलने वाली थी सब इसी दुनिया में दे दी गई है। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे लिये अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ कर दीजिए (कि मैंने दुनियावी शान शौकत के बारे में

الْمِنْبَرِ، ثُمَّ غَلَبَنِي مَا أَجِدُ، فَجِئْتُ الْغُلاَمَ فَقُلْتُ: اسْتَأْذِنْ لِعُمَرَ، فَدَخَلَ ثُمَّ رَجَعَ إِلَيَّ فَقَالَ قَدْ ذَكَرْتُكَ لَهُ فَصَمَتَ، فَلَمَّا وَلَّيْتُ مُنْصَرِفًا قَالَ: إِذَا الْغُلاَمُ يَدْعُونِي فَقَالَ: قَدْ أَذِنَ لَكَ النَّبِيُّ ﷺ. فَدَخَلْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَإِذَا هُوَ مُضْطَجِعٌ عَلَى رُمَالِ حَصِيرٍ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ فِرَاشٌ قَدْ أَثَّرَ الرِّمَالُ بِجَنْبِهِ مُتَّكِئًا عَلَى وِسَادَةٍ مِنْ أَدَمٍ حَشْوُهَا لِيفٌ، فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ ثُمَّ قُلْتُ وَأَنَا قَائِمٌ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَطَلَّقْتَ نِسَاءَكَ؟ فَرَفَعَ إِلَيَّ بَصَرَهُ فَقَالَ: ((لاَ)) فَقُلْتُ: اللهُ أَكْبَرُ. ثُمَّ قُلْتُ: وَأَنَا قَائِمٌ أَسْتَأْنِسُ: يَا رَسُولَ اللهِ، لَوْ رَأَيْتَنِي وَكُنَّا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ نَغْلِبُ النِّسَاءَ فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ إِذَا قَوْمٌ تَغْلِبُهُمْ نِسَاؤُهُمْ، فَتَبَسَّمَ النَّبِيُّ ﷺ ثُمَّ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، لَوْ رَأَيْتَنِي وَدَخَلْتُ عَلَى حَفْصَةَ فَقُلْتُ لَهَا لاَ يَغُرَّنْكِ أَنْ كَانَتْ جَارَتُكِ أَوْضَأَ مِنْكِ وَأَحَبَّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يُرِيدُ عَائِشَةَ. فَتَبَسَّمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَبَسُّمَةً أُخْرَى فَجَلَسْتُ حِينَ رَأَيْتُهُ تَبَسَّمَ، فَرَفَعْتُ بَصَرِي فِي بَيْتِهِ فَوَاللهِ مَا رَأَيْتُ فِي بَيْتِهِ شَيْئًا يَرُدُّ الْبَصَرَ غَيْرَ أَهَبَةٍ ثَلاَثَةٍ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، ادْعُ اللهَ فَلْيُوَسِّعْ عَلَى أُمَّتِكَ فَإِنَّ فَارِسًا وَالرُّومَ قَدْ وُسِّعَ عَلَيْهِمْ وَأُعْطُوا الدُّنْيَا وَهُمْ لاَ يَعْبُدُونَ اللهَ. فَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

ये ग़लत ख़्याल दिल में रखा) चुनाँचे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने अपनी अज़्वाज़े मुत़हहरात को इसी वजह से उन्तीस दिन तक अलग रखा कि ह़फ़्सा ने आँहुज़ूर (ﷺ) का राज़ आइशा (रज़ि.) से कह दिया था। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था कि एक महीना तक मैं अपनी अज़्वाज के पास नहीं जाऊँगा क्योंकि जब अल्लाह तआ़ला ने आँह़ज़रत (ﷺ) पर इताब किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) को उसका बहुत रंज हुआ (और आपने अज़्वाज से अलग रहने का फ़ैसला किया) फिर जब उन्तीसवीं रात गुज़र गई तो आँह़ज़रत (ﷺ) आइशा (रज़ि.) के घर तशरीफ़ ले गये और आपसे इब्तिदा की। आइशा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपने क़सम खाई थी कि हमारे यहाँ एक महीने तक तशरीफ़ नहीं लाएँगे और अभी तो उन्तीस दिन ही गुज़रे हैं मैं तो एक-एक दिन गिन रही थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये महीना उन्तीस का है। वो महीना उन्तीस ही का था। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर अल्लाह तआ़ला ने आयते तख़्यीर नाज़िल की और आँहुज़ूर (ﷺ) अपनी तमाम अज़्वाज में सबसे पहले मेरे पास तशरीफ़ लाए (और मुझसे अल्लाह की वह्य का ज़िक्र किया) तो मैंने आँहुज़ूर (ﷺ) को ही पसंद किया। उसके बाद आँहुज़ूर (ﷺ) ने अपनी तमाम दूसरी अज़्वाज को इख़्तियार दिया और सबने वही कहा जो ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) कह चुकी थीं।
(राजेअ: 89)

وَكَانَ مُتَّكِئًا فَقَالَ ((أَوَ فِي هَذَا أَنْتَ يَا ابْنَ الْخَطَّابِ؟ إِنَّ أُولَئِكَ قَوْمٌ قَدْ عُجِّلُوا طَيِّبَاتِهِمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا))، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، اسْتَغْفِرْلِي. فَاعْتَزَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِسَاءَهُ، مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ الْحَدِيثِ حِينَ أَفْشَتْهُ حَفْصَةُ إِلَى عَائِشَةَ تِسْعًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً، وَكَانَ قَالَ : ((مَا أَنَا بِدَاخِلٍ عَلَيْهِنَّ شَهْرًا)) مِنْ شِدَّةِ مَوْجِدَتِهِ عَلَيْهِنَّ. حِينَ عَاتَبَهُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ فَلَمَّا مَضَتْ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ لَيْلَةً دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَبَدَأَ بِهَا، فَقَالَتْ لَهُ عَائِشَةُ : يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّكَ كُنْتَ قَدْ أَقْسَمْتَ أَنْ لاَ تَدْخُلَ عَلَيْنَا شَهْرًا، وَإِنَّمَا أَصْبَحْتَ مِنْ تِسْعٍ وَعِشْرِينَ لَيْلَةً أَعُدُّهَا عَدًّا، فَقَالَ : ((الشَّهْرُ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ))، فَكَانَ ذَلِكَ الشَّهْرُ تِسْعًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً، قَالَتْ عَائِشَةُ : ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى آيَةَ التَّخْيِيرِ فَبَدَأَ بِي أَوَّلَ امْرَأَةٍ مِنْ نِسَائِهِ فَاخْتَرْتُهُ، ثُمَّ خَيَّرَ نِسَاءَهُ كُلَّهُنَّ فَقُلْنَ مِثْلَ مَا قَالَتْ عَائِشَةُ. [راجع: ٨٩]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी बेटी ह़फ़्सा (रज़ि.) से कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) से कुछ मत कहा कर आपके यहाँ रुपया अशरफ़ी नहीं है अगर तुझको किसी चीज़ की ह़ाजत हो, तेल ही दरकार हो तो मुझसे कहो मैं ला दूँगा, आँह़ज़रत (ﷺ) से मत कहना। यहाँ से बाब का मत़लब निकलता है कि शौहर के बारे में बाप का अपनी बेटी को समझाना जाइज़ है बल्कि ज़रूरी है।

जिसमें अज़्वाजे मुत़हहरात को आँहुज़ूर (ﷺ) के साथ रहने या अलग हो जाने का इख़्तियार दिया गया था।

बाब 85 : शौहर की इजाज़त से औ़रत को नफ़्ली रोज़ा रखना जाइज़ है

٨٥- باب صَوْمِ الْمَرْأَةِ بِإِذْنِ زَوْجِهَا تَطَوُّعًا

5192. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा

٥١٩٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا

हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर शौहर घर पर मौजूद है तो कोई औरत उसकी इजाज़त के बग़ैर (नफ़्ली) रोज़ा न रखे। (राजेअ़ : 2066)

عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَصُومُ الْمَرْأَةُ وَبَعْلُهَا شَاهِدٌ، إِلاَّ بِإِذْنِهِ)). [راجع: ٢٠٦٦]

तश्रीह : नफ़्ली रोज़ा नफ़्ली इ़बादत है और शौहर की इत़ाअ़त औरत के लिये फ़र्ज़ है। इसलिये नफ़्ली इ़बादत से फ़र्ज़ की अदायगी ज़रूरी है। मर्द दिन में अगर अपनी बीवी से मिलाप चाहे तो औरत को नफ़्ली रोज़ा ख़त्म करना होगा। लिहाज़ा पहले ही इजाज़त लेकर अगर रोज़ा रखे तो बेहतर है।

बाब 86 : जो औरत गुस्सा होकर अपने शौहर के बिस्तर से अलग होकर रात गुज़ारे, उसकी बुराई का बयान

٨٦- باب إِذَا بَاتَتِ الْمَرْأَةُ مُهَاجِرَةً فِرَاشَ زَوْجِهَا

5193. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे सुलैमान ने, उनसे अबू ह़ाज़िम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब शौहर अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और वो आने से (नाराज़गी की वजह से) इंकार कर दे तो फ़रिश्ते सुबह तक उस पर ला'नत भेजते हैं। (राजेअ़ : 3237)

٥١٩٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ عَنْ شُعْبَةَ عَنْ سُلَيْمَانَ عَنْ أَبِي حَازِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ، فَأَبَتْ أَنْ تَجِيءَ، لَعَنَتْهَا الْمَلاَئِكَةُ حَتَّى تُصْبِحَ)).[راجع: ٣٢٣٧]

औरत का गुस्सा बजा हो या बेजा मगर इत़ाअ़त के पेशेनज़र उसका फ़र्ज़ है शौहर के बिस्तर पर ह़ाज़िरी देना अगर वो ख़फ़्गी मे रात को ऐसा न करे तो बिला शक इस वई़दे शदीद की मुस्तह़िक़ है। औरत के लिये शौहर की इत़ाअ़त ही उसकी ज़िंदगी को बेहतर बना सकती है।

5194. हमसे मुहम्मद बिन अ़रअ़रह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे ज़रारह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अगर औरत अपने शौहर से नाराज़गी की वजह से उसके बिस्तर से अलग थलग रात गुज़ारे तो फ़रिश्ते उस पर उस वक़्त तक ला'नत भेजते हैं जब तक वो अपनी उस ह़रकत से बाज़ न आ जाए। (राजेअ़ : 3237)

٥١٩٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ زُرَارَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا بَاتَتِ الْمَرْأَةُ مُهَاجِرَةً فِرَاشَ زَوْجِهَا، لَعَنَتْهَا الْمَلاَئِكَةُ حَتَّى تَرْجِعَ)). [راجع: ٣٢٣٧]

बाब 87 : औरत अपने शौहर के घर में आने की किसी ग़ैर मर्द को उसकी इजाज़त के बग़ैर इज़ाज़त न दे

٨٧- باب لاَ تَأْذَنِ الْمَرْأَةُ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا لأَحَدٍ إِلاَّ بِإِذْنِهِ

5195. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे

٥١٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया औ़रत के लिये जाइज़ नहीं कि अपने शौहर की मौजूदगी में उसकी इजाज़त के बग़ैर (नफ़्ली) रोज़ा रखे और औ़रत किसी को उसके घर में उसकी मर्ज़ी के बग़ैर आने की इजाज़त न दे और औ़रत जो कुछ भी अपने शौहर के माल मे से उसकी स़रीह इजाज़त के बग़ैर ख़र्च कर दे तो उसे भी उसका आधा ष़वाब मिलेगा। इस ह़दीष़ को अबुज़्ज़िनाद ने मूसा बिन अबी उ़ष़्मान से भी और उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने रिवायत किया है और इसमें स़िर्फ़ रोज़ा का ही ज़िक्र है। (राजेअ : 2066)

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ يَحِلُّ لِلْمَرْأَةِ أَنْ تَصُومَ وَزَوْجُهَا شَاهِدٌ إِلاَّ بِإِذْنِهِ، وَلاَ تَأْذَنَ فِي بَيْتِهِ إِلاَّ بِإِذْنِهِ، وَمَا أَنْفَقَتْ مِنْ نَفَقَةٍ عَنْ غَيْرِ أَمْرِهِ فَإِنَّهُ يُؤَدِّي إِلَيْهِ شَطْرُهُ)). وَرَوَاهُ أَبُو الزِّنَادِ أَيْضًا عَنْ مُوسَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ فِي الصَّوْمِ. [راجع: ٢٠٦٦]

तश्रीह़ : किसी ग़ैर मर्द का बग़ैर इजाज़त शौहर के घर में दाख़िल होना भी मना है। मुराद ये है कि औ़रत अपने शौहर के हुक्म बग़ैर उस माल में से ख़र्च करे जो शौहर ने उसको दे डाला है या'नी अपने माहवार में से जैसे कि अबू दाऊद की रिवायत में है कि औ़रत अपने शौहर का माल स़दक़ा नहीं कर सकती मगर हाँ अपनी ख़ूराक में से और ष़वाब दोनों को बराबर मिलेगा। वो ख़र्च भी मुराद है जो आ़दत के मुवाफ़िक़ हो जिसे सुनकर शौहर नाराज़ न हो।

5196. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि हमको तैमी ने ख़बर दी, उन्हें अबू उ़ष़्मान ने, उन्हें ह़ज़रत उसामा (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो उसमे दाख़िल होने वालों की अकष़रियत ग़रीबों की थी। मालदार (जन्नत के दरवाज़े पर ह़िसाब के लिये) रोक लिये गये थे अल्बत्ता जहन्नम वालों को जहन्नम में जाने का हुक्म दे दिया गया था और मैं जहन्नम के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो उसमें दाख़िल होने वाली ज़्यादा औ़रतें थीं। (दीगर मक़ाम : 6547)

٥١٩٦ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ أَخْبَرَنَا التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قُمْتُ عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ فَكَانَتْ عَامَّةَ مَنْ دَخَلَهَا الْمَسَاكِينُ، وَأَصْحَابُ الْجَدِّ مَحْبُوسُونَ، غَيْرَ أَنَّ أَصْحَابَ النَّارِ قَدْ أُمِرَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ، وَقُمْتُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا النِّسَاءُ)). [طرفه في : ٦٥٤٧].

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ये है कि औ़रतें चूँकि अकष़र शौहर की इजाज़त के बिना ग़ैर लोगों को घर में बुला लेती हैं इस वजह से दोज़ख़ की सज़ावार हुईं। आँह़ज़रत (ﷺ) का ये देखना आ़लमे रुअया में था। आपने जो देखा वो बरह़क़ है और ग़रीब दीनदार वो बहिश्त मे जाने के पहले सज़ावार हैं मालदार मुसलमानों का दाख़ला ग़ुरबा-ए-मुस्लिमीन के बाद होगा।

बाब 89 : अ़शीर की नाशुक्री की सज़ा अ़शीर शौहर को कहते हैं अ़शीर शरीक या'नी साझी को भी कहते हैं

ये लफ़्ज़ मुआ़शरे से निकला है जिसके मा'नी ख़लत़ मलत़ या'नी मिला देने के हैं। इस बाब में ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से रिवायत किया है।

٨٩ - باب كُفْرَانِ الْعَشِيرِ وَهُوَ الزَّوْجُ وَهُوَ الْخَلِيطُ مِنَ الْمُعَاشَرَةِ. فِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

5197. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हे ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें अ़ता बिन यसार ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में सूरज ग्रहण हुआ तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने लोगों के साथ उसकी नमाज़ पढ़ी। आपने बहुत लम्बा क़याम किया इतना लम्बा कि सूरह बक़रः पढ़ी जा सके। फिर त़वील रुकूअ़ किया। रुकूअ़ से सर उठाकर बहुत देर तक क़याम किया। ये क़याम पहले क़याम से कुछ कम था। फिर आपने दूसरा त़वील रुकूअ़ किया। ये रुकूअ़ त़वालत (लम्बाई) में पहले रुकूअ़ से कुछ कम था। फिर सर उठाया और सज्दा किया। फिर दोबारा क़याम किया और बहुत देर तक ह़ालते क़याम में रहे। ये क़याम पहली रकअ़त के क़याम से कुछ कम था। फिर त़वील (लम्बा) रुकूअ़ किया, ये रुकूअ़ पहले रुकूअ़ से कुछ कम त़वील था। फिर सर उठाया और त़वील क़याम किया। ये क़याम पहले क़याम से कुछ कम था। फिर रुकूअ़ किया, त़वील रुकूअ़। और ये रुकूअ़ पहले रुकूअ़ से कुछ कम त़वील था। फिर सर उठाया और सज्दे में गये। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो ग्रहण ख़त्म हो चुका था। उसके बाद आपने फ़र्माया कि सूरज और चाँद अल्लाह की निशानियों मे से दो निशाानियाँ हैं, उनमें ग्रहण किसी की मौत या किसी की ह़यात की वजह से नहीं होता। इसलिये जब तुम ग्रहण देखा तो अल्लाह को याद करो। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमने आपको देखा कि आपने अपनी जगह से कोई चीज़ बढ़कर ली। फिर हमने देखा कि आप हमसे हट गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने जन्नत देखी थी या (आँहुज़ूर ﷺ) ने ये फ़र्माया रावी को शक था) मुझे जन्नत दिखाई गई थी। मैंने उसका ख़ौशा तोड़ने के लिये हाथ बढ़ाया था और अगर मैं उसे तोड़ लेता तो तुम रहती दुनिया तक उसे खाते और मैंने दोज़ख़ देखी आजतक उससे ज़्यादा हैबतनाक मंज़र मैंने कभी नहीं देखा और मैंने देखा कि उसमें औरतों की ता'दाद ज़्यादा है। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ऐसा क्यूँ है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो शौहर की नाशुक्री करती है और उनके एह़सान का

٥١٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ أَنَّهُ قَالَ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ وَالنَّاسُ مَعَهُ، فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلاً نَحْوًا مِنْ سُورَةِ الْبَقَرَةِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلاً ثُمَّ رَفَعَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلاً وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلاً وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ قَامَ، فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلاً وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلاً وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ فَقَامَ قِيَامًا طَوِيلاً وَهُوَ دُونَ الْقِيَامِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَكَعَ رُكُوعًا طَوِيلاً وَهُوَ دُونَ الرُّكُوعِ الأَوَّلِ، ثُمَّ رَفَعَ ثُمَّ سَجَدَ، ثُمَّ انْصَرَفَ، وَقَدْ تَجَلَّتِ الشَّمْسُ فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللهِ، لاَ يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلاَ لِحَيَاتِهِ، فَإِذَا رَأَيْتُمْ ذَلِكَ فَاذْكُرُوا اللهَ)). قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، رَأَيْنَاكَ تَنَاوَلْتَ شَيْئًا فِي مَقَامِكَ هَذَا، ثُمَّ رَأَيْنَاكَ تَكَعْكَعْتَ، فَقَالَ: ((إِنِّي رَأَيْتُ الْجَنَّةَ أَوْ أُرِيتُ الْجَنَّةَ، فَتَنَاوَلْتُ مِنْهَا عُنْقُودًا، وَلَوْ أَخَذْتُهُ لأَكَلْتُمْ مِنْهُ مَا بَقِيَتِ الدُّنْيَا. وَرَأَيْتُ النَّارَ فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ مَنْظَرًا قَطُّ، وَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)). قَالُوا : لِمَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ:

((بِكُفْرِهِنَّ)) قِيلَ يَكْفُرْنَ بِاللهِ قَالَ: ((يَكْفُرْنَ الْعَشِيرَ وَيَكْفُرْنَ الإِحْسَانَ لَوْ أَحْسَنْتَ إِلَى إِحْدَاهُنَّ الدَّهْرَ ثُمَّ رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا قَالَتْ مَا رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ)).

इंकार करती हैं, अगर तुम उनमें से किसी एक के साथ ज़िंदगी भर भी हुस्ने सुलूक़ का मामला करो फिर भी तुम्हारी त़रफ़ से कोई चीज़ उसके लिये नागवारी ख़ातिर हुई तो कह देगी कि मैंने तुमसे कभी भलाई देखी ही नहीं।

तश्रीह : ह़दीष़ में नमाज़े कुसूफ़ का बयान है आख़िर में दोज़ख़ का एक नज़ारा पेश किया गया है जो नाफ़र्मान औरतों के बारे में है। इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित होता है औरतों की ये फ़ित़रत है जो बयान हुई इल्ला माशाअल्लाह बहुत कम नेकबख़्त औरतें ऐसी होती हैं जो शुक्रगुज़ार और इत़ाअ़त शिआ़र हों।

٥١٩٨ - حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ أَبِي رَجَاءٍ عَنْ عِمْرَانَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)). تَابَعَهُ أَيُّوبُ وَسَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ. [راجع: ٣٢٤١]

5198. हमसे उ़ष़्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने, उनसे इमरान ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने जन्नत मे झांक कर देखा तो उसके अकष़र रहने वाले ग़रीब लोग थे और मैंने दोज़ख़ में झांककर देखा तो उसके अंदर रहने वाली अकष़र औरतें थीं। इस रिवायत की मुताबअ़त अबू अय्यूब और सलम बिन ज़रीर ने की है। (राजेअ़ : 3241)

٩٠ - باب لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقٌّ. أَبُو جُحَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

बाब 90 : तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है

इस ह़दीष़ को अबू जुहैफ़ा (अब्दुल्लाह बिन वहब आमिरी) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्फ़ूअ़न रिवायत किया है।

٥١٩٩ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((يَا عَبْدَ اللهِ أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَصُومُ النَّهَارَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ؟)) قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ : ((فَلاَ تَفْعَلْ، صُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا)). [راجع: ١١٣١]

5199. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़ब्दुल्लाह! क्या मेरी ये ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम (रोज़ाना) दिन में रोज़े रखते हो और रात भर इबादत करते हो? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, रोज़े भी रखो और बिला रोज़े भी रहो। रात में इबादत भी करो और सोओ भी। क्योंकि तुम्हारे बदन का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है। (राजेअ़ : 1131)

तशरीह : अबू जुहैफ़ा आमिरी वफ़ाते नबवी (ﷺ) के वक़्त नाबालिग़ थे। बाद में उन्होंने कूफ़ा में क़याम किया और 74 हिजरी में कूफ़ा ही में वफ़ात पाई। इनकी रसूले करीम (ﷺ) से समाअत षाबित है।

बाब 91 : बीवी अपने शौहर के घर की हाकिम है

٩١- باب الْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ فِي بَيْتِ زَوْجِهَا

5200. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि हमको मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा अमीर (हाकिम) है, मर्द अपने घर वालों पर हाकिम है। औ़रत अपने शौहर के घर और उसके बच्चों पर हाकिम है। तुममें से हर एक हाकिम है और हर एक से उसकी रइयत के बारे में सवाल होगा। (राजेअ़ : 893)

٥٢٠٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالأَمِيرُ رَاعٍ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهِ، فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ)). [راجع: ٨٩٣]

इस ह़दीष़ की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से यूँ है कि जब हर एक से उसकी रइयत के बारे में बाज़पुर्श होगी तो बीवी से शौहर के घर के बारे में होगी कि उसने अपने शौहर के घर की निगरानी की या नहीं। इसी त़रह़ हर एक ज़िम्मेदार से सवाल किया जाएगा।

बाब 92 : सूरह निसा में अल्लाह तआ़ला का फ़र्माना कि, मर्द औ़रतों के ऊपर हाकिम हैं इसलिये कि अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ पर बड़ाई दी है. अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, बेशक अल्लाह बड़ी रफ़अ़त (बुलन्दी) वाला बड़ी अ़ज़्मत वाला है, तक

٩٢- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ - إِلَى قَوْلِهِ - إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا﴾

5201. हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे हुमैद ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात से एक महीना तक अलग रहे और अपने एक बालाख़ाने में क़याम किया। फिर आप (ﷺ) उन्तीस दिन के बाद घर में तशरीफ़ लाए तो कहा गया कि या रसूलल्लाह! आपने तो एक महीने के लिये अ़हद किया था आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये महीना उन्तीस का है। (राजेअ़ : 378)

٥٢٠١- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ قَالَ: حَدَّثَنِي حُمَيْدٌ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ آلَى رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ نِسَائِهِ شَهْرًا، وَقَعَدَ فِي مَشْرُبَةٍ لَهُ. فَنَزَلَ لِتِسْعٍ وَعِشْرِينَ، فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّكَ آلَيْتَ شَهْرًا، قَالَ: ((إِنَّ الشَّهْرَ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ)). [راجع: ٣٧٨]

बाब 93 : आँह़ज़रत (ﷺ) का औ़रतों को इस

٩٣- باب هِجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ

तरह पर छोड़ना कि उनके घरों ही में नहीं गये और मुआविया बिन हैदा से मर्फ़ूअन मरवी है (उसे अबू दाऊद वग़ैरह ने निकाला है) कि औरत का छोड़ना घर ही में हो मगर पहली हदीष़ (या'नी हज़रत अनस रज़ि की) ज़्यादा सहीह है।

نِسَاءَهُ فِي غَيْرِ بُيُوتِهِنَّ. وَيُذْكَرُ عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ حَيْدَةَ رَفَعَهُ ((غَيْرَ أَنْ لاَ تُهْجَرَ إِلاَّ فِي الْبَيْتِ)) وَالأَوَّلُ أَصَحُّ.

जिससे ये निकलता है कि दूसरे घर में जाकर रह जाना भी दुरुस्त है।

5202. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा और मुझसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन सैफ़ी ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा बिन अब्दुर्रहमान बिन हारिष़ ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) ने (एक वाक़िया की वजह से) क़सम खाई कि अपनी कुछ अज़्वाज के यहाँ एक महीना तक नहीं जाएँगे। फिर जब उन्तीस दिन गुज़र गये तो आँहज़रत (ﷺ) उनके पास सुबह के वक़्त गये या शाम के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया गया कि आपने तो क़सम खाई थी कि एक महीने तक नहीं आएँगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि महीना उन्तीस दिन का भी होता है। (राजेअ : 1910)

٥٢٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ ح. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ صَيْفِيٍّ أَنَّ عِكْرِمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْحَارِثِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ حَلَفَ لاَ يَدْخُلُ عَلَى بَعْضِ أَهْلِهِ شَهْرًا، فَلَمَّا مَضَى تِسْعَةٌ وَعِشْرُونَ يَوْمًا غَدَا عَلَيْهِنَّ أَوْ رَاحَ فَقِيلَ لَهُ: يَا نَبِيَّ اللهِ حَلَفْتَ أَنْ لاَ تَدْخُلَ عَلَيْهِنَّ شَهْرًا، قَالَ: ((إِنَّ الشَّهْرَ يَكُونُ تِسْعَةً وَعِشْرِينَ يَوْمًا)). [راجع: ١٩١٠]

5203. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मर्वान बिन मुआविया ने, कहा हमसे अबू यअफ़ूर ने बयान किया, कहा कि हमने अबुज़्ज़ुहा की मज्लिस मे (महीना पर) बहष़ की तो उन्होंने बयान किया कि हमसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि एक दिन सुबह हुई तो नबी करीम (ﷺ) की अज़्वाजे मुतहहरात रो रही थीं, हर ज़ोजा मुतहहरा के पास उनके घर वाले मौजूद थे। मस्जिद की तरफ़ गया तो वो भी लोगों से भरी हुई थी। फिर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आए और नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ऊपर गये तो आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त एक कमरे में तशरीफ़ रखते थे। उन्होंने सलाम किया लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। उन्होंने फिर सलाम किया लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। फिर सलाम किया और इस बार भी किसी ने जवाब नहीं दिया तो आवाज़ दी (बाद में इजाज़त मिलने पर) आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में गये और अर्ज़ किया क्या आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी अज़्वाज को

٥٢٠٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا مَرْوَانُ بْنُ مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا أَبُو يَعْفُورٍ قَالَ: تَذَاكَرْنَا عِنْدَ أَبِي الضُّحَى فَقَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ: أَصْبَحْنَا يَوْمًا وَنِسَاءُ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْكِينَ عِنْدَ كُلِّ امْرَأَةٍ مِنْهُنَّ أَهْلُهَا، فَخَرَجْتُ إِلَى الْمَسْجِدِ فَإِذَا هُوَ مَلآنُ مِنَ النَّاسِ، فَجَاءَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَصَعِدَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ فِي غُرْفَةٍ لَهُ فَسَلَّمَ فَلَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ، ثُمَّ سَلَّمَ فَلَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ ثُمَّ سَلَّمَ فَلَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ، فَنَادَاهُ، فَدَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَطَلَّقْتَ نِسَاءَكَ؟ فَقَالَ:

((لَا، وَلَكِنْ آلَيْتُ مِنْهُنَّ شَهْرًا))، فَمَكَثَ تِسْعًا وَعِشْرِينَ ثُمَّ دَخَلَ عَلَى نِسَائِهِ.

तलाक़ दे दी है? आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि नहीं बल्कि एक महीने तक उनसे अलग रहने की क़सम खाई है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) उन्तीस दिन तक अलग रहे और फिर अपनी बीवियों के पास गये।

इस्तिलाह में इसी को ईला कहा जाता है या'नी मुद्दते मुक़र्ररा के लिये अपनी बीवी से अलग रहने की क़सम खा लेना। मुद्दत पूरी होने के बाद मिलना जाइज़ हो जाता है।

٩٤- باب مَا يُكْرَهُ مِنْ ضَرْبِ النِّسَاءِ، وَقَوْلِهِ : ﴿وَاضْرِبُوهُنَّ﴾ أَيْ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ

बाब 94 : औरतों को मारना मकरूह है और अल्लाह का फ़र्माना कि और उन्हें उतना ही मारो जो उनके लिये सख़्त न हो

तश्रीह : या'नी मा'मूली मार लगा सकते हो **व फ़ी शर्हिल्मुनिय्यः लिल्हल्बी लिज़्जौजि अय्यज्रिबहा अला तर्किस्सलाति वल्गुस्लि फ़िल्असह्हि कमा लहू अंय्यज्रिबहा अला तर्किज़्ज़ीनति इज़ा अराद वल्इजाबः इलज़्ज़ौजि इजा दआहा वल्खुरूजु बिग़ैरि इज़्निन** या'नी शौहर के लिये जाइज़ है कि औरत को नमाज़ छोड़ने पर मारे और ग़ुस्ल छोड़ने पर भी मारे जैसा कि उसे ज़ीनत के तर्क पर मारता है जब वो मर्द उसकी ज़ीनत चाहे या बुलाने पर वो न आए या बग़ैर इजाज़त वो बाहर जाए जैसा कि उन पर वो मारता है। लिहाज़ा औरत को चाहिये कि मर्द के हर हुक्म की फ़र्मांबरदारी करे जो शरीअत के ख़िलाफ़ न हो।

٥٢٠٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَمْعَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَجْلِدُ أَحَدُكُمُ امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ ثُمَّ يُجَامِعُهَا فِي آخِرِ الْيَوْمِ)). [راجع: ٣٣٧٧]

5204. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़म्आ ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें कोई शख़्स अपनी बीवी को ग़ुलामा की तरह न मारे कि फिर दूसरे दिन उससे हमबिस्तर होगा। (राजेअ़ : 3377)

٩٥- باب لَا تُطِيعُ الْمَرْأَةُ زَوْجَهَا فِي مَعْصِيَةٍ

बाब 95 : औरत गुनाह के हुक्म में अपने शौहर का कहना न माने

٥٢٠٥- حَدَّثَنَا خَلَّادُ بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ نَافِعٍ عَنِ الْحَسَنِ هُوَ ابْنُ مُسْلِمٍ عَنْ صَفِيَّةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ زَوَّجَتِ ابْنَتَهَا، فَتَمَعَّطَ شَعَرُ رَأْسِهَا، فَجَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَتْ: إِنَّ زَوْجَهَا أَمَرَنِي أَنْ أَصِلَ فِي شَعَرِهَا فَقَالَ :

5205. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन नाफ़ेअ ने, उनसे ह़सन ने वो मुस्लिम के स़ाहबज़ादे हैं, उनसे स़फ़िया (रज़ि.) ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि क़बीला अंस़ार की एक ख़ातून ने अपनी बेटी की शादी की थी। उसके बाद लड़की के सर के बाल बीमारी की वजह से झड़ गये तो वो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर हुई और आप (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया और कहा कि उसके शौहर ने उससे कहा है कि अपने बालों के साथ (दूसरे मस्नूई बाल) जोड़े। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि ऐसा तू हर्गिज़ मत

कर क्योंकि मस्नूई बाल सर पर रखकर जो जोड़े तो ऐसे बाल जोड़ने वालियों पर ला'नत की गई है। (दीगर मक़ाम : 5934)

((لاَ، إِنَّهُ قَدْ لُعِنَ الْمُوصِلاَتُ)).

[طرفه في : ٥٩٣٤].

इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि अगर शौहर शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई बात कहे तो औ़रत अगर उसको बजा न लाए तो उस पर गुनाह न होगा।

बाब 96 : और अगर किसी औ़रत को अपने शौहर की त़रफ़ से नफ़रत और मुँह मोड़ने का डर हो

٩٦- باب ﴿وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا﴾

5206. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआ़विया ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने आयत, और अगर कोई औ़रत अपने शौहर की त़रफ़ से नफ़रत और मुँह मोड़ने का डर मह़सूस करे। के बारे में फ़र्माया कि आयत मे ऐसी औ़रत का बयान है जो किसी मर्द के पास हो और वो मर्द उसे अपने पास ज़्यादा न बुलाता हो बल्कि उसे त़लाक़ देने का इरादा रखता हो और उसके बजाय दूसरी औ़रत से शादी करना चाहता हो लेकिन उसकी मौजूदा बीवी उससे कहे कि मुझे अपने साथ ही रखो और त़लाक़ न दो। तुम मेरे सिवा किसी और से शादी कर सकते हो, मेरे ख़र्च से भी तुम आज़ाद हो और तुम पर बारी की भी कोई पाबन्दी नहीं तोउसका ज़िक्र अल्लाह तआ़ला के इर्शाद में है कि, पस उन पर कोई गुनाह नहीं अगर वो आपस में सुलह़ कर लें और सुलह़ बहरहाल बेहतर है। (राजेअ़ : 2450)

٥٢٠٦- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ﴿وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا﴾ قَالَتْ: هِيَ امْرَأَةٌ تَكُونُ عِنْدَ الرَّجُلِ لاَ يَسْتَكْثِرُ مِنْهَا، فَيُرِيدُ طَلاَقَهَا وَيَتَزَوَّجُ غَيْرَهَا، تَقُولُ لَهُ: أَمْسِكْنِي وَلاَ تُطَلِّقْنِي، ثُمَّ تَزَوَّجْ غَيْرِي، فَأَنْتَ فِي حِلٍّ مِنَ النَّفَقَةِ عَلَيَّ وَالْقِسْمَةِ لِي، فَذَلِكَ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا، وَالصُّلْحُ خَيْرٌ﴾.

[راجع: ٢٤٥٠]

बाब 97 : अ़ज़्ल का हुक्म क्या है?

٩٧- باب الْعَزْلِ

तशरीह़ : इंज़ाल के वक़्त ज़कर का बाहर निकाल लेना अ़ज़्ल है। अह़ादीष़े ज़ेल से इसका जवाज़ मा'लूम होता है मगर आइन्दा दूसरी ह़दीष़ से आँह़ज़रत (ﷺ)की नाराज़गी भी ज़ाहिर है। लिहाज़ा बेहतर यही है कि बीवी से अ़ज़्ल न किया जाए। वल्लाहु आ़लम बिस्सवाब।

5207. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अ़त़ा ने और उनसे जाबिर (रज़ि.)ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने मे हम अ़ज़्ल किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 5208, 5209)

٥٢٠٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا نَعْزِلُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفاه في : ٥٢٠٨، ٥٢٠٩].

5208. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान

٥٢٠٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ سَمِعَ

किया, उन्हें अ़ता ने ख़बर दी, उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में जब क़ुर्आन नाज़िल हो रहा था हम अ़ज़्ल करते थे। (राजेअ़ : 5207)

جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نَعْزِلُ وَالْقُرْآنُ يَنْزِلُ. [راجع: ٥٢٠٧]

5209. और अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया अ़ता से और उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से कि क़ुर्आन नाज़िल हो रहा था और हम अ़ज़्ल करते थे।

٥٢٠٩- وَعَنْ عَمْرٍو عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا نَعْزِلُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَالْقُرْآنُ يَنْزِلُ.

5210. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक बिन अनस ने, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे इब्ने मुहैरीज़ ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि) ने बयान किया कि (एक ग़ज़्वा में) हमें क़ैदी औरतें मिलीं और हमने उनसे अ़ज़्ल किया। फिर हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसका हुक्म पूछा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम वाक़ई ऐसा करते हो? तीन बार आपने ये फ़र्माया (फिर फ़र्माया) क़यामत तक जो रूह भी पैदा होने वाली है वो (अपने वक़्त पर) पैदा होकर रहेगी। पस तुम्हारा अ़ज़्ल करना एक अ़बष़ हरकत है। (राजेअ़ : 2229)

٥٢١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ مَالِكِ بْنِ أَنَسٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ مُحَيْرِيزٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: أَصَبْنَا سَبْيًا فَكُنَّا نَعْزِلُ. فَسَأَلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَوَ إِنَّكُمْ لَتَفْعَلُونَ)) قَالَهَا ثَلاَثًا ((مَا مِنْ نَسَمَةٍ كَائِنَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلاَّ هِيَ كَائِنَةٌ)).
[راجع: ٢٢٢٩]

गोया आपने इसको पसन्द नहीं फ़र्माया।

बाब 98 : सफ़र के इरादे के वक़्त अपनी कई बीवियों में से इंतिख़ाब के लिये क़ुर्आ डालना

٩٨- باب الْقُرْعَةِ بَيْنَ النِّسَاءِ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا

5211. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ऐमन ने, कहा कि मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे क़ासिम ने और उनसे अ़ाइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) जब सफ़र का इरादा करते तो अपनी बीवियों के लिये क़ुर्आ डालते। एक बार क़ुर्आ अ़ाइशा और हफ़्सा (रज़ि.) के नाम का निकला। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) रात के वक़्त मा'मूलन चलते वक़्त अ़ाइशा (रज़ि.) के साथ बातें करते हुए चलते। एक बार हफ़्सा (रज़ि.) ने उनसे कहा कि आज रात क्यूँ न तुम मेरे ऊँट पर सवार हो जाओ और मैं तुम्हारे ऊँट पर ताकि तुम भी नये मनाज़िर देख सको और मैं भी। उन्होंने ये तजवीज़ क़ुबूल कर ली और (एक दूसरे के ऊँट पर) सवार हो गईं। उसके बाद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) अ़ाइशा (रज़ि.) के ऊँट के पास तशरीफ़ लाए। उस वक़्त उस पर हफ़्सा (रज़ि) बैठी हुई थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे सलाम किया, फिर चलते रहे, जब पड़ाव हुआ तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि अ़ाइशा (रज़ि.)

٥٢١١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ بْنُ أَيْمَنَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْقَاسِمِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا خَرَجَ أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ. فَطَارَتِ الْقُرْعَةُ لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ. وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ بِاللَّيْلِ سَارَ مَعَ عَائِشَةَ يَتَحَدَّثُ. فَقَالَتْ حَفْصَةُ أَلاَ تَرْكَبِينَ اللَّيْلَةَ بَعِيرِي وَأَرْكَبُ بَعِيرَكِ تَنْظُرِينَ وَأَنْظُرُ. فَقَالَتْ: بَلَى فَرَكِبَتْ فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى جَمَلِ عَائِشَةَ وَعَلَيْهِ حَفْصَةُ فَسَلَّمَ عَلَيْهَا ثُمَّ سَارَ حَتَّى نَزَلُوا

इसमें नहीं हैं (इस ग़लती पर आइशा रज़ि. को इस दर्जा रंज हुआ कि) जब लोग सवारियों से उतर गये तो उम्मुल मोमिनीन ने अपनी पाँव इज़्ख़र घास में डाल लिये और दुआ करने लगी कि ऐ मेरे रब! मुझ पर कोई बिच्छू या सांप मुसल्लत़ कर दे जो मुझे डस ले। आइशा (रज़ि.) कहती हैं कि मैं आँहज़रत (ﷺ) से तो कुछ न कह सकती थी क्योंकि ये हरकत ख़ुद मेरी ही थी।

وَافْتَقَدَتْهُ عَائِشَةُ. فَلَمَّا نَزَلُوا جَعَلَتْ رِجْلَيْهَا بَيْنَ الإِذْخِرِ وَتَقُولُ : يَا رَبِّ سَلِّطْ عَلَيَّ عَقْرَبًا أَوْ حَيَّةً تَلْدَغُنِي وَلاَ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَقُولَ لَهُ شَيْئًا.

तश्रीह : ये इसलिये कि आँहज़रत (ﷺ) तो तशरीफ़ लाए मगर हज़रत आइशा (रज़ि.) अपने क़ुसूर से ख़ुद महरूम रह गईं। न दूसरे के ऊँट पर बैठती और न आप (ﷺ) की शर्फ़े हमकलामी से महरूम रहतीं। हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) का भी इसमें कोई क़ुसूर न था। इसी रंज के मारे अपने को कोसने लगीं और अपने पैर घास में डाल लिये जिसमें ज़हरीले कीड़े ब कष़रत रहते थे।

बाब 99 : औरत अपने शौहर की बारी अपनी सौकन को दे सकती है और उसकी तक़्सीम किस त़रह की जाए?

٩٩- بَابُ الْمَرْأَةِ تَهَبُ يَوْمَهَا مِنْ زَوْجِهَا لِضَرَّتِهَا، وَكَيْفَ يُقْسَمُ ذَلِكَ

5212. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, उससे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि) ने कि सौदा बिन्ते ज़म्आ ने अपनी बारी आइशा (रज़ि.) को दे दी थी और रसूलुल्लाह (ﷺ) आइशा (रज़ि.) के यहाँ ख़ुद उनकी बारी के दिन और सौदा (रज़ि.) की बारी के दिन रहते थे। (राजेअ : 2593)

٥٢١٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ سَوْدَةَ بِنْتَ زَمْعَةَ وَهَبَتْ يَوْمَهَا لِعَائِشَةَ وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْسِمُ لِعَائِشَةَ بِيَوْمِهَا وَيَوْمِ سَوْدَةَ. [راجع: ٢٥٩٣]

हज़रत सौदा (रज़ि.) ने बुढ़ापे में ऐसा कर दिया था।

बाब 100 : बीवियों के दरम्यान इंसाफ़ करना

वाजिब है और अल्लाह ने सूरह निसा में फ़र्माया कि, अगर तुम अपनी बीवियों के दरम्यान इंस़ाफ़ न कर सको (तो एक ही औरत से शादी करो) आख़िर आयत वासिअ़न हकीमा तक

١٠٠- بَابُ الْعَدْلِ بَيْنَ النِّسَاءِ ﴿وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ - إِلَى قَوْلِهِ - وَاسِعًا حَكِيمًا﴾

तश्रीह : शरीअ़त ने चार औरतों को एक ही वक़्त में अपने निकाह में रखने की इजाज़त तो दी है लेकिन साथ ही इंस़ाफ़ की भी ताकीद की है, क्योंकि आम हालात में कई बीवियों के दरम्यान इंस़ाफ़ क़ायम रखना मुश्किल हो जाता है। इस सूरत में ताकीद है कि सिर्फ़ एक ही करो ताकि अ़दमे इंस़ाफ़ के मुजरिम न बन सको। हाँ! अगर इंस़ाफ़ कर सकते हो तो एक वक़्त में चार तक रख सकते हो। इससे ज़्यादा की इजाज़त नहीं है।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने बाब क़ायम करके क़ुर्आन पाक की आयत को बत़ौरे इस्तिदलाल नक़ल फ़र्मा दिया कोई हदीष़ यहाँ उनकी शर्त़ के मुत़ाबिक़ न मिली, इसलिये आयत ही पर इक्तिफ़ा फ़र्माया। **व क़द रवल्अर्बअ़तु व सह्हहू इब्नुल हिब्बान वल्हाकिम अ़न आयशत अन्नन्नबिय्य (ﷺ) कान युक़्सिमु बैन निसाइही बिल्अदलि व यक़ूलु हाजा क़समी फ़ीमा अम्लिकु फ़ला तलुम्नी फ़ीमा तम्लिकु व ला अम्लिकु क़ालत्तिर्मिज़ी यअ़नी बिहिल्महब्बत वल्मवद्दत**

या'नी रसूले करीम उन औरतों के बीच बारी मुक़र्रर फ़र्माते और कहते या अल्लाह! ये मेरी तक़्सीम है जिसका मैं मालिक हूँ, रही मुहब्बत और मवद्दत (लाड) उसका मालिक तू है मैं उस पर इख़्तियार नहीं रखता पस इस बारे में तू मुझको मलामत न करना।

बाब 101 : अगर किसी के पास एक बेवा औरत उसके निकाह में हो फिर एक कुँवारी से भी करे तो जाइज़ है

١٠١- باب إِذَا تَزَوَّجَ الْبِكْرَ عَلَى الثَّيِّبِ

5213. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने, उनसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने (रावी अबू क़िलाबा या अनस रज़ि. ने) कहा कि अगर मैं चाहूँ तो कह सकता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) ने (आने वाली हदीष़) इर्शाद फ़र्माई। लेकिन बयान किया कि दस्तूर ये है कि जब कुँवारी से शादी करे तोउसके साथ सात दिन तक रहना चाहिये और जब बेवा से शादी करे तो उसके साथ तीन दिन तक रहना चाहिये। (दीगर मक़ाम : 5214)

٥٢١٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا بِشْرٌ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ وَلَوْ شِئْتُ أَنْ أَقُولَ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنْ قَالَ: ((السُّنَّةُ إِذَا تَزَوَّجَ الْبِكْرَ أَقَامَ عِنْدَهَا سَبْعًا، وَإِذَا تَزَوَّجَ الثَّيِّبَ أَقَامَ عِنْدَهَا ثَلاَثًا)).

[طرفه في : ٥٢١٤].

उसके बाद बारी बारी दोनों के पास रहा करे। नई बीवी को शौहर से ज़रा वहशत होती है ख़ुसूसन कुँवारी को जिसके लिये सात दिन इसलिये मुक़र्रर किये कि उसकी वहशत दूर होकर उसका दिल मिल जाए उसके बाद फिर बारी बारी रहे ताकि इंसाफ़ के ख़िलाफ़ न हो।

बाब 102 : कुँवारी बीवी के होते हुए जब किसी ने बेवा औरत से शादी की तो कोई गुनाह नहीं है

١٠٢- باب إِذَا تَزَوَّجَ الثَّيِّبَ عَلَى الْبِكْرِ

5214. हमसे यूसुफ़ बिन राशिद ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ष़ौरी ने, कहा हमसे अय्यूब और ख़ालिद दोनों ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि दस्तूर ये है कि जब कोई शख़्स पहले से शादीशुदा बीवी की मौजूदगी में किसी कुँवारी औरत से शादी करे तो उसके साथ सात दिन तक क़याम करे और फिर बारी मुक़र्रर करे और जब किसी कुँवारी बीवी की मौजूदगी में पहले से शादी शुदा औरत से निकाह करे तो उसके साथ तीन दिन तक क़याम करे और फिर बारी मुक़र्रर करे। अबू क़िलाबा ने बयान किया कि अगर मैं चाहूँ तो कह सकता हूँ कि हज़रत अनस (रज़ि.) ने ये हदीष़ नबी करीम (ﷺ) से मर्फ़ूअन बयान की है। और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें अय्यूब और ख़ालिद ने, ख़ालिद ने कहा कि अगर मैं चाहूँ तो कह सकता हूँ

٥٢١٤- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ رَاشِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنَا أَيُّوبُ وَخَالِدٌ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: مِنَ السُّنَّةِ إِذَا تَزَوَّجَ الرَّجُلُ الْبِكْرَ عَلَى الثَّيِّبِ أَقَامَ عِنْدَهَا سَبْعًا وَقَسَمَ، وَإِذَا تَزَوَّجَ الثَّيِّبَ عَلَى الْبِكْرِ أَقَامَ عِنْدَهَا ثَلاَثًا ثُمَّ قَسَمَ، قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ : وَلَوْ شِئْتُ لَقُلْتُ إِنَّ أَنَسًا رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ عَبْدُ الرَّزَّاقِ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَيُّوبَ وَخَالِدٍ قَالَ خَالِدٌ : وَلَوْ شِئْتُ قُلْتُ رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने ये ह़दीष़ नबी करीम (ﷺ) से मर्फ़ूअ़न बयान की है। (राजेअ़ : 5213)

[راجع: ٥٢١٣]

बाब 103 : मुराद अपनी सब बीवियों से सुह़बत करके आख़िर में एक ग़ुस्ल कर सकता है

١٠٣- باب مَنْ طَافَ عَلَى نِسَائِهِ فِي غُسْلٍ وَاحِدٍ

5215. हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन ह़म्माद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि) ने बयान किया कि एक रात में नबी करीम (ﷺ) अपनी तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पास गये। उस वक़्त आँहुज़ूर (ﷺ) के निकाह़ में नौ बीवियाँ थीं। (राजेअ़ : 268)

٥٢١٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ كَانَ يَطُوفُ عَلَى نِسَائِهِ فِي اللَّيْلَةِ الْوَاحِدَةِ، وَلَهُ يَوْمَئِذٍ تِسْعُ نِسْوَةٍ.

[راجع: ٢٦٨]

ये ह़ज्ज का वाक़िया है एह़राम से पहले नबी करीम (ﷺ) ने तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात के साथ रात में वक़्त गुज़ारा।

बाब 104 : मर्द का अपनी बीवियों के पास दिन में जाना जाइज़ है

١٠٤- باب دُخُولِ الرَّجُلِ عَلَى نِسَائِهِ فِي الْيَوْمِ

5216. हमसे फ़रवह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने, कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) अ़स्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पास तशरीफ़ ले जाते और उनमें से किसी एक के क़रीब भी बैठते। एक दिन आँहुज़ूर (ﷺ) ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) के यहाँ गये और मा'मूल से ज़्यादा देर तक ठहरे रहे। (राजेअ़ : 4912)

٥٢١٦- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِذَا انْصَرَفَ مِنَ الْعَصْرِ دَخَلَ عَلَى نِسَائِهِ فَيَدْنُو مِنْ إِحْدَاهُنَّ، فَدَخَلَ عَلَى حَفْصَةَ، فَاحْتَبَسَ أَكْثَرَ مَا كَانَ يَحْتَبِسُ.

[راجع: ٤٩١٢]

इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि जिसकी कई बीवियाँ हों तो हर एक की ख़ैरियत और ह़ाल चाल मा'लूम करने के लिये जब चाहे जा सकता है।

बाब 105 : अगर मर्द अपनी बीमारी के दिन किसी एक बीवी के घर गुज़ारने के लिये अपनी दूसरी बीवियों से इजाज़त ले और उसे उसकी इजाज़त दी जाए

١٠٥- باب إِذَا اسْتَأْذَنَ الرَّجُلُ نِسَاءَهُ فِي أَنْ يُمَرَّضَ فِي بَيْتِ بَعْضِهِنَّ فَأَذِنَّ لَهُ

तो ये दुरुस्त है और वो बीमारी भर उस बीवी के घर रह सकता है।

5217. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा

٥٢١٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي

कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की जिस मर्ज़ में वफ़ात हुई, उसमें आप पूछा करते थे कि कल मेरी बारी किसके यहाँ है। कल मेरी बारी किसके यहाँ है? आपको ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की बारी का इंतिज़ार रहता था। चुनाँचे आपकी तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात ने आपको इसकी इजाज़त दे दी कि आँहुज़ूर (ﷺ) जहाँ चाहें बीमारी के दिन गुज़ारें। आँहुज़ूर (ﷺ) ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के घर आ गये और यहीं आप (ﷺ) की वफ़ात हुई। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहुज़ूर (ﷺ) की उसी दिन वफ़ात हुई जो मेरी बारी का दिन था और अल्लाह तआ़ला का ये भी एह़सान देखो उसने जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को अपने यहाँ बुलाया तो आँहुज़ूर (ﷺ) का सरे मुबारक मेरे सीने पर था और आँह़ज़रत (ﷺ) का लुआ़बे दहन मेरे लुआ़बे दहन से मिला। (राजेअ़ : 890)

سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ قَالَ : هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَسْأَلُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: ((أَيْنَ أَنَا غَدًا؟ أَيْنَ أَنَا غَدًا؟)) يُرِيدُ يَوْمَ عَائِشَةَ، فَأَذِنَ لَهُ أَزْوَاجُهُ يَكُونُ حَيْثُ شَاءَ، فَكَانَتْ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ حَتَّى مَاتَ عِنْدَهَا، قَالَتْ عَائِشَةُ : فَمَاتَ فِي الْيَوْمِ الَّذِي كَانَ يَدُورُ عَلَيَّ فِيهِ فِي بَيْتِي، فَقَبَضَهُ اللهُ وَإِنَّ رَأْسَهُ لَبَيْنَ نَحْرِي وَسَحْرِي، وَخَالَطَ رِيقُهُ رِيقِي. [راجع: ٨٩٠]

ह़दीष़ के आख़िरी जुम्ले में उस ताज़ा मिस्वाक की त़रफ़ इशारा है जो आ़इशा (रज़ि.) ने दांतों से नरम करके आप (ﷺ) को दी थी।

बाब 106 : अगर मर्द को अपनी एक बीवी से ज़्यादा मुह़ब्बत हो तो कुछ गुनाह न होगा

١٠٦- باب حُبِّ الرَّجُلِ بَعْضَ نِسَائِهِ أَفْضَلَ مِنْ بَعْضٍ

5218. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यह़्या ने, उनसे उ़बैद बिन हुनैन ने, उन्होंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कि आप ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) के यहाँ गये और उनसे कहा कि बेटी अपनी उस सौकन को देखकर धोखे में न आ जाना जिसे अपने हुस्न पर और रसूलुल्लाह (ﷺ) की मुह़ब्बत पर नाज़ है। आपका इशारा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) की त़रफ़ था (ह़ज़रत उ़मर रज़ि. ने बयान किया) कि फिर मैंने यही बात आप (ﷺ) के सामने दुहराई, आप मुस्कुरा दिये। (राजेअ़ : 89)

٥٢١٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ دَخَلَ عُمَرُ عَلَى حَفْصَةَ فَقَالَ: يَا بُنَيَّةُ لاَ يَغُرَّنَّكِ هَذِهِ الَّتِي أَعْجَبَهَا حُسْنُهَا وَحُبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِيَّاهَا، يُرِيدُ عَائِشَةَ فَقَصَصْتُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَتَبَسَّمَ. [راجع: ٨٩]

मा'लूम हुआ कि तमाम हुक़ूक़ अदा करने के बाद अगर मर्द को अपनी किसी दूसरी बीवी से ज़्यादा मुह़ब्बत है तो गुनाहगार नहीं है।

बाब 107 : झूठमूठ जो चीज़ मिली नहीं उसको बयान करना कि मिल गई, इस त़रह अपनी सौकन का दिल

١٠٧- باب الْمُتَشَبِّعِ بِمَا لَمْ يَنَلْ، وَمَا يُنْهَى مِنِ افْتِخَارِ الضَّرَّةِ

जलाने के लिये करना औरत के वास्ते मना है

5219. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने और उनसे हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे फ़ातिमा बिन्ते मुंज़िर ने बयान किया और उनसे अस्मा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी सौकन है अगर अपने शौहर की तरफ़ से उन चीज़ों के हासिल होने की भी दास्तानें उसे सुनाऊँ जो हक़ीक़त में मेरा शौहर मुझे नहीं देता तो क्या इसमें कोई हर्ज है? आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि जो चीज़ हासिल न हो उस पर फ़ख़्र करने वाला उस शख़्स जैसा है जो फ़रेब का जोड़ा या'नी (दूसरों के कपड़े) मांगकर पहने।

٥٢١٩- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ فَاطِمَةَ عَنْ أَسْمَاءَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
وحدثني مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ هِشَامٍ حَدَّثَتْنِي فَاطِمَةُ عَنْ أَسْمَاءَ أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّ لِي ضَرَّةً، فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ إِنْ تَشَبَّعْتُ مِنْ زَوْجِي غَيْرَ الَّذِي يُعْطِينِي، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((الْمُتَشَبِّعُ بِمَا لَمْ يُعْطَ كَلاَبِسِ ثَوْبَيْ زُورٍ)).

और लोगों में ये ज़ाहिर करे कि ये कपड़े मेरे हैं, ऐसा शैख़ी मारने वाला आख़िर में हमेशा ज़लील व ख़्वार होता है। गोया आपने सौकन के सामने भी ग़लत़बयानी की इजाज़त नहीं दी। कमाले तक़्वा यही है।

बाब 108 : ग़ैरत का बयान

١٠٨- باب الْغَيْرَةِ

और वर्राद (मुग़ीरह के मुंशी) ने मुग़ीरह से बयान किया कि सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि मैं तो अपनी बीवी के साथ अगर किसी ग़ैर मर्द को देख लूँ तो उसे अपनी तलवार से फ़ौरन क़त्ल कर डालूँ उसको धारे से न कि चौड़ी तरफ़ से सिर्फ़ डराने के लिये (बल्कि उसका मामला ही ख़त्म कर डालूँ) इस पर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम्हें सअ़द (रज़ि.) की ग़ैरत पर हैरत होगी अल्लाह की क़सम मुझको उससे बढ़कर ग़ैरत है और अल्लाह तआ़ला मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरतमंद है।

وَقَالَ وَرَّادٌ عَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: لَوْ رَأَيْتُ رَجُلاً مَعَ امْرَأَتِي لَضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ غَيْرَ مُصْفَحٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَتَعْجَبُونَ مِنْ غَيْرَةِ سَعْدٍ؟ لأَنَا أَغْيَرُ مِنْهُ، وَاللهُ أَغْيَرُ مِنِّي)).

तश्रीह : हुआ ये था कि जब आयत **वल्लज़ीन यर्मुनल्मुह्सनात अल्आय:** (अन् नूर : 6) नाज़िल हुई जिसका मत़लब ये था कि जो लोग आज़ाद बीवियों पर बोह्तान लगाएँ और वो उन पर गवाह न ला सकें तो उनको अस्सी कोड़े लगाओ। उस वक़्त सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस आयत में तो ये हुक्म उतरा है मैं तो अगर ऐसे ह़राम काम को देखूँ तो न झिड़कूँ न हटाऊँ न चार गवाह लाऊँ बल्कि उसे फ़ौरन ठिकाने लगा दूँ, मैं इतने गवाह लाऊँगा तो वो तो ज़िना करके चल देगा। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने अंसार से फ़र्माया कि तुम अपने सरदार की ग़ैरत की बातें सुन रहे हो। अंसार बोले या रसूलल्लाह! उनके मिज़ाज में बहुत ग़ैरत है, उसको मलामत न कीजिए, उसने हमेशा कुँवारी से निकाह़ किया और जब उसे त़लाक़ दे दी तो उसकी ग़ैरत की वजह से हममें से किसी को ये जुर्अत

न हो सकी कि उस औरत से निकाह कर सके।

5220. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़यास ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला से ज़्यादा ग़ैरतमंद और कोई नहीं है। यही वजह है कि उसने बेहयाई के कामों को हराम किया है और अल्लाह से बढ़कर कोई अपनी ता'रीफ़ पसंद करने वाला नहीं है। (राजेअ : 6434)

٥٢٢٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ عَنْ شَقِيقٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا مِنْ أَحَدٍ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ، مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ، وَمَا أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللهِ)). [راجع: ٤٦٣٤]

5221. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अम्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने, उनसे उनके वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ उम्मते मुहम्मद (ﷺ)! अल्लाह से बढ़कर ग़ैरतमंद कोई नहीं कि वो अपने बन्दे या बन्दी को ज़िना करते हुए देखे। ऐ उम्मते मुहम्मद (ﷺ)! अगर तुम्हें वो मा'लूम होता जो मुझे मा'लूम है तो तुम हंसते कम और रोते ज़्यादा। (राजेअ : 1044)

٥٢٢١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ عَنْ مَالِكٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ، مَا أَحَدٌ أَغْيَرَ مِنَ اللهِ أَنْ يَرَى عَبْدَهُ أَوْ أَمَتَهُ يَزْنِي. يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ، لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ، لَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا)). [راجع: ١٠٤٤]

आपकी मुराद अहवाले आख़िरत से थी जो यक़ीनन आपको सबसे ज़्यादा मा'लूम थे।

5222. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कसीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे उनकी वालिदा हज़रत अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह तआला से ज़्यादा ग़ैरतमंद कोई नहीं और (इसी सनद से) यह्या से रिवायत है कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना।

٥٢٢٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ حَدَّثَهُ عَنْ أُمِّهِ أَسْمَاءَ أَنَّهَا سَمِعَتْ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((لاَ شَيْءَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ))، وَعَنْ يَحْيَى أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

5223. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अब्दुर्रहमान नहवी ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कसीर ने, उनसे अबू सलमा ने और उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला को ग़ैरत आती है और अल्लाह तआला को ग़ैरत उस

٥٢٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ يَغَارُ وَغَيْرَةُ اللهِ أَنْ يَأْتِيَ

वक़्त आती है जब बन्दा मोमिन वो काम करे जिसे अल्लाह ने हराम किया है।

الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ اللهُ)).

ग़ैरत अल्लाह की एक सिफ़त है। अहले ह़दीष़ इसको भी और सिफ़ात ही की तरह अपने ज़ाहिर पर महमूल करते हैं और इसकी तावील नहीं करते और कहते हैं कि इसकी ह़क़ीक़त अल्लाह ही ख़ूब जानता है।

5224. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी और उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़ुबैर (रज़ि.) ने मुझसे शादी की तो उनके पास एक ऊँट और उनके घोड़े के सिवा रूए ज़मीन पर कोई माल, कोई ग़ुलाम, कोई चीज़ नहीं थी। मैं ही उनका घोड़ा चराती, पानी पिलाती, उनका डोल सीती और आटा गूँधती। मैं अच्छी तरह रोटी नहीं पका सकती थी। अंसार की कुछ लड़कियाँ मेरी रोटी पका जाती थीं। ये बड़ी सच्ची और बावफ़ा औरतें थीं। ज़ुबैर (रज़ि.) की वो ज़मीन जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें दी थी, उससे मैं अपने सर पर खजूर की गुठलियाँ घर लाया करती थी। ये ज़मीन मेरे घर से दो मील दूर थी। एक रोज़ मैं आ रही थी और गुठलियाँ मेरे सर पर थीं कि रास्ते में रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुलाक़ात हो गई। आँहज़रत (ﷺ) के साथ क़बीला अंसार के कई आदमी थे। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलाया। फिर (अपने ऊँट को बिठाने के लिये) कहा। अख़ अख़, आँहज़रत (ﷺ) चाहते थे कि मुझे अपनी सवारी पर अपने पीछे सवार कर लें लेकिन मुझे मर्दों के साथ चलने में शर्म आई और ज़ुबैर (रज़ि.) की ग़ैरत का भी ख़्याल आया। ज़ुबैर (रज़ि.) बड़े ही बाग़ैरत थे। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) भी समझ गये कि मैं शर्म महसूसस कर रही हूँ। इसलिये आप आगे बढ़ गये। फिर मैं ज़ुबैर (रज़ि.) के पास आई और उनसे वाक़िया का ज़िक्र किया कि आँहुज़ूर (ﷺ) से मेरी मुलाक़ात हो गई थी। मेरे सर पर गुठलियाँ थीं और आँहुज़ूर (ﷺ) के साथ आपके चंद सहाबा भी थे। आँहज़रत (ﷺ) ने अपना ऊँट मुझे बिठाने के लिये बिठाया लेकिन मुझे उससे शर्म आई और तुम्हारी ग़ैरत का भी ख़्याल आया। इस पर ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझको तो इससे बड़ा रंज हुआ कि तू गुठलियाँ लाने के लिये निकले अगर तू आँहज़रत (ﷺ) के साथ सवार हो जाती तो इतनी ग़ैरत की बात

٥٢٢٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: تَزَوَّجَنِي الزُّبَيْرُ وَمَا لَهُ فِي الأَرْضِ مِنْ مَالٍ وَلاَ مَمْلُوكٍ وَلاَ شَيْءٍ غَيْرِ نَاضِحٍ وَغَيْرِ فَرَسِهِ، فَكُنْتُ أَعْلِفُ فَرَسَهُ وَأَسْتَقِي الْمَاءَ وَأَخْرِزُ غَرْبَهُ وَأَعْجِنُ، وَلَمْ أَكُنْ أُحْسِنُ أَخْبِزُ، وَكَانَ يَخْبِزُ جَارَاتٌ لِي مِنَ الأَنْصَارِ، وَكُنَّ نِسْوَةَ صِدْقٍ، وَكُنْتُ أَنْقُلُ النَّوَى مِنْ أَرْضِ الزُّبَيْرِ، الَّتِي أَقْطَعَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى رَأْسِي وَهِيَ مِنِّي عَلَى ثُلُثَيْ فَرْسَخٍ: فَجِئْتُ يَوْمًا وَالنَّوَى عَلَى رَأْسِي، فَلَقِيتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ نَفَرٌ مِنَ الأَنْصَارِ، فَدَعَانِي ثُمَّ قَالَ: ((إِخْ إِخْ))، لِيَحْمِلَنِي خَلْفَهُ، فَاسْتَحْيَيْتُ أَنْ أَسِيرَ مَعَ الرِّجَالِ، وَذَكَرْتُ الزُّبَيْرَ وَغَيْرَتَهُ وَكَانَ أَغْيَرَ النَّاسِ فَعَرَفَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنِّي قَدِ اسْتَحْيَيْتُ، فَمَضَى. فَجِئْتُ الزُّبَيْرَ فَقُلْتُ: لَقِيَنِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى رَأْسِي النَّوَى وَمَعَهُ نَفَرٌ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَأَنَاخَ لأَرْكَبَ، فَاسْتَحْيَيْتُ مِنْهُ وَعَرَفْتُ غَيْرَتَكَ، فَقَالَ: وَاللهِ لَحَمْلُكِ

न थी (क्योंकि अस्मा रज़ि आपकी साली और भाभी दोनों होती थीं) उसके बाद मेरे वालिद अबूबक्र (रज़ि.) ने एक ग़ुलाम मेरे पास भेज दिया वो घोड़े का सब काम करने लगा और मैं बेफ़िक्र हो गई गोया वालिद माजिद अबूबक्र (रज़ि) ने (ग़ुलाम भेजकर) मुझको आज़ाद कर दिया। (राजेअ : 3151)

النَّوَى كَانَ أَشَدَّ عَلَيَّ مِنْ رُكُوبِهِ مَعَهُ قَالَتْ: حَتَّى أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ بَعْدَ ذَلِكَ بِخَادِمٍ يَكْفِينِي سِيَاسَةَ الْفَرَسِ، فَكَأَنَّمَا أَعْتَقَنِي.
[راجع: ٣١٥١]

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा कि इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि ह़िजाब का हुक्म आँह़ज़रत (ﷺ) की बीवी से ख़ास़ था और ज़ाहिर ये है कि ये वाक़िया ह़िजाब (पर्दा) का हुक्म उतरने से पहले का है और औरतों की हमेशा ये आ़दत रही है कि वो अपने मुँह को बेगाने मर्दों से ढाँकती या'नी घूँघट करती हैं।

5225. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन उ़लय्या ने, उनसे हुमैद ने, उनसे ह़ज़रत अनस ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपनी एक ज़ोजा (आइशा रज़ि) के यहाँ तशरीफ़ रखते थे। उस वक़्त एक ज़ोजा (ज़ैनब बिन्ते जह़श रज़ि) ने आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये एक प्याले में कुछ खाने की चीज़ भेजी जिनके घर में हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उस वक़्त तशरीफ़ रखते थे उन्होंने ख़ादिम के हाथ पर (ग़ुस़्से में) मारा जिसकी वजह से कटोरा गिरकर टूट गया। फिर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने कटोरा लेकर टुकड़े जमा किये और जो खाना उस बर्तन मे था उसे जमा करने लगे और (ख़ादिम से) फ़र्माया कि तुम्हारी माँ को ग़ैरत आ गई है। उसके बाद ख़ादिम को रोक रखा। आख़िर जिनके घर में वो कटोरा टूटा था उनकी त़रफ़ से नया कटोरा मंगाया गया और आँह़ज़रत (ﷺ) ने वो नया कटोरा उन ज़ोजा मुत़ह्हरा को वापस किया जिनका कटोरा तोड़ दिया गया था और टूटा हुआ कटोरा उनके यहाँ रख लिया जिनके घर में वो टूटा था। (राजेअ : 2481)

٥٢٢٥- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ حَدَّثَنَا ابْنُ عُلَيَّةَ عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ عِنْدَ بَعْضِ نِسَائِهِ، فَأَرْسَلَتْ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِصَحْفَةٍ فِيهَا طَعَامٌ، فَضَرَبَتِ الَّتِي النَّبِيُّ ﷺ فِي بَيْتِهَا يَدَ الْخَادِمِ فَسَقَطَتِ الصَّحْفَةُ فَانْفَلَقَتْ، فَجَمَعَ النَّبِيُّ ﷺ فِلَقَ الصَّحْفَةِ ثُمَّ جَعَلَ يَجْمَعُ فِيهَا الطَّعَامَ الَّذِي كَانَ فِي الصَّحْفَةِ وَيَقُولُ: ((غَارَتْ أُمُّكُمْ))، ثُمَّ حَبَسَ الْخَادِمَ حَتَّى أُتِيَ بِصَحْفَةٍ مِنْ عِنْدِ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا، فَدَفَعَ الصَّحْفَةَ الصَّحِيحَةَ إِلَى الَّتِي كُسِرَتْ صَحْفَتُهَا، وَأَمْسَكَ الْمَكْسُورَةَ فِي بَيْتِ الَّتِي كُسِرَتْ. [راجع: ٢٤٨١]

तश्रीह : हुआ ये था कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की उस दिन बारी थी वो आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये खाना तैयार कर रही थीं कि आपकी दूसरी बीवी ने ये खाना आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये भेज दिया। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) को ये नागवार हुआ और ग़ुस्से में एक हाथ ख़िदमतगार के हाथ पर जो खाना लाया था मार दिया। वो खाना उसके हाथ से गिर पड़ा और बर्तन भी फूट गया। वो ग़ैरत में ये काम कर बैठीं, ग़ैरत और रश्क औ़रतों का ख़ास़्सा है शाज़ व नादिर कोई औ़रत उससे पाक होती है। इसीलिये आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुवाख़िज़ा नहीं फ़र्माया। एक ह़दीष़ में है जो कोई औ़रत की ग़ैरत पर स़ब्र करे उसको शहीद का ष़वाब मिलता है।

5226. हमसे मुह़म्मद बिन अबीबक्र मक़्दमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर उ़म्री ने, उनसे मुह़म्मद

٥٢٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ

مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((دَخَلْتُ الْجَنَّةَ، أَوْ أَتَيْتُ الْجَنَّةَ فَأَبْصَرْتُ قَصْرًا، فَقُلْتُ : لِمَنْ هَذَا؟ قَالُوا لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَأَرَدْتُ أَنْ أَدْخُلَهُ فَلَمْ يَمْنَعْنِي إِلاَّ عِلْمِي بِغَيْرَتِكَ))، قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ : يَا رَسُولَ اللهِ، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا نَبِيَّ اللهِ، أَوَ عَلَيْكَ أَغَارُ؟. [راجع: ٣٦٧٩]

बिन मुंकदिर ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं जन्नत में दाख़िल हुआ या (आपने ये फ़र्माया कि) मैं जन्नत में गया, वहाँ मैंने एक मह़ल देखा मैंने पूछा ये मह़ल किसका है? फ़रिश्तों ने बताया कि ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का। मैंने चाहा कि उसके अंदर जाऊँ लेकिन रुक गया क्योंकि तुम्हारी ग़ैरत मुझे मा'लूम थी। उस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ बाप आप पर फिदा हों, ऐ अल्लाह के नबी! क्या मैं आप पर ग़ैरत करूँगा? (राजेअ़ : 3679)

आँह़ज़रत (ﷺ) तमाम उम्मत के लिये पिदरे बुज़ुर्गवार की त़रह़ थे और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के तो आप दामाद भी थे, दामाद ससुर का अ़ज़ीज़े ख़ास़ होता है, इसलिये यहाँ ग़ैरत का सवाल ही न था।

٥٢٢٧ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ عَنْ يُونُسَ عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي ابْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ جُلُوسٌ فَقَالَ: رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ، فَقُلْتُ لِمَنْ هَذَا؟ قَالَ: هَذَا لِعُمَرَ فَذَكَرْتُ غَيْرَتَهُ فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا)). فَبَكَى عُمَرُ وَهُوَ فِي الْمَجْلِسِ ثُمَّ قَالَ : أَوَ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللهِ أَغَارُ؟. [راجع: ٣٢٤٢]

5227. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ख़्वाब में मैंने अपने आपको जन्नत में देखा। वहाँ मैंने देखा कि एक मह़ल के किनारे एक औ़रत वुज़ू कर रही थी। मैंने पूछा कि ये मह़ल किसका है? फ़रिश्ते ने कहा कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का। मैं उनकी ग़ैरत का ख़्याल करके वापस चला आया। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो उस वक़्त मज्लिस में मौजूद थे उस पर रो दिये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या मैं आप पर भी ग़ैरत करूँगा? (राजेअ़ : 3242)

तश्रीह : ये रोना ख़ुशी का था, अल्लाह का फ़ज़्लो करम और नवाज़िश का ख़्याल करके कि ह़क़ तआ़ला ने मुझ नाचीज़ पर ये सरफ़राज़ी फ़र्माई कि बहिश्त बरीं में मेरे लिये ऐसा आ़लीशान मह़ल तैयार किया इसीलिये कहा कि हुज़ूर (ﷺ) म तो आपका अदना ख़ादिम हूँ और मेरी बीवियाँ हूरें वग़ैरह सब आपकी ख़ादिमा हैं भला मैं आप पर क्या ग़ैरत कर सकता हूँ।

बाब 109 : औ़रतों की ग़ैरत और उनके ग़ुस़्से का बयान

١٠٩ - باب غَيْرَةِ النِّسَاءِ وَوَجْدِهِنَّ

तश्रीह : ये बाब अगले बाब की बनिस्बत ख़ास़ है और ग़ैरत किसी क़दर तो औ़रतों मे फ़ित्री होती है जिस पर मुवाख़िज़ा नहीं लेकिन जब ह़द से आगे बढ़ जाए तो मलामत के क़ाबिल है। उसका क़ायदा जाबिर बिन अ़तीक की ह़दीष़ में मौजूद है कि एक ग़ैरत अल्लाह को पसंद है या'नी गुनाह के काम पर ग़ैरत आना और एक नापसंद है कि जो काम गुनाह न हो उस पर ग़ैरत करना। ह़ाफ़िज़ ने कहा कि अगर औ़रत शौहर की बदकारी या ह़क़तल्फ़ी की वजह से ग़ैरत करे तो ये ग़ैरत जाइज़ और मशरूअ़ है।

5228. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया मैं ख़ूब पहचानता हूँ कि कब तुम मुझसे ख़ुश होती हो और कब तुम मुझसे नाराज़ हो जाती हो। बयान किया कि इस पर मैंने अ़र्ज़ किया आँहुज़ूर (ﷺ) ये बात किस त़रह़ समझते हैं? आपने फ़र्माया जब तुम मुझसे ख़ुश रहती है तो कहती हो नहीं मुहम्मद (ﷺ) के रब की क़सम! और जब तुम मुझसे नाराज़ होती हो तो कहती नहीं इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के रब की क़सम! बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया हाँ अल्लाह की क़सम या रसूलल्लाह! (गुस्से में) सिर्फ़ आपका नाम ज़ुबान से नहीं लेती। (दीगर मक़ाम : 6078)

٥٢٢٨- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْلَمُ إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً، وَإِذَا كُنْتِ عَلَيَّ غَضْبَى))، قَالَتْ فَقُلْتُ: مِنْ أَيْنَ تَعْرِفُ ذَلِكَ؟ فَقَالَ : ((أَمَّا إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً فَإِنَّكِ تَقُولِينَ لاَ وَرَبِّ مُحَمَّدٍ، وَإِذَا كُنْتِ غَضْبَى قُلْتِ لاَ وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ))، قَالَتْ : قُلْتُ أَجَلْ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ، مَا أَهْجُرُ إِلاَّ اسْمَكَ.

[طرفه في : ٦٠٧٨].

दिल में आपकी मह़ब्बत में ग़र्क़ रहती हूँ। ज़ाहिर में गुस्से की वजह सेआपका नाम नहीं लेती। ये गुस्सा ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की त़रफ़ से बत़ौरे नाज़े मह़बूबियत के हुआ करता था। क़स्तलानी (रह़) ने कहा इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि औ़रत अपने शौहर का नाम ले सकती है ये कोई ऐ़ब की बात नहीं है।

5229. मुझसे अह़मद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़र बिन शमील ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने, आपने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये किसी औ़रत पर मुझे इतनी ग़ैरत नहीं आती थी जितनी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) पर आती थी क्योंकि हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उनका ज़िक्र बकष़रत किया करते थे और उनकी ता'रीफ़ करते थे और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) पर वह़्य की गई थी कि आप ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को जन्नत में उनके मोती के घर की बशारत दे दें। (राजेअ़ : 2644, 3816)

٥٢٢٩- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ: مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ كَمَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ لِكَثْرَةِ ذِكْرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِيَّاهَا وَثَنَائِهِ عَلَيْهَا وَقَدْ أُوحِيَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ لَهَا فِي الْجَنَّةِ مِنْ قَصَبٍ. [راجع: ٢٦٤٤، ٣٨١٦]

तश्रीह़ : दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप एक बूढ़ी औ़रत की ता'रीफ़ किया करते हैं, वो मर गई तो अल्लाह ने उससे बेहतर बीवी आपको दे दी। आपने फ़र्माया कि उससे बेहतर औ़रत मुझको नहीं दी चूँकि आपने ह़ज़रत आइशा (रज़ि) पर कुछ मुवाख़िज़ा नहीं फ़र्माया तो मा'लूम हुआ कि उनकी ग़ैरत मुआ़फ़ है जो सौकनों में हुआ करती है।

बाब 110 : आदमी अपनी बेटी को ग़ैरत और गुस्सा न आने के लिये और उसके ह़क़ में इंस़ाफ़

١١٠- باب ذَبِّ الرَّجُلِ عَلَى ابْنَتِهِ

فِي الْغَيْرَةِ وَالإِنْصَافِ

करने के लिये कोशिश कर सकता है

٥٢٣٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ: ((إِنَّ بَنِي هِشَامِ بْنِ الْمُغِيرَةِ اسْتَأْذَنُوا فِي أَنْ يُنْكِحُوا ابْنَتَهُمْ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، فَلاَ آذَنُ، ثُمَّ لاَ آذَنُ، ثُمَّ لاَ آذَنُ، إِلاَّ أَنْ يُرِيدَ ابْنُ أَبِي طَالِبٍ أَنْ يُطَلِّقَ ابْنَتِي وَيَنْكِحَ ابْنَتَهُمْ، فَإِنَّمَا هِيَ بَضْعَةٌ مِنِّي يُرِيبُنِي مَا أَرَابَهَا، وَيُؤْذِينِي مَا آذَاهَا)). هَكَذَا قَالَ.

5230. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर पर फ़र्मा रहे थे कि हिशाम बिन मुग़ीरह जो अबू जहल का बाप था उसकी औलाद (ह़ारिष़ बिन हिशाम और सलम बिन हिशाम) ने अपनी बेटी का निकाह़ अ़ली बिन अबी त़ालिब से करने की मुझसे इजाज़त मांगी है लेकिन मैं उन्हें हर्गिज़ इजाज़त नहीं दूँगा यक़ीनन मैं उसकी इजाज़त नहीं दूँगा, हर्गिज़ मैं उसकी इजाज़त नहीं दूँगा। अल्बत्ता अगर अ़ली बिन अबी त़ालिब मेरी बेटी को त़लाक़ देकर उनकी बेटी से निकाह़ करना चाहें (तो मैं उसमें रुकावट नहीं बनूँगा) क्योंकि वो (फ़ात़िमा रज़ि.) मेरे जिगर का एक टुकड़ा है जो उसको बुरा लगे वो मुझको भी बुरा लगता है और जिस चीज़ से उसे तकलीफ़ पहुँचती है उससे मुझे भी तकलीफ़ पहुँचती है।

दूसरी रिवायत में यूँ है कि मैं ह़राम को ह़लाल नहीं करता न ह़लाल को ह़राम करता हूँ लेकिन अल्लाह की क़सम के रसूल की बेटी और अल्लाह के दुश्मन की बेटी एक शख़्स के तह़त मिलकर नहीं रह सकती उसके बाद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने फ़ौरन वो पैग़ाम रद्द कर दिया था।

١١١- باب يَقِلُّ الرِّجَالُ وَيَكْثُرُ النِّسَاءُ

बाब 111 : (क़यामत के क़रीब) औरतों का बहुत हो जाना मर्दों की कमी और नबी करीम (ﷺ) से

وَقَالَ أَبُو مُوسَى: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَتَرَى الرَّجُلَ الْوَاحِدَ تَتْبَعُهُ أَرْبَعُونَ امْرَأَةً، يَلُذْنَ بِهِ مِنْ قِلَّةِ الرِّجَالِ وَكَثْرَةِ النِّسَاءِ)).

अबू मूसा (रज़ि) ने रिवायत की कि तुम देखोगे कि चालीस औरतें एक मर्द के साथ होंगी उसकी पनाह में रहेंगी क्योंकि मर्द कम रह जाएँगे और औरतें ज़्यादा हो जाएँगी।

٥٢٣١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ الْحَوْضِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لأُحَدِّثَنَّكُمْ حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، لاَ يُحَدِّثُكُمْ بِهِ أَحَدٌ غَيْرِي، سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ

5231. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं तुमसे वो ह़दीष़ बयान करूँगा जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है, मेरे सिवा ये ह़दीष़ तुमसे कोई और नहीं बयान करने वाला है। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्मा रहे थे कि क़यामत की निशानियों में से ये भी है कि क़ुर्आन व ह़दीष़ का इ़ल्म उठा

लिया जाएगा और जहालत बढ़ जाएगी। ज़िना की कष़रत हो जाएगी और शराब लोग ज़्यादा पीने लगेंगे। मर्द कम हो जाएँगे और औरतों की ता'दाद ज़्यादा हो जाएगी। हालत ये हो जाएगी कि पचास पचास औरतों का सम्भालने वाला (ख़बरगीर) एक मर्द होगा। (राजेअ़ : 80)

الْعِلْمُ، وَيَكْثُرَ الْجَهْلُ، وَيَكْثُرُ الزِّنَا، وَيَكْثُرَ شُرْبُ الْخَمْرِ، وَيَقِلَّ الرِّجَالُ، وَيَكْثُرَ النِّسَاءُ، حَتَّى يَكُونَ لِخَمْسِينَ امْرَأَةِ الْقَيِّمُ الْوَاحِدُ)). [راجع: ٨٠]

ह़दीष़ का मत़लब ये है कि पचास पचास औरतों में बेवाओं की ख़बरगीरी एक ही मर्द से मुता'ल्लिक़ हो जाएगी क्योंकि मर्दों की पैदाइश कम हो जाएगी या वो लड़ाइयों में मारे जाएँगे।

बाब 112 : मह़रम के सिवा कोई ग़ैर मर्द किसी ग़ैर औरत के साथ तन्हाई न इख़्तियार करे और ऐसी औरत के पास न जाए जिसका शौहर मौजूद न हो सफ़र वग़ैरह में गया हो

١١٢ - باب لاَ يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ إِلاَّ ذُو مَحْرَمٍ، وَالدُّخُولُ عَلَى الْمُغِيبَةِ

5232. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे अबुल ख़ैर ने और उनसे उ़क़्बा बिन आ़मिर ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया औरतों में जाने से बचते रहो उस पर क़बीला अंस़ार के एक स़ह़ाबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! देवर के बारे में आपकी क्या राय है? (वो अपनी भाभी के साथ जा सकता है या नहीं ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि देवर या (जेठ) का जाना ही तो हलाकत है।

٥٢٣٢ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِيَّاكُمْ وَالدُّخُولَ عَلَى النِّسَاءِ)). فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَفَرَأَيْتَ الْحَمْوَ؟ قَالَ: ((الْحَمْوُ الْمَوْتُ)).

तश्रीह : ह़म्व से शौहर के वो रिश्तेदार मुराद हैं जिनका निकाह़ उस औरत से जाइज़ है जैसे शौहर का भाई, भतीजा, भांजा, चचा, चचाज़ाद भाई, मामू का बेटा वग़ैरह जिनसे किसी सूरत मे उस औरत का निकाह़ हो सकता है लेकिन वो रिश्तेदार मुराद नहीं हैं जो मह़रम हैं जैसे शौहर का बाप या बेटा वग़ैरह उनका तन्हाई में जाना जाइज़ है।

5233. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अबू मअ़बद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मह़रम के सिवा कोई मर्द किसी औरत के साथ तन्हाई में न बैठे। इस पर एक स़ह़ाबी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरी बीवी ह़ज्ज करने गई है और मेरा नाम फ़लाँ ग़ज़्वा में लिखा गया है। आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तू वापस जा और अपनी बीवी के साथ ह़ज्ज कर। (राजेअ़ : 1862)

٥٢٣٣ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَمْرٍو عَنْ أَبِي مَعْبَدٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ إِلاَّ مَعَ ذِي مَحْرَمٍ)). فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، امْرَأَتِي خَرَجَتْ حَاجَّةً وَاكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا قَالَ: ((ارْجِعْ فَحُجَّ مَعَ امْرَأَتِكَ)). [راجع: ١٨٦٢]

इमाम अह़मद ने ज़ाहिर ह़दीष़ पर अ़मल करके फ़र्माया कि ये हुक्म वज़ूबन है। इसलिये कि जिहाद उसके बदल दूसरे मुसलमान भी कर सकते हैं मगर उसकी औ़रत के साथ सिवाय मह़रम के और कोई नहीं जा सकता।

बाब 113 : अगर लोगों की मौजूदगी में एक मर्द दूसरी (ग़ैर मह़रम) औ़रत से तन्हाई में कुछ बात करे तो जाइज़ है

١١٣- باب مَا يَجُوزُ أَنْ يَخْلُوَ الرَّجُلُ بِالْمَرْأَةِ عِنْدَ النَّاسِ

मत़लब ये है कि औ़रत को तन्हाई में किसी मर्द से कुछ कहना या कोई दीन की बात पूछना मना नहीं है कि दोनों एक त़रफ़ जाकर बातें कर लें।

5234. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने ह़दीष़ बयान की, उनसे गुन्दर ने ह़दीष़ बयान की, उनसे शुअ़बा ने ह़दीष़ बयान की, उनसे हिशाम ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि क़बीला अंस़ार की एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) के पास आईं और आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने उससे लोगों से एक त़रफ़ होकर तन्हाई में बातचीत की। उसके बाद आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग (या'नी अंस़ार) मुझे सब लोगों से ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो। (राजेअ़ : 3786)

٥٢٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ هِشَامٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَخَلاَ بِهَا فَقَالَ : ((وَاللهِ إِنَّكُنَّ لأَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ)).

[راجع: ٣٧٨٦]

तन्हाई मत़लब है कि ऐसे मुक़ाम पर गये जहाँ दूसरे लोग उसकी बता न सुन सकें।

बाब 114 : ज़नाने और हिजड़े सफ़र में औ़रतों के पास न आएँ

١١٤- باب مَا يُنْهَى مِنْ دُخُولِ الْمُتَشَبِّهِينَ بِالنِّسَاءِ عَلَى الْمَرْأَةِ

इसी त़रह़ लोगों में भी उनको बेतह़ाशा दाख़िला नहीं होना चाहिये।

5235. हमसे ड़ष़्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ड़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उनके यहाँ तशरीफ़ रखते थे, घर में एक मुग़ीष़ नामी मुख़न्नष़ भी था। उस मुख़न्नष़ (हिज्ड़े) ने ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के भाई अ़ब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या (रज़ि) से कहा कि अगर कल अल्लाह ने तुम्हें त़ाइफ़ पर फ़तह़ इनायत की तो मैं तुम्हें ग़ीलान की बेटी को दिखलाऊँगा क्योंकि वो सामने आती है तो (मोटापे की वजह से) उसके चार शिकनें पड़ जाती हैं और जब पीछे फिरती है तो आठ हो जाती हैं। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने (उम्मे सलमा रज़ि. से) फ़र्माया कि ये (मुख़न्नष़) तुम्हारे पास अब न आया करे।

٥٢٣٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عِنْدَهَا، وَفِي الْبَيْتِ مُخَنَّثٌ فَقَالَ الْمُخَنَّثُ لأَخِي أُمِّ سَلَمَةَ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ: إِنْ فَتَحَ اللهُ لَكُمُ الطَّائِفَ غَدًا أَدُلُّكَ عَلَى ابْنَةِ غَيْلاَنَ، فَإِنَّهَا تُقْبِلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ بِثَمَانٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ يَدْخُلَنَّ هَذَا عَلَيْكُمْ)).

(राजेअ : 4324) [راجع: ٤٣٢٤]

क्योंकि जब ये औरतों के हुस्न व बदसूरती को पहचानता है तो तुम्हारे हालात भी जाकर और मर्दों से बयान करेगा। हाफ़िज़ ने कहा इस हदीष़ से उन लोगों से भी पर्दे का हुक्म निकलता है जो औरतों का हुस्न व बदसूरती पहचानें, अगरचे वो ज़नाने या हिजड़े ही क्यूँ न हों। बाद में हज़रत ग़ीलान और उनकी ये लड़की मुसलमान हो गये थे। ग़ीलान के घर में दस औरतें थीं, आप (ﷺ) ने चार के अलावा औरों के छोड़ देने का उसको हुक्म फ़र्माया। (ख़ैरुल जारी)

बाब 115 : औरत हब्शियों को देख सकती है अगर किसी फ़ित्ने का डर न हो

١١٥ - باب نَظَرِ الْمَرْأَةِ إِلَى الْحَبَشِ وَنَحْوِهِمْ مِنْ غَيْرِ رِيبَةٍ

तश्रीह : हाफ़िज़ ने कहा कि औरत बेगाने मर्दों को देख सकती है बशर्ते कि नज़र बद न हो। कुछ ने इसलिये मना किया है हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) की हदीष़ से दलील ली है कि तुम तो अंधी नहीं हो मगर निय्यत ख़राब न हो तो सहीह जवाज़ है क्योंकि औरतें मस्जिदों और बाज़ारों में जाती हैं वो अपने चेहरे पर नक़ाब रखती हैं मगर मर्द को नक़ाब नहीं कराते ला महाला उन पर नज़र पड़ सकती है।

इमाम ग़ज़ाली ने कहा इसी हदीष़ से हम ये कहते हैं कि मर्दों का चेहरा औरत के हक़ में ऐसा नहीं है जैसा औरतों का चेहरा मर्दों के हक़ में है तो ग़ैर मर्द को देखना उस वक़्त हराम होगा जब फ़ित्ना का डर हो, अगर ये न हो तो हराम नहीं और हमेशा हर ज़माने में मर्द खुले चेहरे और औरतें नक़ाब डाले फिरती हैं। अगर औरतों को मर्दों का देखना मुत्लक़न हराम होता तो मर्दों को भी नक़ाब डालकर निकलने का हुक्म दिया जाता या बाहर निकलने से उनको भी मना कर दिया जाता। इमाम नववी ने कहा कि चेहरे और दोनों हथेलियाँ न मर्द की सतर हैं न औरत की और ये हिस्से हर एक दूसरे को देख सकता है गो मकरूह है। कितनी ही अहादीष़ से औरतों का कामकाज वग़ैरह में और जिहाद में निकलना षाबित होता है और ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करना, मुजाहिदीन का खाना वग़ैरह पकाना और ये उमूर मुम्किन नहीं हैं जब तक औरतों की नज़र मर्दों पर न पड़े लेकिन ये जवाज़ सिर्फ़ इसी सूरत में है जब फ़ित्ना का डर न हो अगर फ़ित्ने का डर हो तब औरत का ग़ैर मर्द को देखना सबके नज़दीक नाजाइज़ है।

5236. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम हंज़ली ने बयान किया, उनसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने देखा कि नबी करीम (ﷺ) मेरे लिये अपनी चादर से पर्दा किये हुए हैं। मैं हब्शा के उन लोगों को देख रही थी जो मस्जिद में (जंगी) खेल का मुज़ाहिरा कर रहे थे, आख़िर मैं ही उकता गई। अब तुम समझ लो एक कम उम्र लड़की जिसको खेल तमाशे देखने का बड़ा शौक़ है कितनी देर तक देखती रही होगी। (राजेअ : 454)

٥٢٣٦ - حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ عَنْ عِيسَى عَنِ الأَوْزَاعِيِّ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَسْتُرُنِي بِرِدَائِهِ وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَى الْحَبَشَةِ يَلْعَبُونَ فِي الْمَسْجِدِ، حَتَّى أَكُونَ أَنَا الَّذِي أَسْأَمُ فَاقْدُرُوا قَدْرَ الْجَارِيَةِ الْحَدِيثَةِ السِّنِّ الْحَرِيصَةِ عَلَى اللَّهْوِ. [راجع: ٤٥٤]

तश्रीह : कान ज़ालिक आम क़िदामिहिम सनत सब्इन व लिआयशत यौमइज़िन सित्त अश्रत सनतन व ज़ालिक बअदल्हिजाब फयुस्तदल्लु बिही अला जवाज़ि नज़्रिल्मर्अति इलर्रजुलि (तौशीह) या'नी ये 7 हिजरी का वाक़िया है हज़रत आइशा (रज़ि.) की उम्र उस वक़्त सौलह साल की थी, ये आयत हिजाब के नुज़ूल के बाद का वाक़िया है। पस उससे ग़ैर मर्द की तरफ़ औरत का नज़र करना जाइज़ षाबित हुआ बशर्ते कि ये देखना निय्यत बद के साथ न हो उस पर भी न देखना बेहतर है।

बाब 116 : औरतों का काम-काज के लिये बाहर निकलना दुरुस्त है

١١٦- باب خُرُوجِ النِّسَاءِ لِحَوَائِجِهِنَّ

5237. हमसे फ़रवह् बिन अबी अल मग़रा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) रात के वक़्त बाहर निकलीं तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उन्हें देख लिया और पहचान गये। फिर कहा ऐ सौदा! अल्लाह की क़सम! तुम हमसे छुप नहीं सकतीं। जब ह़ज़रत सौदा (रज़ि.) वापस नबी करीम (ﷺ) के पास आईं तो आँह़ज़रत (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त मेरे हुज्रे में शाम का खाना खा रहे थे। आपके हाथ में गोश्त की एक हड्डी थी। उस वक़्त आप पर वह्य नाज़िल होनी शुरू हुई और जब नुज़ूले वह्य का सिलसिला ख़त्म हुआ तो आपने फ़र्माया कि तुम्हें इजाज़त दी गई है कि तुम अपनी ज़रूरियात के लिये बाहर निकल सकती हो। (राजेअ़ : 146)

٥٢٣٧- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: خَرَجَتْ سَوْدَةُ بِنْتُ زَمْعَةَ لَيْلاً فَرَآهَا عُمَرُ فَعَرَفَهَا فَقَالَ: إِنَّكِ وَاللهِ يَا سَوْدَةُ مَا تَخْفَيْنَ عَلَيْنَا، فَرَجَعَتْ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لَهُ وَهُوَ فِي حُجْرَتِي يَتَعَشَّى، وَإِنَّ فِي يَدِهِ لَعَرْقًا فَأُنْزِلَ عَلَيْهِ فَرُفِعَ عَنْهُ وَهُوَ يَقُولُ: ((قَدْ أُذِنَ لَكُنَّ أَنْ تَخْرُجْنَ لِحَوَائِجِكُنَّ)). [راجع: ١٤٦]

तश्रीह़ : आज के दौरे नाज़ुक में ज़रूरियाते ज़िंदगी और मआशी जद्दोजहद इस ह़द तक पहुँच चुकी है कि अकषर मवाक़ेअ पर औरतों को भी घर से बाहर निकलना ज़रूरी हो जाता है। इसीलिये इस्लाम ने इस बारे मे तंगी नहीं रखी है, हाँ ये ज़रूरी है कि शरई ह़ुदूद में पर्दा करके औरतें बाहर निकलें।

बाब 117 : मस्जिद वग़ैरह में जाने के लिये औरत का अपने शौहर से इजाज़त लेना

١١٧- باب اسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ زَوْجَهَا فِي الْخُرُوجِ إِلَى الْمَسْجِدِ وَغَيْرِهِ

दूसरी ह़दीष़ में है, अल्लाह की बन्दियों को अल्लाह की मस्जिदों में जाने से न रोको फिर जिस काम की अल्लाह ने इजाज़त दी है उसे तुम कौन हो रोकने वाले? ह़ाफ़िज़ ने क़ाज़ी अयाज़ के इस क़ौल का रद्द किया है कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात के लिये ख़ास़ ऐसे ह़िजाब का हुक्म था कि उनके चेहरे और हथेलियाँ भी न दिखाई दें और न उनका जष़्षा दिखाई दे और इसीलिये ह़ज़रत ह़फ़्स़ा (रज़ि.) जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के जनाज़े पर आईं तो औरतों ने पर्दा कर लिया कि उनका जष़्षा भी न दिखाई दिया और ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) की नअ़श पर एक कुब्बा बनाया गया। ह़ाफ़िज़ ने कहा बहुत सी ह़दीष़ों से ये निकलता है कि आँह़ज़रत (ﷺ) की बीवियाँ ह़ज्ज और त़वाफ़ किया करती थीं, मसाजिद में जाया करती थीं और स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) और दूसरे लोग पर्दे में से उनकी बातें सुनते थे। (वह़ीदुज़्ज़माँ) मैं कहता हूँ अगर क़ाज़ी अयाज़ का क़ौल स़ह़ीह़ भी हो तो ऐसा पर्दा कि दा'वत का ज़ष़्षा भी न मा'लूम हुआ अज़्वाजे मुत़ह्हरात से ख़ास़ था आम औरतों के लिये ये ज़रूरी नहीं है कि वो ख़्वाह मख़्वाह डोली ही में निकलें बल्कि बुरक़ा ओढ़कर या चादर से जिस्म को ढांककर वो बाहर निकल सकती हैं इमाम बुख़ारी (रह़) ने ग़ैर मस्जिद को भी मस्जिद पर क़यास किया है मगर सब में ये शर्त़ ज़रूरी है कि फ़ित्ने का डर न हो।

5238. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्‍री ने, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि. ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि जब तुममें से किसी की बीवी मस्जिद में (नमाज़ पढ़ने के लिये) जाने की इजाज़त मांगे तो उसे न रोको बल्कि इजाज़त दे दो।

٥٢٣٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِذَا اسْتَأْذَنَتِ امْرَأَةُ أَحَدِكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَلاَ يَمْنَعْهَا.
[راجع: ٨٦٥]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि औरतें मसाजिद में शौहर की इजाज़त से पर्दे के साथ नमाज़ के लिये जा सकती हैं **क़ाल इब्नुत्तीन तरज्जम बिल्ख़ुरूजि इलल्मस्जिदि व गैरहू वक़्तस़र फिल्बाबि अ़ला हदीष़िल्मस्जिद व अ़ज़ाबल्किर्मानी बिअन्नहू क़ास मन्अहू अ़लैहि वल्जामिड़ बिनहयिन ज़ाहिरून व यश्तरितु फिल्जमीड़ अम्नल्फित्नति व नहवुहू** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इब्ने तीन ने कहा कि ह़ज़रत इमाम ने मस्जिद और अ़लावा मस्जिद की त़रफ़ औरत के निकलने का बाब बाँधा है और ह़दीष़ वो लाए हैं जिसमें स़िर्फ़ मस्जिद ही का ज़िक्र है। किरमानी ने इसका जवाब ये दिया है कि अ़लावा मस्जिद को मस्जिद ही के ऊपर क़यास कर लिया है। ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है और औरत के मसाजिद वग़ैरह की त़रफ़ निकलने के लिये अमन का होना शर्त़ है।

बाब 118 : दूध के रिश्ते से भी औ़रत मह़रम हो जाती है, बे पर्दा उसे देख सकते हैं

١١٨- باب مَا يَحِلُّ مِنَ الدُّخُولِ وَالنَّظَرِ إِلَى النِّسَاءِ فِي الرَّضَاعِ

5239. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक (रह़) ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उ़र्वा ने, उन्हें उनके वालिद उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे दूध (रज़ाई) चचा (अफ़लह़) आए और मेरे पास अंदर आने की इजाज़त चाही लेकिन मैंने कहा कि जब तक मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछ न लूँ, इजाज़त नहीं दे सकती। फिर आप (ﷺ) तशरीफ़ लाए तो मैंने आपसे उसके बारे में पूछा। आपने फ़र्माया कि वो तो तुम्हारे रज़ाई चचा हैं, उन्हें अंदर बुला लो। मैंने उस पर कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! औ़रत ने मुझे दूध पिलाया था कोई मर्द ने थोड़ा ही पिलाया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हैं तो वो तुम्हारे चचा ही (रज़ाई) इसलिये वो तुम्हारे पास आ सकते हैं, ये वाक़िया हमारे लिये पर्दा का हुक्म नाज़िल होने के बाद का है। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि ख़ून से जो चीज़ें ह़राम होती हैं रज़ाअ़त से भी वो ह़राम हो जाती हैं।

٥٢٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: جَاءَ عَمِّي مِنَ الرَّضَاعَةِ فَاسْتَأْذَنَ عَلَيَّ، فَأَبَيْتُ أَنْ آذَنَ لَهُ حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَجَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَسَأَلْتُهُ عَنْ ذَلِكَ، فَقَالَ: ((إِنَّهُ عَمُّكِ، فَأْذَنِي لَهُ)). قَالَتْ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنَّمَا أَرْضَعَتْنِي الْمَرْأَةُ وَلَمْ يُرْضِعْنِي الرَّجُلُ، قَالَتْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّهُ عَمُّكِ فَلْيَلِجْ عَلَيْكِ)). قَالَتْ عَائِشَةُ: وَذَلِكَ بَعْدَ أَنْ ضُرِبَ عَلَيْنَا الْحِجَابُ قَالَتْ عَائِشَةُ يَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يَحْرُمُ مِنَ الْوِلاَدَةِ.

तश्रीह : **व हुव अस़्लुन फ़ी अन्नरंज़ाअ हुक्मुन्नस्बि मिन इबाहतिदुख़ूलि अ़लन्निसाइ व गैर ज़ालिक मिनल्अह़कामि कज़ा फ़िल्फत्हि** या'नी ये ह़दीष़ इस बारे में बत़ौरे अस़ल के है कि औ़रतों पर ग़ैर मर्दों का दाख़िल होना दुरुस्त है जबकि वो दूध का रिश्ता रखते हों क्योंकि दूध का रिश्ता भी ख़ून ही के रिश्ते के बराबर है।

बाब 119 : एक औरत दूसरी औरत से (बपर्दा होकर) न चिमटे इसलिये कि उसका हाल अपने शौहर से बयान करे

١١٩ - باب لاَ تُبَاشِرُ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا

5240. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी (रह) ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअतमिर ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई औरत किसी औरत से मिलने के बाद अपने शौहर से उसका हुलिया न बयान करे, गोया कि वो उसे देख रहा है। (दीगर मक़ाम : 5241)

٥٢٤٠ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تُبَاشِرِ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا كَأَنَّهُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا)).

[طرفه في : ٥٢٤١].

तश्रीह : ह़ाफ़िज़ ने कहा इसी त़रह़ मर्द को ग़ैर औरत के सतर की त़रफ़ और औरत को ग़ैर मर्द के सतर की त़रफ़ देखना ह़राम है। इस ह़दीष़ से ये मा'लूम हुआ कि मर्द भी दूसरे मर्द से बदन न लगाए, मगर ज़रूरत से और मुस़ाफ़ा के वक़्त हाथों का मिलाना जाइज़ है। इसी त़रह़ मुआनक़ा और बोसा देना भी मना है मगर जो सफ़र से आए उससे मुआनक़ा दुरुस्त है। इसी त़रह़ बाप अपने बच्चों को शफ़क़त की राह से बोसा दे सकता है। किसी स़ालेह़ शख़्स़ के हाथ को अज़्राहे मुह़ब्बत बोसा दे सकते हैं जैसे स़ह़ाबा किराम आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ किया करते थे लेकिन दुनियादार अमीर के हाथ को उसकी मालदारी की वजह से बोसा देना नाजाइज़ है। (वह़ीदी) आजकल के नामोनिहाद पीर व मशाइख़ जो अपने हाथों और पैरों को बोसा दिलाते हैं ये क़त़अन नाजाइज़ है। (बोसा के बारे में याद रखिए कि पाँच क़िस्म के बोसे होते हैं जिनके जवाज़ की सूरतें सिर्फ़ ये हैं उसके अलावा जो भी सूरत हो नाजाइज़ समझें । (1) बनूत का बोसा बाप या माँ अपनी औलाद को दे (2) अबूत का बोसा औलाद वालिदैन को दे (3) मवद्दत का बोसा साथी साथी को दे या हमउ़म्र, हमउ़म्र को दे (4) शफ़क़त का बोसा बड़ा छोटे को दे । इन क़िस्मों का मह़ल हाथ या पेशानी है रुख़सार नहीं। (5) शह्वत का बोसा शौहर बीवी एक दूसरे को दें। (अ़ब्दुर्रशीद)

5241. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ ने बयान किया, कहा मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। कोई औरत किसी औरत से मिलकर अपने शौहर से उसका हुलिया न बयान करे गोया कि वो उसे देख रहा है। (राजेअ़ : 5240)

٥٢٤١ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تُبَاشِرِ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا كَأَنَّهُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا)).

[راجع: ٥٢٤٠]

तश्रीह : फइन्नल्हिक्मत फ़ी हाज़न्नहयि खश्यतुन अंय्युअज्जिबज़्ज़ौजल् वस्फुल्मज्कूर फयुफ़्ज़ी ज़ालिक इला तत़्लीकिल्वास़िफ़ति औ इलल्इफ़्तिनानि बिल्मौस़ूफ़ति (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस नही में ह़िक्मत ये है कि डर है कि कहीं शौहर उस औरत का हुलिया सुनकर उस पर फ़िदा होकर अपनी औरत को त़लाक़ न दे दे या उसके फ़ित्ने में मुब्तला न हो जाए। नेज़ ये भी ज़रूरी है कि एक मर्द दूसरे के अअ़्ज़ाए मख़्सूसा न देखे कि ये भी मौजिबे ला'नत है। आज के मग़्रिबज़दा लोग आ़म गुज़रगाहों पर खड़े होकर पेशाब करते और अपनी बेह़याई का खुलेआम मुज़ाहिरा करते हैं ऐसे मुसलमानों को अल्लाह से डरना चाहिये कि एक दिन बिज़्ज़रूर उसके सामने ह़ाज़िरी देनी है। वबिल्लाहित् तौफ़ीक़।

बाब 120 : किसी मर्द का ये कहना कि आज रात मैं अपनी बीवियों के पास हो आऊँगा

١٢٠- باب قَوْلِ الرَّجُلِ : لأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى نِسَائِهِ

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ये बाब इसलिये लाए हैं कि अगर कोई मर्द अपनी बीवियों की बारी इस तरह से शुरू करे तो दुरुस्त है लेकिन बारी मुक़र्रर हो जाने के बाद फिर ऐसा करना दुरुस्त नहीं।

5242. मुझसे मह़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाऊस ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि सुलैमान बिन दाऊद (अ़लैहि.) ने फ़र्माया कि आज रात मैं अपनी सौ बीवियों के पास हो आऊँगा (और इस क़ुर्बत के नतीजे में) हर औ़रत एक लड़का जनेगी तो सौ लड़के ऐसे पैदा होंगे जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेंगे। फ़रिश्ते ने उनसे कहा कि इंशाअल्लाह कह लीजिए लेकिन उन्होंने नहीं कहा और भूल गये। चुनाँचे आप तमाम बीवियों के पास गये लेकिन एक के सिवा किसी के यहाँ भी बच्चा पैदा न हुआ और उस एक के यहाँ भी आधा बच्चा पैदा हुआ। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर वो इंशाअल्लाह कह लेते तो उनकी मुराद पूरी हो जाती और उनकी ख़्वाहिश पूरी होने की उम्मीद ज़्यादा होती।

٥٢٤٢- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ : لأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ بِمِائَةِ امْرَأَةٍ، تَلِدُ كُلُّ امْرَأَةٍ غُلاَمًا يُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ. فَقَالَ لَهُ الْمَلَكُ : قُلْ إِنْ شَاءَ اللهُ، فَلَمْ يَقُلْ وَنَسِيَ، فَأَطَافَ بِهِنَّ وَلَمْ تَلِدْ مِنْهُنَّ إِلاَّ امْرَأَةٌ نِصْفَ إِنْسَانٍ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لَوْ قَالَ إِنْ شَاءَ اللهُ لَمْ يَحْنَثْ، وَكَانَ أَرْجَى لِحَاجَتِهِ)).

तश्रीह : लम यहनष़ मुरादुहू क़ाल इब्नुत्तीन लिअन्नल्हनष़ ला यकूनु इल्ला अन यमीनिन काल व यहतमिलु अंय्यकून सुलैमानु फ़ी ज़ालिक क़ुल्तु औ नूज़लत्ताकीदुल्मुस्तफादु मिन कौनिही लअत़ूफन्नल्लैलत (फ़त्ह) या'नी लफ़्ज़ लम यह़्नषु का मत़लब ये है कि उनकी मुराद के ख़िलाफ़ न होता। इब्ने तीन ने कहा कि ह़्न्ष़ क़सम से होती है लिहाज़ा अन्देशा है कि हज़रत सुलैमान (अ़लैहिस्सलाम) ने इस अम्र पर क़सम खाई हो या उनका जुम्ला ला अतुफ़न्नल् लयलता ही क़सम की जगह है जो इंशाअल्लाह न कहने से पूरी न हुई।

बाब 121 : आदमी सफ़र से रात के वक़्त अपने घर न आए या'नी लम्बे सफ़र के बाद ऐसा न हो कि अपने घर वालों पर तोह्मत लगाने का मौक़ा पैदा हो या उनके ऐ़ब निकालने का

١٢١- باب لاَ يَطْرُقُ أَهْلَهُ لَيْلاً إِذَا أَطَالَ الْغَيْبَةَ، مَخَافَةَ أَنْ يُخَوِّنَهُمْ أَوْ يَلْتَمِسَ عَثَرَاتِهِمْ

5243. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुहारिब बिन दिष़ार ने बयान किया, कहा कि मैंने हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) किसी शख़्स से रात के वक़्त अपने घर (सफ़र से अचानक) आने पर नापसंदीदगी का इज़्हार फ़र्माते थे।

٥٢٤٣- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا مُحَارِبُ بْنُ دِثَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَكْرَهُ أَنْ يَأْتِيَ الرَّجُلُ أَهْلَهُ

طُرُوقًا. [راجع: ٤٤٣]

(राजेअ़ : 443)

٥٢٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا عَاصِمُ بْنُ سُلَيْمَانَ عَنِ الشَّعْبِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا طَالَ أَحَدُكُمُ الْغَيْبَةَ، فَلاَ يَطْرُقْ أَهْلَهُ لَيْلاً)). [راجع: ٤٤٧]

5244. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको आ़सिम बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें आ़मिर शअ़बी ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.)ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुममें से कोई शख़्स ज़्यादा दिनों तक अपने घर से दूर रहा हो तो यकायक रात को अपने घर में न आ जाए। (राजेअ़ : 447)

तश्रीह : आज की तरक़्क़ीयाफ़्ता दौर मे दूर दराज़ से देर-सवेर आने वाले ह़ज़रात इस ह़दीष़ पर अ़मल कर सकते हैं कि बज़रिये डाक या तार या फ़ोन अपने घर वालों को आने की स़ह़ीह़ ख़बर दे दें। अगर इस ह़दीष़ पर अ़मल करने की निय्यत से ख़बर देंगे तो ये ख़बर देना भी एक कारे ष़वाब होगा। दुआ है कि अल्लाह पाक हर मुसलमान को (प्यारे रसूलुल्लाह (ﷺ) की पाकीज़ा अह़ादीष़ पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन या रब्बल आ़लमीन। अल्ह़म्दुलिल्लाह पारा 21 ख़त्म हुआ)

ख़ात्मा

मह़ज़ अल्लाह पाक की ग़ैबी ताइद से बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू का पारा 21 आज ख़ैरियत व आ़फ़ियत के साथ ख़त्म हुआ। तक़रीबन सारा पारा मसाइले निकाह़ पर मुश्तमिल है। ज़ाहिर है कि मसाइले निकाह़ जो हर मुसलमान की अज़्दवाजी ज़िंदगी से बड़ा गहरा ता'ल्लुक़ रखते हैं, अकष़र ही दक़ीक़ मसाइल हैं। फिर उनमें भी अकष़र जगह फ़िक़ही इख़्तिलाफ़ात की भरमार है लेकिन मुत़ालआ़ फ़र्माने वाले मुह़तरम ह़ज़रात पर वाज़ेह़ हो कि अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीष़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़) ने इन मसाइल को बड़े आसान लफ़्ज़ों में सुलझाने की पूरी पूरी कोशिश की है। हर बाब जो एक मुस्तक़िल फ़त्वे की ह़ैषियत रखता है। उसे आयात व अह़ादीष़ व आष़ारे स़ह़ाबा व ताबेईन वग़ैरह से मुदल्लल फ़र्माने की सई बलीग़ की है और फिर इसकी भी कोशिश की गई है कि तर्जुमा में पूरी सादगी क़ायम रखते हुए भी बेहतरीन वज़ाह़त हो सके। जहाँ कोई अग़लाक़ (पेचीदगी) नज़र आई उसे बज़ेल तशरीह़ात खोल दिया गया है। बहरह़ाल जैसी भी ख़िदमत है वो क़द्रदानों के सामने है।

मज़ीद त़वालत में ज़ख़ामत के बढ़ने का ख़त़रा था जबकि आज काग़ज़ व दीगर सामाने त़बाअ़त महंगाई की आख़री ह़ुदूद तक पहुँच गये हैं। ऐसी महंगाई के आ़लम में इस पारे का शाया होना मह़ज़ अल्लाह की ताइदे ग़ैबी है वरना अपनी कमज़ोरियाँ, कोताहियाँ, तही दस्ती, सब कुछ अपने सामने है। ह़ज़रात मुअ़ज़्ज़ज़ उ़लमा-ए-किराम किसी जगह भी कोई वाक़ई फ़ाश ग़लत़ी मुलाह़िज़ा फ़र्माएँ तो ख़बर देकर शुक्रिया का मौक़ा दें ताकि त़बअ़े ष़ानी में उस पर ग़ौर किया जा सके।

रब्बुल आ़लमीन से बस़द आह व ज़ारी दुआ है कि वो इस ह़क़ीर ख़िदमत को क़ुबूल फ़र्माए और बक़िया पारों की तकमील कराए जो बज़ाहिर कोहे हिमालिया नज़र आ रहे हैं लेकिन अगर ये ख़िदमत अधूरी रह गई तो एक नाक़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान होगा। दुआ है कि ऐ परवरदिगार! मुझ ह़क़ीर नाचीज़ ख़ादिम को इतनी ज़िंदगी और बख़्श दे कि तेरे ह़बीब (रज़ि.) के पाकीज़ा इर्शादात की ये ख़िदमत मैं तक्मील तक पहुँचा सकूँ। उसकी इशाअ़त के लिये अस्बाब और सामान भी ग़ैब से मुहय्या करा दे और जिस क़दर शाएक़ीन मेरे साथ इस ख़िदमत में दामे दरमे सुख़ने शिर्कत कर रहे हैं। ऐ अल्लाह! वो किसी जगह भी हों उन सबके ह़क़ में इस ख़िदमत को क़ुबूल फ़र्माकर हम सबको क़यामत के दिन दरबारे रिसालते मआब (ﷺ) में जमा फ़र्माइयो और हम सब की बख़्शिश फ़र्माते हुए इस ख़िदमते उ़ज़्मा को हम सबके लिये बाइ़षे नजात बनाइयो। आमीन ष़ुम्म अमीन व सलामुन अ़लल मुर्सलीन वल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

ख़ादिमे ह़दीष़े नबवी मुह़म्मद दाऊद राज़ वल्द अ़ब्दुल्लाह अस्सलफ़ी अद् देहलवी

रमज़ानुल मुबारक 1394 हिज्री

अर्ज़े-मुतर्जिम

(अनुवादक की गुज़ारिशात)

क़ारेईने किराम! अल्लाह रब्बुल–इज़्ज़त के फ़ज़्ल व एहसानो–करम से स़ह़ीह़ बुख़ारी (शरह मुहम्मद दाऊद राज़ रह.) की छठी जिल्द आपके हाथों में सौंपी जा रही है। इस जिल्द में आप बहुत सारे ऐसे अनछुए मसाइल के बारे में जानकारी हास़िल करेंगे, जिनकी हमारी ज़िन्दगी में बड़ी अहमियत है। पहली जिल्द के पेज नं. 23-24 पर इसी कॉलम में काफ़ी-कुछ वज़ाहत की जा चुकी है चन्द अहम व ज़रूरी बातें इसलिये दोहराई जा रही है ताकि शुरूआती पाँच जिल्द पढ़ चुके क़ारेईन के सवालात के तसल्लीबख़्श जवाब मिल सके।

01. **बेहद सावधानी के साथ इसकी तस़्ह़ीह व नज़रे–ष़ानी की गई है ताकि ग़लती की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अ़रबी के माहिर आ़लिम मौलाना जमशेद आ़लम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अ़रबी हर्फ़ (ث) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष़' इस्ते'माल पर ए'तिराज़ जताया है, स़ह़ीह़ बुख़ारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर ह़दीष़ 'इन्नमल अ़अ़मालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है।' हमारी निय्यत यह है कि अ़रबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए। रहा सवाल उच्चारण का तो उसके लिये हमारी गुज़ारिश है कि नीचे लिखी इबारत का ग़ौर से मुतालआ करें।**

02. **इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास़ हर्फ़ों को अलग तरह से लिखा गया ह** मिष़ाल के तौर पर :– (ا) के लिये **अ**, (ع) के लिये **अ़**; (ث) के लिये **ष़**, (س) के लिये **स**, (ش) के लिये **श**, (ص) के लिये **स़**; (ح) के लिये **ह़**, (ه) के लिये **ह**, (خ) के लिये **ख़**, (غ) के लिये **ग़**, (ف) के लिये **फ़**, (ك) के लिये **क**, (ق) के लिये **क़** लिखा गया है। (ج) के लिये **ज** का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ذ) ज़े (ز) ज़ाद (ض) ज़ोय (ظ) के लिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ **ज़** का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हर्फ़ों के लिये स़ह़ीह़ विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे एक लफ़्ज़ उर्दू में पाँच तरह से लिखा जाता है; **असीर,** अलिफ़ (ا)–सीन (س) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **क़ैदी**। **अष़ीर,** अलिफ़ (ا) ष़े (ث) ये (ی) रे (ر) जिसका मतलब होता है **ख़ालिस़**। **अ़सीर** अ़ेन (ع) सीन (س) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **मुश्किल**। **अ़स़ीर** अ़ेन (ع) स़ाद (ص) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **अंगूर की चाशनी (शीरा)**। **अ़ष़ीर** अ़ेन (ع) ष़े (ث) ये (ی) रे (ر), जिसका मतलब होता है **धूल**। कहने का मतलब ये है कि इस किताब में स़ह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के लिये हद–दर्जा कोशिश की गई है।

03. **मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अ़ल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें न कुछ घटाया गया है, न बढ़ाया गया है और न ही अनुवादक द्वारा किसी मैटर की एडीटिंग की गई है। लिहाज़ा हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।**

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस़्ह़ीह़ (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी हैं, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। **ऐ अल्लाह! मेरे वालिद–वालदा को अपने अ़र्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नस़ीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने–इस्लाम का फ़हम अ़ता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़त़ाओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअ़मतें अ़त़ा फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है।** आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आ़लमीन!! व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला नबिय्यिना व अ़ला आलिही व अस़्ह़ाबिही व अत्बाइ़हि व बारिक व सल्लिम.

सलीम ख़िलजी.

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन